विष्णिश्वा



गर्षि जीक्करेषशायन প्रवीजम्।

🚇 🖣 পুৰাপাৰ 🕮 ধরখানিকত ভাবার্থনীপিকা দীকা

্ৰীঞীপূজ্যপাদ জীবগোস্থামিকত ক্ৰমসন্দৰ্ভ শ্ৰীঞীপূজ বিশ্বনাধ চক্ৰবৰ্তিকৃত সাৱাৰ্থদৰ্শিনী টীকা সমেতঃ

প্রিরামনারায়ণ বিদ্যারত্ব কৃতান্বাদসমেতঞ্চ ত্রিপুরাধীশ্বর প্রীমন্মুহারাজ বীরচন্দ্র বর্মমানিকাস্য দম্পূর্ণ দাহায্যেন মূল্যং বিনা বিভরিতব্যং।

তৃতীয় স্ক দং।



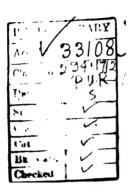
यूर्निमावाम ,

বহরস্পুর,—রাধারমণযন্তে

• ব্রিরামনারারণ বিদ্যারত্বেন প্রকাপিতং

শক্তিতক।

ক্ষা২১০, কার্ডিক।



পষ্ঠা	1
اهلا	ı

১ অধারে। গতায়: বছুবাদ্ধব পরিত্যাগ পূর্বক নির্গত विष्युत्त डेक्स गर मशाम ॥

২ অধ্যায়ে। শ্রীক্লকের বিলেষ নিমিত্ত শোকার্ত হইয়া বিহুরের নিকট উন্ধব কর্ত্তক শ্রীক্লফের বালচরিত্র বর্ণন।।

ত অধ্যারে। জ্রীরুঞ্চ ব্রহ্মপুর হইতে মথুবার আগমন করিয়া ८य नकल करनामि वध कार्या करतम अतर चात्रकाश्रुतीएड यांडा যাহা করিয়াছেন তংসমুদায় উদ্ধব কর্ত্তক বিছরের নিকট বর্ণন ম

৪ অধারে। বিভবের নিধনবার্তা প্রবণ করিয়া আত্মজান লাভার্থে উদ্ধরের উপদেশ ক্রমে মৈত্রেরের নিকটে গ্রমন

৫ অধানে। বিচরের প্রেল্ল মহানুনি মৈত্রেয় কর্ত্তক ভগত बारमव नीना ध्वर भर्मानि सृष्टि वर्गन ख्या बीकृत्यव खव ॥ ७०

 भनाति । मञ्जुषानि तनवश्यति व्यस्तत अति भृतिक বি বাট্ মৃত্তির স্টে এবং ভগবান্ কর্ত্ক আধিদৈবাদি বর্ণন ॥ ৭৩

৭ অধ্যাবে। মৈতের মুনির সংশয় ছেদক বাক্য শ্রবণ কবিয়া অভিনন্দনাপূর্মক বিছর কার্ত্তক পুনর্মার নানাবিধ (2) 司 (1

ল অধায়ে। জলশায়ি ভগবানের নাভিপদ্ম হইতে রক্ষা উংপর হইয়া তাহাকে জানিবাব মিনিত জলে মগ্ন হবেন কিন্তু যাহাতে তাঁহাৰ কিছু অন্ত না পাইয়া সভ্যচিত্তে তপ্সা দারা े जगनात्मत खब करदम् ॥

১ অধাবে। তপ্দ্যা দাবা ভগ্বানের গ্রিভোধ অব্লোক্ন কবিয়া হৃষ্টি বাসনায় একা কৰ্ত্তক ভগৰানের স্বৃতি ॥

১০ অধাত্যে। কাল বিষয়ক প্রশ্নের উত্তর দানার্থ প্রাক্ তাদি তেনে ঐ কালোপপন্ন দশবিধ সৃষ্টি বর্ণন ॥

১১ অধ্যারে। প্রমাণু এইভৃতির লক্ষণ দারা কালের নিল-পণ এবং মুগ মলম্বরাদি হইতে কলমানাদির ভেদ বর্ণন ॥ ১৩৯ >२ अभारम्। अकात् कृष्टि वर्गन्।। 502

১৩ জধাবে। ব্রহাব আদেশারুবারে স্বায়স্ত্র মতু লোক ক্রনার্থ প্রত হইলে বরাছদেব কর্ক জলমগ্রা ধরার উদ্ধার

धावर व्यामिटेम छ। श्वित्यादिकत वस कुछना ॥ >৪ অধ্যায়ে। দিভিব প্রাথনা ক্রমে ক্রাপু হইতে স্ক্রা কালে তাঁহাৰ গরোং পত্তি॥

293

>৫ অধ্যানে। , দিভির গর্ন্ত উৎপন্ন হওসুণতে ভদ্দারা দেবগণ হতপ্রস্থ হইয়া ব্রশ্বাকে জিজাগা করেন তাহাতে ব্রশ্বা কর্ত্তক বৈক্ঠছ বিষ্ণুভক্তবয়ের বিপ্রশাপাদিব রুতান্ত বর্ণন ॥

২৬ অধ্যায়ে। ভগবান্ বৈকুঠনাথ কৰ্ত্ব শান্তিত ক্ষা বিপ্রবৃদ্দের ভারপাল ছয়ের প্রতি অহ্গ্রহ এবং তাহাদের देवक्ष्रेलाक इहर अश्रेष्टन ॥

"eate

১৭ অধ্যারে। ভগবৎপার্বদ্বমের অস্থ্র রূপে ভর্মর জন্ম **এবং হির্ণাক্ষের দিখিজর**॥

अधारित । धतात डेकातकाति वताश्रामत्वत महिछ হির্ণাকের যুদ্ধ।

১৯ অধারে। বন্ধার প্রার্থনার আদিবরাহ কর্তৃক ভির-भाग वस् ॥

२० व्यक्षारिय । नतार क्रमामि नर्गन निमित्र स्ट्रिडि ध्येकत्रन কথনের ব্যবধান হইয়াছিল, এতংপ্রযুক্ত পুনব্বার প্রথমাবধি সায়স্ত্র মহুর বংশাহুত্মরণ॥

२১ व्यक्षारिय। ज्यांचारत अनारम कर्ममक्षयित मञ्क्राा-দেবছুতির সহিত বিবাহ ঘটনা॥

२२ अभारत। जात्रक्षत मञ्च कार्डक अधितत कर्मस्मत इस्क ভগবানের আদেশামূরণ কল্লা সম্প্রদান॥

২৩ মধারে। তপঃপ্রভাবে স্থানির্দ্ধিত বিমানে কর্দ্ধস্থ দেবছুতির রতিক্রীড়া॥

২৭ অধ্যায়ে। দেবছুভির গর্ডে কপিলদেবের জন্ম এবং তাঁহার অতুমতিক্রমে কর্দমের প্রবন্ধার গ্রন।

২৫ অধায়ে। ভগবান কপিল জননী কর্ত্ব জিজাসিত হইয়া প্রথমতঃ বন্ধন মোচনকারিণী অত্যুৎকৃষ্ট ভক্তির লক্ষণ বর্ণন করেন, এবং ঐ ভগবান্ যোগরূপ মাণিক্য মঞ্বা (পেটরা) গুঢ় ভাবে আবন্ধ করিয়া মাতাকে যে সমর্পণ কবেন একণে স্পষ্টরূপে তাহারই উচ্চাটন ॥

২৬ অধ্যাগে। প্রকৃতি পুরুবের বিবেচন∤র্থ মহদাদি তত্ত্ব সকলের উৎপত্তি ভেদে সাংখ্য যোগ কথন ॥

২৭ অধ্যানে। বছ বছ সাধন গোগ বশত: পুরুষ ও প্রকৃতির বিবেকদারা মোক্ষরীতি বর্ণন ॥

২৮ অধ্যায়ে। ধান শোদিত অষ্টান্ন যোগ ছাবা সর্জোপাদি বিনিশ্ম ক স্বরূপ জ্ঞানের কংন॥

२२ अशास्त्र। वह श्रकात छक्तिसांग धवर देवतांगा छेर-পাদনার্থ কালের বল ও যোরতর সংসার ধর্ণন ॥

৩০ অধ্যায়ে। অধ্যু হারা কায় কান্তাদি ভরণ পোষনার্থ বাগ্রচিত্ত কামি পুরুষদিগের তামদী গতি বর্ণন ॥

৩> অধ্যারে। মিপ্রিত পাপ পুণা হারা মন্ত্রণায়োনি প্রাপ্তি-রূপ রাজসী গতি বর্ণন।।

৩২ অধাায়ে। সাত্ত্বিক ধর্ম ছারা উর্ননোকে গভি ও ওত্ত-জ্ঞানবিহীন ব্যক্তির পুনরাবৃদ্ধি বর্ণন॥

৩০ অধ্যায়ে। ভগবান কশিলের উপদেশে ভদীর মাত। (मश्ह्रित स्थान नाम अवः सीवग्रक्तित्र विषय वर्गन ॥ 88> ।

इडीतकटकत जलक मरट्गांका।

		मृत्र ।	12 5 to 1.	, ,	शृंकी .	পঁতি	494	46
		9 32	·		2	ર .	पूर्वाविम	হ্ৰ্যোধন "
পৃষ্ঠা	পঁজি	वलक	49.4		9	৩	क्ष्रानि	কুৰুমানি
ર	•	कर्त.	₹ 8		•		८४डे ।	त्वहै।
•	>	ইজাচিয়ান্	ই্ড়াটিবান্		•	•	খণন্	ৰ পন্
9	٠	অধিষ্ঠতো	অধিষ্ঠিতো	•	b	•	अग इड	অ সংস্কৃত
34	•	মীশিত '	মীশীত		3.	•	कोमः	শ্বরং কামং
>>	>	মাদিখৰে	मोलिनटर्ग		>>	•	पर्जनार	गर्ज् ना९
68	>	(क्ष्म्हळाड्ः	(अक्टाइ:		20	•	গহুৰভাঃ	গহরতা অহুস্ভা:
9•	>	विभगात्रा	विभन्नाभन्ना '		342	4	निश्नाः	নিপুণা:
9.	8	বিসন্তি	বিশক্তি		२১	8	वाद्यावान्यवा	वाशीयांनरवा
45	ર	नभक्रमम	নশক্ষ		२२	₹	অ তো হ বিতৃ গা	কোনৌ হরিরিত্যপেকরা
>•4	•	विम्ष	विक्रष्					মাহ প্ৰদৰ্শেতি ন তথ্য
১ २०	>	মালিনী	মালিনি					তণো বৈঃ অভোষ্ৰিভৃপ্ত
366	•	(मर्थयम्बन:	८थमग्रम् नः		89	>	বন্ধানা	অকাদী না
5 5%	¢	আঞ্জকরী	আঞাকরী		eb	¢	ৰ্যপারা	ৰ্যাপার <u>া</u>
744	¢	মরিদেশান্তি	সলিদে শাভি		63	· •	ক্ল তবভার	ফুতবিতার
২ ২৪	2	বাদ্যার	ब्यां नांत्र		40	•	পুরুষধগা	भूक्षांथा
२७७	•	ঞাণেছ	ा ।	: 1	95	9	অধুনা	थन्दाः
२०৮	ર	হেমবিরীট	হে শকিরীট		92	•	ৰশান্ত	য াত ত
२१४	>	পরিবোঢ়	পরিবোঢ়ু		26 .	•	মার্গান	मार्गान् ,
₹€0	¢	निभगांख '	নিশামাত	1	>•	y	কিথং	ক্ষিপন্তং
?	•	षिषगरेन चू हैः	विकाशिण् हैः))o	¢	'ধ্যানেন	धारिन
२৯२	8	श् रुटम धी ब्	গৃহমেধিবু		228	,	কররাম	कत्रवीम
೨• % ೨೨8	4	হ্ধুনিপাত	ছাধুনীপাত		255	, 2	क करा व के क र	. 'উक्टंहि
9 50	>	ভগৰবাণো	छ गववार गा		500	ь	কাশ	ा च्यार कांगः
৩৬২	b	क्षाः कर्षातियः	कनत्र ।		200	ર	माववनः	मावेदगः
७१•	ર ૨	ক্সনেবে: প্রাপ্তাহা	'कर्षातारेवः व्यारश्चाष्टीहा		282	e	লোকাক্তি:	শোকেছি:
889	•	তদৃশে	ভাৰূশে		198	8	वानामावद्या । अ	भि, वानागावका वा । क्रा
			,		১৮৭	•	मी छूट्य	শীঢ়ুৰে .
		3			366	8	বৰ্ণক্ষত্তি	বৰ্ণস্থাতি
				.]	>>0	ø	বিকসভঃ	বিকস্থ্যঃ
		4. in			₹•8 .	•	আৰাং কণটো	্বাৰাং কণটো
				.	₹•₩	4	তৈ দৃষ্টং	रेखम् हैः
			•	1.	२२ 5	>	ইজারে	ইডরে
r	•	😶 चांगी।			२२७ .		নপর ধচিতাং	मनतारभा ठिखाः
•	. 6	ল্কণংডয়া	লক্ষ্যতমা -	- 1	२२३	8	ৰেদ মৰ্গো	- (यमभार्गा
>	. 1	नक्ष्म	नवनः		रंठर	•	যুৱকোতৃকং	्यू परको ज्ञः
ર	2	निर्द्भनं।	নিৰ্দেশঃ		२०๕	٤	पिश्रवात्र	मि श्वरत

পৃষ্ঠা	পঁতি	462	95 '	পৃষ্ঠা	পঁতি	नक्ष	44
₹0€	Š	শাহি তা	সহিতা ,	1	. •	य य धर्म	य य धर्मः
₹8•	9	বিশেৰ তক্ষরঃ র	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	1 be	4	वित्रा	त्र विमुखा
288	>	ঞাণক্ষসি	প্রাপ্যাদি	22	٠٠. ق	नीरवह।	
₹\$₩	. 4	ভুর শ ণার্থং	्रकृतक्रगा€र	334	,	क् थिरग	न्य जाटन्छ। यस्।। स क्लिट्ना
₹48		वनरम	ज्ञनन् त्रा	335	٠,	क् त्रिमश	अ विवर
२१२	۵	ক্ৰয়	- कुनुब:	324	ø	स्थापन	महत्राव
211	•	ধিগন) রবকামুকং	ধিগ্নারব্কামুকং	>6.	>	অ্লচর্ব্য	ন্ত্ৰসূচৰ্ব্য
२४∙	•	बा कि त्रिक	बा जितिक	266	ર	পুরুষাত্মানার দ্	
248	8	म भू।	नचा	১৬৬	ર		বৃদাৎ, স্বভূ এৰাস্থানাদ্যাৎ
२४६	•	রথাস্থরে	त्रथस्य	>9•	ર	স্ভাবেশি	ক্ষুড়াবোপি স্মুদ্ধাবোপি
3•	•	ভূছি	७ हि	595	ą.	नत्रकृष	म्बर्क्ट मृत्रकृत
٥٠8	¢	পৰ্যায়াদিভি-6	পর্যাঙ্গাদিভি"চ	220	8	বেছেতি	-চন্ত্ৰ ব্ৰেছেতি বুগাৰুং
၁) ခ	ર	<u>রুশ্বদিতি</u>	उस्रविविक	324	ર	म ष्ट्रः	व्यवस्थ वृत्राकर सामधुः
9 >8	4	মাকাৰী	बाकावी:	239	>	গুরুণামপি	খন পু• খ্রুণামপি
೨೨೪	•	অন্থি ঠাতৃণাং	प्रत ्यक्षेण्यार	२२१	¢	শ্বগং	न्। स्रोक्षः
৩৪২	2	माट्य माथाः	मांख नाःभाः	२५४	34	ড্ ৰোলভ্যমান	
983	9	তজ্মায়ং	ত ভাষারং	२১৮	. ২৭	রিজ্যতেবা বীত	5
ot•	8	मिन्दित्र क्राट्य	मि लि यक्र ा	२७७	ь	তরোবেরা ভাব	1161200 110
969	•	নাড্যাদিছিল	নাড্যাদিজ্জি	२००	36	বিগীতমাপ	বিগীতমপি
966	ર	অভিবিশ্বোগাং	প্রতিবিশাবোগাৎ	२१৯	ಶಿ	প্রমার্য্য	প্রমাচার্য্য
৩৬৫	•	শভাসো	ত্যাভাবো	२৮১	¢	त्रवनाममा ळः	ব্রদানমাত্রং
946	9	मुद्रोदय	पृष्ठाः :	२२१	>	ক্র শক্ষা	কুশকাশা
৩৭•	9	अ निमानि	অথিমাদি অথিমাদি	0>0	>	উদ্ধানচেত্ৰসাং	উন্দাদচেত্যাং
293	>	অভো ষ্টাঙ্গ	ততোষ্টাস্	0 2•	ર	वांनि वानि	यानि गानि
৩৭৯	₹ •	কপদৌ		७२•	ર	তানিতান্যের ক্ল	পোণি জানি তান্যের রূপার
3 F•	ર	स्टबर्ग मः	কপোনো		दग	গ্যানি শাকানীভ	। বিঃ। তব অভিল্লপাণি বো
Ore	,	এরতীনির্ভি	ब्रह्म (जर		42	ানিচ যাদৃশং ব	तिषि गानि नाषानीकार्यः
8•>	6	ভূডানাতি ভূডানাতি	প্রবৃত্তিনিবৃদ্ধী		ত ব	অভিন্নপাণি যোগ	্যা
		•	ভূভান্যত্তি		নার	ানীতার্থ:	
8 • 8	9	नहिज्या नविक्रमी	সহিত্ত দেহত সম্ধীনি	৩২৯	ર	আকুতেশারারা:	অক্তেশ্যায়ারা:
879		পঞ্ ভিভূৱৈ	পঞ্জিভূ হৈছ	99 •	>	নৈপ্ৰ্যামিভি	ৰৈপু ণমিতি
827	•	रण मृठः	यजामृकः	૭૭ર	•	ক্ষেভ্যোগ্ংকৃষ্ট	ভে ড্যোপ্যৎকৃষ্ট
845	>	नः श्रीभा	मः श्राण	988	৬	তদুস্ভিন	তদহস্বতিন
		Charles Strongs		2017	8	त्राधामशृ क्षक	রাধনপূর্বক
		ममर्छः।		৩৬৯ ৩৭৮		त्रीचत्र प	बीयब्रह्म
•		6-6		৩৯৩	۶ ۶	সৌটার্য্য ভানকর্মনিঞ্জ	ट्यो जिया
	,	স্বাদ্তি	মন্দি তি	940		निकाक र्ड	শিক্ষাকর্ম :
>°		MANATIE .	.जनसन्। इ	960		र्मगामन	नगामकः
39	1	स्ट्री	स्ट्रा	828		७ वजूरनाञ	ভৰতুলোন
₹8 ₹8		यांबरका	414640.0)	828 896		দ্বীক্ষতেত্য র্থ অথাবভারতি	न स्मारक कार्यः
8 2 .		यकारहरू	रक्रांवय	113	· ;	प्रदेश	তথাৰভাতি প্ৰতীয়
i '	٠.	সু পারুত্তে	ছ্পরতে			(Description)	₹• ₹

,

		Anna de la companya d		-	-		
		চক্রবন্তী ;		र्श्व	পঁতি	वश्व	49.4)
পৃষ্ঠা	পঁক্তি	ৰণ্ডৱ	75	25-0	. : •	न्नवर	707
. 22			4	>95 -	9 1	ं ज्ञांथर	कार्सिः
₹€	9	् क र्ज र	क्रम्ग (क्रा अक्टेज्ज	२५१	•	Tex	英氧霉
	7			२२8		अविनार	भवी गाः
₹€		ধেল	<u> ८</u> थरमा	50F	¢	जिरमंदिशाकुछ :	বিশেকিখাত্ তং
88	7	च्हेराविनी	क्ट्रो । मैनिन	२०३	*	রাহিতত্বতা ৎ	শহিত খং
8 ¢		44	स पृष	२8२		সীত্যভার্থ:	শ্লীভাৰ্থ:
62	2.4	मानि जिर	नामि छः	₹8€	•	অহত	अंड्डम ।
٤٤	70	ৰত তত তত	इंड उड	२७३	3	রোহর্বণ	রোমহরণ
48	,	উদ্বাৎ প্ৰাণ্য	केषवानकाभा ः	२৮२	•	निशानित्रमञा ९	निगानियन्छा ९
७•	¢	প্ৰকাশাৰৱে	এ কাশাস্ত্রেণ	3.4	¢	क्र भविद्यान्य ।	ক্লপবিশেষ ণং
65	۵	গৃহীশীং	भृ हिनीः	070	ેર	ৰৱা তস্যা	रवा छन्।
७२	۵	শি ত্তাত্ত	নি 'ত্যত্ত	(५०)	ર	প্ৰকৃতভাৎ	প্ৰাৰ্ডৰাৎ
૭ ૭)	निक:	शिकर	૭૨૨	۵	নভানৌকিকেনৃতি	শতা শৌকিকেভি
9•	9	ম ণ্ডি	রিভি	৩২৪		मृ ःमडि	मृतम् हि
b •	•	শাৰ্ক্বিণিক্যে ত্তি	अप्रसर्गितक) रविक	990	>	মনপুসহি ত ং	মূনহুসং হিতং
				201-	>	मुन्नधी छि	मज़्री छि
b 0	3	্ৰাঙ্মনস সংলেষ	वां ध्यनः जः स्थाव	902	ર	মক্তিমেৰ	म् कि टम्
40	9	ৰুলং তত্ত্বেন	चन खरचन	995	4	र् किवनान्	उक्त मान्
22	৬	ৰতো	क् छ .	201	>•	शैगानि	रो नानि
۵۵	ъ	হাদাইজ	इ श्नादेख ्	989	•	महाना कि	नक्ताना । नक्तानि
2.8	6	গতোপি তভোগ	গতোপি তরিকটা	386	¢	७ १५	च्छ्या। प खटक्
		ভন্নিকট		945	>	विवध मःकन्नत्मन	विविध मर्कन्नता
> • 9	•	পিভাস্থরেণ	পীতাৰৱেণ	948	>	pinat	ठान नः
> ₹•	9	তথভূত:	তথাভূত	1069	•	क्षारमञ्बद्धाः ।	क्षांत्मव ब्रङ्ख
252	₹	मक ्ब	म र्फटन	26%	ર	চরিভবস্তাক্তা	চৰ্ষিতবন্তাক।
३ २८	٩	জান্ধ ো	- ভাষ্মণো	093	ť	ৰৌ ভগৌ	(को छाटगो
>२१	b	র শৃত্ব	রস ত্¶	9 56	9	উকান্ত্	
202	9	बटनकार्थः ॥	वरमञ्जूषः ॥२	949	•	य। प्रतिव	উभूकार विभिनिव
252	y	দ্যোতিতং ॥২	ন্যোত্যথ: । ন্যোতিত: ।	360	>	ব ভাত্মবৃদ্ধি	
				୬৯୩		•	यगाच्चव्किः
202	•	পুতেন	পুতেন	239		ৰক্তুপদ্মা	পদ্ম বস্ত্ৰ
787	8	ভগবহুক্তিত্বাৎ	ভগৰছকিৰাং		b	गणां तत्र	न न्यानयः
> 6 >	2	বিপরার্দ্ধ সংজ্ঞং	विभवाद मःकः	640	8	मित्रखनः कर्ष	নিরস্তর কর্ম
১ ৫७	•	শা রি ডা ব	আৰিডাৰ	955	۳	ৰীবা শ্ৰেষ্ঠা	कीवाः ध्यक्ती
५ ५	۵	वज्ञानतः	रक्षानमः			ততোপ্যপরং	তভোপ্যপন্ন:
১৬৯	9	অমূপন(ভেন	অমুপালস্তেন	889	>	শাভূদেহা ৰীৰ	माकूरमं हाधीन
>9•	•	'ৰবাহ্ছদেতি	ব্যুহ্ছেলেডি	888	ર	হত ইতি	স্ত ইতি
५ १२	•	विशासन्	तिकात्रश्रम् - विकासम्	84.	ર	टे ई नावकूथः	रेबकूर्श्वनाथः
> 9२	۵	रित्रगारका	रित्रगाटका वित्रगाटका				
				1			
98	.	পূৰ্ব ক্ৰিয়তে	পূर्तः किश्रक			-	
39 4 -	V	नावार्च ्	ইভি শাৰাৰ				
18	8	পুৰোৎপটত্ত	পুৰে। ৭ প ৈ				

	4	ভাবা।		र्शि	পঁক্তি	·464.	. 64
পৃষ্ঠা	পঁক্তি	464	47	205		म निগ ণ	ু মুনিগণ
۶۶	22	स्टेना	र्देश्य	\$45	>>	भारा .	फारा
8.	ર	टेमव्यटप्रम	देवत्वरतत्र 🛷 📑	500	4 ,7	चत्रकर	**** ********************************
5.	ล	मस्त्रीनी	परीयगी	209-	3	' পরিভাগ	পরিভ্যাগ
47	 be	७ शत्रारमत्र	क्षत्रवादनज	101	•	थत्राथती	ं धत्राधात्री
4:0	ŧ	অপনাকে	वांशनांदक	289	٩,	ष्टक	बूटक.
69	٦	শহাত্মের	মাহাত্যোগ	₹8#	2	वाका रत	अ कार्
		ক্ রিভেছে	করিতে ছ	₹€•	•	« শিরাপরাধ	নিরপরাধ
()	,	क्षत्रा विविद्य	জ্বরাবদ্বির	262	ŧ	ুআণাদ	অপাক
24	ર		-ntmatfin	20%	W.	["] ৰ্লি ল	विन .
p •	•		्र आग्यात्य व्यक्तिस्य	२७३	4	नीनांदरकान	ं नीनावरनाक
bb	٠, ٢	वाक्रियाक		२४१	• •	क्वद	ক্রম
5,5	2	ব্যক্তিৰেকে	बुक्तिदत्र क	224	3.	वरम	वर्षम
৩২	8	নারারণ	নারারণ	9.5	v	বিশি ষ	বিশ্বস
9 6'	> 5	সৰংকুষাদি	লনৎকুমারাদি	979	8	ভাষতা	
8 २	9	সহর্ত্ত	ब्रूड	•	-		জামাতা
98	*	সাবান	সাৰন	ota	9	अ पन स त	ভগন জর
3 4	4	সভ্যবুপের	<u> তেতাব্</u> গের	99.	1	रहे क	হ উক
96	¢	কৰাপুসাৰে	কৰ্মান্ত্ৰানে	998	9	भक्	শৰ্
63		আহুৰ্গণায়	चार् र्गंपनात्र	0) 7	ર	পরে	পারে
14	9	নীগণে হিত	নীললোহিড	980	8	खार्थ	প্রাপ্ত
68	4	जेकार र्थ	केकाबारर्थ	8 र 8	•	ক্ষণের ক্যার	কুপের ক্রায়
696	•	ब दां र	बन्नार				
> *<	•	षमि	পাৰি				
१७५	4	অনশাম্ভ ৰ	লানদাহত ৰ	1		•	

শ্ৰীমভাৰণতম্।

তৃতীয়ক্তঃ।

--

विधायां गांगः।

প্রিশুক উবার।

এবমেতৎ পুরা পৃষ্টো সৈত্রেয়ো ভর্গবান কিল। করে। বনং প্রবিষ্টেন ত্যক্তবা সগৃহমূদ্ধিবং ॥ ১

अध्यक्षामा

তৃতীয়েতু ৰয়জিংশদধ্যায়েঃ সর্গবর্ণনং। ঈশেজ্যা শুণক্ষোভাৎ সর্গো ব্রহাওস্কুবং। তত্ততু প্রথমেইগ্যায়ে ব্রচ্ন্ হিছা গতা-যুবং। নির্গতস্যোদ্ধবনাদৌ স্থানঃ ক্ষতুক্চাতে। অথ তৃতীয়ত্ত্ব ব্যাথা। তগব্দুক্ষসংশ্রোক্তং সংক্ষিপ্তং বৃথিতং পুরা। প্রাহ্ন ভাগবতং শেষপ্রোক্তং বিভয়তঃ পুনঃ । ।

বেধাহি ভাগবতসংপ্রদার প্রবৃত্তি:। একতঃ সংক্ষেপতঃ শ্রীনারারণাবুদ্ধ নারদাদি বাবেণ। অভতত্ব বিতরতঃ শেবাৎ সনৎ কুমার সাংখ্যারনাদি বাবেণ। তত্ত্ব বিতরতঃ শেবাৎ সনৎ কুমার সাংখ্যারনাদি বাবেণ। তত্ত্ব বিভাগবতঃ নির্মাতি ত্বেল বৃদ্ধ নারদান সংক্ষেতঃ চতুঃলোক্যা শ্রীভাগবতঃ নির্মাতি ত্বেল বৃদ্ধ নারদান সবাবেন দশ লক্ষণ তরা কিঞ্চিবিত্তরেশোক্তং। তবে শেবোক্তমিতিবিত্তরতো বক্ষুং তৃতীরাদ্যারভঃ। অত তৃতীরে প্রধান ক্ষত্তির প্রাইন তিবিত্তর সক্ষম শত্তির খ্যাবৈত্ত । তবে বিস্মাত্র বিভাগবৈদ্ধ সংগ্রাহারতারঃ। তত্ত্ব বিস্মাত্র বিভাগবৈদ্ধ স্থাবিত্ত । স্বিদ্ধান স্থাবিত্ত বিশ্ব ক্ষতি নার্মান সংগ্রাহার ত্বিত্ত বিশ্ব ক্ষতি নার্মান ক্ষতি নার্মান ক্ষতি নার্মান ক্ষতি নার্মান ক্ষতি নার্মান ক্ষতি নার্মান ক্ষতি ক্ষতি ক্ষতি ক্ষতি নার্মান ক্ষতি ক্ষতি ক্ষতি ক্ষতি ক্ষতি ক্ষতি বিতর বিভাগবিত্ত প্রক্ষিত বিত্ত বিশ্ব বিতর বিশ্ব বিতর বিশ্ব বিতর বিশ্ব বিতর বিশ্ব বিতর বিশ্ব বিতর বিশ্ব বি

ক্রেমসন্দর্ভ:।

শ্রীমজাধাগোবিলাচরণকম্বেভা নমঃ। তৃতীরক্রমসলর্ভে সম্বর্ভাগাং সমাস্কৃতিঃ। জিগতে য্রিদেশেন স মেহ্মজ-

विविधनां पठळ वस्ती।

তৃতীয়স্কৰে ত্রয়ত্রিংশদধ্যায়ে, ত্রকা হইতে সমুৎপদ সৃষ্টির বর্ণন, তদ্মধ্যে প্রথমাধ্যায়ে গতায়ু: বদ্ধ্ বাশ্বব পরিত্যাপ পূর্বৈক নির্পত বিচ্নের সহিত কথোপকধন ॥ • ॥

শুক্তিক অরণ্যে প্রবেশ করিয়া ভগবান্ মৈত্রের মুদিকে এই বিষয়ই জিল্পানা করিয়াছিলেন ॥ ১ ॥

যুৱা অন্ন: মন্ত্ৰক্তৰো ভগবানবিলেশ্বন । পো কৰেন্দ্ৰ গৃহং ছিলা প্ৰবিবেশাত্মগাৎকৃতং ॥ ২ ॥ জীবাজোবাচ ॥

কৃত্র ক্ষতুর্ভগবতা নৈত্রেরণাস সঙ্গম:। কদা বা সহ সম্বাদ এতমর্ণর নঃ প্রভো । ৩। নহারার্থোদয়ন্তম্ম বিহুরস্যামসাম্মন:। তামিন্ বরীয়সি প্রশ্নঃ সাধ্বাদে।পরংহিতঃ। জ্ঞীসূত উবাচ।

স এবম্বিবর্যোহয়ং পৃষ্টো রাজ্ঞাপরীকিতা। প্রত্যাহ তং হ্রবছবিৎ প্রীতাত্মা জায়তানি তি। ৪।

विश्ववामी।

কিঞাতিরাবাং ত্যাগানর্হমিত্যাহ ববৈ প্রসিদ্ধং গৃহং বঃ পাওবানাং মন্ত্রকং দৌত্যকর্তা সন্ অরং শীক্তকঃ বৃদ্ধিসরিধানাদযমিতি
নির্দেশ:। পৌরবেলে। ছর্বোধনন্তসা গৃহং হিশা অনাছত এব প্রক্রিবশ জেত্র হেতৃ:। আয়ুসাং কৃতং আজীরবেল গৃহীতং । ২ ।
কৃত্র কর্ট্র ত্রেবেণ সঙ্গম আস বভূব । ও ।

ক্ষা ৰাজ্য অনুষ্ঠাৰ বিষয়ে বিষয়ে বৰা বাজধা ভূতো ন ভবতি। সাধুবাদেন সভামস্মোদনেন উপবৃংহিতঃ স্থান্থিত । বৰা সাথে। বৈবিষয়ে ৰাদেনোৱাৰেণ সাধিত ইতাৰ্থ: ॥ ৪ ॥

क्रमम्बर्धः ।

रायकाल रमाञ्चदमिकि हि०ळ्थः।२।

তত্ৰ শৌনকৰজাৰাপি তং কপায়া উৎকঠিয়া তাং বিশেষতঃ পৃক্তি কুৰেতি। কুত্ৰ কৰা সঙ্গম আসীৎ সংবাদে বা তত্ত্ব কুষেতি কমিন্ স্থানে বিবৰে বেতি গমাং। এতবিভি তদেতভ্ৰয়মিতাৰ্থ: ১ ০ ৪ ৪ ৫ ৪ ৬ ৪ ৭ ৪

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

কিংগ তম্ম তাৰ্হং তজ্ঞিগমিষতোভাতীপেল। সংক্ৰোণাতি শ্ৰেষ্ঠং তাাগানইং। তদপি আতৃদত্তেন স্কাণেনৈৰ ততাা-জেড়াছে বদিতি বৈ নিশ্চিতং বদগৃহং বা পাওবানাং সম্ভবং দ্তাক্ষী সন্ অয়ং শ্ৰীকৃষ্ণঃ বৃদ্ধিসনিধানাদ্যমিতিনিদেশঃ। পৌর-বেজ ভাগা স্বোধন অনাহত এব প্ৰবিৰেশ তল হেডুং আক্সানাং কৃত্যাগুলিছেন স্বীকৃতং ॥ ২ ॥ আসু বজুৰ ॥ ৩ ॥

বরীবসি শ্রেকা। অরস্যার্থসোদ্ধো বৃদ্ধাৎ তথাজ্তো ন ভবতি সাধুবাদেন সতামস্ক্রোদ্দেন উপবৃংহিতঃ সৃষ্টির । বৃষ্

মহারাজ! পাশুবদিগের গৃহ অভিশয় প্রশংসনীয়, ভাহা পরিভ্যাগ করিবার যোগ্য ছিলনা, যে হৈছু অথিলেশর ভগবান ভাঁহাদিগের দোভ্যকর্তা হইয়া পোরবেন্দ্র প্র্যোধনের গৃহ পরিভ্যাগ পূর্বক আহ্বান না করিতে করিতে অয়ং আদিয়া ভাহাতে প্রবেশ করিয়াছিলেন, ফলতঃ ভগবান পাশুবদিগের গৃহকে আপনার গৃহ বলিয়াই জানিভেন, এজন্য বিনা আহ্বানেও স্বয়ং আদিয়া প্রবিষ্ট হয়েন, অভএব ঐ গৃহ কথন ভ্যাগ যোগ্য হইতে পারে না, বিছুর বন্ধু বিয়োগ দর্শন ভয়ে ভাহা পরিভ্যাগ করিয়া গিয়া ছিলেন ॥ ২ ॥

রাছা পরীক্ষিৎ জিজাদা করিলেন, প্রভো! ভগবান বৈজ্ঞেয় মুনির দহিত মহাদ্ধা ত্রিছরের সমাগ্র কোথায় হয় ? এবং কোন সময়েই বা তাঁহার সহিত সম্বাদ স্পতি কথোপকথন হইরাছিল ? ভাহা বর্ণন করেন॥ ও॥

হে মুনে ! বিত্র অতি মহাস্থা ছিলেন, নৈত্রয়কে সে য়ে প্রস্ন করিয়াছিলের সাধু পুরুষদিগের অমুনোদন ঘারা তাহা সম্বর্ধিত হইয়াছে, বোধ করি তাহা হইতে অলার্থের উদর হইবে না, গুরুতর বিষয় প্রকাশ পাইতে পারিবে, অভ্যাব তৎসমুদায় বিষতে সাম্ভা হটক ॥ ৪ ॥

শ্রীশুক উবাচ।

যদা তুরাজা সহতানসাধুন পুষ্ণমধর্মেণ বিনক্তদুষ্টি:।

আতু ইবিষ্ঠতা হতান বিবন্ধন প্রেমান্ত্র লাকাভবরে দিনাই । ৫ ॥

যদা সভায়াং ক্রুদেবদেব্যাঃ কেশাভিমর্যং হাতকর্ম গর্হং।

নবারয়ামাস নৃপঃ সুবায়াঃ স্বাক্তম র্রস্ত্যাঃ ক্চকুকুমানি ॥ ৬ ॥

দূতে হুধর্মেণ জিতস্য সাধোঃ সত্যাবলম্বত বনং গততা।

ন যাচতেহিদাং সময়েন দায়ং তমোজুষাণো যদজাতশত্রোঃ ॥ ৭ ॥

यनार পार्थश्विर्ठः महाग्राः जगन् क अर्धान क शान कुष्कः।

वी धत्रवाभी।

ভ্যাগানর্থ্যাপি পৃত্ত ত্যাপে হেডুছেন কৌরবাপরাধানার প্রেড্যারি রুপঞ্জিঃ এতেবাঞ্চ তলা ক্ষতা অবাদিত্যেকাদশে কিয়া সম্বন্ধঃ। যবিষ্ঠত কনিষ্ঠত পাণ্ডোঃ বিবন্ধ নিজ্হীনান্ ৫ ৫ ॥

কুরুদেব উ মুধিষ্টিরত দেব্যা জৌপদ্যা আত্মন: সুবারা: বীবৈরতৈ সক্ত কুছুমানি রিপুত্রীণাং বা তৎ ভত্বিধেন হরস্তা: ॥ ৬ ॥

সভাবেশয়ত সভাবেশয়ত। বনাং প্রভাগতা সময়েন পূর্বকৃত্তেন দারং ভাগং যাচমানত যং যদা ন অদাং তম: মোহং ভূষণাণঃ ॥ ৭ ॥

যানিচ বচনানি পুংসাং ভীমাদীনাং অমৃতারনানি অমৃত্রাবীণি। রালা বৃত্রাষ্ট্র: চুর্ব্যোধনো বা উরু বহু ন মেনে। ক্রতো

क्रयममर्खः।

বদেতি। অমৃতারনানীত্যত্র অমৃতাবহানীতি ক্তেত্যত্র হৃতেতি চিংকুধ:।৮।৯।১০।১১।১২।১০।১৪।

बीवियनाथहक्कवछी ।

যদেত্যাদীনাং তদা সক্ষতা অয়াদিত্যেকাদশহুয়া ক্রিয়মা সহক্ষা বিনষ্টে দৃষ্টা নেকে দৃষ্টিজানিক যক্ত যবিষ্ঠক কনিষ্ঠক পাতেওঁ: বিবক্ষু পিতৃহীনান্ ় ৫ ঃ

कुक्रत्नवर्षम्का त्जोलनाः कृष्ठकृष्ट्रमानि चछ त्रिशृत्तीशाषा তত्তप्रियम इत्रद्धा। ইতি চতুর্থতিশরোঞ্জিরুৎপ্রেকাচ বাঞ্জিল। ৬॥ বনাৎ প্রত্যাগতস্য সময়েন পূর্বাকৃতেন দায়ং ভাগং যাচমান্স্য যং যদা ॥ ৭॥

পুংসাং তত্তকানাং ভীঘাদীনাং রাজা প্রতরাষ্ট্রো হুর্যোধনো বা উরু বহু ন মেনে তত্ত্ব ক্রতেতি ন সুধকীর্ত্তি ধর্মাদিকরঃ

সূত কহিলেন, ভগবান্ শুকদেব শ্বৰ্জ, সমন্ত বিষয়ই জানিতেন, রাজা কর্ত্ব ঐ প্রকারে জিজানিত হইয়া প্রীতি প্রকাশ পূর্বকি বলিলেন মহারাজ! প্রবণ করুন। যখন রাজা ধ্রুরাষ্ট্র অধর্মে নফ দৃষ্টি হইয়া আপনার অসাধু পুত্রদিগের পোষণ করত কনিষ্ঠ ভাতা পাণ্ডুর অনাথ সন্তানদিগকে জতুগৃহে প্রবেশ করাইয়া দগ্ধ করিলেন॥ ৫॥

যখন তিনি আপনার পুত্র ছংশাসনকে কুরুদেবদেবী দ্রোপদীর কেশাকর্ষণ করিয়া সভাতে আনিতে দেখিয়াও তাহার ঐ গর্হিত কর্ম নিবারণ করিলেন না, দ্রোপদী অফ্য যে কোন স্ত্রী নহেন, মহারাজ মুধিন্তিরের মহিষী এবং ঐ ধৃতরাষ্ট্রের সুযা, ছংশাসনের অভিমর্বণে তাঁহার নয়ন মুগল হইতে এত অঞ্চপাত ইইয়াছিল যে, তদ্বারা বক্ষঃস্থলম্থ কুরুম সকল ধোত হইয়া গিয়াছিল অতএব ধৃতরাষ্ট্রের ঐ কর্ম উপেক্ষার যোগ্য ছিল না ॥ ৬ ॥

অপর অজাতশক্ত রাজা মুখিন্তির দৃতেকীড়ায় অধর্মতঃ পরাজিত হইয়াও সত্যাবলম্বন পূর্বক বনবাস স্বীকার কনিয়া পরে অরণ্য হইতে প্রত্যাগমনানন্তর পূর্বকৃত প্রতিজ্ঞামুসারে আপনার ভাগ প্রার্থনা করিলে যথন ঐ শুতরাষ্ট্র নোহ বশতঃ তাঁহাকে তদীয় প্রাপ্য ভাগ প্রদান করিলেন না ॥ ৭ ॥ আর জগদাকু প্রাকৃষ্ণ অর্জন কর্তৃক প্রেরিত হইমা মুর্য্যোধনের সভায় গমন পূর্বক যে যে বাক্য .

'ন তানি পুংসাময়তারনানি রাজোরু মেনে ক্ষতপুণালেশঃ ॥ ৮ ॥

যদোপহুতো ভবনং প্রবিষ্টো মন্ত্রার পৃষ্টঃ কিল প্রবিশ্বন ।

অথাহ তম্মন্ত্রদৃশাং বরীয়ান্ যমন্ত্রিণো বৈত্রিকং বদন্তি ॥ ৯ ॥

অজাতশ্রোঃ প্রতিষ্চহ দারং তিতিক্ষতো তুর্বিষহং তবাগঃ।

সহাসুজো যত্র রকোদরাহিঃ শ্বসনুষ। যত্ত্বমলং বিভেষি ॥ ১০ ॥

পার্থাংস্ত দেবো ভগবান্ মুকুন্দো গৃহীতবান্ সক্ষিতিদেবদেবঃ।

क्षेत्रवामी।

নটঃ পুণ্লেশে। বস্য সং ন স্থ কীঠি ধ সাদি হেড়ুং কিছ রাজাগ্রাপ্তিমাত হেড়ুং পুণ্লেশ এবাসীৎ। ততাপি নটছাৎ ন আদৃত বানিতার্থঃ ॥ ৮ ॥

ইদানীং বিহুরত্তৈব ক্বতং পরাভবং দর্শনতি বড়ভি: যদা পুর্বজ্ঞান ধৃতরাষ্ট্রেণ মন্ত্রাক্রেণছুডোইছগুঁহং প্রবিষ্টো মন্ত্রণান্তরং ভদাহ। কিং তৎ মন্ত্রিণা যবৈছ্যিকং বিহুরবাক্যমিতি প্রসিদ্ধং বদস্তি ॥ ৯ ॥

তদেবার অলাতশত্রোরিতি ত্রিভিঃ। তব আগং অপরাধং সহসানস্ত দারং প্রতিযক্ত দেবি। যত্রাগরাধে অর্টলঃ সহ বর্ত্ত-মানো ব্রেগার রূপোহহিঃ ক্রোধেন শসন বর্ততে। যক্ষসাবং অলমতার্থং বিভেষি॥ ১০॥

মম তাদৃশা বহব: পুলা: সন্তীতি গৰ্কং মা কৃথা ইত্যাহ। পাৰ্থাংশ্ব মুকুৰ আত্মীয়বেন গৃহীতবান্। সচ দেব:। তথাপি অগ-ৰাল্ভ প্ৰাকৃত:। কিঞ্। সহ কি ভিদেইবৰ্বিইপ্ৰদে বৈশ্চ ইক্ৰাদিভিক্ৰিনান: ম্আসেন কৃষ্ণভট্তৰ বিপ্ৰা দেবাণ্চ ইত্যৰ্থ:।

हो।विषनाषठकवादी ।

किञ्ज ताकाळागरका यः भूगाराम आभी उष्टां नि नहेवानि छ। ४: ॥ ৮ ॥

ইলানীং বিহুরত্মৈব প্রাভবং তৎকৃতং দর্শরতি বড্তিঃ। অধানস্তরং বিহুরঃ তৎ আছে কিং মন্ত্রিশোহদ্যাপি বং বৈল্রিকং বিহুরবাকামিতি প্রাসিকং বদস্কি ॥ ৯ ॥

তদেবাহ অজাতেতি যং যত্ত আগদি বৃকোদরক্ষোহছিঃ ক্রোদেন খদন্বর্ত্তে। যৎ যক্ষাৎ ওমলমতার্থং বিভেষি ॥ ১০ ॥ সংপ্রতি অন্যদপ্রাহৃতং তেরাং মহাবদাধিকাং শৃণিুভাহি পার্থাংন্ধিতি। আত্মীয়ত্ত্বে গৃহীতবান্স চ দেবং তত্তাপি ভগবান্

কহিলেন ভীম প্রভৃতির কর্ণে দে সকল অমৃত আবি হইয়াছিল, কিন্তু রাজা ধ্তরাষ্ট্রের পুণ্যক্ষীণ হওমাতে, ত্বিনি যথন তাহা বহু করিয়া মানিলেন না, অর্থাৎ তাঁহার রাজ্য প্রাপ্তির হেড়ু যে পুণ্য লেশ ছিল, তাহাও বিনক্ট হওয়াতে যথন শ্রীক্ষেরে বাক্যে আদর করিলেন না ॥ ৮॥

অপিচ অগ্রন্থ ধৃতরাষ্ট্র মন্ত্রণার্থ আহ্বান করিলে যথন বিছুর আপনি গৃহ মধ্যে প্রবেশ করিয়া জ্যেষ্ঠের প্রশ্নে দেই মন্ত্রণা কহিলেন, মন্ত্রবিশারদেরা সচরাচর যাহাকে বিছুর বাক্য বলিয়া থাকেন ॥৯

বিহুরের মন্ত্রণা এই, তিনি কহিয়াছিলেন মহারাজ। অজাতশক্র যুধিষ্ঠির আপনকার ত্রবিসহ অপরাধ সহ্য করিতেছেন, তাঁহার প্রাণ্য অংশ তাঁহাকে প্রদান করুন। হে রাজন্। আপনি যাহাকে অতিশয় ভয় করেন সেই ভীম রূপ বিষধর আপনকার ঐ অপরাধে অমুজগণের সহিত কুছে হইয়া স্বাদা নিশ্বাদ পরিত্যাগ করিতেছে, তাহার কোপ বৃদ্ধি করান উচিত হয় না। ১০॥

হে মহারাজ! 'আমারও অনেক পুত্র আছে' ইহা বলিয়া গর্ব করিবেন না, ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ কুন্তীতনয়দিগকে আত্মীয়ভাবে অস্পাকার করিয়াছেন, তিনি মসুষ্য নহেন, তিনি দেবঁতা এবং ষয়ং ভগবান, আর তিনি দক্ষিতিদেবদেব অর্থাৎ ব্রাহ্মণ এবং দেবর্ন্দের সহিত সর্বাদা বর্তমান, ফলতঃ যেখানে প্রীকৃষ্ণ, দেই ছানই ব্রাহ্মণ এবং দেবগণ অবছান করেন। মহারাজ! তিনি অভ্যত্র পত্ত নহেন, নিজ পুরী মারকাতেই অবস্থিত আছেন, আর তিনি যহুদেবদিগের পুরানীয়, ইহাতে যে পক্ষে

अन्दाभरणम् ।

আতে অপুর্যাং যতুদেবদেবো বিনির্জিতাশেষ নৃদেবদেব: ॥ >> ॥

সএষ দোষ: পুরুষদিভাতে গৃহান্ প্রবিক্তো বরপত্যমতা।
পুঞাসি কৃষ্ণাবিমুখো গভঞ্জী ভাজাখহদৈবং কুরুকৌপ্রনায় ॥ ১২ ॥

विगदयामी।

সচ অপুর্যামের অধ্যাতে নখনাত গতঃ। কিঞ্চ বছ্বেবানাং দেবঃ পুজাঃ। বডোছসৌ ক্লাঃ ভততের বছপ্রবরা ইভার্থঃ। কিঞ্চ ন্দেবেরু মণ্ডলেখরেরু দীবাজি প্রকাশতে ইতি ন্বেবদেবা রাজানঃ বিনির্জিতা অপেবা ন্দেবদেবা যেন যভোহসৌ ভততের সর্কে বাজানঃ অভঃ পার্থানাং দারং দেহীতি । ১১ ।

ছ্র্যোধনস্তর মনাত ইতি চেদত আহ দ এব মুর্জো দ্বোব এব গৃহান প্রবিষ্ট আছে। দোবছে হেডু:। পুরুষ বিট্ প্রীরক্ষ-বেষা। কোহসৌ যং অমপতামত্যা পৃক্ষাদি। নত্বপতামদৌ। নপততোত্মাদিতি ক্লতাং প্রাহ:। গঙা প্রিয়াং দ অমিত্যা কোশতি। অত এনং অশৈবং অমলনং আশু ভাজ। নমু কৃষ্ণং পুস্তান্ত্যান্ত্যা। তত্রাহ কুলত কৌশলায়। তালেদেকং কুল-ভার্ষ ইতি নাায়াং॥ ২২॥

वी विचनानहक्वा ।

ভকাপি ক্ষিভিনেবৈথিপ্রৈদৈ বৈশ্চ সহিতঃ। তৎ পক্ষএৰ বিশ্বা দেবাশেভি ভাবঃ। ভকাপি স্পৃথ্যাদেবাতে নত্ন্যক গভঃ।
যত্দেবা যত্প্রবা দেবা ইব বলিষ্ঠা ৰস্বাৎ সঃ। যকাশে তিক্রব যত্প্রবীরা ইভার্থঃ। কিঞ্চ তলৈয়ৰ বলং শৃণিত্যাহ বিনির্জিতা
অশেষা ন্দেবাঃ কংসক্ষরাস্কাদ্যো দেবাশ্চ বাল্যমারভৈত্ব বক্ষেক্রবরুণক্ষ্যাদ্যো যেন সঃ। অভঃ পার্থানাং দারং দেহি যদ্যাস্থানো ভন্তানিছেসীভি ভাবঃ ॥ ১১ ॥

মংপুলো ছুর্যোধনোহতা বিপ্রতিপংকতে ইতি চেন্তআহ স্থাৰ ইতি। স্বংকাটিলয়ক্ত ছুক্কড্লান্ত ইত্যর্থ:। দোবো মূর্বএব যতঃ পুক্ষং পর্মেখরং স্থেষ্টি ভ্যাপি ভব বাছান গৃহান্ অভ্যন্তরান মনোবৃদ্ধাদিরপানপি প্রবিষ্ট এবান্তে ভ্যাপি ভব বাছান গৃহান্ অভ্যন্তরান মনোবৃদ্ধাদিরপানপি প্রবিষ্ট এবান্তে ভ্যাপি ভব বাছান গৃহান্ অভ্যন্তরান মনোবৃদ্ধাদিরপানপি প্রবিদ্ধান ভ্যানির্দ্ধান ক্ষাবিম্ধাং গভলীরিতি লক্ষীন্তব গৃহেভ্যো নিঃস্ভ্য গতেতি লানীহি। নমু ভহি কোহে প্রতীকারন্তরাহ আভ শীল্রমন্থন স্কানের তাল নমু ময়া পিত্রা পুক্রক ভ্যাগে মংকুলে কলভঃ ভাব ভ্রাহ। কুল্লৈব কৌশলায় ভ্যানেদেকং কুল্লার্থ ইতি ন্যায়াং। অন্যথা কুল্মের স্বর্ধ তে নক্ষাতীতি ভাবঃ । ২২ ॥

তিনি থাকিবেন বিক্রমশালি যাদবেরাও দেই পক অবলম্বন করিবেন, অপর তিনি দকল নরপালকেই জয় করিয়াছেন, ইহাতে দকলেই তাঁহার বশু, তিনি যে পক আশ্রয় করিবেন নৃপতিগণ দেই পাকেই থাকিবে, অতএব যদি আপনকার মঙ্গল আকাজ্যা আকে তবে পাওবদিগের প্রাপ্য প্রাণ প্রদান কর্মন ॥ ১১॥

মহারাজ। যদি বলেন দুর্য্যোধন মানে না তবে বলি প্রেবণ করণ। ঐ দুর্য্যোধনই ত আপনকার মূর্ত্তিমান্ লোষ, গৃহে প্রবিষ্ট হইয়া রহিয়াছে, দে পরম পুরুষ প্রীক্ষেত্র বেষ করে এ নিমিত্র তাহাকে দোষ স্থরপ বলিতেছি। মহারাজ। ও কে? আপনি প্রীক্ষেত্র বিম্থ হইয়া উহাকে অপত্য জ্ঞানে পোষণ করিতেছেন? ও ত আপনকার অপত্য নয়, যাহা হইতে পতন না হয় তাহাকেই অপত্য বলে, ও ত ভ্রূপে নহে, বরং আপনাকে পত্তিত করিবার হেতু, আমি দেখিতেছি আপনকার গৃহ হইতে লক্ষ্মী বহির্গতা হইয়াছেন, এখনও যদি মঙ্গল প্রার্থনা ধাকে, তবে কুলের কুশলার্থে ঐ অমঙ্গল টাকে পরিত্যাগ কর্মন॥ ১২॥

ইত্যুচিবাং শুত্র স্থযোধনেন প্রবৃদ্ধকোপক্ষুরিতাধরেণ।
অসৎকৃতঃ সং স্পৃহনীয়শীলঃ ক্ষা সুক্রিক্সসোবলেন ॥ ১৩ ॥
ক এনমত্রোপজ্হাব জিন্ধাং দাস্যাঃ ইতং, যুদ্ধনিবে পুষ্টঃ।
তিমান্ প্রতীপঃ পরকৃত্য আস্তে নির্বাহ্যতামাশু পুরাচ্ছু সানঃ ॥ ১৪ ॥
স ইথমত্যুল্লাকর্ণবাণে ভাতিঃ পুরোম্মান্ত তাড়িতোপি।

श्रीभद्रश्रामी।

ইভাচিবান্ এবনুকেবান্ অসৌ কাভা বিছর:। সভাং শৃহণীয়ং শীলং যদাস:। কৈৰ্ছঃশাসন শকুনি সহিভেন ছুৰ্ব্যাধনেন। অসং কৃতঃ ভিরস্কঃ ৮১৩ ॥

িরক্রেমাত ক ইতি। দাসীস্তো জ্বাহ্বানানর্হ:। জিক্ষ্টেল: জিক্তামাত্যক্ত বলিনা অলেন পুই: ভবিলেব প্রতীপ: গুভিক্ল: পরেষাং কার্য্যে বর্তিত। অতঃ পুর।রিব্রিভিতাং খদান: খদন্ জীবনমাতাবশেষ ইভার্থ: শাশান ইতি পাঠে শাশান-বদ্মজ্ল:। স্ক্রিনাদি গুহীয়া নির্মিনোতামিতার্থ: ॥ ১৪ ॥

অকু।বংশিং কর্নোর বিশ্বর প্রবিশ্ভিঃ প্রক্ষর। কৈয়া মর্ম্ম আজিতে।পি গতবার্থা। তত্ত্তে মারাং উরু বহুমানর্ম আছে। মারারামাহাত্ত্যমিতি। তামের তত্ত্তেত্ং মন্যমানা তরিঃসারণাৎ পূর্কং অয়মের অয়াৎ নির্জাম। কিং রুতা এতে নুনং মরিচাতি

ক্রমসন্দর্ভ:।

স্থানিতাত্র স্থাদিতি চিৎস্থাঃ ॥ ১৫ ॥

चै विचनाथ ठक व**र्डो**ं।

ইহাচিবান্ এবস্ক্রবান্ বিছ্লঃ হ্যোপনেন অসংক্তঃ তিরস্কৃতঃ কর্ণছঃশাসন শকুনি সহিতেন ॥ ১০ ॥

ভিরম্বার্মেবাহ কং এনমত্র মহারাজ্যদিশি আজ্হাবেতি আহ্বানানর্হমিতি ভাবং তত্ত্ব দাতাঃ স্থতমিতি জন্মনৈব ছইং। জিলং কৃটিলমিতি কর্মণাপি কোটিল্যনাহ। যবলিনা বদতেনারেন পুইস্তামিরেব স্বস্থামিনি প্রতীপং প্রতিকৃলঃ প্রেষাং শত্রুণাং ক্রেডা কার্যো বর্ত্তে। অতোগ্যমত্র স্থিচঃ সর্ব্যেবাস্থকুলং নাশ্রিভুং যতিষ্যত ইতি ভাবং। নির্ব্যান্ততাং অসমিতো নিজাযাতাং যং কোহত্র্যদীয়ো বর্ত্তিত তেনেতি ভাবং। ত্রাপ্যান্ত মা বিলম্বেন তথাপি স্থানান স্থাসমাত্রাবিশিষ্ট ইতি স্বত্বত্ত্রতার্মিতি ভাবং। আশান ইতি পাঠে আশানবদ্যস্পলারং কেনাস্কাহ্যপ্রে আনীতো যো মানেবাস্কাং ব্রিড। অত আশুনিক্ষাত্রামন্থা রাজপ্রনিদং শাশান্মেব কৰিষ্যতীতি ভাবং। ১৪॥

স ইথমতাৰণ কৰ্ণবালৈঃ অত্যবলৈঃ প্ৰুষ্বাক্যেঃ কৰ্মোৰ।লৈৱিব প্ৰবিশা মৰ্গ্নহানেষু তাড়িত স্কলাপি লাতুঃ পুরঃ অবে কিমেবং

বিছর ধৃতরাষ্ট্রকে এই কথা বলিলে পাঁপালা ছুর্য্যোধন কোপে ক্ষুরিভাধর হইয়। কর্ণ, ছুঃশাসন ও শকুনির সহিত মিলিত হইল এবং যাঁহার স্থনভাব সাধুগণ স্পৃহা করিয়া থাকেন ভাঁহাকে সেই ছানেই তিরস্কার করিতে করিতে বলিতে লাগিল॥ ১৩॥

আরে। এই দাগীপুত্র জুরকে এখানে কে আহ্বান করিয়াছে? এ পাপাত্মা এতাদৃশ কুটিল, যাহার অমে জীবন ধারণ করিতেছে তাহারই প্রতিকূল হইয়া পরের কার্য্যে রত থাকে, অতএব ইহার জীবনমাত্রাবশেষ করিয়া এখনই পুর হইতে বাহির করিয়া দাও॥ ১৪॥

তথন তিনি হুর্য্যোধনাদির ঈদৃশী গুর্ব্ব জি উপস্থিত দেখিয়া মনে করিলেন ইহারা ত নিশ্চয় মরিবে তবে আর আমার ধনুতে প্রয়োজন কি ? ইহা মনে করিয়া আপনার ধনুকটা ভারে স্থাপন পূর্বক তাহারা বহিষ্কৃত করিয়া না দিতে দিতেই স্বয়ং নির্গত হইলেন। আতার সমক্ষে কর্ণিয়ে বাণবং

W.

স্বরং ধতুর্বারি নিধার মারাং গভন্যবোহরাক্তর মান্তরান: ॥ ১৫ ॥
স নির্গতঃ কোরবপুণালকো গঙ্গান্ধরাতীর্থপদঃ পদীনি।
অবাক্রমৎ পুণ্যচিকীর্যযোগ্যামধিতিতো বানি দহত্তমুর্তি: ॥ ১৬ ॥
পুরের পুণ্যোপবনাতি কৃঞ্জেষপক্তোয়ের সরিৎসরঃহ ।

बिश्वनाशे

কিং ধনুবেতি ত্বা বারি ধনুনি ধার। ব্যা ভীমাদিভিঃ স্পত্যাশ্বাভির্বোৎলাত ইতি মাশভিটেভি ধনুদি বানং । ১৫ ।

ভতো নিৰ্গতিস্য তীৰ্থটিন প্ৰকারমায় স ইতাইভি:। স গলাহবালিগতি: সন্ তীৰ্থং পাদৌ বস্য তস্য হরে: পদানি কেতাপি পুণা চিকীৰ্বয়া হ্বাক্রমং প্ৰত্যপদ্যত। কৌরবাণাং পুশ্যেন লব্ধ ইতি ভেবাং ভাগ্যয়েব ভেন রূপেণ গভ্যিতি স্চিতং। উর্ন্যাং বহুব মুর্ডি: ব্রহ্মক্রালানেক মুর্ডি: সন্ তীর্থণাং বানি অধিকার ত্বিতঃ দ্বানি ভানি ক্রাম ইত্যর্থঃ ৪ ১৬ ॥

পুণাননি বাস্থাপননাৰীনি তেবু কুঞাং লভাবি গুঢ়ং স্থানং স্পন্ধানি ভোৱানি বেবাং তেবু সরিৎ সরঃস্থাত তীৰ্থেষ্ আইডনেব্চ জনসন্ধাৰ্তঃ ১

অবাক্রবং অনুক্রেণ আপে। পুণ্যতিকীৰ্মা ডলুংসলপ্রার প্রিডেফ্রা। অভঃ সংবারপ্রন্যঃ সহসা আইক্ষ্রণি ন অগামেতি

পুরের অবোধাদির প্রসিদ্ধের ন বিদ্যাতে পদং পাশং বেভা তের পাশহত্ত্র তোরের। অনন্যঃ সর্বাত আফ্রিক্কুটাঃ в ১৭ ॥

धीविधनाशहक्वधीं।

ব্রবে ইত্যপাসুরক্তরতঃ কিঞ্ তাছিতোশি প্রবাধ: । ধন্যোসি ব্যর ছ্রোধন ধন্যোসি হয় মন সর্কা অশি ব্যথা নির্মাণিতা বিদিতো নিংসার্থ্যনাপ্স্য দূরে কচন তীর্থানির নির্মিরতয়া ছাদ্যতহজ্জনকে মনতাং তাজ্করতো মন কা বাবেতি সন্তর্মণাত ভাব: । অয়াং নির্মাণ অরমিতি তুইনৈ গোরণাং অরমের নিংসরণং ডক্রমিতি ভাব: । ধহুর্বারি নিধারেতি সংপ্রতি সর্মাং অর্থানিকমিণি তাজ্করতো বিবিক্তে ক্চিত্রপবিশ্য কৃষ্ণং ভবিষ্যুতো মন কিমনেন তুলিচ্ছেন ধন্ত বেতি তাব: । যয়া তীমানিতি: সক্ত্যাআভি: সহ বোংহত ইতি গাপোয়ং মাশক্তেভি ধর্নিধানং । মায়াং উক্ত মানয়ান: মানয়ির্মিত মারয়েরবাদীক্ত: প্র: সম্বাণি কৃষ্ণং ন পশ্রতি হয়া অহো মায়ামাহায়্মাং ভগরতঃ কৃষ্ণত বদেবং প্রকারেণ মাং স্বভক্তমিতো নিছাপ্ত তীমানিতিনি: সংশ্রমেতে ঘাতরিষ্যান্ত ইতি ৪ ১৫ ৪

কুরোন্তবংশ্যানাঞ্চ পুণোন লব্ব ইতি তেবাং ভাগাদেব তেন রূপেণ গতমিতি স্চিতং। ভীর্থং পাদে যত তত্ত হরেরিতি তচরণ বুলৈব তাল্শানাং তীর্থদিদৃক্তে স্চিতং। পদানি কেঞাণি স্থলমূর্ত্তিম হত কুর্মালানেকমূর্তিং সন্ যানি যানাধিঠার হিতঃ॥ ১৬॥

अनमा अकाकी । ১१।

প্রবেশকারি ঐ প্রকার নিষ্ঠুর বাক্যে বদিও তাঁহার মর্মা ব্যথা হইল, তথাপি মায়াকেই বহু করিয়া মান্য করাতে অর্থাৎ মায়ার কি মহিমা ছোহাতে মুগ্ধ হইয়াই ইহারা আমার এই অপমান করিছেছে, এই রূপ নিশ্চর করাতে তজ্জন্য, বেদনা বিগতা হইল ॥ ১৫ ॥

ৰিছুর হস্তিনাপুর হইতে নির্গত হইয়া ক্ষিতিতলে যে সকল ক্ষেত্রে তীর্থপাদ ভগবানের প্রক্ষাদি বছবিধ মুর্ত্তি অধিষ্ঠিত আছে, দেই সমস্ত ভগবৎক্ষেত্রে পুণ্যসঞ্চর বাসনায় পর্যাটন আরম্ভ ক্ষরিলেন। তিনি কৌরবদিগের পুণ্যে লক্ষ হইয়াছিলেন ইহাতে যে যে ছানে গমন করিলেন বোধ হইল যেন কৌরবদিগের ভাগাই তাঁহার স্বরূপ হইয়া তথায় তথায় গমন করিতে লাগিল ॥ ১৬ ॥

দে বাহা হউক, যে দকল পুর, উপবন, পর্বত, কুঞ্জ জতি পবিত্র এবং বে বে নদী ও সরোবর প্রস্কৃত্য নির্দ্ধন জলমুক্ত, জার যে দকল ভীর্ষ এবং ক্ষেত্র অনন্ত ভগবানের মূর্ত্তি দকলে অলম্ভত,

ঞীমত্বাপবতম্।

অনন্তলিকৈ: সমলক্ষতেষু চচার তীর্ধায়তনেম্বন্যঃ ॥ ১৭ ॥
গাং পর্যাটন্ মেধ্যবিবিজ্ঞর্তি: সদার্মেতাহধঃ শরনোহবপ্তঃ।
অলক্ষিতঃ বৈরবধৃতবেশো অতানি চেরে ছরিতোষণানি ॥ ১৮ ॥
ইঅং অজন্ ভারতমেব বর্ষং কালেন যাবৎ পতবান্ প্রভাসং।
তাবচ্ছশাস ক্ষিতিমেকচক্রামেকাতপ্রামজিতেন পার্ধঃ ॥ ১৯ ॥
তত্তাপ শুপ্রাব স্ক্রিন্তিং বনং যথা বেণুজবহ্নসংশ্রায়ং।

शिधवत्रामी।

কেরেরু। কীদৃশেরু অনস্তত্ত নিদৈ: মৃর্জিভি: সমলত্বতেরু অননা একাকী ॥ ১৭ ॥

কিঞ্গাং প্রাটন্ হরিভোষণানি ব্রতানি চেরে অচরং। মেধ্যা পবিত্রা বিবিক্তা অসংকীর্ণা বৃত্তি জীবিকা ষত্র। সদাপ্র্তঃ প্রতিতীর্থং স্নাতঃ অধঃ শ্রনং যত্র। অবর্তঃ অসংস্কৃতদেহঃ। অব্যূত্বেশো বহুণাছিধারী অভএব শৈরলক্ষিতঃ॥ ১৮॥ একত্রৈব চক্রং সৈন্যং যত্রাং একমেব রাজচিত্রং খেতাতপত্রং বৃত্তাং। তাং অজিতেন শীক্ষ্ণেন সহায়েন॥ ১৯॥ ভত্ত প্রভাবে প্রস্পরং সংস্পৃদ্ধ। নিমিত্ত্ত্রা স্কৃদাং কৌশ্বাণাং বিনৃষ্টিং বিনাশমশ্ণে। । প্রস্পার নাশে দৃটাভঃ। বেণুজং

क्षत्रमञ्जः ।

বিবিজ্ঞাং পরবৃত্তিভির্মিশ্রম্বং । ১৮ । ভারতমেব বর্ষমিতি তল্মণাবর্ত্তি কুমারিকাথ শুমেব জ্রেরং। বিষ্ণুপ্রাণামুসারেণান্যজাগমামাথ । ১৯ ॥ সুস্ক্রিন্টিমিতি যাদবানাং বিনটিমিত্যের ক্লেরং। নাতিবিলয়াদেবোদ্ধবেন মিলনাৎ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥

श्रीविश्वनाथहळ वर्छो।

গাং পৃথীং মেধ্যা পৰিত্র। বিবিজ্ঞা বৃদ্ধান্তবেশাসিপ্রিভা বৃত্তির্জীবিকা বজ সং। সদা আপুতঃ প্রতিতীর্থং স্থাত ইতি সানেন পাৰিত্রাং লক্ষাতে। সানানজ্বরং ক্লাচিদ পৃত্যস্পর্লে পুনরপি সাতীতি সদা ভগবন্মছাদিমরণার্থং পবিত্র এব তিইতীতার্থঃ অবধ্তোহসংস্কৃতদেহঃ অবধ্তবেশো বক্লাদিধারী অভএব সৈরলক্ষিতঃ ॥ ১৮ ঃ

এক জৈব চক্রং দৈন্যং যাজাং একনেব রাজচিছুং খেতাতপত্তং যাজাং তাং অলিতেন শ্রীকৃষ্ণেন সহাবেন হেতুনা পার্থে। যথিটির: ॥ >> 1

তত্ত প্রভাবে সুস্থাং কৌরবাণাং বিনাশং হুর্বোধনাদিবু সৌহার্দাভাবাদনতি বিশ্ব এবোধ্বমিলনাচ্চ স্কৃদাং বাদবানা-

সেই দেই স্থানে একাকী ভ্রমণ করিতে লাগিলেন॥ ১৭॥

তিনি পৃথিবী পর্যাটন করিতে করিতে হরিপরিতোষণ ত্রত সকল আচরণ করিয়াছিলেন, তাঁহার জীবিকা অতি পবিত্রা এবং অসঙ্কীর্ণা ছিল, প্রত্যেক তার্থেই স্নান করিতেন, স্কৃতলে শয়ন করিয়াই নিদ্রা যাইতেন, দেহসংস্কারে যত্ন ছিল না, বল্ধলাদি পরিধান করিয়াই থাকিতেন, প্রজন্য আত্মীয় স্বজন কেইই তাঁহাকে চিনিতে পারিত না ॥ ১৮ ॥

বিছুর এই প্রকারে সমস্ত ভারতবর্ষে জমণ করিতে করিতে কালক্রমে যথন প্রভাগ তীর্থে গিয়া উপস্থিত হইলেন, সেই সমর প্রীকৃষ্ণের সহায়তায় কুন্তীতনর যুধিন্তির এই ক্ষিত্তিতলকে একচক্রা অর্থাৎ এক জনের সেনাস্থান এবং একছেত্রা অর্থাৎ একরাজ্চিহ্ন (খেডছেত্র) যুক্ত করিয়া শাসন করিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ১৯॥

প্রভাবে গিয়া উপস্থিত হইলে তাঁহার কর্ণগোচর হইল, যে বেণুসংঘর্ষক অগ্নিসংশ্রে যজ্ঞপ বন দগ্ধ হয় তাহার ন্যায় পর্মপার ম্পন্ধা নিমিত হস্তব্য কোরব সকল বিন্ট হইয়াছে অভএব শোক করিতে

विवडां भरक्ष ।

সংস্পর্করা দর্মপানুশোচন্ সরস্বতীং প্রভাগিরার ভূকীং ॥ ২০ ॥
ভস্যাং ত্রিভিন্যোশনসাে মনোশ্চ পৃথোরপামেরনিউন্য পারোঃ।
ভীর্থং ফ্লাসন্য গবাং শুহুস্য ফছু াক্কদেবস্য স আসিবেবে ॥ ২১ ॥
আন্যানি চেহ বিজ্ঞদেবদেবৈঃ কুভানি নানায়ভনানি বিক্ষোঃ।
প্রভাঙ্গ মুখ্যাঙ্কিত মন্দিরাণি যদ্ধনিৎ কৃষ্ণমনুশারন্তি ॥ ২২ ॥
ভতস্বভিত্রক্য হুরাষ্ট্রমূক্তং সোবীর মৎস্যান্ কুরুলাঙ্গলাংশ্চ।
কালেন যাবৎ যমুনামুপেত্য ভত্রোক্ষবং ভাগবভং দদর্শ ॥ ২৩ ॥
স বাহুদেবামুচরং প্রশান্তঃ বৃহস্পতেঃ প্রাকৃ ভনয়ং প্রভীতং।

शिशक्षामी ।

বিহ্নিং সংশ্ৰহতে यहनः তৎ यथा नद्धः ভৰতি তথা । প্ৰভাক্ উল্লামাভিত্ৰং ॥ ২০ ॥

বিভাগীনামেকাদশ ভীর্থানি ভস্তরায়া প্রসিদ্ধানি আহেবিভাগন ॥ ২১ ॥

ৰিলগেবৈ শ্বিভিঃ লেবৈশ্চ কুতানি অলমলং প্ৰতি বৰ্জন্তে ইতি প্ৰত্যেলান্যার্থানি তের্ম্থাং চক্রং তেনাছি তানি মুর্থন্য হেমকুন্তের্ চিহ্নিতানি মন্দিরাণি বেরু তানি নানা বিধানি বিকোরায়তনানি ক্ষেত্রাণি তীর্থানিচ আসিবেবে। বেষাং চক্রাছিত মন্দিরবতাং দর্শনাং শীক্ষণস্থারণং ভবতি ॥ ২২ ॥

অভিত্রজ্য অভিক্রমা বাবহুদ্ধবঃ প্রাপ্তঃ ভাবৎ স্বয়মণি ব্যুমামুণেভা ॥ ২৩ ॥

দ বিহুর: প্রাক্ তনরং পূর্বশিবাং নীভিশাতে। প্রাপ্তনর্মিতি পাঠে প্রাপ্তো নবো নীভিশাত্রং বেন তং প্রতীভং প্রথাতং।

क्रमनमर्छः।

হুত্রিনটো: প্রত্যেহণি বানাং উদ্রমপৃত্রণিতি শোকাবেশ বভাবেহিবং । বানাং বেবাং পরমান্ত্রীয়ানাং ॥ ২৪ ॥

अवियमाथहळ्क वर्षी ।

মিভি কেচিব্যাচকতে। বনং যথা দগ্ধং ভবভীভাবয়:। প্রভাক্ প্রতীচীং পশ্চিমবাহিনীমিভার্থ: ॥ ২০ ॥

विज्ञानि विज्जीर्विम ज्ञानि नाजा यन्तर धानिकमि जार्थः ॥ २১ ॥

বিলাদেবৈশ্বিভিদে বৈশ্চ অক্ষলং প্ৰতি বৰ্তত ইতি প্ৰজ্ঞালান্যায়্ণানি তেরু মুধাং চক্রং ভেনাছিতানি মন্দিরাণি বেরু তানি॥ ২২ ॥

ভাবদিতি বাক্যালম্বারে সংভ্রমে বা ॥ ২৩ ॥

প্রাক্তনরং পূর্বশিব্যং নীভিশাত্তে প্রাধানরমিতি বা পাঠঃ । প্রতীতং খ্যাতং অত্র বিত্রকর্ত্তালিলনেণি উদ্ধবস্য নমস্বারা-

ক্রিতে তথা হইতে পশ্চিমবাহিনী সরস্বতীর প্রতি যাত্রা ক্রিলেন ॥ ২০ ॥

ঐ নদীর তটে ব্রিভ, উশনা, মনু, পৃথু, অমি, অদিত, বায়ু, হৃদাদ, গো, গুছ এবং প্রাদ্ধদেব এই কাদশের ঐ ঐ নামে প্রদিদ্ধ এগারটী তীর্থ ছিল, তিনি যথাবিধি তৎসমুদায়ের সেবা করিলেন ॥২১॥

অপর তথায় ঋষিগণ ও দেবগণ ভগবান্ বিফুর অন্যান্ত যে সকল আয়তন করিয়া রাখিরাছিলেন, যে স্থানকার মন্দিরের উপরিভাগন্থ স্থাকলমে চক্র চিহু ছিল, তাহা দর্শন করিলেই জ্রীকৃষ্ণের স্মারণ ছইত সে সকল আয়তনও সেবন করিলেন ॥ ২২ ॥

তদনতার সমৃদ্ধিশালি ছারাষ্ট্র, সৌবীর, মংস্য এবং কুরুজাঙ্গল দেশ অতিক্রম করিয়া যথন কালক্রমে উদ্ধব আসিয়া উপছিত ইইলেন, তথন তিনিও যমুনা স্মীপে উপনীত হৃওয়াতে পরম ভাগৰত উদ্ধব ভাহার নয়নগোচর ইইলেন । ২০ 🌡

এই উদ্ধৰ বাইনেবের অক্চর; প্রশান্ত এবং নীতি শান্তে বৃহস্পতির পূর্বশিষ্য ও অতি বিখ্যাত

আলিক্য গাঢ়ং প্রণয়েন ভক্তং স্থানামপুচহত্বপরৎ প্রজারাং ॥ ২৪ ॥
কচিচৎ পুরাণো পুরুষো স্থানা পাত্র মুরুষোহ কিলাবভীপোঁ।
আসাত উর্ব্যাঃ কুশলং বিধায় কুডকুণো কুশলং প্রপেহে ॥ ২৫ ॥
কচিচৎ কুরণাং পরমঃ স্থানো ভাষঃ ল আতে হুধনক পৌরিঃ।
যো বৈ স্বস্থাং পিতৃবদ্দাতি বরান্ বদাভো বরতর্পবেন ॥ ২৬ ॥
কচিচৎ বর্রথাধিপতির্যদ্নাং প্রহান্ত আতে হুখনক বীরঃ।

अध्ययामी ।

चानाः छाणीनाः कत्रमणुक्दः। अतः (र्षुः। कगवतः व्यकानाः (शामानाः । २३ ।

প্রথমং তাবৎ রামক্ত হোঃ কুশলং পৃদ্ধতি কলিদিতি। প্রশ্নে শ্বাভৌ ভবং সমাভাং পালো ব্রহ্মা ভভাতৃত্তা। প্রার্থনির ইংবিতীপৌ কুশলমানাতে বর্ত্তে। কৃতক্ষণৌ দ্ভাবসরো। সর্বেষাং কৃত্তে।ংসবাবিভি বা। ছয়োনিছাকুশলছেশি টুক্ত বিশেষণ বিশিটো শ্বগেহে কলিদানাতে ইতি প্রশ্নঃ ৪২৫ ৪ • •

यन्तार কুশলং পূজ্তি নৰভিঃ। ভাৰঃ পূজাঃ শৌরির্ক্তিরে বরা ভাষো ছবিনী ভর্তা। কুস্তী বস্থাবেষা ভগিনী অতো দেবকী পাজো ওগিনীতি লোকবাবহারঃ। বরান্ অর্থান্ বদাভঃ অত্যুদারঃ। বরাণাং তৎ পতীনাং ওপ্ণেন সজোবণেন সহ।২৬ বর্ষাধিণতিঃ সেনানী আদিসর্গে পূর্ক অন্ননি স্বরং কামং সস্তঃ অভিলেভে পুত্রং লক্ষ্বতী॥২৭॥

manwis:

খনাতা ইতি খীরদা গুর্বোরশান্তিনোনাফৌ ভবঃ খনাতাঃ নিজনাত্মনার্হণযিভিত্ত ব্যাখ্যাতঃ। কুশলং লোকনোং মঙ্গলং মুখাং ভালধা ভাবে ৪ ২৫ ৪

ভামোভগিনীভর্তা। পৌরবী রোহিণ্যো: পতিবাং। স্বস্থামিতি ক্স্তীমেহতাংপর্যাত্তকং ॥ ২৬ ॥
স্বঃ প্রভগবৰ্।হরপ:। প্রক্ষসকর্তে তথা নিপ্লীয়ে ব্যাধ্যাতত্ত্বাং ॥ ২৭॥

खीवियमाध्यक्तकवर्थी ।

खांदः ८ श्रममृष्ट्रिय (स्क्रमः ॥ २८ ॥

ভগবং প্রকটিছিত্তাব ভংগ্রজানাং ভত্তমিতি ভগবংমুগছিতিং পুছ্জি ক্রিছিছি প্রশ্নে খনাভৌ ভবং খনাভাঃ পাছে। একা কৃতক্ষণৌ ক্রোংস্বান ভ্রোনি ভ্যকুশনিনোরণি কুশনপ্রশ্নঃ রেইছব জেছঃ । ২৫ ॥

ভাষো ভগিনীকর্তা। বস্থান ভাগারা: পৌরব্যা বিজ্বাদীনাং ভগিনীছাৎ শৌরিব স্থানের। অনুণামিতি কুস্তাা: সেহাতি-শবে ধন্যতে। অন্যাস্থ কর্মধু তথা ভাবান্টো:। বরানভীন্সিতানর্থান্ বরাণাং তৎপতীনাং ভর্পণেন সম্মোধনে সহ । ২৬ । অত প্রস্লোচনৈক্ষরাৎ ক্রমো নামুস্ডা:। বর্ষাধিপতিঃ সেনানীঃ। আদিসর্গে পূর্বঞ্জানি অবং ক্রম্পনিতি ক্রম-

ছিলেন, তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ হইলে বিছুন্ন অভিশন প্রীতি প্রকাশ পূর্বক আলিক্ষন ক্রিলেন, পরে ব্যস্ত সমন্ত হইয়া ভগবানের পোষ্য ক্রীয় জ্ঞাতিদিগের কুশলবার্তা জিল্পাসা করিছে লাক্সিনের ॥ ২৪॥

আহে উদ্ধব ! পুরাতন পুরুষ রাম কৃষ্ণ বীর মাতি পালোম্ভব জ্রন্ধার প্রথিনায় অবতীর্ণ ইইরা পৃথি-বীর ক্ষেম বিধান পুর্বাক সর্বা জনের আনন্দ ভাজন হইরাছেন, এখন উছোরাত শ্রন্দেন গৃছে কুশলে আছেন ? ॥ ২৫ ॥

হে অঙ্গ ! কুরুদিণের পরম স্থজ্ব এবং আমাদিণের পূজ্যতম বহুদেবও ত হথে আছেন ? ওঁাহার উদারতার কথা কি বলিব, তিনি বদান্যতা পূর্বক আপনার পত্নীদিগকে সম্ভক্ত রাখিয়া ভগিনীদিগকে পিতৃবং বহু অর্থ প্রদান করিয়াছিলেন ॥ ২৬ ॥

टर यका ! यक्र विश्व तनां शक् करायीत अक्षात्र क क्रांच वाह्न ? श्रद करत किनिरे कामरमय

যং রুরিণী তগবভোহভিলেতে আরাধ্য বিশ্রান্ পর্যাদিসর্গে ॥ ২৭ ॥
কচিচৎ অধং সাত্ত ব্ফিভোত দাশার্হকাগার্থিপঃ দুরাং ॥ ২৮ ॥
যমভাবিঞ্চ্ছতপত্রনেত্রো নূপাসনাশাং পরিক্ত্য দুরাং ॥ ২৮ ॥
কচিচ্ছরে: সৌম্য হৃতঃ সদৃক্ষ আন্তেইপ্রাণী রখিনাং সাধু সাত্রঃ ।
অসূত যং কাত্ববতী ব্রতাঢ়া দেবং শুহুং মোহস্বিক্রা প্রতোহপ্রে ॥ ২৯ ॥
ক্ষেমং স কচিচ্যবুষ্ধান অত্তি যং কান্ত্রণাল্লব্রধন্রহস্যঃ ।
লেভেহপ্রসাহধাক্ষদেনীয়েব গতিং তদীয়াং যতিভিত্রাপাং ॥ ৩০ ॥

विश्वपात्री।

সাম্বতাদীনামধিপ উপ্রসেন: শতপ্রনেত্র: শীক্ষ:। নৃগাস্নাশাং রাজ্যাভিলাবং পরিজ্তা প্রাণ্ডয়েন দ্রাৎ স্থিতনিতার্থ: এ২৮ হৈ সৌমা হরে: স্তত্তেন সদৃক্ষ: সদৃশ: সাধু স্থমাতে শুহুং কার্তিকেয়ং অপ্রেপুর্ব জন্মনি যে। ভবান্যা গর্ভে গৃত: তং ॥ ২৯ ॥ যুর্ধান: সাত্যকি: ক্ষেমং কুশল্মাতে । ফার্গাদক্ষ্নালকং ধন্মবো রহ্সাং যেন। ভবীয়াং অধোক্ষেস্থলিনীং ॥ ৩০ ॥

क्रममन्द्रः।

ৰূপাদনাশাং ভদ্দিশমপি পরিহৃত্তে।তাস্য শতপত্রনেত্র এব বা কর্ত্তা ॥ ২৮ ॥ সাখদ্য শুহুদ্বং প্রাত্তামবদেব ॥ ২৯ ॥ ভদীমাং গতিং পরমাস্তরকাং ॥ ৩০ ॥

शिविधनाथहळ्वत्वी ।

প্রা দেবছাং প্রজ্যার নর বাং তথা ভূতত্বে উংকর্ষদ্যোতনা ৰম্বতঃ সিদ্ধান্তেত্ কল্পপ্তি বিভূতিবিশেষ এব এবমগ্রেপি তদংশ-বিভূতবোপি সর্বাত জীলাকথাস্থ ভাদাম্মোনৈবোচায়ে। যথা দেবকীবস্থদেবাবপি পৃত্তি স্বত্তপদাব্তৌ স্বয়ং ভগবতৈব অনেব পূর্বসংগ্রহত্ত পৃত্তিঃ স্বায়স্ত্বে সভীত্যাদিনা সর্বাত্ত নত্তীলভা পৃত্তা চমংকার এব কারণং জ্ঞেয়ং। যথা তত্ত্বৈৰ আরাধ্য বিপ্রা-নিতি ভাষবতী ব্রতাচ্যেতি কৃত্ত্বিশী জাম্বত্যাদীনাং ভগবংশক্ষপশক্ষীনাম্পি ভত্তদর্থং তত্তংসাধ্নম্পি॥ ২৭ ॥

অধিপ: উপ্রসেন: বং উপ্রসেনং নৃপাসনাশাং রাজ্যান্তিলাখং পরিক্তা প্রাণ্ডয়েন দ্রাৎ স্থিতমিতার্থ: শতপত্রনেতা: প্রীকৃষ্ণ: ॥২৮ সদৃক্ষ: সদৃক্ষ: প্রত্যা কার্তিকেরং অংশাংশিনোরৈক্যাৎ ক্রন্ত্রস্য ভগবদংশত্বাৎ তৎপুত্রস্য কার্তিকেরস্যাপি ভগবৎপুত্রাংশত্বং যুক্তা জ্বের: । বহা পরাবরেশো মহদংশযুক্ত ইত্যাদি বক্ষামাণযুক্তা। অবতারকানে প্রীকৃষ্ণে নারায়ণ প্রবেশে স্তি নারায়ণতার বস্থানেবগৃহে হবতীর্ণ ইতি প্রতীতি সাত্বে ভহপ্রবেশাৎ প্রত্যান্ত কারপ্রশাৎ উদ্ধাদিত্বপি বস্থাছে: প্রবেশত্বাৎ তথা ভব্যাক্তিন ব্যাহ্রস্থান ২৯ ॥

যুষ্ধান: সাভাকি: ফার্ণাদর্জুনাং ॥ ৩० ॥

ছিলেন, ক্লিগী আক্ষণদিগের আরাধনা করিয়া ভগবান জীকুফ হইতে তাঁহাকে পুত্ররূপে লাভ করেন ॥ ২৭ ॥

হে নিজ্য পাৰত, যুফি, ভোজ এবং দাশাহ দিগের অধিপতি উএগেন ত হুখে আছেন ? তিনি রাজ্যাভিদার পরিভাগে করিয়া প্রাণভয়ে দূরে পিয়া রহিয়াছিলেন, পদ্মলোচন ভগবান্ তাঁহাকে রাজ্যে অভিষিক্ত করেন ॥ ২৮ ॥

হে দৌন্য। ভগৰান্ শ্রীকৃষ্ণের অভুরূপ তনয় রথিশ্রেষ্ঠ দাঘ ত হথে আছেন ? পূর্বা জন্মে যিনি ক্রাবন্দী অধিকার পর্ট্রে কার্তিকের রূপে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন, তিনিই এই ক্লেম্ম প্রতাদ্যা কাষ্য্য-তীর উদরে উৎপান হইয়া সাম্ম শায় ধারণ করিয়াছেন ॥ ২৯॥

ে তে উজ্জবন মিনি অর্জনের নিকট রহস্যের সহিত ধকুর্বিবদ্যা শিক্ষা করেন এবং শ্রীকৃঞ্জের সেবা ক্রিনা রোবিদিণের অপ্রাপ্য তদীয়া পতি লাভ করেন, সেই সাত্যকি ত কুশলে আছেন ?॥ ৩০॥ কচিছ ধ: স্বস্তানমীৰ আত্তে শক্তপুত্ৰো ভগৰং প্ৰপন্ন:।

যঃ কৃষ্ণপাদাক্তিমাৰ্গণিং শুষ্চেইত থেমবিভিন্ন ধৈৰ্যঃ। ৩১॥

কচিচিছৰং দেবকভোজপুত্ৰা। বিষ্ণুপ্ৰজায়া ইব দেবমাতৃ:।

যা বৈ স্বগর্ত্তো দধার দেবং ত্রয়ী যথা যজ্ঞবিতানমর্থং। ৩২॥

অপিস্থিদান্তে ভগৰান্ স্বথং বো যঃ সাম্বতাং কামছুলোহনিক্তর:।

बीगत्रवामी ।

খক্ত পুত্রোইকুর: বুগো বিধান্। অতো ভগবন্তং প্রাপর: অনুস্ত জঃ। অভএৰ অন্মীবো নিপাণ: ভক্তে। লিখেইকং চে ইত বালুঠং। প্রেমা বিভিন্ন বিদীর্গং গৈগাং যভ সং। অভি কেম্মান্তে ॥ ৩১ ॥

দেবক নামা যো ভোজ: তক্ত পুত্রা: দেবকাা:। বিজু: প্রজী পুত্রো য**া:। ত**স্যা দেবমাতুর দিতেরিক কচিচৎ শিবং। যজাবিভান রূপমর্গং অধী বথা প্রকাশক ভ্যাবিভর্তি তপা দধার ॥ ৩২ ॥

সাত্বতানামুণাদকানাং কামান্ দে। গ্রি প্রয়তী ভি কামত্বঃ ভগবত্তে হেতুঃ বং শব্দা বোনিং কারণং আমনতি বেলাঃ কুতঃ মনোময়ং মনসং প্রবর্তিকং। তৎ কুতঃ সত্ত্বসাত্তঃকরণমা চতুর্বিধিদা তুরীরং ভত্তং চতুর্বম্ধিলৈবং। চিত্রাহকার বৃদ্ধি মনসাং

क्रममन्द्रः।

অক্রসাসর্কাণ পরমভজিমবেংপি যঃ ক্ষেতি কাশদেশাদিবৈশিষ্টোন-চমংকারিভাদ্যুক্তং ॥ ৩১॥ দেশমাকুরিবেভি দুইাস্তবং তদিত্রভাবেন ॥ ৩২॥

এবমনিক্রস্যাপি সাক্ষান্তত্ব্।হবে বিশ্বমার অপিলিবিতি। শক্ষণোনিং নিখাস্ব্যঞ্জিতবেদবৃন্দং এবং বা অরেহ্স্য মহতো ভ্তস্য নিখসিতমেতন্ যল্ ঋথেল ইত্যাদি ঐতে:। মনোমরং চিত্তে বাল্পদেববন্ধনস্থাপাস্যং। সল্বং গুরুসবাল্মক: প্রীবাস্থানেবাদিরপোভগবান্ তার ত্রীরং রূপং। অভোবাণ্য্রাদে) বর্জনাম্করণাদিকমান্তেহামারী লীলৈব জীরাম্চন্তাদিবং। অস্য পাল্লব্রংগ্রুমনামি মহান্ধানামানি চৈভানি। অনিক্রে বৃহ্দু র প্রাছারে বিশ্বমাহনঃ। চত্রাল্লা চতুর্ব্ল শচ্তুর্গ-বিশারক:। চত্তেরি শাল্লানামানি চৈভানি। আনিক্রে বৃহ্দু র প্রাল্লাভি অভ: শীক্ষাব্। হত্বাল্লা চতুর্বলি শিল্লানামানি চিত্তানি। আপ্রাল্লেভি অভ: শীক্ষাব্।হত্তেন মহানিক্রেরাদিলিব বিশেষঃ প্রস্থার্নিবিদ্যান্ত্র ভি জ্লোং। বৃত্তবিশ্বান্তাল্লাক:। মৃল্সংকর্ণান্যংশবের

শ্ৰীবিখনাণচক্ৰবৰ্তী।

জনমীবো নিপাণঃ খফকপুত্রোহকুরঃ অচেট্টত নন্দগ্রামপ্রবেশে বালুঠং । ৩১ ।

দেৰকনামা যো ভোলতত পুত্ৰা দেবকাা: বিষ্ণু: প্ৰজা অপতাং যতান্তভা দেবমাভুরদিতেরিব ॥ ৩২ ॥

সাখতাং যাদৰবিশেষাণাং ভক্তানাং বা। শক্ষোনিং শিশাস্ব্যঞ্জিতবেদবৃদ্ধং এবং বা অবে অক্ত মহতো ভ্তসা নিঃৰসিত মেতৃদ্বদ্ধেদ ইত্যাদি শ্ৰুতে:। মনো মরতে ইতি মনে!ময়ং মনসং প্ৰবৰ্ত্তক তথা স্বক্ত ভক্তস্ব্ৰুপ্ত চতুর্গ্হক ভ্রীয়ং চতুর্থং তবং তদ্পাক বাণ্যুদ্ধাদৌ বন্ধনাদিক্সচিন্তা।ম্মেছাম্মী লীলৈব শ্রীরাম্চক্রাদিবং। অত্যাক চতুর্গ্ছকে প্রমাণং বিষ্ণুধ্যোদ্ধিরে

হে সথে। বিদ্যান, নিম্পাপ এবং ভগবানের শরণাপদ শ্বফক্ষ তনয় অক্রুর ত হাংক আছেন ? শ্রীকৃষ্ণের প্রতি তাঁহার এতাদৃশী ভক্তি যে তিনি নন্দগ্রাম প্রবেশ কালীন প্রেমবশতঃ অধৈষ্য হইন্না ঐ শ্রীকৃষ্ণের চরণান্ধিত পথের ধূলির উপরে অবলুঠিত হইন্নাছিলেন॥ ৩১॥

অপর হে উদ্ধব! বল দেখি, ভগবান্ বিষ্ণু, দেবক নামা ভোজের ছহিতা দেবকীর পুজ, যিনি, বেদ যেমন প্রকাশকত্ব হেতু যজ্ঞ বিস্তার রূপ অর্থ ধারণ করেন, তাহার ন্যায় ভগবান্কে আশিনার গত্তে ধারণ করিয়াছিলেন, দেবমাতা অদিতির তুল্যা দেবকীও ত কুশলে আছেন ॥ ৩২ ॥

অপর ভগবান অনিরুদ্ধের ত কুশল ? তাঁহা হইতেই উপাদকদিগের কামনা পরিপূর্ণ হয়। অপর মন: বৃদ্ধি চিত্ত অহকার এই অন্তঃকরণ চতু কয়ের মধ্যে তিনি মনের অধিষ্ঠাতৃ দেবতা হওরাতে বেশে यमामनिक न्य हि भक्तरेगानिः गत्नामग्रः मक् छूत्रोग्रङक्षः ॥ ०० ॥

श्वि विषया निकाश्चरेषयमनना द्वा गंमसूद्वा रहे।

श्वि निजाशक्ष नाक्ररणक गनामग्रः यक्ति न्यक्ति रामेग्रं ॥ ०८ ॥

श्वि श्वराण्डाः विकाग्रहाङ्गाः सर्मान सम्भः श्विशोङ राष्ट्रः ।

वीववयामी।

ফ্রসভংকরণতেদানাং ক্রমেণ বাস্থদের স্কর্ষণ প্রত্যমানিক্রছাজ্বিষ্ঠাতারং মনসং শক্ষেষানিজং প্রসিদ্ধং মনং পূর্ক্রপং বাভভররপ মিতি ফ্র'ডেঃ। তথা অন্যোহত্তরং আত্মা মনোমর ইতি প্রস্তাতস্য বজুরের শিরং আংগ্রুকিণং পক্ষং সামোত্তরং পক্ষং ইত্যাদি ফ্র'ডেঃ। তথাচ শিক্ষারাং আত্মা বুদ্ধা সমেত্যাথীন্ মনোযুঙ্কে বিৰক্ষা। মনং কামায়ি মাহন্তি স্পোর্রতি মাক্তং। মাক্তজারসি চরন্মলং জনরতি অরমিত্যাদি॥৩০॥

হে সৌমা অণিখিৎ কিং খিৎ অনোট খতি চরতি নিজ্মা গ্রেছাদি ব্যতিরিক্তম্য আত্মনো হৈবং প্রীকৃত্যং অননার্ত্যা একান্ত ভাবেন যে সম্গহরতা অহস্ততাঃ। স্থানীকশ্চ সত্যভামারা আত্মশুচ চাক্ষেক্তশুচ গ্রুক্টিবের্বাং তেপি॥৩৪॥

ইলানীং কুরন্পৃঞ্তি বড়ভি:। অণি কিং স্বাছভাাং স্বাছ বৃষ্ঠ্মানাভাাং বিজয়াচাভাাং অর্জুনকুফাভাাং ধর্মার্গের

ক্রমসন্দর্ভঃ।

হীতরদক্র্ণাদাবস্থা এয়ং প্রথং প্রকাশ রতীতি তবৈধাতে বেন বিষ্ণুধর্মোন্ত হেং শীদমুকাং। অন্ত প্রীব্জ প্রশ্ন:। কলুসৌ বালরপেণ করাছের প্ন: প্ন:। দৃটোমেন ভ্রমা আত্তর কোত্হলং মম। প্রানাক গেবারক । ভ্রোভ্রক । ভ্রোভ্রমা দুটোমেরা দেবোরকাং-পতি:। করক্ষেনে বিজ্ঞাত: দ ময়া মোহিতেন বৈ। করক্ষেরে ব্যতীতের তলেবং প্রশিতামহাং। ভ্রমিকরং বিজ্ঞানামি পিতরং তে জগংপতিমিতি। ভীমপর্কণি হ্রোধনং প্রতি ভীমশিকায়াং শীর্ক ক্স্যাবতারার ভে গ্রমাদনমাগত্স্য প্রকাশ কর্ণভাল-বির্ভাবং মনসি পশ্যতভ্র বাণ্যা তলিদং বচনং। স্ট্রা সংকর্ষণং দেবং ব্যমান্তানমান্ত্রনা ক্রমান্ত নালাক প্রতিব্যাল বিনির্বিত্ত বিশ্বমান্ত বির্কিপ্রকাশ বিনির্বিত্ত বিশ্বমান্ত বির্কিপ্রকাশ বালক ক্রমান্ত বিরক্ষিক ক্রমান্ত বিরক্ষিক স্বানান্ত ক্রমান্ত বিরক্ষিক ক্রমান্ত বিরক্ষিক বিশ্বমান্ত বিরক্ষিক বিনির্বিত্ত বির্কিপ্রকাশ করেব শীর্ক ক্রমানিক ক্রমান্ত বালাক বিনির্বিত্ত বিজ্ঞান্ত বিরক্ষিক বিশ্বমান্ত বিরক্ষিক বিরক্ষিত বিরক্ষিক বিরক্স

व्याप चरमार्डार हे जानिकर धीडगंगन ब्रद्धातन (डवार श्राक्तेगन ब्रवार ॥ ००॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্ধী'।

নিজনিজস্যাম্বনো দৈবমুর্তিং ভাগ্যমিব প্রীক্ষণং সমাগহুত্রতা অহুস্তা: ॥ ৩৪ ॥

ইদানীং কুরুন পুছতি বড্ভি:। দোজনাভামর্জুনকুঞাভাাং ধর্মো যুধিষ্ঠির: দেতুং ধর্মন্বাদাং সামাজাং সপারা। কীদৃত্তা

তাঁহাকে মনের প্রবর্ত্তক এবং শব্দের কারণ রূপে কহিয়া থাকেন।। ৩০।।

হে সৌমা! অন্যাম্য যে সকল ব্যক্তি, একান্ত ভাবে দেহাদি ব্যতিরিক্ত আত্মার দেবতা স্বরূপ শ্রীকৃষ্ণের সম্যক্ রূপে অনুসঙ্গণ করিয়া থাকেন তাঁহাদের ত কুশল বটে ? অপর হৃদীক, সত্যভামার পুত্র চারুদেক্ত এবং গদ ইত্যাদি দকলেও ত হুথে কালাতিপাত করিতেছেন ?॥ ৩৪॥

অহে উদ্ধব! তোমাকে আর একটা কথা জিজাসা করি, রাজা মুধিষ্ঠির, আপনার বাছরয় সদৃশ অক্ত্রন এবং জ্রীক্ষমের সহিত ধর্মতঃ মর্যাদা পালন করিতেছেন কি না? ছুর্যোধন ত্রীয় সভায় হুর্ব্যোধনোহতপতে যথ সভারাং সাজ্রাক্ত লক্ষ্যা বিজয়ামুর্ত্যা ॥ ৩৫ ॥
কিথা কতাঘেষ্বমত্যমর্থী ভীমোহিবদীর্যত্তমং ব্যুক্তং ।
যক্তাজ্যিপাতং রণভূ র্ন দেহে মার্গং গদায়াশ্চরতো বিচিত্তং ॥ ৩৬ ॥
কচ্চিদ্যশোধা রথ্যুপপানাং গাঞ্জীবন্ধয়োপরতারিরান্তে।
অলক্ষিতো যচ্ছর কুটগুঢ়ো মায়া কিরাতো গিরিশস্ততোষ ॥ ৩৭ ॥
যমাবৃত্যিভন্থো পৃথায়াঃ পার্থৈর্যুভো পক্ষভিরক্ষিণীব।

প্রীগরস্বামী 🛊

ধর্ম: যুবিষ্ঠির: শেজু ধর্মমালাং পরিপাতি বসা সভাদাং বিজয়ংফুর্তাা জয় পরশ্বর্মা। আর্জুন্সা সেবয়েতি বা এবং ভূতং বসৈঃম্বামিতার্থ: ॥ ৩৫ ॥

ক্বতাঘেৰু কৃতালরাণেরু কুকরু বকর্ত্তময় দীর্ঘতনং বহকালামু চি জিতুং। অহিবদতাম্বী ভীমা কিং বাম্ঞৎ নো বা গদায়া বিচিত্রং বিবিধং মার্যং চরতঃ॥ ৩৬ ৪

রথযুগপানাং মধ্যে মধ্যে কীরিধারী। যথা খীরানাং তেষাং কীর্দ্তি প্রভা অর্থো যথাং। যভ শরক্টেন বাণসমূহেন গুড়: আছের: তুতোর ॥ ৩৭॥

উত সিং কিং স্বিং যথে নকুল সহলেবে বেমাতে ক্রীড়ত ইতার্থ:। মাদ্রাঃ স্থতারপি পৃথায়া অনয়ে পৃথায়া: পুতৈর্তী আবৃতী স্পর্ণবিব রেমাতে। কিং ক্রমা পরাৎ ত্রোধনাৎ স্বরিক্থং স্বীয়ং রাজ্যং উদ্ধায় আছিল। বজ্রিবক্তাৎ ইক্রদা মৃথাৎ স্বরিক্থং

ক্রমসন্দর্ভ:

জ্বং কোধলং বাসনং। জংহো হংধবাসনে ব্যমিত। নরং। যদ্যাজ্বীতা হ্যানে নৈবোকেং ॥ ০৬ ॥ ৩৭ ॥ উদ্ধাহেত। সাক্রিরং পার্থা এব বা। জ্বাতি যৌ পার্থের্ত চী পাল। মানৌ সঙ্চৌ স্বচ্ছলানিহারিছেন স্থপর্যাবিব রেয়াতে।

E। विचना पठळाव की ।

विषयमा गटकी १ कर्षमा अस्वृतिर्यमा १ करा ॥ ७०॥

ক্ল'ডাঘেৰু কুকুৰু অকৰ্থকমঘং বিৰ্মিৰ ব্ধতেজুং দীৰ্ঘতমং বছকালাঞ্চিম্বিতং কিং ব্যমুঞ্জ নোৰা ॥ ৩৬ ॥

রথযুপণানাঃ মধ্যে যশোধাঃ কীর্ত্তিধারী। উপরভারির্বিন্তশক্রং সরাস্তে বচ্ছরসমূহেন গুড় আচ্চরঃ॥ ৩৭॥

যমৌ নকুণসংক্ৰে মাজ্যাঃ স্থভাৰণি পূণায়া এব তনয়ে পক্ষভীরক্ষিতে অফিণী ইব পাবৈত্রিত অক্ষিণীবেতি মনীবাদিঃ।
পরাং শজোছ বিধাধনাৎ সকাশাং মূদে যুদ্ধে স্বিক্পং রাজ্যঃ উদ্দার আছিল্য রেগাতে। কমাৎ কিমাছিল্য কাবিব বজিবকাৎ
ইক্রস্য মুধাৎ রিক্পমমৃতমাছিল। বৌ স্পণাবিব উল্গায়েতায়া কর্তারএব পাথাএব বা তথাহি পাবৈর্ভি পালামানে রেমাতে।

সাআজ্য 🖺 এবং জয় পরম্পরা দেখিয়া অতিশয় সম্ভাপিত হইয়াছিল।। ৩৫॥

অপর হে উদ্ধব! যে ভীম সর্পদৃশ রোষ পরবশ, তিনি কি কৃতাপরাধ ক্রুদের প্রতি চিরকালামু-চিন্তিত পাপ পরিত্যাগ করিয়াছেন ? তিনি যুদ্ধক্ষেত্রে গমন করিয়া গদার বিচিত্র মার্গে ভ্রমণ করিয়া-ছিলেন, তাহাতে রণভূমিও তাঁহার চরণপাত সহু করিতে পারে নাই॥ ৩৬॥

অপর গাণ্ডীবধয়া অর্জন রথযুথপতিদিগের মধ্যে যশোধারী, তিনিও শত্রু বিনাশ পূর্বক অথে ড আছেন ? মায়া মারা কিরাত রূপধারী ভগবান্ শিব তাঁহার বাণ সমূহে আচহন হইয়াও পরম পরিতোষ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন ॥ ৩৭ ॥

সথে উদ্ধব। নকুল সহদেব মাদ্রীর যমজ পুত্র হইয়াও চক্ষুর্য থেমন পক্ষা হারা পরিস্বত হয়, তদ্রপ পৃথাতনয়গণ কর্তৃক পরিস্বত হওয়াতে পৃথার পুত্র বলিয়া গণ্য হইয়াছিল। গরুড় যেমন বজ্রধারি ইন্দ্রের মূথ হইতে অমৃত আনয়ন করেন তত্রপ তাঁহারা যুদ্ধ করিয়া পরম শত্রু হুর্ব্যোধনের নিক্ট হইতে दित्रमां केवात यूद्य चित्रक्षाः निर्माण क्ष्मिक्षाः । कः । चारा गृथानि क्षित्रक्षाः । कः । चारा गृथानि क्षित्रक्षाः विकारकं । विकारकं विकारकं विकारकं विकारकं विकारकं विकारकं याः । विकारकं व

• विश्वतामी ।

অমৃতং গ্রুড় ইবেভি। বৰা অপশাবিৰেতি বৰি বৌ গ্রুড়াব্যুতমানবেতাং তর্হি তবং অফিন্টবেতি মনীবাদিগণদাং সৃদ্ধি: । ৩৮ ।
অবো পৃথান্ধা কিং কুশনং পৃচ্ছেদং বততস্যাঃ পাঙ্না বিনা প্রাণধারণমেবাশ্চর্যমিত্যাহ। অবো ইতি । বিরুত্তে দীব্তি নচাভ্যাশ্চর্যং বভোহর্তকার্থে বিরুত্তে নভোগার্থং। তথাপি শাশুবামিত্যাহ তেন তথা ভূতেন বিনা ভ্রেবাহ বৃদ্ধিত। ধ্রুরের দিতীরং
সহাবো বস্য । ৩১ ।

পৃথাহর্তকার্থে জীবতীতি মুক্তান্তবৈত্যাহ হে সৌমা তং ধৃতরাষ্ট্রং জীবস্তমন্তানিমি। তং কিং যতঃ জধঃ পতস্তং তত্ত্ব হৈছে: পরেতার মৃতার লাতে পাওবে তংপ্রজাহেশ বো বিহৃক্তহে জোহং কৃতবান্ কিঞ্চ জীবভোপি প্রাত্মমাণকৃতবানিত্যাহ। যেন স্কর্ষ প্রাতা জহক স্বপূর্বাঃ সকাশারিবাণিতঃ নির্মানিতঃ ॥ ৪০ ॥

ळ मगमर्जः ।

কিং ক্লবা বৃত্তো পরাৎ পরিক্থমুকার। কলাদিব বজিশো ব্জবজনা মুধাদিবেতাজ্জোপমা। উদারেভাল উভ্তাইতি পুণারণা পাঠাত্তরং ॥ ৩৮ ॥

সর্কানের ভান্ যুগণৎ পৃজ্জন্ কুতীমণি শোচতি। অবে। ইতি। ডেবামের পরম্বলগুণানামর্জকানামর্থে ইত্যর্থঃ। ডডক্চ তেরামের কুশলো ভ্যাশ্চ কুশলং স্যাদিতি তবের ববেতি ভাবঃ । ৩৯ ।

करवनमजीवसः शाक्षः म त्नाहामि जन्मजाईवाद । शुजताईः जू जीवसमि करेवनतीजात्व्वाहात्मारवजाह त्र्नात्माजि ॥ १० ॥

@विधनायहळ वर्षी।

किः क्या बुर्छो शत्रार पतिक्थमानाय क्यानिव विक्रार्था वक्षत्वक त्र्यानिव । प्रभवीविदवकाकृत्वांगरमप्तः । ०৮ ।

चारहा चान्त्र्वायव क्षणवादा मन्ना भृषाणि बिन्नत्त हेणि छना। चाणि क्षणमः खरीणि छानः। नन्न किरमनः खरा छवाह बाक्षित्रदर्गाण शासूना चशकिन। विनाणि चार्क्कार्य पूषिविनानियानकशाणनार्थस्य हिणा वनि पूषिविनानत्त्रार्थका नाणिवनाःखना ना चन्निनात्तर्विक छातः। वः शासूरत्रका निःमहान्यय वीरना श्रम्यवन विजीवर यमा गः॥ ००॥

ধুতরাষ্ট্রনাক্ষণাতু কুশলং মৈন পৃজ্জামি কিন্তু ভমনঃ পততং অস্থলোচে হে সৌন্য উদ্ধন । বং পরেতার মৃতারাণি প্রাত্রে তৎপুদ্রজোহেণ বিষ্ফুক্তে জোহং কুম্বনার্শ মহুসপরলৈ প্রাত্তে শীনজেহণি বিল্লুক্ত ইত্যাহ নির্বাণিত ইতি স্মৃত্তন্য হিতকার্বোণ ॥৪০

जाननात्मत त्राका वन नृद्धक नरेशा यमक थे छूटे कार्जिय छ छ । विष्ठा कि विष्ठा । ०৮ ॥

ছে সংখ। কৃষী কি এখন কীবিডা আছেন। তাঁহার ভোগবাদনা না গাকিলেও কেবল আপনার বালক ছলির নিমিত জীবন ধারণ ক্রিতে পারেন সভ্য, কিন্তু রাজর্বিবর্য পাওু ব্যতিরেকে তাঁহার জীবন ধারণ অভ্যাশ্চর্যা বলিতে হইবে। মহাত্মা পাওু অঘিতীর বীর এবং অধিরথ ছিলেন, কেবল ব্যুষ্থাত্র সহায় করিয়া চতুন্দিক করে করেন। জাধ

হে সৌষ্টা অধ্যেতনাভিদানি গুভরাট্টের জব্য আমার পোক ব্ইতেছে, দেব যুত আতা পাও্র অনাথ সভান গুলির অবিভাচরণ করিয়া ভাঁছার জোহাচরণ করে এবং আমি তাঁহার হৃষ্ণ ও আতা, আপনার সুক্ত পুত্ত হুর্যোধনের বশীসূত হ্ইরা আমাকে পুর হুইছে দুর করিয়া দেন ॥ ৪০ ॥ সোহহং হরেমর্ত্য বিভূষনেন দৃশো বৃণাঞ্চারতো বিশাসুং । ক্রিটার বিশাসুং । বিশাসুং । বিশাসুং পদবীং প্রসায়কেরামি পশুন্ পত্রিশারের এএ । বিশাসুং নির্দান বিশাসুং । বিশাসুং নির্দান বিশাসুং ।

अवत्रवामी ।

আহো ধলু বিষয়: আনতোপি ওটনাবং ছুল্টেটিতং বঙৰং সাধুরণি ছ:ধং প্রাণিডোসীতি জভ আহ সোহৰং ছয়েঃ প্রসাদান্ত সা পদবীং মাহায়াং পঞ্চন্ পত্তবিষয়:। অত ভূতনে। নানোগলকো। গুড়া সন্ সূধং বিচরামি। কথং ভূতসা মর্তাবিভূছনেম ঐখ-গাঁচিছাদকেন মন্বাহ্মকরণেন নৃশাং দৃশন্তি এবৃত্তীশালয়তঃ আময়তঃ ॥ ৪১॥

নমু হবে: কিনেখং শীল্যা। বেন অভকানাং বনবাসাদিক্ষেশা তৰ্ভি অগা চ দৌতো বন্ধনোদানাদি প্রাতবঃ তর্গং গ্রেষাং অপরাধানভরবেষ হননং নাশ্রাগোপেক্ষেত্ত আহে। নৃনং নিশ্চিত্তং ত্রিভিম্বৈদ্ধংপথানাং অসৰ্ভানাং বৰাজেতােঃ প্রাণানাং আর্থি কিন্তি বিশ্ব জিলা ক্রিয়া জিলা অথসময় এব হস্তং সমর্থে।পি ক্রেণামব্যুপৈক্ত। ভিদানীনৈৰ তেবাং বধে স্কৃত্তিরাজ বধোঁ ন স্যাদিতাা

ক্রমসনত:

অহত্ত তৎসন্থাপি ভগবৎপ্রসাদায়গতেন দৃশা জাতবান্। অভত্তৎসন্ধং তাজা তৰাবাঁশবণেছপি নির্বিশ্বঃ সন্ লোকেষাআনং গোপনংশ্চরামি ইত্যাহ সোহমিতি। গত বিমরঃ গত সন্দেহঃ। অথ বিহুরস্য শ্রিক্সপরমপরারণস্যাপি ব্যবহারমাত্রং দৃষ্টা শ্রীকৃষ্ণপ-রিত্যাগেন বাবজ্জীবং দ্বগনন্মিদং শ্রিক্সফেনৈব কারিভ্মিতি লক্ষাতে তচ্চ বৃত্তরাষ্ট্রাদিবাবহারাবেশপরিত্যাজনার বৈক্ষমাত্রাবৈ-শায় চ পশ্চাত্তাপং সম্পাদ্যিত্মিতি অতঃ পূর্বং বোবিহুরাতিপ্রাক্ষোব্যাপ্যাতঃ সোহপি তদিক্ষবৈধ লাত ইতি জেয়ং॥ ৪১॥ ৪২॥

बिविधनां पहळावडी ।

বিশ্ব মরি ত্যা লোহোন মমাপকারকোংত্ং প্রাচ্ত পরমোপকারক এবাভ্বিতাহে সোহমিতি। মর্ত্তানাং ধৃতরাষ্ট্রালীনাং স্বপ্র সাদালক্তনাহিত্বদেন বঞ্চনেন নৃণাং তংগদৃশানামনোবাগণি প্রাক্তভানাং দৃশো বৃদ্ধিবৃত্তীশ্চালরতো অমরতঃ হরেঃ প্রসাদাৎ তৎ পদ্বীং ত্যা চরণবিন্যাস্থল চরণোচ পশ্রন্ ভক্তবংস্প্রা ভগবতঃ কির্দেত্বশৃষ্টামিতি গতবিশ্বয়ঃ কাপ্যেত্তহস্যাম্পলটনাদন ন্যোপলক্ষ্যঃ সন্ অন্ত তীর্থেবে চরামি অন্ত হুর্যোধননিংসানিত্যা খেবসম্জে নিম্ভতো বিহ্রস্য প্রভালীভূম ভগবতা ভেলিলেব কালে এবমুক্তং ভুভা মংপরমন্তক্ত বিহ্রমহিরহম্মস্থাতা কিমিতোবং বিবাদে বন্ধ হল হুং যিযাসসি তন্ধ তলৈব তীর্থে তদতো চলকং হার্যা সহ কৃতসংবাদ্যের মাংপঞ্জরের বাসাসীতি ভগবব্রোহম্মীরতে অতএব হুর্যোধনবধানক্তরম্পি মুধ্রিররালাপ্রাপ্তাবিশি ভগবদ্দলিন্ত্রিতেনের বিহ্রেশ নামাত্রমনাথা অবশামায়াসাইত্র কিঞ্চ মৌবললীলাক্তেহন্ত্রদ্ধিত ভগবতা বিহ্রদেরাদ্পান্তর্ভিতং।
অন্তব্র তদ্ববি উদ্ধবদ্দনপ্রান্তঃ বিহ্রসা বৈহ্বসাং ॥ ৪১ ॥

নত্তগৰতঃ কিমেবং শীলায়াং যেন অভকানাং বনবামানিকেশা ভবন্তি। অগাচ দৌতে বন্ধনালামানি পরাভবঃ ভত্তরং তে বামপরাধানভরমেব হননং নাপরাখোপেকেতাত আহ নুন্মিতি। তিভিম দৈকংপথানামূৰ্ভানাং ব্ধানেব প্রপ্রানামার্জিলিহী ব্যা লিশঃ অব্সময়ে হন্তং সমর্থোশি কুল্লাম্বমুশৈকত। তদানীমেব তেবাং বৃধে স্কত্ট রাজভ বধো ন স্যালিভ্যাশরেনেভার্থঃ।

হে উদ্ধব। আমি তাহার ঐ রূপ ছুশ্চেষ্টিত জানিয়া ছংখিত মনাঃ হইয়াছি এমত মনে ক্রিও না, ভগবান শ্রীক্লফ মনুষ্যের অনুকরণ করিয়া আপনার ঐ্থায় আচ্ছাদন কর্ত মান্বদিগের চিক্তে অম জন্মা ইতেছেন সত্য, কিন্তু আমি তাহার প্রসাদে জনীয় মাহাত্মা শ্রুপ্ত হইয়া গত বিস্ময় হইয়াছি এবং তাহার স্মুগ্রহে এই ক্ষিতিতলে অন্যের প্লক্ষিত হইয়া ছথে অস্থা ক্রিডেছি ১৯১॥

হে সথে! ক্রগণ অপরাধ করিয়া যদি এপুনুঞ প্রতিষ্ঠানা পাইয়া থাকে, তবে ভাষার কারণ এই বাধ হয়, যে সকল নুপতি বিদ্যা, ধন এবং অভিজন, এই ভিন্তে মত ও উৎপর্থগানী হইয়া য য সেবা বারা পৃথিবীকে বারম্বার চালিতা করিতেছে, তাহাদের লহিত এক কালীন সমুদারকে বধু করিয়া প্রপন্ন জনের ছঃথ হরণ বাসনায় ভগবান ক্রুদিগের এ সকল অপরাধ উপেকা করিতেছেন,

বধাৎ প্রপদার্তি জিহার্বরেশেং পৃষ্টের ক্রানা জির ।

ক্ষান্ত অংশার প্রস্থার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার ।

নম্বাধা কোহর্ছতি দেহযোগং পরোগুণানামুত কর্মাতন্ত্রং ॥ ৪৩ ॥ বিভাগত প্রপদারিক লোকপানামবিছিতানামুখারনে বে ।

शिवसंचामी।

শরেনেতার্থঃ। বিলামেলো ধনমবত বৈবাজিলনো মদঃ। এতে মদা মদাদ্ধানামেত এব সভাং দমা ইতি এয়ে। মদাঃ ॥ ৪২ ॥ সর্বাহ্যুতি বধাদার্থমের ভগরতো জন্ম কর্মাণি নানাধেতি কৈমুভানাারেনাছ। অলস্যাণি জন্ম অক্ত্রিপ ক্র্মাণি প্ংসাং

নপ্তবৃত্ত ৰখাল্যমেব ভগৰতো জন্ম কথাণি নান্যখৈতি কৈমুতান্যারেনাই। অজন্যাণি জন্ম অকর্ত্রপি কর্মাণি প্ংসাং গ্রহণার্থায় কর্মান্ত প্রবৃত্তরে। অন্যথা নচেদেবং তহি ভগৰতো জন্মাদি কথা তাবদান্তাং। কোবান্যোণি গুণানাং পরো গুণা-তীতো দেহবোগং কর্মবিস্তারকাহতীতি ॥ ৪৩॥

ভন্মাদেবং ভূতাচিন্তামায়াবিনোদস্য কথাং কথরে ভাই। ^{*}ভস্য প্রশেষা বেহ্বিললোকণাঃ ভেবাং অনোষাঞ্চ স্বীয়ে অনুশাসনে ক্ষমসমার্কঃ।

অবস্য ক্ষেত্যাবিভাষনাত্রং তদিতার্থঃ। অকর্জু: কর্মানীতি বৈর্দীলা ইত্যর্থঃ। পুনাং সর্কোষাং গ্রহণার স্বিদ্দানস আকর্ষ-পার। যথোক্তং পঞ্চমে। বলীলাং মৃগপতিরাদ্দেহ নবন্যামালাতুং স্বজনমনাং স্থানার বীর্য্য ইতি। অত্যেদেহযোগমিতি পিতৃ-ধেন শীর্জির্মাণানাং দেহেলাবিভাবমিত্যর্থঃ। স্থণানাং পরঃ কঃ পার্বদাদিরপি। ৪০ ।

হস্ত হস্ত সা ছব।তা ময়া প্রভাবে প্রতিক ভদাপুতেরম্যাভর্মশি ছবি প্রতাবরবং বৎ স্পৃত্তং তৎধলু বিল্পিতমেব তথাজনাদি

बीविश्वनाथठकवर्शे ।

विमामरमा धनममखरेथवाजिकारमा मनः। এতে गमा मनाकानाः छ এवहि नठाः ममा ইতি অবোমদাः ॥ ৪২ ॥

নকু চিদ্বনানন্দ ক্রণত ভগৰতঃ কিমেবং প্রাকৃত লোক ভন্তাভন্তগৰাবিছিনে সভাং। বভকেবু বাংসল্যং অন্যত্ত সন্ধানি হিতৈবিদ্ধিতি বাবেৰ ভতা ভেতু ইভাহে অলস্য লীবংলারাৰীনভাৱা অলাদি বিকার রহিতস্যাপি অল্পদোগ্যার্রা ভক্তপ্রেমাধীনভারা অলাদিবিলাসবদ্ধং উৎপথানাং স্নাগছিলামন্ত্রাগাং নাশনার আ কর্ত্তক নাশনেন তেবাং মোক্ষনানার অকর্ত্তং নাস্য কর্মাণ অলাদিবিলাসবদ্ধং উৎপথানাং স্নাগছিলামন্ত্রাগাং নাশনার আ কর্ত্তক নাশনেন তেবাং মোক্ষনানার অকর্ত্তং নাস্য কর্মাণ আলাদিবিলাসবদ্ধং উৎপথানাং স্বাধি প্রতিলামন্ত্রাগাং নাশনার আলাদিবিলাসবদ্ধানি প্রেমান্ত্রালি প্রতিলাম্বি আলাদিবিলাসবদ্ধানি ক্রিপ্রেমান্ত্রালি বির্ভিত্ত ক্রিক্সানাং গ্রহণার আলাদিবীর দেব আলাদিবিলাক মন্ত্রালি প্রেমান্ত্রালি প্রতিলাম্বিলাম্বিলাম্বিলা বিলামন্ত্রালি ক্রিলামন্ত্রালি ক্রিলামন্ত্রালিক লিক্রালিক লিক্রালিক্রালিক্রালিক লিক্রালিক লিক্রালিক

অতত্ত্বসা চিলবনামন্দ্রপাণি জন্মকর্মাণোর কথ্যেত্যাশরেনাই তথা প্রপন্না বেছবিশ লোকণালাতেরামজেরাক সীয়ে অহশাসনে-হিতাং অর্থার প্রব্যোদ্যাদা। তীর্বং পর্মপারনী সংসার তারিশীচ কীর্তি র্যসা ত্রা। সর্কের্ তীর্বের্ প্রার: কৃত্যক্তন এবাছি। ফলতঃ যদি অপরাধ স্মায়েই তাহাদিপকে বধ করেন, তাহা ইইলে ভূষ্টগণের বধ হইবে না, এই মানমে অভি প্রতিক্ষা প্রদিনি করেন নাই ॥ ৪২ ॥

্তু সত্থক্তি রশে। সেই শচিস্কা নারায় জীড়াকারি তথবানের কথা। কীর্ত্তন কর। তিনি অল এইয়াও প্রপন ল্যোকপান্দিগের তথা শীক্ষ স্বস্থারনে অব্ভিত স্বদান্য ভক্তলনের প্রয়োজন। নিয়িত भर्शात कालगा वहबकमा वार्ताः मृदि कीर्यत्र कीर्यकीरवीः ॥ अत ॥

॥ # ॥ देखि श्रीकांशवरक महाभूतार्थ भातमदःगाः ग्रेबिकांद्राः देशवानिकाः कृषीप्रकरः विकृताद्वव गर्चारम क्षथरमाशादः ॥ # ॥ > ॥ # ॥

প্রীশুক উবাচ॥

ইতি ভাগবতঃ পৃষ্টঃ ক্ষত্রা বার্তাং প্রিয়াপ্রাং। প্রতিবক্তুং নচোৎদেহে ওৎকণ্ঠাৎ স্মারিতেশরঃ ॥ ১
যঃ পঞ্চায়নো মাত্রা প্রাতরাশায় বাচিওঃ। ওট্রচ্ছত্রচয়ন্ বৃদ্য সপর্যাং বাদলীলয়া ॥ ২ ॥

विश्वकात्री ।

হিতানামর্থার প্রবোজনার বছরু জাতত। তীর্থং সংসারতারিণী কীর্জির্যস্যেতি 🛭 🕏 🗈

। • । देखि कुर्जीत व्यवनः । • ।

विकीटत क्रकविटलवानक्टमाठत्रव्याक्तरः । कट्य वानठित्रवानि क्रक्रमावर्गत्र चमन् । • ।

ं खरबदः व्यवनार्थाः शृहेना উद्भवना व्यक्तिकविदरहोरकशार्त्यम व्यक्ति वहनानामर्थामार चक् खिः। ইतीकि । चातिक जेचरता वना ॥ ১॥

এতদেৰ কৈৰ্তা ন্যাৰেন প্ৰণক্ষতি ঘাভ্যাং বং পঞ্চ ৰৰ্বোপি বাল্লীলয়েতি ক্লকং ক্ষিৎ পরিকল্পা পরিক্লিভৈৱেব সাধুলৈঃ

क्रमन्दः।

শীশামেতবিশ্বরণার প্রোত্মিকামীতাহ তলোতি। ৪৪।

। । ইতি প্রীভাগবতে তৃতীরক্ষে শ্রীজীবগোখামিকুত ক্রমনন্দর্ভন্য প্রাথমোহগারঃ সমাপ্তঃ । । । স্থারিতেতি স্বগ্রিশেবং গমরতি । ১ ।

ব ইতি বুঝকং। বসা পঞ্লিকরেপসা করসং ভরাং কৃত্টিরসেবিভ্সিভার্থঃ। ভত্ত আবরলোপ্যাসন্ সুবাংনাভিবলৌজস

विवयनायहळावळी

সংঅতি বং তেবাং সাক্ষামুপাদার কৃষ্ণস্য কীর্তিভীর্থামূতে বাং নিমঞ্জবেতি ভাব: 8 ৪৪ ৪

. व + व देखि नातार्थनर्मिनार द्विनार कक्कात्रक्रनार । क्कीदन व्यवस्थान्तः नक्कः नक्कः नक्कः नक्कः नक्कः नक्कः

বিভীরে প্রেমটবরুব্য লোলনল্পিভাননঃ। একলীলাং স্মানেন রাসাভাস্থবাহ্বদং । • ।

শীক্ষ বিশ্বেবিবৃদ্ধপ্রেমমৃত্তি ভিস্যোদ্ধবন্য প্রতিবচনাবামর্থাঃ বধন কামপি দশাং দর্শরতি। বিজ্বলোটক্ষঃ প্রশ্নেত্যামৃত্তিভক্ষে ছারিত ঈশবো বন্য সঃ । ১ ।

জন্য প্রাক্তনীং ভক্তিং নর্শমতি বাসনীলরেভি পঞ্চালিকাভিঃ থেনরের কামণি পঞ্চালিকাং ক্লকং পরিকল্প ক্লিতৈরেবোপ চারেঃ পরিচর্গাং কুর্মন্ মাত্রা প্রাত্তিজনার্থং প্রার্থিতোপি সংগ্রহাণি মে ভর্মৎ পরিচর্গা ন নির্ব্যক্ষতি ভভোলনং নৈছেৎ এ২

यहकूल बन এহণ করিয়াছেন, তাঁহার কীর্ত্তি করিলে সংসার হইতে নিস্তার হইবে ॥ ৪৪ ॥
॥ # ॥ ইতি তৃতীয়ে প্রথম ॥ # ॥

ৰিতীয়াধ্যায়ে শ্ৰীকৃষ্ণের বিশ্লেষ নিমিত্ত শোকার্ত হইয়া বিশ্লুরের নিকট উদ্ধব কর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের বাল চরিত্রে বর্ণন । • ।

ভক্তেৰ কহিলেন বিজ্ঞা এই প্ৰকাৰে উদ্ধান প্ৰিয়বার্তা জিজাসা করিলে ভগবান্ প্রীয়ুক্ষ তাঁহার স্মৃতি পথে আরুচ হইলেন, ভাহাতে বিষয়ে উৎক্ঠা বশত্য সহসা প্রতিষ্ঠন লানে তাঁহার সামর্থ্য হইল না॥ ১॥

হে রাজন। বিস্নরের প্রশ্নে উদ্বেশ্ব সহলা প্রতি বচন দান করিতে উৎলাহ কি রাপেই বা হইতে পারে ? যিনি পক্ষর্ব বয়াজন কালে বাল্য জীড়া করিতে করিতে বধন কোন পুন্তলিকাকে জীয়ক

স কথং সেবয়া তত্ত কালেন জনদং গতঃ। পৃক্টোবার্ডীং প্রতিজ্ঞ নার্ডবৃ: পাদাৰসুত্মনন্ ॥ ৩ ॥
সমূহুর্তমসূত্র্কীং কৃষ্ণাঞ্জি তথকা ভূপং। তীক্ত্রণ ভক্তিবোগেন নিষয়ং সাধু নির্ভঃ ॥ ৪ ॥
পুলকোত্তিনস্বালো মুক্ত্যীলদ্শা শুচঃ। পূর্ণার্থো কৃষ্ণিতভেন স্কেত্প্রসন্ধপুতঃ ॥ ৫ ॥
শনকৈ র্তগবলোকান্লোকং পুনরাগতঃ। বিষ্ণা নেত্রে বিস্তরং প্রীত্যাহোদ্ধব উৎসামন্ ॥ ৬ ॥

क्षित्रवाची ।

পরিচর্যাং কুর্বন্। সালা প্রাতর্ভোলনার্থং প্রাথিতে।পি তয়ে।য়নং নৈ্দ্রং । ২ ঃ

षदगः दुष्यः गठः धाराः ॥ ० ॥

জীক্ষাজ্যি অধ্বা সাধু নিবৃতিঃ ভস্যামেব ভীত্রেণ বিবশবাপাৰকেন ভক্তিবোগেন ভূশং নিময়: ॥ ৪ ।

পুলকৈ ক্তিয়ানি উজ্জ্তিতানি সর্কাণালানি যত। মীলভা দৃশা ওচ: অঞাণি মুঞ্ন। তেন বিহুরেণ পূর্ণার্থ: কৃতার্থো লক্ষিত:। যতো ভগরতি যা সেহত্তত প্রাসরং প্রাত বিন্ সংস্কুত: নিমগ্রা । ৫॥

ভগৰানেৰ লোকঃ ভ্ৰাং নূলোকং দেহাম্যকানং। উৎশয়ন্ ইত্কুল সংহালাদি ভগৰচাডুৰ্গ শারণেন বিশাসং প্রাপ্রন্ ॥ ৬ ॥
কিম্যালভঃ।

ইভানেন বিরোধাৎ। ২ ।

ত হিঁহখং প্রাকুণ কৰান্ উচাতে প্রীভগবতৈৰ খনিতালীলায়া মনসি দর্শনেন সাস্থনাদিত্যাহ স ইভি ত্রিভিঃ । ৩। ৪। ৫। ভগৰলোকাৎ নিতালীলাসয় বায়কাধ্যাৎ। নুলোকং বহিঁদুক্তমানং বিহুৱাদিময়ং মহ্ব্যলোকং। আগতঃ অহুসন্ধানঃ।

बीविधनाषहक्रवर्द्धी ।

ভত সেবনা হেত্না সেবাপ্রভাবেনেতার্থ কালে সময়েহণি জনসং বৃদ্ধং ন পতং বহা কালে যা সেবা বিদিন্ কালে যা সমূচিতা সেবা তয়া কালেনেতি তৃতীরাস্ত তয়া ব্যাপ্যানং অসকতং তঅ প্রবন্ধনাগাদন্ মুখানোতি বলৌজন ইত্যানন বিরোধাং ॥ ৩ ॥ পালবোরকুমনগং বির্ণোতি দ ইতি বিহুর প্রশ্নৈকদ্বত মুক্ত ভিলে সতি হস্ত তেন প্রভ্নাহং বিরহিতোশীতি প্রীক্ষাজ্যোঃ মন্ত্রন লাকাংকারে সতি প্রাপ্তা যা সৌলগ্যস্থা তয়া আখাদ্যমানরা মুহ্র্মাত্রং ঘটকাহর পর্যাস্তং তৃষ্ধীং হিতোহত্বং ভতশত তীব্রেশ কৃষ্ণবিশ্লেব বির্দ্ধেন ভক্তিযোগেন প্রেয়া আখাদনতৃষা ততামেব স্থানাং নিম্মাঃ বিশ্বতক্ষ্ণবিশ্লেবহুংশঃ সন্ লাধু যথা ভাতবা নির্তিহত্ব ॥ ৪ ॥

নিবৃত্যি পুজাবং দর্শরতি পুলবৈক্তি নানি অভুনিতানি সর্বাণ্ডলানীতি উত্তিদ অক্তবাদা। ইতি অভ্যুক্ত ব্যক্তিটো নীলভ্যা দুশা শুচঃ অঞানি মুঞ্দ জেন বিত্বেশ পূর্ণার্থ: কৃতার্থো লকিড: অনুভাবৈর্দ্দিতেন প্রেলেডার্থ:। বতঃ প্রেল এব ভগবতি মেহ্লিডেল্লব অভ প্রেলঃ পুরত্তিন্ সংগুত: নিদায়া প্রথমং প্রেলি নিমগ্রভত্তি দ্বিদীয় ক্লামাং লেহে নিমগ্র ইত্যুর্থ: । ১।

ভতত ভগবলোকাৎ অপ্রেমাজেকেণ প্রাপিতারিতা শীলামর বারকাশ্যাৎ নৃলোকং বিহরপ্রেরা আফ্রামাণঃ সরাগতঃ পুনরিভি

কল্পনা করিয়া কল্পিড উপহার ঘারা তাঁহার পরিচর্যা করিতেন, তৎকালে তাঁহার মাতা প্রাতঃ কাদীন ভোজনার্থ আহ্বান করিলেও ভোজন করিতে ইচ্ছা করিডেন না॥ ২॥

তিনি নিরম্ভর ভগবান্ প্রীকৃষ্ণের সেবা করিয়া কালজ্ঞমে বৃদ্ধ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, তৎকালেই আপনার সেব্য প্রভুর বার্ত্ত। জিজ্ঞাদিত হওয়াতে তদীয় চরণম্ম তাঁহার স্মৃতিপথে আরুত হইল, তাহাতে তাঁহার কি সহসা প্রতিবচন দানার্থ বাক্য ক্ষৃতি হইতে পারে ? ॥ ৩ ।

ভিনি মুছুর্তকাল নিম্পন্দ ও তৃষ্ণীস্তৃত হইরা রহিলেন এবং প্রিক্তফের পাদপদ্মের হুধায় যেন উত্তম রূপে নির্ম্ব ও বিষশতাপাদক ভিতিযোগ বারা যেন সেই হুধাতেই নিমা হুইতে সাগিলেন ॥ ৪ ॥

ভাঁহার সর্বাদে পুলকোভিন ছইল এবং ঈষস্মীলিত লোচনধন ছইতে লোকাত্রু পতিত হইতে লাগিল, আর ভগবানের প্রতি যে স্নেহ ছিল তাহার প্রবাহে যেন আপনি নিম্মা হইলেন, বিছর কহি-লেন এ ব্যক্তি কুডার্থ ছইয়াছে॥ ৫॥

কিয়ংক্রণ পরে নোহ নির্তি হইলে মহাত্মা উত্তব ভগবং স্বরূপ লোক হইতে 'স্লোকে পুনরাগভ

क्रिकेन छेनाह ॥

কৃষ্ণজ্যমণি নিমোচে গীর্ণেবজগরেণ হ। কিনুন: কুশলং জারাং গতজীব গৃহেবছং ॥ ৭ ॥
পুর্তগো বত লোকোংগ্নং যদবো নিতরামণি। যে সংবসত্তো নবিত্র হরিং মীনা ইবোডুপং ॥ ৮ ॥

विभवतामी।

শ্রীকৃষ্ণবিরহেণ সংতণ্যমানং প্রভাবে শ্রীকৃষ্ণ এব ছামণিঃ সূর্বাঃ ওছ নিম্নোচে অন্তমরে সভি। অন্তগরেণ কালমহাসর্পেণ গীর্ণেরু গিলিতেমু নো গৃহেরু ৭২ পৃষ্টানাং বন্ধুনাং কিং মু কুশশং জ্বাং ॥ १॥

অমুণোচলাই হুউগো ভাগাহীনঃ। যে সহ বদজে।পি হরিরহমিতি ন বিহুঃ। বধা কীর সমুলে জাতমুভূপং চরাং ভগা ভরত্যা

क्रमनमर्कः।

উৎশ্বরন্ ভলফুভবেনো চৈচরান নিশভ ইভার্থঃ। । । । ।

ছুৰ্জগ ইতি। অন্নং মম হৃদরে ক্রুন্ বারকাবাসী লোকঃ। ছুর্জগো ভাগাহীনঃ বে সংবসত্তঃ সহ বসভোছপি ন বিছুর্মলানস্তি। অহং তুস্বাসভাগাহীনো নজানামীতি নাশ্চর্যামিতি ভাবঃ। অত্তেলানীং বলি সংবাসো নাভবিবাৎ তলা নাবেদিব্রিতোবাবক্ষ্য-

क्षेविधनागठकवर्छी । .

ৰিতীয় মৃক্ষ ভিকে সভীত্যথ:। উংশ্বন্ ভ্ডারহরণাদি চাতুর্গ শ্বরণেন বিশ্বরং প্রাপ্তন্। যথা ভো উদ্ধব বিহুরং প্রভারতরণ সমাধার প্নরতাগচ্ছেতি ভগবদাখাসনেনোংকটং শ্বিতং কুর্মন্ ॥ ৬ ॥

শোক ব্যাকৃশং বিছ্রমাখাসরিত্ং প্রথমমের সিদ্ধান্তঃ ক্রথন্ অবহির্ত্তা তিরির্হ সন্তাপং লোকানাং ছ্রবন্থানং চাবেদরতি। ক্রথাবে ছামণিঃ স্থান্তগা নিম্নাচে অন্তসময়ে সতি অন্ধগরেশ মহাসর্প রূপ শোকান্ধরার গীর্ণের্ নিগিলিন্তের্ গৃহের্ নোহআকং ঘং পৃটানাং বন্ধুনাং কিং কুশলং ক্ররাং। অত্ত লোডিশ্চক্রে ছিত্তসার ছামণেরখরও সার্থানি পরিকর বিশিষ্টসা যন্ত্রিন্ অন্তসমন্ত্রে দৃশ্রক্ত তদন্তের্ বর্ষের্ তদৈবোদরপূর্বাহ্রমাণ্ডলেরো দৃশ্রক্তে যথা তবৈব গোকৃল মধুরা ভারকান্থত সপরিকরত তত্ত
দ্বীলান্তসাজ্ঞিত অগজ্ঞনলৈ কৃষ্ণস্থা হার্লি ব্রহ্মাণ্ডেইন্তর্ধানং দৃশ্রতে তলৈবান্তের্ ব্রহ্মাণ্ডের্ ল্যোৎসব রাসোৎসব কংসবধ
ক্রিণানিলি পরিপ্রোৎস্বাদ্যা দীলা দৃশ্রক্তে ক্যোতিশ্চকে স্থান্তোদরপূর্বাহ্রাদ্যাঃ প্রতীর্মানন্তাদবান্তবাঃ। কৃষ্ণভুত্ত অনাদ্যাশ্ততে তত্ত নিবান্তের প্রাক্তির প্রকাশ্তরাঃ। কৃষ্ণভুত্ত ভ্রাদ্বাদ্য প্রতির্দ্ধান্তবান্ধান ক্রিন্তির বিশেষঃ সর্বাদান ক্রিন্তির ক্রিন্তির বিশেষঃ সর্বাদান ক্রিন্তির বিশ্বান্ধান ক্রিন্তির ক্রিন্তির বিশ্বান্ধান ক্রিন্তির স্থান্ধান স্থান্ধান ক্রিন্তির স্থান্ধান ক্রিন্তির স্থান্ধান স্থানিনা স্তিতিং । ৭ ।

এবং ভৰিনা ভূতানামূত্তমলোকানাং ক্ৰবস্থাং দশ্সিকা ভৰিবহোজেকেগাক মাৎ ক্সিতং ভদীবমহৈ মধ্য জানং স্বাধিন্ নালকা ভৰিনা ভূতানাং ভালী পাৰিক বাণাং ভালুশসহৈ মধ্য ক্ষিকালকা প্ৰেমবিজনত হেনাপি বৈচিত্তেণৈৰ ভালিক্ষতি ভূৰ্ত ইতি। আহং মন জ্বান্ বারকাবানী লোকঃ ভূৰ্তা। ভাগাহীনস্ত্তাণি ধনবন্ধনভিসনীপ সম্বিনো নিতরাং ভূৰ্তা। বে সংবসন্তঃ সহ বস্ত্তোপি হরিং সমাধুর্থাণ ভত্তমনোহ্যক্তং ন বিহুর্ন আনিতি। অহন্ত সংবাসভাগ্যহীন মাৎ আছোণাতি ভূর্তা ইতি ভাবঃ।
মধা কীর্সমৃত্তে আভ্যুত্পং ভত্তহং ভক্তং ভক্তা মীনা কেবলমিভি কমনীয় আছাকীনঃ ক-ভিজ্ঞলচয় ইত্যেব বিহুর্ন ভূ দেবভারপঃ

ছইলেন অর্থাৎ তাঁহার দেহে চৈতন্য উদয় হইল, তাহাতে নয়ন যুগল মার্কন করিয়া বছুকুল সংহারাদি ভগবচ্চাতুর্ব্য স্মন্ত্রন বিস্ময় প্রকাশ করত বিত্রকে স্বোধন করিয়া কহিতে লাগিলেন । ও ॥

আহে বিচুয় ! প্রীকৃষ্ণরূপ দিবাকর কালবশতঃ অন্তগত হওয়াতে আমাদিগের গৃহ সকল কালরূপ মহাসপে গিলিভ হইয়াছে, ইহাতে ভোমার জিজানিত বন্ধুদিগের কুশল কি বলিব ? ॥ ৭ ॥

আহা ! এই নরলোক অতিশয় ভাগাহীন এবং যহগণ সর্বাপেক্ষা তুর্ভাগ্য ! ক্ষীরসমূত্র-জাত চল্লের সহিত তত্ত্বে মহস্তগণ একতে বাস করিয়াও বেমন তাঁহাকে কমনীয় কোন জলচর বোধ করত

क्षेत्रहानवक्षत् ।

ইলিতজ্ঞাঃ পুরুপ্রোচা একারামাশ্চ সাস্থ্যাঃ। সাস্থ্যায়্যভং সর্ব্বে ভূতাবাসসন্প্রভা ৯॥ দেবস্য মার্যা স্পৃতী যেচান্যদসনাজিতাঃ। জামাতে ধীর্নতবাক্রৈরাক্সপ্রভারনো হরো॥ ১০॥

विगतपानी।

মীনাঃ কেবলং কমনীরঃ কল্চিচ্ছলচর ইত্যেব বিছঃ। সচাস্তসমনিতি তবং। ববা মালে প্রতিবিধিতং চন্ত্রং বধেতি । ৮।

তাগাহীনখাদেব ন বিছঃ নতু আন সামগ্রাতাবাবিত্যাহ। ইলিতং চিত্তত্বং খানতীতি তথা পুরু অতিশরেন প্রোচা নিপুণাঃ।

এক্সিরেব স্থানে আবসভীতি তথা। এবং ভূতা অপি ভূতানামাবাসমীখরং সঙ্কং সাখ্তাস্বতং সাখ্তাং শ্রেষ্ঠমমনান্ত । ১।

বে বাদবা বেবমাররা স্টাঃ বাধো বাদবোহ্যথম্বভ্রিতি ব্যক্তি। বেচ শিত্তপালাদ্বোহ্যথম্ববান)বৈর্মাশ্রিতঃ নিক্তি তেয়াং

क्रमम्बर्धः ।

দিতি জেবং। কিঞ্ছরিং সর্কাননোহরত্বেন ভাতমণি তানে বিহুঃ অবং ভগবজেন ন লানস্কি তত্ত দৃষ্টাস্তঃ মীনা ইবোড়ুপ্রিতি। অকলাবর্জনার্বং প্রভাসে সমুদ্রনায় তং মীনা বধা কেবলং মুধুরোজ্জনুছেনৈর বিহুঃ নতু দেবোত্তমত্বেন তছদিতার্বঃ॥৮॥

নবধুনাপি ন জানস্তীতি কথং জানাসি ইত্যাশকা তল হেতুং প্রাচীননিলাছতবমার ইলিডজা ইতি। সাম্বতাং বেবামের ঋষতং নিডা কুলপতিকে বর্তমানং অরং ভগরতং অণি ভূভাবাসং তরংশক্ষণং ভূতাস্কর্যামিনমেরামংসতেতি। একোনের ইত্যাদৌ সর্ক্ষ ভূতাধিবাস ইত্যস্তর্যামীতি শ্রতেঃ। উক্তঞ্জ্বামীনাং প্রবেশতেতি ॥ ৯॥

্ষেবজেতি। যে চ বাদ্বেজ্যোৎজে বিরাজ্বিজ্বামিজ্যাজ্যকথকারেশ প্রম্বিশ্বাংস তেও্নাদ্সংপরমোৎকৃষ্টভৌতিক্দেহোসা-বিভি মনাক ইতার্থ: ঃ ১০ ঃ

क्षीविषमाभहक्कवादी ।

স্থাংশু নিশাণতিরিতি তথলবদবং রঞ্জা মাধুর্যামের জানন্তি নবৈশ্ব্যামিতি হংথেন তানু হুর্ত্যানের ত্রবীনি ইতি ভাব:। বস্তু তস্ত্র হজে গৈ ভংগামাহাস্থাং যদ্য সং ঐপর্যাঞ্জাননিষ্ঠে ভাগাদি মাধুর্যাঞ্জান নিষ্ঠানামুৎকর্বসা দশমে ব্যাখ্যাসমানহাৎ অন্ত্র ন বিহ্রিতি বর্জমান নির্দেশেন হারকাবাদিনাং যদ্নাঞ্চ ভগবরিতা সন্ধিত আপানার ভো বিহর স্বং পৃইকুশলা যালবাদয়ং সম্প্রতি আভিগবতা সহৈব স্বংবনৈর ধেলাভি। কেবলং প্রাষ্ঠা সং পৃইকাহমিত্যাবাদের তৎ সংবাসবির্হিতহাৎ অকুশলিনাবত আবাদের শোচার ইতি ভাব:। অনু যদি ভলানীং রুফোন সহ তেবাং সংবাসো না ভবিষ্ত্রশানবৈদ্ব বে বসন্ত ইত্যেবাবক্ষানিত জ্বোং॥৮

নমু ওছপ্রেইমকমাধুর্যাভ্জো গোকুলবাসিন ইব ছারকাবাসিনো ন ধরৈছার্য জ্ঞানশূনা। ভবস্তি ভংকণং ন বিছ্রিতি এবীবি ত্রাই ইলিতজা ইতি ভদীরচিত্ত্মণি বস্তু লানস্তি কিং পুনং শরীরহং সৌন্দর্য লাবণাদিকং তত্র হেভুং পুরু প্রৌচা অভি পুন্ধ বৃদ্ধরঃ। তদলৈ প্রাক্তানাভাবনাই এক স্থিরোসন শর্মাদৌ আর্মতে। সাজভাং বেষামের ঝবছং নিভাকুলপতি দেন বর্ত্তমানং ক্ষণ ভ্তাবাসং সর্মভ্জোহারসক্ষমন্ত্র্বামিণমেবামংস্ত একো দেন ইভ্যাদৌ সর্মভ্তাবিবাস ইতাত্তরামীতি প্রতঃ। নভু স্বয়ং ভগবজেন সাক্ষারার্যাপ্যাপাংশিনমিতাভতে হরিং ন বিছ্রিতাহ্মবোচমিত্ত জগতে সমুচিতং জানজোহ্লান স্থান নিন্দ্যতে। নিন্দ্যতে ভ্তাবাবারি ক্রিভ্রেমিক হিত ভাষং । ১ ॥

এবঞ্চ বে মর্ত্যলোকবর্ত্তিনঃ সাধবন্তবিরহজ্:থিনঃ বেচ বাদবাদ্যাভারিতাসঙ্গিনঃ সংবোগস্থবিনতে বর এব ভক্তিমত্তাব দন্যা এব

অমৃত্যন্ন বলিয়া জানে নাই, ভজেপ ঐ যতুগণ ভাঁহার সহিত একতা বাস করিয়াও 'ইনি হরি' এ রূপে ভাঁহাকে জানিতে পারেন নাই ॥ ৮॥

হে বিজ্ব। যত্পণ পৌর্জাগ্য বশন্তই তাঁহাকে জানিতে পারেন নাই, নচেৎ তাঁহাদের জ্ঞান সাম-থীর অভাব ছিল না, ওাঁহারা লোকের চিত্তত্ত ভাব জানিতে পারিতেন এবং অভিশায় নিপুণ ছিলেন, কি আশ্চর্যা! এক তানেতেই জীড়া করিজেন তথাপি প্রীকৃষ্ণকে ভূত সকলের ঈশ্বর না জানিয়া যতুপ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিজেন ॥ ৯॥

य यापनश्र छश्यात्मत मात्राय मुख इहेमा 'हैनि यापन आमात्मत बक् ' अहे ऋश कहित्छन अवः द्व

व्यमन्त्राज्यजनमामविष्यम्भारं मुनारं । जानात्रास्त्रत्यास्यस्य विविधः त्नांकटनावसः ॥ >> ॥

विश्वपानी।

বাকৈঃ আগ্রানি হরাব্পাশ্রনো নিকিপ্রচিন্তসা মাদৃশক বৃদ্ধিন আমাতে মোহং ন প্রাণাতে অনোত্ মৃচা এবেতার্থঃ । ১০ ॥
কোহসৌহরি রিতাপেকারামাহ প্রদর্শ্যতি । ন তথাং তপো বৈঃ অভোহবিত্থা দুশো বেবাং তেবাং । প্রবিশ্বং মুর্তিং এতাব্তথ কালং প্রকর্ষেণ দর্শবিদা বোহত্তহিত্বান্ । লোকসা লোচনমাধার আছিলা তাদৃশস্যানাস্য বিলোকনীয়স্যাভাবাং ॥ ১১ ॥

क्रममण्डः।

ৰথা তথাপি দৰ্কাকৰণমেৰ তজ্ঞপমিতাহ প্ৰৰণেতি। লোকে লোচনকণং স্বৰিং স্বৃত্তিমানার পৃথীয়া। তথোজাং মৌৰলে পর্কান কৰা ভারাবতরণং পৃথিবাাঃ পৃথ্লোচনঃ। মোচরিয়া তর্মুং ক্লফঃ প্রাপ্তি স্থানমূত্মমিতি। মোচয়িয়া ভারাবতরণাং ত্যাক্রিয়া নতু মৃত্তে তার্থঃ । ১১ ।

श्रीविषना #हक्तव ही ।

আন্যেশভক্তা নারকিন এবেতাহে দেবসা মারমা যে স্পৃষ্টা বিশ্বমানিনন্তজাপি বেচ আনাৎ পিইসিদ্ধান্তাদপর মন্তির্ভমত রাশ্বমানিত বেবাং বাক্যৈ কৃষ্ণ: শবীরং পরিতাকা বৈকৃষ্ঠং গত ইতি তথা কৃষ্ণো শ্বতরাষ্ট্রজাসদাদি মহারাজজোহাধর্মজনিতেন একা শাপেন সকুল এব নাশং প্রাপ্ত ইতি নিলাভাবিতৈহঁরে আশ্বনি পরমাশ্বনি উপ্তাশ্বনো নিক্ষিপ্ত চিত্তস্য ভক্তজনস্য ধীর্ন ভ্রাম্বাভি কিন্ত তথাধুর্যেএব নিমজ্জতি যেবাং ভ্রামাতি তৈবপালং নারকিতিরিভি ভাবং ॥ ১০ ॥

সকল শিশুপালাদি অসন্তাব অর্থাৎ বৈর আপ্রের করিয়া তাঁহার নিন্দা করিত, সেই সকল ব্যক্তির ঐ ঐ বাক্যে মাদৃশ ব্যক্তির বৃদ্ধি মোহ প্রাপ্ত হয় না, যে হেতু আমাদের চিন্ত আত্ম স্বর্মপ হরিতে নিন্দিপ্ত হইয়াছে, কিন্তু অন্ত লোকে অনায়াসেই মুশ্ধ হইতে পারে ॥ ১০॥

হে মহাত্মন্! ভগবান্ প্রাকৃষ্ণ এতাবং কাল পর্যন্ত লোকদিগকে আপনার মৃতি প্রকৃষ্ট রূপে দর্শন করাইয়া একণে লোক লোচন স্বরূপ সেই মৃতি তাঁহাদের নেত্র সন্নিধান হইতে যেন বল পূর্বক গ্রহণ করিয়া আপনি স্থাহিত হইয়াছেন লোকেরা তাঁহাকে অনেক কাল দর্শন করিয়াছিল লত্য, ক্ষিত্ত তাহাদের তপন্যা না থাকাতে নয়নের পরিভৃত্তি ক্ষেত্ম নাই ॥ ১১٠॥

বন্ধতিনীলোপত্তিকং করে। সনারাধকং বর্ণরতা স্থীজ্ । বিশ্বাপনং ক্যাচ সোত্রতের পরং পর্ত ভূমনভূকার্ক । ১২ ॥ । বজর্মনার্কত রাজসূত্তে নিরীক্ষান্ত্র করেরনং জিলোকঃ।

Beamist :

करवर निषर वर्षत्रकि विकिः । वयक्षिनीमाञ्च केनविकः (दानारः ।. कमानि निषत्रक्रमकः वकः (मोबनर्कः मोबनग्राक्रियत्रम "नेत्रर नेवर नेत्राकार्षा । क्वनानार क्वनानावानि निषन् ॥ ১२ ॥

वृत्याः चकावनः नवमामन्त्रका विक्तनत्वा त्नाकः वानियावः चना देनानीः देव वित्य चलाक् श्राको चलावित जाताव

क्षमम्बद्धः।

ভত্ত হরাব্ধান্তনাং নিশ্চননাহ বমর্ত্তি । স্ববোগনারবিদং স্বচিন্ধজেবী বাং এতাদৃশ সৌভাগাভাশি প্রকাশিকেরং ভব-ভীজাবং বিধং দর্শনতাবিদ্ধতং । সকল স্ববৈভব বিষয়প্রিয়াপনারেছি ভাব: । ন কেবলমেভাবং তহৈতব রুণান্তরে ভাদৃশ্যানহ-ভবাৎ ভবাশি প্রভিন্নবম্পাপূর্বপ্রকাশাৎ স্ব্যাণি বিশাপনং বভঃ নৌভগর্ছেঃ পরং পদং পরা প্রভিন্ন নত্ত ভত্ত ভ্বণং ছতি সৌভ-গবেত্রিভাতভাছ ভ্বণেতি । কীদৃশং মর্ত্যালীপরিকং নরাক্ষভীতার্থ: । ভশাং স্ভতরাবের যুক্তস্কং প্রমহাকালপুরাধিপেনাপি বিভাশবা মে সুবলা দিব্দুশা মরোপনীতা ইতি । প্রহরিবংশে প্রক্রমেন চ । সদর্শনার্থং তে বালা হভাতেন মহান্মনেতি ॥ ১২ ॥ স্বেম্যালপ্রিনামার স্বর্গেতি । ১০ ॥

विविधनां पठकवडी ।

সংৰদ্ধাৰ ছবিদং বৈত্ঠবেৰ কিং নীতৰাংজনাই বছিদং মৰ্ত্তানীলাক ওপৰিকম্পবৃক্তং কথং বৈক্ঠং বাছিতি ভাষঃ। তেন বাৰ কাৰামেৰ সংপ্ৰজাপি বথা পূৰ্ব্বেৰ ভৰ্তত এব ভৰিছ্বাভাৰাৰনত্যা লোকান্তৰ পঞ্চনীতি মান বিশেষ ইভি ভাষঃ। নচ মৰ্ত্তালী নৌপৰিক্ষেন ত্যাপকৰোঁ বছৰাঃ প্ৰভাত বৈক্ঠলীলান্তৰপেভোছপি প্ৰযোহকৰ এবেতাছ। অবোগমারা অৱপত্তা চিছ্জি জ্যা বলং সংপ্ৰমেৰ সামৰ্থাং বৰ্ণৱিতা দপৰিত্বিতি ন চ কিমপোখৰ্যাং মাধুৰ্বাং বা নিক্লুতা আলিতসপিতৃ অসৰ্ব্যমবান বিশ্বে নিক্ষিণ্ড নাশি বৈক্তিপোৰং বলং দশিবতা দপৰিত্বিতি ভাষঃ। গৃহীভনিতি ছিভিস্পনিবোধেৰ গৃহীতা নামায় বিভোৱিতান মান্ত্ৰা ভণা গৃহীতা ইভিবৰভোগি ভেৰোজিঃ। বৃদ্ধিই তপৰতী ছাতেবেণি ভেৰং অন্যতীতি ন্যামাং গৃহীতমাবিক্কতমিতি সক্ষতঃ। বছা বিৰুহ দশিবিত্বং অবোগমায়াবলং গৃহীতং বাসমহিনীবিবাহানিকু ভণা প্ৰসিক্ষে বল্যবে ন্যোজনতি অস্যত বৈক্ঠছসা শ্ৰীনায় বণঅৱশাসাণি বিশ্বাপন অহোক্ষণমহে। সাল্পুণ্যবিতি চমৎকারপ্রাপক্ষ অস্যাবতারক্ষণভালীল।দিদশিনাং বৈক্তীরপার্বদানীলাং কা বার্ত্তেতি ভাষঃ। অভ্যাব সৌজপ্রাপ্তি চমংকারপ্রাপক্ষ অস্যাবতারক্ষণভালি। বৈক্তীরপার্বদানীলাক কা বার্ত্তেতি ভাষঃ। অভ্যাব সৌজপ্রাপ্তি নামাণি ভ্রণান্যালালি বন্যাতি প্রস্তানিক্যিক্সং । ২২ ।

ভগা সৌভগতিবিখং গুৱালি সাঞ্চাংকভবিভি স্বার্থতি বছরেতি। আলোক: অভ্যনতো লোকো বলেপ্রাটিরলি ইতি অথনাত কিং। অব্যাইস কণভি বিধাতুরর্কাক্ স্ততৌ অর্বাচীনবিভিন্নগংনারনির্বাদে বংকৌশলং ডং সর্কং গতমুগলীশং এতদলকাডৌ

হে নহাশর। দেই মূর্তি অভি আশ্রহণ ছিল, ভগবান আপন যোগমায়ার বল প্রদর্শন করাইয়া তাহা গ্রহণ করিরাছিলেন, দেই মূর্তি মর্তালীলার উপযুক্ত ও সোভাগ্যাভিশয়ের পরাকার্চা ছিল এবং আপনিও ভাষাতে মুখ হইরাছিলেন, অধিকস্ত সেই মূর্তির অক্ষেক্ত এরপ শোভনীয় ছিল বে, ভ্বণ সকলকেও ভূষিক করিত ॥ ১২ ॥ .

ভগবাৰ জীকৃষ্ণ রেই বৃধি ধারণ করিয়া ধর্মপুত্র ব্রুধিভিয়ের রাজসূর যথে গদন করিয়াছিলেন, তথার জিমুখনত সমস্ত প্রাণ্ট উপতিত হয়, ভাহারা নরনের প্রমানক্ষর সেই রূপ নিরীক্ষণ করিয়া কাং স্থান চাদ্যের গতং বিধাত্র্বাক্ স্ততে। কৌশক্ষিভ্যবন্ত । ২০ ॥ বিধাত্র্বাক্ স্থান বিধাত্র্বাক্ স্থান বিধাত্র্বাক্ স্থান বিধাত্র্বাক্ স্থান বিধাত্র্বাক্ স্থান বিধাত্র বিধাতের বিধাত

अवकारी

মিশ্বাংশি মুল্বানিশ্বাংশ বা বং কৌশলং সৈপ্ৰাং তথকাও ছোন প্ৰমুপন্দীৰং নাডঃ প্ৰং তলা কৌশলমন্তীভোষ্য নেলে। তৰ্তত-বিধাত হজাবাভাবেশি লোকদৃষ্টিনিবমুক্তা ॥ ১০॥

অমুরাপেশ প্ল'তো ব্যাথো হাস: রানো বিনোদঃ গাঁলাবলোকক ভৈঃ স্বতুত্বাসালসভরং প্রতিশ্রো সানো বাজিভাকৃত্তিঃ সহ অমুপ্রবৃত্তা গত্তকং তমেবাহুগতা ধিয়ো যাগাং তাঃ। ক্তেয় শেবো যাসাং তাঃ অসমাণিত কত্যা এব তত্ত্বঃ ॥ ১৪॥

এবং ভূত বিশ্ব প্রদর্শন কারণমাহ শীরানোব শাস্তান্যশাস্তানিচ শ্লপাণি তত্ত শাস্তরণেষ্ ইতরৈঃ পীডামানেষ্ অমুকল্পিডঃ
ক্রমশার্ক :

অথ প্রোমবিলাসরোঃ পরমোৎকর্ষমান্ত যভেতি। এবু বাকোন্নু যজ্জানাং পুশবি।কাস্যাতে পঠিতথৎি ন পূর্ববিদ্যাপেকা । ১৪ ॥ অনুকল্যানান্ত অব্যাত্তি। ইতট্ররণাটেরঃ অর্টেশঃ তৎঅভাবল রটপরিত্যবং। তচ্চ ল্যানি উত্তর্গনিশাদাটিরটেবত্যান

এবিখনাপচক্রবর্তী।

দৃষ্টারাং বিধাত্ত্রীনাং নীলোৎপলন লিভাঞ্জনে ক্রনীলমণিনীরদানাং ক্ওলা এতলুবে দৃষ্টে চক্রপল্রোর্পি, বিকার ইত্যেবং ॥ ১০ ॥
কিইঞ্বমন্ত্রকেভাল্লিলে হৈতো ব্রহ্মকানিভোপি বললীগামহ্বাগাধিকাং ষতহৈত্বপা সংমানিতেন ক্ষেনাপি তা এব যথা
সন্মানিতা নতু তথা তেপীতাহে অনুবাগেণ প্লু তৈব্যাধৈহিছিল, রাদো রসসমূহে। যত্র তথাভূতো যো লীলরা অবলোকত্তেন স্বকৃতেন
তল্মানদানানস্তরং প্রতিলক্ষো মান আদ্রো যাভিভাত্তবৈব দৃশ্ভিঃ সহ অনুপ্রবৃত্তা গছেভঃ তং এবাহুগতা বিয়েপি যাসাং তাঃ।
অবভন্ত তথকণ এব জাড্যোগরাং কিমপি চেটিতুং ন প্রবভ্র্রিভার্ডঃ। তত্ত ক্রতোব্ মার্জনল্পন দ্বিম্পন পরিবেশনাদির শেষো
্যাসাং তাঃ। তত্তবিক্তা মধ্য এবাক্সিক তল্পন প্রাথেরসমাণিত ক্রতাএব বভ্র্রিভার্ডঃ। তেন তুস্য স্বর্গান্ত স্বলিক্সংস্থ
বিশাপনভা ব্রন্ত্রীস্ প্রমেন্তাচ প্রেমাধিকোনৈবাভ্নিতি ভাবঃ। তলেবং তর্বিভাস্য মন্ত্রালীগাম্বিক্স প্রপঞ্চনেন
মন্ত্রালাকস্থ্যান্ত্রসম্প্রান্ত্রকাবেব নিত্যান্থিত্বং হ্যাপিন্টান্তেন দ্বনাদ্বিন্যাত্র বিশেষক্ষ ধ্বনিতং ॥ ১৪ ॥

নমু বৈকৃষ্ঠিরারণ এবাগড়া বহুণেব গৃহে অবভতারেতি কচিৎ পুরাণপুক্ষঃ সিউক্ষ্টেকশ এবৈতি কচিৎ আঁরোদনার্থ ইতি কচিরনারারণাবিতি কচিত্পেন্ত ট্রুটি বন্ধান্ত বারকাদিধানতো নিউচি কচিরনারারণাবিতি কচিত্পেন্ত ট্রুটি বন্ধান্ত বারকাদিধানতো নিউচি বিশ্বর ইতাতা আহু স্পাত্তে স্থান বিশ্বর স্থান স্থান বিশ্বর স্থান স্থান বিশ্বর স্থান বিশ্বর স্থান স্থা

এই অনুষান করিয়াছিলেন, বিধাতার সমুষ্য নির্মাণ বিষয়ে যে নৈপুধ্য ছিল এই সূর্তি নির্মাণে তৎ সমুদ্র পর্যাপ্ত হইয়াছে ॥ ১০ ॥

হে বিদ্ধর ! একদা অজন্ত্রীগণ তদীয়া সামুরাগা হায়া পারিহানত ও কীলাবলোকন এলারা নানিনী হাইয়া ওাঁহাকে প্রত্যাধ্যান করিলে যখন ভিনি গনন ক্রেনে, তেখন: ওাঁহালের নয়ন ক্রেন্ত্রক্রপথ ওাঁহার অনুগামী হইয়াছিল, ভাহাতে ওাঁহালের ক্রেক্স কার্যক্র কার্যক্র কার্যক্র ক্রেন্ত্র ক্রিন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রিন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রিন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্

ে বহাপান্। স্থাবান্ প্রিক্তক ঐপ্রকারে খীয় মুর্ক্তি কৈন আদর্শন করান্ত্র বনিষ্টে ক্লাক্সান কিন্তান। করেন তামে অবণ কলন, প্রাই সংগারে যত শান্ত ও অপাক্ত মূর্তি কেরিছিল পাত্রাল বায়েলভঙ্গু চৌমুলারই পরাবরেশো সহদংশসুকো ছবোপি জাতো ওপনানু বণাঝিঃ ব ৯৫ বা মাং খেদরত্যেতদকত ক্লা বিভূত্বরং ব্যক্তদেরপ্রেক্ত কি অকেচ বাদোহরিভয়াদিব ব্যবং পুরুষ্যবাধনীদবদম্ভনীর্যঃ ॥ ১৬ ॥

- विश्वकाती ।

They is at a popular

কভাত্তকণ আছা বত অলোপি লাভঃ আৰিভূতিঃ মহাভূত লগেণ নিজাসিত এবারির্বধা কার্ছেবাবির্ভক্তি ভূত্ব ক্র অলভ অন্মনি হেতঃ মহানু মহতত্ত্বং অংশঃ কার্যালেশে। বভাবাজাল ভন্মবদংশং জ্বলুক ইতি এ ১৫ ।

নমু কুতোহনৌ পরাবরাণানীশং পারভন্তা প্রতীতে: তত্তাই বাজ্যাং। মানপি এতৎ মুর্বিতর্কাই মুর্যটঞ্চ থেলরতি তলেবাই বস্থদেবপেহে বন্ধনাগারে যক্ষ্মনো বিভ্রনং অমুকরণং। নমু নৃসিংহব্যক্ষাদাবির্জাব:। কংসভরাদিব নিলীয় প্রজে বাস্চ।
কালববনাদি রিপুঞ্জাদিব প্রাম্মধুরায়া বারাৎসীৎ অপলায়ত ১ ১৬ ৪

क्षामन्द्रः।

মহদংশযুক্তা। মহতা परे ज्वारि শর্কা। মহাতা বিভূমাক্ষ্যমিতিটাদি প্রতা। মহতে ভার অসিছে । মহাতো বে প্রবাদরে হংশাতি তুর্ক ইতি বা। লোকনাবং মহতুক বিভিন্নাক্ষ্যাভিচারং। মহতির শিভিরংশৈত বুকাইভি বা ॥ ১৫ ॥

अरहा छातून विद्याप्ति एक शतकरनीनीत्मात चयनस्थनाथी ताक्तकात्मामाणाः एउ ध्वाचाकः एविद्यागरथरमाश-

ভিলেতে ইত্যাহ। মামামিতি ৰয়েন । ১৬। ১৭ ।

बिवियमाथहळावखी ।

বিভি তবং তেন মধুবাদি শীয়নিজ্যধানস্থ এব ভগৰান্ মধুবাস্থ বস্থদেৰোগ্ৰসেনাদিব অভজেব লভাতিকটেব কণাশজি ঘৰ্ষণবশেনাবিভূ তৈ৷ দুখো বভূবেভাগ্নিদৃষ্টাপ্ত: ৷ তথা মধুবোদগ্ৰীপেনে দেবক্যাং প্রাচ্যাং দিশি উদিত: সন্ হুইতমাংসি সংহৃত্য শিষ্টক্ষণাভ্যত্বাগিচক্রবাকাংশ্চ হৈরভা দিতানি সংতোব্য ধর্মমধ্যাদাঃ প্রবর্ত্তা প্রভাগান্তশৈলে অভং গতঃ ইতি হামণিদৃষ্টাপ্তশু পরস্পরাহ্ত্তাঃ
স্বধানহং সন্তনেবাবিভূ তিং তং স্পষ্টমেবাভিদ্ধাতি নতু কুভাতিবৈক্ষাবাধা হৈকুঠাং শীরোদনাপঃ ক্ষীবোদাং নরনারায়ণাব্দেক্রাদ্মশ্চ স্বধানত আগভ্যাবভভাবেতি যথাস্থানং প্রাসিদ্ধিনি মহদংশগ্রু ইতি বিশেষণাদাবিভাবসময়ে তৈ বৈক্ঠনাথাদিতিরাগত্য প্রাব্বেশে কৃষ্ণে সংমিদ্যাৎ অস্কতিভ্বেতি সর্কাং মুনিবাকাঞ্চ প্রমাণং ॥ ১৫ ॥

এবং সর্ব্ধ এব সিদ্ধান্ত সভাগে বথা আবাৰ নাবিছাতঃ কিন্তু বন্ধান্ত শৈরণি ক্ষেত্রিং বিষ্ট্রঃ পৃষ্ট্রণাপ্রাপ্ত ভবং তত্র থেল এব মম প্র্মানী দিত্যাহ অলভেতি। এক ভৈবাল বং লগাবৰণ কথং সংক্রেনিত। কিন্তাত লগাবে ভাগে কলাবাল বৈশ্বে বিশ্বে বিশ্বের শ্বের বিশ্বে

তাঁহার রূপ, সত্য বটে, কিন্তু বধন অশান্ত মূর্তি সকল শান্ত মূর্তিদিগকে বিপীছিত করে, তথন প্রাম্ব রেশ সেই ভগবানের অন্তঃকরণ দ্যাদ্র হয়, ভিনি ভাইাদের জেশ দর্শনে অসহিছে হওয়াতে যদিও আসনি পক্ত ভগাচ সহতদ্বের সংশোহক হইবা বেষ্টে বিত্য নিজ করি আবিভূতি হয় ভাহার ভায় বয়ং নিত্য নিজ ভগবান মহাভূত রূপে জন্ম গ্রহণ করিয়া থাকেন ॥ ১৫ ॥

তে বহাণান। প্রিকৃষ্ণ করা কইরাক এইনের নর বৃদ্ধে প্রথম বিষ্ণালারে বে করা এইণ করেন এবং প্রন্তনীয়ি ক্ষিয়াক করেন এবং করেন এবং প্রন্তনীয়ি ক্ষিয়াক করেন এবং করেন এবং প্রন্তনীয়ি ক্ষিয়াক করেন এবং করেন এবং করেন এবং করেন করিয়া আক্রেন এবং করেন এবং কর

स्ताि दिन प्रति विकास प्रति विकास कि स्वार्थ कि स्वार्य कि स्वार्थ कि स्वार्य कि स्वार्

अवन्यामी ।

এতক হরেশ্চরিতং পরতো বন তেতঃ কর্মতৃতং ছনোতি বাধরতি তদেব দর্শরতি বদাহেতি। তে ভাত তে পায় সুবাং প্রসীদতং প্রস্থাং কুক্তং। ন কৃতা নিজ্ঞি: ভ্রাবশং বৈঃ ভেবাং নোহমাকং ইতি বহুবচনত রামাণাতিপ্রারং । ১৭ এ

নছ তহানীখর এব কিং ন তাৎ তবতু প্রভানাত্রমেত্নিভি ভজাছ ত্রিভি:। কো বা অভিশুসরোজরো বোরেণু স্তমণি বিভি-জন্ নেববান: প্যান্ বিশ্রু নীশীত শকুরাং। বিক্রন্ জবিটণ: জগতা। স এব ক্লভাভ: তেন । ১৮ । মচ তত্তেখরছং সাধনীবং তবভিরণি দৃষ্টবাৎ ইভাাহ দৃষ্টেভি। বাং সিদ্ধিং সমাক্ বোগেন বোগিন: প্রাপ্তি বিশ্বভি । ১৯ ।

क्रममण्डः

তথ্যত মাধুৰ্যাং ভক্ত প্ৰমপ্ৰভাববেছংশি সংশ্বোষণ্যাকৰ্ষকমিত্যাহ কোবেতি। মাধুৰ্যো কৈমৃত্যমজ্যীতি। তত্তেগৃমণীতাৰ্থ:। কীৰ্শস্থাপি ভঞাহ ৰ ইতি। বিটপং পল্লবং। বিটপং পল্লবে বিজ্ঞো বিভাৱে অৰ্শাধ্যোৱিতি বিশ্বপ্ৰকাশ: ॥ ১৮ ॥ দৃষ্টেভানেন কুপাৰা অম্থাদ্পং ॥ ১৯ ॥

अविषमाष्ठकवर्षी ।

এবনেবৈজ্ঞারিতং মরতো মন চেতঃ কর্মভূতং ক্নোভি ম্বেডার্থঃ। বলাছেভি মাতাপিতরৌ স্থাপরাধং ক্ষাপরভিদ্ম হে তাত হে অব বুবাং নোংসান্ প্রদীদতং বিতীয়ার্থে বন্ধী করে কংগাহ্রপদিহতানামিতাত বাকাত সভাছে ঈশর ঘাডিচারঃ মিগাছে ঈশরবাক্ কথং বিধ্যেভি পূর্কবিং ধেদঃ। অতিসর্কেশরভাগোরং লে।ক্রীভা বিসরোহ্ভিমাধুর্বাপোৰকঃ কথং মরা বিশ্বর্ত্বাধ্ ইতি মচ্ছেদি ভ্রজারিডঃ শলামিবাভ্নিত্যুদ্ববিদাপঃ ॥ ১৭ ॥

নমু ভর্ত নীশ্ব এব কিং নভাত্তবহু প্রকাষাত্তমের তথাছ ত্রিভিঃ। বিক্ষর নু জ্বিটপঃ জ্ব প্রবঃ স এব কুভাত্ততেন। বিটপঃ পরবে বিজেগ বিভারে ভর্মাধ্যোরিভি বিখঃ । ১৮ ।

ভক্ত পরমেশরভাত্তভাবঃ কৈবল। ন নাকাৎ কৃত ইত্যাহ দৃটা ইতি বিহত ইতি কৃপায়া অপ্যপারভং বাং বলৈ । ১৯ ।

অপর জীক্ষকের এই চরিত্র আমার শারণ হইলে চিন্তকে যৎপরোনান্তি ব্যথা দেয়। তিনি জনক জননীর পাদ বন্দন পূর্বক তাঁহাদিগকে কহিয়াছেন হে তাত। হে অঘ। আমরা কংসভয়ে ভীত হইরা আপনাদের শুজাবা করিতে পারিনাই, আমাদের প্রতি প্রসন্ন হউন। ১৭ ।

হে মহাত্মন ! তাঁহার এরপ চরিত্র দেখিয়া তাঁহাকে অনীখর বলিতে পারি না, জরুটী বিভঙ্গরপ ক্ষতাত খারা যিনি ভূমির ভার হরণ করিয়াছেন, তাঁহার চরণ প্রজের পরাপ দেখন করিয়া কোন্ ব্যক্তি তাঁহাকে বিস্মৃত হইতে পারে ॥ ১৮ ॥

হে সহাশর। আপনকার নিকট আমাকে ওাঁহার ঈশরত প্রমাণ করিতে হ্ইবে না, আপদার।
লাকাৎ দেখিরাছেন, রাজা মুধিনিরের রাজসূর যজে শিশুপাল, উহার কত থেব করিরাছিল ভবাচ
এনত সিদ্ধি প্রাপ্ত হর বে যোগিরা সমাক্ যোগ ছারা তজ্ঞপ সিদ্ধি লাভ ক্রিভে অভিলাষ করেন,
অভএব ভাঁহার বিরহ কে সহু করিতে পারিবে ? ॥ ১৯ ॥

विवडांगवज्य ।

ভবৈৰচান্যে নরলোকবীর। ব কাৰ্বে কুফার্থারবিদ্ধঃ ।
নৈতিঃ পিবজাে নয়নাভিরামং পার্লাক্রপ্তাঃ পদসামূদ্রের ॥ ২০ ॥
অয়স্থান্যাতিশয়জ্ঞাধীশং স্থানাজ্য লক্ষ্যাগুলমাক্রপান।
বলিং হরন্তিশ্চিরলোকপালৈঃ কিরীটকোটাড়িতপাদপীঠঃ ॥ ২১ ॥
ভব্যা কৈহর্যমলং ভ্তালাে বিশ্লাপয়ত্যক্ষ বন্ধ্রদেনং।

विश्वपानी ।

ुक्रांवरव सूद्ध भार्चमारिक्षः भूखा सिम्माभाः मञ्चः ॥ २० ३

ভবেষং পর্টমেখরো সভাপি বহুগ্রসেনাল্লর্ডিবং তৎ পুনরস্থারতান্তং বাধয়তীত্যাহ। সরন্ত ব এবং ভূতঃ ভস্য তৎ কৈছ্ব্যাং নোহস্মান্ বিপ্লাসরভীত্যতবেশাবর:। ন সাম্যাভিশরে বস্য ব্যবেক্ষ্যানাস্য সাম্যাভিশরণ নাজীত্যর্থ:। ভত্ত হেতবং। ত্রাধীশং অস্থাপাং পুক্রাপাং লোকানাং গুণানাথা ঈশ:। স্থারাজ্য লক্ষ্মা পরমানক স্বন্ধণ সম্পত্তিয়ের প্রোপ্তসমন্তভোগ:। বলিং করং অর্চণং বা ক্সম্ভিত্ত সমর্প্রতিঃ চিরকালীনৈর্লোকপালেঃ কিরীটাগ্রেণ ইড়িক্কং স্বতং পাদ্পীঠং বস্য স:। প্রণম্ভাং কিরীট সংঘট্ট ধ্বনিরের স্কৃতিবেনোৎপ্রেক্ষ্যতে ॥ ২১ ॥

আলে হে বিজ্র ভ্তান্ ভ্তান্ উগ্রেলনে বং কিল্পেছং ভলেবার প্রমেটিখিফো রাজাসনে নিবল্লমাসীনং স্বয়ং তিঠন্ হে দেব ক্রেবস্কুর্ছ:।

ছ্পুট্ৰেক্ডেনেন চ পাৰ্থান্তপূত্ৰৰ্ম কৰ্পাৰবিশ্বপূৰ্ণন বাধাৰ্থে হেডু: । তলেতভূ স্থাপিতং বরাহরভূবোভারমিড্যালে । ২০ ॥ পুনরলোকিকলীলারাং পরমবিনরগুণখনাই সমন্তিলালি বৃধ্বকেন। অধীশঃ অরাণাং মহৎঅই গাং বন্ধাপছিত সর্বভূতভানামীশঃ। বিজ্ঞোভ জীণি স্থাপীত্যাদি। চিরলোকপালৈ: অঞাক্তলোকপালৈ:। মহ্রপৈত দশভিদিক্পালৈ: প্রিভোব্তমিতি ব্দ্পাহিতাতঃ । ২১ । ২২ ৪

बिवयनायहक्त्रको'।

বেষবংস্থ বোক্ষারিনীং কুণাবৃত্যু ক্ষতেরু ভটছেষণি প্রেমণারিনীং কুণাষাই ভবৈবেতি। নেত্রৈঃ পিবত ইতি ভঞ্ব ধন্তা ব্যমণ্ডাঃ তল্লাধুর্গণান তৎ পদ প্রাধিত্যাং বঞ্জ। ইতি বিশাপ্রনিঃ ॥ ২০ ॥

কিঞ্চ বন্ধানিবাদিপুক্ৰাণিবলি তন্য প্ৰভূষণ বা ক উপ্ৰেদেনে কৈছবাং বা কেতি ভক্তবভ্ৰমানুৰ্বাং নৱা কথং কিছ্বুং শকামিতি বিলপতি থাজাং ন বিলাতে নাৰাং কিছুকাভিশৱে বন্য নঃ । ব্যপেকালান্য নামানেব নাজি কিছুজাভিশৱ ইভাৰ্থঃ । তল হেতবং লহাপাং মহংঅষ্ট্ৰাদিপুক্ৰাণাং তিস্থাং চিছ্কিকীৰশভিষান্ত্ৰাশকীনাঞ্চেশঃ হৈবংশৈউজৈঃ পজিভিনীলাভিনৈবহৈয়নপুহুইগাল রাজত ইতি ভ্ৰমা ভাবঃ শারাজাং তবেৰ ক্ষ্মীজন্ম হেডুলা আগ্রঃ সমজাং কামা যং নঃ । চিনকালীনৈল্লে কিপালৈননত কোটি বন্ধান্তে স্থানিক ক্ষাত্ৰাল কিছিল ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্বাল ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্ব

- অল·তে বিচর তান্ ভূতাান্ উপ্রসেনে বংকিজরভং তদেবাত প্রমেটিবিছো মহারাজসিংহাসনে নিবর্লাসীনং ভ্রং ভ্রতে

হে মহাশয়। কেবল শিশুপালই যে সিন্ধি প্রাপ্ত হইরাছে এমত নহে, অন্যাম্য যে সকল নরলোক বীর যুদ্ধকেত্রে অর্জুনের অস্তাঘাতে নিষ্পাপ হইয়া স্ব স্থ নেত্র দারা শ্রীকৃষ্ণের নয়নাভিরাম মুথারবিন্দ পান করিয়াছিল, তাহারাও তাঁহার স্থান প্রাপ্ত হইয়াছে॥ ২০॥

সেই শ্রীকৃষ্ণ বরং ত্রিলোকের অধীশ্বর এবং প্রমানশ্ব বর্ষণ সম্পত্তি দারা সমস্ত ভোগ প্রাপ্ত হইরাছিলেন, অতএব তাঁহার সমান অথবা তাঁহা অপেকা অধিক কেহ ছিল না, লোকপাল সকলও তাঁহার অথে আসিয়া কর অথবা প্রোপহার সমর্পণ পূর্বক স্ব স্ব কিরীট সংঘট্ট ধ্বনি দারা তদীয় পাদ-পীঠে স্তব করিতেন ॥ ২১ ॥

হে জন! তিনি ষরং ঐ রূপ হইলেও উত্তদেনের নিকট তাঁহার যে সেই কিকরত্ব তাহা স্মরণ

তিষ্ঠি নিষাং পরমেষ্টি থিক্যে নাবোধবুদ্ধিব নিধাররেভি ॥ ২২ ॥
আহো বকী বং জনকালকুটং জিখাংগ্রা পায়রদপ্যসাধা ।
লেভে গতিং ধাত্রুচিতাং ততোহন্যং কথা দ্যালুং শর্পং ত্রেলে ॥ ২০ ॥
মন্যেহস্রান্ ভাগবতাংস্র্যেধীশে সংরম্ভার্যিভিনিবিউচিভান্।

अनवसामी।

च्यवशांत्रदाकि नारवांश्वर विकाशिक्यान । २२ ॥

এবনমুবৃত্তিঃ কৃশৈবেতি স্চরন্ অপকারিষপি ভাগা কুপাস্তাং দর্শন্ধীত। আহে। আচর্যাং দরাস্তারাঃ হস্ক্রিছ্যাপি ভানরোঃ সভ্তং কালক্টং বিবং ব্যপার্থ । বকী পূতনা অসাধ্বী চ্টাপি ধাত্রা বশোদারা উচিতাং গতিং লেতে ভাজবেশ মাজেশ বঃ স্বস্তিং দত্তবানিতার্থ:। তভোহনাং কথা ভাজেম । ২৩॥

নমু ভাগবভানের ভগবানমুগৃহাতীতি প্রসিদ্ধং সভাং অমুরানপাহঁ ভাগবভানের মন্তে বতো ভাগবভা ইব তেপি ভগবভানাতি নিবেশেন ভগবত্তমপরোক্ষং পঞ্চতীতাহে সংরক্তঃ কোধাবেশঃ ভেন মার্গেণাভিনিবিটং চিত্তং বেবাং তান্। অভএব সংগ্রামে ভার্মঃ কশুপঃ তক্ত পুত্রং গরুড়ং অংসে করে অনাভার্ণশুক্রার্ধো হরিবিসা তং অচক্ষত অপশুন্ তত্মাতেরপি অভাযুগ্রহো যুক্ত এব

ক্রমসমর্ভঃ।

আহে। বকীভাবে। প্ৰবেশ কিকলীদারাং ক্লপারাং অভ্যমগালয়ং অন্যত্তাবভারাদাবদর্শনাৎ। তল ধানীশাং কিমু গাবোস্বাতর ইত্যস্ত্রারেণ তবৈ অনাাম্ভদ।রিনীনাং কাসাঞ্চিতিং গভিং । ২৩ :

মনো ইতি বৰাপি তেবু বস্তুতোভাগবভদং নাতি তথাপু। হঞেশত এবেতার্থ:। ততক নিম্বহির্পু হতেনৈবাত্তিম সমরে তদর্শনং

बिविभागाशहक्तवर्खी।

ভর্তন ক্সাণি সাহাব্যং কুর্মন হে দেব মহারাজাধিরাক অক ঘণীরসপ্তলেখনসা ক্তাং নিধাররেতি নাবোধনদ্বধাপরামাস । ২২ । অবতারারস্কত এব প্রোপকারিশি কুণামাধুর্ঘাং স্বরন্ বিলপতি স্বহো আশ্চর্যাং বকী পুতনেতি মাতৃভাবসা ক্রিম্বেণি ত্রাণি ক্রিমাংস্বাণি ক্ষলক্টমণি ব্যুপার্ম্বং । ততঃ স্কাশাং থাত্র্ভিচিত্রাং আধিকাচ কিলিছাচ থাত্রিকে জন্যদাত্কে ইতি বে ক্ষ্মস্য থাত্রো) ভত্তিতাং পোলোকস্তিং লেভে । ভক্তবেশ্যাত্রেণাণি ভক্তোচিত্রাং গতিং প্রাপ্রোতীত্যত্র জপবতা বিষ্তাণি পুতনা দৃষ্টাকীক্তা এবং বিষ্তামণি মুক্তি উজিশ্ব ভাবিতি ক্ষাব্রারভাসাধারণা ধর্ম উজ্ঞান ২০ ॥

মন্য ইতি বিশাপ এব নতু নিদ্ধান্ত:। অহ্বান্ ভাগৰতান্ মন্য ইতি অতিম সময়ে ভগৰৎসাকাৎকার ভগৰৎপদ প্রাতিভাগ নিকাভাগে ভেনাম্বাদীন্ বহিম্পান্ মন্যে অতিমসময়ে ভদর্শনাভাব তৎ প্রাপ্তাভাষাভাষিতি ধ্বনিতঃ সংরভঃ ক্রোধাবেশঃ

ক্রিলে মাদৃশ ভ্তাজনেরও অন্তঃকরণ অতিশয় বাধিত হয়। হে মহাশর। একি ছংখের বিষয় নয়, উত্তাসেন রাজাসনে অধ্যাসীন হইয়া থাকিত, তিনি তাঁহার অত্যে দণ্ডায়মান হইয়া "মহারাজ অবধারণ করুন" এই বলিয়া তাঁহাকে বিজ্ঞাপন ক্রিতেন ॥ ২২ ॥

যাহা হউক হে মহাশয়! তাঁহার দ্যাল্তা অত্যাশ্চর্যা, তুই প্তনা তাঁহার প্রাণ বিনাশ বাসনা করিয়া আপনার স্তনহয়ে বিষ লেপন করত তাঁহাকে পান করাইয়াছিল, তাহাতেও সে ধাত্রী সদৃশী গতি লাভ করে অর্থাৎ সেই জ্রীকৃষ্ণ তাঁহার ভক্তবেশ মাত্র দেখিয়া তাহাকে সদ্গতি প্রদান করেন, অতএব তাঁহা হইতে অন্য কোন্ দ্যালুর শরণাগত হইয়া সেবা করিব १॥২৩॥

আমি অত্রদিগকে পরম ভাগবত বলিয়া মাক্ত করি, বে হেতু তাহাদিগের চিত্ত ক্রোধাবেশ রূপ মার্গ দারা ভগবানে অভিনিবিফ ছিল, ফলতঃ তাহারা বুদ্ধকেত্রে পরুড়ার্ড চক্রপাণি ভগবান্কে স্বচক্ষে

35

दि मः पूर्णरुष्क जाक भूकतः म स्वाचात्र्वसानजेकः व २८ ॥

বহুদেবস্য দেবক্যাং আভোভোজেজ্বছনে। চিকীয়ু ও গৰানস্যাঃ শলজেনাভিযাচিতঃ ॥ ২৫ ॥ ততোনস্ব্ৰেমিতঃ পিত্ৰা কংসাছি বিভাতা। একাদশ সমাভুত্ত গৃঢ়াৰ্চিঃ সৰলোহ্বস্থ ॥ ২৬ ॥ পত্নীতো বংসপৈৰ্বংসাংশ্চারয়ন্ ব্যহর্ষিকঃ। ব্যুনোপ্বনে কৃত্তদ্বিকস্থ্যিতাভিযুপে ॥ ২৭ ॥

विश्ववामी।

हेकार्यः। वक्कांकि कथार क्लांश्राभाष्यम मनः इत्क नित्वभाषातिक ॥ २८ ॥

ইবানীং তভাতথান প্রকারং বক্তুং আদিও আরত্য তত্তিরিতং সংক্ষেপতঃ কণরতি বস্থাবেত ভার্যারাং ভাতঃ। ুভোরেতঃ কংস্তুত বন্ধনে বন্ধনাগারে। অভাঃ পৃথিবাাং শং স্থং খরং চিকীরুঃ অব্দেন ব্রহ্মণা বাচিতঃ সন্ । ২৫ ॥

পিত্রা হেতৃভূতেন নক্ষরকং ইভো গত:। একাদশ সৃদাঃ স্তুৎসরান্। গুঢ়ার্চিঃ ওপ্তভেলাঃ । ২৬ । বাহরৎ জ্ঞীড়ং। ক্কডিবিলঃ পক্ষিতিঃ সঙ্গিতা বাধো ক্ষিপা বৃক্ষা বন্ধি । ২৭ ।

क्रमनम्बद्धः।

न लाकामी कि वनिकार्यमुक्तः । २८ ।

अथ भवमार्खाः छातृनीः नर्सात्मव नीनाः वश्च ब्रिक वस्त्रवाताकातिना ॥ २८ ॥

একাদশেতি। তাবতৈব পূর্ণ কৈশোরভাত্তথাক্তং। কালেনারেন রাজর্বে ইত্যাদি। কচাতি স্কুমারালৌ কিশোরৌ নাথ যৌবনাবিত্যাদি বাল্য পৌগও কৈশোরাঃ পুত্রাভ্যামভবন্ ক্চিদিত্যাদিজ্যঃ গৃঢ়াচ্চিরিতি বথা গৃঢ়াচ্চিঃ কুত্রাণ্যায়িঃ প্রাপ্তঃ প্রাপ্তঃ মিন্ধনং দহতি। তথা গোপলীলরা গৃঢ় প্রভাব এব সন্ প্রাপ্তঃ প্রাপ্তমন্ত্র বৃদ্ধং দহরিত্যর্থঃ। একাদশ পর্যন্তঃ গৃঢ়াচ্চিন্ততঃপরং পঞ্চদশপর্যান্তঃ প্রকটাচ্চিরিতি সাধ্যাহারং ব্যাধ্যানং স্ব্তমানক একাদশাভ্যন্তরে ভত্তংপ্রভাবস্য মধ্যে স্বস্থত প্রত্তরাহ। ভাবতৈব পূর্ণ কৈশোর্ঘান্তথাক্তঃ ৪২৬।২৭।

श्रीविधनां थहळावडी ।

তাক্ষ: কণ্যপত্তৎ পূক্তং গৰুড়ং অচক্ষত অপশান্। কীৰূশং অংবে ছবে অনাভাষ্থশ্চকাষ্থা বদ্য তং আপতত্তং সংখ্ৰমায়াতং ॥২৪ বিছ্যপ্ৰশ্বমাধানাৰ্থং মৌৰণলীলা অৰশ্যং বক্তব্যেতি তাং ছংৰমন্ত্ৰীং লীলাং প্ৰমন্ত্ৰা লীলয়া সহিতীক্তিয়ৰ বিৰক্ষাহ বস্ত্ৰেব্যেতি ভোজেন্দ্ৰস্য বন্ধনাগায়ে। অস্যাঃ পৃথিব্যাঃ শং ক্ৰথং অজেন বন্ধা। ॥ ২৫ ॥

পিআ হেত্না ইতো গতঃ। একাদশ সমাঃ সংবংসরান্ ব্যাপ্যাবসং। তাৰতৈত্ব কালেন বাল্যাংগণিতকৈশোরলীলাসংপূর্বেঃ গুঢ়ার্কিঃ প্রাকৃতিঃ কংসাদিভিরলক্ষিতভবঃ মাধুর্ব্যাক্তেকেণ গুট্টুম্বর্য ইতি বা ॥ ২৬ ॥

क्षडिविंदेनः मःक्निजा बाद्यां भःचित्र ना यदा छन्तिन् ॥ २१ ॥

নিরীকণ করে, অভএব তাঁহাদের প্রতি তাঁহার অমুগ্রহ উপযুক্তই বটে॥ ২৪॥

হে বিছর। ভগবান্ জ্রীকৃষ্ণ জ্রন্ধার প্রার্থনায় পৃথিবীর ছখ বিধান করিতে বাদনা করিয়া কংসের কারাগৃহে, বছদেবপদ্মী দেবকীর গর্জে ক্রম গ্রহণ করেন। ১৫॥

অনস্তর তাঁহার পিতা কংস হইতে ভীত হইয়া তাঁহাকে নন্দের ত্রজে রাধিয়া আইসেন, তাহাতে তিনি তথায় বলদেবের সহিত একাদশ বৎসর গৃঢ়তেলাঃ হইয়া অর্থাৎ কংসাদির অলক্ষিত রূপে বাস করিয়াছিলেন ॥ ২৬ ॥

তিনি বংসপাল গোপবালকদিগের সহিত বংস চারণ করিতে করিতে যয়্নাতীরছ উপবনে যেখানে বৃক্ষ সমূহোপরি বিহগক্ল কৃষন করিত তথায় জীড়া করিতেন ॥ ২৭ ॥ কোমারীং দর্শয়ংশ্চেকাং প্রেক্ষণীয়াই জকোকসাং । ক্রমার হসমূব বাসাসিংহারলোকনঃ ॥ ২৮ স এব পোধনং পক্ষা নিকেতং সিতপোদ্ধার । চারস্ক্রমান্ গোপান্ রপবেপুদ্রীরসং ॥ ২৯॥ প্রায়ুজান্ ভোজরাকেন মারিনঃ কামরাপিশঃ । সীলয়া বাসুদভাংভান্ বালঃ অনিভূনকানিব ॥ ৩০ বিপনান্ বিষপানেন নিগৃত্ব ভুজগাধিপং । উত্থাপ্যাপাররালাব স্তভায়ং প্রকৃতিভিত্তং ॥ ৩১॥ অ্যাজয়দোস্বেন গোপরাজং বিজোতিমঃ । বিভ্রম্য চোক্রভারস্য চিকীর্হ সভায়ং বিভূঃ ॥ ৩২

विश्ववाभी।

क्रमतिद्विठीव भक्ता वथा द्वांगः नर्ख्वावतः। भूत्यावानक वः निःव्यवनव्याकमः वता नः । २৮ ।

স এবাবিকং বরঃ প্রাপ্ত: সন্ গোধনং চারয়ন্ কৃথং ভূভং সোধনং সহ্মাঃ শোভালি সম্পাদা নিকেডং সিভা গোরুবা বিভান নানাবর্বে গোসংঘে। রংন্ শবং কুর্মন্ বেশুর্মা। অনীরুদং রমশ্লামাস ॥ ২৯ ॥

वायूनर ज्यान की जनकान् जुगानि किर्निर्विकान् तिः हामीन् वक्षा ॥ ०० ॥

বিপরান্মূতান্ গোপান্গাব ইতি গা উত্থাপ্য তলেৰ তেওঁছং প্রকৃতিস্থিতং নির্বিং । ৩১ ॥

ইক্সপুকা ভলেন কৃতা গৰাং পুলৈব গোসৰ: গোষজা: ভেন। গোপরাজং নক্ষং। বিত্তস্য চেতি চকারাদিক্সস্য মানভঙ্গং কুর্মান্ন।

ক্রম শক্ষর ।

কোমারীমিতি। অত্যন্তবালায়ারংস্চারণসা প্রাক্তনীয়ং লীলা শোকাবেশেন রাজাস্য পঠিভায় এবং ভূতঃ সপরীত ইত্যাদি

श्चित्रनाभहक्त्वरही ।

ক্লবিবেতি বালানাং বোদনক্ষাশ্রমিতি বথা বালা বিনাপি বোদনচিক্তং বোদনং দশ্রস্তি তথৈব মাতৃণামগ্রে অদের লোভ্যবস্ত প্রার্থনেচাদৌ ক্লবিব ভবতি তথৈব তথপ্রাপ্তৌ হসন্কিঞ্জীবণদৈত্যাদ্যাগ্যে মুগ্রোপি বালোপি সিংহোষণা লোরসভালবিভেতি কিন্তু স্বথরাক্রমমেৰ দৃষ্টা দ্যোত্রতি তথাভূত্যা সিংহস্যৈবাবলোকনং ৰ্যা সং। প্রম্বংস্লান্পিকাদীন্ ব্যাকুল্রতি ॥২৮॥

স এৰ কিঞ্চিদ্ধিক্বয়া ভবন ্বৎসচারণং সমাণ্য লক্ষ্যাঃ শুক্ষনীসহ্রিতণীতগুমলবর্ণ শোভাষা নিকেতং গোধনং চার্য্বন্সিত। গোরুষা যতে তৎ গোণান ্র্য্যাসাস ॥ ২৯ ॥

वाञ्चर क्यान की फुनकान ्भवाविनिर्मित्रान ् तिःश्वीनिव । ৩ ।

বিবোদকপানেন বিপরান মুচ্ছিভান গোপালান গাল্ডোখাপা প্রকৃতিস্থিতং নির্বিং ঃ ৩১ ঃ

গোসবেনে এমপভক্তঃ প্রবর্ত্তিতন গরাং পূজনেন চকারাদিজনাচ মানভক্ং উক্লভারদা অভিসমূদ্ধনা ॥ ৩২ ॥

অপর অজবাসিদিগের দর্শনীয় কোঁনার লীলা দেখাইতে দেখাইতে কথন কথন যেন বোদন এবং কথন কথন বা যেন হাস্য করিতেন, তৎকালে তাঁহাকে মুগ্ধ বালসিংহের ন্যায় দেখাইত ॥ ২৮॥

অপিচ তিনি শোভাদি সম্পত্তির নিকেতন এবং শুল্র গো বৃষ বুক্ত নানা বর্ণ গোধন চারণ করিতে করিতে বংশীধ্বনি করিয়া অমুচর গোপবালকদিগকে জীড়া করাইতেম ॥২৯॥

সেই সময়ে ভোজরাজ কংস তাঁহার প্রাণ সংহারাভিপ্রায়ে যে সকল কাসরূপি অন্তর্নিগতে প্রেরণ করে, বালক যেমন ক্রীড়ার্থ ত্ণাদি নির্মিত সিংহাদি বিনাশ করে তাহার ন্যায় তিনি অবলীলা ক্রমে তাহাদিগকে বিন্ফ করিয়াছিলেন ॥ ৩০ ॥

কালিয় সর্পের বিষ যুক্ত যমুনার জলপান করিয়া গোল এবং গো সকল মৃত্যু প্রাপ্ত ইইয়াছিল, তাহাতে তিনি ঐ সর্পকে নিগ্রহ করিয়া যমুনার জলকে নির্বিষ করেন, পরে সেই সকল গো ও গোপদিগকে মৃত্যু হইতে রক্ষা করত তাহাদিগকৈ ঐ বিশুদ্ধ যমুনার জল পান করান ॥ ৩১ ॥

অপর তিনি গোপরাক নন্দের অতি শম্ক বিতের সধ্যয় এবং ইক্সের মান ভঙ্গ করিতে অভিলাষ

क्रिक्टॉश्वर्क्ड

ততঃ স আগত্য পুরং স্বপিত্রোশ্চিকীর্যয়া শং বলদেবসংযুক:।

विध्ववामी।

উক ভারদা অতিদমূদ্দ্দ্য। এই ।

কোপাৰ্যতি। গোত্ৰঃ পৰ্যত এব দীলাতপত্তং তেক হৈ ভক্ত । ৩০ । মৃত্যমূজ্বনং স্ত্ৰীণাং মণ্ডলং মণ্ডমন্ত্ৰীতি তথা । ৩৪ ।

। • । देखि जुडीत्व विकीशः । • ।

ভূজীরে মধুরামেতা ত্রলাৎ কংস্বধাদিকং। বংক্ষণ্ডং দারকায়াক ক্লেন ভদবর্ণর । • । শমিতাবারং পিতো: স্থক্ত চিকীর্বরেতার্থ:। ভূলাৎ রাজমকাৎ রিপুর্থনাধ্য কংসং বাদোরপি বিকর্ষণং পিতো: স্থার্থ্য । ১

क्रममण्डः।

বোলা:। তত্ত্ব রুদরিব হসরিব বালাখভাবোদর্শিত: ॥ ২৮। ২৯। ০০। ৩১। ৩২। ৩৪।

॥ • । ইতি শ্রীমত্তাগবত তৃতীরস্কলে শ্রীফীবগোসামিকত ক্রমসন্দর্ভন্য বিতীয়োধ্যার: নমাপ্ত: । • ॥ উদ্ধব উবাচেতি । পূর্বং রাসলীলা বর্ণনারস্ত প্রেম বৈবস্থাদধ্যার সমাপ্তি: পশ্চাৎ কথমপি বহিরমুসন্ধানে সভীতি জ্ঞেয়ং

ত্ৰীবিখনাপচক্ৰবন্তী।

কোপাৰ্বতি সভি পোত্ৰ: পৰ্বত এব দীশাতপত্ৰং তেন হে ভল্ল ॥ ৩০ ॥

রজনীমুথং প্রবোষং পক্ষে শরজ্বশিনো নায়ক্ত করতলঘর্বলৈমু ষ্টিং প্রবেদাদ্যপদরণেনোজ্বশীকৃতং রজন্তা নায়িকারাঃ স্বাধীন-ভর্ত্বায়া মুথং মানয়ন্ অভিনন্দররহ্মপ্যেবমেব করোমীতি জ্বীশাং মণ্ডলং রাদসম্ভোগলীলানস্তরং মণ্ডরতি সঃ । ৩৪ ।

। • । ইতি সারার্থদর্শিক্সাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। বিতীরোপি তৃতীয়েংখিন্ সঙ্গতঃ সকতঃ সভাং । • ।
তৃতীরে মধুরাবারবত্যোঃ কংসবধাদিকাঃ। দীলাঃ কুরুণাং নিধনমণি সংক্ষিণ্য বর্ণিতং। শমিতাবারং স্থাবাচঁকং পিত্রোঃ
স্থাত চিকীর্ষরেতার্থঃ। তুলাং মঞ্চাং হতং প্রাপ্তাঘতিং ততো বাস্থং প্রাপ্তমৃত্যুমণি বাকর্ষদিতি তন্মরণমসম্ভাবয়তাং ততো বিভাতাং

করিয়া গোপরাজকে গোপ্জা শ্বরূপ যত্ত দারা যাগ করাইয়াছিলেন ॥ ৩২ ॥

হে ভদ্র ! গোপগণ তাঁহার উপদেশামুসারে ইন্দ্রের মানভঙ্গ করিলে, ইন্দ্রকোপে ঘোরতর বর্ষণ করিতে আরম্ভ করেন, তাহাতে অঞ্পুর মহাভয়ে অভিভূত হয়। দয়াময় ভগবান্ তদ্দর্শনে সামুক্তপ ইইয়াছিলেন, এবং গোবর্জন পর্বতকে লীলাতপত্র করিয়া তদ্বারা ত্রভের রক্ষা করেন। ৩০॥

অপর তিনি শরৎ কালীন শশিকিরণ ছারা রজনী মুখ উজ্জ্বল দেখিয়া মধুর পদ গান করিতে করিজে স্ত্রীমণ্ডলের মণ্ডন স্বরূপ হওত জ্বীড়া করিয়াছিলেন ॥ ৩৪ ॥

॥ * ॥ रेि छ्जीस विजीत ॥ * ॥

ভৃতীয়াধ্যায়ে জ্রীকৃষ্ণ অঙ্গপুর হইতে মধুরায় আগমন করিয়া যে সকল কংলবধাদি কার্য্য করেন এবং দারকা পুরীতেও যাহা যাহা ক্রিয়াছিলেন তৎসমুদায় উদ্ধব কর্তৃক বিচুরের নিকট বর্ণন ॥ • ॥

উদ্ধাৰ কহিলেন তদনস্তর ভগৰান্ প্রীকৃষ্ণ বলদেবের সহিত মধুপুরীতে আগমন করিয়া জনক জননীর হুখ বাসনায় রিপুযুধনাথ কংসকে রাজমঞ্চ হইতে নিক্ষেপ করেন, তাহাতে সে পঞ্চত্ব প্রাপ্ত নিপাত্য তুলান্তিপুষ্থনাথং হতং ব্যক্ষ্মেশজনোক্যাং # > #
সান্দীপনেঃ সক্ত্ৰোক্তং অক্ষাধীয়া সভিদ্ৰং। ডলৈ প্ৰাণাদ্যং পূক্ষং মৃতং পঞ্জনোদ্যাৎ # ২
সমাহতা ভীত্মককন্যা যে প্ৰিয়ঃ স্বৰ্গেন বৃত্ত্বহৈষ্ধ।
গাছৰ্ব্যন্তা মিষ্ডাং সভাগং লয়ে পদং মৃদ্ধি দধ্য স্থপনি # ৩ #

विश्ववामी ।

उक्क (वहर मृदिखदः विकास महिकर । श्रम्मानामत्र विमात्र वाता श्रमानीद्राष्ट्रार्थः ॥ २ ॥

ভীন্নককন্তন। কলিগা বে বাজান: সমাহতা: ছবজমার্বং। সমাজতা ইতি পাঠে জাকটা ইতার্বং। কেন সাধনেন প্রিরো লক্ষ্যাঃ
স্বর্গেন সমানেন রূপেণ বলাপি তরা কেবলং প্রকৃষ্ণ এবাহুতঃ ন সংক্ষী তথাপি ততা লাবণাং ভেরামাগননে হেত্রিতি ভটরবাহুতা ইত্যাচাতে। এবাং নিবতাং মূর্তি, পদং লধং। তরা সহ পাছর্ক বুলা পরক্ষার সমর রূপরা কৃত্ররা ভবিত্যিক্ষরা জহার।
কথং ভ্তাং অভাগং লক্ষাংশবাৎ তরা আলনেহর্পিতথাক। অপর্বঃ ফ্পতনঃ। বলা অপর্ব ইব অভাগং ক্ষামিতার্বঃ। বলা প্রিরঃ
ক্ষান্যাঃ সমানং বর্ণরং বাচকং বত্ত বং প্রিরঃ সবর্গো ক্ষা ক্রেন সমাহতা বে শিতপালাদরঃ। কিমর্বং ভীন্মকক্ষরা সহ তেবাং
বৃত্ররা ভৃতিত্যিছিতোতদর্বং। তর শিতপালতাহ্বানং বরুদ্বের। জরাস্কানীনাং তরিবাহাৎস্বেন। শেবং পূর্ববং ৪০ ৪

क्रममण्डः।

তত ইতি পিত্রাদিপ্রিয়ক্তনণীড়কথাদেবাদীনাং প্রীতি বিষয়ক্ষাক বিকর্বণং । ১ ।
পঞ্জনোদরং প্রাণ্য মৃতং যমণোকাদানীয় প্রাদাদিতি বোদ্ধবাং । ২ ॥
ভীন্নক ক্সানা বা বুত্বা ঘনেতি বাধিকরণ এক তৃতীয়াধরং । খভাগং শ্রীকৃদ্ধিণীকৃপং শ্রহার ॥ ৩ ॥

बिविनायहळवर्डी ।

निवामीनाः मृष्ट्िक्क कान निवामार्थः ॥ > ॥

उन्न दश्तः नविखतः वज्तानि नहिन् पश्चातावतः विवादगिनि काद्यारे पश्ची वमानाकानानीरविन एवः । र ।

ভীমকক্সবেতি বঠাথে তৃতীয়া ভীমকক্সবা কলিগাং শ্রিষং সাক্ষায়লাঃ সমানে বংগাঁ ছৌ কলিলাতাক্রবন্ধং বাচকং বস্ত তেন কলিগা বে রাজনং সমান্তা হবদার্থং সমান্তাইতিপাঠে সমানীতাইত্যথা। এবাং রাজাং মুদ্ধি পদং দ্বং স্থাপা সক্তঃ স্থামিব প্রতাগং কলিলী করে। এবাং কীদৃশানাং গাছকে বিবাহে বা বৃতিত্যা শিশুপাল্ভ ব্রন্থেন অক্সবাং ব্রবাজন্তেন ব্যৱণং তেনেতার্থঃ। বৃত্বরা অহং বর ইতি বরং ব্রবাজা ইতি ভবিত্মিজ্বামিবতাং কল্চিং ক্ল আগত্য কন্যানপ্তরেদিভাত ইতত্তভঃ সচকিতং পশ্যতাং ॥ ৩ ॥

হইয়া ভূতলে পতিত হইলে পিতা মাতার হথের নিমিক তাহার মৃতদেহকে ভূমির উপর টানিয়া লইয়া বেড়ান ॥ ১ ॥

অপর তিনি সান্দীপনি মুনির নিকট একবার মাত্র উপদেশে ছয় অক সহিত সমুদায় বেদ অধ্যয়ন করিয়াছিলেন এবং পঞ্চলন নামক দৈত্যের উদর বিদারণ পূর্ব্বক মৃতপুত্র আনয়ন করিয়া ভাঁহাকে বর স্বরূপে সেই পুত্র প্রদান করিয়াছিলেন। ২ ঃ

ভীম্মক রাজকন্যা ক্লিনীর রূপ লাবণ্যে ভূরি ভূরি নৃপতি সমাহুত হইয়া তাঁহার পাণি গ্রহণার্থ আসিয়াছিল, তিনি ঐ রাজগণের মন্তকে পাদ নিক্লেপ করিয়া তাহাদের সমক্ষেই গছকার্ভি ছারা সমাগম বাসনায় গরুড় বেমন হুধা হরণ করিয়াছিলেন, তাহার ন্যায় স্বীয় অংশ হুরপা ক্লিনীকে হরণ করিয়া লইয়া যান য় ৩ য় कक्षिता विकारमा प्रतिष्ठा श्वास्त्र नामिकिश्वाद । एक्शमानानि गृथारणाळाम् कर्षार्क्षणः भव्यक्षः वर्षदेवः ॥ ८ ॥ थिषः श्रम्भागः देव थिषात्रा विविश्यक्षाव्यक्ष्राच्यकः यगर्ष। वळाळवरुः मर्गालकाद्यः कीकृष्टिमां म्नवतः वर्गाः ॥ ८ ॥ एषः वृत्यं थः वर्गा श्रम्भः पृथ्वा श्वारकाय्यक्षिः स्वित्ता।

अध्यक्षामी ।

জকুলিমো ব্যৱান অবিজনাসিকান্ বিজনাসিকান্ রুখেতি বা। তৈর্বিজৈ তেলগনেন বা তথাে মানো যেযাং তথাি তাং পুথাতঃ কাময়মানান অভএবভানে শলভূতো রাজঃ ভজ্তৈর্কত এয় জয়ান । ৪ ॥

বৰা অণিভাঃ কুগুলে ৰাজ্ং পৰ্যং গত জনা প্ৰভু: পড্ৰোণি গ্ৰামাঃ ত্ৰীপরতত্র ইব। প্রিয়ারাঃ সভাভামায়াঃ প্রিরং বিধাতৃমিচ্ছু: হাতকং পারিজাতং আনীতবান্ বৰর্থে বরিমিতং তং প্রীকৃষ্ণং বজী স্ত্রীপ্রেরিডো বোদুম্ধাবৎ প্রকার্য সাধ্যেন তেন সহ যুদ্ধোদাম জভাযুক্ত এবেডাাহ ক্রীড়ামুগ ইভি অরং বজী । ৫ ।

স্নাতেৰ চক্ৰেণোশ্বিতং হতং স্তং ভৌমং দৃষ্ট্। ভবা মাতা ধ্রিত্রা ভ্যা। আমত্তিঃ প্রাথিতঃ সন্ তবা ভনরায় ভগ্রতায় ছতশেবং রাজাং করা ॥ ৬ ॥

क्रममन्दः।

বেবামর্জ্বাদীনাং শল্পৈর্জয়ে। তেরু বপ্রভাবাবেশাৎ বরমেব অবানেতার্থঃ। গাঙীবী কালরামালেভি শ্রীদশমসংবাদারেথং ব্যাখ্যারতে । ৪ ঃ

গ্ৰাম্য: কামীৰ দৃশামানোহপি বন্ধতঃ প্ৰিলালাঃ প্ৰেমৰত্যাঃ প্ৰিলং প্ৰেমেন্সিতং বন্তৰিবিং স্থানথেঁ হাজক্ষমান্ত (। বন্ধী স্থান্থা-স্বাবেশ তমল্যথা মহৈৰাজ্বং। অন্যথা মননমেবাই অলং ক্ষেত্ৰাবধুনাং সৌক্ষ্যমাত্ৰলাকেন স্বীকৃত্বানাং ক্ষিনীনাং ন্নং ক্ৰীড়ামুগঃ কামবশ ইতি ৪ ৫ । ৬ । ৭ ৪

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী

ককুলিনো ব্যভান্ অবিদ্যাসিকানের দমিখা তৈর্তিং পরাতৃতত্বেন ভয়ো মানো যেবাং,ভান্। গৃধ্যতঃ ক্যাম্ভিক্জিডঃ অতএবাজান্ রাজঃ অপজৈর্জতে তেবাং শলৈভ্তিঃ পূর্ব আক্রোণ্যক্তঃ ৪ ৪ ॥

গ্ৰাম্যঃ কামীৰ দৃশ্যমানোপি বন্ধ তন্ধ বিষয়ায়ঃ প্ৰেমৰত্যাঃ বিষয়ে প্ৰেমৰণ্ডেন প্ৰীতিং বিধিংস্কৃতিকং পারিজাতমান্ত্র আৰুত্বান্ যদর্থে বন্ধী বন্ধ সহিত এব তং আজৰৎ আজৰৎ বোদ্ধুমাগতবান্ তত্ত্ব হেতুঃ আৰু ইতি তত্ত্বাপি হেতুঃ বধুনাং শচ্যা-দীনাং ক্রীড়ামুগ ইতি। বন্ধা আজ্বস্থাতে জগদিতি ন্যায়েন বধুনাং সভ্যভামানীনামরং ক্রীড়ামুগ ইভি দিলারেবাজবদিতার্থঃ । এ স্পতং নরকাস্বরং স্থনাতেনোল্যবিতং হতং দৃষ্ট্য ধরিত্র্যা তল্মানা আমন্ত্রিতঃ নিবেদিতঃ তত্ত্বনগ্র ভগদবার। অত্য শুদ্ধ

অপর তিনি অবিদ্ধ নাসিক সাতটা ব্যকে দমন করিয়া স্বয়ন্থরে নাগজিতী নালী কন্যার পাণি গ্রহণ করেন। অন্যান্ত অনেক নৃপতি আসিয়া ঐ কন্যাকে লইতে অভিলাষ করিয়া ছিল, কিন্তু তিনি চুর্দান্ত ব্যক্তলির দমন করাতেই তাহাদের মানভঙ্গ হইরা যায় এবং তাহারা শত্র ধারণ পূর্বক আত্ম রক্ষা করিলেও স্বরং অক্ত থাকিয়া তাহাদিগকে বিনক্ত করেন॥ ৪॥

শপিচ সেই শ্রীকৃষ্ণ যথন অদিতির ক্ওল প্রদানার্থ স্থাপি গমন করিয়াছিলেন, তথন আপনি স্বতন্ত্র হইলেও ন্রীপরতন্ত্রের ন্যায় হইয়া প্রেয়দী সত্যভাষার প্রিয় বিধান বাদনায় পারিজাত বৃক্ষ সানয়ন করেন। বক্তধারী ইন্দ্র, বধ্র জীড়ায়গ স্বরূপ ছিলেন, ইহাতে তিনি ন্রীবাক্যে প্রেরিত হইয়া পারিজাত প্রত্যানরনার্থ ভাঁছার সহিত যুদ্ধ করিতে ধাব্যান হইয়াছিলেন। ৫॥

বে ভূমিপুত্র নরকাহ্ন আপনার শরীর বারা আকাশ গ্রাস করিতে উদ্যত হয়, সে দেই শ্রীকৃষ্ণের হুদর্শনচক্রে নিহত হইলে ধরিত্রী বছবিধ বিনয় পূর্ব্বক প্রার্থনা করিয়াছিলেন, তাহাতে ভিনি ভূমির প্রতি আমস্তিতত্ত ভনগায় শেষং দক্ষা তদন্তঃ পুরুমাবিবেশ ॥ ৩ ॥
তত্রাহ্বতান্তা নরদেবকন্যা: কুলের দৃষ্ট্বা হরিমার্ডবন্ধঃ ।
তথায় সদ্যো জগৃতঃ প্রহর্ষ প্রীফার্তরাগ্রাহিতাহকোরে ॥ ৭ ॥
আসাং মৃহুর্ত একস্মিন নানাগারেষ যোষিতাং । সবিধং জগৃতে পানীনস্কপঃ ক্ষার্থা ॥ ৮ ॥
তাত্বপত্যান্যজনয়দাত্মভূল্যানি সর্বাতঃ । এইকক্ষ্যাং দশ দশ প্রকৃত্তে বিবৃত্যয়া ॥ ৯ ॥
কাল মাগধ সাজাদীননীকৈ ক্ষতঃ পুরং । অজীঘনত ক্ষয়ং দিব্যং ক্বপুংসাং তেজ আদিশত ॥ ১০ ॥

अभवसामी।

ভত্রাস্তঃপূবে কুলেন ভৌমেন যা আহতান্তাঃ প্রহর্ষণ ত্রীড়াচ **মন্তুরাগণ্ড তৈঃ প্রহিতাঃ প্রেরিতাঃ বে অবলোকাঃ তৈর্জগৃহঃ** খীকতবতাঃ । ৭ ঃ

আসাং যোবিতাং পাণীন্ তত্তদক্ষপ: সন্ সবিধং বিবাহাচিত প্রকার সহিতং যথা ভবতি তথা অগৃহে । ৮ ।
সর্পত: সইপ্রতি গৈ: সত্লানি প্রকৃতে মায়ায়া বিবিধং ভবনপবিভারতদিছরা। যবা প্রকৃতেইতের্বিবিধং ভবিভূমিছরা। ৯ ।
কাল: কাল্যবন: ক্ষত: আর্ণৃত: মুচ্কুল ভীমাদিভি: নিমন্ত মালৈ:। স্বয়মেব স্কীঘনৎ ঘাতিতবান্ তেনচ স্পুন্সাং তেজ:
প্রভাবং কীর্তিক দ্ববান । > • ।

क्रममसर्छः।

श्वमाययां व्यक्तिकातिक्ता निवधमिकि भूगांत्रगाः ॥ ৮ ॥

প্রকৃতেঃ স্থরপথৈয়েব বৈভবেছের। প্রকৃতিক স্থরপঞ্চ স্থাবন্ধেতামরঃ বাংখাতিঞ্ টাকাকৃতিঃ পঞ্চমে প্রাকৃতিং ভ্রেস্থেতা আকৃতিং স্থরপথে । ১ ॥

বয়মিতি সাক্ষাদেব কুঅচিত তত্ত্ব তত্তাবেশেনেতার্থ: । ১০ ।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবতী।

পিতৃক্স্যাপি ভক্ত বাণাস্থ্রস্কাদেব কুবুদ্ধিরিতি অসাধুসক মহিমপ্রভাবে পুরাণাত্তরকথা ভোষা ৪ ৬ ৪

ত্তার: পূরে কুলেন নরকাম্বরেণ। প্রহর্ষণ বীড়াচ ক্ষরাপ্ত তৈঃ প্রহিড়া: প্রেষিড়া ক্ষরকোকাই ক্রেন্ট্র্মার্মের বর ইডি প্রত্যেকং সীচকুঃ॥ १॥

সবিধং বিবাহোচিতপ্রকারসহিতং অমায়য়া যোগমান্তরা স্বর্ছ অমান্নয়তি বা । ৮ ॥

প্রকৃতে: ক্লম্ব ভাবসা বিবৃত্বয়া বিভবেচ্ছয়া আত্ত্যানীড়াজেঃ প্রকৃতিক স্বরূপক স্বভাবশেতভামর: । ১।

কালং কাল্যৰনং অনীকৈঃ দৈনৈঃ ক্ষতঃ আর্ণৃতঃ মুচ্কুলভীমাণিভি নিমিত্মাত্তৈঃ স্বয়মেব অজীঘনৎ ঘাতিত্বান্। তেন চ তেবাং স্ব প্ংসাং তেজঃ প্রভাবং কীর্জিং চ দত্তবান্॥ ১০ ॥

দদর হইয়া তদীর তনর ভগদততে রাজ্য দমর্পণ করত ঐ নরকান্থরের অন্তঃপুরে প্রবেশ করেন॥ ৬॥
দেই অন্তঃপুরে যে দমন্ত রাজকন্যা ঐ অন্তর কর্তৃক আছতা হইয়াছিলেন জাঁহারা আর্ত্রবন্ধু দেই
শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া গাত্যোখান পূর্বক হর্ব, লজ্জা এবং অবলোকন দারা ভাঁহাকে পতি রূপে
শীকার করিয়াছিলেন অর্থাৎ ''ইনি আমার অনুরূপ, ইনি আমার অনুরূপ'' প্রত্যেকেই এই রূপে
ভাঁহাকে পতিত্বে বরণ করেন॥ ৭॥

ঐ সকল রাজকনা। ভিন্ন ভিন্ন গৃহে অবস্থিত ছিলেন, ভগবান্ আজুমায়া ছারা যে বেমন তদসুরূপ হইয়া যথাবিধি বিবাহোচিত রীতির সহিত তাঁছাদের পাণি এহণ করেন ॥ ৮॥

অনস্তর প্রকৃতির অর্থাৎ মায়ার বিবিধ প্রকার,বিস্তার বাসনা করিয়া ঐ সভল জীর এক একটিতে সর্বান্তনে আত্মতুল্য দশ দশটা সন্তান উৎপাদন করেন। ১॥

कानयवन, कतानक ७ मार्च अक्षि नृপতিগণ দৈনা बाता मध्ताभूती ताथ कतिशाहिल, छाहारछ टमहे

भचतः विवितः वानः वृतः व्यक्तिर्वितं । भिनाः कं ब्रह्मवित्रे विशेषे वे विविद्यं । ১১॥ भव एव लाज्युकानाः नक्ति विविद्यं निर्मान्। व्यक्ति कृतं कं विविद्यं । १२॥ भवन कृत्यं कि विविद्यं के विद्यं के विविद्यं के विद्यं के विविद्यं के विवि

विवत्रवामी।

मन्नन विदिश्व वदणानञ्चानिन कारिक थाहान तामाधिकिक्षकार ज्ञाकत्वर पाक्षतिकि वा शार्क प्रस्तवामीन् प्रतामवाविषे । ১১॥ ज्ञान् क्षत्वे क्षतिकार्यका । क्षर प्रकृति क्रून क्षतिकार्यका । क्षर प्रकृति क्षति क्षति क्षति । ३२॥ ज्ञान्य । क्षति ज्ञानिक क्षति क्षति क्षति क्षति । क्षति क्षति क्षति क्षति क्षति क्षति । क्षति क्षति क्षति क्षति क्षति क्षति क्षति । क्षति । क्षति क्ष

कंगनमर्जः।

भवतिमिक्तिं वृत्राकरं मध्तावीनवाजवरं । वानावीनवरीतिकि वशावर्वरं (वांखार a >> a

পতিতানিতি वंदर पृथीकात्रकृषद्यनं कार्राकेखरनंकगांत्रियनं हे कार्राकेखकगीर्वकान् । তानिकार्यः । ১২ । ১० ।

আছে বলমিতাসাল্ভাব:। প্ৰায় তাৰ্যাজিবাছলোন ন স্থাই পৰ্বতসমূলাদীনাং তল আচুৰ্যাৎ কিং স্থাপিত্লাচুৰ্ব্য বৈৰ ভল ভাৱ: স্থাই। উলাভাই ভাৰিই অছামালিইদংশানাই বল্পালাশাং প্রমধাপিকিছমেৰোজ্ঞ:। তল্পানাই বলান্যানাই

खैविषनाथठकं वर्षी

জব তৰ্নন্তরং কাংশ্চ নুশান্ বাতর্বিভাঞাগনাভাব আধিঃ। বাতব্দিভি পাঠে বভূবেতি শেবঃ । ১১ । ভাংশ্চ কীল্পান্তে তব আত্পুজাণাং ব্ধিটিরাদীনাং হ্রোধনাদীনাঞ্পক্ষোঃ পতিভান্ আথান্ কুক্কেত্রমাপ্তভামাগ্রুতাং বেখাং বলৈঃ সৈনোঃ ভূঃ সর্বাণি চচাল চকশ্যে। ১২ ॥

न कुक्: शश्चन्नि न नम्म । ১৩ ।

ভার হেডুং কিয়ানিতি বাবতো জোণাবিভি মুলৈং কারণভূতভরতীদশাক্ষেতিবীভরং ভূবো ভারং উক্র যথাগ্যাৎ ভথা কনিতঃ আয়ং কিয়াম্ অভার ইতার্থঃ। স্কিরার্থঃ। সমাস্থাঞ্জ্যাগাং বিধেয়াংশবিদ্ধঃ সোটবাঃ ব্যাআছংলৈঃ প্রচায়াদিভিভ্ছেভ্ততভূবিসহং বাসমাজে নমু ভূভারভাবভাজিবাইলোন ন সাথে পর্কভসমুজাবীনাং তার প্রাচ্থাথ কিছখার্মিক প্রাচ্থেটিন্ব ভেচাথার্মিকা ভগবভা সংখ্যাক এব। নট বহুকুদ্ব্যাথার্মিকছং। বাচাং ভগবৎশরিকারশস্থাৎ ক্রম্বানাং ব্যান্যানাং নিতাং বুলোগদেবিনাং। বিপ্রশাশ

ভগবান মৃচুকুল ও ভীমাদিকে উপলক্ষ করিয়া স্বয়ং তাহাদিগকে বধ করিরাছিলেন এবং ওদারা আপ নার পুরুষদিগের প্রভাব ও কীঠি বিস্তার করেন 🕯 ১০ 🕯

অপর তিনি শর্মা, বিবিদ, বাণ, মূর, বঙ্কল এবং অন্যাশ্য দন্তবক্রাদি অন্তরগণকে প্রমং বধ করেন, আয় বলদেব প্রক্রামাদি বার্মাও কতক গুলাকে বিন্ত করিয়াছিলেন॥ ১১ ।

হে বিহুর ! তদনস্তর সেই ভগবান তোমার আতৃপুত্রদিগের উভয় পকে যে সমন্ত নৃপতি নিহত হয় তাহাদিগকেও বর্ধ করান । ঐ সকল ভূপাল অর সংখ্যক ছিল না, তাহারা যথন কুরুকেত্রে গমন করিত তংকালে তাহাদের সৈত্য সঞ্চালনে সমন্ত পুথিবী কম্পানিত। হইত ॥ ১২ ॥

হে মহাশর ! কর্ণ, ছংশাসন এবং শকুনীর কুমন্ত্রণায় ছর্যোধন হত ঐ ও ক্ষীণার্ং হইয়াছিল, তরি বর্ষন ভাষাের হইয়া অসুচরবর্গের সহিত ভূতল্পায়ী হয়, কিন্তু নেই ভগবান্ ঐকুক ভাহার ঐ ছর্দশা দৈখিয়া সন্তোধ লাভ করেন নাই ॥ ১৩ ॥

वबः हेश कहिशाहित्तन त्यांन, जीय, जर्ज्यन, जीय धरे महर कत्ततत कांत्रन यक्रन हरेशा धरे त्य

অ্টাদশাক্ষেছিণিকো মদংশৈরাতে বৃলং তুর্বিসহং যদুনাং ॥ ১৪ ॥

মিথো যদৈবাং ভবিতা বিবাদো মধ্যা মদা তাত্রবিদ্যোদনানাং।

নৈবাং ব্যোপায় ইয়ানতোহন্যো ময়াদ্যতেহত্তর্দ্যতে শ্বরং আ ॥ ১৫ ॥

क्षित्रयामी।

ক্ষণিতঃ উক্তারো ভ্ব: । অয়ং কিরান্ অতার ইতার্থ: । যদায়বংশৈ: প্রচারাবিভির্চেত্তুতিছু বিবেবং বলমান্তে । ১৯,৪ তেবাং নচাত্রান্ত উপার: প্রভবতি কিন্তু মধুনা ব আবদঃ সর্বতোমদঃ তেনাতাত্র বিলোচনানাং এবাং বিবাদে বদা ভবি-ব্যতি ভদা ইরানেবৈবাং বংগাপার: । অতোহনো নাতি । একাছনোপি মর্দাতে সতি সমমের বিবাদেনাত্রদ্বীরলিভার্থ: । ১৫ ॥

व्ययमण्डः

নিভাং বুৰোপদেৰিনাং। বিপ্ৰশাপ: কথৰভূৰ্ফীনাং ক্ষচেডসামিতীদে। শ্ৰাসনাটনাশাপকীভাষানাশনাবিছ্। ক বিছ্ঃ সন্তমাশ্বানং বৃষ্ণৱঃ কৃষ্ণচেত্ৰস ইত্যাদে। তথাদ্ বৰ্জ ছুৰ্ব্বিহ্ছেন ভারত্বমূচাতে। তৎধন্ ভাংভ্যক্তবৃ কের্ক্সা ম্যান্তৰ্ভানে ভোষাং মহিবোগেন পীড়িতানাং প্রাহ্মশংখানাং সৃক্ষাং পৃথীবং পীড়িত। সাাধিতীখনেব গ্যাতে । ১৪ ৪

ভত্তালোৰামিৰ নৈবাং সংহারোষ্টতে কিন্ত প্রকারাস্করমেৰ স্যাদিত্যাহ মিথো বদা এবাং বদুনাং যথা মিথো বিবাদভথাপোষাং পৃথিৱী পরিভাজনে বধরণ উপারো ন বিদাতে কিম্ভানোন বিবাদভথা সাদিতি। তর্হি তেবাং মরাভিল্বিতে পৃথীপরিভাজনে ক্ষম উপারোভবেং। তত্ত পুনঃ পরামুশতি অভোবধাদজ্ঞর ইরান্ এভাবানের উপারোবর্তত। কোসে) মরি উদাতে সমেজ্বারাং সভাং এতে স্বমন্তর্গতে ইতি। স্বেতি নিশ্চরে। বধা বধ্নোপারো ন বিদ্যুতে ইত্যেবং ব্যাধ্যার। অভোবধাদাল ইরান্ বধোপারভ্লা উপারোবিদাত ইতি ব্যাধ্যার। অন্তর্গতারা সমানং ॥ ১৫। ১৮। ১৮॥

श्रीविषनाथहळ्वाची ।

কথসভূষ্কীনাং কৃষ্ণচেতসাং। শ্যাসনাটনালাপকীড়ামানাশনাদির্। নিবহু: সম্ভমাম্মানং বুঞ্মঃ কৃষ্ণচেতস ইত্যাহ্যক্তিভাল । তালোচাতে। ভারেছি বিবিধা ভবতি হুংধরণ: স্থরপাল প্রথমা হুংসহং বিভীয়ন্ত স্বস্থ এব ব্ধা যুবত্যা স্বর্মণত ভারঃ। যথা বংশল্পা মালা স্বপোত্তসা ক্রেমণত ভারঃ। যথাচ বণিলা শিরসি ধৃতত স্থমত ভারঃ কিঞারবলেন জনেন স্থাক্তি-বন্ধরণ: স্থরণাপি ভারো বোচুং ন শকাতে যথা পরম্বাম্মিকত মহাভাগবতত তপোবলাধিকামানিহুর্বতো জ্বস্যাপি ভারঃ পৃথিবাঃ। বন্ধরণ ভারে বিলেক্তিরিভা তরীক সব্যাত্তরতঃ প্রেবাঃ । বন্ধরণ ভারওভা ক্রেমার্কিকত ভার ভারতি । নাম তরাই বিভেক্তিরিভা তরীক সব্যাত্তরতঃ প্রেবাঃ । বন্ধরণ ভারতাণি স্বলমাবিন্দিরতে ভারা তত্ত পর্মানন্দরপাসাপি ভারে। ন বোচুং শকাতে। বথা ভীমন্তে। বুভ রশ্চরণেইভারাচললাম্রিভি। বৃসিংহাবির্ভাবেচ প্রোৎসর্পত স্থাচ প্রাভিশীভিতিতি। অভোহ্র ব্লাপি ব্রক্ত্রভারঃ পৃথিবঃ। ভারতেন নাভিমনাতে বণা স্ক্র্মার্থ্যাপি দ্রিরা বহুম্বরিজারাভ্রণভারত্বপি প্রেম্বরা ভংকাত্তর ভংকাত্তর ভাবেং কৃষ্ণত ভারঃ পৃথিবঃ। ভারতেন নাভিমনাতে বণা স্ক্র্মার্থ্যাপি দ্রিরা বহুম্বরিজারাভ্রণভারত্বপি প্রেম্বরা ভংকাত্তর ভংকাত্তর ভাবেং কৃষ্ণবার্গি বির্দ্ধরির বির্দ্ধরির বির্দ্ধরির স্বর্ণান্ধরির স্বর্ণান্ধরির ব্রান্ধরির প্রাল্গান্তর প্রাভ্রাহির প্রক্রিটাত প্রেমার্থানি বির্দ্ধর বিত্রপার্ধান্তর প্রাল্গান্তর প্রাভ্রাহির প্রক্রিটাত প্রক্রান্তর নালান্তর প্রভাবের ভাবের বির্দ্ধরির প্রক্রেশির্ বান্ধান্তির বির্দ্ধরাহির প্রক্রিটাত প্রক্রিটাত নিক্রম্বর প্রভাবে উপসংক্রভার । ১৪ ৪

তত্রানোষাং নৈষাং সংহারঃ সম্ভবতি কিন্ত প্রাকারান্তরেপেৰেভি প্রগতমাহ মিপ ইতি মধুনা ব পা স্বাধানতোনাতান্তনোতানিকো গাং বিবাদকাণাপি এষাং বধরূপ উপায়ে। ন অবতি কিন্তু অতো বধাৎ অন্ত এব ইয়ানু বধসদৃশো নতু বধ ইতার্থঃ। তেম লোকা বস্তুত্ববধ্যের পরস্পর বধং প্রস্কান্তীতার্থঃ। বাতবং বস্তু তম্ব প্রট্রাহ্ মন্নি উনাতে ইমানুপুসংক্ষিহীর্থে স্বিত ক্ষমের ইমে অন্তর্মধন্তে অন্তর্মানান্তে স্মেতি নিশ্চরে ॥ ১৫ ॥

অক্টাদশ অকোহিণীযুক্ত ভূমির ভার হরণ করিলেন তাহা অতি অল্প পরিমাণ হইল, কেননা আমার অংশ শ্বরূপ প্রস্তাহাদি, তাহাদের অধীনে যাদব সৈত্ত অনেক আছে, তাহাদের ভার অতিশয় চুর্বিসহ॥ ১৪॥

ঐ যতুগণ যথন সধুপানে সর্বতোভাবে মত এবং আরক্ত লোচন হইয়া পরস্পার বিবাদে প্রান্ত হইবে, তখন বিবাদই তাহাদের বধের কারণ হইবে, নতুবা তাহাদের বিনাশের উপায়ান্তর নাই। ফলতঃ তাহারা পরস্পার একালা হইলেও আমি অন্তর্জানার্থ উদ্যুক্ত হইবে আপনারাই প্রস্পার বিবাদ করিয়া অন্তর্হিত হইবে॥ ১৫॥

विवडानव्यम् ।

এবং সঞ্চিত্তা ভগবান্ স্বরাজ্যে স্থাপ্য ধর্মজং । নক্ষ্মানাস স্ক্ষনং সাধুনাং ক্ষ্মান্ত্র ৯৬ ॥
উত্তরারাং গ্রভঃ প্রোবংশঃ রাধ্যভিষম্মানা । স বৈ প্রোণ্যস্ত্রসংপ্রু উঃ পুরর্ভগবভা গ্রভঃ ॥ ১৭ ॥

অবাজরম্বন্ধিভাবিদি (ক্ষিত্র । নোপি ক্ষাম্মুকৈ রক্ষ্মের্বভঃ ॥ ১৮ ॥

ভগবানপি বিশ্বাস্থা লোকবেদপথাসুগঃ । কামান্ সিবেবে হার্বভ্যানসক্তঃ সাংখ্যমান্থিতঃ ॥ ১৯ ॥

সিশ্বন্ধিভাবলোকেন বাচা পীযুষক্ষ্যা । চরিত্রেগানবদ্যেন শ্রীনিকেতেন চান্ধনা ॥ ২০ ॥

विश्वयात्री।

बार (अोक्स्ट्रांकर क्रांस्थ गिक्का प्रशास्त्र शामित्रां । 20 व

পুডঃ রক্ষিতঃ । ১৭ ।

अपूरेयः जीवानिणिः नद । ১৮ ।

नारभार व्यक्विश्वस्वित्वरः । ১৯ ।

ষিধো বং দ্বিত সহিতোহবলোকভেন পীব্ৰক্ষয়। সুধাতুলায়। দুপীবৃৰ ধারমেতি পাঠে সুধাঞাবাহ ক্লপয়া আত্মনা বেছেন ।২০৪

क्रममन्दः।

ভগেতি ক্বতক্তাতারাং বৈরাগালীলাপ্রকাশিতেতার্থ: । ১৯ । তত্ত্ব ক্রমনার সিধেতি তিতি: । ২০ ।

श्रीविषमाधहळक्की ।

স্থাপা স্থাপরিয়া। ১৬। ধুত আহিত। ধুতো রক্ষিতঃ। ১৭।

(दरम विद्वताम । ১৮।

পদ্ৰট্কৈ: ঐখৰ্যাং লোভৰভি। ভগৰানপি বিশ্বসান্ত্ৰামীৰ অসক: লোকবেদ্ভি লোকবেদ্যোরনিবিদ্ধানেৰ কামান্ প্ৰক্ষপান্ ইন্তাদিভিক্ষপায়নখেন প্ৰেবিভান্ সিবেৰে বৃদ্ধে। অঞ অসক ইকি বৈরাগ্যং সাংখ্যমিতি কানং ঃ ১৯ ঃ

মান্নাশক্তিবিলাস এব তস্যানাশক্তিকিছকিবিলাসে স্থাসক্তিরেবেড্যার সিংগ্রন্তি ক্রমেণাবলোক বচন দীলাক্সণৈততুর্তি-মাধুবৈহাঃ । ২০ ॥

হে বিছর। জীকৃষ্ণ এই রূপ চিন্তা করিয়া যুধিপ্তিরকে স্বীয় রাজ্যে স্থাপন পূর্বক সাধুদিগের বৃদ্ধ প্রদর্শন করত স্কলাণের স্থানন্দ রৃদ্ধি করিয়াছিলেন ॥ ১৬ ॥

হে মহাত্মন্! অভিমন্তা আগমার পত্নী উত্তরার কুকিতে পুরুবংশধর অরূপ যে গর্ভ উৎপদ্ধ করি-রাছিলেন, তাহা দ্রোণনন্দন অভ্যামার অক্ষাত্রে দক্ষ হইবার উপক্রম হইয়াছিল, ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ কর্তুকই তাহা পুনর্কার রক্ষিত হয় ॥ ১৭॥

নেই ভগৰানই ধর্মপুত্র বুধিন্ঠিরকে তিনটা অখনেধ যত্ত করাইরাছিলেন এবং রাজা যুধিন্ঠিরও তাঁহার অসুবত্তী হইয়া অসুজগণের সহিত রাজাপালন করত পরম হথে কাল যাপন করেন ॥ ২৮॥

সেই সময় বিখাত্মা ভগৰান্ও ৰারকা পুরীতে অবস্থান পূর্বক সাংখ্য অর্থাৎ প্রকৃতি পুরুষের বিচার করত, লোক এবং বেদধর্মের পথামুসাবে অনাসক্ত হইয়া বিষয় সকল কোগ করিয়াছিলেন ॥ ১৯ ॥

ভিনি হৃষ্ণিয়া হাস্যাবলোকন, প্রয়ভাগ্নান বচন, বিশুদ্ধ চরিত্র এবং লক্ষ্মীর নিকেতন স্বরূপ দেহ, এই সকল হারা॥ ২০॥ ا ساند

> वैभर त्नावमगृदेक्य त्रमञ्चन चलताः यहून्। त्राय क्रणमञ्जा मलक्रम खोक्रमध्याः ॥ २०॥ खोतादाः त्रममध्याः नचरमत्रभगानं, बङ्गन्। गृहत्मस्यत् त्यारशङ् वित्राशः सम्बाह्यतः ॥ २०॥ दिवाधीरमञ्जू कारमञ्जू देवनादीनः चन्नरः श्रमान्। त्याः विवादकक्ष त्यारशन् त्वारभग्नमञ्ज्ञकः ॥ २०॥

द्येशवयामी ।

ক্ষণদরা রাজ্যা দত্তঃ ক্ষণ: অবসরঃ উৎসবো বা বাসাং স্থীশাং জাজ ক্ষণং সৌজ্বং বস্য সঃ ৪২১ ৪ গৃহদেশের গৃহধর্শের বোগের কামভোগাল্যপাবের বিরাপ ঔলাশীন্যং কাতমিতার্থঃ ৪২২ ৪ বলা স্থাবিন্দ্রি তপ্রতো বিরাগঃ। তলা দৈবাধীনের কো বিশ্লাক্তেত বিশ্লাসং গ্রীভিং বা কুর্যাৎ। বোদেন চেৎ বোগে-শবং প্রীকৃষ্ণমন্ত্রতঃ ৪২০ ৪

ক্রমসন্ত: ১

রক্ষন্যা দ্বাবসরজীশাং ক্ষণমুৎসবক্ষণং গৌৰুদং বস্যা । ২১ ॥
গৃষ্যেধেষু গার্হস্থাচিতধর্মা ছুঠানেরু। বৈরাগ্যমৌদাসীনাং ॥ ২২ ॥
সাচ বৈরাগ্যলীদৈতবোধমিত্মিত্যাহ দৈবেতি ॥ ২৩ ॥

विवामाण्डकवर्छी।

ইমং লোকং মর্ত্রলোকত্বং অফ্রং অম্ব দেবলোকত্বং তেখিল মধ্যে বদ্নভিতরাং বছখিল মধ্যে ত্রীর্ রেমে ইত্যাসক্ত্যা-ধিকং ক্ষণদ্যা রঞ্জনা দত্তঃ ক্ষণেহিবসরো বাসাং তথা ভূতাত্ব ত্রীর্ ক্ষণেন রতেহিসবেন সৌহনং বস্য সঃ। পট্টনছিখীণাং স্বরূপভূ-তথাক্তিক্ত্বিক্তবং কান্ধ প্রভাসথতে শিবগৌরীসংবাদে গোণ্যাদিতামাহাত্মো দৃইং। বোড়লৈব সহস্রাণি গোণ্যক্তরে সমাগতাঃ। লক্ষ্মকং তথা বভিরেতে ক্ষণ্ডবতা প্রিয়ে। ইত্যুপক্ষম্য। হংস এব মতঃ ক্ষণ্ডং পরমাত্মা জনার্দ্দনঃ। তলৈতাঃ শক্তরো দেবী ব্যেড়লৈব প্রক্রীর্থিতাঃ। চক্তরণী মতঃ ক্ষণ্ডং ক্লার্লাভ ভাঃ স্বৃতা ইভি। অত্র বিশেবে। দশ্বে প্রশক্ষিয়তে ॥ ২১ ৪

গৃহমেধের বোগের রজোগুণমরকর্মার্গের ভত্পদাক্তি কর্মিজনোপনীতিভোগাবস্তার বিরাপ ঔলাদীনাং সমাগলারতেতি দর্মকালমেক স্বাদীনের। ভলানীং ছতিশাইবভূবেভার্বঃ। ভণেষলকো ইবরাগামিভি ইবরাগাস্য লক্ষণালগুণভীতের ভন্মর-মন্ত্রের ক্রিগালি বিলাসের বৈরাগাং নব্যাধ্যের ॥ ২২ ॥

সাচ বৈরাগালীল। এতবোধরিত্মিত্যাহ বলা স্বাধীনেশ্পি তগৰতো বিরাগতলা দৈবাধীনের কো বিল্লেন্ডং বিশ্বাসং প্রীতিং বাং কুরুজি বোগেন চেৎ বোগেররং অগবন্ধসমূলতঃ স্যাৎ ॥ ২৩ ॥

এই মন্ত্রালোক এবং দেবলোক, তথা বিশেষ ক্লপে যদুগণকে আলোদিত করিয়া বিহার করিতেন। বে দকল কামিনী যামিনী যোগে অবদর প্রাপ্ত হইত তাঁহাদের সহিত সাতিশন সৌহাদি প্রদর্শন করিতেন। ২১॥

হে বিজুর ! সেই জ্রীকৃষ্ণ ঐ প্রকারে বহু বহু বৎসর জীড়ায় নিরক্ত ছিলেন, এক সময়ে অকন্মাৎ তাঁহার গৃহধর্মে এবং কামডোগাদির উপারে বিরাগ জন্মিল। ২২।।

কামানি উপায় প্রীকৃষ্ণের স্থীন ছিল, তাহাতে যথন আঁহার উদাণীন্য জনিল, তথন স্বনান্য যে সকল পুরুষ বয়ং দৈবের স্থীন এবং যাহানের কামানিও দৈবপর্তন্ত, তাহাতে কি ভাহানের বিশাস বা প্রীতি হইতে পারে । যদি হোগ খারা কামানি হইত ভাহাতেও তাহানের প্রীতি হইতে পারিত না, যে হেতু তাহারা যোগেশ্বর প্রীকৃষ্ণের স্ক্রবর্তী ছিল॥ ২০॥

প্রায়ং কণাচিৎ ক্রীভৃত্তিবস্তাল ক্রারকৈ:। কেরণিতা মুনর: শেপু উপবন্ধতকোবিদা:॥
ততঃ কতিপরৈশ্বানৈ ব্রাফিভোকাকাদ্য:। যযুগ প্রভাসং সংক্ষী রথেদেবিবিনোহিতা:॥ ২৪
তত্র স্নাড়া পিতৃন্ দেবান্বীংশৈচৰ তদন্তসা। তপ্রিছাণ বিপ্রেভ্যো গাবো বহুগুণা দহ:॥ ২৫॥
হিরণ্যং রক্ষতং শ্যাং বাসাংস্যাজন কর্মান্। হ্যানিভান্ধান্ ক্সা ধ্যাং ব্রতিক্রীমপি॥ ২৬॥
আনক্ষাক্র সং তেতাে দ্যা ভগবদর্পাং। গোবিপ্রাধানব: শ্রাং প্রণের ভুবি মুর্কভিঃ॥ ২৭॥

धिशत्र या मी ।

শেপু: শাপং দত্য তগবতো মতেহতিপ্রায়ে কোবিদা: অভিজ্ঞা: । ২৪ । পর:শীলাদি বহুওপোপেতা বা গাবস্তা: । ২৫ ॥ কল্পান্ড বৃত্তিকরীং জীবিকাপর্যাথাং ॥ ২৬ ॥ ভগবদর্পদং ব্যাভব্তি । গোবিপ্রার্থা অনুবো বেবাংংতে । ২৭ ॥

क्रियमार्खः।

क्रश्वक्रक्ष विवामान वाद्यन मित्या यदेववामिकाभिना भूर्सभूकः ॥

(मयः जैक्कः ॥ २८ ।

ভতেতি যুশ্মকং । ২৫ । ২৬ ।

গোবিপ্রার্থানৰ ইতি পরম ধার্ম্মিকত্বমের দৃঢ়ীকতং। তেন ভগাবদিচ্ছবৈদ তাদৃশব্দিত্বশাগভক্ষিতি থাজিতং। ভততত তত্ত্ব সংগ্রুত লোকভীষণার্থমের নতু বাত্তবমিতিচ দর্শিতং ॥২৭॥

टीवियमायठकवडी ।

ভগবতো ৰতে অভিথামে কোবিদা ইভি মুনীনাং বোৰঃ পৰিষ্ঠঃ ভগৰতোশি তাদৃশাভিথাসকারণমেকাদশাভে বাাধাজতে।
দেবমোহিভা এব বৃঞ্চাদমো বহুনিতিভুক্তাভ বারকারামেৰ আপ্রাক্তিকলোকালকাতরা ভতুঃ। দেবাক তে মোহিতাকেতি বা ১২৪
গাবো গাঃ বহুওগাঃ পরঃশীলাদিমতীঃ ১২৫ ৪

বৃত্তিকরীং দ্বীবিকাপর্বাধ্যাং ভগবতে হর্পনং বত্র তৎ বথাজাত্তথা গোবিপ্রার্থা দেবাং তে ইতি তেষাং ধার্মিক সং দৃঢ়ী কৃত্য ভগবনিজ্ঞাধীন সংহার হং ব্যক্তিয়ে। ভগবনিজ্ঞা চ প্রাহ্মণা ন কোপনীরা ইতি লোক এবর্জনা নিভাভূতে কোঁ বাদবে ভো নেবাল্যংশবিভালনা তেবাং ভল্লিবেশ স্বস্থাপন্য স্বীর ষ্টেড্স্বাল্যেতিলা। স্বভক্তি ভক্তধানলীলাপরিক্যাদি নাহাত্ম্য গোপনেন বহিসুবিলোক প্রভারণা সভক্তকাল ক্রাণ বিভারণাদ্যা ইতি এ ২৬। ২৭ ॥ '

অতএব একদা যতু ও ভোজ বংশের কুমারের। ধারকাপুরীতে ক্রীড়া করিতে করিতে মুনিগণের কোণোৎপাদন করিলেন, তাহাতে সৈই মুনি সকলও প্রীকৃষ্ণের অভিপায় জ্ঞাত হইয়। তাঁহাদিগকে অভিশাপ প্রদান করিলেন। তদমন্তর কতিপয় মাস পরেই বৃষ্ণি, ভোজ, অন্ধক প্রভৃতি সকলেই দেব মায়ার বিমোহিত হইয়া রথারোহণ পূর্বক হর্চিত্তে প্রভাস তীর্থে গমন করিলেন। ২৪॥

ভাষনতার তথার উপনীত হইয়া আনাদি করিয়া সেই তীথেদিক বারা দেব, খাঘি ও পিতৃগণের তর্পণ করিলেন, পর্যে আআপদিগকৈ পায়:শীলভাদি ভাবযুক্ত বছ বছ প্যায়িনী গাভী দান করিলেন ॥ ২৫ ॥

অপর অর্ণ, রজত, শ্ব্যা, বস্ত্র, অজিন, কম্বল, হণ্ডী, অর্থ, ক্যা, আর জীবিকা নির্বাহের পর্যাও ভূমি । ২৬ ॥

তথা বহু ৰসমূক্ত আৰ, এ স্কল্ণ বস্তু ভগৰালে সমর্পণ পূর্বক দান করিয়া মন্তক বারা স্থানি স্পর্শ করত প্রণাম করিলেন, তৎকালে তাঁহাদিগকে এই প্রকার বোধ হইল যেন গো আলাণার্থই ইইংরা জীবন ধারণ করিতেছেন ৪২৭ ল ॥ # ॥ ইতি জীভাগবতে মহাপুরাণে পান্নহংদ্যাং সংহিত্তারাং বৈরাদিক্যাং ভৃতীয়ক্তরে বিচুরোদ্ধব সংবাদে তৃতীয়েহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ৩ ॥ # ॥

Bona Bais #

অথ তে তদমুজ্ঞাতা ভূক্ত্বা পীয়াচ বাক্ষণীং। জন্ম বিজ্ঞ-শিক্তজ্ঞানা ত্ৰুককৈৰ্ম পম্পৃঞ্জঃ ॥ ১ ॥ তেবাং মৈনেমদোৰেণ বিষমীকৃত চেতসাং। নিমোচতি ন্বাবাদীবেণ্নামিৰ সৰ্দনং॥ ২ ॥ ভগবান্ স্বাস্থ্যমায়ায়া গতিং তামবলোক্য সঃ। সরস্বতীমূপম্পৃশ্য বুক্ষমূল উপাবিশৎ॥ ৩ ॥

श्रिपत्रपामी'।

চকুর্থে বন্ধনিং প্রার্থ্যনালম্বে। উদ্ধবজোণদেশেন ক্ষন্তা নৈত্তেরমাগ্রমং ॥ • ॥
কৈর্প্রিক্সাতাঃ বারুণীং শৈষ্টাং মদিরাং ॥ > ॥
বারুণোব মৈরেরং শুক্ত দোবেণ। রবৌ নিম্নোচ্ডি অন্তঃ প্রাক্তি স্তি মর্দ্ধনং কদনং ॥ ২ ৪
উপস্পুত্র স্বর্গতাং আচ্মা ॥ ৩ ॥

ক্রেমসকর্ত্তঃ

। •। ইতি শ্রীমন্তাগবতে ত্তীরক্ষরে শ্রীজীবগোম্বামিকত ক্রমসন্দর্ভত ত্তীরোধারেঃ সমাপ্ত: । •।
তরা উপলক্ষণভূতরা ভগবতৈব বিজ্ঞানিত জানং বেবাং । ১।২।
সাম্মারায়া ইতি ইস্ক্রালবনের মৌবল লীলা বাঞ্জিতা। ৩।

बिविश्वनाथहळकवळी ।

॥ এই ইজি সাবার্থন পিঞাং হর্ষিণাং জ্বন্ধান জ্বনারং জ্বীরের সঙ্গত সক্তঃ স্তাং ॥ ৩ ॥
আকটাং হরে: প্রার্থ কুলভোগরাজ্বন্। চতুর্থে ব্যাপ্রদার্থ নৈজেরং বিচ্রোহ্যপাৎ ॥ ৩ ॥
তৈর্থাকশৈতেন ক্ষেন বা অফুলাতাঃ মর্ম্মগরস্পর্মিতি শেবঃ ॥ ১ ॥
বার্ষণার্থ মৈরেরং ক্বল্প নোরোচ্তি অন্তঃ গছেতি স্তি মর্জনং নাশঃ ॥ ২ ॥

নত্বংশকা পারাবারো ভগবান্ রভচরপুত্রপৌত্রাদি পরম শালনঃ প্রত্যাদিব্ধং কথং বাকাদ্টবালিতাত আৰু ভগবানিতি। মারারা গতিং চেটাং প্রত্যারাল্যা যাল্বাঃ পরম্পর বধেন সদ্য এব নাশং প্রাপ্রিতি সর্বশোকপ্রত্যারনরপাং খাজেতি নহি দলীরা মারা তমনি সা মোহমেনিতার্থঃ। মারারাঃ খাশ্রা বাাম্যেইনখভাবত্বাং তভচ্চ ভগবতাত্বেবং বিলোকতং নিত্যভূতা লীলা পরিকরাঃ প্রত্যাদ্যো যাদ্বা ধারকারামেব স্থিতাততংগ্রাহিট্রো দেবাভ ভভ্দক্তেয়ঃ পৃথক্ ক্রভাত্ত্রজ্পেশ প্রভাস্মানীতা ভূত্য

॥ 🛊 ॥ ইতি তৃতীয়ে তৃতীয় ॥ 🛊 ॥

চতুর্থাধ্যায়ে বিছুরের বন্ধু নিধনবার্তা প্রবণ করিয়া আত্মজান লাভার্থে উদ্ববের উপদেশ ক্রেছে নৈজেয়ের নিকট গমন ॥ • ॥

উদ্ধব কহিলেন তদনন্তর সেই সমন্ত বৃফি ও ভোজ ঐ সকল ভ্রাহ্মণের নিকট অমুজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া ভোজনানন্তর পৈঠী হুরাপান করিলেন, তাহাতে তাঁহাদের জ্ঞান জংশ হইলে গরস্পার হুরুভিল প্রাপ্তা করত পরস্পারের মর্মা স্পর্শ করিতে লাগিলেন ॥ ১ ॥

স্বাদোষে তাঁহাদের চিত্তের বৈপরীত্য জন্মিলে পরস্পার কটুক্তি আরম্ভ করিলেন, তাহাতে বেশু সকল বেমন পরস্পার সংঘর্ষিত হইয়া বিনত্ত হয়, তাহার ম্যায় সূর্য্যান্ত সময়ে তাঁহাদের কদন অর্থাৎ পরস্পার প্রহারে বিনাশের উপক্রম হইল ॥ ২ ॥

ভগবান আতা মারার ঐ মহীয়দী শক্তি অবলোকন করিয়া সরস্বতী জালে আচমন পূর্বক একটা

শ্বংশাক্তো ভগৰতা অসমার্ভিহরেশ হ। বদরীং দং প্রেরাহীতি বকুলং সংশিহীর্ন। ॥ ৪॥
শ্বংপি ভদভিপ্রেক্তং জানমহ্মরিক্তর। পৃঠতেহিবগমং ভর্ত্তঃ পাদবিলেবণাক্ষমঃ ॥ ৫॥
শ্বংশক্ষমাসীনং বিচর্ষন্ দয়িতং প্রজিং। শ্রীনিক্তেং সরস্বত্যাণ ক্বতকেতমকেতনং॥ ৬॥
শ্বামাবদাতং বিরক্তং প্রশাস্তারুশকোচনং॥ বোর্ভিন্তভূতি ব্যিদিতং পীতকৌশাদ্বেণ্চ॥ ৭॥

श्रीभवत्रामी ।

আহকোজঃ পূর্বমের বারকারাং ॥ ৪ ॥
তদভিব্রেতং কুলসংহারাদিকং ॥ ৫ ॥
কুতক্তেং কুডবাসং অকেডনং অনাশ্রং ॥ ৬ ॥
বিরলং বিরলসং শুদ্ধসন্তময়ং বিদিতং দক্ষিতং । কৌশং-কৌশেয়ং ॥ ৭ ॥

क्रमनमर्भः।

বদরীং দং প্রবাহীতি। করে অশালোকার্পরত ইত্যাদি বক্ষাতি ॥ ৪ ॥ অভাক্ষতি ত্রিকং ॥ ৫ । ৬ । ৭ । ৮ ॥

व्यविश्रनाथहळ्वडी ।

পীয়া অবকান্তলাঃ অংখন দিবং বসুবিতি। অতথাৰ পূৰ্বপালাে জনস্কাতা ইতি দিবং গছমিতােৰ তথাং। অব রামপ্রতাহানিক্ষানাং জগবৰ্।হছাং এতেহি বাধবাং সৰ্বে মলাপা এব জামিনি। সর্বাহা দেবি মত্লাগুণশালিম ইতি যথা গৌমিত্রি জরতে বিধা সহবিশাদর:। তথা তেনৈৰ লায়তে নিজ্পোকাল্বল্জেরেতাানি পাছোকেঃ দেবানাঞ্চ হিতাধার বয়ং প্রাপ্তা মনুবাতা মিতি হরিবংশে অকুরোকেন্চ বাদবানাং নিতালীলাপরিকরমাৎ তেবু শাখাদিবু প্রবিটানাং গুলানামং দেবানামপ্রথিবার মধ্যএব নাশানহিং মৌবল লীলেয়ং মায়িক্যেবার্মারিক ক্ষাভাবেহিশি শীক্ষলীলাভ্রেতিয়াল্চিভাযোগমায়ান্ত্রাদিতা নিতাৰ জেরা ৪০।

অহঞ্জেক: পূর্বনেব বারকারা: অহঞ্জেত। প্রকাশভেদেন অসংক অহং রক্ষিত ইনমূকতেতি সরস্বত্যা চকারং প্রবাজিত উদ্ধবঃ ত ৯ হেতুঃ প্রথমে পক্ষে প্রণরস্য মম আর্থিং স্থবিরহণীড়াং হরতীতি তেন বিতীয়ে স্বায়োকাচ্পরত ইতি বক্ষ্যনাগ্রুত্যা প্রপরানাং বদর্যাশ্রমবাসিনাং স্বাংশ নর নারারণাদীনাং আর্থিং স্থচিরতং ডক্তিজ্ঞানবৈরাগ্যাদিশ্রবণাংক্ঠারুণাং হরতীতি তেন ॥৪

· छन्छि अकः बारीकि अवति अक्षां अधारा न छ। ककीकि वा कूननश्रातानिकः वा ॥ e ॥

কেন্তনমাপ্রয়ো নবিদাতে ৰস্য তং প্রাক্তর্যাকৃতসর্ববন্ধনাং বছতত্ত্বাশ্রিতথাদিতি ভাবঃ ॥ ৬। ৭ ॥

वृक्षमूर्ल गिन्ना छेशविक इहेरनन ॥ ०॥

জীকৃষ্ণ প্রপদ করের ভার্তিহারী ছিলেন, এ নিমিত ভাপনায় কুলসংহারের ইচ্ছা হইলে, ভাষাকে পুর্বেই বলিয়াছিলেন, উদ্ধব । ভূমি বদরিকাঞ্জমে গমন কর ॥ ৪ ॥ °

কিন্তু হে অরিন্দম ! আমি তাঁহার কুলসংহারের অভিপ্রার অবগত হইয়া তাঁহার পাদ বিশ্লেষ সমূদে সক্ষম প্রযুক্ত ভাঁহার অভূগমন করিয়াছিলাম ॥ ৫॥

অবেষণ করিয়া যাইতে: যাইতে কেবিতে পাইলাম আমার পরম হুলদ্ ভগবান্ একিন্দু সর্বতী ভীক্ত ক্ষাভাৱে করিয়া করিয়া

ভাইছারার করীর উত্মল স্থাম পর্ব, লোচমন্তর প্রধান, কথচ অরুণ বর্ণ এবং তিনি বসং বিশুদ্ধ সন্ত্ব করে। আমি তাঁহার ভূজ চতুইয় ও পীতবর্ণ কোশেয় বসন অবলোকন করিয়া তাঁহাকে দূর হইতেই চিদিকে লাছিয়াছিলাফ সাল্ভ নি

82

ৰাম উনাৰ্থিজিত্য দকিণাজি দুনোক্ষহং। অপাজিতার্ভকাশথমক্লণং তাজিশিপালং । ৮। তিলিন্ মহাভাগবতো হৈপায়ন হছৎ স্থা। লোকানস্চরন্ সিদ্ধ আসদাদ যদৃদ্ধয়া। ৯ ॥ তিসাক্রকল্য মুনে মুক্দঃ প্রমোদভাবানত কন্ধর্ল্য। আশৃণুতো মানসুরাগহাস সমীক্ষয়া বিজ্ঞানয়নু ক্রেচ। ১০ ॥ প্রিভাগবাস্বাচ।

ट्याहमस्याम्बर्गनमी श्रिकः एक मनामि यख्य क्रुब्रवाशमर्टनाः।

वी ध्रवामी।

অধিপ্রিত্য উপরিস্থাপরিয়া অণাপ্রিত: পৃষ্ঠতোহবইক: অর্জক: বাল: কোমলোহখথো বেন তং। তাজকং পিপ্ললং বিষয়স্থং বেন তং। তথাপাকুশং আনন্দপূর্ণ: ॥৮॥

বৈশারনঃ স্কৃদ্ দথাচ বস্য বত্তকপুত্রবাৎ পরাশরশিবোা মৈত্রের ইতার্থ: । 🛶

প্রমোদেন ভাবেন চ আনিতা কল্পরা যত। প্রমোদতারানতেভি পাঠে প্রমোদত ভাবেণ অসুরাগেণ হাসো যতাং ভরা স্মীক্রা বিশ্রমন্ বিগভ্শনং কুর্বন্ । ১০ চ

ভে মনসী পিচমহং অন্তঃ হিতে৷ বেদ বেলি কানে ছেতৃঃ বিখন্তলাং বস্নাঞ মিলিতানাং সত্তে হে বলো ইতি পুৱা পূৰ্ক

ক্রম্পন্ত:।

বদুজ্বা কেনাপি ভাগোদরেন বৈপারন স্ক্ৎ সংধতি টক্তাব আর্থ: ৪ ৯ ৪

ভক্ত ভথাতৃতক্ত আপৃণ্ডোহণি মামেরোবাচেতি ততোহণি অভাত্তাহ্বং বাঞ্জিং। তথাচ বক্ষাতে স্বরং ভগ্রতা কাম্যার্লা-কাহ্পরতে ইত্যাদি মাডাাং। অতএব যটা। অভএব ভঙ্গাপৃণ্ড ইতি ভর্চনে কিঞ্চিদ্যাপনমূজাচ দর্শিতা ॥ ১০ ॥ অভএব নিতাপার্যদ্বেহপোকাণদেন বস্তুমমূজাবাাদিউং ॥ ১১ ॥

बिविषताभहक्तवर्शी।

অধিপ্রিতা উপরি হাণ্যিব। অণাপ্রিত: পূর্ততাহ্বইকোহ্যথপোতো বেন তং। ন স্বভিন্নতীত্যপ্র: ভ্রাদি পঞ্পাদ বিভৃতি-রন্থিরা মারিকী সা পূলীক্তেতাতঃ পরং প্রাপঞ্চিকা লোকা মাং নপশুদ্বিভাগিরেন অর্ভক্পদেন স্ক্রিকাণ্ডের্ মধ্যে অস্য ব্রহ্মণ্ড-ফাতিক্সমং বীলিডং তাকাপিগ্লাং সমাধীকৃতিতত্ব ক্ষাপ্ত বিদাসং পিগ্লস শক্ষেন শ্রুতাবিষয়স্থাকোঃ ॥ ৮ ॥

বৈপারনোব্যাস: স্বওরপ্তারং প্রথং সধাচ যক্ত সং মৈজের: প্রাশর্মা শিবা ইত্যর্থ:। বন্দুছ্রা অক্সাদের ॥ ১॥ তস্যাহ্রকেত্যানি বিশেষণ বিশিষ্ট্রাপি মামেবোবাটেতি ত্যাদিনি ছক্ত প্রেমাম্পদ্রাধিক্য: ব্যঞ্জি: অত্রাগ্রহ হাস: প্রকাশো যস্যাং তরা সমীক্ষরা অত্রাগ্রহাস্থাত্য যুক্তরা সমীক্ষরা বা বিপ্রমন্ত্র বিশ্বর্থী বিশ্বর বিশ্

তিনি একটা কোমল অখপ বৃক্ষে পৃষ্ঠদেশ রাখিয়া আপনার বাসঃ জ্বান্ধ উপরে দক্ষিণ চরণ সংস্থা-পন পূর্বাক উপবিট ছিলেন। যদিও তৎকালে ভাঁছার বিষয় হুখ পরিত্যক্ত হইয়াছিল তথাচ এ রূপ বোধ হইতেছিল যেন আনন্দ পূর্ব হইয়া রহিয়াছেন ॥ ৮॥

হে বিজ্ব ! সেই সময়ে তথায় সহর্ষি বেলব্যাসের হৃত্তক্ একং স্থা পরাশর পিদ্য সৈত্তের মুকি ভূষন প্র্যাটন করিতে করিতে যদৃচ্ছাক্রমে আসিয়া উপস্থিত হইকেন ॥ ৯॥

ঐ মুনি ভগবানের প্রতি অতিশয় অমুরক্ত ছিলের ছডরাং থানোদে এবং ভাবে আনভ ক্ষর ইইনি আবণ করিতে থাকিলে তাঁহার সমকে ভগবান মুকুল অমুরাগ ও হাস্যবৃক্ত নেত্র হারা পাষার আডি শান্তি করত কহিতে লাগিলেন ॥ ১০॥

ष्यर वस ! श्रामि द्वामात श्रवत श्रविक श्रेता द्वामात गत्नाकिनविक वानित्व शामित्राहि,

সত্তে পুরা বিশস্তাং বস্নাং মৃথ্যি ক্রিক্রেন্ত্র্বা করেই । ১১ ॥
স এব সাধা চরমে। ভারানা সাক্রিক্রেন্ত্র্র্বা স্ক্রির্বা বিশ্বর্ত্তা । ১২ ॥
ব্যাং নৃলোকান্ রহ উৎস্চন্ত্র, বিশ্বরা সম্পান্ বিশ্বরা । ১২ ॥
পুরা ময়া প্রোক্তন্ত্র্র্ব্রা ভারত্রের দিনালয় স্নালিস্থা ।
তানং পরং মনাহিমাবভারত্ব্রং ব্রুরো ভারত্তং ক্রেন্তি । ১৩॥

विशवपामी।

জ্মনি-কং ৰজ্জাসীং ভবা ৰং প্রাথি কান্মন খন্ত্রিটি:। ভাতভাং সাধনং করাসি দার্জাসি অনৈন্দ্রং পরাভূবিও জ্প্রাপং । ১১। তল্প ভাগামভিনক্তি। স এব ভবো জন্ম তে ভবানাং সংখ্য চরমঃ। ব্লেছিন্ মন্ত্রহ আসাদিতো সরঃ। বং প্নথাং রছ আরম্ভে বিশ্বাজ্যুকা আকান্ত ভকাই বৃদ্ধান্ দৃষ্টবানসি অঞ্জনিটা ভল্লং জাতনিটার্থঃ। নৃ্বোকান্ নৃশ্বেম জীবাতেবাং বোকাহ্যক্তরভং বৈক্ঠং পদ্ভবিষ্টার্থঃ । স্ব্তিষ্টার্থঃ বিশ্বাজ্যুকা আকান্ত ভকাই বৃদ্ধান্ দৃষ্টবানসি অঞ্জনিটার ভল্লং জাতনিটার্থঃ। নৃ্বোকান্ নৃশ্বেম জীবাতেবাং

ছবামীতি বছকং তৰেব নির্দিশতি পুরা পূর্ববিদ্পালে করে আনিস্পৌর্গরেশিক্রমে মই ইছিমা দীলা অবঞ্চতে যেন তৎ ১১০

ক্রমসমর্ভঃ।

ভবানাং ব্যাদিরপেণাপি লোকসংগ্রহার্থং বহুনামবভারাণাং চরমঃ প্রমকাঠামাপরভদংশিরূপ ইত্যর্থঃ । বিশ্লাইবৃত্ত্যা ভ্রমভাবভরাহুগ্মনেন বৃদ্ধবাংভ্রম্ভিটা ভ্রমেন রুডে ॥ ১২ ॥

পুরামরেতি। পুরা জাজে। করে বিভীরক্রে ব্রিক্টর্ক কথনাং। আমং পরং চুকুর্দ্রোকীরপং। মন্ত্রিমার্ভাসমিতি ভঙ্ক বিক্লিেষ প্রতিপাদক্ষং নালীকুতং । ১০।

. अविभगाभक्तकान्त्री ।

তদা মংগ্ৰান্তিকামেন দ্বাহমিটঃ ইতি নি চালীলা পরিকল্পে উদ্ধাৰ ব্যাসাং আবেশাং নিতাসিদ্বস্থাপাদ্ধক সাধনসিদ্ধন্যৰ মৈজেৰ মূদ্ধক জ্ঞাপৰামাস নিত্য লীলাৰা বহুত্ব বৃদ্ধাৰ্থ কেচিত্ৰ লীলাপদ্ধিক উদ্ধাৰা দ্বাৰণাম্যৰ হিচাপে বৃদ্ধান উদ্বোহৰ মিড়াহিং ৪ ১১ ৪

ত্যাখানুষতি ৰ উতি ভবানাং ক্ষানাং দ্যোগাৰ ক্ষাভ্যা লোগা। বান্ধানিলাগাৰিত: আবি:। বং প্নৰ্থাঃ বহু একাৰে বিশ্বাহুত্যা একান্ত ভক্তা দদ্ধান দুইবানসি এতদিটা ভলং আত্মিতাৰ্থ:। নৃলোকান নৃশব্দেন কীবাজেবাং লোকান্ উৎস্পা তং বৈত্ঠঃ বাজ্জুমিতাৰ্থ: ৪,১২ %

মুদানীতি ব্ং প্রতিপ্রকৃত ক্ষুদ্ধিক্তি পুরেজি ক্ষান্তিসংগ প্রাক্ষাক্তে। সম মহিনা দীলা ক্ষরতানতে বেন ত্রিতি বানিচরণাঃ মহিনা মাহাত্মানিভানো। প্রাণন্তং চ্জুবলোংকীয়ণং ১১০ ৪

ভূমি পূর্ব কৰো বহু ছিলে, বিশ্বস্থী প্রকাণভির এবং বহুগণের বন্ধ করিয়া আমাকে প্রাপ্ত হইবার কামনায় আমার আরাধনা করিয়াছিলে, অভএব ঘার্তে আমাকে পাইতে পারিবে তা্হার সাধন তোমাকে প্রদান করি। বাহারা আমাতে প্রাধা ধ তাহালের প্র স্থান হ্প্রাপ্য ॥ ১১ ॥

হে সাথো। তোমার যত জন্ম হইয়াহে সে সকলের মধ্যে এই জন্ম চরম, কেন না তুমি এই জন্ম আমার অনুগ্রহ লাভ করিলে। আমি জাবলোক পরিত্যান করিয়া বৈক্ষে গমন করিতেছি, এখন এই নির্দ্ধন প্রদেশে তুমি যে একভি ভক্তি সম্পন্ন হইয়া আমাকে দর্শন করিলে ইহাও তোমার পরম গোডাগা। ১২।

ছে উছব। পূৰ্বে পালকেরে স্ট্রির উপ্জেম সময়ে আমি আপুনার নাভিপলে অব্ছিত ব্যাকে আমি মহিনা প্রকাশক প্রম জান কহিয়াছিলান, জ্ঞানিগণ তাহাকেই ভাগ্রত কহিয়া থাকেন্ম ১০॥

ইত্যাদৃতোক্ত: পরমস্য প্ংস: প্রতীক্ষণাকুগ্রহভাকনোহহং।
সেবেখিরোমাঝ্রলিতাকরন্ত: মুক্ষন্ ভচ: প্রাঞ্জলিরবিভাবে ॥ ১৪ ॥
কেলিশ তে পাদসরোকভাকা: অনুস্লভিচিধের চভূমানী ।
তথাপি নাহণ প্রবেশাসি ভূমন্ ভবংপদাক্তোক্ষিবেবশোংক্তঃ ॥ ১৫ ॥
কর্মাণ্যনীহস্য ভবেহিভবস্য তে তুর্গাপ্রয়োইধারিভয়াং প্রায়নং।

Berrin

ইত্যের মাদৃশকাসার্ককাহং প্রতীক্ষণং কুপাবলোক এবাছ্গ্রইং তসা ভালমং পাজভূতঃ। প্রতিক্ষণাস্প্রহ ভালম ইভি পাঠে প্রতিক্ষণসমূগ্রহত পাত্রমিতি ওচং অঞ্জণি মুঞ্নু আৰ্ডাবে উজ্ঞবানপি । ১৪ ।

নহি স্বাঞ্জাননিবৃত্তিমাঞ্জামোৰং কিন্তু অৱিবেবণোৎস্থকঃ স্বৃত্তি চাষ্ট্ৰনামাচরণং সৃষ্ট্ৰ মে মোছো গুৰ্বতি । অভ্যস্কালং দেহীতি প্ৰাৰ্থবিভূমাই কোৰিতি চতুৰ্বু ধৰ্মাদিবু । তথাপি ভানহং ন প্ৰবৃণোমি । ক্ষেত্ৰ্মন্ ভ্ৰৎপথাজ্যেল নিবেবণোৎস্কোলং ৪১৫ অষ্ট্ৰমাচরণং দৰ্শষ্ঠি ক্ষাণানীৰ্স্য নিস্তৃত্ত নিজিন্তঃ বা অভবত অক্সনো ভবে। ক্ষা কালাম্মন্তৰ অৱিভয়াৎ চুৰ্যাপ্ৰয়

ক্রেখসকর্তঃ

ব্দত্তবাহেতীত্যাদি ॥ ১৪ ॥ তবৈৰ নিৰেদয়তি কোহৰিতি ॥ ১৫ ॥

नद्यवः ८७७ वि कथः किमिन काष्ट्रमिष्ठेः वर्जरक द्याव मत्रा वाक्षिकः द्वाष्ट्रमुखन्तनीनिकः छ हेजामन नजाः । किन्न नाणार्थः ।

এবিশ্বনাপচক্রবন্তী'।

ইতাহমাণ্ড উজশ্চ। প্ৰতীক্ষণং মন্ত্ৰণাদিযু উছবং বিদা এতৎ কোপি ম জানাতি স আগচ্ছতু ডত ইনং তবিষ্ঠীত্যাদি প্ৰতীকা দ্ৰবমধ্য পাঠে প্ৰতিক্ৰণং ক্ষণে ক্ষণে ব্যাহত্তক পাত্ৰং গুচঃ জ্ঞানি ॥ ১৪॥

নসু ভগৰন্ থাতে। কিছবং সাং সংসারাছোচরিত্ব সারপ্যাদিকং বা গ্রাছরিত্ব স্কানং ব্যাজিছীর্বসি চেদলং তেনেভারি কোরিত চতুর্ ধর্মাদির মধ্যে পাদসবোম্ব ভজতাং কোরু হর্ম ভ ইতি সকামানামণি বিনাণি কানং পাদভজনেনৈব মোকাদি ফলসিছিঃ স্থাদিভি ভাবেঃ। অহর ভবাপি স্বত্রের প্রাপ্তাদিশি ভানর্থার বুণোরি ভ্রাহেত্ব ভ্রাহিভি ভাবেঃ। আহর ভবাপি স্বত্রের প্রাপ্তাদিশি ভানর্থার বুণোরি ভ্রাহেত্ব ভ্রাহিভি ভাবেঃ। আহর ভবাপি স্বত্রের প্রাপ্তাদিশি ভাবং। ১৫।

শালাকং দাসানাং পুনওজাপগুণনীলা এব দানিজ্বণালৈঃ প্রমানন্দ হেতু ভাসামণি জ্ঞানেলাভীষাগ্রহঃ। বং বিঞ্জি জানভ প্রাং সামজেন জ্ঞানাজ্ঞানাজ । কিন্তু ভল্প নীলাঃ কাশ্চন কাশ্চন বুকা। বিশ্বনাজ্ঞ তলৈব বে জিঞাসিডিং বর্গত ইতাহ ৰাভাাং। শানীহত নিজ্ঞিল ক্ষাণি গোবর্জনোজ্বণাদীনি নতু বিশ্বস্টা।দীনি। তেবাং হি সামাগুণক্তভামাং দ্বাগালোগিতদেন স্বন্ধণভ্জাব-ক্ষাভাবং নিক্লং নিজ্ঞিল শান্তং নির্বদাং নির্বদান ক্ষাণাল্ভ প্রাণ্ড স্বান্ধনির কৃত্যান্তেবাং নিজ্ঞিল ক্ষাভ্রানিজ্ঞ বিশ্বাস্থ্য নির্বাহ্য নিজ্ঞিল ক্ষাভ্রানিজ

হে বিছুর । সেই পরম পুরুষ ভগবানের কুপাবলোকন রূপ অনুপ্রহ ভাজন হইয়া এই প্রকার আদর প্রক উক্ত হওয়াতে, স্নেহভরে আমার শরীর লোমাঞ্চিত এবং বাক্য খুলিত হইতে লাগিল, কিয়ৎ-ক্ষণ পরে শোকাঞ্চ মোচন করিতে করিতে কুডাঞ্জলিপুটে কহিল্যি॥ ১৪॥

হে ঈশ। যে সকল ব্যক্তি তোমার চরণারবিন্দ সেবা করে ভাহাদিগের ধুর্ম অর্থ কাম মোক এই
পুরুষার্থ চভূতীয়ের মধ্যে কোন পুরুষার্থ ই চুন্ন ভ নহে, কিন্তু আমি সে সকল প্রার্থনা করি না কেবল
দ্বনীয় পদারবিন্দ সেবনার্থ ই উৎক্ষক হইয়াছি ॥ ১৫ ॥

হৈ প্রভো! তুমি অকর্মা হইয়াও যে কর্ম কর এবং অজ হইয়াও যে ক্রম গ্রহণ কর, আর স্বয়ং কলিক্ষী হইয়াও যে অরিভয়ে পলায়ন ও চুর্গাঞ্জয় কর, অপর স্বয়ং আত্মরতি তথাপি অনেকানেক কালান্ধনো যথ প্রমদাযুতাপ্রমঃ স্বান্ধনুতে: থিলাতি ধী বিদাসিত । ১৬ । মত্রের মাং বা উপত্র যন্ত্রমকৃতিভাষতগদান্ধবোধ:।
পুচ্ছে: প্রভো যুদ্ধ ইবাপ্রমন্তর্নোমনো মোহয়তীব দেব । ১৭ ।

Bugwill :

প্ৰায়নক। স্বাস্থনি রতির্বস্ত ভক্ত বহবীতিঃ স্ত্রীতিগৃঁ ৰাশ্রম ইতি বং ইং অভিন্ বিষয়ে বিছ্যামণি বী: সংশ্রেন বিষয়েত ৫ ১৬ ।

কিন্ধু ৰাজেবু প্রস্তাতের সংস্থান। চুর বৈ অহো পৃচ্ছে: অপৃক্ষঃ। অকৃষ্টি চং কালাদিনা অবস্থা: সন্ততঃ সদাস্থা সংশ্রাদি
স্থিতো বোধো বিদ্যা শক্তির্বস্ত মুধ্বং অক্তবং। অপ্রমন্তঃ অবহিতঃ সন্ ৪ ১৭ ৪

क्रममण्डः।

যঞাং নীলারাং পূজা তন্তা তব ভক্তকণাবৈতবময়ছেন জাভখাং। তথাপি বৈজেয় সাক্ষিকেশ স্বৰ্চনেদান্যাং তথা ছঠু প্রত্যা-পরিত্যের মম তথেকেতি বিজ্ঞাপররাহ ক্র্মানীতি জিভিঃ। বিবাদেতাদৃশানাং সর্বজ্ঞানাধণি। ১৬।

মোহয়তীৰেতি বস্ততঃ সন্য মোহাভাষাৎ । ১৭ ।

🛍 বিশ্বনাণচক্রবন্তী।

কর্ম্ববিদং। ব্রহ্মণে প্রাক্তভাব্যাকৃত কর্ম্মনিছিত।ং তবৈর ব্রহ্মণন্ত মন্তে:। নচ নির্কিশের ক্ষমণমের ব্রহ্ম সবিশেষ ক্ষমণো তগ্রনিতি ক্ষমণভোবাবিত বাচাং ক্ষমণমাভাবাদিতি বঠোক্তো সংশব্ধ এব যত তথা। অতবস্যাভ্যননালয়। কালাত্মন তব অবাসহ্যালারিভরাৎ পলাবনং সম্বাহৃপপ্রিক্ষ। স্বাত্মনার রতির্বস্য তস্যাপি প্রমদানাম্মুতেন স্বাত্রমা গৃহত্রিমা গৃহত্রমা গৃহত্রমার্থিয়কদের নিজাদিযোগে স্বাত্মান্যস্য তব রতিঃ। ক্ষিণাদি প্রমদ্বাত্তি মন্তেত্ত তবাত্মান্যমতা নাণসভ্যে ভাসান্যহ্ম ভ্রহ্মণাদি প্রমদ্বাত্তি মন্ত্রমানতা নাণসভ্যে ভাসান্যহ্ম ভ্রহ্মণান্তি ক্রানিত্র লাল্যাল্যাল্যার্যমত্বাদ্দিনাহ প্রস্তান্ত লাল্যাল্যাল্যার্যমত্বাদিনাম্ম করণাদি প্রম্বাত্তি হিল্পাল্যাল্যার্যমত্বাদিনাম্ম করণানার নতু বাত্তবানীতি জানে কৃতঃ পেদঃ। তবৈবাক্রিক্ষণানিতি প্রাক্ত প্রাক্তমত্বিদ্ধান্য করণাল্যাল্যাল্যালয় করণালয় করিছি তবং করলোলহাতি তবং বিধিন্তি লাক্ষালয়। তিলিলালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করিছি তবং করলোলহাতি লাক্ষালয় বিদ্বালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় করণালয় কর্মান্ত্র করলোলয় করণালয় করণা

কিঞ্ মত্তেবু করাসভ্যবন্ধান্ত্রাদার্থসমনবিচারাদির প্রান্ততেরু মাং হৈ নিশ্চিত্মুগহুর পুজে: উদ্দেশ্য কর্ত্তবাং ক্রিট্টাপ্জ:।
অক্ষিত: কালাদিনা অথও:। পরিপূর্ণ: সদা সার্ক্ষিক এব আত্মনো বোধঃ সহিজ্ঞির্যস্য সং মুক্ত ইব বথানো মুদ্ধো জন: পুজ্তি
ভথেজার্থ:। কিঞ্জাপ্রমন্ত কার্যান্তর বাহ্র্ত্তাপি রহিভত্তাদিতি ভাবঃ। তত্তব বুগপবের মৌঝাং সার্ক্ষণ্ধ মোহর্তীব মোহর্ত্তাব। অত্ত মুক্তির বং নভু মুক্ত হিত তথা নোহর্তীব নতু মোহর্তীতি ব্যাখ্যান্ত্রমন্ত্রতাবিভি সভতেরু বাক্যেরু মধ্যেহত্তোখাপনং বার্থ ভালিত্যত তথা ন ব্যাখ্যার্থ ১ > ।

ন্ত্রীগণ পরিবৃত হইরা যে গৃহার্জম ধর্ম জাচরণ কর, এ সকল ব্যাপার অবলোকন করিয়া পণ্ডিত-দিগেরও বৃদ্ধি সংশয়ে ধিন হয় ॥ ১৬॥

হে প্রভা ! তৈনার স্থ আত্মা কালাধি বারা থণ্ডিত হর মা এবং তোমার বিদ্যা শক্তিতে সংশ্যাদি কিছু নাই ইহাতে আপনিই সকল মন্ত্রণা করিছে পারিতেন এবং মন্ত্রণাও প্রস্তুত হইয়াছিল। কি আশুর্যা ! তথাপি আমাকে আহ্বান করিয়া মুন্তনন যেমন অন্য ব্যক্তিকে জিজ্ঞাসা করে তাহার ন্যায় ভূমি আমাকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে। হৈ দেব ! ঐ ভোমার মুন্ত এবং সর্বভেছে এতচ্ভয় আমার স্থৃতি পথে উদিত হইয়া মনকে যেন মুগ্ধ করিতেছে॥ ১৭॥

জ্ঞানং পরং স্বাস্থারহঃ প্রকাশং ক্রোবাঁচ কল্মৈ জগন্ধর নমএং।
অপি ক্ষমং নো গ্রহণায় ভর্ত বিদাপ্তমা যত্ত্তিনং জন্মে ৪ ১৮ ॥
ইত্যাবেদিত হার্দায় মহং স ভগবান্ পরঃ। আদিদেশারবিদ্যাক আস্থানং প্রেমাং ক্রিভিং ॥>৯॥
স এবমারাধিতপাদতীর্থাদধীত তত্তাস্থা বিবোধসার্গঃ।

क्षनगा भारती भतिकृष राज्यमिकांशराज्यकः वित्रकांकृतांका । २०॥

अवक्यामी।

স্বাস্থান তাৰ রহঃ রহস্যং তাৰু তাস্য প্রকাশক কলৈ একাণে সর্বানাস্থমার্বং নোহস্মাকং প্রছণার তাশি ক্ষমং বলি বেইগ্যং তার্হি বল্। তর্বঃ স্বামিন্ । যথ যতঃ বুলিনং সংসার হৃঃখং আনারাসেন তারিস্যামঃ ॥ ১৮ ॥

चारविष्ठा हार्यन स्वित्शहिल्छारवा स्वन स्टेम ॥ ১৯॥ -

আরাধিতপালো ভগবান্ সাএব ভীর্থ: শুরুতস্থাদধীত: শবিশতী তথান্ধবিবোধল্লা শিরস্থান্ধজ্ঞানস্যা সার্গো বেন সোহতং দেবং শীক্ষণ: পরিবৃত্তা প্রদক্ষিণী কৃত্য ॥ ২০ ॥

क्ष्ममण्डः।

গুলাৎ জ্ঞানং পর্মিতি। বৃজ্ঞিনং বিদামণি তথা ডুরি স্লেছেন জাতং নিজ্ঞাধং। ভ্রহণদাজ্যেজনিবেরণোৎফ্কানামলাক্ষনাত্রথামণ্ট্রথাকিতি ভাবঃ । ১৮ ॥

পরমাং ছিভিং চতু:লোকীলোকাং ভালুনরণছেপি বহুলাখালেরমবশতামর লীলাম্মীং ॥ ১৯ ॥

অধীতোজ্ঞাতঃ তত্ত্বেন বাধার্থোন আঘাভীত বিজ্ঞানসা মার্গশুডুংগ্লোকীরপো যেন সং। তুলা চ ভগবং প্রেমব্রুত্থতিপাদক-ত্বাহিরহাতুরাত্ত্বেব সরিহাগতোহহমিতি। অনেন চ তুলা ক্লকজান তাৎপর্যায়ং পুরুত্তব পত্তিং ॥২০॥

· विविधनाभडळावळी ।

অত এতদাদি সংশ্বাণনোদসন্যৰ আদমিজামীতাহ আনমিতি সান্ধনতৰ বহং স্ক্ৰিয়নাং বহুলাং ৰ্যান জিলানাং ওসা প্ৰতাশো বন্ধ তজ্ঞানং নতু ৰবা লাতৃং প্ৰতিজ্ঞতং তমহিনাৰভাগনিতাৰ্থঃ। কইল জনান্ প্ৰোৰাচ চেন্দ। বন্ধ কলৈ ওগবান্ প্ৰোৰাচ জনিতৃন কলা অণীতাৰ্থঃ। তদি ব্যোৰং মামস্কুশ্বে তদা হে ভৰ্ত ক্ৰি। ওচে ক্ৰেপ্ৰহণাৰ ক্ষমং আহাকং ওদ দাসাৰতাং প্ৰতীকৃং যদি বোগাং লাং কিবা বোগাডেণি যদি শকাং সাজেলা যদ। মচেলাবদেভি ভাৰঃ। বতেন আনাকৃত্বিনস্ক লক্ষণাজিলাসাং সংগ্ৰুলাধিভিত ব্যুক্সসংহার সক্ষেত্রিনাদিকং চ ত্ঃপ্সিকৃং ৪১৮ ৪

মঞ্চ নতু বৈবিজ্ঞারাণীতার্থা। আছানা ছণ্য ছিজিং বাবসিতিং শীলারা মর্যালাঞ্চ বারকানি ধারত্ব নিভালিবাস্থ কিছা বা ছিজিং শুক্ষেবেন ন বিবৃত্তা নাপ্যক্ষেন বিত্রারাঞ্জলৈ কলৈচিদশীতাতং সিদ্ধান্ত বিশেষালাতাৎ নিজিন্ত্রস্ক্রিরাণীনামচিজ্ঞানজিনিম্বর্দের বাহুবেক। ব্যোক্তি ভাগবভাষ্তে কর্মাণানীহেতি পদামবিক্তা তত্তর বাহুবেং চেৎ সাহিলাং বৃদ্ধিভ্রম তলা নজা-বেবেছাচিক্তার শক্তিনী লাজ কারণমিতি । ১৯ ।

স উত্তবোহং আরাধিতপালো ভগবান সএব তীর্থ: গুরুত্তভাল্বীত তত্ত্বপ্রসা আত্মবিবোধসা মার্থেনি যেন সং। পরিবৃত্ত পরিক্ষয় ভতঃ পুনর ভগবতা কিং কৃতং তত্মবা ন দুইনিতি ভাবঃ । ২০ ঃ

হে ভগৰন্! আপনি আয়তভ্ প্রকাপক যে জ্ঞান জ্ঞাহে ক্রিয়াছিলেন ভাষ্ট্ যদি আমাদের প্রহণ যোগ্য হয় তবে বলুন, যাহাতে অনায়াসে আমরা সংসার জ্লাপ্ত ইতি উত্তীর্ণ হাইব এ ১৮ ॥

হে বিছুর। আমি এই প্রকারে উচ্চাকে ছাদরশ্য অভিপ্রার আবেদন করিলে দেই ভগনার পর্ম-পুরুষ আপুনার পরমা হিতি আমাকে উপলেশ করিলেন ৮০১ ।

আমি জন্ধার ছণীর প্রদারশিক্ষ আরাখনা-করিয়া প্রমান্ত আনমার্গ প্রাপ্ত কেইরাজ্যিতারে উহিছি প্রদেশয়ে প্রশাস পূর্বক উহিচেক প্রদক্ষিণ করিয়া এ ছানে আনিডেছি ক্লিন্ত আলার অন্তর্মান্ত্রী হার্য বিরহে আতুর হইতেছে ॥ ২০ ॥ সোহহং তদ্দশনাহলাদ বিয়োগার্তিমৃতঃ প্রভো। গদিবো,দদ্ধিতং তক্ত বদর্যাঞ্জমমণ্ডলং॥ ২১॥
যত্র নারায়ণো দেবো নরশ্চ ভগবানৃধিঃ। মৃত্তীত্রং তপো দীর্ঘং তেপাতে লোকভাবনো ॥ ২২
শ্রীশুক উবাচ॥

ইতুদ্ধেনাত্মণাকর্ণ ক্রদাং তুংসহং বধং। জ্ঞানেনাশময়ৎ ক্ষতা শোকমুৎপতিতং বৃধঃ ॥ ২০ ॥ স তং মহাভাগনতং একস্তং কৌরবর্ষভং। বিস্তভাদভাধতেদং মুখ্যং কৃষ্ণপরিপ্রহে ॥ ২৪ ॥ জ্ঞাং পরং স্বাজ্যনহঃ প্রকাশং যদাহ যোগেশর ঈশরতে।

अध्ययामी ।

বিশ্ৰস্তাৎ বিশ্বাসাৎ ॥ ২৪ ॥

ষ্ৎ যুদাৎ পুজু তাপ্রবোজন সাধকা: সন্তঃ চরস্তি। নহি কুডার্থানামনাৎ কুজাম্তীতার্থ: । ২৫ ॥

क्रमममर्जः।

বিরহাত্রাত্মা চেত্তহি কথং চলিত্ং গদিত্ং বা শক্ষোবি তআহ সোহমিতি। দর্শনাহলাদ: শনকৈর্জগবল্লোকাদিত্যহুসারেণ। বিষোগার্তি যুহস্ত নূলোকং পুনরাগত ইত্যহুসারেণ ততে। বিরোগেছিলি মধ্যে মধ্যে স্ব সাক্ষাৎকারাৎ সমর্থ: সন্তত্ত দ্যিতং মাং প্রস্থাপরিতং বাহিতং বদ্যাশ্রম্মণি গমিষাামীত্যথ: ১২১।২২।

বিস্ত্রাং প্রণয়াং। বিস্তঃ প্রণয়েছপি চ ইতামরঃ॥ ২৪॥

ষ্টলৰ জ্ঞানং স্বোহ্সাধারণো বো ভ্ত্যার্থ: ভবৎপদাস্তোজনিবেবশোৎস্থক ইত্যুক্তাস্পারেণ সেবারূপন্তৎকারিশোবিচ্চোভ্ত্যা-

अविषनाषठकवर्छी ।

নমু ছং তৰিবহব্যথমাপি কৃথং জীবসীতি তথাহ। কণে কণে তদৰ্শনেনাহ্পাদত বিয়োগেনাঠিক তাভ্যাং যুতঃ। ৰদ্ধ্যাশ্ৰম মিতি তত্ত্বৈৰ গভঃ ভগৰদাদেশাং । ২১ ॥

ভবৈত্রৰ ভদংশঃ সাক্ষারারায়ণ আন্ত ইভাাই যত্রেভি মৃত্ সর্কলোকস্থাবং ভীত্রং সর্কলোকৈত্ দ্বং দীর্ঘং বচ্কাল বাাণি লোকানাং ভাবনৌ উৎপাদকৌ পালকৌ বা ॥ ২২ ॥

সুস্থাং বধং জু:সহমণি উদ্ধাৎ স্কাশাৎ ইতোবং প্রাকার্কমুপাকর্ণোভাষয়:। জ্ঞানেন ক্লচ্চামণি নিয়োচ ইত্যাছাদ্ধবোজি ভাংপ্রা প্রাাদোচন জনিতেন ॥ ২৩ ॥

বিস্তস্তাৎ বিখাসাৎ অতোতিকনিষ্ঠমণি কৃষ্ণপরিপ্রহে কৃষ্ণং পরিপ্রহীতৃং বনীকর্ত্বুং মুখাং অভোহতি শ্রেষ্ঠং অতঃ কনিষ্ঠা জাপি ভক্তান্তেক বজো জোটেরণি শুরুঃ কর্ত্বর ইতাত্ত বিচ্নবাক্যমের প্রমাণমিতি বোধিতং ॥ ২৪ ॥

নোহস্বভাগিতাস্বলোর বোল্ডেডি বিষেপি বহুত্বং বন্ধসাধিক্ষোভ্ভা। বৈক্ষবাং স্বভ্তানামর্থং ভজ্যুপ্রেশক্রপং কুর্মাণাঃ ক্লপরা

হে বিহুর । দেই শ্রীক্বফের দর্শন কান্ত আনন্দ এবং বিয়োগ ক্ষনিত আর্তি এই উভয়ে সংযুক্ত হইয়া এক্ষণে আমি তাঁছার দয়িত ছান বদরিকাঞ্জনে গমন করিতেছি ॥ ২১॥

সেই স্থানে লোকামুগ্রাহক ভগবান্ নর নারায়ণ ঋষি কল্লান্ত কাল পর্যান্ত পরোপত্তব শৃষ্য ভূশ্চর তপ্যা আচরণ করিতেছেন ॥ ২২ ॥

শুকদেব কহিলেন! উদ্ধবের প্রমুধাৎ অ্ছরুর্গের ত্রঃসহ নিধনবার্ত। প্রাবণ করিয়া বিভ্রের শোক সাগর উচ্ছলিত ছইয়া উঠিল কিন্তু তিনি বিবেক দারা তাহার উপশম করিলেন।। ২৩।।

প্রিক্ত ফোর পরমান্ত্রীয় ভাগবত প্রেষ্ঠ উদ্বব ঐ প্রকার কহিয়া বদর্যাপ্রমে যাইতে উদ্যত হইলে । কৌরবজ্ঞেষ্ঠ বিফুর বিশ্বাস বশতঃ তাঁহাকে কহিলেন। ২৪॥

অহে উদ্ধব ৷ ভগবান্ যোগেশর তোমাকে আত্মতত্ব প্রকাশক যে পরম জ্ঞান কহিরাছেন তাহা

বক্তুং ভবাদোর্হতি যদ্ধি বিফোর্ভুত্যাং স্বন্ত্ত্যার্থক্তশ্চরন্তি ॥ ২৫ ॥ এউদ্ধব উবাচ ॥

নমু তে তত্ত্বদংরাধ্য ঋষিঃ কৌশারবোহন্তিকে। সাক্ষান্তগবতাদিন্টো মর্ত্তাকেং জিহাসতা॥২৬ ইতি সহ বিহুরেণ বিশ্বমূর্ত্তে গুণকথয়া স্থয়া প্লাবিভোক্তাপঃ।
কণমিব পুলিনে যমস্বস্থতাং সমূষিত ঔপগবি নিশাং ততোহগাৎ॥২৭॥
শ্রীরাজোবাচ॥

बीयत्रवामी"।

তথার সংরাধ্য ইতি অরং ভাব: ভগবতৈব অরণমাত্রেণ তথাপি তত্ত্মুপদিষ্টপ্রারং। অথ কেবলং অসস্তাবনাদি নির্ভরে জানী কলিদারাধ্য: সচ তবারাধ্যো দৈত্রেয়ো নম্বহং। মমস্তিকে এব অত্পদেশে তম্ভাদিষ্টগাদিতি ॥ ২৬ ॥

প্লাবিত: অপনীত: উক্তাপো যদা। যমস্থ বৃদ্নায়াঃ পুলিনে তীরে তাং নিশাং কণ্মির সম্বিত: ঔপগ্রি ক্ছব: ॥ ২৭ ॥

ক্রেম্পক্র:।

শ্চরত্তি অমৃতিষ্ঠিতি তক্ত জ্ঞানক ভক্তিমমন্তং ব্যক্তং। অতএবান্মিন্ বাক্যে পূর্ব্ধোক শীমত্ত্ববাক্যে রহঃশব্দ ভতুং শ্লোকী পঠিত-রহক্ত শব্দেন সমানার্থত্যা নির্দিষ্টঃ। অতঃ শীভগৰত্বাক্যে মন্থ্যিন তাৎপর্যায় । অতত্ত্বাভূতোহপি প্রেমবশ এবাহং তথা তথা নরলীলাদাবাবিষ্টো ভ্রামীতি শীভগ্রতা নির্দান্তিমপি প্রমৃত্তিশব্দ গাঠিত্র ভাৎপর্যাং। এই ॥ ২৬ ॥

বিখমুর্ত্তে: সর্বতঃ সাক্ষাদিব ক্রতঃ। অভএব বিরহেছপি গুণকপরেত্যাদি॥ ২৭॥

প্রীবিশ্বনাথচক্রবন্তী (

অজ্ঞলোকানাং শুরবো ক্রম্ভব ভ্রমন্তি অন্তত্তংসেবকাভিমানিনে মহুং ভগবজ্ঞানমুপদিশেত্যুর্ব: ॥ ২৫ ॥

ইদমভাহ শীমং কথমহং শিষী কুৰ্যামিতি অগতং ক্ৰবলনে মহাভাগ যত্তগৰমুপাদবগতং তত্ত তদীয় যাদবাদী নাঞ দেহত্যাগ বনৈব অস্থাম স্থিততং তত্তময়োক্তমেৰ কিন্তু তদীয় জন্মকৰ্মাদাশেৰবিশেষত্ত্বানি জিজ্ঞসাসে চেৎ তহি প্ৰিটম কৈয়ে এব গুক্তঃ কৰ্ম্তব্য ইত্যাহ নিষ্ঠিত নম্ নিশ্চিতমেৰ তদা ভাৰতকং তেন অভ্ত্যাৰ্থকত্ত্তেন গুক্তেনেতি যাবৎ সংরাধ্য আরোধাো মৈত্তেম্পন্ন নতু অহং যতক্ত্পদেশার্থ মমান্তিকে ভগৰত। সাক্ষাৎ স আদিষ্ট এব ॥ ২৬ ॥

তাং নিশাং কণমিব সমূধিতঃ ঔণগবিঃ ঔণগবহাণতামুদ্ধবঃ ততঃ প্রাতরগাৎ ॥ ২৭ ॥

আমাদিগকে বলিতে যোগ্য হও, যে হেতু বিফুভক্তগণ আপনার ভ্তাদিগের প্রয়োজন সাধনার্থ ই বিচরণ করিয়া থাকেন, অতএব আমি তোমার ভূত্য, আমাকে ভগবন্তত্ব উপদেশ কর ॥ ২৫॥

উদ্ধব কহিলেন হে মহাশয়! আপনি আমার পূজনীয়, অতএব আমার নিকট তত্ত্বোপদেশ গ্রহণ করা উচিত হয় না, তত্ত্বজান উপদেশের নিমিত্ত যিনি আপনার পরমারাধ্য হইতে পারেন সেই এই মৈত্রেয় মুনি, নিকটেই আছেন, তাঁহাকে জিজ্ঞানা করিবেন। ভগবান্ যথন মর্ত্তালোক পরিত্যাগ করিয়া গমন করেন, তথন তিনি প্রয়ংই উপদেশ করিয়াছেন, অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ যথন স্মরণ করিয়াছেন তথন আপনার প্রতি তত্ত্বোপদেশ হইয়াছে, অধুনা কেবল অসম্ভাবনাদি নিবৃত্তি নিমিত্ত কোন জ্ঞানির আরাধনা করিতে হইবে, সে বিষয়ে মৈত্রেয়ই আপনার আরাধ্য হইতে পারেন॥ ২৬॥

শুকদেব কহিলেন মহারাজ। এই প্রকারে বিছুরের সহিত বিখমুর্ত্তি ভগবানের গুণ কথন রূপ অমৃত দারা উদ্ধবের গুরুতর সন্তাপ অপনীত হইল। তিনি সেই রাত্রি যমুনাতারে অবস্থিতি করিয়া ক্ষাকালের স্থায় তাহা যাপন করত তথা হইতে প্রস্থান করিলেন॥ ২৭॥

নিধনমূপগতেব্রফিভোকেষধিরথবৃথপ বৃথপেবু মুখ্য:। ,
স তু কথমবশিষ্ট উদ্ধবো যদ্ধরিরপি ভত্যক আকৃতিং ত্রাধীশ: । ২৮ ।
বিশ্ব উবাচ ।

অক্সশাপাপদেশেন কালেনামোঘবাঞ্জঃ। সংহত্য স্বকুলং স্ফাতং ত্যক্ষান্ দেহমচিন্তুয়ৎ ॥২৯॥

धीशदयामी।

ব্দ্ধাপেন নিধনং প্রাপ্তের্। যশ্বাৎ এয়াণাং বৃদ্ধানামণীশো ছরিরপি আরু ডিং মহুধাকারং তাক্তবান্। ২৮। বৃদ্ধাপাং অপদেশো মিবং যস্ত তেন কালেন স্বশক্তি ক্রপেণ অনোঘং বাঞ্চি যসা নহুত্র শাপঃ প্রাভূং কিন্তু ভগব্দিছেরৈ ব ইতার্থঃ ১২১ ঃ

क्रमयुक्षर्धः।

নিধনং নিতরাং ধনম্বরপং প্রীক্রঞ্নিত্যলীশাধাম। উপ সমীপতোব্যবধানং বিলৈব গতেবুস তুক্থমবশিষ্টঃ। এক এব প্রশক্ষে স্থিতঃ। যৎ যমাজ্যাণাং ব্রহ্মাদীনাং মহৎপ্রটাদীনাং বা অধীশো হরিরাকৃতিং বিরাড়াকারং ত্যক্তবান্। মর্ত্যলোকং জিহাসতেতি অমারোকাত্পরতে ইতি পূর্কাপরামূরোধাং ॥ ২৮ ॥

এবং ভাক্ষান্ দেহমিতি চ জ্বেং। এতচ প্রীকৃষ্ণসন্ধর্ভক ত্রিনবভিত্তম বাক্য প্রায়ন্ত বিচার্যাং। তথাই ডেদেবং বদ্যপি ডগবতঃ প্রীকৃষ্ণজ্ঞ বরং তগবতে স্বর্চু নির্দ্ধারিতে নিতামের তক্ষপদেরবিত্তিরপি সিদ্ধা তথাপি মল্ধিয়াং লাভিহানার্থমিদং বিত্রিরতে। তত্র তাবদারাধনাবাকোনৈর সা সিদ্ধাত। আরাধাস্যাভাবে আরাধনানাদনারাবিপ্রলিক্ষাল্পনাথাপতেঃ। তত্ত পরমাপ্তে শাল্রেণ সংভবতি। সংভবে চ প্রধার্থাভাবাৎ শাল্পানর্থকাং। আরোপত পরিছিন্ন ভণক্ষপ এব বন্ধনি করাতে নানস্তর্থাক্রপে। প্রিয়ামিচরবৈত্রপীদমের পৃষ্টমেকাদশান্তে। ধারণাধ্যানমঙ্গলমিত্যার ধারণারা ধ্যানভ্ভ চ মঙ্গলং শোভনং বিষয়ং। ইতর্থা তয়োর্নির্বিররহং। দৃশ্যতে চাদ্যাপ্যুপাসকানাং সাক্ষাৎকার তথ্যক্রপ্রাপ্তিতে ভাব ইতি। প্রায়তে চৈবং পঞ্চমে নবস্থ বর্ষের্ তল্তদ্বতা রোপাসনাদি। যথোক্তং নবস্থা বর্ষের্ ভগবারারাস্থান্যহাপ্রক্ষং প্রস্থাণাং তদ্মগ্রহায়াল্প তল্ভগ্রহায়াল্য তল্পন্তানায়াণি সরিধীয়ত ইতি।

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী।

নিধনং নাশং যদবমাত্রাধীশো হরিরপি আ সমাক্প্রকারেণ কুজিং চেষ্টাং লীলাং তন্ত্যাক্সমাপ্রীচকারেতি প্রকটোহর্থঃ।
বন্ধপ্ত নিতরাং ধনং সর্প্রয় কুঞ্চং প্রপঞ্চালার উত্তমপি উপগতের নিকটপ্রাপ্তের বৃষ্ণ্যালির সূত্র উদ্ধান কথমবাদিই: তদীয়
বিরহসন্তাপমুপলন্দেকাংশেনাপি প্রকটভরা ছিভানোচিত্যাদিতি ভাবঃ। নচ সর্ক্যাদিল্প্রসিদ্ধা মন্তব্যঃ বতঃ অধিরথেত্যাদি।
নম্বদরীং ত্বং প্রধাহীতি ভগবদাক্তাং কথমভাপা ক্র্যান্ত্রাহ ব্ভ হ্রিঃ সর্পত্থকর্তাপি প্রভু: আকৃতিং ইলিতমণি তত্যাল।
আকারত্বিক ইলিতমিত্যমরঃ ব্রদদেবীর ভালাভ্যাচিরং গোঠং অশ্রহধ্বং পতীন্ সতীরিতিবদাক্সাদান সময়ে বদি কিমপীলিভ্য করিবার্তাণা মহাস্থ্যি রসাব্দবো বদরিকাশ্রমং নাগমিষ্যত্বং সমীপ এবাহাস্যদিত্যর্থঃ । ২৮ ।

প্রত্যন্তরমার ব্রহ্মণাপাদেশ: প্রপঞ্চাগোচরীকরণে মিবং তেন স্বর্কাং সংস্কৃত্য অচিস্কয়ৎ/কালেনাপি অমোদং বার্থীকর্ত ং অশকাং বাহিত্সিছে। বস্য স:। ছীতং স্মর্য্যালাতোপ্যতিবিজ্ঞ ে দেহং তাক্ষন্ অচিস্কৃত্য । তদেহস্য স্চিষ্ট্রান্দরপরেন বিভূষেপি স্বর্গানিব্রন্ধ প্রোপঞ্চিক্লোকচক্ষ্ণোচরীভূত্তবমের ফীতত্বং। অত স্বিশেষণেহি বিধিনিষেথে বিশেষণমূপকামতঃ স্তি বিশেষ্য বাধে ইতি স্থায়েন জ্যাগকিরা বিশেষণ এবাবেতি নতু বিশেষ্য বুধা হৈত্তো রাজা ভব্তি দেহং পুত্মসোচকার ইরং

রাজা পরীক্ষিৎ এই সমস্ত বৃত্তান্ত শ্রেবণ করিয়া জিজাসা করিলেন অক্ষন। অধিরও যৃথপের যুগ-পতি বৃক্ষি এবং ভোজ বংশীয়ের। অক্ষশাপে নিধন প্রাপ্ত হইলে অক্ষাদি দেবত্রয়ের অধীশর ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণকেও মানব দেহত্যাগ করিতে হইয়াছিল, যদি সকল বিনষ্ট হইল ভবে কেবল উদ্ধব কি রূপে জীবিত রহিলেন ॥ ২৮॥

ভক্ষেব কহিলেন মহারাজ ! জ্লাশাপ ভাপাদেশ মাত্র, ভগবানের ইচ্ছাহ সক্লের মূল, কেহ

. ক্রমসন্মর্ভ:।

সলিধানং চেদং সাক্ষাজ্রপেণের। জীপ্রছায়াদৌ গতিবিলাসাদের্বলিভখাৎ। তর চাত্মনা অর্মেবেত্যকং। ভথা নিভাগতর শাৰ্থানশিলাদিব নরসিংহ্থাদিতে দশ্চ সক্ষতে। তত্ত্বতারসারিধাাদেব হি ভত্তত্তেশঃ। তথা শ্রীক্রফামধিকভাপি গাঁতং বিষ্ণু-ধর্মোতরত্ব শ্রীকৃষ্ণনহত্রনাম প্রারম্ভে। তব্য কৃষ্ণাশরঃ স্বভা বিষ্ণুর্গোপালনাবৃতঃ। ভাপিত্ব শামলং রূপং পিছেতিঃসমন্প্রনিতি। অত্যে চ ভবাকাং। মামবেহি মহাভাগ ক্লফকতাবিশাংবর। পুরস্কভোছদ্মি দত্তকা। পূর্ণাঃ স্থান্তে মনোরধা ইভি। ভধা পাল্লনির্সাণ-ৰণ্ডে। পশ্য দং দৰ্শয়িবামি অৱপং বেদগোপিতমিতি শ্ৰীভগৰৰাক্যানস্তরং এক্ষৰাকাং ততেছিপশ্যমহং ভূপ ৰালং কালাভুৰ প্ৰভং। গোপকনাারতং গোপং হসস্তং গোপবালকৈ:। কদসমূল আসীনং পীতবাসসমস্ভুতং। বনং বৃদ্ধাবনং নাম নৰপল্লৰমণ্ডিভমি-ত্যাদি। বৈলোকাসম্মোহনতত্ত্বে প্রীমনষ্টাদশাক্ষর প্রসঙ্গে অহনিশিং অপেয়ান্তং মন্ত্রী নিম্নতমানদঃ। স পশাতি ন সন্দেছো গোপত্রপ ধরং হরিমিতি। গৌতমীয়েত সদাচার প্রসঙ্গে। অহনিশিং জ্বপেদ্বভূমন্ত্রী নিরতমানসঃ। সুপশ্যতি নুসন্দেহো গোপ্রেশ धतः हतिमिछि औराणान छापनी अधिटेन्टवः ওছहावाह अञ्चलामावनवत्रत्यः स्म धांछः खन्छः পরার্দ্ধান্তে দোহবুधान राग्निटवरमा মে পুরস্তাব। বির্জ্তবভি । সিন্ধনির্দেশাংশি প্রারতে । যথা বল্পে ব্রন্ধাবনাদীনমিন্দিরানন্দ্রমিতি বুহুরারদীরারস্তে মঙ্গলাচ-রণং। গুছে সংভিষ্ঠতে যদ্য মাহাত্মাং দৈত্যনায়ক। তারকারাঃ সমৃত্তং সারিধাং কেশবস্য চ। ক্লিলীসহিতঃ ক্লেগ নিভাং নিবসতে গৃহ ইতি। স্থান্দৰাৱকামাহায়ো বলিং প্রতি শ্রীপ্রান্ধান্দ্রাকাং। ব্রতিনঃ কার্ত্তিকে মাসে স্থাতস্য বিধিৰ্মম । গৃহাণার্ঘাং মরা দত্তং রাণয়া সহিত্যে হরে ইতি। পালকার্ত্তিকমাহাজ্যে তৎপ্রাতঃ লানার্য্যমন্তং। এবঞ্চ শ্রীমদ্ভাদশাক্ষরাদরো মত্রান্তভংশরিক রালিবিশিষ্টতহৈরবারাধ্যমেন সিন্ধনির্দেশ্যমেব কুর্বস্থিত তথা আবরণালিপুলামত্রাশ্চ । কিং বছনা কর্মবিপাক প্রায়ণিচত্তশাত্তেইপি छथा क्षायट । वनार त्योधायनः त्यायस शूर्सत् कार्त्या त्याविमाश्ची कात्र छछ देखामानस्तरः। त्याविमा त्यावीसन्वत्र छम কংশাহ্রম ত্রিদশেক্সবন্দা। গোদানভৃথঃ কুরু মে দরালো অর্শেবিনাশং ক্ষপিতারিবর্গ ইতি। অন্যত্ত তত্ত্ব যথা গোবিনা গোণীজনবন্নতেল বিধ্বত্তকংস ত্রিদলেক্রবন্দ্য গোবর্দ্ধনান্তি প্রবটন্নকহন্ত সংরক্ষিতাশেষগ্রাং প্রবীণ। গোবেত্রবেণুক্ষণণ প্রভূত-মাদ্ধান্তবোগ্রং তিমিরং কণাবিতি। স্পটং চ তণা তং জীগোপালতাপন্যাং গোবিদ্ধং সচিবানক্ষবিপ্রহং স্থরভূক্তভলাসীনং সততং সমরুদাণোহং তোষরামীতি। অতথ্য পুরুদ্বতোহ্বি স্বরুক্তোহ্বি স্বরুক্তি। অলং চৈবংবিধ প্রমাণসংগ্রহ প্রপঞ্জে। य अभिक्रिक्टेका कराक्षित्रातार जल्पति एक्षानी नामित ज्या निजादिक्षिति एक्ना विकास विकास विकास निवास करा निर्देश वास निवास करा স্ক্রিপাপপত্তিনাশৌ তু নিসিদ্ধৌ। তভত্তবভারাণাং কিমৃত করং ভগবভো বা তস্য কিমৃতভ্রামিতি। ৰুপা চ ব্যাণাতিং জগৃহে পৌক্ষবং রূপমিতাম তত্ত্বাদ গুরুতি: বাজাপেকরা জগৃহে। তথাপি মন্ত্রগাবতে। অহেরমমূপাদের বজ্রপং নিত্যমব্যরং। न এবাপেকা ক্মপাণাং ব্যক্তিনেব জনার্দনঃ। অগৃহাদাত্তি কেঞ্ছামাদিকাং তহুং। পঠাতে ভগবানীশোমুদুবৃদ্ধিবাপেক্রা। ভম্সা হৃপ্যুদ্স্য যত্ত্বঃ পান্মীশিতুঃ। এতৎ পুক্ষরপ্র গ্রহণং সমুদীর্ঘতে। ক্লফরামাদিরপাণাং লোক ব্যক্তিবাপেক্ষেতি। এবনেৰ প্ৰথমে বাদশাধ্যাৰে বিধুয়েত্যাদি পদ্যে আমিভিরপি ব্যাখ্যাতং। যত্ত দৃষ্টক্তকৈৰাস্কহিতিং। নম্বন্ধত গতং। ৰতো বিভুং সর্বা গত ইতি। তথা মাধ্যভাষ্যপ্রমাণিতা শ্রুতিত। বাজুদেব: সৃত্বণ: প্রত্যুদ্ধে। ইনিক্রছে। হুরং মৎসা: কুর্বে। বরাহো নরসিংহো বামনো तारम। तारमा तामकृत्को त्बः कित्रहः भाउपादः महत्यपाद मिमाराहमनाखाक्दः। देनदेवरण बावरख देनरा सिवरख देनवामळान-বদ্ধোন মুক্তি:। সর্প্রেব ছেতে পূর্ণা অলয়া অমৃতা: পরমা: পরমানন্দ। ইতি চতুর্পেদিপিবারাং। তথা চ এনুসিংহপুরাণে যুগে

क्षितिश्रनाथठक व की ।

সাধ্বী জী নটাক্ষবদিতি। অত্য ত্যাগি জিয়ারা দেহে হয়রবাধে। তগবদেহ সা সচিলান ক্ষরপত্বেন নিত্যভাব তথা হি মহাবারাছে। সর্বেন নিত্যভাব দেহাত্বসা পরাত্মন। হানোপাদানর হিতা নৈৰ প্রকৃতি আলাং কৃতিব। পরমান ক্ষপ্রভাব আনানাত্রাক্ত স্বতি । তথা মাধ্যভাব্যপ্রমাণিতা শ্রুতিশু । বাস্থদেবং সহর্বণঃ প্রহামে নিক্ষরে হংলোম্বস্যঃ কৃর্মো বরাছো নর সিংহো বামনো রামো রামা কৃষ্ণো বৃদ্ধঃ কৃষ্ণিছং সহর্বাহম্মিতোহ নাজে হং নৈবৈতে আরক্তে নৈতে প্রিয়তে নৈবাং বদ্ধো নামা রামা কৃষ্ণো ক্ষা অমৃতাঃ পরমাঃ পরমানকা ইতি গোবিক্ষং সচিলানক্ষ বিপ্রহং বৃদ্ধাবন স্থাক্ষরত্ব লাসীন-মিতি গোপালকাপনী। অতং সভাব পরা অমৃতাঃ পরি নৃষ্কার বিপ্রহমিতি বৃদ্ধিছ ভাগনীচ। তথা অবৈধা কৃষ্ণহামণিনিয়োচ ইতি। আগায়ান্তরপালকে স্বিহা লোকলোচনমিতি অলপ্রবনিভানাং বহুরিন্ন কামানেবমিত্যাদি শ্রুতিস্বৃতি বাল্যানি বহুন্যেব

দেহ পরিত্যাগ করিবার নিমিত্ত এই চিস্তা করেন । ২৯ ।

অস্মান্তোকাত্বপরতে মন্ত্রি জ্ঞানং মদাঞ্জারং। অর্হ ভাজা ক্রান্তা ক্রান্ত্রতান্তরঃ ॥ ৩০ ॥ নোকবোণুপি মন্ত্রনাযদস্থৈ নানিজ্ঞঃ প্রভুঃ। অজ্ঞামবন্ত্রনং লোকং আহমনিহ তিওঁতু ॥৩১॥

- श्रिवदायाची ।

मित्र উপরতে সভি আনমহ कि आन्दिशाश खर्कि नहानाः ॥ ७० ॥

মতঃ সকাশাদীবদণি নৃ≀নো ন ভবভীতি বদ্বখাদগুৰৈবিবহৈ ন কোভিতঃ মুৰ্যুনং মৰিবয়ং ভানং দোকভোগদিখন্ইহ -ভূতলে ভিঠতুঃ ৩১ ৪

क्रममन्दः।

যুগে বিফ্রনাদিম্র্রিণাস্থার বিশ্বং পরিপাতি ছইহা ইতি। তথাচ শ্রীন্সিংহতাপন্যাং তদ্বাবাক্তর্বিগাথাতং এতদেব ন্সিংহ বিগ্রহং নিতামিতি। আইতিক সেরং ক্তং সত্যং পরংব্রহ্ম পুরুষং নৃকেশরিবিগ্রহমিতি। এবঞ্চ ব্রহ্মপান্মোত্তরথভাদাবিশি শ্রীমংস্পদে বাদীনাঞ্চ পৃথক্ পৃথক্ বৈক্ঠলোকাঃ জারতে। এবমেব জালেষু মাং রক্ষত্ মংস্কৃত্বিভি নারারণবর্গাহাক্তমশি সক্ষতে। ভশাং স্বয়ং ভগবতি শ্রীকৃত্যেহপানাথা সংভাবনমনাদিশাপবিক্ষেণএব। তদেবমভিপ্রেত্য তান্ হর্ম্ দ্বীনশি বোধ্যিত্থ তম্ম শোগালতথ শ্রীতকদেবেন প্রতিপাদিতং পতিগতিশাক্ষকর্ফিসাত্বাং প্রসীদ্ভাং মে ভগবান্ সতাম্পতিরিতি অল বিশেষ্ট্রিজ্ঞাসা চেৎ কুফ্রনতে দ্বাং ॥ ২১॥

আহং শ্রীকৃষ্ণরপ আল্লারো বভেতি জ্ঞানভাপি বৈশিষ্ট্যমূক্তং। আত্মা অহমেব পরমপ্রবার্থতেন বিদ্যাতে বেবাং তেবামাত্ম-বতাং শ্রেষ্ঠঃ॥ ৩০

যদবশাদভিশবেন মদন্যনখাজেভো: শুণৈ: সন্ধাদিভিনার্দিত: ন পীড়িত: শুণাভীত ইতার্থ: বত: প্রাভ্: সর্বার্থসমর্থত। মধ্যুনং মহিষয় জানং গ্রাহ্মরিতি বদরিকাশ্রমগভাং ভাং ভাষ্মহামূনীন্ প্রভাপীতার্থ:। তদিলং গ্রাহণং ব্যক্তমক্থয়িবামাণমপি জ্লের মেব ভগবংশংকরস্ভান্যথাদাদ্যসংভ্রাৎ যথোক্তং অমোদ্রান্ধিত ইভি॥ ৩২॥

बिविधनाथहक्तवढी'।

জন্তবানি অত্ত প্রকটার্থেন দেহত্যাগমবগম্য। পূর্বাপরবাকাবিরোধমনবধাপাচ অত্যপ্রকৃতয়এব প্রেম্ভক্তামৃতাৰ্ঞিতা: প্রীভাগ বতত মোহিনীত্বে বাাধ্যাত্বাৎ বাাধ্যাত্বমানস্থাক ন্যুনমিতি পাঠে হু নিশ্চিতং উনং দেহং আংশরপং নারায়ণাভিধং অবতারকালে-অমিন্ বৈকুঠাদাগতা মিলিতং সংপ্রতি পুনবৈর্ক্ঠে, প্রস্থাপনিত্ং সদেহাবিভল্য তাক্ষ্যন্ আগতেভ্যো ক্রন্ধানিত্য: পালনার্থং দাস্যন্ তালেদ্যানার্থবিৎ দেহং বিরাড়াকারং পুণীমিতি সন্ধর্ষ: ॥ ২৯ ॥

অন্নাৎ প্রাণক্তিকারে। কার্ত্র বীষরপ গণলীলামাধুর্যবৃষ্টিভো। বিরতে সতি অহমেবাশ্রের বস্য তৎ অহং যজ্জানামি তত্ত্রেছিল জ্ঞাত্মহ তীভার্থঃ। মাং দিদৃক্ন মনুধাল্জানং জিজ্ঞাস্ন বদরিকাশ্রমবাসিনো মুনীন্ মংপ্রতিমৃর্টিবেন জ্ঞানং প্রাহ্নির্মিতি ভাবঃ। আন্না অহমেব স্থামিন্তেন বর্ত্তে বেবাং তেরামান্মবতাং বরঃ শ্রেষ্ঠঃ । ৩০ ।

অপ্রতিম্র্তিছে উদ্ধবস্থ বোগ্যতামাত্ অণুপি মন্তঃ সকাশাদীবদ্পি ন ন্নাং বল্যাৎ গুলৈং স্থাদিতিঃ। নমু লগতা দিন্ গুণাতীতাঃ পরস্সহলা লীবলুকা গুলৈরন দিন্তা এব সন্ধি তেন কিং তেবাং ওপবংসামাৎ সতাং তহে বং বাবে।রং গুলৈরপ্রাকৃতৈ
ব্লব্দিকান বৈরাগ্যাদিভিনা দিন্তং তেবাং বেগধারণসামর্থামের তৈরন দিন্তদ্বম্ভ জেবং। বথা কামাদিবেপধারণসাম্থামের কামাদ্য
ন দিত্তমূচ্যতে উদ্ধবাতি অভিরথব্পপ্রথপের মুখ্য ইভাচাতে। ক্লপি ন স্থাপি তাল্শভাপ্রাক্তস্ত বলভাবিদ্ধারঃ কৃত ইতি বলবেগধারণং এবং বৃদ্ধাদীলাদপি বেপধারণং জের্নেভদেবাসাধারণ্যং প্রভুং অহ্মির ব্লীকৃত্যার ইতার্থঃ। মর্যুনং মন্জানং ৪৩১৪

আমি এই মৰ্দ্যলোক হইতে উপরত হইব,সম্প্রতি জ্ঞানি শ্রেষ্ঠ উদ্ধবই মহিষয় ক জ্ঞান প্রাপ্ত হইতে যোগ্য, তম্ভিন্ন অন্য কাহাকেও উপযুক্ত দেখিতেছি না॥ ৩০॥

অপর উদ্ধব আমা অপেকা কিঞ্মিত্রে ন্যুন নহে, যে হেডু বিষয় ধারা ইহার কোভ জন্মে না, অতএব এই ব্যক্তিই মদ্বিয়ক জ্ঞান লোকদিগকে উপদেশ করত এই ভূতলে অবস্থান করুক॥ ৩১॥ এবং ত্রিলোকগুরুণা সন্দিষ্ট: শ্ব্সবোনিনা। বদর্যাগ্রমমাসাদ্য হরিমীকে সমাধিনা ॥ ৩২ ॥ বিদ্নুরোপুদ্ধবাৎ প্রুষ্ঠা কৃষ্ণস্য পর্মাত্মনঃ। জীভ্রোপান্তদেহস্য কর্মাণি প্লাঘিতানিচ ॥ দেহন্যাস্থ্য তব্যুবং ধীরাণাং ধৈর্যবর্দ্ধনং। অন্যেবাং সুক্ষরতরং পশ্নাং বিক্লবান্ধনাং ॥ ৩৩ ॥

क्षिपद्रश्रामी ।

এবমনেনাভিপ্রারেণ। শক্ষোনিনা বেষকক্র।। **ঈলে পৃত্তরামাস । ০২ ।** অনোবাং পশ্নাং পশুত্রানাং বিক্লবায়নাং অধীরচিত্তামাং ॥ ৩০ ।

क्रथनसर्छ ।

বদ্ধ্যাপ্তনং প্রতি গমনায় ভগবদাদেশে। হয়ং শ্রীভগবদিচারময়েং দ্বিন্দেশে তেন স্থাতুমশকান্তাদিতা ভিপ্রায়:। সমাধিনা অনক্ত মনোবৃত্তা। ঈক্তে সাক্ষাদিব সিবেবে। তদিদং তু মৈত্রেয় সহিতভ্যা সংক্ষেপেণ তদ্যুহণাস্তর্মেব জ্ঞেয়ং। ইতি ওক্ত ধৈর্যাকারণং দর্শিতং। ৩২।

বিহুর ইতি ত্রিকং। উপাদানমত্র প্রকটনং প্রাণঞ্চিকভক্সমীপানহনার্থহাৎ। দেহন্যাসং অপ্রকটলীলাবকাশে ধানি স্ববিপ্রহন্ত বিহ্যাসং প্রবেশনমিতার্থ:। ধীরাণাং ড স্থিন্ লুপ্রচিত্রানাং ভজ্জপদ্বেনৈব তদবস্থাননির্বাইদ্ব্যবর্দ্ধনং। অনোধাং ভদ্বিপরীত বৃদ্ধীনাং ভ্রম্বানাং ত্র্সিভাবামিতার্থ:॥ ৩৩। ৩৪। ৩৫॥

প্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী :

এবমনেন প্রকারেণ বিলোক্স্নাং গুরুণাং কেবাঞিদবলিষ্টানাং বদরিকাশ্রমবাসিনামুদ্ধবদারাপি গুরুণেত্যর্থঃ। শ্রুকদেবাদিমিলনার্থং বাণাদাস্থ্রজয়ার্থং পারিজাতাদি নয়নার্থং বাদ্ধণপুরাদানয়নার্থং দেবকীপুরাদানয়নার্থঞ প্রায়েমিথিলাদি সমস্ত ভূতলস্বর্গ বৈকুঠ স্বলাদীন্ গছতা স্বদর্শনেন স্থান্ত্র্যুপ্রানোপদেশেন চ তব্রজান্ কুতার্থয়তাপি ভগবতা বদরিকাশ্রমানাগমনাৎ
ব্রুব্র প্রিক্রানামপ্রেকঠা মন্ত্র্যুত্র তেবোদ্ধবং প্রাস্থাপিতঃ কচিৎ করে বদরিকাশ্রমাপি সমং তেনৈব গতঃ ইতি চেবলা
উদ্বোপি তব্র ন প্রায়াপিত ইতি জ্বেরং। সংলিষ্ট ইতি কল্ডিং সন্দেশগি প্রেরিজঃ। ইমং সন্দেশং নরনারায়ণাভাাং দেহীতি
সন্দেশবিষ্মীকৃত ইত্যর্থঃ। সচ নোদ্ধবোহণ্ণীতি পদ্যাসেব শ্রুষ্যোনিনাং শঙ্গানাং বেদলক্ষণানামপি ঘোনিকংণতি র্যতঃ ইতি
বেদেল্পান্ত্রপ্রায়ার ভগবান্ কানাতীতি ধ্বনিঃ। তচ্চোদ্ধবে ক্রম্বালয়ম্বারায়ণী তালেব প্রাপ্রাত্তর ইতি
বেদেল্পান্ত্রপ্রায়ানঃ। সন্দেশপত্রীচ স্বন্ধি প্রমিয়রনারায়ণী প্রতি বিজ্ঞাপনক্ষেণঃ। উদ্বন্ধ্রায়নারায়ণী তালেব প্রাপ্রায়
ইতি প্রত্যুম্বনিঃ। সন্দেশপত্রীচ স্বন্ধি প্রতিত্র বিজ্ঞাপনক্ষেণঃ। স্বাদ্ধ শতবর্ষ পর্যায়ের মংগ্রুহ বিজ্ঞাল
গতা লীলা ভবেৎ তন্মর্যাদাচ। সংপ্রতি ব্রেতি দারকায়াং সপরিকরেশ মরা অন্তর্মীরতে প্রভাসক গদা অবভারিতান্ দেবাদীনাধিকারিক ভকান্ প্রতি স্বাস্থাপা ব্রন্ধ প্রাথিতেনৈকেনাংশেন বৈকুঠে সার্জ্বননাংশেনালক্ষিকং যুম্বংপদেচ গ্নাতে কিঞ্চ
মংপূর্ণক্রপদর্শনিসাংকারনাং যুমাকং ক্রতে সংপ্রায়ণার্বন্ধ্রেম্বাছবিছ তির্ভবিভোষা। ইত্র ক্ষরিকাশ্রমেয় ৩২ য়

ক্রীড়বৈৰ কর্ত্র। উপ আধিকোন অত্তা গৃহীতো দেখে বসা তসা তশা শীলাশকেরবীন এব স তসা দেহত্তবৈৰ পক্যাবিভাবাতে চাত্তবিধাত কর্ত্র কর্ত্র করে। তথা এবমনেন প্রকারেণ তক্র ধীরাণাং বাদবাদীনামপি দেহানাং ক্লানং বারকারামপ্রকটপ্রকাশেহপূবং। প্রকাশের পুনস্থাগং প্রকা কীনুশং বৈধাবিদ্ধনং তথা প্রক্রেষ্ট্র বিহুরো হৃত্তি বৈধামবধানিত। বং। বহা ক্লাপি বৈধাতে দুননং বর্ত্বছেলনে। পুন: কীনুশং অক্রেমভক্তানাং যোগিনামপি অভিশরেন ক্তরং। একত্র বেশে দেহতাত্ত্রানমন্ত্র দেশে ভাগতত্বন লোকে জ্ঞাপন মিতি বোগিভিছ্করমিতার্থ: পশুন। মিতি অক্যাভাবানিতি ভাবং। বিক্রবাত্মনামেবং কর্ত্ত্র বাত্রশমনসাং আত্মানং সং ॥৩২০৪৪

হে রাজন্! বেদকর্ত্ত। ত্রিলোক গুরু ভগবান্ এতদভিপ্রায়ে উদ্ধবকে বদরিকাশ্রমে গমন করিতে আদেশ করেন এবং তিনিও তাঁহার আজাসুসারে তথায় আসিয়া সমাধি দারা ভগবান্ হরির পূজায় রত হয়েন। ৩২।

পরমাত্মা প্রীকৃষ্ণ লীলা বশত: দেহ ধারণ পূর্বক যে সকল প্রশংসনীয় কর্ম করেন এবং যে প্রকারে উছার দেহ ত্যাগ হয়, যাহা ধীর ব্যক্তিদিগের ধৈর্য্যবর্জক, তদ্ভিদ্ন অধীর চিত্ত পশু ভূল্য ব্যক্তিদিগের ক্লেশকর, বিচুরও উদ্ধাবের প্রমুখাৎ তৎ সমুদায় প্রবণ করিয়া॥ ৩০॥

আন্ধানক কুক্তোর্চ কুকেন মনসেকিত:। ধারিন্ গতে ভাগবতে ক্রোদ প্রেমবিহ্বল:॥ ০৪ ॥ কালিন্দা: কতিভি: নিদ্ধ অবাভির্তানতর্বভা। প্রাপদ্যত স্থ:সরিভং বত্র মিত্রাহ্নতো মূনি:॥ ০৫ ॥ ॥ ॥ ইতি প্রভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়ানিক্যাং তৃতীয়ক্ষমে বিচুরো-দ্বস্থাদে চতুর্থাহধ্যায়:॥ ॥ ৪ ॥ ॥ ৪

শ্ৰীপাক উবাচ n

দারি ছানদ্যা ঋষভ: ক্রণাং মৈত্রেয়মাদীনমগাধবোধং। ক্ষত্রোপস্ত্যাচুতেভাবদিদ্ধ: পপ্রচহ দৌশীল্য গুণাভিত্প:॥১॥

श्रीभव्यामी।

यनरमिक हर हि खिल्ड । ७८ ॥

কালিন্দ্যাঃ সকাশাৎ সিদ্ধ এব বিছ্রঃ কভিপরৈ দিনৈ: খঃসরিতং গলাং প্রাণদ্যত প্রাপ্তঃ 🛭 ০৫ 🗷

য় ইতি তৃতীয়ে চতুর্থেহিধায়ঃ য় ৹ য়

শঞ্চম ভগবল্লীলাং ক্ষত্রা পৃটো মঙামুনিঃ। প্রোবাচ মহদাদীনাং সর্গং তৈত হবেঃ স্বতিং। উক্ত তৃত্তিরধ্যাধ্যঃ ক্তৃ ক্রিত্তের সক্ষঃ। সংবাদক ত্যোঃ ক্ষর্থ্যনাথ নিগদাতে॥ • ॥

জানদ্যা গলারা দারি বাবে আসীনং নতু কর্মবাতাং তত্ত্ব হেতুং। অগাধং অপরিচ্ছিলো বোধো বভেতি। বৈত্তেরস্য সৌলীলাং আর্জবাদি গুণাশ্চ করণাদর: তৈরভিত্থং। সৌশীলাগুণাভিত্থমিতি পাঠে করুং সৌশীলাদিভিরভিত্থং সন্তইং মৈত্তেরং ॥ ১ ॥

ক্রমসন্দর্জঃ।

। • । ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীরক্ষকে শ্রীজীবগোত্থামিকত জনসক্ষতি চতুর্থাহ্যার: সমাপ্ত: । •।
সৌনীলাং স্থভাব: তৎপ্রধানা গুণাত্তৈভূপ্তো মানাদীক্ষারহিত: পাঠান্তরে কলু: সৌনীলাদিভিরভিত্প্তং সন্তইং মৈত্রের: ১১৪

बियमानहत्त्वर्थी।

কালিন্যা: স্কাশাৎ কভিতিরহোতিঃ সিদ্ধে নিস্পানে স্তি ভাবে কঃ। কভিবু মহাত্ম ব্রেবু স্থামিত। স্থান স্থানি প্রাধান বাপেন্ত প্রাধান ত ।

॥ । ইতি সারার্থনিতি হবিশাং জন্তচেত্রাং। তৃতীয়েত চতুর্থোণি সক্তঃ সকতঃ স্তাং । । ।
পর্কমে জগতঃ স্টাল্যপূক্ং স্বত্থিনঃ। ক্ষতা প্রতাহ মৈতেরঃ সর্গং তবৈঃ তবং হরেঃ। জলা চতুর্জিরধানৈর প্রশ্রভালি
নঃ স্থিতিং। উক্বা তদলিষ্কোণি সর্গঃ স্বাসমূচ্যতে। ছানলা গলারাঃ হারি হরিবারে আসীনং নতু কার্যাব্যারাঃ। প্রথমান্ত
পাঠে মৈতেরস্য সৌনীল্যগুলোং স্থাটা। হিতীরাজ্বপাঠে বিত্রস্য : ১ ।

এবং আপনাকে শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক মনের দারা চিন্তিত জানিয়া তাঁহার অন্তর্জান হেতু প্রেমে বিহবল হইয়া রোদন করিতে লাগিলেন ॥ ৩৪ ॥

হে রাজন্ ! তাঁহার রোদনের কারণ এই যে, আমি ক্জারের মধ্যে অভি অধম শৃদ্র প্রায় দাসীপুত্র কিন্তু তিনি অনন্তকোটি ব্রক্ষাণ্ডের অধীশ্বর, তথাপি মর্ত্তলোক পরিত্যাগ কালীন আমাকে স্মরণ করিয়াছেন, আহো ! তাঁহার কি কুপাল্তা, এই বলিয়া প্রেমমুগ্র চিত্তে রোদন করিতে লাগিলেন, হে কুরুল্রেন্ঠ ! তদনন্তর সিদ্ধি প্রাপ্ত সেই পরম ভাগবত বিছুর ক্তিপ্র দিবস গমন করিয়া যথায় মৈজেয় শুনি অবস্থিতি করিতেছেন ভাগীরথীর সেই স্থান প্রাপ্ত ইইলেন । ৩৫ ।

। *। रेडि ज्जीय हजूर्व । *।

পঞ্চমাধ্যায়ে বিছুরের প্রশ্নে মহামুনি মৈজেয় কর্তৃক ভগবানের দীলা এবং মহদাদি সৃষ্টি বর্ণন তথা

अकरणय किहालन अभवातन्त्र कारव निम्न क्कार्ट्यक विकृत भनावात्र अर्थाय हितवारत आमीन धवः

শীবিত্বর উবাচ।

তথায় কর্মাণি করোতি লোকো ন তৈঃ হংখং বাম্মতুপারমং বা।
বিদ্দেত ভূরস্তত এব তঃখং যদত্ত যুক্তং ভগবানু বদেশঃ। ২।
জনস্য কুফান্মিখস্য দৈবাদধর্মশীসস্থ হতঃথিতস্য।
অমুগ্রহায়েহ চরস্তি নৃনং ভূতানি ভব্যানি জনার্দ্দনস্য। ৩।

M

टी धवचा भी

প্রস্থানেবাহ। স্থায়েতি পঞ্চশতিঃ। তৈঃ কর্মজিরিশি স্থাং বা অভ্নত ছংগত উপারনং বেত্যর্থঃ। অথবা আনাদা ন বিন্দেত। কিং তদিতাপেকারাং তবৈয়ব নির্দেশঃ উপারমং বেতি। তত্ত তৈঃ কর্মজিত্রঃ পুনঃ পুনছ্থিমেব বিজেত। অভ্যাবং বিধে সংসারে নোহতাকং যালযুক্তং কর্তাং যোগাং তৎ সর্মজ্ঞো ভবান্ বদেৎ নির্পয়তু॥ ২॥

দৈৰাৎ প্ৰাচীনাৎ কৰ্মণো নিমিতভূতাৎ ক্ষণবিম্পদা অভঃ অধৰ্মনীৰদা অতঃ স্কৃথিতদা জনদ্যানুগ্ৰহার ভবাগনি মঙ্গনানি ভূতানি চরতি। ভবতঃ প্রোপকার স্বভাবা এব ইতার্থঃ ॥ ৩ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তত্ত্ব বদাপি বিহুর: শ্রীভগবদাদিইজ্ঞানং শ্রোভ্নভীইবান্ পৃষ্টবাংশ্চ শ্রীমহ্দ্ধবং প্রতি পূর্বং। শ্রীমহ্দ্ধবেন চ শ্রীমৈত্ত্বেং প্রতি প্রত্থি শ্রীজ্ঞাবদাল্লাহ্বারেশাপদিই: তথাপি তং প্রতি তমস্পৃষ্টবাং তথ্য শ্রীমহ্দ্ধবিষয়কপ্রশানস্তরং জাতেন দৈনাস্বভাবেনৈব। দৈলক্ষ শ্রীভগবতা স্থাতিনিধিরপোদ্ধবদার্মেশাস্থানি নাতিবোগ্যভামননাৎ শ্রীভগবাংশ্ব তদা শ্রীমহ্দ্ধবাজত্ত্ংশ্লোকীমাত্তেশ দন্ত্রকাশাভাবং তথা বহুংশ্চ প্রেইব্যানর্থান্ বিজ্ঞায় তাবৎ সংবাদ নির্বিধেন তেন তং নোপদিদেশ। কিন্তু তল্প বোগ্যেন নৈত্রেব্যেশিবেতি। তথাদান্থনি তজ্জ্ঞানযোগ্যবাপাদনসাধনাধ্যেব স নিবেদয়তি স্থাবেতি ত্রিভি:। তত্ত্রান্থন: সাধারণ্যায় লোক-মাত্রত্ত দেখিলং প্রথমেন। তাদৃশং বিনান্যাশ্রয়াহিত্যং বিতীয়েন। অভীইপ্রার্থনং তৃতীয়েন ক্রেয়ং ৪২০

জনতেতি। देनदार প্রাচীনকর্মণোহেতোওদাবেশাদধর্মশীলভ ভগবদ্ধরহিতভেত্যর্থ: ॥ ৩ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবতী।

সর্বভূ চাম্প্রাহকা ভববিধা মহাভাগবতা এব তত্ত্বং জানস্কীভাহে। ভবানি ভূতানি মন্তবরণা ভক্তাঃ । ৩ ॥

অপরিচিছ্র বোধ সম্পন মৈত্রেয় মুনির জ্লীলতা তথা কারুণ্যাদি গুণসমূহ দর্শনে পরিভৃপ্ত হইয়া নিকটে গমন পূর্বক জিজ্ঞাসা করিলেন॥ ১ ॥

মুনে! কোক সকল এই সংসারে হথ প্রাপ্তি বাসনীয় কর্ম করিয়া থাকে কিন্তু তদারা হথ অথবা ছংখের উপশম হর না, বরঞ্ তৎ সমুদার হইতে পুনর্কার ছঃশ হইয়া থাকে অভএব এই সংসারে আমাদের যাহা কর্ত্ব্য, আপনি সর্ব্যন্ত, তাহা নিরূপণ করিয়া দিউন ॥ ২॥

প্রতো! প্রাচী ব কর্ম বশতঃ যে দকল মসুষা শ্রীক্ষে বিমুখ হইয়া জাগ্রমীল, স্তরাং তাহারা ছংথগ্রস্ত হয়, ভবাদৃশ ভগবস্তকেরা পরোপকারিতা স্বভাব প্রযুক্ত তাহাদের প্রতি জাসুগ্রহ বিস্তারাধৃই বিচরণ করিয়া থাকেন এ ৩ এ

তৎ দাধ্বর্যাদিশ বজু শং নঃ সংরাধিতো ভগবান্ ধেন পুংদাং।
ছদি ছিতো যদ্ধতি ভক্তিপুতে জ্ঞানং সতত্ত্বাধিগমং পুরাণং ॥ ৪ ॥

ই করোতি কর্মানি কুতাবতারো যান্দ্রান্দ্রতাত্ত্বাভগবাংস্ক্র্যধীশ:।
যথা সদর্জাগ্র ইদং নিরীহঃ সংস্থাপ্য বৃদ্ধিং জগতোবিধতে ॥ ৫ ॥
যথা পুনঃ ধেষ খ ইদং নিবেশ্য শেতে গুহায়াং দ নির্ভর্তিঃ ॥

श्रीभवतामी।

তৎ তত্মাৎ হে সাধুব্যা শং সুধ্রণং বৃদ্ধ নঃ আধিশ কুব্র বেন বৃদ্ধ না সংরাধিতো হৃদিছিতঃ সন্ ওত্বাধিগনঃ আছা প্রোক্যং তৎ সহিতঃ পুরাণং অনাদি বেদপ্রমাণকং ॥ ৪ ॥

করোতি কর্মাণীত।দীনাং বর্ণরেতি পঞ্চম স্লোকে জিনাসমুদ্ধ:। যথা বেন প্রকারেণ পুরুষরূপেণ রুডাবতার: সন্ আধীশ: বিশ্বেশায়ানিয়য়া অত: মতত্র এব। বানি কর্মাণি করোতি। কর্মাণোব বিশেষত: পৃক্তি যথেতাাদিনা। নিরীহ: নিজিন: নিম্প্রেয়া। সংস্থাপা স্কৃত্রিং ক্রমা বৃত্তিং জীবিকাং । ৫॥

रा श्रीरत तथ क्तत्राकारण खरात्राश त्वाशमात्रात्राः। वहशा बन्तानिकारण । ७ a

क्रममम्बद्धः।

তৎ সাধ্বিতি। ' ভক্তিপুতে প্রেমবিমলে। সভবং জ্ঞানং তচ্চ ব্রহ্ম ভগবৎপর্মান্মেত্যাবির্ভাবং ॥ ৪ ॥

ভত্ত বছৰু সাধনেৰ সংস্থ নিৰ্দ্ৰণ্যং নিবেশরভি করোতীত্যাদিভিঃ টীকারাং ব্ধেত্যাদিনেতি উত্যত্তাশি স্থা শক্ষ্য সহস্থাৎ পূর্ব্বমিশি যোজিতং ॥ ৫ ॥

দ্বে স্ব স্কলে থে আকাশে আকাশন্তরিলাদিত্যাদি ন্যারেন এক্ষাথে। নিবেশ্য বিলাপ্য গুহারাং কন্মিংন্চিং স্ক্রাগোচর প্রদেশে

बिविषनाथहक्कवर्छी।

শং অ্থরপং বঅ ভিজনমার্গং নোছখানাদিশ। স প্রসিদ্ধো ভগবান্ তথ্য বদস্তি ভস্তব্বিদ ইতানেনোজন্য এদ্ধপরমাথ ভগবংশকণ্যাধিগ্নো যথাওজ্ঞানং বছতি যত্কং। ভজুদ্ধানা মুন্যো জ্ঞানবৈরাগাযুক্তরা। পশ্যস্তাশ্বনি চাথানং ভক্তা শ্রুতগৃহীত্যেতি পুরাণং পুরাতনং ন মীমাংসাদিকমিবার্কাচীনং ॥ ৪ ॥

করোতি কর্মাণীত্যাদীনাং বর্ণরেভি পঞ্চমরোকত্থেনাম্বয়:। অধীশং পৃক্ষব্রেয়শং কৃষ্ণ: কর্মাণি গোবর্দনে মরণাদীনি।
ত্রিওশনায়াধিষ্ঠাতা মহাবিষ্ণুশ্চ বথা ইদং অত্রে পূর্ব্বমহাকরাত্তে সংস্থাপ্য সংজ্ঞা পুনরেভন্মহাকরাদৌ সমর্ক স্ট্রাচ বৃত্তিং জীবিকাং
পালনমিত্যর্থ: ॥ ৫ ॥

্যণা পুনশ্চ তে স্বীয়ে ব্যব্যাকাশে নিবেশ্ত স্থাপরিবা গুলারাং দর্কাপমান্তাবিরলারাং নদ্যামিভার্থঃ। নিক্তমালাগুণরুগ্তিঃ। পুনশ্চ এতজ্ঞগৎ স্ট্রাল্পুবিটিঃ। বহুণা দেবমস্ব্যাদিরপো ব্ধাসীদিভি স্ট্রাদি প্রশ্ন পৌনঃ পুনাং প্রতি মহাকরগভা স্ট্রাহিদীলা

অতএব হে কুরুপ্রেষ্ঠ ! আমাদিগকে বন্ধ আদেশ করুন,যে বন্ধ ছারাভগবানের আরাধনা করিলে তিনি আমাদের ভক্তিপৃত হাদরে অবস্থিত হইয়া আত্ম সাক্ষাৎকার সহ অনাদি বেদ প্রমাণক জ্ঞান প্রদান করিতে পারেন ॥ ৪॥

হে মুনে ! ভগবান্ আছাতন্ত্ৰ এবং দ্বিগুণান্ধিকা মারার নিয়ন্তা, তিনি স্বরং পুরুষ রূপে আপনার অবতার প্রহণ করিয়া যে সকল কর্ম করেন, তথা স্পৃহাশৃত্য হইয়া যে প্রকারে অত্যে এই জগৎ স্প্তি করেন এবং যে প্রকারে ইহাকে ছন্ত্রির করিয়া যে রূপে ইহার জীবিকা বিধান করেন এ সমন্তভ বর্ণন করেন ॥ ৫ ॥

অপর তিনি যে প্রকারে এই অগৎ আপদার অবস্থাকাশে ছাপন পূর্বক নিশ্চেট হইয়া যোগ সায়াতে শয়ন করেন এবং কলের আদিতে পুনর্বার ইহাকে যে প্রকারে হলন করেন এবং হয়ং যোগে- যোগেশরাধীশর এক এতদমুপ্রবিকৌ বহুধা যথাদীং ॥ ৬ ॥
ক্রীড়ন্ বিধতে বিজগোহুরাণাং ক্ষেনায় কর্মান্যবভারভেদৈঃ।
মনো নত্প্যত্যপি শৃণুভাং নঃ হুলোকমোনেশচরিভারভানি ॥ ৭ ॥
বৈভত্তেলৈরধিলোকনাথো লোকানলোকান্ সহ লোকপালান্
অচীক৯পদ্যত্র হি সর্বসন্ত্র নিকায়ভেদোধিকৃতঃ প্রভীতঃ ॥ ৮ ॥
বেন প্রজানামৃত আত্ম কর্ম রূপাভিধানাঞ্চ ভিদাং ব্যধন্ত।
নারারণো বিশহুগাত্মযোনিরেভচ্চ নো বর্ণয় বিপ্রবর্ষ্য ॥ ৯ ॥

बी धत्रपामी

মংখ্যাদ্যবতারভেদৈ: জীড়ন্ যানি ষণা কর্মাণি বিগতে করে। পুনর্বিশেষং প্রষ্টুং ঔৎস্কামাধিষ্করোতি। মন ইতি স্বাোকাঃ পুণাকীর্ত্তর তেষাং মৌলিরিবাধিক্যেনাপরি বিরাজমানস্তস্যেত্যর্থ: ॥ १ ॥

লোকনাথাদিপতিঃ অলোকান্ লোকালোক পর্বাতাছহিও।গান্ অচীক>পৎ কল্লনামাস। যত্র যেবু সর্বাণি যানি সন্থানি তেবাং নিকাষাঃ তেষাং ভেদঃ অধিক্তঃ তত্তং কর্মাদিকারী আপ্রিত ইতি বা । ৮ ॥

উত অণিচ। যেন প্রকারেণ জীবানাং আত্মা স্বস্থারঃ তৎ ক্বতং কর্ম তৎ ক্বতং ক্রণং তৎ ক্বতা অভিধা তাসাং ভেদঃ বিশ্বস্থী স্মঞ্জাস্থায়োনিঃ স্বতঃ সিদ্ধঃ ॥ ১ এ

क्रमनमर्छः।

ভতাদায়োন ভিঠতি। মহৎঅট্পুক্ষ ইতি শেষ: ॥ ৬। ৭। ৮। ৯। ১০। ১১ ॥

व्यविश्वनाभडक्तवाडी ।

একরণা ভিন্নরপা বেতি বিজ্ঞান্যা 🛭 🗣 🛭

অবতারভেদৈর্মধ্যা কুর্মাদিভি: ॥ १॥

তথ্যতেদৈ বৈর্বাঞ্জণালাদিভি: পৃথিব্যাদৈশে কিন্ পাতালাদীন্ অলোকান্ লোকালোকপর্বতাহহির্ভাগান্ অচীক>পং ক্রমান্ মাস যত্ত্ব স্ক্রপ্রাণিনিকামানাং ভেদো নানাবিশেষেহ্ধিক্বতঃ ভক্তিজানযোগকর্মাল্যধিকারী ভবেং প্রতীতঃ থাতোহ্বাণিত ৮ ৮৮ উত অণিচ। যেন প্রকারেশ জীবানাং আশ্বা সভাবঃ তদমুস্তঃ কর্ম কর্মানুস্তঃ রূপং রূপামুস্তা অভিধা তাসাং ভেদং কৃতবান্ নারায়ণ্থব বিশ্বস্থিপ্রতীগ্রাম্বানের স্কা সম্ভিতার্থঃ ॥ ১ ॥

শ্রদিগের অধীশ্র হইয়া একাকী যে প্রকারে অসুপ্রবিষ্ট হওত ব**ছ প্রকার হ**ইয়াছিলেন তৎ সম্দায়ও বর্ণন করুন n ৬॥

আর তিনি মংস্থ কুর্মাদি অবতার ভেদে ক্রীড়া করত গো আলাণ এবং দেবতাদিগের হিতের নিমিত্ত যে প্রকারে যে যে কর্ম করেন, সে সকলও আমাদিগকে বলুন। হে মুনে! পুণ্স্লোক শিরোমণি ভগবান্ জীক্ষেয়র চরিতামুত যতই আবণ করি, ততই আমাদের তৃপ্তি লাভ ইয় না॥ ৭॥

অপর হে খবে। লোকনাধাধিপতি ভগবান প্রাক্তক্ষ যে যে পৃথিব্যাদি তত্ত্বিশেষ দারা লোকপাল-সহিত পাতালাদিলোক তথা অলোক অর্থাৎ লোকালোক পর্বতের বহির্ভাগ দকল স্ক্রন করিয়াছেন, যে স্থানে প্রাণি দকল স্ব জাতিভেদে তত্ত্তং কর্মে অধিকারী হইয়া আছে তৎসম্দায়ও বর্ণন করিতে আজ্ঞা হউক । ৮॥

হে বিপ্রবর্ষা। বিশ্বস্থাত মতঃসিদ্ধ নারায়ণ হব প্রকারে জীবগণের অভাব, কর্মা, রূপ এবং নাম ইত্যাদির প্রভেদ করিয়াছেন তাহাও বর্ণদ কর্মন।। ১ । পরাবরেষাং ভগবন্ ব্রতানি শ্রুতানি মে ব্যাসমুখাদভীক্ষং।
অত্থাম ক্লুল্লখাবহানাং তেষামতে কৃষ্ণকথামতোঘাৎ। ১০॥
কন্তপু য়াতীর্থপদোহভিধানাৎ সত্তেষ্ বং স্কিভিনীতামানাং।
য: কর্নাড়ীং পুরুষ্ণ্য যাতো ভবপ্রদাং গেহরতিং ছিন্তি॥ ১১॥
ম্নিব্বিক্রভগবদগুণানাং স্থাপি তে ভারতমাহ কৃষ্:।

শ্রীশরসামী

নতু মহাভারতে হয়া সর্বং শ্রতমেব। কিং পুন: প্রশ্রৈত্তাহ। পরে তৈবণিকা অপরে শ্রাদয়: তেষাং ব্রতানি ধর্মা: মে
মরা অভীক্ষং পুন: পুনত্তবাং শ্রবণে অভ্পুম তৃথা: ম:। চেষাং তৃদ্ধ স্থাবহছাৎ। যন্ত তত্ত কৃষ্ণকথামৃতৌছ: প্রভিতত্তাদৃত্তে
তত্ত্ব ভূলং বৃদ্ধি যিতীতার্থ: ॥ ১০ ॥

ভল হেতৃ: ক ইতি। তীর্থপদ: কফ্স্যাভিধানাৎ কথামূতাৎ সল্লেষ্ স্মালেষ্ স্থ্রিভি নারদাদিভি: ॥ ১১ ॥

মহাভারতস্যাপাত্তিব তাৎপর্বামিত্যাহ। মূনিঃ ক্বফো বেদবাসঃ ভগবদগুণান্ মোক্ষধর্মান্তে নারারণীরোপাধানেন বজুমিছুঃ সন্ অর্থকামাদি বর্ণনন্ত হরিকপারাং মতি প্রবেশার্থমেবেতাাহ যখিরিতি। নৃগাং মতিঃ প্রামাস্থপাস্বাদৈর্বারভূতৈঃ হু নিশিতং হরেঃ কথারাং গৃহীতা নীতা। তত্তক্ষিতিহাস সম্ভব্য। কামিনো বর্ণরন্ কামারোভং ল্কুসা বর্ণরন্। নরঃ কিং ফলমাপ্রোতি কুপেহন্ধমিব পাত্রন্। লোকচিত্তাবভারার্থং বর্ণয়িত্বাত্তন তৌ । ইতিহাসৈঃ পবিত্রাহৈণ পুন্তত্তিব নিন্দ্তৌ। অনাধা

ক্রমসন্দর্ভঃ।

মুনির্বিক্রিভি। যদ্মিন গ্রামাত্রখাত্রবারপ্রার্থার । কৌরবাদীনাং কথায়াং ঐক্তকথাত্রগভেঃ। তদেত হিত্রদা প্রীবাাসা-

ত্রীবিশ্বনাপচক্রবন্তী'।

নৰেতং সৰ্কাং মহাভাৱতে স্বয়া শ্ৰুতমেৰ তথাহ। পৰে দেবাদাঃ অবরে পশাদান্তেবাং ব্ৰতানি স্বভাৰত্তিবাং তৈরত্পুম্ তৃপ্তাঃ মঃ নাথিতৃপাতি কাঠানামিতিবং বঞ্চী। কুলং তৃহুং কিন্তু ষ্ত্ৰুণ কৃষ্ণক্থামৃতৌষ্তাম্ব্ৰাদৃতে। তেম মদ্যন্যা পৃহ্যতে তত্তংস্কাং কৃষ্ণক্থাম্ক সংপ্তৰুমেৰ স্বহা বক্তব্যমিতি ভাৰঃ ৪১০ ৪

নতুকুঞ্কথাপি ত্বয়া বহুশ এব শ্রুতা তত্তাহ ক ইতি। অভিধানাৎ নামত এব কিমৃত কথাড্যঃ। বহা অভিধানাৎ কথন মাত্তাং স্তাব্যাপে পঞ্চমীরং 🖟 ১১ 🏿

মহাভারতস্যাপি বস্তুত্ত বৈব তাৎপর্য্যমিতাহ সুনিঃ কুফো বেদবাাস:। গুণালাসিতি দিতীয়ায়াং বঁটা। যথা উৎকর্ষনি-ত্যাক্ষেণলভাং ৰশ্বিন্ ভারতে প্রায়াজ্পাস্বাদৈং অর্থকাম কথাস্ক্রতনৈন্পাং বিষয়প্রানামপি মডিগ্রীতা ব্যাসেন স্বহতবশীক্ষতা কিমর্থং হরেঃ কথায়াং ভগবলসীতা বালায়শীরোণাধ্যামাদির্ প্রবেশরিভূমিত্যাক্ষেণগমাং। অনাধা প্রমার্থকধামশৃণুস্ক তে তৎস্মীপ সেব নৈবারাজন্ ভত্তক্ষিভিত্যসমৃত্রে । কামিনো বর্ণারন্ কামান্ লোভং লুক্সা বর্ণারন্। নরঃ কিং ক্লমাণ্ডোতি কৃপেহ্দ্ধ-

হে ভগবন্! আমি মহর্ষি বেদব্যাসের প্রমুখাৎ ত্রৈবর্ণিক অর্থাৎ ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য তথা শূদ্রাদি অপর জাতির ধর্মী বারস্বার থাবণ করিয়াছি সভ্য, কিস্কু সে সকল তুচ্ছ স্থাবহ, তাহার প্রবণে তৃপ্ত হইয়াছি আর শুনিতে সভিলায হয় না, পরস্ত ভাহাতে যে প্রীকৃষ্ণের কথা রূপ অমৃতরাশি সূচিত হয় তথিয়ের আমি বিশেষ পরিভৃপ্ত হই নাই, ভাহা শুনিতে সর্ববদাই বাসনা হয়॥ ১০॥

হে মুনে! আপনাদিগের এই সমাজে নারদাদি ঋষিগণ জ্রীক্ষের যে কথা রূপ অমৃতের গুণাসুবাদ করিতেছেন, ভাহাতে কাহারই বা ভৃতি হইতে পার্লে! ঐ কথামূভ এমত আক্ষিত্য যে পুরুষের কর্ণ-রুদ্ধে প্রবিষ্ট হইয়া সংসারকারিশী সৃহাসজিতক ছেদন করিয়া দেয়॥ ১১ ॥

অপর হে মহাজন ! আপনার স্থা মহর্মি বেদব্যার্গও জেনবানের তাণ বর্ণন মানসেই মহাভারত রচনা করেন, তাহাতে অর্থ কামাদির বর্ণন আছে সত্য, কিন্তু তাহার তাৎপর্য্য এই যে আগ্য স্থাসুবাদ যশ্মির্ণাং প্রামান্ত্রামুবাদৈর্ম তির্গ্রীতামু হরে: কথারাং । ১২ ॥ সা প্রদ্ধানস্য বিষদ্ধানা বিরক্তিমন্ত্র করোতি পুংসঃ। হরে: পদানুস্মৃতিনির্তিক্ত সমস্ত ছংখাপ্যয়মাশু ধতে ॥ ১০ ॥ তান্ শোচ্যশোচ্যানবিদোহমুশোচে হরে: কথারাং বিমুখানখেন। কিণোতি দেবো নিমিষস্ত যেযামায়ুর্থাবাদ গতিক্মৃতীনাং ॥ ১৪ ॥

शिवत्रयामी।

খোরস'সার বন্ধহেতু অনস্য তৌ। বর্ণমেৎ স কর্ণং বিধান মহাকাক্ষপিকো মুনিরিতি ॥ ১২ ॥

হরিকণায়াং মতি প্রবেশস্য ফলমাহ সা কথা মতির্জা। জানাত প্রামাস্থাপ ততঃ কিমন্ত আহে হরেরিতি ৫ ১৩ ॥
 এবজুতায়াং কথায়াং যে ন রমজে তানেব শোচ্যা যে তেরামপি শোচ্যান্। তত্ত অবিদঃ ভারতভাৎপর্যানভিজ্ঞান্
শোচ্যান্। যে জারাপি হরেঃ কথায়াং বিমুখা ভান্ তেরামপি শোচ্যানিতি বোজাং। অনিমিবঃ কালো বেরামাযুং ক্লপরতি।
কাত হেডুঃ বুবৈধ বাদগতি স্বত্যা বাগেদহ মনোবাপোরা যেষাং ॥ ১৪ ॥

ক্রমসমর্ভঃ ৷

क्ट्रिंगर ह छीर्था वेनममत्र अव (स्वतः । ১२ ।

ना रहाः कथा। नमस्यवि श्रीहित्राक्षारकारत्वरवि छातः ॥ ১৩ ॥

অঅ অবিধা এব অনা দৃশ্যতে। কেচিশাবেশেন হরিকখায়াং শ্রোভার:। কেচিদনাবেশেন। কেচিত্র বিমুধা এবেতি।

शिविषमायहळावली ।

মিৰ পাত্রন্। লোকচিত্তাবতারার্থং বর্ণয়িত্বাত্র তেন তৌ। ইতিহাসৈঃ পবিত্রাথৈঃ পুনরতৈব নিন্দিতৌ। অনাধা ঘোরসংসার
ৰদ্ধহেতু অনস্য তৌ। বর্ণয়েৎ স কথং বিহান্ মহাকাক্ষণিকো মুনিয়িতি॥ ১২॥

হরিকথায়াং মতিপ্রবেশস্য কলমধিকারিছেদেনাই সা হরিকথা শ্রহ্মধানস্য হরিকথায়ানের পরমপুরুষার্থবৃদ্ধা বিশ্বসতঃ শুল্পভক্ত স্যোজ্যথিঃ অন্যত্ত ধর্মার্থকামনোকের। নতু কথা মোকেণি বিরক্তিং চেৎ করোভি ভতঃ কথা নির্কৃতিঃ সংসারছঃধনাশো বা ভতাহ হরেঃ পদরোরফুম্বৃতিঃ প্রতিক্রণমের মাধুর্যাফুভ্ভিন্তবৈধ নির্কৃত্য শক্ষপরমানক্ষ্যা পুংসঃ সমন্তহঃখো বঃ সংসারতস্যাণি অপায়ং নাশংক্ততাপি আগু শীল্পমের ॥ ১৩ ॥

অত হরিকণায়াং তিবিধা লনাঃ সন্তবন্ধি শ্রদ্ধানা অশ্রদ্ধানা বিমুধাশ্চ শ্রীভাগবভমতে ভক্তে পরমপুক্ষাথকেন বিশ্বসতঃ শ্রদ্ধানা উচাতে। তাবৎ কর্মানি কুবাঁত ন নির্মিদ্যেত হাবতা। মৎকণা শ্রদ্ধানে বা শ্রদ্ধানাতে ইভি। জাওশ্রদ্ধান মৎকণা শ্রিতাদে তথা প্রতিপাদরিব্যনাগদাং প্রদ্ধাধাননাত্রদ্ধেনৰ বিশ্বসত্তাহশ্রদ্ধানাঃ। ভক্তা বিশৈষ প্রদ্ধাধান সিবাধরিদ্বোর্বি বিমুধান্তত্র প্রথমান সাভিনন্দনমূক্ত্য বিতীরাল্সক্তা ভূতীয়ান্ শোচতি। গুরুতক্তির্বে শোচ্যাঃ স্বর্গমানাদি সাধনরতাকৈর পি শোচান্ত্র প্রক্রিক্র্মিক্রাবে বাগাদিমভোহ্বমন্ত্রানিতি ভত্তাহিত্ব প্রতিলি শিল্পান করিবলৈ ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার স্বিদ্ধান করিবলি ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার বিশ্বসত্তাহিত্ব প্রতিলি ভত্তাহিত্ব ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার বিশ্বসত্ত প্রতিলি ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্কার ক্রিক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্কার ক্রিক্রার্ব্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ব্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্ব্রার্ক্রার্ব্রার্ক্রার্ব্রার্ন্ত্রার্ক্রার

ৰারা বিষয় পুরু মনুষ্যদিগের মতি ভগবানের কথায় নীত হইয়াছে ॥ ১২ ॥

যে পুরুষ প্রান্ধতি হয় তাহার সেই মতি বৃদ্ধিশীল। হইয়া প্রান্ধ্য হৈর জি উৎপাদন করিয়া দেয়, তদন স্তর তাহাকে হরিচরণারবিন্দের অমুদ্মরণে আনন্দিত করিয়া আত তদীয় সমস্ত চুঃথ বিনষ্ট করে॥ ১৩॥

হে মুনে। যে সকল ব্যক্তি পাপ বশতঃ ছরিকথায় বিষ্ধ, তাহারাই ভারতাখ্যানের তাৎপর্ব্য গ্রহণে অনভিক্ত, অতএব তাহারা শোচাজনগণের শোচনীয়, তাহাদের নিমিত্ত আমিও শোক করিতেছি। সাহা। কাল তাহাদিগের আয়ুঃ বুধা কর করিতেছে এবং কায়সনোবাক্যের ব্যাপারও রুধা বাইতেছে॥ ১৪ ॥

बिग्हान्त्रकृ

ভদত কোশারব শর্মানাতুর্বরেঃ কথাবেব কথার সারুং।
উক্ত্য পুল্পেন্ড ইবার্ডবন্ধো শিবার সঃ কীর্ত্তরতীর্যকীর্তেঃ ॥ ১৫ ॥
স বিশ্বক্য ছিতি সংখ্যার্থে কৃতাবভারঃ প্রয়ুহীতপক্তিং।
চচার কর্মাণ্যতিপ্রহাণি যানীশ্বঃ কীর্ত্তর তানি মহং॥ ১৬॥
শ্বিক উবাচ॥

এবং স ভগবান্ পৃষ্টঃ ক্ষত্রা কৌশারবো মুনিঃ। পুংসাং নিংত্রেয়দার্থেন তমাহ বহু মানয়ন্ ॥ ১৭ জীমৈত্রের উবাচ ॥

विषद्रश्रामी

তৎ তখাও হে কৌশারব নৈত্রের। অত বিশ্বক শিবার কথাত্ম সারভূতাং ছরিকথানেবোদ্ভা কীর্ত্তর। বখা পুশেভার মধুমধুপ উদ্ধানত তব্যজ্জা ১৫ ।

ৰিশেষতঃ প্ৰীক্ষকণা কণনীয়া ইত্যাশয়েনাহ স ইভি যো বিশ্বস্থান্যৰ্থং পূৰ্ব্বং প্ৰগৃহীতশক্তিঃ স এব পূক্ষেব্ কৃত্বভাৱঃ সন্ পুক্ৰানতিক্ৰম্য বৰ্তমানানি যানি চকার ভানি বিশ্বরাধন । ১৬ ।

भू: माः निः ट्यम्र मरावार्थः व्यवासनः एवन रहकूना शृष्टेः । ১१ ।

ক্রেসমর্ভঃ।

তত্রাবেশিনামনাবেশিনং শোচ্যাং। বিমুখাখনাবেশিনামণীতি পর্যালোচাছ তানিতি। স্পষ্টমেব ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥
তত্র বিশেষতঃ শ্রীকৃষ্ণকথামূরক্তবেহশি বিরহত্ঃধর্দ্ধিখাং সামালাত এব প্ছেতি স বিখেতি। অতএব শ্রীমৈত্রেয়াহশি
তৎকথাং ন প্রস্তাবানিতি জেরং। কৃতঃ সম্প্রভাবতারো বেন সংশ্রীকৃষ্ণোজন্মানার্থে প্রস্থীতশক্তিত্রঃ সন্ বানি চকারেতি
বোজাং ॥ ১৬ ॥

পুংসাং সর্বেরামের পুরুষাণাং বরিংশ্রেয়সং মললং ভজিরপং ভলেবার্বং পুরুষার্থে যক্ত তেন ॥ ১৭। ১৮। ১৯। ২০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

নানাগতি নানা স্ত্যাদিমস্তঃ সভারাং প্রগল্ভতে তবা সবিভারমাত বুংপত্যাদি ॥ ১৪ ॥ ভক্তমাৎ তে কৌশারব ॥ ১৫ ॥

অতে। নিরাকাজ্যপার্থমুক্তলকণানাং মৎপ্রশ্নানামুত্তরং লংক্তেপেণাজ্ব। মধুরেণ সমাপ্রেদিতি ন্যায়েন এক্স্থাব্তারকথৈব বিস্তাব্য কীর্ত্তনীরেত্যাহ ল ইতি ক্বতাঃ পূর্কং পুরুষাদ্বোহবভারা বেন স মহুং মাং প্রসাদ্রিভুং ॥ ১৬॥

ক্ষতা কীদুশেন পুংসাং কলৌ জনিবামাণানাং নিঃশ্রেরসং নিভারএবার্থো যক্ত তেন তস্য জ্ঞীক্ষ্ণপার্থপত্নে কভার্থবাদেবেতি ভাবং ॥ ১৭ ॥

অভএব হে মৈত্রের ! হে আর্ত্তিবনো । ভ্রমর যজ্জপ পুষ্পা সমূহ হইতে মধু আহরণ কুরে, তাহার স্থার নানা কথা হইতে উদ্ধার করিয়া সকল কথার মধ্যে সারস্থতা পুণ্যকীর্ত্তি ভগবানের কথাই বিশ্বের মঙ্গলার্থ আমাদের নিকট কীর্ত্তন করুন ॥ ১৫ ॥

হে মহাত্মন ! বে ক্ষর এই বিষের স্থা ছিতি প্রসারের নিমিত প্রথমে মায়াশক্তি অবলম্বন করিয়াছিলেন, তিনি লোক মধ্যে অবভার গ্রহণ পূর্বকি যে সকল লোকাতীত কর্ম করেন তৎ সম্পায়ও বর্ণন করেন॥ ১৬ ।

শুক্দের কহিলেন মহারাজ ! সেই ভগবান্ মৈত্রেয় মূনি এই শ্লাপে পুরুষ সকলের মঙ্গলমাত্র প্রয়োজন হেছু বিচুর কর্তৃক জিজাসিত হইয়া তাঁহাকে বহু সম্মান ক্রমত কহিতে লাগিলেন ॥ ১৭ ॥

সাধু পৃষ্ঠং তথা সাধো লোকান্ সাধ্বস্গৃহুতা। কীর্তিং বিতৰতা লোকে আন্ধনোহধোকজান্ধনঃ ॥ ১৮ নৈতচিত্রং তথ্য কত বাদরায়ণবীর্যজে। গৃহীতোহনগুভাবেন যব্যা হরিরীশরঃ ॥ ১৯ ॥ মাগুরাশাপান্ধগবান্ প্রজাসংঘমনো যমঃ। আতৃঃ কেত্রে ভূজিষ্যায়াং জাতঃ সভ্যবতীত্বতাং ॥২০ ভবান্ ভগবতো নিত্যং সম্মতঃ সাকুগদ্য হ। যদ্য জ্ঞানোপদেশায় মাদিশন্তগবান্ ব্রহ্মন্॥ ২১ ॥ অব তে ভগবল্লীলা যোগসায়োকরংহিতাঃ। বিশ্বন্থিত্যন্তবান্ধার্থ বর্গাম্যস্পুর্বশং॥ ২২ ॥

জীমতাগবভদ্।

Beggial

বহুমানমেবাহ সাধ্বিতি পঞ্জি:। অধোক্ষ এবাত্মা মনো বস্য তন্তাত্মন: শ্বন্ত কীৰ্ত্তিক প্ৰসন্ধায়িতৰতা । ১৮ । ছবিৰ্বালগৃহীত এতচ্চিত্ৰং ন ভবতি কুতঃ বাদবায়ণবীৰ্যালে । ১৯ ।

নসু তহি কথং শুল্লখং কথক লোকাস্থাহকৰং ত্আহ মাওবাশাপাদিতি। আতুর্কিচিত্রবীর্যাত কেলে কেল্লেখন সীক্ষতারাং ভূজিবাারাং দাতাং যম এব ছং লাতোহসি॥ ২০॥

কিঞ্চ ভবানিতি কুতঃ যক্ত তব জ্ঞানোপদেশায় মামাদিইবান্। চকারাৎ শ্বরমণি শ্বতৈ গ্রেপদিইবানিতি ॥ ২> ॥ বিশক্তিগাদয়ঃ শর্থে। বিবরো বাসাং তাঃ ॥ ২২ ॥

व्याप्तममार्खः।

সামুগক্তহ যজ্ঞানাদেশায়ত মামাদিশত্তগবানজ ইতি সম্বন্ধোজিপাঠ: ॥ ২১ । ২২ ॥

এবিশনাপচক্রবর্তী।

অধোকজ্ঞৰ আত্মা মনো যত তত্ত আত্মন: বত ॥ ১৮॥

ৰবোভদাশ্চৰ্যাং বতো বাদ্যাদণত বীৰ্যাজ্জাতে ৰভণ্চ গৃহীত ইত্যাদি ॥ ১৯॥

ন মং প্রাক্তা লোকস্থানহং পরিচিনোম্যেবেতাার মাওব্যেতি ত্রাতুর্বিচিত্রবীর্যাপ্ত ক্ষেত্রে ক্ষেত্রখন স্বীকৃতারাং ভূলিবাারাং দাতাং ॥ ২০॥

ন কেৰণং বৰদেন স্মধিকত ভক্তএৰ কিন্তু ভগব্যিত্যপাৰ্শদে। হিল প্ৰকাশান্তৱে ভবদীত্যাহ ভবানিতি মা মাং এজন্ বৈকুঠং গছেন্॥ ২১॥

তত্ত্ব প্রথমং যথা সমর্জাগ্র ইনং নিরীহ ইতি তৎপ্রশ্নভোত্ত্রবন্ত্বন পুক্ষাবভারলীলাং বচ্বীভাহি। যোগমায়াত্ব রূপশক্তিবৃত্তি বিশেষঃ তয়া উপস্থংহিতা আংশমায়াত্বারা বিভারিতাঃ বিশ্বন্ধিত্যাদয়ঃ অর্থা বিষয়া যাসাং তাঃ মায়াশক্তেযোগামায়াংশভূত হুভ নারদপঞ্চরাত্তে দৃষ্টিয়াং ॥২২ ॥

হে বিছর। তুমি পরম ধন্য, উত্তম কথা জিজ্ঞাদা করিয়াছ, তাহাতে লোকের প্রতি এবং আমার প্রতিও অমুগ্রহ বিস্তার করা হইল, না হইবেই বা কেন ? তুমি দামান্য ব্যক্তি নহ, অধোক্ষজ ভগবানে স্বদীয় মন: দর্মদা দমর্শিত আছে॥ ১৮॥

আহে বিহুর ! তুমি যে অন্য ভাবে ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণকে গ্রহণ করিয়াছ, তোমাতে ইহা আশ্চর্য্য নহে, কারণ ভগবান বেদব্যাদের ঔরদে তোমার জন্ম হইয়াছে ॥ ১৯ ॥

তুমি পূর্ব্ব জন্মে প্রজাসংহারক যম ছিলে, মাওব্য মুনির শাপে বিচিত্রবীর্য্যের ভার্য্যান্থরূপে পরি-গৃহীতা দাসীর গর্প্তে সভারতীনন্দন ব্যাসদেবের উরসে ভোমার জন্ম হইয়াছে । ২০ ৪

তুমি ভগবানের অধিকৃত ভক্ত, ভগবান তোমাকে স্বয়ং তত্ততান উপদেশ করিয়াছেন এবং মর্ত্ত্তীলা সম্বরণ করিয়া বৈকৃষ্ঠ গমন কালীন তোমার এবং সমুচর বর্গের ঐ জ্ঞান স্মরণ করিয়া দিবার নিমিত আমাকে আদেশ করিয়া যান # ২১ #

যাহ। হউক, একণে আমি তোমার নিকট ভগবানের লীলা দকল আমুপুর্বিক বর্ণন করি, ঐ দকল লীলা যোগনায়া বারা অতি বিস্তীর্ণা হইয়াছে এবং বিখের সৃষ্টি হিতি লয় এই দমস্তই লীলার বিষয় ॥২২ ভগবানেক আদেদনতা আত্মাত্মনাং বিজ্য়। আত্মেজ্যুকুগতাবাত্মা নানামত্যুপলকণঃ ॥ ২০ ॥ স বা এব ভদা দ্ৰন্তী নাপশুদ্ৰশুমেকরাট্। মেনেহসন্তমিবাত্মানং হুপ্তশক্তিরহুপ্ত দৃক্॥ ২৪ ॥

अध्यक्षामी ।

ভত্ত স্টেশীলাং বর্ণরিজুং ভতঃ পৃর্বাবস্থাসাহ। ইলং বিষং অগ্রে স্টেঃ পূর্বং পরমান্তা ভগবানেক এবাস আসীং। আজুনাং জীবানাং আত্মা স্বরূপ: বিজুং স্থামীচ। নানানুই দুশাাত্মকং কিঞ্চিলাসীং। কারণাত্মনা সন্ত্বেপি পৃথক্ প্রতীত্যভাবাদিত্যাহ ক্ষানা মত্যপলক্ষণ:। নানা জই দুখাদি মতিভিনে গি লক্ষাতে ইতি তথা। বহা অকার প্রস্লেহং বিনৈবায়মর্থ:। বং স্টে নানা মতিভিরূপলক্ষাতে স তদাএক এবাসীদিতি। কুতঃ আত্মেজা বা মারা তস্যা অনুগতৌ লয়ে সতি। বহা আত্মন একাকিথেন অবস্থানেজারামন্ত্রাধামিত্য গ্রেহ

তত্ৰ প্ৰথমং মাৰোত্তৰ প্ৰকাৰমাই ৰাজ্যাং। স বৈ তেওা সন্ দুশাং নাপশাং যত একরাট্ একএব তদা প্ৰকাশতে তদা আলানং

'ক্রমসন্দর্ভঃ।

অধ তৎ গ্রাথিতদীলাকথাং কথমন্ত্রের শ্রীভগবদাদিইচত্ঃলোকীজ্ঞানং বিবৃত্যাহ ভগবানিত্যাদি অশেব সংক্রেশশমং বিধ্বে ইত্যাল্যন্তেন এছেন। অথ কথাক্রমান্ত্রেনেন চত্র্র মিথা বিপর্যায়েণ বক্তব্যাঃ। তক্র, অহ্মেবাস্মেবাবো নাত্রান্ত্র সদস্ব পরং। ইত্যপ্তিভার্থং স্টেলীলোপক্রমেণ দর্শন্নতি ভগবানিতি ছাভ্যাং। ইদং বিখং প্রুবাদিশার্থিবপর্যন্তং তদানীমেকাকিনা হিতেন কগবতা সহৈকীভ্রাসীদিত্যর্থং আত্মনাং শুরুজীবানামিপ রশ্মিষাদীয়ানামান্ত্রা মঞ্চলস্থানীয়ং পরম্পত্রপং। নচ তত্রাপ্যান্যভারতি বত আ্যা পরং বিশ্বস্থান ইতি তক্র স্বাংশানামপ্যংশিদ্ধং দর্শিতং। বন্ধাভিন্নক। কদা আত্মেছা তত্র স্থানীছা ত্রাহ্রাপ্যান্ত্রাহ বিশ্বস্থানিত্যর্থঃ। নহ বৈকুঠাদি বহুবৈভ্রেপ সতি কথমেক এবাসীৎ তক্রাহ বৈকুঠাদি নানামত্যাণি স এবৈক উপলক্ষ্ত ইতি। দেনাসমেত্রভেশ্বি রাজানে প্রধাতীতি বং ॥ ২০ ॥

कृष्ठाः विचः नाश्रथः उन्नर्गनाकावात्मव उद्योनमात्रीनिष्ठार्यः । ख्याचानः चाचाः भः शूक्तमि व्यवस्थित दगतन एकत्मन

बीविश्रमाथठकवर्शि।

সবৈ নিশ্চিতং দ্ৰটা প্ৰকৃতীক্ষণকৰ্ত্তা পূক্ষৰ তদা স্ট্যাৱস্তকালে দৃশাং স্টাৰ্থং দ্ৰট্টৰাং প্ৰধানং নাপশ্যং। ততশালানং সংবিবালস্ক্ৰমণি অসম্ভন্মৰ মেনে গৃছিণীং বিনা গৃহস্থ ইবেতি কাব্যৱীজ্যোক্তিঃ। যথা উৎপৎস্যমানং আল্লান্ধ সমষ্টিবিৱালং স্বিন্ত্সন্ত্ৰণেশ সন্তম্প্যসন্ত্ৰমেৰ মেনে প্ৰকৃতীক্ষণং বিনা তস্য প্ৰাক্ট্যাস্ভ্ৰবাদিতি ভাষঃ। নমু দুট্টোৰ ভোগ্যা সা কাস্তা মালা-

জীবগণের আত্মা শ্বরূপ এবং সকলের স্বামী সেই পরমাত্ম। যিনি স্পৃত্তিকালে নানা বৃদ্ধিতে উপ-লক্ষিত হয়েন, তাঁহার আত্মমায়। লীনা হইলে, স্পৃত্তির পূর্বে এই বিশ্ব একমাত্র ভগবৎ শ্বরূপ হইয়াছিল অর্বাৎ তৎকালে দ্রুটা বা দৃশ্র কিছুই ছিল না । ২৩ ।

সে সময় একমাত্র তিনি প্রকাশ পাইয়াছিলেন, হতরাং স্বয়ং দ্রন্থী হইলেও অভ দৃশ্য কিছুই দেখিতে পান নাই, অতএব মায়াদি শক্তি লীনা হইয়া থাকাতে দৃশ্য এবং দ্রন্থীয় অভাবে আপনি যেন সা বা এততা সংশ্ৰেষ্ট । শক্তিঃ সদসদান্ত্ৰিকা। মায়া নাম মহাভাগ যৱেদং নিৰ্দ্ধমে বিভূ: । ২৫ ॥ কালবৃত্যাভূ সায়ায়াং গুণম্যামিধাক্ষকঃ। পুৰুষেণাত্মভূতেন বীৰ্য্যাণত বীৰ্য্যাণ বিভিন্ন

द्ये बत्रवामी ।

অসক্ষমিব মেনে। দুশাভাবাদু ই ৰাভাবাৎ তদাহ হথা মারাল্যাঃ শক্তবো বস্য সং। নত্সস্তমেব মেনে। বতঃ অফ্থা দৃক্ চিছেকিবলৈতি ॥২৪॥

সা বৈ জাই দৃশ্যাসুসন্ধান রূপা। সদস্দান্থিকা কার্য্যকারণ রূপা। যথা সং দৃশ্যং অসং অদৃশাঃ আত্মা স্বরূপং ভরোরাত্মা বস্যাঃ তস্যাঃ তহুভরাসুসন্ধানরূপতাং ॥ ২৫ ॥

কালবুল্ঞা কালশক্তা। গুণম্যাং ক্তিত গুণায়াং অধোকজঃ প্রশ্বাথা। আত্মাংশভূতেন প্রধেশ প্রত্তাধিষ্ঠাত রূপেণ। বীর্যাং চিদাভাসং আধন্ত। বীর্যাধান্ চিছেক্তিযুক্তঃ ॥ ২৬ ॥

ক্রমসন্ধঃ।

নাপশুদিভার্ণ:। শক্তিম্বারা। দৃক্ চিছেজিঃ অরপভূতান্তরজনজিরিভার্গ:। একরাট্সর্বাধিকারী । ২৪ ।

শশ্চাদহং ব্দেড্ডেড্ডাস্যাৰ্থ কথয়ন্ স্ট্রাপ্র্জং বহির্দশক্তাশুর্মাহ সেতি শক্তিখেন নিমিত্রপদ্ধং সদসদাত্মকদ্বোপা-দানরপদ্ধাংশতো বাঞ্জিলঃ ৪২৫ ল

স্টিনাহ কালবুভোতি। ভগবানেক আসেদমিতি পূর্ব্বোক্তাৎ আখোক্জো ভগৰান্। পূক্ষেণ প্রকৃতিন্ত্রী। আস্তৃতেন সাংশেন হারভূতেন। কালোবুভির্যস্যাং ভরা মাললা নিমিতভূতরা ভণমব্যাং মাললাং অব্যক্তে। বীর্যাং জীবাধানাধত। হত্তেমা তিলো দেবতা ইত্যাদি শ্রুতেঃ ৪২৬ ৪

विविन्नाषहकव ही ।

ভক্ত ভণা কীদৃশাদীত্ত্রাহ। স্থা স্বাপ্রভী শক্তিশালা যদা সং দহি স্থাপ্রভী কারা সংভ্রাভ ইতি ভাবং। কিঞ্ তদ্যানলার্থ-নন্যাঃ স্থত্য। বহর্যের কারা আগ্রত্য এব বর্গন্ত ইত্যাহ। স্বস্থা দৃশন্চিছ্নতিত্ত্ত্রে। লক্ষ্যাদ্যা যদ্য সং। তদ্শি বিশ্বস্ট্যাদ্যর্থং বহিরলা ত্র্ত্যাপি মায়াশক্তিম্বদানীম্পেক্তিত্বৈয়েক্তি ভাবং॥ ২৪॥

ততত তদিক্ষা সামায়াশক্তিতাৰা জলাগারেতাহে সা প্রসিদা বৈ নিশিততং সদস্দাত্মিকা কার্যাকারণরপা ইনং বিখং বিভূ:

मात्राकर्त् त्राक्षिभूक्षत्रतानिशासी महादेवक्ष्ठेनात्वा क्षत्रवादम्य त्रक्षकात्रविद्यात्रवाद्यक्षविक स्वत्र त्र त्र त्र त्र त्र विद्याचार्या क्ष्याविक स्वत्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र विद्याचार विद्याच विद्याचार विद्याचार विद्याचार विद्याचार विद्याचार विद्याचार विद्याचार विद्य

অভাব করিয়া মানিতেন, কিন্তু চিচ্ছক্তি দেদীপামানা ছিল,ইহাতে আপনি একেবারে নাই এমত বোধ করিতে পারেন নাই ॥ ২৪ ॥

দ্রকী স্থান পরমেশরের দ্রক্তি দৃত্যাসুসন্ধান রূপা সেই শক্তি কার্য এবং কারণ উভয় স্থান। তে মহাভাগ। ঐ শক্তিরই নাম মায়া, ভগবাস্ তাঁহার বারাই এই প্রত্যক্ষ পরিদৃত্যমান বিশ্ব নির্দাণ করিয়াছেন॥ ২৫॥

অর্থাৎ চিচ্ছক্তি যুক্ত পরমাত্মা কালশক্তি বশতঃ গুণকোভযুক্ত মায়াতে আমার অংশ স্বরূপ যে পুরুষ, প্রকৃতির উপরে অধিষ্ঠান করিয়াছিলেন ভদারা বীর্য্য অর্থাৎ চিদাভাদ আধান করেন ॥ ২৬ ॥ ততোহভবন্মহতত্ত্বন্যক্তাৎ কালচোদিতাৎ। বিজ্ঞাৰাজাল্পদেহত্বং বিখং ব্যঞ্জংগুমোমুদঃ। ২৭ ॥ সোপ্যংশগুণকালাজা ভগবন্ধৃষ্ঠিগোচরঃ। আত্মানং ব্যকরোদালা বিশ্বস্থাস্ত দিস্ক্রা॥ ২৮॥ মহতত্ত্বাভিক্র্ব্যাণাদহংতত্ত্বং ব্যজায়ত। কার্য্যকারণ কর্ত্রাজা ভূতেন্দ্রিয়মনোময়ঃ॥

विषत्रशमी।

কালপ্রেরিভার্দব্যক্তাৎ মায়াতঃ তত্বপদং পরিভাজা মহতো লক্ষণং অতঃ পুংলিক্সনির্দেশঃ। বিজ্ঞানাত্মতি সত্বর্থধানত্বাৎ।
-পদেহতং বিখং উচ্ছুন বীজগতমত্মরাদি রূপং বৃক্ষিব বাঞ্জয়ন প্রকাশরন্। যতোহনৌ তমাহদতীতি তমাহৃদঃ। তত্কং সাত্মতভয়ে। বিফোল্প ত্রীণি রূপাণি পুরুবাধ্যান্যথো বিজঃ। প্রুপমং মহতঃ স্রষ্টু বিতীয়ং অওশংস্থিতং। তৃতীয়ং সর্বভৃতভং তানি
ক্রান্তা বিষ্চাতে ইতি ॥২৭॥

অহকারোৎপত্তিমাল লোগীতি সার্ক বাভ্যাং। অংশ-চিদাভাসো নিমিত্তং গুণ উপাদানং কালঃ কোভকং। তদায়া তদ্ধীনং। তগবানু স্কাধ্যক্ষঃ তদ্ধিগোচর: সন্ অয়মাখানং বাকরোৎ রূপান্তর্মনয়ৎ । ২৮ ॥

অহরারত লকণনাহ কার্যামধিভূতং। কারণমধাাঝং। কর্তৃ অধিলৈবং। তেবাং আঝা আশ্রয়:। অত হেতুং। ভূতে ক্রির মনোমরঃ তরিকারবান। মন ইতি দেবানামপুণলকশং। এতদেব বিভাগশং প্রণক্ষতি বৈকারিক ইত্যালিন। বৈকারিক

क्रमममर्छः।

তত ইতি। বিজ্ঞানাম্মকেইপি পদার্থ: সম্ভবং। তদেব নামা মহত্তমিতি। তমোহদঃ প্রদর্গভাজ্ঞানধ্বংসক্রা ১২৭॥
সোহণীতি। তগ্বান্ এতদংশ: পুফ্বঃ। আ্থা বিজ্ঞানাথের সিস্ক্রেভ্যোপচারিক্ষেব। নদী কুলং পিপতিব্তীতিব্ধ ॥২৮
মহত্তাদিভার্দ্ধ । ২১॥৩•॥

बिविधनाधहत्त्वको ।

পুরুষাধিষ্ঠানেন লব্ধ চেতনায়া নায়ায়া অভালয়েরিংশভৌ ভাগের কার্যাকারণভাবেনোংশংভমানের প্রথমং মহতব্র ক্রাছ তত ইতি। অব্যক্তাং মায়াতঃ কীলুলাং কালচোলিভাং অত্থাকু চিতকালপ্রাণিতবিক্তেঃ। তত্বপদং পরিভাল্স মহতো লক্ষণমাহ বিজ্ঞানাল্মা স সহান্ সন্থাংশপ্রাধান্যেন বিশিষ্টজ্ঞানম্বরণঃ সন্ধানহের চিতকাপেণ বোহংশেন বর্জত ইত্যর্থঃ। আদেহত্বং বিশং উচ্চুনবীলগভমসুরালিকপং বৃক্ষবি ব্যঞ্জন প্রকাশস্বন্ বতোসৌ তমাহলঃ প্রশারণভাজ্ঞান ধ্বংসক্র তিছো রজোহংশ প্রাধান্যে সভি ক্রিয়াশক্ষা মহতব্যভেদঃ স্বভন্মভৃদিভাপি জ্বেরং ॥ ২৭ ॥

ত মোহংশপ্রাধান্যে সভাহতারে পিতিমাত সোণি মহান্ অংশঃ প্রবঃ বীর্বাং জীবশক্তি প্রবঃ প্রক্রাংশাঃ স্থালাঃ কাল্প তত্ৎপত্যাপ্রোগী তৈরেব কারণৈরাভ্যা সক্রণং বস্য সঃ। ভগবতো দৃষ্টিরিছ্যা ভবিষয়ীভূতঃ সন্ আভানং সং ব্যক্রেংৎ রূপান্তর মনরৎ কীদৃশঃ বিশ্বভাভ জনিক্সাশভ আভা আন্রাহ্য ২৮ ৪

विकूर्सागार विकित्रगांगार ।

অহকারভ লক্ষণনাত্ত কারিশবিভূতং কারণমধ্যায়ং কর্ত্ত অধিবৈদ্ধং তেবাদাকা আশ্রমঃ। তত্ত হেতুঃ ভূতেক্রিয়ননোমরঃ ওবি-

তদনস্তর কাল প্রেরিত অব্যক্ত অর্থাৎ নায়। হইতে মহন্তবের স্থান্তি হইল, তাহাতে বিজ্ঞানাত্রা এবং তমোনাশক পরমেশর, উচ্চুন বীক্ষ যেমন অঙ্কুরাদি রূপে বৃক্ষকে প্রকাশ করে, তদ্রুপ স্থান্ত্র্থ বিশ্বকে প্রকাশ করিলেন ॥ ২৭ ॥

খনস্তর সেই মহন্তক ভিদাভাস, ত্তপ এবং কাল এই তিনের অধীখন হইয়া সর্বাধ্যক ভগবানের দৃষ্টিগোচর হওত এই বিশের সম্মনাভিনাবে আপনাকে রূপান্তর প্রাপ্ত করাইল॥ ২৮॥

অর্থাৎ মহতত্ত্ব বিকার প্রাপ্ত হইলে অহকার তত্ত্বের উত্তব হইল, সেই অহকার কার্য্য (অধিভূত) কারণ (অধ্যাত্ম) কর্ত্তা অর্থাৎ অধিদৈব এই ভিনের আপ্রায়, যে হেডু ভাহা ভূত, ইন্দ্রিয়, মনঃ এই বৈকারিক**ত্তৈজ্ঞদ**শ্চ তামদশ্চেত্যুহং তিথে। । ২৯ ॥ অহংতত্ত্বান্তিকুর্ব্বাণান্মনো বৈকারিকাদভূ**ং । বৈকারিকাশ্চ যে দেবা অর্থাভিষ্যঞ্জনং যতঃ ॥ ৩** ॥ তৈজ্ঞদানীব্দ্রিয়াণ্যেব জ্ঞানকর্মময়াণিচ ॥ ৩১ ॥ তামদো ভূতসূক্ষাদি র্যতঃ থং লিঙ্গমাত্মনঃ ॥ ৩২ ॥ কালমায়াংশ যোগেন ভগববীক্ষিতং নভঃ । নভদোহ্যুস্ততং স্পর্শং বিকুর্ব্**রিশ্মমেহ্নিলং ॥ ৩৩ ॥**

वीपत्रवामी।

সাত্ত্বিক: তৈজ্পো রাজস: । ২৯ ॥

দেবাশ্চ বৈকারিকা বৈকারিককার্যাভূতা ইতার্থ:। যতো বেডা ইক্রিয়াদ্যধিষ্ঠাভূড্য: অর্থাভিবাঞ্জনং শব্দাদি**প্রকাশ্যে ভব্তি । ৩০** তৈজ্বানোবেত্যস্বয়:। জ্ঞানেন্দ্রিয়াণাং জ্ঞান্যয়ানাং সাধিকত্ব শক্ষামাভূদিতোবকার: ॥ ৩১ ॥

তামসো ভূতস্ক্ষত শক্তাদি: কারণং যতঃ শকাৎ থমাকাশং ভবতি আয়েনো লিকং অগুণ শক্ত রূপেণ প্রমাপকং স্ব্যাকাশ-তয়া বা যবা লিকং শরীরং আকোশশনীরং একেতি শ্রুতেঃ ॥ ৩২ ॥

নভনঃ স্বস্থাদহস্তং উভুতং স্পর্শং বিকুর্মৎ রূপান্তরং নয়ৎ অনিলং বায়ুং এবং সর্মাত্র হারা ভূতোৎপত্তিরিতি জ্ঞাতবাং 🗝 🗢

ক্রমগন্ধ:।

रिजनानी जि ॥ ०১॥

আালুন: পরমালুন:। ততা বিকং বোধকং। তথাছা এতখাছালুল: আকাশ: সংভূত ইতাতা: ইততেজভারা তথােধকছাৎ ॥৩২ অপ্নং পশালুকং ভূতস্কুরপং বায়ুমিতাহাঁ। এবমূত্রেজাপি॥৩০।৩৪॥৩৫॥

শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবন্তী।

কারবানু মন ইতি দেবানামপাপলকণং। এতদেব বিভলা বক্তুমাহ বৈকারিক: সালিক: তৈলদো রাজস: ॥ ২৯ ॥

বে দেবা দিগাদ্যা তেহপি বৈকারিকাঃ বৈকারিকজন্যাঃ যতো বেভ্যোদেবেভ্য ইক্সিরাধিষ্ঠাতৃভ্যোহর্থাভিব্যঞ্জনং শব্দাদিপ্রকাশো ভবতি ॥ ৩০ ॥

ইল্লিয়াণি তৈল্পান্যেবভাষ্য:। জ্ঞানেলিয়াণাং জ্ঞানম্যানাং সাত্ত্বিকভাশকা নাভূদিভোবকার: ॥ ৩১ ॥

ভামসো ভৃতস্ক্রস শক্ষাদিঃ কারণং। যতঃ শকাৎ থমাকাশো ভব্তি আত্মনঃ প্রমেশ্রস্য শিকং স্বত্তগশক্রণেশ প্রকাশকং। যথী। তথাৰা এতথাৰাত্মনা আকাশা সংভৃত ইতি শ্রুতেরাত্মকার্য্যাদাত্মক্রাণকং॥৩১॥

নভ: কর্ত্নভদ: স্থাদ্যুস্তং উদ্ভং স্পর্ণ: বিকুর্মৎ রূপান্তরং আংশেরৎ দ**ং অনিলং নির্ণামে। এবং দর্মত ভ**নাত শারা ভূতোৎপত্তিরিতি জ্ঞেয়ং॥ ৩০॥

তিনের বিকার বিশিষ্ট। অতএব ঐ অহস্কার তিন প্রকার হয়, সাজ্মিক রাজ্ম এবং তামদ ॥ ২৯ ॥ সাজ্মি অহস্কার বিকার প্রাপ্ত হইলে তাহা হইতে মনঃ উৎপদ্ম হইল। দেবগণ এবং যে সকল ইন্দ্রিন মাদির অধিষ্ঠাতৃ দেবতা হইতে শব্দাদি বিষয় প্রকাশ পায়, তৎসমুদায় ঐ সাজ্মিক অহস্কারের কার্য্য অর্থাৎ সাজ্যিক অহস্কার হইতে ঐ সকল উৎপদ্ম হয়॥ ৩ • ॥

কিন্তু জ্ঞানেন্দ্রিয় ও কর্মেন্দ্রিয় এই ছুই প্রকার ইন্দ্রিয়ই রাজন অহঙ্কানের কার্য্য অর্থাৎ রাজন অহঙ্কার বিকার প্রাপ্ত হইলে তাহা হইতে এই ছুইয়ের স্প্তি হয় ॥ ৩১ ॥

শব্দের কারণ যে তামন অহস্কার তাহা বিকার প্রাপ্ত হইলে তাহা হইতে শব্দ উৎপন্ন হইল, প্র শব্দ হইতেই আকাশের উদ্ভব হয়, তাহাই আত্মার লিক অর্থাৎ শরীর ॥ ৩২ ॥

তদনন্তর কাল এবং মায়ার অংশ যোগে ভগবান্ আকাশের প্রতি দৃষ্টি করেন, তাহাতে সেই আকাশ

হইতে উদ্ভ স্পর্শ, রূপান্তর প্রাপ্ত হইয়া বায়ুর স্প্তি করে, অর্থাৎ আকাশ হইতে স্পর্শ তন্মাত্র দারা

অনিলের জন্ম হইল ॥ ৩০ ॥

40

অনিলোহপি বিক্রবিণো নভদোর বলান্বিতঃ। সসজ্জুরপত মাত্রং জ্যোতিলোক স্থা লোচনং।
অনিলেনান্বিতং জ্যোতিবিক্রবিৎ পরবীক্ষিতং। আধন্তাভোরসময়ং কালমায়াংশযোগতঃ।
জ্যোতিষান্তোহকুসংস্ফ বৈক্রবিভূম বীক্ষিতং। মহীং গন্ধগুণামাধাৎ কালমায়াংশযোগতঃ। ৩৪।
ভূতানাং নভ আদীনাং যদযন্তব্যাবরাবরং। তেষাং পরাক্সংসর্গাদ্যধাসংখ্যং গুণান্ বিহুঃ। ৩৫।
এতে দেবাং কলা বিফোঃ কালমায়াংশলিঙ্গিনঃ। নানাত্বাহ স্বক্রিয়ানীশাঃ প্রোচুঃ প্রাঞ্জলয়ো বিভুং। ৩৬

मीशतकामी।

न छत्रा त्रहिष्ठः चत्रः (ठाक वर्गाविष्ठः। एटा (कार्षिः त्राठनः श्रेकांभकः॥ ७८ ॥

হে জব্য বিহুর ভাবাবেরাবরমিতিপাঠে ভাবাং কার্যাং যাধানবরমবরং কার্যাং তেবাং কার্যাণাং পরৈ: কারণৈ: অমুসংস্পাদির-রাৎ। যথা সংখ্যং যথাক্রমং। উত্তরোক্তরমধিকান্ গুণান্ বিহুং। তথাহি নভসং শব্দ এব গুণঃ অক্সাহ্যাভাবাং। বারোল্ক স্পর্শং আকাশায়য়াং শব্দত। এবং তেজস ভৌচ রূপঞ্চ। অক্সমন্তানি রস্চ। মহাঃ সর্ব্ধে॥ ৩৫॥

দেবা মহদাদ্যভিমানিন: বিফো: কলা অংশা: কাললিখং বিকৃতি:। মায়ালিখং বিকেপ:। অংশলিখং চেতনা। তানি

ক্রমসন্দর্ভ:।

ভদেবং পাদত্তয়ার্থোদর্শিতঃ। যোহবিশিষ্যেত সোহস্মাহ্মিতি তু ভগবানেক আসেদ্মিতানেইনব দর্শিতঃ। এবং প্রথম

এবিখনাথচক্রবর্তী।

নভদা সহিতঃ অয়ং চোরবলাবিতঃ রূপতকাজাও জ্যোতিরভূৎ লোক্ত লোচনং প্রকাশকং ॥

রদমরং রদগুণং অন্তঃ আধিত অ**স্তাৎ**॥

স স্টং সংযুক্তং ॥ ৩৪॥

হে ভব্য বিহুর ভাব্যেতি পাঠে ভাব্যং কার্যাং নভ আদীনাং মধ্যে যদ্মদ্বসম্বরং বাষ্। দিকং তেষাং কার্যাণাং পরিঃ কার-গৈরস্থান্দ্রগাং অষ্যাং যা যা সংখ্যা তথা গুণান্ বিহুরিতি। যথাসংখ্যানিতি বীঞ্চায়ামবায়ীভাবঃ তেন বায়োরেকং নভ এব কারণ মিতি বক্ত কারণায়িভয়ে বিমুসংখ্যোতি হৌ শব্দশাশা গুণো। এবং তেজসো হৌ নভোবায়ু কারণে ইতি ভদ্মিতহে স্বস্য ত্রিম্ব সংখ্যেতি তার এব গুণাঃ এবমন্তস্পত্যারঃ পুথিবাাঃ পঞ্চ ॥ ৩৫ ॥

নবেতে মহদহকারাদয় এব সৈও বৈবঁদা অর্থনরকাদিয়ু মৃত্ঃ কিপজো জীবান সংসারমন্তি তদনী নির্ভে ভারি। সর্বাধা

পরে মহাবলশালী বায়ু আকাশের সহিত বিকার প্রাপ্ত হইলে তাহা হইতে রূপ তশাত্র দারা তেজের উদ্ভব হইল, দেই তেজাই সকল ভ্বনের প্রকাশক। তৎ পশ্চাৎ সেই তেজাঃ বায়ুর সহিত যুক্ত হইয়া ভগবানের দৃষ্টিগোচর হওত বিকার প্রাপ্ত হইল, তাহাতে কাল ও মায়ার অংশ যোগে রস তশাত্র দারা জলের উৎপত্তি হইল। তাহার পর তেজোহমুসংস্ফ ঐ জল ভগবান্ কর্তৃক নিরীক্ষিত হইয়া পূর্বোক্ত প্রকারে অর্থাৎ কাল ও মায়ার অংশযোগে গদ্ধতশাত্র দারা ভূমিকে উৎপদ্ম করিল ॥৩৪

হে ভব্য! আকাশাদি পঞ্জুতের মধ্যে যে যে ভ্ত ক্রমশঃ জঘল্লক তাহাদের সহিত ক্র্য কারণের ক্রমশঃ সম্বন্ধ থাকাতে, উত্রোভর তাহাদের অধিক গুণ হইয়াছে অর্থাৎ আকাশের সহিত অল্য কোন ভূতের সম্বন্ধ না থাকাতে তাহার এক শব্দমাত্র গুণ, বায়ুর সহিত আকাশের সম্বন্ধ থাকাতে তাহাতে আপনার অসাধারণ গুণ স্পর্শ এবং শব্দ এই ছই গুণ আছে। তেকে আকাশ ও বায়ুর সম্বন্ধ থাকাতে আপনার অসাধারণ গুণ রূপ এবং শ্পাশ ও শব্দ এই তিন গুণ ধারণ করে। জলে আকাশাদি ভূতত্রের অমুপ্রবেশ থাকাতে তাহাদের ক্র গুণ শব্দ, স্পর্শ, রূপ এবং আপনার অসাধারণ গুণ যে রস এই চতুষ্টয় আছে। ভূমিতে আকাশাদি ভূত চতুষ্টয়ের অমুপ্রবেশ হেতু তাহাতে কারণের গুণ শব্দ, স্পর্শ, রূপ, রস, এই চারি এবং আপনার অসাধারণ গুণ গন্ধ এই পাঁচ গুণই আছে। ৩৫ ॥

टर महाभाग । छक महनानित्र অভिमानी त्मवङा नकल विकृत यान, छाहाता कालिल व्यर्था

बिरमवा छेह: ॥

ননাম তে দেব পদারবিন্দং প্রশিষ্ণতাপোপশ্যাতপত্তং। যশ্মুলকে চা যতয়োগুদোরুদংসারতঃধং বহিরুৎক্ষিপন্তি । ৩৭॥

विषयपामी ।

বিদাতে বের্। অতঃ সমথেন নানাছাৎ পরস্পরাসম্মাৎ আফিছারাং ব্রহ্মাশুরচনারাং অনীশা অশক্তাঃ সন্তঃ বিভূং পরমেশ্রং গোচুঃ ॥ ৩৬ ॥

মিথশ্প জিফবো দেবা ন মিলস্কঃ পরম্পরং। বিশ্বকর্ষণানীশানা নির্বিপ্তা হরিমীড়িরে। প্রণানাং তাণোপশমে আভপতাং ছত্রং ততা হেতৃং যদ্য পদারবিন্দত মৃশং তলং কেত আশ্রামো বেবাং বহিদ্পাত এব উৎক্লিপত্তি পরিত্যক্তি। পাছাং স্বগৃহং প্রাপ্য মার্গ শ্রমধিব ৪ ০৭ ৪

ক্ৰমসক্ষ ई:।

প্লোকার্থজ্ঞানং দর্শয়িথা বিজীয়প্লোকার্থং বিজ্ঞানং বক্ষামাণ ভয়া তাজ্বা প্রাৎপরোহপ্যসৌ ভক্তিবশং ভাদিতি রহস্য তৎসাধন-জ্ঞাপকড্ভীয়চ্চুপঞ্লোকার্থং দর্শষ্তি এতে দেবা ইত্যাদিনা ইভি ভাসাং স্বশক্তীনামিত্যাদাস্তেন গ্রন্থেন। বিস্ফোং কলা বিভূতয়ং। কালাদরে। শিসক শরীরং সহায়দ্বেন বিশ্যস্তে যেষাং তে। অভএব প্রাঞ্জনয়ং প্রোচুরিতি ॥ ৩৬। ৩৭। ৩৮॥

शिविषना १६ क्व वर्षी

বিধ্বংসনীয়া এবেতি নৈবং বাদীরেতে নিহেতু পকারিশঃ প্রজ্যভাহ শীয়া এব তথা হি মোক্ষসাধনানি জ্ঞানযোগনিকামকর্মাণি একৈ র্মিনা নি বিদ্বান্ধি তথা প্রেমসাধনানি প্রবণকী র্ত্তনম্বরণদাসাধ্যাদীনাপি জগবংকণোপবাঞ্জিত রেভিরেব সিদ্ধান্তি। বিশ্ব পরদার পর প্রবাণহরণে গোপ্রাক্ষণদ্রোহাদিবিবিধপাতকানি নর কসাধনানোতৈরেব সিদ্ধান্তীতি নৈতে দ্বণীয়াঃ। ভাগীরথাা জলং সজ্জনানাং মানপানাদিভিঃ পরমপাধনমম্ভদেব কৃলছের তৃণগুলাদির ধানাগোধ্যাদির পনসাম্প্রাক্ষণকর কাদির প্রবিধ জনানাং পরমোপকারকং পরমপ্রধানমণি বিষর্ক্ষের প্রবিষ্টং তেরামেব সাক্ষান্তার্কমিতি ভাগীরথীজলাসা ন দোষং কিন্ত তত্ত কুপালিসােব বর্থা তথা ভানহং বিষতঃ কুরান্ সংসারের নরাধ্যান্। কিশামাক্ষ্মশুভায়াল্লরীছেব যোনিবিভাদি ভগবত্তার্ত্ত স্থারেশ তের্ তেরু ত্ত্বী বেরু ছিতানামেবামধিক ভভ জানাং কোদোরং। কিন্ত ভেষানেবেভি বস্ত তথেতে পরমবৈষ্ণবা এবেত্যাতৎ ক্ষত্যা স্থিতীভালিছার তিল লিভারি কিন্ত দেবা মহলাদাভিমানিনঃ বিষ্ণোঃ কলাঃ মারাশক্রিবিভালিতার্থঃ। কাললিসং বিক্তিঃ মার্যালিকং বিবেকহর্বশাকালি অংশলিলং চেতনা ভানি বিদ্যন্তে বেরাং তে। জ্ঞাং সম্বেদ্ধন নানান্থাং পরস্পরাসহদ্ধত্য হালি ক্যান্ত ত্ত্রুব্রিভি ভশ্বানামেবাং সহসৈব সর্কেল্পিয়বং ভেমুমন্থ্যতর্কয়া ভগবত্ত কৈয়েবিভি তিলিছারা অনন্যাণেকত্বভোগিনিদং জ্ঞারঃ এ৬ ॥

আতপত্তং ছক্রং। যত পদারবিন্দশ্য মৃশং তলং কেত আশ্রেরা ঘেষাং তথা ভূতা এব বতরো নান্যে অঞ্চশা শীল্পনে উক্ত সম্পর্মের সংসারত্বং অগাত্ত লগং অলোকসমিব বলেন নিজাশ্য বহিদ্বিত এব উচ্চীক্বতা কিশন্তি যথা পূনং অসমীপং নারাতি অত অঞ্চলেভি উর্কিতি বহিরিত্যুৎক্ষিপঞ্জীতি পদৈভদনাশ্রিত যতরো বিলম্বেনের নাণি সমৃশং তথা ক্ষিপন্তি যথা তান্পূনং সংসারের গ্রস্তীতি লভাতে। যদ্যণি তদানীং যতরোন বর্ত্তমেশ্ব তদণি সর্ক্ষান্তবিদ্ধান্ত বিজ্ঞাতবৈদ্ধ তত্ত্বেদান্তিকাশ্রুণ গুণা

বিকার মারালিক অর্থাৎ বিকেপ ও অংশ লিক অর্থাৎ চেতনা ইত্যাদির গুণ সকল ধারণ করে, হুতরাং পরস্পার মিলিত না হইয়া পৃথক্ পৃথক্ রূপে স্ব স্থ কার্য্য স্বরূপ প্রস্থাত রচনায় অসমর্থ হইলেন, অতএব কৃতাঞ্জলিপুটে পরমেশ্রের স্তব্য কর্ত কহিতে লাগিলেন ॥ ৩৬॥

হে দেব। তোমার যে চরণারবিন্দ প্রপন্ন ব্যক্তিদিগের তাপোপদানার্থ আতপত্র স্বরূপ, আমরা তাহাকে নমস্কার করি। হে প্রভো। তোমার ঐ পাদপদ্মের তল আপ্রান্তরিয়া যতি সকল সংসার হংখ দূরে পরিত্যাগ করেন॥ ৩৭॥ ধাত র্বদিস্মিন্ ভব ঈশ জীবান্তাপত্রেরেণাভিছ্তা ন শর্ম।
আত্মন্ লভন্তে ভগবংস্তবাজ্যি ছোরাং স্বিদ্যামত আশ্রেমে। ৩৮ ॥
মার্গন্তি যতে মুখপদ্মনীভৈ ছুলঃ খুপরে ঋ্বয়ো বিবিক্তে।
যস্যাঘমর্বোদস্বিদ্বরারাঃ পদং পদং তীর্থপদঃ প্রপন্নাঃ। ৩৯ ॥

विश्ववागी।

শ্ৰমং নিবেদনত আহং হে ধাতঃ পিতঃ বদবছাৎ ভবে সংসারে। আত্মন্ আত্মনি সহোধনং বা শর্ম স্থাং। প্রতে বদিতি পাঠে বছ পাদভলনং বিনা শর্ম ন লভতে। নমু জানাদজানকত ভাপো নিবর্ততে কিং মদতিবুজ্বায়।শ্রমণেন তত্রাহং স্বিদ্যাং তদা-শ্রমণ্মের বিদ্যা প্রাণক্ষিত্যর্থ: ॥ ৩৮ ॥

অ আভিক্তাশ্ররণাবোগাৎ তজ্ঞান সাধনমাহ: মার্গস্তি অবেবরম্ভি বং ভত্তীর্থপদন্তব পদং বরং প্রেপরা:। কৈর্মার্গন্তি ছন্দ: স্থাবি কিন্দুবি বিশ্বিদ তথা কিন্দুবি কিন্

क्रममर्ग्डः।

মার্গস্তীতি। বক্ত বংশদং মার্গস্তি তদ্য তে তংশদং ৰয়ং প্রশানা ইতি বোজাং। নীড়মার্গিণোছিশি পদছানীরং বৃক্ষমূলমেব প্রশাস্ত ইতি ভাবঃ ॥ ০৯ ॥

बीविधनावहक्तवर्छी।

নৰজ্ঞানমূলকং সংসাৰহঃধং জ্ঞানেননৈবোপশাম্যেদিভি জ্ঞানিনাং কিং ভক্তোভি ভত্তাহঃ খতে ইভি যৎপাদভলনং বিনা অমিন্ ভবে সংসারে আত্মন্ অমিন্ সম্মেদনং বা শর্ম ন লভতে। তত্ত হেডুঃ সবিষ্যাং বিষয়ে সহ বর্ত্তমানাং। তবালিলু জ্ঞায়ায়ামেৰ বিষয়া বর্ততে নানাত্তেভি ভক্তা বিনা জ্ঞানমেৰ ন সিদ্ধাভীভি তে মিধ্যাজ্ঞানিন ইভি ভাষঃ ॥ ৩৮ ॥

কিঞ্জ ব্যা ক্রপমা বচরণক্ষলনাকাৎ প্রাপ্তার্থং অ্থনোপান্তরং যদিশিতং তদাশ্রিতা বে ব্যারণী দিল্কত্তে তএব বৃদ্ধিত্ত তথ্য বাত্তবানিন ইত্যাহ:। মার্গতি বং তদেব তীর্থপদত্তর পদং বরং প্রণারা: কৈর্মার্গতি ছলাংস্পর্টে র্নেলাক্ষিত: কীল্টার্ল: তবৈব মুখপলাং নীড়া যেবাং তৈ:। যথা নিরাম্পদে দেশে বিজ্ঞামার্থং বৃক্ষতলাহেবিশো জনা ইতত্তত-চরতাং প্রক্রিণামস্পদাং ধাবতঃ সারং ঘনীড়া প্রবিশতাং তেরামাম্পদীভূতস্য বৃক্ষত তলং প্রাপ্তার্থতি তথা বৃন্ধান্দ্রতানাঃ প্নব্যোর পর্বাবিদ্যানাং বেলানাং তাৎপর্যামবধার্য তেনৈব ঘাং তলস্কলাং প্রাপ্তার্কাত্যকং সোপানম্ক্রণ বিতীহং নোপানমাতঃ অ্বমর্থনিত্যার্থা ১৯॥

হে ঈশ ! ভোমার পাদপত্ম দেবা ব্যতিরেকে এ সংসারে জীবগণ আধ্যাত্মিক আধিলৈবিক এবং আধিছোতিক রূপ ত্রিতাপে অভিভূত হইনা আপদাতে কোন প্রকার হুখ লাভ করিতে পারে না, অতএব হে ভগবন্! ভোমার পাদপত্মের ছান্না আগ্রের করি, তাহাতেই আমাদের জান লাভ হইবে ॥ ৩৮ ॥

ছে ভগৰন্! তোষার এই পাদপত্ম তীর্থ বরুপ, আমরা তোমার ঐ পাদপত্মের আঞিত হ'ইলাম, অবিগণ অসঙ্গ মনে তোমার মুখপত্ম নীড়ন্থিত বেদরূপ বিহঙ্গম ধারা সভত অধ্যেশ করিয়া থাকেন। প্রভাগ তোমার চরণের মাধান্ত্মের কথা কি বলিব ? যে সকল নদীর জল পাপ নাশ করে তাহাদের মধ্যে প্রেছিতমা গলা ঐ চরণ হইছে উদ্ধব হইয়াছেন, এ নিমিত্ত অনেকে গলার সেবা করিয়া তোমার চরণারবিশ্ব প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ১৯ ৪

বিজ্জা প্রতবত্যাত ভক্তা সংম্বামানে হৃদয়েহবধার।
কানেন বৈরাগ্যবেশন ধীরা অব্দেশ ভতেহজ্যি সরোক্ষীঠং ॥ ৪ • ॥
বিশ্বস্য কম স্থিতি সংযমার্থে কৃতাবতারক্ত পদাস্কং তে।
অব্দেশ সর্বের শরণং যদীশ স্থাতিং প্রযক্ত্যভায়ং স্বপুংসাং ॥ ৪১ ॥
বংসাক্রকে সতি দেহগেহে মমাহ্মিভূাত ত্রাগ্রহাণাং।
পুংসাং হৃদুরং বসভোপি পুর্যাং ভ্রেম তত্তে ভগবন্ পদাক্তং ॥ ৪২ ॥

श्रीभाषामी ।

নহ বিবৰাকটি ডিভানাং কুত ভাদৰেবণং ভতাহ:। যজুদ্বে ভি বিদ্দারেহবধার ধ্যাদা বৈরাগাং বলং বছা তেন জ্ঞানেন ধীরা ভবস্তি। নহ স্বাগে চিতে ধ্যানমেব কুতঃ ততাহে:। শ্রেদ্ধা শ্রেদ্ধা দ্বিক্ষা ভক্তাচ সংমূল্মানে সংশোধামানে॥ ৪০॥ ভক্তাহুগ্রহং শ্রেষ্ঠ দাহে বিশ্বভেতি ॥ ৪১॥

অন্তর্গামিতরা নিতাসরিহিতে অনর্থকং ব্রজনমিত্যাশস্থাতঃ যদিতি সামুবদ্ধে সোপকরণে অসতি তুদ্ধে পূর্যাং সদেহ এব বসতোপি যৎ অদ্বং ত্তাপেং । ৪২ ।

ক্রমগন্ধ:।

প্রজন্ম প্রবশাদরেশ ॥ ৪০ ॥ পুশুংসামণীনমন্যেবাং স্ক্তমন্তরং প্রবছ্তি ॥ ৪১ ॥ পুতস্তুন্যেবাং নিক্টমপি স্দুর্মিত্যাত্য। ব্দিতি ॥ ৪২ ॥

श्रीविधनाथहळ्वकी ।

কিঞ্ছ ভেলোপি কেবলভ কিনাআ শ্রমণঃ শ্রেষ্ঠা ইত্যাতঃ। বত্তৰ পদং শ্রুতং শুরুনুথোপদিষ্টং ভজনবন্ধ বর্ততে বভাং ভরা ভক্তা অসমর এবাবধার অমূভ্য লক্ষেন জ্ঞানেন তন্মাধুর্য্যাবাদরপেশ কীদৃশেন বৈরাগাভ সর্বত বৈত্কভা বলং বছাও ভেন ধীরা ভবতি মার্কে চেমাধু বিশেত কিমর্থং পর্বতং ব্রজেদিতি ন্যায়েন পূর্বমিব বেদাদ্যবেশশ্রমবাধান ভবত্তি ॥ १०॥

ভাদুশ্যা ভকে: অ্গমতার্থং তক্ত ভকাকুগ্রহং শার্ভ আছ বিশ্বস্যতি ॥ ৪১ ॥

ভদ্পি হুৰ্মীবৈভিজ্জি (লভ্জোভ: যদিতি। প্ৰ্যাং মধুরাবারকাদৌ প্রকটাপ্রকট প্রকাশাভ্যাং সদা বসভোপি বেহেহবুর্থামি ক্লণেশ বা ॥ ৪২ ॥

হে ভগবন্! বিষয়াসক্ত চিত্ত ব্যক্তিরাও তোমার ঐ চরণারবিন্দ অহেষণে অনধিকারী নহে, শ্রেদ্ধা এবং প্রবিকা ভক্তি দারা ভাঁহাদেরও হাদয় বিশুদ্ধ হইতে পারে, সেই হাদয়ে ভোমার পাদপদ্ম ধ্যান করিয়া তাহারাও বৈরাগ্য বল সম্পন্ধ জ্ঞান দারা ধীর হইয়া থাকে, অত্তর্গর আমারা ত্রদীয় পাদ পীঠেরই আমার গ্রহণ করি॥ ৪ • ॥

হে ঈশ। তুমি এই বিখের সৃষ্টি স্থিতি প্রলানের নিমিত্ত অবতার গ্রহণ করিয়া থাক আমরা সকলে তোমার চরণারবিন্দের শরণ গ্রহণ করি, হে ভগবন্। তোমার পাদপল্মের অমুগ্রাহকতার কথা কি বলিব, তাহা আঞ্জিত ব্যক্তিদিগকে স্মৃতি এবং অভয় প্রধান করে ॥ ৪১॥

হে প্রভো। পুত্র কলত্রাদি সহ অতি তুদ্ধ দেহরূপ গৃহে "আমি আমার" এবসিধ জ্ঞানে যে সকল পুরুষের তুরাগ্রহ প্রগাঢ় হয় তুমি অন্তর্যামী হইয়া দেহ রূপ পুরীতে অবস্থিত থাকিলেও তোমার যে পাদপলা তাহা তাহাদের স্ক্রাপ্য, আমরা তোমার সেই প্রায়ুক্তের আঞ্জয় গ্রহণ করিলার ॥ ৪২ ॥

এমভাগবভদ।

তান্ বৈহুদৰ্তিভিরক্ষিভ র্বে পরাহতান্ত ম'নদঃ পরেশ। অবো নপশ্যন্তারুগায় মূনং যে তে পদন্যাদ বিলাসক্ষয়াঃ । ৪৩ ॥

विश्ववामी ।

নতু বদি ক্ষিত্ৰাপি পদাৰুং কেবাঞিং ক্ষুরুং ভর্মি আনোবামপি ভবৈর স্যাং অবিশেবাদিত্যাশকাকে ভানিতি। অসমৃত্তি ভির্কিইমু বৈং অফিভিরিক্তিরৈঃ। পরাক্তঃ দ্রমণজ্তং অবঃহং মনে৷ বেবাং তে। অথা অতএব নূনং তান্ন পশান্তি বৈ প্রসিদ্ধ ক্ষঃ। প্রতেবাং তৎসকঃ কান্তে তব পদনাসো পমনং তসা বিলাসো বিভ্রম অসা লক্ষীঃ শোভা তস্যা যে স্বলীলাকথনাৰিভিঃ শোভমানাংস্ক্তকানিভার্থঃ। পথ ইতি লক্ষা ইতিচ পাঠে তং পদন্তাস বিলাসো লক্ষো বেবাং। তান্পথঃ স্বলাগিভূতান্সতঃ। মার্গান্ব। প্রবণাধীন্ন পঞ্চনীভার্থঃ। যথা বে এবজুলা ভাগবতান্তে ভান্মভান্ন পঞ্চনীভাররঃ সংস্কাভাবেন
হরিকপাপ্রবণাভাবাং ক্ষিত্তিমপি ভেবাং স্প্রমিতি ভাবঃ॥ ৪০॥

क्यान्य विश्व

ভন্নাৎ বেব্ পপুংসাং কৃপা স্যাৎ ভেষামেৰ ভৎষরণবিষয় স্যাৎ। সা চ কুপা ন সর্ব্ব স্যাদিত্যান্তঃ। তদেবং যত্র নোপল-ভাতে সংসলস্ভতাপ্যাধুনিক প্রাক্তনো বা পারম্পরিকোবান্তমের এব। অত্র কৃত্যীনারদাদিদর্শনাদেরপি দেবতাদেঃ শীনলক্বরা দিবতাদুশন্ধপ্রাধি ন শ্রমত ইতাত্র এবং বিবৈচনীরং বদ্যপরাধসভাবো বর্ততে পুক্রে তদা তদোবো সংস্কৃ নিবারণানাং সাধারণ মণ্যাদিদৃষ্টীনাঞ্চ তদোবশাভার্থং সংস্কৃষ্য ভগবৎসাল্প্রাস্য কারণত্বে তৎক্পাসাহায্যমপেক্যতে। নিরপরাধ্যে সতি তৎসক্ষেত্র আতপরমোভ্যন্ত্রীনাং তৃ তের্ সতোহবধানাভাবেহিপি সংস্ক্রমাত্রং ভংক্রাণ্যতি। অতঃ সাপরাধানেবাধিকভ্যেক্তং ভানিতিতে তব পদভাসবিলাসকল্যাঃ সন্ধারনো যে ভক্তা ইতার্থঃ। তে তান্ নৃনং প্রারো ন পশুন্তি ন কুপাণ্টিবিষ্যীকৃর্বন্তীতার্থঃ। কান্। বে অসম্বৃত্তিভিঃ সাপরাধ্যেট্টরক্ষিভিরিন্তিরেঃ গরাজভাত্তর্মনসঃ দ্বীকৃতান্তমুর্পিচিত্রত্বেরার্কহিমুপা ইতোবং ব্যাখ্যান্মপাত্রাম্প্রক্রি। তার্থঃ স্বাধ্যান্যাম্প্রক্রান্ত্র ক্রাণ্যান্ত্রিকর । অত্র সাধারণাসভৃত্তিদ্বং ন গৃহতে। সর্বস্য তৎক্রপারাঃ প্রাক্ তথাভূতভাহ। জনস্য ক্রমান্ত্রিক্রা বিষ্কৃষ্য দৈবা-দিত্যাদিকবিষরং স্যাদিতি। তন্মদনপরাধ্যম্পুত্তী তেবাং ক্রপা প্রবর্ত্ত এব কথিদিদ্বাধাভাবেন তদপ্রবৃত্তাবিশি সক্ষাত্রেণ্য বেবাং ক্রাণ্ড সম্মতিঃ স্যাৎ বত্র তু সাণরাধেহিপি বৈরভ্রের ক্রপা কুর্বিভি তইসাব ভ্রাতিঃ স্যাৎ নাক্স্ব্য। নদক্ররাদিবৎ সাধারণ দেবতাব্রেতিতি র ৪০ ৪

গ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী ।

নমু কগতাৰিন্ ইতত্তত করতাং সাধ্নাং বছবাতেবাং সলং করা তংগ্রাদস্বভাতাং শুদ্ধাং ভজিং তে কথং ন কুর্মন্তীতি ত্রাছ:। তানিতি অসমৃতিভিক্ছিলু থৈরিজিটেয়: প্রাহতং দ্রমণস্ত্তং অস্তঃ হংমনো ঘেষাং তে অথো অতএব তান্ হৈ নিশ্চিতং ন পশ্চিতি কৃতত্ত্বাং তৎসল:। তান্ কান্ তে তব পদস্থাসো গমনং তসা বিলাসো বিভ্রমন্তস্য লক্ষ্মী: সম্পতি অসাঃ সম্বদ্ধিনা যে তাং ছনীলাকধাবিলাসমূলক শীর্জনাদিভিঃ পূর্ণান্ পর্যকৃতার্থাং ভ্রতানিতার্থ:। পথ ইতি লক্ষ্য ইতি পাঠে ছং পদ ন্যাসবিলাসো লক্ষ্যে যে তে বে তান্ পথং ছন্মার্গভূতান্ সাধ্ন ন পশ্চনীতার্থ:। যহা বে এবস্থৃতা ভাগবতা তে তাস্ম্রভান্ সাথবাধানৈর পশ্চনীতার্যঃ ॥ ৪৩ ॥

হে পরমেশ। ছুমি অন্তর্যামী হইয়া অবিশেষে সকলেরই ছাদরে বাস করিতেছ, তথাপি যে তোমার পাদপায় কাহারও জুপ্রাপ্য হয়, ইহার কারণ এই, যাহাদিগের ইন্দ্রির বৃত্তি বহিম্থী, তাহাদিগের অন্তর্গত মনঃ দুরেলপালত হয়, তাহাতে তাহারা তদীর চরণাসুরাগি ভক্তরুপাকেও দেখিতে পার না অন্তর্গত লাহাদের সংগলনাভের সন্তাবনা কি? সংসক লাভ না হওয়াতে তাহাদের হরি কথাদি প্রেবণ হর না, ত্তরাং ভুমি হার্য়ে অবছিতি করিলেও ভাহাদের পাকে অনুরবতী ই থাক। ৪০ ॥

পানেন তে দেব কথাহ্থায়াঃ প্রবৃদ্ধভক্ত্যা বিশদাশ্যা যে।
বৈরাগ্যদারং প্রতিশভ্য বোধং যুথাঞ্চণাস্বীয়ুরকুঠধিফাং ॥ ৪৪ ॥
তথাপরে চাজ্যমাধিযোগবলেন জিম্বা প্রকৃতিং বলিষ্ঠাং।
তমেব ধীরাঃ পুরুষং বিশস্তি তেযাং শ্রামান্ত সেবয়া তে॥ ৪৫ ॥

क्षेत्रवाशी।

এতদের ফুটরতি পানেনেতি ঘাতাং। বৈরাগ্যং সারোবলং বক্ত বোধনা তং লক্ষ্য অবীয়ং প্রাপ্ত হারু ক্রিকাং বৈরুঠনোকং । ৪৪ ॥

আছিদমাধির্মনাকৈর্ব্যং স্থাব বে।প উপায়: ওপ্ত বলেন। আনুবোগত: প্রমেশ মোক্ষ:। সং সৃদ্ধাং কথা প্রবণাদিনা দ্বায়াগেটনর। আহং মুম্ভাবিষ্টানাং তুন কথঞ্চিতি ভার: ॥ ৪৫ ॥

क्षयममर्खः।

তৎ কথারাং সত্যাং তু পরম ফলপ্রাপ্তিং ক্রমাণাতঃ। পানেনেতি। বিশ্দাশরাঃ প্রোজ্বিতকৈতবাঃ দেবৈকপুরুষ।ধাঃ অকুঠ্যিষ্যাং বৈকুঠলোক্মিতি টীকা। ৪৪॥

বে তুজানিবলিনতেবাং সাধনসাধ্যমোং কনিঠবনাছ:। তথেতি। অপরে মোক্ষমাত্রকামা:। তল্পাত্র পুক্ষাথেছিণি তেবাং শ্রমং ভাং। বে তু সেইবকপুক্ষার্থা ভেবাং সেবলা শ্রমো ন সাং। স্টেরব সেবাপর্মানক্ষমভূত্বভানাস্বলিক্তরা মোক্ষ্চ স্যাবিত্যবং ॥ ৪৫ ॥

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভকা বথা সাধনদশামারতৈয়ৰ পরমস্থিনতথা ভানিন: সাধনদশামারতৈয়ৰ পরমত্থিন ইতি ভক্তিজ্ঞানরোরেতাবদে-বাস্তর্মিত্যাহর্বাভাগে পানেনেতি বৈরাগান্ত সারো ত্রহ্মসাযুজ্যাপর্যাপি ৰলং বছাত্তথাভূতং বোধং প্রস্তুদ্ধং ভগবন্মাধুর্ব্যান্ত্-ভবং প্রাণা অকুঠ্বিকাং বৈকুঠ্গোক্মিতি স্থামিচরণাঃ ৪৪ ৪

আনুনি স্মাধির্মনাইর্য্যাং সত্রব বোগ উপায় ব্রক্ত বলেন জ্ঞানদোগত ইত্যর্থ:। যথা অটালবোগতঃ খাং প্রুষ্থবিশন্তি শ্বি
সাযুব্যং প্রাপ্রবিত্যর্থ:। কিন্তু তেবাং শ্রম: ভানিতি তেবাং ভক্তির।হিত্যে শ্রেয় স্থতিং ভক্তিমুদ্স্য তে বিভো রিশ্রপ্রীত্যাদেঃ
প্রেই ভূমন্ ক্রবোপি বোগিন ইত্যাদেশ ভক্তিং বিনা বাজবং জ্ঞানমের ন ভাৎ কুতো মুক্তিরিতি তে পর্মতঃ থিন এব যতুক্তং
তেষামসৌ রেশলএব শিবাতে নানাল্যথা সুগত্বাবখাতিনামিতি। জ্ঞানাক্ষভক্তিসাহিত্যেত্ সাযুক্যং প্রাপুর্বান্তখন্তর কিন্তু সাধন
দশারাং চিবৈকাগ্রার্থিম্পায়াবেরণাম্ভানাদির শ্রমঃ স্পর্তএব সাধ্যদশারাং দ্বদ্দীকারকারণং প্রেমাণং প্রাপ্রবৃত্তিখন্ততঃ পরিভাক্তের দংপ্রবেশন্ত গ্রহণমের নিকর্মঃ। সচ হংবমেবেতি ভক্তানাং মতে তলাপি তে হংবিন এবেন্ডার্থ:। নমু পরিচর্যাদিভি
ভক্তানামিপি শ্রমাহত্রমীরতে তত্রাহঃ নতু সেবয়া তে ইতি। জত্র ত এবাফ্রভবিনঃ প্রমাণং বধাশ্রমিণারিপি স্ত্রীপ্রবৃত্তি ভাবান প্রত্যাত সেবয়া দৈবাদ্পাইপ্রবৃত্তি মনো হংগ্রপো মহাশ্রমঃ ভাদিতি ভাবঃ। অত্র সেবয়া
বাং বিশ্বীতি ন বোজনীয়ং অবীযুরক্তিবিক্যমিতি পূর্ব্যাকেন বিরোধাৎ নচ কুঠং বিক্যাং বস্য তং খাং অধীর্নিতি ভত্রাপি
ব্যাধ্যের। শ্রম্বন্সাপ্রভিগ্রাবি অনুগত্যর্থকপদালভাসভাপি বৈয়র্থাং । ৪০ ৪

হে দেব। তোমার কথা রূপ অ্ধাপান এবং প্রবৃদ্ধ ভক্তি দারা বাঁহাদিগের অন্ত:করণ নির্মাল হ্র, তাঁহারা বৈরাগ্য সারজ্ঞান লাভ করিয়া বৈকুঠলোক প্রাপ্ত হয়েন ॥ ৪৪ ॥

অস্থাস্থ ধীর ব্যক্তিরা মন্টেছর্য্য রূপ উপায় বলে অর্থাৎ জ্ঞান যোগদারা বলবতী প্রকৃতি জ্য় করিয়া সেই পুরুষকেই প্রাপ্ত হন সভ্য, কিন্তু তাঁহাদিগকে অভিশার প্রম স্থীকার করিতে হর, তাঁহারা সংসঙ্গ নিমিত প্রবাদি ভক্তি দারা অনায়াসে প্রাপ্ত হয়েন না ॥ ৪৫॥ ততে বরং লোকনিস্ক্রাদ্য স্বরাদ্পৃস্টা ব্রিভিরাক্সভি: আ।
সর্বের বিষ্কো: স্ববিহারতক্রং নশকুন্তৎ প্রতিহর্ত্তবে তে॥ ৪৬॥
যাবদলিং তেইজ হ্রাম কালে যথা বয়ঞান্ন্রদাম যতা।
যথোভয়েষাং ত ইমেহি লোকা বলিং হরস্থোইন্মদন্তান্হা:॥ ৪৭॥

बीधवचामी।

ত তদেবং স্বথা প্রথিয়ক্তে চতুর্জিঃ ভত্তমাৎ হে আদা তে বুদীয়া বয়ং। যমাল্লোকানাং দিস্ক্রা অনুস্ঠাঃ ক্রমেণোংপা-দিতাঃ। ক্রিভিরায়্ভিঃ স্বাদিভিঃ স্ভাবৈ:। অতএণ বিক্ক স্ভাবভাবিযুক্তাঃ সন্তঃ যদর্থং স্টাঃ তৎ স্বিহারভল্লং স্বং ক্রীড়োশকরণং ব্রহাঙিং তে তৃভাং প্রতিহর্তবে প্রতিহর্তুং সমপ্যিতুং ন শকুমঃ। অভত্তং নঃ স্বচক্র্ণরিদেহীতি ক্রয়াণাং লোকানাং চতুর্থনাস্যঃ॥৪৬॥

অসামর্থানের প্রাপঞ্চিত্র করিয়াভিট্র চিত্রামান্ত:। ভো অভ কালে তত্তদবসরে বলিং ভোগাং যাবং সাকলোন তে তৃভাং হরাম সমর্পরাম বথা বেন প্রকারেণ অরমদাম ভক্ষাম ইতানেনার্মাত্রমন্তাক: ঐমর্থোণ তৃ ভোগাং তবৈবে স্যুক্ত:। উভরেষাং তব চাম্মাকঞ। যত্র স্থিতা ইমে জীবা অন্হা অপ্রত্যহা নির্বিয়া:। যবা অন্হা অবিভক্তা: নিঃসংশয়া ইতার্থ:। তথাচ শ্রুতি: তা এনমত্রবন্ বৈ আয়তনং নঃ প্রস্কানীহি যালন্ প্রতিষ্ঠিতা অরমদামেতি ॥ ৪৭ ॥

ক্রেম্পন্দ র্ড:

যদাদেবং সর্ব্বোং ভবদাপ্রয়েশৈবোন্তমদং তৎ তদ্মাৎ ॥ ৪৬ এ তত্র নিজকর্ত্তব্যসেবাক্সপাপ্রদং নিবেদশ্বতি যাবদিতি। অরং যংকিঞ্চিশ্বস্থান্দত্তং স্বোপজীব্যং ॥ ৪৭ ॥

द्यीविचनां भठक वहीं।

তাং তথাং তে তবৈৰ দেৰকা বয়ং দেবাম প্ৰাপ্তৈৰ ক্লিগ্ৰাম ইতি ভাৰঃ। দেবায়া অপ্ৰাপ্তিং বির্ণুত্তি। লোকানাং সিস্ক্যা অয়া অনুস্ঠা: ক্ৰমেণোৎপাদিতা: ম। তিভিরাম্মভি: সন্থাদিমভাবৈ রতএব বিক্ষমভাবতাং মিথো বিষ্কা: সন্তঃ যদর্থং স্টাত্তং স্বিহারতন্ত্রং মুং ক্রীড়োপকণং সমষ্টিং তে তুভাং প্রতিহর্তকে প্রভিহর্তু: সমর্পায় চুং ন শকুম: ॥৪৮॥

তিই কিং যুখবাছিতং করবাণি ভদ্জপেতাত আহ:। হে অল কালে সমুচিভদময়ে বলিং পুলোপহারং যাবৎ সাকলোন তে হরাম। দেবনম্ব্যাদিবিবিধপুরদংক্লদমন্তিবান্তাগ্রাকপ্রাণঞ্জিক দংক্রীড়োপকরণবৃক্ষং নির্মায় তৃতাং যথা সমর্পুয়াম। তথাচ বরং জুরারাশক্তিবৃত্তরোহ্রমদাম। রাজ্ঞা আদিন্তা গৃহনির্মাভারে। বর্জকয়ে যথা বেতনরপং স্বস্থাদরপুর্ময়ং প্রাণ্নুব্রীভার্থ:। যথাচ ইমে লোকা দেবভির্যাগাদযন্ত্ জীবশক্তিবৃত্তরভাদধীন দাং। জুরায়াশক্যধীন নাচে। উভরেষাং তব চাম্মাক্ত বলিং হরস্থা বিবিধ যাগ্রোগজ্ঞানাদিরপমারাধনং কুর্মস্থোহরমদন্তি অবকর্মফলং প্রাণ্নু বন্ধি অনুহা অবিভর্কাঃ প্রভ্রম্ভাং কর্মফলং দান্ততি নদান্তিভি বেতাভাহশূলা ইতি এতদেবাম্বাহিতং সম্পাদ্যেতি ভাব:। তথাচ প্রভি: তা এনমক্রবন্ আর্তনং ন প্রজানীতি যদিন প্রভি-ক্তিতা জার্মলামেতি ॥ ৪৭ ॥

অতএব হে আদ্য ! আমরা তোমারই, যে হেতু তুমি লোক সৃষ্টি করিতে বাদনা করির। সন্তাদি তিন বভাব দ্বারা আমাদিগকে স্কন করিয়াছ, কিন্তু আমরা সকলে পরস্পার বিরুদ্ধ স্থভাব প্রযুক্ত কোন ক্রমে মিলিত হইতে পারিলাম না, স্তরাং দ্বিমিত্ত স্ফ হইয়াছি, তোমার ক্রীড়োপকরণ স্বরূপ দেই ব্রুমাণ্ড নির্মাণ করিয়া তোমাকে সমর্পণ করিতে অসমর্থ হইলাম, অতএব তুমি আমাদিগেকে স্বীয় জ্ঞান প্রদান কর, তদ্বারা ক্রগৎ নির্মাণ করিয়া তোমাকে সমর্পণ করিব॥ ৪৬॥

হে অজ ! আমরা তত্তদবস্বে তোমাকে যে প্রকারে সমস্ত ভোগ্য সমর্পণ করিতে পারি এবং যে রূপে আমরা অন্ন ভোজন করিতে সমর্প হই, আর যে স্থানে অবস্থিত হইয়া এই সমস্ত জীব নির্বিদ্যে তোমার এবং আমাদিপের ভোগ্য বস্তু আহরণ করত আপনাদের অন্ন ভক্ষণ ক্রিতে পারে তদ্ধপ করিবার নিমিত্ত আমাদিগকে শক্তির সহিত স্থীয় জ্ঞান প্রদান কর॥ ৪৭॥ ত্বং নং হ্রাণাসদি সাধ্যানাং কৃটস্থ আদ্যঃ পুরুষ: পুরাণু:।
তং দেব শক্তাং গুণকর্ম যোনে রেভত্তকায়াং কবিমাদণেহজঃ ॥ ৪৮ ॥
ততো বয়ং মৎপ্রমুখা যদর্থে বস্থাবিমাত্মন্ করবাম কিন্তে।
তং নং স্বচক্ষু: পরিদেহি শক্তাা দেব ক্রিয়ার্থে যদস্প্রহাণাং ॥ ৪৯ ॥

खिशवयामी।

অবশুক ত্রামাক্ষেষাঞ্চ কার্য্যোপাধীনাং জীবানাং বৃত্তিঃ পরিকর্মনীয়া জনকত্বাদিত্যাত্ঃ নোহ্মাকং সার্যানাং স্থকার্যাণাং।
যবা অবহুতীতার্যঃ কারণং তৎসহিতানাং ত্যোবাদ্যঃ কারণং। অত্ত-হেত্বঃ কৃটত্বঃ অবিক্রিয়ঃ। পুরুষঃ অধিষ্ঠাতা। পুরাণঃ
প্রাতনঃ। এতত্পপাদ্যত্তি ত্মিতি। হে দেব অজ এব তঃ গুণানাং স্থাদীনাং কর্মণাং জন্মাদীনাঞ্ যোনৌ কারণ ভূতায়াং
শক্ত্যাং মায়ায়াং প্রথমং রেত আদ্ধে নিহিত্বানসীত্যুর্থঃ। কীদৃশং কবিং স্ক্তিঃ মহত্ত্বরূপং। ৪৮ ঃ

ততঃ হে আত্মন্ দেব মংপ্রম্থা মহলাদয়ে। বয়ং যদর্থং বস্ত্বিম তিং কিং কার্যাং তে করবাম স্টেমিতি চেৎ ততাতঃ তর্হি নোহ অভ্যং স্বং স্বচক্ষঃ সীয়ং জ্ঞানং শক্ত্যা সহ পরিদেহি প্রযক্ষ। যাস্ত্র এবাস্থাহো যেবাং তে যদস্থাহা তেলামস্মাকং ক্রিয়ার্থ ইয়ানেব এতাবানেবাস্থাহো যেবাং ইত্যেকং বা পদং। স্বদীয় জ্ঞান ক্রিয়াশক্তিভ্যামেব বৃদ্ধং স্ট্রী ক্ষমাঃ নান্যথেত্যুর্থ: এ ১৯ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

कविः नमष्टिकीवः । ८৮॥

ভত ইতি তত্ত্রবাং পৃথিবীফারেন তত্ত্বাধিষ্ঠাত্দেবানাং ভক্তত্বেন স্বয়মের পুরা শরীরনির্দ্ধাণনীখরেণ। অফ্রেযাং তু তং প্রার্থন-নৈর ভবিষ্যতীতি জেয়ং ॥ ৪৯ ॥

क्षीविधनां भठतकवादी ।

সেবাসেবকলকণং সম্বন্ধপণাদমন্তি। নোহম্মাকং সাধ্যানাং অধ্যতীতাধ্য:। কারণং তৎসহিতানাং কৃট্রো নির্জিকার এবাদান্চিন্তামণিরিব কারণং পুক্বোহবিষ্ঠাতা পুরাণঃ পুরাতনঃ আদিশ্স ইতার্থ:। যতম্বং হে দেব শক্যাং মারামাং গুণানাং সন্ধানীনাং কর্ম মহদাদিকং যত্র তথা ভূতায়াং যোনৌ রেতঃ সমষ্টিকীবরূপং কবিং বিজ্ঞাং আদেশে অতোহমাকং জীবানাঞ্চ পিভূত্বাৎ ম্বনেব বেবা ইতি ভাবঃ॥ ৪৮ ।

মংপ্রমুণা মহদাদা। বরং হে আত্মন্ কিং তে করবাম স্প্রিমিভিচেৎ তত্রাহঃ। তর্হি নোহ্মাকং তং সচক্ষ্য পক্ষা। সহ পরি-দেহি বৈরাজনির্মাণে জ্ঞানং দেহি শক্তিঞ্চ দেহীতার্থঃ। ত্বদীয়জ্ঞানক্রিয়াশক্তিভামের বয়ং স্ট্রে ক্ষমা নানাপা ইতি ভাবঃ। হে দেব অম্মাকং ক্রিয়ার্রণাহর্থ ইয়ানেবাহুগ্রহত্তর কর্মুচিতো যেবু তেবাং অদাদিষ্টাং সেবামের স্থেন করবামেত্যেতাবদেবা-ম্বাঞ্তিং নাঞ্চিতি ভাবঃ। অত্য তত্বাধিষ্ঠাত্দেবানাং ভক্তবাং স্বয়মের পরীরনির্মাণ্মীশ্বরেণ। অন্যেবান্ত তৎ প্রার্থনৈবেতি সন্দ্রভঃ॥ ৪১॥

হে প্রত্যে। আমাদিগের এবং কার্য্যোপাধি জীবগণের জীবিকা কল্পনা করিয়া দেওয়া তোমার অবশ্য কর্ত্তব্য, যে হেতু তুমি আমাদিগের এবং আমাদের কার্য্য সকলের আদ্য কারণ, কেননা তুমি নির্বিকার, অধিষ্ঠাতা এবং পুরাতন পুরুষ। হে দেব। তুমিই ত সন্থাদি গুণের এবং জ্মাদি নিমিত্ত কর্মের কারণ স্বরূপা মায়াতে মহত্তব্ব রূপ বীর্ম্য আধান কর ॥ ৪৮॥

অতএব হে আজন ! মহতব প্রভৃতি আমরা যদর্থে উৎপদ্ম হইলাম, কি করিতে হইবে, আমাদি-গকে আজ্ঞা কর, যদি সৃষ্টি করিতে হয়, তবে আমাদিগকে শক্তির সহিত স্থীয় জ্ঞান প্রদান কর, যে হেতৃ তোমার জ্ঞান এবং ডোমার শক্তি বারা ভ আমাদের সৃষ্টি করণে সামর্থ্য হইবে, নতুবা স্থাতস্ত্রা রূপে আমাদের কোন কমতা নাই ॥ ৪৯॥ ॥ * ॥ ইতি প্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্তাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং তৃতীয়ক্ষে মহদাজুছেপত্তিনাম পঞ্চমাহধ্যায়: ॥ * ॥ ৫ ॥ * ॥

শ্রিখাষিরুত্বাচ n

ইতি তাদাং স্বশক্তীনাং দতীনামদমেত্য সং। প্রহপ্ত লোকতন্ত্রাণাং নিশাম্য গতিমীশবং॥ ১ ॥ কালসংজ্ঞাং তদা দেবীং বিজ্ঞছক্তিমুক্তকুম:। ত্রেয়েবিংশতিতজ্বানাং গণং যুগপদাবিশৎ॥ ২॥

खिशदशमी।

। *। ইতি তৃতীয়ে পঞ্ম: । •।

वर्ष्ठ देख त्रीधवाबिटेडे: एडिमार विवाह ्जानाः। অधिदेशवानि (ভদ্ঞ ভবৈত্ৰ ভগবং কৃতং ॥ • ॥

স্বশক্তীনাং মহদাদীনাং অসমেত্য অমিলিভা সতীনাং স্থিতানাং। প্রস্থুপ্তং লোকতন্তং নিশ্বচনা বাসাং যথা প্রস্থুপ্ত জীবোপ-করণানাং গতিং স্থিতিং দৃষ্টা আবিশ্লিতাত্তরেণায়রঃ ॥ ১ ॥

কালেন সংজ্ঞা উদোধো যস্যা:। কলমতি কোভরতি স্বকার্য্যাণীতি বা কালসংজ্ঞা প্রাকৃতিঃ তাং শক্তিং। প্রকৃত্যা সহ প্রবেশাৎ এয়োবিংশতিতস্থানাং ইত্যুক্তং। সম্বর্থামিতয়া প্রাবিশৎ। ২॥

ক্রমসন্দর্জঃ।

॥ * ॥ ইতি শীভাগবতে তৃতীক্ষে শীকীবগোশামিকত ক্ষেমনন্ত্ত পঞ্নোহধ্যায়: সমাপ্ত: ॥ * ॥
কালয়তি সর্কং মেলয়তীতি কালোর্ভিবিশেষ: । কালএব সংজ্ঞা বতা তাং। ত্রেয়েবিংশভিতআনামিতি মহদাদীনামেব
পরস্পরমিলনাৎ প্রকৃতেত্ত সর্কাহুগতে: ॥ > ॥ ২ ॥

बिविनाधठक वर्छी।

। 🔸 । ইতি সারার্থনিশিকাং হর্ষিণ্যাং ভক্ততেজ্ঞাং। তৃতীরে পঞ্চমাধ্যার: সঙ্গত: সঙ্গং । 💠 ॥
বঠে বিরাড়ভূতবৈর মুর্থামি প্রবেশত:। অধিভূত্যাদিভেদ্দ তুলা দেহে প্রণাঞ্চিত: । • ॥

স্বশক্তিকার্যাথাৎ স্বশক্তীনাং মহদাদীনাং অসমেত্য স্বমিলিস্থা সভীনাং স্থিতানাং প্রস্থাওং লোকভন্তং বিশ্বনিস্থাণক্তিরা যাসাং ভাসাং গতিং দশাং দৃষ্ট্য । ১ ॥

কালেনৈব সংজ্ঞা মহদাদ্যা বিবিধা যক্তা: সা কালসংজ্ঞা প্রকৃতিঃ তাং বিভ্রং সন্ আবিশৎ প্রথমং সংহনন কারিণ্যা শকৈত্বত ততো বর্ষসহলাকে অন্তর্গামিতরেতার্থ:। প্রকৃত্যা সহ প্রবেশাভ্রেবিংশতীত্যুক্তং মহদহকারো পঞ্চ তল্পাত্রানি পঞ্চমহাভূতানি একাদশেলির। বীতি অয়োবিংশতিঃ। যত্রকং মূলপ্রকৃতিরবিকৃতির্মহদাদ্যাঃ প্রকৃতি বিকৃতরঃ সপ্ত যোড়শকস্ক বিকারে। নি প্রকৃতি নি বিকৃতিঃ পুরুষ ইতি। তৎস্টা তদেবাস্প্রাবিশদিতি শতেঃ। ২॥

॥ * ॥ दें जि ज़ जी राम भ ॥

ষষ্ঠাধ্যায়ে মহতত্ত্বাদি দেবগণের অন্তরে প্রবেশ পূর্বক বিরাট ুমূর্ত্তির সৃষ্ঠি এবং ভগরান্ কর্ত্ক অধিদৈবাদি বর্ণন ॥ ॥ ॥

মৈত্রেয় মুনি কহিলেন ঈশরের শক্তি স্বরূপ সহত্ত্ত্ত্তি পরস্পার অমিলিত হওয়াতে বিশ্বরচনায় সামর্থ্য হীন হইয়া রহিয়াছে, ভগবান্ ভাহাদের প্রমুখাৎ তাহাদের এই গতি স্বস্ত হইয়া ॥ ১ ॥

সেই সময় কাল দারা যাহার উদ্বোধ হয় তাদৃশী শক্তি অবলম্বন পূর্বেক অর্থাৎ সংহননকারিণী প্রকৃতির সহিত অন্তর্বানিদ্রাপে একেবারে অন্নোবিংশতি তত্ত্বে অর্থাৎ মহতত্ত্ব, অহঙ্কারতত্ত্ব, তথা শব্দ, স্পর্শ, রূপ, রূপ, রূপ, গদ্ধ স্বরূপ পঞ্চত্মাত্র এবং পঞ্চ মহাভূত ও একাদশ ইন্দ্রিয় এই অয়োবিংশতিগণে প্রবিষ্ট হইকোন । ২ ॥

সোহকুপ্রবিষ্টো ভগবাংশেচফীরুপেণ তং গণং। ভিন্নং সংযোজয়ামাস হস্তং কর্ম প্রবোধয়ন্॥আ
প্রবৃদ্ধকর্মা দৈবেন ত্রয়োবিংশতিকো গণঃ। প্রেরিতোহজনয়ৎ স্বাভিন্মাত্রাভিরধিপ্রদাং॥ ৪॥
পরেণ বিশতা স্বন্মিন্ যাত্রয়া বিশস্গ্গণঃ। চুকোভান্যোন্যমাসাদ্য যাত্রিরেলাঁকাশ্চরাচরাঃ॥ ৫॥
হিরথয়ঃ স পুরুষঃ সহত্র পরিবৎসরান্। অশুকোষ উবাসাপ্স্ সর্বসত্বোপরংহিতঃ॥ ৬॥
স বৈ বিশস্জাং গর্রো দৈবকর্মাত্ম শক্তিমান্। বিবভাজাত্মনাত্মান্যেকধা দশধা তিধা॥ ৭॥

श्रीभवत्रामी।

চেঠারপেণ ক্রিয়াশক্তা কর্ম তেবাং ক্রিয়াং জীবানামণ্টং বা[®]॥৩॥ প্রব্দং কর্ম ক্রিয়াশক্তি ব্দা সংক্রোবিংশতের্গণ দৈবেনেখরেণ প্রেরিভঃ মাত্রাভিরংশৈঃ অদিপূর্বং বিবাড়্দেছং॥৪॥ জননমেবাহ পরেণ ঈশরেণ বিশ্বস্থকাং ভত্থানাং গণঃ মাত্রয়া চুক্ষোভ পরিণতঃ ন সর্ব্যাত্মনা যন্ত্রিন্দালা ছিতাঃ॥৫॥ স পুরুষঃ বোদিপুরুষ ইত্যুক্তঃ। অওকোবে ব্রহ্মাণ্ড মধ্যে স্টর্কঃ স্ট্রের্ম্শারিভিঃ জীবৈঃ সহিতঃ॥৬॥ গর্বঃ কার্যার্রণো বিরাট্দেশক্তিঃ জ্ঞানশক্তিঃ ভ্রমা একধা স্ব্রাব্ডির চিত্তার্রপো। কর্মশক্তি ক্রিয়াশক্তি ভ্রমা

क्रममण्डः।

চেঠারপেণ প্রেলিকেন কালাধোনৈর কারণভ্তেন যোহরং কালস্ত তৈহ্বাক্তবদ্ধো চেটামাছ্রিত্যকে: । ৩ । অধিপ্রবং ব্যাওরপং। কাহং তমামহদ্ধ ধচরাগ্নি বাভ্রিত্যাহ্যকে: ॥ ৪ । ৫ । হির্থায়ো ব্যাওন্দ্রি হিতোহির্ণাগর্ড:। অসু ইতি। প্রেং কলেনাম্বর্গ্বাং ॥ ৬ ॥ সু বৈ ইতি। দৈবক্ষাম্শকিমান্ইত্যব দৈবশক্যা ক্ষাশক্যা আম্মাক্যা চুফুক ইত্যর্থ: ॥ ৮ ॥

बीविधनाषहक्तवती ।

চেষ্টাৰ্বপেণ ক্ৰিয়াশক্ত্যা কৰ্ম তেষাং ক্ৰিয়াং জীবানামদৃষ্টং বা ॥ ২ ॥

প্রবৃদ্ধ কর্ম ক্রিয়াশ কির্মাণ কর্ম স:। দেবেনেখরেণ । মাত্রাভিরংশৈ:। অধিপুরুষং বিরাড় দেহং ॥ ৪ ॥

় জননপ্রকারমাছ বিখক্লাং তরানাং গণঃ। স্বিন্পরেণ পরমেখ্রেণ মাত্রয়া স্থাপেন বিশ্তা স্তা স্থান্যান্যান্য প্রধান-খুণ ভাবং প্রাণ্য চুকোভ গর্রিপেণ পরিণতোষ্ভূৎ ॥ ৫ ॥

স সমষ্টিবিরাট্ছিরগায়: চতুর্দশভ্বনাত্মক অওকোষে যা: আপে: পর্তোদকানি ভাস্ব। য**হা অপ**স্বোহওকোষতানিন্ সর্কান্তরিন্ সাক্রিন্ কানি ভাস্ব। যহা অপস্বোহওকোষতানিন্ সর্কান্তরিন্ সাক্রিন্ সাক্রিন্ত সাক্রিন্ সাক্রিন্ত স

व्यथ छत्रा मुथानाक्षत्रिकार्थः व्यथमः विश्वकिषमार विश्वकाः महनानीनाः शद्धः कार्यक्रमः। देनवकर्षाञ्चलक्रिमान् कीवव्यागायाः-

ক্রিয়াশক্তি দারা ঐ সকল তত্ত্ব প্রবেশানস্তর তাহাদের ক্রিয়া অথবা জীবের অদৃষ্ট, যাহা বিলীন ছিল, তাহা প্রকাশ করিয়া সেই সকল ভিন্ন ভিন্ন তত্ত্বকে একত্র সংযুক্ত করিলেন ॥ ৩ ॥

ঐ মহ্লাদি ত্রোবিংশতি তত্ত্বগণের ক্রিয়া শক্তি প্রকাশিত হওয়াতে তাহার। পরমেশ্বর ভগবানে-রই প্রেরণায় আপনাদের অংশ দ্বারা অধিপুরুষ অর্থাৎ বিরাড়্দেহ উৎপন্ন করিল। ৪॥

অর্থাৎ দেই বিশ্বস্থা মহদাদি তত্ত্ব সকল আপনাতে প্রবেশকারী পরমেশরের সম্বন্ধ থাকাতে পরস্পার মিলিত হইয়া আপন অংশে বিরাড়্দেহ রূপে পরিণত হইল, যাহাতে এই চরাচর লোক সকল অবস্থিত আছে॥ ৫॥

অধিপুরুষ বলিয়া বিধ্যাত হিরগায় পুরুষ সহত্র বৎসর যাবৎ আপনার সহিত শয়নকারি জীব সমূহ সহ পরিবর্দ্ধিত হইয়া এই ত্রক্ষাণ্ডান্তর্গত জল মধ্যে বাস করিয়াছিলেন ॥ ৬ ॥

তাহাতে উল্লিখিত মহদাদি তত্ব সকলের কার্য্য স্বরূপ গর্ভ্ত অধিং ঐ বিরাড় মূর্ত্তি জ্ঞানশক্তি,ক্রিয়া-

এব ফ্লেষ সন্ধানামান্তাংশ: পরমান্ত্রন: । আব্যোবজারে। যত্তাসো ভূতগ্রামো বিভাব্যতে ॥ ৮॥ সাধ্যান্তঃ সাধিবৈৰশ্চ সাধিভূত ইতি ত্রিখা। বিরাট্ প্রাণো দশবিধ একধা ফ্লয়েন চ॥ ৯॥ সারন্ বিশ্বস্ঞামীশো বিজ্ঞাপিত মবোক্ষর:। বিরাজমতপৎ স্বেন তেজনৈবাং বির্তয়ে॥ ১০॥

वी वज्र का भी।

প্রাণ রূপে প্রাণাদর: পঞ্। নাগঃ কুর্ম্মোহথ কুকরো দেবদজে ধনপ্রর ইত্তাতে পঞ্চ ইত্যেবং বৃত্তিভেদেন দুশবিধঃ প্রাণঃ ক্সাত্মশক্তিঃ ভেন্তিভূপক্তিঃ ভরাব্যাত্মাদি ভেদেন তিশা আত্মানং বিভক্তং কুডবান্॥ १॥

শবং বিভাগে সামর্থ্যায় তল্যোৎকর্ষনাহ এব হীতি অশেব সন্ধানাং প্রাণিনামায়া বাষ্টানাং তদংশদ্বাং। অংশো শীব অবতা-রোক্তি অন্মিয়ারায়ণাবির্ভাবাতিপ্রায়েণ ॥৮॥ •

পূর্মলোকার্থং বিরুণোতি সাধ্যাত্ম: অধ্যাত্মানি ইল্লিরাণি তৎ সহিত: 1 বিরাড়িতি সর্মাত্র ॥ ৯ ॥

অধ্যাত্মানিভেদং প্রাপঞ্জিভুমাই অবলিতি। বিজ্ঞাপিতং বাবদ্দিং তেইক হ্রামেত্যাদি। তেন তেল্পা চিচ্ছক্যা অতপৎ

क्रिमनसर्भः।

অত দেবস্য ঈশবস্য জীবরূপা চিচ্ছক্তি: তয়া জ্বরস্থয়া একধা। ১॥

নমু বিষাট্ পুরুষদ্যার্শী শক্তিশ্চেৎ ঈশ্বরপ্রবেশেন কিং ততাহ অবদ্ধিত। অংগক্ষাংশঃ পুরুষঃ। কারণামুগ্রহেটণর কার্যা-

बीविधना ४५ कवर्षी।

স্থাদিশক্তিযুক্ত:। আস্মনৈবান্থানং বিবভাল বিভক্তং কৃতবান্ একধা জীবশক্তা। দশধা প্রাণশক্তা। ত্রিধা আধাান্থিকাদি শক্তা। । ৭ পরমান্থোপাসকানাং চিত্তগুদ্ধার্থ প্রথমময়মেবেপোস্য ইত্যাহ এব হীতি অশেবস্থানাং প্রাণিনামান্থা বাষ্টানাং ভদংশবাৎ। সংশো জীবঃ অবতার ইতি বোগিনাং তদক্ষমিনা সহ তসৈয়কাভাবনশ্বাণ্ডভগ্রামে। দেবমম্ব্যাদিসমূহঃ ॥ ৮ ॥

একধা দশধা ত্রিখেতি পূর্কপ্রোকোক্তং বৃংৎক্রমেণ বিবৃণোতি সাধ্যাত্মানী ক্রিয়াণি তৎসছিতঃ। অধিদেবানী ক্রিয়াণাং দেবতাঃ। অধিভূতানি অধিষ্ঠানানি বিবয়াক। প্রাণোপানঃ সমানক উদানো বাান এবচ। নাগঃ কৃর্মক ক্রুবরা দেবদত্তা ধনঞ্জ ইতি বৃত্তিভেদেন দশবিধঃ প্রাণ ইতি দশবিধেনানেন বিরাড়েব দশবিধ ইত্যর্থঃ। তত্র প্রাণঃ প্রাক্তমণো নাসাগ্রবর্তী অপানো ধ্বাক্তমণঃ পাব্বাদিয়ানবর্তী সমানো ভূক্তপীতায়াদিসমীকরণঃ শরীরমধ্যবর্তী। উদানঃ উৎক্রমণঃ কঠন্থানবর্তী । ব্যানো বিশ্বক্তমণসকলশরীরবর্তী নাগ উল্গীরণকরঃ। ক্র্মঃ উল্মীলনকরঃ ক্রুবর ক্র্মাকরঃ দেবদত্তো জ্ঞাকরঃ ধনঞ্জয়ঃ পোষণকরঃ ক্রুবরেন হত্তনান জীবেন ॥ ১॥

অধ্যাত্মাদিভেদং প্রপঞ্চরিত্ম অর্থানিরপেণ প্রবিষ্টতেখনত কিম্পি কুতানাত্ম বল্লিত। বিজ্ঞাপিতং যাবধলিং তেৎক হ্রা-

শক্তি এবং আত্মশক্তি বিশিষ্ট হইয়া, এক, দশ ও তিন প্রকারে বিভক্ত হইল। অর্থাৎ জ্ঞান শক্তি বারা ছদয়াবিচ্ছন চৈতন্য স্বরূপে এক প্রকার এবং ক্রিয়াশক্তি বারা প্রাণ রূপে দশ প্রকার অর্থাৎ প্রাণ, অপান, সমান, উদান, ব্যান, এই পঞ্চ, অপর নাগ, কুর্ম, কৃকর, দেবদন্ত ও ধনঞ্জয়, এই পঞ্চ, এত-ছভয়ে র্তিভেদে দশ প্রকার, আর আত্মশক্তি অর্থাৎ ভোক্তৃত্ব শক্তিরূপে অধ্যাত্ম, অধিদৈব, অধিভূত ভেদে আপনাকে তিন প্রকার করিল॥ ৭॥

ঐ বিরাট্ পুরুষ অশেষ প্রাণির আত্মা, যে হেতু সমস্ত সৃষ্টিই তাঁহার অংশে হয় এবং তিনি প্রমা-ত্মার অংশ অর্থাৎ জীব, অতএব আদ্য অবতার স্বরূপ, তাঁহাতেই ভূত সকল প্রকাশ পায়॥ ৮॥

ঐ বিরাট পুরুব, আত্ম শক্তি বারা অধ্যাত্ম, অধিদৈব এবং অধিভূত, এই তিনের সহিত বর্ত্তমান হওয়াতে তিন প্রকার এবং ক্রিয়াশক্তি বারা প্রাণাদি স্বরূপ হওয়াতে দশ প্রকার, আর জ্ঞানশক্তি বারা হুদরাবচ্ছিন চৈত্ত স্বরূপ হওয়াতে এক প্রকার হুইলে॥ ৯॥

चस्रवीमी भाष भूक्त विश्व के यक्त महमानि छस्तरात शृत्सीक विकाशन वाका मात्री कतिया

অথ তস্যাভিতপ্তস্য কতিধায়তনানিহ। নিরভিদ্যস্ত দেবানাং তানি মে গদত: শৃণু ॥ >> ॥
তদ্যাগ্রিরাস্তং নির্ভিন্নং লোকপালো বিশৎপদং। বাচা স্বাংশেন বক্তব্যং যয়াসৌ প্রতিপদ্যতে ॥ >২ ॥
নির্ভিন্নং তালুবরুণো লোকপালোহবিশদ্ধরে:। ক্রিস্বয়াংশেনচ রসান্ যয়াহসৌ প্রতিপদ্যতে।
নির্ভিন্ন অখিনৌ নাসে বিফোরাবিশতাং পদং। আলেনাংশেন গদ্ধস্য প্রতিপত্তি র্যতোভ্বেৎ ॥ ১০ ॥

विभवतामी।

এবং করিবাামীভালোচিতবান্। যসা জ্ঞানমরং তপ ইভি আছে: এবাং বিশ্বস্থলাং বিবৃত্তরে বিবিধ বৃত্তিশাভার ॥ ১০ ॥ সে মন্তঃ শুলু ॥ ১১ ॥

আয়তনানোবার তস্যায়িরিত্যালি চতুর্দশভিঃ আস্যাং নির্ভিন্নং পূর্ধগ্রাতং পদং স্বস্থানং স্বাংশেন স্বশক্তাং বাচা সহাবিশৎ। অসৌ জীবঃ বক্তবাং প্রতিপণ্যতে শক্ষমুচ্চারয়তীত্যর্থ: এবং সর্বত্ত যদিভিন্নং বিতীয়াস্তং তদধিষ্ঠানং। অগ্নাদি প্রথমাস্তং অধি-বৈবং। বাগাদি ইক্সিয়ে তৃতীয়ান্তমধ্যাস্থাং প্রতিপত্তবাং অধিভূতং । ১২ ॥

হরেবিরাজ: । ১৩ ।

ক্রমসক্ষর্ভ:।

শক্তিক্তৰভীতি ভাব:। অভএভদনতাৰ্মেৰ স বৈ বিশ্বস্কামিত্যাহ্যকং জ্ঞেৰং অভপং শ্বেন ভেক্সা প্ৰকাশ্যিত্মিষ্ট্ৰান্॥ ১০ চ ১১। ১২। ১০॥ ১৪॥

बीवियमाथहक्तवहीं।

মেতাাদি খেন তেজসা চিছ্কো অতপৎ প্রকাশরামাস এবাং বিশ্বস্থলাং বির্ত্তরে বিবিধর্তিলাভার চক্রণচক্রত শ্রোত্রভ শ্রোত্রমিতাাদি শ্রুতে:। কারণশক্তিরেব কার্যোবৃত্তবতীতি ভাব: ॥ > ॥

তত সমষ্টিবিরাজ: অভিতথত পরমেখনে থাকাশিতত আয়তনানি ছানভেদা: নিরভিদ্যন্ত পৃথগভূবন্নে মতঃ ॥ ১১ ॥
নির্ভিন্নং পৃথগ্ঞাতং আতং পদং বছানং বাচা বাগিজিনে সহ অধিরবিশৎ সংশেন খেনৈকাংশেন যয়া বাটেচব অসৌ জীবঃ
বিরাট্ বক্তবাং প্রতিপদ্যতে শক্ষম্চার্যতীত্যর্থ:। এবং সর্ক্র ব্রিভিন্নং বিতীয়ান্তং তদ্ধিভূতমধিষ্ঠানং। যদগ্যাদি প্রথমান্তং
তদ্ধিদৈবং। য্রাগাদি তৃতীয়ান্তং তদ্ধ্যান্থা। যংপুন্ধি তীয়ান্তং কচিং বৃষ্ঠান্তং তদ্ধিভূতং বিবরঃ ॥ ১২ ॥

हरतः हतिरचन (भाषमा विताबः ।

यका जानार ॥ ১०॥

তাহাদের বিবিধ বৃত্তি লাভ নিমিত্ত স্বায় তেজঃ দারা বিরাট্ শরীরকে প্রকাশিত করিলেন অর্থাৎ এই রূপ করিব এই প্রকার আলোচনা করিলেন ॥ ১৮ ॥

হে বিজুর! পরমেশ্র কর্ক ঐ বিরাট্ মূর্ত্তি প্রকাশিত হইয়া দেবতাদিগের কত প্রকার আয়তন নির্ভিন্ন হইল প্রবণ কর॥ ১১॥

ঐ বিরাট্ পুরুষের মুথ পৃথক্রপে উদ্ভিন্ন হইলে অগ্রাদি লোকপাল সকল স্ব স্ব শক্তির সহিত আপনাদের ছান স্বরূপ ঐ মুথে প্রবিষ্ট হইলেন, সেই বাক্শক্তি দারা জীব আপনার বক্তব্য শব্দাদি উচ্চারণ করিয়া থাকে, অর্থাৎ বিরাট্ পুরুষের মুথ পৃথক্ রূপে নির্ভেদ হইলে তাহা বাক্যের অধিষ্ঠান হইল এবং অগ্রাদি দেবতা তাঁহার অধিদৈব হইলেন, বাগাদি অধ্যাত্ম এবং বক্তব্য বাক্যাদি বিষয় স্বরূপ হইল ॥ ১২ ॥

এই রূপে দেই বিরাট্ পুরুষের তালু পৃথক্ রূপে উৎপদ হইলে লোকপাল বরুণ স্বীর অংশে জিহার সহিত তাহাতে অধিদেবতা রূপে প্রবিষ্ট হইলেন, তদধিষ্ঠাতা জীব জিহা দারা রূস গ্রহণ করিয়া থাকেন। তদনন্তর তাঁহার নাসিকা দার নির্ভিন্ন হইলে অধিনীকুমার দয় স্বীয় অংশে আনের সহিত তাহাতে প্রবিষ্ট হইলেন। এ নাসিকা দয়ের অধিষ্ঠাতা তদ্ধারা গদ্ধ গ্রহণ করিয়া থাকেন। ১০

94

নির্ভিন্নে অক্ষিণী ঘটা কোকপালো বিশবিভা:। চক্ষুষাংশেন রূপাণাং প্রতিপত্তি র্যতোভবেৎ ॥১৪ নির্ভিন্নায়স্ত চর্মাণি লোকপালো হনিলোবিশৎ। প্রাণেনাংশেন সংস্পর্শং যেনাসো প্রতিপদ্যতে॥১৫ কর্ণাবক্ত বিনির্ভিন্নে ধিষ্ণ্যং স্বং বিবিশু দিশ:। জ্যোত্রেণাংশেন শব্দক্ত সিদ্ধিং যেন প্রপদ্যতে॥১৬॥ ঘটনস্ত বিনির্ভিনাং বিবিশুর্ধিষ্ণ্যমোষ্থী:। স্বংশেন রোমভি: কণ্ডুং যৈরসো প্রতিপদ্যতে॥১৭॥ মেতুং তক্ত বিনির্ভিন্নং স্বধিষ্ণ্যং ক উপাবিশৎ। রেতসাংশেন যেনাসাবানন্দং প্রতিপদ্যতে।

विवत्रभागी।

प्रष्ठी जानिजाः । ১৪ ह

थारगरनि थानवरकहवानिना प्रशिक्षित्तरमण्डार्थः ॥ ১৫ ॥

শক্ত সিদ্ধিজ্ঞনিং ৷ ১৬ ৷

ছচং চর্ম। ওবধী: ওধৰম: ছগিঞ্জিমটেন্তৰ স্থানভেদেন বিষয়বধং কণ্ডঃ ম্পর্মণত। জাত্র চামং নামভেদো দেবতাভেদশ্চতি। বিতীয়স্কর এব ব্যাখ্যাতং । ১৭ ॥

ক: প্রকাপতি: । ১৮ ।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

চর্মাণীতি চর্মোপদাক্ষিতা স্বণিত্যর্থ: ইভি দিভীয়স্কক্ষে টীকাস্থ বর্ত্তে। প্রাণেনেজিয়েগোতা তুমগ্রপণেত্যর্থ: ॥ ১৫।১৬॥
স্বচমিতি একসিন্নপি স্পর্শগ্রাহকে ভেদদর্মিদং করাঃ। বহিরধিষ্ঠানং চর্মাই ক্রিয়ং লোম। দেবতাশ্চ ঔষধ্যধিষ্ঠাতাইতেয়কঃ।
স্বত্ত্বব্বিষ্ঠানং তুম্বক্ ই ক্রিয়মপি স্কৃণ দেবতাচ বায়ুরিতাভোভোচাভেদঃ॥ ১৭।১৮।১৯।২০॥

द्याविषनाषठकवन्त्री ।

कहें। व्यक्तिः ॥ ५८ ॥

व्यात्वरमिक व्यावराम ह्वालिमा प्रविक्तिरार्व कार्यः ॥ ३६ ॥ मिकिर कान् । ३७ ॥

ওবধী বোৰধাঃ। অত্র স্বচাধিষ্ঠানে স্বক্ রোনাপি চেক্সিয়বরং। তত্ত্ব স্বগিক্সিয়ে স্পনিলো দেবতা স্পর্শো বিষয়ঃ। রোমেক্সিয়ে ওবধোা দেবতাঃ কণ্ড্রিয়ঃ । ১৭ ০

ক: প্রজাপতি: রেতসা রেত উপলক্ষিতেন উপস্থেন ইতার্থ:। বিদর্গং মলমুত্রোৎদর্গং ॥ ১৮ ॥

তদনন্তর বিরাট্ পুরুষের ছই চক্ষুর গোলক পৃথক্ রূপে নির্ভিন্ন হইল, লোকপাল আদিত্য স্বীয় আংশের সহিত অধিদেবতা রূপে তাহাতে প্রবেশ করিলেন, সেই চক্ষুঃ হইতে জীবের রূপ জ্ঞান হইয়া থাকে ॥ ১৪ ॥

তাহার পর বিরাট্ পুরুষের শরীরন্থ ত্বক্ সকল পৃথক্ রূপে উৎপদ্ধ হইলে লোকপাল অনিল আপনার অংশে সর্ব শরীর ব্যাপিয়া ত্বিন্তিয়ে সহ অধিদেবতা স্বরূপে তাহাতে প্রবিষ্ট হইলেন, ঐ ত্বিনিয়ে বারা জীবের স্পর্শ জ্ঞান হইয়া থাকে ॥ ১৫॥

তৎপরে বিরাট্ পুরুষের কর্ণায় পৃথক্ রূপে প্রকটিত হইলে দিক্ সকল স্থীয় অংশ দ্বারা প্রোত্তের সহিত অধিদেবতা স্বরূপে তাহাতে প্রবেশ করিলেন। ঐ জ্যোত্তেন্দ্রিয় দ্বারা জীবের শব্দ জ্ঞান হইয়। থাকে॥ ১৬॥

তৎপশ্চাৎ ঐ বিরাট্ পুরুষের চর্মা পৃথক্ রূপে নির্ভিন্ন ছইলে ওষধী সকল স্বস্থ অংশ সহ অধি-নেবতা স্বরূপে-রোম ঘারা তাহাতে প্রবেশ করিলেন। সেই সকল রোম ঘারা কণ্ডুয়া এবং স্পূর্ণ এতছ্তর নিষ্ণিত স্থাদির সমুক্তব হুর র ১৭:॥

তাহার পর বিরাট্ পুরুষের উপত্থ পৃথক্ রূপে প্রকটিত হইল এবং প্রকাপতি আপনার সংশে

শুদং পৃংসো বিনির্ভিন্নং মিত্রো লোকেশ আবিশৎ। পায়ুনাংশেন যেনাসোঁ বিদর্গং প্রতিপদ্যতে ॥ ১৮ হস্তাবস্থ বিনির্ভিন্নবিদ্রঃ স্বঃপতিরাবিশৎ। বার্ত্তায়াংশেন পুরুষো যয়া বৃত্তিং প্রপদ্যতে ॥ পাদাবস্থ বিনির্ভিন্ন লোকেশো বিফুরাবিশৎ। গত্যা স্বাংশেন পুরুষো যয়া প্রাপ্যং প্রপদ্যতে ॥ বৃদ্ধিং চাদ্য বিনির্ভিন্নং বাগীশো বিষ্ণ্যমাবিশৎ। বোধেনাংশেন বোদ্ধব্যং প্রতিপত্তি র্যভোভবেৎ ॥১৯ হদম্পাদ্য নির্ভিন্নং চন্দ্রমা বিষ্ণামাবিশৎ। মনসাংশেন যেনাদো বিক্রিয়াং প্রতিপদ্যতে ॥ ২০ ॥ আ্লানকাদ্য নির্ভিন্নঅভিমানো বিশৎ পদং। কর্ম্মণাংশেন যেনাদো কর্ত্তব্যং প্রতিপদ্যতে ॥ ২১ দত্ত্বাদ্য বিনির্ভিন্নং মহান্ বিষ্ণামুপাবিশৎ। চিত্তেনাংশেন যেনাদো বিজ্ঞানং প্রতিপদ্যতে ॥ ২২ ॥

खीधतवामी।

স্থাপতিঃ স্থাপতি বিজ্ঞা বার্ত্তরা ক্রমবিক্রমাদি শক্যা বৃত্তিং জীবিকাং প্রাণ্যং দেশাস্তং ॥১৯॥ বিক্রিমাং সংক্রাদি রূপাং ॥২০॥ আমানমহত্বারং। অভিমন্ততে অনেনেতি অভিমানো ক্রম্মঃ ক্র্মণা অহংবৃত্ত্যা কর্ত্তব্যমিতি ক্রিমাং॥ ২১॥
সন্ত্বমিতি বৃদ্ধিতিত্বের্রেডেনেন নির্দ্ধেশঃ মহানিতি ব্রহ্মা। চিত্তেন চেতনরা॥ ২২॥

ক্রমসমর্ভ:।

व्याचानमहः छारान्त्रमः (गानकः। कर्मना वहस्राद्यतिस्वरम्। २) ॥

স্বং চিতাম্পদং গোলকং। চিভেনে আলেরেণ। বিজ্ঞানং সামায়তে। জেলং। এতচে ব্রেরপ্যপলকণং। কচিত, পাদা-

श्रीविचना**ण्डळवर्डी** ।.

वार्खत्र। क्रत्रविक्रत्रानि भटकाि वार्खा वनिवानिभक्तवाह्यमधाष्ट्रः वृद्धिः भौविकाः ॥

বৃদ্ধিং বৃদ্ধাশোদং পোলকং ছদলৈকদেশং। বাগীশো এক্ষা বোধেন বৃদ্ধা লোকোহরমসর্বসন্মতঃ ॥ ১৯ ॥ বিক্রিয়াং সক্রাদিরপাং ॥ ২০ ॥

আগ্রানমহকারাম্পদং গোলকং ক্দেকদেশং। অভিমন্যতেইনেনেতি অভিমানো ক্র:। কর্মণাইকারেণ কর্তব্যং অভিমন্তব্যং॥২১
সন্ধং চিত্তাম্পদং গোলকং ক্দবৈদকদেশং মহান্ বিষ্ণু: বিজ্ঞানং চেত্তনাং॥ ২২॥

শুক্র দারা অধিদেবতা স্বরূপে তাহাতে প্রবেশ করিলেন। সেই শুক্র দারা জীবের আনন্দামূভব হয়।
পরে বিরাট্ পুরুবের পায়ুস্থান পৃথক্ রূপে নির্ভিন্ন হইল এবং মিত্রদেবতা আপনার অংশে পায়ু সহ
অধিদেবতা স্বরূপে তাহাতে প্রবেশ করিলেন তদ্ধারা জীবের মলত্যাগাদিকর্ম্ম সম্পন্ন ইইয়া থাকে ॥১৮
তদনন্তর বিরাট্ পুরুবের হস্তদ্বর পৃথক্ রূপে প্রকাশ পাইলে, স্বর্গনিতি ইন্দ্র স্বীয় অংশে ক্রেয় বিক্রে
য়াদি শক্তি সহ অধিদেবতা স্বরূপে তাহাতে প্রবিষ্ট হইলেন। সেই ক্রেয় বিক্রয়াদি রূপে শক্তি দারা
তদ্ধিতাতা জীব আপনার জীবিকা প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। তৎপরে বিরাট্ পুরুবের পদ্বয় পৃথক্
রূপে উদ্ভিন্ন হইল এবং লোকেশ বিষ্ণু আপনার অংশে গতি শক্তি দারা তাহাতে প্রবেশ করিলেন।
ঐ গতি শক্তি যোগে পুরুবের দেশান্তর প্রাপ্তি হয়। ত্রুৎপশ্চাৎ বিরাট্ পুরুবের বৃদ্ধি পৃথক্ রূপে
নির্ভিন্ন হইল এবং বাগীশ ব্রহ্মা বীয় অংশ দারা অধিদেবতা স্বরূপে বোধাংশ সহ তাহাতে প্রবিষ্ট
হইলেন। পুরুষ সেই বোধাংশ দারা বোদ্ধর্য বিষয় অনুভব করিয়া থাকেন॥ ১৯ ॥

তৎপরে বিরাট্ পুরুষের হানর পৃথক্ রূপে প্রকটিত হইল এবং চন্দ্রমা স্বীয় অংশে মনের বালা তাহাতে প্রবেশ করিলেন, জীব সেই মনো বারা সংকল্প বিকল্পাত্মক বিকার প্রাপ্ত হইয়া থাকেন ॥ ২০ তদনস্তর বিরাট্ পুরুষের অহঙ্কার পৃথক্ রূপে উৎপন্ন হইল এবং রুদ্র আপনার অংশে অহং বৃত্তি রূপ কর্ম বারা অধিষ্ঠাত্ রূপে তাহাতে প্রবিষ্ট হইলেন, সেই অহং বৃত্তিরূপ কর্ম বারা ভাঁছার কর্তব্য কর্ম প্রাপ্তি হইয়া থাকে ॥ ২১ ॥

TO CONTROL OF THE PROPERTY OF

Aurille 1

विरमाद्वादन्त्रियात श्रीक देनि, दक्षमः नहिलाद्याः ॥ २० ।

এতদেৰ প্ৰশক্ষ্ণতি ৰাজ্যাং। আজাজিকেন উৰ্জিডেন। গুণবাবহারে পণারতে বাগাদিনা ব্যবহরতীতি পণরে। মহাব্যাঃ তানসং বে জন্তপ্ৰৱণভূতাঃ গ্ৰাহম জেইপি ব্যাহ প্রশেষ্টিকে । ২০ ছ

ভূতীরং ড্রাই জনীরেন ভারসেন উভয়োদ্যাব্যা পুৰিব্যা রক্তরং মধ্যং ব্যোম অভরীক্ষং তবেৰ ভগবতো নাভিঃ ভামাপ্রিভাঃ কল্পপরিবাং কল্প পার্বধানাং ভূতাকীলাং পগাঃ ন ২৫ ন

অবর্তত প্রবৃত্তং এক বেদঃ। বত উব্ধতাৎ মুগোরবদাৎ বর্ণনাং মুগাঃ মুগমিব প্রথমঃ শ্রহণাত্ৎ সোণি মুগজোৎবর্তত ইত্যন্ত্ বলঃ। অধ্যাপনাদিনা আফাণস্য বেলো বৃত্তিঃ তরা মুদ্ধা সহ প্রাক্ষণো মুখজো কাত ইত্যর্থঃ। এবমুক্তর বর্ণনতে ভাতবাং ॥ ২৬ ॥

्र_वं क्यूनवर्षः। ः

वरमाजानस्त्रः वृक्षिः চारमाजामिकम्मि भगः पृथमित ॥ २२ ॥

नीक रेंछि। जना वित्रांकः नीरकाञ्चारनाककात्रगारमार। ध्वममाणाणि। यर प्रताकः ॥२०॥२०॥२०॥२०॥२०॥

विविधाविकक्षवती।

बिरनारकारপण्डिमाइ नीक हेकि। वृक्तः भन्निगामाः ॥ १० ॥

আত্যন্তিকেন উর্জিতেন পণতে যাগাদিনা ব্যবহর**র্বাতি** পণরো মহয্যাঃ পণব্যবহারে। তানসুবর্ততে বে তহুপকরণভূতা গবা-দরতেপি ধরাং প্রপেদিরে ॥ ২৪ ॥

ভূতীরং তমন্তদীদেন তামনেনেত্যর্থ:। বে কল্লণার্বদাং ভূতাদীদাং গণা তে ভদৰতো বিরাজে। নাভিমাল্রিতা ইত্যবর:। নাভিরেব কা ততাই উভরো দ্যাবা পৃথিব্যোরম্ভরং মধ্যং ব্যোম আকাশং ভূবলে কিং ॥ ২৫ ॥

চাতৃৰ্বগোৰণভিষাহ এক বেদঃ পুৰুষস্য প্রমেখরেশৈক্যান্তস্য মুখতোহবর্তত অভূৎ যক উলুধ্বাহেলোর্থ্যান্তেবিশানাং মুখ্যো অকলচাতৃত্ব ক্ষণঃ লোগি মুখতোহবর্তভেতাভ্যকঃ ॥ ২৬ ॥

তৎপরে তাঁহার চিত্ত পৃথক্ রূপে প্রকাশিত হইলে, বহুতত্ত্ব অধিদেবতা বরূপে অঞ্চনার অংশে চেতনা বারা তাহাতে প্রক্রিক হইলেন। সেই চেতনা বারা বিজ্ঞানের অমুভব হইরা থাকে। ২২॥

অনস্তর বিরাট্ পুরুষের মন্তক হইতে স্থা, পদবয় হইতে পৃথিবী এবং নাভিদেশ হইতে আকাশ উৎপদ্ধ হইল। ঐ সকল স্থানে স্থাদি গুণী এয়ের পরিণাম স্বরূপ দেবতাদি প্রতীয়্মীন হয়েন ॥ ২০॥

অধীৎ দেবগণ উৰ্জিত সম্ব গুণ প্ৰভাবে স্বৰ্গে অবস্থিত হয়েন, এবং নসুব্য সকল ও ভাহাদের প্ৰয়োজন সাধক গ্ৰাদি রজোগুণ সভাব জন্ত পুথিবীতে অবস্থিত হইয়াছে । ২৪ ।

শপর রুজ পার্বন রে নুক্ত ভুডাদি, তাহারের তারাঞ্চ বভাব বেছু তাহারা ন্যাবা ভূমির শশুরত্ব শস্তরীক লাজের ক্রিয়া লাভে ॥ ২৫ ॥

কে ক্ষমণ্ডেই। আছাৰ পৰ সেই বিবাট প্ৰক্ৰমেৰ ৰূপ ছইতে বেদ এবং প্ৰামণ সকল উৎপৰ ইইজেন। এ বেদই আৰুষ্টোটো বালা বিশ্বেগণের বাভি অন্ধণ বেংবাতে উছোনের জীবিকাও সংক গলে উৎপত্ন হ'ল। প্ৰাক্ষমণাজ্ঞান ইতিইতে লাম্বান্তিন আজন উহোৱা বৰ্ণের প্রথম এবং ভ্রম ইক্ষান্তেই হও বাহভ্যোহবর্তত করেং করিমন্তদন্ত্রভঃ। বো জাত জারতে বর্ণান্ পৌক্লবং কন্টবক্ষতাং ॥ ২৭ বিশোহবর্তত তল্যোধনা পৌকর্তিকরীনিভাঃ। বৈশ্যন্তমূন্তবো বার্তাং নৃশাং বং সমবর্তরং ॥ ২৮ পত্যাং ভগবতো জভ্যে ভলাবা ধর্মসিদ্ধরে। ভস্যাং জাতঃ পুরা শ্রেলা বদ্ধ্যা ভূমতে হরিঃ ॥ ২৯ এতে বর্ণাঃ বধর্মেণ যজন্তি সঞ্জন্ধ হরিং। আদ্বাত্য বিশুদ্ধর্থং যজ্ঞাতাঃ সহ বৃত্তিভিঃ ॥ ৩০ ॥

शिधतयागी।

ক্ষত্রং পালনরপার্ত্তিঃ তৎ ক্ষত্রং অমূত্রতঃ অমূত্তঃ । ক্ষত্রিয়োপি বাহজ্যোবর্ততেত্যর্থঃ। তদমূত্রতম্বনেধার ব ইতি। পৌরুষঃ পুরুষস্য বিষ্ণোরংশঃ কন্টকা শ্চৌরাদয়ঃ তেভায়ো যৎ ক্ষতমুপদ্রবঃ তক্ষাৎ ত্রারতে রক্ষতি ॥ ২৭॥

বিশঃ ক্লব্যাদি ব্যবসারাঃ লোকস্য বৃত্তিকরীঃ জীবিকাহেতবঃ তক্ত বিঁজে। রুর্বোঃ প্রবৃদ্ধাঃ তত্ত্বৰ উক্তরঃ বার্তাং জীবিকাং যঃ বর্ত্ত্যা সম্পাদিতবান্ ॥ ২৮ ॥

তভাং নিমিত্ত ভাষাং যদ্য বৃত্তা বিজ্ঞ শ্ৰহা হরিঃ স্বয়মেৰ তুবাতি ॥ ২৯ ॥

यए बनाव्याजाः अक्रपार कनक्षार वृक्तिश्रमञाक्र स्टात्रतात्राधनः एक्वाः भटता धर्म हेकार्यः ॥ ७० ॥

क्रममन्दः।

পঙ্যামিতি যৰ্ত্যা শুশ্ৰারপরা ব্রাহ্মণাদিনা সর্বেশাপি স্বামিন্ রুত্রা হরিরপি তুষ্টীতি তৰ্তেম হিমা দর্শিত:। জ্যক্রা ধর্মমিত্যাদৌন কেবলেন স্থর্মেণ ভগবতোষানলীকারাং ॥ ২৯॥

তত্ত্ব প্রথমজাতে: সর্কেরেতৈত্ত্ব স্বস্থ ধর্ম হরি যজনরূপতহৈর ভাবিত ইতি তদানীস্তনানাং বৈশিষ্ট্যমভিপ্রেত্যাহ এত ইতি।

শ্ৰীবিখনাথচক্রবর্তী।

ক্ষত্রং পালনশব্দিঃ তদ্যুত্তত্ত্যুধঃ ক্ষতিয়োপি বাহড্যোহ্বর্ততেত্যুর্জঃ। কণ্ঠকান্চৌরালয়তেভ্যো য্ৎ ক্ষতমুপদ্রবন্তশাক্ষায়তে।ক্ষতি যতঃ পৌক্ষঃ পুরুষস্যায়ং তদীয়পালনশক্তিমবাদিত্যুর্জঃ ॥ ২৭॥

বিশঃ ক্লয়াদিব্যবসায়াঃ উর্ক্ষোঃ উক্লভ্যাং লোকানাং বৃত্তিকরীজী বিকাহেতবঃ বৈভ্যোপি তত্ত্বঃ উক্লভ্বঃ। বার্ত্তাং জীবিকাং ঃ স্বর্ত্তা সমবর্ত্তরং সম্পাদিতবান্ ॥ ২৮ ॥

শুক্রবা পরিচর্য্যা কর্মণো বর্ণাশ্রমধর্মস্য সিদ্ধরে শুক্রবাং বিনা কর্মাত্রসৈয়েব সিদ্ধিন ভবতীতি সা শুক্রভ রুত্তি ভবস্তাশি ভিতঃ সার্কবর্ণিক্সতি ভাব অভাং বিবরে শুক্রো জাতঃ পত্ত্যামিতি শেবঃ বব্দুত্তা হরিশ্ববাতীতি বেদাদিভ্যোপি শুক্রবারা ইৎকর্বঃ স্চিডঃ ॥ ২৯ ॥

गरर्वि कि ब्रिक्ट विवयस्य की विकार्यः विका न कार्यावि कावः ॥ ०० ॥

অপর ঐ বিরাট্ পুরুষের বান্ত হইতে ক্ষত্র অর্থাৎ পালন রূপা বৃত্তি এবং ঐ বৃত্তির অনুবত্তী ক্ষত্রিয় উৎপন্ন হইল। হে বিচুর! এই কারণে বিষ্ণুর অংশ স্বরূপ ক্ষত্রিয় জাতি চৌরাদির উপদ্রব ইততে ব্রহ্মণাদি বর্ণ দকলকে রক্ষা করিয়া থাকে ॥ ২৭॥

অনস্তর ঐ বিভুর উরুদ্ধ ইইতে লোক সকলের জীবিকার হেতু স্বরূপ রুষ্যাদি ব্যবসা সকল উৎপন্ন ইল এবং বৈশ্যজাতিও সেই উরুদেশ হইতে জন্মিল। বৎস বিজ্ব! এই কারণেই বৈশ্যজাতি ম্যাদি ব্যবসা দারা জীবিকা সম্পন্ন করিয়া থাকে॥ ২৮॥

তৎপরে সেই বিরাট পুরুষের পাদবয় হইতে ধর্ম সিদ্ধির নিমিত শুদ্রন্তি শুদ্রার উৎপদ্ধ হইল ববং তাহা হইতে শুদ্রকাতিও ঐ কার্যার্থ জন্মিল। ভগবাদ ঐ শুদ্রকাতির রতি আরাই প্রধিৎ বিল্লেখ্যানেতই সন্তর্ম হইয়া থাকেন॥ ২৯॥

বিছুর! এই সকল বর্ণ আপন আপন জীবিকা সহ ভগবান্ হইতে উৎপন হইরাছে, এই কার্মস

वैश्वयामी।

ু, তোঃ ক্ষঃ দৈৰকৰ্মান্ম রূপিণঃ কাশকৰ্ম স্বভাব শক্তিমতঃ ভগৰতো বৌগমান্তা বলেন উক্ত্তিত্যেত্তিরাড় রূপং উপাক্তবুং সাকল্যেন নিরুপরিভূং কঃ শ্রুমধাৎ ইচ্ছেৎ। ইচ্ছাপ্যশক্ষা নির্পণং ভূ দূরত ইত্যর্থঃ ॥ ৩১ ॥

আৰু বিহুর অধাপি হরেঃ কীর্তিং কীর্ত্তরামি। বধাঞ্জতং গুরুমুখাই তদপি ন সর্বান্ধনা কিন্তু বধামতি স্থমত্যসূস্তিরণ। অন্যাভিধা হরিবাতিরিকার্থাভিধানং তরা অসতীং মলিনাং স্বীরাং বাচং সংকর্ত্তঃ পবিত্রী কর্ত্তঃ ॥ ৩২ ॥

জন্তাদ্বাপি ষণামতি কীর্ত্তনে প্রবণে বা আবশ্যকং কৈবল্যমিত্যাহ একারতো লাভং স্থ নিশ্চিতমাহঃ প্রতঃ প্রোত্তত উপা-কৃতায়াং নির্মপিতায়াং উপসংপ্রয়োগং সন্নিধাবর্পণং ॥ ৩৩ ॥

क्यममर्खः ।

জাত্র যদিতি বিরাজঃ হরিশক্তিত এব ভচ্ছকে: অতো হরিভজনএব তদ্ভেদ্যোক্তভাৎপর্য্য: ॥ ৩০ ॥ বোগমারাত্র বিষস্ট্যাদিশক্তিঃ ॥ ৩১ ॥

की हिं: जानृक् वित्रां एंड्डानिवर्गन क्र भार । निर्देश वानि क्रिया ॥ ०२ ॥

একাম্ভেডি। কৈবল্যস্থল্যাপ্যতিক্রমানিতি ভাব:॥৩৩॥

এীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী

দৈবকৰ্মাত্মানঃ কাল কৰ্ম সভাবা স্বীয়শক্তিত্বাজ্ঞপাণি ত্ৰতঃ। বোগমায়াবলেন উদয়ো বহু তদেত্ৰিষমুপাকর্জুং সামস্ত্যেন নির্মায়িতুং কঃ শ্রদ্ধবাৎ ইচ্ছেৎ ইচ্ছাপ্যশক্যা নির্মাণং তু দূরত এবেতি ভাবঃ ॥ ৩১ ॥

যথাঞ্জং গুরুম্থাৎ ওত্রাপি যথামতি স্বৰ্দ্ধা যাবলগৃহীতং তাবদেব নতু যল্যদেব শৃতমিতার্থ:। অন্যাভিধা হরিব্যতিরিক্তা কথা তয়া অসতীং মলিনাং স্থীয়াং বাচং সৎকর্তুং পবিত্রীকর্তুং॥ ৩২॥

হরিকথামৃতানেরপারতাৎ সামন্ত্যেন জ্ঞানং ন কস্যাপ্যতো যৎ কিঞ্জিজ্ঞানে এব তৎকীর্ত্তনশ্রবণাভ্যাং লোকাঃ ক্বতার্থিভূর তং প্রাপ্নুবন্তীত্যাহ গুণবাদং গুণকীর্ত্তনমেব একান্ততো লাভমাহ রন্যৎ সর্কং বচসোপচরমেবেত্যর্থঃ শ্রুতঃ প্রোত্তস্যাপি উপাক্ষভারাং কীন্তিতায়াং উপসংপ্রয়োগং সমিধাবর্পণং ॥ ৩৩॥

ইহারা আত্মশুদ্ধির নিমিত আরা পূর্বক আপনাদের গুরু সেই ভগবানের আরাধনা করিয়া থাকে। যিনি বর্ণ সকলের গুরু এবং জনক ও রন্তিপ্রদ, তাঁহার আরাধনা করা তাহাদের পরম ধর্ম ॥ ৩০ ॥

কিন্তু কাল কর্ম বভাব শক্তিমান্ তগবানের ঐ বিরাড়্রূপ যোগমারা বলে উচ্চু ভিত ইইয়াছে, ইহাতে কোন্ ব্যক্তি তাহা সম্পূর্ণ রূপে বর্ণন করিবার অভিলাষ করিতে পারে ? অর্থাৎ বর্ণন করা দুরে থাকুক তদর্থ ইচ্ছাও অশক্য॥ ৩১॥

তথাপি আমি গুরু প্রমুখাৎ যেমন শুনিয়াছি এবং আমার যেমন মতি তদমুসারে তাঁহার কীর্তি তোমার নিকট কীর্তন করি। বিহুর! এ বিষয়ে আমি প্রস্তুত হইতেছি কেন শুনিবে? অনেক অনেক লোকের নিকট ভগবভাতিরিক্ত বিষয় কথনে আমার বাক্য মলিনীভূতা হইয়াছে একণে ভগবদগুণ কথন খারা তাহা প্রিক্তিক করিব। ৩২ ॥

হে বিহুর। পুণ্যকীর্তি ভগবানের গুণকীর্তনই পুরুষদিগের বাক্যের একান্ত লাভ। অপর পথিত গণ কর্তৃক দির্ভাগতা তলীয়া কথা ক্রিপ ক্ষায়া থেছিল প্রিটিটেন্তিয়া সমিক্তি কর্পের স্থাবিত ক্রিটেন্তিয়া সমিক্তি ক্রিটেন্তিয়া স্থাবিত ক্রিটেন্তিয়া ক্রিটেনিন্তিয়া ক্রিটেন্তিয়া ক্রিটেনিন্তিয়া ক্রিট

শান্ধনোহবদিতোৰৎস মহিমা কবিনাদিনা। সংবৎসর সহস্রাত্তে ধিরা বোগবিপানর। ॥ ৩৪ ॥

শতো ভাগবতী মারা মারিনামপি মোহিনী। যথ স্বরঞ্জান্ধবর্ত্তা নবেদ কিছুড়াপরে ॥ ৩৫ ॥

যতোহপ্রাপ্য শুবর্ত্তত্ত বাচশ্চ মনসা সহ। অহঞান্য ইমে দেবা স্তান্ধে ভগবতে নমঃ ॥ ৩৬ ॥

औधवयाधी ।

নচান্তীৰ জ্ঞানে নিৰ্ব্বন্ধ: কৰ্ত্তব্যা বন্ধণোপি চ্জেবিখাদিত্যাই আত্মনো হবে মহিনা বোগবিপক্ষাপি সংবংসর সহস্রান্তেপি আদিকবিনা বন্ধণাপি কিং অবসিতঃ ইতি কাক্স্যা এতাবানিভি ন ক্ষাত এবেডুয়ক্তং ॥ ৩৪ ॥

বন্দমাৎ বরমণি আত্মা হরিঃ আত্মবন্ধ ব্যায়াগতিং এতাবদিতি নবেদ অন্তত্তাং ॥ ৩৫ ॥

জতো হুজে স্বভাৎ কেবলং নমন্বরোতি যত ইতি। যথা জানায় প্রত্তা বাচোপি মনসা সহ তমগ্রাইপাব নাবর্ত্ত হুজে স্বভাৎ।

ক্রমসন্ধ:।

আত্মন ইতি সার্ক্তং পরমাত্মনো মহিমা অচিক্তৈয়র্থ্যাদিরপঃ । সংবৎসরসহস্রান্তে যোগবিপক্ষা ধিরৈবাবসিতঃ অচিন্ত্য-শক্তিত্বেনৈৰ নিশ্চিতঃ ॥ ৩৪ ॥

আতা যে তু চিন্তারেনৈব নিশ্চিষতি তেবামস্থান্ প্রতি মারিনাং মোহকারিণামণি ভগবতোমায়া মোহিনী ভবতীতার্থঃ।
আতঃ কারণাৎ তয়ায়া মারিনামণি মোহিনীতি সার্কেনারয়ঃ। ভগবত ইত্যত্ত ভাগবতীতি কচিৎ পাঠঃ। অচিন্তাত্তমের দর্শয়তি
যদিতি সার্ক্তেনা বিং যয়াৎ স্বয়মণি আত্মা বয় স্বয়ণৈষ্যাং ন বেদ সার্ক্তেনাপি ন পরিচ্ছিনত্তি স্বন্তত্তাই নম
এব কেবলমিতার্থঃ॥ ৩৫॥

ত্ৰেব বিশিন্টি বত ইতি। নিবৰ্ত্তন্ত ইতি কচিৎ পাঠঃ ॥ ৩৬ ॥

बैवियनाथ ठक्कवढी ।

নচাতীৰ জ্ঞানে নিৰ্কল্প: কাৰ্ব্যো ব্ৰহ্মণোপি ছক্ষে ব্ৰছাদিত্যাই আন্মনো হরেম হিমা বোগবিপকরাপি সংবংসর সহস্রাস্তেপি আদিকবিনা ব্ৰহ্মণাপি কিমবসিতঃ কিং জ্ঞাত ইতি কাক্জ্যা এতাবানিতি ন জ্ঞাত ইত্যর্থ:। যথা অবেত্যস্যাপি অকারলোপে নঞান বসিতঃ অবসিত ইতি সিদ্ধং। যথা সংবংসরসহস্রাস্ত এব মহিমা জ্ঞাত ইতি অচিস্তান্থানস্তভাগিং ছক্তে রভেন নিশ্চীরতে তদেৰ তপ্ৰক্ষানিং এতাবিদিদিমিখং কারেণ জ্ঞানং তজ্জ্ঞানমেবেতি ভাব:। তথাচ শ্রুতিঃ যস্যামতং তস্যু মতং মতং বস্যু ন বেদ স ইতি॥ ৩৪॥

নৰাম্মভৰ্তজানভোহন্যানপি জ্ঞাপদ্ধপ্তা দাৰ্শনিকা বহব এব দৃখ্যতে ততাহ মত ইতি। অতঃ কারণাৎ তন্মায়ামায়িনাং বোধরিতব্যের স্বশিব্যের মারামেবার্পদ্ধতাং তেষামপি মোহিনী নিশ্চমেটনৰ মোহিনী মুহুরপি সংসারের পাত্যিত্মিতি ভাবঃ ॥

वन्तरुः अज्ञेमाचा পরমেশ্বরোপি আত্মবর্থ অসকপং ন বেদ ন জানাতি অপরে বরাকাঃ কিমৃত জানীরুঃ ॥ ৩৫ ॥

অতো চ্জে রম্বনেব স্থাপরন্ নমন্বরোতি অপ্রাপ্য অক্তমলন। যতঃ স্কাশারিবর্ত্তরে বাচঃ স্মটিবাটানাং সর্কোষণি বাগি-জিরাণি মনসা সংহত্তি মনাংসিচ যথা ব্লগেশ মুখারির্গতাঃ সর্কে বেদাএব বাচঃ তলৈয়ৰ মনসা সহ অহং অহ্যারি্চাতা কুলঃ

বৎস! জ্ঞান দারাই যে কৈবল্য লাভ হইবে এমত নির্বাহ্ধ করা কর্তব্য হয় না, আদি কবি এক্ষা যোগপক বৃদ্ধি দারাও সহস্র বংসর পর্যান্ত চিন্তা করিয়া সেই ভগবানের মহিমার ইয়তা জানিতে পারেন নাই॥ ৩৪॥

শতএব ভগবানের মায়া শতীব ছজের, মায়াবিদিগকেও মুগ্ধ করে, ভগবান আপনিই আপনার মারার গতি শানিতে পারেন নাই, ইহাতে অপর ব্যক্তিরা কিরূপে তাহার ইয়তা করিতে সমর্থ হইবে ? ॥ ৩৫ ॥

হে বিছয়। জাঁহাকে জানিবার নিমিত বাক্য সক্ষ প্রয়ত হইয়াছিল, ভাহারা মনের সহিত অবেবণ করিয়া তাঁহাকে প্রাপ্ত না হওয়াতে নিয়ত হইয়াছে, কেবল বাক্য স্বনেরই কে অবেগচর প্রয়ত

॥ । १ विक श्रीकानवट्य महाश्रुत्राद्य शाजनस्थार नश्क्रिकातार देवत्रानिकार क्षीत्रकट्य शताय-थावटमा नाम वर्त्वाक्ष्यातः॥ । ॥ ॥ ॥ ॥

প্রীভক্টবাচ 🗈

এবং ব্রুবাণং মৈত্রেয়ং দৈপায়নহতো বৃধঃ। শ্রীণয়রিব ভারত্যা বিচুরঃ প্রত্যভাষত ॥ ১ ॥ শ্রীবিচুর উবাচ ॥

ব্রহ্মন্ কথং ভগবভশ্চিশাব্রস্যাবিকারিণ:। শীলয়া বাপি যুজ্যেরন্ নির্ভূণক্ত গুণা: ক্রিয়া:॥ ২ ॥

अध्ययामी।

ন কেবলং বাঙাুমননে কহং অহতারাধির্গতা ক্লেছেপি ইমে ইক্সিরাধির্গতারে। দেবা অপি অন্যেচ ॥ ৩৬ ॥
॥ ৮ ॥ ইতি ভৃতীরে বর্ষঃ ॥ + ॥

मश्राम नःभवाष्ट्रित श्रीष्ठिनमा मूटन र्सितः। श्रूनः समा क्रैष्ठा नाना श्रामाः नमाश्रुतीविष्ठाः ॥ • ॥

অথ তে ভগবরীলা যোগমায়োপর্ংহিতা ইত্যাদিনা মায়াওগৈ লী লয়া ভগবান্ স্ট্যাদি করোভি ইত্যেবং ক্রবাণং ভারত্যা প্রার্থনরপরা প্রীণয়ন্ ইবেভি অভিপ্রারাজ্ঞানেনাক্ষেপাং ॥ ১ ॥

নির্ব্বিকারদা ক্রিরা নির্প্তৰ্ণাঃ কথং শীলরেভ্যুক্তি প্রয়োজনাভাবং পরিহরতি। ন বছতো বিরোধমিতি ভাবঃ ॥ ২ ॥

ক্ৰমসন্বৰ্ড:

॥ + ॥ ইতি শ্ৰীমন্তাগৰতে তৃতীয়ন্ধকে শ্ৰীকীৰগোম্বামিক্কত ক্ৰমসন্দৰ্ভত বঠো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ ॥ + ॥ তি বাক্যালন্বায়ে ॥ > ॥

व्यव चांजाविकमात्राभक्ता भत्रतमध्यता विश्वश्रद्धाानिकः करताजि जीवक छव मूक्कीलि खेकः एव मस्मदः धाःशाखनाजाः भन्नि

@বিশ্বনাপচক্ৰবন্তী ।

ইমে দেবা বৃহস্পত্যাদয়ত বতো নিবর্ত্তরে কৃতঃ অপ্রাণ্য বরামরূপ চরিত্রাদীনাং সমান্ত্রাধুর্য্যগ্রহণাসামর্থ্যৎ অপারাণাং তেরামন্ত্র-প্রাপ্তা সামর্থ্যান্তেত্যর্থ:। প্রতিরপ্যাচটে বতো বাচো নিবর্ত্তরে অপ্রাণ্য মনসা সহেতি। অত্যাপাদাননির্দেশ এব বান্ধনস্বংশ্লের প্রত্যান্নকো নিবৃত্তি বৃদং তত্তেন প্রমাতুমশক্যন্তাদিতি জ্বেরং। স্ক্তিথব বাগাদ্যগমান্তং স্বান্ধনেন ন ব্যাথ্যেরং। বেইদশ্চ সইর্ব্তরহারে বেল্য ইতি মনসৈবাহুল্লইব্যমেতদ্যেরং প্রবং। তরিকোঃ পর্মং পদং সদা পঞ্চত্তি ক্রের ইত্যাদি প্রতিবিরোধাপত্তেঃ ॥ ৩৬ ॥

॥ • ॥ ইভি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। বঠোইখ্যার অত্তীরেইছিন্ সঙ্গতঃ সজতঃ সভাং ী • ॥

স্প্রমে ভগবজ্জীব গতানাৎ সংশর্মফ্লা। ভজিজিজাসরাজেপি করু: প্রশ্না: প্রকীর্তিতা: ॥ • ॥

এবং সাবা এতস্য সংক্রই: শক্তিং সদস্দান্থিকা। মারা নাম মহাভাগ বরেনং নির্দ্ধে বিভূং। কাল্যুল্ভাভু মারাবাং গুণম্ব্যামধ্যেক্স:। পুক্ষেণায়ভূতেন বীর্ষ্যাধন্ত বীর্য্যানিত্যাদি ক্রবাণং ভারত্যা ব্রদ্ধেরা সংসারভূপাত্ত্ত এবাহমিতি মধুরুরা বাচা শ্রীণরন্ ইবেতি বিহুর্মনোগতাক্ষেপস্য সহসৈব মৈতেরেগাবগতভাসৈতেরং শ্রীণরিভূষপকুব্রিত্যর্থ: ॥ ১॥

চিন্নালস্য গুণা: সন্থাদর: ক্রিয়া: হুটাাদরণ্ড কথং। অল চিন্নগ্রস্থা চিন্নারস্থান্ত চিন্নালস্থান্ত চিন্নালস্থান্ত বিধান্ত ক্রেন্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রিন্নান্ত ক্রেন্নান্ত ক্রেন্না

॥ * ॥ रेजि ज्जीतं वर्छ ॥ * ॥

সপ্তমাধ্যায়ে মৈজের মুনির সংশয় ছেদক বাক্য জাবণ করিয়া অভিনন্দনা পূর্ব্বক বিছুর কর্তৃক পুরব্বার নাবাবিধ প্রশ্ন ॥ * ॥

करण्य केरिएमी महाताक। प्रिरावत मृति अहे श्राकात करिएम ग्रामणनम विकालम विकाल

जिनि कहिरमन रह जन्मन । जनवान हिनाजक्रभी अवर निर्द्धिकात, डाहात ७० ७ कियानमङ कि

की भौत्री भूगार भेरिकी को भिन्दिकी दिस्पीनां छह। अवस्था अत्राह कवर मित्रवंत्र में मीनां छह ॥ ०॥

अध्यक्षात्री ।

অর্জকবরীলাপি ন যুজ্যতে বৈষম্যাদিত্যাহ উদ্যময়তি প্রবর্ত্তরতীক্তাদামঃ অর্জকস্য ক্রীড়ায়াং প্রবৃত্তিহেড়ুঃ কামোছতি। অন্যতত্ত বন্ধবনেশ বালাবন প্রবর্তনেশ বালাবন প্রবর্তনেশ বালাবন প্রবর্তনেশ বালাবন প্রবর্তনেশ বালাবন প্রবর্তনেশ বালাবন প্রবর্তনাক্র ক্রিক্তাত কর্মান ক্রিক্তাত ক্রিক্তাত কর্মান ক্রিক্তাত ক্রেক্তাত ক্রিক্তাত ক্রিক্ত

क्रममस्र्यः।

হরতি বন্ধরিতাদিনা। হে বন্ধন্ কথং ভগবতশিকাত্রন্থ চিকাত্র স্বরূপন্থ স্থতঃ স্বরূপন্তনা ভগবতঃ শ্রীমহৈদুঠাদিগততাদুশৈশ্বাদিব্জন্য সতএব নির্থাপন্য প্রাকৃত্যপাম্পৃষ্টিন্য ততএব চাবিকারিণঃ তাদৃক্ স্বরূপন্তনিবিলাসভূতানাং ক্রিরাণামনস্থানামপি সদাদিষে বানস্তবিধপ্রকাশে ভন্মিন্ নিতাসিদ্ধাৎ তত্তৎক্রিরাবির্ভাবকর্ত্ স্থলাবস্থাস্তরপ্রাভাবাৎ প্রাকৃতকর্তু রিব ন নির্বিকারাপতিরিতি নির্মিকার্য্য কথং সন্থান্তর প্রেরুত্তপাঃ কথং বা তদাসন্তুত্ত্বাঃ স্থাপনাদ্যঃ ক্রিরাণ্ট যুজ্যেরন্ তত্ত চিন্যাত্র বন্ধ বিরোধাদেব তে চ তাশ্চ ন যুজ্যান্তে ভগববি তু বৈরচেইয়াপি ন যুজ্যের্নিত্যাহ লীলয়া বাপীতি। অত্যাবিকারিছনিশুপদ্ধান্তাং নহ চিন্মাত্রন্থ ডেগবন্ধং চেত্যুভয়মপি স্বীকৃত্যৈব পূর্বপন্ধিণা পৃষ্টং তত্ত্বভ ত্যা চিন্মাত্রমন্ত্র ভগবন্ধং তন্মাত্রেছ ভগবন্ধা যুজ্যত ইত্যেৰ পূক্ষাতে ইতি বাক্যার্থঃ। তত্ব্দ চিন্মাত্রম্বে ভগবন্ধাত্রদে চ ত্যা তৃক্ষা গুণাঃ ক্রিয়ান্ট ন সম্ভবস্তোবেতি দিশুণীভূবৈব প্রশ্নঃ ॥ ২ ॥

नीनत्रा वाशि कथर ब्र्व्यात्रतिछ । विभनत्रिक की कांत्रामिकि । अधिकातिशानि छङ्ट्रकर्वहीनना किना किनी क्रियांत्रशः

খ্ৰীবিশ্বনাণচক্ৰবন্তী।

মাত্র শক্ষপ্রবাগাদিচিলক্ষন্যাপি তত্র রাহিত্যং বেথিতং তত্ত্ব সাবা এতস্যেত্যনেন স্বাদিগুণমন্যা মান্নারা ভগবছ্বজিন্ত্বেনাক্ষপাছকেশ্চ অভিন্নবাস্থ্যবৈ বন্ধতো গুণা শুদীয়া এবেতি তস্য চিন্নাত্র্ছে কথং সন্থাদিজভূগুণবন্ধে কথং বিকার ব্যক্ষকক্রিনাবন্ধ কিলাবন্ধ কথং বিকার ব্যক্ষকক্রিনাবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধে কথং বিকার ব্যক্ষকক্রিয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধে কথমবিকারিরমিতি হিতীয়:। নাম্বেমসন্থবন্ধাপি গুণাং ক্রিয়ান্দ তস্য বৈর্লীলত্বাৎ সন্তবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ কর্পেনাবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ কর্পেনাবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রিয়াবন্ধ ক্রেয়াবন্ধ ক্রেষ্ট ক্রেয়াবন্ধ ক্রেয়াব

কিঞ্চ শীলমেত্যক্তা বিরোধপরিহারো মান্ত শীলৈব তাবদীখনে হেছভাবার ঘটত ইতি সদৃষ্টান্তমাহ ক্রীড়ায়ামিতি উদ্যয়য়তি প্রার্থনিকীত্যুদ্যমং কাম এবার্তক্স্য স্বাতাবিকঃ ক্রীড়ায়াং প্রার্থিহেতুরভি। তথা স্বন্যতো বালান্তরপ্রবর্তনেনাপি চিক্রীড়িয়াভি

क्षकारत इरेल ? यनि वर्तन मीलावनाजः इरेग्रा थारक, जाराज्य किस्ताना अरे विकात मृत्यत किया अरः निक्ष राम ७१, मीमा बातारे वा किसराथ यूक्ति निक्ष हरेटक शास्त ?॥ २॥

হে মুনে! বালকের ন্যায়ও তাঁহার লীলা যুক্তি সিদ্ধ হইতে পারে না, কারণ বালক্দের ক্রীড়ায় যে প্রবৃত্তি হয় তাঁহার প্রবৃত্তির হেড় অভিলাষ এবং দ্রেখ্যান্তর অথবা বালকীন্তরের প্রবৃত্তনা থাকে অর্থাৎ তাহাতেই তাহার ক্রীড়ায় প্রবৃত্তি হয়। শীশর ত ষতঃ পূর্ণকাম, তাঁহার কোন বাসনা নাই, তবে কি প্রকারে তাঁহার অভিলাষ হইল এবং তিনি সর্বাদা অন্য হইতে নিম্নত অর্থাৎ অসক প্রযুক্ত ্ত্ৰভাৰীন্ত গৰান্ বিশ্বস্থ গ্ৰহণাল্প নামমান ভ্ৰমণ নাংখানগ্ৰেতভূম: প্ৰত্যপিধাস্যতি ॥ ৪॥ তিনিভঃ কনিতো বোসাধক্ষাতঃ স্বভোগ্ৰহণা স্ববিদ্ধাক্ষাধালা সমুজ্যেতালয়া কথং॥ ৫॥

अभनवामी ।

भगनाविजीवने। क्वयमगुंखिककी किर्दिकारी के के विकेट

যচোক্তং শ্বরন্ বিশ্বস্থানীলো বিজ্ঞাপিতমধোক্ষ ইত্যাদিনা অবিদ্যোপাধে জী বন্ত ভোগার্থনীখনঃ স্ট্রাদি করোতীতি তিনপ্যাক্ষেপ্ত মনুবৃদ্ধি অন্ত্রাকীদিতি। গুণমধ্যা আছনো জীবস্য কর্ত্ব ভোক্ত্মদি মোহোৎপাদিকা যা মারা তরা স্ট্রান্। তত্ত্ত্বং প্রথমে বরা সম্মোহিতোজীব আত্মানং ত্রিগুণাছাক্য। পরোপি মহুতে হনর্থং তংক্তঞ্গভিপদ্যতে ইত্যাদিনা অত্রচ অত্যে ভাগবতী যায়া মারিনামপি মোহিনীতি। সংস্থাপরতি পালয়তি প্রত্যাপিধাক্সতি প্রাতিলোম্যেন তিরোহিতং করিষ্যতি। প্রত্যাভিধাক্সতি পাঠাস্করে প্রাতিলোম্যেনায়নি অভিতো ধাররিষ্যতি॥ ৪॥

এতচ্চ জীবভাবিদ্যাশ্রম্থে ঘটেত নতু তৎ সম্ভবতীতানহ দেশত ইতি। যোসৌ দেশাদিভি রবিদ্ধাব্বোধঃ আদ্ধা জীবঃ ব্রহ্মস্থ্রপদ্মাৎ স ক্ষমজ্বা অবিদ্যায় যুদ্ধাত। তল দেশতো দীপপ্রভাষা ইব লোপো নাতি সর্বগতদাৎ ন কালতো বিহাত ইব নিতাদাং। নাবস্থাতঃ স্থতিবৎ অবিক্রিয়দাং ন স্বতঃ স্থাবং সত্যাধাং। নাস্ততঃ ঘটাদিবং অধিতীয়দাং। এবনেতৈ র্যস্ত

क्रमगमर्खः।

কামন্তাভ্যামন্যস্য ক্রীড়ায়াম্দ্যমে হেতু র্ভবতি ভগৰতত্ত স্থেনাত্মনা স্থরপবৈভবেন চ তৃপ্তস্যাত এবান্যতঃ সদানিবৃত্তত কথ্মসাব্রুতঃ সন্তবেৎ ॥ ০ ॥

নচ তন্ত তে গুণা তাঃ ক্রিয়াণ্চ ন বিদ্যন্ত ইত্যপ্রপ্ননীয়ং তথেব প্রসিদ্ধেরিত্যাহ অপ্রাক্ষীদিতি। গুণম্যা। ক্রৈপ্রণ্যব্যঞ্জিস্থা আত্মাপ্রতিয়া মার্যা সংস্থাপরতি পালরতি। প্রত্যাপিধাস্যতি প্রাতিলোম্যেন তিরোহিতং করিব্যতি ॥ ৪ ॥

জীবক কথং মান্নামোহিতত্বং ঘটেতেত্যাকেশাস্তরমাহ দেশত ইতি। যোহসৌ দেশাদিভির্রিল্পাববোধং আত্মা জীবং স কথ্যজন্ম অবিদ্যান যুজ্যেত। তত্র দেশব্যবধানতো দেশগত দোবতো বা। চক্ষু: প্রকাশ ইব। কালতো বিছাদিব। অবস্থাতঃ

শ্ৰীবিখনা পচক্ৰবত্তী ।

পরমেশ্বরস্য স্বাস্থারামন্ত্রাং কথং কামঃ ঈশ্বরাস্তর্জাবাৎ। কথমন্যতশ্চিকীভিবেতাাহ স্বতত্পস্যেতাাদি। অন্যতো নিবৃত্তস্য অন্যবহিত্যা ॥ ৩ ॥

নচ তস্য তে গুণাঃ ক্রিয়াক নসন্ধীত্যপলপনীয়ং তথৈব প্রসিদ্ধেরিত্যাহ অপ্রাকীদিতি প্রত্যপিধাস্যতি প্রাতিলোম্যেন তিরো হিতং করিয়তি॥ ৪ ॥

জীবস্যাচ কথং মারামোহিতত্বং বটেতেত্যাক্ষেপান্তরমাহ দেশত ইতি । বোসৌ নিতাজ্ঞানত্বাৎ দেশাদিভিরবিস্থাববোধ আত্মা জীবঃ স কথমজরা অবিদায়া মূজ্যেত অজা যোগোখন্তস্যাববোধলোপঃ কথং স্যাদিতার্থঃ। তত্ত্ব দেশত উবরদেশত উপ্তং বীজ-

অদ্বিতীয়, অতএব তাঁহার ক্রীড়েচ্ছা কি প্রকারে জন্মিল ? ॥ ৩ ॥

হে মুনে! ভগবান নারায়ণ জীবের কর্ত্ব ভোক্তৃত্বাদি রূপ মোহ উৎপাদিকা যে গুণময়ী মায়। দারা এই বিশ্ব স্থান্তি করিয়াছেন, সেই মায়া দারাই এই বিশের পালন এবং বিলোমক্রমে ইহাকে ভিরোহিত করেন॥ ৪॥

स्थित अरे य सीव दैनि खन्न चन्न था अध्यक्त तम्म, कान, जवना हहेए अवः जाभना हहेए स्थित जान हहेए स्थान जान हहेए हैं है। ति दांच मिल विनुध हम ना, दैनि कि ध्वकाद के स्विमाग्य मुक हहेमा था रकन १ फन्छ: हैनि नर्वत्र के कान विमुध हम ना अवः हिनि निका, हैशा कि विद्यापत पूना दिनान कार्ल है है। स्वान हिन च्विका हिन च्विका क्रिया कि क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया विकास क्रिया क्रि

ভগবানেক এবৈৰ সৰ্বক্ষেত্ৰেৰবন্ধিতঃ । অমূব্য চূর্ডগদ্বং বা ক্লেণো ব্রা কর্মটিঃ কুতঃ ॥ ৬॥ এতিয়ান্ যে মনো বিদন্ থিদ্যতেইজ্ঞানসকটে । তন্তঃ পরাণুদ্বিভো কশালং মান্দং মহৎ ॥ ৭॥ প্রীশুক উবাচ॥

স ইঅংকাদিত: কতা তত্ত্বিজ্ঞান্তনা মুনি:। প্রত্যাহ ভগবচিত: স্মানিব গতস্মা: । ৮ ।

श्रीधरक्ति।

ৰোগো ন নৃপাতে স কথমজয়া মুজ্যেত। অলাচাত অবিলাৈব ন মারা তক্তা অববোধেন বিরোধাভাবাং ॥ ৫ ট

কিঞ্চ ব্ৰহ্মত্মপদ্ধানেৰ জীবস্ত সংসালোহণি ন ঘটত ইত্যাক্ষিপতি স্বৰ্জকোত্ৰেশবন্ধিতো ভোকাপি বন্ধতো ভগবানেব চিজ্ৰপদ্ধেন ভ্ৰয়তিরেকাভাবাৎ। এবঞ্চ সতি অমুব্য জীবস্ত চুৰ্ভগত্বং আনন্দাদি ব্ৰংশ কৰ্মভিত্তে ভূভিঃ ভৈঃ ক্লেবো বা কুতঃ কৰ্ম সম্বন্ধা-ভাবাৎ। অন্তথা ঈশ্বরভাপি তৎ প্রসঙ্গ: ভাদিতি ভাবঃ॥ ৮ ॥

अकानरमव नइष्टेर हर्गर जिल्लन् जन्नाननर क्लानर त्यांदर भदावून **अभाकू**क ॥ १॥

८ हा निष्ठः चाक्तिश्वः। चत्रतिय विचत्रमा विकूर्वतिय वश्चक्र गण्यमः॥ ৮॥

क्रमनमर्छः।

স্থৃতিরিব। স্বতঃ শুক্তিরক্ষতমিব। অশুতঃ ঘটাদিবন্ধিব ন তসাবেবোধো দুপাতে অবাহতস্কপভ্তপ্পানাশ্রহ্বাদেবেতার্থ: ॥ ৫ ॥
ত তৈবে বিরোধান্তরমাহ ভগবানেক এবেতি। এব একএব ভগবান্ পরমান্ধাপি সর্কক্ষেত্রেরু সর্কান্ত ক্ষীবন্ধ ক্ষেত্রেরু দেহেরু
অবস্থিত:। তত্র সতি কথমমুবৈয়ব ভগবহদেবচিত্রপদ্ধক্ষরপভ্তপ্তানবন্ধাব্যভিচারিণো জীবন্ত চ্র্তগত্বং স্বরূপভ্তপ্তানাদিলোপঃ
কর্মভি: ক্লেশন্চ তন্ত বা ক্তোনান্তি ন হেক্মিন্ জলাদৌ স্থিত্রোক্স্বিনাঃ কন্তুচিৎ তৎসংস্গাং কন্তুচিরেতি যুক্সাত ইতার্থ: ॥৬॥৭॥৮

ঐবিখনাপচক্রবন্তী।

মিব কালতো বিহাদিব অবস্থাতঃ স্থতিরিব স্বতঃ স্থপ্প ইব স্থনাতো ঘটাদিরিব বস্য চিষ্ম্বসাদববোধো ন নুখো ভবিতু মহঁতি স কথমবিদায়া বিলুপ্তবিবোধঃ ক্রিয়ত ইত্যর্থঃ ॥ ৫ ॥

নচারমন্যাবোধ্রাজক হৈরাজ্যয়েরিব সংভাবনীয়ে যদজা নিরপরাধং জীবং পরাভবেদিত্যাহ সর্কোমপি জীবানাং ক্রেত্রের্ দেহেরু ভগবানের অবস্থিতঃ অন্তর্থানিরপেণ স্বরমেব স্থিতঃ নতু রাজেব স্বরাজ্যেরু স্থপ্রতিনিধিপুরুষবারেত্যর্থঃ। এক এবেতি বৈরাজ্যস্থানি পরিছতা। অতএব তলিন্ ভগবতি সর্বপ্রতিপালকে অত্তরে তিষ্ঠত্যাপি অমুব্য জীবস্য ক্রজগত্মনানন্দাদি ডংশোবা কর্মজিরাবিদ্যুক্তিঃ ক্লেশোবা কুতঃ ॥৬॥

खळानत्मव भक्कोः वर्गः जित्रन् कथानः त्माहः शत्रापून खशाकुक न हेलाखताव त्यात्मिल वहवठनः ॥ १ ॥

মুনির্জগবচ্চিত্ত ইতি কথমত সমাধাস্য ইতি মননপরো ভগবত্তং সন্মারেত্যর্থ:। ততশ্চ সহসৈবোপলভার্থ: সর্বার অহো জ্:স্মাধানা ইমে আক্ষেপা ইতি বহিবিন্দরং প্রাগ্নুবরত্ত স্থসমাধানা এবেমে ইতি বিন্দররহিত এবেত্যর্থ: ॥৮॥

এবং বিতীয় রাহিত্য হেতু ঘটাদির ন্যায় অন্য হইতেও ইহাঁর অভাব হইতে পারে না অতএব এই সকল বারা বাঁহার বোধ শক্তি লুগু হয় না, তিনি কি প্রকারে অবিদ্যায় যুক্ত হইবেন ?॥ ৫॥

অপিচ হে মুনে! ভগবানই জীবরূপে দেহ সকলে অবস্থিত আছেন, একারণ জীব সকল ভাঁহার অংশ, ঐ জীবগণের সংসারই বা কি প্রকারে ঘটিতে পারে? অর্থাৎ পরমেশ্বর সকল ক্ষেত্রে অবস্থিত হওয়াতে তিনিই ভোক্তা হইতে পারেন অতএব জীবসকলের ছুর্ভগন্ব অর্থাৎ আনন্দ জংশ এবং
কর্মা নিমিত্ত ক্লেশ কোথা হইতে হয় ? ॥ ৬ ॥

হে জ্ঞানিশ্রেষ্ঠ । এই অজ্ঞান রূপ ছূর্গে আমার মনঃ বিশ্ব হইতেছে, অমুগ্রহ করিয়া আমার জন্তঃ-করণের এই মহৎ মোহ থণ্ডন করিয়া দিউন ॥ ৭॥

শুকদেব কহিলেন মহারাজ। নৈত্রেয় মূনি এই প্রকারে তত্ত্ব জিজ্ঞাহ বিছয় কর্তৃক জিজানিত হইয়া যদিও কোন বিষয়ে তাঁহার বিশায় ছিল না তথাচ বিশায় প্রকাশ করিয়া কহিলেন ॥ ৮॥

Action with the second second

त्मग्रः जगन्द्रजामात्रा मन्द्रम्म विक्रभारकः। क्रेथब्रम् विमुक्तम् कोर्गभागूज वक्षनः ॥ ৯ ॥

श्रिक्षामी ।

ভগৰতোহচিত্তা শক্তেরীখনত নেয়ং মারা মরেন তর্কেণ বিরুদ্ধতে ইতি বং। তর্কবিরোধনেবাগুৰদ্ধি বিস্কৃতিত পুংলোহবি-দারা বন্ধনং কার্পণ্যক্ষেতি ॥ ১ ॥

क्रमगम्बद्धः।

बिविधनाथ ठक्कवढी ।

সা প্রসিদ্ধেয়ং ভগবতো অচিবৈন্তবর্গাস্য মারা বং বা নরেন তর্কেণ বিক্ষরতে অতর্কোতার্থঃ। সরম্বিজ্ঞপাপি চিন্নাজ্ঞ ভগবত এব শক্তিরতন্ত্রদীয়াঃ সন্ধানরোপি ভগবতএব গুণা উচ্যন্তে। তদপি ভগবান্ সরপতো নিগুণএব। বংগা জ্যোতির্নাজ্ঞাপি স্থাজ্ঞ মেবাছকারহিমানয়া জ্যোতিঃ প্রতিক্রণা অপি তবৈত্ব ভবন্তি। বথৈব স্থাৎ প্রভবন্তীত্যনন্তরং বংগা নজস্য তুত্রঃ প্রকাশা ইতি চজুর্বে। প্রাণাদিতিঃ স্থবিভবরপগৃচ্মনাো মন্যেত স্থামিব মেবছিমোপরাগৈরিতি প্রীনশমেচ জ্রীনার বোক্তেন্ ইাল্লেপারাত্রতীতব । এবমেব স্থরপতো নির্কিকার ইঙ্গব ভগবতঃ শক্যা মারবৈর বিষ্প্রাণিকিলাঃ শক্তিশক্তিমতোরভোগং। বহুক্তং ভগবতা প্রকৃতি ইত্রোপাদানমাধারঃ পুরুবং পরঃ। সতোভিব্যঞ্জকঃ কালো ব্রন্ধ তৎ ত্রিত্রবৃদ্ধার ভিত্তাদিনোক্তং দ্বীবগতমণি সংশর্মং ছিন্তি দ্বীবর্গতং সংশরং ছিন্তা দেশতঃ কালত ইত্যাদিনোক্তং দ্বীবগতমণি সংশরং ছিন্তি দ্বীবর্গতং সার্ছবর্গনা দ্বীবন্ধার স্থাদিকার্পণ্যং তথা বিমুক্তবাপি বছনং। বং সেরং মারা মারাবৃত্তিরবিদ্যা অবিদ্যা নিব্রুন মেবৈভন্তরমিতি। অরমর্থং অলবা জীবন্ত কথং জানলোপ ইতি দ্বরোচাতে সচ জানলোপো যদি সভ্যঃ ভার্মা সা অলা স্থাক্তিরণি ভগবতা দুর্ভা তাং কিন্তু স নৈব সত্যঃ বংগা ছদি স্থিতমণি রন্ধপদকং বিন্তৃত্য জনেন নান্তি পদক্ষিতি বিয়তে। বথাচানোন ক্রন্তমণি চোব্যং বিত্রান্তি বশামারের হত্মিতাভিমভতে তদনন্ত্রক রাজকীরপুক্রন্তরং তংক্লং ছংগ্রাপি ভ্রন্তিত তির্বি ক্রান্তাবিদ্যাস্ক্রশাং জীবেন স্থলানানক্ষং বিস্তৃত্য বেহাতিমানপ্রান্ত হৈ কিঞ্চিদ্ধর্যসংভ্রাং দ্বীবেলাপার্যন্তেনাক্ষা। ক্রেটিভ পুন্রবিহ্ব বাাচ্নতে। দেশতঃ কালত ইত্যাদারবিদ্যানিক্রা ব্যালা ওরাইতভন্তরণঃ সক্ষ্ববিহ্যায় বৃদ্ধতি ইতি প্রমন্তাভ্রমাহ বেরাভি ইর্মের ভ্রপতে মারা ভ্রতিতভ্রমণঃ সক্ষব্যবিহ্যায় বৃদ্ধানিক্র ব্যাচ্নতে। দেশতঃ কালত ইত্যাদারবিদ্যান্ত্রাধানা ব্যালা প্রমান্ত ভ্রাইভিত্র ইতি পর মন্তরাহিত্য পূর্কাপিলণঃ প্রেরভান্তরমাহ বালত ক্রাহেত স্বাহিত ব্যাহ স্থাবিতা মারা ভ্রেরে। মারা ব্যার

কে ক্রিছুর। বিৰুদ্ধেরপ প্রমেশনের অবিদ্যা বৃদ্ধন এবং কার্পণ্য এই যে তর্ক বিরোধ, ইহাই

3-6-

यम्पर्यन विनाश्या शूरम काकाविभवायः। अजीवज जेशास्त्रीः विनित्र क्रिका क्रिका । ১० ॥

विधवनामी ।

অজোদাহরণমাহ यन्त्रथा অর্থেন শিরচ্ছেদাদিনা বিনাপি উপদ্রেষ্ট্র স্বপ্নসান্দিশঃ মমেদং শিরচ্ছিরং ইত্যাক্স বিপর্যায়ঃ কেবলং

क्रममसर्छः।

সীতি প্রতিপত্তার্থং জেরং। ত্রক্বোধ ইবেতি প্রাক্তনগদ্যে স্থানীর ইতি শারীরচেটাং বিনা অশরণ ইতি ভ্যাাদ্যাপ্রয়ং বিনেতার্থং। অব তবেতাাদী স্কৃত্তহলৈ তদ্যাদি হেতৃক র্ষ্বাদ্ বোজনীরং। তন্মাদ্রাদি স্বরূপক্তরের প্রাব্যাং দর্শিতং। অতথ্য বতেহর্থং যং প্রতীয়েতেত্যাদৌ মারায়। আভাস্থানীরস্থং প্রদুর্শ্য তদম্পূল্যমের ভগরতো দর্শিতং। স্থানায়ঃ প্রক্ষঃ সাক্ষাদিত্যাদৌ মারাং ব্যুদ্সা চিচ্ছক্ত্যেতানেন চ তবা জ্ঞাপিতং মারা পরৈত্যভিমুধে চ বিলক্ষ্ণানেতানেন চ। তদেবং ভগরতি তবিরোধং পরিক্ত্য জীবেহপ্যবিদ্যাস্থান্ধন কর্তাবেন দর্শিতরা তথারারের সমাদ্র্যাতি। ক্ষার্যতি বিদ্যাস্থানের সম্বাত্ত। অর্থ বশাদ্রত চ ভৃতীয়রা পরিণ্যাতে। যথ বয়া ক্ষার্য স্বরূপজ্ঞানানিভিত্য সমূর্যতা অতথ্য বিষ্কুল্য কার্পগাং তত্তংপ্রকাশতিরোভাবঃ। তথা বন্ধনং দর্শিতগুণ্মরজালপ্রবেশশু ভবতীতি। ভত্তকং তৎসক্স্রংশিতৈশ্ব্যমিতি। তদেতং সর্ক্ষভিপ্রেত্য প্রত্রোহ্পাত্তঃ। ব্রুদ্যা মায়ে ত্যুত্র ব্রেক্সয়ে অবং পূর্ব্বাণি জ্ঞারং॥ ১ ॥

পুনরণি জীবস্য বন্ধতঃ তত্তদবস্থাতাবেহণি ভগন্মারবৈদ্ধ তত্তং প্রতীতিরিতি সদৃষ্টাক্তম্পণাদয়তি যদর্থেন বিনাম্ব্যেতি। বং বস্যা মায়ায়া হেতোঃ অর্থেন বিনাণি। যদ্যপি তস্য কাদত্রগ্নপি সোহর্থে নাক্তি তথাপি আত্মবিপর্যারঃ আত্মবিস্থতিপ্র্বক পরাভিমানেনাহ্মের তদ্মনীত্যেবং রূপঃ যঃ সোহর্থঃ স্যাৎ তথাহি উপত্রই জীবিস্য। তৃতীয়ার্থে বঞ্জী। স্বপ্লাবস্থায়াঃ জীবেন

এবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

তথং বিনা ঈদৃশঃ প্রশ্নোন ঘটত ইত্যর্থঃ। যদ্যশাৎ নরেন নীত্যা বিক্ষণতে। নীতিবিরোধমেবাই ঈশ্বরস্য প্রমাত্মনোপি মারামাহিত্যকন জীবছে দতি কার্প্যাং বন্ধন কার্ক্তমেব শুদ্ধতৈ কার্না মোহিতঃ সদেব জীব ইতি তবৈ আমাহিতঃ সদেব পরমাত্মেতি বন্ধুং যুজ্যতে নি অমার্যা অয়ং মোহিত চামোহিত ক যুগপদেব কোপি ভগবতি পরম এবারনঃ। তত্মাৎ বৈরেবং পৃত্যতে কইস্ট্রা সমাধীয়তে তএব মান্যমোহিতা জ্ঞেরা ইতি। বস্তুত্ত পরমাত্মজীবান্থানো স্গাতংকিরগাবিব লাত্যৈব মিথে বিলক্ষণী তৈতন্যকৈ ভবত ইতিসিদ্ধান্তঃ। ছারাকিরণী যথা স্থাত এব ভবতঃ অথাপি স্থাতুল্যকণে প্রার্তি ক্রেমাত্মজিলোকে ভবত ইতিসিদ্ধান্তঃ। ছারাকিরণী যথা স্থাত এব ভবতঃ অথাপি স্থাতুল্যকণে স্থান্ত কিলোতে ভিলেতে তথিব মান্যালজিলীবশক্তী পরমেশ্বনাত্মতে অপ্যানাদী অভিন্নে অপি স্বরপতা ভিনে এব। তথাচ বৈদ্যকে। পুংসোত্তি প্রকৃতিনি ত্যা প্রতিক্ষান্তে ভাষত ইতি। তথাচ শ্রুতিঃ যথান্নে ক্লো বিক্রিলা ব্যক্তরম্ভীত্যেব মেরাম্বন ইতি জীবস্য শক্তিমভ্রা। অপ্যান্ত স্থাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে প্রাং। জীবভ্রাং মহাবাহো যরেদং ধার্যতে অপ্যানিতি শ্রীগীতাস্তরং॥ ১॥

তত্র ভগবতঃ পৃঠস্থিতয়া অনাদ্যবিদ্যয়া তমঃ স্বরূপয়া অনাদিবৈমুখ্যয়প ভগবৎ পৃঠস্থানাং জীবানাং জ্ঞানং য়য়ৣপাতে তহ্য ন
বন্ধবং কারণং নাপি প্রয়োলনং কিমপান্তি তমসঃ স্বভাব এবায়ং যৎ ক্ষীণ তেলস্বিন্তেল তেন দুপাতে ইত্যাহ যদর্থেনিতি।
যৎ যতঃ অর্থেন বন্ধনা কারণেন প্রয়োলনেনচ বিনৈবামুয়্য পুংসো জীবন্ধ আত্ম বিপর্যয়ো জ্ঞানানন্দলংশঃ প্রতীয়তে। অর্থে
বিবয়ার্থনয়োর্থনকারণবন্ধন্। অভিধেরেচ শলানাং নির্ভৌ চ প্রয়োলনে ইতি মেদিনী। অত্ম দৃষ্টান্তঃ জটুঃ। স্প্রসান্দিণ উপ
সমীপে মমেদং শিরশিহরমিতি শিরসঃ সম্পেণি শিরসোহভাবঃ স্বয়দশায়াং প্রতীয়তে। তথৈব বন্ধতো জ্ঞানানন্দাদি লংশা
ভাবেণ্যবিদ্যাদশায়াং তদ্বংশঃ প্রতীয়তে। তমসাপি তৈলসম্য স্বর্গরিদ্যাদেত্তেলো ন দুপাতে কিন্ত আত্রিয়তে লালং। তথা
বলবত্তেলসা পদ্ময়াগাদিনা তমোপি দুপাতে যথা তথা ভক্তনীবেনাবিদ্যাপি ভিদ্যতে ইতি জ্ঞেয়ং। ভিতীয়য়াধ্যায়াভ তন্ধাদীখরত পূর্ণ স্পিদ্যানন্দত্ত প্রমান্মনং স্ক্রিক্ত স্ক্র্যাপক্স্যাবিদ্যা বন্ধান্ধতি দেবে এব। সএবাবিদ্যয় জীবাদ্যা সএব বিদ্যাপ্রসাম্বেতি সিদ্ধান্তেরি বিদ্যালি বিদ্যাতি বিদ্যালিত বিদ্যাপ্রতি সিদ্ধান্ত্রিত বিদ্যাপ্রতি সিদ্ধান্ত্রিত বিদ্যাপ্রতি সিদ্ধান্ত্রিত বিদ্যাপ্রতিত বিল্লাক্ত তিবিদ্যালিত ত্রি বিদ্যাপ্রতিত সিদ্ধান্ত্রিত বিদ্যাপ্রতিত স্বাম্বালার ক্রিবাদ্যালার তিব্যাক্তরিত ক্রিম্বালার বিদ্যাপ্রতিত সিদ্ধান্ত্রিত বিদ্যাপ্রতিত সিদ্ধান্ত্রিত বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রমান্ত্রিক বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রসামিক ক্রিক্তিত ক্রিম্বালার বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রতিত সিদ্ধান্ত্রিক বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্য বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রতার বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্যক্র বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্রতিত বিদ্যাপ্

यमन अक्षत्रको वाक्तित्र नित्रत्वित वाक्तित्वत्व अक्ष कालीन नित्रत्वकानि विनिक्के जाज

SACRES.

यथा जतन रुक्तममः कुन्धाविष्य द्वराविष्यः । वृष्णाद्वर महिन व्यक्ते वाचारना वना वाता थाः ॥ ১১ ॥

क्षितकारी

मृदेवत व्यक्तीवरक क्वंद ॥ ३० ॥

নমু তর্হি ঈখরস্যাণি কিং ন প্রতীরেত ততাহ যথা কলে প্রতিবিধিতলৈয়ে চক্রমসো কলোণাধিকতঃ কল্পাদি ধর্মো দৃশাতে নম্মাকাশে স্থিত্যা। তথাহ্নাম্মনো দেহাদে ধর্মোহ্সমণি তদ্ভিমানিনো ক্রই,রাম্মনো জীবলৈয়ে মন্বীমরস্যেতার্থ: ৪১১ ৪

ক্রমসন্তঃ।

স্থালিরশ্ছেরনারিকোহতীবাসস্তবাহর্থ: প্রতীয়তে। 'নহি তঁন্য ুলিরশিছ্রং ন বা স্থালিরশেছ্রং কোহলি পশ্যেৎ কিন্তু ভগবন্ধারৈ-বাস্ত্রত সিন্ধং ডক্রেপমর্থং ডন্মিরারোপমতি মায়ামাত্রস্ক কাংগ্লেনিভিত্যক্তস্করপদ্যাদিতি স্থায়েন ॥ ১০ ॥

অতএব গুদ্ধস্যাপি সতে। শীবস্যোপাধিকেনৈব রূপেণাপাধিধর্মাণভিরিতি দৃষ্টান্তান্তরেণোপপাদরতি যথা শ্বনে ইতি। যথা ললে প্রতিবিশ্বিতস্যৈব চক্রমসোহরং ললোপাধিক্বতকম্পীদিধর্ম্মানৃত্যতে নথাকাশে স্থিতস্য তহদনাথান: প্রকৃতিরূপোপাধেধর্ম আরুন: গুদ্ধস্যাসরূপি নামমা অহমেব সোমমিত্যাবেশাৎ মাররোপাধিতাদান্ত্যাপরস্য অহমারাভাবস্য প্রতিবিশ্বস্থানীয়স্য তস্য এই নুরাধ্যাত্মিলাগৃবস্থাস্যের যদ্যপি স্যাৎ তথাপি গুদ্ধাহস্তা ললভেদাভিমানেন তং পশ্রতীতি তল্পের স্যাদিত্যর্থ: । তহুক্তমেকাদশে শীভগবতা । নৃত্যতো গারতঃ পশ্রন্ তবৈবাহকরোভি তান্ । এবং বৃদ্ধিগুণান্ পশ্রনীহোপাহকার্য্যত ইতি তবৈবাক্তং গুদ্ধোবিচাই হ্যবিশুদ্ধকর্ম্বরিতি বিশব্দয় চাত্র তদাবেশএব তাৎপর্যাং তন্ধাৎ ভগবতোহ্নিস্তান্থরসমান্তর্মনাত্মবলশক্তিভান্ত্রির স্থান্ত তার স্থানিতি সিন্নাস্তিতং ॥ ১১ ॥

अविश्वनाशहक्तवर्शी

স্তেবাবিদায়াবদ্ধ: সচাপাবস্তভ্ত এবেত্যাহ। যদর্থেনেতি পূর্ববদেব ব্যাধ্যা অম্ব্য প্ংসো জীবতৈব নম্মন্তামদম্ভ্তচরত প্রমান্তনো হরেরিত্যর্থ:॥ ১০ ॥

নহু জ্ঞানানন্দান্যবরণং জীবত তবতু নাম। রাগবেষশোকমোহকামানয়ে ধর্মান্তন কুতো লক্ষান্তবাহ বথেতি। জনাত্মনোহরকরণতৈত্ব গুণ: শোকমোহাদি: অই রাত্মনো জীবতাসন্ তত্ম নসন্তবরণি দৃত্যতে তত্ম লিক্ষান্তবাহ বথেতি। জনাত্মনোই উপাধিধর্মভোপহিতবর্ত্তিকেন প্রতীতৌ দৃইবোঃ। বথা ললে ইতি তৎকৃতঃ জলোপাধিকৃতঃ কম্পাদিশ্চক্ত প্রতীত্মত বন্ধতন্ত ন সচক্রত কিন্তু ললাক্ষান্তবার মর্থ:। জলে বশ্চক্রো দৃত্যতে সহি চক্রমগুলত কিরণপৃঞ্চত্র নতু চক্র:। তথাহি চক্রম্থাদিকিরণঃ জলত্ব বৃক্ষভিত্তিপাবাণাদির প্রস্কালণি তেবু মধ্যে যথ কক্ষে তত্ম লোকৈঃ স্ প্রতিবিশ্বত্বালাতে। চল্লোহি মুখনাসিকাহন্তপাদাদি ভূবণবাহনাদি পরিকরবিশিইকেনৈব তত্মতা জনৈরম্ভ্রতে। সহি ভগবদ্টান্তঃ। সত্রব ক্ষান্তপ্রতিবরণ ক্ষান্তবার কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র কিঞ্চিন্তিকেন্ত্র ক্রেলিন্তিকেন্ত্র ক্রেলিন্তিকেন্ত্র ক্রেলিন্তিকেন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্তিকেন্ত্র ক্রেলিন্তিকেন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্তিকেন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্তানিক ক্রেলিন্ত্র ক্রেল্ডান্ত ক্রেল্ডান্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রিলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রিলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন্ত্র ক্রেলিন

বিপর্যায় মিখ্যা অনুস্ত হয়, তাহার ছায় জীবের বন্ধন ও কার্ণণ্য বস্তুতঃ মিখ্যা হইলেও ঐ মায়া বশতঃ সত্যবং প্রতীয়মান হয় ॥ > ॥

किन्न त्म्राम् त्या विकासि, जाहा जीरवहरे हत्र, निषदित हत्र ना, दिवस हत्यस्थल जाल अि विश्वित हरितारे जाताशिक्षि कृष्ण कल्लामि वर्ष विश्वित वर्षाः जाहार्य ना वाक् व्याप्त जाहा हिन्स किन्न वर्षाः वर्ष ন বৈ নির্তিধর্শেণ বাহুদেবাপুরুজ্পরে। ভগবস্তক্তিবোগেন তিরোধতে পরেরিই । ১২ । যদেক্তিয়োপরামোহণ দেউ অনি পরে হরো। বিলীয়ন্তে তদা ক্লেশাং সংস্থাস্থের কুৎস্লুশং ॥১৩ অশেষ সংক্লেশ শমং বিধতে গুণাসুবাদশ্রবণং মুরারেঃ।

विश्ववाती।

ডরির্জ্যুপারমাহ স বৈ অনাশ্বনো ওণঃ নির্দ্তিধর্মেণ যা হাজ্বেয়াহ্কলা ভরাচ ডফিন্ ভকিবোগঃ ভেন ভিরোধত্তে অদুশ্যো ভবতি শনৈরিত্যনেন সাধনাহ্সারেণেভ্যুক্তং ॥ ১২ ॥

নমু তর্হি সর্বানর্থ নিবৃত্তিঃ কলেত্যপেক্ষারামাহ বলেজিরাণামুণরামো নৈশ্চল্যং। ক এই ুরাম্মনি অন্তর্থানি রূপে। অ্থানন্তর মেব। রুৎম ক্রেশ বিলয় নাত্রে দৃষ্টান্তঃ সংস্থান্যেবেতি নতু পুনরমুখানৈ ॥ ১৩॥

ভক্তিবোগেন ক্লেশ নিবৃত্তিং দর্শরতি অন্দেৰেতি গুণানাসম্বাদঃ শ্রবণক আত্মনি মনসি লকা শ্রবণ কীর্জনাপেক্লা সংগ্রেম ধ্যানে

ক্ৰুসক্তঃ .

স বৈ ইতি। নির্ত্তিধর্মেণ নিকামশ্বভাবেন ভজিবোগেন যা বাহ্মদেবাছকম্পা তয়া শ্বৈক্তপ্ত্কম্পাতারতম্যেন তিরো-ধত্তে ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

অত্র ব্রন্ধরিত্যানিবরে প্রথমপ্রশ্নাভিপ্রায়োহরং। তব্দেবতা প্রার্থনে তবতা বদ্ ব্যক্তিং ভক্তিবশতামরলীলরা তগবান্ স্ট্যাদৌ প্রবর্ত্ত ইতি তদপ্যঘটমানং বস্তবিরোধাং স্বভাববিরোধাচেতি দেশত ইত্যাদিবরে তু তৎপ্রস্তাবদ্ধেন প্রশ্নান্তরং অংথাতরং উপদেইব্যাবশিষ্ট্রিজ্ঞানরূপচত্থালোকী বিতীয়লোকার্থান্ত্রনার তত্ত্ব সেরমিত্যক্ত তথ্যতাননাচিস্তাশক্তিব-মেব সিদ্ধান্তঃ। অত্য তক্ত্যাধ্যশক্তেরপি তাদৃশসামর্থাং ব্যক্তিতং। যতঃ প্রশ্চ স বৈ নিবৃত্তিধর্শেশেত্যাদিতিঃ স্বাধনং রহস্যমূপ-

अवित्रमाथठकवर्डी।

তহি ৰীবল্ল কথং নিস্তারস্ততাহ। স অনাত্মনা ওণঃ নিষ্তিধর্মেণ নিষ্তিধর্ম অভেন তব্জিনিপ্রজানেনেতার্থঃ। তথা সভক্তবাররা বাস্থানেবাস্কম্পরা উত্তেন তগবভ্জিযোগেন তিরোধতে। তরিবৃত্যুপারোহি জানং বা ভক্তিবা তবেদিতি বাক্যার্থঃ। শনৈরিতি সাধনাক্সারেশানর্থনিবৃত্তিতার্ডমোনেতার্থঃ॥১২॥

তহি সর্বান্ধনিবৃত্তিঃ কলেতাপেকারা নাহ বলেতি তত্র জ্ঞানমতে ইক্রিরাণাং মনোর্তীনাম্পরামো লয়ঃ। অবৃতি বাাবৃত্তার্থ মাহ এই রান্তাত্ত্বামিনি পরে জ্ঞানি তার জগনতি বা জ্ঞানালভূতরা ভক্তা অহত্রমানে সতীতি শেবঃ। কংলক্রেলবিসরমাত্রে গৃটাত্তঃ। সংস্থাত স্বৃত্তিং প্রাপ্তত বথা ধন প্রাদিনাশ হংগানি নীরত্তে। অধ ভক্তিমতে। হরৌ স্বানাল্যাদিভিম না হারিণি যদা ইক্রিয়াণাং চল্ছং শ্রোতালীনাং উপরামো নৈশ্চল্যং ভগবংসদ্বি সৌল্ব্য সৌল্ব্য সৌল্তা সৌকুমাব্য মাধুর্য্য বৈদ্ধোবেৰ চল্ছং শ্রোত্র জ্ঞান মনাংসি সর্বথা নিম্ক্তি। ন প্নঃ প্রাক্তর্মশনাল্যাদাং জিল্লান্তি হরৌ কথভূতে ক্রেরানি ক্রট্রেরনে স্বান্ত ক্রণাকটাক্ষবিষরং ক্র্তিভার্তঃ। পরে পরমেশ্বে প্রকৃত্তে পরত্তেতি বা। ক্রেশাভাবমাত্রে গৃটাতঃ। সংস্থাত বন্ধু সপতঃ স্থাবিতিতেত্যর্থঃ। তত্ত বথা স্বান্ত্রীয়ে স্বান্তিক্রেশাদি ক্রেশা নীরত্ত ইতি ৪০০৪

নববিল্যোপদমার্থ মুক্তরোক্তানভক্তি যোগয়োর্ম ধ্যে কতরত শৈষ্ঠং তত্ত ভক্তিরেব শ্রেষ্ঠেডাাই অনেবেডি। কিং বেডি কিং পুনরিডার্থ:। সেবারাং রতি রত্যাশক্তিরিতার্থ:। আত্মলকা তেনৈব অভিন্ বা প্রাপ্তেকি রতেঃ অঞ্চলসভ্কেনাক্তত্ত্বং ব্যক্তিগ।

পরস্ত নির্তি ধর্ম দারা ভগবান বাহ্নদেবের অনুকল্পা হইলে জীবের সেই দেহাছিনিবেল ভগব-স্তক্তিযোগে ক্রমে ক্রমে তিরোহিত হয়॥ ১২॥

অপর যে সময়ে ত্রুপ্তি প্রাপ্ত ব্যক্তির ইন্সিয় সকলের তুল্য ইন্সিয়াগণ ত্রুকীর সন্তর্গনি নরপ আত্মাতে বিদীন হইয়া সর্বতো ভাবে নিক্তন থাকে তথকালে সমস্ত ক্লেল লয় প্রাপ্ত হয় ॥ ১৩ ৮ ১৮৮১

আর ভগবান্ মুরারির গুণাপুষাদে এবং গুণ কথা আবণেও অশেষ ক্লেনের উপশম হয়, আর অধিক কি বলিব, ঘদিস্যাৎ ভদীয় পাদপায়ের মকরক্ষ সেধা বিষয়া য়ভি মনো মধ্যে আৰু করিভে প্রা

GASTATES!

किया भूम क्रिजनाविक्त अन्याप्त निवास निवा

मः हिए भः भरतामकः उन भृकामिमा निष्णा । केवत्रवाणि क्रान्यसमा रम भः व्यथानि ॥ ১৫॥ मार्माकवाह्यकः निषमामामामामाम स्रतः । आकाकाशार्थः निर्मणः निषम् सः न यविः ॥ ১৬॥

Bugmin!

किश्यनगारमाकिः ॥ ५८ ॥

উত্তরমভিনন্দরাত্মন: কুতার্থতামাবিকরোতি সংজ্ঞির ইতি বড়্ডি:। চিজ্রপড়াবিশেবেপি কথমীখরস্য জগৃৎ কর্জ্বাদি কথং বা জীবস্য সংসার ইতি যা সংশরো মমাসীৎ সূত্র স্কোং সোপপত্তিকং বাকামেবাসি: থক্ষাং তেন সংভিন্নঃ অত ইদানীং যে মন উভন্নতাপি ঈশ্বর স্বাভ্তাের জীব পারতক্রোচ সংগ্রধাবতি সমাক্ প্রবিশতি। এবং বা অবিস্থােববাধ রূপস্যাত্মনঃ কথমবিদ্যরা বৃদ্ধঃ কুতে। বা তারিবৃত্তিবিতি সংশর্ষ উভন্নত্তে বিদ্ধানক চেতার্থঃ॥ ১৫॥

ट् विवन बचाखता नाथु वाकिछः किः छ० इटेबः मक्ति यी आदा सीवराता विवता छत्रताः छतास्त्रवरम् इर्डगचानिकः छाछीछि ।

ক্রমসমর্ভঃ।

দিষ্টং ববৈত্ৰৰ কুতঃ পুনৱিত্যস্তিমাৰ্ছে কৈমুভ্যেন তৎসেৰাৰভেঃ ফলমণেৰসংক্লেশ শ্বনমাত্ৰং ন তৰ্বতি কিন্ত পূৰ্ব্বোক্তরীত্যা প্রীভগবৰশীকরণমেবেতি চ দ্যোতিতং ৪ ১৪ ৪

অতএবাহ সংক্রির ইতি। উত্তরত্র ঈশবের জীবে চ। জানবিজ্ঞানরণে জানে প্রেমনি তৎসাধ্যরপারাং ডক্টো চেতার্থঃ সংপ্রধাবতি সমাক প্রবিশতি॥ ১৫॥

সংশরজেদনে হেতুমবধারিতার্থমেবায়বদতি সাধ্বিতি পঞ্জিঃ। হরেরায়াধীনমারায়া অরনমচিত্তা গতিরিত্যেতৎ সাধ্বেব

बीवियनायहक्तवर्छी।

সাধনভক্তিরেবাবিদ্যামুপ্শময়তি কিং পুনত্তৎসাধ্যা রতি রিতি রতেরু ব্যং কলমবিদ্যোপশমো ম তবতি কিও তগবরশীকার ইতি ছোবঃ ॥ ১৪ ॥

মছং মম মাং বোধরিতৃং তব বৎ প্রকং তদেবাসি তেন উভরত ঈখরে জীবে চ সংপ্রধাৰতি সবিবেকং প্রবিশতি ॥ ১৫ ॥

নমু মন স্কাং দ্বা কীনুশমবধারিতং তত্তাহ হে ব্ৰহ্মন্ সাধু বধাভাৎ তথা দ্বা ব্যাহ্নতং কিং তং। হরেবহিরলা শক্তি বা আত্মমারা তলাপ্রমেব এতং। তগবতো নিঅ'ণ্ডাপি ওণবদং তৈও'লৈ: স্ট্যালিকর্ত্দশভাতি। অপার্থং নিজ্মোজনং তভাত্মারামদ্বাং। নিমুলং নিজ্যেণ তভা প্রোজভাত রাজাবাল্ডর্গ্রেমবেতীশ্ব গতং দ্বা ব্যাহ্নতং। তথা এতজ্ঞীবস্যাহিলিয়া বহুনং ভত্তপ্র্ক্গদ্মানিকঞ্জুমারারনমেব। নিজ্যেজনং নিক্রেশমবন্ত চেতি জীবগতঞ্চ ব্যাহ্নতমিতি। তত্তেণেরং বিহ্রোক্তিঃ

তাহা হইলে তাহা কি না করিতে পারে অর্থাৎ মসুষ্যের। যদি ভগবানে ভক্তি করে তাহা হইলে তাহাতেই ভাহাদের সমস্ত ক্লেশের নির্তি হইবে॥ ১৪॥

মৈত্রের মুনির এই সকল বাক্য প্রবণ করিয়া বিছর আপনার রুডার্থতা প্রকাশ করত কহিতে লাগিলের। হে বিভা। ঈশর এবং জীব ছই জ্ঞান স্বরূপ, তাহাতে ঈশরের জগৎ কর্ত্ব এবং জীবের সংসার এরপ বৈষ্ম্য কেন হয়, আমার এই রূপ যে সংশয় হইয়াছিল আপনার মুক্তি যুক্ত বাক্য রূপ অভগ ছারা তাহা সংচ্ছির হইল। হে বিভা। একণে আমার মনঃ ঈশরের সাতত্ত্ব্য এবং জীবের পারত্ত্ত্ব্য এই বিষয়েই সমাক্রশে প্রবিক্ত হইতেছে অর্থাৎ ছই সন্তাব্য এমত বোধ হইতেছে ॥১৫ কার্য তাহার প্রতিক্তব্য । ভগবানের জীব বিষয়ে যে নায়া ভাহাকেই আপ্রয় করিয়া ছর্ভগদানি প্রকাশ পায়, আগনি এই যে বলিলেন ইছা অভিজ্ঞা, ভারণ ঐ ছর্ভগদানি মনুযোর স্থানোপে স্থানির প্রস্কাশনানির ভূল্য অবস্তু যাতে, অভ্যান ভাহা মূল শ্না। হে ত্রেরুন। শ্রুত আছে এই বিষয়র ক্রেমন স্থানানির ভূল্য অবস্তু যাতে, অভ্যান ভাহা মূল শ্না। হে ত্রেরুন। শ্রুত আছে এই বিষয়

32

যশ্চ মৃচতমো পোকে যশ্চ বৃদ্ধে প্রশ্নপঞ্চা, তাবুছো অধ্যেত রিশিবভারত দিন । ১৭ অর্থাভাবং বিনিশ্চিত্য প্রতীতস্যাপি নাম্মনঃ। তাঞাপি মুম্মচরণসেবরাহং ক্রেপ্তার । যথ সেবায়া ভগবতঃ কৃটন্দ্র মন্ত্রিয়া ভারতীয়া পাদরো বাসনাস্থিত ।

. १९ **विकारी वि**विध्यात के विकास के किस किस

যদ্দশাৎ শ্বনিরশ্বেদাদি বং অপার্থমবস্ত ভূতং মূল শ্নাঞ। বন্ধাদ্যা বিখস্য বিখম্লং শ্বাক্তানং বহিবিনা নান্তি ॥ ১৬ ॥ অরক্তাং পূর্কং মম সংশব্ধে লাভ ইত্যাহ বন্ধেতি মূচতমঃ দেহাদ্যাসক্তঃ বৃদ্ধে প্রক্তাং পরমীশ্বরং প্রাপ্তঃ তৌ ২০ং ব্রধা ভবতি তথা এখেতে জীবত ইত্যর্থঃ। সংশব্ধ ক্লেশাভাবাং। যন্ত ছংখাসু সন্ধানেন প্রপঞ্চং জিহাস্তি। শ্বনিন্দ সংবেদনাভান্ত হাতুং ন শক্ষেতি। স্তু ক্লিগ্রতীত্যর্থঃ ॥ ১৭ ॥

ইনানীত কতার্থোত্মি যত্ত্বরা সংশয়ক্তির:। কেবলং বাধিতাছবৃত্তি রেবাবশিষ্টা সাপি যুখৎ প্রসাদারিবর্তিষাত ইত্যাহ নাজনঃ অনাক্ষনং প্রপঞ্চস্য প্রতীতস্যাপি অর্থাভাবং অর্থোহত্ত নাজি বিজ্ঞ প্রতীতিমাত্তমিতি যুখচেরণ সেবমা নিশ্চিত্য তাং প্রতীতি মপ্যহং পরাপুদে অপনেব্যামীতার্থ: ॥ ১৮ ॥

। মধুৰিবঃ পাদরোরভিরাস প্রেমোৎসবঃ তীত্রো দুর্মারঃ স্বাভাবিক বাসনং সংসারং অপনতি মাশরতীতি তথা ৪-১৯ ৪ ···

ক্রেমসকর্ডঃ

ব্যাব্যাতং বল্ ম্মাদ্ বহি বিনা অপার্থমবস্ত্তং স্লাশ্নাঞ্ ম্বাং জনধ্যাসহেত্রজানং জীবানামপি নাজীতি ৫ ১৬ ॥
মৃত্তমঃ সারাসারবিবেকরহিতঃ স্থামেধেতে সংশর্জেশরহিতে ভবতঃ। অন্তরিতঃ সংশর্জিঃ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥
প্রপঞ্জাতীতিপরাশোদনমারেং ভিরং। যতঃ যথ্যেবরেতি। বাসনাধিন ইত্যাক্ষ্তিক এবাসৌ খস্য গুণ ইত্যবঃ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাণচক্ৰবন্তী।

কিঞ্চ যথাই: যামাত্মনারাং বিনা বিশ্বস্য মূলং কারণং নাজীতি বিশ্বস্ত হৈনে ভগৰতঃ সণ্ডপত্মই সক্রিরছঞ্চ ন প্ররুপসিক্ষমিতি ভাবঃ ॥১৬ অল্পজ্ঞভাবেতাবদিনপর্যান্তমহং সাংশয়িকতঃখনিমগ্ন এবাসমিক্যাহ। মৃত্তমঃ পশুরিব বিষয়াসক্রব্দ্ধে: প্রকৃতিঃ পর্মীশ্বং প্রাপ্তঃ। তৌ স্ববং ধ্বাস্যাবেবমেধেতে। সংশ্বস্কেশাভাবাৎ বিষয়ামন্দেশ্বরানন্দাভাঃ: বর্দ্ধেতে। যন্ত ত্থাভুসন্ধানেন প্রপঞ্চং জিহাসতি। ভগৰত্ত লাভাদাভুঞ্চ ন শক্ষোতি সম্বন্ধরিতো মধাবন্তী আনন্দব্যাভাবেন সংশক্ষমি নিমগ্ন ক্লিশাত ॥ ১৭ ॥

কিঞ্চ সংপ্রজ্ঞাপি মম ক্লেশখেৰো বর্তত ইত্যাহ আত্মনো জীবস্য অর্থজোবং বাত্তবৃত্তগৃত্বাদ্যভাবং ত্রুখোদিতসিদ্ধান্তন বিনিন্দিত্যালি ন প্রতীত্স্যাপার্থভোবস্য তামপ্রতীতিমহং প্রাণুদ্ধেনেষ্যামি ॥ ১৮ ॥

ভগৰক্ষৰ দেবায়াঃ কিমলকামিতাাহ যদিতি ভগৰতঃ কুটস্থা ভগৰতেইনৰ দৰ্মকালবাপিনঃ। , একলপত্নাতু বং কালবাপী

মূল যে স্থীয় অজ্ঞান তাহাও ঐ মায়া ব্যক্তিরেকে অবস্থিতি করিতে পারে না, অতএব সকল পদার্থ ই মায়াকে আশ্রেয় করিয়া রহিয়াছে ॥ ১৬ ॥

হে মুনে! আমি অন্নত এ নিমিতই আমার পূর্বে সংশয় জনিয়াছিল, অন্ততের দেশ চুল্ল জন্ম। এই লোকে যে ব্যক্তি অতিশয় মৃত অর্থাও দেহাদিতে অত্যক্ত আদক্ত এবং যে ব্যক্তি আছি আছি তির পর পরমেশরকে প্রাপ্ত, এই সুই ব্যক্তিরই সংশয় জন্য দেশ হয় না এবং ইহারাই ক্ষেত্র জীবন যাত্রা নির্দাহ করিতে পারে, কিন্তু মধ্যবতী লোকেই ক্রেশের ডাজন ব্য়, কেন্দ্রাই ক্ষেত্র স্থান করাতে সংশার প্রপঞ্চ ত্রাণ করিতে বাসনা হয়, অর্থান করিতে পারেনা, হতরাং তাহাদিগকে ক্লেশ ভোগাকরিতে হয় ॥২৭॥

পরস্ক হৈ মহাশয় ! একণে আমি ক্তার্থ হইজান, কেন্ত্ৰ এই অন্তি সাক্ষিত্র প্রথাক এতীত হইলেও ইহাটেড কোন অর্থ নাই কিন্ত ইহা এতীতি মার্ক, এই রূপ নিল্ডয় ছইডেছে, জ্ঞানিনানিগের চরণ সেকা বারা ঐ প্রতীতিকেও পরিত্যাস করিছে শারিব ৯০৮ কি নাইটিক কিট্টানিটি কিটিল নিটাল কেন্দ্র মুন্দে !> আপনানিগের ট্রণ সেবা বারা কিলা হয় শৃতিভারটা ক্রকালা ব্যাকী ক্রিছেক জন্ম শ্রেমাপাক্ত প্রাঃ সেনা বৈদ্ধান্ত ক্রিকার ক্রিকার করিব নিজ্য করিব করিব নামন । ২০॥

শ্রেমাপাক্ত প্রকাশীলৈ নিজ্যালাক্রকাথ। তেতো বিরাজসূত্ত তক্ত প্রাবিশ্বিভঃ ॥ ২১॥

ব্যাহ্রাদ্যং প্রকাং সহস্রাজ্য কে বাত্তং। যতে বিরাজসূত্ত তক্ত প্রাবিশ্বিভঃ ॥ ২২॥

হুমান্ দশবিদঃ প্রাণঃ সেন্তিরার্থিনিয়ন্তিবিধ এ ছুরেরিতো যতো বর্ণাক্তবিভূতীর্নদ্ধ নঃ॥ ২০॥

क्षित्रवामी ।

আহোঁ হল ওং প্রান্তং মধেতাহি হরাণা হল তা বৈক্ঠনা বিশ্বো ভলোক্ষণা বা বিশ্ব স্থি মার্মস্থত বু মহৎসু। যত্র বেষু মহৎ সেবরা ছরিকথা প্রবণং ততো হরৌ প্রেম তেন চ দেহাদালুলকান্মণি নিবর্তত ইতি তাৎপর্যাং ॥ ২০ ॥

অর্থান্তরং প্রাষ্ট্র তত্তক্ষমস্থবদতি স্থাই তি ত্রিভি: বিকারেরিজিয়াদিভি: সহিতানি উক্তা তদংশৈবিরাজং স্ট্। ॥ ২১ ॥ অন্ধু প্রবিষ্ট্রসা স্বরূপমাহ যমিতি। বিরাজং বিশিন্ধী যত্ত্রেতি। তে ইমে বিশে স্কোলোকা: সবিকাশং অসংহাচেন ॥ ২২ ॥ প্রাণাদর: পঞ্চ নাগাদর: পঞ্চত্যেবং দশবিধ: ইজিয়াণিচ অর্থাণ্ড ইজিয়াণি চেতি পুনক্জি: তদেবতা সক্ষণার্থা তৎ সহিতঃ সর্কোপরংহকত্বাৎ প্রাণক্ত তৎসাহিত্যং। এবং ত্রিবুৎ ত্রিবিধ: প্রাণঃ দরেরিতঃ উক্তব্ত বিভৃতি ব্লিজাণা বিসর্গ শক্ষ বাচাাঃ॥ ২০ ॥

ক্ৰমসন্ধ :।

তদেবং রুডকুত্য উন্নাদেন পূর্বশ্রুতনীলাবশেবং পৃচ্ছতি হুইে তি ॥ ২১॥ বং কারণার্থবে গর্জোদকে চ শারিকং ॥ ২২ ॥ তত্ত্র তত্ত্রুমপাত্বদতি যদ্মিন্ বিরাট্রুপে ॥ ২৩॥

बीवियनाथठकवडी ।

দ কৃটত ইত্যানর:। মধুদিবো মধুত্দনদ্য মধোরিব ভক্তদংসারদ্য নাশয়িত্: পাদরোরত্যা ভারভক্ত্যা রাদ্যে বিভাবাদিসংযোগোখ: শান্তদাস্যাদিরসসমূহ: তীত্র: অমাধুর্ব্যেণ প্রাক্তভাপ্রাকৃত সর্বমাধুর্ব্যাপমন্দী তেনাপ্রতীতিপরস্থণোদনমিদং কির্মাত্তমিতি ভাব: ॥১৯

কিঞ্চ সেয়ং মহৎসেবৈবাতিছল ভেতাহে অন্নতপদ ইতি লোকরীতোজিম হৎদেবারাভংক পৈকলভাছেন তপা ফলছাভাৰাং বৈকুঠনা বন্ধ ভূতের তত্তকের নিতাং সাধনসাধাবস্থারাং ॥ ২০ ॥

তদেবং ক্লতক্ষতা উন্নাদেন পূর্মশ্রতলীলাবশেবং প্রাষ্ট্রং তত্তক্ষমমূবদতি স্টেইতি ॥ ২১ ॥ যং কারণার্থনায়িনং বিশে সর্মে সমাসতে তলোমবিলেবের সর্মক্রমাণ্ডানাং সন্থাৎ ॥ ২২ ॥

কিঞ্ছ যি নিন্দ সমষ্টিবিরালি ইক্রিরার্থা বিষয়া ইক্রিরাণিচ তৈঃ সহিতঃ। তির্থ সহ ওজোবলত্বেন তিবিধঃ। যত এব বর্ণাঃ হবিশেষা এব বিঞান্যাঃ। অথ তস্য প্রমেশ্বন্স্য বিভূতীঃ প্রস্লাপত্যাল্যাঃ ॥ ২০ ॥

বানের পাদপলে ছুর্নি বার প্রেমোৎসব জ্বান, তাহাতেই সংসার বিন্ত হয় ॥ ১৯ ॥

যাহা হউক আমার অতি ছব্ল জাভ হইল, আমি মহৎ সেবা করিতে পাইলাম। হে মহাজন্।
মহত্যক্তিরা ভগরান্ বিষ্ণুর অথবা তদীয় লোকের বর্জ বরূপ, তাঁহারা সর্বদা দেবদেব জনার্দনের
গুণ কীর্ত্তন করিয়া থাকেন, তাঁহাদের সেবা অল্লভপা ব্যক্তির অনারাস লভ্য নহে॥ ২০॥

ে মুনে ি বিষ্ণু পরবেশ্বর প্রথমতঃ ইন্সিয়াদি সহিত সহদাদি তত্ত যথাক্রমে স্থান্ত করিয়া তাহা-দের অংশে বিয়াট্ শরীর নির্মাণ করত তাহাতে অমু অর্ধাৎ পশ্চাৎ প্রবিষ্ঠ ছইয়াছিলেন ॥ ২১॥

সেই বিরাট শুরুষের সহজ্ঞ চরণ, সহজ্ঞ উরু এবং সহজ্ঞ বাছ, পঞ্জিতেরা তাঁহাকে আদ্য পুরুষ

বিদ্যালাচকা, তাঁহাতেই এই সকল লোক মানংকৃতিত হইয়া শাস করিতেছে। ইই ॥

(বে অন্তর্ন । আগনি কহিলেন যেই বিরাট্ পুরুত্বর ইন্ডির, ইন্ডির সকলের বিষয় এবং সম্বিধ্ প্রাণ মান্তে। আর সূত্র, প্রস্কৃত্বর বিশ্ব প্রাণও সাধানা কর্মকৃত উক্ত হইল অতএব তাঁহার বিস্তৃতি সকল কহিতে সাজা হউক ১৯৭। যত্র পুলৈন্দ পোলৈন্দ নগুভিঃ সহ সোলেনে । প্রকা বিভিত্তার জাসন্ ক্রিনিং ভঙং ॥২৪ প্রকাপতীনাং স পতিন্দক্রপে কান্ প্রকাপতীন্ । স্পাংল্ডেরাসুসর্গাংল্ড মন্দ্র বার্ত্রাধিপান্ । এতেষামপি বংশাংশ্চ বংশাস্ক্রিভানিচ ॥ ২৫ ॥ উপর্যাধশ্চ যে লোকা ভূমে মি ক্রিক্রেলাস্তে ॥ ২৬ ॥ তেষাং সংস্থাং প্রমাণক ভূলো কস্যচ বর্ণয় ॥ ২৭ ॥ তির্যালাস্য দেবানাং সরীস্পপতত্রিগাং । বদ নঃ সর্গসংব্যহং গার্ভ স্বেদ বিজ্ঞান্তিদাং ॥ ২৮১

औरत्यामी ।*

যত্ৰ ৰাস্থ ইদং বিশ্বং ততং ব্যাপ্তং ॥ ২৪ ॥

এবমেতৎ পুরা পৃটো মৈত্রেয়া ভগবান্ কিলেতি পরীক্ষিৎ প্রশ্লেজ্যজা বিছর মৈত্রের সন্থানঃ প্রভাবিতঃ অভভানেৰ বিছ্রেণ কুতান্ প্রশানাহ বাবৎ সমাথি। প্রজাপতীনাং পতি এ ক্লেড্যাদীনাং বর্ণরেতি বক্ষ্যমাণেনাবরঃ। চক্চণে অক্লরৎ সর্গান্ নব বিধান্ অসুস্গান্ ভত্তেদান্॥ ২৫॥

८१ मिळाता जाप्य ॥ २७ ॥

मश्कार महिट्यभः॥ २१॥

সৰ্গাণাং সংব্যহং সংবিভাগং । গাৰ্ক্ত স্থেদ ৰিজোভিদাং গাৰ্ক্ত। জনার্জাঃ স্বেদাক ৰাত্যাঞ্চ জাতাঃ স্বেদৰিজাঃ উভিদশ্চ তেযাং ॥২৮

क्रममन्द्रः।

यज है जि नशु जिस्में हिटेज: ॥ २८ ॥ २८ ॥ २७ ॥ २५ ॥ २৮ ॥

की विश्वनाथहक्तवती ।

অত্র বাস্থ বিভূতিবু নঠ ভি: দৌহিলৈ: ॥ ২৪ ॥

বিতীয়ক্তক পরীক্ষিতা পৃষ্টানেবার্থানৈকজাতীয় হৃদয়ত্বাৎ বিহুরোপি পৃচ্ছতি যাবদধ্যায়সমাধি প্রজাপতীনাং পতিওঁকা সর্গান্ দশবিধান্ অনুসর্গান্ তত্তেদান্॥ ২৫॥

হে মিত্রারা আত্মত ॥ ২৬॥

मः हार मरिनटवर्भर ॥ २१ h

সংবৃহং সংবিভাগং। গাড়া জরাযুজা মহ্ব্যাদরঃ। বেলাচ্চ ৰাত্যাঞ্চ জাতাঃ। বেলজাঃ কৃষিদংশাদ্যাঃ বিজাঃ পক্ষিণঃ উত্তিদ তারুওকাদ্যাজ্বেৰাং॥ ২৮॥

হে মহাশায়! ঐ সকল বিভূতিতেই ত পুজ পোজ দৌহিজ এবং গোৱৰ এতং সমুদায়ে প্ৰকা সকল বিচিত্ৰাক্বতি হইয়াছে এবং ঐ বিভূতিই ত এই জগৎকে ব্যাপিয়া রহিয়াছে ! ॥ ২৪॥

হে ত্রহান্। প্রজাপতিদিগের পতি ত্রহা কোন কোন প্রজাপতি কি কি সর্গ এবং কোন্ কোন্ মহন্তরাধিপতি কল্লনা করেন, তৎসমূদায় বর্ণন করিতে আজ্ঞা হউক। জ্ঞপর ঐ সমস্ত মহাদিবংশ এবং তদংশাদিগের চরিত্রেও বর্ণন করুষ। ২৫॥

. दर विजाञ्चल ! अहे शृथिनीत छेशति अवः व्यट्यांकारः। रा नकत लांक व्याद्ध ॥ २७॥ ः

७९ मधुमात्र कित्राट्य मित्रदर्गिक धरः ठाहारमत्र शतिमान कर के आत्र धरे कूटलारकतरे वा आकात्र ७ शतिमान कित्रम रेकाकिक वर्गन कक्रम ॥ २० ॥ ११० विकास विकास के स्थापन स्थापन विकास

অপর দেবতা, মসুষ্য, সরীস্থপ, পক্ষী এবং অন্যান্য জরার্জ, বেশল, অওল এবং উদ্ভিক্ত এ সকলের সৃষ্টি বিভাগও অমুগ্রহ প্রকাশ পূর্বক বলিতে আজ্ঞা হউক ॥ ২৮ ॥ গুণাবভারে বি ৰস্য সগ বিভাগানী জানি । স্বাধান জীনিবাসক ব্যচিক্ষাদার বিজনং ॥ ২৯॥
বর্ণাজন নিভাগালৈ ক্লপনিল বভাবত: । নিবাদান ক্মানি বেদস্যুচ বিকর্ষণং ॥ ৩০ ॥
বজ্ঞত বিভানানি বৌগস্যুচ পদঃ প্রভাগ । নিকর্মস্যুচ সাংখ্যক্ত তব্রং বা ভগবংখ্যুতং ॥ ৩১ ॥
পাবগুপথবৈষ্ম্যং প্রভিলোম নিবেশনং । জীবস্য গভরে মাশ্চ যাবতীপ্রণ কর্মজাঃ ॥ ৩২ ॥
বর্মার্থ কাম মোক্ষাণাং নিমিভান্যবিরোধ্তঃ । বার্তায়া দগুনীভেন্ট প্রভক্ত বিধিং পৃথক্ ॥ ৩০॥
জাছস্যুচ বিধিং ব্রহ্মন্ পিতৃণাং সর্গমেবচ । গ্রহ নক্ষত্র তারাণাং কালাবয়ব সংখিতিং ॥

24

श्रीश्रद्धारी ।

नर्गानीनाञ्चवक ख्रुकाः ॥ २२॥

क्रभः निकः भौनमाठातः चखावः भमानि छछः विकर्वगः दिखांगः ॥ ०० ॥

বিতানানি বিস্তারান্। নৈক্ষ্ত জানত ভচুপায়ত সংখ্যত প্রোমার্গান ভন্তক্তার্থ: ॥ ৩১ ॥

পারশুানীং পছা: প্রবৃত্তি: তদেব বৈষম্যং ॥ ৩২ ॥

निभिज्ञाञ्चाभागम् भवन्भवाविद्वार्थमः ॥ ०० ॥

গ্রহাদীনাং কালচক্রে সংস্থিতিং॥ ৩৪॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

সর্গাদীন্ তেয়ামপ্যাশ্রমং প্রকাপত্যাদিরপং চ স্কৃতঃ কুর্বতঃ ॥ ২৯ ॥

বর্ণাশ্রম ইতি সপ্তকং। ভগবংশ্বভং তত্ত্রং পঞ্চরাত্রাধ্যং। প্রতিলোমাং স্তাদীনাং নিবেশনং সংস্থাপনং ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥

श्रीविश्वनाथहळवळी।

সর্গাদীনাশ্রয়ঞ্ প্রতঃ । ২৯॥

क्रभः निकः गीनमाठातः चलावः भमामिटेखः विकर्षगः विलोगः ॥ ०० ॥

বিতানানি বিভারান্ যোগস্যাষ্টালস্য পথো মার্গান্ নৈক্ষত জ্ঞানত তত্পায়ত সাংখ্যত মার্গান্ ভগবৎ স্বৃতং তত্তং নারদপঞ রাঅং চার্থে বাকারঃ ॥ ৩১ ॥

পাষ্ডপথাৎ পাষ্ডমার্গতোর্হেতোর্যবৈষ্ম্যং প্রতিলোয়াং স্তাদীনাং নিবেশনং সংস্থানং ॥ ৩২ ॥

নিমিভাম্যপায়ান্ পরস্পরাবিরোধেন বার্জারাঃ ক্ষবিবাণিজ্যাদি শাক্তস্য। দণ্ডনীতেরর্থশান্তস্য প্রতক্ত বেদশান্তজ্ঞ ॥ ৩৩ ॥ কালাবয়বে দিনরাত্রিমাসবর্ষাদৌ সংস্থিতিং স্থিতিং ॥ ৩৪ ॥

অপিচ ব্রহ্মা, বিষ্ণু, রুদ্রে প্রভৃতি গুণাবভার দারা এই বিশের স্থান্তি, দিংতি, দংহারকারী এবং এই ব্রহ্মাণ্ডের আন্তান্তের অফা ভগবানের উদার বিক্রমণ্ড বর্ণন করুন্॥ ২৯॥

হে জন্ম । চিহ্ন আচার এবং শম দমাদি স্বভাব বশতঃ বর্ণ ও আশ্রম সকলের বিভাগ, তথা ঋষি-দিগের জন্ম ও কর্ম তথা বেদের বিভাগ ॥ ৩০ ॥

এবং যজের বিস্তার, যোগের পথ, নৈকর্ম্য অর্থাৎ জ্ঞানের এবং তাহার উপায় স্বরূপ সাংখ্যের পথ ও ঐ সকলের তন্ত্র, ভগবান্ যে রূপ আদেশ করেন॥ ৩১॥

অপিচ পাষগুদিগের বিষম প্রবৃত্তি, প্রতিলোম অর্থাৎ সূতাদি জাতি এবং কীবগণের গুণ ও কর্মা নিমিত্ত যে রূপে ও মত্ প্রকার গতি হইরা থাকে॥ ৩২॥

অপর ধর্ম, অর্থ, কাম, মোক এই পুরুষার্থ চতু ইয়ের পরক্ষার অবিরোধে যে সমস্ত উপায় আছে তথা কৃষি বাণিক্যাদি, দণ্ডনীতি ও শাল্লের পুথক্ পূথক্ বিধি যে রূপ ॥ ৩৩ ॥

चात्र खारकत विधि, शिष्ट्रलारकत सहि, श्रेष्ट्र, नक्रज, जाता व नक्रलत कान्ववर्क चर्बाद कार्लत

मानक क्रमानाभि याक्ति। भूर्त्वाक्ष्माः। वानानक्षमः यो वर्षाः यक्ष्म क्रमानि ॥ ०८ यान वा क्रमानि व्यक्तिक्ष्मां । मान्यनीमिक वा द्रयाद्रिक्षां क्ष्मां क्ष्मां ॥ ०८ ॥ क्ष्मां भित्रानाः भूकानां विद्याद्य । क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां व्यक्ति । क्ष्मां क्ष्मां व्यक्ति व्यक्ति । क्ष्मां क्ष्मां विद्याद्य । क्ष्मां क्ष्मां व्यक्ति व्यक्ति । क्ष्मां क्ष्मां विद्याद्य । क्ष्मां क्ष्

क्रियम्मामी।

যেন মার্গেণ ভগবান্ সম্ভবোধ। বেষামিতি বাদৃশানাং ॥ ৩৫ ॥ ।
জনাপৃষ্টমিপি বন্ধোগাং বক্ষবামিতি ভাবং ॥ ৩৬ ॥

প্রতিশংক্রম: প্রবর:। তত্র প্রদরে ইমং পরমেখরং শরানং রাজানমিব চামরগ্রাহিশ:। কে বা তমফুশেরতে শরানমস্থ অপত্তি ॥ ৩৭ ॥

भूक्रमा मःश्वामः जीवमा छवः। भवत्यवंत्रमः चक्रभः। त्यारामन छत्रादेवकाः। छवा स्नामक देनगम्बानियमः॥ अन्॥

ক্রমসন্দর্জঃ।

তৰানামিতি। তত্ৰ তেবু প্ৰকৃতিপৰ্যাৰেবু প্ৰদরেবু। অনেন পাৰ্বদানাং নিতাদ্মেবাভিপ্ৰেতং। তত্ত্বং কাশীখণ্ড। ন চাবৰে হি বস্তকা মহত্যাং প্ৰদরাপদি। অতোহচাতোহখিলে লোকে স এক: সর্বগোহবাদমিতি অমুশেরতে সীনা নিঠান্তি। ৩৭ পুক্ষক্তেতি সাৰ্দ্ধকং। পুক্ষক প্রকৃত্যাদিত্তইু: সংস্থানং সহস্থীবেত্যাদিরূপং ততঃ পরস্থ প্রভাগবতশ্চ জ্ঞানং বিচাররূপং ॥৩৮

अविश्वनाथठकवर्ती

এবং পরাবরেবাং ভগবন্ ব্রতানি শ্রুতানীত্যুক্তে ব্যাসমুখাৎ প্রাক্ষোজাতানামণ্যেবাং জেয়বস্ত মাত্র,এব নৈরপেকার্থং প্ন-নৈ ত্রেরমুঝাদণি জিজাসাং সমাণ্যেদানীং স্বাভীষ্টং বিধিৎসিতং পৃচ্চ্ তি বেনেতি। বাশক্তর্থে ধর্মাণাং সর্কোষাং বোনিঃ কারণং জনার্মনঃ। সকামভক্তান্ কামান্ যাচয়রপীত্যর্থং। যথা। শুদ্ধজ্ঞান্ প্রেমোখেনাস্তাপেন পীড়য়ন্ বেষাং বেতি ক্রুমেণ তৎপ্রসাদস্য সাধনং কিং। ত্রাধিকারিণক কীদৃশান্তয়ে ক্থরেত্যর্থং॥ ৩৫/॥

স্বাভীট্রমপি প্রইব্যনহং নঞ্জানাম্যতন্ত্র ভবস্ত এব রূপরা কথরন্বিত্যাহ অমূত্রতানামিতি চতুর্থ্যপে বৃষ্ঠ্যঃ ॥ ৩৬ ॥

সাধরভক্তিং পৃষ্ট্। সাধাতকেনি তাৰে বিপ্রতিপত্তিং নির্মন্ প্রকারং পৃদ্ধতি তবানামিতি প্রতিসংক্রমঃ প্রলয়ঃ। তত্র প্রবাদ্ধে প্রনেবরং শরানং রাজানমির চামরগ্রাহিশঃ কে উপাসীরন্ কে বা অহুশেরতে শরাক্ষমসূত্রপত্তীতি শ্রীস্থামিচরণাত্তেন ভগবং পার্বদানাং তত্তকেন্ত্রনাক্ষত নিতাম্মভিপ্রেচং অতএব নচাবন্তেচ বভজা মহত্যাং প্রদায়পদীতি প্রসিদ্ধং কাশীখণ্ডবচনং ॥ ৩৭ ॥

উপাসকল্প পুরুষত সংস্থানং সমাক্ প্রকারেণ কীল্মী স্থিতিত্তবং বা। তথা উপাতত পরত পরমেবরতচ স্বরুপং। তথা

অবয়ব স্বরূপ দিন, রাত্রি, মাস, বৎসরাদিতে সংস্থিতির প্রকার এবং দান, তপস্যা ও ইন্ট (অমি-ন্টোমাদি যাগ) পূর্ত্ত, (বাপী, কৃপ, তড়াগ) প্রভৃতি খাতাদি কর্ম্মের যে যে ফল, অপর বানপ্রস্থ ব্যক্তির ধর্ম এবং পুরুষের আপৎ কালীন ধর্ম॥ ৩৪॥

আর যে বর্জ বারা ধর্মযোনি ভগবান্ জনার্দনের প্রীতি বা প্রসমতা হয়, ছে অনম। তৎসমুদায় বর্ণন করুন॥ ৩৫॥

হে বিজোতন। দীন বংসল গুরুগণ জিজ্ঞাসিত না হইলেও অমুত্রত শিষ্য এবং পুদ্ধ সকলকে কর্ত্তব্য বিষয় বলিয়া থাকেন॥ ৩৬॥

হে মুনে! আপনি যে সকল তত্ত্বের কথা কহিলেন সে সমুদায়ের লয় কত প্রকার হয়। প্রসম কালে পরমেশ্বর শয়ান হইলে, রাজা যেমন শয়ন করিলে অসুজীবিগণ চামর গ্রহণ পূর্বেক সেবা করে তাহার ন্যায় নিজ্ঞিত সেই পরমেশবের কাহারা সেবা করে এবং তৎ পশ্চাৎ কোন কোন পদার্থই বা হও হইয়া থাকে! ॥ ৩৭॥

ত্মপর জীবের তত্ত্ব ও পরনেখনের স্বরূপ কি ? এবং কোন অংশে ঐ ছুরের পরত্পর ঐক্য ভাছে ?

Basinesi'

নিবিতানিচ প্রকেষ প্রোক্তান্তমন প্রিক্তি। বাজেজান কৃত্য প্রাণ ভক্তিবেরাগ্যমেবচ ॥ ৩৯ এতামে প্রকেষ প্রান্ত বাজান ক্রিবিবিৎসরা। জারি মেধ্জার মিরেছাদল্লা নক্তিক্বঃ ॥ ৪০॥ সর্বের বেলাল্ড বজাল্ড তপোলানানি চান্ত। জীবাভরপ্রদান্ত ন ক্রেরিন্ কলামপি॥ ৪১॥ জীপক উবাচ॥

न देशमानुके भूतानकाः कृतः ध्रशासन मृतिः ध्रशासः।

शिशवचामी ।

নিমিভানি বানি হরিভিঃ প্রোক্তানি তস্য জানত সাধনীনি তানিচ ক্রিই। শুরুং বিনৈতর তবতীত্যাহ সত ইতি ॥ ৩৯ ॥ মে প্রান্ মে মিত্রভাৎ রিগ্রভাবিতি অবর্তেনার মে প্রস্যু পৌনক্ষক্তাং ॥ ৪০ ॥ তত্ত্বাপ্রেশেন জীবাভরপ্রদানস্য ॥ ৪১ ॥

পুরাণে করতে প্রকাশতে ইতি পুরাণকরো বৃভ্ৎসিতোইর্থ: আপৃটঃ পুরাণকলোয়ং স ব্নিপ্রধানঃ ॥ ৪২ ॥

क्रममनर्जः।

স্বত ইত্যৰ্দ্ধকং ॥ ০৯ ॥ ৪০ ॥ জীবানামিডকভোজীভানাং কিমুক্ত সংসাৱজীভানামক্তরপ্রদানস্ভেত্যর্থ: ॥ ৪১ ॥ আপুত্ত পুরাণকলো বন্দ্র সঃ ॥ ৪২ ॥

এবিখনাপ চক্ৰবন্তী'।

উপাসনায়াক জানং নৈগমং নিগমোক্তং যক্ষুক্শিয়ারোঃ প্রয়েজমং মন্তঃ ক্রাণাৎ শিব্যোহ্রং জানাভু ওরতঃ স্কাণাদ্রং ভক্তিং জানীয়ামিত্যেতলকণং। ততা নিমিভানি সংস্কাদীনি । ৩৮॥

অন্য স্বিভিনিরপরাধ বিজ্ঞতকৈ: গুরুং নিনৈতর ভবতীত্যার খন্ত ইতি ॥ ৩৯ ॥

নমু তহি নানাবিধাঃ প্রশ্না এতাবস্তঃ কথং কুতান্তরাত হরেঃ কর্ম পরিচ্গ্যাদিকং তক্ত বিবিংনমা প্রাথীছ্যাএব এতান্মন প্রশ্নান ব্রচি স্ক্রিজাসিতসিছে সত্যামেব জগবংপরিচ্গ্যাহাঃ মনোছনিরপেক্ষমেকাগ্রং ভবতি মনস ঐকাগ্যো সভ্যেব ভং-প্রাথিরিতি ভাবঃ। যে মহুং মামুদ্ধর্মুমিতি মে পদক্ত পৌনক্ষজাং ম শব্যং। মিত্রখাদিতি মিত্রাহাঃ প্রস্থাপি মিত্রগেব স্ক্রিশতামিতি ভাবঃ॥ ৪০॥

ন কেবলমিদং মহ্বারার্থমেব অপিতৃ ভবডোপি পুণাবশো লাভার্থমিত্যাহ সর্কে ইতি ॥ ৪১ ॥

পুরাণেরু পুরাণতাৎপর্যোরু করতে ব্যাখদন কমর্বো তবজীতি পুরাণকয়: । আপৃষ্টলাসৌ পুরাণকয় তেতি স:। এত্সলিবেতি

তথা উপনিষৎ সকলের জ্ঞান कि প্রকার ? शुक्र निराहत প্রহোজন कि ? ॥ ৩৮ ॥

হে অনঘ! পুরুষদিগের আপনা হইতে জ্ঞান বা ভক্তি অথবা বৈরাগ্য কিছুই হইতে পালে না, এ নিমিত জ্ঞানিগণ ঐ জ্ঞানের সাধন সকল কহিয়াছেন।

হে মহাশয়! আমি ভগবানের কর্ম সকল জানিতে বাসনা করিয়া এই সমস্ত প্রশ্ন করিলাম, আসনি আমার পরম মুদ্রদ্ রূপা পূর্বক ঐ সকল বুর্ন করুন্॥ ৪০॥

হে নিষ্পাপ! আপনি আমার জিজাসিত এই সকল বিষয়ে আমাকে উপদেশ দিলে কেবল যে আমারই উলাক হুইবে এমত নহে আপনারও মথেক পুণ্য লাভ হুইবে, কেন না সর্ববেদ, সর্ব্যক্ত এবং ভগল্যা ও দান এ সকল ভব্দোপদেশ দারা জীবের প্রতি সভয় দানের একাংশের তুল্যও হয় না ৪১ ।

्र अकरनर कहिरनन महात्रीय ! क्कंटबर्क विष्ठत कर्क्क रुन्हें मूनिथवान रेमरखप्र अहे ऋरु वृक्रूर-

धारुकरार्ता छत्रवरकवाग्राः मरकाविज्ञाः धारुमित्रोरः ॥ ३२ ॥ । ३२ ॥ ।

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীযুক্তরে বিদ্বর প্রশ্নঃ
সপ্তমোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ 9 ॥ # ॥

শ্ৰীমৈত্ৰেয় উৰাচ।।

সংসেবনীয়ো বত পূরুবংশো যল্লোকপালো ভগবংশ্রধান:।
বভূবিথেহাজিতকীর্তিমালাং পদে পদে নৃতনয়স্যভীক্ষং॥ ১॥

क्रीधत्रवाभी ।

॥ 🛊 ॥ ইতি তৃতীরে সপ্তম: ॥ 🛊 ॥

चहैरम সমভূৰু सा নাভেন্ত सनभातिनः। তমজানন্ কলে বিভাত্ত্বপদা তোষয়ৎ প্রভুং॥ । ॥ . . ,

প্রোতারমন্দিনক্ষতি সভাং দেবিভূং যোগ্যঃ বত অহো যদকাং ইহঁ অশ্বিন্ বংশে বভূবিণ জাতোদি কণ্ডূতঃ ভগবানেব প্রধানভূতো যদ্য সঃ। অত হেতৃঃ। প্রতিক্ষণং নৃতনয়দি নবীনাং করোবি॥১॥

क्रमकर्दः।

॥ * ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্ষে শ্রীজীবগোত্মামিক্কত ক্রমসন্দর্ভক্ত সপ্রমোহধ্যার: সমপ্রি: ॥ * ।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বস্ততন্ত হর্ষোথ স্মিতবিশিষ্ট ইত্যর্থ:॥ ৪২॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্ততেতসাং। তৃতীরে সপ্তমোহধ্যায়ঃ সক্তঃ সক্তঃ স্তাং ॥ * ॥ আইমে শ্রীহরেন জিপক্ষোত্ত শতুমুর্থঃ। অবেষণাধিরমাধ্য সমাধিত্তমবৈক্ত ॥ • ॥

ভো বিহুর ডাং চাপি যুরচ্চরণসেবরাহং পরাণুদে ইত্যাদিনা অভোজ্ঞানং কুছা পুংসামিত্যাদিনাচ দুং মৎসঙ্গং প্রার্থির । মরতেতু সাক্ষান্তব সঙ্গা পরমন্তর্ভা কেন মহাস্কৃতিচ্ডামণিনা লভ্যতাং। দুং প্রসন্ধ্যসন্ধ্বতাপি জনে সেব্যমানে হরে জিক্তিঃ ভাদিতি বিহুরং শ্বরভিনন্দতি। বতো অহো ত্যাম্মজ্মার্থমনীকৃতঃ। পুরুবংশোপি সভাং সেবিতুং যোগ্যঃ কৃতঃ বদ্ধর দ্বং বভ্বিপ জাতোসি কথভ্তঃ বন্ধ পরমান্ত ভগবংস্থ মতভেদেনোপাভ্যরপেব্ ত্রিরু মধ্যে ভগবানেব প্রধানভ্তো যন্ত সং। ইছ ভগবত্পাসকেবিপ মধ্যে অজিতকীর্ত্তিমালাং অভীক্ষং প্রতিক্ষণমেব পদে পদে প্রতিশ্বনিপ্রতিষ্ঠ বেনব প্রতিবাদ্যমেব প্রতিপ্রকরণমেব নৃত্তন্মসি কীর্ত্তিমালামিমাং শ্বসনাস্চ্যা কেবলং গ্রথামোব। দুং পুনরেনামভিদ্নিগ্রাম্বাগি স্বর্ণ মন: সংপুটাস্তনিধার নিভা নবীনী করোবীতি স্ব্যাহাত্ম মনির্বাচ্যমেবিত ভাবং॥১॥

দিত অর্থ জিজ্ঞাদিত হইয়া অতীব হ্র্যান্বিত হইলেন এবং ভগবানের কথায় প্রেরিত হইয়া সহাস্য বদনে বলিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ৪২ ॥

॥ # ॥ देजि ज्जीरत मथम ॥ # ॥

অক্টমাধ্যায়ে জলশায়ি ভগবানের নাভিপদ্ম হইতে ব্রহ্মা উৎপন্ন হইরা তাঁহাকে জানিবার নিমিত্ত জলে মগ্ন হয়েন, কিন্তু তাহাতে তাঁহার কিছু অন্ত না পাইয়া সভয় চিত্তে তপ্স্যা দারা ঐ ভগবানের স্তব করেন॥ ।

মৈত্রের মূনি সংশোতা প্রাপ্ত হওরাতে অভিনন্দনা পূর্বক বিছরকে সংখাধন করিয়া কহিলেন, বিছুর! পুরুষংশ অতি পবিত্র সাধুদিগের সেবনীয়, যে হেডু পরম ভাগবত লোকপাল ভূমিও তাহাতে জন্ম গ্রহণ করিয়াছ। আহা! তোমা হইতে সর্বাদা ভগবানের কীর্তি সমূহ কলে কলে নৃত্ন ইইতেছে॥ >॥

त्मारः मृगाः कृत एथाय प्रःशः महत्मातानाः वित्रमाम् उद्याने विवर्णाः । योवर्ततः जानवरुः भूतानः वनार नाक्ष्यवान्विज्यः । योवर्गानम्बद्धाः जगवरुमानम् नक्ष्यनः (सर्वमक्ष्यकः । विविश्यवस्त्रम् । १०॥ विवश्यवस्त्रम् वर्षा मानवस्त्रः यक्षाक्ष्यम् । १०॥ वर्षाम विकार वर्षामानस्त्रः । १०॥ वर्षाम् वर्षामानस्त्रः । १०॥ वर्षामानस्त्रः ।

क्षित्रवामी ।

जबस्थात महत्तुः वः धाशानाः एता इःथ्या वित्रमात्र धावर्षस्त्र धावस्त्र ॥ २ ॥

কোনো তগৰান্ কেতাশ্চ কবিতা আছ কবক বন্ধা প্রাপ্তমিতাপেক্ষানাহ আসীনমিতি সপ্ততিঃ। উর্ব্যাং পাতালতলে অক্ঠ্যবং অপ্রতিহত জানং। অতঃ সম্বর্ধাৎ পরস্থ জীবাস্থানের ॥ ৩॥

ত্ত্যের বিশিন্তি। প্রমের বিষ্ণাং প্রীরমাপ্ররং বাস্থদেবসক্তং পরমানন্দ রূপং ধ্যানপথেনাসূত্র বৃত্তমানরন্তং সর্কোৎকর্ষেণ পূঞ্জরন্তং প্রত্যাধ্যত্তমন্ত্রমূপী কৃতং নেজাপুলযুকুলং কিকিছ্লীলরন্তং কুপাবলোকেন সনৎকুমারাদীনামত্যাদরার্থং ॥ ৪ ॥

সুনীনাং বিশেষণং সার্কেন। স্বর্ধুকা উদকেনাজৈ রিভি ঞ্জিভাগবত প্রবণার্থং সভালোকাৎ পাভালমবভরকো নিরন্তর গলামধ্যত এবাবতীর্ণা ইভি ভাব: চরণাবুগধীয়েতে যমিন্ পরে তৎ উপস্পৃত্তা নমক্তঃ কথভূতং ভলাহ বং পলং প্রেম সহিতং

क्रममर्खः

এবং দিতীরস্করান্তে পাল্লং ক্রমথো শৃণিতি বহুকং তদবতারপার্থং চড়ুঃলোকীমহিনগর্তিতমেতাবত্তং প্রহম্কৃ। তদেবাহ সোহ্যমিত্যাদিনা। ভাগবতং স্কর্ণাদিপ্রবর্তিত তত্তাগবতবিশেবমিতার্থ: ॥ ১ ॥ ২ ॥

আসীনমিতি চতুকং কিরীটেতি সম্বৰ্গমিত্যক্ত বিশেষণং ॥ ৩ ॥ ৫ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১ • ॥

🖺 বিশ্বনাপচক্রবন্তী ।

ছৎসর্কপ্রশ্লোন্তরাণি শ্রীভাগবতে প্রাণ এবোপলতাক ইতি তত্তাগাবিশেষমের ছাং প্রাবদামীত্যাহ। সং প্রসিদ্ধ: পরাশর-শিব্যোহং খুল সুধার ভূচ্ছবিবদ্দস্থার্থং হংধং নরকাদি। তস্য হংগত। এতেন স্থাদ কর্মাণি করোতি লোক ইত্যত্ত বদত্ত যুক্তং ভগবান বদের ইতি স্থলাদিমে প্রশ্লেশ্যেতদেব যুক্তমুগুরং ভবতীত্যকং ॥ ২ ॥

কোসৌ তগৰান কেন্দ্ৰ অধিকা আহ কথং হৰা প্ৰাথমিতাপেকাৰামাহ আসীনমিতি স্থতিঃ। অকুঠ্নতং ভ্ৰসহ্ত্ৰণ অপ্ৰতিহতজানং বা। অতঃ সংকৰ্ষাৎ প্ৰস্যু শ্ৰীবাহুদেবক ॥ ৩॥

তমেব বিশিন্তি স্বমেব বিষ্ণাং শীরমাশ্রতজং বছরানরতং সর্বোৎকর্বেণ পুরুত্তওং তদেব কিং ভত্তাই বদিতি। প্রত্যেষ্ঠ ত-মন্তমুশীক্ষত্বিতি তথাস্থদেবস্থানাশাস্তবার্থমিত্যর্থ:। তদপি স্বদিতি বিব্ধানাং সনংক্ষারাদীনামভ্যদ্রার্থ:॥ ॥

মুনীকু বিশিনটি লার্ক্কেন বর্ধু ছালাজৈরিতি আভাগৰতপ্রবণার্ধং সভালোকাৎ পাতালং প্রভাবতরতো নিরন্তরং গলাসধ্যত

বে সকল মকুষ্য অল্প বিষয় হুখের নিষিত্ত মহন্দ**ুংখে পতিত হই**য়াছে তাহাদিগের ছুংখ নিবারণার্থ ভাগবত পুরাণ বলিতে আরম্ভ করি, ভগবান্ এই পুরাণ স্বয়ং ঋষিগণকে কহিয়াছিলেন ॥ ২ ॥

কোন এক সময় সনংক্ষার প্রভৃতি ঋষিগণ তত্ত্তিজ্ঞাত্ত হইয়া পাতাল তলে অধ্যাসীন, অপ্রতি-হত জ্ঞান এবং অকুঠ সত্ত্ব সম্পন্ন আদ্য পুরুষ ভগবান্ সহর্ষণকে এই বিষয়ই জিজ্ঞাসা করেন ॥ ০॥

তৎকালে সমর্বণদেব ধ্যানপথ ছারা আপনার আঞায় স্বরূপ পরমানন্দ অর্থাৎ পণ্ডিতগণ যাঁহাকে বাহ্নদেব কহিয়া থাকেন, অসুভব করিয়া সর্বোৎকৃষ্ট জ্ঞানে তাঁহার পূজা করিতেছিলেন কিন্তু তাঁহা-দের স্ভ্যুদ্ধের নিমিত অন্তর্মুধী কৃত নয়নাজযুক্ল ঈবৎ উন্মালন করিয়া কহিতে লাগিলেন ॥ ৪ ॥

ক্ষাতে, তাঁহাদের শিরণে জটা সমূহ ঐ পরাজানে সাত্রী কত হইরাছিল, অতএব তাঁহারা সেই আর্ড

পদং যদর্ভন্ত রাজকন্যাঃ সংশ্রেম নানা বলিভির্বরার্ধাঃ ॥ ৫ ॥
মৃত্যু গন্তো বচসামুরাগঝলৎপদেয়াত কানি তল্লাঃ ॥ ৬ ॥
কিরীট সাহত্র মণিপ্রবেক প্রদ্যোতিভালাম ক্পাসহত্রং ॥ ৭ ॥
প্রোক্তং কিলৈতত্তগবত্তমেন নির্ভি ধর্মাভিন্তার তেন ।
সনংক্মারায় স চাহ পৃষ্টঃ সাংখ্যায়নারাক গুতত্রভাল ॥ ৮ ॥
সাংখ্যায়নঃ পারমহংক্ত মুখ্যো বিবক্ষমাণে ভগবন্ধিভৃতীঃ ।
কাগাদ সোহস্মান্য রবেহবিতায় পরাশ্রায়াধ রহক্ষতেক্ত ॥ ৯ ॥

बीभवत्रामी।

বধান্তবত্যেবং নানোপছারেঃ পুরুষস্তি বরার্থাঃ পতিকামা: ॥ ৫ ॥

ক্বতানি কর্মাণি গণতঃ কেন অহরাগেণ খলতি পদানি যদ্মিন্ তেঁন বচসা। তানি কানস্তীতি তজ্জা: ॥ ७ ॥
সহস্রমেব সাহস্রং কিরীটানাং সাহস্রে যে মণিপ্রবেকাঃ রদ্ধোত্তমা তৈঃ প্রদ্যোতিতং উদ্ধান ফণানাং সহস্রং যন্ত তং অপৃদ্ধন্নিতি
পূর্বেণাশ্বয়: ॥ ৭ ॥

তেন সন্ধ্ৰণেন সন্ত্ৰ্মারায় প্রোক্তং । ৮॥

পারমহংতে ধর্মে মুখ্য:। বিবক্ষমাণ ইত্যাত্মনে পদং জ্রঞাদেশত বচেক্ডরপদিখাও। অবিতাম অমুগতার ॥ ১॥

ঐবিশ্বনাথচক্রমন্ত্রী।

व्यविकीर्ग हेकि छातः । উপধানং উপবর্ছং । বরার্থা: পতিকামা: a e ॥

কৃতানি কর্মাণি গৃণত্তি কেন অনুরাগেণ খলন্তি পদানি যশ্বিন্ তেন বচদা তানি জানস্তীতি তজ্পাইতি স্বামিচরণা:। কৃতানি দীলা:॥ ७ ॥

সহস্রমেব সাহস্তং তত্র মণিপ্রবেটক রম্মুধৈয়ঃ। মুখ্য বর্ষ্যবরেণ্যাশ্চ প্রবেকাম্ভমোত্তমা ইত্যমরঃ। অপুছ্রিতি পুর্বেটণ্বাছরঃ ॥৭ তেন সম্বেশেন সনংক্ষারায় ভগবত্তমেনেতি স্বার্থে তমপ্। যথা লগত্ৎপত্যাদিজ্ঞানবংস্থ ভগবংস্থ শ্রেটেন ॥৮॥ ব্যুক্ষতে বুক্ষিত্রে ॥১॥

জটা দারা তাঁহার চরণাধার পদ্ম সংস্পর্শ করিলেন। পাতালস্থ নাগরাজের কন্যাগণ পতিকাম হইয়া প্রেমভাবে নানাবিধ উপহার প্রদান পূর্বক তাঁহারই চরণাধার পদ্মে পূজা করিতেন॥ ৫॥

ঐ মুনিগণ ভগবানের কৃত কর্ম সকল অবগত ছিলেন অতএব প্রণামের পর গদগদ বচনে তৎসমু-দায় মুক্ত্যু ক্টঃ কীর্ত্তন করিতে লাগিলেন ॥ ৬ ॥

তদনস্তর তাঁহাদের দৃষ্টিগোচর হইল ভগবানের কিরীট সহত্রে যে সমস্ত উত্তম উত্তম মহামূল্য রত্ন থচিত রহিয়াছে, তাহার কিরণ ধারা হ্মহৎ ফণা সহত্র উন্দীপিত হইজেছে, অতএব বিশ্মিত হইয়া প্রণাম পূর্বক জিজ্ঞানা করিলেন ॥ ৭॥

হে বিছুর! তাহাতে সেই ভগবান্ সন্ধর্ষণ দেব নিবৃত্তি ধর্মাভিরভ সনৎকুমার মুনির নিক্ট এই ভাগরভ পুরাণ বর্ণন করেন। তদনন্তর সেই ঋষি সনৎকুমার জিজ্ঞাদিত হইয়া এভধারী সাংখ্যায়ন নামা ঋষিকে ইহা প্রবণ করান॥ ৮॥

হে কুক্সপ্রেষ্ঠ ! সাংখ্যারন মূনি পারমহংস্য ধর্মে অভিশয় প্রধান ছিলেন, তিনি ভগরানের ঐপর্য্য বর্ণন মানসে উৎস্থক হয়েন, অতএব আমানের ভরু প্রাণর মূনিকে একান্ত অনুগত বেধিয়া তাঁহার নিকট ইহা বর্ণন করেন এবং হ্হস্পতিকেও তিনিই ইহা উপদেশ করিরাছিলেল ॥ ৯ বিভাগ প্রোবাচ মহাং স গ্রালুক্তের মুনিং পুরত্তার পুরাণমান্যং।
সোহং তবৈতৎ কথ্যানি বৎস আন্ধানতে নিত্যমন্ত্রতার র ১০ ॥
উদাপুতং বিখনিদং ত্রাসীদক্ষিত্রে শীলিতন্ত্র্যমীলয়ৎ।
অহীজেতল্লেহবিশয়ান একঃ কৃতক্ষণঃ স্বাল্বরতো নিরীহঃ॥ ১১ ॥
সোহস্তঃ পরীরেপিত ভূতস্ক্রঃ কালান্ত্রিকাং শক্তিমুদীরয়াণঃ।

अभवकां भी

পুলন্ত্যোনোক্ত ইত্যালৈবমাধ্যায়িক। পিতরং রাক্ষসভক্ষিতং শ্রুদ্ধা পরাশর রাক্ষস সত্তে প্রস্তুত্ত বিশিষ্ঠবচনারিবৃত্তঃ। ততঃ পুলন্ত্যোন দ্ব সন্তুতিরক্ষণাৎ ভূষ্টেন বরো দত্তঃ। পুরাণবক্ষা ভবিষাসীতি ॥ ১০ ॥

তদেবং সন্ধ্বণাৎ সংপ্রদার প্রবৃত্তিং প্রদর্শ বিভৃতি কথনার প্রেছবং বজুমাহ। উদাপ্লুডং একার্ণবোদকে নিমগ্রং বদ্ যদা আসীন্তদা অমীলিত দৃক্ অতিরোহিত চিচ্ছক্তিরের শ্রীনারায়ণো নেত্রে নিমীলিতবানিতার্থঃ। মারাবিনোদং পরিত্যন্তা স্বান্ধরতৌ স্করণানন্দ এব ক্লতোৎসবং। অতএব নিরীহং নিজিয়ঃ সন্॥ ১১॥

काननारकः (अतंश भूनः क्ष्टीनत्रद अत्वायमार्थः। त्य भरत अधिकारन । वहित् छाकारन मुद्देशकः यथानम हेलि ॥ ১२ ॥

क्रमममर्छः।

অধ বিভৃতিকথনার তদেব পুরাণং প্রবর্ত্তরতি। উদাপ্ল তমিত্যাদিনা বিশ্বমত্ত লোকজনং ॥ >> ॥

সোহস্তরিতি। ভৃতস্কান্তর বিলীনপার্থিবাংশ তন্মাত্রসহিতানি ত্রৈলোক্যগতজীবানাং লিল্পরীরাণ্যেব জ্রেরামি। যান্তেব সমষ্টি লিল্পরীরং বহির্জনাদীনাং বিদ্যমান্তাং। তেবামস্কঃ শরীরেহর্পণার্থমেব কালাত্মিকামিত্যাদিজনস্কল্পনাঞ্জনাভ্যস্তরে শরিতত্বাবহিঃস্থিতানাং মহর্লোকাদিবাসিনাং দৃষ্ট্যবিষয়ভাজনাল্পাস্ত বসনাবর্ণ জলোশি চক্রাৎ সলিলান্তিক্রচং। অপাশ্রিত

এীবিখনাণচক্রবন্তী।

স পরাশর: প্রত্যোনোক্ত ইত্যত্তেরং কথা পিতরং রাক্ষসভব্দিতং প্রত্যা পরাশরো রাক্ষসসত্তে প্রত্তো বশিষ্টব্চনান্নিবৃত্ততঃ পুরস্ত্যোন স্বস্তুতি রক্ষণাতুটেন বরো দতঃ পুরাণপ্রবক্ষা ভবেতি ॥ ১০ ॥

তদেবং শ্রীভাগবতস্য সম্বর্গাৎ সংপ্রদার প্রবৃত্তিং প্রদর্শ্য তৎকথামারভতে। উদাপুতং একার্ণবাদকনিমন্নমের তদা আসীৎ কদা বন্দনা নৈমিত্তিকপ্রদরে অমীলিতদৃক্ অভিবোহিতচিচ্ছক্তিরেব গর্ডোদশায়ী শ্রীনারায়ণো নেত্রে নিমীলিতবানিত্যর্থঃ। তল্পে ইত্যার্থং স্বাস্থাতিঃ সর্বপশক্তিভিঃ সহ রতৌ রমণে কতোৎসবঃ। নিরীহং তাক্তমায়াবিনোদঃ॥ ১১॥

নমু ত্রৈলোক্যগতানাং জীবানাং তদা কাবার্তেত্যত আহ অন্তঃ শরীরে স্বশরীর মধ্যএব অর্পিতানি ভূত স্ক্রাণি ত্রৈলোক্যগত দেবমসুষ্যাদি স্ক্র শরীরাণি যেন সঃ। কেন প্রকারেণেত্যত আহ কালান্মিকাং কালরপাং স্বশক্তিং উদীররন্ প্রেরয়ন্ তদিছো-বশাং প্রলমারস্ক্রকালেনৈব ত্রিলোক্সানাং সর্কেবাং স্থলশরীরাণি ধ্বংসমিদা শিক্ষ শরীরাণি তগবদন্তঃ শরীরে অর্পিতানি বান্যের

পরম কাক্লণিক মহর্ষি পরাশর পুলন্তা কর্ত্ব উক্ত হইয়া অনুকম্পা প্রকাশ পূর্বক আমার নিকট এই মহৎ পুরাণ বর্ণন করেন। হে বৎস। তুরি অতি শ্রেমাশীল এবং নিত্য আমার অনুগত অতএব ইহা আমি তোমাকে কহিতেছি॥ ১০॥

হে বিহুর! এই বিশ্ব যৎকালে প্রলাধিজলে নিমা ছিল, তথন ভগবান নারায়ণ একাকী মহাসূপ অনস্তকে শ্যা করিয়া তছুপরি শয়ন কবেন, কিন্তু তিনি আপনার জ্ঞান শক্তিকে তিরোহিত না করিয়াই নয়ন যুগল নিমীলিত করিয়াছিলেন। অপর মায়া বিনোদ পরিত্যাগ পূর্বক স্বরূপান-ক্ষেত্র অনুভ্রুত্বই তাঁহার আম্মেন ইয়াছিল এই কারণে তৎকালে ক্রিয়াপুন্য হইয়া থাকেন ॥ ১১ ।

পরস্ত তিনি আপনার শরীরাভাত্তরে ভূতসূক্ষ অর্থাৎ ত্রিলোকীর অন্তর্গত দেব মহয়াদি সূক্ষ্ম শরীর সকল বস্থাতিক করিনেতে গ্রহ্মার স্থান্তির সময়ে প্রবোধের নিমিত কাল রূপা শক্তিকে প্রেরণ উবাস তন্মিন্ সলিলে পদে যে যথানলোদারুনিরুদ্ধবীর্ব্যঃ ॥ ১২ ॥
চতুর্গানাক সহস্রমন্স্রপন্ অরোদীরিতয়া অপক্রা ।
কালাখ্যয়া সাদিত কর্মতন্ত্রো লোকানপীতান্ দদৃশে অদেহে । ১৩ ॥
তস্যার্থ সূক্ষাভিনিবিউদ্ভেরস্তর্গতোপো রজসা তনীয়ান্।
গুণেন কালামুগতেন বিদ্ধঃ সৃষ্যংস্তদা ভিদ্যত নাভিদেশাং ॥ ১৪ ॥
স পদ্মকোষঃ সহসোদতিষ্ঠং কালেন কর্ম প্রতিবোধনেন।

श्रीधतयामी।

স্বরা চিছ্কো সহ বর্তমান এব যোগনিজ্রা স্থপন্। পূর্কমেব প্রবোধনার্থং। নিযুক্তরা স্কাল শক্তা। স্থাসিতিং প্রাপিতং কর্মভরং ক্রিয়া ক্লাপো ষ্যা সং অপীতানু নীলানু দদর্শ ॥ ১০ ॥

লোকস্টার্থ অর্থস্কে অভিনিবিটা দৃষ্ট বঁজ। কালাম্দারিখা রুজো গুণেন বিদ্ধা কোভিতঃ দন্ ত্নীরানতি স্কোহ্র্ণ। স্বান্ প্রদোষ্ট্র উত্তবিধান্ নাতিদেশাত্র্ত ইতার্থ: ৪ ১৪ ৪

স তনীরামর্থ: পলকোব: সনুদতিষ্ঠৎ। কর্মাণি জীবাদৃষ্টানি প্রতি বোধন্নতি বং কাল তেন। জায়া জীবিষ্ণু র্বোনি র্যন্ত #১৫

ক্রমসন্দর্ভঃ।

কঞ্মিতি বক্ষামানাকানলদৃষ্ঠান্তঃ সংগ্মনীয়ঃ ৫ ১২ ॥

স্থান্তরং চ আসাদিতং জীবের সংযোজিতং কর্মতন্ত্রং বেন সং॥ ১৩॥ স্বান্ স্বার্থং জনরিবান্ অভিদ্যত উর্তঃ প্রবৃদ্ধ ইত্যর্থ:॥ ১৪,॥ প্রকোষোহ্যং নারায়ণনাভিক্ষণাদন্য এব জাতঃ প্রাকৃতার্থময়ত্বাৎ॥ ১৫॥

क्रीविषमां पठक वर्छी।

সমষ্টিলিজপরীরমাহরিত্যর্থঃ। এবস্থৃতঃ স বে পদে পোতালতলে অহানে সলিলে একার্থবাদকলুতেপি জলস্তম্ভনশক্তা৷ উবাস। ডভশ্চ মহলে কিলিবাসিনাং দৃষ্টাবিবরত্বে তস্য দৃষ্টাক্তঃ যথানল ইতি ॥ ১২ ॥

এবং কিরস্তং কালং স বিশ্রামেত্যাহ চতুরিতি খরা চিচ্ছক্যা জাগ্রতা। সহ জাগ্রদণি খণন্ মারাশক্তা। শশ্বিতরা সহ শ্রান এবেডার্থ:। তত্ত্ব প্রদাবসানসমরে খশক্তা। কালাথ্যথা আসাদিতং ভোগাদার্থং সংযোজিতং খান্ত: ছিত্তীবেরু প্রতিখকর্ম-তব্রং বেন স:। তত্ত্ব লোকানণি ব্রমাদিস্থাব্যান্তানণি ইতান্ স্ক্রমণেণ খবিন্ প্রাথান্ দদ্শে খদরীরান্নিক্রমনিভূমিতি ভাব: ॥১৩

উক্তপোষস্থাবেনাই তস্য নারারণস্য অর্থক্ষের্ সর্বাধীববিদ্ধাহেইর্ অভিনিৰিটা নিছাসনেজনা প্রবিটা দৃষ্টিবস্য তচ অন্তর্গত এবার্থ: প্রাকৃতপদার্থবিশেষ: তনীয়ানভিস্কোপি কালাস্সারিণা রজসা গুণেন বিদ্ধ: সংক্ষোভিভল্পত কুব্যন্ প্রসোধ্যন্ নাভিদেশাহনভিন্যত উদ্মুপসস্প ॥ ১৪ ॥

সচার্থ: কালেন পল্লকোবঃ সন্নুদতিষ্ঠৎ প্রশায়মহাণ্বজ্ঞলাদপু। জ্ঞাদেশে তত্ত্বী কর্মাণি জীবাদৃষ্টানি প্রতিবোধয়তীতি তেন

করিয়াছিলেন। অতএব অনল যেমন কার্চ মধ্যে রুদ্ধবীর্য্য হইয়া অবস্থিতি করে,তাহার ভায় বাহুর্ত্তি শুন্ম হইয়া আপনার অধিষ্ঠান রূপ পাতালন্থ জলের মধ্যে বাস করিয়াছিলেন ॥ ১২ ॥

তিনি চতুর্গ সহত্র যাবৎ আপনার জ্ঞানশক্তি সহ শয়ন করিয়া স্বীয় দেহে ঐ সমস্ত লোককে নীলবর্ণ অবলোকন করেন। বে হেতু প্রলমাবসানে পুনর্কার হৃষ্টি করিবেন এই অভিপ্রায়ে যাবদীয় ক্রিয়া সমূহ স্মরণপথে আজ্ঞা হইবার নিমিত আপমার কাল শক্তিকেই নিযুক্ত করিয়াছিলেন ॥ ১৩ ॥

অত এব লোক সৃষ্টি নিমিত যে সৃক্ষা অর্থে তাঁহার দৃষ্টি অভিনিবিতা ছিল, তাহার অন্তর্গত সেই সূক্ষা অর্থ কালাসুসারে রজোগুণ বারা কোভিত হইরা জগৎ প্রস্থার্থ তদীর নাভি দেশ হইতে উচ্ত হইল ॥ ১৪ ॥

কিন্তু তাহা উৎপদ হইবাদাত্র জীবগণের অদৃষ্ট প্রতিবোধক কাল রশতঃ প্রকোষাকারে পরিবাদ

ষরোচিষা তৎসলিলং বিশালং বিদ্যোতয়য়র্ক ইবার্দ্ধবোনিঃ ॥ ১৫, ॥
তল্লোকপদ্মং স উ এব বিষ্ণু: প্রাবীবিশৎ সর্ব্ব গুণাবভাসং।
তন্মিন্ বয়ং বেদময়ো বিধাতা শ্বয়ং ভূবং যং শ্ব বদন্তি সোহভূৎ ॥ ১৬ ॥
তত্তাং সচাজ্যেক্তকর্ণিকায়ামবস্থিতো লোকসপশ্যমানঃ।
পরিক্রমন ব্যোদ্ধি বিবৃত্তনেত্রশচন্দারি লেডেহসু দিশং মুধানি ॥ ১৭ ॥

विधवचामी।

তলোকাত্মকং পদং সর্বান্ গুণান্ দ্বীবডোগান্ দ্বন্ধন্ দ্বতাসয়তি ইতি তথা তং। বহাচ্চাতং সএব বিষ্ণুং উ ইতি সংবাধনে। প্রাবীবিশং প্রকর্বেশ দ্বপ্রশক্তিরেব দ্বর্থামিত্যা বিবেশ। তদ্মন্ বিষ্ণুনাধিষ্টিতে পল্লে বিধাতা ব্রহাইছুং। কথস্কুতঃ স্বয়মেব বেদমরঃ নত্বগ্রনেন প্রাপ্তবেদঃ। কোনো দ্বান্ত পিতৃক্তেন বং স্বয়ন্ত্রং বদন্তি সংপ্রাক্ত কার্মির করায়ে নারান্ত্রন সহ নিজ্বৈকীভূত দাসীং তদ্মিক প্রবৃদ্ধে তত এব পালে করে পদ্ধারেণভিব্যক্তিং প্রাপ্ত ইত্যর্থঃ॥ ১৬ ৪

সচ তন্মিন্ করে চতুন্মু থোভূদিত্যাহ ভক্তামিতি। পরিক্রমন্। তত্তক্ এব গ্রীবাং চালয়ন্। লোকনিরীকণার্থং বিরুদ্ধে বিচলিতে নেত্রে যক্ত ॥ ১৭ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

তলোকেতি। স গর্ডোদকশায্যেব বিফুরপ: সন্॥ ১৬॥ তবৈব পরিক্রমন্ এমন্ বির্জনেতঃ খনন্ যুগপৎ চতুর্দিশোদশনোৎকঠরা চম্বারি মুধানি লেভে॥ ১৭॥

बिविधनां पठकावर्डी।

আত্মা প্রীবিফুর্বোনির্যস্য স অর্ক ইবেতি স্বপ্রভব্যের স ব্যক্সনিতি তৎ প্রকাশনার্থমর্কান্তরাপেকা নাজীতি ভাব: ॥ ১৫ ॥

ততশ্চ তরোকপন্নং লোকাত্মকং বৈরাজমিতার্থ:। উ ইতি সংবাধনে। স এব প্রদানরজে যভোদরমেব বৈরাজঃ পৃদ্ধ রূপেণ প্রাবিশং। প্রদানত্তিত ততঃ পন্মরূপেণবিভূতিঃ বৈরাজঃ স এব গর্জোদাারী বিষ্ণুং প্রাবীবিশং স্বার্থে নিচ অন্তর্গমিছেন প্রবিবেশ পদ্মং কীদৃশং সর্ক্ষেরাং গুণানাং গুণকার্য্যাণাং জীবভোগ্যানাং স্বর্গনরকাদীনাং অবভাসঃ প্রকাশো যত্র তৎ। তন্মিন্ পদ্মে বিধাতা ক্রন্ধা অভূৎ। কোসৌ অদৃইপিতৃকছেন বং স্বরংভূবং বদন্তি সঃ। প্রাক্তান্তর্গালিক নিজয়া একীভূত আসীং। তন্দ্বিন্ প্রবৃদ্ধে তত্তএব পন্মবারেণাভিব্যক্ত ইত্যর্থঃ। অত স্থুলো বৈরাজঃ স্থুলা হিরণ্যগর্ত্তঃ স্ইট্যাদিকর্তা চতুমুধ ইতি ক্রন্ধণএব তৈরূপাং জ্বেয়ং॥ ১৬ ট

পরিক্রমন্ তত্ত্বস্থ এব লোকনিরীক্ষণার্থং গ্রীবাং চালয়ন্ যুপপদেব দিক্ চত্ইবে ব্যোমি নির্জনছাদাকাশমাতে বির্ত্তনেত্র নিক্ষিপ্রটিঃ অসুদিশং চতুদি কু চছারি মুখানি লেভে ॥ ১৭ ॥

প্রাপ্ত হইল, ভগবান বিষ্ণুই ঐ পদ্ম কোষের উৎপত্তির নিদান, তাঁহার ইচ্ছায় তাহা পরিণত হইয়া সূর্য্যের ন্যায় আত্ম জ্যোডিঃ ঘারা প্রলয় কালীন মহার্ণবের জলকে উদ্যোতিত করিল ॥ ১৫॥

ঐ পদাই লোক স্বরূপ এবং জীবভোগ্য সমস্ত গুণ অর্থাৎ গুণকার্য্য জীবের ভোগ যোগ্য স্বরূপ স্বর্গ নরকাদির প্রকাশক, গর্ড্তোদশায়ী বিষ্ণু অবিস্থা শক্তি হইয়া অন্তর্যামি স্বরূপে তাহার মধ্যে প্রবেশ করিলেন। বিষ্ণুর অধিষ্ঠান হইলে ঐ পদা হইতে বেদময় এক্ষা উৎপন্ন হইলেন। জনক দৃষ্ট না হওয়াতে বাঁহাকে পণ্ডিতেরা স্বয়স্তু বলিয়া থাকেন অর্থাৎ করান্তে এক্ষা নারায়ণের সহিত নিদ্যোর একীপ্তৃত হইয়াছিলেন, নারায়ণ প্রবৃদ্ধ হইলে পাদ্মকল্পে এক্ষাও পদা দারা অভিব্যক্ত হইলেন এ নিমিত স্বয়ন্ত্ব বলিয়া কথিত হন ॥ ১৬ ॥

ব্ৰহ্ম আৰিত্বত হইয়া সেই পৰের কর্নিকা মধ্যে অবন্ধিতি করত তথার কাহাকেও দেখিতে না পাওয়াতে লোক নিরীক্ষণার্থ চকুঃ স্থালন পূর্বক চতুর্দিকে এবা চালন করিলেন, তত্ত্বতাই প্রত্যেক দিকে ভাঁহার এক এক মুখ হইল। তাহাতেই পান্মকরে তিনি চতুর্থ হইলেন ॥ ১৭॥ তশাদ্যুগান্ত শসনাবৰ্ণ জলোগি চক্তাৰ সনিবাৰিরকং।
অপাঞ্জিতঃ কঞ্চমু লোকতবং নাল্পনমধা বিদ্যাদিদেশঃ ॥ ১৮॥
ক এষ যোসাবহমজ পৃষ্ঠে এতৎ কুতো বাজ্পনমাদশ ।
অন্তি হুধন্তাদিহ কিঞ্চনতদ্ধিন্তিতং যতে স তাকুভাবাং ॥ ১৯॥
স ইপ্যুধীক্য তদজনাস নাড়ীভিরম্ভ র্জনমাবিষেশ।

श्रीभवतामी ।

তক্ত শ্ৰীনারায়ণোপাসনয়ৈবাৰিভূতি জ্ঞান ক্রিয়াশকে লেকি কর্ত্তং ন স্বত ইতি বক্তৃং প্রথমং তক্ত বিমোহমাহ জন্মাৎ সলিলাৎ বিরুদ্ধ উলাতং ক্রমান্রিতোপি সাকলোন তৎ করং লোকতত্বং চাত্মানঞ্চ সান্দার জ্ঞান্তবান্। উ ইতি বিশ্বয়ে। কণ্ড্রুতাৎ যুগান্ধ শ্রুনঃ প্রবর্ষায়ুঃ তেনাবযুর্ণ তত্ত্ব প্রকম্পিতং যক্ষ্যাৎ সর্বত উর্নিচক্রং মন্ত্রিন্ ॥ ১৮॥

অবিহ্য গুলু বিতৰ্কমাহ যোগাৰহমলপুঠে এৰ কঃ অনন্তদেক মেনৈওদলং কুডো বা জাতং। যলৈওদধিটিতং তেনাধ্যাৎ সতা বর্তমানেন মুনিশ্চিতং ভাবাং। স ইখ্মুৰীকা ইত্যুত্তরেণাষয়ঃ। তথাচ শ্রুডিঃ। সোহপশ্রুৎ পুকরঃ পর্ণে তিঠন্ সোহমন্ত অতি বৈতৎ বলিরিদমধিতিঠতীতি ॥ ১৯ ॥

তক্ত বহিম্বিপ্রবৃত্তা মহতাপি কালেন তদপ্রাপ্তিমাহ স ইতি ছাত্যাং । তত্তাজ্ঞ বন্নালং তস্য নাড়ীভিরম্ভ স্থিটোঃ।

क्रममसर्छः।

স্বিলাদ্বির্দ্মিতি শ্রীনারায়ণশয়নাবকাশন্যোপর্যাপ জ্বাত্তভাও ॥ ১৮॥ ক এব ইতি যুগ্মকং॥ ১৯॥ ২০॥

खीविश्रनाथठकवर्छी।

অবিহ্বস্তর তর্কমাই যোসাবহ্মজপুঠে এব কঃ কৃতঃ কন্মাধা উথিতমেজদক্তং অনন্যদেকমের বিশ্ব হি নিশ্চিতং ইই অধস্তাং কিঞান বস্তু অতি যাত্র এতং পদামধিষ্ঠিতং অতএব সতা স্থাব্দী ময়া অন্তাব্যং তদ্ম তবিত্মইঃ সন্ স্থাীঃ কোবিদো বৃধ ইতামরঃ ॥১৯ স ইথম্বীক্ষেত্যভ্তরেণাবয়ঃ। তথাচ প্রতিঃ। সোহপশ্রং পুকরপর্ণে তিঠন সোহমনাত। অভিটেডক্সনিরিদমধিতিঠতীতি ভগবকিছাং বিনা সাভিমানপুক্ষপ্রযন্ধে বৈষল্যায়ৈর স্যাদিতি প্রদর্শয়ন্ন স ইতি নালীভিনা জীছিলৈঃ তস্য ধরনাল্য পদ্মস্য যন্ত্রালং
তস্য নাভিমধিঠানং প্রীনারায়ণনাভিপদ্মং অর্কাগ্গতোপি ততোপি ত্রিকটগতোহপি ন অধিকান ব প্রাপ তক্যা বিনা তৎ-

ব্রনা যে পদ্ম আত্রয় করিয়াছিলেন তাহাতে অধ্যাসীন হইয়া সম্যক্ রূপে সেই পদ্ম এবং লোক তত্ত্ব ও আপনাকে সাক্ষাৎ জানিতে পারিলেন না অপর তৎকালে ঐ পদ্মের উৎপত্তি স্থল জল রাশি, শ্রেলয় কালের প্রবল বায়ু বারা কম্পিত হওয়াতে ভয়ন্ধর তর্ম হইতেছিল, তদ্দর্শনে ব্রহ্মার পূর্ব কল্প গত সৃষ্টি বিষয়া স্থৃতি অন্তর্হিত হইল ॥ ১৮॥

তিনি অজ্ঞান বশতঃ এই রূপ বিতর্ক করিতে লাগিলেন যে আমি পদাপ্ঠে উপবিষ্ট রহিয়াছি, আমি কে ! আর জলের উপরিম্থিত এই যে পদা ইহা দিতীয় শৃষ্ঠ, ইহাই বা কোথা হইতে জ্মিল, বোধ হয় ইহার অংধাভাগে অবশ্য কিছু আছে, আর যাহাতে এই পদা অধিতিত তাই অবশ্য নিম্নে বর্তমান থাকিবে॥ ১৯॥

ত্রকা এই রূপ বিতর্ক করিয়া সেই পদোর নালের অভ্যন্তরত ছিত্ত দারা জলমধ্যে প্রদেশ করি-লেন। কিন্ত ভিতরে প্রবিট হইয়াও এবং অধ্যেষণ করিয়াও পদানালের আধার অধাৎ নারার্ত্তর নার্বাগ্ গত স্তথেরনালনাল নাজিঃ বিচিত্বভালির ক্রিনেরির ক্রিনের ক্রি

<u>ज</u>ीशवचारी

তক্ত পরনালক পল্লভ বরালং তগ্য নাভিম্বিটানং বিচরর র্মাগ্রতোপি ভত্তদা নাবিন্দত ॥ ২০ ॥

আত্মসূর্যং অকারণং। ত্রিনেনিঃ কাল: অজস্য বিকো•ছে তিঃ স্থদর্শন রূপং শক্তং দেহভাজাং নরাণাং ভয়মূৎণাদয়রিতি সংবংসরশত্মভিক্রান্ত্রমিত্যুক্তং ভবতি ॥ ২১ ॥

অন্তর্ম প্রত্যা ভগৰত্তং দৃষ্টবানিত্যাৰ ৰাজ্যাং । ততেতি ধ্রেষণালিবৃত্তঃ ন ঐতিস্কঃ কামো মনোরণো বেন সিধিকাং পদ্মং কিতেন খাসেন নিবৃত্তং সংঘতং চিত্তং ৰস্য। অভএবারত আপ্রিতঃ সমাধি বোগো যেন তথা ভূতঃ সন্ ভ্রবীদৎ উপবিবেশ ॥ ২২ ॥ প্রবায়্যা সংঘৎসর শতেন কালেন অভিপ্রবৃত্তঃ স্থসম্পরো যো যোগ তেন বিরুত্ত উৎপলো বোধো যস্য। যং প্রেং বিচি-

क्रममर्खः ।

আর্চসমাধিযোগ ইতি যৎ কিমপি স্র্কারণং বস্ত ভাত্মন্যাবির্ত্বতিত্যাশাপুর্বিক। সামান্ত্রকারেণৈর তদনভার্ত্তিতা সমাধিযোগোহত ভেয়া বিশেষাকারাজ্ঞানাং ॥ ২১ ॥

পুক্ষাযুধা বর্ষণতেনেতি প্রীনৈতেয়ো বর্তমানকলিযুগাপেক্ষা প্রাহেতি জেবং। বস্ততত তর্তরগ্রহে ভূরত্বং তপ আতিটেত্যাদি প্রীভগবহাক্যানস্তরং দশমাধ্যায়ে বিরিক্ষোহিপি তথা চক্রে দিবাং বর্ষশতং তপ ইত্যুক্ত্যা এতদেব জেবং। যকু ছিতীমে দিবাং দহস্রাক্ষিত্যাত্যকং তং ব্যাক্ষ্যকরণতং জেবং ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৫ ॥ ২৫ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

शिविचनाथ ठकवडी ।

প্রাপ্তের্ঘটদাতি ভাব: ॥২০॥

আত্মবর্গং অকারণং ত্রিনেমিঃ কালঃ। যঃ কালঃ দেহভাজাং নরাণাং ভয়ং মৃত্যুসদ্ধিধিং ঈর্যন্ কথয়ন্ আয়ুঃ পরিক্রিণোভীতি স্বংসরশতাত্মক ইত্যর্থঃ। অজস্য বিষ্ণোহে তিঃ স্থাদন শক্তাংশস্বরূপঃ ॥ ২১ ॥

ত্যক্তখাভিমানত ত্যা তদিছেরা তদ্ধানেন তৎপ্রাপ্তিমাহ ততঃ মবেবণাৎ। ক্ষিক্যং পদ্ধং নিবৃত্ত চিত্তঃ সংযতমনাঃ। ন্যসী-দৎ উপবিবেশ। সমাধির্ভগবদ্ধানোখং চিত্তিকাগ্রাং ॥ ২২ ॥

পুরুষামূষা সংবৎসরশতাত্মককালেনেতি মৈত্রেয়ো বর্ত্তমান কলিমুগাপেক্ষরা প্রাছেতি জ্লেরং। অভিপ্রস্তুষোপেন পাক্ষণা

নাভিন্থান প্রাপ্ত হইলেন না॥ ২০॥

হে বিছর! আপনার কারণ অবেষণ করিতে করিতে ত্রেলার সেই কাল উপন্থিত হইল, যাহা বিষ্ণুর স্থাপনি চক্র স্বরূপে দেহধারি মানবদিগের ভয় উৎপাদন করিয়া জীবিত কাল সংক্ষয় করে অর্থাৎ ত্রেলার ঐ রূপ অবেষণ করিতে করিতে শত সংবৎসর প্রমায়ঃ অতিক্রান্ত হইল, তথাপি বহিম্থ প্রস্তি হৈছু অবেষণীয় বস্তু প্রথি হইলেন মা॥ ২১॥

ভাষনপ্তর প্রেখণ হইতে নির্ত হইয়া মনোরথ প্রাপ্ত না হওয়াতে পুনরায় আপনার অধিষ্ঠান প্রে প্রভাগিত ইইটোন, পরে সাভিনান-পরিভাগে পূর্বক অন্তর্পর্তি ছারা নিখাস কয় করত সংযত চিত হইয়া সমাধি অবাহ ভাগবছান অবস্থান পূর্বক ছির হইয়া বিদিনেন ॥ ২২ ॥

े शुक्रद्रमञ्जू आहुः भतिमिछ कार्ने असिर भड़े गरेबर गत्र अ**छी**छ हरेल छारात्र स्थान स्मान्त्रम धवर

ষয়ং তদন্তর্দ্রেছ্বভাতমপশ্যতাশশ্যত যাম পূর্বং ॥ ২৩ ॥
মূণালগৌরায়তশেষভোগপর্য্যক একং পূরুষং শার্দানং।
ফণাতপত্রাযুত মূর্দ্ধরত্ব ছ্যভির্তথবান্তযুগান্তভোয়ে ॥ ২৪ ॥
প্রেক্ষাং ক্ষিপন্তং হরিতোপলান্তেঃ সন্ধ্যাব্ত্র নীবেক্লক ক্লন্তমূর্ণ্ধঃ।

क्षेत्रवामी।

বন্ধপি নাপশ্যৎ তৎ স্বয়মেবাস্তর্জ দিয়ে হবভাতমপশ্যং ॥ ২৩ ॥

যদপশ্যত্ত্বর্ণয়তি স্ণালেতি নবভিঃ। নবস্বপাপশ্যদিতালৈ বাহুবঁদঃ। স্ণালবদেশীরশাসাবায়তক বাং শেষঃ তস্য ভোগো দেহঃ স এব পর্যাহত্তব্দিন্। কুত্র স্থিতে পর্যাহে ফণাতপত্রৈরায়তা সর্কতো যুক্তা যে মৃদ্ধানত্তেষাং রত্বানি কিরীট স্থানানি তেবাং হাতিঃ প্রভাভিঃ হতধ্বাত্তে যুগাস্ততোয়ে ॥ ২৪ ॥

কণস্কুতং পুরুষং হরিভোগলান্তেম রকত শিলামর পর্বতন্ত প্রেক্ষাং শোভাং ক্লিপন্তং স্থলাবণ্যাভিশরেন তিরক্ক্সিং। সদ্ধাব্তং নীবি পরিধানং যক্ত তক্ত শোভাং পীতাম্বরেণ ক্লিপ্তং। উরু রুক্মম্দ্রঃ অনেক স্থবর্ণশিথরস্য তস্য স্ব কিরীটেঃ রত্নানিচ উদ্ধারাশ্চ ওবধর্ষ সোমনস্যানিচ পুষ্পসমূহাঃ স্থমনস এব বা তেবাং বনত্রকো বনসালা যস্য বেণব এব ভূজাঃ যস্য অজ্পিন এবাজ্পুরো বস্য সচাসৌ সচ তস্য। স্বয়র্থঃ যদি তন্মিন্ মালা ইব ছিতা রত্নাদ্যো ভবস্তি। বেণবশ্চ ভূজাঃ ইব। বুক্সাশ্চ পাদা ইব। ভহি

এবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী

প্রাপ্তভগবদ্যানেন। ধ্যানৈ ম নো দর্শিতং ত উপাসকানামিত্যুপরিষ্টাছকেঃ। যৎস্বাম্পদক্ষলাধিষ্ঠানং পূর্বং বিচিত্মপি নাপ-শ্রুৎ। তৎস্বর্মেবাস্তর্ফ দ্যেহ্বভাত্মপশ্রুৎ॥ ২৩॥

তদেব বন্ধ বৰ্ণয়তি নৰভি:। কণা এব আতপ্তাইতানি তেবু মূৰ্ধ্যম্থানাং শিবস্থমণীনাং হাভি: কাস্থিভিছ্ তথ্বাস্থে প্ৰলয় জলে॥২৪॥

হরিভোগলান্তেম রকতশিলামর পর্বভদ্য প্রেকাম্থপ্রেকাং কিপক্তং কিমরং মরক্তমণিময়: পর্বত ইতি বা উৎপ্রেকা তামপি অলাবণ্যাতিশরেল তিরক্কিক্তং নিরুপমমিত্যর্থ:। কথজুতস্য সন্ধান্তাণি নীবীব নিত্রে যস্য তস্যাৎ প্রেকাং সীয় পিতাবরেণ কিপক্তমিত্যর্থ:। উক্ল ক্রাণি কিরীটানীব মৃদ্ধন্ত শিখরের যস্য তল্যেতি স্বীয়কিরীটো: রদ্ধানাং উদধারাণাং ওষধীনাং সৌমনভ্যানাং পূলাসম্হানাং বনপ্রকো বনমালা বন্যেতি স্বীয়রত্বমালা মৃক্তামালা তুলসীমালা পূলামালাভি: বনপ্রক্ শব্দেন মালামা বোক্তে:। বৰা রদ্ধাদিভির্বনপ্রগ্রেত্তিক বনমালা ব্যাথোৱা। পত্র পূলাম্বীমালা বনমালা পদাবধীতি বনমালাক্ষণে

জ্ঞান উৎপন্ন হইল, তাহাতে পূর্বে অন্বেষণ করিয়াও যাঁহাকে দেখিতে পান নাই তাঁহাকে হৃদয় মধ্যে স্বয়ং প্রকাশ মান দেখিতে পাইলেন॥ ২০॥

অর্থাৎ তাঁহার দৃষ্টিগোচর হইল, সলিলে মূণালের ন্যায় গৌরবর্ণ অথচ বিস্তীর্ণ শেষ নাগের শরীর রূপ শয্যায় একটা পুরুষ শয়ন করিয়া রহিয়াছেন এবং ঐ শেষ নাগের ফণারূপ আতপত্তে সর্বতোভাবে যুক্ত যে মন্তক সমূহ উত্তম্ব রক্ষ নিচয়ের প্রভা দারা ঐ জলরাশি হ্তান্ধকার হইয়া রহিয়াছে ॥২৪

প্রক্ষ আপনার লাবণ্যাতিশয় ছারা মরকত শীলাময় পর্বছের শোভা তিরক্ষত করিতেছিলেন।
মরকত পর্বতে সন্ধ্যাকালীন মেঘ পরিধান বসন রূপে শোভা বিস্তার করে দত্য, কিন্তু তাঁহার পীত্রসনের শোভা ঐ পর্বতের সন্ধ্যাব্ত্র শোভাকে অধংকত করিয়াছিল। আর ঐ পর্বত্যস্তকে প্রচুর
স্বর্ণ থাকাতে তত্তারা যে শোভা হইত তাঁহার কিরীটেম্ব রুদ্ধে তদপেক্ষা অধিক শোভা বিস্তীন হইতেছিল। আগর ঐ পর্বছের রুদ্ধ,
জলধারা, ওরধি এবং পুলা সমূহ ও সকল বন্মালারূপে বিরাজমান হওয়াতে এবং বেণু সকল বাছ

রম্মোদধারোবধি সোমনত বনআকো নেপুসুকাং জিপীকো । ২৫ । আয়ামতো বিস্তরতঃ অমানদেহেন লোকজনসংগ্রহেণ । বিচিত্রদিব্যাভরণাংশুকানাং কডিজিয়াপাঞ্জিত বেশদেহং॥ ২৬॥ পুংসাং অকামায় বিবিক্তমার্সৈরভার্কভাং কামছ্যাংজিপকাং।

अध्वयामी ।

তসা শোভাং খীররত্ন মুক্তা তুলসী পুশাদাদভিঃ ভূবৈর বিভূতিক বিশস্তবিভি ॥ ২৫ ॥

কিঞ্চ আয়ামতো দৈর্ঘোণ বিত্তরতক। স্থমান দেহেন মীয়তে ২নেনেতি মানং উপমানং শোভন শ্চাসাথমানো নিরূপমশ্চ বো দেহ তেন বলা স্থাই কুমানঃ অপরিচ্ছিল তেন বলা তাড়াং সামুদ্ধপ প্রমাণেন অতএব লোকজনং সংগৃহতে বন্ধিন। তথা বিচিত্রাণি নানা বিধানি দিব্যান্যপূর্বাণিচ আডরগানি অংওঁকানিচ তেখাং কৃতা জীঃ শোড়া যেন তেন দেহেন বিশিষ্টং এবং স্থাত এবাভিরম্যথেণি অপাপ্রিত বেশং স্থীয়তালয়ারো দেহে। বন্য তমপশ্রথ। বলা কেন প্রেকাং কিপজং ইত্যপেকারাং এবস্থ্তন দেহেনেতি সম্বন্ধঃ ॥ ২৬ ॥

স্বাভিদ্যিত ফ্লার বিবিক্তৈ মাটর্গ: তকৈঃ বেলোকৈঃ মাটর্গ: অভ্যর্কতাং প্ংসাং কামছ্বং অভিনুপন্নং প্রদর্শরন্তা । কিঞ্ছিল-মধ্য সমর্পরন্তা । নধা এবেন্দর তেখাং মর্থা রকার তৈর্ভিলাং সংভিলা অঞ্নর এব চারণি প্রাণি বস্য তৎ ॥ ২৭ ॥

बिवियमा बठक वर्डी।

রত্মুক্তাদেরপুাপলকণং জেরং উপরিস্থা বেণবো ভূজাইব অধ্যা অংকিনুপা অংজর ইব যস্য তত্তেতি স্বীয়ভূজপালৈ: ॥ ২৫ ॥

কিঞ্চ আশ্বামতো বৈর্ঘ্যেণ বিশুরতো বিশ্বারেণচ স্বমানঃ স্বান্ধ্যরপপ্রমাণো যো দেহত্তেন বিশিষ্টং প্লেষেণ স্থাকু আমানোহপরিছিল্লভেন অপরিছেদমের স্পষ্ট্যতি লোকত্রগনংগ্রহণ তৈলোক্যব্যাশিনা বিচিত্রাণি দিব্যান্যনোকিকানি আতরণান্যংশুকানিচ তেষামণি ক্বতা প্রীঃ শোভা যেন তেন। তথা অপাপ্রিত্বেশদা স্বহা ইছো যন্য তং। যদৈব বং বং বেশমিছতি তদৈব সভাসংকলম্বাতং প্রাপ্রোতীত্যর্থঃ ॥ ২৬ ॥

স্থকামায় স্বাভিলবিত ফলার। যথা। সো ভগবানের কামন্তব্যৈ ভগবন্তমের প্রাপ্ত্রমিতার্থঃ। স্থনা ভগবতঃ কামার সেবাভির্জগবন্তং স্থারিত্মিতি বা। বিবিকৈক্সনিক্সাদ্যামিশ্রমেন ভক্তমানির্ধি বিধরাগাদিভিদ্যাস্থ্যাদি ভাবমার্কৈর্বি কামছ্বং সেবোপবোগিমনোরও প্রকমন্তির প্রভাবে সহম্রশাদপদ্যানাং মধ্য এব একং কিঞ্চিত্রময় প্রদর্শয়স্থং তত্র পাদপদ্যমিত্যুন্তর স্নোকে মুবেনেভ্যেক্বচনলিক্ষেন ভলাবৈর প্রভাবে প্রদামিত্যাদিলোক্তব্যা শ্রীক্ষাবতারদর্শনমের ক্রমণে দর্শিতং তত্ত্বোবাচ ক্রান্ধণোহ্যাব্যবর্তং মে ধ্যাতঃ স্বতঃ পরান্ধান্তে সোহ্র্থাত গোপবেশো মে প্রভাব আবির্ভ্বেন্তি গোপালভাগনী শ্রুতে ক্রিসংহিতা কথা দৃষ্টেন্টেতি। তুলার ম্দনগোপাল্যরূপণ্য ত্রিভল্ম্ব্রে ব্যত্যক্রপাদস্য দক্ষিণ্চরণ প্রোল্যমন্ত্রির্ভি কেচিলাতঃ।

রূপে ও বৃক্ষসকল চরণ রূপে করিত হওরাতে যে শোভা হয়, সে শোভাও ঐ বিরাট মূর্তি ভগবানের বৃদ্ধ, তুলসী ও পূজা মালা এবং ভুক ও চরণের শোভায় অধংকত ইইতেছিল ॥ ২৫ ॥

তাঁহার দেহ দৈর্ঘেও বিস্তারে অপরিচিছন, স্বর্গ, মত্যা, পাতাল এই ত্রিস্থান মধ্যে সংগৃহীত ছিল, যদিও ভাহা স্বয়ং নানাবিধ অপূর্বে স্বৰ্গ ও বসনের শোভা বিস্তার করিয়া অভিশয় রমণীয় হইতেছিল, তথাচ বছরিধ অল্ডারে অল্ডার ছিল । ২৬ ॥

পার ছিনি বে শক্ত শ্রুত স্বাভিত্তিত প্রাতি কামনার বিশুদ্ধ বেলেক মার্গ বারা প্রজনা করেন ভারানিলের প্রজি কুলা করিয়া তাঁক্তিগকে আপনার কামস্থ অর্থাৎ সেবনোপযোগি ননোরও প্রক চন্তুপ্ত প্রদৰ্শক ক্যাইতেছিবেন, সর্ধাৎ কিন্তিৎ উত্তোলন করিয়া দেখাইতেছিলেন। ভাঁহার সেই প্রদর্শন্তং কুপরা নথেন্দ্রযুখভিরাক বিচাক্রপরেং । ২৭ ।

মুখেন লোকার্তি হরন্মিতেন পরিক্ষুর্থ কুণ্ডলমন্তিতেন ।

শোণায়িতেনাধরবিশ্বভাসা প্রত্যুহ রন্তং ক্রন্সেন ক্রম্বা । ২৮ ॥

কদম্ব কিঞ্জক্ষ পিশঙ্গ বাসসা স্বলম্বতং মেখলরা নিতম্বে ।

হারেণ চানস্ত ধনেন বৎস প্রাবংস বক্ষান্তনরভেন ॥ ২৯ ॥
পরার্ক্যকের্র্মণিপ্রবেক পর্যান্তদোদ ও সহস্রশাধং ।

क्षित्रवामी।

লোকার্ডিহরং দ্বিতং বদ্মিন্ তেন। পরিক্ষুরভ্যাং কুওবাত্যাং মতিতেন অধ্যবিষদীপ্তা লোগবদাচরিতেন। শোভন নাস। যুক্তেন শোভনরা ক্রবাচ প্রত্যহ রস্তং পূজ্ঞান্ প্রতি পূজ্যকং সন্মানস্তঃ ॥ ২৮ ॥

ক্ষম্ব কিঞ্কৰণ পিশকং বৰাস জেন মেধলরাচ নিভবে স্বলম্বতং। হে বৎস প্রীবৎস মুক্তং যহক্ষঃ স্থলং তস্য বরভেন। বক্ষস্য-নর্ব্যেশ ছারেশ স্বলম্বতমিতার্থঃ ৪ ২৯ ৪

মহা চন্দ্ৰন বৃক্ষরণেণ নিরপরিছং তং বিশিন্টি। পরার্দ্ধানি শ্রেষ্ঠানি কের্রাণি অলমানি মণিপ্রবেকাশ্চ মণ্যুত্তমা তৈঃ পর্যান্তা ব্যান্তা দোর্দ্ধতা এব সহলং অনন্তা শাধা বস্য। চন্দ্ৰনবুক্ষোপি কের্রাদি ভূল্যৈঃ ফলপুন্দাদিভি ব্যান্তশাধো ভবতি। অব্যক্তং প্রধানং মূলং অধো ভাগো বস্য। বহা অব্যক্তং ক্রম মূলং বস্য ক্রমাভিব্যক্তি রপহাৎ। বৃক্ষস্যাপি মূলং নব্যক্তং ভূবনাত্মক

क्रममण्डः।

অব্যক্তম্বমিভি ন ব্যক্তাতে শাল্লবিভি ন' কথাতে মূলং বস্য তং সর্কম্বছেন ম্বাভরেরহিতমিত্যর্থ:। অব্যক্তঃ স্বরং ভগবাং-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

নধেন্দ্মর্থৈরের ভিরা: সংভিরা অজুবর এব চারণি পতাণি বস্য তদিতি। পদ্যভাস্য চক্তরশ্বি বিকসিতদাদত্ত্তম্কং ॥ ২৭ ॥ প্রভার্ত্বর্বা প্রকাংন্তান্ প্রতিপূজ্যন্তং ভোগাপবর্গাদেত্তৈউক্তের্বীকারাতেনৈব তংসেবাঞ্ধং পরিশোধরত্তমিব্রত্যর্থ:। আর্ত্তিভ্রেমাত্রং তদ্ধর্শনৌৎকঠ্য পীড়া বা ক্তব্য শোভনরা ক্রবা একরা রামবৈব রহস্যভাবপ্রকাশিকরেতি প্রত্যহশীরা অপি ভক্তবিশেষা এব ক্টিতাঃ ॥ ২৮ ॥

वरत दर विष्त्र । धीवरत्रमुख्यः वक्षःच्नाः एक वहार्कन सारत्र ॥ २०॥

স্বয়শ: সৌরভস্বাসিত সর্ক বিশ্বস্থাৎ মহাচন্দন বৃক্ষপকেণ নিরূপয়িত্ৎ তং বিশিন্টি। পর্যান্তা বিশ্বয়াপিনো দোর্দ তাএব সহজ্ঞমনস্তাঃ শাথা যস্য তং। অব্যক্তং ব্যঞ্জনয়াপি কৈরপি নোক্তং মূলমনানিস্থাৎ যস্য তং! যস্তুকং স আত্মা স্থাপ্রয়াশ্র ইতি। বৃক্ষপক্ষে স্পৃষ্টং। ভ্রনানি চতুর্দশ অভিযুগা একেনৈব পাতি রক্ষতি সচাসাবিক্ত ঐশ্বয়াশ্বংশতেত্যক পাদ বিভ্তিপতি-

চরণ পল্মের নখরূপ ইন্দু কিরণে মনোহর অঙ্গুলি রূপ পত্র সন্মিলিত হওরাতে তাহারও চমৎকার শোভা হইয়াছিল ॥ ২৭ ॥

অপর তিনি লোকার্ত্তি নাশক হাস্যযুক্ত বদন বারা চরণার্চক ব্যক্তিদিগের সম্মান করিতেছিলেন। আহা ! বদনের কি চমৎকার শোভা, উদ্দীপ্ত কুণ্ডল বয়ে উত্তম রূপে মণ্ডিত হইয়াছিল, আর তাঁহার শোভন নাসিকা ও স্থলর জবয় শোভা বিস্তার করিতেছিল । ২৮॥

বৎস বিছুর! তাঁহার নিতম্বদেশ কদম কুম্নেয়র কেশর তুল্য বসন ও নেধলা মারা স্থানাভিত এবং বক্ষঃ দল প্রীবৎস যুক্ত বক্ষঃমনের বলভ স্বরূপ বহুমূল্য হারে অলক্ষত হইরাছিল ॥ ২৯ ॥

অপর সেই পূর্ক্ত শ্রেষ্ঠ চলন তরুরূপে বিরাজনান হইতেছিলেন, কেন্না সহাযুদ্ধ অক্লানি সুন্ধে এবং উত্তম উত্তম মনিতে পাখা বরূপ তনীয় ভুজনত নহজ ব্যাপ্ত ছিল, সর্থাৎ চলন ইন্সের নাথ সমূহ যজপ কের্রানি ভুলা করা পূলা ভায়া পরিব্যাপ্ত হয়। যে রূপ শোভিত হয়, তাহার ভায় জাহার বাহ

AND THE PERSON NAMED IN

লব্যক্তবৃদ্ধ পুৰনাংজিপেক্সৰীক্ষাক্ত বিশ্ববিদ্ধি বল প্র । ৩০ ।
চরাচরোকো ভগবসহী এ মহীক্রবৃদ্ধ নিনিনোপগৃত্য।
কিরীট সাহত্র হিরণ্য শৃক্ষমাবিদ্ধিবং কৌজভ রত্নগর্ত্ত ॥ ৩১ ॥
নিবীতমালার মধ্রতজ্ঞিয়া অকীর্তিম্যা বন্মাল্যা হরিং।

डीश्रशामी

মন্তির পেলাং বৃক্তপ্রের্ডং অহীল্রস্যানন্তস্য ভোটগং কগৈং দেহাবয়বৈর্কা অধিবীতাং সংষ্ঠিতাং স্টা বদ্শাং করা যস্য। ব্রক্ষাতেং শন্তবৃদ্শোবিরোহ ইভি শ্রুতেং সোপি সর্গৈবেষ্টিতো ভবতি, ॥ ৩০ ॥

প্রেক্ষাং কিপ্তমিত্যতৈব পর্বত রপকেণ নিরূপিতমপি বিশেবণাস্তরৈঃ পুননি রপরতি ভগবানের মহীএতং। চরাচরাণামোকঃ স্থানং লোপি তথা অহীক্রসা বন্ধুং নোপাহীক্রত বন্ধুঃ। দলিলেন উপগৃচ্মাবৃতং পর্বতোপি মৈনাকালি তথা কিরীট সাহল মেব হিরণা শৃলাণি বস্য। সোপি মের্বাদি বথা পর্বতিস্যাগত্তে কচিত্রস্থমাবির্তবতি তথা আবির্তবং স্পষ্টং দৃশ্যমানং কৌত্বতরত্বং গর্ত্তে মৃর্বি মধ্যে যস্য তং ॥ ৩১ ॥

কিঞ্বন্মালরা নিবীতং কঠলবিন্যা ব্যাপ্তং। আয়ারা বেদা এব মধুত্রতাঃ তৈঃ 🕮 র্যস্যা তয়া। হরিমিতি পর্বতাদি রূপং

ক্রমসন্ধর্ত:।

ন্তমূলকমিতি বা ভুবনরপাণামজিদুপাণামিত্রং ঈশ্বরং ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥

विषनाथठकवडी ।

মিতার্থ:। পক্ষে ভ্রনের মধ্যে যে অভিনুপা তেবামিক্রং **অহীক্রন্তানভত ভো**গৈঃ ফণৈঃ দেহাবর্গবর্কা অদিবীতাঃ স্পৃষ্টা বল্শাঃ স্বন্ধায়ত তংশতবল্শা বিরোহ ইতি শ্রুতঃ। পক্ষে ব**হু সপ্রেটিত স্বন্ধা**ধাদিকং ॥ ৩০ ॥

চন্দনবৃক্ষরপকেণ নিরূপ্য খাস্য আশ্রেষাপি খনেবেভি দর্শবিভূং চন্দন পর্বভরপকেণাপি নিরূপরতি। ভগবানের মহীরো মলরপিরিস্তং চরাচরাণাং ওক আম্পদং অহীলোহনস্ভোহনীলাঃ স্পাধিপাশ্চ। স্লিলেন গর্ডোদেন ক্ষীরোদেনচ আলির্নিডং কিরীট সাহল্রমের হিরণ্যবর্ণানি শৃকানি বস্য তং মলয়স্য খর্ণবর্ণশৃক্ষাৎ কৌন্তভরত্বং গর্ডে মূর্জি মধ্যে যস্য তং মলয়স্য পর্বভিত্বন রত্বধনিম্ভাৎ ॥ ৩১ ॥

নিৰীতং যুক্তং হরিমিতি পর্মতাদিরূপং পশান্ হরিরসাবিতি জ্ঞাতবানিতার্থ:। তথ্যাদিভিরগমং অবাাপারে রাক্লয়িতুমশক্য-

সহস্র রমণীয় অঙ্গদাদি আভরণে এবং বিবিধ মণিতে ভূষিত হওয়াতে তাঁহার মনোহর শোভা হইয়াছিল আর চন্দন তরুর মূল যেমন অব্যক্ত, সহসা, জ্ঞাত হওয়া যায় না তাহার স্থায় তাঁহারও মূল অর্থাৎ অধোভাগে অব্যক্ত (প্রকৃতি) ছিল। অপর চন্দন ব্রক্ষের ক্ষম যে রূপ সর্পে বৈষ্ঠিত হইয়া থাকে, তাঁহারও ক্ষম দেশ সেই রূপ অহীস্ত অনস্তের ফণায় বেষ্ঠিত হইয়াছিল। ৩০॥

অথবা সেই পুরুষ মহা পর্বতরূপে বিরাজমান হইতেছিলেন। পর্বত যেমন চরাচরের নিবাস হল হয়, তাঁহার নিজ নেহেও সেইরপ সমস্ত চরাচর জগৎ বাস করিতেছিল, আর পর্বতে সর্প সকল বাস করিতে পাওয়াতে তাহাকে যেমন অহিবন্ধ বলা যায়, ভগবান্ও তক্রপ অহীক্র অনস্তের বন্ধ ছিলেন। অপর মৈনাকাদি কোন কোন প্রধান গিরি সাগর সলিলে নিময় হইয়া আছে, তিনিও প্রলয় কালে জলবি জলে আর্ভ হইয়াছিলেন, প্রধান প্রধান পর্বতের শৃঙ্গাদি স্বর্ণবর্ণ হয়, তাঁহার কিরীট সহজ্ঞই হিরণা শৃজ্পরশৈ শোভিত ছিল। অপর কোন কোন পর্বতের স্থান বিশেষে কথন প্রধান ক্রিম রন্ধানি প্রস্তাল পায়, তাঁহারও মৃত্রিরণা কোন্ত মনি ক্রিমত দৃশুমান হইতেছিল ॥ ৩১ ॥

विका और सार्थ के शुक्रवादक श्रीसंखानि कृता अवरताकन कतिया चित्र कतिरतन, हैनिहै छशवान् कृति जिल्हा सहित के रत्तर की सिंगती वसवाना जीवाता हिन, रक्तक्रथ सथ्यक गर्कन के मरनाहत्र वन সূর্য্যেন্দ্ বাযুগ্যগনং ত্রিধানভিঃ পুরিক্রনং প্রাথনিকৈছু রাস্ত্রং ॥ ৩২ ॥
তহে ব তলাভিদরঃ সরোজগান্ধানমন্তঃ শ্বনং বির্দ্ধে । এই নির্দ্ধি । ৩৩ ॥
দদর্শ দেবো জগতো বিধাতা নাতঃ পরং লোকবিদর্গ দৃষ্টিঃ ॥ ৩৩ ॥
সকর্ম বীজং রজদোপরক্তঃ প্রজাঃ নিহক্ষদিনদেব দৃষ্ট্য ।
অক্টোছিস্পাভিযুপস্তমীড্যমব্যক্ত বর্জান্যভিবেশিতাক্যা ॥ ৩৪ ॥

औधत्यामी।

পশুন্। হরিরসাবিতি জ্ঞাতবানিতার্থ:। পূর্ব্যাদিভিরগমং অগম্যং ব বাপারৈরাকলমিতুমশকামিতার্থ:। কিঞ্চ ত্রিছপি লোকের ধাম ক্রি বেষাং তৈরক্ষণার্থং পরিক্রাক্তিঃ পরিতো ধাবতিঃ প্রাধনিকৈঃ প্রধনং সংগ্রাম তৎ প্রয়োজনৈঃ স্থদর্শনাদিতিহেতৃভূতৈত্র রাসদং ক্রপ্রাপং ॥ ৩২ ॥

যদৈব হরিমপশ্যৎ তহোঁ ব তদৈব লোকবিদর্গ দৃষ্টিঃ সন্ উদ্যা নাভিদর্গি সরোজং খদনং প্রদর্গরায়ং বিরং আকাশঞ্চ দদর্শ । ৩০ কর্মবীজং লোকস্টেঃ কারণং। উপরক্তঃ রজোগুণ যুক্তঃ। অতঃ প্রজাঃ আই মিছেন্। ইরদেব নাভিদরোজাদি পঞ্চনম্ব বিদর্গেহিপি অভিমুখো দত্তিতঃ। অব্যক্ত বয় নি ভগবতি নিবেশিত চিতঃ ॥ ৩৪ ॥

क्रममंडः।

তহী তি। অভ:পরং স্ট্রাপকরণং॥ ৩৩॥

স ইতি। রজসা বৃক্তঃ সন্ প্রকাঃ প্রষ্ট্রিছন্ ইরৎ নাভিসরোজাদিগঞ্কমেব স্ষ্টিবীজং দৃষ্ট্র বিসর্গে দক্তিত্তাংশি অব্যক্তবন্ধ নি ভবতি নিবেশিত্তিতঃ সরক্ষেদিত্যর্থ: ॥ ৩৪ ॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

মিত্যর্থ:। ত্রিধামতি: সচিদানক্ষত্তর রক্ষণার্থং পরিক্রাম্যতি: পরিতো ধাবতি: প্রাধনিকৈ: প্রধনং সংখ্রাম তেন দীব্যতি: ত্রদর্শনাদিভির্করবিক্রয়াদি পার্বদৈর্বা হেতৃভূতৈত্র্বাসদ মইন্যর্ন্ত প্রাপং ॥ ৩২ ॥

তত্বে তরাতিসরসি সরোজ্ঞ সরোজেচাত্মানং আত্মনশুত্র দিকু অন্তঃ খসনং বিরচ্চেতি ভূভত্রিকং দ্দর্শ । নাতঃ পরং পৃথি-ব্যাদি। লোকানাং বিবিধে সর্গে দৃষ্টিশিকীর্ঘা যস্য সঃ ॥ ৩০ ॥

কর্মবীজং লোক স্টটেঃ কারণং। ইরদেব সরোজাদিপঞ্চকমেব বিস্পাতিমুধঃ বিস্গং কথমহং কুম্মিতি ভাবদন্ প্রভূ মেবাহং শরণং যামীতি বিস্গাডিনিবেশং পরিভাজা অব্যক্তবর্ম নি শ্রীভগবতি অভিনিবেশিত আত্মা মনো যুদ্ধী সং ॥ ৩৪ ॥

মালায় অমুত্রত ইওয়াতে তাহার অতি মনোভাবন শোভা হইয়াছিল। এ নিমিত সূর্য্য, চন্দ্র, বায়ু, আমি ইহারা স্ব স্ব ব্যাপার ধারাও তাঁহাকে অবলোকন করিয়া নিশ্চয় করিতে পারেন নাই, সংগ্রাম প্রয়োজন যে সমস্ত স্থদর্শনাদি শস্ত্র, যাহার প্রভা ত্রিলোকেতে ব্যাপ্ত, যাহারা রক্ষণার্থ চতুর্দিকে ধাবমান, সে সকলের ধারাও তিনি চুম্পাপ্য॥ ৩২॥

জগৰিধাতা ত্রন্ধা যে সময়ে ভগবান্কে ঐ রূপ দর্শন করিলেন সেই সময়ই লোক স্ক্রনার্থ দৃষ্টি নিক্ষেপ করাতে তাঁহার নাভিসরোবরে পদ্ম এবং আ্যা অর্থাৎ আপনি ত্রন্ধা আর জল্ তথা প্রলয়কা-লীন বায়ু ও আকাশ ইত্যাদি তাঁহার দৃষ্টিগোচর হইল ॥ ৩৩ ॥

ত্রন্ধা রজেনগুণ যুক্ত হওয়াতে প্রস্না হারির কারণ স্বরূপ পুর্বোক্ত নাভিপ্রাদি পঞ্চ অবলোকন করিয়া ভগবানে এবং সৃষ্টি বিষয়ে চিত্ত অভিনিবেশ পূর্বক পরম স্তৃত্য পরমেশ্রের স্তব করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ৩৪॥

প্ৰীব্ৰক্ষোবাচ ৷

জ্ঞাতোহসি মেণ্য হুচিরারমু কেইছালাং ন জারতে ভগকতো গতিরিত্যবদ্যং।

्थितत्रचामी ।

। + া ইভি-তৃতীরে ছাইবঃ । • ।

नवर्षे छशता कृष्टेर वृद्धे। नातावरः पयः । व्यत्योत्कर्माद्द तीवन् लाकतर्य किकीर्वता ॥ • ॥

الروائد وربعي السرائي في حريا وران الم

ভগবল্জানেনাখন: কৃতার্থতামাবিছুর্মন্ অক্তাংশ্চ শোচরার আতোরীতি। স্থাচিরার্ছকালোগাসনেন অন্য মে মরা আতোসি। নমু অহা দেহভালামেতদবদ্যং দোবং। কিং তৎ ব্রুমবৃত্তব পতি তত্বং ন লায়ত ইতি। বতব্যের আতুং বোগাঃ সতাবাৎ নান্যৎ অসতাথাদিতাহে বৎ ঘণ্ডোহনারাতি বলাপাতীতি প্রতিভাতি তদণি তত্বং সতাং ন ভবতি। কথ্যসূতঃ

ज्यममार्जः।

॥ • ॥ ইতি শ্ৰীভাগৰতে তৃতীয়ন্বনে শ্ৰীকীৰগোসামিকত ক্ৰমসন্দৰ্ভত অইমোহধাার: সমাপ্ত: ॥ • ॥

ভাতোহনীতি। অভাবে বা হানিত্তরাহ দেহেতি। গতিঃ স্বরূপ তছকাদিরূপা পরনা দ্বিতিঃ। নমু তাদৃশ মন্গতেরনাচ্চ প্রতীরতে তত্তাহ। তাদৃশাৎ তথ স্বভোহনাত্তত্বং নাতীতি। যহা অভি তহশি ন তরং কিছ স্বমেব তরং তত্ত্বিভার্থঃ। তত্ত্তো-ভয়ত্রাপি হেতুর্যারেতি। অনস্তবৈভব্যবা অভয়করা শক্তা সভঃ তত্ত এব তং কগজনেশ বহুক্রিতাসি তথ ধলু বহির্লার

এবিখনাণচক্রবর্ত্তী

॥ • । ইতি সারার্থবর্শিন্যাং হবিণ্যাং ভক্তচেতসাং। তৃতীয়স্যাষ্টমোহণ্যায়ং সন্ধতঃ সক্তঃ সতাং ॥ • । গর্জোবশায়িনং স্বান্তব্যমিনং নবমে বিধিঃ। স্বত্যা তস্য কুপাবৃষ্ট্যা সামর্থাং প্রাণ স্কৃট্রে॥ ভগবৎ কুপাবৃদ্ধং তৃদীয় সাক্ষাৎ-কারৈককারণং ভগবজ্ঞানমেব ভবেদিতি প্রদর্শরয়াই জ্ঞাতোসীতি। মে মরা অদ্য স্বং জ্ঞাতোসি স্কৃতিরাৎ বহুকালং স্বনীর ধ্যানং

কুৰ্মভাপীতাৰ্থ:। ঈদৃশ সৌন্দৰ্যাস্য তব মন্না ক্ৰাপাধ্যানাং ধ্যানদশানাং ভগবন্তমহং আছৈব বামীতি হত হক বৃথৈব আনাভিমানঃ হতঃ। তথা ধ্যাতকপএব প্ৰভূমে দৰ্শনং দদাভিত্যাশংসাপি র্থৈব হুতেতি ধ্বনিঃ যত ঈদৃশসৌন্দ্ৰ্যাস্য দোশাপি মহামনকতনীলোৎপদ নবনীনদাদির নাতীতি তথাকপত্যা বং ধ্যাতোহপীদৃশকপত্যা প্রভামেক্ছরিতি তব কুপানা মাহাত্মামনির্বাচামিতাহ্ধনিঃ স্বরং তন্মাধুর্যাস্বাদমন্ত্র তদহভবিনোহপরান্ শোচতি দেহভালাং প্রাণিনাং ইত্যেবাবদাং ঘোৱা কিছৎ ভগবতন্তব গতিক্তবং ন জারতে ঈদৃশসৌন্দর্য্য মাধুর্যাদিকং নাহত্ত্রতে দেহভালামিতি দেহধারণস্য ব্যঞ্জনমেব ফলং। বন্ধাদেবৈতাদৃশং স্বর্গমন্থতিবিতুং শক্ত ইতি ভাবঃ। নন্ধ বিচিত্রে জগতানাদিপি কিমীদৃশমতি মধুর্মম্ভবনীরং বন্ধ নাতি ব্যোভামানে দৈহিনামবদ্যং ব্রীবীতি ত্রাহ। অব্যোলায়তি বং কিল জানার্বম্পাদেরমিতার্থ:। ভগবন্নিতি ভগবতা স্বন্ধ নাত্যেবেতি ভগ শক্ষবাচ্য নিবিলা প্রাকৃতসৌন্দর্যাকীর্ত্তাদীনি বিনা নৈব নেত্রকর্ণাদিভোগ্যং বন্ধতীতি ভাবঃ। নন্ধ স্বর্কজিন্ধভোগ্যং স্বর্গস্থবনেবাতি ভ্রাহ। অপি তন্ধ শুদ্ধতি ভাবি নাত্মপ্রতি ভাবি নিজ্নীপ্র নিত্রমণি নত্তমপ্রিক্তি ভাবি। অপি তন্ত শুদ্ধিতি ভাবি নাত্মপ্রতি ভ্রাহাণ নত্তমপ্রতি বন্ধান্ত নির্বাচনিত নিজ্নীপ্রতি ভ্রাহাণ নত্তমপ্রিক্ত ভ্রাহাণ নত্তমপ্রতি ভ্রাহাণ নত্তমপ্রতি ভ্রাহাণ নত্তমপ্রতি ভ্রাহাণ নত্তমপ্রতি ভ্রাহাণ নত্তমপ্রতি ব্যাহ্য বির্বাচনিত নিজ্যীস্বিলি বিনা বিনা ভ্রাহালিতি বনিতাং পরিণামবিরসং পরিনিভ্রমণি নিজ্যীপাণ নত্তমপ্রক্রিত

॥ # ॥ ইতি তৃতীয়ে অফম ॥ #॥

काभिकाकमःवाचानाः नष्ट् निक्किन दरम्पतिवक्नाम्पीठार्थः विक ठक्कांपि चमात्रामक्तिकार्याचात परकार्नाकणाह् मामाध्यानाः

নবমাধ্যায়ে তপদ্যা ছারা ভগবানের পরিভোষ অবলোকন করিয়া লোকস্থান্টি বাসনায় ব্রহ্মা কর্ত্তক ভগবানের স্তুতি ॥ # ॥

জন্ধা কহিলেন হে ভগবন্। বহুকাল তপস্যা করিয়া অদ্য তোমাকে জানিতে পারিলাম। আহা। দেহধারি ব্যক্তিদিগের কি দোর্ভাগে, ভোমার তত্ত্ব অবগত হইতে কোন ক্রমেই যোগ্য হয় না। হে প্রয়ো ছুমিই জানিবার যোগ্য, যে হেছু ভোমা ব্যতিরেকে কোন বস্কুই নাই, যাহা আছে ইলিয়া প্রজীতি হয় তাহা দত্য নহে। বিজ্ঞা। মানার শ্বণক্ষোতে ভূমিই বহুরূপ হইয়া প্রকাশ পাইয়া থাক,

নান্যজ্বদন্তি ভগবন্ধপি তম ভন্ধং সামান্তগর্যতিকরাদ্বপ্নক্রিকাসি । ১ ॥ তার্ড কিই এর বর্ত্ত কর্পং যদেতদববাধরসোদয়ের শব্দির্ভ ভ্যমনঃ সদস্প্রহায়। । ১ জিলার ক্রিকিটার ক্রিকার আদি গৃহীত্যবতার শতৈক বীজং যদাভিপদ্ম ভবনাদহমাবিরাসং ॥ ২ ॥ তার্ড ক্রিকার বর্তিঃ পরং পর্য যন্তবতঃ স্বরূপমানন্দমাত্রমবিক্রমবিদ্ধবর্তঃ।

डीधत्रवामी।

প্রভীতিত্ততাহ যদ্যতঃ মায়াগুণক্ষোভাৎ ঘমেৰ তু উক্ন ক্রেরণো বিভাসি 🛚 ১ 🗓 🥇

নমু ঘমণি সমাঙ্ন জালাসি বৰ্ষা দৃষ্টং ক্লপং তদণি গুণাস্থকমেৰ নিগুণিং ব্ৰন্ধৈৰ তু সত্যং তত্ৰাহ ক্লপমিতি ছাভ্যাং। অব-বোধৰসোদ্যেন চিচ্ছক্লোবির্ভাবেন শবং সদা নিবৃত্তং তমো বন্ধাৎ তস্য তব যদেতজ্ঞপং গুৱৈৰ স্থাভব্তাণ স্তামুপাসকানাং অমুগ্রহার গৃহীতং আবিষ্কৃতং অবতার শতস্য শুদ্ধ সম্বান্ধক্য যদেকং বীজং মুলং তৎ প্রদর্শনার্থং গুণাব্তার বীজ্তং দশ্যভি ব্রাভীতি ॥ ২ ॥

হে পরম অবিদ্ববর্ক্তঃ অনাবৃত প্রকাশং। অতঃ অবিকল্পং নির্ভেদং অত এবানন্দ মাত্রং এবভূতং বন্ধবতঃ স্বরূপং তৎ অভো

क्रमममर्खः।

মারাধ্যারাঃ প্রধানরপায়াঃ, সীরক্রবাশক্তেও পানাং ব্যতিকরাৎ পরিণামাদের ভাসীতি ন তত্ত্ব ওছত্মিতি ভাবঃ । ১ ॥

রপমিতি যুগাকং। আদৌ গুণাবতারাদীনামগ্রতঃ গৃহীতমুপান্তং সতামাভিমুখোনানীতং প্রকটিতমিতার্থঃ। অবিশ্বমিতি বক্ষামাণাৎ স্থানে বিশান্তর্ভাবপাতাৎ অববোধরসোদয়েন নিতানিবৃদ্ধসর্কপ্রকৃতিগুণভ জীববৎ তদ্গ্রহণাযোগাং। কাহং তমামহদহমিত্যাদিবিব তমোহত্র প্রকৃতিঃ অববোধস্য সর্কৃতশ্হেদকত্বাং। তত্রাবতারশতৈক্বীল্পভে স্বাহ্রভবেন দিগদর্শনমাহ বরাভীতি ৫২॥

স্টে: প্রথমছাদাত্মনন্ত্রণাক্তিঃ যথ গ্রতঃ পরং তবতঃ অরপং পূর্ণতগ্রদাদিরপং তত্তু ন পঞ্চামি কিছুদোরপমুপাশ্রিতাছির

बिविधनाशठकवर्डी।

ব্যতিকরাৎ পরিণামাৎ উক্ত: স্বর্গপারমেষ্ঠ্যসার্কভৌমাদিরপ: ॥ ১॥

নৰিদমপি মদীরং রূপমদ্যতনমেব অদ্যতনম্বেচানিত্যমেবাত্র অদ্য জ্ঞাতোসীতি অছ্বিসেরে প্রমাণমিতি পরিহাসমাশস্থাহ রূপমিতি অবরোধরসঃ অরূপভূতা চিচ্ছবিদ গুলুদয়েন হেতুনা। শবং সদাতনমেব নিবৃত্তং তমো মায়া যশাং তস্য তব। অত্র শখদিত্যুকে গৃহীতমাবিশ্বতমিতি স্থামিচরণাঃ। ভক্তাভিমুখ্যমানীতমিতি সন্দর্ভঃ। গৃহীতা মায়য়া গুণা ইতিবৃদ্দেদ্পি ভেদবুদ্ধোত্যেকে অববোধরসেন কর্ত্রা গৃহীতমিত্যপরে ॥ ২ ॥

নমু নির্বিশেষং ব্রক্ষৈব সর্বাদিমং কেচিয়াচক্ষতে নতু সবিশেষ মেতদিতি তত্রাহ নাত ইতি। হে পরম বছবতঃ স্বরূপং অবিকরং নির্বিশেষং আনন্দমাত্রং ব্রন্ধ। তৎ অতারপাৎ পরং ন পঞ্চামি কিছিদমেব তর্রু তদেবেদমিত্যর্থ:। হে অবিদ্ধন্ধঃ অবিদ্ধং কালদেশাদ্যপরিছিরং বর্জন্তে যেতি সর্বব্যাপকং তত্ত্বের এব তদু ক্ষেতি ভাব:। বহুক্তং হরিবংশে অর্ক্ত্বন্ধ প্রতি ভগবতা যৎপরং পরমং ব্রন্ধ সর্বাং বিভলতে জগৎ। মমৈব তদ্বনং তেলো আতু মইসি ভারতেতি নন্ভয়োরৈক্যেপি ছং কুল্ল বজাসীতি তত্ত্বাহ বিশ্বং ক্ষেতীতি ইশুপধ্যাৎ কঃ বিশ্বস্কঃ তে তব রূপমেকং উপাশ্রিভোমি নমু স্বমপি ব্রন্ধা বিশ্বং ক্ষেত্রীতি তত্ত্বাহ অবিশ্বং বিশ্বস্থানভং চিন্নম্মিতার্থঃ অহন্ধ বিশ্বমেব যতো ভূতেক্সিরান্ধান্তি দেহিক্সিয়মনোতিঃ কং স্থাং যতেনৈব মদো গর্কো যতেতি স্বস্ত প্রাকৃত্ত্বমুক্তং ॥ ৩ ॥

ইহাতে অসত্য বস্তুর প্রতীতি অসম্ভব নহে অর্থাৎ মায়া দ্বারা মিথ্যা বস্তুও সত্যবৎ প্রতীয়মান হয় ॥ ১ হে ভগবন্! জ্ঞান শক্তির আবির্ভাব হৈছু তোমা হইতে তমোগুণ একেবারে নিয়ন্তি হইয়াছে, তুমি উপাসকদিগের প্রতি অনুগ্রহ বিস্তার করিয়া এই যে মূর্তি প্রথমতঃ প্রকটিত করিলে, ইহাই শত শত অবতারের মূল অর্থাৎ এই মূর্তি হইতেই নানাবিধ অবতার হইয়া থাকে, ইহারই নাভিপন্ম রূপ নিকেতন হইতে আমি উৎপন্ন হইলাম ॥ ২॥

েহে পরম ৷ তোমার যে মুর্তির প্রকাশ আরত হয় না এবং যাহা ভেদ পূন্য, ছতিয়াং জানন্দ স্বন্ধপ,

পভামি বিষয়জনেকৰবিশ্বমাজন্ত্তেজিকাশ্বক নদ স্ত,উনাজিতোত্মি । ৩। তথা ইদং ভূবনমলনমলনার গাবে স্ম নো দর্শিতঃ ত উপাদকানাং।

क्षित्रवामी।

রূপাৎ পরং ভিরং ন পশ্যামি কি**ন্ত ইদমেব তব**। অতঃ কারণাৎ তে তব[্]অদঃ ইবং রূপং উপাশ্রিভোমি বোগ্যছাৰপীভাচ্ একং উপাল্ডের্ মুখাং। যতঃ বিষ**ত্ত**ং বিষং স্থলতীতি অতএব অবিষং বিষমাদন্যৎ কিঞ্চ ভূতেক্রিরাম্মকং ভূতানামিক্রিরাণাঞ্ 'আম্মানং কারণমিত্যর্থঃ ৪৩ ৪

নবেবমণি সোণাধিক মেডদর্মাচীনমেবেত্যাশস্থাহ তদেবেদং হে ভুবনমলন বতত্ত্বন তরা অত্যাকমুণাসকানাং মলনার ধ্যানেন দর্শিতং। নহি অব্যক্ত বন্ধাতিনিবেশিতচিন্তানামত্মীকং ত্বরা সোণাধিক দর্শনং দাতুং যুক্তমিতি ভাবং। অতস্তভং নমো-

ক্রম্পশর্ভ:।

তৎশক্ষণং বিশিন্তি আনন্দমাত্রং আনন্দরক্ষেত্যুক্তং। ব্রহ্ম চ নির্কিশেষ চিজ্ঞপং মাত্রা অংশো যন্ত। ন বিদ্যুতে বিবিধঃ করঃ স্ট্যাদিকরনা যত্ত। ভগবদাদিরপত্বস্য মহাবৈকুঠছিতস্য স্ট্যাদিকর্মণ্টামামাৎ প্রথমিন তত্ত্ব প্রত্ত্তাং। তছ্কেং কালবৃত্ত্যা তুমায়ায়ামিত্যাদি বিচ্ছোক্ত ত্রীণি রূপাণীত্যাদি চ। অবিদ্ধং মান্ত্রা ন ভিরং বর্চত্তেকঃ শক্তির্বস্য তাদৃশং। অদোরপং
বিশিন্তি বিশ্বস্ক্ষিত্যাদিনা। ভূতানামিন্দ্রিরাণাঞ্চ আত্মা প্রধানাধ্যং স্করপং যত্ত। যদান্তিত্যের বিশ্বনারণং প্রধানমণি
প্রবর্তত ইত্যর্থ: ৪ ৩ ॥

নমু তহঁলোরপং প্রকৃতিগুণবিশিষ্টং নেতাহ তথা ইদমিতি। তদেবেদমিতার্থঃ। বহুম্র্তেক্ম্রিকমিতারাক্রোজভাষেন তির্থেনাবিভূতিথেছি তির্দানি রাজ্যার কথা তেনাবিভূতিথেছি তির্দানি রাজ্যার প্রাণ্ডির বিশ্ব কথা তেনাবিভূতিথেছি বাংলি বিশ্ব কথা তির বিশ্ব কথা তির বিশ্ব কথা তেনাবিভূতিথিক বিশ্ব কথা তির বিশ্ব কথা তির বিশ্ব কথা বিশ্ব কথা তির বিশ্ব কথা বিশ্ব বিশ্ব কথা বিশ্ব বিশ্ব কথা বিশ্ব বিশ্ব কথা বিশ্ব বিশ্ব

এবিশ্বনাপ চক্ৰবত্তী'।

নমু নির্বিশেবং স্বরূপং কিমিতি নাশ্রয়সি তত্তাহ তৎ প্রসিদ্ধমিদং স্বিশেবং স্বরূপং বৈ নিশ্চিতং চতুর্দশভ্বনস্থ জনানাং সংশ্বোমণি বানি মঙ্গলানি ধর্মার্থকামমোক্ষান্তবামণি মঞ্চলার কল্যাণার্থং এতজ্ঞপোপাসনে সত্যেব ধর্মাদয়ঃ কুশলিনং সার্থকা ভবস্তানাথা বার্থা ভবস্তীত্যর্থঃ । নির্মিশেবস্বরূপন্তবং ন ভবতীতি ভাবঃ। তথা নোম্মাকমণি ধানে ইদমেব দর্শিতং নতু তদিতি। ততঃ কুণালুত্বাধিক্যমণি। তত্মাৎ তত্মৈ স্বিশেবস্বরূপার চিম্মরগুণসমুদ্রার তৃত্যং নম এব কেবলং বিধেম করবাম। পরিচর্যাং পুনঃ কামহং কর্তুং শক্রোমীতি ভাবঃ। নির্দিং রূপং ন সচ্চিদানক্ষময়ং কিন্তু মায়াময়মিতি ক্রবাণাঃ কেচিন্নাং বস্তুতো নাজিয়ত্ত তত্মাহ যোনাদৃত ইতি নরকভাগ্ভিরিতি তে নরকএব নিপ্তিষ্যস্তীত্যর্থঃ। অস্বিট্রেবেদং সর্মমিতি প্রসঙ্গ বঙ্কি-

তাহা এই প্রকটিত মূর্ত্তি হইতে বিভিন্ন দেখা যায় না, বরং দেখিতেছি ইহাই সেই রূপ, অতএব আমি তোমার এই মূর্ত্তিরই আগ্রিত হইলাম। হে আত্মন্! তোমার এই মূর্ত্তিই উপাদনার যোগ্য, যে হেতৃ ইহাই উপাস্ত মধ্যে মূখ্য এবং বিখের স্প্রিকারী, স্থতরাং বিখ হইতে ভিন্ন। আর ইহা ভূত দকল এবং ইন্দ্রিয়াণের কারণ অর্থাৎ এই মূর্ত্তি হইতেই ভূতেন্দ্রিয়াদির উদ্ভব হইয়া থাকে ॥ ৩ ॥

হে ভ্ৰনমঙ্গল। আমরা তোমার উপাসক, তুমি আমাদের নিমিত ধ্যান কালীন এই রূপ দর্শন করাইলে, অতএব ইহাই তোমার সেই রূপ সন্দেহ নাই। প্রভো। আমরা অব্যক্ত বর্গো অর্থাৎ চিন্মর রূপে নিবিফ চিত্ত, আমাদের প্রতি তুমি কথন সোপাধিক মায়াময় মূর্ত্তি দর্শন করাইতে পার না,অভএব আমরা তোমার অনুত্ততি (পরিচর্য্যা) করিয়া তোমাকে নির্ভর নমস্কার করি। হে ভগবন্। যে স্কল নরাধ্ম, অনীখরবাদিদিগের কৃত্ত নিষ্ঠ, অতএব তাহারা নারকী, তাহারাই তোমার সচ্চি-

তিয়ে নমো ভগৰতেহমুবিধেন তুভাং বো নাদৃতো নরকভাগ ভিরপংপ্রসংক্রি। । বিত্ স্থানীয় চরণামুলকোষগন্ধং জিজন্তি কর্ণ বিষরে: প্রভাতবাতনীতং।
ভক্ত্যা গৃহীতচরণঃ পরয়াচ তেষাং নাপৈষি নাথ হুদ্যামুক্তহাং স্বপুংসাং ॥ ৫॥
তাবস্তুয়ং দ্রবিণ দেহ স্ক্রিমিন্তং শোক স্পৃহা পরিভবো বিপুল্নচলোভঃ।

शिवकात्री ।

হুদ্বিধেম অনুবৃত্তা করবাম। তহি কিমিতি কেচিয়াং ন আজিমতে ততাহ যো নাদৃত ইতি অসংপ্রসদৈঃ নিরীশ্বর কুতর্কনিটাঃ ॥৪ আদরেণ তু দ্বাং ভলস্বঃ কৃতার্থা ইত্যাহ বেদ্বিতি। প্রতির্কেদঃ সু.এব বাতঃ তেনৈব নীতং প্রাণিতং নাগৈবি নাগদাসি।
যে দ্বং কথাপ্রবণমত্যাদরেণ কুর্কস্তি তেখাং দ্বনি নিতাং প্রকাশসে ইতার্থঃ ॥ ৫ ॥

ততঃ কিমত আহ তাবদিতি দ্রবিণাদৌ বিদামানে ভরং গতে শোকঃ প্রশ্ত স্পৃহা। ততক পরিভব:। তথাপি বিপুল

क्रममर्भः।

অস্থোহত তত্ত্বসঞ্চানকরিতমিতি কৃতর্কেণ মরানা উচ্যতে । ৪ ॥

তদেব স্থাপরন্বে তু গুজ্জকা জেবাং তচ্চরণারবিন্দমেব প্রবার্থঃ স্যাৎ বতক্ষণি তাংজ্ঞা মন্যস ইত্যাহ যে ভিতি। তু শক্ষেনারের পরমস্থতক্ষ স্থাণিতং। নাশৈবি মাণগন্ধমিক্ষ্মীত্যর্থঃ অত পরম্সাধনং চ ক্ষমিত্রতাদিনেতি॥ ৫॥

নহু দ্রবিণাদিনিমিত্তে ভরাদৌ সতি কথমেতাদৃশ ময়াধুর্যাসকিং স্যাততাহং। তাবদিতি। ন প্রবৃণীত শরণমাত্রত্বেন

औवित्रनाथठकवर्छी।

রসাধুদলিভিরিতি বা ॥ ৪ ॥

শারের নির্বিশেবস্থরণোপাসকা জ্ঞানিন উচ্যন্তে সবিশেবস্থরণোপাসকাল্ত ভক্তা তেবামুভরেষাং মধ্যে ভক্তা এব কৃতার্থাঃ প্রিয়ান্চেত্যাহ ঘাড্যাং। যেভিতি শ্রুতিরেদ: শ্রবশুভক্তির বিত ভেন নীতং প্রাপিতং ততক তে চরণামুল্পারিভা নোভিমো ভ্রুলা ইব চরণামুল্পার এব পরমপ্রবার্থত্বন গৃহস্তীত্যাহ। ভক্ত্যা পরয়া প্রেমলক্ষণয়া। নাপেনীতি তে যথা তব চরণামুল্প এব লোভিনন্তর তাল্পতি তথা মুমপ্রবাধি বেশা প্রমুদ্ধি এব লোভিনন্তর তাল্পতি তথা মুমপি তেবাং প্রেমমাধুর্যাবভি ক্লেয়ামুল্প এব লোভি তর তালসীতি পরস্পারব্দীকার: শ্রিতঃ ॥ ৫ ॥

নমু তেপি স্ত্রীপ্তত্তবিণাদিমস্তশ্চেৎ সংসারিণ এবেতি তত্ত্ব নহি নহীতি স্থ্যসনাদংশমাহ তাবদিতি দ্রবিণাদ্যাসক্তিহেতুকং ভরং সংসার ইতার্থ: তগৈয়ৰ প্রপঞ্চ শোক ইত্যাদিঃ। তাবদেব যাবন্তবান্তিঃ প্রভূম্বদিন্তাবেন ন প্রবৃণীত প্রকর্ষেণ বরণে সতি ব্যাসক্ত্যা দ্রবিণাদ্যাসক্তিনি বর্তত ইতি ভাবঃ । যদিচ দ্রবিণাদাবসক্তোপি কলিন্তকো ভবেন্তদাপি নৈবচিন্তেভ্যাহ মমেতাসদা-

मानन्मश्र शृर्खित्क भाग्नाभग्न विद्या जामत करत ना. न**त्झ** एठांगांक नमस्त्रात रक ना करत ? ॥ 8 ॥

প্রভাগ থানের পূর্বক তোমার ভজন করিলেই ক্তার্থ হওয়া যায়, যে সকল ব্যক্তি তোমার চরণ পদ্ধজের সৌরভ বেদরূপ বায়ুযোগে প্রাপ্ত হইয়া কর্ণ বিবর ছারা আত্রাণ করেন অর্থাৎ অভিশয় আদর পূর্বক তোমার কথা প্রবণ করিয়া থাকেন এবং পরম ভক্তি সহকারে তোমার চরণপদ্ম দর্বব পুরুষার্থ সার বলিয়া গ্রহণ করেন, সেই সকল ব্যক্তিই তোমার আপনারই পুরুষ। হে নাথ! তাহাদের হৃদয়পদ্ম হইতে কথন দূরগত হও না অর্থাৎ নিত্যই তাহাদের হৃদয়ে প্রকাশমান হইয়া থাক ॥ ৫॥

হে প্রভা। লোক সকল যাবৎ তোমার অভয় স্বরূপ পাদপন্ম আত্রয় না করে তাবৎ পর্যন্তই তাহাদের ধন, দেহ, পুত্র এবং কলত্র নিমিত্ত ভয় অর্থাৎ ঐ সকল বিদ্যমান থাকিলে তাহাদের বিনাশ শক্ষা, শোক অর্থাৎ বিন্ত হইলে সন্তাপ এবং পুনর্বার তদর্থ স্পৃহা জন্মিলে ত্রিমিত পরাভর হয়, তাহাতে তদর্থ বিপুল লোভও জন্মিয়া থাকে, যদি কথিকং রূপে অতিলম্ভি লাভ হয়, জাহাতে আবার শ্রামার আমার" ইত্যাদি আগ্রহ হয়, তাহাই শোকাদি রেশের কারণ। কিন্তু হে প্রভা। তোমার

তাবন্দেত্যসদবগ্রহ আর্তিন্ন বাবদতেকি বজন প্রেমাত লোক: । ও।
দৈবেন তে বছবিলো ভবজ প্রান্তা করিছে আনাবন্দির করিছে। তে।
ক্বিতি কাম তথলেশ স্বান্ত হীলা লোভাভিত্ত মন্ত স্থানি শশং। ৭।
ক্তিট্ বিধাত্তিরিমা মৃত্রক্ষানা: শতোক বাতব্ধৈ নিতরেতরাচ।
কামাগ্রিনাচ্যতক্ষাচ স্তুর্ভরেশ সংপশতো মন উল্লেক্স সীনতে কে। ৮।

शिवतवामी।

লোক ভ্রমা পূনঃ কথঞিং প্রাথে সমেদাসকার্যকঃ। আর্কিমূলং তর পোকাকেঃ কারণং ন প্রবৃষ্টিত নাপ্তকেত ভংগাসাপ্রবৃগমারেণ ভ্রাদি নিবৃত্তিঃ কিং পুনভং প্রকাশে সভীতি ভাবঃ ৮ ৮। °

বে নিকাৰা অপি সন্তঃ সাং নাজিরতে তে নরকভাল ইত্যুক্তং। বে সং কথা প্রবণাদি বিৰুধাঃ সন্তঃ কামা কর্ম পরা তেছিডি মন্দা ইত্যাহ দৈবেন তে হতধিয়ঃ নইমভরঃ। প্রসন্ধাৎ প্রবণ কীর্জনাদি রূপাৎ সর্বা ছঃধ নিবর্তকাৎ বিমুধানী ক্রিয়াণি যেবাং। অকুশলানি অক্ষেত্রকাণি ॥ १॥

অকুশলন্বমেৰ দৰ্শয়তি কৃষ্ণ তৃট্চ ত্ৰিগাতৰক বাড পিড কেলাণঃ তৈরিমাঃ প্রকাঃ কুছ্রতিবণ কুল্ঃসহেন কামাগ্রিনা অচ্যুতরা কবা অবিচ্ছিল ক্রোধেনচ পীডামানাঃ সংপঞ্চতো বে মনঃ সীদ্তি ॥ ৮ ॥

क्रममण्डः।

নাপ্ৰবৈত ৮৬ ৪৭ ৪৮ ৪

এবিখনা পচক্রবজী ।

গ্রহন্তাবদেবার্থিমূলং সংসারকারণং ফাবদিতি তবাজ্যে: সেব্যাদেন করণমাত্র এক অবিশাসক্তাদেকংশাতদংশ্রোরগদংশতের নার্থি মূলছমিত্যগ্রেচ বল্যাতে। তাবজাগাদরজেনা ইত্যাত্র বাবং ক্লঞ্চ নতে জনা ইতি ভাবজ্জবদ্য বিপাঠবলাব্যাখ্যাভং। এবঞ্চ বেছু ঘদীরেত্যানেন রতিমন্ত: তাবভ্তরমিত্যর্কেনানর্থ নিবৃত্তিমন্তঃ তাবজ্ঞবানানিক্তানর্থান্তিবিধা অপি ভক্তান সংসারিণ ইত্যুক্তং ॥৬ নবেবং চেৎ সর্ব্ধএব স্থাবরা ভূষা মচ্চরণমাশ্রমিষ্যক্তে ভর্তি কে সংসারিণো ভবিবান্তি তত্রাহ দৈবেন স্থাপরাধ্যান্ত্রদ্রেন অকুশলানি কাম্যানি নিবিদ্যানিচ কর্মাণি॥ ৫॥

বে চাক্তে পশ্বাদিত্ল্যাঃ সীন্নহিতাহিতং কিমপি নজানত্তি তাংত্ত শোচামেবেত্যাহ স্কুল তৃট্চ ত্রিধাতবং বাতশিস্তরেয়াণ বৈরিমাঃ প্রজাঃ ইতরেত্রান্ত সপুত্র কল্রান্নিবিশিপরস্পরতোহর্দ্যমানাঃ কামান্নিনা অচ্যুত্র্যা অন্যজ্ঞিররা কবা স্বর্জনেতি হরোরেব বিশেষণং অর্দ্যমানাঃ প্রজাঃ পঞ্জাে মম মনঃ সীনতি হত্তহত কথ্যাসাং নিতারো ত্রিতেত্যবসীনতি ॥ ৮॥

চরণ পক্ষত আপ্রের করিলে ঐ সকল ভরাদি কিছুই থাকে না অতএব তোমার পাদপদ্ম আপ্রের মধন ঐ সমস্ত নিবৃত্তি হইয়া যায়, তখন তুমি হৃদর মধ্যে বিরাজমান থাকিলে ঐ সকল ভয়াদিথাকিবার সম্ভাবনা কি ? ॥ ৬॥

হে ভগবন্! যে সকল ব্যক্তির ইন্দ্রিয় সর্বর ছংখ নিবর্ত্তক তোমার প্রবণ কীর্ত্তনাদি রূপ প্রসন্ধ হইতে বিমুখ, তাহারা ছুরদিই বশতঃ নিতান্ত হতবৃদ্ধি। এ কি সামান্য ছংখের বিষয় ? যে সকল দীন পুরুষ লোভাভিত্ত চিত্ত হইয়া কামহুখ কণিকামাত্র লাভ নিমিত্ত নিরন্তর অক্ষেমকর নিষিদ্ধ কর্ম করিয়া থাকে ॥ ৭ ॥

হৈ উক্ত ক্ষয় । ঐ সকল ব্যক্তি কুধা ভূকা, বাত পিত ক্লেমা শীত উক্ত বায়ু বৰ্ষণ এবং তত্ত্বপ, অন্তান্ত বিষয় ক্ষা ছংগই কাৰ্মায়ি ও অবিচিন্ন ক্লোধ ইত্যাদিতে পুনং পুনং পাঁডামান হইতে থাকে। উন্দিনিট্ৰ অবলোকন ক্রিয়া আমান নমঃ অভিশন্ন খেলাবিত হয় ॥ ৮॥

the state of the s

यायर शुथक प्रधिममायान विकास मासायन अवस्ताका जन केन नाटनर । विकास कार्या তাবৰ সংস্তিরসো প্রতি সংক্রমেড ক্রার্থাপি ছালনিবহুং বহুতী ক্রিয়ার্থা 🕪 🗱 व्यक्ताश्रुकार्ककृतना निभि निश्मग्रामा नामा मदनात्रथिया क्लक्यमिखाः । क्ला क्रिक्स क्रिक्स

নবেবং ভৃতারাঃ সংস্তেরপরমার্থবাং কিমর্থং বিবাদঃ ক্রিরতে তক্তার বাবদিভি। আত্মন ইবং পৃথক্তং দেহাদি ভাবং ভগবত তাৰ ইন্দ্রিয়ার্থ রূপা যা মানা তারা বলং আধিক্যং বন্ধ তৎ। ন প্রতি সংক্রমেত নোপরমেত। ছংখ সমূহং প্রাপন্নতী। कियागामर्थः कनः वनारः ॥ » ॥

নমু ভবত্যেব্যবিবেকিনাং বিবেকিনত্ত মুক্তা এবেডি কিং ডেবাং ভক্ত্যা কুডামত আহ। অফ্ আপুডানি ব্যাপুডানিচ ভাছার্ডানি क्रिहेशिय कृत्वानी खित्रानि त्यवार । बात्वो दिवत्र स्थनत्वानि नार्षि वंट्ला निः नत्रानाः यश्च नर्नतम् करन करन करन करन कार्याः।

क्षत्रममर्खः ।

তচ্চ বস্তঃ বাতস্থাভিমানেনৈৰ জীবানাং ভাদিতাভিপ্রেত্যাহ বাবদৈতি। ভগবতঃ সকাশাৎ আত্মনঃ পুৰকৃষং বাডস্তাং

অতএব তত্তমার্ণসিম্মূনীনামপানাদর ইত্যাহ অহ্যাপৃতার্ককরণা ইত্যাদি। স্বভাবাৎ যুম্বজনবিম্ধা: সংসারিণো ভবজি কিছ্না **७ उन्मार्गिका मूनत्यारित गुबरश्रमम्बिम्थात्मिक सगिड जदामय मः महिला अथवा मूनत्वारित पविम्थात्मछर्हि मः महत्वाद।** কথং ভৃতাঃ সত্তঃ সংসর্ধি তত্তাহ অহ্যাপৃতেত্যাদি। আকৃত্ব কুছে প্ৰসং পদমিত্যাদেঃ। অত উক্তং প্ৰীৰ্মেন ধৰ্মৰ সাক্ষাৎ छপবং প্রণীতং ন বৈ বিছ্ৠবরো নালি দেবাং। ন সিষম্পা অহ্বরা মহবাাং কুতো হ বিদ্যাধরচারণাদরং। স্বরভূনবিদং मञ्जः क्यातः कथित्ना मञ्जः। श्राह्मात्ना जनत्का छीत्वा वनिर्देखनानिकर्वतः। बानरेमत्त विजानीत्मा धर्मः खानवरः छोः। গুঞ্ বিশুদ্ধ কুর্মোধং বং জ্ঞাত্বামৃত্যসূতে। এতাবানেব লোকেছিনিন্ পুংসাং ধর্ম: পর: স্বত ইত্যাদি। এতে ধর্ম প্রবর্তকা: বিকানীম এব ন তু বন্তাদিব্ প্রারেণোপদিশাম ইত্যর্থ:। বতো গুহুং অপ্রকাশ্তং। ছর্কোধং অনৈয়কথা গৃহীতুমশকাং চ। গুহুছে হেতৃ: বং আছামৃতমগ্লুত ইতি। অতথব বক্ষাতেচ। আহেণ বেদ তমিদং ন মহাজনো হরমিত্যাদি মহাজনো ছারণেত্য তদম

श्रीवित्रमाथठळवळी ।

सरवदः कृष्ठाताः तः सर्छ त्रवश्वकृष्ठवानमता कथमवनीननीष्ठि छ्वाव वावनिष्ठि । यावनावाता जीवना हेनः शृथकवः स्नरात्रि-कांबर भर्मार बाह्यकट्वर । कशवक है खिदार्थक्रभावा मात्रांवा वनः वत कर कांवर मश्चिकिर्वार्थाभावक कृषांभि म व्यक्ति मश्करमक নোপরমেত। জংখনিবছং প্রাপরতি বতঃ ক্রিয়াণাং কর্মণামর্থ: ফলং যতঃ সা ॥ ৯ ॥

नहास्रानकतिकाताः मःश्रुटक स्राटनटेनटवाभताम देकि वाहाः यटका स्रानित्माणि कित्वदिकाः मःमत्रवीकाह स्राह्मिक वृत्तर প্রসঙ্গ প্রমুখা খবরো জ্ঞানিনোপি এবজ্জা: সন্তঃ সংসরস্তীত্যবরঃ মুনর ইতিচ পাঠঃ। কথং ভূতাঃ আছি আপুতানি নানা ব্যাপার

र क्रेम ! এই मःमात वज्रुठः चानतमार्थ, देशारा थे ऋत विवान कता नितर्थक देश मछा वर्षे, किन्छ ইহা ত্যাগ হয় কই ? লোক সকল যাবৎ তোমার এই দেহ ভাব (ইন্দ্রিয়ার্থ রূপ মায়া দারা বাহার आधिका हहेगाएक) अवत्लाकन कतित्व, जावर धारे मः मात्र वज्राजः वार्थ हहेत्न अध्यात हेर्दि ना. कियां मारक्त कल विभिष्ठे रहेगा नित्रस्त कृश्य तामि अनान कतिए वाकिएक ॥ अ ॥

हिंद दिन ! अविदिविक लोकितिशात है के जान हुई कि हम के मिनिक जोहाति दिना कि कि ক্রা কাৰ্শুক, জানির ডক্তিতে কোন প্রয়োজন নাই এমত বলিতে পারা যায় না, কারণ শ্বিপণ্ড विषि द्वामात थिछि ভिक्तिकत्त विमूथ हम एटव डाहानिगरक अश्मात द्वाम खान क्रितिएक हम। निवरत कें|हानिरभन रेखिन तकन नाना विवरत वार्षक अवः क्रिके थारक छुकार देनेनिः इश्रे लाख द्यं ना, ताळिकारम निक्रा यात्र छरकारमञ्ज विषये सरक्षत दम्भाज माछ दय मा विभावित करने सरम দৈবাহতার্থরচনা ধবরোপি দেব বৃত্তপ্রেমণীবিষ্ধা ইহ সংগরতি । ১০ ।

বং ভক্তিবোগপরিভাবিতর্গুংসরোজ আগ্নে শ্রেকেল্পুল্লো নমু নাথ পুংসাং ।

বদ্যভিয়া ত উক্লগার বিভাবরতি ভত্তবপূচ শ্রেণরসে সদস্প্রহায় । ১১ ।

श्रीशतकामी।

रेतरवनार्छाः नर्बछः खेछिर्छाः प्रवीमाः प्रवमा प्रवीर्थागमा स्वार ॥ ১० ॥

তদেবমতকানাং সংসারাসিবৃত্তিমৃত্যু ভকানাং তরিবৃত্তিমাহ। ভক্তিবাগেন শোধিতে হংসরোকে আস্সে তিইসি।
ক্রতেন প্রবণেন উক্তিতঃ পহা যত সং। কিঞ্চ প্রবণং বিনাপি ভত্ততা মনসা বন্দবপুং রূপং বেচ্ছরা ধ্যারতি তত্তৎ প্রবন্ধ প্রকটরসি। স্তাং তত্তকানামস্থাহার ৪ ১১ ৪

ক্রমসন্দর্ভঃ।

গৃচীতসংপ্রদায়িভ্যন্তান্যো মহাশুণবুকোহণীভার্থ:। তথাৎ কার্কমহ্যাপৃতার্ভেত্যাদি আন বিশেষো ভক্তিসক্ষর্ভে দৃশাঃ ॥ ১০ ॥
ভক্তানাং তু বং বল এবেত্যপারং কিং বক্তব্যমিন্ত্যাহ ব্যমিন্ত। ভক্তিযোগাহ্ব প্রেমা। পরিভাবিত্তবং যোগ্যতামাপাদিতবং। প্রতং ভগবৎ প্রতিপাদকবেদ বৈদিকলাগ্রবিচার প্রবণং। তর্হি মক্রপবিশেষাহিত্যির কিং কারণং তত্নাহ বদ্ দ্দিতি
থিরা প্রতেনৈব লব্দেন বুদ্ধিবিশেবেণ। তে পুর্বেক্তিঃ প্রতেক্তিতৎপথঃ পুমাংসো বদ্ ব্যভিষ্যারভি তত্তবপুঃ প্রণয়সে প্রকর্ষেণ
তৎসমীপে নরসি প্রকটরসীতার্থঃ। নয় ঈশরোহহং কথমেবং তেবাং বশং স্যাং তত্তাহ সদস্প্রহায়। সংস্কৃতির অনু অনু এব
তব বশব্দে কারণং নান্যদিতি ভাবঃ। নয় প্রতমান্তেশ মম কথং বহুনাং রূপাণাং জ্ঞানং স্যাৎ তদভাবে চ কথমেন্ডজরনিষ্ঠা ভাব
তত্ত্বাহ হে উক্লগারেতি। বেদেন ব্যুক্টধ্ব গীয়স ইতি। অসমত্যন্ত্রসারেণ সা ভাদিতি ভাবঃ ॥ ১১ ॥

এবিখনাপচক্রবন্তী।

যুকানি আর্তানিচ করণানীক্রিয়াণি বেবাং তথাভূতাঃ দৈবেন আছতা অর্থরচনা ভোগাবন্ধ প্রতিপাদনানি বেবাং তে। এবঞ্চ দৈবেন ত ইতানেন কর্মিণঃ কুড়ড়িত্যাদিনা মুদাং। অক্যাপুতেতানেন জ্ঞানিন ইতি ত্রিবিধাঃ সংসারিণ উক্তাঃ ॥ ১০॥

ভক্তান্ত জ্ঞানং বিনাপি সংসারং নিজরভীতি কিং বক্তব্যং যতো ভক্তা। ব্যপ্যধীনী কুৰ্বভীত্যাহ ভজিবোগেন পরি সর্বতো ভাবেন ভাবিতে বাসিতে ভাবিতং বাসিতং ত্রিবিত্যমরঃ। ববা হে ভজিবোগপরিভাবিত ভজিবোগেনৈন পরি সর্বতোভাবেন ভাবিতঃ প্রকটীক্বতো ভবতে গ্রভারির্রা ভজিবোগ্রব বংপ্রকটীভবনত প্রবোধকঃ ভানিতার্থঃ। অত্রব ভেবাং বংসরোজে আস্সে উপবিস্তু তির্ন্তিন ততো নিঃসরসি নাপৈবি নাথেতি পূর্বোক্তেঃ আনে অক্সুধাৎ প্রতঃ পশ্চানীক্বিতঃ সাক্ষাহক্তক পত্তা বক্ত সংল বিশ্ববাদ্যারভাগি তং প্রানং সাধনভক্তিপ্রকারং ত্রব সুর্বুগরিচির্ব্তীতি ধ্বনিঃ। অত্যে বত্ত বংপ্রাপ্তীক্ষা বর্ততে স তত্ত্রব প্রানং পরিচিনোবিত্যপ্রকািঃ। কিঞ্চ প্রবাং বিনাপি বন্ধকা মনসা বন্ধত্তর বপ্ত বার্বিত আবিচর্গাঃ। ববা তে সাধক ভক্তাঃ স্ব স্থ ভাবাক্ষপং বন্ধবিরা ভাব্যবি তর্বের বপ্রেরাং সির্বন্ধর প্রবর্বের তান্প্রক্রিত ভাবঃ সংস্কৃতি ভাবঃর প্রকর্বের অক্রের বপ্রেরাং সির্বন্ধর প্রকর্বের প্রকর্বের তান্প্রার্বির ভাবং প্রস্করের প্রকর্বের তান্ প্রাণ্যরসি আব্যান স্বিতি ভাবঃর ১১ ।

নানা মনোরখ চিন্তার নিল্রা ভয় হয়, আর তুরদিউবশতঃ তাহাদের অর্থার্থ উদ্যম প্রতিহত হইয়া পড়ে, অতএব বিবেকিদিগেরও তোমার প্রতি ভক্তি করা আবশ্যক ॥ ১০ ॥

হে নাথ! পুরুষদিগের ছৎপদ্ম ভক্তিযোগে শোধিত হইলে ঘণীয় আবণ দারা তাহারা তোমার পথ দেখিতে পার এবং পুরুষ সকল তক্রপ হইলেই তাহাদের বিশুদ্ধ হৃদয় সরোজে গিয়া অধিষ্ঠান কর,। হে উক্লগায়! তোমার কুপার কথা কি বলিব ? তোমার ভক্তগণ আবণ ব্যতিরেকেও ফেছা-ফেহে সনোধারা তোমার যে যে মূর্তি কুলান করিয়া ধ্যান করেন, ভূমি তাহাদের প্রতি অমুগ্রহ প্রকাশ করিয়া স্বরং সেই সেই মুপুর্ব প্রকৃতি কর । ১১ ॥ नौष्टि द्वानीमध्य प्रदेशनक्रियां स्थाप स्थाप स्थाप विदेश स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप यह निर्देश स्थाप सम्बद्धी प्रदेश स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्थाप

The Control of the Co

चकामाक मिकामामार प्रमुख प्रमुख ८ दश्कर विद्याप है । इस विद्याप के प्रमुख के प्रमुख के प्रमुख के प्रमुख के प्रम चमुकामककामार जनकाना गरना विद्याप १ प्रमुख के मुख्याणि है है है ।

ৰতঃ গৰামানাং কৰাজাতি প্ৰাৰ্থীয়তি পান্ধ কাৰ্থানিং বিশ্বাসায়কং স্বাস্থ্য ন প্ৰবৃত্তি বিশ্ব বহু নীগাৰ্থান বাৰ্থাংবোগৰ অবাস্ত্য কৰোৰু প্ৰয়োচনাৰ্থবিভাহে প্ৰগোদিতি। স্বৰ্থাৰ অধান্ধনাৰে সংক্ৰান্ধী বিশ্বাস্থিত নেইং বিশ্বাসায়ে এইছিং

wantel to the state of the stat

নাতীতি। ভবানিতি পেবং। ততক। বং বৰ্ণা সর্ক্ত্তদর্বা সাধানগৈরপি ছবৈবার্থিতে। ভবানতিপ্রীষ্টি। তথা বছডিরপুগেচারেঃ অ্বনার্ণ রগাারাধিতো নাতি প্রানীষ্টি। সূত ভবাই এক এব ভবানানালনেই অভ্যান্তনালনে চ সাবধানকেতি। অ্বনানেঃ কথছুকৈঃ বৃদ্ধি বন্ধনাম্বাৎ ভবা ভবা পর্বাস্বাস্কৈবিভার্বঃ। তথান্তবংগ্রীতার্ক সর্বাস্ক্রনাম্বাবের ভক্তিঃ কর্তব্যেতি ভাবঃ ৪ ১২ ৪

चाचाः प्रावच्यन्त्रमाराने निकायकः विविधवर्षामान्तिः करपरसाक्षत्रविकातः क्षण्यानिकि। त्यात्राध्याः विवयः। य दिवरक याः।

विविधनाथककावर्षी ।

তেরপি নিকাবভকানাদেবাভিপ্রের্ডং বজু বজাবানাবিত্যার নাতিপ্রবীষ্টি ভবানিতি শেক । সক্ষমানাং সার্থপন্নপানের বর্ত্তির দরারা অভাবনেবাতি প্রসানাভাবে হতেং ব্যক্তন্ন নিকানানাভ পরার্থপানতার বর্ত্তার দরারা অভাবনেবাতি প্রসানাভাবে হতেং ব্যক্তন নিকানানাভ পরার্থপানতার বর্ত্তার দর্বা সর্বভূতন্ত্র অভিপ্রসান্ত । অসতামলভারা বর্ত্তার দর্বা অভিপ্রসাদে হতেং একএব তবান নানালনেববহিতঃ কৃতার্থানাং বৃত্তঃ প্রভ্রমান্ত্র ভিতিপ্রাধানাং বৃত্তঃ প্রভ্রমান্ত্র ভিতিপ্রাধানার ক্রমান্ত্র হিতি তেবাং হিতেবী । নবেবকেন্ত্রের ক্রমং কৃপরা তান্ ক্রথ নার্বাধানিক অল্বরাদ্ধা বং ব্যক্তর এবৈতৎ বশোনানার্বং লগছরান্ত্রিক অক্সাশক্তিং তেরু নিবার নর্ব্তাপ্রাধানিক ব্যবহার বিভাগ বিশ্বনার বিশ্বনার নর্বত্তি ভক্তবাংসান্ত্র ক্রমান্ত্র এবক প্রক্রমান্ত্র প্রভাগ প্রভাগ ক্রমেন্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্তর ক্রমান্তর ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক

ক্ষাক্ষ্য হতে। বিদ্যালয় থোকাং কৰা ক্ষাক্ষাক্ষাক্ষা আধানীকুতা দৌ ভিন্ত নিক্ ক্ষাৰ্লগন্ধানি, তক্তি নিৰ্মাহত বাৰ্ল্যেতাক প্ৰদানীক বিনাধক জিলাই কিটক ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য কৰা ক্ষ্য কৰা

প্রভা। নিকাম অক্ত দিপেরই তুমি খ্লভ, সকাস ব্যক্তিরা কোন ক্রেনই তোমার অপুথাই ভাজন ইতি পারে না, অভের কথা কি? দেবগণও যদি মনোমধ্যে কামনা করির। বিবিধ উপচার ঘারা তোমার আরাধনা করেন, তাহা হইলে তাহাদের প্রভিও ছুমি প্রসম হও না, অথচ সর্ব প্রাণিতেই দয়। বিভার করিয়া প্রভাক করের অদর মধ্যে অক্ত এবং অব্যালারপে অবিভান করিয়া প্রতি বিকার করিয়া প্রতি করিয়া প্রতি বিকার করিয়া প্রতি করিয়া প্রতি বিকারণ করিয়া প্রতি বিকারণ বিকার করিয়া প্রতি বিকারণ বিকার করিয়া প্রতি বিকারণ বিকার বিকারণ বিকারণ

क्षित हरू उनका । जुकर तकत वरि यान बेकारि विधित कर्ता, बान, केव बालका अने विकास । वरि नकत पानी (कामीर बाहासमा करत, कार्च दरेरव कार्या कार्यामा अस्ति कर्ता कार्या कर् আরাধনং ভগবতন্তব সংক্রিয়ার্থে ধর্মেংপিত: কর্মিচিন্মিরতে ন যত্র । ১৩ ॥
শবং অরপমহসৈব নিশীতভেদমোহার বোধবিবণার নমঃ পরস্তৈ।
বিখোদ্তবহিতিলয়ের নিমিত লীলা রাসায়তে নম ইনং চকুমেখরার ॥ ১৪ ॥
যক্তাবতার গুণকর্ম বিভ্রমনি নামানি যেহস্থবিগমে বিবশা গুণস্তি।

श्रिवकामी।

যত্ৰ স্বক্ষপিতে। ধৰ্ম: ন কহিচিমি মতে ন নম্ভতি কামাৰ্থন্ত ধৰ্ম: কামং দশা নম্ভতীভাৰ্ম: । ১০ ।

আত্তামেৰ ব্রং নতা ইত্যাহ। শবং সর্জাণ পরপ তৈতৃত্তেনৈৰ নিরস্ততেশভ্রমার পুনশ্চ বোধ এব ধিৰণা বিদ্যাশক্তিবত। বহা বিৰণমান্তর:। অতএব পরতৈ অত হেড়া বিধোতবাদি নিমিতং বা মায়া তথা দীলা বিশাস প্রা রাসঃ ক্রীড়া যত। তে ভূতাং ইদং নমঃ নম্নং চকুষ ক্লতবস্তো ব্রং ॥ ১৪ ॥

নাম এছণমাত্রভক্ত কৈবলাপ্রনম্বেলিখর্বাং ব্যঞ্জন নমন্বরোভি বভেতি। অবভারাধীনাং বিভ্যনমূকরণমন্তি বেরু। ওতা-

क्यमम्बं:।

ष्ट्यीजिः मन्द्रमय जिङ्गेनीकार्यः । ১०।

শ্বদিতি। শ্বরণ মহসা শ্বরণশক্তা তবৈলকণোটনৰ নিপীতো দ্বীকৃতো শীবাদিতি: সহ তব ভেদে মোহতৈ: সহ তেনো ন সম্ভবতীতি ভ্রমো যেন স্বল্লা তবৈ । তবৈলকণোন তেভোভিরত্বা নিশ্চিতারেভার্থ:। অতএব বোধবিবণার নতু জীববং ক্যাচিৎ অববোধেনাপি বুজারেভার্থ: ॥ ১৪ ॥

বঞ্চাতাব্বেতি। অস্থবিগমেংপীতি। তদানীস্তনতন্মাত্রশ্বশুল্প ব্যক্তিছে। বিবশা ইতি। তদিছোং বিনা কেনচিং

बिवियनाथठकवर्छी ।

কুরঃ। যত্র ব্যাপিতোধর্ম: কর্তিচিদপি ন ত্রিয়তে ন নশুতি। কিভারাধনরপেণ পরিণমতি। কামার্থতা ধর্ম: কামং দভা নশুটীতার্থ: ১০০ ঃ

এবসুপাসনাং ছিবিধাঃ ভক্তানাং নিরূপা পূর্ব্বোক্তলকণং জ্ঞানি ভক্তরোক্তপান্তং অরপবরং প্রণমতি স্ব্রনা অরপটিতত্তেনৈব অগত্তোনেব নিপীতো ভেলে মোহসমুলো বভততৈ বোধক অরণাত্তনত হেতুর্ধিবণা বৃদ্ধিবতততৈ নির্বিশেব অরণার নমশ্চক্রম করবাম তথা বিশোভবাদি নিমিতাং বা মারা তলিরপি লীলয়া অবলোকনরপরা রাসঃ সভ্তোগো যত তত্তি স্বিশেব অরপার বহা হে নিমিত্তকারণরপ লীলয়া রাসো গোপীজনসকতো লাস্যবিশেবো বত্ত তত্তি । পরার্দ্ধান্ত গোপবেশা মে প্রভালাবির্বান্ত্বতি প্রত্তা । কামত্বান্তি পূল্প প্রদর্শবন্তমিতি পূর্বেশিক্তশ্চ স্বিশেব অরপেরপি মধ্যে শীর্কান্তর্গত প্রাপ্তিশ্বং পরমাশ্রন্ত জ্ঞাপিতং । ১৪ ।

উক্তৰক্ষণোপাতোপাসনাজানগৰ্পণি বিনা থামাতাসমাজত এব পত্তুলোভোপি জনেতাঃ অপ্ৰদায়িকেন প্রমক্ষণৈখর্যমাচ-কাবঃ স্বিশেষস্থল্পএৰ অ্ঞাপত্তিং বিজ্ঞাপয়তি বতেতি। অব্তারাদি সদুশানি ততুলাশকীনীতি সন্দর্ভঃ। যথা অব্তারাদীনাং

জোমার প্রীভ্যর্থ যাগ যক্ষাদি করিয়া ভজ্জায় ধর্ম ভোমাতে অর্পণ করিলে সে ধর্ম কদাচ ক্ষয় হয় না, কাম নিমিত ধর্ম কাম প্রদান করিয়াই বিনষ্ট হইয়া যায় ॥ ১০ ॥

অন্ত এব হৈ ভগৰন্। তোলাহকই নমস্কার করি, তোমার আছা স্বরূপ চৈতত ছারা নিরন্তর ভেদ অম নিরন্ত হর। অপর জ্ঞানই তোমার আঞার অতএব তুমি পরাংপর। প্রভো। এই বিক্রি উৎপত্তি ছিভি এবং লয়ের নিমিত্ত যে সায়া তাহার বিলাস ছারাই তুমি জীড়া করিয়া থাক, দুদি ঈশর, আম্বা তোমাকে নমস্কার করি ॥ ১৪ ॥

প্রভো! বে সক্ল মানব প্রাণ বিয়োগ কালে বিবশ হইয়াও মদি ভোমার যে যে নামে অব-ভার, গুণ এবং কর্ম ইত্যাদির অমুকরণ আছে অর্থাৎ দেবফীনন্দন অবভারামুকরণ। সর্বজ্ঞ, ভক্ত- তেহনেক জন্ম শমলং বহদৈব হিছা যং যাস্তাপাস্বভয়ক্তং ভদকং প্রপদ্ধে # ১৫ # যোবা অহঞ্চ গিরিশন্ত বিদ্ধুঃ সমঞ্চ বিদ্ধান্তৰ প্রবায়হেডবং আক্ষয়লং # স্ক্রান্তর্ভ ভিত্যা ত্রিপান্তর এক:উক্ল প্রবোহতান্ত্রীয় মনো ভগবতে ভুবকচ্চনায় # ১৬ # ১৯

Burrin i

বভারবিড্ছন।নি দেবকীনন্দন ইত্যাদীনি গুণবিড্ছনানি সর্মঞো ভক্তবংসদ ইত্যাদীনি। কর্মবিড্ছনানি গোবর্ধনোদ্ধরণঃ কংসারিরিত্যাদীনি। অস্থবিগ্যেপি বিবশা অপি গুণতি উচ্চারমতি কেবলং। শমলং পাপং। অপার্ডং নিরতাবরণং গুডং বন্ধ প্রাপ্তবৃত্তি ॥ ১৫॥

ত্র ঋণাবতার কর্মাণি দর্শয়ন্ প্রশমতি যো বৈ একঃ ত্রিপাৎ ত্রঃ ব্রহাদয়ঃ পালাঃ করা বস্য প্রচ্যেকক উরবঃ প্রব্রোছাঃ
শাথোপশাথা মরীচ্যাদি মধাদি রূপা বভ তথা ভূতঃ সন্বর্ধে তছৈ ভূবনাকারার ক্রমার নমঃ কিং রূপা বরুধে আশ্বা শ্রমের
মূলং অধিচানং বভ তৎ প্রধানং ভিদ্বা ঋণত্রর রূপেণ বিভল্য ত্রিপাল্বমেবাছ আহং ব্রহা গিরিশক প্রাং বিভূঃ বিষ্ণুল্ভতি স্থিত্যভ্রব
প্রশারভেতবো বে বরং। এবং ত্রিপাৎ ভূষা বো বরুধে ইত্যর্ধঃ ॥ ১৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

কারণান্তবেশাপীতার্থ:। বশং কান্তাবিত্যমর:। তাদৃশশক্তিতে হেতুমাহ অবভারেতি। অবভারাদি সদৃশানি তত্তনু শাশকীনী-ভার্থ:। তত্ত্বাবভারবিত্যনানি নৃসিংহেভ্যাদীনি। গুণবিত্যনানি তক্তবংসলেভ্যাদীনি। কর্ত্ববিত্যনানি গোবর্জনধরেভ্যাদীনি। গুভং সচিদানক্ষরণং শীভগবন্তমেব। আত্মতন্বিভ্রার্থং বদাহ ভগবান্ গুভং। ত্রহ্মণে দর্শরন্ ক্লপমিত্যক্তে: ॥ ১৫। ১৬॥

वी क्षिमाथहळ वर्छो ।

বিজ্বনং নটাদিবপুক্রণমণি বৈজ্ঞানি। বহা অবতারাদি বিজ্বনানি প্রাতৃপুত্রাদিজীহবিশের বাচকহাদবভারাদ্যনপ্রশাণীত্যর্থঃ।
তত্ত্ব কুজোরং রামোরং নারারণােরমিত্যাদীতাবতার বিজ্বনানি দরাসু দীনবন্ধ দিনাদর ইত্যাদীনি গুণবিজ্বনানি গোবিলো গিরিবরা মধুপুদন ইত্যাদীনি কর্মবিজ্বনানি নামানি বে জনা অজামিলাদর ইব প্রাদ্বিগমে বিবশা জাণি গুণতি কেবলম্জাররক্তি। শমলং পাগং অপাবৃতং নিরভাবরণং থতং স্চিদানশ্বরপং ভগবত্তং আয়তত্ত্বিভিজ্ঞর্থং বদাহ ভগবান্তং। এক্ষণে
দর্শন রূপমিত্যত্ত তবৈব ব্যাধ্যানাং ॥ ১৫॥

ন কেবলমহমেক এব প্রাপালে জাণিতু মহদাদীনাং সার্বেষামেব ছক্ত উত্তত্তাৎ ছৎ প্রাণতিক্লচিতৈবেভাজিবাপ্তরন্ সমভতি। বাে বৈ একঃ ত্রিপাথ অবাে অজাদরঃ পালাঃ করা বছ উরবাে মরীচাানি মধানরঃ প্রারোঃ শাথোগণাথা বছ তথা ভূতঃ সন্বরুধে। কিং কথা আঅম্লং আত্মকারণকং প্রধানং ভিতা গুণত্রর রূপেন বিভল্প ত্রিপালমেবাহ অহমিত্যালয়ঃ হিতাানিছেত্ব ইতি বথা সক্তর নির্দ্ধেনঃ। অত বিভূর্বিফ্: স্বর্গেড বিফো স্বরং পদপ্রেয়াসাৎ অক্সলির্দ্ধিরীর বিকোম জি গুণনিবন্ধনঃ স্বতা ভেন ইতি জ্ঞাপিতং। বহা ব এব অহমানরঃ য এব আত্মনঃ স্বভাগি মুলং কারনং। তথা ব এব ভিতা স্বশক্তিক্লতং ভেনং প্রাণ্য ত্রিপাথ প্রথমং জিলোক্রপং তত উক্পারেহাই চভূর্মণ লোকর্নগঃ তবা ক্রাবাকারার ক্রমার নম ইতি বিশ্বস্থাকং। ১৬

বাৎসন্য গুণের অনুকরণ। গোবর্জনধারী, কংসারি কর্মের অনুকরণ, তৎসমুদায় কেবল উচ্চারণ করে, তাহা হইলে বহু অন্মের লাপ তৎকণাৎ পরিহার পূর্বক নিরন্তাবদ্ধণ সভ্যক্ষণ পরসম্ভব্ধ প্রাপ্ত হয়, অভএব ভূমিই সেই ব্রহ্ম, তোমার শরণ গ্রহণ করিলাম ॥ ১৮৫॥

হে তপ্ৰন্! তুনি ত্ৰনাকার বৃক্ষ, তুনি শ্বঃ যে স্কোর শর্মাহ প্রকৃতির অবিষ্ঠান চনই প্রকৃতিকে হেজনিমান নর, রক্ষ ও তনোরাপ তিন ওপে বিভক্ত হইয়া ঘণাক্রমে স্পৃতি হিতি প্রক্রের নিমিত নালি আলা, নিব প্রং বিক্ আনাদের তিন জনকে ভিনটা পাদ স্বলপে হারণ কর্মত জিপাহ হইয়া বৃদ্ধিন প্রকৃতি হার প্রভাৱে। প্রভাৱ তিনটা পাদ ঘটে কিন্তু উহার প্রভ্যেকে সরীতি প্রভৃতি সুদ্ধিন গণ এবং মন্ সকল ভূমি ভূমি শাখা প্রশাধা আছে, অতএব হে প্রভো । ভূমনক্রম শ্বরপ বে তুমি, তোমাকে নমস্কার ক্রি ॥ ১৯ ॥

লোকে। বিকর্মনিরত: কুপলে প্রস্থত: কর্মণারং মুগুরিতে ভবদর্চনে সে।
যতাবদত্য বলবানির জীবিজালাং সদ্যদিহনত্যনিষিবার নমোহস্ত তথ্য ॥ ১৭ ॥
যত্মাবিভেন্যর্হমপি বিশেষার্থ বিষ্যামধ্যানিত: সকল লোকনমন্ততং যথ।
তেপে তপো বহুসবোহ্বক্সকংসমান স্তব্মে নমো ভগকতেহধিমধার তুভাং ॥ ১৮ ॥

अध्यक्षामी ।

এবং গুণাবভার কর্ম বিভ্রম মৃত্যু ওতিওব কালাখ্যং রূপং তৎকর্ম চল্পীয়ন্ প্রণমতি লোক ইতি ছাত্যাং। বিকর্মরতঃ বিক্রম কর্মনিষ্ঠঃ কুশলে হিতে যে আছীয়ে ক্যুদিতে ছবৈৰ সাকাল্লকে গুণাবদর্ভন রূপে কর্মণি। উক্তংহি গীতাত। যং করোবি যদপ্রাসি বজ্জ্বোসি দদাসি বহঁ। যারপভাসি কৌশ্বের তৎ কুরুব মদর্শনিষ্ঠি। ভাষিন্ প্রমন্তঃ আদত্ত চিত্তো যাব্যর্ভতে তাব্দত লোকত অসিমিশার কালার ॥ ১৭ ॥

আতাং তাবং লোকত কথা। যত্ৰাং কালাখ্যালতঃ যদ্ধিরাজাবহারি বিকাং হামং তলারচোপি বিভেমি। ভীতক সন্ ভামেবাবককংশেমানঃ প্রাপ্ত মিজন্ তপতপ্রধান্। কণভ্তঃ রছস্বং বহবং স্বা যাগাঃ সংবংসরা বা যত বহুন্ যাগান্ক ভা বহুন্ সহংস্রান্বা তপতপ্রবানিতার্থঃ। অধিমধার মধাবি কর্মাধিলাতে ॥ ১৮ ॥

क्रममन्दः।

বিকশ্ম ভগবছহিন্দু বং কর্ম। অর্জনং পঞ্রাত্রাক্তান্তং। পঞ্রাত্তক কুৎকত বক্তা তু ভগবান স্বয়মিতি মোক্ষধর্মাৎ ৪১৭।১৮॥

গ্ৰীবিশ্বনাগচক্ৰবতী।

বিশ্বরপ্তম্প বিশ্বনিষত্ কাল্রপত্বন প্রণয়তি লোকো মহ্বাদিঃ কুশলে কর্মণি প্রমন্তঃ অক্তাবধানঃ। কুশলং কর্মৈর কিং তত্ত্বাহ ভবদর্জনে নম্ স্বধর্মেণ তমভার্জ্যে ভানিনে। জ্ঞান বজেন য়লভি জ্ঞানবিগ্রহ্মিত্যুকেণ্চ কর্মজ্ঞান যোগাভায়িপ ভগবদর্জনমেব ভাদিতি কেচিছাচক্ষতে তত্ত্বাহ স্বহ্নিতে স্বইন্ধর মদর্জনমিনমেবেতি সাক্ষান্তকেঃ যে বৈ ভগবতা প্রোক্তা উপারা আত্মলব্রে ইত্যেকাদশাং। পঞ্চরাত্রভাবং কর্মত বজাত্ব ভগবান্ স্বয়মিতি মোক্ষধর্মান্ত স্বে স্বীরে স্বক্তব্য ইত্যবং। তদেবং স্বভ্জনোক্ষত্যোহন্যেবে কাল্যাধিকার ইতি দ্যোভিতং অস্য অভজ্বনাক্ষ্য জীবিতস্যাপ্যাশাং কিমুত্ ভোগাদি বাহামিত্যবং। অনিষ্কার কাল্য । ১৭ ।

উক্ত কালবলবন্ধসা সীমামাহ। বশাং কালাং অহং ত্রন্ধা হিপরার্দ্ধাবহারি বিফাং স্থানং সভালোকং। অধ্যাসিভোপি বভেমি তথা অবক্রকংসমানঃ অবরোদ্ধং বং কালং বশীকর্জুমিজন্ বহুসবঃ বহুবঃ সবা বজা বস্য তথাভূতঃ সন্ ওপক্ত অহংজ্বে। তদাপি বিভেমীতার্থঃ। নমু কালবশীকারার্থং বহুবঞ্চ প্রত্তী তব ক্লা কা যুক্তিরাসীত্রনাহ অধিনধার মধানামবিঠানে তুত্যং নিমঃ। মধানামবিঠাভূত্তব মধৈবের ব্লমেন কালোনে বশীভবিভিত বুদ্ধোভার্থঃ। প্রত্যুতকালেনৈবাহং বশীক্তঃ সংপ্রতাপি বিভেম্ভত্তব শুদ্ধভিত বিনা কালো নলেখা ভবতীভানা জাতভব্বেছিতঃ পরং শুদ্ধানৰ ভক্তিং ব্রন্থীতি ধ্বনিঃ ৯ ১৮ ৪

হে বিভো! লোক অর্থাৎ ক্ষুষ্যানি বিরুদ্ধ ধর্মে আসক্ত হইয়া সাক্ষাৎ তোরা কর্তৃক কথিত ভোষার অর্চন রূপ কর্মে অমনোযোগী হইরা থাকে, তথম যে বলবান্ কাল হইতে জীবিভাশা সদ্যঃ ছেনিভ হয় স্থাম দেই কাল স্বরূপ, ভোষাকে নম্কার করি॥ ১৭॥

হে ভগবন্! বে ছান বিপন্নাৰ্কাল বাবৎ অবহান করিবে এবং সমস্ত লোকে মাহাকে নমন্ত্রীর করে সেই সভ্য লোকে অধ্যাপীন হইরাও আমি যে কাল হইতে ভীত হই এবং তোমাকেই আত হইবার আকালার বছবিধ বোগের অস্তান পূর্বাক বহু সক্ষণের ভগভা করি, ভূমি সেই কালবরূপ, অপন্ন ভূমি পেই বাগাদি কর্মের অধিভাতা, অভএক তোমাকেই নদকার করি ৪ ১৮ ৪

তির্বঙ্ মপুষ্য বির্ধাণিষু জীবয়োনি**হান্ধেন্দ্রাত্মকৃতদেভূপরীপার। য:।**কোনে নিরস্তবিষয়াপ্যবরুদ্ধদেহত সৈ নমো ভগবতে পুরুষোভ্যায় । ১৯ ।
যো বিদ্যোগুপহতোপি দশার্দ্ধ রক্তা নিজামুবাহ ভঠরীকৃতলোক্যাত্র:।

क्षेत्रकाषी ।

ইনানীং তত্তৎকাল ভাবি লীলাবভার কর্মানি দর্শররাহ। ভির্বাগানি জীব বোনিরু স্বেছরা স্বীকৃত মূর্জিঃ সন্ স্বকৃত ধর্ম মর্ব্যাদা পালনেজ্যা বেমে বস্ততঃ স্থানন্দাস্কবেনৈব নিরম্ভ বিষয় স্থাধানি যঃ অভএব পুক্ষোন্তমঃ তত্ত্বপাধি ধর্মান্সংস্পর্শাৎ। তত্ত্বং গীতাস্থা বস্থাধা ক্ষমতীভোহমক্ষরাদলি চোত্তমঃ। অভোক্তি লোকে বেদেচ প্রবিদ্ধান্তম ইতি । ১৯ ৪

ইদানীং দৃশাসনানামেৰ মূৰ্জিং প্ৰণমতি বোহবিদাৰেতি ৰাজ্যাং। দশাৰ্দ্ধাঃ পঞ্চরুত্তরো ৰস্যা তরা অবিদারা নিজাহেতৃত্তরা অনভিত্তোপি ৰো নিজামুবাহ তবৈ তে নমঃ ইত্যুত্তরেণাবরঃ। অঠরীকৃতা উদ্বে প্রবিলাশিতা লোক্ষাআ লোক্ষিতির্বেন অহিবেৰ ক্লিপু: শ্বা তস্যাঃ স্পর্শোহ্সুক্লো বস্যাং তাং নিজাং। তীমানামূর্মীণাং মালা বিদ্যুত্ত বদিন্ অস্তর্জনে নিজাণস্যা

'क्यममर्चः।

নিরতা বিষয়া জীবগোচরা অর্থা: প্রাকৃতা বস্থাৎ। আন্মেজ্রা ভক্তশিশাদ্যিবরা অবক্রবেছ: প্রকৃতি চমূর্তি: в ১৯ в তস্যাবভারিশ: প্রবোত্মবৈদ্যব দৃষ্টাং নীলামহুমোদতে যু ইতি। জনস্য যরিজাত্মধং তদেব লীল্রা ত্বিন্ প্রকৃতীরন্। ভ্রাক্ত

@विश्वनाथठळवं ही ।

তদেবং অগজপথেন তরিষত্কালরপথেন চ প্রথমানানীং পরমোপাস্য সভিদানক্ষরপথেন প্রথমতি। তির্যাগানির বেছবৈর অবতীর্ণ ইতি শেবং। অক্তরেক পরীক্ষা রেনে আত্মারামবাং ত্যকবিষয়প্রথাপি পত্রং পূলং ফলং ভাষং বা নে জল্যা প্রবছতে। তদহং ভক্তাপ্রতমন্ত্রী প্রথভাত্মন ইতি অক্ত মর্যাদা পালনার অভক্তোপনীত প্রক্ চক্ষন শ্বাছি।প্রেগােষ্ব রেনে নাহমায়ানমাশানে মন্তকৈং সাধুভির্নিনেত্যাত্মায়ামবেপাপূর্ণকাম ইবেতি ভাবং। প্রগানীনাং প্রাকৃতবিষয়বেশি ভগবনর্থবিনিষ্কত্বে সভি তংকণ এবাপ্রাকৃত্বং স্যাদিত্যেকাদশে ব্যক্তীভবিষ্তি। অবক্ষরকেং ভাগুরিমতে অবেত্যকারলােশে বিভূষাদ্বাবৃত্তদেহং সভিদানক্ষ শরীর এবেত্যর্থ:। বহা আত্মকৃতসেতােং অভক্তবভাহরপ মর্যাদায়াঃ পরিসর্কতাে ভাবেনেক্ষা প্রাপ্তিয়া
বীবশোদয়া দালেরবিন্যরপি ভকৈং প্রগররসন্যা অবক্ষরদেহং অভং সর্কোৎকর্ষাৎ মহৎস্করাদ্যতািমি পুক্রেভ্যোপ্রেমারেভি
কৃষ্ণাব্যারএব ভাৎপর্যাং। বহুকং। বলাং ক্রমভীত্যাহমক্ষরাদ্পিচোত্তমঃ। অভোদ্ধি বেদে লোকে চ প্রথিতঃ পুক্রেভিম
ইতি ৪ ১৯ ৪

ইনানীং দৃশামানাং নিজোপালাং মুর্বিং প্রাণমতি দালাং। দশার্দ্ধাং পঞ্চর হবো যলা ভারা অবিনারা নিজাবেতু ভূতরা অনভি ভূতোপি নিজামুবার ভাষাদিয়ত্তে অরপশক্তিমবাের নিজেতি ভাব:। জঠরাক্তরা উদরে প্রবিলাপিতা লোকঘালা লোকপরপার। যলা ব:। অবিরেব কশিপুং শবাা তলা প্রাণিহসুক্লো ঘলাভাং। ভীমোর্ঘিমালিনি প্রাণার সমুজে জনলা প্রাকৃতলোকলাাপি জলমধাত্ত কোমল শ্বাাশারিনঃ অধং ভবতীতি বিবৃহন্ লোকবলীল এব দং ভবলীতি ভাব:। যথা প্রশাষকালেশি জনমান ভর্বে

হে বিভো! তুমি স্থেচহাক্রমে তির্যাক্, মনুষ্য এবং দেবাছি জীব যোনিতে শরীর এহগ্ন করিয়া স্থীয় আনন্দ অনুভব নিমিত্ত বিষয় স্থা সম্বন্ধ বস্তুতঃ না থাকিলেও আপনার কৃত ধর্ম মর্যাদা পালনে-ছোয় ক্রীড়া করিয়া থাক অতএব তোমাতে উপাধি এবং ধর্ম ইত্যাদির সংস্থাপ না থাকাতে ভূমি

ভূত না করিলেও তুমি প্রকার বাতি বিশিষ্টা যে অবিদ্যা নিয়ার হৈতু তাহা তোমাকে অভি-ভূত না করিলেও তুমি প্রদায় কালীন ভয়ত্বর তরত্ব সহুল, অনুমধ্যে সূর্প শুরুষয় শুন্তন করিয়া ভাহার স্পর্ণ হথে নিয়োগত হইয়াছিলে, ভংকালে এই সমস্ত লোক তোমার উন্নত্ত হইয়াছিল। তোমার ঐ প্রকারে নিয়েত হইবার অভিপায় এই যে, জনমধ্যে নিয়োগ অবিবেকি জনের নিয়া হথ কি প্রকার শন্তর্শনি কিনিপুশার্শ কর্মার জীমের্শির বিনিধি জনক ইথং বির্গৃন্ । ২০ ॥

যদাভিপজ্জ ব্যাদক্রাস্থান্ত লোক জ্বেরাপ করাণা ফল্পু গ্রেণে ।

তিমে নমন্ত উদর্গ ভবার যোগনি জাবসান বিকসদলিনেক শায় ॥ ২১ ॥

সোহরং সমন্তক্রপতাং হাছাদেক আল্লা সন্তেন যন্ত্রতে ভগবান ভগেন।
তেনৈব মে দৃশমন্ত্রপুশতাদ্যথাহং অক্যানি পুর্বেবদিদং প্রণত প্রিয়োহসোঁ ॥ ২২ ॥

विभवतामी।

বিবেকিনো জনক নিজা প্ৰমীৰূসিতি বিষুণ্ন প্ৰদৰ্শয়ন্ উপৰ্কলিভাৰ্থঃ। অভএবাত্তৰ্জনাদি বিশেষণানি। যথা পূৰ্বকলে প্ৰায়ত জনত বিপ্ৰায় ক্ৰথং বিষুণ্ন জ্যোজন । তথা জু পলোপকালায় স্বয়ং ছংগ্ৰহণতি ছংখং সোচ্বায়িতি ল্যোতনাৰ্থং বিশেষণানি ॥ ২০॥

কিঞ্ছ বছ নাজিণল্পমেৰ ভবনং ভাষাৎ লোকঅৱসূপকরণগৰত। বছা লোকঅরত স্ট্যাদি ছারেণোপকলোডীতি ওপা ভাদ্-শোহং যদম্প্রছেশাসং। উদ্ধ্রে ছিডঃ ভবঃ সংসার প্রপঞ্জো হত। যোগনিজাবসানে বিক্সং নলিনবদীক্ষণং যত ॥ ২১ ॥

এবং তথা প্রার্থনৈতে লোহরমিতি চতুর্তি:। বন্দেন সংখন জানেন তগেন ঐশর্যোণ চ মৃত্রতি প্রথরতে বিশ্বং। দৃশং প্রজ্ঞাং অফুপুশতাৎ বোজয়তু। বথাহং প্রষ্টুং ক্ষমো তবিবামি। বতঃ প্রণতপ্রিরোনৌ অহক প্রণতঃ নচানাঃ প্রার্থনীয়োতি। বতঃ স্থব সমত অগতাং স্ক্রং। বতোহসৌ একৈছিলুস্তঃ আছা অন্তর্গামী । ২২ ।

ক্রমসন্মর্ড:

र्शिमान्नानचः प्रथन्नान्याचः **চ फरानोक्यारक्त्राह अञ्चलन दे**लाविना । २०। २১। २२ ।

विविनां वहक्वारी।

সমূল্তেংশি সর্পশ্যারামশি অধেন বং নিজাগীতি সর্বকালসর্বাদশ সর্বাস মির্তিরক্ষের নান্য ইতি ভাব:। অধং বিবৃণ্রিতি কালদেশ সক্ষতোভ্যযুক্তোপি নিজাপুর্বি অনঃ অধ্যেব নিজাতীতি ॥ ২০ ॥

আসং অভ্যং লোকত্রমনে উপকর্মনাজ্ঞাকারি বস্ত স:। যথা ভ্টানি থারা লোকত্রমন্তোপকারী। উদরে স্থিতো ভব: সংসার প্রপঞ্জো বস্ত ভবৈ। বোগনিজাবসানে সংগ্রতি রাজ্যন্ত ইব বিকসম্বনিম্মির ঈশ্পং যত ভবৈ। ভেন হে মংগ্রভো কপাপারাবার জাগৃহি জাগৃহি কিছরোহ: মঞ্চনারাজ্ঞিকং করবাধীতি ভাবঃ ঃ২১॥

এবং তথা প্রার্থনৈতে সোহরমিতি চতুর্জি:। সমস্ত জগতাং প্রাক্ষতাপ্রাক্ষতামাং স্কর্থ পালকঃ আত্মা নির্পাধিপ্রেমান্দানং। এবজ্তভাজভাভাবাদেকঃ বন্ধমাৎ স্ক্রে প্রদেশ পালনলকশেন সমস্তজগন্তোর প্রাকৃতানি মৃড্রতে স্থরতি। ভগেন শীর-বিড্রের্থাণ অপ্রাকৃতান্ ভক্তজনানপি মৃড্রতে। তথাৎ তেনৈর স্বেন কিকিয়াবেশ ভগেনত মে মম দৃশং প্রজাং প্রাকৃতীং ভক্তিমত্বাদংশোপ্রাকৃতীক অমুন্দাত্ পালরত্ বধাহং ক্রক্ষামি প্রাকৃতান্ মরীচ্যাদীন্ ব্রটুং অপ্রাকৃতান্ নারদাদীংশ্চাবির্জার রিড্রু জাভামি ব্রেহ্রের্প্রাকৃতি প্রিরঃ ॥ ২২ ॥

हम जाहा है अमर्भन कताहै त वर्षा ए ज्यांतिश वाकि निगदक के अकादत जै भहांन कतित्व ॥ २०॥

হে ন্তবাৰ্ছ! আমি ত্রিলোকের স্ট্যাদি ধারা উপকার করিয়া তোমার অমুগ্রহে ছদীয় নাভি পদ্মরূপ সন্ম হইতে উৎপন্ন হইয়াছি। প্রভা ! এই সমন্ত সংসারপ্রথাঞ্চ প্রনায়কালে তোমার উদর মধ্যে অব্দিত ছিল,তথন তুমি নিজিত ছিলে,যোগ নিজার অব্দানে এখন তোমার নয়নামুক্ত বিক্সিত হইল, তুমি অচিন্তা পুরুষ ভোমাকে কি তাব করিব, কেবল মমন্তার করি॥ ২১॥

ব্রহ্মা এই প্রকার তাব করিয়া স্বরং প্রার্থনা করিতে লাগিলেন, সেই এই ভগবান্ সমন্ত জগত এবং স্কৃতি অনুস্তাত ও সকলের অন্তর্মানী, তিনি আপনার যে জ্ঞান ও ঐশর্য্য আনাতে বোজনা করুন, আমি যেন এই জগৎ প্রবিৎ হজন নিরতে সক্ষ হই। সেই প্রভু প্রণত জনের প্রিয়, ইহাতে প্রণত ব্যক্তিদিগকে অভিলয়িত প্রদান করিয়া থাকেন, আমিও প্রণত হইয়া এই প্রার্থনা করিতেছি, আমার এই প্রার্থনা পূর্ণ করুন, ইহা ভিন্ন আমার অন্য প্রার্থনীয় নাই ॥ ২২ ॥

এম প্রপন্ন বরদো রময়াত্মশক্তা যদর্থ করিষাক্তি গৃহীতগুণাবভারং ক্রিক্টার্ক কর্মান করিছে ক্রিক্টার্ক কর্মান বিজ্ঞান করিছে বিজ্ঞান ক

विषयभागी।

আত্মশক্ত্যা বনবা সহ বন্ধৎ কর্ম কবিবাতি। স্ববিক্রমং স্বস্ত বিক্ষোরের বিক্রমঃ প্রভাবো বন্মিন্ ভবিদং বিশ্বং ভদাঞ্জরা স্থলভোগি মে চেডঃ স এব যুবীত প্রবর্জনত্ন কর্মাশকিং ভৎক্রমং শসনক বৈষম্যাদি পাশং বধা বিজ্ঞান গুল্লাফি । ২০ ৪

অন্তাস ললে নতো বতা নাভিত্রাধিত্যার। বিজ্ঞানে শক্তিবতা সহত্ত্যাক্ষক । জিত্ত লভাজনানী । অতা স্থানিদং বিষং বিভাগে বিভাগে বিশ্বাধিত আন্তামন বিভাগে বিশ্বাধিত আন্তামন বিভাগে বিশ্বাধিত আন্তামন বিভাগে বিশ্বাধিত আন্তামন বিশ্বাধিত আন্তমন বিশ্বাধিত আন্তামন বিশ্বাধিত আন বিশ্বাধিত আন্তামন বিশ্বাধিত আন বিশ্বাধিত আন্তামন বিশ্বাধিত আন বি

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

এব ইতি। রময়েতি রমাধারা অরপশক্তা ন তুমায়াশক্তা হেতুনা। গৃহীতগুণাবভার: গৃহীতা গুণা ভক্তবাৎসল্যাদরে। বেরু তালৃশা অবভারা বসা স:। অবিক্রমমিতি। ব্যক্তিম্বরম্বনের বিখং স্যাৎ। ওড ক্টেক্তির মরা তৎ কর্তুং শক্যং তত তথা তৎ প্রার্থনক ময় যুক্তমেবেতি ভাব: ॥২০॥

ইনং মহাপাতকাত্মকপর্যান্তং ক্ষতো মম বেদোচ্চারণকপং ক্রমতেলো মা কুপাডাং। যথা সাধারণব্রাহ্মণানাং ছেলরা ক্রমতেজ ইতার্থ:। মারীরিবীষ্টেতি রিব হিংসায়ামিতাসা যঙ্কুগন্তলিঙি কর্মকর্তরি ক্রপং ছাল্লসং ॥ ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮।

अविधनाषठकावची ।

পুনশ্চ রক্ষোগুণন্যা। প্রেইর্জিডাং স্থীরতজ্ঞেরভাগরং প্রার্থরতে। এব ভবান্ প্রণরার গ্রুং এতব্রলোজ্ভার্ব:। রমরা শর্মপৃত্তরা নভূ মারবেতার্থ:। অতো গৃহীত গুণা বৃতস্কর্মপাক্তার জক্তবাংসল্যাদি গুণা অবভারা হল্য নঃ। ভারিন্ ধরোজরগাদৌ কর্মণি মম চেতো যুঞ্জীত প্রবর্তরত্। মম কথভূতসা স্থাবিক্রমং স্থলা স্থপ্রেজিমঃ প্রভাবো হারিন্তনিবং বিশ্বং স্থলভোলি ভেম স্থান্তী বম চেভো নাসক্ষত্ কিছ ভারীলাকধারামেবেতার্থ:। কর্মপন্য স্ত্রীবং বৈষ্যাদিপাপং ভাকামি ॥ ২০ ॥

কিঞ্জগৰংক্ত বৈশ্বাসিকোঃ কণমাজেপালিন্ মন বং প্রবেশতং ধর্ বেলাভ্যাসপ্রসালাদেব। বহুজং বেলাভ্যুত্ত বেলাভ্যুত্ত বাবেলাভ্যুত্ত বাবেল

অপর সেই ভগবান্ শরণাগত জনগণের বরপ্রদ, তিনি আত্মশক্তি শ্বরূপ মায়ার সহিত যে যে কার্য্য করিবেন, আমি তদাজায় তাঁহার প্রভাবান্তিক এই বিশ স্তিতে প্রবর্তমান থাক্ষেত্ত আমার চিত্তকে সেই সমস্ত কর্মে নিযুক্ত করুন, আমি যেন ঐ সকল কর্ম্মে আসক্তি এবং তৎস্কৃত বৈষম্যাহি রূপ পাল পরিত্যাগ করিতে পারি ॥ ২৩॥

তাহার অনন্ত শক্তি, তিনি অলমধ্যে শরন করিলে তাঁহার নাভি রূপ ব্রুদ হইতে আমি মহন্তবাভি-মানী হইয়া উৎপদ্ধ হইয়াছি এবং এখন তাঁহার মূর্ত্তি অরূপ এই বিশ্ব বিস্তার করিতেছি, আমার প্রার্থনা এই যে তাঁহার প্রসাদে আমার নিগম সম্বন্ধীয় বাক্যোকারণ যেন সুপ্ত না হয় ॥ ২৪ ॥ रिगरिगावनम् खक्करणा क्षणवाम् विश्वसं रखेनिचारकम नग्नाम्करः विक्रक्षम् । क्षणात्र विचिविकत्रोत्रिक रमाविवानः सीर्थरा जित्राश्निनप्रकार भूक्षमः भूत्रणिः। २०॥ खिरमस्त्रित्र केरोकः॥

শ্বসন্তবং বিশাবৈদ্যবং তপোবিদ্যা স্থাধিতিঃ। যাবদানো বচঃ স্তন্থা বির্থান স্থিনবং ॥ ২৬ ॥ অথাভিপ্রেতস্থীক্য জ্বলণো মধুসূদনঃ। বিষশ্বচেতস্তেন কল্লব্যতিকরাস্ত্রসা। লোকসংস্থান বিজ্ঞান আত্মনঃ পরিথিদ্যতঃ। তুমাহাগাধ্যা বাচা কশ্মলং শ্ময়নিব ॥ ২৭ ॥ শীভগবাসুবাচ ॥

मा বেদগর্ত্ত গাল্ডক্রীং দর্গ উদ্যম্মাবহ। তল্ময়াপাদিতং ছত্যে যন্মাং প্রার্থয়তে ভবান্ ॥ ২৮॥

विषद्रशामी।

বিবৃদ্ধ প্রেমশিতেন বিজ্জান্। বিশ্বসা বিশ্বসা উত্তবার চকারাদশাদজ্ঞহার চোপার ৪২৫ ৪
শব্য সভবো বশাতং। তপং শারীরং বিদ্যা উপাসনা। সমাধিবৈকাঞাং। তৈর্নিশামা দৃষ্ট্র বথা শক্তি ছালা প্রান্তবাদ্ধির আগ্রনো লোকসংখান বিজ্ঞানে পরিবিদ্যাতো অন্ধণেইভিপ্রেতমালকা ভ্যাহেতি হরোরহরঃ। তেনু প্রল্গেনে বিষয় চেতসং কশ্লেং মোহং শম্মনিবেতি সমন্ত যোহোপশ্যনং দর্শরতি ৪২৭ ৪

হে বেলগর্ক তন্ত্রীং বিষাদক্ষতমালসাং মাগাং তেনৈব মে দৃশমস্থূপুশতাদিজাদি যৎ প্রার্থরতে তৎ অপ্রে পূর্ব্ধমেব সম্পাদিতং ১২৮

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

কিঞ্চ প্রভাঃ কুপাক্টাক্ষকৃপানিবেশাভামেব দাস্যা নিঃসংশয় আনন্দো ভবেদিতি ভাবেব প্রার্থিত। সোসাবিতি বিজ্-ভন্ বিজ্ভখন নোংমাকং বিশ্বিন্ সর্বানের বিজয়ায় স্ট্যাদির প্রাক্ষবাভাবায় চকারাৎ পুর্বোজ্বাঞ্তি সিদ্ধেচ। মাধ্যা মাধ্যাম্যা বিশং স্বান্তি নিদেশম্যা। গিরা ॥ ২৬ ॥

খন্য সম্ভবো বখাজং তপং শারীরং বিদ্যা আচার্য্য হৈত্যবপুৰা খগজিং বানকীতি রীত্যা আক্ষিকক বিশ্বাপ্ততমন্ত্রাপাসনা সমাধিশ্চিত্তকাগ্রোণ ধানং তৈনিশামা দৃষ্টা বথাশক্তি ভখা কুপাকটাক্ষস্যাত্পগন্তাং খিল ইব বিল্লাম ॥ ২৬ ॥

করবাতিকরাজ্বসা প্রাণরকালমিলিতাগভকজনেন হেতুনা বিষয়চেতসং তথা আত্মনং ত্বস্য লোক্নিং দেবতির্যাগাদীনাং সংস্থানং সমূচিতত্বভাবতয়া নির্মাণং স্থাবরাদিপরিপাটী তবিজ্ঞানে বিশ্বতো ব্রহ্মণোইভিপ্রেতং অবীক্ষ্য আছো ত্যাহেত্যবয়:। কথানং মোহং শমর্রিবেতি সমন্তমোহোপশ্যমং দুর্শরতি ৪২৭ ৪

ভত্তী মঞ্চানং মাগাঃ বেদগর্ভেতি নহি সর্কবেদবিজ্ঞস্যাজ্ঞানসুচিভমিতি ভাবঃ। নহু স্বসা স্টি সামর্থ্যে সংশ্রানো স্থি

অপর সেই পুরাতন পুরুষ ভগবান অভিশয় দরাবান তিনি প্রয়ন্ধ প্রেম সহ হাস্য ছারা আপনার নরমাস্ত বিক্সিত করিয়া এই বিখের উত্তব এবং আমার প্রতি অমুগ্রহ বিন্তার নিমিত গাজোখান পূর্বক হুমধুর বাক্যে আমার বিষাদ অপনয়ন করুন। ২৫।

বৈজেন কহিলেন, বিচ্ন। জ্বলা এই প্রকার তপস্ত। উপাসনা এবং সমাধি ধারা আপদার উৎপত্তি স্থান ক্ষমণ ভগবান্কে অবলোকন এবং ক্যা শক্তি নন: ও বাক্য ধারা তাঁহার তব করিরা আতি বশত: কান্ত হলৈন। ২৬ ।

ভগৰান বেধিলেন, জন্মা আপনার লোক রচনা বিষয়ক বিজ্ঞান নিষিত্ত বেদ করিতেছেন এবং অসম সদিস অবলোকনে উহার চিত্ত অভিশয় বিষয় হইয়াছে, অভএব ভাষার অভিগ্রায় অবগত ইইয়া গভীর বচন বারা তদীয় মোহ শান্তি কর্ত কহিছে সাধিলেন ॥ ২৭ ৪

ছে বেদগর্ত। বিবাদ করিও না, হারিয় নিমিত ভাষনা ভ্যাপ কর, তুনি আমার নিকট যাহা

ভূয়ন্ত্বং তপ আতিষ্ঠ বিদ্যাধিক মদাঞ্জাং। তাভ্যাৰন্ত্ম দি জ্ঞান্ লোকাৰ্ ক্লক্ষ্তপাৱতান্ ॥২৯॥
তত আত্মনি লোকেচ ভক্তিযুক্তঃ সমাহিতঃ। ক্রফীসি মাং ততং জ্ঞান্ নিয় লোকাংল্যাস্থনঃ॥৩০॥
যদাতু সর্বাভ্তেষ্ দাক্ষ্মিমিব বিতং। প্রতিচক্ষীত মাং লোকো জহাতহে ব ক্যালং॥ ৩১॥
যদা রহিতমাত্মানং ভূতেজ্ঞিয়ন্ত্রণাশয়ৈঃ। স্বরপেণ ময়োপেতং পশ্যন্ সারাজ্যক্তি॥ ৩২॥

व्यवस्थामी।

তি হিব্যাক্ত ন বানামীতাত আহ ভূর ইতি । ২৯।
ভিজিমুক্ত সমাহিত্ত সন্ আমুনি স্বান্ধি লোকেচ মাং ততং বাাপা স্থিতং দ্রানী দ্রকাসি আন্ধানা জীবাংশ্চ । ৩০।
সর্ব্বে স্বান্ধিন মোহো নিবর্ততে ইত্যাহ তদাম্বিতি । প্রতিচন্দীত পঞ্জেৎ । ৩১ ।
ভাগত স্বিধ্যাক্ষান নিবৃত্তে মৃত্যুতে ইত্যাহ ব্যাহিত । ভূতাবিশ্বিকিছিতং আন্ধানং জীবং শুদ্ধং সংপদার্থং স্বর্ণেশ স্বস্থাত্ম

क्रममन्द्रभः।

ভূর ইতি। তাণঃ প্রাণায়াদি। ২৯। ০০। ৩১। বলেডি। ভূডালিভির্মিরহিতং আত্মানং জীবং বরপেণ তস্য জীবশক্তেরাশ্রমভূতেন শক্তিমতা ময়া উপেতং যুক্তং। সারাজ্যং সাইটালিকং ৪ ৩২। ৩১ ৪

এবিখনাপচক্রবতী।

তত্ত্বাহ দৰ্শ ইতি। উদাৰো নিকলো ভাবীভাপি মাশহিষ্ঠা ইত্যাহ তত্ময়েতি তেনৈব দে দৃশমস্পৃশভাদিতি বন্ধাং প্ৰাৰ্থিয়তে ১২৮ নিৰ্দানীমূল্যৰেল কিং ভবিষ্ঠিত যে ময়া ক্ল্যা তে ভ্রালয়ো লোকাএব ন দৃখ্যতে ইত্যত আহ ভ্র ইতি তপল্টিতকাগ্রাং দিব্যামব্রোপাসনা অভ্য হি জ্লয়এব বহিছিভানপি লোকান্ ভ্রাদীন্ তত্ত্বান্ মহ্বাদীংক অপার্ভান্ জলাবরণ শৃষ্ঠান্ ক্ল্যাসিতভক মইব্ৰ বথাছিভভয়া দশিব্যামাণাং ভান্ স্ক্লয়এব দৃষ্টা আদৰ্শদশী লেখক ইব ক্থেনেব বহিঃ ক্ল্যাসীতি ভাবঃ ৪২৯ ৪

ভূটাবেশ্বশ্বেণি স্বামহং ন বিশ্ববে সমিতি যথ প্রাথিতং ত্রাহ ততঃ স্টেসময়েণি ভক্তিযুক্তঃ সমাহিত্ত সন্ আস্থানি সমন নিস বহিলেনিক্চ মাং এটানি। তথা ময়ি লোকান্ ভ্রাণীন্ আস্থানা জীবাংশ্চ মৃতক্ণলীলায়াং যশোদেব এটাসি। বছা। ততং ক্লফাৰভাৱে বংস বংস্পাল্যাকারৈর্ব্যাপকং মাং ময়ি লোকান্ ব্রন্ধাণ্ডানি আস্থানশ্ভূত্ অমূর্তিঃ। যহা। আস্থান বহুন্ প্রমেটিনঃ ক্লফাসি। ৩০।

কর্ম্মনং বধা বিশ্বস্থানিতি যৎ প্রাধিতঃ তৎ ধবেতাদৃশ্যাং দশারাং সংভবেদিত্যাহ বৃদাঘিতি প্রতিচন্দীত পশােৎ কশালং মোকং ॥ ৩১ ॥

ক্সাং দশারাং ছাং প্রাপ্ন রামিত্ব ক্রিয়া বাধিয়াছি ॥ ২৮ ॥

অহে ত্রহান । তুমি পুনর্কার তপন্তাচরণ এবং আমার উপাসনা বিষয়ক বিদ্যা অভ্যাস কর, এত ছ-ভয় বারা আপনার হৃদয় মধ্যে ভ্রাদি লোক সকল স্পত্তিরূপে দেখিতে পাইবে ॥ ২৯॥

ভদনন্তর ভক্তিযুক্ত এবং সমাহিত হইলেই ভোমার আপনাতে এবং এই সকল লোকে আমি যে সক্ষাপি হইয়া অবহিত আছি ভাষা তুমি: দেখিতে পাইবে এবং আনাতেও ঐ সকল লোক তথা

্ব দেখিতে পাইবে । ৩০ ।

তাত প্রজান্ । জামি যে মর্কান্ত বিষয়মান আছি এই রূপ দুর্শন করিলেই মোহ নির্ত্তি হয়, অগ্নি
ব্যান সকল কাঠের অভ্যন্তকে জয়বিভে, ভাষার ভায় আমি সর্কাভূতে অগ্নিভিড আছি, লোকৈ ব্যান
ঐরপ দর্শন করে তথনই অভান নির্ভি হয় । ৩১ ।

অপর যথন ভূত, ইচ্ছিয়, ঋণ এবং রিষয় একল হইজে এবির্হিত আত্মাকে অর্থাৎ "ভূমিশ এই

নানা কর্ম বিভাবেন প্রজাবনীঃ সিইক্ডঃ। নালাবসীবতাত্মিং তে ববী রান্ সদস্গ্রহ: ॥ ০০ ॥ ধারিমাদ্যং ন বছাতি পাশীরাং তাই মধ্যেতিবঃ বিভাবেনা বিদ্ধি নির্মিতা প্রকাশ সংস্কৃত চিপি তে ॥০৪॥ প্রাতেহিহং তহতা তার কুর্বিজ্ঞেরোপি দেহিনাং। বত্মাং তং মন্ত্রেস স্কৃতং ভূতেন্দ্রির গুণাত্মভি: ॥০৫॥

श्रिपंत्रपानी न

बूर्जन महा जर्भमार्थम जेरबंजर बक्षेक्ष्म मनाम् व्यक्ति वमा बाह्यकार योज्य व्यक्ति । ०२ । यजः वर्षोत्राम् वृष्कतः ज्ञाधिरकार्योजार्थः । ०० । ज्यस्त्रहर्ययोज्ञ विकामानिक अपूर्विः यस्त्रज्ञ यस्त्रायति मिर्सकः । ०८ । वस्त्रवाहरेजविक्तरेत अर्थे रेगः नवारिजिवाचनाव्यारम् । ज्यस्त्रकः । ०८ ।

क्रमगयर्डः।

ৰিমিতি। বিতীয়ককে পূৰ্বদেবস্কং এতলভং সমাতিই পরবেশ সমাধিনা। তবান করবিকরের ন বিমৃত্তি কহি চিদিতি।
আতা ন তারতী মেহল মুবোণলকাত ইভালিকমণি অয়মুকং বন্ধ ভজানাবেশঃ কচিং আমতে স ধলু ন ছিলঃ ভালিতি ভলাভালএব জ্লেরঃ। বন্ধ দশমক্ষেহণাত মোহঃ আরতে স তুন রক্ষা কিন্ধ তপৰলৈপ্রতিশেবদর্শনের। ভবিশেবদর্শনেক্রা চ।
আত্যোক্ষমন্ত্রিভিয়াকে ভবৈত্ব আবণাং এবমেকাদ্রেচ হংসক্ষণে সমকানির আনক্ষনাং অমহিম প্রকাশনার বন্ধভানবিরণং
ভেরং । ২৪ ঃ

कारडाइहमिकि वह सर कब् आरकाइनीकानि बस्ताकनवानकवास्त्रादन (क्रवर व ०६ व ०६ व

विविधनायहक्त वर्षी।

জ্যারান্। ৩০ । তার বাবার্তাহ ব্রিমিতি ব্লম্ভ্রেইড বিক্লেণো ন রল্পা কিছা মঞ্মহিম্পনিলোডাগ্যাবৃট্বশালেবেতি তঠনের ব্যাধাাসাতে । ৩৪ ।

ं वंश्यक्षार मार माकाबविन कृषाविषित्रमूकर क्रमर यानकव्यवाधतानामायात्रकाति व्यवाधवर मनारम क्रवांत्रमात्रमावादश

হে ব্ৰহ্মন । তুলি নানা বিধ কৰ্ম বিস্তাৱ পূৰ্বক বহু বহু প্ৰকা স্থান্ত কৰিছে বাসনা ক কৰিছে। তোষার এ বাসনা প্রশাসনীয়া, আদি বলিভেছি এ বিষয়ে জোষার আত্মা অবসম হইবে না, তেলা প্রতি আমার অভিশন অমুপ্রেই ইইনাছে । ৩০ চ

হৈ বিধাতঃ। তুনি প্ৰজা ত্তীৰ্থ ইন্ধুক হইলা যধন আমাতে মনঃ নিবছ ক্রিয়াছ, অতএৰ তুনি আব্যু-মাই, সামিলাৰ ইজাতৰ ক্ৰন ভোগাকৈ বৰ্মন ক্রিভে পারিবে না । ৩৪ ।

बार ! बामि दिन्द्याति शुक्रवित्र व इच्छा में में कि क्ष प्रिम बानि बामारक कानिए शांतितन,

তৃত্যং মৰিচিকিৎসায়াসাত্মা মে দ্বিভাগুৰহিঃ। নামেন ব্ৰিকে মুকং পুৰুষ্ধা বিচিম্ভ: ॥০৬॥ यक्त कर्यान महत्वादा महत्वाचारमहाक्रिक्ट । स्वा क्रमनि ६७ निर्श न भग अवस्थानः ॥ ०१ ॥ खीरजाव्यमञ्ज छत्तर एक रमाकानार विवादसम्बद्धाः यवरक्षिमी कंतमहाः निर्कतः माञ्चनर्वसम् ॥ ०৮ व

विवस्थामी ।

कुलार उर मारलम मार्रान शुक्रतक मुनमधिक्षीयर मनिरन विकियाला यदि विविक्तियातार क्षिक्रांगकाव्यव मह नक्षरक। অভোত্তি নাজীতি সংক্ষাহে সতি আত্মা স্বরূপং মে মরা অবন্ধিরস্তর্জুণি দর্শিক্ষা । ৩৬ ৰ

অল হে ব্ৰহ্মন্চকৰ্থ কুত্ৰানসি। মংকবৈধ্যাভাৰত্ব জেনাজিজং। ল এৰ ৰক্ষাভাৰঃ লভি ৰলো নিৰ্কল্পণ বল ভানং। মত্ৰ-পত হুদি দর্শনং। মংস্কৃতিঃ তপোনিষ্ঠা চেতিঃ হৃৎ সূত্রৰ সর্কোপি শ্বদৃত্বাইঃ । ৩৭ ।

গুণমন্ত্রন প্রতীন্নালম্পি নির্ভূপমেবাসুবর্ণমন । ৩৮ ॥

यफिछि। ভিষাত্মসুষোপোৰং রূপং মংক্থামান্তমভানর ক্রনাপি ভদক্ষিতং ভোলমিতি বৈশিষ্টং। সুঞ্জই ইভি। তদেতৎ সর্বাং মদমুগ্রহরূপমিতার্থ: । ৩৭ ।

প্রীতোহ্হমিতি। কেচিৎ প্রাকৃতভাগ্রুক্তাদেন স্থবন্তি। তেক্চিত্ত তত্ত্তিত্তেন। ভাগদরং অপ্রাকৃতানভাগবিশিষ্টং সং তু

बियमायहळा १छी ।

ন ভূতানি পুথিব্যাদীনি নাণী স্তিবাণি তৈল্যানি। নাপি ওণ্দারা শাপাত্মা জীবঃ কিছু সাক্ষাৰু সৈব সং জানাসীভার্বঃ। তেন मक्त शक्ष मिक्त निम्न देशायां प्रामिनन (येव मक् खाना खान द्विति कि मिकि कर्गवन खिला द्वि हिन्देश है। ०८ ॥

याजा मक्तन्त्रा मिक्ट्रेबराजकावा मुनाचर नजू रखाजा मिकामी क्रियाबाइपमिजाब परमन व्यमानमिजाह जूडार पार क्रजार्थीकर्जुर আত্মা এবিপ্রাহে। মে সরা অবহিপ্পত্ত দি ঘরা বহিরপি দর্শিতঃ গোপথেশো মে পুরস্তাদাবির্বভূবেতি প্রতেঃ আত্মদর্শনস্য দের্ঘণ ক্রিরাঞ্ত্রন্দিতি সংপ্রদানে চতুর্থী বা কণা পুদর্ব্য মৃশং বিচিত্রতত্তব মারি বিষয়ে বিচিকিৎসারাং অস্যাবিষ্ঠানমন্তি নাজিবেতি সংশতে সভীতার্থঃ। অল তপসঃ সমাধেশ্চাষ্ট্রেবান্তাবিশি মন্দর্শনস্য বস্তুতো ন হেতু কিন্তু মণিটিছবেতি রহজঃ जिल्लासमित क्षणांगर कार्यवामार्गिक @बंबर ॥ ०७ ॥

অভত্তৰ মংগুৰালয়োপি মংকর্ত্কামুগ্রাহেণৈবাভূবদিভাছে। यक्तकर्थ অকরো: তৎ সর্বাং স প্রসিদ্ধ এব প্রভালো মৰমুগ্রহ हेकि अष्टरेमांव कार्याः उद्धर क्षडीहीजार्यः ॥ ७१ ।

কিঞ্চ মংস্থাপেথিয়ৰ ভক্ত্যা পুনৱহমতীৰ প্ৰীণামীতাত্তাং মংপরিপাটীং পশোতাহে প্ৰীত ইতি। লোকানাং বিজয়েছ্যা মংস্জামানা লোকা জরমুক্তা ভবস্থিতীজয়া গুণময়ং কলা।পসমুজং সাকারং মাং দিগুণিং প্রাকৃতস্থাদিগুণরহিতং অসুবর্ণয়ন্

যে হেতু, ভূত, ইল্লিয় এবং স্বাদি গুণ ও অহমার এ সকলে আমাকে অসংযুক্ত বলিয়া মানিছেছ এ০৫ **८६ भग्नारगात्न ! भन्न नात्मत्र हिन्र भथ मिया जन मर्स्य व्यव्यम भूर्वक ठाहात . मृन** ज्यास्यम করিতে করিতে তোমার যথন সংশর হয় অর্থাৎ এই পালের আত্রেয় অবশ্য কিছু আছে কিন্তু তাই। দুশ্য হুইল না,অতএব আছে কি না ? তখন ভোমার হাদর মধ্যে আমার নিজ রূপ প্রদর্শন করাইরাছিলীয় ১০৬

क्षियाम् । पूमि जामोत्र गत्रन कथात चिक्रिक त्य नमछ छव कतिग्राह अवर दिनीन त्य छन्छ। ग्र निकी हरेगाहिन, जात जाननात कत्य मार्था जानात स्य जान मन्न कतियहि, व नक्न व অমুগ্রহ । ৩৭ । প্রায়ার ক্রিক্টির ক্রিক্টির বিশ্ব বিশ্ব ক্রিক্টির ক্রিক্টির বিশ্ব বিশ্ব ক্রিক্টির বিশ্ব বি

নত বিশ্ব করে বিশ্ব বিশ্ব করু হোটা কোলে সাহত্রে **পাহরী সম্প্রে**লি সম্প্রকার

त्त यादा वर्षे के दिलागात, व्यक्ति, मामात, मिलनात व्यक्ति, मामान, दक्तामान, समना क्रमेना क्रमेना क्रमेना

य এতেদ পুনানিতাং জয়া উভাইনি দাং উভাই । ততাও সংশ্রদীদেরং সর্বকামবরেশরঃ ॥ ৩৯ ॥ পূর্তেন জপনা যজৈদানৈ র্বোদেঃ সমাধিনা । রাজং নিংজারসং পুংসাং দংশ্রীতিভাত্বিশ্বতং ॥৪০॥ অহমাত্মাত্মনাং থাতঃ প্রেঠঃ সন্ প্রেরসামপি ১.অতো মরি রভিং কুর্যাদেহাদি র্যংকৃতে প্রিয়ঃ ॥৪১

विश्ववारी ।

खन क्षीक देखि जिल्लामामिकाहरू नःहेकि ई 🍫 📭 🚎 💥 🚜

্ৰচ মধ প্রীক্রেরধিকং কি কিক্তীভাকে পূর্জাকিজীরান্তং নিজং সন্ধিং সন্ধিং ক্রমং ক্রমং প্রীভিবেষেতি ওপবিদাং মতং । ৪০ । অন্য ক্রেডুমার স্কর্মে ক্রিক্সান্দ্রনাঃ স্বক্ষ্ট্রোপাধীনাং জীবান্ধং আন্ধা; স্কুচঃ প্রেম্নদামভিপ্রিদাদাপনি মধ্যে ধ্রেটঃ প্রিম্নতমঃ

ক্রমকর্ড:।

जन्दिकम्याङ्गक्रक्षन्यपूरः ह थालिनामा मामरकोरीदिकार्थः ।्०৮। ०৯ ।

তদেবং ভক্তবিষয়কত্বপ্রীতিং স্কৃত্বা হবিবয়িকামণি ভক্তব্রীতিং তোতি পূর্তেনেতি। পূর্তাদিনা পরশারহা সাক্ষাছা যা মরি ব্রীতিঃ গৈব রাজ্য স্থাবিচারসিদ্ধা নিঃশ্রেমসং কলং। বতক্তদেব ভত্তবিয়ত্যিতি । ৪০ ।

তথৈৰ সাধন্তি। অহমান্তেতি। আয়ানং গুৰুতীবানামণি। অভোনিকণাধিনিরবধি প্রিরতমক্ত প্রসাদর্লণা প্রীতিরেব

बवित्रनाथठक्तरवी ।

যদভোবীঃ। প্রীভোহমভতেবাং ভল্তমন্ত বেতু গুণমরং মাং জী নারারণং স্বাদিগুণব্রেইনর স্বরন্তি নতু নিগুণব্রেন তেরু ন প্রীভোমীতি ন তেরাং ভল্তমন্ত্রিত ভাবঃ । ৩৮ ।

पति बीड देवि किः वक्षवामिजाह य देवि । ७৯ ।

নচ মংপ্রীতেরভাধিকং কিঞ্চিলভীত্যার পূর্তাদিভিঃ রাজং সাধিকং বৃদ্ধিংশ্রেষসং ফলং তৎ তথ্যবিদাং মতং মংপ্রীতিরের।
মংপ্রীতিং বিনা রাজং নিঃশ্রেষসমনিঃশ্রেষসমেবেভাততত্ত্ববিদাে মংপ্রীভার্থমের পূর্তাদিকং কুর্বভীতি ভে মাং প্রীণত্তমের কর্তুমিছতি নতু মাং স্বশ্রীতে,বিব্রুং চিকীর্বভাতত্ত্বা সাধিক্যা ভক্তা তানু প্রভাবং প্রীত তেতাে মোকং দলামীতি ভাবং ॥ ৪০ ॥

নিশুণভজ্জিনতাত প্রীতেরহং বিষয় ইতি বাঞ্জয়ন্ সর্কেরামণি জীবানাং বস্তুত প্রীতেরহমেব বিষয়ীভবিতৃং বোগ্য ইতাতঃ আদিন্ প্রীতিং বিষতে জহমিতি। আত্মনাং জীবানামহমাত্মা প্রমাত্মা বংকৃতে দেহালিং প্রির ইতি কল্পপ্রাদিন্ প্রীতিদে হ লবকেন দেহে প্রীতিজীবাত্মনহক্ষেন জীবাত্মনি প্রীতিঃ পরমাত্মনহক্ষেনতি পরমাত্মক্র প্রীতিঃ আভাবিকী জীবাত্মাদিবৌপচারিকীতি তের্ ক্রমেণ প্রিয়ত হাসঃ। নম্ তহি মির রতিং কুর্মানিভাস্ত বাকাস্য কবং বিধিত্বং রতেঃ প্রাপ্তবাদেব। বঁচ্জং বিধিরভাজনপ্রাপ্তীত তের্ ক্রমেণ প্রিয়ত মানারাঃ বহুবিকারো জীবাত্মপর্বাস্ত এব নতু ততোপি পর্ম পরমাত্মনীতি মানাবন্ধপতিতানাং মহবাদীনাং মারিকেলের বন্ধসম্প্রঃ প্রাকৃতি জীবাত্মনাত্মনিত ক্রমান্ত্রে প্রকৃত ইতি ত্মাণি পরমাত্মনিত আহালিকাঃ প্রতিভাগি পরমাত্মনিত প্রস্তুত্বভোবাদক্ষাত অবহুবিকায় বিজ্ঞানির ভালিকাগ্রহিত প্রতিং বিধন্তে শাল্মনিত কিন্দু বন্ধতা প্রমাত্মনির তাল প্রস্তুত্বভোবাদক্ষাত অবহুবিকায় বিদ্যাদারিল্ঞানির তল্প প্রতিভাগির ইতি প্রতিং বিধন্তে শাল্মনিত কিন্দু বন্ধতা প্রেটোপি পরমাত্মা

नकरतात विकार हैका कतिया अधीर जामा कईक एकामान लाक क्षत्रपुष्ट इष्टेक अहे श्रकात नताकाका क्षित्र आमि श्रुवस्त्रपुष्ट क्रांटी क्षेत्रीयमान स्टेर्स्स जामारक निर्श्वन स्क्रांत्र वर्गन क्रियाए ॥ ०৮॥

কোমান এই আৰে আমি ভোমার প্রতি প্রস্তুৰ হর্মাছি, ও কথা বলা বাহল্য মাত্র, যে কোন পুরুষ ভোমার কত এই কোত্র সারা নিত্য স্তুর কর্ত আমার উপাদনা করিবে আমি তাহারও সহফে স্বাক্তামত স্বাস্ত্র প্রশ্নতা বুইয়া আঞ্চ প্রস্তুর কর্ত আমার উপাদনা করিবে আমি তাহারও সহফে

ाहर जाका कामादा श्रीति हिश्शामम कर्नारे श्रक्त नकरता शतम स्वाद, छहित पण छैल्ल का काम किन्द्रे बाँदे, अकि कि काम किश्वाह का मान, सान, सान अवश् नमानि, अ नकन पाता श्रक्त स्व रव कन निश्चि दत्त, उपक्र शिक्षका तरनन भागात श्रीजिएक छोट्टि निष्क स्टेश थारक । ३० ॥

टर विशाजः! वामिरे व्यवकारताभाषि कीर्यमानत वाला, वाज्य वामि वाजि क्षित वल्लत मार्ग

TO THE STREET OF THE STATE OF THE STREET STREET, THE

नन् निव्दनाः। यर कट्ठ यम्परं । १८॥

অতখং ক্তার্থ এব তথাপি মং প্রিরার্থং কৃষ্টিং কুর্মিত্যাহ সর্মেতি আত্মা বং ইনং ক্রৈলোকাং। যাঃ প্রকা ন্বাছ্শেরতে ভাল্ত হল। কেন আত্মনৈবাদ্য নিরপেকণ ভব জাগকাপেকাভাবমাহ সর্মবেদ্দরেটে। আত্মা আহং বোনিঃ কারণং বস্যেতি জান ক্রিয়া শক্তাতিপরং হুচরতি বথা পূর্মমিতি। ভবাবাত্যালোপাভীত্যকং। মধ্যসুপেরত ইকি স্থিতানামভিখ্যকি মান্তমেব কর্ত্তবাং ইত্যানারাস্থম্কং ॥ ৪২ ॥

क्रश्रमकर्षः ।

প্রার্থনীয়েতি ভাব: । ৪১ । ৪২ ।

@विचनावहळवडी ।

জ্ঞানিভি: সাক্ষাদম্ভূতোপি রত্তা বিনা প্রেমাপাদং ন তব্তাতো ভক্তানামের স প্রেষ্ঠা ভবতি নত্জ্ঞানিনাং বধা দীতাদ্যার্থিছরে চক্ষ্য প্রকাশম্বর প্রদেহণি স্বেট্য সাক্ষাদম্ভূতেপি কোপি বং নাছ্মজান্তি তত্ত্ব মন্যাভাব এব জেতুঃ। স্বাদ্ধ তত্ত্ব প্রপ্রদোশি তেবুদান্ত এব। এবং জ্ঞানিজনাঃ থবজান তমোহস্কান স্বাম্থেকৰ স্থেপ্রদেশি জন্ধনি মন্যাভাবান্নাহ্মলান্তি। তালি কাম্প্রান্ধের বা ভক্তা। সম্বোবিতঃ স্বামিট্র কর্চরণাদিমন্তঃ সহাধ্যম পার্থাানিকং পশাভি তঃ স্প্রোবশক্ষ করোতি। তবৈর মুক্তা বন্ধো বা জীবো ভক্তার পর্মান্ধানং স্বিশেষমন্ত্রবং তালিম্বন্ধাতি তক্ষ সপ্রেম বশং করোতীভাতঃ পর্মান্ধানঃ সর্বাভঃ প্রভানিনাং গণীভ্তরা কর্মেন্তাভ উক্তং স্বরং পর্মান্ধনিব ক্রেটা মন্ত্রি ক্রেটাদিভি বিষেটনীয়ং। ববা লত উক্তর্ভেরের হেতো মন্ত্রি রভিঃ কুর্যাং। ব্যাারভেঃ ক্রেভ দেহাদাবল্লীভিমতোপি বিবেকিনো দেহাদিশ্রিম্বা ভবতি দেহেন্ত্রিয়ানিভিন্নের পরিচ্বাচি ক্রিভি ভবিং এ ৪১ ।

মারীরিবীই নিগমত্তেতি বং প্রাধিতং তত্তাহ সর্কবেষদরেনেতি বেষক্রা দ বিশ্বর্তন্য ইতিভাবঃ। ইবমান্মনা অনেনৈৰ থেছেন প্রজাঃ স্থল আন্মনাং আত্মা অহমেব বোনিঃ কারণং ৰজেতি তেন। বথা পূর্কমিতি পূর্ক পূর্ক দিন স্থাইং সার্বতি মবান্দ্রনেরত ইতি। স্থিতানামভিবাজিনাত্রং কর্তবামিতানারাসমুক্তং চকারাইজিক কুকু । ৪২ ।

প্রিয়তম এবং নির্বল্য, এই নিমিত আমার প্রতিই লোক সকলের রতি করা কর্তব্য, যে হেতু আমার নিমিত্তই ভাহাদের দেহাদিতে প্রীতি জন্মিয়া থাকে ॥ ৪১ ॥

হে ত্রহ্মন । যদিও তুমি রভার্থ হইরাছ, আর কোন বিষয়ে তেমির প্রিয়ালন নাই, তথাচ তুমি সর্ব্ব বেদমর আত্মার যোনি রূপ বৈ অহন্ধার, কেবল সেই আত্মান আবি আত্মান কোন বিষয়ে আত্মান করে। তেই সকল প্রজা ও যাহারা আমার পশ্চাৎ পরন করে। তেই সকল প্রজা ও যাহারা আমার পশ্চাৎ পরন করে। তেই সকল প্রজার আত্মান আত্মান করে যোনি ও নিমিত তেমিতে আন তার প্রকার আতিশ্যা আছে, আর ক্তি করা তোমার শ্তম কার্য্য নহে, পূর্বেই ক্তারা ভারতি করা তোমার শ্তম কার্য্য নহে, পূর্বেই ক্তারা ভারতি করি হিন্তি রাছে, কেবল প্রকাশাত্র করি বাহাদিগকে ক্ষম করিছে হইবে তাহারা আনাত্তিই শ্রম ক্রিয়ার হিন্তা রাছে, কেবল প্রকাশাত্র করিবাই হইবে, ইহাতে ও কর্ম ভোমার অসাধ্য নহৈ, আনার্যার ক্রিয়াই ক্রেয়াই ক্রিয়াই ক্রিয়াই

পারিবে । ৪২ ॥

তত্মা এবং জগৎ অষ্ট্রে প্রধান পুরুষেশ্বর:। ব্যজ্যেদং বেন রূপেণ কঞ্চনাভন্তিনোদধে ॥ ৪০॥
॥ # ॥ ইভি শ্রীভাগৰতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈরাসিক্যাং তৃতীয়ক্ষত্মে বিভুর
মৈত্রেয় সম্বাচন পালোত্তেবে প্রক্ষান্তবো নাম নবমোধায়ঃ ॥ # ॥ ১ ॥ # ॥

🗃 বিতুর উবাচ॥

অন্তহিতি ভগবতি ব্ৰহ্মা লোকপিতামহ: । প্ৰকা: সদৰ্ধ কতিখা দৈহিকীমানদীবিভূ: ॥ ১॥ বেচ মে ভগবন্ পৃষ্টা স্ব্যাৰ্থা বছবিত্য। তান্ বদস্বাসুপূৰ্বেণ ছিদ্ধি ন: সৰ্বাসংশ্লান্॥ ২॥
শ্ৰীসূত উবাচ ॥

এবং সংকাদিতত্তেন করা কৌশারবিম্নি:। প্রীতঃ প্রত্যাহ তান্ প্রশান্ হদিস্থান্ও ভার্গব ॥ ৩॥

व्यथ्य यागी।

ইনং ক্ষাং বাজ্য প্রকাশ্র পদানাভঃ খেন শ্রীনারারণম্বরণেণ ভিরে।দশেহদৃশ্রে। বসুব । ৪৩ । ॥ + ॥ ইতি চুতীরে নবমঃ । + ।

দশনে কাৰসংপ্ৰাঃ প্ৰতিৱক্তৃং ভচ্ছবঃ। প্ৰাক্তাদিবিভাগেন সৰ্গত্ব দশংখাচাতে ॥ ১ ॥ মে ময়া বদৰ বদ ভাষয়ৰ ইতি বা ॥ ২ ॥ সংকাদিতঃ প্ৰাৰ্থিতঃ ক্দিছানেবাছ নতু তে প্ৰান্থ বিশ্বতা ইতাৰ্থ: ॥ ৩ ॥

क्रमम्बर्षः।

(श्वन कश्चनां कां कांद्रदेशेच क्रांत्रिय शक्त क्रियां क्रियं क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियं क्

়া 🔹 । ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ন্তকে শ্রীদীবগোস্থামিকত ক্রমসন্দর্জসা নবমোহধ্যার: সমাপ্ত: । 🔸 ।
ত্বত উবাচেতি এবমিত্যাদিকা সঙ্গতি: বয়মেব স্তেন ক্রিয়তে ন শ্রীশুক্কতামুদ্যত ইতি বোধয়তি। মৈলের উবাচেত্যাদিকং
তু শ্রীশুক্বাক্যামুক্রণং। শুক উবাচেতি ভারতেতি চ পাঠো ন বহুসমতে । ১।২।০।৪॥

ত্ৰীবিখনাথচক্ৰবন্তী'।

ইদং স্থাং জগৎ বাজ্য প্রকাশ্র স্থেন শ্রীনারায়ণ্রণে। অত্ত ব্রেছো করে অহমেবাসমেবাথে ইত্যাদি চতু:লোকী ভাগবত-মিব পাল্মে করে ব্রাড়ু সর্বলোকেবিভি যদা রহিতামতি পুর্কেনেতি অহমাত্মাত্মনামিতি চতু:লোকী ভাগবতমিদং ভগবাস্পদিদে শেতি কেচিদাহঃ ॥ ৪০ ॥

। • ॥ ইতি সারার্থদর্শিকাং হবিণাং ভক্ততে চসাং। তৃতীয়ে নবমোহধার: সলত: সলত: সভাং । • ॥
কালক লক্ষণং সামাক্ততো দশম উচাতে। সর্গো দশবিধশতাত: প্রাকৃতাদিবিভেদবান্॥ > ॥
বদস্ব স্থং স্কাথা জানাসীতাতো বনেতার্থ:। ভার্গবেতাদিনা জানে সামর্থাং দ্যোতিতং ॥ ২ ॥
জ্বিভানিতি ন তে প্রস্থাতেন বিস্থৃতা ইতার্থ: ॥ ২ ॥
.

মৈজের কহিলেন বংগ বিত্র ! প্রধান পুরুষেশ্বর ভগবান্ পদ্মনাভ জগৎ আন্টা প্রকার নিকট এই প্রকার স্কার বস্তু প্রকাশ করিয়া গেই রূপেই অর্থাৎ নারায়ণ স্বরূপেই তথায় তিরোহিত হইলেন ॥৪৩
॥ * ॥ ইতি তৃতীয়ে নব্ম ॥ * ॥

দশুমাধ্যারে কাল বিষয়ক প্রশ্নের উত্তরদানার্থ প্রাক্তাদি ভোদে ঐ কালোপপন্ন দশবিধ স্থান্তি করিছের কহিছেলন হে মুনিসভ্য ! ভগবান্ নারায়ণ অন্তর্হিত হইলে লোকপিতামহ এক্ষা নানঃ হইতে কত প্রকার প্রজা স্থান্তি করিলেন ? ॥ ১ ॥

অপর হে বহুক্ত। আমি আপনাকে পূর্বের যে সমস্ত বিষয় জিল্ঞাসা করিয়াছি তৎসম্পায়ও আমু শ্বিকি বর্ণন করুন এবং আমাদের সংশয় সকলও ছেদন করিতে আল্ডা হউক ॥ ২ । সূত কহিলেন হে ভৃগুনন্দন। বিহুরের এই প্রকার প্রার্থনা শুনিয়া মৈত্রেয় মুনি সাতিশর প্রীত **बी**रेमाळ्य छेवार ।

বিরিঞাপি তথা চক্রে দিব্যং বর্ষণতং তপ:। আত্মসাত্মানমাবেশ্য যদাহ তগবানজঃ । ৪ ॥
তিবিলোক্যাজসভূতো বায়ুনা যদধিন্তিতঃ। পদ্মমন্ত্রণত তৎ কাল হুতবীর্ব্যেপ কম্পিতং । ৫ ॥
তপ্রসা ছেধমানেন বিদ্যুদ্ধা চাত্মসংহরা। বিব্রন্ধ বিজ্ঞানবলো ন্যপাধায়ুং সহাজ্যা ॥ ৬ ॥
ভবিলোক্য বিয়ন্ত্যাপি পুক্রং যদধিন্তিতং। অনেন লোকান্ প্রামীনান্ ক্রিভাস্মীত্যচিন্তরৎ । ৭।
পদ্মকোবং তদাবিশ্য ভগবৎ কর্মচোদিতঃ। একং ব্যভাক্ষীয়ুক্রধা বিধা ভাব্যং বিস্থধা ॥ ৮ ॥

विपत्रचामी ।

आध्यित श्रीनांतावान जावानः मन जात्त । 8 ।

অজসভূতে। একা বদ্ধিটার ভিডঃ কর্ত্তরি জঃ ডং পদ্মং জল্পত বিলোকা। কর্ণভূতং পদ্মসভূত। তেল প্রলয়কালের ক্তং বীর্যাং যস্য তেন বাহুনা কম্পিতং। বিলোকা স্তপাদিভূয়ন্তবেশাব্যঃ ॥ ৫ ॥

विवृद्धः विद्धानः वनक रण श्रुभार मर्द्धः श्रीख्यान् । ७ ।

भूकतः भगाः थाक् नीमान् बीन् (नाकान् कतिकाचि सकाति । १ ।

ভগৰভা সমং ক্রণীয়ে কর্মণি চোদিভো নিযুক্ত: সন্ ভদা পল্লাকাৰং প্রবিশ্র তমেকমেব পদাং ত্রিধা লোকত্রন রূপেণ বাডাজ্ঞীৎ

ক্রমন্ত্র

তि वृत्रकः क्रुशिवि वांदर व्यनात वर्षात य जाविषि जादः । ६। ७। १। ৮।

विविवायकक्षा ।

काञ्चनि धैनातात्रत् काचानः मनः ॥ ॥ ॥

অক্তসংভূতো ব্ৰহ্মা যৎ পদ্মং অধিষ্ঠিত ইঙি ক্ৰেৰি জঃ। ওলেব পদ্মক্তক বায়্না কম্পিতং ৰীক্ষা স্তপাদিভূষিকে গ্ৰহণাৰকঃ। বায়্না কথজুতেন তৎকালেন প্ৰশংস্থায়েন হতং বীৰ্ষাং বস্ত তেব । ৫ ৪

ন্তুপাৎ নাশ্যামানেত্যৰ্থ:। প্ৰশন্তকালে বাবং প্ৰমাণনছো বাবুকাবৰ্ধত তাবং প্ৰমাণনেবতি জেবং । ৬।

ভতক পৃষ্ণ পলং বিষয়াশি সভালোকপর্যন্তমুদ্ধি তং কলিভামি অক্যামি । ৭ । ভতক আবিশ্র অবিশ্র ভগবভা কর্মণি কপৎসর্গে নিযুক্তঃ। ভমেক্ষেবং ঝিগা লোক্রমন্ত্রণেণ উল্পা ভড়োপি বহু প্রকারেণ

হইলেন। বিছর পূর্বেযে সকল প্রশ্ন করেন, ভাহা উাহার হৃদয়ে জাগরক ছিল, তৎপরে যে সকল প্রশ্ন হয় তদ্দারা তাহা বিশ্বত হয়েন নাই, অভএব সেই সকল প্রশ্নের উত্তর, যথাক্রমে দিতে আরম্ভ করিলেন॥৩॥

মৈত্রেয় কহিলেন অহে বিছুর। জগবান্ নারারণ বে যে উপদেশ দিয়া অস্তর্হিত হইলেন, একা তদমুসারে ঐ ভগবানে মনো নিবেশ পূর্বক দিব্য পরিমাণের শত বংসর কাল যাবং ওপস্থা করিলেন 18

তৎপরে তিনি যে পদ্মে অধিষ্ঠান করিয়াছিলেন, সেই পদ্ম এবং ভাষার আধার স্বরূপ অল তৎ-কালে হতবীর্যা প্রলর বায়ু বারা কম্পিত দেখিয়া । ৫ ।

বৃদ্ধিশীল তপজা এবং আত্মহিত বিদ্যা বারা সাভিশয় বিজ্ঞান বল সম্পন্ন হইয়া জলের সৃহিত ই সার্সমুদায় পান করিলেন ॥ ৬ ॥

তদনস্তর যে পত্মে অধিষ্ঠান করিয়াছিলেন,ভাহাকে গগণবাপী অবলোকন করিয়া এই চিস্তা করিলেন, পূর্ব্ব বিলীন লোকজেয়কে এই পত্মের ঘারাই পুনর্ব্বার হৃষ্টি করিব ॥ ৭ ॥

তৎপরে ভগগান এক্সা শ্বরং করণীয় ঐ কর্মে নিযুক্ত হইয়া ঐ পদ্মকোষে প্রবেশ পূর্বক সেই একু
পদ্মকে লোকত্রয় রূপে তিন প্রকারে বিশ্বক্ত করিলেন। ঐ পদ্ম শক্তিশয় বিশাল তাহাতে ভাহাই

अन्डाध्यक्य।

এতাবাঞ্জীবলোকত সংস্থাভেনঃ সমাস্ততঃ। ধর্মত ফ্নিমিন্তস্য বিপাকঃ প্রমেষ্ঠ্যসৌ ॥ ৯ ॥
শ্বিদ্র উবাচ ॥

যদাখ বহরপ্য হরেরছুভকর্মণঃ কালাধ্যং লক্ষণং ব্রহ্মন্ যথা বর্ণয় ন প্রভাঃ ॥ ১ ।।

विश्वचामी।

বিবভাল একেম কমল কুজ্মেন কথং লোকজর স্টিরিভাসভাবনাং বাররিজুং ভল্ল বিশা লভামাহ বিস্থাধা চতুর্দশ লোকরণেণ উক্লা ভভোপি বহু প্রকারেণ ভাবাং ভাবরিজুং বোগাং। অভো ন ভেন জিলোকী ক্রণং চিত্রমিভার্থ: ৯৮ ঃ

বিলোকী রূপেণৈৰ বিভাগে হেড্মাছ। এডাৰান্ বিলোকী রূপ: জীবলোকস জীবানাং ভোগ হানপ্ত প্রভাগে সংখাতেবং রচনা বিশেষ উক্তঃ। নতু প্রমেষ্টনোপি জীবভাবিশেবাৎ ব্রহ্মলোকসাপি কিনিভি প্রভাহং স্টের্ডৰভি ওতাহ হি যন্ত্রাৎ জনিমিন্তরা নিকামত ধর্মত বিপাকঃ ফলরপোহসৌ, উপলক্ষণযেতেৎ সভালোকস মহং প্রভৃতি লোকানাং তহাসিনাঞ্ বৈলোকাস কাম্য কর্ম কলবাৎ প্রতিক্রম্থপতি বিনাশী ভবতঃ মহং প্রভৃতীনাজ্পাসনা সম্ভিত নিকামধর্মকলভাৎ বিপরার্ম পর্যান্তং নালাং তত্রহানাঞ্ ততঃ পরং প্রারেশ মুক্তিরিভি ভাবঃ ॥ ১ ৪

কালভেবেন লোকস্টিভেবং শ্রম্বা তমেব কালং বিজ্ঞান্থঃ পৃষ্ট্তি বং কালাধ্যং লক্ষণং আরপং আব অববীঃ। কথং কাল

क्रमनवर्षः।

এতাৰান্ বিস্পুৰাপৰ্য্যন্ত: এবিদ্ধা তু সৰ্বতোৰিশিষ্টভাৎ তৎষটেতাাছ ধৰ্মছেতি। অনিমিবস স্বভাবেনৈৰ ক্রিল্লমাণ্ড নতু গৃহত্বৎ ভত্তংস্বল্লেনাপ্টভাৰ্থ:। বিপাক: প্রমক্ষিথাপ্তপ্রিণাম:। অসাবিভি। বৃদ্ধান্তরং ব্যৰ্ভিন্তি। বৃদ্ধান্তরং অস্থান্তি। বৃদ্ধান্তরং অস্থান্তি। বৃদ্ধান্তরং অস্থান্তি। বৃদ্ধান্তরং অস্থান্তর্গান্তরং এই এ

এবমিতি যহুক্তং তদেব বিরুণোতি স কাল ইতি। স্বাদ্ধ টীকারাং প্রমাণুদেশং পরিক্রামতীতাত্ত স্বধ্যমকাল্যাচটে যতনক্ষণং ভাপকং গুণব্যতিক্রেণ ক্রিয়ারপং তৎ পরিণামাদি পৌর্কাণ্যাভুস্ক্লানেনাক্রিরতে স্বাকারতেইদ স্ক্রাতে বং স কাল ইত্যর্জঃ।

क्षेत्रियमाथठकवर्षी ।

ভাষ্যং ভাষ্ত্রিভুং যোগামতো ম তেন ত্রিলোকীকরণং চিত্রমিতি স্থামিচরণাঃ। প্রথমং স নালেন কমলকোষেণ ত্রিধা ডভশুডুপ্রন্ধা ভভ পূর্যাচলাকিলোক ভেবেন উল্লধ্য ব্যজাক্ষীৎ কীচুশং ভাষ্যং ধোলং বৈরালোণাসকৈরিভাল্পে । ৮ ৪

জীবলোকস ৰাষ্ট্ৰিরাট্সমূহক সংস্থা ভেদঃ প্রতিবিধোচিভস্থানরচনাবিশেব উক্তঃ। নতু কথমেভাবতাং জীবানামেকেনৈব ব্ৰহ্মণা সংস্থা নিৰ্দ্যাণমিত্যত আহে। হি ৰস্বাদসৌ প্রমেল্ল অনিষিত্তক নিজাষত ধর্মত তপোবিদ্যাদেঃ বিপাকঃ পরিপাকমূর্ত এব তপো বলেন ক্মশ্বামিতি ভাবঃ। ১ ৷

কালাধানাসাধিতকৰ্মতন্ত্ৰ ইতি ভাগেৰ কালাধুগভেনেভি কালেন সোধ্যঃ পুক্ৰাবুবেভি ভংকাল্ভবীৰ্যোণেড্যাদিভিঃ প্ৰদর

চতুর্দ্ধশ লোক স্বন্ধপ হইয়া চতুর্দ্ধশ প্রকার এবং তদপেকাও বছবিধ হইতে পারে অতএব তাহার ঘারা তিলোক রচনা বিচিত্ত নহে ৪৮৪

হে বিছুর! এই যে তিন লোক, ইহা প্রত্যাহ স্বজ্ঞান জীবগণের ভোগ্য ছানের রচনা বিশেষ, বিজ্ঞ সত্যালাক এবং মহ: প্রভৃতি লোকের প্রত্যাহ ভক্তপ স্থিতি হয় না, যে হেড় ভাহা নিজাম বর্ণের ফল, অভএব নথর নহে, ফলভঃ ত্রৈলোক্য কাষ্য কর্মের ফল, এ নিমিত্ত করে করে তাহার উৎপত্তি বিনাশ হয়, ত্রন্ধলোক বা সভালোক অথবা মহ: প্রভৃতি লোক সমূচিত নিজাম ধর্মের ফলভিতি বিপরার্থ কাল পর্যন্ত এ সকলের বিনাশ হইবে না, ভাহার পরেও ভতৎ ছানবাসি ব্যক্তিদিপের প্রায়ই মৃক্তি হইয়া থাকে, অভএব ত্রৈলোক্য এই ত্রন্ধলোকাদির ভূল্য নহে ॥ ৯ ॥

মৈজেয় মুনির প্রমুখাৎ এই ক্লপে কাল ভেলে লোক স্থান্তির বিবরণ প্রবণ করিয়া সেই কালই কি ইহা জানিবার বাসনায় বিছর জিজ্ঞাসা করিলেন, মুনেঃ বহুরূপি অমুত কর্মা হরির কাল নামে যে এ মৈতেয় উবাচ।

গুণব্যতিকরাকারো নির্বিশেষোহপ্রতিষ্ঠিত:। পুরুষস্তত্বপাদানমান্ধানং লীলয়াহস্তব্ধ । ১১ । বিখং বৈ এক্ষতন্মাত্রং সংস্থিতং বিষ্ণুমায়য়া। ঈশবেদ পরিচিছেশং কালেনাব্যক্তম্বিনা । ১২ ।

अध्यक्षमा ।

কলাতে কিম্বা তল্প স্ক্রণ বা রূপং ইতি যণাব্দর্গদেভার্থ: । ১০ ।

তত্র সামান্ত কালস। স্বরণমানোচাতে। উত্তরাধান্তে বিশেষ্ত গুণানাং বাতিকরো মহদাদি পরিণাম: তেনৈবাক্তিরতে যা স্বাল ইতি শেবা বলাতে চিকাদশে। গুণ বাতিকরা কালা স্বভাব স্ক্রেমবচেতি। স্বত্ত নির্মিশেষা। অপ্রতিষ্ঠিতঃ কাণ্যপ্রবিদ্যাত স্বালয় শৃন্ত ইত্যবাদানা। এতদেব দশ্যিত্ং ঈশ্বা স্ট্যাদি তেন নিমিত্ত্তন করোতী ত্যাহ পুক্ষ ইতি। উপাদীরতে নিমিত্ত তথা স্বীক্রিয়তে ইত্যবাদানা। স্কাল উপাদানং নিমিতং ব্যান্ত্রাল্যান্ত্রের বিশ্বরপেণাস্তর্গ প্রত্বিশ্বরণ প্রক্রিয়ত বিশ্বরণ ব্যাল্যান্ত্রিক বিশ্বরণ ব

স্বাতিরিক স্জ্যাভাবং দর্শয়ন্ কালগ্য স্টেনিমিত্তাং দর্শয়তি বিশ্বনিতি। বিজ্নায়য়া সংস্থিতং সংজ্তং । ব্রহ্ম তরাত্রং সংবিশং ঈশবেণ কর্ত্রা কালেন নিমিত্তেন পরিচ্ছিয়ং পৃথক্ প্রকাশিতং। অব্যক্তা মৃর্তিঃ স্বরূপং যস্যেজি। স্বতো নির্কিশেষভা দর্শিতা ৫ ২২ ৪

क्ष्मनवर्षः ।

বিকোরীখরস্য মায়য়া স্ট্যাদিশক্তা সহ জীনং ব্রহ্মণি বিফাবেব ভাষাত্মোপণরং সৎ ঈশবেণ তৎপ্রভাবরূপেণ কালেন পরিচ্ছিরং পূথক্,কুতমিত্যর্থ: ॥ ১০। ১১। ১২॥

खीविषनाथहळ्वछी।

স্ট্যাদিকং পুরুষপ্রায়ত্রাদিকঞ কালেনৈব সিদ্ধাতীতি বিশ্বভঃ কালং পৃচ্ছতি যথ কালাধাং লক্ষণং শ্বন্ধপং আখ পাত্রবীঃ তল্বপা-বদেব বর্ণয়॥ ১০॥

গুণানাং ব্যক্তিকরাৎ মহণাদিপরিণামাদেব আকার: স্থরপঞ্জানং য্যা সং। স্বতন্ত নির্কিশেষ: অপ্রতিষ্ঠিত: কাপাপর্যাবদিত: আদান্তশুন্য ইতার্থ:। যেন নিমিত্তত্বন স্ট্যাদিকং ভবতি স কাল ইত্যাহ পুরুষ ইতি উপাদীয়তে নিমিত্তত্বা স্থীক্রিত ইত্যুপাদানং। স কালএব উপাদানং নিমিত্তকারণং যাত্মিন্তং আত্মানং আত্মান্তিকার্যাত্মাদাত্মান্ত্রাহায় বিসং অস্ক্রং ৪১১ ৪

দো বিখং পরিছিনত্তি সকাল ইত্যাহ বিখমিতি। বিফোর্মাররা শক্তা। সমাক্ স্থিতমিদং বিখং ত্রহ্ম ত্যাত্রং কারণং যস্য তৎ ঈশ্বরেণ ঈশ্বরপ্রভাবর্রণেণ কালেন পরিছিরং এতাবদিতি পরিছেদেবিষ্যীকৃতং অব্যক্তা মূর্ত্তিবিস্য ইতি শতে। নির্বিশেষতা দশিতা॥ ১২ ॥

এক রূপ আছে আপনি ইহা বলিলেন, হে প্রভো। ঐ কাল কি রূপে কল্লিত হয়, তাহার স্থল ও সূক্ষ রূপই বা কি ? এ সমস্ত আমার নিকট যথাবং বর্ণন করুন ॥ ১০ ॥

ক্ষিয় কহিলেন বংগ বিছুর। গুণ সকলের মহন্তাদি রূপে যে পরিণাম তাহার বারা যাহা ভাষাই কাল, কিন্তু ঐ কাল স্বতঃ নির্বিশেষ আর তাহা আদ্যন্ত শৃত্যু, তাহাই আত্মাতে লোকত রূপে বর্তমান ভগবান্ পরম পুরুষ লীলা বশতঃ সেই কালকেই নিমিন্ত করিয়া আপনাকে ত্রহাণ্ড রূপে স্কুল করেন॥ ১১॥

হে বিছুর ৷ এই বিশ্ব ভগবান্ বিষ্ণুর মায়াতে সংজ্ঞ ব্ইয়া ব্রেশ্বশাকে হইয়াছিল, পরে পর্যে-শ্বর অ্ব্যক্ত কালকে নিমিত করিয়া তাহাই পুনর্বার পূধক রূপে প্রকাশ করিয়াছেন ॥ ১২ ॥ যথেদানীং তথাচাত্রে পশ্চাদপ্যেতদীদৃশং ॥ ১০ ॥ .
সংগ্রনিবধন্ত প্রাকৃত্যে বৈকৃতন্ত যং। কালদ্রব্য শুণৈরত্য ত্রিবিধঃ প্রতিসংক্রমঃ ॥ ১৪ ॥
আাদ্যন্ত সহতঃ সংগ্রনিবস্থান্তনঃ । বিতীয়ন্তহুমো যত্র দ্রব্য ক্রান ক্রিয়োদ্যঃ ॥ ১৫ ॥

शिवंत्रामी ।

অপ্রতিষ্ঠিত বং দর্শনিকুং তৎকার্য্য বিশ্ব প্রবাহতাপ্রতিষ্ঠানাহ ববেদানীমন্তি তথাতো পূর্ব্বনগাসীং পশ্চাদপি তথা ভবিষাতি ১১০ এবং সামাত্রতঃ কালং নিরুপ্য বিশেবতো নিরুপরিষান্ত ভবিষিত্রত সর্গত্ত পূর্ব্বোক্তানের ভেগান্ অনুবদ্ধি সর্গ ইতি বস্ত প্রাকৃত্যে বৈত্বতন্ত স তু দশমঃ ভরিমিন্তামের জিবিবং প্রসম্মান্ত কালেনৈর কেবলেন নিত্য প্রসম্মান্ত কালিনির্দ্ধার্য্যাদিনা নৈমিন্তিকঃ প্রশিং অক্রিং প্রাকৃতিকঃ ॥ ১৪ ॥

তানেব দর্গান্ প্রপঞ্চরতি আদ্য ইত্যাদিন। বাবলধ্যার স্মান্তি। সহতো লক্ষণং। আ্থানো হরেঃ স্কাশাৎ গুণানাং বৈষ্ম্য মিতি। অহম: অহ্যারত তথা লক্ষণং ব্যেতি। জ্বাদ্যো এক্যমাণ্ডের: স্গাঃ। ১৫॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

यरगडार्क्तकः। जिन्नः शूर्त्वाक्तथकाद्वन धनद्रानाच्चकः ॥ ১० ॥

দর্গ ইতি প্রাক্তের বৈক্তবিতি। তত্ত্ব কেচিৎ প্রাক্তা ঈশরস্থা: কেচিচ্চ বৈক্তা ত্রক্স্থা ইত্যর্থ:। উভয়াত্মকত্ত বক্ষাতে। ১৪ আদ্যবিত্যত্ত বত্তেতি পূর্বেণাপি সংবধাতে। যত্ত্ব মহতঃ সর্গে আত্মনোজীবত গুণবৈৰ্দ্যাং ভবতীতি। যদ্যপি পাত্মকলে-হত্মিনু পূর্ববিদ্যবাহ্যবাদীনাং সর্গোনান্তি তথাপি তত্ত্বেশঃ স্কুস্কু ক্রমবোধার্থ এব ॥ ১৫ ॥

श्रीविश्रनाथहळ्वको ।

ন্যাণ্যন্ত্রোরস্থাদস্দের বিখনিতাতো অসত্যক্ত বিশ্বক কিং পরিচ্ছির্ত্থাদ্যুক্তে চেটেরবং বাচানিতাহে বংধতি অওে পূর্ক মহাপ্রলয়ক্তাদাবপি এত হিখমাসীদের । পশ্চাত্ত্রপ্রলয়াতেপি ভবিষ্যাচ্যেবেত্যতোহত ন মিথাভ্তত্থ কিন্তু নখরত্মেবেতি ভাব: ॥ ১০ ॥

এবং সামান্ততঃ কালং নির্পোত্রাধানে বিশেষতো নির্পয়িষান্ তরিমিত্তং সর্গং বিভারেণাক্তং বক্ষামাণক স্থবোধার্থং সংক্ষেপতো দশবিধন্দেন সংকলমতি। সর্গ ইতি বস্তু প্রাকৃতিত হৈকৃতক্ত স দশীন ইতি শেবঃ। তরিমিত্তমের ত্রিবিধং প্রলম্মাহ কালেনৈর কোবলেন নিতাঃ প্রলম্ভ তেরেণ শহুর্বাধাগিনা নৈমিত্তিকঃ গুটাং স্বাহ্ম বাংলাং প্রস্তিত গোক্তিকঃ । ১৪ ॥

তানেব সর্গান্ বির্ণোতি আদ্য ইত্যাদিনা যাবদধ্যারসমাপ্তি। মহতো লক্ষণং আত্মন: পরমেশরাৎ সকাশাৎ গুণানাং বৈষমাং প্রথমং অহমোহহত্মারত ওতা লক্ষণং যতেতি দ্রব্যাণি ভূতানি জানানি জানে ব্রিরাণি দেবতা মনশ্চ কিরা কর্মেব্রিরাণি তেবা-মুদরো যতঃ সঃ ॥ ১৫॥

এই বিশ্ব একণে যে প্রকার, পূর্বেও এই প্রকারই ছিল, পরে ইছা ঈদৃশই হইবে ॥১৩॥

এই বিখের স্থি নয় প্রকার, তত্তির প্রাকৃত এবং বৈকৃত যে স্থি আছে তাহা দশম, এজন্য কাল, দ্ব্যে এবং গুণ বারা তিন প্রকার প্রলয় হইয়া থাকে অর্থাৎ কেবল কাল নিমিন্ত নিত্য প্রলয় এবং সন্ধ্বণের মুখাগ্রি বারা দ্ব্যে নিমিন্ত নৈমিন্তিক প্রলয়,তথা স্ব স্থ কার্য্য আসকারি গুণবারা প্রাকৃত প্রলয় এই ত্রিবিধ প্রলয় হয় ॥ ১৪ ॥

হে বিশ্বর! নর প্রকার যে স্পৃষ্টির কথা কহিলাম তাহা এই, বধা মহতের স্পৃষ্টি ।

লক্ষণ এই আন্ধ্রী স্বরূপ ভগবানের প্রকাশ হইতে যে গুণ সকলের বৈষ্মা হয় তাহাকে । ১৯ ৭০ল।
বিতীয় অহস্কার স্পৃষ্টি, তাহার স্বরূপ এই যে, যাহাতে দ্রেব্য জ্ঞান এবং ক্রিয়ার প্রকাশ হয়, তাহার নাম অহস্কার ॥ ১৫॥

ভূতদর্গ স্তৃতীয়স্ত তথাতো দেবা শক্তিমান্। চতুর্থ ঐদ্রিয়: দর্গো যস্ত জ্ঞান ক্রিয়াল্পক: ॥ ১৬ ॥ বৈকারিকো দেবদর্গঃ পঞ্চমা ব্দায়ং মন:। ষষ্ঠস্ত তমদঃ দর্গো যস্তবৃদ্ধিকৃত: প্রভাঃ ॥ ১৭ ॥ বড়িমে প্রাকৃতা: দর্গা বৈক্তানপি মে শৃর্। রজোভাজো ভগবতো লীলেয়ং ছ্রিমেধদঃ ॥ ১৮ ॥ দপ্রমো মুখ্যদর্গস্ত বড্বিধ স্তম্ম্বাঞ্ক যঃ। বনস্পত্যোষধি লতা তৃক্দারা বীক্রধোক্রমাঃ ॥ ১৯ ॥

अभित्रवामी ।

ভন্মানো ভূতসর্গ: ভূতস্কাসর্গ ইভার্থ:। জাবাশকিমান্ মহাভূতোৎপাদক: আনকর্মেকিরাত্মকশচভূর্থ:। ১৬।
প্রধানা বৈকারিক: ই'ফ্রেরাধিষ্ঠাভারো দেবা মনশ্চ। বৃষ্ঠত তমস: প্রধানিদায়া আবৃত্তি জীবানামাবরণং বিক্লেপশচ ভাং
করোতীতাবৃত্তিক্রং তহা ॥ ১৭ ॥

মে মতঃ শুগু। অফ্ৰেগেন শ্ৰোভবাভাষাহ যদিবয়া মেধা সংসারং হরতি তম্ভ হরেলীসা যদা ইয়মিতি ভম আদি স্গ্রিপা। রলোভাল ইতি একারণভোতার্থ:। অমিন্ পকে অব্দ্রিকত ইতি প্রথমাতঃ অনবধানকৃত ইতার্থ: ৪ ১৮ ৪

মুধমিব প্রথমং ক্তো মুধ্যসর্গঃ ততুরাং ভাবরাণাং বড়্বিধন্মবাহ বে পূলাং বিনা ফলভি তে বনম্পভরঃ ওবধরঃ ফলপা-

ক্রমসন্দর্ভ:।

তন্মাত্র: তেবাং ভূতানাং মাত্রা স্ক্রাবস্থা যদ্মিন্ সঃ । ১৬ ।

यचिकि তুশবः পাণপুরণে। তু-हि-চ-ম-হ-টব-পাদ পুরণ ইত্যমর: ॥ ১৭ ॥

রলোভাজ: সরিখে) ন সরং ওত্পকারকত বহ্মরণেশ ডু তত্পাধিকভেডার্থ:। টীকারাং তম আদীতি আদিপদেন মুধ্যসর্গ প্রভৃতিবং গ্রাহং। অনবধান রুত ইতি হ্রেরেব ধ্যান সাত্ত্যাৎ ব্লুগত্ত ত্যাভিচার।দিত্যর্থ: ৪ ১৮ ৪

সপ্তম ইতি সাৰ্দ্ধকং ॥ ১৯। ২০।২১॥

এবিশ্বনাগচক্রবতী।

ভূতদর্গ: তলাতা: তলাতাশ্বর অব্যেষু মহাভূতেরু শক্তিম।ন্ তৎপ্রকাশনদমর্গতেতার্থ:। জ্ঞানকর্মেক্তিরাণানাশ্বা শক্তণং যত:॥১৬॥

বৈকারিকঃ সাবিকাহকারসম্বন্ধী। দেবানাং ইন্দ্রিয়াধিঠাতুণাং সর্গঃ যন্ময়ং মনঃ মনসোপি সর্গঃ পঞ্চম ইত্যর্থ: এতে পঞ্চর্গাঃ
প্রাণানিকা উক্তাঃ। আবিদাকং সর্গমাহ ষঠান্বিভি ছু ভিলোগক্রমে। তমসোহকানত সর্গঃ ষঠঃ প্রভাঃ পরমেশ্বরত শক্তিরবৃদ্ধি
ভাবিমোহিনী বা অবিদ্যা নামী তয়া ক্তঃ। অয়মর্থঃ। প্রধানং অবিদ্যা বিদ্যেতি মায়ায়া তিলো বৃত্তয়ঃ। তল্প প্রধানন
মহদাদি পৃথিবাস্তানি তন্তানি সভাত্তের স্পতানি বৈবের সমষ্টব্যতিরপাঃ জীবত স্থলাত্তপা স্ক্রান্দোপাধরোহত্তব্ । বিভীরয়া অবিদ্যেত্ জীবং মোহরস্তা। জীবসম্ক্রমবিদ্যা অন্তিভা রাগংখ্যাভিনিবেশান্মকং তমঃ পঞ্চবিধমজ্ঞানমসভামের স্কৃত্তঃ এবং সভ্য
মিথাাত্রকং জগদিদং প্রধানাবিদ্যাভাঃ স্পতা। তৃতীয়য়া বিদ্যায়াত্র পঞ্বিধাহ্লাননিবর্ত্তকং জ্ঞানং স্কৃত্তয়ং। তৃতীয়য়া বিদ্যায়ত্রত ॥ ১৭ ॥

প্রক্তেশারাশক্ষে: স্কাশাক্ষাতা ইতি প্রাক্তা ইনে বট্। বিক্রতি: স্মষ্টিবিরাড্রেশ্বা তত্মাক্ষাতান্ বক্ষামাণান্পি মে মতঃ বৈক্তানিত্যেত্বির্ণোতি রলোভালো বহারপ্ত হরিশেধায়াং যত তত্ত । ১৮।

श्वावतक्षत्रमाश्वकण क्रगणः श्वावतानाः श्वावमार मृत्य श्रवतम ख्वा मृथाः वखदूवाः श्वावतानाः। भूलाः विना क्रणवत्सा वन-

পঞ্তমাত্র রূপ ভূত সৃক্ষা অর্থাৎ ভূতসূক্ষের উদ্ভব তৃতীয় তাহা দ্রব্যশক্তি যুক্ত, তাহা হইতে মহাভূতের উৎপতি হয়। অপর জ্ঞান, কর্ম এবং ইক্রিয় স্বরূপ যে স্ফি তাহা চভূর্থ॥ ১৬॥

বৈকারিক স্থি পঞ্ম, ইন্দ্রিয় সকলের অধিষ্ঠাতৃ দেবগণ এবং মন:, তাহার লক্ষণ ও পঞ্জুন্তি স্থান্থ অবিদ্যার স্থি ষষ্ঠ, তাহাতেই জীবগণের অবৃদ্ধি অর্থাৎ আবরণ ও বিক্ষেপ হইরা থাকে ॥১৭॥ অহে বিস্তুর! উল্লিখিত ছয় প্রকার স্থান্টিকেই প্রাক্তে সৃষ্টি বলিয়া থাকে, একণে বৈকারিক স্থান্তীর বর্ণন করি প্রবণ কর। অহে ! এ বিষয় অসুবেগে প্রবণ করিতে হয়, যে ভগবিষয়ে মতি হইলে সংসার নিবারণ হয়, এ সকল বিবরণ রক্ষোগুণাবলম্বী, সেই ভগবানের লীলামাত্র ॥ ১৮ ॥ অপর যে সকল আবরের স্থিই হয় তাহা সপ্তম স্থিই,তাহা অন্যান্য প্রকার স্থিকীর মুখবৎ প্রথম

উৎব্যোত্তস স্তম: প্রায়া: অস্ত: স্পর্ণা বিশেষিণ: ॥ ২ ॥ ।
তিরশ্চামন্টম: সর্প: সোহস্টাবিংশবিধো মতঃ। অবিদো ভূরি তমসো আণস্তা হল্যবেদিন: ॥২১॥
গৌরজো মহিষ: ক্ষুফ: শৃক্রো প্রয়ো রুক্র:। বিশকা: পশবশ্চেমে অবিরুষ্ট্রশ্চ সন্তম ॥
ধরোহখোহখাতরো গৌর: শরভশ্চমরী তথা। এতে চৈক শকা: ক্ষুড: শৃণু পঞ্চনধান্ পশ্ন্ ॥২২॥

के बद्रश्रामी ।

কারা গতাঃ আবোহণাপেক্ষাঃ অক্সারা বেশাদরঃ গতা এব কাঠিপ্রেনারোহণানপেক্ষা বীরুণঃ। বে প্লৈঃ ফলতি তে ক্রমাঃ ১১৯ তেযাং সাধারণ লক্ষণমাহ উর্দ্ধ লোভ আহার সঞ্চারো ঘেষাং তমঃ প্রায়া অবাক্ত চৈওল্পাঃ। অন্তঃ লগণাঃ লগ্দমেব জানস্কি দাক্তং তদপাস্তরেব ন বহিঃ। বিদেষিণঃ অবাবহিত পরিণামাদ্যনেক ভেদবন্তঃ ॥ ২০ ॥

ভিৰ্যাক্ লোভসাং সৰ্গমাহ ভিৰশ্চামিতি সচাষ্টাবিংশভিভেদ:। তিৰ্লচাং সক্ষণং অবিদ: খন্তনাদি আনশ্ভা:। ভূৱি তমসং আহারাদি মাআনিষ্ঠা:। আণক্তাঃ আণেনৈবেইমর্থং জান্সন্তি হৃদি অবেদিন: দীর্ঘান্নদ্ধান শৃভা:। ভথাচ শ্রুতি:। অথেত বেৰাং পশ্নাং অশনা পিপাসে এবাভিবিজ্ঞানং বদন্তি ন বিজ্ঞাপিতং পশ্রুতি ন বিজ্ঞাধনং নলোকালোকাবিতি ॥ ২১ ৪

অষ্টাবিংশতি ভেদানেবাহ গৰাদম উট্ৰাস্তা বিশক্ষা: বিখুৱা নৰ ধরাদরশুমর্যাস্তা একশকাঃ বট্খাদ্যো গোধাস্তাঃ পঞ্চনধা বাদশ ॥২২

क्रमममर्छः।

গৌরল ইতি চতুকং। একৈভোহয়ং বহুনামুপলকণরণো জের:॥ ২২। ২০।

अविश्वनाथहळाव ही ।

স্পতর:। ওবধর: ফলপাকাস্তা:। লভা আবোহণাপেক্ষা:। স্ক্লারা বেণ্।পর:। লভাএব কাঠিভোনারে।হণানপেক্ষা বীরুধ:। প্লৈবের ফলভো ক্রমা:॥ >> ৪

ভেষাং সাধারণং লক্ষণমাহ। উর্জ্বং স্রোভ আহারসঞ্চারো বেবাং তে ভম: প্রায়া অব্যক্তটেতফ্রা: অন্ত: স্পর্না অন্তর্গুত্র ব্যথামূভবিন:। বিশেষিণ: অব্যবস্থিতগরিণামাদ্যনেকভেদবস্তঃ । ২০ ।

ভিরশ্চাং ভির্যাক্ লোভসাং। অবিদ: খণ্ডনাদিজানশূন্যা:। ভ্রিডমসং আহারাদিমাত্তনিহা:। আণজা: আণেটনবেইমর্থং জানভি । হৃদি অবেদিন: দীর্থাসুস্থানশূন্যা: অম পরামর্শা:। তথাচ শ্রুডি:। অবেডরেবাং পশুনাং অমনাপিপাসে এবাজিবিজ্ঞানং বৃদ্ধি । ন বিজ্ঞাপিতং পশুন্তি ন বিজ্ঞাপতং ন শোকালোকাবিতি। যথা ভ্রিডমসো বহুক্বঃ আণেটনব জানভি জ্লাং প্রতিজ্ঞান বছেব বিশ্বতি ভোজনশ্রনাধার্থং গৃক্তি । ২১ ।

भवानत्र উद्वेशका विभक्षा विश्वा नव । व्यविदर्भवः भवानत्र-प्रमरीका अक्ष्मकाः वर्षे । २२ ॥

হইয়াছিল এ নিমিত্ত তাহাকে মুখ্য বলে। ঐ স্থাবর ষড়্বিধ হয় তথাধ্যে প্রথম বনস্পতি (পুল্প ব্যক্তি-রেকে ফল শালী বৃক্ষ) বিভীয় ওমধি অর্থাৎ যে সকল বৃক্ষ ফল পাকান্তে বিনক্ত হয়, তৃতীয় লতা (যে সকল উদ্ভিদের অবলম্বনার্থ আরোহণাপেক্ষা আছে) চতুর্থ স্ক্সার (বেণু প্রভৃতি) পঞ্ম বীরুধ্ (লতা বিশেষ কাঠিয়া হেডু তাহাদের আরোহণাপেক্ষা নাই) ষঠ বৃক্ষ (পুল্পানন্তর ফলশালী তরু)॥১৯॥

বংস! ঐ সকল স্থাবরই উৎস্রোতঃ অর্থাৎ আহারার্থ উর্দ্ধে সঞ্চরণশীল এবং উহারা সকলেই তমঃ প্রায় অর্থাৎ অব্যক্ত চৈতক্ত, তাহাদের কেবল অন্তরে ম্পর্শ জ্ঞান আছে এবং তাহারা ব্যবস্থিত পরিণামাদি ভেদে বিবিধ ভেদ বিশিষ্ট হইয়া থাকে । ২০ ॥

আর তির্যাপু যোনিদিপের স্থাকি অউম, তাহা অক্টাবিংশতি প্রকার, তাহারা ভবিষ্যৎ আন শুর্ভ এবং বছল তমোগুণ বিশিক্ট,একারণ কেবল আহারাদি মাত্রেই তৎপর,তাহারা কেবল আণেপ্রিয় বারা অভিলবিত বস্তু জানিতে পারে, তাহাদের জনরে কোন জান থাকে না অর্থাৎ দীর্ঘামুসদ্ধান শৃত্য ॥ ২১॥ ঐ অক্টাবিংশতি তির্যাগ্রোনি এই। যথা গো, ছাগ, মহিষ, কৃষ্ণ (মৃগ বিশেষ) শৃকর, গবম, রুক্ 30b

খা শৃগালো বুকো ব্যাভো মার্জার; শশশরকো। দিংহং কপি গঁলং কৃশ্রো গোধাচ মকরাদয়: ॥
করু গৃপ্ত বক শ্রেন ভাগ ভল্লক বর্হিণঃ। হংস সারস চক্রাহ্ব কাকোস্কালরঃ খগাঃ ॥ ২০ ॥
অর্কাক্ স্রোভস্ত নবমঃ করুবেকবিধো নৃগাং। রজোহধিকাঃ কর্মপরা হুংখেচ হুখমানিনঃ ॥২৪০
বৈকৃতান্ত্রয় এবৈতে দেবসর্গশ্চ সত্তম। বৈকারিকস্ত যঃ প্রোক্তঃ কৌমারত ভ্রাত্মকঃ ॥ ২৫ ॥

विषत्रभामी ।

শ্ৰীমন্তাপৰভূম।

এবনেতে ভ্চরাঃ সপ্তবিংশক্তিঃ মকরাদরে। কলচরাঃ কলাদরশ্চ থগাঃ অভ্চরত্তেনৈকীক্লন্তা গৃহীতাঃ। তদেবমন্তাবিংশতি ভেদানু বদন্তি তেরু কৃষ্ণ কৃক্ গৌরাঃ মুগবিশেষাঃ অন্যোধাশি তির্গাক্ প্রাণিবামেতেত্ত্তের ব্ধার্থমন্তর্ভারঃ। ২০॥

আগং আহার স্থাবো যক্ত সোহকাক্ প্রোভা:। ত্রেষ্মার্বং নৃণাং সর্গঃ নৃণাং দক্ষণং রঞ্জ ক্ষিকং বেরু । ২৪ ॥
এতে এয়ো বৈক্তা এব ন কৌমারবহুভরাত্মকা:। দেবসর্গত বৈক্ত ইত্যান্ত্রক: বৈকারিকভা দেবসর্গ: প্রাক্তের পূর্বমেব
প্রোক্ত: অয়স্ক তত্যে ন্যব্যাৎ বৈক্তঃ। দেবসর্গ্রাত্মভক্তিত রূমবক্ষারাদীনাং সর্গত্ত প্রাক্তেত বৈকৃতত দেব্যেন মহ্ব্যাত্ম
চ ক্ষা ইত্যর্থ: ॥ ২৫ ॥

क्रममन्दः।

অর্বাগিতি। তেচনব রজোণিকা:। ২৪ ॥

যন্ত বৈকারিকত্তবদেবতারপা সতু প্রোক্তঃ। প্রাকৃতভার তু বৈকৃতোহন প্রোচ্যত ইভার্থঃ। কৌমারত্বভারাত্মক ইভি তেখাং বিজ্ঞানি মনজাবিভূতিমারতাং তৎ ক্ল্যাত্তাপাতবিক্ষর। ॥ ২৫ ॥

बीवियनाथ ठक वर्ती।

অর্জাগধ আহারসঞ্চারো বতা সোহর্কাক্ স্রোভঃ ক্রবছমার্বং নৃশাং লক্ষণং রক্ষ ইত্যাদি। ২৪ ॥ এতে জম্মে বৈকৃতা এব ॥ ২৫ ॥

(মৃগ বিশেষ মেষ, এবং উট্র)। হে সন্তম! এই নয় প্রকার পশু দিশক অর্থাৎ ইহাদের পদে ছুইটা করিয়া খুর আছে। আর গর্দভ, অখ, অখতর (থচ্চর) গোর (মৃগ বিশেষ) শরভ এবং চমরী এই সকল পশু একশক অর্থাৎ ইহাদের পদে এক ঝানি খুর আছে। অপর হে ক্রংশ্রেষ্ঠ। কোন কোন জন্তকে পঞ্চনখ বলে তাহাও বলিতেছি ভাবন কর॥ ২২॥

কুরুর, শৃগাল, ব্যাত্র, বিড়াল, শশক, শলক (শলারু) সিংহ, বানর, হন্তী, কচ্ছপ, এবং গোধা (গোদাপ) এই দাদশ প্রকার জন্ত পঞ্চনথ, অর্থাৎ ইহাদের পাঁচটা করিয়া নথ আছে এই কারণেই ইহাদিগকে পঞ্চনথ বলে। আর মকরাদি জলচর এবং কঙ্ক, গৃগ্ধ, বক, শ্যেন, ভাস, ভলক, ময়ুর, হংস, সারদ, চক্রবাক্, পেচক, এই সকল জন্ত থেচর অর্থাৎ ইহারা আকাশে বিচরণ করে ॥ ২০॥

অনন্তর সমুষ্যদিগের যে সৃষ্টি তাহা নবম তাহা এক প্রকার, এই প্রাণির আহার সঞ্চার অধােত কি ভাতীয় প্রাণিতে রজাে গুণই অধিক এ নিমিত ইহারা কর্মে তৎপর এবং ত্ংখেতেও
ত বা বাবে ॥ ২৪ ॥

ছে সত্তম ! পূর্বে প্রাকৃত সৃষ্টির বর্ণন কালে যে বৈকৃত সৃষ্টির প্রসন্ধ কহিয়াছি তাহা উলিখিত তিন প্রকার, জীব তথা দেবগণ সেই বৈকৃত সৃষ্টি। কিন্তু সনৎকুমারাদি স্থা উপ্রাকৃত এবং বৈকৃত এই ছই প্রকারই হইয়া থাকে যে হেছু সে সকলে দেবছ ও সমুষ্য উদ্ধাই আছে॥ ২৫॥ দেবসর্গশ্চাই বিশো বিবৃধাঃ পিতরোহ হরাঃ। গদ্ধ বিশের সং সিদ্ধা যক রক্ষাংসি চারণাঃ।
সূত প্রেক্ত পিশাচাশ্চ বিদ্যাঝাঃ কিন্তরাদয়ঃ। দশৈতে বিছরাখ্যাকাঃ সর্গান্তে বিখসক্তৃতাঃ॥
অতঃ পরং প্রবক্ষ্যামি বংশামন্ব স্তরাণিচ। এবং রক্তঃ প্লুতঃ অক্টা ক্ল্লাদিলাল্লভূর্হরিঃ॥
স্কৃত্যমোঘ সংক্লে আজ্মৈবাল্লাননাল্লা॥ ২৬॥

। *। ইতি জ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়স্কল্পে তত্ত্বাহ্নাৎ-পত্তিক্রমো দশলোহধ্যায়ঃ । •। >• । •।

শ্রীমৈত্রেয় উবাচ ॥

धिशतयामी।

বৈকৃতশ্চ দেবসর্গোষ্ট্রবিধঃ। তার বিবৃধাদর: এরো ভেদঃ গন্ধবিশারর এক: বক্ষরক্ষাংস্তেকঃ। ভূভ প্রেত শিশাচা এক: সিন্ধচারণ বিদ্যাধরা একঃ। কিরবাদর এক: আদিশকাৎ কিংপুক্ষবাখম্থাদরঃ। এডচে বিংশোষ্ধ্যায়ে স্পটং ভবিষ্যতি ॥ ২৬ ॥ ॥ ● ॥ ইডি ভৃতীরে দশমঃ ॥ ● ॥

छछ এकामरण काम: भवभागानि मक्करेग:। यूगमवस्त्रतानिकाः कह्मानानि वर्गाटक । • ।

क्रमनमर्जः।

(वरनर्भः हेकि नाईकः । २७।

। ♦ । ইতি শীভাগবতে তৃতীয়স্বন্ধে শীলীবগোমামিকত ক্রমসন্দর্ভক্ত ক্রমসন্দর্ভক ক্রমনাহ্ব্যার: গমাপ্ত: । ●।

व्यविषमाभवक्ष रहीं।

দেবসর্গণ্ট বৈক্ষতঃ প্রাক্তেশ। ক ইত্যপেকারামাছ বন্ধ বৈকারিকঃ বৈকারিকাছের ভাবানাং দেবানাং সর্গ:। প্রাক্তেছু প্রোক্তঃ পুনতেষামেব ব্রক্ষতেরটাবৈক্তল । তথা কৌমারঃ সনৎকুমারঃ সনৎকুমারাদীনাং সর্গল্প উভয়াল্পক ইতি তেবাং গুগ-বন্ধ্যানপুতেন মনসাস্তাং অভোহস্কারিভাবিয়োকে র্জাবন্ধান্দ্রন্ত্রন অগবন্ধ্যক্ত বাক্তেল্ডা প্রাক্তিকার বিক্তেল্ডার্গ: ।

বৈক্বতত্ত্ব দেবদর্গোষ্ট্রভেদঃ তত্র বিব্ধাদমন্ত্রের। ভেদাঃ গন্ধর্কাপরদ একঃ যক্ষরকাংত্তেকঃ ভূত প্রেত পিশাচা একঃ সিদ্ধচারণ বিশ্বাধরা একঃ কিল্লাদয় এক ইত্যটো ভেদাঃ। আদিশবাৎ কিংপুক্রাদয়ঃ।

বিশস্ক্ পরমেখরো ব্রহ্মাচ a হরিরেবাম্মুজ: সরিভাষ্য: ॥ ২৬ व

n + n ইতি সারার্থদিশিয়াং হবিশাং ভজতেত্সাং। তৃতীয়ে দশমোহধ্যার: সক্তঃ সক্তঃ স্তাং s + p

বৎস বিতুর! বৈকারিক দেবস্তিও আট প্রকার, যথা দেব (১) পিতৃ (২) অহুর (৩) গদ্ধর্ব

আক্ষরা (৪) যক্ষ রাক্ষস (৫) সিদ্ধ, চারণ, বিদ্যাধর (৬) স্থত, প্রেত, পিশাচ (৭) কিন্নর কিংপু-পুরুষ (৮) ইত্যাদি॥

হে বিদ্ব ! বিশ্ব অন্টা জক্ষা অত্যে যে দশ প্রকার সৃষ্টি করেন তাহা এই তোমার নিকট বর্ণন করিলাম। অতঃপর বংশ মন্বস্তর বর্ণন করি প্রবণ কর ।

আহে! আত্মত ত্রেরা করের আদিতে প্রকী হইরা রজোগুণাবলমন পূর্বক আপনা ছার কেই আপনি সৃষ্টি করেন, তাঁহার সংক্রে অনোঘ, তিনি যাহা ইচ্ছা করেন, কদাপি তা হয় না ৪ ২৬ ৪

। 🛊 । ইভি তৃতীয়ে দশন । 🛊 ।

একাদশাধ্যারে পরমাণু প্রভৃতির লক্ষণ ছারা কালের নিরূপণ এবং বুগ সহস্তরাদি হইতে কল্ল মানাদির ভেদ বর্ণন ॥ • ॥ চরম: স্থিপেষাণামনেকোৎসংষ্ত: সদা। প্রমাণু: স বিজ্ঞেরো নৃণামৈকাজ্ঞমো বত: ॥ > ॥ সত এব প্রার্থ্য শ্বরূপাব্যত্ত যং। কৈবল্যং প্রম মহান্বিশেষো নির্ভন্ন: ॥ ২ ॥

विभवतामी।

তদেবং সামাস্তঃ কালভোগলকণভূতং গুণবাতিকরং দশবিধং নিরপোদানীং ততৈত বিশেবং নিরপিয়িছং তৎ পরিছেদাং বন্ধ লক্ষাতি বাত্যাং। সতঃ কার্যাত বিশেবাণাং অংশানাং বক্ষরেহাছেরা বন্ধাংশো নাজি অনেকঃ কার্যাবস্থামপ্রাপ্তঃ অসংযুকঃ সমুদারাবস্থাকাপ্রাপ্তঃ। অতএব সদা কার্যাসমুদারাবস্থারোরপগমেপাতি স পরমাণ্কিজেরঃ। কিং ভত্ত প্রমাণমত আহ বতঃ বেভাঃ সমুদিতেভাঃ নৃণাং ব্যবহর্ত্বণাং ঐকাত্রমঃ অবয়বি বৃদ্ধিঃ। তথাত,পঞ্চমে অবয়বিনিরাক্ষরণে বক্ষাতি। বেবাং সমুহেন কতো বিশেষ ইতি। কার্যাক্পপত্যা করাতে ইতি ভাবঃ॥ ১॥

স্কুমুকু । স্থুলমাহ সত এবেতি বক্ত চরমোহংশ: পরমাণু: ভক্তৈব সতঃ কার্যামাত্রক স্বরূপাবস্থিত পরিশামাত্তরমপ্রাপ্তত বং

ক্রমসন্দর্জঃ।

এবনিতি যত্কং তদেব বির্ণোতি স কাল ইতি । আন টীকায়াং প্রমাণুদেশগতিকামতীতান মধ্যম বীধীমর জ্যোতিশ্চক গতেতি জ্বেং। সর্বাং ত্বনকোষমতিকামতীতান তু অগতোতি জ্বেং। যো তুঙ্জে প্রমাণুতামিতান চ স্থারপেণ প্রমাণ্লোতিলামিতানিতানিতান হল তেওঁ কালগা স্থোণাভেলঃ যঃ স্জালকিম্কুধেতানেন। যথা প্রমাণ্তাং তৎপদার্থবং প্রমস্কাবস্থতাং যো তুঙ্কে ব্যাপ্রাতি স কালঃ প্রমাণ্। সতঃ প্রপঞ্স্যাবিশেষত্ক স্ট্যাদিসংহারপর্যান্তং সর্বাণেষ ব্যাপ্রাতি যঃ স্কলেন ব্যাপ্রাতি বিশ্বম্বান্তিল বিশ্বমান্তিল বিশ্বমান্ত বিশ্বমান্তিল বিশ

क्षीविश्वनाथठळावडी ।

একাগণে পূন: কালো বিশেষণাপি লক্ষ্যতে। মাস্বর্য্গাদীনাং প্রমাণং জ্ঞায়তে যতঃ ॥ • ৪ প্রথমমাতা জিকং ক্ল্কালং প্রস্পতো লক্ষ্যিত্মশকু বংল্ডং পরিছেদাং বল্ধ লক্ষ্যতি। সতঃ কার্য্সা পৃথিবাদের্কিশেবাণামংশানাং যণ্ডরম: বল্যাংশো ন সন্তবি । নমু চরম ইত্যেক বচনাৎ স কিমেক এব ন কিল্পনেক:। অত ক্ল্কাল জ্ঞানার্থং তেবাং বহুদেশি একসোবোপযোগি তেতে ক্রেক্র প্রের্গা:। নমু তর্হি স বৈশিলিভোহমিলিতো বা অ্যোপাদীয়ত ইত্যেও আহ অসংযুতঃ প্রমাণ্ কিজ্যে এব নত্ দ্শত ইতার্থ:। নমু তর্হি ত্সা সল্বে কিং প্রমাণং ত্তাছ। যতঃ যেডাঃ সমৃদিতেভাঃ নৃণামকামিতি ভ্রেমা ভবতি। ক্র্যারশিন্তে গ্রাক্রমের যে ভ্রমন্তে ক্রেম্বাক্রমের যে ভ্রমন্তে ক্রেম্বাক্রমের বি ক্রম্বার্ক্রমাঃ পার্থিকণা দৃশ্যন্তে তেল্বম্বান্তে ক্রম্বান্তে ক্ল্পেএ কণ ইতি বৃদ্ধির্ক্রমিতার্থ:। তত্ত ব্রেটাইংশ্রের পরমাণ্ স্বদৃশ্য এবেতার্থ:। নৃণামিত্যক্ত্যা অস্বেণ্প্রমাণদেহানাং কীটবিশেষাণাং কেরাঞ্জিং সোণি দৃশ্য এবেতি ব্রাল্যতে ॥ ১ ॥

আতাত্তিকং স্ক্রমৃত্যু আতাত্তিকং স্বমণাহ যস চরমোহংশঃ পরমাণ্ডত্তিব সতঃ কার্যামাত্ত স্ক্রপাবস্থিতস্থ প্রবাম

মৈত্রের মুনি সামান্ততঃ কালের উবোধক অরপ পরস্পর গুণ সন্মিলন ছারা দশ বিধ স্পৃত্তি বর্ণন করিয়া তাহার বিশেষ নিরূপণার্থ বিচুরকে সম্বোধন করিয়া কহিতে লাগিলেন। হে কুরুজেষ্ঠ। কার্য্য অরপ পৃথিব্যাদি অংশের যে চরমাংশ অর্থাৎ যাহার আর বিভাগ হইতে পারে না এমত যে অংশ এবং যাহা কার্য্যবিদ্ধা প্রাপ্ত নহে, অপর অন্তের সহিত অসংযুক্ত অর্থাৎ সমুদায়াবদ্ধা অপ্রাপ্ত অতএব সর্বাদা বর্তমান অর্থাৎ কার্য্য ও সমুদায় অবদ্ধা অপগত হইলেও যাহা বিদ্যমান থাকে তাহাই প্রুমাণু। যদি বল এ বিষয়ে প্রমাণ কি? তাহাতে উত্তর এই যে পরমাণু পুঞ্জ পরস্পার নিলিত হওযাতে তাহাতেই ব্যবহারিক জীব সমূহকে ঐ রূপ অবয়বী জ্ঞান হইতেছে ইহাই প্রমাণ। ফলতঃ যথন শরীর দৃষ্ট হইতেছে তথন ইহার কারণ যে পরমাণু তাহা অবশ্যই কর্মা ক্রিতে হইবে ॥ ১ ॥

হে বিছুর! কার্যা স্বরূপ পৃথিব্যাদি অংশের যে অস্তভাগ পরমাণু ভাছ। অবছাত্তর প্রাপ্ত না হইয়া
স্বরূপে অব্দ্রিত হইলে ভাহার যে ঐক্য ভাহার নাম পর্ম মহ্ৎ। যদি বল কার্য্যে নানা বৈলক্ষ্য

এবং কালোপ্যসুমিতঃ গোক্ষা ছোল্যেচ দত্তম। সংস্থানভুক্ত্যা ভগবানব্যক্তোব্যক্তভুথিভুঃ॥৩॥ দকালঃ পরমাণুক্তি যোভুঙ্কে পরমাণুতাং। সতোহবিশেষভুগ্যস্ত দ কালঃ পরমো মহান্॥৪

विषत्रवामी।

কৈবলাং ঐকাং স পরম মহান্। পুংস্থং তু পরমাণু প্রতিবোগিশ্বাৎ। নতু নানা বিশেববান্ গরম্পারং ভিদ্নত সর্ব্ধ পদার্থ:। কথ-মৈকাং তক্ত তথাছ। অবিশেবঃ বিশেব বিবক্ষারহিতঃ নিরস্তরঃ ভেদবিবক্ষা রহিত । সর্ব্ধোপি প্রপঞ্চ পরম মহানিত্যর্থ:॥২ মধা স্ক্র স্থানতারং পদার্থ এবং কালোণাছমিতঃ। চকারান্মধ্যমাবস্থা গৃহতে। সংখ্যানং পরমাণ্ াদ্যবস্থা তস্য ভূক্তির্ব্ধাণ্ডি-ভদ্মা ভগবানিতি হরেঃ শক্তিঃ অভেষ্ঠিশুক্তং ব্যক্তং ভূঙ্ কে বস্বাধাতি পরিচ্ছিনতীতি ভথা বিভূ: উৎপত্যাধিরু দক্ষঃ॥৩ ৪

.এতদেব প্রশক্ষতি স ইত্যাদিনা সভঃ প্রশক্ত পরমাণ্ডাং পরমাণ্বস্থাং বো ভ্ত জে স কালঃ পরমাণ্: । ততিভ্বাবিশেষং সাকলাং বো ভ্ত জে স কালঃ পরমাণ্: । ততিভ্বাবিশেষং সাকলাং বো ভ্ত জে স কালঃ পরমাণ্: । অয় স্থা বাবতা পরমাণ্যে ভ্ত জে স পরম মহান্ । আয়মর্থ: এই ক্তাদিনা বং স্থাপ্যাটনং বক্ষাতে । তত্ত স্থাো বাবতা পরমাণ্যেশ মতিকামতি ভাবান্ কালঃ পরমাণ্: । বাবতাচ হালশ রাভাত্মকং সর্ধ: ভ্বনকোষমতিকামতি স পরম মহান্ সংবং-সরাজ্ব কালঃ ততিভবাবৃত্যা যুগমহন্তালৈ কেমেণ হিপান্তিভ্বিমিত মিতি । তথাচ প্রমাণ্ডার কালাদি বিভাগং বক্ষাতি ॥৪॥

द्यीविश्वनाथहळ्कवज्ञी ।

প্রাণ্ত্ত ভ বং কৈব লামৈকাং স পরম মহান্ পুংশ্বর পরমাণ্প্রতিবোগিছাং। নমু নানা বিশেষবান্ পরম্পরং ভিরশ্চ সর্কাং পদার্থ: কথমৈকাং তভ তত্তাহ। জবিশেষ বিশেষবিবলারহিতঃ নিরম্ভর ভেলবিবলারহিত চ। সর্কোপি প্রপঞ্চঃ পরম্মহানিত্যর্থ: ॥२॥ যথা ক্লঃ ছুলশ্চারং পদার্থ:। এবং কালোপান্ন্মিত: জ্ঞাতঃ। কেন প্রকারেণ সংস্থানং পরমাণ্পরম্মহতোঃ স্থান্ধ ভূতাবাধ্যা ভগবকুজিছাত্তগবান্ সভোহবাজঃ বাজেং সর্ক্তপঞ্চ ভূত্তাবাধ্যা ভগবকুজিছাত্তগবান্ সভোহবাজঃ বাজেং সর্ক্তপঞ্চ ভূত্ত্তে পরিচ্ছিনতীতি তথা বিভ্রত্ত্ব ব্যাপকঃ। উৎপত্তাবিরু বক্ষোবা ॥ ৩ ॥

সংস্থানভূক্ত ভাতার্থং বিরুণোতি। সতঃ কার্যত পরমাণ্ডাং পরমাণ্সরগং যং কালো ভূঙ্কে স্থারপোতিকামাতি স পরমাণ্ঃ। এইকে তি বজামাণবাকাদ্ট্যা বাবতা কালেন স্থাপরমাণ্ডেশমতিকামতি তাবান কালঃ পরমাণ্রিভার্থঃ। সচ ততৈর অবিশেষং সর্কমেব প্রপঞ্জ ভূত্কে বংসরবুপাদ্যাবৃত্যা স্থারগী যং কালঃ স পরমমহান্ স্টিমারভা প্রপঞ্জ সংহারপ্যান্তং বাবান্ কালঃ তাবান্ সর্ক্তিব পরমমহানিভার্থঃ। তত্ত্ব পরমাণ্ণ্ অসংরগ্নাং কার্যাংশানাঞ্চ কালাংশানাং সংজ্ঞাপ্রমাণে ভূলোতব ভথা পরম্মত্তঃ কার্যাত কালভাচ সংক্রৈব ভূলা তর্থাস্থানাং সংজ্ঞাপ্রমাণয়োভিরত্তি ভিরং ॥ ৪ ॥

এবং পরস্পার ভেদ আছে কিরপে ভাষার ঐক্য হইবে, ভাষার উত্তর এই বে, ভাষাতে বিশেষ বিবক্ষা বা ভেদ বিবক্ষা নাই, অভএব ঐ সকল প্রপঞ্চই পরম মহৎপদবাচ্য । ২ ।

হে সত্তম! পরমাণু প্রস্থৃতির অবস্থা ব্যাপ্তি স্থারা এই কাল যে প্রকারে সূক্ষা, স্থুল ও মধ্যবিদ্ধা প্রাপ্ত হয় তাহাও ঐ রূপে অসুমান করা যাইতে পারে। ঐ কাল ভগবান্ হরির শক্তি এবং স্বয়ং অব্যক্ত হইয়াও ব্যক্ত পদার্থের পরিচেছদ করে অপচ স্থাপনি বিস্কু, স্থাৎ উৎপত্তি প্রস্তৃতি কার্য্যে দক্ষ ॥ ৩॥

অহে বিজ্র। যে কাল এই জগৎপ্রপঞ্চের পরমাণু অবস্থা ভোগ করে সেই কাল পরমাণু (সূক্ষ) আর যে কাল ভাষার সাকল্য অবস্থা ভোগ করে ভাষাকে পরম মহৎ অর্থাৎ সুল্য কাল বলা গিয়া থাকে অর্থাৎ সূর্য্য যে পরমাণু স্থান অভিক্রম করিয়া গমন করেন ভাষাকেই পরমাণু কাল করে, আর যে ভাগল রাশি অরূপ সমস্ত ভ্রন অভিক্রমণ করিয়া গমন করেন ভাষাকে সম্বংসরাত্মক স্থল কাল বলা যায়, ইহা ভারা মুগ্যস্থ্যবিদ্ধানে ভিপরার্থ পর্যান্থ ভেদ হয় ॥ ৪ ॥

অণুবেশি পরমাণ্ স্থাৎ তাদরেণু দ্রারঃ স্মৃতঃ। জালার্করশাবেগতঃ ধমেবাসুপভরগাৎ ॥

खनत्तर् खिकः पूछ् एक यः कानः मा उपिः प्रुठा ॥ ৫ ॥

শতভাগস্ত বেধঃ স্থাতৈপ্রিভিস্ত লবঃ স্মৃতঃ ॥ ৬ ॥

নিমেষ্ত্রিলবো ভোর আন্ধাতান্তে তায়ঃ ক্ষণঃ। ক্ষণান্পঞ বিছুঃ কাষ্ঠাং লঘুতা দশ পঞ্চ । ৭ । লঘুনি বৈ সমান্ধাতা দশ পঞ্চ নাড়িকাঃ। তে বে মুহুর্ত্তঃ প্রছরঃ বভ্ যামঃ সপ্ত বা নৃণাং ॥৮॥

श्रिपत्रचामी।

ইদানীং শাণুকাদি লক্ষণ পূর্বকং মধাম কালাবস্থাং কথমতি। বৌ পদ্মাণু আণু: ভাৎ অঘোষণৰ: অসমেণু: সভু প্রভাক ইত্যাৰ ফালাকেতি গ্রাক প্রবিষ্টেষ্ক্রিমিন্ অব্গতঃ। কোহসৌ বোহতি লঘুছেন ধ্যেৰাস্পতন্ অগাৎ গতঃ। নগামিতি পাঠে ধ্যেৰাস্পতন্ অব্গতঃ নতু গাং পৃথীং ৪ ৫ ॥

শতং ভাগা: ফটিরপা যশ্মিন্ স বেধ: তৈর্কেটিগ: । ৬ ।

তে নিমেষা ক্রয়: কণ ইত্যায়াতা: তাঃ কাঠাঃ পঞ্চশকঃ স্মু ॥ ৭ ৪

নাজিকা: বট্দপ্ত বা প্ৰহর: সূত্ৰ বামোপি দিনত রাতেশ্চ চতুর্বো ভাগঃ ছালে বট্রুছো সপ্ত সন্ধাংশ মুহুর্বছয়ং বিৰেতি

क्रममम्बः।

অণুষ্বিতি পদ্যং পদাৰ্থকালরোঃ দামান্য বচনং দৃইত্তিদাই ভিক্তাবেনৈক নামছেল চ ॥ ৫ । ৬ । ৭ ॥
যট্ সপ্তবেতি । বা শস্তুত্ত স্ক্মেৰান্তরং সম্ক্রিনোতি ॥ ৮ । ৯ । ১ • । ১১ ॥

बिवनाथठक वर्षी ।

খেন পরমাণ অবৃং তাং। অরোহণবল্পসরেবৃং সভ্ প্রত্যক ইতাাহ। আলাকেতি গ্রাক্ষপ্রবিষ্টেষ্করিশির্ থমেবাতি লাঘ্বেন অফ্পতন্ অপগত-চক্ষা আভঃ মতৃ গাং পৃথীং অগাদিতিপাঠে তথাভূত-চলতীতার্থ: অআগ্পরমাণো: সত্বে বিং জ্ঞাপকমিতি চেং। অস্বেবৃরেব। তথা হি অব্যবানাং ছৌল্যপ্রের্ছি বিনা অব্যবী দূশো নভবতীতি সর্ব্ধে নিয়মঃ অঅ অস্বেবেণারব্যবিনঃ অয়ঃ সূলা অব্যব এবাব্যবাঃ কয়াা মতৃ প্রমাণ্য ভোষাং স্থোলাভাবাং ছৌলামনেকবল্পঘটিভল্পমিতাণো: ছৌলাং প্রমাণ্ বিনা নসংভবেদিতি প্রমাণ্সিছি:। অস্বেনাভূশাস্থ্যব্যবহালীং বিনা ন স্ভবেদিতাণ্সিছি:। তথা অণো: ছৌল্যার্থং প্রমাণোছি দিমেব কয়াতে নতু আছে চতুছাদিকং প্রথমোপস্থিতেভল্পমাণিতি ন্যারাং। যথা ক্সিঞ্লানালভেত প্রাচুর্যার্থ মনোরিপি আত্মের কয়াতে তথা যুক্সেরিতি ।

অসংবণ্তিকমিতি তিভিন্তগংৰণ্ডি: ক্ৰটি:। স্চা। ভিন্নে পল্পত্তে ক্ৰটিরিভাভিণীরতে ইভি স্থাসিকাত্তঃ। বাৰতা কালেন পল্পস্পপত্তং ভিদাতে তাৰান্ কাল ক্ৰটিরিভার্থ: ॥ ৫ ॥

শতং ভাগা: ক্রটিরূপা যদ্মিন্ ল বেখঃ ক্রটিশতেন বেশ ইতার্থ:। 🕻 ভব্লিভিল বিঃ । 🗢 ।

যে নিমিষা: আয়াতাঃ ক্বিতাঃ তাঃ কাঠাঃ া ুণ ।

নাজিকা দত্তঃ তে বে নাজিকে। বট ্সপ্ত বা নাজিকাঃ প্রহরঃ সএব বামোপি। দিনসা রাত্রেশ্চ চতুর্বভাগঃ হাবে বট

স্থলকালের প্রভেদ এই যে হুই পরমাণুতে এক অণু হয়, তিন অণুতে এক অসরেণু বলিয়া উক্ত হয়। হে বিহুর। ঐ অসরেণু প্রতাক্ষ হয়, গৰাক্ষ বার দিয়া সূর্য্যরশ্মি গৃহ মধ্যে প্রবিষ্ট হইলে ভাহার স্থান স্থানিকাল কোনা যায় অর্থাৎ সেই সূর্য্যকিরণ যোগে অতিশয় লঘুছ হেতু যা হা আকাশগামী

তাহাই অসরেণু, ঐ রূপ তিন অসরেণু যে কাল ভোগ করে তাহার নাম ক্রুটি॥ ৫॥

৫০ ।বহুর ! শত ক্রেটি পরিমিত যে কাল তাহাকে বেধ বলে, তিন বেধে এক লব হইয়া থাকে ॥৬॥

তিন লব পরিমিত কালে নিমেষ হয়, তিন নিমেষে এক ক্রণ হইয়া থাকে। আর পাঁচ ক্রণে এক
কাঠা এবং পঞ্চদশ কাঠায় এক লযু হয়॥ १॥

**

পঞ্দশ লঘুতে এক নাড়ী অৰ্থাৎ দণ্ডনামে কথিত হয়, সেই দণ্ডৰয়ে এক মহুৰ্ত, ছয় বা সাত দণ্ডে

মাদশার্ক পালোদ্যান্য মন্থ্রিক পুরস্থান্ত । অর্থাধিঃ কুঁওছিনেং রাবৎ প্রস্কলপ্পত ॥ ৯ ॥ যানাক্ষারক্ষালো মর্ত্যানান্তনী উত্ত । পক্ষঃ পঞ্চলগাহানি শুক্লঃ কুক্ষ্ণ্ট নান্দ ॥ ১০ ॥ তয়োঃ সমূক্তরো দাসঃ পিতৃণাং তদহর্দ্ধিং। ছোঁ তার্তৃঃ বড়য়নং দক্ষিণণোত্তরং দিবি ॥ ১১ ॥ অয়নে অহনী প্রাহ্র্বৎসরো বাদশ শৃতঃ। সংবৎসর্গতং নূণাং প্রমায়্নির্মিপিতং ॥ ১২ ॥

खीनबंदामी ।

कांक्याः च्यानामित्रमार्शा वा स्वः প্रভाहः च्यानाः गंगतिजुः चनकादार ॥ ৮ ।

নাড়িকারা উন্মানশার। উন্মারতে অনেনেতি উল্লালং পারং বউ প্রতামবিরচিতং পঞ্চ গুলা মার: তৈ চতুরি কুত্রস্পানার পরাকা রপের রচিতেঃ কৃত্যুবাভিজেং। তেন ছিল্লেপ বাবং প্রস্থারিমিতঃ জনং প্রবিশতি তেনচ প্রতং নিমন্নং ভবতি ভারান কালো নাজিকা। জন্ম প্রতিযোগাধিকো শীত্রং নিমুক্তেং জন্মধেচ বিল্লেণেডি প্র শ্লাকরো নির্মাণ ৯।

(एवानांगरक्षत्रारम श्रीहः वान्न योगाः ।)२ ।

क्रममञ्जूष्टः।

গ্রহকে ভি প্রাণভিমাত কথনং ন তু কালাবসানতাৎপর্য্যকং। সংবৎসরভ পরমমহস্বাবোগাৎ 🛭 ১২। ১৩। ১৪। ১৫ 🛭

बिविधनाधठक वर्षी ।

বৃদ্ধি প্রবৃত্তী সধা। সন্ধাদ্দ ঘটকাং বিনেতি জ্ঞেরং। জ্ঞাণ্যনির্মে বা শব্য। প্রত্যহং তত্তেদানাং গণ্যিত্মশক্ষ্যং ৪৮৪ নাজিকারা উন্মানমাহ। উন্মারতেহনেশেজ্যুলানং বট প্লতাদ্ররিতং পালং চতৃংবইটা মাবৈ: পলং ভবতি। পঞ্ গুঞা মাবঃ তৈল্ভ ডিল্ড বৃষ্কুলারাম শলাকারণে রচিতৈঃ কৃতম্লজ্জিং তেল ছিল্লে বাবংপ্রমিতং ফলং প্রবিশতি। তেনচ প্রত্ত নিমন্তং ভবতি ভাবান কালো নাজ্কা আন পলজ্জিরোরাধিকো শীলং নিমজেং অর্থেচ বিল্লেন্ডি প্রশ্লাক্রোর্মিন্যমন্ত্রাপি রজ্জাদিশলাক্রা ছিন্তপৃষ্টিঃ ভাদিতি অর্ণভাপি নির্মাণ ৪০৪

আহলী আহোরাত্রে। ১০ । বগাসা অয়নং দিবীতাক্রেভাতরেশাবর: । ১১ । তে অরনে দিবি দেবানাম্নী আহোরাত্রে বাদশ মাসা বংসর: । ১২ ॥

अक श्राहत हम, छाहा मानविष्टिशत मिन अथवा त्राजित हुकुर्थाः म ॥ ৮ ॥

আহে বিছুর। পূর্বে যে নাড়ী পরিমিত কালের কথা কহিলাম ছাহা এই রূপে অনুমান করা গিয়া থাকে। ছয় পল অর্থাৎ চতুঃষষ্ঠি মাষ পরিমাণ তাত্রময় সচ্ছিত্র পাত্তে চতুর্বিংশতি অঙ্গল বিস্তৃত সচ্ছিত্র শলাকা যোগে এক প্রস্থ পরিমিত জল যাবং কালে প্রবিষ্ট এবং তদ্বারা সেই পাত্র নিময় হয়, তাবংকাল নাড়ীর পরিমাণ ॥ ৯ ॥

হে বিহুর ! পূর্বে যে প্রহর পরিমিত কালের কুণা কুছিয়াছি দেই চারি চারি প্রহরে মনুষ্যদিগের এক অহোরাত্র হয় অর্থাৎ চারি প্রহরে এক দিবস এবং চারি প্রহরে এক রাত্রি হয়। পঞ্চদশ অহো রাত্রে এক পক্ষ হয় এবং ঐ পক্ষ কৃষ্ণ ও শুরু ভেদে তুই প্রকার ॥ ১০ ॥

শুর ও কৃষ্ণ এই হই পক্ষে একমান হয়, তাহাই প্রিছুলোকের দিবারাত্র। ছই মালে এবং ছয় মালে এক অয়ন। এ অয়ন দক্ষিণাতর তেনে হই প্রকার হয় অর্থাৎ দক্ষিণা রায়ণ ॥ ১১ ॥

তুই পরনে দেবভাদিগের এক অহোরাত। ুঐ অহোরাতেই সকুষ্যদিগের ঘার্দশ সাস বা এক বংসর। ঐ প্রকার শত সম্বংসর সন্মাদিগের প্রমায়ং ৪ ১২ ৪ গ্রহক্ষ তারা চক্রন্থ: পরমাণাদিনা জগৎ। সংবৎসরাবসানেন পর্ব্যেত্যনিদিয়ে বিছু: । ১০ । সংবৎসর: পরিবৎসর ইদাবৎসর এব চ। অমুবৎসরো বৎসরশচ বিছুরৈবং প্রভাবতে । ১৪ । য: স্ক্রাণক্তিমুরুধোচছু সয়ন্ স্বশক্ত্যা পুংসো ভ্রমায় দিবি ধাবতি স্তভেদ:।

विषत्रवामी।

অনেন ক্রেণাসৌ ক্রো। নিভাগায়ু: ক্লপর্ভীভাছ গ্রহাশ্চক্সাদর ধক্ষাণাখিস্তাদীনি ভারা অস্তানি সক্ষাণি। ভর্ণদক্ষিতং বংকাল চক্রং ভক্ত স্থিতঃ স্থানিমিবঃ কালাগ্রা বিভূরীখরঃ ক্রাঃ ক্রাং দাদশ রাস্তাগ্রহং ভূবনকোবং পর্বোভি পর্বাটিভি ট ১০ ট

সংবংশরাদি ভেদশ্চ দৌর বার্হপাত্য সাবন চান্ত নাক্ষ্ম মান ভৈদেন ক্রইবাঃ কেচিং প্নরেবমাছঃ। বদা ভক্ল প্রতিপদি সংক্রান্তি ভবিত তদা সৌর চান্তমাস্বোঃ যুগপত্শক্ষমে। ভবিত সহংসরঃ ততঃ সৌরমানেন বর্ষে বট্দিনানি বর্ষতে চান্তমানেন বট দিনানি হুসন্তীতি ঘাদশদিন ব্যবধানাত্তহো রগ্রপশ্চান্তাবো ভ্বতি। এবং ব্যবধান তার্তমোন পঞ্চ বর্ষাণি পছন্তি তক্মধ্যে বৌ মলমাসৌ ভবতঃ ততঃ পুনং বঠ সহংসরো ভবতীতি ॥ ১৪ ॥

এবং ভূত: কালায়া নিতামপ্রমত্তি: পূলনীয় ইতাহে য ইতি জ্লাং কার্যাস্ক্রাদি তহিবয়াং বীলাদীনাং শক্তিং কাল রূপয়া
অশক্তা বহুধা উচ্চুসমন্ কার্যাভিমুধীকুর্বন্ দিবি অভরীকে ধাবতি। কোহসৌ ভূতভেদঃ মহাভূত বিশেষঃ তেলোমগুলরপী

विवनगंबठकवर्छी।

ওচ্চ নৃণামাযুক্তরান্ত্যাং তুর্ঘো। হরভীতাহে। এহাশ্চস্তাদয়ঃ ধক্ষাণাখিতাদীনি তারা অস্তানি নক্ষতাণি তেবাং চক্রে মণ্ডলে ভিঠতীতি ভোতিশ্চক্রত্ ইতার্থ:। অনিমিশ্ব কাল্যক্রণঃ বিভ্রীখরংশঃ পর্যোতি পরিক্রামাতি ৫ ১০ ৪

গ্রহক তারা চক্রন্থ ইত্যুক্তমতঃ স্থাপত্যা গ্রহাদীনামপি গত্যা ধর্মত নামভেদানাহ সংবংসর ইতি। সৌরগতাা পরিবংসর ইতি। বাহ পিত্যুগত্যা অনুবংসর ইতি চাল্লেপত্যা অক্তারাণাং পতো গত্যভাবাৎ চক্রগতিবের গতিবিতি ত্যাশি অকাণাং সপ্রবিংশতি দিনমানৈর্থাবৈদ্বিদভিক্ষৎসর ইতি ভারাশাং সংখ্যাভাবাৎ জিংদশদ্দিনপ্রমাণৈঃ সাবনৈর্থাবৈদ্বিদাবংসর ইতি ভেরং । ১৪ ।

কিমর্থং বংশরভেদকরনমিভিচেৎ তত্তবর্ষবিহিতধর্মাদিসিকার্থমিভাছে য ইতি স্বল্ঞানামৃত্তিকাদীনাং শক্তিমভ্রাদৌ সামর্থাং

হে বিছুর! চন্দ্রাদি গ্রহ, অখিনী প্রভৃতি নক্ষত্ত এবং অভাত্ত তারায় উপলক্ষিত যে কালচক্র তক্রম্ব কালাজ্যা ঈশ্বর অর্থাৎ সূর্য্য, পরমাণু অব্ধি সম্বংসর পর্যান্ত কাল দ্বারা দ্বাদশ রাশ্যাত্মক এই ভূবনময় কোষ পর্যাটন করিয়া থাকেন ॥ ১৩ ৪

ঠি সন্থংসর পাঁচ প্রকার। যথা সন্থংসর, পরিবংসর, ইদাবংসর, অমুবংসর, এবং বংসর। তাহার বিবরণ এই যে, যাবংকালে সূর্য্যের ভালশ রাশি ভোগ হয় তাহার নাম সন্থংসর, রহস্পতির ভালশ রাশি ভোগকাল পরিবংসর, ত্রিংশং সূর্য্যাদরে যে সাবন মাদ হয় তাহার ভালশ মাদে ইদাবংসর, চন্তের ভালশ রাশি ভোগাত্মক কালের নাম অমুবংসর এবং নক্ষত্র সন্থায়ীয় মাসের ভালশ মাদে বংসর। কোন কোন পণ্ডিতদিগের মত এই যে, যথন শুরু পক্ষের প্রতিপদ্ তিথিতে সূর্য্যের সংক্রমণ হয় সেই কালে সোরমাদ এবং চাল্তমাদ এ উভয়ই এককালে প্রস্তুত্ত হয়, তাহাকেই সন্থংসর বলে, ভাহাতেই সোরমানে ছয় দিন বৃদ্ধি এবং চাল্তমানে ছয় দিন ব্রাস হয়, এই রূপে ভালশ দিন ব্যবধান ক্রমে সূর্য্য ও চল্তের অগ্র পশ্চাংভাবে গতি হর, এইরূপ ব্যবধানের তারতম্য প্রযুক্ত পাঁচ বংসর গত হয়, তন্মধ্যে হুই মল মাস পড়ে, তাহার পর ষষ্ঠ সন্থংসর হইয়া থাকে ॥ ১৪॥

অহে বিজুর! যে মহাভূত বিশেষ ভেজো মওলরূপী সূর্য্য পুরুষদের মোহ নিবৃত্তি অর্থাৎ আয়ুরাদি ক্য প্রদর্শন বারা বিষয়াসক্তি নিবারণার্থ কার্য্যরূপে আত্ম শক্তি বারা বহু প্রকার বর্দ্ধিত অর্থাৎ কার্য্যা-

কালাধ্যমা গুণমরং ক্রতৃতি বিতৰংস্কল্ম বলিং হরত বংগরপঞ্কার । ১৫ । প্রীবস্থর উবাচ ।

পিতৃদেব মনুষ্যাণামায়ং পরমিদং স্মৃতং। পরেষাং গতিমাচকু বে হ্যাঃ করাছহিবিদিঃ ॥ ১৬ ॥ ভগবান্ বেদ কালফা গতিং ভগবতো নমু। বিখং বিচক্ষতে ধীরা যোগরান্ধেন চকুষা ॥ ১৭ ॥ প্রিমৈত্রেয় উবাচ ॥

কুতং ত্রেতা বাপর্ঞ কলিশ্চেতি চতুর্গং। দিবৈয়ে দিশভিব হৈ: সাবধানং নিরূপিতং ॥ ১৮ ॥

शिववामी।

সূর্যাঃ । কিমর্বং ধারতি পুংদঃ পুরুষভাশ্রমায় প্রমোমোহ ওরিবৃত্তরে আযুরাদি বাংমন বিষয়াশক্তিং নিবর্ত্তরিভার্থঃ সকামানাং তৃ গুণুমরং অর্গাদিফলং ক্রুভির্বিভাররন্ ওতৈ বংসর পঞ্চক প্রবর্ত্তনার পূজাং কুকত । ১৫ ।

ইনং স্থ সানেন বৰ্ষণতং গণিতং আযুৰ্মানং প্ৰত্যহং কল্লাতে ইতি কলঃ বৈলোক্যং তত্মাঘাত্তঃ বিলো জানিনঃ # ১৬ যোগরাজেন যোগনিজেন # ১৭ #

ৰাদশভিক্ৰিৰ সহত্ৰৈবিভাতৰ শ্লোক সামগ্যাজ্জাতবাং। অৰধীয়ত ইতাবধানং সন্ধা সন্ধাংশশ্চ তৎ সহিতং । ১৮ ॥

ক্রমসন্ধঃ।

পিত্রাদীনামায়ুরিদমিতি তদেতদ্বধাবং পূর্ব্বোক্তকালগণনাত্মকমিতার্থ:। শতত্ত নৃণামেব। পূর্বং নৃণাং পিতৃণাং দেবানাঞ কালসংখ্যানমুক্ত্ব। সংবৎসরশতং নৃণাং পরমায়ুনি রিপিত্যিতি নির্দ্ধারিতত্বাং। ইক্সাধীনাং মহত্তরভাছিনামণিকণরিমাণপ্রাপ্তেশ্চ। পরেবাং ব্রহ্মসনকাদীনাং। ক্রালুক্ষদিনাহতি র্যে স্থাঃ জীবস্তি । ১৬। ১৭।

কৃত্মিত্যাদীনামন্মর্থ:। মনুব্যাণাং বঁচাৰিক্তিশভপরিমিতৈক্তির। (৩৬০) দেখানাং বর্বং তৈ ছবিলপ্তিঃ সহত্যৈ তেলাং

दीविषनाथहळ्ववी ।

শশকা। কালরপরা উক্ধা উচ্ছ,সয়ন্ প্রকাশয়ন্ দিবি অস্তরীকে ধাবতি কোহসৌ ভ্ততেদঃ মহাভ্তবিশেষতেলোমওলকণী ত্র্যঃ কিমর্থং বাবতি পুংসঃ পুরুষস্য অস্ত্রমায় দিবোহাদিনিবৃত্তরে সকামানাং শুণমন্ধং পর্বাদিকাশং দংবংসরাদিবিহিত কর্মকাল্আপনয়া ক্রভুত্তিরহুঠেরঃ। তথাত্তবৈ বংসরপঞ্চক প্রবর্তকার বলিমর্থ্যাদিপুলোশহারং দত্ত। তে ধার্মিকলোকাঃ ৪ ১৫ ৪

हेनर च च शात्मन वर्षनंजर त्य वित्या विचारनः कलाटेकनिक्षनावृद्धिः शत्रवाणि विक्रंडि क्यार नगलागीनारः ज्यामीनाक शिव वासुः 8 30 8 ज्यान् ज्यान् त्याशद्राद्धन त्याशिनाद्धन 8 39 8

কলবছিরায়ুবোহি ভ্থাদরো অক্ষুল্যায়ুব এব ভবজীতি অকণ কায়ুর্কজুং বুণাদীনাং মানমাছ কৃতমিতি। ববৈর্ক্বিন্থলৈ:

ভিমুখী করিতেছেন এবং যাহা ইইতে সকাম পুরুষদিগের স্বর্গাদি ফল বিস্তার হইতেছে তিনি এই অন্তরীক্ষে ধাবমান, অতএব প্রুবংসরের প্রবর্ত সেই কালাক্ষা ঈশরের পূজা কর । ১৫ ৪

বিজুর এই সকল প্রবণ বরিয়া পুনর্কার জিজ্ঞাসা করিলেন হে মুনিসক্তম ! পিছ, দেব এবং সমুষ্যদিশের যে প্রকারে স্থা বানে শতবর্ষ পরমায়ু: হয় তাহা স্থাপনার প্রমুখাৎ প্রবণ করিলাম।
প্রতো ! যে সকল জ্ঞানিব জি ত্রৈলোক্যের বহির্ভাগে স্থাছন স্থাৎ দৈনন্দিন প্রলয়েতেও বাঁহাদের
নাশ হয় না সেই জ্ঞানি শ্রেষ্ঠ সনকাদি এবং ভ্রু প্রভৃতি শ্ববিগণের পরমায়ুর সংখ্যা কি ? বলিতে
স্থাজ্ঞা হউক ৮১৬ ॥

হে মহাশয়। আপা কালরূপি ভগ্রানের গতি অবগত আছেন,বে হেতু আপনি ধীর,ধীরব্যক্তির। যোগসিত্ব চকুর্বারা সাম্ভ বিশ্বই দেখিতে পান । ১৭ ।

নৈত্রেয় কহিলেন বছর ! সভা, ত্রেভা, ঘাপর এবং কলি এই চারিমুগ, লন্ধ্যা এবং সন্ধ্যাংশ সহ

চন্তারি ত্রীণি দেটেকং কৃতাদির্থ থাকেনং। সংখ্যাতানি সহস্রাণি বিভাগানি শতানিচ । ১৯ ॥
সন্ধ্যা সন্ধ্যাংশয়োরন্তর্য: কাল: শতসংখ্যয়োঃ। তমেবাত্র্পং তজ্ঞা যতে বর্দো বিধীয়তে ॥২০

क्षितवामी।

কুত্যুগে চম্বারি সহস্রাণি সন্ধ্যা সন্ধাংশযোশ্চমারি চম্বারি শতানি ইন্ডাটো শতানিচ। এবং ত্রেজাদিবর্ণি যোজাং ॥ ১৯ ॥

যুগভানৌ সন্ধ্যা অন্তে সন্ধ্যাংশ: উক্তানি শতানি সংখ্যা ব্যোভাষো রন্তর্গধ্যে যুগং। তক্ত বিশেষমাহ ব্রেভি গ্রালভাদি
ধর্ম বিশেষো যুল বিধীয়ত ইত্যুর্থ:। সাধারণ ধর্মক সন্ধাসন্ধ্যাংশয়োরণ্যভোৱ। ২০ ॥

क्रमममर्छः।

চতুর্গং। তচ্চ মমুব্যাণাং বিংশতিসহস্রাধিকং ত্রিচ্বারিংশরকগণিতং (৪৩২০০০) বর্ষদংধাকং ভবতি। তাবদের সত্যাদি চতু-যুঁগং। বতঃ সত্যং (১৭২৮০০০) ত্রেডা [১২৯৬০০০) বাপর (৮৬৪০০০) কলিঃ (৪৩২০০০) ইতি। এবং দেবানাং যুগসহস্রহয়ং ক্রন্যাংহোরাত্রং তচ্চ মমুব্যাণাং পদাইকং চতুংষ্টিকোটাধিক (৮০০০০৬৪০০০০০০) মিতি । ১৮ ৪ ১৯ ॥

সন্ধাসন্ধাংশয়োরস্করিতাত সন্ধাসন্ধাংশয়োরস্ক ইতি । ২০ । ২১ । ২২ । ২৩ ।

শ্ৰীবিশনাথচক্ৰৰ ছী'।

व्यवभीवक देकावशानः मुका। मकारमण्डे जर महिकर ॥ ১৮ ॥

यथाक्रमति । कुण्मूर्ग हचाति । मक्षा मक्षारणदाण चाति हचाति । मक्षा मक्षारणदाण चाति हचाति । मणि विश्व विश्व

ঐ চারিযুগের পরিমাণ দিব্য ছাদশ সহত্র বৎসর অর্থাৎ মন্ত্র্যা পরিমাণে বিংশতি সহত্রাধিক ত্রিচন্ত্রা-রিংশৎ লক্ষ্ণবর্ষে চতুর্যুগ হয় ॥ ১৮ ॥

তাহার বিশেষ এই যে সত্য যুগাদির পরিমাণ যথাক্রমে চারি, তিন, তুই, এক সহস্র, এবং তাহার সন্ধা এবং সন্ধাংশও যথাক্রমে চারি, তিন, তুই, একশত বৎসর অর্থাৎ সত্যযুগ দিব্য পরিমাণে চারি সহস্র বৎসর এবং সন্ধা ও সন্ধাংশ চারি চারি শত করিয়া আটশত বংসর। এই প্রকারে সূত্যযুগের, পরিমাণ তিন সহস্র বংসর। তাহার সন্ধা কাল তিন শত এবং সন্ধাংশ তিনশত বংসর। তাহার সন্ধাকাল তুই শত এবং সন্ধাংশ তুইশত বংসর। কলিযুগের পরিমাণ এক সহস্রবংসর। অর্থাৎ মনুষ্য পরিমাণে অফাবিংশতি সহস্রসপ্তদশ লক্ষ বংসরে সত্যযুগ ০) বট্ নবতি সহস্রাধিক ভাদশলক্ষ বংসরে তেতা যুগ (২৯৬০০০) চতুঃবাইসহস্রাধ্য বংসরে তালার যুগ (১৯৬০০০) চতুঃবাইসহস্রাধ্য বংসরে তালার যুগ (১৯৬০০০) চতুঃবাইসহস্রাধ্য বংসরে তালার যুগ (১৯৬০০০)

(৪৩২০০) ॥ ১৯॥
হে বিত্র ! বুগের অতা এবং অন্তে সন্ধ্যাংশ, তাহার পরিমাণ যথাক্র যুগ সংখ্যক শতবৎসর, ঐ সন্ধ্যা এবং সন্ধ্যাংশের ম্যাবন্তী যে কাল, তাহাকে যুগজ্ঞ পণ্ডিতের। মুগ বলিয়া থাকেন সেই কালেই যুগ বিশেষের স্থাল্খনাদি ধর্ম বিহিত হইয়া থাকে॥ ২০॥

_

ধর্মণ্ড জুপাল্যস্কান্ কৃতে সমস্বর্ততে। স এবানোল্বধর্মেণ ব্যেতি পাদেন বর্জতা ॥ ২১ ॥ তিলোকার যুগসাহজ্ঞাং বহিরাজ্ঞাণো দিনং। ভাবত্যের নিশা ভাত যদিমীলতি বিখস্ক্॥ ২২॥ নিশাবসান আরক্ষো লোককল্লোহসুবর্ততে। যাবদিনং ভগবতো মন্ন্ ভূঞাংশ্চ জুর্দ্দশ ॥ ২০॥ সং অং কালং মনুভূতি ভ্রেক সাধিকাং হেকসপ্ততিং॥ ২৪॥

विधवचामी।

চতুপাৎ সম্পূৰ্ণ ৱেডাদিযু পাদেন পাদেন ব্যক্তি হুস্তি পাদেন পাদেন বৰ্ত্মানেনাধৰ্মেণ হেতুনা এডচ অরপ কথন মাত্রং বৈরাগ্যার্থং ন তু ধর্মসন্মোচার্থং । ২১ ।

ত্তিলোক্যা বহিশাহরে কি প্রভৃতি ব্রহ্মলোকমভিব্যাপ্য চতুর্গ সংস্থানেকং দিনং যথ বঞাং বিশস্ত্ ব্রহ্মা নিমীলভি বপিতি ।২২ তত্ত্ব দিন ভিতিমাহ নিশাবসান ইত্যালি সাইগ্রুভর্তি: । চতুর্দশ মন্ন ভ্রন্ পালয়ন্ ব্যাপ্রেরতার্থ: । ২০ ।
কিঞ্ছিখিকাং বুগানামেকসপ্রতিং । ২৪ ।

क्रम्म् कं:।

খং খমিডাইকং । ২৪।

এবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

চতুপাৎ পূৰ্ব: মহুজানসুসকীয়ভঃ অভেবু ত্রেভাদিৰু অধ্যেশ পাদেন পাদেন বর্জভা বর্জমানেন হেতুনা বেঃতি পাদেন পাদেন হস্তি । ২১ ৪

অিলোক্যা বহিশ্বহর্মোক প্রভৃতি ব্রহ্মলোক্মভিব্যাপ্য চতুর্গসহক্রমেকং দিনং। ব্রহ্মাং বিশ্বস্গ্রহ্মা নিমীলভি। তদৈব শপ্তং গর্ডেদেশারিমমস্প্রপিভি। এবং যুগস্থ্যবহুং ব্রহ্মণেহ্ছোরাঅঃ ভ্র মস্ব্যাণাং চতুংবট্টকোটাধিকাইপল বর্ষাণি ভ্রন্তি ।২২ ভুজা দিনস্থিতিমার নিশাব্যান ইতি। চতুর্দশমন্ন মহন্তরাণি ভূঞান ব্যাপুবন্ লোকানাং করঃ। ২৩।

মধ্য খায়জুবালিঃ কিঞ্চিল্ধিকাং চতুর্গানামেকসগুডিং কালং ব্যাপ্য ভত্ত দেবমানেন বিপঞ্চাশং সহস্রাধিকান্ট লক্ষাণি বর্ষাণি ভব্তি মহুষ্যমানেনতু তিংশং কোটাঃ সপ্রাষ্টলকাণি বিংশভি সহস্রাধীতি। তথোক্তং বিষ্ণুরাণে। তিংশং কোটাঃ সংপ্রাঃ সংখ্যাভাঃ সংখ্যালাঃ সংখ্যালাঃ সপ্রাষ্ট অথাক্তানি নিযুতানি মহামুনে। বিংশভিক্ত সহস্রাণি কালোহয়মধিকং বিনা। মহত্যত সংবােরং মান্ত্রৈক্ষ্থস্টেরহি জিতি । ২৪।

হে বিছুর! সভাযুগে চতুজ্পাদ ধর্ম মনুষ্যাদিধের অনুষ্তী ছিল, পরে অভাভ যুগে ক্রমণঃ অধর্ম বৃদ্ধিশীল হওয়াতে তাহার এক এক পাদ হীন হইয়া যায় ৷ ২১ ৷

হে ভাত। এই ত্রিলোকের বহির্ভাগে মহরে কি প্রভৃতি অক্ষালোক পর্যান্ত ব্যাপ্ত যে চতুর্গ সহজ্ঞ, তাহা জ্বন্ধার একদিন এবং উাহার রাজিও ভাবৎ পরিমিত কাল অর্থাৎ মনুষ্য পরিমাণে চতুঃষ্ঠি কোটানিক ক্ষত পদ্ম পদ্মিত বংগরে ত্রক্ষার এক ক্ষেরোত্ত হয়। ঐ রাজিভাগে বিশ্বস্থা ত্রক্ষা নিজিত হয়েন ॥ ২২ ॥

সনস্তৰ নিশা স্বদান হইলে লোকস্থি সায়ত্ত হয় এবং তাহা চতুৰ্দশ মসু ব্যাপিয়া যাবৎ বৰ্তমান পাকে জাৰৎ কাল ভগৰাৰ জন্মায় দিন । ২৩॥

হে বিজুর। বায়স্কৃব প্রস্তৃতি এক এক মুকু কিঞ্চিদ্ধিক এক সপ্রতি যুগ পরিমিত কাল ভোগ করেব, ভারাই তাঁছাদের অ ব কাল অর্থাৎ দেবপরিমাণে বিপঞ্চাশৎ সহস্রাধিক অন্ত লক্ষ্বংসর এবং মুস্ব্যুপরিমাণে তিংশংকোটি সপ্তবৃষ্টি লক্ষ্ক বিংশভি সক্ত্র ব্ধসর ॥ ২৪ ॥

মশ্বস্তারেরু মনবস্তারণ থাবার: হারা;। ভবন্তি চৈতে বুগপৎ হারেশাশ্চাপু যেচ তান্ । ২৫ । এব দৈনন্দিন: দর্গো প্রাক্ষ ক্রেলোক্যবর্জন:। তির্যাঙ্ মৃ পিড় দেবানাং সম্ভবো যাত্র কর্মজি: । ১৩ মশ্বস্তারেরু ভগবান বিভ্রহ সবং স্বম্রিভি:। মশ্বাদিভিরিদং বিশ্বমবস্থানিভপৌরুষ: । ২৭ । তামোত্রামুপাদার প্রতিসংরুদ্ধ বিক্রম:। কালেনাকুগতাপের আন্তে স্ক্রীং দিনাতারে । ২৮ । তামবাশ্বপিধীয়ন্তে লোকা ভ্রাদর জ্বয়:। নিশারামসূর্ভারাং নিশ্বভশশিভাক্র: । ২৯ ।

व्यापाया ।

মহ্বংশাঃ পৃথীপালকাঃ ক্রমেণ ভবস্তি। সপ্তর্বিপ্রভ্তরক্ত যুখপৎ সমকালমের ভবস্তি। প্রমেশা ইস্রাঃ তানহ্বর্তক্তে বে গল্পাদ্য তেপি । ২৫ । ত্রিলোকাং বর্ত্তমন্তি তথা । ২৬ ।

সম্বিভিশ্বভাগতালৈ মৰাণিভিশ্বিভৃতি আবিষ্ণ প্ৰশাকাল সন্ ইদং বিশং সক্ষি । ২৭ ।
বাত্তিগভাং হিভিমাহ পঞ্জি: ভগসো নাতাং লেশং। প্ৰভিসংক্ষঃ প্ৰভালত বিজ্ঞাে বিন । অসুগতমস্প্ৰিটিমশেবং যদিন্ ।২৮
তদেব প্ৰিয়তি ভসেবেতি অণিধীলতে ইভি কৰ্মক্তিরি প্ৰয়োগঃ ভিলোহিতা ভবস্থীভাৰ্থ:। কথং নিশুকিং বহিতঃ শশী
ভালবুণ ধ্বা ভবতি ভবা । ২৯ ।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

यूर्गभिष्ठि चच मस्ख्य देखार्थः । २६। २७। २१। २৮। २৯। ७० ।

छविश्वनाथठक वर्छी ।

মমুবংশঃ পৃথীপালকঃ ক্রমেণ ভবভি। সপ্তর্বিপ্রভ্তয়ত যুগপৎ সমকালমের ভবতি। স্থারেশা ইক্রান্তানমুবর্ততে যে গর্মনা-দলতেপি । ২৫ ॥ তৈলোকো বর্তত ইভি সঃ নৈলোকাক্টিরিভার্থঃ ॥ ২৬ ।

অম্রিভিরবতারে:। উদিভ পৌরুব: আবিকৃতপুরুবাকার:। ২৭ ।

রাত্রিগতাং ছিতিমাই ভমসো মাত্রাং তৈলোকামাত্রসংহারার্থং লেশং কালাগ্রিক্সক্রণেণ স্বীস্কৃত্য সংহারং প্রতিসংক্ষো বহ্যা-দিভিরাবৃত্তো বিজ্ঞমো ভূরাদিলোকতারং যেন সং। বিজ্ঞমো ভূড়্বিং স্বরিতি পূর্বোক্ষেঃ। ডভচ্চাহুগতমন্থ্রবিষ্টবশেষং বৈলোকাস্থ জীববৃদ্ধং যত্র সং। ভূজীং ভাক্তমায়িকদীলাবিনোদ ইতার্থঃ ॥ ২৮ ॥

ততক্ত ভমত্লকীক্বতা অশিধীয়তে কর্ম কর্ত্তরি বরমেব ভিরোহিতা ভবস্তীতার্থ:। নিমুক্তিঃ রহিতঃ দশী ভাররক রধাজাতথা ১২১

মশ্বন্তর সকলে মকু এবং মকুবংশীয় ক্ষিতিপাল সকল ক্রেমে উৎপন্ন হয়েন, কিন্তু সপ্তর্ধি, দেবতা ইক্সে এবং ইহানের অমুবন্তী যে গন্ধবাদি তাঁহারা সকলে তত্তৎকালেই উৎপন্না হইয়া থাকেন ৪২৫ ৪

বৎস বিচুর ! জ্ঞার দৈনন্দিন অর্থাৎ প্রাড়েছিক স্থাষ্ট্র, ইহাই জৈলোক্যের উৎপাদক, যাহাতে পশু, পক্ষী, মতুষ্য, পিতৃগণ এবং দেবগণের স্ব স্ব কর্মার্কুসারে জন্ম হইয়া থাকে ॥ ২৬ ॥

আহে ! সম্বন্ধর কালে সেই ভগবান্ই সত্ত গুণ অবলম্বন করিয়া স্থীয় সৃতি মন্ত্রপ নীমাদিকে বার করিয়া পুরুষাকার রূপ প্রকাশ পূর্বক এই বিশ্বের রক্ষা করিয়া থাকেন ॥ ২৭ ॥

অনন্তর দিবা অবসান হইলে তিনি কালাগ্রিকত্র ক্সপেন্থ কিঞ্চিং তথোওণ অবল্যন করিয়া

আক্রান প্রায় বিজেম প্রতিসংহার করেন, তৎকালে কালবশতঃ ত্রিলোকীত্র জীব নিকর্ম উহিতিই

ব্যুলাক হয়, হুতরাং নায়া বিনোদ পরিত্যাগ করিয়া তুফীস্তাবে অবত্তিত হয়েন ৮২৮ ট

বংস ! ত্রাক্ষী নিশা উপস্থিত হইলে ভ্রাদি লোকতার, তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চন্দ্র সূর্যা একেনীরে না থাকিলে যে রূপ হয় ডজ্ঞপে আপনা হইতেই ভিরোহিত হয় ॥ ২৯ ছ জিলোক্যাং দহ্যমানারাং শক্ত্যা সম্বর্গায়িনা। যাস্তাস্থা মহর্মে কাজ্জনং ভ্যাদয়োর্দ্ধিতা: ॥৩০ তাবজিভূবনং সদ্যঃ ক্লাক্তৈবিভসিদ্ধবঃ। প্লাবয়স্তাৎকটাটোপচগুবাঙেরিতোর্দ্ময়: ॥ ৩১ ॥ অন্তঃ স ভক্ষিন্ সনিলে আতেহনস্তাসনোহরিঃ। বোগনিজানিনীলাক্ষঃ তুর্মানো জনালরেঃ ॥৩২ এবং বিধৈরহোরাজ্যঃ কালগত্যোপলকিউঃ। অপক্ষিভমিবাস্যাপি প্রমায় ক্রিয়ঃ শতং ॥ ৩৩ ॥

विषद्रभागी।

ভগৰজ্জি রপো বং সম্বৰ্গমুখায়িঃ তেন উন্নণা আর্দিতাঃ সন্তঃ জনলোকং বাজি ৪ ৩০ ৪
ক্রান্তেন এবিতাঃ সিদ্ধবং সমুজাঃ উৎকট আটোপঃ ক্যোড়ো বেবাং তেচ তে চগুবাতৈরীরিভোর্মরল্চ ৪ ৩১ ৪
জনলোক আল্বো বেবাং মহ্ছে কান্সতানাং অভ্যোক হৈঃ ৪ ৩২ ৪

বৈরাপ্যার্থমাছ এবং বিধৈরহোরাত্রৈর্ক্ষ্রশতং দর্ক্ষেয়া প্রাণিনাং আছুবা পরম্বিকং। অন্ত ব্রহ্মণো যদাযুং তদ্পাপক্ষিতং অপক্ষীণমিবেজি গোকাজিঃ গভপ্রার ইতার্থ: । ৩০ ।

क्रथनमर्जः।

উৎक्টाটোरिमक्थवारिज्ञीतिका खेर्नात्त्रा द्ववार एक । ०० । ०० ।

श्विविधनायहळ्वजी ।

কেন প্রকারেণ ইতাপেকারামাহ ত্রিলোক্যামিতি। ৩ ।।

সদ্য ইতি ত্রিলোক্যাং দঝারাং সভ্যাম বিলবেনৈবেতার্থঃ। স্বাহস্ত শতবর্ষপর্যাস্তো জেরঃ। উৎকট আটোপ: কোভো যেযাং ভেচ তে চণ্ডবাডেরিত তরলাশেতি তে । ৩১ ।

বোপাখা বিম্লাদীনাং চিচ্ছক্তিযুক্তীনাং পঞ্চমী দৈব তদানীং নিজাক্ষণা তথা মুদিত্তমেত্র:। জনালয়ৈর্জনলোকনিবাসিভি-দুবিভিঃ। ৩২।

আন্ত ব্ৰহ্ণোপাাৰুরপক্ষিত্মপক্ষী বং গ্রপ্তারমেবেতি বলাবিভেমাহ্বিত্যুক্তা। কালাবিভাতা ব্রহ্মণাপি বিবর্ভোগেভাো বির্জ্য নির্ভ্তরমেব ভগবালুপাসাতে মনুষাাঃ কিন্তুলায়ুবঃ কেন সাহ্সেন বিবর্ষপভ্রানাতং ন ভলভীতি ভক্তিবৈরাগ্যয়েঃ প্রবন্ধ আব্ভাক ইতি কালনির্পণ প্রয়োজনমূকং । ৩০ ।

অর্থাৎ ভগবানের শক্তিরূপ যে সক্ষর্ণ দেব তাঁহার মুখায়ি ছারা এই তৈলোক্য দগ্ধ হইয়া যার, ঐ অগ্নির উত্তাপে ভ্রু প্রভৃতি মহর্ষিণণ পীড়িত হওয়াতে তাঁহারা মহঙ্গে কি হইতে জনলোকে গমন করেন ॥ ৩০ ॥

অপর ঐ সময়ে কল্লান্ত কাল উপস্থিত হওয়াতে সমুদ্র দকল অভিশয় বৃদ্ধিশীল হইয়া উঠে, তাহাতে উৎকট ক্ষোভ জনক প্রচণ্ড বায়ুবেগে তরঙ্গ দকল ভয়ত্বর হইয়া দক্ষালিত হইয়া ত্রিভূবনকে সদ্যই প্রাবিত করিয়া দেয় ॥ ৩১ ॥

ভগবান্ হরি তৎকালে সেই প্রলয় জলধি জলে অনস্ত ক্রেপ শ্যায় শ্য়ন করিয়া বোগনিজায় নিমীলিত নয়ন হইয়া থাকেন, জনলোক নিবাসী ভৃত প্রভৃতি মহর্ষিণণ সেই স্থানেই অবস্থিতি করিয়া কুডাঞ্জলিপুটে ঐ ভগবানের স্তব করেন ৪ ৩২ ৪

হে বিছুর! কালের গতি উপলক্ষিত উক্ত প্রকার অহোজাতে যে একশত বংসর হয় তাহা সকল প্রাণির পরমায়, কিন্তু সকলেরই ঐ শতবর্ষ পরমায়; কালবশতঃ পরিক্ষীণ হয়, ত্রন্ধার যে শতবর্ষ পরমায়; কালবশতঃ পরিক্ষীণ হয়, ত্রন্ধার যে শতবর্ষ পর্মায়; তাহাও গৃত প্রায় বোধ হইরা থাকে। বংস! ত্রন্ধাও যধন কালভয়ে ভীত হইয়া পরিহার পূর্বক ভগবানের উপাসনা করেন ভ্রুন মসুব্যের কথা কি ? উহারা বংকি ক্রিটিল প্রাণ্ডির প্রায় বাকে ? অভএদ কালভয় পরিহারের নিমিত্ত মসুব্য মাত্রেরই ভগবানের ভ্রানে বৃদ্ধ করা উচিত । ৩০ ॥

যদর্শনায়ুদন্তন্য পরার্দ্ধনিভিধীরতে। পূর্বেঃ পরার্ধেছশালাভো ক্রপরোদ্য প্রার্দিন এছ । পূর্বেন্তাদে পরার্দ্ধন্ত বালো নাম মহানভূথ। কল্লোযক্রেভিবনু ক্রিন্তালাভ বং বিছঃ । ৩৫ । তিন্তালাভেচ কল্লোহভূদনং পাদামভিচক্ষতে। বন্ধরে র্নাভিসরস আসীলোকসরোক্তং । ৩৬ । অযুদ্ধ ক্রিন্তা কল্লো বিত্তার্দ্ধাপি ভারত। বারাহ ইতি বিধ্যাভো ব্রাদীৎ শৃক্রোহ্রিঃ ॥ ৩৭ ॥

श्रीभवत्यामी ।

তদেবাহ বদেতি । ৩৪ ॥
পূর্বান্ত পরার্কালাবিতি ত্রিভির্মন্ত কথনমাত্রং । ৩৫ ॥
পাল্পতে হেতৃঃ বদিতি ॥ ৩৬ ॥
অয়ং তু বিতীয়ভাগৌ কথিতঃ । ৩৭ ॥

क्रममण्डः।

यन क्मि कि जाना जाजिन करहा। ७४। ७४। ७४। ७५।

श्रीविधनाशहक्कवद्वी ।

তদায়ু বিধাবিভক্ত মাহ যদিতি । ৩৪ ॥

পূর্বভেতি প্রভাগধংখাজে: খেতবরাহাদিভি: পিতৃকরাতৈ জিংশংকরৈরের ওক্লপ্রতিপদাদ্যমাবাভাস্তানি জিংশদিনানি তেবানের করানাং পুনঃ পুনরার্ত্তা মাসাঃ মাসৈর দশভিক্তি পেখাশভাবতৈ রেকং পরার্ছ। তত্ত পূর্বভ প্রথমভ আদৌ রাজ ইতি খেতবারাহ এব ব্রহ্মলম্ভিধিবাং বাজ্মশবেনোচাতে। সা ভিধিশ্চ হৈত্তক্তপ্রতিপদেব জ্যোতিঃ শালোক্যা জেয়া ॥ ৩৫ ॥

কর: পিতৃকর: তৎকরতেবাভিমং পিতৃকরমেব পাল্লং বদান্ত পাল্লাছে হেতৃঃ বদিতি তেন সর্বোহৰ করেবু লোকাল্মকং পল্লং ন ভবতি কিন্তু কাপি কাপোবেতার্থ: ॥ ৩৬ ॥

অহে বিদুর ! ত্রমার যে শতবর্ষ পরমায়ু: ভাহা চুই প্রকারে বিছক্ত হয়, এক পূর্বার্দ্ধ ও পরার্দ্ধ, বলিয়া উক্ত হইয়া থাকে, তমধ্যে পূর্বার্দ্ধ গত হইয়াছে, অপরার্দ্ধ অন্য প্রবর্তমান ॥ ৩৪ ॥

পূর্ব্ব পরার্দ্ধের প্রথমে মহান্ আন্দানামে যে কল হয় সেই কলেই জন্মা হইরাছিলেন, পণ্ডিতেরা জী জন্মাকে শব্দজন্ম বলিয়া থাকেন ৫ ৩৫ ৫

সংখ্যাত্র করের মতে বে কর হয় ভাষার নাম পাত্রকর, যে হৈছু ঐ করে ভ্গষাদের নাতি-সংখ্যাত্র ইইতে হতুর্দশ ভূষনাত্মক পদ্ম উৎপন্ন হইয়াছিল। ৩৬।

ে ভারত। বিজ্ঞীয় পরার্দ্ধের আদিতে কবিত এই যে কল্প ইহা বালাছ কল্প নির্দান্ত, এই কল্পে ভগবান্ হরি পুকর মূর্তি ধারণ করিয়াছিলেননা ৩৭ ॥ কালোছরং বিপরার্দ্ধাথ্যা নিবেক উপর্ব্যতে। অব্যাক্তক্যানস্তন্য অনাদে র্বগদান্তনঃ । ৩৮ । কালোছনং পরনাণাদি বি পরার্দ্ধান্ত ঈশবং। নৈবেশিতৃং প্রভূত্ত ঈশব্যে ধানমানিনাং । ৩৯ ॥ বিকারেঃ সহিত্যে মুক্তি বিশেষাদিভিয়াবৃতঃ। অশুকোষো মহিনকং পঞ্চাশহ কোটিবিস্তৃতঃ ॥৪০॥

क्षेत्रवामी ।

তবেবং কালেন নিমিতেন ক্ল্যানামার্ঃ পরিমাণ্মুক্। কালপরিছেবরছিতং ভ্রমাহ। কালোহররিতি পঞ্জিঃ। উপচ-বাঁতে ক্রেকং নক্ষেনাসি ক্রেপার্থণবং ভ্রেক্যাহ অধ্যাক্রক কার্যোপাধিশ্রত। অভএযারতত অনানেত লগবাভুনো লগংকারণত । ৩৮ ।

তৎ পরিচ্ছেদে কালত সামর্থাদিতাহে। কালোহয়মীখর: সমর্থেশি ভূয়: পরিপূর্ণত ঈশিতৃং নৈব প্রভু: ন সমর্থ: বড়ো ধামমানিনাং দেবগেছাগাতিমানিনাংমবেখর: ৪ ৩৯ ৪

ভূম ইত্যাক্ত ক্ষ আপক্ষমাহ বিকাটের বোড়শভিঃ বৃট্ডা: আই প্রাকৃতি সংবৃট্ডা:। সহিতঃ ওলারর ইতার্থ:। অরমওকোর: বত্র প্রবিটঃ প্রমাণ ব্রক্ষাতে ইত্যাধ্যে বারঃ। কীলুশ: অবঃ পঞ্চাশং কোট বোজম বিতৃতঃ বহিন্দ বিশেষাদিতিঃ পৃথিব্যাদিতিঃ স্থাতিবাবৃতঃ ॥ ৪০ ॥

क रगणाई।

তবেং বছপে।বিষক্ষনের পর্টোদশারিনো দিনকল্পনা জেরা। তহাণি তগতে বোগনিত্রা স্বীডারাং। ভারণার্থনারিনঃ কালকলনত্বেনিতাহে কালোহরনিতি। বতৈকনিশসিতকালম্থাংকরা জীবস্তি লোমবিল্লা অগল্পনাথা ইতি ব্রহ্মসংহিতাতঃ এ০৮ ধামসানিনাং সভ্যলোকাল্যধিকারসানিনাং ॥ ৩৯ ॥

বিকারৈরিতি যুগাকং। বিকারা একানশেন্তিরশঞ্চনভাভূতরূপাঃ। প্রাকৃতরা প্রকৃতিধ্বন্ধ্বারপঞ্চনাত্ররপাঃ। মহলালাঃ প্রকৃতি বিকৃতরা বথেতি ভারেন স্বকার্যাং প্রতি মহলানীনামশি প্রকৃতিস্বন্ধনাৎ ॥ ৪৮ ছ

विविधमाथहळ्वची ।

ভাৰেৰং ভূক্মং সুদাং কালমুক্তে নানীমাজাজিকং মুলং প্রথমহাজং কালমান্ধ বিপ্রার্থসংজ্ঞা কালত প্রাথসানাসভবেশ্যাভাঙিক সুলবেন ল এব শালে ব্যবহিরতে সোপি অগদায়ন: প্রথেখরত নিষেব:। নবেবং নিষেবাদিক্রথেশ তভাপি কিবায়ুর্বপ্যভে ভল নহি নহীতি সরসনাবংশদার উপ্রব্যতে ক্রিলিয়ের ইভি। ততৈক নিম্নিত্রালয়ধার্লকা জীবক্তি লোমবিলজা অগপগুনাথ। ইভি ক্লেন্সংহিতাপে ক্রিরোস ইভ্যপ্রার মালং মৃত্ বভাগে নিষেবােশীভার্থ:। বভোহ্যাকৃতত কালকুভবিকার্মহিভত ভল হেভ্রমন্ত্রানালে: কালপ্রিভে্লাভীতভেত্যর্থ: বতাে অগদায়নঃ আলাকি স্ক্লেগ্ডারণত । ৩৮ ৪

ব্যঞ্জিতমেবার্থং পূন: স্পটরতি কালোহরমিতি। ভুম: প্রমেশ্রক ধাম্মানিনাং স্তালোকাদাধিকারিণাং। ৩৯।
ক্রপণায়ন ইতানেন ব্যঞ্জিং সর্বাক্তমেপ্রক্রণ তভাত। বিকারে: বোড়শতির্ইকঃ ক্রপ্রক্তম্কে: সহিত্তদাম্ম ইতার্থ:। স্বস্পতকোবো যত্র প্রবিষ্টা প্রমাণ্যলক্ষাতে ইত্যুক্তরেশাদ্বঃ। কীদৃশঃ বহির্মিশেবাবিতিঃ পৃথিব্যাদিতিঃ স্থতিরার্তঃ কীদৃশৈঃ স্পতকোব প্রমাণাদশশুণ উত্তরোভ্রোহ্ধিকো বেবু তৈঃ। ন কেবলম্মনেক এব স্পশিদ্ভেশি স্কাত্তে। ৪০। ৪১।

বিছুর! এই প্রকার কালখারা তল্প জীবদিগের পরমায়র পরিমাণ হইরা থাকে কিন্তু ভগবতত্ত কালত্বত পরিচেহ্ছ শৃতঃ এই যে চুই পরার্ত্ত নালে কালের বিবর উক্ত হইল ইহা কার্য্যোপার্থি শৃত্য, জনস্কা, জনাদি, জনংক্ষারণ নেই ভগবালের এক নিমেন্যান্ত বলিয়া গণ্য হয়, কিন্তু ঐ নিমেন্ত ভাঁহার সামুর্গনাত্ত বর্তিয়া নহেছ। এক ৪

আহে বিছুর ! পরমাণ্ অবধি বিপরার্থ পর্যক্তাকে কাল তাহা শক্তিমান্ বটে, কিন্ত দেশ । বিশ্ব পরিপূর্ণ স্বন্ধপ,তাঁহার উপরে আফিলত্য করিতে ঐ কালের সামর্থ্য নাই,যে সকল ব্যক্তি দে । এই ভিনানী কেবল তাহাদের উপরেই কাল প্রভুত্ব করিয়া থাকে ॥ ৩৯ ॥

स्क्रा जुड़े शङ्कि नरकूक राज्ञ काल विकास बाता जोत्रक करें रवे खगाए, रेरात जड़ासत गुकानर रकाहि राजन विकृष्ठ कर सर्विता मुक्तिमार्गि नेश नवार्थ जावृष्ठ # 8 * # দশোভরাধিকৈর্যত্র প্রবিষ্টঃ পরমাণুবং। লক্ষ্যতেইন্তর্গভাল্টান্যে কোটিলোইন্তরালয়ঃ ॥ ৪১ ॥ তদাহারক্ষরং ত্রক্ষ সর্ববিষয় বাবাবিশার বিকোর্যার পার সাক্ষাং পুরুষস্য সহাক্ষ্যঃ ॥ ৪২ ॥ ॥ ॥ ইতি প্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈরাসিক্যাং ভূতীরক্ষকে বিহুরনৈত্রেয় স্থাদে কাল্বরূপকথনমেকাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ১১ ॥ ॥ ॥

প্রীমৈক্সের উবাচ n

ইতি তে বর্ণিতঃ কতঃ কালাখ্যঃ পরমাজনঃ। মহিমা বেদগর্জ্বোহণ যথাত্রাক্ষীরিবোধ সে ॥ ১ ॥

श्रियत्रयामी ।

কীনৃশৈরগুকোর প্রমাণাদশগুণোক্তরোদ্ধরোদ্ধিকো যেবু তৈঃ র কেবলমর্মেক এব অণিত্ অক্তেণি লক্ষান্তে। ৪১ । সর্কেবাং কারণানাং কারণং ধান সন্ধাণ । ৪২ ।

। •। ইভি তৃতীরে একাদশ: । •।

वामाम् क्यात्रामि मनः नर्गाश्नरमधनां । काग्नरेवरथन दर्शमण मञ्जर्गाश्य वर्गारक । ১ ।

क्रमनमर्डः ।

चार ह नक्तार देखि बनानावत्रक भूरसीक्यूरेकावरमव मरस्वामकाक्वार । १३ ।

যদ্যপি পূর্ব্ধাক্তরীতা। মহাপুরবোহপি কালাধীনো ম ভবভোব। তথাপ্যাবিতাব তিরোভাব লীলভাদক্ষরপ্রবাচ্যো ন ভবতি। কিন্তু তক্ত প্রমণ্ডরগং অবং ভগবানেব নিত্যাবিতাবিশাৎ তদাচ্য ইত্যাহ তদাহারিতি। মহাপ্রনো বিফোর্গ্রাবিফ্বাধাস্য লাকাক্ষ্যৎ পরং ধাম অভঃ বিদ্ধাং প্রমাংশিক্ষপং তবং ক্রেবাক্ষরং নিত্যাবিতাবং এক পরিপূর্ণভগবস্থমান্তঃ। যতঃ স্ক্রিবার্গ্র পুরবক্তাসি, কার্গ্মিতি (৪.৪২)

🛾 🕶 🗷 ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্তমে শ্রীকীবগোলামিকত ক্রমসন্দর্ভন্য একারশোহগায়ঃ স্মাপ্ত: 🔞 🛊

क्षिविश्वताश्वहकावणी ।

विद्याः क्रिन्निवनादित्ना थाम त्यवः शृहत्यविषे ्टाकावा थामनीकामतः ॥ ४२ ॥

है • है हिंकि नातार्थन निछार हिंदिगार कं कंटि कतार। धिकान ने कुकी तक ने ने कहा ने कहा है है • है निक्षा के कि ने निक्षा कि कि ने क

ঐ স্থা প্লার্থের পরিমাণও অল্প নহে, এক্সাণ্ডের পরিমাণ ক্ষান্তের উত্তরোতর লগগুণ ক্ষিক।
বাহাতে এতাদুশ কোটি কোটি এবং রাশি রাশি এক্সাণ্ড প্রবিক্ত ইয়া পরমাণু ভূল্য ক্ষিক্ত হয় ॥৪১॥
পণ্ডিতেরা তাহাকেই অক্ষর এবং সকল কারণের কারণ অরূপ পরম এক্সা বলিয়া বির্দেশ করেন।
বিশ্বের এ জিনিই পরম্পুরুষ বিষ্ণুর পরম ধাম ॥ ৪২ ॥

| 1985年 | 19

র্থানিশাধ্যানে জন্মার স্বস্টি বর্ণনু 🚛 ্রা ১৯১৮ ম জ্বীন জন্ম 🔆 - উচ্চাল সংস্থান্ত 👉 কুচু কিন্দ্রী

মৈজেয় কৃতিবেন্ধ হৈ আনিবন নিছুর ৷ পানমান্ধায় কোল নামক অভাক এই গুলোকার নিক্ট বর্ণন করিলাম, এখন বেদগর্ভ জ্বন্ধা যে প্রকারে স্থান্ধি করেন ভাহা বলি অবণ ক্ষু মাসমা সসর্জাত্রেহজভানিজ্ঞরণভানিজ্ঞরাদিক । মহামোহণ সোহক তমশ্চাজ্ঞানর্ভয়: ॥ ২ ॥
দৃষ্ট্ । পালীর সাং স্থাইং নাজানং বহুষক্ত । ভগবজ্ঞানপুডেন মনসাভাংততোহস্ত ॥ ৩ ॥
। গানকক সনক্ষা স্বাভন্মধাজ্ঞ । সমংকুমারক খুনীন্ নিজ্ঞিয়ামুজ্বেভসঃ ॥ ৪ ॥

विश्वतारी।

ু অপ্রতি ব্রনা অর্ক্টো অধন্যবিদার্তী: সগর্জ। তথা তনোনাম অরপাপ্রকাশ: নোহো দেহাদ্যহং বৃদ্ধি:। মহামোহো ভোগেছা। আনিকা: তংলাভিদানত জোবা:। ক্ষাভানিকা: তরাশেহহনের মৃত্যাহমীতি বৃদ্ধি:। তনেবাকাং বৈকাৰে। তনোহ বিবেকো মোহা ভাগভাকরণবিশ্রম:। মহামোহত বিজেরো গ্রামাভোগ অবৈবণা। সরণং হন্ধভানিকা ভানিকা: কোধ উচাতে। অবিদ্যা পঞ্চপর্কেরা প্রাহ্ত্ ভা মহাত্মন ইতি। পাভশ্বনেণাত এবোকা:। অবিদ্যাহ্মিতা রাগ বেবাভিনিবেশা: পঞ্চরশাইতি। শীবিফুখানি প্রোক্তা বা। অকান বিপর্যাস ভেল ভর শোকা:। ভছ্কাং খাদ্ভখবিপর্যাসেত্যাদি । ২ । নবহরমন্ত্রত নাভানশ্ব। ৩।

যদাপি প্রতিকরং সনকাদি স্টেনান্তি তথাপি আদা সর্গদ্ধাদিহোচ্যতে। বছ তত্ত মুধ্য সর্গাদর এব প্রতিকরং ভবস্তি সনকা-দয়ত-অংশকর স্টা এবাসুবর্ততে ॥ ৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

मृरहे कि युवाकः चन्द्रकर बाक्तकत्र स्टेशितक जान् दिवानाका स्रही। खब धाक देवामार नजार्थः । ১।२।०। s ।

প্ৰীবিশনাপচক্ৰবতী

অবিদ্যাবৃত্তরঃ পূর্ব্ব সিদ্ধা এব স্ট্যারস্তে ব্রন্ধতঃ সকাশাং তম আদিরপোবির্ক্তৃবৃত্তিয়াই সসর্জেত। তল তমো নাম জীবত সক্ষণপ্রকাশ:। মোহো দেহাদাবহন্তারোপঃ মহামোহো ভোক্তব্যবিষয়ের মমন্তারোপঃ। তামিলঃ তোগপ্রতিষ্টের সভাতঃ করণ বর্মত কোণত স্থীকারঃ। তল্ভান্ধতামিলঃ কোণত স্থীজাবরপা মুক্তৈ ব মরণং। এতে জীবতাসস্তোপ্যবিদ্যাল স্টাঃ। যথোকেং বৈষ্ক্রে। তমো বিবেকো ঘোহঃ স্যাদত্তংকরণবিল্লঃ। মহামোহত্ত বিজ্ঞেরা প্রামান্তোগস্থিবণা। মরণং ফ্রভামিলঃ ভামিলঃ বিলেগে কোণ উচ্চতে। অবিদ্যা পঞ্চপতর্ব্বা প্রাত্ত্ত্তা মহাল্পন ইতি পাতঞ্জলেপ্যেত এবোক্তাঃ অবিদ্যা অন্তির রাগ্রেবাতিনিবেশাঃ প্রাতিষ্টি ক্রিকুম্বামি প্রোক্তা অজ্ঞানবিপ্র্যাস ভেলভরশোকা বস্তত্ত্বিদ্যারা আবরণ বিক্ষেপাবের হৌ ধল্মো তাবের অবিদ্যা অনিতা শক্ষাভাাং অজ্ঞানবিপ্রাস্পল্ডাকোচোতে। রাগ্রেবাভিনিবেশাত্তক্রণ ধর্মা অপি বিক্ষেপাংশ্চ প্রাধান্তাহিক্ষেপ প্রপঞ্চ তর্ব্বাচ্যাক্ত ইতি জ্ঞার। ২ ৪

অবিদায়ে নিবর্ত্তিকা বিলৈবেতি জ্ঞাপরিতৃং বিলার্ভয়েণি ভত্মাদেব সনকালিরপেণাবির্ভুব্রিত্যাই দৃষ্টে ভালিনা মহাকরা যুষাং এলাদীনাং জীবতামের প্রথমপর হাছে প্রমেশরে প্রবেশাৎ পাত্মকরে বথা এলা প্রাত্দপদ্যভ তথা এলাপি সনকাদীন্ প্রক্রপাদ্যামানেতাই । ত ।

স্নক্ষেতিঃ সাংখ্যবেগিবৈরাগাতপাংশীতি চডার্বোব নিদ্যামাশ্ততেমা বৃত্তরভাসামেব সমকাদিচতুইর রূপেণাবির্জাবঃ। কিঞ্ ভত্তা। বিনা বিদ্যামা বৈফল্যান্তৰ্তির তপ আদিখণি ভব্তিও শীভ্তা সতী তিঠেদিতি সনকাদরোগি ভক্তিমন্ত এব দৃষ্টাঃ। মুখ্য ভক্তেরাব্রিস্থাবৃদ্ধু নার্দ্রপোর্যে বক্ষাতে । ৪ ।

আদি কর্তা ত্রকা স্প্রির অত্যে তনঃ (জীবগণের স্বার্কেশর অপ্রকাশ) মোহ (দেহাদিতে অহং বৃদ্ধি)
নহানেহি (ভোক্তব্য বিষয়ে আমার ইত্যাকার জান) তামিজ্র (ভোগেছা প্রতিবাতে অন্তঃকরণ ধর্ম
স্বরূপ ক্রেন্যধের জীকার:) স্পদ্ধতানিজ্ঞ (ভোগ্যবস্তু নাশে আমি মৃত হইলাম এইরূপ বৃদ্ধি) ইত্যাদি
স্বর্জানী ক্রন্তি সকল স্প্রি করিবেন । ২ ।

াংক্ত এই স্টেকে পাশীরসী দেখিয়া উহিার অন্তর্মে আনন্দাস্ভব হইল না, এ নিমিত ভা ান্দা ধ্যান ক্রিয়া প্রস্তারঃ পানিবৌস্তে ননে অভাক্ত স্টিক্ষিতে প্রস্তুত হইলেন ॥ ০ র

্যত্ত ক্ষাৰ্থ সন্ত্র লনকা লনাক্ষ্ত ললগ্রুমায় এই চার্মি ক্ষা মুদির স্টি করিলেন কিন্ত তীহার। সক-লেই নিজিয়ে এবং উর্জনেতা হইলেন॥ ৪ জালাগ্রিক সামি এই বিভিন্ন বিভাগে এই বিভিন্ন এই বিভিন্ন এই বিভিন্ন এই বিভিন্ন তান্ বভাবে বৃদ্ধঃ পুত্রান্ প্রকাশ কর্মক পুক্ষকাঃ। ভবৈদ্ধয়োকঃপ্রবিধা কার্যরেষপরারণাঃ ॥৫॥
সোহবধ্যাতঃ হুতৈরেবং প্রজ্যাধ্যাজেইসুশাসনৈ । জোধং ছুর্বিবরং জাজং নিরন্ত্রগৃদ্ধক্রমে ॥৬
বিয়া নিগৃহ্যানোহপি জেনোর্থগাহ প্রজাপতেঃ। সন্দ্যোজারক ক্রমস্থাঃ কুমারের নীললোহিতঃ।
স বৈ ক্রোদ দেবানাং পূর্বজা ভগবান্ ভবঃ। নামানি ক্রম মে ধাতঃ ভানানিচ জগদগুরো।
ইতি জত্ত বচঃ পার্যো ভগবান্ পরিপালয়ন্। অভ্যধাত্তরা বাচা নারোদীক্র করোনি তে॥ এ
যদরোদীঃ হুরজ্রেষ্ঠ সোভ্যেগ ইব বাসকঃ। তডভামভিধাস্যন্তি নালা ক্রম ইতি প্রজাঃ ॥ ৮ ॥

अपनयामी ।

অভ্যন্ত। আৰক্ষাভঃ প্ৰত্যোধনাত্মকুশাসনং বৈঃ ॥ ৬ । স্বাধনাতঃ আৰক্ষাভঃ প্ৰত্যোধনাত্মকুশাসনং বৈঃ ॥ ৬ । সচাসৌ মহাশ্চ ভন্মহাঃ । ৭ ॥ ৰাশ্ব ইব ॥ ৮ ॥

क्षमन्दः।

ভানিতি অনিজ্ঞারাং হেতুর্বোক্ষণর্যাণ ইতি। নরু প্র্রাপতীন্যশ্সি ন্যাক্ষণিবিং দুখাতে ভ্রার্ বাস্থ্যবেশরার্ণাঃ। দেবর্বি ভূতােও নুগাং শিতৃ্ণামিত্যাবিভাঃ । ৫। ৬। ৬। ৮। ৯। ১০। ১১। ১২। ১০। ১৯ ৪

विश्वनाथठक वर्षी ।

उदेत्रक्तिकि कान दांशः थवाविशक् कर्ष (दांशनिदात्रक ध्व नाामिकि द्याक्षिकः se s

জবংগাতো অবজাত: নিমন্ত্রকার ইতি এজংশা রালসম্ভাবতং বাজং। এবং তম আছি সনকালোঃ স্কৌ তামস সাধিক ভাবোদযৌ তস্য পূর্বং (জ্বেন) । ৬।

অবিদ্যারা নিবর্ত্তিকা বথা বিদ্যারা অণি কৃচিরিবর্ত্তিকা তথা অবিদ্যা স্যাদিতি দশ্রিছুং বিদ্যোদ্যবভাগি ক্রমণ অবিদ্যাবৃত্তি
মুখ্যস্য তাম্প্রাক্তিশ্যন্সা ক্রেক্সেশ্যবিভাব্মাই বিষেত্তি ক্রমন্ত্রঃ তব্য প্রকাশতের্ক্সঃ স্চাস্টে ক্র্যুক্তি বা নীল্লোহিত
ইতি জোধাণি তবর্ণএব ৪ ৭ ৪

ख्बीनामार नवा देखि । ৮ ।

অত এব এলা ঐ সকল ম্নিকে সৃষ্টি করিয়া যখন বলিলেন অহে পুত্রগণ! ভোমরা প্রজা সজন কর, তখন তাঁহাদের ভবিষয়ে প্রস্তি হইল না, ফলত: তাঁহারা মোককেই পরম ধর্ম জ্ঞান করিতেন এবং ভগবান্ বাহ্দেবই তাঁহাদের প্রমাঞ্জয় হইয়াছিলেন, ইহাভে তাঁহাদের প্রজা সজবন প্রস্তির সভাবনা কি ?। ৫।

পুত্রগণ ঐ প্রকারে অনুষ্ঠা উল্লেখন পূর্বক অবজ্ঞা করিলে এক্ষার ছুর্বিষ্ কোধ উৎপন্ন হইল, কিন্তু তাহা প্রকাশ না করিলা মনোমধ্যেই সম্মন্ত করিলে বন্ধ করিলেন । ৬ ॥

পরস্ক বৃদ্ধি পূর্বক সহারণ করিলেও উহার এ জোগ জাবলের মধ্যখান হইতে নির্মাত হইরা নীল লোহিত কুমার আকারে প্রাক্তর্ক হইল, সেই জগবান নীললোহিতই কেবগণের পূর্বক, ডিনি উৎপন্ন হইরা এই বলিয়া রোচন করিতে লাগিলেন,হে ধাতঃ ৷ হে জগনগুরো ৷ আনার নাম এবং খান নির্দিষ্ট আইনা হিউন ৷ অগবান পদ্মযোনি জাহার এ বাজ্য প্রতিপালন করত শাস্ত্রা পূর্বক তলে বচনে বলিলেন বংস ৷ রোচন করিও না এখনি তোলার যার এবং খান নির্দিন্ট করিয়া নিজেই ১ ৭ ল

क्ष्मनक्षत कहित्त्रन (क्ष्महर्श्यक । क्ष्मि समारक्षः णात केषित्र व्हेशा रात्रामन केशिया वहे कातरा ध्यकाशन रक्षामारक क्षम्य वहे नाम निया चांद्रान कतिरव ॥ ৮ ॥ किषिष्ठां ने स्ट्रिंग वास्त्र शिक्षण मही। मृर्याण्य स्थानिक वानाण खाल्य कि । ॥ मण्य मृत्र हिन्दमा महाक्षित स्व क्ष्यकः। खेळात्रक खनः कात्ना वामत्तर्य श्रव्यकः॥ सीश्रं की तमत्त्रामां नित्र मिलिशाचिकाः। हेतावकी वशा मोका क्ष्यात्मा क्रकः एक खितः॥ गृरारे पानि नामानि वानानि व मर्यायनः। ७ छि: एक खक्षावस्तीः खक्षानामित यथ्यकिः॥ २०॥ हेला विक्षेत्र वश्यक्रमा क्ष्यवाद्योगत्तर्या । अवाद्यक्षित्र वश्यक्रमा क्ष्यवाद्योगत्तर्या । म्यावाद्यक व्यव्यक्षा मान्यक्षा । १०॥ क्ष्यक्षा वश्यक्षा व्यव्यक्षा । १०॥ क्ष्यक्षा वश्यक्षा वश्यक्षा व्यव्यक्षा । वश्यक्षा वश्यक्षा वश्यक्षा वश्यक्षा ।

विश्वनामी।

व्यक्ष शृक्षस्य मधा इक्ति । । । अकि हारेमस्विकं मुक्त व्यक्षः एक । ३० । । । । विकार निर्माहकका चन्तर की वना (केन । ১১ । क्रानार मृद्रा मिक्क वानर श्रीकः । ১২ ।

मिविधनायहळ्यकी ।

হণীতি হাণাদীনামহন্বার্থাবাদহন্বারাধিঠাত রুজত তত্তৎ হানেচিত্তাৎ ক্রোধপক্ষেত্। হাৎ ক্রোধত জন্মহানমের সূত্র প্রবৃত্তো নেরপাণিগালেজিরেশ্বিশি ভিঠতি তত্ত্বাপারহত্য। তথৈবার্থ্য প্রাণেশ্বিপ নানাখাসাধিক্যস্ত্যা। তথা বহি রাকাশত প্রচেত্রবারিনহাহিশলৈক্যায় গিজলানাং শোকক্ষ দাকক্ষ প্রাবক্ষয় মহাঃ অবিকাইরম্পারানিভিত্তরা তেবাং সংঘাত্তঃ নিংহ্ব ব্যাত্রস্পানিভিত্ত। ক্র্যাচলক্ষেত্রপাহিমান্তাং মারক্ষমত্তীতি তেখিপি ক্রোধিভিত্তি। তপ ইত্যুপলক্ষণং সাংখ্যবাস বৈরাগ্যাণাম্বিপ তেখামি ভিজিপালায়াভাবে ক্রোধন্যক্ষ হুছে ওপোদীপিভ্যন্য ইত্যাদিংবাইক্য রত এবোজনাক্ষ হুছে প্রহং পদ্ধে ততঃ পত্তাবানান্ত যুহাক্স ম ইতি ॥ » ॥:

মহাবিত্যাদীতেকাদশ ক্ষাপাং নামানি ।
ধীবিত্যাদীতেকাদশ ভক্জীনাং নামানি ।
সবোৰণং সন্ত্ৰীকং । এভিঃ ছাইনম মিছিচ বুজঃ সন্ প্ৰথাং ছক্ষঃ ১০ ।
সক্ষং বলমান্ত্ৰি নীৰ্নিবাহিততা ক্ষাব ভীত্ৰতা ॥ ১১ ॥
ক্ষাক্ৰীনাং ক্ষাণাং যুগানি দৃষ্টে তাৰকঃ ॥ ১২ ॥

অপর হে বংগ! হৃদয়, ইন্দ্রির, প্রাণ, আকাশ, বায়ু, অগ্নি, জল, পৃথিরী, সূর্য্য, চন্দ্র এবং তপস্ত। এই সকল স্থান, তোমার নিমিত্ত অত্যেই নির্দিষ্ট করিয়া রাখিয়াছি ॥ ৯ ॥

আর মস্যু, মসু, মহিনস্, মহান্, শিব, ঋডধ্বজ, উগ্ররেডা, ভব, কাল, বামদেব, ধৃতরেড, এই একা দেশটা তোমার নাল। এবং ধী, ধৃতি, রদলা, উমা, নিযুৎ, দর্পি, ইলা, অন্নিকা, ইরাবতী, অধা, দীক্ষা তথা করে। গুমি জীগণের সহিত ঐ দকল নাম এবং স্থান গ্রহণ কর। তুমি প্রজাপতি অভএব এই দকল নাম এবং স্থান মুক্ত হুইয়া প্রজা সৃষ্টি কর ॥ ১০ ॥

ছগবান নীনলোহিত থীয় । । কর্ত্ত এই রূপ আছিত হইয়া নত্ত অর্থাৎ বন, আফুতি অর্থাৎ নীললোহিততা এবং অভাব অর্থাৎ তীব্রতা অনুসারে আছুত্র প্রকা সৃষ্টি করিতে প্রক্রে

ति के क्राप्त बहेराज ता नक्ता कर्ता के बहेराका संदाता अगरथा नक्तम बहेमा सगरधान कतिए जिलाम. कतारक समानिक अमानिक अधिन के विशेषक होते हैं। छोड़ारक क्रायरक नत्त्राधन कतिया करिएक नागिरनन, আলং প্রজাভি: স্টাভি রীদৃশীভি: স্রোভম। ময়া সহ দহস্তীভিদিশ শচকুভিরুষণৈ: । ১২ ॥ তপ আতি ছি দেং তে সর্বভৃত হথাবহং। তপসৈব বধা পূর্বং অন্তা বিশ্বমিদং ভবান্॥ তপদৈব পরং জ্যোতি র্ডাবন্তমধোককং। সর্বভৃত গুহাবাসমঞ্জনা বিশতে পুমান্॥ শ্রীমেত্রের উবাচ॥

এবনাত্মভ্বাদিষ্ট: পরিক্রমা শিরাং পতিং। বাঢ়মিত্যমুমামন্ত্রা বিবেশ তপদে বনং ॥
অথাভিধ্যায়তঃ দর্গং দশপুত্রাঃ প্রজন্তিরে। ভগবচ্ছক্তিযুক্তক্ত লোকসন্তানহেতবঃ ॥
মরীচিরত্রাঙ্গিরদৌ পুলন্তাঃ পুলহঃ ক্রভুং। ভৃত্বশিষ্ঠো দক্ষণ্চ দশমন্তর নারদঃ।
উৎসঙ্গানারদো জত্তে দক্ষোঙ্গুঠাৎ স্বয়ন্ত্বং। প্রাণাদশিষ্ঠঃ সংজাতো ভৃত্তন্ত্বি করাৎ ক্রভুং॥
পুলহো নাভিতো জত্তে পুলন্তাঃ কর্ণয়োঞ্ধিঃ। অঙ্গিরা মুখতোধ্ক্রোধ্বিম্বিচিম্নিদোধ্ভবং।

व्यवस्थामी।

यहा यका वि । ১०।

अविभगाशहकवर्ता।

তপ আতিঠেতি স্টেখিতি সমরে কল্লক দীলা ন তন্তাহেতি তপনি প্রবর্তনা বথা পূর্কং প্রটেতি বিপরীতলক্ষণা। বথা পূর্ক করাতে বিশং সমহরত্তথা ইতে উর্জমণি সংহর্তাসীতার্থ:। কচিৎ করে শিবোণি এক্ষেব প্রজাঃ দদর্জেতোকে। স্কামি তপসা বিশং প্রসামি তপসা পূন:। বিভর্মি তপসা বিশং মীর্যাং মে চ্তরং তপ ইত্যক্তবতা তগবতা শিবতৈকাাদিদমুক্তমিতাপরে॥

ৰশ্বদাচরতি শ্রেষ্ঠতাত্তবেশ্বেতরো জন ইতি স্থানেন স্বত্তপঃ শিক্ষিরা সাংসারিকোলোকোহপি নিতরিবাডীভাহে তপইস্বৈতি । কর্মবোগভাপি মরীচ্যাদিরপেণাবির্ভাবমাহ মরীচিরিতি জ্ঞানবৈরাগ্য তপোযোগ কর্মবাং সাফলাং ভটজ্ঞাব তথা প্রমণি নিরপেক তব্যৈব ভজিঃ সর্ব্বফলবাত্ প্রাং ফলরণাচেতি সর্ব্বান্ত ভজে নার্য রূপেণাবির্ভাবমাহ দুখ্য ইতি।

উৎসঙ্গাৎ প্রাকৃতিছানাৎ প্লেবেণ উৎকৃত্তীৎ সঙ্গাৎ সাধুসঙ্গাদিত্যর্থ:। আপো নারা ইতি প্রোক্তা ইত্যাদি দৃষ্টেন রশকেন পরমেশর উচাতে নরদ্যোদ্যিতার্থে তসোদ্যিতাণা নারং ভগৰকাকস্থ্যাদিকং দদাতীতি নারদো ভক্তিবোল: ।

ভজিৰোগত কৰ্মবোগত চ বিহিতভাত্ঠানে পরমে। ধর্মোধর্মণ্ড ভবতীতি ধর্মোৎপল্পিমাই ধর্ম ইতি। তলাদিতি সর্কোৎকুট্রভানত

হে দেৰোন্তম। আর ঈদৃশী প্রজা স্প্রিতে প্রয়োজন নাই,ইহারা সকলে প্রথর চকুর্বারা আমার সহিত দিক্ সকল দগ্ধ ক্রিতে লাগিল॥ ১২॥

অতএব বংস! তুমি সর্ব্ধ প্রাণির স্থাবহ তপস্থা কর, তোসার মঙ্গল হউক। এই বিশ্ব পৃর্ব্ধে যেমন ছিল, তুমি তপো যোগে পুনরায় তত্রপে স্থাষ্টি করিতে পারিবে, বংস! তপস্থায় কি না হয় ? পুরুষ সকল তপঃ প্রভাবেই পরম জ্যোভিঃস্বরূপ সর্ব্ধ প্রাণির অন্তর্যামী ভগবান্ অধ্যক্ষণকে প্রাপ্ত হয়। নৈত্রের কহিলেন সেই নীনলোহিত রুল্ল এই রূপে প্রজ্ঞা কর্ত্বক আদিই হইয়া তাঁহাকে প্রদক্ষিণ করত প্রণাম করিলেন এবং যে আজ্ঞা বলিয়া সম্ভাবণ করণানন্তর তপস্থা নিমিন্ত বনে প্রবিষ্ট ইইলেন।

আসম্বান্তর্কা ভগবানের শক্তিযুক্ত হইয়া স্থা বিষয়ে চিন্তা করিতে লাগিলেন, তাহাতে লোক

ব্য ন্রীচি, অত্যি, অসিরা, পুলন্তা, পুলহ, জেতু, তৃতা, বশিষ্ঠ, দক্ষ এবং নরিদ এই দশ জন জামিলেন তথাধ্যে নারদ প্রকার জোড় হইতে, দক্ষ অসুষ্ঠ হইতে, বশিষ্ঠ প্রাণ হইতে, তৃতা তৃক্ হইতে, পুলন্তা কর্ণবন্ন হইতে, অসিরা মুধ হইতে, অত্যি চক্ষ্ব ন হইতে, ম্রীচি মনঃ হইতে উৎপন্ন হইলেন। ধর্মন্তনাদ্দিণতো যত্ত নারায়ণ: স্বয়ং। অধর্মঃ পৃষ্ঠতো যুস্মান্ত্রে কিভয়কর: । ১০॥ ছবি কানো জেনো: ক্রোধো লোভশ্চাধরদক্ষদাং।
আন্যাধাক্ নিদ্ধবো নেঢ়ারিখাজিঃ পায়োরঘাঞায়:॥
ছায়ায়া: কর্দনো জ্ঞানে দেবছুত্যাঃপতি: প্রভু:। মনসো দেহতশ্চেদং জ্যান্তে বিশ্বস্থা জগং॥১৪
বাচং ছহিতরং তথী: স্বয়ন্ত্রিটাং মনঃ। অকামাং চক্ষে ক্রোং স্কাম ইতি নং শেষ্ডং।

বাচং ছহিতরং তথীং স্বয়স্ত্ররতীং মন:। অকামাং চক্ষে ক্তঃ স্কাম ইতি ন: প্রুডং। তমধর্ম্মে কুডমতিং বিলোক্য পিতরং হৃতা:। মরীচিমুধ্যা মুনয়ো বিস্তন্তাৎ প্রত্যবোধয়ন্ ॥ ১৫॥

विषवपामी।

व्यथतक्तार व्यवस्त्रीकार । > ।

रमहाखरतम कुछः नर्काः वच्छूः छत्महन्त्रात्तं कात्रमाह वात्रमिन्ता ॥ ১৫ ॥

क्रमभिम्बर्डः।

ৰাচং হৃহিতরমিত্যাদি কথনং বেণাক্তমু্থানাং ভীৰণাৰ্থং ভশ্বহিন্দু্ধানাং তদ্ধীক্ত তরা তথা প্রস্তৃত্যা তদৰ্ভ্জয়া বালশাসনার্থক ॥১৫ ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২॥

बिविनाथठकवर्छ।

জ্বরভাপ্তেম: প্রবেশাব্ডিপ্রিরাৎ ধর্মজ্বৈৰ বিহিতভাক্রণে নিবিদ্ধৃত করণে অধর্ম, ইতাধর্মভাপ্যংগতিমাহ অধর্ম ইতি। পৃষ্ঠত ইত্যুপ্রস্থান।দনতিপ্রিরাৎ। ১০ ৪

অধর্মঃ কথং ভানিতি তৎপ্রবর্তকানাং কামানীনামুৎপত্তিমাত। ত্বিদি মনসীতি মনসঃ পুরুষান্ধীনপান্তরন্থত কামভোদ্মুলনং ছঃশক্মিতি দ্যোতয়তি। ক্রোধানীনামণি মনস এবোৎপদ্যানাং ক্র প্রভৃতিপ্রাকটাস্থানমেব জ্বেরং। কামক্রোধানিমত্বেণি শাল্ত-জ্ঞানমন্ত পাতিভাং সংভ্রেদিতি দুর্শমিত তাদেব সর্বভাগ উৎপত্তিমাত আসাদিতি ।

সদা তা্মসরাজ্য তাববতামণি কদাচিৎ কিঞিৎ সাধিকভাবোদয়: ভাদিতি দর্শবিভূমাছ। ছায়ায়া: কাল্ডে: । ১৪ ।

অতিবিহ্যানতি বিবেকিলানপি কামজরোন ভবেদতঃ কলা ভণিলাদিভি: সহ রহিদ ন বসেদিতি আপরিত্যাহ বাচমিতি।
ইতি ন শত্মিতানেন ওছক মনর্হাপি তল্জানার্থমণরাধাধি চাদদোবদুগেব অবীমীতি ল্যোতিডং। দোবদুটোতু মরীচিপ্তাণা-মিবাধ: পাত: ভাদিতি ভীষণাচ কোরা। তথা ন শত্মিতোতং করভবানাং কেবাঞিদ্টমণোতর ভবেদিতি প্রস্কতোহতি প্রেকরগতমেবৈতং কর্ম সংপ্রেত্তি ভাব:। চতুঃ প্লোকী ভাগবতোপদেশ প্রাধ্যনস্তরমেভদবট্যানাং। বহুলং ভগবতা এত্রাভং সমাতি গ্রমণ সমাধিনা। ভবান করবিকরের ন বিমৃত্তি কহিচিদিতি॥।

বিস্ত্তাৎ জন্তজনকসম্বন্ধে সংগাৎ নতু পাপদর্শনোধকোপাদিতার্থঃ। ব্যা মহতাং বিকর্মাপি নাপকারক্ষিতি বিখাসাৎ কেবলস্তু প্রবৃত্তলোকানিষ্টশক্টের প্রবোধরাসাসেতি মরীচ্যাদীনামপরাধাতাবো দ্যোতিতঃ । ১৫ র

এবং ধর্ম তাঁহার দক্ষিণ ন্তন হইতে প্রকাশ পাইলেন। সেই ন্তনে স্বয়ং নারায়ণ বিরাজমান ছিলেন। অপর অধর্ম তাঁহার পৃষ্ঠ দেশ হইতে জন্মিল,ঐ অধর্ম হইতেই লোকের ভয়ন্তর মৃত্যু ঘটিয়া থাকে ॥১৩

অপর তাঁহার হাণয় হইতে কাম, জাষয় হইতে জোধ, অধর ও এঠ হইতে লোভ,মুধ হইতে বাক্য, মেদুদেশ হইতে দিয়ু, পায়ু হইতে পাপাঞায় নিখাভি উৎপন্ন হইল। আর দেবহুতির পতি যে কদম নামা ঋষি তিনি তাঁহার ছালা হইতে জন্ম গ্রহণ করিলেন। এই রূপে এই জাগৎ দেই বিশ অফার মন: ও দেহ হইতে উৎপন্ন হইল॥ ১৪॥

আহে বিচুর । ত্রনার বাক্ নামে একটা মনোহারিণী কন্সা উৎপন্ন হইয়াছিল, শুনিয়াছি ত্রনা কামোন্মত হইয়া সেই কন্সায় অভিলাব করিয়াছিলেন, কিন্তু ঐ কন্সার ভাঁহাতে কামনা হয় নাই। মরীচি প্রভৃত্তি মুনিগণ পিতার ঐ প্রকার অধ্যে প্রবৃত্তি দেখিয়া ঠাঁহাকে কন্ত জনক সমন্ধ নিবন্ধন স্বিন্ন বচনে এই রূপ বুঝাইয়াছিলেন ॥ ১৫ ॥ নৈতং পূর্বেঃ কুতং প্রদেব ন করিষাতি চাপেরে। যতঃ তুহিতরং গচেরনিস্থাকজং প্রভুঃ ॥ ১৬ ॥ তেজীয়দামপি ত্তের হুলোক্যং জগদ্ওরো বছ্তমপুতিষ্ঠন্ বৈ লোকঃ সেলায় করতে। তব্যৈ নমো ভগবতে য ইদং স্থেন রোচিষা।। আজ্মন্থং ব্যঞ্জয়ামাস্ত্র ধর্মাং পাতুমইছিল। ১৭ ॥ স ইখং গৃণতঃ পুজান পুরো দৃষ্ট্যা প্রশাপতীম্। প্রশাপতিপতিত্বং ভতাকি ব্রীড়িতত্তদা তাং দিশো জগৃহর্বোরাং নীহারং যবিত্তমঃ ॥ ১৮ ॥

কদাচিদ্ধায়তঃ অন্ত বেঁদা আসংশ্চতুমূপাৎ। কথং অক্ষ্যাম্য লোকান্ সমবেতাদ যথা পুরা ॥১৯

श्रीधतयामि ।

থৎ ছত্তো যে পূর্বের ত্রকাদয়োহনো বা তৈরেতরকৃতং অঙ্গল্পং কামং ॥ ১৬ ॥ ভেনীয়সামিতি তেজবিনামপি হুলোক্যং সংকীর্ত্তিদং ন ভবতি বেবাং তেজীয়সাং বৃত্তং । ১৭ চ

কথং অক্যামীত।ভিধায়তঃ অষ্টু এ কণঃ চতুংসংখ্যা যুকান্ মুখাৎ সমবেতান্ অসকতান্ ৰথা পুরা আকলে। ১> ।

शिविधमानहळवती ।

भूटेर्सः भूसंकन्नगटेख्टल टिका । एउः भूट्सः त्य उम्रागवटेख्यां जनवर कामर । ১৬.1.

স্লোক্যং সংকীর্ন্তার্হং বৃত্তং চরিত্রং।

এবং প্রবেধিভোপি ব্রহ্মাবদান প্রাব্ধ্যত। তদা ভগবংকৃণাং বিনা, কামঃ প্রকারাভ্রেণ নোপশাম্যেদিভি সিদ্ধান্তম্মু-স্থাতা তে মুনরো ভগবন্তমেব প্রাপদ্যবেত্যাহ তত্মা ইতি ॥ ১৭ ॥

ভন্নং ততুং তত্যাব্দেতি মহাপাতকত প্রাণাস্তমেব প্রায়ন্চিতং মুধ্যমিতি জ্ঞাপয়ামাস। বিপরাত্মধ্যে তত্ত ততুত্যাগাসম্বনাত্তবে ত্যাগ এৰ ভছুভাগেৰেনোকঃ। দিশ ইতি তা এব ভমদা অন্যাপ্যাত্তিরতে । ১৮।

তেজীয়গাং ন দোবার বক্তেঃ সর্বভূজো যথেত্যাদিবচনাৎ অকন্তাত্গামিনোপি এন্ধণো মালিলং নাশকনীরমিতি, বক্তুং এন্ধণ-ত্তেজবিষমাত, কদাচিদিত্যাদিনা, নামাশক গুপবৃংহিতমিতাতেন গ্রছেন বধা প্রাহমক্তাং তপা কথং অক্যামীতি খ্যায়তঃ বেলা আসমিতি বেদেরু স্টিপ্রকারঃ সর্ব্ধ এব বর্দ্ধক ইতি ভদ্টা। স্থাপন স্বাহ্মতি ভগবদাক্তাবশাদিতি ভাবঃ॥ ১৯॥

পিত: ৷ আপনি যে কর্মে প্রবৃত হইতেছেন, আপনার পূর্ব কল্লবর্তি কোন ত্রন্ধা অধবা কোন ব্যক্তি ঈদৃশ গর্হিত কর্ম করেন নাই, পরেও কেছ করিবেন না। কি ঘুণার বিষয় ! আপনি সকলের প্রভু, আপনি কি না কাম নিএহে অসমর্থ হইয়া ক্সা গমনে উদ্যত হইলেন ? ॥ ১৬ ॥

গুরো! আপনি তেজপী সত্য, কিন্তু এরপ চরিত্র যশস্ত নছে, ভবাদৃশ ব্যক্তির সংকর্ম করাই উচিত, যে হেতু লোকেরা তজ্ঞপ অনুষ্ঠান করিয়া আপন আপন কুশল সাধন করিতে সক্ষম হইবে। অথবা আমাদের এ কথায় কোন প্রয়োজন নাই, আমরা সেই ভগবান্কে নমস্কার করি, যিনি আত্ম-জ্যোতির্বারা আত্মন্থ এই বিশ্ব প্রকাশ করিয়াছেন, তিনিই ধর্ম রক্ষা করিবেন॥ ১৭॥

প্রকাপতিদিগের পতি ব্রহ্মা আপনার অত্যে আত্ম তনয় প্রকাপতিগণকে ঐ প্রকার বাক্য প্রয়োগ ে দিখিয়া অতিশয় লফ্জিত হইলেন এবং ক্রীড়া বশতঃ তাঁহাদের সমক্ষেই আপুনার ততু পরি-क्रितिलन । ভाराতে निक् नकन डाँरात मिट्रे दिन अर्ग क्रिन, পভিতেরা ভাराকেই নিহার-

यग्न ७ मः विनिद्यां शिटकन ॥ ১৮॥ আহে বিছুর'! ঐ এক্ষা অপর এক সময়ে এই রূপ চিন্তা কলিলেন, এই সকল অসমত লোক পূর্ব काल (य जल हिला लाहे काल देशांनिशाक कि श्रकात एकम क्रिया थे क्रण हिसा क्रिएं क्रिया তাঁহার চারি মুখ হইতে বেদ সকল নির্গত হইল। ১৯॥:

চাতুর্বোজ্ঞং কর্মতন্ত্রমূপবের নরি: সহ। ধর্মত পাদাশ্চতারত্তবৈধবাজনর্ভয়: ॥ ২০ ॥
ীবিছুর উবার ॥

म देव विश्वत्रकामीत्मा द्वतानीत् त्र्यद्कार एवट । यनवद्भवन्तित्व स्थाप कहि उत्भाषन ॥ २১

খগ্যজু: সামাধ্যবিধ্যান্ বৈদাৰ পূৰ্বাদিভিমু থৈ:। শান্তমিজ্যাং স্ততিস্তোমং প্রায়ন্তিতং ব্যধাৎ ক্রমাৎ ॥২২ জায়ুর্বেদং ধসুর্বেদং গাস্ক্রেং বেদমাস্থন:। স্থাপত্যঞাস্ত্রদেদং ক্রমাৎ পূর্বাদিভিমু থৈ:। ইতিহাস পুরাণানি পঞ্মং বেদমীশ্ব:। সর্বেভ্য এব বক্তেভ্য: সক্তর্জে সর্বাদনি: ॥ ২৩ ॥

श्रीशत्रवामी ।

চাতৃহ্ছিজং ছোত্রাদীনাং চতুৰ্বাং কর্ম। কর্মতজ্ঞং ৰক্ষ বিভারঃ। উপবেইনঃ ন্দৈক সহ। আধানাত্তৰ্ভরকাসন্ ॥ ২০ ॥ মুধতঃ মুধেভাঃ ॥ ২১ ॥

চাতৃহোত্ৰ স্ষ্টিক্ৰমমাৰ শাস্ত্ৰং অঞ্জীত মন্ত্ৰভোত্ৰং হোতৃঃ কৰা । ইজামধৰৰোঃ কৰা অভিভোগং ভভিঃ নদীতং ভোতাং। ভোমং তদৰ্থমূক্ সম্পাৰং। ত্ৰিবিং ভোমো ভৰতীতাদি বিহিতমূলাত্ প্ৰবোজ্যং। প্ৰায়শ্চিতং ত্ৰান্ধং ॥ ২২ ॥

উপবেत क्रममाह । आयुर्व्सतमित्रि । आश्वास्ता मूरेशः दानकाः विश्वकर्त्यनाव्यः ॥ २० ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ইতি হাসেতি যুগাকং। ইতিহাসেত্যাদিকং প্রথমক্ষকে বিবৃত্তমন্তি ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

এবিশ্বনাণচক্রবর্ত্তী

হোতা উলগাতা অধ্বয়ু ব্লোভি চতুর্ণাং হোতৃণাং কর্ম চাতুর্হোত্রং কর্মতব্রং বজা বিভারঃ। উপবেটনন টেয়ন গাঁহিমণ্চ সহ। আশ্রমান্তব্ ত্রণচাসন্ ॥ ২০ ॥

মুধতো মুখেডা:॥ ২১॥

চাতৃহোঁত্ৰস্য স্টেমাৰ শাল্লং অপ্ৰগীতমন্তভাত্তং হোড়া কৰ্ম ইজ্যাং অধ্বৰ্ণ্ডোঃ কৰ্ম ভতিভোমং ভতিঃ নংগীত ভোতাং। ভোমং তদৰ্থমূক্ সম্পানং তিবৃৎভোমো ভবতীতাদি বিহিতম্পগড়া কৰ্ম প্ৰাৰশ্চিতং বন্ধণঃ কৰ্ম ॥ ২২ ॥

উপবেদানাং স্টেমাছ আয়ুরিতি স্থাপত্যং স্থপতেঃ কর্ম বিশ্বকর্মশালং।

गर्त्तका देखि गर्कादमविवत्रगक्रभद्वारखसाः॥ २०॥

এবং চাতুর্হোত্র অর্থাৎ হোতা, উদ্গাতা, অধ্বর্যু, ক্রন্মা, এই চারিজন ধারা নিম্পন্ন কর্মা, উপবেদ ও নীডিসারের সহিত তক্ত্র অর্থাৎ যজ্ঞ বিস্তার, ধর্ম্মের চারি চরণ, এবং আশ্রম সকলের রভি এ সকলও উৎপন্ন হইল ॥ ২০॥

বিসুর জিজ্ঞালা করিলেন মূনে! আপনি কহিলেন,বিশ্বত্রক্ত্রণণের ঈশর ব্রহ্মার পূর্বাদি মুখ চতুষ্ট্য হইতে যথাক্রমে ঋক্ যক্ত্রং লাম অথব্র এই চারি বেদ আবিস্ত্ত হয়, আর তিনি হোতার কর্ম যে শাস্ত্র অর্থাৎ অপ্রেগীত মৃদ্ধ জোৱে এবং স্থাম্ম্যুর কর্মা যে ইক্যা ও উল্গাতার কর্মা যে স্ততিস্থান অর্থাৎ সঙ্গীত ব্রহণ ও জোরেথিকত ঋক্ সমুদার, অপর ব্রহ্মার কর্মা যে প্রায়শ্চিত ইত্যাদি কর্মণ্ড যথাক্রমে বিধাদ করিলেন ॥ ২২ ॥

অপর আরুর্বেদ, ধসুর্বেদ, গান্ধরিবেদ, এবং ছাপত্যবেদ অর্থাৎ বিশ্বকর্ম পাত্র ইত্যাদি উপবেদ স্কান্ত আপনার প্রাদিন্ধ ইইছে এইজিনে স্ফান করিলেন। অপর পঞ্চন বেদ যে ইতিহাসও পুরাণ, এ সুক্রেনের সৃষ্টি ভাঁহাদ্ন সমন্ত নদম ইইছে হইল । ২০। বোড়শু কুথো পূর্ববিজ্ঞান পুরীষ্য মিষ্ট তাবধ। আপ্তোর্যামাতিরাত্রোচ বাজপেরং সগোসবং ॥ ২৪ বিদ্যা দানং তপঃ সত্যং ধর্ম স্যেতি পদানিচ। আশ্রমাংশ্চ ব্যাসংখ্যমস্ক্রন্থ সহ র্তিভিঃ ॥ ২৫ সাবিত্রং প্রাজাপত্যঞ্জ আক্ষাঞ্য রহত্তথা। বার্তা সঞ্চরশালীন শিলোঞ্ছ ইতি বৈ গৃহে ॥ ২৬ ॥ বৈথানসাবালিখিল্যোড় স্বরাঃ ফেণপাবনে। স্থানে কুটীচকঃ পূর্বং বজ্বোদো হংসনিজ্ঞিয়ো ॥২৭

अध्वयामी।

কর্মতন্ত্র ক্রমনাহ বোড়ভাক্থাবিতি প্রীধীচন্ত্রনং অগ্নিষ্ট্র অগ্নিষ্টোমং ॥ ২৪ ॥

বিদ্যেতি শৌচং ক্ষেত্ৰজ্ঞসোধরজ্ঞানাৰিশুদ্ধিঃ পরমা মতেতি স্বতেঃ। দানমিতি দরা ভূতাভর প্রদানত কলাং নাইন্তি বোড়শীমিতি বচনাৎ এবঞ্চ তপঃ শৌচং দয়া সত্যমিতি পাদাঃ ক্বতে কৃতা ইতি প্রথমকক্ষোক্তেরবিরোধঃ॥ ২৫॥

সাবিত্রং ব্রহ্মচর্য্যং উপনয়নাদারভ্য গারত্তীমধীয়ানস্য ত্রিরাত্রং প্রাঞ্জাপত্যং ব্রতাক্তাচরতঃ সহংসরং ব্রাহ্মং বেদগ্রহণান্তং বৃহ-দৈটিকং বার্ত্তা অনিবিদ্ধ ক্লব্যাদি বৃদ্ধিঃ সঞ্চয়ো যাজনাদি বৃদ্ধিঃ শালীনং অ্লযাচিত বৃদ্ধিঃ শিলোভঃ পতিত কণিশকণ বৃদ্ধিঃ এক বচনমার্বং ইত্যেতা গৃহে বৃত্তর ইতি। যহা শিলোভ ইতি হলৈক্যে সগুমী এবং বৃদ্ধিভেদে সতি গৃহে স্থিতা ভবস্তীতার্থঃ ॥ ২৬ ॥ বনে স্থিতাশচ্ছারঃ তত্র বৈধানসা অক্টপচ্য বৃত্তরঃ । বালিখিল্যা নবেহেরে লব্ধে পূর্ব্ধ সঞ্চিতার ত্যাগিনঃ । উত্সুদ্ধঃ প্রাতক্রখার

ক্রমসন্দর্ভঃ।

সাবিত্রমিত্যাদয়ো ব্রজচর্য্যভেদাঃ বার্শ্বেভি সর্বোহপি বন্ধোবিভাষ্ট্রক্বভবতীতি স্থায়াৎ। উকারোক্রস্বীর্থপুত ইতি বং ॥২৬ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥

ঞীবিখনাপ চক্রবন্তী।

কর্মতন্ত্রস্টিমার বোড়ণ্ডাক্থাবিতি। পুরীষী চয়নং অগ্নিষ্ট্রৎ অগ্নিষ্টোম: এতে দক্ষিণবক্তাদিত্যেবং ক্রম: সর্বাত্ত এইব্য: ॥ ২৪॥ বিদ্যোতি শৌচং ক্ষেত্রজ্ঞস্থেরজ্ঞানাদ্বিদ্ধি: পরমা মতেতি স্বতে:। দানমিতি দরাভ্তাভর্প্রদানস্ত কলাং নাইস্তি বোড়শী মিতি বচনাৎ। এবং তপ: শৌচং দয়া স্ত্যমিতি পাদা: ক্বতে ক্বতা ইতি প্রথমক্ষাক্ষেরবিরোধ:॥ ২৫॥

উপনমনাদারত্য গায়ত্রীমধীয়ানস্থ ত্রিরাত্রং ব্যাপ্য ব্রদ্ধতি হার্ক্তর্যাং সাবিত্রং। ব্রতাষ্ট্রাচরতঃ সংবংসরপর্যান্তঃ প্রাজ্ঞাপত্যং। বেদ গ্রহণপর্যান্তঃ ব্রাক্ষং। মরণ পর্যান্তঃ বৃহদিতি চতুর্বিধিং ব্রক্ষচর্যাঃ। বার্তা অনিবিদ্ধক্ষ্যাদির্তিঃ সঞ্চরো যাজনাদির্তিঃ শালীনম্যাচিতর্ত্তিঃ শিলোধনং পতিতক্ণিশকণর্তিঃ শিলোধ ইতি বল্বৈক্যং উকারোইক্ হ্রম্ব দীর্ষ প্লুত ইতিবং। গৃহে ইতি জীবিকাচাত্র্বিধ্যাৎ গার্হস্থামপি চত্র্বিধ্যতির্থঃ ॥ ২৬॥

বৈধানসা অক্কটপচার্তর:। বালিথিলা। নবেছলে লকে পূর্বসঞ্জারত্যাগিন:। ঔডুছরা: প্রাতক্ষার বাং দিশং প্রথমং

পরস্তু ষোড়শী ও উক্থ অর্থাৎ যজ্ঞাঙ্গ প্রধান কর্ম বিশেষ এবং পুরীষী অর্থাৎ অগ্নিচয়ন ও অগ্নি-টোন, তথা আপ্রোর্যান এবং অতিরাত্র তথা বাজপেয় ও গোসব এই সকল যজ্ঞ কর্ম তাঁহার পূর্ব্ব দিকের মুখ হইতে উৎপন্ন হইল॥ ২৪॥

অপর তিনি বিদ্যা অর্থাৎ শৌচ, দান, (দরা) এবং তপস্থা ও সত্য, ধর্মের এই চারিটা পদ যথা-ক্রমে আশ্রম সকল রন্তির সহিত হজন করিলেন॥২৫॥

আর সাবিত্র (ব্রহ্মচর্য্য) প্রাক্তাপত্য (উপনয়নারখি গায়ত্রী অধ্যয়ন কারির ত্রিরাত্র ব্রত) ব্রাহ্ম (ব্রতাচরণ শীলের সম্বৎসর মধ্যে বেদ গ্রহণ) রহৎ (নৈষ্ঠিক ব্রহ্মচর্য্য) অপর বার্ত্তা (অনিষিদ্ধ ক্ষ্যাদি রুত্তি) সঞ্চয় (যাজনাদি রুত্তি) শালীন (অ্যাচিত রুত্তি) এবং শীলোঞ্ছ (পৃত্তিত কণিকাশন রুতি) ইত্যাদি ভিন্ন ভিন্ন রুত্তিও তাঁহা হইতে উৎপন্ন হইল ॥ ২৬ ॥

অপিচ চারি প্রকার বানপ্রস্থার্থন, যথা বৈধানস (অক্টপচ্যর্ত্তি) বালিখিল্য (মৃতন অন প্রাপ্ত হইলে পূর্বে সঞ্চিত অন ত্যাগী) উভুমর (প্রাতঃ কালে গাতোখান করিয়া যে দিকে দৃষ্টিপাত হয় সেই আৰীকিকী অয়ীবার্ত্তা দশুনীভিন্ত থৈবচ। এবং ব্যাহ্যতয়শ্চাসন্ প্রণবোহস্য দহুত: ॥ ২৮॥
তভোকিগানীলোমভ্যো গারত্তী চ ঘটো বিভা:। ত্রিউ ন্মাংসাৎ লু তোমুক ব্ জগত্যমু: প্রজাপতে:।
মজ্জায়া: পশু ক্তিক্রৎপনা বৃহতী প্রাণতোহভবৎ ॥ ২৯॥
স্পর্শস্ত ভারতজীব: ঘরো দেহ উদাহত:। উন্থাণমিন্দ্রিয়াণ্যাহ্রস্ত ছাবলমান্ত্রন: ।

श्रीधवयामी।

যাং দিশং প্রথমং পশ্রম্ভি তত আহতেঃ কলাদিভি জীবিস্তঃ। কেণপাঃ স্বরং পতিতৈঃ ফলাদিভি জীবিস্তঃ। কুটীচকঃ স্বাশ্রম ধর্ম প্রধানঃ। বছেবাদঃ কর্মোপসর্জনীক্বত্য জ্ঞানাভ্যাস প্রধানঃ। হংসো জ্ঞানাভ্যাসনিঠঃ নিক্রিয়ঃ প্রাপ্ততম্বঃ এতেচ সর্কো যথোত্তরং শ্রেষ্ঠাঃ॥২৭॥

ন্তারাদীনাং ক্রমেণ পূর্বাদি ক্রমেণোৎপত্তিমাহ আরীক্ষিকীতি আরীক্ষিক্যাদ্যা মোক্ষ ধর্ম কামার্থ বিদ্যা:। ব্যান্তর: ভূত্ব: ব্রতি ব্যক্তা ন্তিল: সমস্তা ইতি বহা মহ ইতি চতুর্থী তথাচ শ্রুতি: ভূত্ব: ব্যরিতি বাতা দিলে। ব্যান্তর:। তাসামূহ কৈতাং চতুর্থীমাহাচমস্য: প্রবেদরতে মহ ইতীতি দৃহত: ভ্রদমাক্ষাশাৎ ॥ ২৮ ॥

সুতঃ সায়্তঃ অফুইুপ্ সাবান্ ইতি ঐতেঃ । ২৯॥

মহাকরে ব্রহ্মা শব্দ্রহারকরপোহভবদিত্যকং। তদেব দর্শন্বর্ণানামুংপত্তিমাহ স্পর্ণ ইতি সার্ক্ষেন। স্পর্ণঃ কাদিবর্গ পঞ্চকং

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

পশুস্তি তত আহুতৈ: ফলাদিভিন্তী বস্তু: ফেণণা: স্বরং পতিতৈ: ফলাদিভিন্তী বস্তু:। বনে ইতি বৃত্তিভেদেন নামভেদাদান প্রস্থাপ্রমোপি চতুর্বিধ:। তার কুটাচক: স্বাপ্রমকর্মপ্রধান:। বহেবাদ: কর্ম্মোপনর্জনীক্বত্য জ্ঞানপ্রধান: হংসো জ্ঞানাভাগ স নিঠ: নিজিম: প্রাপ্ততম: ইতি যথোত্তরং প্রেষ্ঠা: ॥ ২৭॥

শ্বাদীনাং পূর্বাদিক্রনেণেৎপত্তিমাহ। আহীক্ষিক্যাদ্যা মোক্ষধর্মকামার্থবিদ্যা ভূতুর্ব: স্বরিতি ব্যক্তান্তিত্র: সমন্তা চতুর্বী-ত্যেবং চতত্রো ব্যাহ্নতর:। বর্থাহার্যশারন: এবং ব্যাহ্নতর: প্রোক্তা ব্যক্তা: সমন্তা অপি হুৎস্বত: হুদয়াকাশাৎ দহুত ইতি পাঠে স এবার্থ:॥ ২৮॥

ছন্দনামুৎপত্তিমাহ তভেতি। সুতঃ সায়তঃ সর্কালাছাদক নাড়ীত ইত্যর্থঃ। অমুষ্টুপ্ সাবা ইতি শ্রুতেঃ ॥ ২৯ ॥ বর্ণানামুৎপত্তিমাহ স্পর্শ ইতি সার্কেন। কাদিবর্গপঞ্চকং স্পর্শঃ স্বরো অকারাদিঃ। উল্লাণঃ শ্বস্থ চতুকং। অস্তলঃ

দিক্ হইতে আছত ফলাদি দারা জীবিকাকরী) ফেণপ অর্থাৎ স্বয়ং পতিত ফলাদি দারা জীবিকা কারী, অপর সম্যাসির ধর্ম চারি প্রকার, যথা কুটীচক অর্থাৎ আপনার আশ্রম ধর্মে প্রধান, বহ্বোদ অর্থাৎ কর্ম অপ্রধান বিবেচনা করিয়া জ্ঞানাভ্যাসে প্রধান) হংস (জ্ঞানাভ্যাস নিষ্ঠ) এবং নিজ্ঞিয় (প্রাপ্ত তত্ত্ব) এই সকল যথোত্তর শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ যে যে পরবন্তী তাহা তাহা প্রধান। এ সমস্তত্ত তাঁহা হইতেই স্ফ ইইল ॥ ২৭॥

অপর আখীক্ষিকী, অর্থাৎ তর্কবিদ্যা, ত্রয়ীবার্তা, অর্থাৎ বেদবিদ্যা এবং দশুনীতি, অর্থাৎ অর্থ শাস্ত্র, তথা তিন ব্যাহ্যতি ভূ ভূবিঃ স্বঃ এবং প্রণব, ইত্যাদি তাঁহার হুদরাকাশ হইতে উৎপন্ন হইল ॥ ২৮॥

পরস্ত সেই বিভূর লোম সকল হইতে উঞ্জিক্, ত্বক্ হইতে গায়ত্রী, মাংস হইতে ত্রিউ প্, স্নায়ুঃ
অধাৎ সর্বাদাছাদক নাড়ী বিশেষ হইতে অসুষ্টুপ্, অন্থি হইতে জগতী, মঞ্চা হইতে বহতী প্রভৃতি
ছন্দ সকল উৎপন্ন হইল ॥ ২৯ ॥

बहैक्रार्भ छोहात कीन, न्मार्भ मरक्क वर्ग अर्थार ककात्रामि शक्कवर्भ धनः छोहात एनह यत वर्ग अर्थार कका-

সরাঃ দুপুবিহারেণ ভবস্তিমা প্রজ্ঞাপতে: ॥ ৩০ ॥

শব্দব্যক্ষাত্মনন্তব্য ব্যক্তাব্যক্তাত্মনঃ পরঃ। ব্রক্ষাবভাতি বিততো নানাশক্ত্যুপর্ংহিতঃ ॥ ৩১॥
ততোহপরামুপাদায় স সর্গায় মনোদধে ॥ ৩২॥

শ্বাধীণাং ভূরি বীর্য্যাণামপি দর্গমবিস্তৃতং। জ্ঞান্ধা তদ্ধৃদয়ে ভূয়ন্চিন্তয়ামাদ কৌরব।
তাহো অনুত্যেতশ্মে ব্যাপৃতদ্যাপি নিত্যদা। নছেধন্তে প্রজা নূনং দৈবমত্র বিঘাতকং ॥ ৩৩॥

अभवताभी।

স্বর: অকারাদি উন্মাণং শ ব স হ চলুছং। অক্তথা: য র ল বাঃ।। সংগ্রস্কা: বড়জাদয়ঃ। বিহারেণ ক্রীড়য়া ॥ ৩০ ॥

অতএব শব্দ তমুম্বাধুদ্ধণঃ প্রমেশ্বো নিতাং প্রকাশতে ইত্যাহ ব্যক্তা বৈধরী অব্যক্তঃ প্রশ্ব স্তদাম্বন স্তস্য ব্রহ্মণঃ প্রমে খরঃ আবিষ্ঠাতি কীদৃশঃ ব্রহ্ম পবিপূর্ণঃ। ত্রাব্যক্তাম্মনো ব্রহ্মরপোহ্বিততো হ্বভাতি। ব্যক্তাম্মনো নানাশক্সুপর্ংহিত ইক্সাদি রূপোহ্বভাতি॥ ৩১ ॥

যা পূর্ব্বং বিস্টা সতী নীহারং তমোহভবৎ তভোহপরাং অনিবিদ্ধ কামাসক্তাং তন্ত্বং শক্তবন্ধ তন্ত্বন্ত সদাক্ত্যের ॥ ৩২ ॥ তব্যস্তর গ্রহণে কারণমাহ ঋষীণামিত্যাদিনা ॥ ৩০ ॥

ক্রমগন্ধ :।

শব্দ ব্রন্ধেতি। ব্যক্তাব্যক্তো বৈথরীপ্রণবৌঃ তত্তদাত্মকাৎ সর্বন্দাদপি বেদান্তক্ত প্রমেশ্বর এবাভাতি। স এব চ ব্রহ্ম পরিপূর্ণরূপ:। তত্ত্ব হেতুঃ স্বরূপতোবিততঃ শক্তিশ্চ নানেতি॥৩১॥৩২॥৩৩॥৩৪॥৩৫॥৩৮॥৩৮॥

बैवियनाशहक्तवर्धी।

यत्रमवाः मश्चवाः वज्ञानत्रः विशादाण क्लीज्रा ॥ ७० ॥

পরমেশ্বরক্রৈতাব ত্রন্ধণন্ডেজ্বিত্বমধিকমিত্যাহ শব্দ্রন্ধ বেদ ন্তব্যয়এব আত্মা দেহো যক্ত তত্ত্ব। যতো ব্যক্তা বৈথরী অব্যক্তঃ প্রণবন্তদাত্মনন্তক্ত ত্রন্ধণ উপাক্তত্বেন পরঃ পরমেশ্বরঃ আভাতি সমাক্ ক্রেতি। য এব নির্কিশেব শুদ্ধজানগম্যত্বেন ত্রন্ধ। স বিশেষ শুদ্ধজানগম্যত্বেন নানাশক্ত্যুপরুংহিতো ভগবানিত্যতন্ত্য্য কন্যাহুগমন জন্মাণিন্যং নান্তীতি সাধিতং॥ ৩১॥

যা পূর্কং বিস্টো সতী নীহারং তমোহতবৎ ততোহপরামনিবিদ্ধকামাসক্তাং তহুং শব্দ বন্ধ তহুন্ত সদা অন্তোব ॥ ৩২ ॥ নমু তেন পূর্ক্স্টা মরীচ্যাদয়এব বহুতরাঃ প্রকা: স্বল্জীতি সর্গে তম্ভালং পুনঃ প্রয়েছেনতাত আহে ঋষীণামিতি ॥ ৩৩ ॥

রাদি বিশ্ব বিশিয়া বিখ্যাত হইল। আর তাঁহার ইচ্দিরে সকল উচ্মবর্ণ শ য স হ এবং তাঁহার বল, অভাস্থ বিশ্যার ল ব হইল। অপর তাঁহার কীড়ো হইতে বড়জ প্রভৃতি সপ্তার জদালি ॥ ৩০ ॥

অপর সেই ব্রহ্মা শব্দমূর্ত্তি এবং ব্যক্ত অর্থাৎ বৈধরী নামিকা বাক্যরূপা ভাষা ও অব্যক্ত অর্থাৎ প্রণব এই উভয়াত্মক, অতএব ঐ প্রণব হইতে পরিপূর্ণ স্বরূপ পরমেশ্বর নিত্যই আবিস্থৃতি হয়েন অর্থাৎ উাহার অব্যক্ত মূর্ত্তি হইতে নানা শক্তি ইক্সাদি দেবতা প্রকাশিত হয়েন। ৩১॥

সে যাহা হউক, ঐ ব্রহ্মা পূর্বের যে মূর্তি ধারণ করিয়াছিলেন তাহা নীহার ময় তামো হওরাতে তদ্ধিন অন্য একটা মূর্তি গ্রহণ করেন, ঐ মূর্তিতে কামাদ্যাসন্তি নিষিত্ধ ছিল না, তদনস্তর তিনি সৃষ্টি বিষয়ে মনোনিবেশ করিলেন॥ ৩২॥

ত্রনার দেহান্তর প্রহণের কারণ এই, তিনি দেখিলেন মহাবীর্যাণালি ঋবিগণের স্টিও বিস্তৃত হইল না, অতএব হে কোরব্য! তিনি বিসায় প্রকাশ পূর্বক মনোমধ্যে চিন্তা করিলেন, অহা। একি আশ্চর্যা! আমি সর্বতে ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছি, তথাচ আমার প্রজা নিতা র্দিশীল হইতেছে না, এখন আমার নিশ্চয় বোধ হইল এ বিষয়ে দৈবই প্রতিকৃল আছেন। ৩০।

এবং যুক্তকুতন্তস্য দৈৰঞাবেকতন্ত্ৰদা। কদ্য ক্লপমৃত্দেখা যথ কায়মভিচক্তে। ভাজ্যাং ক্লপৰিজাগাজ্যাং মিশুমাং সম্পদ্যত ॥ ৩৪ ॥

যস্ত তত্র পুমান্ সোভূত্মতু: বারস্ত্র: বরাট্। স্ত্রী যাসীচ্ছতরপাধ্যা মহিষ্যস্য মহাদান: ॥ ৩৫ ॥ তদা মিপুনবর্শ্বেদ প্রজাভেষাং বভূমিরে ॥ ৩৬ ॥

সচাপি শতরূপারাং পঞ্চাপত্যান্যজীজন্ৎ। প্রিয়ত্রভোক্তানপার্গে তিব্রঃ কন্যান্চ ভারত। আকৃতি র্দেবছুতিশ্চ প্রসৃতিরিতি সক্তম। আকৃতিং ক্লচয়ে প্রাদাৎ কর্দনায় ভূ নধ্যনাং ॥ ৩৭ ॥ দক্ষায়াদাৎ প্রসূতিক যত আপুরিতং জগৎ ॥ ৩৮ ॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে, পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়ক্ষকে বিছ্র-মৈত্রেয় সম্বাদে স্প্রিবর্ণনং দাদশোহধ্যায়ঃ ॥ * ॥ ১২ ॥ * ॥

बिधरकामी

যুক্তকৃতঃ বণোচিতং কুৰ্মতঃ। অতএব কস্য বন্ধণঃ ইবং বিধাভূতং ইত্যাশ্চৰ্য্যাৎ কাৰ্মদ্যাণি অভিচক্ষতে ॥ ৩৪ ॥ বা স্ত্ৰী সাহস্য মহিষ্যাসীৎ ॥ ৩৫ ॥

এধাংবভূবিরে বৃদ্ধিং প্রাপ্তা: ॥ ৩৬ ॥

তদেবাহ স চাপীতি ॥ ৩৭ ॥ যতঃ সাসাং সম্ভতিভিঃ ॥ ৩৮ ॥

॥ + ॥ ইভি তৃতীরে ছালশ:॥ + ॥

क्रममन्द्रः।

🛮 🔹 🖟 ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্তকে শ্রীকীবগোশামিকত ক্রমসন্দর্ভক বাদশোহধ্যার: সমাধ্য: ॥ 🛊 ॥

क्षिविश्वनाथठकवर्छी।

ৰুক্তকৃতঃ যথোচিতং কুৰ্বতঃ। দৈবং স্বীর দিউমেবাবেক্ষমাণ্ড কন্ত ক্রন্ধণঃ দ্ধপং একমেব দিখা একং শাশ্রযুক্তমপরং কুচন্বযুক্ত মিতি বিবিধমভূৎ। যত্তরমণি কারং ক্সল্ভিম্বাৎ কারশক্ষাতাং নড়াদিশাৎ রন মলোপশ্লাক্সঃ॥ ৩৪। ৩৫। ৩৬॥

मह चात्रक्**रः ॥ ७**९ ॥

যতঃ যাসাং সম্ভতিভিঃ॥ ০৮॥

n + # देखि त्रातार्थनिश्चार दर्बिन्तार ककटारुकार । कृष्ठीत्व वानत्नारुशावः तक्ष्यः तक्षः तक्षः नकार ॥ + ॥

এইরপ চিন্তা করিরা যাহা কর্ত্তব্য তাহাই করিলেন এবং ঐ দৈবের প্রতিও দৃষ্টি রাখিলেন। ঐ প্রকার ভাবনা করিতে করিতে ত্রহ্মার ঐ মূর্ত্তি আপনা হইতে অত্যাশ্চর্য্য রূপে ছই ভাগে বিভক্ত হইল, তাহাতেই অ্দ্যাপি লোকে ভাঁহার মূর্ত্তিকে কার বলিয়া থাকে, সে বাহা হউক ঐ ছই অংশ ছারা তিনি মিপুন অর্থাৎ ত্রী পুরুষ হইলেন॥ ৩৪॥

তশ্বধ্যে যিনি পুরুষ তিনি স্বায়স্তুব মনু হইলেন, স্বার যিনি স্ত্রী তাঁহার নাম শতরূপা হইল, এ ত্রী মহাত্মা মনুর মহিবী হইলেন ॥ ৩৫ ॥

ভদবিধি নিধুন অর্থাৎ গ্রী পুরুষের পরস্পার সহযোগ যারা প্রজা সকল র্ছি প্রাপ্ত ইইতে লাগিল ॥৩৬ হে সাধো ! উক্ত মন্থ শতরূপা নাল্লী মহিবীতে পাঁচটা অপত্য উৎপাদন করেন, তন্মধ্যে পুত্র ছই এবং কন্যা তিন । পুত্রময়ের নাম প্রিয়ন্ত্রত এবং উত্তানপাদ। ক্যান্তরের নাম আকৃতি, দেবহুতি এবং প্রসৃতি। মন্থ আকৃতিকে ক্লচি মুনিকে প্রদান করেন এবং মধ্যমা দেবহুতির কর্দন ঋষির সহিত বিবাহ দৈন ॥ ৩৭ ॥

শার প্রস্তিকে ক্ষ প্রজাপতির হতে সম্প্রদান করেন, ইহার সন্তানেই লগৎ পরিপূর্ণ হয় ॥ ৩৮ ॥

॥ ॥ ইতি তৃতীয়ে ঘাদশ ॥ ॥ ॥

প্ৰীপ্তক উবাচ ॥

নিশ্ম্য বাচং বদতো মুনেঃ পুণ্যতমাং নৃপ। ভূমঃ পঞ্জ কোররোয়ে বাহুদৌৰক্পাদৃতঃ॥ > ॥ জ্ঞীবিচুর উবাচ ॥

স বৈ স্বায়স্ত্ৰং সভাট্ প্ৰিয়ং পুজঃ স্বয়স্ত্ৰং। প্ৰতিসভ্য প্ৰিয়াং পদ্মীং কিং চকার ততো মুনে ॥ ২ চরিতং তস্য রাজর্বেরাদিরাজস্য সভ্য। জহি মে প্রদাধানায় বিষক্সেনাপ্রয়ো হসে ॥ ৩ ॥ প্রতস্য পুংসাং স্টরিপ্রমস্য নম্বশ্পনা স্রিভিন্নীড়িতোহর্বং। তত্তকা নামুপ্রবণং মুকুন্দপাদারবিন্দং হৃদয়ের যেবাং ॥ ৪ ॥

শীশুক উবাচ ॥

अभवनाती।

আরোদশে সিস্কারাং মনোরাকমিকাপ্লতাং। ধরামুদ্ধর্ মৃত্তাৎ ক্রোড়াদৈতোক্রসদনং ॥ ১ । স্বয়ন্তবং পূত্রং তদেহাংশদাৎ ॥ ২ ॥

विचक्राता इतिरत्ना अस्त रहा नः ॥ ७॥

শততত চরিতং প্রোতব্যমিত্যাহ। স্থচিরং থামো বলিন্ তত পুংসাং প্রতত অর্মেবার্থ ঈড়িত: ততঃ। নতু যৎ মুকুশ-পালারবিশ্বং বেবাং বেবাং হৃদরেবত্তি তেবাং তেবাং গুণাত্তপ্রবণং ॥ ৪ ॥

ক্রমসন্তঃ।

আদৃতি রস্তাতীত্যাদৃতঃ সাদর ইত্যর্থ: অর্শ আদিমাদচ্ ॥ ১।২।৩।৪॥

अवित्रनाथठकवर्छी।

অব্যোদলে মনোবাঁচা খ্যায়তো ব্ৰহণো নস:। উভূৰ গাং গতঃ ক্ৰোড়ো গামুদ্ধে বিলৈঃ ছতঃ ॥ • ॥

আতৃতিরভাতীত্যর্শ আদ্ত: নাদর ইত্যর্থ: । यदा কথবৈর কর্ত্ত্যা মামসৌ বিছর: শৃণোড়। মন্মাধুর্গমেতৎ কর্ত্তা-বাদাৎ সার্থকং ভববিত্যাদৃত: । বহা কথারামাদৃত: বস্কৃতি: শ্রোত্তিক্ত্যের্থাৎ ॥ ১ । ২ । ৩ ॥

বৈষ্ণবক্ষাপ্রবণং বিনা বিছ্বামপি বিদ্যা বিষ্ণা ভবতীত্যাহ। স্কৃতিরং প্রমো বিদ্যা অক্সুখাৎ প্রতন্য পারাদ্যধারনস্যেত্তার্থ:। স্পর্মেবার্থ: প্রায়েশ্রন । ইড়িতঃ স্বতঃ ভদন্যন্ত নিশিত ইত্যর্থ:। সচ কঃ বেবাং বেবাং অদ্যের কৃষ্ণপাদপদ্মং বর্ততে তেবাং তেবাং গুণাম্প্রবণকীর্তনাদীতার্থ:॥ ৪ ॥

ত্রোদশ অধ্যায়ে ব্রহ্মার আদেশামুসালে বায়স্কুব মতু লোক স্কুনার্থ প্রস্ত ভইলে বরাহ দেব কর্ত্ব জলমগ্র ধরার উদ্ধার এবং আদিদৈত্য হিরণ্যাকের বধ সূচনা । • ॥

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্! কুরুশ্রেষ্ঠ বিছুর মৈত্রেয় মুনির প্রমুখাৎ এই সকল পুণ্যতমা কথা প্রবণ করিয়া ভগবান্ বহুদেবের কথায় অসুরাগ প্রকাশ করত পুনর্বার জিজ্ঞানা করিলেন ॥ ১ ॥

সুনে! এক্ষার প্রিয়তম পুক্র স্ঞাই ক্ষায়স্কৃব মনু, প্রিয়পদ্ধী লাভ করিয়া তাহার পরে কি

হে সতম! সেই রাজ বি আদিরাজ এবং তিনি ভগবাদ্ হরির আশিত ছিলেন, তাঁহার বিশুদ্ধ চরিত্র বর্ণন করুন, আমি শ্রেদান্থিত হইয়া শ্রেণ করিব ॥ ৩॥

হে মুনে! যাঁহাদের হৃদয় মধ্যে ভগবান মুকুন্দের পদারবিন্দ দেদীপ্যমান, ভাঁহাদের যে ওণামুবাদ আবণ, তাহাই পুরুষ সকলের চিরকালের আনোপার্কিত প্রবণাদির দর্ম এবং পতিতের। তাহারই যথার্থ রূপে তব করিয়া থাকেন ॥ ৪ ॥

ইতি ক্রবাণং বিচুন্নং বিনীতং সহত্রশীক করণোপধানং। প্রশ্নতিরোমা ভগবং ক্যারাংগুলীয়মানো স্নিরভাচত ।

বদা বভার্যালার্থং জাতঃ বারস্কুবো নসু:। প্রাঞ্জনিঃ প্রণতদেদং বেদগর্মভারত ॥ ৫ ॥ বনেকঃ নর্বভূতানাং জন্মস্বভূতিদঃ পিতা। তথাপি নঃ প্রজানাং তে শুজারা কেনবা ভবেৎ ॥ ৬ তবিধেহি নমস্বভাং কর্মস্বীড্যাত্ম শক্তিবু। বৎকুদ্বেহ যদো বিষ্ণমূত্রচ ভবেদগতিঃ ॥ ৭ ॥ প্রীত্রজোবাচ ॥

श्रीश्रद्धार्थी।

নহবেশীর্বা প্রীকৃষ্ণতভ চরণাবুশধীরেতে বস্থিন। প্রীকৃষ্ণঃ প্রীত্যা যভোৎসকে চরণৌ প্রানাররতীত্যর্বঃ। তমভ্যচ্ট অভ্যভারত প্রশীরমানঃ তেন প্রবর্তামানঃ ॥ ৫॥

ছমেৰৈকঃ পিতা সৰ্ব্বোং। বতো জন্মকং। বৃদ্ধিপ্ৰায়ঃ পোৰকণ্ঠ ছমেৰ অভত্তৰ বদ্যপি অক্তাপেকা নাতি। তথাপ্যসাকং তে ওপ্ৰাৰা কেন কৰ্মণা ভবেত্তৰিধেৰীভূাত্তৰেণাৰয়ঃ ॥ ৬ ॥

হে ঈভ্য স্বাত্মশক্তিব স্মান্ত্ৰেয় কৰ্মস্থ মধ্যের কেন কর্মণা ভবেত্তবিধেহি ইনং কর্ত্তবামিতি কথর। বং কৃত্ব বিশ্বন কর্মণা ভবেত্তবিধেহি ইনং কর্ত্তবামিতি কথর। বং কৃত্ব বিশ্বন কর্মতঃ ॥ ৭ ॥

क्रमन्त्रकं:।

সহলাণামনস্তমংখ্যানাং তৎপ্রাহ্র্ডাবানাং শীর্ক: শ্রেষ্ঠরপক্ত জীক্তক্স্য চরণোপ্ধানমিতি মহাভারতে প্রীত্সবত তল্বভারন প্রসিদ্ধঃ। শীর্ক্স শীর্ক: ছলসীতি ভগবান্ প্রণিনিঃ ৪ ৪ ৬ ৪

বং ক্রন্থেতাত্র স্থিতস্যেত্যধ্যাহার্যাং । ৭।। ৮।

विविधनाथठकवर्छी ।

সহস্মীর্বা বিজ্বশন্ধা নির্ভার্থং তদপূতে শ্বত সহস্মীর্ববিগ্রহঃ আক্রমভত চরণরোক্রপধানমুপ্রইর্পং মহাভারতে বিজ্বগৃত্ত ভোলনে ভগবাংভার্ৎসকে চরণৌ নিধার স্থবাপেতি প্রসিদ্ধে: । প্রশীর্মানঃ তেন প্রবর্তাধানঃ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥

হে ঈভা আত্মণক্তিবু অপজ্বেত্ব কর্মস্থ মধ্যে কেন কর্মণা তে ওখাবা ভবেত্তবিখেছি আজাপরেতার্থঃ। বং কৃষা বিতস্য মমেতাবাহার্যাং ॥ ৭ ॥

শুক্দেব কহিলেন ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ প্রীতি পূর্বক যে বিছুরের ক্রোড়ে মাপনার চরণছয় প্রদারিত করিতেন, সেই বিছুর বিনীত হইয়া ঐ রূপ কহিলে মৈত্রেয় মুনি আনন্দে পুলকিত হইয়া কহিতে লাগিলেন য়

আহে বিচুর ! স্বারস্তুব সমু আপনার ভার্যার সহিত উৎপন্ন হইয়া প্রণাম পূর্বক ক্বতাঞ্চলিপুটে জন্মাকে কহিলেন ॥ ৫॥

হে ব্রহ্মন্। আপনি এই সমন্ত প্রাণির পিতা, যে হেতু কম দিয়াছেন এবং পোষণ করিতেছেন, অতএব যদিও আপনকার অন্যাপেকা নাই তথাপি আমরা আপনকার সন্তান, আপনকার শুঞ্জয়। করাই আমাদিপের কর্তব্য, কোন্ কর্ম বারা আপনকার শুশুষা করিব, আজ্ঞা করুন ॥ ৬॥

হে জজ। জামাদের শক্তি যাধ্য কর্ম সকলের মধ্যে কোন্ কর্ম বারা আপনকার ভঞাষা হইতে পারে ? প্রভো! আপনাকে নমকার করি কহিতে আজা হউক, হে একান্। ঐ কর্ম করিলে আমাদের ইহু লোকে যশঃ এবং পরলোকে সময়তি হইবে ॥ ৭ ॥

প্রতিস্তভ্যমহং তাত স্বন্তিতাবাং কিন্ত্রীশর। যদির্বাদীকেন হবা শাধি মেত্যাম্মনার্পিতং ॥ ৮॥ এতাবত্যাত্মজৈবীর কার্যাহ্পচিতি প্রর্কা। শক্তাহ্পমেতৈ গৃঁছেত সাদরং শতমহস্তিরঃ ॥ ৯॥ সত্মস্যামপত্যানি সদৃশান্যাম্মনো গুণা:। উৎপাদ্য শাস ধর্মেণ গাং যজেঃ পুরুষং যক্ত ॥ ১০॥ পরং শুক্রাবাং মহং স্যাৎ প্রকার রক্ষণাম্প। ভগবাংস্তে প্রকাতর্ক্ ক্রীকেশোমুস্ব্যতি॥ ১১॥ যেবাং ন তৃষ্টো ভগবান্ যজ্জনিলো জনার্দনঃ। তেষাং প্রমো হুপার্থার বদান্যানাদৃতঃ স্বরং ॥১২

धिशतयामी।

বাং যুবাভ্যাং স্বস্তি ভদ্রং তাৎ ভূরাৎ বৎ যতঃ মা মাং শাধি অন্থশিক্ষরেতি আত্মনা স্বর্মেবার্শিতং নিবেদিতং জতঃ শ্রীতোত্মি॥৮
অপচিতিঃ পূজা গৃহত্ত ইতি আজেতি শেবঃ। সনকাদরো নকুর্বন্তি বন্ধং কিমিতি করিব্যাম ইত্যেবং ভূতো গতো মৎসন্নো
বেজাঃ॥ ৯॥

গাং শাস শাধি পালরেত্যর্ব:। পুরুবং হরিং ॥ ১০ ॥ প্রজাপালকুস্য তে ডুষ্টো ভবিব্যতি ॥ ১১ ॥

यक्कणिकः यक्कमूर्तिः অগগতঃ অর্থো বস্থাৎ কেবল শ্রমারৈবেত্যর্থা। বদ্বস্থাৎ আত্মৈর স্বরং নাদৃত। তদ্মির তুটে স্বার্থ দৈয়বা-সিন্ধো। সর্ব্বান্মত্বাচ্চ তস্য॥ ১২॥

क्रममन्धः।

মংসরোনাস্থ্যছেবং সচাবৈকাকিতরা ওর্কাজা কর্তুদকর্ত্ব সজাতীরের সংভ্রতীতি গতমংসরৈরিত্যজ্ঞং ॥ ৯। ১০। ১১ ॥ অপার্থায় অপার্থহোয়েতার্থ:। বদাঝানাদৃতঃ স্বরমিতি পরমাঝানারদেশ স্বত এবাঝানারদাং ॥ ১২ ॥ ১০ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবন্তী।

ভূত্যং প্রীত ইতি পত্যে লেতে ইতিবৎ সংপ্রদাসং। অতো বাং যুবাভ্যাং স্ত্রীপ্ংসাত্যামের স্বতিতাৎ। ধনতঃ মা মাং শাধি অনুশিক্ষর ইতি আত্মনা স্বয়মবার্পিতং বিশেষ্যপদায়ক্ত্যা অহ্তাম্পদ মমতাম্পদাদিকং সর্বাদের নিবেদিত্মিত্যর্থ:।।৮।।

অপচিতিঃ সেবা গৃহ্ছত আজেতি শেষঃ। সনকাদয়োন কুর্বন্তি বয়ং কিমিতাাজ্ঞাং কুর্ম ইত্যেৰভূতো গতো মৎসরো যেত্য ইতি তৈঃ।। ৯।।

গাং পৃথীং শাস শাধি পালয়েজ্যৰ্ব:।। ১০ ॥

মছং মম মাং শ্রীণয়িতুমিতি বা।। ১১।।

যটক বলন: অর্জন প্রবণকীর্ত্তনালৈয়েরেব লিক্সতে জ্ঞারতে ইতি স:। যালক্ষাদাক্ত্যেৰনাদৃতঃ পরমাত্মানাদরেণ স্বত এবাত্মাহনা দরাৎ তত্মিরতুঠে স্বার্থ সৈয়বাসিল্লে: ॥ ১২ ॥

সায়স্ত্র মৃত্র ঐ রূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া ত্রন্ধা স্নেহ প্রকাশ পূর্বক কহিলেন, হে তাত! হে কিতীশর! তোমাদের ছুই জনের মঙ্গল হউক, তোমরা অকপট চিত্তে স্বরং এই যে নিবেদন করিলে "আমাদিগকে উপদেশ দিউন" ইহাতে আমি তোমাদের প্রতি দান্তিশয় প্রীত হইলাম ॥ ৮॥

হে বীর! পিতার প্রতি পুত্রদিগের এই রূপ ভক্তি করা উচিত, পিতার আজ্ঞা পালন ও তাঁহার আর্চন, অপ্রমন্ত এবং নির্শ্বংসর হইয়া আদর পূর্ব্বক করিতে হয় । ৯॥

যাহা হউক, এক্ষণে তুমি আপনার এই পত্নীতে আত্ম সদৃশ গুণশালী অপত্য সকল উৎপাদন করিয়া ধর্মত এই পৃথিবী পালন করিতে প্রস্তুত হও এবং যজের দারা ভগবাৰ যজ্ঞপুরুবের আরাধনা কর॥ ১০

হে রাজন্! যদি তুমি উভমরূপে প্রজাপাদন করিতে পার, তাহাতেই আমার পরম ওজাবা হইবে, আর তোষাকে প্রজাপাদক দেখিলে ভগবান হ্বীকেশও তোমার প্রতি প্রসম হইবেন । ১১॥

বংশ। যজ দূর্ত্তি ভগবান্ জনার্দন যাহাদের প্রতি প্রশন্ত না হরেন ভাছাদের ক্রম বিকল, কেন না ভাহাদ্বা আত্মারই অনামন্ত করে, ফলতঃ ভগবান্ত্রি নকলের আত্ম অন্তর্গত নি হইলে ভাহাদের আর্থ সিত্ত হর্মা । ১২॥

এষত্তকৰাচ ৷

भारमरमञ्ज्ञानार वदी महा सम्बद्धित । भारतिकामुकामीहि श्रकाबार सम्राह्म श्राह्म ॥ २०॥ यरमाकः मर्क्कुष्ठामार वदी महा सम्बद्धित । भारति केवत्र सम्बद्धित सम्बद्धित । भारति केवत्र सम्बद्धित सम्बद्धित । भारति केवत्र सम्बद्धित । १८॥ स्मिरेमरकार केवाह ॥

े পর্মেটী ছপাং মধ্যে জ্বা সন্নামবেক্য গাং। ক্থমেনাং সমূলেন্য ইতি দধ্যে ধিয়া চিব্লং ॥ ১৫॥ ংক্তের মে ক্ষিতিবার্জিঃ সাব্যমানা রসাস্তা। অথাত্র কিনপুঠেন্নমন্ত্রাক্তিঃ দর্গবোজিকৈঃ ॥ ১৬॥

द्धिश्वचामी।

বর্ত্তের বর্ত্তিব্যে। হে অমীবস্থদন পাপনাশন অপুকানীরি, অত স্বাতব্যমিতি অনুকাং দেছি॥ ১৩ ৪
মহীতি চেৎ অত আহ বণোকঃ স্থানং সা মহী হে দেব অতা দেবাাঃ॥ ১৪ ॥
পূর্বাং পানে ক্তেপি পুনরকাও এব উত্তানামপাং মধ্যে সন্নাং অবসন্নাং নিম্নাং কথম্ছেফো উন্ধারিকামি॥ ১৫ ॥
চিন্তামেবাহ ক্ষতঃ সতঃ বার্তিঃ অতিঃ বসাং বসাতলং। উপরেশ সর্গনিবৃক্তিরকাডিঃ॥ ১৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

বলোক ইত্যাদিকং পালপ্রসঙ্গে ব্রহ্মকথাস্চনবদ্ বর্ত্তমানকরজবেতবরাহকণাস্চনং জ্রেরং। যথৈব সারস্ত্রপ্রসঙ্গে প্রাচেতসদক্ষণোহিত্র হিরণাক্ষরধরণা চাকুরকথাপি ভবিব্যতি। অত তুশ্যামতরাবিস্ত্ত ইতি তমালনীল ইতি বক্ষাতি। মহাস্ত্রসি
গর্ব্বোদকে ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

त्रमार গতে ভি তদৰকাশদেশপৰ্যাত্তং মধেত্যৰ্থ:। त्रमात्रा व्यक्ति महीविवत्रष्ठां ॥ ১৬ ॥

क्षिविधनाथ हक्कवडी ।

বর্ত্তে বর্তিব্যে স্থানং বসতিক্ষণং অস্থানীহি পরামৃশ। অমীবস্থান হে পাপনাশন । ১০ ।
নমু পূর্বপূর্বকল্পে মনবঃ কুত্র স প্রথা আসন্নিতি শান্তজ্ঞখাৎ স্থং জানাসি নবেতি চেৎ স্তাং জানাসোবেত্যাহ বলোক
ইতি ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

त्रभाः त्रभाज्यनाभनक्तिजः गट्डानिमजार्थः। त्रभाजनमा ज्विवत्रधाख्य ज्या मक्कनाष्ट्रभण्यः॥ ১७ ॥

মমু কহিলেন হে ভগবন্! হে পাপনাশন! আপনকার আদেশামূরপ আচরণ অবশুই করিব, আপনি অসুগ্রহ করিয়া প্রস্লাগণের এবং আমার নিমিত্ত কিঞ্ছিৎ স্থান প্রদান করুন অর্থাৎ "এই স্থানে অবস্থিতি কর" এইরূপ অমুক্তা দিউন ॥ ১৩॥

হে দেব। সর্ব্ঞাণির বাসন্থান স্থরপা যে পুথিবী ছিল, তাহা প্রলয়কালীন সমূদ্র জলে নিমগ্ন হই-য়াছে। অতএব আমাদিগকে যদি স্থান দানের অভিপ্রায় হয় তবে পৃথিবীর উদ্ধার্থে যত্ন করুন॥ ১৪॥

অনস্তর নৈত্রের মুনি বিছুর্কে সংখাধন করিয়া কহিলেন বিছুর। পরমেন্তি ত্রক্ষা মন্তর ঐ রূপ বাক্য আবণ করিয়া এবং জল সংধ্য ধুরণীকে নিম্মা দেখিয়া বহুক্ষণ পর্যন্ত চিন্তা ক্রিলেন, আমি পূর্বে একবার সকল জল পান ক্রিয়াছি, আবার অকলাৎ কি প্রকারে ঐ জল উৎপর হইল ? যাহা হউক, এখন এই জল মধ্যে নিম্মা ক্রীকে কি প্রকারে উদ্ধার করি ॥ ১৫ ॥

কি আশ্রেম্ব কর্তা করিছে করিছে ক্রিছে ক্রিম্ব প্রমেশ্র লাকারিপ্ত ক্রেম্বর করিছাছেন এখন । বিষয়ে কর্তা কি ? ॥ ১৬॥

বস্যাহং হাদয়াদাসং স ঈশো বিদধাত বে ॥ ১৭॥

তৈতি ভিয়ায়তো নাসাবিবরাং দহসান্য িবলাহতোকো নির্ণাদক্ষপরিমাণকঃ । ১৮॥

তস্যাভিপণ্যতঃ থহুঃ কণেন কিল ভারত। গজমাত্র প্রবর্ধে ভদত্তমত্মইং ॥ ১৯॥

মরীচি প্রমুখৈবি প্রৈঃ কুমারেম কুনা সহ। দৃষ্ট্রা তচ্ছোকরং রূপং তর্কয়ানাস ছিত্রগা ।

কিমেতচছ্করব্যাজং সত্তং দিব্যসব্দিতং। অহো বতাক্র্যমিদং নাসায়া মে বিনিঃইতং ॥ ২০॥

দৃক্টোস্ঠ শিরোমাত্রঃ কণাক্যগুশিলা সমঃ। অপি বিভগ্যানের যজো মে দেধ্যশ্নঃ ॥ ২১॥

टीवततामी।

মেহ্নুটেরং। স্থাব বিদ্ধাতু সম্পাদরতু ॥ ২৭ ॥
বরাহতেতাক: ক্লো বরাহ: ॥ ১৮ ॥
বন্ধ: আকাশে স্থিত: সন্ ॥ ১৯ ॥
চিত্রধা অনেকধা ॥ ২০ ॥
ক্রেন্ডিরং প্রমানের দুইং। তাঙাশিলা স্থল পার

প্রমিজ্জাতা প্রমাণো দৃষ্ট:। গ্ওশিলা ভুল পাষাণ: তৎ সম: যজে। বিজ্ঞ:। নিজরপ তিরোধানেন মে মন: ধেদয়ন্॥ ২১ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

বস্যেত্যজ্জিং। জ্নরাদাসং স্বর্মাত্রাৎ ॥ ১৭ ॥
বরাহতোকো নিরগাদিতি তাদৃশ ভাবাভাবার পুত্রছাদিব্যবহার ইতি জ্ঞাপিতং। অস্ট পরিমাণক ইতি কচিৎ কিন্তু স্থামিতি
রব্যে অস্টাগ্রপ্রমাণ ইত্যেব বিথিব্যতে ॥ ১৮ । ১৯ । ২০ ॥
বেশসন্ অদৃট্রপাবিভাবেন সংশব্যে ম'নঃ কোভবন্ ॥ ২১ ॥

श्रीविश्वगांशहकवर्ती।

বিদ্ধান্থিতি অনুষ্ঠেমমিতাক পূর্বজ্ঞানুবক: ॥ ১৭ ॥
বরাহতোক: ক্লো ববাহ: ॥ ১৮ ॥
গঞ্জমাত্র: হত্তিশরীরপরিমিত: ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥
কল্পে প্রস্কুত্রাবতার: । ধেদ্যুদ অন্তর্গাবিশ্ববিদ্ধান্ত সংখ্য

वकाः धार्यममवस्त्राविजातः। (थमयन् अन्हेक्षभाविकारिक नःभटेवर्मनः क्लांख्यन् ॥ २১ ॥ २२ ॥

অথবা আমার চিন্তায় কি হইবে ? যে ভগবানের হৃদর হইতে আমি উৎপন্ন হইয়াছি, তিনিই এ বিষয়ে আমার যাহা অনুষ্ঠেয় তাহা সম্পাদন করুন ॥ ১৭॥

আহে নিস্পাপ বিছুর! একা এইরূপ চিন্তা করিতে থাকিলে তাঁহার নাদারকু হুইতে সহ্দা একটা সুক্ষা বরাহ নির্গত হ'ইল, ওাঁহার পরিমাণ অঙ্গুষ্ঠমাত্র॥ ১৮॥

আহে বিহুর ! সেই বরাহ দেখিতে দেখিতে ব্রহ্মার সমক্ষেই, আকশিন্ত হইয়া কণ্মাতে হস্তির আকারে পরিবর্দ্ধিত হইল তাহাতে যে কি রূপ আশ্চর্য্য দর্শন হইল তাহা বলা যায় না ॥ ১৯॥

ব্ৰহ্মা বিশ্বিত হইয়া মরীচি প্রভৃতি ব্রাহ্মণগণ এবং কুমার ও মনুর সহিত সেই শুক্র রূপ অবলো-কন করত বহুবিধ তর্ক বিতর্ক করিয়া কহিতে লাগিলেন এ কি ? শুকর ছলে কোন দিব্যপ্রাণী আসিয়া আবিস্ত হইলেন না কি ? এ যে বড় আশ্চর্যা দেখি ! নাসাবিবর হইতে এতাদুশ ব্রাহ বিনিঃসভ হইল ? ॥ ২০ ॥

ত বরাহ প্রথমতঃ অনুষ্ঠের শিরোমাত্র পরিমাণ দৃষ্ট হইরাছিল, কার্কাল মধ্যে বুলি পাষ্টি সদৃশ হইল। ইনিই ত ভগবান বিফু হইবেন না ং বুবি তিনিই নিজ রূপা সংগ্রেশন করিয়া আমাদের মনকে কুবু করিতেছেন ॥ ২১॥ ইতি মীমাংসতন্তস্য অক্ষণঃ সহ সুসুভিঃ। ভগবান বজাপুরুরো জগর্জাগেন্দ্রসন্থিও । ২২ ॥
অক্ষাণং হর্ষয়ামাস হরিন্তঃ কর্জাভ্যান্ । সগর্জিতেন কর্জাঃ প্রতিস্থান্যতা বিজঃ ॥ ২৩ ॥
নিশম্য তে ঘর্ষরিতং বাবেদ করিক্ষু যাস্থাম্যপুকরস্য।
অনন্তপঃ সভ্য নিবাসিন ন্তে ত্রিভিঃ পবিত্রৈ মুনিয়োগুণন্ স্ম ॥ ২৪ ॥
তেষাং সভাং বেদবিভানমূর্তি ত্র ক্ষাবধার্যাত্মগুণানুবাদং।
বিনদ্য ভূয়ো বিবুধোদয়ায় গজেন্দ্রলীলো জলমাবিবেশ ॥ ২৫ ॥

धीमत्रवामी ।

ইতি মীমাংস মানস্য সতঃ জগর্জ অগর্জৎ গিরীক্সতুল্য: ॥ ২২ ॥ গর্জনপ্রস্থোজনসাহ ব্রহ্মাণমিতি॥ ২০ ॥

ষ্ঠ্রিতং ভজ্জাতামুকরণ ধ্বনিং অনিশ্চয়েন যঃ স্থেদঃ তস্য ক্রিফু ক্পরিফু নাশকং তে ইতি পুনক্রিজঃ প্রসিদ্ধি ধ্যাপনার্থাঃ ব্রিডিঃ প্রিক্রৈঃ প্র্যকুঃ সামমক্রৈঃ অস্তবন্ ॥ : ৪ ॥

বেলৈবিভিন্যতে ভূমতে মূর্ত্তি গ্রন্থ সঃ অতএব আত্মনো গুণানছবদতীতি তথা তৎ তেবাং ব্রহ্ম উচ্চরিত বেদমবধার্য ক্যাত্মা ॥২৫

ক্রমসন্দর্ভঃ।

জ্পৰ্জ্জ তদতুমতিং কুৰ্বন্হ্ছতৰানিব। অংগজোমহান্গিরিঃ ॥ ২২ ॥ তেমন অসাধারণেন গজিতেন ॥ ২৩ ॥ মালাক ক্রপৈব ॥ ২৪ । ২৫ ॥

এবিখনাণচক্রবর্ত্তী

ক্কুভো দিশ: প্রতিখনমতা প্রতিধ্বনিমতী: কুর্বতা ॥ ২৩ ॥

মারামরস্য কুপামরস্য জ্ঞানমরস্যেতি বা বায়ায়া অবিদ্যারা অপি আময়ো রোগো বয়াৎ ততেতি বা ঘর্ষরিতং তজ্জাতাত্ত্বরণ ধ্বনিং। বেষাং তদনিশ্চরেন পৃথিবা অত্পলাস্তেন বা যং থেদত্তম্য করিছ্ কপরিছ্ নাশকং তে ব্রহ্মাদয়োহগৃণন্ অপ্তন্তথা তে প্রসিদ্ধা জন আদি বাসিনো ভ্যাদয়ো মূনর ব্রিভিঃ পবিত্তৈঃ ধগ্যক্ সামমত্রেরপ্তবিভিত তে ইত্যক্ত বিঃপাঠালাপ্রেয়ং। ২৪ ॥ বেদবিতানরপা সর্কবেদময়ী নতু প্রাকৃতী মুর্তিগ্য সং। বেদানাং তপ্বরিংখাসরপ্তাং ভগবরিখাসস্যের দীসরা ব্রহ্মনাস্য প্রবিভিত পুক্ররপত্তং জ্বেরং। অভত্তেবাং মূনীনাং আস্বেশাহ্যবাদং তত্ত্নিকর্ত্তমান্ত গণাছ্বধননের ব্রহ্মবেদ অব্বাহা জ্বালা ॥ ২৫ ৪

ব্ৰহ্মা আপনার পুত্রগণের সহিত ঐ রূপ তর্ক বিতর্ক করিয়া শেষে আপনিই মীমাংসা ক্রিতেছেন এমত সময়ে তাঁহার সমক্ষে গিরীক্ত তুল্য ভগবান্ যজ্ঞ পুরুষ বরাহ একটা ভয়কর গর্জন করিলেন ॥২২ ভাঁহার সেই গর্জন ধ্বনিতে দিক্ সকল হইতে প্রতিধ্বনি হইতে লাগিল, তাহাতে ব্রহ্মা এবং সেই সকল বিজোতম হাই চিত্ত হইলেন ॥ ২৩ ॥

পরস্ত জনলোক তপোলোক এবং সত্য লোক নিবাসি মুনিগণের সেই মায়াময় শৃকরের তজ্জাত্যসুকরণ ধানি প্রমণ করিয়া অনিশ্রুর রূপ থেদ সমস্ত বিষষ্ঠ হইল এবং তাঁহারা ঋক্ যজুং সাম এই বেদ
বিষেধ্য নির্ভাবি তাঁহার স্তব করিতে লাগিলেন ॥ ২৪ ॥

ঐ রবাহ দৃষ্টি বেদ সকলের ও করা ক্ষাক্তর গলেন্ড তুলা লীলা করিতে করিতে ঐ সকল মুনির উচ্চারিত বৈদমন্ত্র সকল রম্ভতঃ আপুনার গুণারবাদ করিয়া দেবগণের অভ্যান্ত্রের নিমিত পুনব্বার গর্জন করিলেন, তাঁহার পরেই অলমধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। ২৫॥ উৎক্ষিপ্তবাল: থচর: কঠোর: সটাবিধ্বন্ ধররোমশন্তক্।

পুরাহতাব্জ: সিতদংখ্রীসক্ষাজ্যোতির্বভাসে ভগবান্ মহীপ্র: ॥ ২৬ ॥

জ্ঞাণেন পৃথ্যা: পদবীং বিজিজন্ জ্যোড়াগদেশ: অয়সংবরাক: ।

করাল দংখ্রোপ্যকরালদৃগ্ভ্যামুখীক্য বিপ্রান্ গৃণতো বিশৎ কং ॥ ২৭ ॥

সবজ্র কৃটাক্ষ নিপাতবেগ বিশীর্ণ কৃক্ষিঃ স্তনয়মুদ্বান্।

শ্রীগরসামী

শ্ৰীমন্ত্ৰাপৰতম্ ।

কথভ্ত: সন্নাবিবেশ ইতাপেকারামাহ বাভ্যাং উচৈচ: কিপ্ত: বাব: পুছেং বেন। পচর: আকাশচারী। কঠোর: কঠিন:। সটা: ক্ষরবালান্ ধরাণি তীত্রাণি রোমাণি বস্যাং সা ঘক্ যসা। পুরৈরাহভানি অব্যাণি বেন সিতদংট্র: অকিণ্ডরুদংট্র। ঈক্ষা নিরীকণ্যেব জ্যোতি: আলোকো যস্য তথা প্রকাশাস্তরাভাবাং। বভাসে অশোভত। মহীত্র: পৃথিবাা উদ্ধা ॥ ২৬॥

ক্রোড়াপরেশঃ বরাহছেলাইশ্বরমধ্বরাকোপি। পগুরিব আপেন বিলিজন্ গুণ্ডঃ ক্রোড়ন্ বিপ্রাহ্থীকা উর্জং বীক্ষা কং মলম-

ভদাদীত্তনং সমূক্রধানিমুংপ্রেক্ষতে। উদযান্ সমূক্র আর্ক ইব অনয়ন্ শকং কুর্মান্ তো বজেখর মা মাং পাহি মা ভিন্দীতোবং চুক্রোশ ইব। আর্ত্রসাদৃশ্যমাহ। উৎস্ঠাঃ প্রসারিতাঃ দীর্ঘা উর্ময় এব ভূজা তৈ বি শিষ্টঃ আর্ত্তমে হেভুঃ বক্তকৃটো বক্তময়ঃ পর্মজঃ তম্মলং

क्रयगमर्भः।

বরাণি রোমাণি সন্তি যসাঃ সা ছক্ যসা॥ ২৬॥

ক্রোড়াপদেশ: প্রাক্তক্রোডব্যাব্দ:। স্বয়ং তু অধ্বরাস্থাদপ্রাক্তক্রোড়াক্রতিরিত্যর্থ:। স্বভাবেহপি ক্রোড়স্যেব দর্শিত ইত্যাহ স্থাপনেতি। আক্লড্যা অনোবাস্থােহপি কুপাদ্ট্যা ভক্তানাং পরমন্ত্রেমিল ইত্যাহ করালেতি ॥ ২৭। ২৮। ২৯॥

श्रीविचनाथठकवडी।

জলং প্রবিশতন্তত ধ্যানবাহ উলৈ: কিন্তো বাল: পুদ্ধং বেন সং। খচর ইতি বন্ধলোকাদমার্গেণিৰ তিলোক্যামবভতাবেতার্থ:। ধ্বরোমস্কা বৃগ্ মৃত্ত সং। ঈলৈব স্যোতিধী চক্সম্থ্যাবিব মৃত্ত সং। মহীএ: পৃথিব্যা উন্ধৃতা পর্বততুল্যা বা ॥২৬
তত্ত লীলামাহ লোপেনেতি। অধ্যরাক: অমং বেদএব ক্রোড়াপ্দেশে। ববাহছেলেতি। জনাপ্দেশং ফলব্র্মমেব ধতে মৃত্ত্ব
কাঞ্চবিল্লিবিবেতি বদপক্ত্রলভাবেশ ক্রোড়ব্দৈয়ৰ বাত্তবন্ধং প্রত্যায়তে। প্রকৃতং বল্লিবিধ্যাম্যৎ স্থাপ্যতে সাত্তপত্ন তিরিতি
লক্ষণ্ড। কং কলং ॥ ২৭ ॥

ভদানীস্তনং সমৃত্তধ্বনিমৃৎপ্রেক্ষতে। বছকুটো বছমর: পর্বভ: ভবদকং যতগবতত্ত্বস্য নিপাতবেগেন বিশীণা কুকির্যস্য সং উদ্ধান্

পরস্ত পৃথিবীর উদ্ধার কর্তা সেই বরাহ জল প্রবেশের পূর্বে উদ্ধান্ত পুছে উৎক্ষেপণ করিয়া উল্ল ক্ষন পূর্বেক গগণ চারী হইলেন এবং তাঁহার ক্ষদন্থিত কঠোর সটা সকল কম্পিত হইতে লাগিল, আর তিনি ধুর দারা মেদ সকল আহত করিলেন। অপর তাঁহার সন্ত শুদ্রবর্গ এবং শরীর অভিশন্ত কঠিন ও ক্ষকের উপরে তীক্ষ রোম ছিল। তৎকালে দিক্ সকল তিমিরারত ছিল বটে, কিন্তু ভাঁহার নিরী-ক্ষণে আলোকমন্ন হইনা উঠিল। ২৬॥

ভিনি দানং যজ্ঞ পূর্ত্তি ক্ষিলেও বরাহ ছলে পশুর ন্যায় জ্ঞাণ বারা পৃথিবীর পদানী অনুসন্ধান করিছে লাগিলেন এবং যদিও তাঁহার নেত্রবয় করাল ছিল ভবাপি তাহা অক্যাল করিয়া তবকানি বিশ্বদানের প্রতি উর্জনিকে নিরীকণ করিতে করিডে কল মধ্যে প্রবেশ করিলেন ১২৭ চ

এ বরাহ উল্লেখন পূর্বকৈ দক্ত দলিলে পড়িত হইলে তাঁহার প্রক্তি মদৃশ ক্লেমিগাড় নিন্দিত বেগে সাগরের কুকি বিদীর্ণ ছইয়া পেল, অভএব জলমিধি আর্ড ভুল্য হইয়া নাম মন্তিলের এবং ক্রেক উৎস্ফলীর্ঘোম ভূজৈরিবার্ত্ত শ্চু ক্রোশ যজেশর পাছি মৃতি ॥ ২৮ ॥
খুরৈ: ক্ষুরপ্রেদ রয়ং স্তদাপ উৎপারপারং ত্রিপররসায়াং।
দদর্শ গাং তত্র স্থাপ্যু রতো যাং জীবধানীং স্বয়মভাধন্ত ॥ ২৯ ॥
স্বদংষ্ট্রয়োজ্ত্য মহীং বিলগ্রাং স উত্থিতঃ সংক্রমতে রসায়াঃ॥ ৩০ ॥
তত্রাপি দৈত্যং গদয়াপতত্তঃ স্থনাভসন্দীপিততীব্রমস্যঃ ।

औरवसामी।

ষৎ ভগবতন্তস্য নিপাতবেগেন বিশীর্ণা কুক্ষির্যস্য ॥ ২৮ ॥

তদা রসারাং রসাতলে গাং পৃথীং দদর্শ। কং ত্রিপকং ত্রীণি পরংষি সবনাত্মকানি পর্কাণি যক্ত যক্তম্রিরিতার্থ:। কিং কুর্কান্ কুরপ্রাঃ আয়তার্গ্রাঃ শরান্তাদৃশৈঃ খুনৈঃ অপো দররন্। কথং উৎপারপারং উৎপারাণাং পারশ্তানাং অপাপাং পারমবলানং যথা ভবতি তথা বিদারমন্। কথং ভ্তাং অথ্যে প্রস্থা সময়ে তত্ত্ব তাত্মকা স্বৃত্পাঃ শিশরিষ্ণ সন্জীবা ধীয়ন্তে যকাং সর্ক্ষীবাধার ভূতাং যাং স্বয়মভাধন্ত আভিমুখ্যেন দধার জঠবে ধৃতবানিতার্থ:। অনেন তত্ত্মরণেনায়াসং দ্যোত্মতি॥ ২৯॥

রসায়া: সকাশাছ্থিত: সন্ সংক্রুচে সম্ক্ অশোভত ॥ ৩ ।॥

ততাপি অন্তসি। গদামুদ্যমাগচ্ছ স্কঃ। ক্ষানং প্রতিমন্তঃ। ন সহঃ সহনানটো বিক্রমো যস্য তং দৈতাং সুনাভং চক্রং

ক্রমসকর্ড:

স্বদং ট্রুয়েত্য জিকং। অত্র বিষ্ণুধর্মে বিশেষক। পাতালমূলেখরভোগসংহতৌ বিভ্নন্ত পাদৌ পৃথিবীঞ্চ বিভ্রতঃ। যস্যোপমানং ন রভূব সোহচুতো মমান্ত মাললাবির্জয়ে হরিরিতি। অত্র ভূ সলিলে স্বধুরাক্রান্ত ইতি বক্ষাতি ॥ ৩০ ॥

তত্রাপীতি সার্দ্ধকং। তাদৃশসংপ্রবান্তস্যপীত্যর্থ:। অপি অত্র বিশ্বরে। সংপ্রবাদিসাধারণোটনবাডেদোক্তিরিরং। বস্তু

<u> बीविधना १५ कवडी ।</u>

অপ্রাণত্যাগশক্ষেবার্ত্ত চুক্রোশ। উৎস্থা: প্রসারিতা দীর্ঘা উর্ময়এব ভ্রাক্তৈ: হে য়জেখর মা মাং পাথীতি চুক্রোশ ॥ ২৮ ॥

কুর প্রৈরন্ত্রবিশে বৈরিব খুরৈ তদা অপো জলানি দরমন্ উৎপারাগাং পারশ্ন্যানামপ্যপাং পারমবসানং যথাস্যাত্তথা দারমন্

কীলি পর্কারি সবনাত্মকানি পর্কাণি যস্য যক্ষম্তিরিত্যর্থ:। রসায়াং রসাতলোপলক্ষিতে পাতালতলে গর্ডোদে ইত্যর্থ:। অতলাদীনাং সপ্তানামের ভ্বিবর্জনে পৃথিবীত্বাৎ রসাতলে তন্যাঃ স্থিত্যসংভ্বাৎ। বছকেং বিষ্ণুধর্মে। পাতালম্লেশ্বরভোগসংহতী
বিক্রন্ত পাদৌ পৃথিবীক বিভ্রত:। বন্যোপমানং ন বভূব সোহচ্যুতো মমাস্ত মাকলাবির্দ্ধয়ে হরিরিতি। অকানি সলিলে স্বধ্রা
কাস্ত ইতি বক্ষাতি গাং পৃথীং দদর্শ। তক্র গর্ডোদে স্বব্ন্স্ শিশ্বিষ্কৃত্যে দৈনং দিনপ্রলব্ধে ভ্রতীত্যবয়:। যাং পৃথীং জীবধানীং জীবা ধীয়ন্তেহ্স্যামিতি জীবধানীং অভাধন্ত। স্বর্গের বেদরপেণাভ্তবানিত্যর্থ: ৪২১॥৩০॥

তত্রাপি তাদৃশ সংপ্রবান্তসীত্যপি বিশ্বয়ে দৈত্যং হিরণ্যাক্ষং জ্বদান আদিদৈত্যমিতিচ পাঠঃ।. কীদৃশং গদয়া সহ আপতস্তং

রূপ ভূজ প্রসারণ করত উচ্চৈঃস্বরে কহিলেন হে যজেশর ! আমাকে রক্ষা করুন বিদীর্ণ করিবেন না ॥ ২৮
দে যাহা হউক, ঐ যজ্ঞমূর্ত্তি বরাহ ক্ষুরপ্র অর্থাৎ আয়তাগ্র বাণ সদৃশ খুর দ্বারা অপার জলনিধিরঞ্জ পার প্রদর্শন পূর্বেক তাহার জল বিদীর্ণ করিতে করিতে রসাতলে গিয়া তথায় পৃথিবীকে দেখিতে
পাইলেন। তিনি প্রলয় সময়ে যখন শয়ন করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন তখন জীব সমূহের আধার ভূতা ঐ
ধরাকে আপনার জঠেরে ধারণ করেন, অতএব তাঁহার এখন ধরার উদ্ধার করা কি কঠিন হইবে ?॥ ২৯॥

তিনি অন্যাসে আপনার দন্ত দারা ধরণীকে ধারণ করিয়া ক্ষণ মধ্যে রসাতল হইতে উথিত হই-লেন, তৎকালে ভাঁহার অতিশয় শোভা হইয়াছিল ॥ ৩০ ॥

আনন্তর তিনি জল নথ্যে দৈত্যরাজ হিরণ্যাক্ষকে বিনয়ী করিলেন। ঐ দৈত্য গদা উদ্যত করিয়া আসমন পূর্বক তাঁহার প্রতিরোধ করণার্থ বন্ধ করিতেছিল, কিন্ত ভগববিক্র সহু করিতে তাহার জঘান রুদ্ধানমস্থ বিক্রমং দলীপুরেভং মুগরাড়িবাপ্তিন ॥ ৩১॥ তদ্রুক্ত পরান্ধিত গগুতুণো যথা গ**লেন্দো জগতীং বিভিন্দন্ ॥ ৩২॥** তমালনীলং দিতদন্তকোট্যা ক্ষামুৎক্ষিপন্তং গঙ্গলীলয়াক। প্রজায় বদ্ধাপ্রলয়োহসুবাকৈ বি রিঞিমুধ্যা উপতক্ষুরীশং॥ ৩৩॥

श्रीभत्रवामी ।

ভৰৎ সন্দীপিতঃ তীত্রো মহ্যার্যস্য যথা মন্ত্রি বিদায়ানে কিমিতি পরিভবং সহস ইতি স্থনাডেন সন্দীপিত ভীত্রমন্থাঃ স ভগবান্ সিংহো গ্রুমির সীলয়া জ্বান ॥ ৩১ ॥

গজেক্সো জগতীং ক্রীড়য়া বিদারমন্ গৈরিকয়া যথাহকণ বর্ণ গগুড়ুণ্ডো ভবতি। তথা তক্ত রক্তমেব পদ্ধ ভেনাছিতে পথে। তুওঞ্চ বস্য স জবানেতি পুর্কেশৈবাবয়ঃ॥ ৩২॥

প্রজ্ঞায় আলক্ষ্য অনুবাকো বৈদিকং স্কুং তৎ সদৃদৈর্থকৈয় স্বস্টুৰ্ণুঃ ॥ ৩৩ ॥

ক্রেমসন্দর্ভ:

তস্তু চাক্ষ্বান্তরসংপ্লবে এবারং প্রসঙ্গ। অতএব স্বায়স্ত্বাদিসংপ্লবে ত্রিলোকীগতানামস্থপত্তে র্মহর্লোকস্থানাঞ্চ পালনারজনন্তপঃ সন্ত্যানিবাসিভিরেব স্থতং চাক্ষ্বশংপ্লবাস্ত হিরণাক্ষদিখিজয়েত্ সর্গিণাং স্থিতি শ্চিরস্তন্যের স্পন্তা। অথবা তত্ত্বৈর বরাহারতারে। হুপীতি ক্লাচিদ্পীত্যর্থ:। মুগরাড়াদি দৃষ্ঠান্ত স্তুৎপরাক্রমাদ্যমুভবসোপানমাত্রং ॥ ৩১। ৩২। ৩৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী ।

স কীদৃশ:। স্থনাভেন চক্রেণ সন্দীপিত:। মির বর্ত্তমানেপি স্থাং প্রত্যেরং গদামুদ্দক্ষেতীত্যদীপ্তী কতো মন্থার্যস্য স:। রুদ্ধানং রোদ্ধু চতুর্দিক্ষু ভ্রমন্তং তং মুন্তং জ্ঞীবরাহমূপমিমীতে। গলেক্স দ্বিকৃট পর্বতন্তঃ। সিংহ শরভাদীনামপি হস্তা জগতীং তত্ততাং পৃথিবীং ক্রীড্রা বিদাররন্ গৈরিকেণ অরুণগগুতুত্তা ভবতি তথা। জগতীং জগতীং জ্বলো বিশেষেপি কিতাবপীত্যমর:॥ ৩১ ৩২॥

অত্র খেতবরাহকরে খায়স্থ্যমন্তরার প্র ব্রহ্মনাসাত এব খেতবরাহ আবিভূ য় কেবলং পৃথীমুদ্ধ তৈ বাতর ধাততঃ বর্ষে চাকুষমন্তরে পুনরাক দিকে প্রলমে কলাদেরাবিভূ র দীলো বরাহঃ পৃথীমুদ্ধরন্ হিরণ্যাক্ষং জ্বানেতি রবাহর র লীলামেকী ক্রেরাত্র মৈত্রেরঃ প্রাহ্ ক্রেডি প্রীন্তরার কারিকাভ্যোহবগন্তবার কান্তরাহ তাশ্চ যথা। বিধাবিরাসীৎ করে মিরালো আয়স্ত্রান্তরে। আণাবিধে ধরো দ্বাতা চাকুরীরেত্ নীরতঃ। হিরণ্যাক্ষং ধরোদারে নিহত্তং দংষ্ট্রপুদ্ধরঃ। চতুস্পাৎ প্রীবরাহোসে ন্বরাহঃ কচিয়তঃ। কলাচিক্ষলকামাং কদাচিচ্চক্রপাত্তরঃ। যজমুর্তিঃ হবিটোয়ং বর্ণরম্মুতঃ মৃতঃ। দক্ষং প্রাচেতনাং স্বষ্টিঃ প্রমাত চাকুমান্তরে। স্বতন্তর্ত্তরের জন্মাস্য হিরণ্যাক্ষস্য মুজ্যতে। উত্তানপাদবংখ্যানাং তনম্ব্র প্রচেতসাং। দক্ষস্বৈর দিতিঃ পুত্রী হিরণ্যকো দিতেঃ স্বতঃ। করারপ্রে তদা নান্তি স্থতে। পতি মিনোরপি। কাসে প্রাচেতসো দক্ষঃ ক দিতিঃ ক দিতেঃ স্বতঃ। অতঃ কাররেরান্ত্তঃ প্রীবরাহত্ত চিষ্টিতঃ। একতার্বাহ মৈত্রেয়ং ক্ষতঃ প্রশাস্পারতঃ। মধ্যে মন্তর্ত্তবি মুনাং শাপান্তরং প্রতি। প্রলয়েনি বভূবেতি পুরাণে কচিদীর্যাতে। অয়মাক মিকো জাতশাক্ষ্বেপান্তরে মনোঃ। প্রলয়ং পন্মনাভদ্য লীলয়েতি কু ক্রিচিদ্বি। অম্বাক্রে বৈদিকং স্কেং তৎ সদৃশৈ বাকৈয়ন্ত বুং॥ ৩০ ॥

ক্ষমতা কি ? ভগবান্ চক্রতুল্য তীত্র রোধে প্রজ্বলিত হইয়া সিংহ যেমন হস্তি বধ করে তাহার স্থায় অবলীলাক্রমে তাহার প্রাণ সংহার করিলেন ॥ ৩১॥

অতএব গজেন্দ্র যেমন ক্রীড়া বশতঃ ক্ষিতি বিদারণ করিতে করিতে গৈরিক মৃত্তিকা দ্বারা অরুণ বর্ণ গণ্ড ও অরুণ বর্ণ তৃণ্ড হয়, তাহার ন্যায় ঐ হিরণ্যাক্ষের রক্ত রূপ পঞ্চে ভগবান্ বরাহ দেবের গণ্ড এবং তৃণ্ড অঙ্কিত হইয়া লোহিত বর্ণ হইল ॥ ৩২ ॥

আহে বিছর। দেই বরাহ মূর্ত্তি ভগবান্ হস্তির স্থায় লীলা করিতে করিতে দৃষ্টাগ্র ভাগ ধারা ধরণীকে ধারণ করিয়া উর্দাদকে উভোলন করিতেছিলেন এবং ওাঁহার শরীর তমাল সদৃশ নীল বর্ণ দৃষ্ট ইইতেছিল ইহাতেই বিরিঞ্চি প্রভৃতি ঋষিগণ ভাঁহার স্বরূপ জানিতে পারিয়া সম্মুখে আগমন পূর্বক মঞ্জলি বন্ধন করিলেন এবং বৈদিক সূক্ত সদৃশ বাক্য ধারা তাঁহার স্তব করিতে আরম্ভ করিলেন। ৩০॥

শ্ৰীখবর উচুঃ॥

S & 80 1 1 1 1 1 1 1 1 জিতং জিতন্তেহজিত যজ্জভাবন জ্বনীং তকুং বাং পরিধুরতে নম:। यट्यामगर्र्छम् निलिन् तक्य खरेख नमः कात्र भ्कतात एउ ॥ ०८ ॥ क्रभः उरेवजन्त्र क्रुक् जाञ्चनाः क्रूक्ष्मनः त्मव यमध्यवाष्ट्रकः । ছন্দাংসি যদ্য ছচি বহি রোম স্বাজ্যং দৃশি ছজ্জি বু চাতুহে তিং॥ ৩৫॥ ত্রুক্ তুগু আসীৎ ত্রুব ঈশ নাশয়োরিড়োদরে চমসাঃ কর্ণরদ্ধে। প্রাশিত্রমাদ্যে গ্রসনে গ্রহাস্ত তে যক্তর্বণুং তে ভগবন্নগ্রিহোত্রং ॥ ৩১॥

श्रीभव्यामी ।

তো অজিত তে স্বয়া জিতং জিতমিতি সম্লমে বীন্দা। যুক্তৈর্জাব্যতে আক্রিয়তে ইতি তথা। ত্রয়ীং বেদম্যীং। নিলিলা: লীনপ্রায়া: কারণং পৃথিব্যূদরণং তেন শৃকরায় ॥ ৩৪ ॥

বজ্ঞাত্মতাং প্রপঞ্চরত্ম: স্তবন্তি রূপমিত্যাধি চতুর্জি:। ছব্লাংসি গায়ত্রাদীনি। বজাঙ্গভূত ছব্দ আলামুবাদেন ভগবদব্যব্তা বিধীয়তে। বহি: শবেদ দীর্ঘাভাব আর্ব:। দৃশি চকুষি চাতুর্হোত্ত: হোত্রাদি কর্ম চতুষ্টয়:॥ ৩৫ ॥

ক্রক জুতু: তুণ্ডে মুখাগ্রে ক্রবো নাদিকয়ো:। ইড়া ভক্ষণ পাত্রং। চমদা এহা: দোম পাত্রাণি। প্রাদিত্রং ব্রহ্মভাগ পাত্রং। গ্রন্থতেহনেনেতি গ্রসনং মুখান্তর্কর্তি চ্ছিদ্রং। চর্কণং ভক্ষণং ॥ ৩৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভ;।

কারণং পরং ব্রহ্ম তৎস্বরূপায় শ্করায় ॥ ৩৪ ॥ অত স্তদাশ্ররৈ সর্পযজ্ঞপ্রক্রিয়েতাাহ রূপমিতাাদি চতুর্জি:॥ ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮ ৩৯। ৪০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবত্তী।

তে ত্মা জিতং জিতং। হে অজিত জয় জয়েতার্থ: যজান্ ভাবয়িস উৎপাদয়িস হে সর্ক্যজ্ঞকারণেতার্থ:। ত্রয়ীং বেদয়য়ীং

যঞ্জাত্মতাং প্রপঞ্মন্ত: স্তবস্তি। ক্রপমিত্যাদি চতুর্জি:। ছচি ছলাংসীত্যাদৌ ছল আদীনাং তব ত্বগাদর এব কারণমিত্যর্থো জ্ঞেম:। বর্হিশন্দে দীর্ঘান্ডাব আর্ব:। চাতুর্হোত্রং হোত্রাদি কর্ম চতুইয়ং॥ ৩৫॥

ক্রক জুত্: তুণ্ডে মুণাগ্রে ক্রবো নাসিকরো:। ইড়া ভক্ষণপাত্রং চমসাগ্রহাক্ত সোমপাত্রাণি। প্রাশিত্রং ব্রদ্ধভাগপাত্রং গ্রস্যতে হনেনেতি গ্রসনং মুধাস্তর্বত্তিচ্ছিত্রং চর্বণং ভক্ষণং ॥ ৩৬ ॥

ঋষিগণ সন্ত্রম প্রকাশ পূর্বক কৃহিতে লাগিলেন, হে অজিত! হে যজভাবন! তোমার জয় হইল ! জন্ম হইল ! প্রভো ! তুমি আপনার এই বেদমন্ত্রী মূর্ত্তিকে কম্পিত করিতেছ, তোমাকে নমস্কার করি। হে ভগবন্! ভোমার লোম বিবরে সমৃদ্র দকল বিলীন প্রায় হইতেছে। ফলতঃ ভূমি কেবল পুথিবীর উদ্ধারার্থ ই এই শৌকর বপুঃ ধারণ করিয়াছ,বস্তুতঃ স্বয়ং ভগবান তোমাকে নমস্কার করি ॥৩৪

হে দেব! ভোমার এই মূর্ত্তি যজ্জময়, কিন্তু হুদ্ধতাত্মা ব্যক্তিরা ইহা দেখিতে পায় না। প্রভো! ভোমার এই ছকে গায়ত্ত্যাদি ছন্দঃ, রোমে বহিঃ অর্থাৎ যজ্ঞীয় কুশাদি, চকুর্দরে আজ্য অর্থাৎ হবনীয় দ্বত এবং চরণ চতুষ্টয়ে চাতুর্হোত্র অর্থাৎ হোত্রাদি কর্ম্ম চতুষ্টয় প্রকাশমান হইতেছে ॥ ৩৫ ॥

অপর হে ঈশ। তৌমার মুখাতো ত্রুক্ অর্থাৎ জুহু নামক যজ্ঞ পাতে, তোমার নাদিকারয়ে ত্রুব (যজ্ঞপাত্র বিশেষ) উদরে ইড়া (যজ্ঞীয় ভক্ষণ পাত্র) কর্ণরন্ধে চমস (যজ্ঞপাত্র বিশেষ) মূবে প্রাশিত্র (একভাগ পাত্র) মুখান্তর্বর্তি ছিল্লে সোম পাত্র নামক যজ্ঞপাত্র বিশেষ দেদীপামান। অপর **८२ खगरन् 🌠 क्रिय टिय ठर्जन कर्न छांहाई बामानित्यत्र बग्निट्याज।। ०७**॥

দীক্ষাসুজন্মোপুসদঃ শিরোধরং ষং প্রায়ণীয়োদয়নীয়দংষ্ট্রঃ।
জিহবা প্রবর্গ্য স্তব শীর্ষকং ক্রতাঃ সত্যাবস্থাং চিতয়ো হসবোহি তে॥ ৩৭॥
সোমস্ত রেতঃ সবনান্তবস্থিতিঃ সংস্থা বিভেদান্তব দেব ধাতবঃ।
স্ত্রোণি সর্ব্বাণি শরীরসন্ধয়স্তং সর্ব্বযুজ্ঞঃ ক্রত্রাষ্ট্রবিদ্ধনঃ॥ ৩৮॥
নমোনমন্তে থিল মন্ত্র দেবতা দ্রব্যায় সর্ব্বক্রতবে ক্রিয়াত্মনে।

প্রীধরস্বামী।

দীকা দীক্ষনীয়েষ্টি:। অত্তৰ্ম বারং বারমভিব্যক্তি: উপসদন্তিত্র ইটয়:। শিরোধরং গ্রীবা প্রায়ণীয়া দীক্ষানন্তরেষ্টি: উদয়নীয়া সমাগ্রীষ্টি: তে এব দংট্রে বস্ত । প্রবর্গ্যো মহাবীয়: প্রত্যুপসদ: পূর্বং ক্রিয়তে। সত্যো হোম রহিতোহয়ি:। আবস্ধ্য: ওপাসনায়ি: তয়ে।র দৈক্যং তত্ত্ব ক্রত্ রূপস্যা শীর্ষং শির:। চিত্র ইটকা চয়নানি পঞ্চ অসব: প্রাণা:॥ ৩৭ ॥

প্রাত: সবনাদীনি অবস্থিতি: আসনং বাল্যাদ্যবস্থা। অগ্নিষ্টোমোইত্যািষ্টোম উক্থা ষোড়শী বাজপেয়ােহতিরাত্র আপ্রোর্থাম ইতি সপ্ত দংস্থাবিভেদাঃ ওঙ্মাংসাদি সপ্তধাতবং। স্তাণি ঘাদশাহাদীনি বহ্যাগ সংঘাত রূপাণি। অসোমাঃ যঞাঃ সসোমাঃ ক্রতবং তক্রপক্ষং ইষ্টির্যক্রনং অস্থানং তদেব বন্ধনং যক্ত সং॥ ৩৮॥

পুর্বেরাক্তমেব স্পরিকরং কীর্ত্রয়তঃ প্রণমতি। নমোন্ম ইতি অধিল মত্রাদি রূপার ক্রিয়াত্মনে সামান্য ব্যাপার রূপায়।

শ্ৰীবিখনাগচক্রবন্তী ।

দীকা দীক্ষনীয়েটি: অনুজন্ম বারশারমভিব্যক্তি:। উপসদন্তিত্র ইষ্টয়: শিরোধরং গ্রীবা প্রায়ণীয়া দীক্ষানস্তরেটি:। উদয়নীয়া সমাপ্তীটি: তে এব দংট্রে যস্য প্রবর্ণ্যো মহাবীর: প্রত্যুপসদ: পূর্ব্বক্রিয়তে। সত্যো হোমরহিতোহয়ি: আবস্থ্য ঔপাসনায়ি:। ত্রোশ্ব ক্রৈক্যং তত্ত্বব ক্রত্রুপসা শীর্মং শির:। চিত্র ইষ্টকাচয়নানি পঞ্চ অস্ব: প্রাণা:॥ ৩৭॥

স্বনানি প্রাত্রাদিকর্মকালা:। অবৃত্তি রাসনং। সংস্থাবিভেদা অগ্নিষ্টোমোইতাগ্নিষ্টোম: উক্প: বোড়শী বাজপেয়েইতিরাত্রং আপ্রোর্যাম: ইতি সপ্রধাতব অ্ব্যাংসাদয়:। স্ত্রাণি দাদশাহাদীনি বছ্যাগ সংঘাতরূপাণি। যজ্ঞা: অসোমা: ক্রতবঃ স্পোমা তিজ্ঞাবং। ইত্তির্বজনং যজ্ঞাসভূতা তত্তিভি: সৈব বন্ধনং যস্য স:॥ ০৮॥

উক্তার্থং সমাসেন স্থবানাঃ প্রণমস্তি নমো নম ইতি। ক্রিয়াত্মনে যজাদিব্যাপাররূপায়। যদ্যপ্যেবং তং লীলরা কর্মমার্গ প্রবর্ত্তকত্বেন সর্ক্তকর্মকারণ মৃত্তিরসি। তদপি কর্মফলম্পৃহারহিতয়া ভটক্তাব তবামুভবো ভবেদিতাতঃ। বৈরাগ্যং দৃষ্টাদৃষ্টকর্ম

অপিচ হে প্রভো! তোমার যে বারন্থার অভিব্যক্তি তাহাই দীক্ষা অর্থাৎ দীক্ষণীয় ইষ্টি, তোমার গ্রীবা দেশই উপদদ অর্থাৎ তিনটা ইষ্টি বিশেষ, তোমার দংষ্ট্রা প্রায়ণীয়া অর্থাৎ দীক্ষানন্তর ইষ্টি এবং উদনীয়া অর্থাৎ দমাপ্তি ইষ্টি, তোমার জিহ্বাই প্রবর্গ্য অর্থাৎ উপদদের পূর্ব্বে ক্রিয়মাণ মহাবীর নামে যজ্জ বিশেষ, তোমার শীর্ষ অর্থাৎ শিরোদেশ দত্য (হোম রহিত অগ্নি) তথা আবদথ্য (উপাদনাগ্নি) এবং তোমার পঞ্চ প্রাণই চিতি (যজ্জার্থ ইফাকাচয়ন)॥ ৩৭॥

অপিচ হে দেব! তোমার রেডঃ সোম যজ্ঞ, আর তোমার অবস্থান অথবা বাল্যাদি অবস্থা প্রাতঃ সবনাদি কর্মা, তোমার ত্বক্ মাংসাদি সপ্ত ধাতু অগ্নিষ্টোম, অত্যগ্নিষ্টোম, উক্থ, ষোড়শী, বাজপেয়, অতিরাত্ত এবং আপ্রোর্ঘাম, এই সপ্ত যজ্ঞ প্রভেদ, আর তোমার শরীরের সন্ধি সকল দাদশাহাদি বহু যাগ সমূহ স্বরূপ, অত্তর্গব তুমি অসোম যজ্ঞ এবং সসোম ক্রেতু এই উভয় স্বরূপ অস্তানই তোমার বন্ধন ॥ ৩৮॥

হে ভগবন্! ছুমি অধিল মন্ত্ৰ, অথিল দেবতা এবং সমস্ত দ্ৰব্য স্বৰূপ অত্এব তোমাকে নমস্কার। অপর হে বিভো.! বৈরাগ্য অর্থাৎ দৃষ্টাদৃষ্ট কর্ম ফল স্পৃহা রাহিত্য হইতে উৎপদা যে ভক্তি তথারা

বৈরাগ্য ভক্ত্যাত্মক্ষরাকুড়াবিত ক্লানায় বিদ্যাপ্তরবে মনো নমঃ ॥ ৩৯॥

শংট্রাএকোট্যা ভগবংস্থরা প্রতা বিরাজতে ভূধর ভূঃ সভূপরা।

যথা বনান্নিঃসরত্যে দতা প্রতা মতক্ষক্রেক্স সপত্রপদ্মিনী॥ ৪০॥

ত্রীমরং রূপমিদঞ্চ শোকরং ভূমগুলোনাথ দতা প্রভেন তে।

চকান্তি শ্রোঢ় ঘনেন ভূমগা কুলাচলেক্রেক্স যথৈব বিভ্রমঃ ॥ ৪১॥

সংস্থাপরৈনাং জগতাং সতক্ষ্মাং লোকায় পদ্মীমসি মাত্রং পিতা।

टीयत्रवामी।

কিঞ্চ বৈরাগ্যং উক্ত কর্ম সাধ্যা সমগুদ্ধিঃ ততো ভক্তি ছত আত্মজনঃ চিন্তাহৈর্বাং তেনাছভাবিতং সাক্ষাৎ কৃতং য়জ্জানং তলৈ। এবং ভূত জ্ঞানপ্রদায় গুরবেচ॥ ৩৯॥

হে ভূধর সভ্ধরা স্পর্কতা বনাহদকালিগছেতে। গলেজস্য দতা দত্তেন ॥ ৪०॥

ত্বরা ধৃতা তুর্বিরাজত ইত্যুক্তং ইলানীং তুমওলেন তজপং বিরাজত ইত্যাহ:। এরীতি অথেতার্থান্তরে। তে ইদং রূপং দক্ষেন ধৃতং বস্কুমওলং তেন চকাত্তি শোভতে শৃকেণ উচ্চো ধৃতো যো ঘন তেন ভ্রদা অতি মহতা বিত্রমো বিরাসঃ ॥ ৪১॥

জগতাং জক্ষানাং তছুবাং স্থারটেরঃ সহ বর্ত্তমানানাং লোকাল্ল বাসস্থানার্থং তে পদ্মীং জগতাং মাতরং যতন্ত্বং পিতাসি এবং

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

তত এব অয়ীময়মিপি ভূমওলভানীরেন শ্লোচ্বনেম কুলাচলেক্সস্য ববৈধব বিজ্ঞাে ভব্তি তথা বিজ্ঞাে তব রূপং চকা-ভীত্যর্থঃ॥ ৪১। ৪২। ৪২। ৪১। ৪১॥

बीविधनाथ ठक्कवद्वी ।

ফলম্পৃ হারাহিত্যং তদ্মুক্তা বা ভক্তিক্তরৈবাল্মনো মনসো জয়ক্তেনামুভাবিতং জ্ঞানং স্ব বিষয়কং যেন তদ্মৈ। অতএব বিদ্যাশুরবে। দলামি বুদ্ধিযোগন্তং যেন মামুপবাস্তি তে ইতি স্বভ্রে স্বৎ প্রাপকং জ্ঞানং স্বমেব দাতুমর্হদীতি ভাব: ॥ ৩৯ ॥

আহো পৃথিব্যা ভাগ্যং যাং তং ধংসে ইতি ডাং বর্ণয়তি দংষ্ট্রেতি। হে ভূধর সভূধরা স পর্বতা। বনাৎ জলাৎ সপত্রপল্লিনীতি তস্যাঃ কোরক কুটালাদিভিক্তনীত পর্বতা উপ্যিতা ॥ ৪০ ॥

ৰথা ছামানা খতা ভঃ শোভতে তথা ভ্ৰাপি স্বভক্তমা খত ছং শোভদ ইত্যাহ:। অমীতি কুণাচলেক্সস্য মহাপৰ্কতিস্য শ্লেণ উঢ়ো খতো বোষনো মেনতেন বিভ্ৰম: শোভা বধা ॥ ৪১॥

কিং যুমাকমভীব্দিতং তদ্ক্রতেতি চেণত আহং সংস্থাপরেতি লোকায় বাসস্থানার্থং তে পদ্ধীং জগতাং মাতরং যতভাং পিতাসি।

যে মনের নিশ্চলতা হয় তাহাতে যে জ্ঞান দাক্ষাৎকার হয়, তুমি দেই জ্ঞান স্বরূপ, আর তুমিই জ্ঞান প্রদান করিয়া থাক, অতএব তোমাকে নমস্কার ॥ ৩৯॥

হে ধরাধর। মন্ত গজেন্দ্র জলক্রীড়া করণানস্তর পত্তাদি সহ পদ্মলতা ধারণ করিয়া জল হইতে নির্গত হইলে সেই পদ্মিনীর যে রূপ শোভা হয় ছুমি আপনার দন্তাগ্রভাগ দারা পর্বতাদির সহিত এই ধরাকে ধারণ করাতে ইহা তক্রপ শোভা পাইতেছে ॥ ৪০ ॥

অপর হে ভগবন্! শিধরদেশে মেদ ধ্রত হইলে তছারা প্রধান কুলাচল অর্থাৎ মহাপর্বতের যেরপ বিলাস হয়, তোমার বেদময় এই শৌকর বপুঃ,দন্তগ্বত ভূমগুল দারা সেই ক্লপ শোভা পাইতেছে ॥৪১

ছে বিভো। তুনি এই লগতের থিতা এবং এই ধরা তোমার পদ্মী অতএব ইনি লগতের মাতা, তুমি এই সমস্ত ছাবর ললমের বাসছান নিমিত ইহাঁকে স্বাক্ রূপে স্থাপন কর, তাহা হইলে আমরা ইহাঁর উপরি অবস্থিত হইরা তোমার সৃহিত আমাদের মাতা এই ধরাকে নমসার ও ইহাঁর পরিচর্যা। বিধেম চাস্যৈ নমনা সহ ত্বয়া যদ্যাং অতেজোং গ্রিমিবারণাবধাঃ ॥ ৪২ ॥
কঃ আদধীতান্যতমন্তব প্রভাে রসাঙ্গতায়া ভূব উদ্বিহণং।
ন বিশ্বয়াধসো ত্বয়ি বিশ্ববিশ্বয়ে যাে মায়য়েদং সক্তজেহতিবিশ্বয়ং॥ ৪০ ॥
বিধ্বতা বেদময়ং নিজং বপুর্জনন্তপঃ সত্যনিবাসিনাে বয়ং।
সটাশিধােজ্ত শিবামু বিশ্বভি বিম্বামানা ভূশমীশ পাবিতাঃ॥ ৪৪ ॥
স বৈ বত ভাইমতিস্তবৈষতে যঃ কর্মাণাং পারমপারকর্মণঃ।

औषत्रयांगी।

সতি তত্ত্ব স্থিতাঃ সন্তঃ ত্বরা পিত্রা সহ অবৈস্য মাত্রে নমসা বিধেম নমনং করিব্যামঃ নমস্বারেণ পরিচরেমেতি বা। স্বতেজঃ ধারণ শক্তিং বাজিকাঃ মত্ত্বেণারিমরণাবিব অধাঃ নিহিতবানসি ॥ ৪২ ॥ •

ইন্ধ প্রাতি মুক্রং কুতং ইন্ডাহঃ ক ইতি হে প্রভো তব প্রা কুতং ভূব উদ্বিহণং উদ্ধাণ স্থান: কঃ শ্রদ্ধীত প্রবেৎ অধ্যবক্তেনিতার্থ:। পরি পুনরসৌ বিশ্বরো ন ভবতি। বতো বিশে সর্কে বিশ্বরা যশ্বিন্ কুতঃ যো ভবান্ অতি বিশ্বরং অত্যকুতং ইনং বিশং ক্রিয়াবিশেষণং বা সক্ষে স্টেবান্ ॥ ৪০॥

বিশ্বরং দর্শয়ন্ত: প্রার্থয়তে বিধুবতেতি ছাত্যাং। সটানাং শিখাভিরত্রৈঃ উদ্ধৃতাঃ উচ্চলিতাঃ বে শিবা অধুবিন্দবঃ তৈঃ সিচ্যনানা বয়ং পবিত্রী ফুতাঃ ॥ ৪৪ ॥

তব কর্ম্মণাং পারং য এব তে অবলোকয়তি জাতৃমিক্তীতার্থঃ। যস্য তব যোগমায়ায়া ঋণৈঃ সহ যো যোগ তেন মোহিতং।

क्रमगमर्छः।

স বৈ ইতি। এবতে ইতি ভৌবাদিক্স্য এষ্ গভাবিতাস্য অকারাত্বন্ধস্য ক্লপং। ততো গতার্থবাৎ জানাতার্থবেন অবলোক্য-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

অভব্যা পিত্রা সহ অত্যৈ মাত্রে নমসা বিধেম নমস্বারং ক্রবাম। স্বতেজঃ ধারণশক্তিং তাং অধাঃ ধৃতবানসি। অরণো অগ্নিং বাজিকা মধা ধারমন্তি তথা ॥ ৪২ ॥

তবেষাং লীলামনৈাছ ছরাং বরং গারাম ইত্যাছ:। ক ইতি হে বিভো ভূব উদ্বিহণং তব ছংকর্ত্তং ছতে। হততম: কঃ শ্রদ-ধীত কর্তুং স্বাহের অধ্যবতে দিতার্থ: ॥ ৪০ ॥

পৃথিবাদ্ধরণং ছবি ন বিশ্বরো বিশ্বয়ঃ পুনররমেব যন্তরিবেণ মহার্ণকে নিপততা বস্ততক্ষাব্যের কৃপাপরবলেন ছবা স্বাস্কালনা-মৃতৈকর্মোর্দ্ধং প্রাপিতৈর্বরম্বরঃ কৃতাধী কৃতা ইত্যাহঃ বিধুষ্তেতি ॥ ৪৪ ॥

এবং দ্বলীলাং কতি বর্ণয়ামো বয়ং সর্ববেদবিদোপি ভল্লীলাসিদ্ধোং কণমপি সামস্ভোন ন বিয়ঃ কে পুনরন্যে বরাকা ইত্যাতঃ

করিতে পারি। প্রভো ! যাজিকেরা যেমন মস্ত্র দারা অরণিতে অগ্নি আধান করেন তাহার স্থায় তুমি এই ধরণীতে আপনার ধারণা শক্তি নিহিত করিয়া রাধিয়াছ॥ ৪২॥

প্রভো! তুমি এই যে রদাতল গতাধরার উদ্ধার করিলে এবিষয়ে তোমা ভিন্ন অন্য কোন্ ব্যক্তির অধ্যবসায় হইতে পারে ! কিন্তু তুমি যে ঐ কর্মা করিলে ইহাতে তোমাতে আমাদের বিশায় হয় না, যে হেতু তুমি দকল বিশায়ের আকর ফলতঃ তুমি যথন আত্ম মায়া দারা অতি বিশায়কারি এই বিশ্ব সৃষ্টি করিয়াছ তখন তোমাতে কোন বিশায় নাই ॥ ৪০ ॥

হে ঈশ। তুমি যে আপনার বেদময় শৌকর বপুঃ কম্পন করিতেছ তাহাতে তোঁমার সটার শিখাগ্র দারা যে সমস্ত পনিত্র অমুকণা উচ্ছলিত হইতেছে আমরা জনঃ তপঃ সভা লোক নিবাসী হইলেও ঐ জল কণা দারা গতিশয় পবিত্রীকৃত হইলাম ॥ ৪৪॥

হে ভগবন্! ভোষার কর্ম অপার, যে ব্যক্তি ভোমার কর্মের পার আনিতে অভিলাধ করে সে

>99

यरन्यांभनात्राक्षणरयाभरनाहिकः विषरं मुनकः छभवन् विरश्हि भः ॥,८० ॥

बिरिमराबंद्र छेवाहा 💮 🤏 🕾

ইত্যুপন্থীয়মাহনোগে মুনিভি এ ক্লবাদিভি:। সদিলে বধুরাজান্তে উপাধন্তাবিতাবনিং। স ইখং ভগবাসুকী ং বিষক্দেনঃ প্রজাপতি:। রসায়া লীলয়োমীতামন্দ্রু শুস্ত যথোঁ হরি:॥ ৪৬ য এবমেতাং হরিমেবসে। হরে: কথাং হুভদ্রাং ক্রথনীয় মায়িন:।
শুণীত ভক্ত্যা প্রবয়েতবোশতীং জনার্দ্নো হস্তাশু হুদি প্রসীদৃতি ॥ ৪৭ ॥

अभवतामी।

অতো বিশ্বত মঙ্গলং বিধেহি যথা দামচিত্ত্যানম্ভ শক্তিং জ্ঞাদ্বা ভক্ষেৎ তথাসুগৃহাণেত্যুৰ্থ: ॥ ৪৫ ॥

উপস্থীরমান: স্তর্মানা অধ্যাক্রান্ত ইতি জলেপি ধারণ্শক্তাাধানং দর্শরতি অবিতা ক্রকঃ ॥ ৪৬ ॥

কথনীরানি মারীনি মারাবস্তি চরিত্রাণিবক । শ্রব্যেৎ প্রাব্যেৎ ক্রম্মার্গং উপতীং কমনীরাং হৃদি প্রসীদতি অমনসি সন্ধ্বাতীত্যর্থ:॥ ৪৭ ॥

ক্রমসন্ধর্ভঃ।

তীতার্থ:। তদ্য চাদস্তবাৎ জাত্মিক্তীতোবার্থ: ॥ ৪৫ ॥ যথৌ বলোকমিতি লেব: ॥ ৪৬ ৪

এবং হিরণ্যাক্ষিত্যাদি বৃক্ষ্য । হরিষেধন: লোকজ্ঃধহরসকল্প কথনীরা প্রাশস্যা য। মারা রূপা ভাক্তুজন্য। প্রাশস্ত্রেবাহ। পূণীতেতি ॥ ৪৭ ॥

धीविधनाथठकवर्ती।

স বৈ ইতি যন্তব কর্মণাং পারং এবতে জানাতি জানামীতাভিমন্তত ইতার্থঃ। এৰ গতৌ ভৌবাদিকঃ। নহু মায়া মোহিতো জীবোন জানাতু নাম মারাতীতো মন্তকো নারণাদির্জানাত্যেবেতি ভবাহ যন্ত তব যোগমায়া চিচ্ছক্তিবৃত্তিভেলঃ গুণযোগো গুণ মেলনরপোহবিদ্যাত ভাজাং মোহিতন্তে কর্মণাং পারং জাস্যতীতার্থঃ অতঃ সহিধেহি যথা জানীম ইতি মিধ্যাভিমানো ন ভবেদিতি ভাবঃ। সমন্তমপ্রাকৃতং প্রাকৃতক বিশং তত্র যে প্রাকৃত্তভান্তে যোগমায়য়া তন্মাধুর্ঘেরু নিমজা মোহতে। যে চ স্বদন্তে জীবান্তে মায়য়া বৈষয়িক স্পত্থেরু নিমজা মোহতে ইতি কল্পে কর্মণাং পারং জাল্ডতীতার্থঃ। অতঃ পরিধেহি যথা জানীম ইতি মিধ্যাভিমানো ন ভবেদিতি ভাবঃ॥ ৫॥

উপস্থীয়মান: স্বত্যা পরিচর্য্যমাণ: সলিলে সলিলোপরি স্বধুরাক্রান্ত ইতি ম্বলেপি ধারণশস্ত্যাধানং দর্শয়তি অবিতারক্ষঃ॥
যবৌ স্বলোক্মিতিশেষ:। অন্তর্গধে ইতি বা॥ ৪৬॥

ছরত্তী ভক্তসংসারং নাশরতী নেধা বৃদ্ধিবিদ্ তস্য কথনীয়া বর্ণনীয়া মায়া মায়াশক্তিঃ কুপাবা স্বর্গক বা তহতঃ প্রব্যেত প্রাব্যেৎ উশ্তীং কমনীয়াং ॥ ৪৭ ॥

অতি মন্দমতি, প্রতা ! তাহা কি কাহারও অবগত হইবার সাধ্য আছে? তোমার যোগ মায়ার গুণের সহিত যে যোগ তদ্ধারা এই সমস্ত জগৎ মোহিত হইয়া রহিয়াছে অতএব হে ভগবন্ ! এই জগতের ক্ষেম বিধান কর এবং লোকে তোমাকে অচিস্তা ও অনম্ভ শক্তি জানিয়া যে প্রকার ভলনা করিতে পারে সেই রূপে অমুগ্রহ কর ॥ ৪৫॥

মৈত্রের মুনি বিছরকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন বংশ। ব্রহ্মবাদি মুনিগণ এই প্রকারে তব করিতে থাকিলে রক্ষাকারী সেই বরাহ রূপী ভগবান্ আপনার খুর ছারা আক্রান্ত সলিলের উপর অবনিকে ছাপন করিলেন। বিছর। ভগবান্ হরি এই রূপ রসাতল হইতে এই পৃথিবীর উদ্ধার করিয়া জলো-পরি সংখ্যাপন পূর্বক অন্তর্হিত ইইলেন॥ ৪৬॥

ৰৎস। সেই ভক্তজনের সংসাধানাশন ব্রাহরূপি ভগবানের চরিত্র কথনার্হ এবং সায়াবিশিক, ভাঁহার এই ভ্যান্তল কথা যে ব্যক্তি ভক্তি পূর্বকে আব্দ করে অথবা কাহাকেও এবণ করার ভগবান্ ভৎক্ষণাৎ আপনার মনে তাঁহার প্রতি প্রশাস হন ॥ ৪৭ ॥ তিমান্ প্রসন্মে সকলাশিবাং প্রজো কিং ছ্ব্ল'ভং তাভিরলং লবাছাভি:।
অনন্য দৃষ্ট্যা ভক্ষতাং গুহাশয়ঃ স্বয়ং বিধত্তে স্বগতিং পরঃ পরাং ॥ ৪৮ ॥
কো নাম লোকে পুরুষার্থসারবিৎ পুরা কথানাং ভগবৎ কথাস্থবাং।
আপীয় কণাঞ্জলিভির্তবাপহামহো বিরক্ষ্যেত বিনা নরেতরং ॥ ৪৯ ॥

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়ক্ষমে বিহুর মৈত্রের সন্থাদে পৃথিব্যদ্ধরণং নাম ত্রেয়োদশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ১৩ ॥ # ॥

श्रीभवत्यागी।

যদাপি স্বলভা তথাপি তা ন প্রার্থনীয়া ইত্যাহ তাভিরাশীর্জিরলং লবাস্বভিঃ তৃচ্ছাভিঃ নচ তদা ভলনত বৈফলাং শঙ্কনীয়-মিত্যাহ। ভগবস্তলন ব্যতিরেকেন ফলান্তর দৃষ্টিং বিনা ভজতাং খণদ প্রাপ্তিং স্বয়মেব বিধতে। গুহাসর্থাদহৈতৃকীং ভক্তিং জানন্॥ ৪৮ ॥

আতঃ কো নাম পুরা কথানাং পূর্ণে বৃত্তানাং মধ্যে কথঞিদাপীয় বিরক্ষ্যেত বির্মেৎ। নরেতরং পশুং বিনা ॥ ৪৯ ॥
॥ * ॥ ইতি ভৃতীয়ে অয়োদশঃ ॥ * ॥

क्रमममर्जः।

সর্বে ফলদেহণি তংগ্রাসাদে পরমফলমাহ তামিরিতি। স্বগতিং স্বস্কৃতিরপং জ্ঞানং ॥ ৪৮ ॥ ততক্ত সাক্ষেত্র। তৈঃ পীব্রধারের তাক্তুমুশক্যা ভবতীতি ব্যতিরেকেণাহ ক ইতি ॥ ৪৯ ॥ ॥ ৯ ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্তরে শ্রীকীবপোস্থামি ক্বত ক্রমসন্দর্ভক্ত ক্রমেদশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ ॥ * ॥

এবিশ্বনাগচক্রবর্ত্তী

কিং বস্তু ত্বপত্ত অপিতৃ সর্ক্ষমেব স্থলতং তদপি তাতিবাশী ভিরলং লবাছাতিঃ ক্ষুড়াভিস্বজ্ঞাভিরিত্যর্থ:। নচ তদা ভজনস্থ বৈফল্যং শঙ্কনীরমিত্যাহ অনন্তদ্ট্যা ভগবভজনব্যতিরেকেণ ফলাত্তর দৃষ্টিং বিনা ভজতাং স্থপদ প্রান্থিং স্থরমেব বিশ্তে গুহা-শ্রছাদহৈতৃকীং ভক্তিং জানরিতি স্বামিচরণানাং ব্যাধ্যা ॥ ৪৮॥

ভক্তিরের সর্বপ্রধার্থমহাফলমিতি জানরের সারজ উচাতে। ভক্তিঃ প্রধার্থসাধনমের মত্ স্বতঃ ফলরুপেতি বাচক্ষাণস্ত পশুরেবেত্যাহ কোনামেতি। পুরা কথানাং পূর্বহুৱানাং মধ্যে ভবাপহাং সংসার্থ্যংসিনীং অহো আশুর্ব্য নরেতরং পশুং বিনা কোবিরজ্যেত যো বিরজ্যেত স পশুরেবেতি তেন ঔৎকণ্ঠা বাশক্ষর) মুহুর্দ্যমান ওচ্চাপি চিত্তবিভিশং শনকৈর্বিযুঙ্জে ইতি বক্ষামাণ্যক্ষণস্য যোগিনঃ পশুরুং ব্যঞ্জিতং ॥ ৪৯ ॥

॥ *॥ मात्रार्थमर्निन्ताः हर्षिष्टाः छक्टाउठनाः । , खात्रामनख् कीरम्ना मक्कः मक्कः मक्कः मक्कः मक्कः मक्कः

অহে বিছুর! সকল মঙ্গলের কর্তা সেই ভগবান প্রসন্ধ হইলে আর কি কোন বস্তু ছুল্ল ভাকে ?
তথন বরং সকল কল্যাণ ভুচ্ছ ও ব্যর্থ বোধ হয়। বিছুর! যে যে ব্যক্তি নিক্ষাম ভক্তি পূর্বাক একান্তভাবে ভগবানের ভল্লনা করেন, সর্ববান্তর্যামী ভগবান তাহা জানিতে পারিয়া তাহাদিগকে আপনার পদ
স্বরং বিধান করেন, অত এব ঐহিক স্থু ভুচ্ছ বোধ হইলেও ভগবন্তজ্বনের ক্লাচ কৈল্যা হর না ॥ ৪৮
আহো! এই কারণেই নরেতর অর্থাৎ পশু ব্যক্তিরেকে পুরুষার্থ সারবেতা কোন রাজি পুরারন্ত
মধ্যে ভগবানের সংস্থা বিমোচনী কথারূপ ভ্যা কর্ণাঞ্জলি ছারা পান করিয়া বিশ্বত হয় ? ॥ ৪৯ ছ

প্ৰীপক উৰাচ

নিশম্য কৌশারবিণোপ্যবিতাং হরে: কথাং কারণশ্করান্ধন: ।
পুন: স প্রচহ তম্দ্যতাঞ্চলি ন' চাতিত্থো বিচুরো গ্রুত্ত । ১ ।
শীবিচুর উবাচ ।

তেনৈব তু মুনিশ্রেষ্ঠ হরিণা বজ্ঞমূর্ত্তিনা। আদিলৈত্যো হিরণ্যাক্ষো হত ইত্যমুশুশ্রুম ॥ ২ ॥ তদ্যচোদ্ধরতঃ কোণীং স্বদংষ্ট্রাগ্রেণ লীলয়া। দৈত্যরাজ্ঞস্যচ ব্রহ্মন্ কন্মাদ্ধেতোরভূন্মধঃ। শ্রদ্ধানায় ভক্তায় ক্রহি তব্দ্বম বিস্তরং। ঋষে নতৃপ্যতি মনঃ পরং কোতৃহলং হি মে ॥ ৩ ॥ শ্রীমৈত্রেয় উবাচ ॥

সাধু বীর ত্বয়া পৃষ্ঠমবতারকথাং হরে:। যঁত্তং পৃচ্ছসি মর্ত্র্যানাং মৃত্যুপাশবিশাতনীং ॥ ৪ ॥

अभवतामी।

চতুর্দশে নিদানত তবধে বজুমূচাতে। সন্ধায়াং কশাপাদগর্জসন্তবঃ কামভো দিতে: ॥ ১ ॥
তেনৈব বেন ভূমিক্লকৃতা অসু ওঞান দ্বন্ধাং ॥ ২ ॥
মুধো যুদ্ধঃ ॥ ৩ ॥
মাধুদে হেতঃ বন্ধাৰং হরেরবভার কথাং পৃদ্ধসীতি মৃত্যোঃ পাশং বিশাভরতি মোচয়তীতি ভথা ॥ ৪ ॥

व नेत्वाः मानः ।वनावताव (मावस्वाति क्या ॥ ह

ক্রমসন্দর্ভ:

তেনৈবেভি। বেন স্বায়স্ত্বে পৃথী সমুদ্ধে চাক্স্বেংপি তেনৈবেভার্থ: ॥ ১ ॥ ২ ॥ তক্ত চেভি চশস্বঃ পুনরর্থে ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

চতুর্বশে দিতিঃ সায়মকামং চকমে মুনিং। অহতেপেচ তদু ইপুত্রাভূৎশিইনপ্কা॥ •॥

চকার এবার্থঃ ॥ ১ ॥ তেনৈব যেন হরিণা স্বায়স্কুবে পূথী উদ্ধের তেনচ চাক্ষীয়ে হিরণ্যাকো হত ইতি ব্যাথ্যেয়ং ॥ ২ ॥ মুধো যুদ্ধঃ ॥ ০ ॥

হে বীর হরের্ছলীলাওজ্ঞবোঃ পৃষ্টমিদং সাধু যতঃ এতৎ প্রশ্লমিবেশ অবতারয়োর্বরাহ নৃসিংছয়োঃ কথাং পৃদ্ধসি ভবৈরকারগো-ক্তেনি তয়োরপস্থিতেঃ অস্তানপি কুতার্থয়িত্মিভ্যাই মর্ত্ত্যানামিতি ॥ ৪ ॥

চতুর্দশ অধ্যায়ে দিতির প্রার্থনা ক্রমে কশ্যপ সকাশাৎ সন্ধ্যাকালে তাঁহার গর্ত্তোৎপত্তি॥ । । শুকদেব কহিলেন মুনিবর মৈত্রেয় বরাহ রূপি ভগবানের কথা যাহা বর্ণন করিলেন তাহা প্রবণ করিয়া ব্রতধারি বিভূরের পরিভৃত্তি বোধ হইল না। তদীয় বিশুদ্ধ চরিত্র আরও প্রবণ করিতে ইচ্ছুক হইরা অঞ্জলি বন্ধন পূর্বক জিজ্ঞাসা করিলেন ॥ ১॥

হে মুনিসভম ! যে বরাহ রূপী ভগবান্ পৃথিবীর উদ্ধার করেন আপনকার প্রমুখাৎ প্রাত হইলাম, তিনিই আদিলৈত্য হিরণ্যাক্ষকে বিনষ্ট করিয়াছেন ॥ ২ ॥

হে অক্ষন ! ভগৰান শ্কর রূপ ধারণ করিয়া লীলাবশতঃ আপনার দন্ত দারা ধরার উদ্ধার করিয়াছিলেন, সে সময় কি কারণে দৈত্যরাজের সহিত তাঁহার যুদ্ধ হইয়াছিল ! হে ঋষে। ভগবানের
পবিত্র কথা অবণ করিয়া আমার মনঃ পরিত্ত হইতেছে না আরও শুনিতে বাসনা হইতেছে, অতএব
তাঁহার জন্ম রুভান্ত বিত্তর রূপে বলিতে আজ্ঞা হউক, আমি আপনার শ্রেদাবান্ তক্ত, আমার প্রার্থনা
পূর্ব করা আপনার কর্তব্য ॥ ৩ ॥

মুনিপুঙ্গব সৈত্তের বিহুরের এই রূপ প্রার্থনায় তাঁহাকে ধক্যবাদ প্রদান কর্ত কহিলেন হে বীর। তুমি উত্তম প্রশ্ন করিয়াছ, যে হেতু তুমি এই প্রশ্নছলে মর্ত্যগণের মৃত্যুপাশ বিমোচনী ভগবানের প্রবিতার কথা জিজাসা করিতেছ ॥ ৪ ॥ যরোতানপদঃ পুজো মূনিনা গীতঁয়ার্ত্তঃ। মৃত্যোঃ রুছৈব মৃদ্ধু জি বারু রোই ইরোই শাসং ॥ ৫ ॥ অথাতােশীতিহাসােহয়ং প্রুতো মে বর্ণিতঃ পুরা। জন্মণা দেবদেবেন দেবনিনির্ম্পুক্তি । ৬ ॥ দিতিদাকায়ণী কত্ত মারীচং কশ্যপং পতিং। অপত্যকামা চক্ষে সন্ধ্যায়াং অভ্যাদিতা ॥ ৭ ॥ ইউামিজিজ্বং প্রসা পুরুষং যজ্যাং পতিং। নিমোচত্যক আসীন্ময়াগারে স্মাহিতং ॥ ৮ ॥

अध्यक्षामी।

তদেব দর্শরতি যরা কথরা উপ্তানপদঃ পুত্রো জবঃ। মুনিনা মারদেন। অর্ত্তক এব। বদা জবার স্থনশাদিভি বিমান
মানীতং তদাস্য দেহত্যাগোহপেকিতঃ স্যাৎ ইতি মহা মৃত্যাবাসরেপি দেহং ন তভাবে। কিন্ত সোণান ইব ভসা মৃত্যাে মৃতি
পদং দ্বা বিমানবাক্ত বিষ্ণুপদ্মারতঃ বক্ষাতি হি পরীত্যার্ভ্যার্ড্যার্থ্যাং কৃতস্বস্তারনাে বিজে:। ইরের তদবিঠাকৃং বিজ্জাপং
হিরপার্মিতি ॥ ৫ ॥

তয়ো: সংগ্রামে হেতুং বজুমিতিহাসং প্রত্তীতি অথেতি। অনুপৃদ্ধতাং দেবানাং ব্রহ্মণা বর্ণিত ইতিহাসো ময়া শ্রন্তঃ ॥ ७ ॥

দেবপ্রশ্ন প্রস্তাবায় প্রথমং হিরণ্যাক্ষ্য হিরণ্যকশিপুৎপত্তি প্রসক্ষমান দিতিরিত্যাদিনা যাবদধ্যার সমাপ্তি মরীচেঃ পুত্রং কল্পপং স্বাছয়ঃ কাম জেনান্দিতা অতঃ সন্ধ্যায়ামেব কামিতবতী ॥ ৭॥

তদণ্যগ্রিহোত্রশালায়াং তত্রাপি সমাহিতং অগ্নি জিহ্বা যক্ত যজ্বাং বজানাং পতিং পুরুষং শ্রীবিষ্ণুং॥৮॥

ক্রমশন্তঃ।

যরা যস্যা: প্রভাবেণার্জি এব সদা সন্ অন্তকালেহিপি দেহত্যাগান্ম তোর্গ্রি অভিবৃষ্ণির কন্ধা হরে: পদমারুরেছ কিন্তর্জকন্ত মত্র কিশোরন্থ জ্রেয়ং। রাজন্তে লক্ষে ভজুবণং জাতমিতি যুক্তা লভাতে। রাজন্তবাগ্য বন্ধ আৰ্শ্রকাপেক্ষাৎ। পুত্রা-ছাৎপত্তি প্রবণাচন ॥ ৫॥ ৬॥

দিতিরিতি যুগাকং॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১১॥

শ্ৰীবিখনাগচক্ৰবন্তী।

ছরিকথৈৰ লগছদারিক্টিত্যক প্রমাণমাহ যথা কথ্যা মৃত্যোম্ ক্বীতি গ্রুৰস্যাস্তকালং জ্ঞাখা যদৈব মৃত্যুরাগত স্তদৈব স্থনলাণিতি বিমানমানীতমারোচুং গ্রুবঃ সোপানাবেষণে মৃত্যুমবস্থিতং দৃষ্ঠ্য ভজমিদং জাতমিতি তল্যৈব মৃদ্ধি পদং দশা শরীরমবন্মব্য বিমান মাকৃত্য বিষ্ণুপদং লগামেতি ॥ ৫ ॥

মে ময়া অহপুছ্ডাং দেবানাং সম্বন্ধেন ॥ ৬ ॥

দেবপ্রশ্নপ্রতাবার প্রথমং হিরণ্যক্ষহিরণ্যকশিপুৎপত্তি প্রসন্ধাহ দিতিরিত্যাদিনা যাবদধার সমাপ্তি মরীচেঃ পুরং কশাপং

বংদ। হরিকথাই জগদুজারিণী, তাঁহার মাহাত্ম্যের কথা কি বলিব ? উত্তানপাদ রাজার পুত্র ধ্বন বালক হইয়াও দেবর্ধি নারদের প্রগীত হরিকথা ছারা মৃত্যুর মন্তকে পাদ নিক্ষেপ করত বিষ্ণুপদে ছারোহণ করিয়াছিলেন অর্থাৎ হরিকথার প্রভাবে ধ্রুবের বিষ্ণুপদে আরোহণ নিষিত্ত যখন হুনন্দাদি পার্বদগণ কর্ত্ব বিমান আনীত হয়, তখন তাঁহার দেহত্যাগ অপেক্ষিত হইয়াছিল, কিন্তু মৃত্যু আসম্ হইলেও দেহত্যাগ করেন নাই, সোপানের ন্যায় মৃত্যুর মন্তকে পদার্পণ করিয়া স্পরীরে বিষ্ণুলোকে গমন করেন। ৫॥

আহে বিছুর! হিরণ্যাক্ষের সহিত বরাহরূপি ভগবানের কেন সংগ্রাম হয় এ বিষয় দেবগণ এক্ষাকে জিল্তাবা করিয়াছিলেন, এক্ষা তাঁহাদিগের নিকট যে ইতিহাস বর্ণন করেন তাহা আমি তনিয়াছি বলি

দক্ষকস্তা দিতি অপত্য কামনা করিয়া আত্মপতি মরীচিতন্ম কণ্যপের স্মীপে রমণার্ধ প্রার্থনী করিয়াছিলেন। ঐ দিতি কামণরে অর্দিতা ছিলেন, এই কারণেই সন্ধাহালে ॥ १॥

यथन मृश्य অञ्चार्टल याहर उहित्तन दमहे ममदब्रहे अधिरहाळगानाव दव श्रादन के मूनि वक्क गढि श्राह

এদিতিক্লবাচ্।।

এব সাং সংক্রতে বিশ্বন কাম আন্ত শরাসনঃ। ছুনোতি দীনাং বিক্রম্য রম্ভামিব মতঙ্গকঃ ॥ ৯॥ ভদ্তবান্ দহুমানায়াং সপদ্মীনাং সমূদ্ধিভিঃ। প্রজাবতীনাং ভদ্রত্তে ময্যুধ্কোমমুগ্রহং॥ ১০॥ ভর্তবার্থারুমানানাং লোকানাবিশতে যশঃ। পতি র্ভবন্ধিয়ে যাসাং প্রজয়া নমু জায়তে॥ ১১

डी धतवामी।

ক্লপণাং ৰহুভাবিণীমিতি বক্ষাতি। অত এব মামিতি ছাভ্যাং কার্পণাং ভর্জরীতি চহুর্ভিঃ বহুভাষণং বর্ণাতে ছুনোতি পীড়য়তি। বিক্রম্য শৌর্যমাবির্ভাবা রস্তাং কদলীং ॥ ৯ ॥

व्यायृङ्काः नर्काला यूनका नमाक् करता हु ॥ ১० ॥

ভর্তরি প্রাপ্ত বছমানানাং স্ত্রীণাং বশং লোকান্ আবিশক্তে ব্যাপ্রোতি প্রজন্ম। পুত্রপেণ তজ্জারা জায়া ভবতি যদস্তাং জায়তে পুনরিতি প্রতেঃ ॥ ১১ ॥

এবিখনাগচক্রবন্তী।

হুচ্ছয়াদিতা কামণীড়িতা অতঃ সন্ধ্যায়ামেব ত্ত্রাপ্যথিহোত্তশালায়াং ত্ত্রাপি সমাহিতং কুত্রমাধিং সন্ধ্যায়ামপি নিমোচভার্কাত-ময়কাল এবেতার্থঃ। অয়ের জিহবা ধস্য তং বজুষাং যজানাং পতিং বিষ্ণু: ॥ ৭ ॥ ৮ ॥

এর মামিতি মুজিতনেত্রে পতে) কায়িকাশ্চাক্ষ্যাশ্চ অভিযোগা অকিঞিৎকরা এব বাচিকেলপি মধ্যে শব্দোধা অর্থোখাশ্চ ব্যল্পা:। পরমেখরাভিনিবেশিত বৃদ্ধৌ কশ্মণেনাবকাশং লভস্ক এবেভুত্তমালনানামভিধরৈর পূরুষে সম্ভোগপ্রার্থনা যদাপি নৈব স্বভাব ক্তদিপি কন্দর্পগীড়য়োন্নাদিতাদিভিল জ্ঞাশকে নিগিলস্থীব সমাধিভলার্থমুকৈরার এব সাক্ষাদিব দৃশ্মণান ইত্যর্থ:। দংকৃতে ইতি যদাহমেকাকিন্যস্থান্ধং তদৈব মম কিমক্রিয়াদিতি পতে) তামিলের দোষো নাজঃ। দীনাং ছনোতীতি স্বং পতিঃ কর্থং মাং ন রক্ষসীতি ভাবঃ। নতু লজ্ঞাং কর্থং সহসৈবাহাসীক্ষরাহ রম্ভামিবেতি যদি প্রাণা এব নশ্মক্তি তদা কিং লজ্জ্যেতি ভাবঃ॥ ১॥

নচ কেবলমহং কামাতুরৈব রতিং বাচে কিন্তু পুত্রাথিন্যপীত্যাহ তদিতি। আযুক্তাং দর্পতোভাবেন করোতু॥ ১০ ॥
তথ প্রসাদাক্ষপত্মিনী পুত্রবতীচ ভ্রাদমিতাহে ভর্তরি ভর্তু: দকাশাদিত্যর্থ:। প্রাপ্তবহুদমানানাং স্থীনাং যশং লোকান্
ব্যাপ্নোতি প্রজন্ম পুত্ররূপে। তজ্জারা জায়া ভবতি ফ্লস্যাং জায়তে পুনরিতি শ্রুতে যথা ভবধিধঃ পতিঃ প্রজন্ম হেতুনৈর জায়তে
ভ্রতি অতাহং প্রজাবতী কথং ন ভবেয়নিতি ভাবঃ॥ ১১॥

পুরুষ বিষ্ণুর জিহ্বা স্বরূপ অগ্লিতে হোম করিয়া সমাধিস্থ ইইয়াছিলেন ॥ ৮ ॥

সেই স্থানেই দিতি আপনার অভিপ্রায় ব্যক্ত করিয়া কহিলেন, হে বিদ্ধন্! কামদেব শরাসন গ্রহণ পূর্ব্বক বিক্রম প্রকাশ করিয়া মতঙ্গজ যেমন কদলী বৃক্ষকে ক্লেশ দেয়, তাহার ন্যায় আপনার নিমিত্ত আমাকে যাতনা প্রদান করিতেছে॥ ৯॥

অতএব আপনি আমার প্রতি সম্যক্ রূপে অনুগ্রহ প্রকাশ করুন, আমি সপত্নীদিগের সম্জি দেখিয়া নিরন্তর হুংথে দগ্ধ হইয়া থাকি, প্রভো! আমি পু্ত্রার্থিনী আমার প্রতি অনুগ্রহ করিলে আপ-নার মঙ্গল হইবে॥ ১০॥

হে ভগবন্। আপনার সদৃশ পুরুষ যে সকল স্ত্রীগণের পতি এবং যাহার। এবিষধ ভর্তার নিকট বহুমান প্রাপ্ত হয়, তাহাদের যশঃ জগতে ব্যাপ্ত হয়। থাকে, ফলতঃ পতি স্বয়ং প্রজারপে জায়াতে জয় গ্রহণ করিয়। থাকেন, ইহাতে যোহিৎদিগের পুল্রাদি হইলে যশঃ বিস্তার না হইবেই বা কেন ?।
ভত্তের আপনকার প্রসাদে আনি পুল্রবাড়ী ও যশস্থিনী হইতে পারিব॥ >>॥

পুরা পিতা নো ভগবান্ দক্ষো তুহিত্বৎসলঃ। কং রণীত বরং বৎসা ইত্যপুদ্ধত নঃ পুথক্।
স বিদিত্বাত্মজানাং নো ভাবং সুস্তানভাবনঃ। ত্রেয়োদশাদদাতাসাং বা তে শীলমসুব্রতাঃ ॥ ১২ ॥
অথ মে কুরু কল্যাণং কামং কমললোচন। আর্ত্তোপদর্পণং ভূমন্নমোঘং হি মহীয়দি ॥ ১৩ ॥
ইতি তাং বীর মারীচঃ কুপণাং বহুভাবিণীং। প্রত্যাহাসুনয়ন্ বাচা প্রস্কানক কমলাং ॥ ১৪ ॥

श्रीभत्रश्रामी ।

নোহস্মাকং পিতা নোহস্মান্ পৃথক্ অপৃত্তং। অরং ভাবঃ অরো দশানামপাস্মাকং স্বরি ভাব সাম্যে বৈষ্মাচরণং তবাহ-চিত্নিতি॥ ১২ ॥

সহীরসি ত্বাদৃশে মহন্তমে মোহং ন ভবতি হি॥ ১৩॥ প্রেক্তানক্ষেন কত্মলং মোহো যদ্যাঃ তাং॥ ১৪॥

ক্রমগন্ধ :।

স ইতি তেন পদস্তাবৃত্তা চতুর্থার্থ: ষষ্ঠার্থন্চ যোজাঃ ॥ ১২। ১০। ১৪। ১৫ ॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবতী ।

কিঞ্চ বিবাহাৎ পূর্বদেবাহং দ্বানুরাগিনীতি প্রত্যাধ্যেরবাক্যো ন ভবিতুমর্হসীত্যাহ পুরেতি নোহস্মাকং পিতা নোহস্মান্ অপূচ্ছেৎ॥

নো ভাবমিতি লক্ষ্যা দ্বামাগৃহতীনামপ্যশাকমিঙ্গিতেনৈব জনাস্তর দারা সহসা জ্ঞাদ্বেত্যর্থ: তাসাং ছহিত্ণাং মধ্যে তেন অয়োদশানাং মধ্যে কণমহমেবাপুজিণীতি তবৈষম্যনিদ্মত্চিতমিতি ভাব: ॥ ১২ ॥

নমু অরমণার্থ: সায়ং মৎসমাধিভঙ্গে যতমানা ত্বং কথং মৎসমশীলেতাত আহু আর্ত্তোপসর্পণমিতি সংপ্রত্যহুদার্ত্তা কিং করোমি নার্ত্ত: কালমণেকত ইতি শাস্ত্রং ত্বং প্রমদয়ালু জানাস্যেবতি ভাবং ॥ ১০ ॥

হে বীরেতি যথা ভবদিধা ধর্মবীরা তথা ন কশ্যপ ইতি যতোহ্দুন্মরের প্রত্যাহ নতু সকোপকটাক্ষং ভর্জন্ধিতি। যদি কৃত্রিমমণি কোপমদর্শনিবাত্তদা তস্যাঃ কামপীড়াপি ভীত্যা অস্তরধাস্টেতবেতি ভাবঃ। প্রবৃদ্ধেতি নহ্নক্ষ্ণিতা অস্ত্রমং সহত ইতি ভাবঃ॥ ১৪॥

হে মুনে! আমাদিগের পিতা প্রজাপতি দক্ষ অতিশয় ছুহিতৃবৎসল ছিলেন, তিনি আমাদিগকে পাত্রসাৎ করিবার পূর্ব্বে বাংসল্য বশতঃ এক এক করিয়া পৃথক্ পৃথক্ জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন তোমরা কোন্ বরকে বরণ করিতে বাসনা কর তাহা বল। আমরা ত্রোদশঙ্কন তাঁহার কন্যা ছিলাম,তিনি আমা-দের সকলের অভিপ্রায় অবগত হইরা তেরজনকেই আপনকার হস্তে সমর্পণ করিলেন,আমরাও ত্রয়োদশ ভিগিনী সমানভাবে আপনকার অফুব্রত হইয়াছি, অতএব আমাদের তেরজনেরই আপনার প্রতি সমান ভক্তি, ইহাতে আপনকার বৈষম্যাচরণ উচিত হয় না ॥ ১২॥

অতএব হে কমললোচন! আমি যে কল্যাণ প্রার্থনা করিতেছি তাহা সম্পন্ন করিয়া দিউন। হে মহাশয়! আপনি মহত্তম, মহতের নিকট আর্ত্তজনের উপসর্পণা বিফলা হয় না, সম্প্রতি অমি আর্ত্তা কালাপেকা নাই, আপনিও শাস্ত্রজ্ঞ এবং অতিশয় দয়াবান্, সকল্ই জানেন, এ বিষয়ে যাঁহা উচিত হয় বিধান করুন ॥ ১৩॥

ে হে বিছর। দীনা দিতি প্রবন্ধ মনকে মুগ্ধ হইয়া এবিষণ বছবিধ বলিতে আরম্ভ করিলে মরীচি জুলনয় মুনিবর কশ্যপ বাক্য দারা শাস্ত্না করত তাঁহাকে কহিলেন। ১৪। এব ভেছহং বিধান্তানি প্রিয়ং জীক বনিক্ষনি। ততাং কালং ন কং কুর্ব্যাৎ নিজিবৈন্দিনী যতঃ ॥ ১৫ নর্কাঞ্জনানুপানায় স্বাঞ্জনেশ কলজনান্। বাসনার্শনমত্যতি জলফানৈরিবার্শবং ॥ ১৬ ॥ যামাছরাদ্মনোক্ষাং প্রেয়ক্ষান্দ্র গানিনিন। যক্ষাং অধ্রমধ্যন্ত পুনাংশ্চরতি বিশ্বরং ॥ ১৭ ॥ যামাজিত্যে জিয়ারাতীন্ ছর্জয়ানিতরাজ্ঞানেঃ। বয়ং জ্বােন হেলাভির্দৃদ্ ছুর্গপতি র্ষধা ॥ ১৮ ॥ ন বয়ং প্রভবন্তাংস্তামকুকর্ত্রং গৃহেখরি। অপাায়ুবা বা কার্ৎস্কোন যে চাত্যে গুণগুরবং ॥ ১৯ ॥

ध्येथदवामी ।

সন্ধ্যাকাল বঞ্চনায় ভার্য্যাপ্রশংসা এব ইন্ডি পঞ্চভি:। ফচ: বক্সা: সকাশাৎ ॥ ১৫ ॥ সর্বাভ্যমামুপানারেন্ডি ডানপারালি নানেন কৃষ্ণ তন্তারয়ন স্বরং তরভীতার্থ: ॥ ১৬ ॥

আত্মনো দেহভার্কং কর্মস্ক ব্রো: সমাধিকারাং। যক্ত্রশানাং তাং দ্বামিতি ভূতীর শ্লোকেন সম্বর্ক: দৃষ্টাদৃষ্ট কর্ম ভারং বিজ্ঞর: নিশ্চিক্ত: ॥ ১৭ ॥

হেলাভি লীলিভি র্লয়েমেতি। সভার্যান্ত ইন্দ্রিয়াণি প্রায়েণ ততন্ততো ন সর্পন্তীতি ভাব: ॥ ১৮ ॥ তাং অনেকোপকারকব্রীং দ্বাং কাংর্মোন অনুকর্তুং প্রভ্রাপকারৈত্তৎ সদৃশী ভবিভূং ন প্রভবো ন সমর্থাঃ। বে চানো গুণ

क्रमममर्खः।

স্প্রীশ্রমানিতি বানপ্রাত্ত্তাপি গৃহস্থানেবোৎপত্তে: ॥ ১৬ । ১৭ । ১৮ | ১৯ । ২০ । ২১ । ২২ । ২০ ॥

এবিশ্বনাণচক্রবর্ত্তী

এষ তেহ্ছমিতি কণ্যপদ্য বহু বাধিবাদরচনা দায়ং কাল্যাপনার্থমেবেতি জ্ঞেরং ॥ ১৫ ॥
দ্ব্যাপ্রানিতি চতুরোপ্যাশ্রমানরাদিদানেন ক্ষত্রভারেরন্ স্বরং তরতীতার্বঃ ॥ ১৬ ॥
যাং স্ত্রিয়ং আত্মনো দেহদ্য অর্জো বা এষ যৎ পদ্ধীতি শ্রুতেঃ। স্বধুরং দৃষ্টাদৃষ্ট কর্ম্মভারং ॥ ১৭ ॥
ছুর্গপতিরিতি দদাবঃ থলু ছুর্গমাশ্রিতৈয়ব জনান্ লুঠ্বি যন্ত ছুর্গপতিন্তা ক্রথং প্রতব্বীত্যর্বঃ। ছুর্গোধ্তা বিষয় ভোগ এব ত্ত্তা
দৈবাৎ পতিতান্ ব্র্চার্যাদীনেব ব্রংশয়ন্তি নতু গৃহস্থান্ তেবাং ভোগবিশেষদ্য পাত্রবিহিত্ত্বেন ছ্রদৃষ্টাস্থ্পদ্যোৎ ॥ ১৮ ॥
তদেবং স্তির্মাশ্রিত্যেব গৃহস্থ এব স্থাবেন বিষয়মণি ভূত্তেক নরকেণি ন পত্তি নতু বিরক্ত ইত্যত্ত্বাং প্রাদিষাং স্থাং স্ত্রীকাতিং

হে ভীক । তুমি যাহা প্রার্থনা করিতেছ এখনি তোমার সেই অভিলাষ পূর্ণ করিয়া দিতেছি। প্রিয়ে ! যাহা হইতে ধর্ম অর্থ কাম এই ত্রিবর্গ দম্বন্ধিনী দিন্ধি হয়, কে না তাহার মানদ পূর্ণ করে ?॥ ১৫॥

গৃহত্ব ব্যক্তি গৃহিণী বিশিষ্ট হইয়াই আপমার আশ্রমের সহিত সকল আশ্রম লইয়া যেমন জলযান দারা সাগর উত্তীর্ণ হয় তাহার ন্যায় ত্থে জলধি পার হইয়া থাকে অর্থাৎ গার্হ হয় ধর্মাচরণে অন্নাদি দান দারা অত্যান্ত আশ্রমিদিগকে ক্লেশ হইতে মুক্ত করা যায়,তাহাতে আপনারও ছংখ বিমোচন হইয়া থাকে ॥ ১৬॥

অপর হে সানিনি! পঞ্চ যজ্ঞাদি কর্মে স্ত্রীপুরুষের সমানাধিকার হেতু শাস্ত্রে যাহাকে শ্রেমকাম ব্যক্তির দেহার্দ্ধ করিয়া বলিয়া থাকে এবং পুরুষ যাহার প্রতি আপনার দুফীদৃষ্ট কর্মের ভার সমর্পণ করিয়া নিশ্চিম্ব চিত্তে জমণ করিতে পারে॥ ১৭॥

অধিকস্ত তুর্গপতি যেমন তুর্গাঞ্জিত হইয়া অনায়াদে দহ্যদিগকে জয় করে তাহার ন্যার, আমরা যাহাকে আঞ্জর করিয়া অবলীলাক্রমে ইন্দ্রিয় দকলকে জয় করিতে পারি। প্রিয়ে। ঐ ইন্দ্রির গণ দামান্য নহে তাহারা প্রবল শক্ত, অভান্য আশ্রমিদিগের অতি তুর্কের ॥ ১৮॥

ंदर कृत्रवाति। वृति। ताई अद्यव कलकान कातिन गृहित, जानि नवल बाह्य ति अथवा जनाखरत्व

অথাপি কামমেততে প্রজাতি করকাণ্ডাং। যথা মাং নাতিরোচনি মুমুর্জ প্রতিপালর ॥ ২০॥ এয়া ঘোরতমা বেলা ঘোরাণাং ঘোরদর্শনা। চরন্তি যক্তাং স্তানি স্ততশাস্তরাশিই ॥ ২১॥ এতদ্যাং দাধ্বি সন্ধ্যায়াং ভগবাম স্তত্যাবনঃ। পরিতো স্ত্তপর্যন্তির্যোগতি স্তরাট্ ॥ ২২॥ শ্রানান চক্রানিল ধূলি ধূত্র বিকীর্ণ বিদ্যোত কটাকলাপঃ।

क्षित्रवामी।

গৃরবং গুণপ্রিয়া জেপি ন সমর্থা:। সংপূর্ণেনাপ্যায়্যা। বা শব্দাৎ ক্রয়াস্করৈরপি ন প্রভব ইত্যুক্তং ॥ ১৯ ॥
যদাপি তদক্তরণমশকাং। প্রজাতির প্রোৎপত্তা। নাতিরোচি ভি ন নিন্দান্ত প্রতিপাদর প্রতীক্ষণ ॥ ২০ ॥
নিন্দামগণরস্বীং ভীবরমাণঃ শ্রীক্রমভূবর্ণরতি। এবেতি সপ্রভিঃ বোরাণামেষা বেলা। স্বরক বোরদর্শনা ॥ ২১ ॥
ভূতপর্বন্তিঃ ভূতগগৈঃ ॥ ২২ ॥
.

তহি তৎ সন্মুধমাত্রং বর্জনীয়মিতি চেৎ তত্তাহ। শ্বশানে বশ্চক্রানিলঃ বাতমগুলী তন্মিন্ যা ধূলিঃ তয়া ধূয়ো বিকীর্ণো বিক্ষিপ্তঃ বিজ্ঞোতো ছাতিমান্ জটাকলাপো বসা। ভন্মনাবস্তঠঃ প্রাবৃতঃ অমলঃ কল্লবন্দেহো বসা। স দেবঃ ত্রিভিঃ সোমা-

এবিখনাণ চক্ৰবত্তী।

অমুকর্তুং প্রভাগকারৈভাদৃশী ভবিতৃং বরং প্রবজাতয়ো ন প্রভব:। কার্ছোন বদায়ুজেনাপি সংপ্রেনাপাায়ুবেতার্থ:। বা শক্ষাজ্বাভিরেরপি যে চান্যেহতিথর: গুণগৃধ্বভালাণ গ্রাহিণ: পকে ভামিতোকবচনেন বর্মিতি বছবচনেন অপ্যায়ুবেত্যাদিনাচ পরিহাস: স্টিত:॥ ১৯॥

এবং যদ্যপি স্বদম্করণমশক্যং তথাপি এতং কামং প্রকাতৈয় পুত্রোৎপত্তৈ করবাণি নম্বলং বাহিলাদেন কালবিলম্বয় ছঃখসহস্বা-ন্তুর্গং তল্পসূত্য প্রবিশেতি তত্রাহ। নাভিরোচন্তি ননিক্ষম্ভি প্রতিপালর প্রতীক্ষম । ২০ ॥

নিক্ষামগণস্থতীং ভীব্যমানঃ শ্রীরুদ্রমকুবর্ণয়তি এবেতি সগুভি:। বোরাণাং ভূতপ্রেতাদীনাং দর্শনং যস্যাং। অতএব বোর-তমা বোরাণামিতি বোরস্থামিক্ত্যর্থ:। বোরাণোবাহ চরস্কীত্যাদি॥ ২১॥

ভূতান্যপ্যগণয়স্তীং পুনরাহ এতস্যামিতি ॥ ২২ ঃ

ভহি তং সংম্থত্মাত্রং বর্জনীয়মিতিচেত্ততাহ শ্বশানে বশ্চক্রানিলঃ বাতমগুলী তত্ত ধূলি ধূত্রঃ বিকীর্ণে। বিক্লিণ্ডো বিদ্যোতো-ছাতিমান জটাসমূহো যস্য সঃ। ভন্মনা অবগঠ আবরণং বস্য তথাভূতোহ্মলঃ বর্ণবন্দেহো বস্য সদেব ত্রিভিঃ সোমার্কায়িনেতৈঃ

প্রভূপকার করিয়া তোমার অমুকরণ করিতে সমর্থ হইব না এবং যে সকল ব্যক্তি গুণপ্রিয় তাঁহা-রাও শক্ত হইবেন না ॥ ১৯ ॥

প্রিয়ে! যদিও প্রভ্যুপকার করিয়া ভোমার সদৃশ কর্ম করা আমাদের ছঃসাধ্য তথাপি পুজোৎ-পত্তি নিমিত্ত তোমার এই কামনা এখনি সম্পন্ন করিয়া দিতে পারি, কিন্তু লোকে আমাকে নিন্দা করিবে অতএব মৃহুর্ত্ত কাল প্রতীক্ষা কর॥॥২০॥

প্রিয়ে! এ সময় ঘোর রুদ্রগণের অধিকার,এই বেলা অতি ঘোরতমা এবং ঘোর দর্শনা অর্থাৎ ভূত প্রেতাদির এ সময়ে দর্শন হইয়া থাকে, এখন রুদ্রাসূচরেরা সর্বতি বিচরণ করিতেছে। ২১।

হে সাধিব। এখন সন্ধাকাল, এ সময় ভগবান্ ভূতভাবন রুদ্রও আপনার পারিষদ ভূতগণে বেপ্তিত হইয়া পর্যাটন করিয়াথাকেন॥ ২২॥

হে প্রিয়ে! তাঁহার সম্থ পরিত্যাগ করার উপায় নাই তাঁহার মন্তক মাশানম্থ বাঁত মণ্ডলীর ধূলি ছারা ধ্রবর্ণ এবং ছ্যুতিমান্ জটাকলাপ পবন বেগে বিক্ষিপ্ত ও নির্মাণ রজতমর দেই ভয়ে আরভ ইয় বটে, কিন্তু তিনি চক্ত সূর্য্য ও অমিরূপ তিন চক্ষ্মারা সকল স্থানের সকল বিষয়ই দেখিতেইন। বিষয়ে বিজ্ঞান করে বিষয়ে বিষয়িতিঃ পশ্যতি দেবরতে । ২৩ ।

ন যাস লোকে বজনঃ পরো বা নাত্যাদৃতো নোত কশ্চিনিগর্ম:।

বরং ব্রতৈ র্ফরণাপবিশ্বামাশান্মহে ২জাং বত ভূক্তভোগাই । ২৪ ॥

যাস্থানবদ্যাচরিতং মনীষিণো গুণস্তাবিদ্যাপটলং বিভিৎসবঃ।

शिभवत्यामी ।

র্কায়ি নেজঃ পশাতীত্যসোত্তর রেক্তিরপ্যস্থলঃ। একস্য কামতিরঃ পরম্পরং প্রতিরো ব্যবহিয়ত্তে অতো মম প্রতিসৌ তব দেবর ইতি সক্ষার্থমুক্তং ॥ ২০ ॥

নমু তথাপি মহবেদনালরণীয়ক্ত অবনক তব স সর্বাং ক্ষমেটেতৰ তত্তাহ। বস্য অজনাদি নাতি সমন্বাদীখনস্য। ঐপর্যামেবাহ বেন চরপেনাপৰিদ্ধাং নির্মান্যবং দ্বতন্তাকাং। তেন ভ্রুভোগামজাং মারাং তথারীং বিভৃতিং। সহাপ্রসাদ ইত্যাশাশ্বহে। ২৪ অনিবিদ্ধ স্থাত্যাগাৎ অসেই পিশাচ ইতি উপহাসো ন কার্যা ইত্যাহ দ্বাভ্যাং। বক্ত অনবদাং বিষয়াসক্রিশ্নাং আচরিতং

क्रममण्डः।

নৰু শ্বশানাদিগদদ: কথমতৈ বোচতে যদি রোচেত তদামাকং হুর্ত্তমপি রোচেত। কিঞ্ যদি দেবর ইত্যুচ্যতে তদামৎ সদৃশ এবাসৌ কথমেতাবদেব বিষয়: স্যাৎ তত্রাহ ন যস্যেতি। মহামুভাবদ্বাদমভ্যং সর্কসম্পৎ প্রদদ্বাৎ তভানাদরে দোব এব ভাদিতি ভাব:। অত্য ভুক্তভোগামিতি যচরণাপবিদ্ধামিতি চ গোকশিক্ষণায় তস্য কাদাচিৎকীং নীলামালগাসিদ্ধান্তিতঃ ॥২৪।২৫।২৬

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্তী।

পশাতীতোত্তদপরাধ ফলং সদ্যএব স নো দাস্যতীতি ভাব:। স চতেন নি:সহদ্ধো নাপ্যপরিচিতক্ষেত্যাই দেবর ইতি একসা জামাতর: প্রস্পরং ভাতরো ব্যবভ্রিত্তে অতো মম ভাতাসৌ তব দেবর ইতি দং বা কথং ন সজ্জনে ইতি ভাব: ॥ ২৩ ॥

নবার্ত্তরা সন্ধা লব্জাভয়াভ্যাং জলাঞ্জলিদ ও এব ঘরাপাত্র নভেতবামেব মহবেনাদরণীয়সা অজনসা তব সর্জমেবাসৌ দেবঃ ক্ষমেতৈবেতি তত্রাহ নবস্যেতি। যক্ত অজনাদিন তি ঈশব্বেনে সর্জতি সামাদিতি ভাব:। ঐশব্যমেবাহ বেন চরণেনাপবিদ্ধাং নিশ্বাল্যবন্ধ্বে তাঞাং ভ্কভোগামজাং তত্মতীং বিভ্তিং মহাপ্রসাদং বয়মাশান্মহে তত্তাপি এতৈঃ সকামা বয়ং তত্তিইবিষয়ভোজনএৰ ভ্রম ইত্যর্থ:॥ ২৪ ॥

ৰমু তস্যাপি দিগৰরতয়। সদৈৰ জিলা সহ মিধুনীভূল ভিঠত শিতাত আহি ভূৰণস্য সর্কাং সচ্চরিতমহং জানামীতি তত্ত হে কুমনীষিণি দিতে মতঃ স্কাশাৎ ভচ্চরিতস্য তবং শৃণিৃত্যাহ বস্য অনবদামনিশামেব চরিতং তৎসর্কাং মনীবিণ এবাদরেণ

প্রিয়ে! তিনি অশ্য ব্যক্তি নহেন তোমার দেবর, যাহারা এক জনের জামাতা হয়, তাহাদের পরস্পর ভাতৃ সম্বন্ধ হইয়া থাকে, তিনিও তোমার পিতার জামাতা অতএব আমার ভাতা হওয়াতে তিনি তোমার দেবর হয়েন, অতএব তুমি কি ইহাতে লজ্জিতা হইবা না ?॥ ২৩॥

প্রিয়ে! তিনি আমাকে বজন বলিয়া ক্রমা করিবেন এমত মনেও করিও না, ইংলোকে তাঁহার আত্মীয় অথবা পর কেহ নাই এবং তাঁহার আদৃত ও নিন্দনীয়ও কাহাকে দেখি না, প্রিয়ে! তাঁহার ঐশর্যের কথা কি বলিব তিনি যে মায়াময়ী বিস্তৃতিকে ভোগ করিয়া চরণ ঘারা নির্মাল্যবং দূরে পরি-ত্যাগ করেন, আমরা ব্রন্ত নিয়ম ঘারা তাঁহার আরাধনা করিয়া তছ্ছিই বিস্তৃতিকে মহাপ্রসাদ বলিয়া প্রার্থনা করিয়া থাকি ॥ ২৪ ॥

প্রিয়ে! তিনি অনিষিদ্ধ স্থা ত্যাগ করিয়াছেন বলিয়া তাঁহাকে পিশাচ বলিয়া উপহাস করিও না, পৃত্তিত সুকল অবিদ্যা পটল ভেদ করিতে ইচ্ছুক হইয়া তাঁহার বিষয়াসক্তি শৃত্ত আচরণ সর্বাদা আদর পূর্ব্বক উচ্চারণ করিয়া থাকেন, তাঁহার বিচিত্ত চরিত্রের কথা কি বলিব ? তিনি স্বয়ং পিশাচের ন্যায় নিরস্তনাম্যাতিশয়োপি যৎ স্বয়ং পিশাচের্চ্যামচরক্ষাতিঃ স্তাং ॥ ২৫ ॥ ত্রুলিন্ত যাত্রাকিরতং হি ভ্রন্ডগাঃ স্বাস্থ্র স্থাবিত্বঃ স্মীহিতং । বৈ ব্রু মাল্যাভরণামূলেপনৈঃ শভোজনং স্বাস্থাতয়াপলালিতং ॥ ২৬ ॥ ত্রুলাদয়ো যৎ কৃতদেতুপালা যৎকারণং বিশ্বমিদঞ্চ মায়া । আজ্ঞকরী যদ্য পিশাচচর্য্যা অহো বিভূমশ্চরিতং বিভূমনং ॥ ২৭ ॥ শ্রীমৈত্রেয় উবাচ ॥

দৈবং সংবিদিতে ভর্ত্তা মন্মথোশ্মথিতেন্দ্রিয়া। জগ্রাহ বাদো জন্মর্ষে র্যলীব গতত্ত্বপা ॥ ২৮ ॥

शिवस्थामी ।

विकिरमवः ८७७ मिष्ट्वः॥ २०॥

স্মীহিতং অভিপ্রেডং লোকশিকা রূপং। অবিহুষং অবিহাংসং যহা ন বিহান্ হস্মাৎ ইতি তস্য সর্বজ্ঞস্যেত্যর্থং। হুর্ছগা-নেবাহ হৈরিতি খডোজনং গুনাং ভোজাং শরীরং স্বাত্মত্যা অয়মেবাত্মেতি বুদ্ধা ॥ ২৬ ॥ 👨

অহো অতর্কাং তদ্যাচরণমিত্যাহ। এক্ষাদয়ো যেন ক্লডান্ সেতৃন্ স্ব স্থাধিকারান্ পালরন্তি। যং কারণং যদ্য মেন ক্লডমিদং বিশ্বং সায়াচ যন্তাজাকরী বিভূমঃ প্রমেশ্রস্য বিজ্যনং অতর্কামিত্যর্থ: ॥ ২৭ ॥

ভর্ত্তা নিরূপকেণ এবং সন্থিদিতে জ্ঞাপিতেপি সভি। বুষলীব বেশ্যেব ॥ ২৮ ।

ক্রমসন্দর্ভ:।

সমীছিতং দেহস্য কুৎসিতহং দর্শয়িত্বা স্বাস্থানিষ্ঠা কর্তব্যেতি লোকবিশেষং প্রতি শিক্ষারূপং গুণাবতারত্ত্বন প্রমেখরাভেদ দৃষ্ট্যাক ব্রন্ধাদয় ইতি বিভ্যনং দেহস্ত ভাবি দশায়করণেন বৈরাগ্যবোধকং ইত্যর্থঃ॥ ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩১। ৩৫

ब्रीवित्रनाशहकवर्डी ।

গৃণন্তি তে সংসারাশুকা ভবন্তী তার্থ: নিরস্তেতি ভগবতা সহৈক্যাৎ যথা নিরস্ত: সাম্যোন সাম্য গুণবন্ধন অতি শরো যত্মাৎ স: ॥ ২৫ বেতু নিন্দন্তি তে সংসারে বদ্ধা ভবন্তীতাহ হসন্তীতি। হুর্জগা: নকস্যাপানুকস্পাইতার্থ:। আমন্ বস্যাম্বনি শ্রীক্ষে রতক্ত সমীহিতমন্তিশীয়াং অবিহ্নোহবিদাংস:। সমীহিতক্ষেদং। সমীচীন গদ্ধপুপ্রস্তাভরণাদীনি মৎপ্রতে। র্জগবত এবাহণিতি তিক্ষা দ্বানাতো নাহম্পভ্র ইত্যেবং রূপং। যৈ হুর্জগৈ: শভোজনং ভনা ভোল্যং শরীরং আম্বতরা অরমেবাত্মেতি বুদ্ধা ব্যাদিভিক্ষপ্রালিতং ॥ ২৬ ॥

তত্র বিশ্বেশ্বরে কে বয়ং বরাকা ইত্যাহ ব্রহ্মাদরোপি যৎকৃতান্ সেতৃন্ সারং স্ত্রীসঙ্গং ভোজন স্বাপ ত্যাগাদিরপ্মধ্যাদাং পাল মৃত্তি । স্থাব কারণং যস্য তৎ মারাচ যস্যাধীনা তস্যাপ্যহো চিত্রং পিশাচচর্য্যা তত্মাদিভূমঃ প্রমেশ্বর্স্য চরিতং সর্বং বিভ্রন্থস্থ ক্রণ্যাত্রমের ॥ ২৭ ॥

ভ্ৰমা এবং সংবিদিতে জ্ঞাপিতেপি সতি যথা ভ্ৰমা হতুনা এবং জ্ঞাপিতে সভি ব্ৰলীৰ বেশোৰ। কামো বিবেকং এস্তি

আচরণ করিয়া থাকেন। ২৫॥

প্রিয়ে! যে সকল ব্যক্তি তুর্কগ ও অনভিজ্ঞ এবং কুরুরের ভোজ্য এই দেহকে আত্ম বোধ করিয়া বস্ত্র, মাল্য, আভরণ এবং অনুলেপন ছারা ইহার লালন পালন করে তাহারা আত্মরত ঐ দেবের অভি-প্রায় না বুঝিতে পারিয়া আচরণ দেখিরাই উপহাস করে॥ ২৬॥

ফলতঃ তাঁহার আচরণ তর্কের গম্য নহে, তাঁহার প্রমাণ দেখ, ত্রহাদি দেবগণ তাঁহার কৃত স্ব স্থ অধিকার পালন করিতেছেন, তিনিই দকলের কারণ এবং তিনিই এই বিশ্ব নির্দ্ধাণ করিয়াছেন, তাঁহা-রই আজাকরী মায়া, তাঁহারই পিশাচবৎ আচার, ইহাঁর চরিত্র অতর্ক্য র্যুতীত আর কি বলিব ? ৪ ২৭ মৈত্রেয় কহিলেন অহে বিহুর! দিতির ইক্রিয়ণণ কামবশতঃ উন্দ্রধিত হইয়াছিল শত্রুব তাঁহার স বিশিষ্ঠাথ ভার্যায়ান্তং নির্কার্জং বিকর্মণি। নম্বা দিন্টার রহসি তরাথোপবিবেশহ ॥ ২৯ ॥ অথোপন্দেশ্য সনিলং প্রাণানায়না বাগ্যতঃ। ধ্যারন্ জ্ঞাপ বিরক্তং প্রজ্ঞাতিঃ সনাতনং॥৩০ দিভিস্ক ব্রীড়িতা তেন কর্মাবদ্যেন ভারত। উপসঙ্গম্য বিপ্রবিদ্যোম্খ্যভাভাষত ॥ ৩১ ॥ শ্রীদিভিক্ষবাচ ॥

ন মে গর্জ মিমং জন্মন্ স্তানায়বভোহবধীং। রুদ্র: পতি র্হি ভূতানাং বস্যাকরবমংহঁদং ॥ ৩২ ॥ নমো রুদ্রায় মহতে দেবায়োগ্রায় মীচুষে। শিবার ন্যন্তদণ্ডার গ্রুদণ্ডার মন্যবে ॥ ৩৩ ॥

क्षित्रवामी।

ৰিকৰ্মণি নিবিছে দিউার দৈবরপার ঈশ্বর্যার উপবিবেশেতি মৈগুনং সক্ষাতে ॥ ২৯ ॥ উপস্পূল্য মাঘা ভর্গঃ শক্ষাচ্যং বিরন্ধং জ্যোতির্ধ্যারন্ স্থনাতনং ক্রন্ধ গায়গ্রীং প্রণবং বা জ্জাপ ॥ ৩০ ॥ কর্মাবলোন কর্মলোবেণ ॥ ৩১ ॥

নাবধীৎ মাহন্বিতার্থা বধশকাবীজমাহ কলু ইতি অংহসং অংহা অপবাধং অকরকা ক্লতবতান্দি॥ ৩২ ॥
কং হংগং তৎ প্রাবরতীতি কলুঃ তবৈ উগ্রাহ অনতিশত্বার মীচ্বে সকামের ফলসেচনকর্মে। নিহামের শিবার। বস্তুতোন্তান্তমণ্ডার তুটের গ্রুলগুরি সংহারে মন্যবে॥ ৩৩॥

এবিশ্বনাণচক্রবন্তী।

খীরমনৈসক দর্শিতং। অত্র প্রমাণং ত্রবৈর প্ংসঃ ত্রীবৃচাতে দিতিঃ ॥ ২৮ ॥

विष्ठीत्र चानुष्ठीत्र **উপ**विदयम द्वरम ॥ २> ॥

উপন্দুশ্য নাম্বা আচম্য জ্বলাপ প্রণবং গার্মনীয়া ॥ ৩০ ॥

कर्त्वावरतान कर्त्वरतारित ॥ ७১ ॥ न भवधीर माइचिछार्थः ॥ ७२ ॥

পশ্চাতাপৰতী প্রণমতি। কলার মাং রোলবিব্যতে কিলা মম কৎ রোলনং কপরা জাব্দিব্যতে দ্রীক্রিব্যতে। যতো মহতে দেবার মলপরাধং ক্ষমিব্যমাণার। কিলা উগ্রায় মলগন্তমিমং হনিব্যতে কিলা মীচুবে মর্মানার্থশাথিনং ক্ষপামৃতেনাভিবেক্যতে যতঃ শিবার নিরত্তদণ্ডার কিং বা শুতদণ্ডার মাং লগুয়িব্যতে যতো মন্ত্র মন্ত্রমাণার ॥ ৩০ ॥

স্বামী ঐ প্রকারে প্রবোধ প্রদান পূর্ব্বক বিজ্ঞাপন করিলেও তিনি বেশ্যার স্থায় লক্ষা পরিত্যাগ করিয়া ব্রহ্মর্থি কশ্যপের বসন ধারণ করিলেন ॥ ২৮ ॥

ঋষিবর কশ্যপ ভার্য্যার প্রার্থিত বিষয়ে নির্বন্ধ জানিয়া নিষিদ্ধ কর্ম্মে প্রবৃত্ত হইবার নিমিন্ত দৈবরূপ পরমেশ্বরকে প্রণাম করিলেন, পরে নির্জনে গমন করিয়া প্রিয়তমার সহিত রমণে প্রবৃত্ত হইলেন॥ ২৯॥

হে বিছুর! রমণানস্তর মুনিবর সলিলে স্নান করিয়া প্রাণায়াম করিলেন এবং মুনিত্রত হইয়া ক্যোতির্ময় পরতক্ষের ধ্যান করত গায়তী জপ করিতে লাগিলেন। ৩০॥

কিন্তু ঐ দোষাবহ কর্ম নিমিত্ত দিভিত্র স্মতিশয় লঙ্ফা হইল তিনি স্থামির নিকটে গমন করিয়া সংখ্যবদনে বলিভে লাগিলেন।। ৩১।। .

ত্রন্মন্! রুদ্র, ভূত সকলের পতি, আমি এই গর্হিত কর্মে তাঁহার নিকট অপরাধিনী হইলাম, আপনি এই রূপ অনুগ্রহ করুন বে ঐ ভূতপতি যেন আমার গর্ত্ত বিন্ত না করেন।। ৩২।।

অপর আমি সেই মহৎ দেবকৈ নমকার করি, তাঁহার নাম রুদ্র, তিনি নাম গুণেরুৎ অর্থাৎ ছঃখকে বিছোবণ করেন। পরস্ত তিনি উতা অর্থাৎ অসজ্য এবং লকাম পুরুষের ফলদাতা ও নিকাম ব্যক্তির পরম মঙ্গল অরূপ। আরু তাঁহার হত্তে কোন দণ্ড নাই সত্য, কিন্তু দুইগণের প্রতি দণ্ড ধারণ করিয়া খাছেন, অপর তিনিই সংহার সময়ে মন্ত্র স্বরূপ হরেন তাঁহাকে নমকার। ৩০।।

न नः श्रमीवकाः कारमा क्रवासूर्वसूर्वहः । व्याधकानासूक्त्यामाः स्रोधः ह्रदः स्कीनकिः ॥०८

স্মর্গকাশিষং লোক্যামাশাসানাং প্ররেপ্তীং। নির্ত্তসন্ধ্যানিয়নো ভার্য্যামান্ত প্রজাশিতিং॥ ৩৫ জ্রিকশুপ উবাচ॥

অধীযত্যাদান্তনতে দোষান্দেছির্তিকাছত। মনিদেশাতিচারেণ দেবানাঞাতিহেলনাৎ ॥ ৩৬ ॥ ভবিষ্যতন্তবাভ্দাবভদ্রে ফাঠরাধমো । লোকান্ সপালাং ক্রীংশ্চণ্ডি মৃত্রাক্রন্দরিষ্যতঃ ॥ ৩৭ ॥

जीनत्रवामी ।

ভামো ভগিনীপতিঃ উক্তরস্থাহো যক্ত সং ব্যাধক্ত নির্দয়ক্তাপি সতীপতিরিত্যনেন জীণাং স্বভাবং স্বয়মপি বেজীতি স্চয়তি ॥৩৪
স্বস্পত্ত স্বসন্তানক্ত আশিবং গুডং লোকাাং লোকষয়াহাং সন্ধাায়াং যো নিয়মঃ স নির্দ্ধো যক্ত সং ॥ ৩৫ ॥

তে আত্মনন্দিত্তত অপ্রাযত্যাদশুচিত্বাথ। মৌহুর্তিকাথ দোষাৎ সন্ধ্যা রূপাথ উত অপি মম নির্দেশতাক্ষারা অতিচারেণ অতিক্রমেণ দেবানাং কন্দুাহ্চরাগাং॥ ৩৬॥

এতৈ চতুর্ভির্ভেত্তিঃ জাঠরাধ্মৌ প্রাপদদৌ হে চণ্ডি হে কোপনে ॥ ৩৭ ॥

ক্রমসন্ধর্তঃ।

- অপ্রায়ত্যাদিভিদুগাকং। মুহুর্ত্ত: সন্ধারূপ: তম্ভবাদোবাৎ ॥ 🤒 ॥

यना লোকানাক্রন্দরিয়তঃ তদা প্রাণিনাং হন্যমানানাং স্ত্রীণাঞ্চ নিগৃহ্যমাণানাং সম্বন্ধে মহাত্মস্থ কোপিতেরু সংস্থিতারয়ঃ ॥৩৭ ১৮। ৩৯। ৪∙ ॥

এবিখনা থচক্রবন্তী।

এবং সংশর্মনৈব শ্ববানা স্বলৈন্যং দর্শয়ন্তী তন্মালভয়ং প্রার্থয়তে। তামো তগিনীপতিঃ উকরস্থাহো যস্য সঃ। ব্যাবস্য নিদ্বস্যাপি সতীপতিরিতি স্ত্রীণাং স্কাবং স স্বর্মেব বেরীতি স্চয়তি। যথা সত্যা অপ্যমুরোধেন তর্জনীং মাং মা দওয়দিতি সা সতী মদপরাধং মার্জয়বিতি বা ভাবঃ ॥ ৩৪ ॥

चन्रर्गमा चनखानमा लाकाः लाकशार्धाः ॥ ७৫ ॥

তে তব আয়নো মনসোহপ্রায়ত্যাদপাবিত্রাৎ ক্রুরমনসে। মৃহুর্তঃ সন্ধারণো বোরস্তর্তানোগাদেবারে সন্ধার। বিঘটিকদাক্ত ছো। মম নির্দেশস্য আজ্ঞাবাকাস্য অভিচারেণাভিক্রমেণ্চ ধর্মস্যাদাভগ্ধনৌ দেবানাং শ্রীক্ষ্প্রাণাং হেলনাক্ত ভগবদ্বেবিগোঁ হে অভতে ইতি তবৈবাভন্তাণি দংপ্রয়োঃ সঞ্চরিয়ন্তীতি ভাবঃ ॥ ৩৬ ॥

জাঠনে তজ্জঠরতবৌ কাধমৌ পুত্রৌ এবং ব্যস্তাৎসমস্তাচ্চ দোষাৎ বোকানামিত্যাদি। হে চঞ্চীতি মন্ধর্মবাক্যেপি যন্ধর্ম প্রাচণ্ডাং কৃতং ত্সোদং ফলং ভূজ্জু ইতি কামকোধয়োক্তং ধনিরেবাসীতি কল্যপন্যাপি তন্যাং কোপো বাক্তং ॥ ৩৭ ॥

অপিচ সেই ভগবান্ আমার ভগিনীপতি তাঁহার অতিশয় অমুগ্রহ আছে, আমি স্ত্রীজাতি নির্দিয় ব্যাধেরাও স্ত্রীগণের প্রতি অমুগ্রহ করিয়া থাকে, তিনিও স্ত্রীর পতি, স্ত্রীলোকের স্বভাব ভাল রূপে জ্ঞাত আছেন, দে সকল বিবেচনা করিয়া আমার প্রতি প্রসন্ন হউন । ৩৪॥

মৈত্রেয় কহিলেন অহে বিছুর ! প্রজাপতি কশুপ সন্ধ্যাকালীন নিয়ম ভঙ্গ হওয়াতে কুই হইয়া-ছিলেন, তাহাতে দিতি কম্পিত কলেবর হইয়া আপনার সন্তান্ত্রের লোক হয়ার্হ কল্যাণ ঐ প্রকারে প্রার্থনা করিলেও তাঁহাকে কহিলেন ॥ ৩৫॥

অমি অধীরে। তোমার চিত্ত অপবিত্র এবং এই সন্ধারণে মৃহুর্তের লোব আছে, আরু আমার আজার অভিনেম এবং রুদ্রোপুচর্গণের অবহেলর হইল। ৩৬।

এই চারিটা কারবে হে অভজে। ভোষার উদরে অভজ বরপ সুইটা অধন পুত্র অনিছে। হে কোপনে। ভাহারা লোকপান নহ জিলোকীকে মৃত্যুহা বেছনা প্রদান করিবে। এছা প্রাপিনাং হল্পনানার দীনানারক্তাগনাং। স্ত্রীণাং নিগৃত্বানানাং কোপিতের মহাত্মত্ম ॥ ৩৮॥
তদ্য বিশেষরং ক্রেড়া ভগবান লোকভাবনং। হনিয্ত্যবতীর্যানো বণান্তীনু শতপর্বাধৃক্॥ ৩৯
শ্রীদিতিক্রবাচ্য

বধং ভগবতা সাক্ষাৎ হ্নাভোদারবাহ্না। আশাসে পুত্রেরা র্মহং মাক্রুদ্ধানু ক্লিগাং প্রভো ॥ ৪০ ন ব্রহ্মদশ্বস নত্তভয়দস্যত। নারকাশ্চামুগৃহুন্তি যাং যাং যোনিমসৌ গভঃ ॥ ৪১ ॥ প্রীক্ষাপ উবাচ ॥

ক্লতশোকামুতাপেন দদঃঃ প্রত্যবমর্ষণাৎ। ভগবত্যুক্লমানাচ্চ ভবে ম্যাপি চাদরাৎ ॥ ৪২ ॥

डीधवचामी ।

হক্তমানানাং সভাং ॥ ৩৮ ॥ শতপর্বাধুক বজ্ঞার ইন্দ্রঃ ॥ ৩৯ ॥

স্থনাভেনোপ্রেরা বাহর্যত মহুং মম। কোপিডেবিত্যকভাং শহিতচিত। সতী প্রার্থিতে আদ্ধণান্মাত্দিতি ॥ ৪০ ॥ নারকা অপি তথা বাং বাং বোনিমসৌ গতো ভবতি তত্তস্থাশ্চ নামু গৃহুন্তি কুপাং ন কুর্বন্তি ॥ ৪১ ॥ কুতো যোহপরাধ তৌন শোকঃ তত্তোহসূতাপ ভেন। প্রতাবমর্বণাং যুক্তাযুক্ত বিচারাং ভগবতি হরে ভবে শ্রীকুল্লে এতৈঃ

क्रममन्दर्धः।

ৰাত্ৰগৃক্তি ন নিকট গমনাদিকমত্মন্যত্তে ॥ ৪১ ॥ ক্তেতি সাৰ্দ্ধকং ॥ ৪২ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰৰন্তী।

কিম্নরেরারায়্রিতি চেৎ শূণিবতাহ। প্রাণিনামিত্যাদি প্রাণিষিত্যর্থ:। শতপর্বাহৃক্ বন্ধার ইক্স ইব ॥ ৩৮ ॥
স্থনাতেন চক্রেণ উদারো বাহর্ষসা তেনেতি তস্য তমতিস্কলরং বাহ্ন্মসন্তঃ পুরে মে দ্রক্ষাত ইতি ভাগাবস্তাবের পুরে রি
মে ভবিষ্যতঃ তথা মরণসাবিশাক্ষেপি তম্বতা মরণাৎ সর্বাণাপেভ্যো নিস্তারণ্ঠ তরোর্ভাবী। আশাসে বাহামি মহুং মামণি
নিস্তারিরিত্নিতি তাদৃশপ্রেরেয়র্মাতা অহমপি জন্মধোপ্যাদৃইভগবজ্রপাপি পুরু সম্বন্ধেন ভগবন্দিনীবাভিমংস্যে। ক্র্মাহিপ্রাহ্ধং
মা আশাসে ইতি। কোপিতের মহাম্মিতি ত্বজ্বনা বন্ধাপাদের পুরে মে মরিষ্যত ইতি শক্ষিত্রিরা ব্যাকুলৈবাহ্মধিদ্যং
সংপ্রতি ভগবন্ধতাে বধং শ্রম্থা হিরচিত্তি বাভ্বমিতি ভাব:॥ ৩৯॥ ৪০॥

যতঃ নত্রক্ষেতাাদি বিতীয়ার্থে বর্চ্চো নারকা অপি তথা যাং যাং বোনিমদৌ গতো ভবতি তত্রস্থান্চ নাহুগৃহস্তি ॥ ৪১ ॥ কতো যোহপরাধন্তেন শোক ততোহুতাগত্তেন । প্রতাবমর্বণাৎ যুক্তাযুক্তবিচারাৎ এতৈঃ পঞ্চভিঃ কারণেঃ পুক্রন্ত হিরণা-

ু কিন্তু যুঁধন নিরপরাধ দীনহীন প্রাণিদিগকে বধ করিতে এবং স্ত্রীগণকে নিগ্রহ করিতে আরম্ভ করিয়া মহাত্মা সকলের কোপ উদ্ভাবন করিবে॥ ৩৮॥

তথন লোক ভাবন ভগবান্ বিখেশর ক্রুদ্ধ হইয়া অবতার গ্রহণ পূর্বক যেমন বন্ত্রণর ইস্ত্রে, পর্বত সূকলে বক্তাঘাত করিয়াছিলেন তাহার স্থায়, তাহাদিগকে বিনষ্ট করিবেন ॥ ৩৯ ॥

দিতি কহিলেন প্রভা আমার সন্তান ছুইটা যদি নিতান্তই বধ্য হয় তবে এই প্রার্থনা করি, বে ভগৰানের বাহ অনাভচক খারা উদার হইয়াছে তিনি স্বয়ং যেন তাহাদিগকে বধ করেন, জুজ আক্সানের শাপ হইজে যেন তাহারা বিনক্ট না হয় ॥ ৪ ॰ ॥

কারণ যে ব্যক্তি ব্রহ্মণতে দথ এবং ভূত সকলের ভয়প্রদ হয়, তাহাকে নারকিরাও কুপা করে না এবং সে ব্যক্তি যে যে যোনিতে ক্রম প্রাপ্ত হয়,তত্ত্বত্য প্রাণিগণেরও অনুপ্রহ ভাজন হইতে পারে না॥৪১ ্রক্তপ্রস্থা কহিলেন প্রিয়ে। ভূমি যে স্থারাধ করিলে ভাহার নিমিত্ত শোক ও অনুতাপ করিতেছ

পুক্তবৈত্যৰ চ পুক্ৰাণাং ভবিতৈকঃ সতাঃ মতঃ। গাস্ততি যদবশঃ ওছং ভগবদবশসা সমং । ৪০ ॥ त्यारेश ट्रंट्यन इर्व्यर्श ভानशियाखि नाथनः । निर्देशतानि जित्राचानः वादी नमनू वर्षिषुः ॥ 88 ॥ यर श्रमानानिनः विश्वः श्रमीनिक यनाञ्चकः। म अनृक् छ्रावान् यस्त्र र्कायारकर्नस्या पृणा ॥ ४० ্স বৈ মহাভাগৰতো মহাত্মা মহাসুভাবো মহতাং মহিচঃ।

टी भवत्यामी ।

शककिः कांत्ररेगः ॥ ४२ ॥

পুত্ৰস্ত হিরণাকশিপোঃ পুত্রাণাং মধ্যে একঃ সতাং মতো ভবিষাতি তমেব বর্ণছতি গাভভীতি নার্ছেঃপঞ্জিঃ সমং সহ

হীনবর্ণং হেম যথা বোগৈদ হিদিভিঃ উপাটয়ঃ শোধাতে তথা যক্ত শীলং স্বভাবং অহুবর্ত্তিত্ব অহুসত্তং প্রাপ্তুং নির্কৈরাদিভি

র্বোটপ রাত্মানং ভাবরিবাত্তি শোধরিবাত্তি॥ ৪৪॥

বিশ্বপ্রদাদে হেতু: বদাস্থকং খদৃক্ আস্থাকী। বজানম্ভরা ভগবানের সত্য ইত্যেবং ভূতরা দৃশা ভোষাতে ভোষং প্রাক্ষাতে ॥৪৫ তত্ত হেতুঃ স বা ইতি মহাস্থা অপরিদ্ধির দৃষ্টিঃ। মহাজ্তাবঃ মহাপ্রভাবঃ। মহতামপি মধ্যে মহিষ্ঠঃ অতিশবেন মহান্।

क्रममर्भाः।

গান্তবীতি সাৰ্দ্ধত্ৰিকং ॥ ৪৩ ॥ ভদ্বশোগানস্য ফলমাহ ৰোগৈরিতি। অহ্বর্তি চুমহুমোদনেনাহৃগন্তং॥ ৪৪॥ खननात्रा उत्तव क हिंगगा ॥ ४६। ' মহাভাগৰতৰ্মেব বিবুণোত্তি মহাস্মেতা।দিনা কুওলমণ্ডিতাননমিতাত্তেন ॥ ৪৬ ॥

खिविधनां भठकवहीं।

কলিপো: পুরাণাং মধ্যে এক: সভাং মতো ভবিবাতি ॥ ৪২ ॥ °

সম্ভঞ্জ গাস্যন্তি সমং সহ সনুশং বা॥ ৪৩॥

हीमवर्गः हেमरवारेशन हानि किवंशा माधारक তথা यहा भीनः चलावमस्वर्धिकः অस्त्रकः প্রাপ্তঃ নিবৈরাদিভির্বোটগরাস্থানং

ভাবন্ধিয়ান্তি শোধন্নিব্যক্তি॥ ৪৪ ॥

वता छत्रवज्ञः धानानास्त्रत्वा यटेच धाल्लामात्र हेनः विचयमव धानीमजि कीमृनः नर नथवाचा चाववीमी वना छर चाववीमि-রূপেণ তথা লোকান্ প্রেররতি যণা তৎ পিতৃবৈরিণ ইক্রাদ্যা অপি প্রহ্লাদার প্রসীদম্ভীত্যর্থ:। স্বীরান্ ভক্তানেব প্রীত্যা পণাতীতি অনুক্। নবিদাতে হন্যা বস্যাং তাদৃশ্যা দৃশা বৃদ্ধা বৰুদ্ধৌ অন্য: প্ৰবেষ্ট্ৰ, ন শক্ষেতীতাৰ্ব: ॥ ৪৫ ॥

মহাত্মা মহাধৃতিম হাবৃদ্ধিকা মহাভাএৰ ভভ তেলালাা: প্রেমাছভাৰা বসা স:। তত্ত্ব হেতৃ:। প্রবৃদ্ধা ভক্তা অনুভাৰিতে অমৃতাবং প্রাণিতে আশরে মনসি বৈকুঠং কৃঞ্চং বৈকুঠনং বছমার - বা নিবেশ্য ইনং বারিকং লোকং তাক্ষাতি # 90 8

এবং সদ্যই তোমার যুক্তাযুক্ত বিচার হইল ও ভগবান্ হরির প্রতি তোমার বথেষ্ট ভক্তি শাছে, শার पूमि ऋग्रांक जावः चामाक चिना चानत कतिया थाक अहे शक कातर्य ॥ 82 ॥

তোমার হিরণ্যকশিপু নামে যে পুত্র হইবে তাহার পুত্রদিগের মধ্যে প্রহুলাদ নামে একজন সাধু সন্মত ছইবেন, লোকে ভগবানের যশের ভূল্য ভাঁছার বিশুদ্ধ যশঃ গান করিবে 🖁 ৪৩ 🖁

প্রিয়ে ! হান বর্ণ অবর্ণকে যেমন দাহাদি উপায় ধারা সংশোধিত করে তাহার ন্যার,সাধ্গণ ভাঁহার শ্বভাব প্রাপ্ত হইবার নিমিত্ত নির্কেরাদি যোগ ছারা আপন আপন অন্তঃকরণ সংশোধন করিবেন #৪৪ অপর এই বিশ বাঁহার স্বরূপ এবং বাঁহার প্রসাদে ইহা প্রসন্ম হয়, আজু সাকী সেই ভগবান্ এ

बाक्तित "अभवानरे मछा" এर ऋभ निष्ठा बाता मरसाय ध्यकाम कतिरवन ॥ ८৫ ॥

थिया। छगवान् त्व त्लामात्र त्मरे लीत्जत थिल थमम रहेत्वन जारात्र कात्रम और, तम वाजि

শব্দক্তাৰন্তানিতাপনে নিবেশ্য বৈক্তিনিসং বিহাস্তি ॥ ৪৬ ॥
অনুস্টা শীন্ধনো ওণাকলো জ্বক্ত পরার্ছ্যা ব্যথিতো ছাখিতের।
অক্তব্দ র্বস্তঃ শোকহর্তা নেদাবিকং ভাপনিবোড় রাজঃ ॥ ৪৭ ॥
অক্তব্দি নিদাবিকং আপুনিবেছারুগৃহীত স্থাপ:।
পোজ্ঞব জ্বিলনালনানং ঐকা ক্রংক্তলনভিভাননং ॥ ৪৮ ॥
জ্বিনিত্রের উবাচ ॥

ঞ্ছা ভাগবতং পোত্রং মুমোদাতি দিতিভূশং। পুত্রয়োচ্চ বধং কৃষ্ণাছিদিছাসীমহামনাঃ॥ ৪৯

· क्षेत्रवामी । .

প্রবৃদ্ধা ভক্ত্যাম্ভাবিতে সংশোদ্ধিতে চিডে বৈকৃঠং হরিং নিবের দেহাগ্যভিমানং ভাকাভি॥ ৪৬॥

মহাভাগৰতছমেবাহ। অলপট ইতি শীলধর: সুস্তাব;। গুণানাং বৈব্যাদীনাং আকরো জন্মভূমি: পরেবাং সমৃদ্যা হাই:। পরের ছঃশিতের সংস্থ ছংথিত:। ন ভূতো ন লাভ: পক্রবান্ত নিন্ধিভবং তাপং চল্লো যথা হরতি এবং জগত: পোকহর্তা ভবিষ্যতি ৪৪৭ ৪

অপরিছির দৃষ্টিস্থাই অন্তরিতি স্পুর্বাধামিছেয়া পুন: পুন গৃঁহীতানি রূপাণি যেন। জীরের ললনা কুলরী তঞা ললামং মণ্ডনং। এটা জ্বলতি ॥ ৪৮॥

মহামনা মহোৎসাহ চিত্তা হরিণা সহ যুদ্দেম মরণে পুত্রবোঃ কীর্ত্তি: সক্ষতিও ভবেৰিতি । ৪৯ ।

क्रमगकंडः।

व्यवन्तर हें डि यूग्रकर । 89 ॥ 8৮ ।

তস্য ভক্তিং তক্ৰুখানমহাওণাংকাবোচং অসানপি তক্ৰাস্ক্লান্ স্বাভাৰিকান্ গুণান্ পূলুত্যাই অলম্পট ইতি। বক্ৰুম্নক্যা এব গুণা ইতাহি গুণানামাকরঃ। পরেবাং ঋদ্ধা সম্পত্তা পরেবৃ ছংখিতের সংস্থানিদায়ভবং ভাপং চক্রো ধধা তথা অগতঃ শোকহর্তা তবিষ্যতি ॥ ৪৭ ॥

অন্তরভাকরণে ধ্যানেন বহিং সাক্ষারেরাভ্যাঞ্চ পৌত্রং প্রজ্ঞানো জন্তা ত্রকাতি। প্রীরেব গ্রনা কান্তা ত্র্যা গ্রানাম মণ্ডন ক্লপং ৪৪৮ ভূপং অমৌকত। বন্ধ হন্ত মধিকর্মাণি বং কর্মাণি সংকর্মশিরোমণি হর্ম ভং ফলং ধ্যান্ততীতাহো মে ভাগামিত্যানমন্দ।
মহাভাগবত, অপরিচিন্নে দৃষ্টি, মহাপ্রভাব এবং মহৎ লোকদের মধ্যে অক্রিশয় মহৎ হইবে। সে
প্রেক্ত ভক্তি দারা সংশোধিত চিত্তৈ ভগবান্ হরিকে সংশ্বাপন পূর্বক দেহাদির অভিমান পরিভ্যাগ
করিবে ॥ ৪৬॥

ব্রিয়ে ! তোমার এই পোঁতা মহাভাগবত কেন হইবে জাবণ কর। সে ব্যক্তি অলম্পট, ফুশীল ,এবং হৈর্যাদি গুর্নের আক্রি, পর সমৃদ্ধিতে হুই এবং পর ছঃথে ছঃথিত হইবে, আর তাহার কেহই শক্রু হইবে না। সে এ রূপ ইইরা নক্ষত্রোজ চক্ত বেমন নিদাঘ জনিত তাপ দূর করেন তাহার আয় জগতের শোভা হুর্ণ ক্রিটের ॥ ৪৭ ॥

শপর হে প্রিয়তনে। যে ভগবান্ অন্তরে ও বহির্ভাগে অসল, বাঁহার নেত্রছয় পদ্ম সদৃশ মনোহর, যিনি আপনার ভক্তগণের বাসনাস্তরূপ রূপ ধারণ করিয়া থাকেন, আর বিনি লক্ষ্যীরূপা ললনার ভূবণ বর্মণ ও বাঁহার বর্ণবারে সুগুল বিদ্যোত্তিত হওয়াতে মুখ মণ্ডল সদা হ্মণ্ডিত, সেই ভগবানকে তোমার ক পোঁত পর্বাল দর্শন করিবে ॥ ৪৮ ॥

নৈজের কৃষ্টিলেন অত্ বিহুর। সাপনার এক পোক্ত, ভাগবত হইবে ইহা তনিয়া দিতি অভিশয়

॥ ॥ এ ইতি শ্রীভাগনতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈরাদিক্যাং ভ্তীরক্ষকে বিচ্ব মৈত্রের স্থাদে দিভিগর্রাধানং চতুর্দশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ১৪ ॥ ॥ ॥

- ঐীমৈতেয় উবাচ।।

প্রাজ্ঞাপত্যং হি তত্তেজ্ঞঃ পরতেজোহনং দিজিঃ। দধার বর্ষাণি শতং শঙ্কমানা ছয়ার্কনাৎ ॥ ১॥ লোকে তেনাহতালোকে লোকপালা হতৌজসঃ। হ্যবেদয়ন্ বিশ্বস্তুকে ধ্বাস্তব্যতিকরং দিশাং ॥২

टांशत्रवामी ।

া • ৷ ইতি ভৃতীয়ে চতুর্ঘ∺ং ঃ • ঃ

হত প্ৰতৈঃ স্থানৈ স্পৃত্তঃ প্ৰাহ পঞ্চলে বিধিঃ। ত্ৰীজং বিপ্ৰশাপাদি বৈকুঠে বিকুস্ত্তারোঃ॥ • ॥
তদেবং দেবানাং অন্ধাণ্ড সধান প্ৰস্তাবমূক্। ইনানীং তং সধানং বকুমাহ প্ৰাজাপত্যং কাঞ্চশং তেলো বীৰ্ব্যং পরেষাং তেলো স্বীতি তথা আৰ্বঃ স্পুত্ৰাত্যাং করিব্যতে বং স্করাণাং মৰ্দ্দনং পীড়নং তন্মান্ত্ৰমানা ॥ ১ ॥

তেন গর্তত্ত্বসা আহতা লোকে নিরত প্র্যাদি প্রকাশে। হর্ডেজন: হতপ্রভাবা:। श्लास्त्रেন ব্যতিকর: সহর: ॥ ২॥

ক্ৰম্পন্দৰ্ভঃ

न्भारताभमकार ॥ ४२ ॥

॥ • ॥ ইতি শ্রীমভাগবতে তৃতীয়ক্ষকে শ্রীজীবগোস্থামি কৃত ক্রমসন্দর্ভত চতুর্দশোহধ্যার: সমাধ্য: ॥ • ॥
শঙ্কমানেতি। গর্ডে প্রস্তে ন্নমস্থরার্দনে। হনিব্যতীতি। টীকারাং আর্য ইতি। তেজােরমিতি বক্তব্যে তেজােহনমিতি
প্রবাগে আর্ব:। সমস্বাকর্কেচেতি টচি তেজােরমিতােব স্যাং॥ ১ ॥ ধ্বান্তেন ব্যতিকর্মাসকং॥ ২ ॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

মহামনাঃ পুত্ররোমে সংকীর্দ্তি দলতী ভবিব্যত ইতি লোৎসাহচিত্তাঃ ॥ ৪৯ ॥

য় ৽ য় ইতি সারাধন শিশাং হর্ষিণাং তকচেতসাং। চতুর্দশন্ত তীরত সকতঃ সকতঃ সতাং য় ৽ য়
য়ুবৈঃ পৃষ্টো বিধিঅবং বকুং দিতিতন্ত রোঃ। শাপাৎ পঞ্চদশে বিভূপার্বনোর্বিপ্রতোহভাধাৎ য় ৽ য়
ততো দিতের্গর্জত কা বার্ত্তিত পেকায়ামাহ। প্রালাপতাং প্রজাপতেঃ ক্লাপত স্বন্ধি। পরেবাং তেলো হল্পীতি তথা তৎ
পচাল্চ্। স্থরাণামর্দনং পীড়নং তত্মাৎ শ্বমানা অস্থরার্দনাবিফোরিতি বা তত্ততো মৃত্যুপ্রবৃণাৎ য় ১ য়
তেন গর্তভেলসা হতালোকে আহতালোক ইতিচ পাঠঃ। ব্যতিকরং ব্যাপ্তং য় ২ য়

হান্ট চিন্ত হইলেন এবং শ্রীকৃষ্ণ হইতে পুদ্র ছাইটীর ভাবি বধের কথা শ্রবণেও তাঁহার চিতে মহোৎসাহ উপন্থিত হইল। অতএব তিনি এই বিবেচনায় মনকে প্রবোধ দিলেন, পুজেরা যদি ভগবানের সহিত যুদ্ধ করিয়া বিধন প্রাপ্ত হয় তাহাতে তাহাদের কীর্তি ও সদ্যতি হইতে পারিবে॥ ৪৯॥

॥ # ॥ देखि वृजीस हकूर्मण ॥ # ॥

পঞ্চদশ অধ্যায়ে দিতির গার্ক্ত উৎপন্ন হওয়াতে তন্ধারা দেবগণ হতপ্রভ হইয়া ব্রহ্মাকে জিজ্ঞাস। করেন তাহাতে ব্রহ্মা কর্তৃক বৈকুণ্ডন্থ বিফুভক্তদয়ের বিপ্রশাপাদির বৃত্তান্ত বর্ণন ॥ ০ ॥

মৈত্রেয় কহিলেন দিতির গর্ত্তে প্রজাপতি কশ্যপের যে বীর্য্য নিহিত হইল, তিনি শতবর্ষ পর্যান্ত তাহা ধারণ করিলেন। ঐ বীর্য্য সামাশ্য ছিল না তাহা অন্য তেজের বিনাশকারী, কিন্তু ভাহাতে যে ছই সন্তান জিমিবে তাহাদের বারা দেবরক্ষের শীড়ন হইবে এই বার্তা ভর্তার প্রমুধাৎ প্রবর্গ করাতে দিতির অন্তঃকরণে বিশেষ পরিতোষ জমিল না সর্বানা শক্ষিত চিত হইরা রহিলেন । ১ ॥

তাঁহার গর্ত্তের তেজঃ বার। চন্দ্র সূর্য্যাদির একাশ নিরস্ত হ্ওয়াতে তিলোক একেবারে আলোক শুফ হইল, তদর্শনে লোকপাল দকল হতপ্রভ হইয়া বিশ্বঅফা বিধাতার সমিধানে গমন পূর্বক উবিয় চিত্তে দিক্ সকলের তিমিরাচ্ছম হইবার কথা নিবেদন করিলেন ॥ ২ ॥

औरमवा केंद्रः ।

তম এতবিভা বেশ্ব সৃষিধা যাবরং ভূশং। নছব্যক্তং ভগবতঃ কালেনাস্পৃত্তবন্ধ ন: । কেবনেৰ জগবাতর্কোকনাথশিখানণে। প্রেযামপরেবাং দ্বং ভূতানামলি ভাববিং । ৪ ॥ নমো বিজ্ঞানবীর্যায় মায়য়েদমূপেয়ুবে। গৃহীতগুণভেদায় নমস্তেহব্যক্তযোনয়ে । ৫ ॥ যে ঘানজ্ঞেন ভাবেন ভাবরস্ত্যাত্মভাবনং। আত্মনি প্রোতভূবনং পরং সদসদাত্মকং ॥ ৬ ॥

विवत्रवामी ।

বেখ জানাসি বতোবরং সৰিধা ভীতা অব্যক্তং অজ্ঞাতং ন স্পৃষ্টং বম্ম জান প্রচারো ষ্ঠে ॥ ৩ ॥

্রক্ষাণং পরমেশরক্ষেন স্কবন্ধং প্রার্থরক্তে দেবদেবেতি সপ্তৃতি:। লোক্ষাধানাং শিধামণে। ভাৰবিৎ অভিপ্রারক্ষাসি। কেনাভিপ্রায়েপ দিভের্গর্কো বর্দ্ধতে ইতি জানাসীভার্থ: ॥ ৪ ॥

বিজ্ঞানং বীবাং ৰকং বস্ত ইবং ব্রহ্মদেহমূপেয়ুৰে প্রাপ্তবতে গৃহীতো গুণভেবো রজো গুণো যেন ব্যক্তস্ত প্রাপক্ত বোনার কারণায়। নব্যকা কেনাপি প্রমাণেন বিজ্ঞাতা যোনি বজেতি বা । ৫॥

স্কান্তরা প্রতিক্রণং হংব্মফুড্বস্থো নিকাম ভকান্ ভবত আছ র্ছাড্যাং বে থা খাং অনজেন নিকামেণ ভাবের ভক্তা ধ্যারতি। আত্মনো জীবান্ ভাবরতীতি তথা। অত্মিন্ প্রোতানি প্রথিতানি ভ্বনানি বেন চেতনাচেতন প্রণঞ্কারণমিতার্থ:

क्रम्नम्रङः।

জত্র দেবা উচুরিতি কচিৎ। তম ইত্যাদিনা পরমেশরাভেদেন এক্ষাণং স্তব্স্তি॥ ০ । লোকপারেতি পুণ্যারণ্যঃ ॥ ৪ ॥

নম ইন্ত্যাদিনা পরমেশরাভেদেন স্থতি: ॥ ৫ ॥

বে ছেতি। অননাচক্যা বর্ষুথং প্রসাদঃ ততঃ অনেব্রিচ ভক্তিবোগছেন অতএব খাদাদিকর ইতিক্রমঃ । ।।।।। । । । ।।

अविद्यमाथठकवळी ।

त्व जानाष्ट्रव यत्वा चत्रवटः नर्सक्षण उव कारननामूख कानमार्गण । ०।

लाकनाथानामिकामीनाः भिथामतः ॥ ।

हैनः उक्रत्नरः উপেযুবে প্রাপ্তবতে খণভেলো রক্ষ:। অবাক্ত: পরমেশর এব বোলি: কারণং যত তক্তি ॥ ६॥

ভদপি অনজ্ঞেন প্রমেশ্রাণভিয়েন ভাবেন ধে হিরণাগর্ত্তোপাস্কাঃ। যথা। অনজ্ঞেন নিছামেন ভাবেন জজ্ঞা ভাবন্তি ধ্যারতি আত্মনো শীবান্ ভাবন্তি সূত্রতীতি তথা। সমষ্টিখাণাত্মনি অমিন্ প্রোতানি প্রবিতানি ভুবনানি বেন তং। অতঃ

দেবগণ কহিলেন প্রভো। আমরা এই যে অন্ধকার দেখিয়া ভীত হইতেছি ইহা কি? আপনি অবশ্য জ্ঞাত আছেন। প্রভো আপনি দর্বজ্ঞ, আপনার জ্ঞান প্রচারে কাল কদাচ হস্তক্ষেপ করিতে পারে না, ইহাতে কোন বিষয়ই আপনার জ্ঞাত নাই ॥ ৩ ॥

হে দেব! আপনি জগতের ধারণকর্তা এবং ইন্দ্রাদি লোকপালের চূড়ামণি, পর অথবা অপর কোন ভূতেরই অভিপ্রায় আপনার অপোচর নাই, কি অভিপ্রায়ে দিভির এই ভয়ঙ্কর গর্ত্ত র্দ্ধিশীল হুইতেছে আপনি তাহা অবগত আছেন ॥ ৪ ॥

হে অক্ষন ! স্থানই আপনকার বল, আপনাকে নমস্কার, আপনি মায়া বারা এই ত্রক্ষানেহ এবং তথ বিশেষ অর্থাৎ রজো তথা গ্রহণ করিয়াছেন, অপর আপনিই এই প্রপঞ্চ জগতের কারণ ফরুপ, আপন নকার উৎপত্তি-কোন প্রমাণে পরিজ্ঞাত হইতে পারা যায় না অতএব আপনাকে নমস্কার করি॥ ৫॥

ে প্রতা। আপনি এই সমস্ত ভূবন আগনাতেই এথিত করিয়া রাখিয়াছেন এবং বরং এই টেডনা-চেতন প্রপঞ্জের কারণ স্বরূপ হইয়া বস্ততঃ ইহাতে ভিন্ন হইয়াছেন। হে দেব। আপনা হইতেই এই তেষাং গুপক্ষোগানাং জিতখাসেন্দ্রিয়াজনাং। লক্ষুত্রং প্রাদানাং নু কুড্লিং প্রাদ্ধাং ॥ ৭ জ্যুত্র খালা প্রাদ্ধানাং নুকু কিং প্রাদ্ধাং ॥ ৭ জ্যুত্র খালা প্রাদ্ধানা ক্ষুত্র ক্ষুত্র ক্ষুত্র বিধান ক্ষুত্র ক্ষুত্র ক্ষুত্র ক্ষুত্র বিধান ক্ষুত্র ক্

क्षित्रवामी।

তত্ত্ব হেতৃঃ সদসদায়কং কাৰ্য্যকারণ রূপং ব্যুতস্তাভ্যাং পরং ॥ ও॥

জিত: খাস ইল্রিয়াণি আত্মা মনশ্চ হৈ: অত: স্প্রবোগানাং অতএব প্রাথা বৃত্তৎ প্রসাদা হৈ তেবাং ॥ ৭ ॥
অক্তেত্ নিত্যং কর্ম ক্লেশিন ইত্যাহ: যভেতি। তত্রা দামগ্রা আরতা অধীনা: ম্থ্যার নির্ত্তে। প্রাণরপার ইতি বা।
তথাচ শ্রুতি:। যন্ত বাক্তন্তি নামানি দামানীত্যাদি ॥ ৮ ॥

ভমসা অহোরাত্র বিভাগাভাবেন দুপানি কর্মাণি বেষাং আপরান্ আপদগতানন্মান্ ॥ » ॥ আপংকারণমাত্তঃ এব গর্পুত্রন্য বিশেষণং অপিতং নিশিপ্তং কাশ্যপমোলে। বীর্যাং দিশক্তিমিরমন্ তমো ব্যাপ্তাঃ কুর্মন্ ॥ ১০ ॥

ক্রমসন্ধ:।

পর্কনিদানমেব পৃচ্ছাম:। গর্জান্তমোজাতমিতি তু জানীম এবেত্যাহ এব ইতি এধতে ইতি কচিৎ পাঠ: । ১০॥

बिविनाश हक्कवडी ।

नरखारनक्ष्म जावाना रमवास्त्रवामा श्रीवा विवार छः॥ ७॥ १॥

বাচা বেদসক্ষণরা। তথাচ শ্রতি:। তক্ত বাক্ তস্তির্নামানি দামানীত্যাদি ॥৮॥
তমসা অহোরাত্র বিভাগাভাবেন। আপরান্ অস্থান্। অদত্রদয়রা অনর ফুপরা ॥ >॥
নমু বিশেষবার্তাং ত্রতেতি তত্রাহং। কাশ্রপমোলো বীর্যাং অর্পিতং সৎ দিতেগর্তঃ ॥ ১০॥

সমস্ত জীব উৎপন্ন হয়। যে দকল ব্যক্তি নিকাম হইয়া একান্ত ভক্তি দারা আপনার ধ্যান করেন॥৬॥

ভাহাদের প্রাণাদি বারু, ইন্দ্রিয়গণ ও মনঃ জিত হইয়াছে এবং ভাঁহাদের যোগও স্থপক হইয়াছে ও ভাঁহারা আপনকার প্রসাদও লাভ করিয়াছেন, অতএব ভাঁহাদের আর কোথা হইতেও পরাভব হইবে না॥৭॥

প্রভো! গোদকল যেমন রজ্জে নিবদ্ধ থাকে তাহার স্থায় এই সমন্ত প্রজা বাঁহার বেদরাপ বাক্যের অধীন হইয়া পুজোপহার আহরণ কারতেছে, আপনি সেই নিয়ামক পুরুষ আপনাকে নমস্কার করি॥৮॥

হে ভগবন্! আপনি এ প্রকার, অতএব এই সমস্ত লোকের কল্যাণ বিধান করুন, ভয়ন্বর অন্ধকার স্বাত্ত পরিব্যাপ্ত হওয়াতে অহোরাত্র বিভাগাভাবে যাগ যক্ত প্রভৃতি কর্ম সকল বিশুপ্ত হইল, অতএব আমরা মহা আপদে পতিত হইয়াছি অনম কুপাদৃষ্টি বারা আমাদিগকে নিরীক্ষণ করিছে যোগ্য হউন ॥ ৯ ॥

ধুহ দেব। প্রজাপতি কশুপ কর্ত্ব নিক্ষিত্ত বীর্ষ্যে দিভির ঘে গর্ভ উৎপদ ছইয়াছে ইছা স্কল দিক্ ভিমিরাচ্ছন করিয়া কাঠাহিত অগ্নির ন্থায় প্রজালত হইয়া উঠিতেছে। ১০। স প্রহস্য দ্হাবাহো ভগবাঞ্জগোচর:। প্রভাচন্টান্দ্র ভূদে বান্ প্রীণন্ রুচিরয়া গিরা ॥ ১১ ॥ প্রীজন্মোবাচ ॥

মানসা মে হুতা যুত্মৎ পূর্বজাঃ সনকাদর:। চেরু বিহারসা লোকান্ লোকের বিগতস্পৃহাঃ ॥১২ ত একদা ভগবতো বৈক্ঠস্যামলাজনঃ। যযুবৈক্ঠনিলয়ং সর্বলোক নমস্কৃতং ॥ ১৩ ॥ বসন্তি যত্ত পুরুষাঃ সর্বে বৈক্ঠমূর্তয়ঃ। যেহনিমিত নিমিতেন ধর্মেণারাধরন্ হরিং ॥ ১৪ ॥

शिधवात्री।

দিতেঃ কুচেষ্টিতং জ্ঞাদা প্ৰহন্ত দেবানাং যে শকা বিজ্ঞপ্তি ৰাক্যানি ভেৰাণ গোচরো বিৰয়ভূতঃ প্ৰত্যভাৰত ॥ ১১ ॥ যুৱাৎ সকাশাৎ পূৰ্বাং জাতাঃ ॥ ১২ ॥

दिक्शीधाः लाकः वर्ः ॥ ১०॥

তং বর্ণরস্তি বসস্তীত্যাদি স্থাদশতিঃ বৈকুঠক হরেরিব মৃর্তির্যেবাং তে। নিমিত্তং কলং ন নিমিত্তং প্রবর্তকং যদ্মিন্ নিস্থাদেশ ধর্মেণেত্যর্থঃ। স্বারাধয়ন্ স্থারাধিতবস্তঃ॥ ১৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

বুজো বালকান্ প্রতীব প্রহস্য। শব্দমাত্রগোচর ইতি ব্রহ্মণঃ সাধারণাগোচরত্বং ব্যক্তা মহিমানং দর্শরতি ॥ ১১। ১২। ১৩॥
বৈকুঠস্যেব নিত্যানন্দরূপা মূর্ত্তি বেষাং তে যত্ত বসন্তি। তথা ন বিদ্যুতে নিমিত্তং কারণং যস্য স প্রীভগবানেব নিমিত্তং কলং
যত্ত তেন ধর্মেণ ভাগবভাথোন বে চ হরিমারাধরন্ তে চ যত্ত বসন্তীত্যবয়ঃ। হরিপদানতিমাত্ত দৃষ্টেরিতি বন্ধ ব্রক্তীত্যাদিবক্ষ্যমাণাৎ॥ ১৪॥

প্ৰীবিশ্বনা থচক্ৰবন্ধী ।

আহো অজ্ঞা মামেবং স্তবস্তি এতৰিপত্তিত্তাণে কোহং বরাক ইতি বৃদ্ধো বালান্ প্রতীব প্রহত্ত। শলা দেবানাং বিজ্ঞপ্তি বাকাানি তেবাং গোচরঃ বিষয়: ॥ ১১ ॥

এত বিপৎকারণবতীং প্রাচীনামরুতাং কথাং তাবৎ পূণ্তেত্যাহ মানসা ইতি॥ ১২॥

অমলা: ওদা ভবস্তাান্মনোইস্ক:করণানি ৰতন্তভ ॥ ১৩ ॥

বৈকুঠমূর্ত্তরঃ ভগবৎ সারপাবতঃ অনিমিত্তং অপ্রোজসাভাব এব নিমিত্তং প্রবর্ত্তকং বিদ্যাংক্তন নিছামেন পরম ধর্মেণ ইত্যর্থঃ। আরাধরন্ পূর্কমারাধিতবত্তঃ॥১৪॥

মুনিবর মৈত্রেয় এই সকল বর্ণনানস্তর দেবগণের স্তুতি কথা কছিয়া বিছুরকে সম্বোধন পূর্বক কছিলেন অহে বিছুর! ভগবান্ অক্ষা দেবরন্দের বিজ্ঞপ্তি বাক্য প্রাবণ করিয়া দিতির কুচেষ্টিত জ্ঞানে হাস্য করিলেন এবং প্রীতি প্রকাশ করত মনোহর বাক্য দারা প্রত্যুক্তর দিলেন॥ ১১॥

ব্রন্ধা কহিলেন অহে দেবগণ! তোমাদের পূর্বজাত সনকাদি চতুইয় আমার মানসপুত্র, লোক মধ্যে নিস্পৃহ হইয়া আকাশমার্গে বিচরণ করিতে প্রব্ত হইয়াছিলেন॥ ১২॥

তাঁহারা এক সময় অমলান্ধা ভগবান্ হরির সর্বলোক নমস্কৃত বৈক্ঠ ধামে গমন করেন ॥ ১০ ॥
সেই বৈক্ঠ ধামে বে সকল পুরুষ বাস করেন তাঁহাদের সকলেরই ভগবান্ বৈক্ঠের তুল্য মূর্তি।
সেই সকল ব্যক্তি নিকাম ধর্মের অমুষ্ঠান করিয়া ভগবানের আরাধনা করিয়াছিলেন, তাহাতেই তাঁহার।
তৎস্ক্রপী হইরা তদীয় ধামে বিরাজ করিতেছেন ॥ ১৪ ॥

ये होता: भूमानारिक क्यावाक्ष्यरियोज्यः। अवैः विकेका विश्वकः व्यामाः दना प्रकृतम् इसः ॥ २०॥ ये विद्यामान् नाम वनः काम प्रदेषक्ष देनः। मर्क्क शिक्षिविद्यामान् दिनगिष्टिम् ॥ २७॥ विद्यामिकाः मनानामेन्द्रिकानि भवित्यामान् विद्यामान् विद्यामान विद्यामान

शिवतंत्रामी ।

শব্দগোচর: বেদাকৈকবেদ্য: বিরবং সত্বং মূর্তিং বিষ্ট্রভা হ্রতা। বুষো ধর্মসূর্তি: আনাং আন্ ॥ ১৫ ॥ তত্তভাং বনং বিশিন্তি বত্তে চতুর্ভিঃ সর্কোষণি ঋতুরু আঃ পুশাদি সম্পদ্ যেবাং তৈঃ ॥ ১৬ ॥

চরিতানি চরিত্রাণি ভর্ত্ প্রভো:। অরু বিকসন্ত: মর্মকরন্দ: তদ্যুক্তা: মাধব্যো বাসন্ত্যো লতা:। বছা অনুবিকসন্মধ্য: প্রসরন্মকরন্দা: মাধব্য: মধুকালীনা: অ্মনস: তাসাং গদ্ধেন থতিতা: বিন্ধিতা ধীর্বেবাং তেপি তদান প্রাণকমনিশং ক্ষিপত্ত তঃ তিরকুর্কত্যো গায়ন্তি অনেন ভগবৎ পার্ষদানাং নিরতিশয় বিবন্ধ স্থেপি ভলনানন্দাস্তিক দুর্শিতা ॥ ১৭ ॥

ক্রমসন্দর্জ:।

त्रवः ७०१ नातिरशासां नात्रका त्रवः नर्कानस्ववी ॥ ১৫ ॥

বৈবলাং শুদ্ধং ভব্তিসুথং তদেব মূর্ত্তিমদিব জাতং। তদেকসম্পারমন্তাৎ ॥ ১৬ ॥

ভাদৃশবেদনৰ বৰ্ণস্বতি বৈমানিকা ইত্যাদিভি:। অন্তৰ্মধ্যে জল ইতি ভত্তহুপ্ৰনশোভাশৈত্যাদিকং ধ্বনিতং। গদ্ধেন শ্ৰীজগবিভিভূতি ৰূপভাত্তংসৌরভ্যাত্মকারিতয়া তৎশ্বরণবিশেষকর্ত্তা তেন ধণ্ডিতধিয়ঃ পরানন্দং মোহং প্রাপ্তা অপি ভগবদ্ধণগণা-গ্রাহেণ তলগন্ধবাহং কিপস্তঃ॥ ১৭॥

बिवियनाथठकवर्छी।

বির্লং সভং শুক্রসভ্থ বিইতা ধুছা যক্ত নামরপদীলাদিকং স্ক্মেব শুক্রসভ্মিত্যর্থঃ। স্থানাং স্থান্ র্বঃ দাক্ষাৎ পর্ম ধর্মরুপঃ॥১৫॥

কৈবল্যমূর্ত্তিমনিবেতি বনম্পতিসমূহস্ত নিত্যসিদ্ধাৎ একরসং নিরুদ্বেগপরমানক্ষমন্তং আত্মারাম বিহলমপৃহণীরত্বকোকাং ॥ ১৬ ॥
শমলেতি ক্রমাওবর্ত্তিকীবানাং সর্কমানিক্ত ক্ষপণানি স্থেবান্ত তিবিহৃত্যুংগোপশমকানি। বৈমানিকাঃ স্থারবিশেবোন্তাবনার্থং
বিমানাদবতীর্ব্য সরোবরস্ভান্তর্জনে কণ্ঠদমন্তন ইত্যর্থ: । যদা ভটবর্ত্তিনীনামেব কলসংলগ্রক্তশাধামারক্ত তাঃ স্থ পত্রাদিভিরাদ্ধাদরজীনামন্তর্জনএব বিক্সন্তীনাং মধুযুক্তমাধবীনাং গদ্ধেন পণ্ডিতাঃ ভগবচ্চরিতাস্থাদনৈকতানত্বে সবিদ্ধীকৃতা ধীর্বেবাং তথা ভূতা
ক্ষপি গারন্ত্যের নত্ গানাধিরমন্ত্রীত্যর্থ: কিন্ধনিলং ক্ষিপন্তঃ । আরে মাধবী পুলামোদ তুদ্দিল স্থমক্ষশীতানিল । জগবলীলামৃত
মাধুর্ব্যের্ নিমন্ত্রিতা ক্ষমাকং ধিয়ো বৃত্তীঃ কথমাক্রইং যতনে কিং স্থং তেভ্যোপ্যান্থানং মধুরং মন্তনে ধিক্ স্থাং মৃঢ়েতি নিক্ষতঃ
তেন কৈবল্যমিবমূর্ত্তিমদিতি পূর্কোন্তেন্তবনত্ব পুশামোদাদীনাং ব্রন্ধানক্ষরপত্বেপ্যাক্ষেপাৎ ব্রন্ধানক্ষাদপি ভল্পনানক্ষাহত্যধিক
ইতি দ্যোভিতং ॥ ১৭ ॥

ভাপর যে স্থানে বেদান্তিকবেদ্য ভগবান্ আদ্য পুরুষ সত্তমূর্তি ধারণ পূর্বক ধর্মরূপী হইয়া স্বজন-গণকে হর্ষিত করিতেছেন ॥ ১৫ ॥

সেই ধামে নিংশ্রেয়দ নামে একটা বন আছে দেখানকার সকল তরুই বাদনামুরূপ ফল প্রদান করিয়া থাকে তাহাতে দেই বন অতি মনোহর শোভা ধারণ করে, ফলতঃ তাহা এবছিধ রূপে প্রকাশ পাইতেছে যেন মূর্ত্তিমান্ মোক্ষই বিরাজ করিতেছে ॥ ১৬ ॥

অপর সেই স্থানে বিমানচারী গদ্ধবিগণ দল্লীক হইয়া নিরস্তর ভগবানের জগছিলোধক চরিত্র সকল গান করিতেছে। তাহাদের ঐ বিষয়ে এতাদৃশ অনুরাগ যে উপবনস্থ সরোবরের জল মধ্যে বিকাশ-শীল সকর্মস্কুক মাধ্বীলতার সৌগদ্ধো বৃদ্ধি বিজ্ঞাশিত হইলেও যে বারু সহ ঐ গদ্ধ আদিয়া থাকে তাহাকে দূরে নিক্ষিপ্ত করিয়া দেয়, তথাচ দলীত পরিত্যাগ করে না ॥ ১৭ ॥

পারাবতান্যস্ত সারদ চক্রবাক দাত্য হংগ শুক ভিন্তিরি বহি পাং যঃ।
কোলাহলো বিরুদ্ধেইছির সাজসূত্র শূলাবিপে হরিক্থানির গায়মানে। ১৮।
মন্দার কুন্দ কুরবাংশল চন্দার্থা পুলাগ নাগ বকুলাভুল পারিলাভাঃ।

वीशतयामी।

অস্তৃত্তঃ কোকিলাঃ দাতৃত্য শতিকাঃ শতির মাত্রং কণমাত্রং বিরম্তি খনেন তত্রতা পক্ষিণাম্পি কথা প্রবণাদি প্রমানন্দো দর্শিতঃ ॥ ১৮ ॥

মন্দার পারিজাতৌ স্থরতক বিশেবে। ক্রব তিশকরুক;। উৎপদং রাত্তিবিকাশি। অত্তাং দিনবিকাশি নাগো নাগকে-শরং। এতাং স্থননসং পুশেজাতরং স্থাক্রোপি তুলসীকাডরণেন আইবিনা তুলভা গজে২চিতে সচি। যদিন্বনে তুলভা ভগো

क्रमममर्७ः।

দাত্যহো জলচরো বর্ষাস্থ ককেতি প্রায় ভাষী। ভ্রাধিপোবনমালাধিকারী কোপি মুখ্যোভ্রু: তক্তাতিশরেন ভগবৎ প্রির্থাৎ শ্রীগকড়বৎ বভাবত এব ভত্তৰক্ষরময়শকাত্মকং গানমেব তেবু হরিকথেতি জ্বেরং। ইবেতি তৎপার্বদাদিকর্তৃক হরিক্থা সাদৃশ্যং জ্ঞাপরতি বীণাদিবৎ ॥ ১৮ ॥

যত্র স্থাবরা অপি আনশালিনঃ পরকীয় ভগবৎ প্রীণনগুণঙ্গাধিন শেতাাহ মন্দারেতি। অর্থমপি পুশ্বিদেশঃ স্থ্যনদ শুদ্ধদি-

শ্ৰীবিখনাপ5ক্রবন্তী।

বৈমানিকা ইব ভত্ততাঃ পক্ষিণোপি প্রমণ্ডকা নির্মাৎসরাক্তেতাহ পারাবতাঃ কপোতাঃ অক্সভৃতাঃ কোকিলাঃ দাতৃত্য ডাহক ইতি ঝাতাঃ। অচিরমাত্রং শীর্ষেব হংহো সংগ্রন্তি হরিকণা প্রবর্ততে ত্বরং সর্ব্বে তাবত ফ্রীয়েব পৃণ্ম ইত্যেবং কোলাহলো বিরম্তি। কলা ভ্লাধিপে ভগবৰন্মালাধিকারিণি হরিকণামিব হরিকণাতুল্যমেব কিম্পি খুনাক্ষরস্ভারেন গায়তি সতি হরিহরীত্যাকারক অপক্ষশবং কুর্বতীত্যর্থঃ। ন আনে ভ্লিন্ সাক্ষান্ধরিকণাং গার্তি সতি পক্ষিণাং ভেষাং ভ্লিন্ কীদৃশ আদ্রো ভবেদিতি ভাবঃ॥ ১৮॥

পক্ষিণ ইব ভত্রতা। বৃক্ষা অপি স্পর্কাষ্যাদিরহিতাঃ পরমভকা এবেত্যাহ মন্দার পারিজাতে স্বর্ভকবিশেষে কুরবভিলকবৃক্ষঃ। অর্ণং পৃস্পবিশেষঃ নাগো নাগকেশরঃ এতে বৃক্ষঃ পরমস্পর্কুস্থমা অপি তৃলসিকাভরণেন শ্রীহরিণা বনবিহরণ সময়ে তন্তান্ত্রকালা গর্কে অর্প্রিতে আদৃতে সভি বন্ধিন্ বনে অহা ধলাসি দং তৃলসীতি তন্তা এব তপো বহুমানরন্তি নতু বেবামিতি তেন বদ্যভাগতো জানীমঃ তহি তিদেব তপো বয়মিতি ভারতভূমিং গছা আচরাম ইতি তেবাং মনোহত্লাপো ধ্বলতে। ততক বৈকুঠবাসিনোপি ভারতভূমে ক্ম বাছ্মীতি বৈকুঠালপি ভারতভূমেকংকবেণি হছ্ধলেতে বহুমানয়ন্তের নছস্বর্দ্ধীত্যর্থঃ। যতঃ স্থানসঃ ভারতিলাঃ পক্ষে পৃশ্তরবঃ তেন বৈমানিকা ইতি পারাবতেতি মলারেতাাদিভির্দার্শ্বাভাগেলোভিদ্বর্দ্ধবন্ত বত্ত হিরং ভল্লো বর্তত্তে

তথায় ভূক সকল হরিকথা গানের ন্যায় গুণ গুণ ধানি আরম্ভ করিলে তত্ত্ব পারাবত, কোকিল, পার্ন, চক্রবাক, দাভূহে (ডাক পক্ষী) হংস, শুক, ভিত্তির, (টিরট পক্ষী) ময়ুর প্রভৃতি পক্ষি সমূহের কোলাহল কণকাল বিরঙ হয়, ফলতঃ তত্ত্ত্ত্য পক্ষিগণেরও হরিকথা প্রবণাদিতে পরমানন্দ অসুভব হইয়াছিল, অতএব অমর সমূহ শব্দ করিতে আরম্ভ করিলেই হরিকথা গান হইতেছে মনে করিয়া তাহারা নিঃশব্দ হয় ॥ ১৮॥

অপর বে বনে মন্দার পারিজাত, কুল, কুরব, (তিলক পুষ্পা) চম্পক, পুরাগ, নাগ কেশর, বকুল, উৎপল, কুমল প্রভৃতি পুষ্পা জাতি সকর বরং সৌরভ যুক্ত ইইয়াও তুলনী ভূষণ ভগবান কর্তৃক তুল-নীর গল অর্চিত লেখিয়া তাঁহার উপজাকেই বহু ক্রিয়া মানিয়া খাকে অর্থাৎ তত্ততা বৃক্তাণের গুণ গদ্ধেতিতে তুলসিকাভরণেন তকা ব্যক্তিকাই ক্ষমণে বৃত্ত মানমতি । ১৯ । তৎ সন্থান, ছরিপদানতিমাত্র দৃষ্টি হৈ দ্বব্য মানকত কেন্দ্রের হিমানে।। যেযাং বৃত্ত ক্ষিতটাঃ স্মিতশোজিক্ষাঃ কুম্মন্ত্রনাং ন বৃদ্ধ আন্ধ্রকাইকারিয়ে । এ শ্রিমপিনী কুণ্যতী চর্ণারবিন্দং শীলাকুক্ষেম হরিস্থানি মুক্তদোবা।

क्षित्रवानी ।

वह मानविद्या जातम जला अन्यादिन अव म मरनविन देकाकर । अवर कुछर बनर येल छरेबेंकूईर वर्षविक नृर्दिर्भवादमः ॥ >> भूनरेर कूईरमव विभिन्न । छर महन्तर वाक्षर छवछि । देकः इतिनहर्ता न्नामिकः धानाम छावचारल हुटेड जैकानार विमारेनः म कर्नाति आरेगः । देवक्षा मानकरेकः द्यमदेवक विमारेनः । उद्धि कृष्टि क्रिने नानार विख्याकीम भूगिन यानार छा जनि इरक जाना दिवार क्रमः कामर छरन्नारेनाः निव्हानाविधः म जानशुः म सम्बागान्नः ॥ २० ॥

क्षित्र क्षीः क्षिणि वालास्य मूर्विधातिये नछी क्षेत्रातः नवित नत्रार्क्तनः सूर्वाणे वितित् लाटक नःगकारकः। स्वातिकः स्थ-त्रजी मून्द्रेश भववती मूटका स्थानकानगाः द्या । यदा मूटकम स्थाना व्यनातिष्ठन वास्ता । कीवृत्य नवित क्षिक्यवानि क्षामि

क्रमंत्रवर्षः।

डांच्यां दम्बजा ट्यां । ३३ ।

ভবৈকুঠং মরকতমের মারকতং রছো ন দধুং কিন্ত ভাসামপি পরমভক্তভাতক চুদ্দীপন্দমের আভমিতার্থঃ ॥ ২০ ॥ সুক্তলোরা অন্তরাক্ষাপহত পাণেচুতি বং নিভামের দোবরহিতা। যত এব ভত্তক্যাতাত্তদীনং মন্যাত্তেন সংমার্ক্তনক্ত্রী বা কাচিৎ

विविचनाथठकवर्ती।

मजू हजूर्यः त्यमरजाश्वर्गनामिष्ठि रक्षत्रः॥ ১৯॥

अधिरक्ष विविधित्रमान्तर्गाकाः वंशित्र्या स्थावित्तीः देवकृष्ट्रत्गाकाः वर्गप्ति क्षिष्ठि हित्रगानद्याद्यानिष्ठः अगिक्ष्याव्याद्यानिष्ठि क्ष्याद्याद्यानिष्ठि क्ष्याद्याद्यानिष्ठि क्ष्याद्यानिष्ठि क्षिण्याद्यानिष्ठि क्ष्याद्याक्ष्याः । विक्षः क्ष्यानम्त्रित् त्वत्र शृद्धाक्ष्यकृष्ट्याः व्यवस्थानि । विक्षः क्ष्यानम्त्रित् त्वत्र शृद्धाक्ष्यकृष्ट्याः व्यवस्थानि । विक्षः क्ष्यान्त्राः क्ष्यान्त्राः विश्वत्र विक्षां वर्षाः विक्षः व्यवस्थानिष्ठिति । विवासः क्ष्याचनाः क्ष्यान्त्रमानिष्ठाः विश्वत्र विक्षां वर्षाः विक्षां वर्षाः विक्षां वर्षाः विवासः वर्षाः विक्षां वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षाः

সংশ্ব হরিভজনানশ্বত ইতি কিং বক্ষবাং। সাক্ষারশীরণি বত্ত সধা তজ্তী বর্তত ইত্যাহ বাত্যাং। রূপিক পরবসৌরণা-বতী ভরণারবিজং কণরতী মলগত্যা নৃপ্রেণ শব্রতী হরেঃ সহানি ক্টিকর্ডো ক্টিক্মরভিত্তী উপেউছেরি মধ্যে মধ্যে শোভার্থং সংযুক্তম্বর্ধে। মুক্তবোধা প্রসারিতেন তুজেন দীয়াধুজেন পাণিধতেন সম্মর্কতীব স্বস্কৃত্যিভিত্তী প্রতিবিধিতা শোধন্যা সংমার্কনং

আহিতা গুণ প্রভাবে অন্যের সৌভাগ্য দেখিয়াও তাছাদের মাৎস্থ্য উৎপদ্ধ হয় না, এবৰিধ বন সর্বাদাই বিরাজমান ॥ ১৯ ॥

अश्रत (गरे देवक्र्फ) ज्यवहत्त शर्मत ज्ञि ज्ञि दिश्मी बातक्ष अवः वर्गमत विमाद शतिवाशि, क्षेत्र त्यान प्रक्रियान क्ष्मि वात्र। मक नदर, क्ष्मियानत व्रत्न प्रमास स्थिति मोद्ध मांच रहेताद्व । वाहातिश्रत द्याम माद्ध अवाहण स्थान मांच विविध नदर, क्षेत्रांतिश्य मनः क्षित्र कर्माविद्य क्षेत्र क्ष्मियान क्ष त्रम इत् (म, द नक्म भत्रमञ्ज्ञी प्रमणित विचान निक्ष अवेद क्षम्बादमा मांचमान मद्याहर वर्गन, वादा-तांच जानुसाहिद्यात शांचादिक भतिहानांति याभाव बाद्यो क्षेत्र कांच वाद्याहर क्ष्मि हम ने

बाउधार द्वाराय क्षित्र राज्यात्रीय द्वारित ने द्वाराशास्त्रीय क्षणा पार्ष्य सार १ २० केंग्रि बार्गय तर राज्योत बार्ग्याय गाणार्थ देखाति द्वार्थातीक तत्र व्यक्ति स्वार्थातीक है व्यक्ति स्वार्थित क्षणा अधिक संदर्भ कतिका वेद्यक्षणां स्वार्थित त्रार्थालय स्वार्थित क्षणां स्वार्थित व्यक्ति स्वार्थित व्यक्ति स्वार्थ সংলক্ষাতে স্ফটিকক্ড্য উপেত হেমি সম্মাৰ্কতীৰ বদপুগ্ৰহণেইন্যয়য় ॥ ২১ ॥ বাপীয় বিক্রম ভূটাসমলায়তান্দ্ৰ প্রোমিতা নিজবনে ভূলসীভিনীলং।
অভ্যৰ্কতী স্বলক্ষ্মসমীক্ষা বক্তু মুক্ত্যবিতং ভগবতেতাসতাক বছরীঃ ॥ ২২ ॥

अवत्यामी ।

বিন্। মধ্যে মধ্যেত শোভাৰ্থ উপেতং সংযুক্তং হেম বিন্। বঞা অনুগ্ৰহণে শ্ৰীরত্তাহং করোবিভ্যেত্বর্থ অঞ্চেবাং একানীনাং বন্ধ: সা। অন্ধ: ভাব: বনাপি ততা বজো নাজ্যেৰ ভথাপি অর্পনিট্রিকাবিভিন্ন ভিত্তিভাগের বহুগা প্রতিবিশ্বিভাগতী দীলাপুলং লামরত্তী বিনয়ভক্তিভাগে তথা লক্ষ্যত ইতি ॥২১ ৮

অল হে দেবাঃ বন্ধবিদ্ লোকে জ্রীরেব মনত অমংত নেনে। কিং কুর্মতী বিক্রমন্থানি ভটানি বাসাং। অমলা অমৃত তুল্যা আপো বাসাং তাকু বাণীবু নিজবনে লক্ষ্মীবনে পরিচারিকাভিরবিতা তুলসীতিঃ জ্রীবিক্ষুং প্রেরতী তলা উদকে প্রতিবিধিতং শোতনালক্ষুক্তং উৎকৃষ্ট নাসিকঞ্ স্ববজুং বীক্ষা তপ্রতা উচ্ছেবিতং চুবিতমিভ্যমন্তত। অনেন সন্ধ্যা অপি সৌভাগ্য স্ববং ভগবদস্প্রহেশৈবেতি লোভিতং । ২২ ।

क्यममर्फः।

নৈৰ লক্ষাতে নতু প্ৰেশ্বলীবং। ৰথোক্তং কুৰুক্তেৰবাত্ৰাবাং শ্ৰীকালিক্ষা অহং তলগৃহমাৰ্ক্ষ নীতি দীলাখুৰেনেভাগলকণে তৃতীয়া ।২১ ৰাণীখিতি পতাৰেৰ প্ৰম বেবৰূপখাং ততঃ দৌভাগালাভাৰ্যং দ এৰ পূল্য ইতাভিপাৰেণ। তত্ৰ চ লনে ধ্যানেন তংক্তি তত্ৰ খঞাতিবিষদ্ধা অমূৰ্তেণ্চ সংবোগাচ্ছেৰভখনমণি সকতং। বৰা। উচ্ছেৰিভমুপভ্কমিতামন্ত পূৰ্বপূৰ্বামূভ্ততমা ব্ভৰতীতাৰ্থ: । ২২ ৪

विविधनाथठक वर्षी ।

কুর্মতীব সংলক্ষাতে লীলাব্দমত্র শোধনীয়ানীয়ং। যথা সম্মার্জতীব সম্মার্জনকারিণ্যন্যা দাসীব বহুক্তং কুরুক্তের যাত্রায়াং সাহং তকাহ্মার্জনীতি। তবা স্কালোয়া নির্দোষা। লীলাব্দেনেত্যুপলক্ষণে তৃতীয়া নচানেন সাল্লমাহাম্মা মন্তব্যেভাহ। যস্তা অনুস্তাহণে প্রিরস্তাহং করে।ভোতদর্থমন্তেরাং ব্রুলাদীনাং যম্মা ॥ ২১ ॥

পৰিচরণভক্তিমৃত্যু সাধকতকানামিৰ তথা অর্চনভক্তিমাহ বাণীষু দীর্থিকাস্থ অমৃততুলাললাস্থ নিজবনে নিংশ্রেপননৈক ক্লেছিল ক্লিছিল ক্লেছিল ক্লেছিল ক্লেছিল ক্লিছিল ক্লেছিল ক্লেছি

প্রির ধ্বনি হইতেছে এবং তিনি বাল্ প্রদারণ পূর্বক হস্তপ্ত লীলাক্ষমল দারা ঐ বৈকৃঠে হরিমন্দির সম্মার্জন করিতেছেন ইহা অস্পান্ট দৃষ্ট হয়। তত্রন্থ গৃহের ভিত্তি দকল আটিক ময় এবং মধ্যে মধ্যে শোভার্থ অবর্ণ থচিত হওরাতে যদ্যপি তথায় ধূলির সম্পর্ক মাত্র নাই তথাচ লক্ষ্মী অর্ণপিট্টিকা ময় ভিত্তিভাগে বহু প্রকারে প্রতিবিশ্বিতা হইয়া লীলাপন্ম মূর্ণিত করাতে তাঁহার বিনয় ও ভক্তি দারা ঐ রূপ বোধ হইরা থাকে ॥ ২১॥

অপর হেঁদেনগণ! সেধানকার সরোবর সকলের জল বছে ও অমৃত তুলা এবং তট সকল বিজ্ঞান্য, লক্ষা নেই ভটের নিকটবর্ত্তি বীর বঁদ্রে উপবিক হইরা পরিচার্ত্তির লগিংগর সহিত তগবানের অর্চনা করিতে করিতে সরোবরের জলে প্রতিবিশ্বিত আপনার শোভন কৃটিল কৃত্তল এবং উৎকৃষ্ট নাসিকা মুক্ত বদন অবলোকন করিয়া মনে করেন, অগবাদ্ বুকি আমার মুখ চুখন করিলেন॥ ২২॥

যন ব্ৰজন্তাঘভিদো রচনামুৰাদাচ্ছ পৃত্তি যেহন্য বিষয়া: কুকথা মডিস্নী:। যাস্ত শ্ৰুতা হতভগৈ দৃ ভিরান্তদারান্তাং স্তান্ কিপস্তঃশরণেষু তমঃস্থ হস্ত ॥ ২৩ ॥ যে হভার্থিতামপিচ নে। নৃগতিং প্রপন্না জ্ঞানঞ্চ তত্ত্বিষয়ং সহ ধর্ম যতে।

अवत्रवामी ।

পূন: কণভূতং তৎ বং বৈকুঠং ন ব্রক্তি কে বে কুকথাঃ শৃণ্ বি কান্তাঃ অবং ভিনন্তীভাষ্ডিৎ তক্ত হরেঃ রচনা স্ট্যাদিনীলা ভক্তা অম্বানাদন্ত বিষয়া অর্থকামাদি বার্কাঃ মতিভ্রংশিকাঃ। তেবামব্রন্ধনে হেড্ঃ বান্ত হতভাগৈ ন বৈঃ শ্রুতাঃ সতাঃ ভাং তান্ শ্রোতৃন্ অশরণের্ নিরাশ্রেষ্ব্ তমঃম্ব নরকেষ্ ক্লিপন্তি হত্তেতি বেঁদে। কথং ভূডাঃ আন্তগারাঃ আন্তঃ সারঃ শ্রোতৃণাং পূণাং যাভিন্তাঃ ॥ ২৩ ॥

প্রস্থাৎ ভা নতু শোচ্ডি নোহত্মাভি প্রসাণিভিরভার্ধিতাং নৃথ্যভিং মনুবাজাভিং প্রণলাঃ প্রাপ্তাঃ সভোগি ছরেরারাধনং ন কুর্মন্তি। কীণুশীং নৃগতিং যত্র হভাং ধর্ম সহিতং ভয়জানং ভবতি তত্তর সাধকভাতভাঃ। তে২মুবা ভগবভো বিভৃত্যা মার্হা

क्रममर्म्डः ।

অঘতিদোহ্বাস্ত্রহত্তরঘোলি যং স্পর্শন ধৃতপাতক ইতাত তথা প্রসিদ্ধন্ত ওতা রচনারা অম্বাদং পরিতাজা অনাৎ অনাদীয়ং বজনং তদেব বিষয়ো যাসাং তাঃ কথা ইতি। ভগবৎকথাং কদাচিদলি বে ন শৃণ্ডীতার্থঃ। তসঃস্থ নরকপ্রায়ের সংসার গতেঁর। সারোবিবেকাদিঃ ॥ ২০ ॥

বেহতার্থিতামিতি। যত্র যন্তাং তগবদ্ধ পর্যান্তা ধর্মো ভবতি। তগবং ধর্ম পর্যান্তত তব্ত জ্ঞানক তবতীতার্থ:। তাং প্রাপ্তা আশি সর্মেরাং ধর্মাণাং জ্ঞানানাঞ্চ মূলং যে তগবত আরাধনং ন বিতরম্ভি ন কুর্মন্তি তে সম্মেরিতা: তত্তকং বিলেবতোক্ষত্রন বিক্রমান্ বে ইত্যাদি। তথা চ ত্রদ্ধবৈবর্তে। প্রাণ্যাণি ত্র ভতরং মাহ্যাং বিব্ধেপিতং। বৈরাশ্রিতো ন গোবিন্দ তৈ রাজ্যা বঞ্চিত শিরং। অনীতিঞ্চ চতুলৈত লক্ষাং তান্ জীবজাতিমু। অমন্তিঃ প্রক্রিং প্রাপ্তং মাহ্যাং বিব্ধেপিতং। তদপাফলদং জাতং তেবামালাতিমানিনাং। বরাকাণামনাপ্রিত্য গোবিন্দ্রবণ্ডরমিতি। বরা যত্র তত্তিব্রহং জ্ঞানং ধর্মণ্ড সর্মোহণি অজ্ঞে তাদ্শীমণি নূ

बिविश्वनाथठळवर्थी ।

তত্ত্ব গন্তং কেছবিকারিণ ইত্যপেক্ষায়াং প্রথমনধিকারিণ আহ অবভিদঃ শীক্ষক রচনা দীলা কথা তত্তা অনুবাদাৎ অমুকীর্ত্তনাৎ অত বিষয়া এব কথা: স্তায়াদিশাত্ত্বিষয়া অপি কথাঃ কুকথাতা যে শৃণ্ডি তে যথৈকুঠং ন বজতি তহি কিং বজতি তত্তাহ যাঃ কুকথা হততগৈ: শ্রুতা ইতি হততগা এব ত্তাধিকারিণঃ। অতো হততগৈন্তিবেবাতো গৃহীতঃ সারঃ শ্রোত্বাত্বেনাকুসংহিতং মহত্বং যাসাং অতএব তাং তান্ হততগান্ তমঃকুনরকেরুতাঃ কথা এব বলাংকারেণ কিপ্তি ॥ ২০॥

হস্ত হস্ত যদ্যপি তল গত্তং নৃজাতর এবাধিকারিণো নতু দেবাদি জাতয়ন্তৰপি ভক্তিরহিত শাস্ত্রতাৎপর্য জংশিত বৃদ্ধো নৃজাতয় এবাধিকারিণো নতু দেবাদিজাতয়ভদপি ভক্তিরহিত শাস্ত্রতাৎপর্যজ্ঞংশিত বৃদ্ধেয়া নৃজাতয়এব কেচিছঞ্চিতা ভবন্তীতি তান্ শোচতি বে ইতি হা হস্ত ভারতভূমে কদ। নৃলযুবো ভূষা বরং ক্ষণ্ড ভলস্তঃ ক্ষণমালেগৈব বৈকুঠং প্রাপ্সুয়ামেতি নোহস্মাভি প্র ক্ষাণ্ডিরপাভার্যিতাং নৃগতিং যে প্রপরাঃ প্রাথাঃ বল যতাং তত্ত্বিবয়ং অক্ষবিষয়কং ধর্মসহিতং জ্ঞানঞ্চ ভবতি ভদপি ভগবত আরাধনং ন বিভর্তিন কুর্বিভিচেত্তে অসুযুসায়য়া মোহিভাঃ ধর্মজ্ঞানয়োরণি ভক্তিং বিনা ফলাসিদেরিতি ভাবঃ। বছা বল ধর্মসহিতং জ্ঞানং

হে অমর সকল ! যে সকল ব্যক্তি পাপনাশন ভগবানের স্ট্যাদি লীলাজুবাদ হইতে বিমুধ হইয়া অর্থ কামাদি বিষয়ের মতি জংশিকা কুকথা জাবণ করে, তাহারা কথন সেই বৈকৃষ্ঠ থামে গমন করিতে পায় না। ভাহাদের দৌর্ভাগ্যের কথা কি কহিব, অন্য বিষয়ক কুকথা ভাহাদের জাবণ গোচর হইয়া ভাহাদের পূর্বে সঞ্চিত পুণ্য সকল হরণ করত ভাহাদিগকে নিরাজায় নরকে নিক্ষেপ করে ॥ ২০॥ আহা ! যে মনুষ্য জন্মে ধর্মের সহিত ভব্জান হওয়াতে আমরাও যাহার প্রশংসা করিয়া থাকি,

নারাধনং ভগবতো বিতরস্তাম্বা সম্মোহিতা বিততয় বত মাররা তে ॥ ২৪ ॥

যচ অজন্তানিবিবায়্বভালুরন্তা দুরে ধনাজুপরি ন: স্পৃহ্ণীর শীলা:।

ভর্তু মিঁথঃ ছ্যশনঃ কথনাকুরাগ বৈক্ষা বাস্পাকলয়া পুলকীকুতালা:॥ ২৫ ॥

विश्ववामी।

নতু সম্মোহিতাঃ বতেতি থেদে যদি বা এবং সম্ভঃ ন কেবলং তএব ন ব্ৰঞ্জি । কিন্তু বে ভগৰদারাধনং ন কুৰ্ক্সি তেপি তেখাং মানাবিমোহিত্যাদিভি । ২৪ ।

পুন: কথছতং। यक ন উপরিছিতং ব্রজন্তি। কে অনিমিবাং দেবানাং খবতঃ শ্রেটো হরিঃ ভক্তান্ত্রভ্যা দূরে বমো বেবাং। ববা দ্বীকৃত বম নিমুমাঃ। দূরেহহম ইতি পাঠে দ্বীকৃতা অহলারা ইতার্থঃ। স্পৃহণীয়ং করুণানিশীলং বেবাং। কিঞ্ ভর্জুরের বাং স্বশস্তত মিথঃ কথনে বোহসুরাগ ভেন বৈক্রবাং বৈবশ্যং ভৈন বাস্প্রকা তয়া সহ পুলকীক্তমলং বেবাং। বহা ন উপরীতি ব্রজ্তাং বিশেবণং নিরহ্লারহাৎ অন্যত্তোপি বেহধিকা তে বহু দ্বীভার্থঃ। ২৫ ।

क्रथनमर्छः

গতিং প্রপন্না য ইতি পশুনির্বিশেষা ব্যাবৃত্তাঃ ॥ ২৪ ॥ অনিমিষাং কালানধীনামিত্যর্থঃ ॥ ২৫ ॥

विविध्यापहळ्यकी ।

কুৰ্বন্তি নহারাধনং তে মোহিতা:। বহা ভগৰতঃ এবারাধনং ভগৰতে ন দদাতি তৎস্থ তাৎপর্যভয়া ন কর্মন্তি তে সকামভক্তা অপীতি॥ ২৪ ৪

অপাধিকারিণ আহ। বচ্চেতি অনিমিষামূৰভো হরিভভায়বৃত্তা। দুরে ধমো বেষাং। বধা দুরীকৃতা যম নিয়মাঃ। দ্রেহ্ম ইতি পাঠে দ্রীকৃতাহকারাঃ নোহআকমপুাপরিভূতাঃ অধিকাঃ যতেহিছাতিঃ স্পৃহণীরমের নতু প্রাণাং দীলং বেষাং তে কিং তংশীলং তত্র ভেষাং প্রমাণমাহ ভর্তঃ প্রভার্মিণ ইতি পরক্ষর প্রাণম্বত্বন কথনেনাআদ বিশেষোগলন্ধেঃ কচিৎ প্রাণাদাবস্মাণামণি কদাচিৎ কেষাঞ্চিৎ তত্র মং ক্ষণিকাগমনং জারতে তত্ত্তত্ত্ত চিবিভূতিস্থাস্তবাভাবাৎ সমনমণ্যসমনারমানমের যথা বিবিধনৌরভ্যানি তাম্কের মণিমর রাজসদনের ব্যাভ্তর কৃষণীনাং প্রবেশঃ অপুরস্পরিজন বৃন্ধান্তব কৌতৃক বিশেববশাৎ দর্শরিভ্যিতো রাজ এবাজরা তবতি তথৈব দীরা প্রাকৃত নিভ্যথাম নিবাসিনঃ অলান্ কৌতৃক বশাদ্রশির্ত্থাকৃত পদার্থান ক্ষাচিৎ ঘোরসভান্ অস্থান্ কলাচিৎ সাজ্বিভাগ্তিভ্যাণিতক্রমিণঃ সনকারীংশ্বে স্কেইবর ভগবানেবানরতি প্রঃ শীজনের তানেবাগান্ততে। নিঃসারস্থিত। শৈকাভিজ্ঞিকিছিং অণার্বন্ধার বিমানৈ ক্রিভূপনানরতি ভত্ত সদা
নিবাসরতি স্থামনাধুর্বাং অনেবামাধুর্বাং অলীলাদিমাধুর্বাং তানেবাখার্যভীতি বিবেচনীয়ং ॥ ২৫ ॥

নের মানার কি একেবারে বিষোহিত ? ॥ ২৪ ॥

হে দেবগণ ! বাঁহারা অহমার শৃত্য এবং আমাদের অপেকাও অধিক যোগী, ওাঁহারা দেই বৈক্ঠ ধামে গমন করিতে পারেন । তাঁহারা ভগরান হরির নিরস্তর অকুর্ত্তি করাভে এ রূপ প্রভাবশালী যে মমও তাঁহালের নিকটে বাইতে নমর্থ হয়েন না, তাঁহালের ভক্তির কথা কি বলিব পরস্পার বসিরা ভগবানের যশঃ কথনে এমত অকুরাগ প্রকাশ করেন যে, তজ্জান্ত অবশতা ও বাস্পোদান হওরাতে শরীর লোসাঞ্চিত হয়, এ নিবিত্ত তাঁহাদের কাল্লপানি বভাব সকলেরই স্পৃহণীয় ॥ ২৫ ॥

ত विश्व श्वर्य विश्व एवर निक्षण है। जिल्ला विष्ठ विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विश्व विष्य विषय

विषत्रभामी।

তরদা তদপূর্বং বিকুঠং অথোহনত্তরমুণেতা মূনর: পরাম্ংকটাং,মৃদমাপু:। অপূর্বংছ হেতব:। বিখণ্ডরুণা ছরিণা অধিকতং অধিটিতং ভূবনানামেক্ষেব ৰক্ষাং দিবামলোকিকং।∴ বিচিত্রাণি বিব্ধান্ত্যাণাং বিমাণানি তেবাং শোটিদী থি যিখিন্। যোগ-মায়া বলেনেতি অঠাক্ষোগ্রভাবেণোণেতা প্রমেবংসেড় বোগমায়েতি চিফ্ কি বিগাস ই তি জটবাং ॥ ২৬ ॥

ভিত্মিন্ বিকুঠে বট কলা: প্রাকার ছারাণি। আংসজ্জনানা ভগবদ নিশেৎকঠরা ভত্তদত্ত দর্শনে আংসজিমকুর্কাণা:। ছারপালৌ দেবাবপ্লান্স্মানং ব্য়ো হয়ো: গৃহীভে গনে বাভ্যাং। প্রাইদ্ধি কেল্রানিভিঃ বিটছঃ স্কেব্যা বেশো হয়োঃ ॥ ২৭ ॥

তাবেব বর্ণয়ভি মতা বিরেকা: অধরা: বঙাং তরা বন্দালর। নিবীতৌ কঠলছিনা। অলক্কতো । অদিতা নীলা: চতুইরে চতু:

ক্ৰমশৰ্ড:।

ৰোগমারাবলেন ভগবছজি প্রভাবেণৈর ন তু স্থাজ্যা। মনীবি হাস্কাবোছরং মম লোকাবলোকনমিতি জীভগবভোক্তছাৎ ॥২৬ ভ্রিজিডি যুগ্মকং ॥ ২৭ । ২৮ ॥

अविषनाषठक वर्जी ।

ভত্ত ভত্ত সনকাদীনাং গমনং বর্ণরতি। অথো ত্রিকুঠং বোগমায়ায়া ভগবিদিছাস্বর্তিভা ভগবছকের্বলেন নতু খবলেন উপেতা ভগবংকপরা পরাং মৃদং অপূর্বাং ববাভাতবা আপুং অত পরামপূর্বামিতি পদাভাগে তদীর অন্ধান্তবমুদোশি সকাশাং বৈকুলীর মৃদ আবিকাং দর্শিতং। বিকুঠং কীদৃশং তেনৈব বিশ্বত্তকণা হরিণা অয়মধিক্তমিতি নাত্ত ত্রায়াশকের ধিকার ইতার্থং। কশয়া সীয়ভক্তিকুপদেই মেব মুনীনপ্যানিনারেতি বিশ্বত্তক পদবাস্থাং বন্ধ বিচিত্তাণি বিব্ধাত্যাণি বিমানানি ভেষাং শোচির্যত্ত তথা ২৬।

ভঙ্গত তিখিন বিকুঠে বট কলাঃ প্রাকারধারাণি অভিক্রমা। আসজ্জনানাঃ আমত এব এলাহভবিধাৎ। তত্ত তত্ত্ব ধার-প্রাকারদৌ সৌরপ্য সৌরভ্য সৌন্ধ্যাদির বিবরব্র্যা আসজিনক্র্যাণাঃ। অথ সপ্তমাং কল্যাং দেবৌ ধারপালৌ জরবিজ্যাব-পশ্যন্গৃহীতগলৌ ভ্রাণি বক্তুং মনাগ্রভসং কিঞ্জিৎ কোপক্রংচ ধ্বানৌ। কেন লক্ষণেনেতাপেকারামাহ। ক্রবেড্যাদি ফুট নির্মান্যামিত্যত্ত নাসাধাসাভ্যামিতি বিশেষ্য পদমধাহার্যাং॥ ২৭। ২৮॥

হে অমর বৃন্দ ! তদনন্তর মুনিগণ যোগমায়াবলে অর্থাৎ অফাঙ্গ যোগ প্রভাবে উক্ত বৈকৃষ্ঠ ধাষে উপনীত হইয়া পরমোৎকৃষ্ট হর্ব প্রাপ্ত হইলেন । বিশ্বপ্তরু ভগবান ভথায় অধিষ্ঠিত হইয়াছিলেন, অন্তরাং ঐ স্থল অতি অপূর্ব্ব ও সমস্ত ভূবনের বন্দনীয় ছিল, আর দেই স্থানের চারিদিকে প্রধান প্রধান বিদ্যান বিচিত্র বিমান সকল দীপ্তি পাইভেছিল ভাহাতে ঐ স্থান স্বাদা দেদীপ্যমান হইয়া রহিত ॥২৬

সে যাহা হউক, মুনিগণ ভগবদর্শনার্থ উৎস্তৃক ছিলেন, অভএব ঐ সমস্ত আশ্চর্যা দর্শনে উহিচ্ছের অন্তঃকরণ আগতে হইল না, তাঁহারা ক্রমে ক্রমে ছয়ু কক্ষা অর্থাৎ প্রাকার বার অভিক্রমণ করিয়া সপ্তম কক্ষাতে গিয়া ছুইল্স বারপালকে দেখিতে পাইলেন। ঐ ছুই ব্যক্তির বয়ণ সমান, ছুইল্সনই গদাধারী অভ্যুথ্ন উ কেয়ুর কুওল ও কিরীট বারা অলঙ্কত এবং অভিশয় স্ক্রম বেশ ধারণ করিয়াছিল ॥ ২৭ ॥

তাহাদের কঠদেশে বনমালা লখিতা ও নীলবর্ণ বাছ চতুইয় মধ্যে ভাষা বিজ্তা হওয়াতে সহতী শোভা হইয়াছিল, অধিকল্প তথ্যধ্যে অমর নিকর মত হইয়া পতিত হইতেছিল, তাহাতেই মনোহর বজুং ক্রবা কৃতিকয়। ক্ষুট নির্মনাজ্যাং রক্তেক্ষণেমত মনাঞ্চপং ধবানো । ২৮ ॥

ঘার্য্যেতয়ে। নি বিবিশুর্ম বিজ্ঞানপূর্কী। পূর্বা যথা পুরটবক্ত ক্র্যানিকার।

সর্বত্র তে বিষময়া মূনয়ং অদৃষ্ট্যা যে সঞ্চরস্তাবিহত। বিগতাভিশক্ষাঃ ॥ ২৯ ॥

তান্ বীক্ষ্য বাতবসনাংশ্চত্রং ক্রমারান্ র্ছান্ দশার্ছবর্মসো বিদিতাভাতত্বান্।

বেত্রেণ চাম্বলয়তামতদর্বাং স্তো তেজোবিহ্স্য ভগবৎ প্রতিকৃল্শীলো ॥ ৩০ ॥

Beamin

সংখ্যকা বাহব তেবাং মধ্যে বিনাক্তর।। বক্তু ক মনাগ্রভসং কিঞ্চিৎ ক্ষরং দখানো। কুটো উৎফুরো নির্গটো খাসমাগৌ নাস। পুটে তাভাং ॥ ২৮ ॥

এতয়েশিবিতোঃ পশ্সতোঃ ভাৰনাদৃতা অপৃটি ব বাঃ পূর্কাঃ বট ্ছারঃ পূর্চাগদ্ধত বক্সমন্ন কৰাটিকা মান্ত। তা বধা বিবিশুঃ তথা সপ্তমান্ত্রামানি ছারি বিবিশুঃ। অপ্রান্তর হৈছুঃ সর্বাত্র বাজ্বসনান্ নীলান্ বৃদ্ধানি পঞ্চবর্ষ বাশক্বৎ প্রতীয়্মানান্। চকারালক্ষিণাচ অত্থান্ত্রগাং নিবারিতবত্তী। ন তৎ ত্বান্ মহ জীতি তথা তান্। অংগ্ অনাণি ধঠি মিতোৰং তেবাং তেকো বিহস্য ভগ্যতো অন্তাদেবস্য প্রতিকৃশং শীলং ঘ্য়োঃ। ৩০ ॥

क्रमम्रकः।

মনাগ্ৰন্তৰ হেতৃপারীতি ॥ ২৯ ॥

ভগৰৎ প্ৰতিকৃপনীলাৰিভাগায়েং ভাবং ভগৰাংস্থাবদাশ্বনা সৰ্কতঃ প্রমেশ্বর ইতি নিশ্বস্য প্রমেশ্বগ্যস্য আহ্মণাদিতি রতি ক্রমণং সহতে ভদীরসেবকান্তস্য স্থতরাং তৃ তরিহোগ প্রাপ্ত পালনাধিকারস্য ভদংশস্য কেনাপ্যতিক্রমং সোচুং ন শর্বস্থীতি ভগৰতো বিপরীতস্বতাবৌ তাবিদং ন সহতে ইতি। দৃষ্টাক্স চিক্রেক্ডু শিংশিবা বৃত্তান্ত এব জ্বেরঃ ॥ ৩০ । ৩১ ॥

वीविश्रमां भड़ेक वर्षी।

তরো: কোপকারণমাহ। এতয়ে শিবিতো: পশাস্তে এতাবজ্ঞাদনাদৃত্য খা: পূর্কা: বট্ বার: পূর্টপট্টিকা হীরককীলময় ক্রাটিকাবভান্তা যথা বিবিশু: তথা সপ্তমামশি বারি তে বিবিশু:। প্রশাকরণে ছেত্ং তেবাং খভাবমেবাছ। সর্প্র এতে সঞ্চরস্তি বে অবিহতা: কেনাপাশকাভিবাতা: ॥ ২৯ ॥

বাউত রসনা ক্রমণ কিবা ভত্পলন্ধিতানি সর্বাণি বল্লাক্ষারাণীনি বেবাং তে বৃদ্ধান্ প্রদ্ধান্য বন্ধান্তি পঞ্চবর্ষবালক্ষ্থ প্রতীয়মানান্ একজ্ঞান্ বীক্ষা বেজেব ভিবাহেজ বারণেন চকারাং স্থান ভগবদস্তঃপুর্মিতো মাবিশতেতি বাঙাও আন্তাই প্রাণি নিবাহয়ালাসতঃ। ন ভং অশনমহ ভীতি ভবা ভান্ তৌ অমিবিলয়ে আছো আলোণি প্রক্ষান্ত্রাবিলয়ে বাই বিভিন্ন ভেবাহি তেলো বিহন্ন ভগবতো প্রদ্ধান্ত প্রতিভ্নান্ধ ভানি ক্ষান্ত্রাবিলয়ে ভগবতো প্রদ্ধান্ত প্রদ্ধানা ভবিত ভাবঃ এ০ ॥

শীলা এব ভূচ্যাঃ আদত্যাঃ কুশ্লিনো ভবস্তীতি ভবিঃ ॥ ৩০ ॥

দর্শন হইয়াছিল। কিন্তু উৎফুল্ল নাগাপুট এবং অরুণ বর্ণ লোচন ও কুটিল ভ্রুষ্থ দারা ছুইজনেরই বদন ঈষৎ কোপকুন্ধ দেখাইতেছিল ॥ ২৮॥

যাহা হউক ঐ হুই ৰারী দণ্ডায়মান হইয়া দেখিতে থাকিলেও সেই মুনিগণ তাহাদিগকে কোন কথা জিজ্ঞাসা করিলেন না পূর্বে যেমন ছয় ককায় পুরটালক্ষত বক্তময় কবাট উদ্বাটন পূর্বক বারে প্রবেশ করিয়াছিলেন, সপ্তম ককার বারেও তক্তপ প্রবিষ্ট হইলেন। তাঁহাদের জিজ্ঞাসা করিবার অপেকাও ছিল না সর্বত্ত আপনাদের অবিষম দৃষ্টি প্রযুক্ত সকল স্থানেই নিঃশক্ষ চিত্তে ভ্রমণ করিয়া বেড়াইতেন কুট্রাপি কেছ নিবারণ করিতা না ॥ ২৯॥

অপর ঐ মুনিগণের আত্মতত্ত আনু হইয়াছিল ইহাতে তাঁহারা বৃদ্ধ ছইলেও পঞ্চবর্ষীয় বালক সদৃশ প্রকাশ পাইতেছিলেন অভ্যাব বিজ্ঞানি ধারা তাঁহাদিগকে নিবারণ করা কদালি যোগ্য হয় না, কিন্তু ঐ চুই জন ধারপালের স্বভাব ভগবান্ ক্রেম্বালেবের স্বভাবের প্রতিকৃশ থাকাতে তাহারা তাঁহাদিগকে বিবন্ত দেখিয়া উপহাস প্রকৃতিহাগ্যের ধারা ধাইতে নিষেধ করিল ॥ ৩০ ॥ ভাভ্যাং মিষংখনিমিষের নিবিধামানীঃ খর্তনাঞ্পি হরে: প্রতিহারপাভ্যাং।
উচ্: খ্রুত্তমদিদৃক্তিভঙ্গ ঈষৎ কামাপুলেন সহসা ত উপপ্লুভাকাঃ। ৩১।
শ্রীম্নর উচ্:।
ভোগাইহেত্য ভগবৎ পরিচর্যায়োচৈতস্ক্রিশিণং নিবস্তাং বিষমঃ খ্রভাবঃ।
ভিশ্বিন প্রশাস্ত পুরুষে গভবিগ্রহে বাং কোবাছাবং কুহক্যোঃ পরিশঙ্কনীয়ঃ। ৩২।

क्रीधवणामी ।

হরের রিপালপতিভাগে লেবের পশাংল্প বার্যামাণা তে মুনয়ঃ কোবা ইত্যাদি স্লোক জয়ীমূ চু:। ত্বহৃতমঃ শ্রীহরিঃ তত দিদৃক্ষিতং দর্শনেছে। তত ভালে সভি কামতামুলঃ কোণঃ তেন নহসা অক্সাণেবোপপ্লুতানি ক্ষিতানি অক্ষীণি বেবাং তে স্কু পূজা
তমা অণীতি নিষেধানত হৈ জোধানত হৈ বা হেতুঃ ॥ ৩১ ॥

উচৈৰ্দ্বতা। ভগৰৎ পরিচ্যার। এতা প্রাণ্য ইব বৈকুঠে নিবসতাং তছৰ্মিণাং ভগৰছৰ্মিণাং সমদর্শিনাং মধ্যে বাং যুববোৰেৰ কোহরং বিশ্বলং স্বভাবঃ কৈন্দিৎ প্রবেটবাং কৈন্দিরেতোবং ভূতঃ। নতু স্থামি রক্ষার্থং বারণালরো রেব সভাবং গুণএব ইতি চেদত আহং গুলিরিতি কুহকরোঃ কণ্টবোঃ আয়াবৎ স্বচ্টাস্তেন যথা আবাং ক্পটো ভথানোছিণি কন্দিৎ কণ্টঃ প্রবেক্যতীতি অরং ভাবঃ নত্ত্ব ভগৰত্তকং বিনা কন্দিগাঞ্জিত নচেশ্বে প্রশান্তবাদ্বিদ্যমান বিরোধে ভরশকা অতো যুবাং কেবলং ধ্রাবেবেতি ॥০২

ক্ৰেম্পৰ্ম

ভলো ৰ'লিপালৰোঃ সালোকাসামীপ্যাৰিভাৱত মাৰ্থস্থ বৈকুঠজনেৰপ্টিভং বিচারং কামান্তলোগযুক্তভাৎ স্ব স্থাবাস্থালিচ নিক্ষতি কোৰেভি জিভিঃ । ০২ ।

श्चीवित्रमाथहत्कवर्शी।

অবিমিৰের বৈক্ষীর দেবের পশাৎক অহতিমা অপি ভগবৎ সমীপ মতিশরেন গস্তমহা অপি হরের রিপাভাাং নিবিধামান। উচ্:। অক্তমনা হরের্দর্শনেহায়া ভলে উপবাতে সতি কামানুজেন কোধেন সহসা উপলক্ষিতমেব উপপ্লুতানি ব্যাপ্তানি অক্ষীণি

ক্রোধেশিরজন্ধাৎ প্রথমং নিন্দতি কো বা ইতি। তদ্বর্দাং ভগবজুলা ধর্মণাং ভতাপি ইহ তৎ সমীপ এব বসতাং বিষমঃ আদ্ধিন ন প্রথমিতি ভগবৎ সভাব পরিপদ্ধীকঃ সভাবঃ। নতু আদ্ধাবেশেন ভগবজ্বেগৈছিল কপটেন প্রবিশস্তাভঃ প্রথমং আদ্ধা আপি জিল্পাতা এব ভতঃ প্রবেশনীয়া ইতি চেত্তহি যুবামেব ভত্তক্রেশেন কপটনো ভনীয় এক্ষণাত্ব প্রধাস্তব গত বিগ্রাক্ষণাত্ব স্বাধিন ভাবঃ ক্রিলাপে প্রস্তুত্তি ভদ্বিশাবত্রেঃ নম্বনাঃ কোণি ভত্ত শীক্ষনীয় ইত্যাহঃ। ভন্মিত্রাণি আন্মবনিতি আন্মবন্দ্রতিভ্রালি ক্রালের বংং যুবামের কণ্টনোর পি কোবা শক্ষনীয় ইতি কাকা যুবামের শক্ষনীয়াবিভি ভাবঃ॥ ৩২ ॥

বৈকৃষ্ঠ সীর্বাণগণ অবলোকন করিতেছিলেন তাঁহাদের সমক্ষেই ঐ ছই দ্বারপাল প্রাতম মুনি-গণকে পুরী প্রবেশ নিষেধ করাতে মুনিরা ভগবদর্শন বিষয়ে মহা ব্যাঘাত জামিল বিবেচনা করিয়া সহসা ক্রোধান্তিত হইলেন এবং সেই রোম বশতঃ তাঁহাদের নয়ন যুগল অতিশয় ক্ষৃতিত হইল ॥ ৩১॥

তাঁহারা ক্ষ হইয়া কহিতে লাগিলেন, অহে! ভগবানের হুমহৎ পরিচর্যা করিয়া তৎ প্রভাবে বৈকুঠ লোক প্রাপ্তি পূর্বক বাঁহারা এ ছানে বাস করেন তাঁহারা সকলেই ভগবছন্মী এবং সমদশী তোমরাও তাঁহাদের মধ্যেই ছুই ব্যক্তি, তোমাদের এমত বিষম স্বভাব কেন? কেহ প্রবেশ করিবে কেহ প্রবেশ করিতে পাইবে না এ কি? যদি বল ছারপালদিগের প্রভুরক্ষণার্থ এ রূপ সভাব ভূষণ ব্যতীত দুবণ নতে, এ বিষয়ে বক্তব্য এই, তোমাদের প্রভু অভিশয় প্রশান্ত পুরুষ, তাঁহার সহিত কাহারও বিরোধ নাই, ইহাতে তাঁহার রক্ষণার্থ ভয় ও শহার সন্তাবনাও দৈখি না, বুবিলাম তোমরা স্বরং কপট, এজন্য আপনার দুকী স্বাস্থারে শহা করিতেছ অন্য কোন, কপট আগিয়া প্রবেশ করিবে। এখানে ভগ্রস্ত ভিন্ন কি অন্য কাহারও আগিতে সাধ্য আছে । এ ২ ।

নহস্তরং ভগবতীত সমস্ত কুকাবাল্পানমাল্পনি নভা মঁডদীৰ ধীরা:। পশাস্তি যত্ত সুৰ্রো: হুরলিলিনো: কিং বৃৎপাদিতং ফুদরভেদি ভরং যতোহ্দ্য ॥ ৩৩ ॥ তথামমুব্য পরমস্য বিক্ঠভর্ড; কর্ডুং প্রকৃতিমিত্ ধীমতি মন্দ্রীভাগে।

विषद्रवाशे।

अप्रमश्चारीस्थ (कनः नह स्थानाविश्वषीकाहः नहीिक नमकः विषः कृत्को दश्य वना देह स्थविक श्वीता विद्यारः आपाताव्यवः एउनः न नमास्थि । किष्वित् नवमापात्राचानमञ्जूष्ठः नमास्वि महाकात्म पठे।कानमित । एना वनानश्च बाधात्मकनगण्डित क्षेत्रदृष्टसम्बद्धाः खदाः खदकि खदाश व्यक्तिस्तः कावृश्काः वक्तः त्वन कावत्मन स्वत्यम वावित्या वृश्वतार्वितारमानिकः कर किः न किश्विकार्थः ॥ ०० ॥

ভত্তশাদস্বা বৈক্ঠনাথত ভ্তাতিয়াং বাং ব্ৰাডাাং প্রকটং ভত্তমেৰ কর্ত্তিং বিরপরাধে বদৰ্জং তথাসহি চিছামেন তদেবাহ রস্তরত তেরত ভাবং সভা তদর্শনেন ইতঃ বৈক্ঠলোকাং লোকান্ দেহান্ অকতং। যত্তবের লোকের্ আত পাণীরবোধ্তর

क्यममर्छः।

ধীরাঃ ব্রন্ধনিষ্ঠাঃ উদরে অন্তণলন্ধিতৈর্দেইত রো ভেদঃ পৃথক্ পৃথক্ তৎপুরাণাত্মকঃ বহুক্তং তৎকারণকং ভরং । ৩০ । পাপীরসো লোকান্ জনসমূহান্ ব্রুতং তেরু জায়েতাং। যব্র ব্রুলনে ইনে অম্মিরিন্দিষ্টা লোকা দৈত্যরাক্ষ্যজনসমূহা

बिर्यमाथठकवर्छी ।

শৃণুত বে মুখে শৃণুত ইত্যাহঃ নহীতি সমন্ত্ৰের বিখং কুকো বত তাজিলিতি যুবরো র্বে শক্ষনীরাজেণাত কুলাবের বসতী তার্থঃ। ইহ বৈকুঠে যত্র ভগরতি আন্ধনি পরমান্ধনি আন্ধানং সর্ক্ষেরের জীবান্ধানং ধীরা জানিনোহস্তরং ভিরং ন পশাতি নভসি মহাকাশে নভো বটাকাশনিব তভাত পরমেশ্বত যুবাভাং ত্বরিদিভাং উদরভেদিভরং শত্রুং কনিং কণটেনাত্রাগত্য প্রভাকত উদরভেংততীতি তবং বতঃ কারণাং বিশেবেণোংপাদিতং তং কিং নাম আন্ধাকমত্রে ক্রতং ভাবং প্রথমনিতার্থঃ। অত বদাশি সার্ক্ষভাদি স্বরূপ ভূতাত্ত ক্রাণে গুণাদীবর চৈডন্যান্মক্রন্ত্রাধীননাদি সভাবং জীবতৈত্বামীশিত্রং ত্র্যাভ্রন তপ ইব ভাতত্ব ভিনাতে ভ্রাণাত্র পজ্বাং স্থাভ্রন তপ ইব ভাতত্ব ভিনাতে ভ্রাণাত্র পজ্বাং স্ক্রানান্ধ জানিবাজ্ঞানিনাঞ্চ পদ্ধতি জাবৈত জানসভা নির্কাণসিদ্ধার্থং চিৎসামান্য গ্রহণবৈদ্ধবিধীরমানভাং চিবিশেব ভূতানামীশ্বভীববোর্গণানাং মান্বান্ধণ গ্রহণত নিবিদ্বানীশ্বভীববোর্শ্বন্তাশ দুটাভো নাম্পশন্মা জেনঃ ৪ ৩০ ৪

এবং নিশিছাণ্যশান্তছাৎ পুনরভিজোধাৎ শশক্তি তত্ত্বাছাং মৃষ্যালাং মন্দ্রীলাং ছিলালাং অমুষ্য বিকুঠভর্ত্ প্রফুটং প্রকর্ষং কর্জুং ধীমহি অত্র ভেদদর্শনং বিশেষতো আন্দ্রবারণপু অন্ধণ্যকের্তাশকর্ষত্বকার্যের প্রকর্ষত্ব কর্ত্তি কর্ মের চিন্তবেনেতি ক্লং তৃকীং ছিল্লা ভদেবাছা। ইডো বৈকুঠাযুক্তং। বত্ত শোকের্ পাণীর্যো যুল্লিধাপরাধিলনভ ভেদভাবদূট্য

আছে! ভেদ জানই ভয় শকার কারণ, ভগবানেত কাহারও ভেদ বৃদ্ধি নাই, এই সমস্ত বিশ্ব বাঁহার কৃষ্ণিতে অবস্থিত আছে, পণ্ডিতেরা তাঁহাতে কখন আজার ভেদ দর্শন করেন না, বরণ বেমন মহাকাশে ঘটাকাশকে অন্তর্ভ্জুত হইতে দেখেন, তাহার ন্যায় সেই পরমান্তাতে স্ব স্থ আজার অন্তর্ভাব অবলোকন করিয়া থাকেন, কি আশ্চর্যা! ভোমাদের ফুইজনকে দেববেশধারী দেখিতেছি অধচ জন্য রাজাদের যেমন উদর ভেদকারি ভর হর অর্থাৎ কোন শক্তে কপট পূর্বক আগমন করিয়া আমাদের প্রত্ত্ব দৈহিক পীড়া উৎপাদন করিবে এই বলিয়া বেমন ভ্রেতার ভর জন্ম তোমাদের চিত্তে তাদৃক্ ভর দেখিতেছি, ইহা কি কারণে হইল ? কোন কারণই ত আনাদের উপলব্ধি হর না ॥ ৩৩ ॥

যাহা ছউক ভোমরা এই পরস পুরুষ বৈক্ঠনাথের ভ্তা, যদিও ভোমরা সম্পর্কি, তথাচ তোমা-দের সন্দ করা উচিত হয় না, ভোমাদের উৎকৃষ্ট সলল করিবার নিমিত্ত এই স্পরাধে তোমাদের প্রতি যাহা উচিত তাহা চিন্তা করি, ভোমাদের ভেনসৃষ্টি প্রযুক্ত ভোমরা এই বৈক্ঠলোক হইতে লোকানিতো অজ্জনন্তরতাৰ দৃষ্ট্যা পাপীয়দ স্তয় ইবে রিপবোহ্দ্য যাত্র । ৩৪ । তেখামিজীরিভদুভাৰবধার্ব্য ঘোরং তং অক্ষাদশুন্দবারণমন্ত্রপূর্বৈরঃ। সদ্যো হরেরসূচরাবুরু বিভাজন্তং পাদগ্রহাবপতভাষ্ঠিকাপ্তয়েশ । ৩৫ ॥ ভূয়াদঘোনি ভগবন্তিরকারি দণ্ডো যো নৌ হরেত হুরহেলনমপ্যশেষং।

विश्वपाभी।

ভাৰত है। देत्म कामः क्लांश्कर्या लांच देखि मेटलांका ब्रह्मा त्रियः चयक्ति लागीम्रामा लाकामिति वा ॥ ७८ ॥

ইতি তেখানীরিতং ভাষণং ঘোরমবধার্য ভঞ্চ ত্রহ্মণগুণ প্রকাশগুণ কথাত্র সমূহৈরনিবারণ মধার্য হরের স্কুরো অভিকান্ত বেশ অতিকাতর্যাণ ভরেন তৎপাদগ্রহং কুর্বস্থা সভৌ দশুবদপত্তাং। কথক্তস্য হরে: এবস্থাতেভা মুনিস্তা ভাষামণি উক অধিকং বিষ্ঠাতঃ ভরং ভাষরতঃ ॥ ১৪ ॥

আহো অপরাক্ষকভাতিরিভাকুতপামানান্ প্রত্যেত্য। অংশানি অঘবতি ব উচিতো দশুঃ স এব ভবত্তিরকারি। নার ভবতামপ রাশঃ কলিগতোহসৌ নৌ আবরো ভূরিং। বং অলেবমণি সুরহেলনং ঈশরাক্তাতিক্রমরূপং পাণং হরেং। কিন্তু যুবাকং যঃ

क्रमगमर्जः।

खरमार्च छनवरलाश्ति त्रिभवः । ७३ ॥

ত্তক বন্ধৰত মৰণাৰ্থেতানেনানয়ে। তেবু পূৰ্বং বাহ্মণৰ জ্ঞানং নাসীদিতি গমাতে। বাহ্মণেভা উক বিভাত: । ০৫ । তৌতু স্বায় ছন্ত্ৰিপূৰেৰ জন্ম বৃদ্ধা বিপুৰক বৃদ্ধা তৎস্বৰণমাত্ৰং প্ৰাৰ্থিয়তে ভূৱাদিতি। ইহ ঈদৃগণৱাধে ভগৰংস্বৃতিয়ত্ত মোহে।

श्रीविधमानहळ्याही ।

ইমে কামঃ ক্রোধ তথা লোভ ইতি সীতোজা ক্ররো রিপবো ভবস্তি অত্যাপরোক্ষার্থবাচিন। ইদম্ শব্দ প্রারোগেনেমে সংগ্রাত্তাখা-কেনোকুড়াঃ ক্রোধানর ইতি সরস্বতাভিমতোহর্থঃ ॥ ৩৪ ॥

আহো অপরাক্ষমাবাভ্যাং বৰু াশ্বণাঃ কোণিতা ইতি ওলোটর্বক্লবামাত তেবামিতি হরেঃ সকাশাৎ প্রথমং বিভাতঃ ভীতে অতুস্ উকারলোপশ্চান্দসঃ। তভণ্ড অভিকাতবর্গণ ভেষাং পাদগ্রহণং কুর্মবন্ধী মণ্ডবদশততাং ॥ ৩৫ ॥

আহো অপরাদ্ধমন্থাভিবেৰ বন্ধুবাং ভগবত্তকো শশ্রে হয় হয় শতঃ পরং কিং কুর্মাঃ ক্রোধ্যন্থা জিত। ইতাত্মকং সার্ধকাশিকো ইতিমানোত্র বৈকৃঠে চুণী বিভূবেতি পশ্চাত্তাপবস্তান প্রত্যেকমাহতঃ। অবোনি অপরাদিনি ময়ি ভবত্তির্মাভিবে। দণ্ডোহকারি স ভূমানিভাগশীলিতা ভমহং ক্ষিয়াশীর্মাদমেৰ ভাবরামি নতু দণ্ডং। অত্র হেতুঃ পুনদৌ সংহতাবের হেতুঃ। বৌ দণ্ডঃ নৌ আবিদ্ধারশেষমেৰ স্ববহেসনং যুদ্ধবক্তানাৎ ভগবদনভিপ্রেতাচরণাল্ড। বৈকৃঠদেশাস্তিত ক্রোধকরণাল্ড যুদ্ধান্ত ভগবতি চ বৈকৃঠ ধারিচ লাভ্রপরাধং সর্মং হরেত নাশরেৎ। কিন্তু ব্যাকং বং ক্লপানিষিতঃ সংপ্রতাহতাপ্তগ্য কলয়া একেল লেশেন এডদেবা-

এট হইয়া সেই পাৰীয়দী ঘোনিতে গিয়া জন্ম গ্রহণ কর, যাহাতে কাৰ, কোৰ, লোভ এই রিপুত্তর বিদ্যমান খাছে॥ ৩৪ ॥

আনন্তর দেই তুই বারপাল মুনিগণের ঐ দকল বাকা প্রবণ করিয়া প্রবিবেচনা করিল ইহা বোর ব্রহ্মণণ্ড অর্থাৎ ব্রহ্মণাপ, অন্ত্র সমূহ বারাও ইহা নিবারণ হইবে না অতএব তাহারা ভয়ে ভীত হইরা তৎক্ষণাৎ ভাঁহাদের পাদ্যহণ পূর্বক দণ্ডের ন্যায় নিপজিত হইল। ঐ তুই বারপাল যে জগবানের অন্ত্রহর, ভিনি তাহাদের অপেকাও ঐ মুনিগণ হইতে অধিক ভর তাবনা করিভেছিলেন, ইহাতে তাহাদের ভরে ভীত হত্যা বড় বিচিত্র নহে । গুণ্ড ।

যাহা হউক ছারপালের। ছ্নিদের চরবে মিপডিড হইয়া বিনীতভাবে কহিতে লাগিল, হে ছ্নির্ন্দ। পালির প্রতি বে রূপ দশু করা উচিত আপমারা আমাদের প্রতি সেই হ'ও বিধান করিলেন, ও স্থলে আপমাদের কোন অপরাধ নাই আমাদের প্রতি ঐ রূপ দশুই হউক, এই দতে ঈশ্বরাজাতি ক্রমপ্র মা বোহসুতাপকলয়া ভগবৎস্থাতিয়া মোহো ভবেদিহ তু নৌ ব্রম্পভোরধোধঃ ॥ ৩৬ ॥ এবং তদৈব ভগবানরবিন্দনাভঃ খানাং বিবৃধ্য সদতি ক্রমমার্থাজ্যঃ।

अवत्यामी ।

কুণা নিমিবোহত্তাপ: তথা ৰেশেন নৌ আব্রো: অণে:শো মৃচ্যোনী এ অভোরণি ভগ্ৰংখৃতিপ্রতিখাভখো লোহো মা ভবেং কিন্তু মোহোহণি স্বৃতিমেৰ প্রবিষ্ঠাদিনা। ৩৬।

এবং সানাং মহংস্কিক্ষমগ্রাণং তংক্রণমের বির্ণা তিমিন্ বত্ত কৃদ্ধা: তং দেশং ববৌ আর্থাবিং হৃদা: মনোজ্ঞ:। চরপৌ চলম্বিতারং ভাব: মচ্চরণ মুর্শন প্রতিমাজজং কোণং ভৌ দর্শরন্ শম্বিষামীতি মুয়া বাজেন প্রামের ব্যৌ। শ্রীদাহি

क्षमम्बर्

मा छरदिम डाव्यः । ७७ ॥

ভাষদেৰ প্ৰীভগৰান্ তবৈষ্ণাপত ইত্যাহ এবনিতি টাকা চ এবং খানাং নহৎস্থ অতিক্রেমমপরাধং তৎক্ষণমেৰ বিৰ্ধ্য তামিন্
যত্র তে কল্পা তং দেশং ববে। আহ্যাণাং ক্লাং মনোজ্ঞা। চরনৌ চলমনিতায়ং ভাষং মচেরণদর্শনপ্রতিষ্ঠাভজং ক্রোধং তৌ
দর্শমন্ শন্মিব্যামীতি গুরাব্যাজেন পত্ত্যানের যবৌ। প্রীসাহিত্যক নিজ্মানণি বিভৃতিতিঃ পূর্মিছা ক্মাণারিভুং ইত্যেরা।
আত্র তেবামান্মানাম্মণানক্ষণানার্থং চরণদর্শনেন তক্ত সচিলানক্ষন হং প্রীসাহিত্যেন তক্ত্তিকিবিলাস্তাণি অর্পানতিরিক্তবং
বিব্দিতং । আনামিতি বহ্বচনং হরোরপাণারাধং নর্কেশের পরিবাবেশ্বাপ্তাতীভাশেক্ষরা ভরোক্ত্মানার্থা আশ্লেন
মূনীনাং ন ভাদৃশং তদাল্লীর্থনিতি বিব্দিতং বলা চরণৌ চলবন্ নতু পাহ্তে অপি প্রক্রিতি মুনিশাল্ববিশেষা দর্শিতঃ।
সহ প্রীবিতি তেরু ততা অপাণোণনং অক স্ক্রিছা ভ্রোরণরাধ্য এব দৃদীক্ষত ইতি অনাইতঃ। আনামিতি বহ্বচনং হরো

बिवियमानहत्त्वको ।

বাং প্রাপুরাবং নৌ আবরোরখোহধঃ পততোরণি মোহে। ভগবৎ স্থতিয়ো মা ভবেং। মোহত ভগবতি দেবাবৃদ্ধি পরিপদ্ধী ভবিষ্যজ্যের। যুম্মণভিশাপান্যথামুপপত্তেজ্বদণি মোহং দোণি স্থতিমের প্রবহতাৎ নভূ বিস্থতিমিতি প্রার্থনা a ০৬ a

এবং পরল্পরাপরাধ ভাবনোত্তান্ত দৈনাসমূত প্রভিরেবাঞ্জমিবেণ বছিনিঃসরভিঃ লপরিছোব দোবাং প্রঃ গুলীকৃতের্
সনকাদিকরবিজ্যের বিপ্রাক্ত ক্রক্রেরাধার্থামস্ভাবিতের ত্রভা সভোধান্তিবিদ্ধারেণৈর ভক্তিঃ সমূল্যাততে সমূল্যাতিনীচ
ভক্তি ভগবন্তমাকর্যভীমমর্থং প্রমাণী ক্র্রির ব্রহ্মণাবেবা ভক্তবংসলো ভগধাংক্তা ভতৈবোপদ্ধানেভাছে। এবনিভি লানাং
সদ্ভিক্রনং প্রভক্ত কর্ত্কং ব্রাহ্মণাতিক্রমং। ভার্যাগাং ক্রি প্রাহ্মভবতীতি ভগা সোপি ভেবাং নেজেবিশ প্রাহ্মভবিত্মিতি ভাবঃ।
ভল্লিন্ স্থেমবার প্রদেশে। সহামুনীনামবেবশীরে ভবেই বোগাবিভি তথা দির্বিভয়ক জানামন্তরং সবিক্রকজানমপেক্তিবাং
ভব্তি তথা ব্রহ্মপ্রসাহতবান্তরং ভগবং প্রপ্রস্কৃতিবিভ্যুর্থবিভাত এব চরণী চলর্মিতি স্করণমাধ্র্য সনস্কৃত্তরংশভাবভ্যাবা
মহানির্ভি চমংকারসিছে) নিমক্রন্মীভাতিপ্রারেশের সহ প্রীরভি বহির্গারা বাহারা এব মৃদ্ধভিশ্বেতে কানভি বহুলা বিরঃ

অশেষ পাপের কর হয়, আমরা অবশাই নিস্পাপ হইব। কিন্ত প্রার্থনা এই যে, আমরা অধঃ অধঃ পাপ যোনিতে জমণ করিয়া বেড়াইলেও আপনাদের করুণা নিষিত্ত অমুতাপলেশে আমাদের যেন ভগবংশ্বৃতির প্রতিবন্ধক মোহ উপশ্বিত না হয়। ০৬॥

ঐ সমরেই ভগবান প্রানাভ জানিতে পারিলেন আমার ছইজন ভৃত্য সাধু সরিধানে অপরাধী হইল, অতএব বে প্রদেশে ঐ মুনিগণ ক্রম হইরাছিলেন, আপনার চরণদর চালন পূর্বক দরার লক্ষীর সহিত সেই ছানে গমন করিলেন। প্রক্রের গমনের ভাৎপর্য্য এই, ভগবানের ছগোচর হইরাছিল আমার চরণদর্শনের ব্যাঘাত হওরাতেই শ্বরিদের জোধ জামিরাছে পদরকে গমন করিলে ইহা দর্শন করিরা তাঁহাদের জোধের উপশম হইবে। আর লক্ষীর সহিত দিশিত হওয়ার তাৎপর্য্য এই বে,

তন্মিন্ যথো পরসহংস মহামুনীনামন্ত্রেষণীয় চরণো চলয়ন্ সহ জী: ॥ ৩৭ ॥ তন্ত্রাগতং প্রতিক্তেশিয়িকং স্বপুংভিন্তেচক্ষতাক বিষয়ং স্বসমাধিকাগ্যং।

विशवपात्री ।

खाक निकामानिश विज्**खिणः श्**र्विषः कमानविज्ः ॥ ७१ ।

ভত্র তৈ দৃষ্টিং দেবমন্থবর্ণরতি পঞ্চিঃ। তন্ত আগতং তে অচক্ষত অপশান্ আপঞ্চাদিদমেব ক্রিরাপদং। স্বপুংভিঃ শীল্লং প্রতিজ্ঞতং আনীকং ঔপরিকং পমনোচিতং ছুত্র পাহকাদির্যক। ১ কথস্কুতং স্বদমাধিনা ভাগাং ভক্ষমীরং ফলং ব্যুদ্ধ তদেবাক্ষ বিষয়ং। হংস্বৎ শীর্ষরো ক্তরোক্ষভরতশ্লতো বাজনয়ো বাং শিবোহ্যুক্লো বায়ু স্তেন লোলা শ্চনকঃ গুল্লভিগত্ত শশিকেশরাঃ

ক্ৰেন্দ্ৰ্ড:।

রণ্যপরাথ: সর্ব্বেদ্ধ পরিবারেশাকতীত্যপেকরা তয়ার্বহ্মানার। অশবেন মুনীনাং ন তাদৃশং তদাত্মীরত্মিতি বিবিক্ষতং ০০৭
তং ত্বাগতমিতি। তে সনকাদর অমচকত নিরীক্ষা চ নেমুরিতি পঞ্চির্ব্র:। কণস্তুতং অসমাধিতাগ্যং অসমাধিনা তাগ্যং
তল্পনীরং কলং বরুক্ষ তদেবাক্ষবিষয়। যরা ষক্ষ ব্রহ্মসমাধিরণক্ষ সাধনক্ষ তাগাং কলরপং। বরা অসমাধে: অন্ত হৃদি
ব্রহ্মকারেশ পরত্বক্তুর্ত্তে র্তাগ্যং কলরপং বতোহক্ষবিষরং তদীরত্বকাশতা শক্তি সংস্কৃতনিথিল ধীল্লিরক্তুরিত্বেন সংগ্রতি
বিল্পাইনেবায়ভূরমানং। অনেন পূর্ববিত্ত শক্তশর্বিগরসক্ষাধানাং সর্বেবামের ধর্মাণাং সক্তিদানক্ষরাত্মকং সাধিতং।
তথা নিত্তামের তথাবিধ সন্ততোদিশ্বমাধুরী বৈচিত্র্যান্তবপূর্বকং পরমপ্রেমানন্দ্রনে সেবমানৈ তলাত্মীরে পুরুবিং
আনীতসেবেশিরিক্নানাবভ্তিঃ সেব্যুমানং ভগবত্তং কথকিং ক্তিং কলাচিদের নাপশান্ তদানীং কেনাপি সমাধিত্রতাগোদ্যেন
কেবল্যপশারিতি তেবাং পরম্বিত্রাং ল্প্রাল্ডক্ত্র্যং প্রিত্ত্রাদীনাম্পি তাদৃশ্বমাহ ছংসেতি সান্ধ্রিভিঃ। কেশরা মুক্রামর

क्षिविषनाथहळ्कवकी ।

पत्रभ ভृषात्रा **रेट**कालामभाक्तानिमीः भक्तिनङ्कारकामीणाखिश्राद्य । ०२ ॥

ভত্র তৈরস্থ ভ্তচরং তরাধুর্যাং বর্ণরভি পঞ্চঃ তত্র ভগবং সাক্ষাংকারে রূপমাধুর্যাং ব্যাণকমেব শব্দাদি মাধুর্যাঞ্চ কিঞিং ভগবদ্ধক্ষেধিবরক রতিশক্তা তৈরমূভূতং ক্রেরং। তত্ত্ব ভত্রাগতং তে অচক্ষত অগশান্ কীনৃশং অপুংতিঃ প্রতিভ্তান্যোশ্যিকানি ববৈদ্ধ তং আছো। প্রীভগবক্ষরণাঃ সংপ্রতি বহিশ্বস্থনলাঃ কুর্মত ইতি ভাৎকালিক্যা প্রথমা ভমবলোকিত্মভূাংকঠনা বারপুরনগর বি
মান কামনক্ষ ভক্তজনা আগত্য বিবিধরত্বরালকার ফলগত্বপুশ্যালা।রাত্রিকাদীয়াপক্ষরাঞ্চ রিভাগঃ। অক্ষবিষয়ং ভেষামিজ্যি
গোচরীভূতং। মন্ত্ তহি তিত্ত বিবরত্বং প্রাস্তত্বং ভজ্ত সহত্বার জ্রভ্রন্থনাই অসমাধ্যেরাং অহাদি ব্রহ্মাকারে ব্রহ্মানকায়েভবক্ষাণি
ভাগাং মূর্ত্তিনিভার্তঃ। অহাে এভদ্রপ্রেনিভারত্বং ক্রমান্ত সমাধিরণি সকলাে বভূবেভি ভেহ্মনাত্ত ভদণি ভজ্ঞপানের্বিবয়ত্বং কােম্তঃ
সংভাবরেদিভি ভাবঃ। হংলবং প্রীর্বরোজ্বনাক্ষরতক্ষলভার বিল্লা তেভাো গলকি শীকরাভ্নি ব্রিহিতঃ অত্য অভিশরোক্ষা।
মূক্ষাবিল্লানাং কেশরভান ছত্ত্বভ অধােমুধ্সহজ্ঞলভ্রম্বাভ্রমানেরাপিতং ভেনচ ছত্ত্বত শৈতা সৌগদ্ধামার্দ্বানি ব্যক্সিভানি।

चामि निकामिनिश्रक खेचर्रा बाता शतिशूर्व कतिया थाकि ॥ ०१ ॥

যাহা হউক, তগবান এই রূপে আগমন করিলে সেই মুনিগণ আপনাদিগের সমাধি ছারা লভ্য ফল অরপ বে ক্রলা ভিনি যেন নয়নপাচর হইলেন এই রূণ জ্ঞান করিয়া দর্শন করিতে লাগিলেন, যদিও ভগবান পদক্রে আসিভেছিলেন ভগাচ ভালার ভৃত্যগণ গমনোচিত ছক্ত পাছকালি সঙ্গে সঙ্গে আনয়ন করিতেছিল। অপায় ভালার দুই পার্শে হংশবং ওজ বর্গ ছুই ব্যক্তন এবং মন্তকে খেত ছক্ত হুত হুই ব্যক্তন এবং মন্তকে খেত ছক্ত হুই হুইনাছিল। সেই ছক্তের চতুর্দিকে মুক্তাহার লখিত থাকাতে অসুকূল শোভন প্রনের সঞ্চারে

হংসঞ্জিয়ো ব্যক্তনয়েঃ শিৰৰায়ুলোল শুজাজপত্ত শশিকেশন শীকরামুং। ৩৮)
কংশ প্রদাদসমূধং স্পৃহণীরধান সেৱাবলোককলনা জনি সংস্পৃত্য।
শামে পৃথাবুনলি শোভিতরা জিয়া স্কৃত্যমণিং স্বভগরন্তমিবাজ্যিকাং। ৩৯ ।

औश्वयानी ।

ওলং বং আঙপত্রং তদেব শশিসাদৃশ্যাছশী ওক্ত কেশরা মুক্তাহার বিশ্বাঃ ভেডেয়া গলভি শীকরাষুনি যশিন্ ডং । শীকরোছ-স্কণা ৪ ৩৮॥

কংগত ছারপাল মুনিবৃন্দদ্য প্রানাদে স্থম্ধং স্পৃথনীরানাং গুণানাং ধাম স্থানং দেহাবলোক কলরা সংখ্যেকটাকেণ হৃদ্ধি সংস্পৃত্য স্থমত্তং তৈলোক্য বিৰক্ষা পক্ষে সভালোক পর্যান্তঃ বঃ স্বর্গঃ উক্ত চ্ডামণিবং স্থিতঃ স্বধিষ্ণাং বৈকৃতঃ স্ক্রগরস্থং শোভয়স্থং ১০৯৪

क्यममर्खः।

প্রসভাঃ অত ত্ত্রসা শশিকরা কেশরাগাং শীকরাখুছেন রূপকং। শশিসভ্দিভাচ্ছীকররপাগামধুনামমূহগুং সভাতে । ৩৮ ঃ

কংলপ্রসাবেতি। কংলঃ পূর্ণো বো মুনির্প্রসাল জেন অমুথং মনোহরবজাঃ পার্যদরোজ প্রসাবে। ন ক্টঃ। এতে বা বিতালিবক্সমাণবিরোধাং। বহা কংলস্য বারণালমুনির্ক্স্যা প্রসাদে অমুথ্যিতি। স্পৃহণীয়ানাং গুণানাং ধাম আন্মিজি ভত্তাপুণানাং তাল্পাং দর্শিতঃ। কেহাবলোকেতি বিলাস্যা অমুথ্যোগজানানি নিত্যানক্ষরপাথং তেয়াং চূড়ামণিং আজ্মিঞ্ছাং অবরূপ স্থানং প্রীবৈক্ষাং। তাল্পাংপুরসি শোভিতয়া রেধারূপরা প্রিয়া কৃষা অক্সগরভাগিব ভত্ত ভ্রগবিশেবং নিলধান্মিব ইবেতি বাক্যালাহারে। অনেন প্রীবৈক্ষা নিত্যং সর্বোৎকৃষ্টগং। উক্তঞ্চ ভরিষ্থাবিত্যাদে আপুং প্রায় মুদ্মপূর্ব মিত্যাদি। বক্ষাতে চ অথ তে মুন্রো দৃষ্ট্য নর্নানক্ষভালনং। বৈক্ষা ভ্রদিধিটানং বিক্ষা প্রায় বিজ্ঞান্ত এ এ।

वीविधनाथहळवती ।

ख्या भीकत्राव नार भनित्रविद्याना नृख्यर ॥ ०৮ ॥

অভাভামভিশাণদারিব সাহ্ নকানীমহে ভগৰানত্তঃ কুণাভি দৰেতি সংশ্বসিদ্ধনিমগ্রেষ্ কৃৎল আভাভরো বাহন্ত বং প্রাণান্তন স্মৃথং অতএব হন্ত হৈ ভালাত্ত প্রকাশ এব পূর্ব উপলভাভ ইতাক ক্রসম্নির্লগা নেআদী স্কিইয়ঃ প্রদ্ণীয়ানাং নৌন্দর্যা সৌরভা সৌক্মার্যাকাল্পনার্যাগাং ধাম পূর্বান্তাদ। হাহন্তাবদ্যোর্র স্নাগানলন ইন্মার্যার প্রকাশ নাধ্রী প্রন্থিতিবাত ইতি থেলাবিনিমগ্রো ক্রন্ত্রী জনবিশ্বর প্রতি বং দেহাবলোক্তসা কল্যা কৌশলেন ভ্রন্তা জনানাং সর্বেরামের ক্রিল সংশ্বন্ত আহো ভক্তবাৎসলানিতি মনো লোভয়ন্তং ব্রিলা বামন্তনোর্ছে অন্বের্থান্তপে ভিতরা সম্ভাসিবিং সভাবোলান্তানাং অর্থানাং ম্বিনির প্রক্রিং প্রক্রিয়াং বিকৃতিং প্রভ্রন্ত ধন্যাং স বৈকৃতি ব্রেভামান্ত্রিত ক্রনো নেক্রান্যাম্ভূত্তে ক্রের ৪ ৩৯ ৪

তৎসমুদার সঞ্চিত হইতে ছিল এবং ভাহা হইতে অ্যুক্ণা বিগলিত হুইরা ভল্মানের গাত্র স্পৃদ্দি করিতেছিল ॥ ৩৮ ॥

ভগবানের মুখ প্রানালে বোধ হইজেছিল যেন মুনিরক্ষ ও ধারপাল সকলেরই প্রতি প্রসর হইবেন, ফলডঃ জিনি স্পৃহণীয় সকলে ওপের জাধার ক্ষরপ, ছতরাং তাঁহার সংপ্রেম কটাক্ষেই সকলের জ্লয়ে ছথামুজ্ব হইতে ছিল। স্নার কমলা তাঁহার বিশাল শ্রাম্বর্গ ক্ষাংখনে পোভ্যানা হওয়াতে তিনি তদ্ধারা সত্যলোকের চূড়ামণি স্বরূপ বৈকৃতের শোভা স্কৃত্বি করিতেছিলেন ॥ ৩৯:৪

পীতাংশুকে পৃথুনিতখিনি বিশ্বুরস্তা কাঞ্যালিভির্বিক্নতরা বন্যালরা চ। বস্তু প্রকোষ্ঠবলয়ং বিনতাস্তাংলে বিন্যস্তহস্তমিতরেণ ধুনানমক্ষং ॥ ৪০ ॥ বিছাৎ কিপশ্মকর কুণুল সন্থনার্হ গণ্ডস্থলোমসমুখং মণিসৎ কিরীটং।
দোর্দণ্ড বণ্ডবিবরে হরতা পরার্দ্ধ্য হারেণ ক্ষরগত্তেন চ কৌস্তভেন ॥ ৪১ ॥

व्यवत्रवामी।

পৃথ্নিতখা আশ্রেম্থেন বিদ্যুক্তে বদ্য ভিমিন্ পীতাংশুকে আদিভিনাদিতরা বন্যালয়াচ যুক্তং। স্থভগরস্তমিতি পৃর্কেশৈব বা সংখ্যা। বস্তবু একোঠোরু বলরানি যদা। গ্রুড়দা ক্ষে বিনাত একো হতো খেন ইত্রেণানোনাজং ধুনানং দীলাকগলং ভাষর অং। বিনাদোভি পাঠে বল্থাদি হতাদা বিশেষণং ॥ ৪০ ॥

অকাস্তা। বিস্নাত: কিপস্তী বে মকরাকারকুগুলে তরোর্ম্মগুলনাহের্গ গণ্ডলে বিমন্ তচ্চ তছ্মসঞ্চ মুধং বদা মণিযুক্তং কিরীটং বদ্য দেক্মিগুলাং বৃত্তং তদা বিবরে মধ্যে বৃক্তঃত্বে স্থিতেন হ্রতা মনোহরেণ বিহরতেতি বা। পরাশ্ধ্য উৎকৃত্তঃ তেন হারেণ ক্ষ্রোরাং স্থিতেন ॥ ৪১॥

क्रमनमर्छः ।

পীভাংওকে ইভাজ কাঞ্যা বনমালয়া চেভি উপলক্ষণে ভৃতীয়া। ৪০ ॥ হরতা মনোহরেণ ॥ ৪১॥

শ্ৰীবিশ্বমাধচক্ষৰতী ।

পৃথুনি তথ আম্পদ্ৰেন বৰ্ততে বনা তলিবিভি নিতৰোৱং মইমৰ নানাসোতি পীডাংগুকেন তল দীয়দখমারোণিতমিতি ইন্
প্রভাৱধ্বনিঃ। তাদৃশে পীডাংগুকে বিক্রন্তা। কাঞ্চেতি পীভাংগুকমপি স্বাম্পনীকৃত্য গুলুপরি স্বস্থমারোণা দ্বিভ্রেষ্ঠাওঁ।
তথা তাং কাঞ্চীমপি স্বাম্পনীকৃত্য তত্পরিস্থিত্য। বনমালবা কীদৃশ্যা অলিভির্কিকৃত্যমিতি বনমালামপি স্বাম্পনীকৃত্য গুতুপর্যানি ভিঃ
সন্ধমারোণিতমিতালিভ্য এব সর্ক্তোপি সাম্রাজ্যং ভগবতা দ্বমিতি ভাবং। তৃতীয়ালানামায় বিক্যাং স্বভগবলমিতি পূর্কেবৈবাৰশ্বঃ। বন্ধ মনোহরং প্রকোঠে বলবং বত্র ওদ্বর্থানাদেবং গক্তৃক্ষে বিনাম্প বামহন্তং। বিনাসোতি পাঠে বনি ভ্যাদি
হত্তলা বিশেষণং ইভ্রেণ দক্ষিণহন্তেন কমলং ভাময়ন্তমিতি লীলাক্ষ্মল ভামণবিবেণ মুনীনাং ক্ষরক্ষনং ব্রহ্মাসা স্বন্ধিরমণি স্বাধুর্বাদর্শনরা চপলীকুর্কন্তং ভেনচ ছে মুনরো ব্রির্কিশেষস্বরূপানন্দাং সর্ক্ষেম্বেদ নিভিভাৎ সংক্ষিত কথং চিত্তং চালয়ব
তব্রেৰ কিং নহিনী কুর্কন্ত্য যা স্থনিষ্ঠাং ভালভেভি মুনিরু নর্মন্যোভিতং । ৪০ ।

অকান্তা বিভাত: কিশন্তী বে মক্ষাকারে কুপ্তলে ভরোরণি মপ্তনাহে গগুক্লে যত্ত তথা উরগং মুখং বস্য তং লোগ-প্রানাং যথ সমূহ তথা বিবরে মধ্যে হয়তা মুনীনাং চিত্তং চোরয়তা অভএব চোরা হেতুক তরেনের ভূকজিত্তে প্রবিশক্তের্থঃ । পরাশ্বমূলা হারেণ ক্রম্মতেলাত্ত বক্ষােইভিধানং। বহা। ক্রম্যাভ্যাং স্কাশাং অর্থস্থারা গভেন বক্ষা পর্যন্ত নহিতেন কৌরতেনেতি পূর্কবিদ্যায় ৪১ ৪

অপর ভাঁহার বিস্তৃত নিজস্ব দেশে শীতবদনোপরি শোভষান কটিভূবণ এবং বক্ষংস্থলে বনসালা লবিতা ছিল ও প্রকোষ্ঠে মনোহর বলর সকল শোভা পাইতে ছিল। আর তিনি,আপনার বাসহস্ত স্বীয় বাহন গলাভুর ক্ষতে বিয়া দক্ষিণ করে লীলা কষল মূর্ণনাদ করিতেছিলেন ॥ ৪০ ॥

তাঁহার গণ্ডছল বিদ্যুক্তের শোভাধিকেপকারি নকরাকার কুণ্ডলে নণ্ডনার্ছ এবং বলন উচ্চ নালিকা বিশিষ্ট ও কিরীট ননিমর ছিল। অপর বাহু সমূহের মধ্যদেশ অর্থাৎ বক্ষঃছল মনোহর হারে এবং গল-দেশ মহার্ছ কোন্তভ মনিতে শোভিত ছিল॥ ৪১॥ অত্তোপস্থীমতিচোৎক্ষিত্যিক্ষিরায়া: স্থানাং ধিরা বিরচিতং বহুসোষ্ঠবাচ্যং।
মহুং ভবস্য ভবতাঞ্চ ভজন্তমঙ্গং নেমু র্নিরীক্ষ্য ন বিতৃপ্তদৃশৌ মুদা কৈঃ ॥ ৪২ ॥
তস্যারবিক্ষান্যনস্য পদারবিক্ষাক্ষিক্ষমেঞাতুলসীমকরক্ষায়াঃ।

क्रियमाश्री

কিং বছন। ইন্দিরার। উৎবিতং অহমের সৌন্দর্যানিধিরিতাহংকরণং অন্ত তপ্রবং সৌন্দর্য্যে উপস্থাইং অতং গতমিতি খানাং ভকানাং বিলা বিরচিতং ভূটেলঃ খমনসোবং বিভর্কিতমিতার্থঃ। কুতঃ বছনা সৌর্চারেম সৌন্দর্যোগ খাচাং বৃক্তং কিঞ্ম মহং মম ভবসা ঈশ্রসা ভবতাঞ্চ কুতেহলং ভলস্তং মূর্বিং প্রকটর্ত্তং। অচক্ষত নিরীক্ষাচ কৈঃ শিরোভিমুণা নেমু: নমশ্চক্রু: ন বিশেষেণ ভ্রপ্তা দুশো নেত্রাণি বেরাং তে । ৪২ ।

चक्रभानमानि (उदाः एकनानमाधिकामात्र छमा भगाविष्मादाः किश्चदिः (कभटेदः मिला दा पूनमी छमा मक्तरमन यूटका

ক্রমসন্দর্ভঃ

তদেবং পরিজ্ঞাদীনামপি তাদৃশবং বর্ণরিদ্ধা পুন তথেকবাতিমনোত্রছমাত অব্রোপস্টমিতি। ইন্দিরায়া উৎপিতং গর্জঃ অত্র ওগবতি উপস্টাং অন্য সের্মাদিওপশালিনঃ কান্তস্য নিত্যেন লাতেন নিতামেবাধিকমাবিভাবিতমিতি ভদীরানাং ধিয়া বিতর্কিতং অত্র হেতুং বছসোঁঠবাতাং অনস্তবরূপ অণস্পান্তি যুক্তং। নবেবক্তস্য লক্ষা অপি রহস্যমহানিধিরপ্রা পর্ম বস্তনঃ কথা প্রেদাং সন্তবতীক্যত আহ্ মহামিতি। তব্য তব্তাং চাল্মদীকারং ভক্তং। আম্বিব্রক্ষালীকারং ভক্ত মিতার্থঃ ব্রা অলং ভক্তরং তত্তৎকার্যাসম্পাদনার্থমাবিশস্তমিত্যর্থঃ। উল্লেক্তর ত্রিবিধসীমস্মাতিশামিসভাবনং তব পরিব্রিদ্মত্ব ভাবং। মারাবদেন ভবভাপি নিগুহুমানং পশান্তি কেচিদনিশং ঘদনক্ষতাবা ইতি বৎ ভক্তিরেইনাং নম্বতি ভিতিরেইনাং মর্শ্যতীত্যালি শ্রুতেঃ। তথাত্তং তম্বচক্তেতি। নিরীক্ষা চ মুদা কৈ: শিরোভি নের্মাং। অবিভ্গ্রদ্শ ইতি পশান্ত এব শিরোভিনের্ম্রিভার্থঃ ॥ ৪২ ॥

তভেতি। অত্র পদরোরস্বিক্ষকিঞ্জমিশা বা তুল্গীতি বাবেধারং। পাসবিক্ষ কিঞ্জ তুল্পো চ তদানীং বন্দালাছিতে এব

अविषमाध्यक्तवर्थी ।

কিং বহনা ইন্দিরারা উৎশ্বিতং অহমের সর্ক্রেনিন্দ্র্রাণাণাং নিধিরিভাছয়রণং অত্র ভগবংসৌন্দ্র্য্যে উপস্টমন্তং গতং ইতি স্থানাং ভব্জানাং বিয়া বিরচিতং ভূতৈতঃ স্থানবেজ্ঞবং বিত কিউমিতি স্থানিচরণাঃ পরমসৌন্ধ্যাদিগুণশালিনঃ কাল্ক লাভেন ভলা উৎশ্বিতং গর্কা উপ আধিকোন স্ট্রমাবির্ভাবিতমিতি সন্ধর্জঃ। বহা অত্র ভগবতি উপস্টং ব্রহ্মাদিভিরারাধায়াদি রুপ-গুণমাধুর্ব্যেঃ সর্ক্তঃ শ্রেষ্ঠরালি মরা উপসর্জনীভূতমপ্রধামীভূতমিতার্থঃ। ইতি হেতুনা চকারাৎ প্রেয়াচ ইন্দিরায়া সন্মা উৎকৃত্তঃ শ্বিতং ধন্যাছং ব্রা স্থান উপস্থানিভানিন্দার্থ উল্লাসো ব্যান্ত্র্থাভূতমন্তং ভল্কং সমৃচিভবস্থালয়ারাদিভিঃ শোভয়ন্তং নতু শভুমিব ক্ষরম্পাঞ্চ ভশাদিভির্মিয়পর্করিতার্থঃ। ছৃশাতে চ স্থান্দ্রার্কাণাং বিয়া নিত্যানিন্দ্র বিবিধবস্তাদি রুল্লার বৈলক্ষণা বিধায়িনা। ক্ষর্ব্রের বহু সৌর্করাতাং বিরচিছং। স্বান্থ প্রান্ধণ ভব্জ শক্তো উবতামস্থানীনাঞ্চ মহং মহ্নীরং গ্রন্ধপুণানিভির্মানেন দেশান্তরে পুল্লনীর্মের নতু ভেরামির বৈকুঠে সান্ধাং পরিচরণীর্মিত্রর্থঃ। মহ পুলায়ামিভাল চ্যান্যান্ত ক্রং। এবকুতং তং অচক্ষত ভতো বিশেষভন্তং নিরীক্ষাত অত্থনেতাঃ বহু কৈঃ কিংবাভিঃ নেমুঃ ৪ ৪ ৪

কিঞ্ তানি ভগবদলমাধুৰ্ব্যাণি তান্ এলাদলতোণি পরম চমংকারং প্রাণরিতা খেবু মজ্জরামাসুরিতি কিং বক্তব্যং ওদেকাল

ফলতঃ ভগবানের ঐ মৃথ্যি বিবিধ সৌন্দর্যো পরিপূর্ণ হইয়াছিল, ইহাতে তাঁহার ভক্তগণ এমত তর্ক করিতেছিলেন, "আমিই সৌন্দর্যোর নিধি"এই বলিয়া লক্ষ্যার যে গর্বে আছে তাহা আদ্য অন্তগত হইল। হে অমরগণ ! সেই ভগবান আমার (এক্ষার) শহরের এবং তোমাদের নিমিন্ত ভক্ষনীয় মৃথ্যি প্রকটন করিয়া থাকেন, তাঁহার এবছিধ সৌন্দর্য্য বিচিত্র নহে,। বাহা হউক, মুনিগণ তাঁহাকে আগত দেখিয়া হাই চিত্তে মন্তকাবনত করত নমশ্বার করিলেন, কিন্তু তাঁহার সৌন্দর্য্য দর্শনে তাঁহাদের নেত্র পরিভ্তা হইল না । ৪২ ॥

मूनिग्न श्राम कतिरम कतिरम नत्रम कर्गवारनत शर्माद्यक्ति किश्चक निक्षिण ज्यागीत मकतम वाह्

অন্তর্গতঃ স্ববিদরেণ চকার ভেষাং সংক্ষোভনকরজুবামণি চিতক্সেয়া। ৪০॥ তে বা অমুষ্য বদনাসিভগর্মকোষ্মুখীক্য স্থক্ষরভরাধরজুক্সহাসং।

विश्वचाती।

बाद्धः श्वविवादन नागाव्हित्तन अकत्रक्षाः तकानकात्रविनामिन मार्श्यकः हित्तक्विक्षः प्रति द्वामाकः ॥ ३० ॥

হুৰ্কারিতং সম্মনাহ দাডাাং তে বৈ কিল বৰনমেবাসিতপক্ত কোন: অছেওলি: তং। অসিতপক্ষকোৰ্মিতাভূতোপনা।
অসম্বভরে অকণে অধ্যৌঠে কুক্ষবং হানো বন্মিনৃতং। উৎ উর্ছং বীষ্ণা লব্ধ মনোরধাঃ সন্তঃ নধা এবাক্ষণমণনঃ তেবাং প্রমণনাপ্র

ক্ৰসমূজ:।

কেৰে। অভ তাবৎ তগৰদাস্মভূতানাং তেৰামলোপালানাং ডেবু কোডকারিছং তৎসম্বিনো বারোরপীতি ভাবং অন্তৈতঃ ॥ ৪০ ॥
বদনাসিতপত্মকোৰংজৈৎ উৰ্চুটা ৰীক্ষা প্নভাৰ্যাক্টাক্সিবুৰুক্ত ৰীক্ষা প্নঃ প্রমুখাদি জীচরণপর্যন্তমকং দৃষ্টে ভার্য: ।
পভাষাঠার্দ্ধা সংক্রমারিমীলিতে নেকে নিৰ্ধুঃ অভ্যাপি ভদেব দদৃত্যিভার্য: । বদা জভ্যতিপরেন পভাস্কিবুৰুদ্ধেৰ দদৃত্যি

वीवित्रमां पठक वाही ।

সন্ধি বন্ধ সন্ধানী মাকতোশি ভান্ অনিঠাং চ্যাবিদ্ধা কোভৱন্ বিজিপ্যে ইভাৰ ভগোতি পদাৰবিদ্ধাহি কিঞ্ছাঃ বেতাকণকান্তিমন্ত্ৰপাতি জিলা বা তুললী ভল্ঞা মকনন্দ্ৰ সন্ধানী বাবু ভেৰামন্তৰভাকরণগতঃ তল্প শাধিকারং কর্জুমিব প্রবিদ্ধান বিবাধান কান্ত্ৰীনাথিব সহসাস্থাতিত ইতিহেজল সভাৱমান অবিবরণ নাসাছিলেশ নাসাছিলেই বল্প বামোরের বিবরং ভবতি ভল্ল প্রথমিক গৃহীরাদিতি ভাবঃ। তল্প গ্লা কিমকরেন্ডেল্লাই চিন্তভ্যাং সংকোভককার আন্দেই বলান্তিতং সানন্দ্র বিবর্তে নিপাতা কোভরানাল ভেজভুম্বি কলাপ্রধানাঞ্জ কোদানিতি। লোকেইনেয়ানি পর্কীর কেশেববিদ্ধারং চিন্তীর্থ প্রথমণ ডক্ষোধান্ত নিব্ধা বিস্তৃত্ব ক্ষোভরতি ভততদেশমনি অবৈন্য সম্মিতিং করেন্তীতি নক্ ক্ষানন্দ ক্ষান্ত ভিল্ল ক্ষানন্দ্রমন্ত্রমন ক্ষান্ত্রীত ভাবং এক ব্যাকীতি এবংমবাল মাধ্ব্যাবিব্যান বলবন্ধনিতি ভাবং ॥ ৪০ ॥

এবং তুলনীগদ্ধেন শোধিত প্রাণানাং তেবামিপ্রিয়াগাঞ্চ প্রাণাধীনত্বাং প্রপ্রাং চক্ত্যাং রুণমাধুর্য গ্রহণে নরাধিকারাগাং রুণ নাধুর্যান্ত প্রভালগতবৈবিধ্যানানত্তাৎ বৃণপজ্জিলারাধানে গদকারিকারিত মানক্ষ দক্ষি বৈবশামান্ত তে বা ইতি। বৈ নিশ্চিতং বন্ধন্ধেবাদিতপত্তত কোন বাজ্বজ্ঞপন্ত করিছে কিন্তু ক্ষিত্র ক্যাত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্যাত্র ক্ষিত্র ক্মিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্যাত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্য

জ্ঞীহোদের নাসায়জু ।বোগে অন্তর্গত হইল ভাগতে বদিও ভাগোরা অক্ষজান বারা নিরস্তর অক্ষানন্দ । অনুভব করিতেন তথাপি উাগদের চিতে হর্ব এবং গাত্তে লোসাক হইল ॥ ৪০॥

ভীছার। উর্দ্ধ দৃষ্টি বারা নীলপজের কোষ অরপ ভগবরদনে অরণবর্ণ মনোহর অবর এবং কুল পুলা সদৃশ হালা অবলোকন করিয়া অতীব হাউ চিত হইলেন। পুনর্বার অবো দৃষ্টি বারা তাঁহার চরণ বুগল বাহা নথ স্ক্রপ অরণ বর্ণ মণির আজয় ছিল ভাহা দর্শন ক্রিলেন। এই রূপে এক কালীন বর্বা লের বাবেনা বিশ্বস্থা ক্রিয়ায় আলনায় বারুবার করি সৃষ্টি ছংগুলো নৃষ্টি হইলেন, কিন্তু একেবারে লকাশিয়ঃ পুনরবেক্য জনীরমজি ছক্ষং নশাক্ষণমনিজ্ঞারণং নিদুদ্যাঃ ॥ ৪৪ ॥
পুংসাং গতিং মুগরভামিত বোগমার্চৈ ধ্যানান্দানং বহুমতং নরনাভিরামং ।
পোংলং বপুদ্ধিরানমন্য নিকৈরোৎপতিকৈঃ গুনগুণন্ যুভমকভোগৈঃ ॥ ৪৫ ॥
শ্রীকুমারা উচুঃ ॥
যোহতর্হিতো হাদিগভোছ্পি ভ্রাক্সনাং দং নাদ্যৈব নো নরনমূলমনস্তরাদ্ধঃ ।

विश्ववामी ।

ভূতমতিনু বৃশং পুনরবেক্য অবো দুরা বীকা পুনং পুনরেবং বীকা বৃগণৎ সুর্কাল লাবণ্য গ্রহণাণ্ড্রেং পশ্চানিদ্ধাং থাকিব্রঃ 188 বোগমার্গৈ গতিং মুগরতাং প্রোন্স বিষয়ভূতিং। বৃত্তমতং অক্যান্তাম্পাণং বহুনাং ভ্রম্বাং সম্ভনিতি বা। পৌংলং পৌরবং বপুর্দেশ্যক অন্যোদনিক্রবগাধারবৈত্তীংপতিকৈনি ভৈয়বনিমান্তিইমবিল্ তং সমগ্ণন্ স্বাগভ্তন ৪৪ ৪

निछाः तक इत्तर्भ ध्वकानत्म न एकियाः देशानीस भद्रम मननः विख्य मस्मृत्री ध्वकात्कानि । व्यद्श कांगामचाक्रिकाहः ।

क्रमम्रह ।

णार्थः । निर्सर्गन्द निधानः पर्ननारनाक्रमक्तिष्वायतः त्कार्या विदीनवाध्यननपिरनाश्चर्णातः ॥ 88 ॥

পু-সামিতি বহুমতং ব্রহণোহণি খনপ্রকাশখাদত্যাদরাশ্বাহ পৌংঘং বপুদর্শরানমিতি। পুরুষত গর্রোদণারিনো গুণাব্তার রূপং প্রীবিরাটাগ্যং বরপু গুরুতিরতঃ তু বপুদর্শরন্তং দ ভূ ব্রমাধিবদনাগাছেনেতার্থঃ। অননাতি অননোন তেইনৰ নিছৈঃ ক্রপ ভূতৈরিকার্থঃ। অতথ্য ঔৎপত্তিকঃ তবংঘবানাধিনিইছবিতার্থঃ। অনিমাধ্যইগর্হীযুতং বিশিষ্টং মত্পদক্ষিতং। অনেন তেবাং ক্রতাম্পদ্বিশেষণত্বেন প্রথাপেলক্ষিত্রসভ্তপানাং তালুশবং ব্যক্তিং। ৪৫॥

অপ শ্ৰীতগৰত আদৃশৰে তঃদুশৰব্যক্তিনীং নিজাং মূৰ্তিং তেৰামেৰ অহাদি।ভিৰাজীকরণভতিবাজ্যেন প্ৰমাণয়তি কুমারা উচু বিভি। স্তৃতিমাহ ব ইতি পঞ্চিঃ। অঞাক্ষরজুবামপীতাস্কৃত্য বাাধ্যায়তে নিভাং ব্যৱস্থানপে প্রকাশনে ন ভক্তিলং। ইদানীং

बैविषमाथककवर्षी।

मनकामीनाः **एकिएंटिकाव एक्वाः एकाध्याम्यक्व देखि व्यनि**किः ॥ 88 ॥

কিন্তু মুমুক্ শাষণি শুক্তজ্যভাৰাত্ত্যাধুৰ্বাধিজ্যক শাষণি ভন্তানং বিমান মুক্তিরিভ্যাছ পুংসামিতি গতিং মুক্তিং বোগমার্টের রটাল বোটনের্ক্তিমভং ধ্যানাস্পানিতি সবিশেষক পভাবশাধ্যেরতা মারারণ করণবের বহুনাং সম্প্রভিদ্ধার্থঃ। পৌংলং পুরুষ সম্বন্ধি বপূর্দর্শরভারতি বোহিন্যাদি বপূর তারমণি ভভ ভগবজ্বক বাচাং বহুতর মন্তীতি ধ্বনিভং জননেরম স্বেট্নের-সিইছঃ শ্বরণ ভূইত-রিভ্যার্থঃ। অভএবোৎপত্তিকৈ নির্হিত্য অটভিঃ শ্বশাল্যর প্রকার স্বাহ্য কর্তি ক্রিত্য ক্রিল্য নির্দ্ধার্থ সৌর্দ্ধার্থ সৌর্দ্ধার্থ নার্ব্য বাহ্যক ক্রিল্য শ্বন্ত বাহ্যক ক্রিল্য ক্রিল্য বাহ্যক ক্রিল্য ক্রিল্য ক্রিল্য ক্রিল্য বাহ্যক ক্রিল্য ক্রিল্য

অহো মহৎকৃপারা অপারো মহিনা যতে। ভগৰতা জিনুশ সাক্ষাৎকারানক্ষমসূভাবিভাঃ স্বাইভাহো ভাগাস্থাক্ষিভাছেঃ হে আনভ অপায়মাধুহোগ্রাসিকো বছং হলগতোপি ছুরাস্থান্যভহিতিএব সংখং ন কেবল মলৈও নোহস্থাকং ন্যন্স্বং বাছঃ আহেওাসি

উদ্ধাধো দৃষ্টি হওয়া অগন্তব, হৃতরাং ঐ বাসনা পূর্ণ না হওয়াতে পশ্চাৎ ধ্যানপরায়ণ হইলেন। ৪৪॥

কুনিগণ ধানিত ছইলে ভগবান্ বে সকল পুরুষ যোগদার্গ দারা গতি ক্ষেধ্য করিরা থাকেন তাঁহাদিগের ধানের বিষয়ীভূত এবং ক্ষতান্ত আদরাস্পদ ও নয়নের ক্ষাহ্রাদ ক্ষনক আপনার পুরুষাকার শ্রীয় দর্শন ক্রাইতে সাগিলেন, তাহাতে মুনিরা ঐ ক্ষর্যাতেই ক্সাধারণ ক্ষণিদাদি ক্ষত ঐশ্ধ্যযুক্ত সেই ভগবানের ত্বব আরম্ভ করিলেন ॥ ৪৫ ॥

্থি মুনি দুক্রা কহিলেন, ছে, অনুষ্ঠ । ভূমি ক্লায়ের হইয়াও হুরালা ব্যক্তিসিংগর নিকট অকর্থিত থাক অর্থাৎ লাহারা- তোগার ভূমি-পার-না, ক্লিক্ক জ্বায়-আমাদের-নিক্ট ভিরোধিত হইতে পারিলে না, যহেবি কর্ণবিবরেণ গুহাং গতো নঃ পিত্রাসুবর্ণিত রহা ভবতুত্তকেন ॥ ৪৬ ॥ তং ডাং বিদাম ভগবন্ পরমায়তজং সজেন সংপ্রতি রতিং রচয়স্তমেষাং।

विश्ववामी।

হে অনস্ত যত্ত জনগতোপি গুৱাআনাং অস্তৰ্ধিকা ন জুবলি। ন নোৰ্খাক্মন্তৰিতো ন ভবলি। নমনমূলং ঘটেয়াৰ ৰাজ্য প্ৰাপ্তেবিল অন্তৰ্জানাভাবে হেতৃ: ভবত: নকাশাহভবো বস্ত তেনামৎ পিত্ৰা যথি বলৈবাহ্বৰ্ণিত বহা উপদিষ্ট বহস্য: ভটেশ্ব ন: কৰ্ণমাৰ্গেণ শুহাং বৃদ্ধিং গতঃ প্ৰাপ্তোসীতি । ৪৬ ।

নত্ন পিতোপদিষ্টং ভবতামদৃশ্য মাশ্বতবং। অহ্যনা এব জাং দৃশ্যবাং। নৈবং অবং প্রত্যভিজ্ঞরা ভেদনিরাসাদিতাছিং। তমিতি হে ভগবন্ শাল্পতক্ষেৰ পরং তবং বাং বিদাম বিলঃ প্রত্যতিজ্ঞানীমঃ। নতুনিরূপাধেরাল্পতক্ষা কণ্মীদৃশ্দৈশ্বীং ভাদত

क्षमभन्दः।

ভূ বিভ্ৰমন্ত্ৰণক্ষণেন স্বৰূপশক্তিবৃতিবিশেষণ প্ৰকাশিত্ৰা ঘন প্ৰশাশগৰভবৈক্ষপৰা মুৰ্ত্যা প্ৰভাকোছিন আহা ভাগ্য মনাক মিত্যাহ্য হে অনন্ত ৰক্ষ দৃষ্ট্যাত্মনামন্ত্ৰীমি ক্ষপেশ হালিগতোহপাত্তহিতে। ভবসি ম ক্ষুৰ্মীত্যৰ্থঃ। স ক্ষ নোহৰাক্ষ অভবিতি ন ভবসি। তত্ত্ব হেজুং বছে ব ভবত্তবেনাত্মকং পিতান্ত্ৰাম্থন্তি বহাঃ উপদিষ্টচ্জুংগ্লোকীপ্ৰোক্তপ্ৰেম্ভক্তাৰ্থা হৈছে: প্ৰোক্ষ ভিছেৰ কৰ্ণবিব্ৰেণ তক্ষপত্ৰা প্ৰহাং গতোহ্যান্তঃ ক্ষুৰ্মীতি নয়নমূলং ঘটোৰ বাদ্ধ প্ৰাপ্তেহিসি কুপাবৈশিষ্ট্যেন ভহেবি সমাগ্ৰামণ প্ৰবিষ্টঃ ভাৰাবিভূতি ইতাৰ্থঃ। ৪৬ ।

তমেবাস্থ্যনে পরমতরা নিশ্চিষ্ঠিত গামিতি। হে ভগবন্তং পিত্রোপদিষ্টরহস্য খাং পরমং ভগবল্লশং বদাত্মতন্তং ব্রহণে। হি প্রতিষ্ঠাহমিতি শ্রীতগবলগীতাসুসারী শুভাশ্রর: সচিত্তক সর্কাগ্ত তথাক্ষন: ইতি শ্রীবিক্স্প্রাণাদি প্রসিদ্ধ ব্রহণে। হি পরমং ভদেব বিদান প্রতাভিজ্ঞানীম:। কথং তত্রাহ্য সংপ্রতি অধুনা সন্মেন অন্যাম্প্রজ্ঞপাবিভাবেন এতাবস্তং কালং ন জ্ঞাত্যন্তো বরং অধুনা তুসাক্ষাল্মভ্রমেন নিশ্চিতবস্ত ইত্যর্থ:। ন কেবলং প্রতাভিজ্ঞমান্ত্রমিত্যান্ত:। এবাম্যাকং ব্রহাস্ভ্রমিনামণি রতিং রচরস্বং অন্তর্গা বিভিন্ন বিভাগত ক্রের্মিন বিভিন্ন বিভাগত বিভাগত বিভাগত ক্রির্মিন বিভাগত বিভা

श्रीविश्वनाथकक्ववर्षी ।

অপিতৃ পূর্কমিসি নত্ত কলাহ্মেবং দৃষ্ট আসং জঅ সরসমাহ: যহাঁতি ন শরসি ভবত্তবেন পিতা ব্রহণা অমুবর্ণিতং রহো বস্যা স খং বলৈব নোহশাকং কর্পারেপ শুহাং বৃদ্ধিং পড়ং প্রান্তোগি তলৈবেতারমর্থং। ভো ব্রহান্ত্রনিয়া অসমাক্ষাংকারালিপি ভগবং সাক্ষাংকারঃ কোটিগুলিছাসক্ষাং সোহিপি ভবতামন্ত্র সতু ভগবারীলোৎপণ্যকাশালাং পীনায়ত চতুর্কাহং কটককেয়ুর কুওলালিমিওভিক্তরেশ্বনো হৈকুঠে বিরাজমানো ভক্তা কড়ত ইতি তত্তক্ষ্যাশংশিতৃং কুপাশীর্কচনং বলৈবাশ্রের তলৈব কারণে করে তৎক্ষলালাক্ষেরারশাক্ষাং ভাবি কিলালাভনম্পি ভগবদর্শনং তত্তক্ষ্যপাতৃল্য কাল্যেব কাতং আনহন্তা বন্ধাব্দেভি ভল্যা হত্ত ভগবর খং শতত্ত্বাহ্মান কুপর্সি কিন্তু শত্তক্ষাধীন এবেভি শুত্তক্ষ্যায়া মাহান্ত্রামনির্ক্চনীর্নেবেভি । ১৬ ॥

কিঞ্চ একাৰতাং কালং বয়ং জানিন এবাত্ব সংপ্রতিত্ব ভক্তা অভ্যেত্যহো ভাগ্যমত্বাকমিত্যাহ:। তং গিত্রায়্বর্ণিত রহসং ত্বাং সংপ্রতি সংস্থেন সাধুত্বেন সংস্থানীত্যর্থ:। উত্তেন বৈক্ষর্থেন হেতুনা বিদাম সাক্ষাদহভবাম পরমং বদাত্বত্বমিতি ক্ষ্মিত্বস্বাকং প্র্মিত্ত্তমাসীদেব অধুনাতু ব্রহণোহি প্রতিষ্ঠাহমিত্যাদি অভক্ষেংক্টাত্মত্বমণীত্যর্থ:। এবাং বৈকুর্গবা

আনাদের নয়ন গোচর হইলে। প্রভো! আমাদের পিতা একাা, তোমা হইছে উাহার স্বন্ধ হয়, তিনি যৎকালে তোমার রহ্ন্য অর্থাৎ দ্বনীয় ভগবল্পকণ আত্মতক্ আমাদিগকে উপদেশ দেন তৎকালেই ভূমি আমাদের কর্ণিণ হারা বৃদ্ধি মধ্যে প্রবিষ্ঠ হইয়াছ, ইহাতে কি ভোষার আর অন্তর্জান হইতে পারে ? # ৪৬ #

হে ভগৰন্। হৈ সকল মুনি নিরভিমান এবং রাগশৃত উহোরা দৃচ ভক্তিযোগ বারা ব ব কারে যে তত্ত্ব অনুভব ভরিয়া থাকেন আমাদের বিলক্ষণ সরণ হইতেছে ভুমিই সেই আত্মতত্ত্ব রূপ পর্ম যতে সুতাপ বিনিতৈ দুৰ্ভিজি যোগৈ ক্লা ছুরো ছানি বিছু মুনরো বিরাগা: ॥ ৪৭ ॥
নাত্যন্তিকং বিগণমন্তাপি তে প্রসাদং কিম্বন্যদর্শিত ভরং ক্রেব উন্নরৈত্তে।
যেহল স্বাভিন্তি দ্বালা ভবত: কথারা: কীর্ত্তন্তি বিশ্বাল কুণলা রসজ্ঞা: ॥ ৪৮ ॥
কাসং ভবঃ স্বাজিনৈর্বিরয়ের নন্তাচ্চেতোলিবদ্যনি কুতে পদরোর্মেত।

विश्वयामी।

আহং সংখন বিশুদ্ধ সম্বাদ্ধা এবাং ভকানাং সমাক্ প্রতিকাশং রভিঃ স্প্রতি রভিঃ তাং রচয়তং আত্মতত্বমেবাহঃ তেই-মুভাশং রুণা তেন বিদিতৈ অনিতিদুটিঃ ভক্তিবোগৈঃ প্রবাদিভিঃ সুনরো হৃদি ব্রিছঃ কীদৃশা উদ্যুদ্ধে নিরহখানাঃ অভএব বীতরাগাঃ ॥ ৪৭ ॥

স্বন্দণি ভক্তিং প্রার্থনিতৃং ভক্তানাং স্থাতিশর্মাতঃ আভাত্তিকং মোক্ষাধ্যদণি তব প্রসালং তে ন বিগণরত্তি নাত্তিরতে। কিমু কিমুত অন্যানিজ্ঞানি পলং। তে ক্রব উরবৈ কজ্জাত্তিঃ অপিজিং নিহিছেং ভরং বন্দিন্ ছং। হে অঙ্গ হে ভগবন্ধে ভবতঃ কথারা বসজ্ঞাং কথং ভূডসা রম্পীরত্বেনচ পাবন্দ্রেনচ কীর্ত্তনাহ হৈ ভীর্থক বুশো বস্য ভস্য ॥ ৪৮ ॥

ইদানীং স্বাপরাধং দ্যোভরত্তো ভক্তিং প্রার্থরতে কাম্মিতি। হে তপ্রনু শতঃ পূর্মস্বাকং বুলিনং নাভবৎ ইদানীত্ব সর্কাণ্যপি

ক্রমসমর্ভঃ।

অনা পর্মাপত ইতি আস্বাহামান্তরাত্তবেনাশি বাঞ্চলতি বতো বিরাগাঃ চিত্তং ত্রকল্প পশৃষ্টং নৈবোলিটেত কৃষ্টি লিভি তালুশবেন প্রাসিদ্ধা অপি উল্পান্থনো নিরহলারা অপি মূনবে। বং পর্মাপ্তত্যং তব কুপাবিলিটতপ্রি ভিজিত্তত তেইতি পৃথিবাালাবির অং-কুপামাত্র লাক্ষা অতএব দুটিটা সালোক্য সাষ্টি ইত্যালি ভারেন নিশ্চরৈ উজিবোলৈরিক্রিভি। বংধাক্ষমান্তারামাশ্চ মূলর ইত্যালিনা ॥ ৪৭ ॥

অথ পূর্বনভেদমতরোহণি সংগ্রতি বরণানন্দশক্তি বিশাসৈর্বিচিত্রমতরো ভূরোহণি ভেলাত্মিকাং ভক্তিমের প্রার্থীরভূং ভক্তা-নাং স্থাতিশরবাত্য নাডাত্তিকমিতি আতাত্তিকং মোক লকণং প্রসাদমণি কিমুভানাদিকাদি পদং # ৪৮ #

কাম্মিতি। অনেন তদধিগ্য উত্তরপূর্জাল্ডোরপ্রেধবিনাশে ত্রাপ্রেশালিতি ভারেমাস্ত্রততাবনাং ব্রহ্মানিনামণি বেবাং

श्रीविषमाथहक्रवर्षी ।

সিনাং রতিং প্রেম রচরতং নতু ভো জানিনো ভব্জিলোগেন বিনা মমেদং সাকারং স্বরূপং নাত্ত্রতে ওলাতঃ। বহুৎকৃটায়তত্বং তে তব বৃঢ়তক্তিবোটগরেব মুনরোহস্বরূপণাঃ সনকাদরো বিচ্জানতি। নতু কেন লক্ষণের ভব্জিযোগো জাতবাঃ ওলাতঃ। অন্তাপেম বস্তকাত্যাং শাপবানানস্বরলাতেন পশাভাগেশনৈব বিবিটতজাটিতঃ নতি বীতরাপা নির্মিকারা মুনরো ভব্জিং বিনাত্তপত্মীকি ॥ ৪৭ ॥

মৎ সাকাংকারস্য কা কথা সংপ্রোক্তেণি সংক্ষাকীর্তনানকোশি ব্রহ্মানলাদ্ধিক ইত্যান্তঃ। আতান্তিকং মোক্ষাধাং সাযুদ্ধ্যনি তে প্রসাবং সংক্ষাব্যাহ্যন ন গণরন্তি নাজিরত্তে কিমু কিমুতানাৎ ইক্রানিপদং। তে ক্রব উন্নট্রকক্ষুন্তিতৈর্পিতং নিহিতং ভয়ং বিনিন্ ছং। তথাব তে তত্ত্বান্তঃ বেংক্তে। ক্যাব্যক্তান্ত্রের কুশলাঃ অন্যে অকুশলিন ইত্যবং। ক্যাবাং কীদৃশাঃ কীর্তনার্ক্রির পাবনস্বান্তির্বর্কনাশি বশাংসি বস্তাঃ ভবত ইত্যক্ত বা বিশেষণং ॥ ৪৮ ॥

' নতু মহকো সভামীদুশাএৰ মোকং নগণহত্তোৰ। বেৰাং সংগ্ৰন্থি কা নিঠা বং ওক্তকৌ মুক্তৌ বা ভাং স্পটং জ্ৰণ ৰাঞ্চনয়াল

তত্ত্ব, ভূমিই বিশুদ্ধ সত্ত্ব প্ৰীমূৰ্তি বারা ভক্তগণের প্রতিক্ষণে রতি রচনা করিতেছ ॥ ৪৭ ॥

প্রভাগ তোমার যশঃ পরম রম্পীয় ও অভিশয় পবিত্র, স্তরাং কীর্ত্তনার্হ ও তীর্থ সরুপ, যে সকল কৃশল ব্যক্তি ভোমার কথার রসজ্ঞ তাঁহারা তোমার আত্যন্তিক প্রসাদ রূপ যে সোক্ষণদ তাহাকেও গণ্য করেন না, অন্য ইন্দ্রাদি পদের কথা কি ? ফলতঃ ইন্দ্রাদি পদেও তোমার ভ্রেডিরসাত্তে ভয় নিহিত হয়, ভোমার কথা রসজ্ঞ ব্যক্তিরা সর্বাদী নির্ভিশয় স্থ সজ্ঞোগ করেন, ইহাতে ঐ পদে তাঁহাদের কেন প্রবৃত্তি হইবে ? । ৪৮ ॥

टर छगवन् ! हेरात शूटका भागारमत भाग दिल ना, अक्सरन रहेल, य रहणू आमता रणामात छख-

বাচশ্চ ন স্তুলসিবদ্যদি তেহজির শোভাঃ পূর্ব্যেত তে গুণগণৈ বদি কর্ণরছঃ ॥ ৪৯ ॥ প্রাভূশ্চকর্থ যদিদং পুরুত্বত রূপং তেনেশ নির্বৃতিসবাপুরলং দৃশো নঃ।

खेबद्रवामी।

জাতানি যত ব্যুক্তো শথ্যে অভ: তৈ: ব্যুক্তিন: নির্বেষ্ কামং লোহসাকং ভবো জন্ম সাণে হ বিতর্কে ধদিতু নশ্চেত ভে পদরে।
রমেত জালির্যথা কণ্টকৈ রাবিধামানোপি প্লোব্রমতে ভইবিমানবিগণন্য বিদ রমেত ভঠি জাজ্ব জাং শোভা বাসাং তথাচ
তুলসী স্বত্তণ নৈরপেক্ষেণ কলজ্ব সহজেনৈব শোভতে। তথা বিদ নোবাচ: শোভেরন্। বিদিচ তে তুণগণৈ: পূর্য্যত।
কর্ণরক্ ইতাল্লস্য পূরণমিব বাচক্রীভ্যা প্রার্থিরভ্য ক্ষাং তু গ্চেছি কুলাল:। কর্ণরক্ষ্ ভাকাশবাৎ তুণ গণানাঞ্চাম্ত্রাৎ ন কণ্চিৎ
পূরণং অতো নিতামেব প্রবণং ফলিব্যতীতি ॥ ৪৯ ॥

আৰু বন্ধং ক্লভাৰ্যা: শা ইভ্যাছ:। হে পুকুতুও বিপুল্কীর্ডে। বদিনং ক্লপং প্রাকৃতকর্থ প্রকটিতবানসি। দুশো নেতাণি।

क्षमण्डः।

বত্নরককারিবছবুজিনাপাতক্ষমাপণেন তরে। রিখং ভ্তগুণো হরি রিভিব্ৎ স্কাঁফুড্মহত্তমতং স্চিতং। অবে। নিরমা অপি ভবেয়ু বেব ন ভাবতাপি পর্যাপ্তং ভেডাক নামাকমপি ভরং। অত তুম্লং চ্ফালং ভবং পরাঘুবীভাব এব সম্মাকং মাভ্দিতি সকাক্ প্রার্থিয়ের স্থ বিতর্কে বলি তুন ক্চেত তে পাদরো রমেত। তত্তাপ্যলিবদেব কেবলত্যাধুর্যাভাগপৈক্ষা ন তু ক্রমান্তাবাপে ক্রা। এবং বাচক্ষেত্যাদি অত ভাজাপরাশস্ত ভগৰতা ক্ষা ভলিছামাত্রস্কৃতভংক্রোধ্বননাত্তেযামপরাধাভাসত্বেনতি জ্বেরং। স্লোক্ররেইছিন্ কৈবলাল্ররেক্টেণি অত্তিক্ষাত্রং কাম্যমানানাম্মাকং ভদবিরেধিতাং প্রেরানিতি স্বাব্যাকর । ৪৯ ।

ভবাপীথং কুভার্বভ্যমাক্মতিচিত্রমিভ্যাত্তঃ প্রাকৃরিভি। অনাজনামান্ত্রন তব একাত্তভভিতরহিতানাং অপ্রকটোহণি ইৎ

এ বিখনাপচক্রবন্তী।

মিত্যত আহে:। নোহখাকং ভব এব তাৎ নতু মোক্ষ ইতার্থ:। ততাপি স্বৃদ্ধিনৈ: খাণ্ডভকর্মতি নির্বের্ নামকীষণি বোনির্
কত্তরাধিকো লাভো মুক্তে বা কঃ থবলাভত্তমাহ:। চেত ইতি অলির্থণা কটকেরাবিদ্ধমানোপি পুলের্ রমতে তবং বিরান্
অবিপণ্যা যদি রমেতেতি প্রেমা ব্যক্তিত:। বদীভানেন নারকাামণি বোনো ভক্তে: সংভব:। সত্যাঞ্চ ভক্তে নরকমণি
মোক্ষান্ত্রমমিত্যাশীতাভঙা লভাতে। অভিবৃদ্ধানের শোভা যাসাং ভা ইতি তুলদী বণা খণোভামা অভাবাদন্তর ন তিওঁতি
অভ্যোরের শোভতে তবৈবাখাকং বাচোপি স্বাভ্তিরপ গুণানামবর্গনএব শোভত্তাং নাল্তর। পুর্ণাতেতি অত্যান্ত বার্তা
ন প্রবিশ্বিতি। যথা। কর্ণরক্ষ ইতারত প্রণমিব বাচক্রীত্যা প্রার্থিতে। অয়ত্ত প্রান্তিপ্রারাণ গুণানাঞ্চাম্প্রিয়াং ন কলাপি প্রণমতো নিত্যমের প্রবণং কলিষ্যতীত্যাবং প্রবণকীর্ত্তনম্বনানীত্যানক্ষর্য় মুক্তেনি নাজ্যের ভবেত্
সন্তবেদণীতি নিক্সটোপি ভবএব প্রার্থিতোন মোক্ষঃ। এবমের নাথ যোনি সহম্বেষিতি কীটের্ পক্ষির্ মুগেবিত্যাদি প্রোর্থনা
নিদ্ধামতকানাং স্বভাবতার তেবামনুসংহিতং ভলনানক্ষ মনক্সংহিত্যাণি ভবক্ষয়ক কৃক্তে ইতি ভগবতোহণি স্বভাবং সর্ব্রে
জিইবাঃ ৪৯॥

এবং ঘণীরপ্রবাদ্যানক্ষত্রিক লোভেন বংশরোক্ষময়ো ভবোশি প্রার্থতে। বরাত্ বশাক্ষাংকারামূভমণি বরং বছকাপরাধিদিগকে অভিশাপ দিলাম, আমাদের আত্মকৃত পাপ নিমিত্ত নরকে বাস হইবে। প্রভা ! যদ্যপি
আমাদের চিত্ত ভোমার চরণারবিক্ষে শুমর সদৃশ হইয়া রমণ করে, অর্থাৎ মধুকর যেমন কণ্টক বিদ্ধ হইলেও পুত্রা সমূহে রমণ করিয়া বেড়ায় ভাহার ন্যায় কোন প্রকার বিদ্ধ না গণিয়া যদি আমাদের
চিত্ত ঘদীয় চরণারবিক্ষে রত হয়, আর যদি আমাদের বাক্য তুলসী তুল্য ভোমার চরণব্য ঘারা শোভমান হয় অর্থাৎ তুলসী যেমন আত্মগুণ নৈয়পেকে কেবল ভোমার চরণ সম্বন্ধেই শোভা পায় তত্রপ যদি আমাদের বাক্য শোভা ধারণ করে এবং ভোমাগ গুণ সমূহ ঘারা যদি আমাদের কর্ণরিদ্ধ পরিপূর্ণ হয়, ভাহা হইলে আমাদের যথেক নরক হউক ভাহাতে কিছু ক্ষতি হইবে না য় ৪৯ য়

হে বিপুলকীর্ত্তে ! তুনি এই যে মৃতি প্রকটিত করিলে ইহা ৰামা আমাদের নেত্র অভিশন্ন পরিত্ও

खन्त्रा रेमः ভগবতে अब देविरधम त्वारुनाष्ट्रवाः क्रम्मद्वा कर्गनान् थाजीकः ॥ e · ॥

Bujmin !

অনাত্মনাং অভিতে দ্ৰিরাণাং চুক্দরঃ অঞাকটোপি ইৎ ইবং বং অভীতোহিদ ভবৈ ভুজাং ইদং নৰো বিধেন । ৫০ ।

munmes:

ইথং বং প্রীভোষ্সি তলৈ তুষ্তাং নম ইদং বিধেমেতি। অতৈতহুক্তং ভবতি এতে বন্ধবিদ্যাসিদ্ধানাং পরাবরগুরণামণি গুরবং। অত এব পরম্ভংস মহাসুনীনামিত্যক্তং তং ছামহং কানখনখভাব প্রথমত মারাভণতে দমেটিছ:। সনন্দনালৈ জ দি সংবি-ভাবামিতি টামল: ক্ষৰাক্যাদে ইহাত্মতবং সমাক্ জগাদ মুনরে৷ বদচক্ষতাত্মিতি এক ৰাক্যাদে তলৈ মূদিতক্বারার ভ্ষম: পারং দর্শরতি ভগবান্ সনংকুমারঞাতে । তথা প্রসিদ্ধং । আসরামুভবতৈ ব তং সিদ্ধতানিমাদিভির্মিরোহপি সংবিভাবা:। নতু সিদ্ধান্তবত। তং স্থাপঞ্মধিক্ল স্মাধিবোগ: স্বাপ্ত: পুন্দ ভলতে প্ৰতিবৃদ্ধ বছারিতি আকিপিলদেব বাকাাং। অত্তব তেখাং প্রথবন্ত মান্বাগুণ ভেদ মোহানাং জোধাদিকমপি মুর্যট্ ঘটনকারিধ্যা প্রীভগবদিচ্ছবৈদ্ধ জাতং ইতি তৈরপি ব্যাধ্যাতং। তদেব তেখাং সতত ব্ৰহ্মানন্দ মৰ্মহং সিদ্ধং। তত্ত্তং অঞ্চল জুবামণীতি আনতে চান্তব্ৰ ব্ৰহ্মামৰিকিপ্ত চিততং। তথা সপ্তমে শ্রীনারদবাক্যং কামাদিভিয়নাবিদ্ধং প্রাশাস্তাধিশবৃত্তি যৎ। চিত্তং ত্রক্ষত্থশ্র্টং নৈবোদ্ভিটেত কহি চিদিতি। তথাপি তেবাং छगवनामन्नाकडेिक्छम्त्राटा । अवसरमायामन्।ात्रामानाः जानृनंदः अवर्ष च्छ्यम्छण्टात्। छव्नचाक्रकार्यानाक्रिक कृतिव नीना कुकानात टेजानिय । व्यथ लाक्मरधहारेथं देवना ट्यार कक्किथकिया थानीनमरकात्रवभाषा । देनव केसबानि वात्रा वर्षा গরিহাতং মদিরামণাক্ষ ইতি বস্তঞাবেশাসংভবাৎ দৃশ্যতে অন্যক্ষানাবেশ:। মানসা মে স্কৃতা যুগ্ধ পুর্বজাঃ সনকাদয়:। ১০রুবি-হায়স। লোকালেঁতেষু বিগতপুহা ইত্যান্যভিধানাৎ ভগৰতি ছাবেশঃ। পরমন্ত্র মহামুশীনামবেষণীয় চরণাবিত্যত্র যাদুক্তিকতা বিবোধ্যাবেৰণীয়ভাভিধানাৎ। পঞ্চমে তু অস্দ্নিশিভজানানদ্বিধুভাশেবদ্দানাং ভগবং অভাৰানামান্ত্ৰামাণাং মুনীনা মনব্রত পরিগুণিভগুণগণেভাত গলে তলেকনিষ্ঠাৰ্মপুতিং। অক্সিকটিরদীলাক্সক্ষার ইতাত্তিব চ। অতাণি তেনেশ নিরু তিম্বাপু রল: দৃশো ন ইত্যাদৌ সুধনত্বসি সাক্ষাদেবোক্তং। অত পুর্ব্ধোক্তহেতে।ত স্ততৌ প্রত্যুতোপালত প্রস্থাত দেহাবলোক্তলরা বিদি সংস্পৃণস্তমিতি সাক্ষাত্তেশ্চ দুশামেৰ অধং জাতমিতানাস্কিরেৰ বাঞ্জিতেতাপি ন ব্যাধেলং। তত্মালামানাগাং রুম্ণা-স্পদ্ধাৎ ব্ৰহ্মাণ্য মাত্মব্ৰেৰ প্ৰীভগৰান্। ত্ৰাপি চকারাৎ ভেৰাং সংক্ষোভ মক্ষয়ন্ত্ৰামণি চিত্তভাৰেত্তি প্ৰবণাৎ তভোহণি ঘনপ্রকাশঃ তত্তবিচিত্র প্রীভগবনকোপালান্যভিনিবেশনর্শনাদানন্দবৈচিত্রী চোপলভাতে । সা চান্যথামূপপভাা স্বর্গশক্তিবিলাস कटेशव हैकि। नष्ट्र छवकु एक्वामानमाधिकार जिल्लिस्विपवयक्रशानमदेशव यन ध्यकांमश्र छेगाधिदेवमिष्टेरार। यहः विश्वद সক্ষমভাবিভায়াং চিত্তবৃদ্ধে ব্দুক্ষ ক্ষতি।

श्रीविधनार्थठकवत्री ।

নোপি পারিতাঃ স্বেতাহো তে ক্ষারা এতাবতী সীমা কারণাখণারমিত্যাতঃ। প্রাত্রিতি পূরু বণাভাৎ প্রতর্জ্বভিউলৈ-রাহ্ত হে নারারণ বিষ্ণো গোবিন্দ রূপর দর্শনং দেহীত্যাহ্ত তেন সভকাহ্বানোও কুণালরদ্দৌনব ভবতা স্থরপাবিদ্ধর্কতা বয়মণি রুজ্বিতা ইতি ভাব:। দৃশো নেআণি বৃদ্ধিস্কুল্বাে বাং ইদং নম ইতি মৃদ্ধি সুধুতানশ্বনীন্দর্শরিত। ইৎ ইখং। যবা ইণিতি নম ইতাভ বিশেষণং প্রীচরণারবিন্দং প্রতিগ্রহাে । জনাজ্বাং আলা খং সেবাছেন বর্ততে বেবাং তেযাং ত্রাং হরণার । সেবেণ বেবাং খং ত্রুদর্ভে জনাজ্বাং আভ্যাত্তবা এবেডি ভাব: প্রতীতঃ উল্কানাং স্থাইব চ্র্দর্শনের নিশ্চত ইতার্থ:। জ্বা সমন্তাল্বাানাং লক্ষান্তর ব্রেলাহ্বানাং ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাং ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাং ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাং ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাং ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাং ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাং ভাবািল্য ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাম ভ্রেলাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর ক্রান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বান্তর ব্রেলাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর ব্রানাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর হালালাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর হালাহ্বানাহ্বানাহ্বানাহ্বান্তর হালাহ্বানাহ্বান্তর হালাহান্তর হালাহান্তর হালাহ্বানাহ্বান্তর হালাহান্তর হালাহান্তর

हरेल। दर श्रेण। क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क

যরামানিচ গৃহাতি লোকে। ভত্তের ক্তাগদি। সোহসাধ্বাদ স্তৎকীর্তিং হস্তি ছচমিবাময়ঃ ॥ ৫ ॥
যক্তামল যশঃ শ্রবণাবগাহঃ দদ্যঃ পুণাতি জগদাখপচাছিক্ঠঃ।
সোহহং ভবন্তা উপলব্ধ স্থতীর্থকীর্তিশিছন্দ্যাং স্ববাহ্মপি বং প্রতিক্লর্তিং ॥ ৬ ॥
যৎ দেবয়া চরণপত্মপবিত্রেরেণুং দদ্যঃ ক্ষতাখিল মলং প্রতিলব্ধ শীলং।

विभव्रकामी।

কিঞ্চ মনৈ বৈভাভ্যামনিষ্টং কৃত্যিত্যাই যক্ত স্থানিনো নামানি ৮ ভক্ত কীৰ্তিং আমরোহত খেতকুষ্ঠং ॥ ৫ ॥

যন্ত মেহমূতক্সপেহমলে যশনি প্রবণেনাবগাহঃ প্রবেশঃ খণচমভিব্যাপ্য জগৎ সদা অৎক্ষণমের পুণাতি সোহহং বিকুঠঃ ভবস্তো। হেতৃভূতেভাঃ উপলব্ধা প্রাপ্তা হু শোভনা তীর্গভূতা কীর্ত্তি র্যেন সঃ। হুবাছস্থানীরং লোকেখরমপি হস্তাং কাম্বস্ত বার্ত্তেতার্থ:। মুগুণামুবর্ণনস্ক প্রাক্ষণোৎকর্ষার্থমের ॥ ৬ ॥

চরণপল্নো: স্থিতঃ পবিজ্ঞোবেণু র্যা। অভত্তৰ ক্ষতো নির্ভঃ অধিক্ত লোকত মলোবেন। যথা চরণপল্লাল্লয়ং পবিৰো রেণুর্থিলিলিত। ক্ষতোহবিলোমলো যতেতি চ বিজ্ঞতঃ। প্রতিক্রং প্রাপ্তংশীলং যেন ধেষাং দেবরা এতে ভণা মন। অভত্তব

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

এবমাত্মীয়ত্বন তৌ ভর্পয়িবা ব্রাহ্মণত্বেন তান্ ছোভি ৰভেভি চতুর্ভি:। কীর্ত্তি: পূর্কোক্তং বশ: বন্যপি লোকেখর।ভ্যামতি

@বিশ্বনাথ চক্ৰবৰ্তী।

নমু পরমেশ্বরভ তব কথমপরাধ: অপরাধিত্তেই ি কো দণ্ডরিতেতি কিং সংক্ষণীতি তত্ত নাম্ব দণ্ডরিত। ছফীর্তিম্ব ভাদেব ইত্যাহ যভ স্বামিনো নামানি অম্কত্ত ভ্ত্যোহরং কুকর্মকুদিতি তত্ত স্বামিন এব কীর্তিং হস্তি। আমর: শ্বিলং স্বচং হত্তি অধ চ মন্ত ত্বক তবৈয়ব কুটা পুমানয়মিতি নিন্দাম্ৎপাদয়তীতার্থ: ॥ ৫ ॥

নৰক্ষণপরাধান্তৰ হুকী বিষিত্ৰৎ প্রসাদনাক্ত তব কীর্তিরিভি ত্বংক্ষ্যা অক্ষরিধ জীবা এব ত্বঃ পরমেইরাদণি তহু বিকা অভ্যেতি চেৎ ভত্ত ডঃ সন্দেহ ইভ্যাহ বৃদ্যেভি সোহহং বিকুঠঃ ভবড়ো হেডুভূভেভ্য উপলব্ধা প্রাপ্তা স্থভীর্বন্ধণা কীর্তির্বন সং। স্বাভ্যপীতি মুম্ভাম্পাদরে র্জরবিজ্পনোঃ কা বার্ত্তিহন্তাম্পাদং কাস্মণি ছিল্মাং তদসমর্থো যুহাস্থ সাপরাধ এবাকীতি ভাবঃ ॥ ৬ ॥

নৰ্ম্মাকং বৈক্ষাগমনস্যেদমেৰ ফলং বৃত্তং যম্ভবানস্থানী প্ৰক্ৰেনিশ্ব স্থানি প্ৰতোবং ক্ৰতে ইতি তত্ত কিং বিপৰীতং ক্ৰথে-ভাছে। যংসেবৰা মম চৰ্মণে পল্লে অভ্তাং তত্ততা বেণবোপি জগৎপবিত্তৰন্তি। অথিলা অপি কামাদৰো মলাং মতো হেতোৱ-পাতেষাম্পি ক্ষতাং। সৌশীল্যানি লক্কানি লক্ষীৰপাৱ সম্পদ্ধি মাং ন জহাতি। বসাা লক্ষ্যা অবলোকলেশাৰ্থম্পি ইতৱে ব্ৰহ্মাণা

ভত্তের কোন দোষ করিলে অত্যে জিজ্ঞাসা করে ইহারা কাহার ভৃত্য ? তাহাতে যে প্রভুর নাম গৃহীত হয়, খেত কুষ্ঠ যেমন ত্বক্ বিন্ত করে তাহার নাায় ঐ অসাধ্বাদে স্বামিরই কীর্তি বিস্পুত হয়। ৫॥

আমার নাম বিকুঠ, আমার অমৃত সদৃশ নির্মাণ যশঃ প্রাবণে মনো নিবেশ করিলে আচণ্ডাল সমস্ত জগজ্জনই পবিত্রিত হয়, কিন্তু হে ঋষিগণ! আমার ঐ হুশোভন তীর্ধ স্বরূপ যশঃ কোণা হইতে হইল ? তোমরাই ত তাহার নিদান, অতএব ষে ব্যক্তি ভোমাদের প্রতিকূল আচরণ করে সে যদিচ আমার বাত্ত স্থানীয় লোকপালও হয় তাহাকে আমি ছেদন করি, অন্যের কথা কি ? ॥ ৬॥

যাহাদের দেবা করিয়া আমার চরণপদ্মে পবিত্র রেণু হইয়াছে তাহাতে আমি অধিন লোকের পাপ বিনষ্ট করি এবং অয়ং এতাদৃশী শীলতা লাভ করিয়াছি যে একাদি দেবগণ যে কমলার কটাক্ষ লোভ নিমিত্ত বহু বহু নিয়ম ধারণ করিয়া থাকেন, আমি বিরক্ত হইলেও আমাকে কণ কালের নিমিত্ত ত্যাগ করেন না, সেই সকল আহ্মণের প্রতি যে ব্যক্তি প্রতিকৃশ, আচরণ করে সে কথন আমার

ন শ্রীবিরক্তমপি মাং বিজহাতি যদ্যাঃ প্রেক্ষাল্বার্থমিতরে নিয়মান্ বহস্তি ॥ ৭ ॥
নাহং তথালি যজমান হবিবিতানেশ্চোতদন্ত প্রতমদন্ হতভূত্যু থেন।
যদ্যক্ষাপত মুখতশ্চরতোহসুষাসং ভূউস্য ময্বেহিতৈনিজকর্মপাকৈঃ॥ ৮ ॥

श्रीपत्रवामी।

শ্রীন্দাং ন বিশহাতি প্রেকালবার্থং অবলোকন লেশার্থং ইতরে ব্রহার তেবাং বং প্রতিক্লবৃদ্ধিং ছিল্যামিতি পুর্বেশৈর সহজঃ 19
কিঞ্চ ব্রাহ্মণো মইমব শ্রেষ্ঠং মুবং অতো যুম্নবঞ্জরা সমুব্ধ তিব্রহার এব ক্লভ ইত্যাহ নাহমিতি বিভাবে বজে যুম্মানত হবিশুক্র প্রোভাশানি হতভূগ্যি ভেন মুবেন অনন্ অর্মনি তথা নালি নাশ্রামি বং বধাশ্যোততা ক্ষরতা যুতেন প্রতং বিলোড়িভং
পায়দানি প্রতিব্রাসং রসাম্বান পূর্বকং চরতো ভূঞানত জানিমো ব্রাহ্মণত মুবতেছিশামি। মরি ক্মপিতৈঃ কর্মনলৈ স্তইত
নিজ্মতেতার্থং ৪৮ ঃ

ক্রমসন্দর্ভ:।

নিক্টা এব তথাপাশ্লীলাচ্ছালনাদ্যৈব টীকামাং তথা ব্যাখ্যাতং ॥ ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬ ॥

কথমন্ত্ৰে। ভবত তাদৃশ্বং ভত্ৰাহ। যংসেবনা ইতি। অন্নমৰ্থ: বিপ্ৰাণাং দেবদেবানাং ভগবানাৰ্থ দৈবভমিতি ৰক্ষাণাগ্সাবেশ বেষাং ত্ৰাহ্মণানাং ক্ষাৰত এব মন্ত্ৰক্ষভাবনাগরাণাং ভবভাং সেবনা স্বক্ষেন্ব ভবচ্চরণপদ্ম হিতপবিত্ৰবেণ্প্ৰক্টিকভাদৃশ শক্তিভ্ৰতি:। তথাক্ষভাহিবিলামল আত্মানম্বাভ্ৰত্বেশ্যোৰাসীক্তাদিকপো যেন ভাদৃশো আছা:। ভত্ত প্ৰতিশক্ষং শীলং ভক্ষবাৎসলাদি স্বভাবে। যেন ভণাভূত ভ ভাতো যোহহং ভং মাং বিশ্বক্তমপি লক্ষা প্ৰত্ৰিক্ষাগুপরাধ্বিতি ন ভাষতি ন ভালতো বেহিং ভং মাং বিশ্বক্তমপি লক্ষা প্ৰত্ৰিক্ষাগুপরাধ্বিতি ন ভালতি ন ভালতোবেভ্যুৰ্থ:। তত্ত ভ ততা মহিমাপি মহানেব ভাত ভংগেবনা অনেয়বামপীতাহ যতা ইতি। ইতবে লোকপালাদাঃ। তত্মং সাংধ্বেৰোকং সোহহং ভবতা ইত্যাদীতি ভাব:। তত্ম ভবতির্বন্ধস্বানাদিকমপি ক্রিন্তে ভদ্পি ভবনিছোভিক্রমভ্যাদেব ন নিবার্ঘাভ ইতি ॥ ৭ ॥

অতো মুমান্তঃ সম্ভোষোহপি ব্রাহ্মণ সম্ভোষেত্রির ভাগিতাছে নাহমিতি। মুয়াৰহিতে রভিষেত্রেন মুরোর সম্পিতিও: ॥ ৮ ।

शिविधनागहक्वरही ।

অপি নিম্নাং তথে আদীন্ ভলতীত্যেতৎ সর্কং বেষামেৰ সেবমা তেবাং বং প্রতিক্লবুজিং খবাহমণি ছিল্যামিতি প্রেনিবাৰমঃ॥१

এবমহং ব্রাহ্মণানের সেবে মদ্টাচ বে ব্রাহ্মণান্ সেবমানা ভবেষ্ত এব মংসেবকা বতো ব্রাহ্মণমুখেনৈবাহং ভূঞে ইভাহে নাছ

মিতি বলমানত হবিশ্চরপুরোভাশানি ভ্তভুগলিজেনমুখেন অদর্গি নাল্নি তথা। বণা ব্রাহ্মণস্য মুখতো মুখেনাছ্বাসং প্রতি
গ্রাসমেবশ্চোতিতি অ'টিলঃ প্লুতং ব্যাপ্তমিভ্যাবাগায়্বর্জনীয়ং চরতো ভ্রান্স্য মিরি সমর্পিটিভঃ কর্মকলৈছাইস্যেভাদেন তথা

বিপ্রাণাং কেবলেবানাং ভগবানাছানৈবভমিভ্যাবিম বাকোন ব্রাহ্মণ্যা ভক্তিরাহিতো সভ্যপুত্রাত্মমভিব্যক্তা খণাক্ষিব মেক্ষেত
লোকে বিপ্রেমবৈক্ষব্যক্তিয়ালি ব্রন্থবিদ্যাধাং গরিক্তঃ। অবৈক্ষবং বৈক্ষব্যেবিশ্যিতি ভ্রাথ্যে দুইবাং। এবঞ্চ ভক্তিমিশ্র
অধ্বাবানের ব্রাহ্মণো ভবতি বথা বশিষ্ঠাদিঃ। ভক্তেঃ কৈবল্যে প্রাধান্যে সভি জাতা ব্রাহ্মণোহণি বৈক্ষব এবোচাতে বথা

শ্রীনার্দানিবিতি বিবেচনীয়ং॥ ৮॥

অনুগ্রাহের পাত্র হয় না, আমি ভাছাকে বধ করি। ৭।

হে বিজগণ! আসি যজেতে অগ্নিরূপ মুখ বারা যজমানের হবিঃ অর্থাৎ চরু পুরোডাশাদি আহার করি সভা, কিন্তু যে সকল জানী আক্ষা নিকাম হইয়া আমাতে কর্মফল সমর্পণ করিয়া প্রতিপ্রাসে রসাখাদ পূর্বক স্তাক্ত পারসাদি ভোজন করেন তাঁহাদের মুখে আমার যেমন ভোজন হয়, যজে অগ্নি মুখ বারা তত্রেপ তৃত্তিকর আহার হয় না ॥ ৮॥

বেষাং বিভন্মতে মথগুবিক্ঠযোগমায়াবিজ্ভিরমলাজ্যির জঃ কিরীটে:।
বিপ্রাল্প কোন বিষহেত যদর্থান্তঃ সদ্যঃ পুণাতি সহ চদ্রললামলোকান্। ৯।
যে মে তন্ত্রি জবরান্ ত্রতীর্মদীয়া ভূতান্যলক শরণানিচ ভেদবৃদ্ধা।
দ্রুজ্যন্ত দৃশোহ্রি মন্য স্তান্ গৃধা ক্রমা মম কুশন্তাধিদগুনেতুঃ ॥ ১০॥

विभवत्रामा ।

কিঞ্চ বেষামমলং অভিযুবজঃ অহং কিরীটৈঃ বিভর্মি ভান্বিপ্রান্ অপক্র্কভোশি কোহতো ন বিষ্ত্তে। কণ্ড্ডোহং অথণা অনব্ছিরা বিক্ঠা অপ্রতিহতাত যোগ্যায়াবিলাসভূতা বিভূতিগভ সংত্থা। যভ ম্যার্হণান্তঃ পাদোদকং চল্ফল্লামেন্নেব্রেশ সহিতান লোকান্সলঃ প্ণাতি এবং প্রমেখ্রঃ প্রম পাবনোহশি সরহং বিভ্নাপতি ॥ ৯ ॥

কিঞ্চ মে তন্ অধিষ্ঠানানি কা ডাঃ বিজ্ঞান্ত হতীঃ দোগ্দীর্পাঃ ইতার্থঃ। ছহিত্বিতি পাঠেপি গা এব বিফ্রুপাৎ স্থাৎ উৎপ্রতাৎ স্থাস্তাশ্চ গাবঃ ইতি বচনাৎ। অলক শরণানি বক্ষক হীনানি ভেদবৃদ্ধা মদধিষ্ঠানং ন ভবস্তীতি পৃথক্ দৃষ্টা বে দ্রুলান্তি ঈক্ষেত্র। অলেন ক্ষতা নষ্টা দৃষ্টি থেঁবাং ভান্ মদীরোহ্ধিক্তো দণ্ডনেতা যে। যমঃ। তক্স গ্রাকারা দৃতাঃ। অহিবৎ মহার্থেবাং তে ক্বা জোধেন কুশস্তি চক্তিশিছকান্তি॥ ১০॥

क्रमगम् छ।

যত্মাদেবং ভত্মাৎ বেষামিভি ॥ ৯ ॥

ততো মদমুসরণা বিপ্রাদির দরামেব কুকৌরিন্ন চেদওং প্রাক্ষান্তীতাহে যে মে ইতি তলু তারির্কিশেবণভাল মাহকারাস্পদানি। মদীয়া মমতাস্পদানি। অলক্ষ্রণাঃ কুণাস্পদানি। ভেদবুদ্ধা তত্তিতিরও বৃদ্ধা ॥ > • ॥

श्रीविश्वनाथठकवर्षी।

কিঞ্চ ব্রাহ্মণকুতাভিক্রমোহপি দোঢ়ব্য এব নতু প্রতিক্রব্য ইত্যাহ যেবামিতি বিপ্রানপকুর্বতোহপি কোন সংহত অপিতু সর্বএব তক্র কারণজিজাসারাং অক্রিট তেওঁ জা দর্শমন্ত বেষামজিলুরজঃ কিরীটে রহং বিভাগি যক্ষারণ প্রসাদাং অক্রিযোগমায়। সম্পতিতির্মজ্বং তথা যতা মম অর্হণাস্ত করণাদকং চন্দ্রলামেন মহাদেবেন সহিতান্ লোকান্ সদ্যঃ পুনাতি তেনে যো মহচেরণ বজো মুদ্ধি ধতে তেসৈয়ব চরণামৃতং প্রাহাং নান্যস্যতি জ্ঞেবং ॥ ১ ॥

বাহ্মণক্কভাতিক্রমমসহিষ্ট্রাং কা বার্ত্তা বাহ্মণের্মগৃদ্ধিভেদদর্শিন এব নার্কিন ইত্যাহ যে জনা মে তন্পুন দেহ রূপান্
ত্হতীর্দ্ধান্ত্রীর্গাইভার্থ:। ত্হিত্রিতি পাঠে গা এব বিজ্রপাৎ স্থাাত্ৎপরতাৎ স্থাস্ত্তান্ত গাব ইতি বচনাং। জ্ঞানশানি
জ্ঞানাথানি ভেদব্দ্যা মন্ত্রনার লভবন্তীতি পৃথক্ট্যা যে দ্রুজান্ত তান্মদীয়েছবিক্তভো দণ্ডনেতা যো যমন্ত্রা প্রাকার দ্তা
অহিমন্যবং ক্ষা ক্ষন্তি নেআদিল্ চঞ্জিদ্দল্ভি॥ ১০॥

হে ঋষিগণ! আমার যোগমায়ার পরিছেদ নাই এবং কুত্রাপি তাহার ব্যাঘাত হয় না, আমার পাদোদক শশিভূষণ মহেশ্বর সহ লোকপাল সকলকে সদ্যঃ পবিত্রিত করে, ইহাতে আমি পরমেশ্বর এবং পরম পাবন তাহার কোন সন্দেহ নাই, কিন্তু আমি এবস্প্রকার হইয়াও বাঁহাদের নির্দ্ধল চরণ রেণু আপনার মন্তকন্থ কিরীট দ্বারা নিরন্তর বহন করিতেছি সেই বিপ্রগণ অপকার করিলেও তাহা কে না সহু করিবে ? ॥ ৯॥

হে মুনির্ন্দ! ত্রাহ্মণ, হ্য়বতী গাভী ও রক্ষক হীন প্রাণী এই তিনটী আমার শরীর অর্থাৎ অধিঠান স্থান"ইহাতে আমার অধিষ্ঠান হয় না" এই রূপ ভেদ দৃষ্টিঘারা যে সকল ব্যক্তি এই তিনকে
নিরীক্ষণ করে, তাহাদের দৃষ্টি পাপে বিনন্ধী হইয়াছে জানিবে, আমার অধিকৃত দণ্ডনায়ক যমের
গ্রাহ্ম রূপি দৃত্যণ সর্পবিৎ রোধে পরিপূর্ণ হইয়া চঞ্ছারা তাহাদের চক্ষ্ণ: সকল ছেদন করিবে সন্দেহ
নাই॥ ১০॥

বে আক্ষণামায় ধিয়া ক্ষিপতোষ্ঠ্যন্ত স্তব্যক্ষ: শ্বিজহুধোকিতপদাবক্তা:।
বাণ্যাসুৱাপকলয়াত্মকবদ্গৃণন্ত: সম্বোধয়ন্ত্যহমিবাহমুপাকৃতকৈ: ॥ ১১ ॥
তমে স্বভর্তু ববসারমলক্ষমাণে যুম্বন্ধ তিক্রমগতিং প্রতিপদ্য সদ্য:।
ভূষো সমান্তিকমিতাং ভদসুগ্রহো মে যথ কল্লাভামচিরভো ভূতয়ো বিবাস:॥ ১২ ॥
শ্বীব্রক্ষোবাচ ॥

औषुत्रभागी।

এবস্তাস্থ মাং বলীকুর্মজীজাছ। যে কিপতঃ পরবং ভাষমাণানশি আহ্মণান্ সংখাণরক্তি সরি যা ধী তথা বাস্থদেব দৃট্যা অর্চনতঃ সরস্বাদ্দাং প্রীরমাণচিত্তাঃ বিভ্রেষ ক্ষা ভয়া উক্ষিতঃ সিকং পদ্ম তুলাং বজুং বেবাং। অঞ্রাগ কলয়৷ প্রেমশোভরা বাচা গৃণতঃ স্তবন্ধ যথা কুপিতসাম্মলং নিয়ঃ শিতা সংপ্রো বা শিতরং অহমিব ভ্ঞং যুমান্ বা তৈরহমুপাক্কতো বশীক্তঃ ॥১১॥ ভত্তমামেহবসায়মভিপ্রায়ং অলক্ষমাণৌ অলানকৌ। যুম্দণরাধোচিতাং গভিং সদ্যঃ প্রাপা মংসমীপং ইভাং প্রাপ্ন ভাগে। ভদিতি স মেহপুরহং তমেবাহু বহুতয়ার্মিবাদঃ অচিরতঃ শীদ্রং করাভাং সম্পাদাতাং সমাপাভামিতি ॥ ১২ ৫

ক্রমসমর্ভঃ।

পুন: প্রাক্তানাং আহ্মণানাং ভক্তিং বিশিব্যাহ য ইতি। মরি বিভাষা ধী র (হ্মণভক্তিশকণা ভরা ভদমুসারিণোবেত্যর্থ: ॥১১ ভগবৎক্রণরা ভাবদেভৌ মমান্তিকং ইতাং আগ্রুভাং কিন্তু এতরে। ভূ তিয়োব্বিবাস: শীল্লং ক্র্যাভাং ভব্তিবি বৎ ওলো মহুং ভব্তামসূত্রহক্ষপদেব দুপ্তং বিনা তুম্ম সূধং ন ভাবিতি ভাব: ॥১২॥

क्षिविश्रमाधहक क्छी ।

বেজু কৃতা ডিক্রমানপি আহ্মণান্ প্রতিকুর্বনি প্রভাগে প্রতালাধিকং প্রসাদরভি তেখামহদেব বল ইন্তাছ বে মরি ধা ধী গুরা ভগবদ্টা। আহ্মণান্ কিশতঃ পক্ষণ ভাবমাণানপি অর্চনিগ্রঃ কটু জিভিরপি তুবাহ্দ।। অহুরাগকলয়া প্রেম বৈদ্ধীমধা বাণা আহ্মধন ক্শিতং পিডরং সংপ্রা ইব গৃণভাং পর্বমিদং ন ভাবধের কিন্তু পরমৃতিং রূপামৃত্যমেব বর্ষধেতি ভ্রম্যুং সংঘাধরভি হে খামিনং হে কুশাসিক্রবং ইড্যানি কোমলামন্ত্রেন প্রীণরভি অহ্মিব যুখান্ ভ্রুং বা তৈরহমুশাক্ষতে। বশীক্ষাঃ ১১ ॥

তরখাদেবং শুকর্র্থম অবসায়মভিপ্রায়ং অলকমাণে দৈবাদশশাভৌ ইতাং যুদ্দপরাধোচিতাং গভিং সদাঃ প্রাণ্য মং সমীশং ইতং পুনঃ প্রাপ্তামিতীয়ং মে প্রাপনিতি ভাবং নকু প্রভো ব্রাক্ষণভিক্রমিশে মদশরাধিন এবেতি প্রীম্থেন স্বয়মব ক্রমে তংক্ষং পুনরপি ওরোরেবং ভিক্সীতি তক্র সবৈবশামাহ তদস্প্রহো মে ইতি বলব্যান্তক্র ক্ষর বিজয়য়োর্থমান্ত্রহ এব ন্তু নিপ্রহ ইতি নহি স্বাভাবিকো ধর্মন্তাকুং শক্তে ইতি ভাবং। তস্বাং ভ্রমোর্জ্বায়ার্থিবাসং বিশিষ্টো মরা সহবাসং অচির্দেব ক্রতাং স্মধ্যে ভর্ত । ১২ ॥

' কিন্তু আক্ষণেরা পরুষ বচন প্রয়োগ করিলেও যে সকল ব্যক্তি তাঁহাদিগকে আমাতে যে প্রকার দৃষ্টি করিতে হয় তদ্রপ দৃষ্টি ভারা অর্থাৎ বাহ্দেব জ্ঞানে অর্জনা করেন এবং সম্ভুক্ত চিত্তে হাত্ত করিতে করিতে পুত্রবং সম্ভেছ বাক্য ভারা আসি যেমন তোমাদিগকে সম্ভোধন করি এই রূপে আহ্বান করেন আমি তাঁহাদের নিতান্ত বশবদ, অর্থাৎ বিপ্রভক্তি ভারা আমি তাঁহাদের বশীভূত্ব হইরা থাকি॥ >>॥

অতএব আমার এই সুইজন ভ্তা সীয় প্রভুর অভিপ্রায় অবগত না হইয়া তোঁমাদের নিকট জ্পরাধ করিয়াছে, ইহারা ঐ অপরাধের সমূচিত গতি সদ্যই প্রাপ্ত হইয়া পুনর্বার আমার সমিধানে আসিয়া উপস্থিত হউক। হে ঋষিগণ। তোমরা এই সুই অপরাধি ব্যক্তির এ স্থান হইতে এই হইয়া অভ্যন্ত বাস অচিরে সম্পন্ন করিলে তাহাই আমি যথেই অসুগ্রহ বোধ করিব ॥ ১২ ॥ অথ তভোশতীং দেবীম্যিক্ন্যাং স্ক্রস্বতীং। নাঝাদ্য সন্ত্রদক্ষানাং তেকামাত্মাপ্যভূপ্যত ॥ ১৩ ॥ সতীং ব্যাদায় শুণুন্তো লঘুীং শুর্ব্বর্থগহারাং। বিগাছাগাধগন্তীরাং ন বিভ্রুচ্চিকীর্ষিতং ॥ ১৪ ॥

अभवतामी।

উপতীং ক্মনীয়াং বিষয়ং দেনীং দ্যোত্মানাং। ধ্বিকুলাং ধ্বয়ে মন্ত্ৰঃ তৎ প্ৰবাহরণাং ধ্বিকুলবোগামিতি বা সর্মতীং বাচং আখাদ্য ত্রাধুর্যামমূভূর সর্পপ্রায়েণ মহানা দ্টানাম্পি ক্রোধ্বিবর্ব্যাপ্তানাং হি মনো র্সাম্ভ্রাভাবাৎ প্রিরভাবণ্মপি ন স্হতে তেবাত আখা মনো নাত্ণাৎ অলমিতি নামনাত ॥ ১০ ॥

সভীং শ্রেষ্ঠাং ব্যালার প্রসার্য্য কর্ণং লক্ষেতার্থঃ। লঘীং মিতাক্ষরাং গুরুতিরবৈর্গহররাং হ্প্রবেশাং অগাধামভিপ্রায়তঃ গন্ধীরা

क्ष्मिन्दः।

দেবীং প্রস্তাব্যুক্তাং ॥ ১০ ॥ স্তীং অকণ্টাং। শুরুরোহর্থ: প্রয়োজনং গৃহবর্মিব হুর্গমো যস্তাং ভাং। যভোহগাধগস্তীরাং। অসাধাং ভাবতো

बिवचना शहक बढ़ी ें।

সরশ্বতীং বাণীং নদীংচ। উল্ভীং কমনীরাং পক্ষে ব্যন্তাং দেবীং মুনীনাং বৃদ্ধা বিবিধবিত্র্কাদিনব্যা সহ জীড় জীং পক্ষো প্রায়ং ধাবীণাং কুলাং জলাশররপাং আখাদ্য মাধুর্যমন্ত্র মন্ত্যনা সর্পত্লোন দুটানাং কোধবিবব্যাপ্তানাং মনো রসাম্ভাবভিবত বাং ক্রিয়ালগদিল ন সহতে তেহান্ত আয়ালি বৃদ্ধিরলি মনোপি নাত্ত্যৎ অলমিতি নামগ্রত অয় তেহাং মহাম্তাপথেশি ব্যাহ্য সর্পবিষ্যানপগ্রহজ্ঞাপরাধ্যত ত্র্কার্থমের জ্ঞাপয়তি স্ত্যপি তাল্শে ভক্তাপরাধে যো ভগবচ্ছরণ ত্লসী গদ্ধাদি মাধুর্যান্ত্রং স্থালু ব্রাহ্মণাতি ক্রমানভ্য মন্ত্র্যার্জয় বিজয়রো বা তের্ কুলা তদমুর্গামিলা ভগবং কুপায়াং প্রভাবমের জ্ঞাপরতি। অভো বংলা বাং ভক্তাপরাধো না ভবিষ্যত্ত্বা ভক্তগ্রতাং কুপাপাত্রী ভূষানামেবাং শুদ্ধ দাল প্রেইম্বাক্রনিব্যত। তত্মাদপরাধ্যভাবভিত্ত ভ্রেইব্যান্ত্র । ব্রক্তং ভাবোপ্রভাব্যাহাতি ক্রম্বর্গোগর্ধতঃ। আভাস্তাঞ্চ শনকৈ ন্র্ন ক্রাতীয়তামণীতি ॥ ১০ গ্র

ব্যাদার কর্বে । প্রসাধা পৃশ্বঃ । সভীং সভ্যাং শোভনাঞ্চ লঘীং মিতাক্ষরাং । শুক্রভিরথৈ র্ম্বরাং ত্রপ্রেশাং অগাধাং অগ ম্যাভিপ্রারাং গৃষ্টীরাং ইর্মোধ বাহ্যাভ্রমার্থাং বিগাহ্য বিচার্যাপি কিমন্ত্রনাভিনন্দতি বা অন্তর্কুতং দণ্ডং ব্যবস্থাপয়তি সংকাচন্মভি বা নির্মান্ত বা আনান্ বাপরাধেন ব্যামান্ত ভ্রেটা বা প্রসাদাধিকোনেতি ভ্রিকৌর্বিতং ন বিতৃঃ আন্তাভিনন্দন পংকা ব্যাখ্যাত এব নিন্দাপক্ষ ভগৰদনভিল্নেলাপি বিভান্তির্ম্নিভিরান্ত্রনি সন্তাবিতত্বাৎ স্বস্থাতা দ্বাবেশালাকেবং ব্যাধ্যের ৷ ভ্রেটান্ত এব নিন্দাপক্ষ ভগৰদনভিল্নেলাপি মুনীন্ বং পরিচায়ন্তি ন্ম তেন মূলা মৎপার্থনবিশালিশপথ এতাবদ্ধি বলং বৃদ্ধে ইতি বাঞ্জিং। কদ্বীকৃত্য মাং ধ্বো বহ্মজাতাগতিক্রমমিন্তান্ত সনকাদাভিক্রমাৎ পূর্বং ভগৰৎ কদ্বনা ভাবাদিরং তের্ ভগৰতো ব্রেটাক্তিঃ নাং ধ্বো বহ্মজাতাগতিক্রমমিন্তান্ত সনকাদাভিক্রমাৎ পূর্বং ভগৰৎ কদ্বনা ভাবাদিরং তের্ ভগৰতো ব্রেটাক্তিঃ বিপর্বারে ভগৰতা প্রস্কৃত্রনা ব্রাহ্মজাতা বিপর্বারে ভগৰতা প্রস্কৃত্রনা স্বাহ্মজাতালিরিতি। আন্দনস্মতির্বাভিবিরাত ক্রাহ্মগাতিব ব্রাহ্ম্যান্তর ব্রাহ্ম্যান্তর ব্রাহ্ম্যান্তর ব্রাহ্মজাত ভাবঃ। ভিন্তিয়াক্তং মন্য ইতি ক্রবিজর্ঘারান্ত্রনে স্থীকারাৎ প্রেমান্ত্রাং ত্রাহ্ম্যাং ক্রেটাং ভ্রেটাং স্বাহ্ম্যাং ব্রাহ্ম্যান্তর ব্রাহ্ম্যান্তর ব্রাহ্ম্যান্তর ব্রাহ্ম্যান্তর ব্রাহ্মলাক্রমান্তর ভ্রাহ্মান্তর ভ্রাহ্মপানিত প্রর্বার ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মদাল্যার ব্রাহ্মপান্তর হ্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্মদান্তর ব্রাহ্মপান্তর ব্রাহ্

ত্রশা কহিলেন হে দেবগণ। ঐ ঋষি সকল যদিও বর্গ প্রায় ক্রোধে দফ ইইয়াছিলেন তথাপি ভগবানের ঐ প্রকার কমনীয় স্পোভন ঋষিকুল বোগ্য বাক্য আবণ করিয়া উাহাদের চিতে পরিভৃত্তি বোধ ইইল না অর্থাৎ ভাঁহারা এমত মলে করিলেন না যে আর আবণে প্রয়োজন নাই।। ১০॥

ফলতঃ তাঁহারা মনোনিবেশ পূর্বক কর্ন প্রসারণ করিয়া পরিমিতাক্তর অধচ গুরুতর অর্থে ত্রপ্র বেশ্ব এরং অর্থে ও অভিপ্রাহে কতীর সেই গুরধুর বাক্য প্রবশাসন্তর যদিও তাই। দিচার করিলেন তথাপি ভগবান কি আমাদিগকে অভিনক্ষনা করিতেছেন অধ্বা আমরা যে দণ্ড বিধান করিয়াছি

236

তে যোগশায়য়য়য় পায়মেঠানহোদয়ং। প্রোচ্: প্রাঞ্জলয়ো বিপ্রা: প্রান্ত কৃপিত ছট:॥ ১৫॥ শ্রীঋষয় উচ্:॥

श्रीधत्यामी ।

মর্থতঃ বিগাফ বিচার্যাপি, কিম্মানভিনন্দতি নিন্দতি বা। আহংকৃতং দুওং বা সংখ্যেরতীতি ন বিহু: ॥ ১৪ ঃ

ভতশ্চাভিনশতীতি আহা তে প্রস্থাং সম্ভঃ প্রোচ্: কুপিতা কুতিতা রোমাঞ্চিতা হর্গ বেবাং। কুপিতেতি পাঠে সংলাত-বোমক্পোক্তাা রোমাঞ্চিত্তমেবোক্তং। আরক্ক: আবিষ্কৃতঃ পারমেঠাত পরদৈশ্বীত মহেগদরঃ পরমোৎকর্বো বেন তং। অধি-রাজত্বমবিষ্কৃতা রাজ্পিকার্থং ব্যক্ষণালানরতীতি আহেত্যর্থঃ ৪,১৫ ॥

कथनमर्छः।

২ওলম্পর্শাং। গঞ্জীরামর্থতোহণি ত্রবগাহাঞ্জত তাং ঘ্রাশক্তি বিগাছ তৃথা অণি ভক্ত তর্তুমিটং যুদ্ধানিলীলালকণং তুন বিহুরেবেডার্থ: ॥ ১৪ ॥

তেৰামণি প্রাঞ্জনিভাগি মহাভকে হৈতু: যোগেতি। যোগমারা অরণশক্তিং। কৃণিতেতি পাঠে রোমম্বানামুজ্নতরা তদভরাবেরু বংজাতাঃ। কৃণবরিয়প্রদেশাঃ যত্র তাদৃশ ঘচঃ ॥ ১৫ ॥

श्चीविधनाथठकवळी ।

সেবদৈব কিং তক্ত চরণরেণ্ প্রজোহভূৎ ভবৈর কিং ভঞাবিলামলা: কতা: তয়ৈৰ কিং লক্ষীন্তং ন তাল্লভীতি হেছস্বাদিতি।
নাহং তথালীতাানৌ বৃষ্ণ প্রাক্ষণ ভোলন প্রিরাং কেবলং ভোলনীয়া এবেতি। প্রাক্ষণমূহণ ভূলে ইঙি থাতেলে ক্রিবালির বিতা ঘাসং চরত ইতি প্রেবেণ প্রাক্ষণঃ থলু গৌরিবালর বীরশ্চার বীয়ঃ পশুবুজিঘাজের মজতেন গৌরবেণ হার।তি নতু বৃষা ভির্মাণ ভাগেণ বিতা ঘাসং চরত ইতি প্রেবেণ প্রাক্ষণঃ থলু গৌরিবালর বীরশ্চার বিতা বিতা বিতা বাজন পদর লো ধারণাদের বোলমার ইয়েখবাং তথা ত্যাদের হেতার্মজরণোলকং সর্জ্জগহণাবনী গলেতি গৌরবমুশহাস এব ক্ষণিত হুছতীর্মাধীয়া ইতি গোরাক্ষণযোজেলো নাতি হুয়োবের স্বজ্বশালিতি পুনর পি হাস এব। বে রাক্ষণানিতি প্রাক্ষণনাং খলু ক্রোধা উৎপত্তিক এব ধর্মান্ত ভালাত হসত্ব এবেতি সহিষ্কৃতা স্থা মত্তক্তে এব মন্ত্রা দত্তেতি তথৈ বাহং বলীক্ষতা ভানিতি কর্মবিজার সহিষ্কৃতারাঃ সংগ্রাহালমান ত্রোলাসীনাং আভ্রতঃ শাংপাপি বং প্রাভ্রতঃ সন্ত্রাপ্ত বৈর প্রাভির্বিয়নত এবাস্করীরে মহিমানালীলাভাবিহি হ্র্লাসসং কোশাং ক্রিবেলটারা অপি বৈক্লাং প্রভাত মহ স্বরূপ চক্রেলতঃ সন্তর্গান ক্রিবিয়ন বিলয়েল বিলয়ে

এবং নিক্ষাভিনন্দনরোহ রোরণি পক্ষােঃ প্রাবসামে কতর্মিন্ ভগবদাভিনত। বিপ্রাভিতি চিরং বিম্ব্যাভিনন্দনমের নিশ্চিত্য জ্বাক্ত আছু তে ইতি। বোরমারা ক্রশশিক্তি তরা আর্মমনাদিত এব বিভারিতং পারমের্টাং পারমের্থাং মহার্থমর্শ বক্ত তং । তত্মাল্যানিবিন মহামহৈর্থাপানেন প্রভূমা ক্লাল্রোধেন ভতিগর্তা নিন্দা কর্বা। যদি বহং বঙ্যাএব ভবিবাদ তদা বিপ্রাইনে মহক্তাপরাধীনো নরকে নিপতান্তামিতি প্রকটমেবাবক্ষাদিতি বিবিচা কুপিতা ক্লুভিতা রোমাঞ্চিতা স্বপ্রাইবিধ ক্রিটিমেবাবক্ষাদিতি বিবিচা কুপিতা ক্লুভিতা রোমাঞ্চিতা স্বপ্রাইবিধ ক্রিটিমেবাবক্ষাদিতি বিবিচা কুপিতা ক্লুভিতা রোমাঞ্চিতা স্বপ্রাইবিধ ক্রিটিমেবাবক্ষাদিতি বিবিচা কুপিতা ক্লুভিতা রোমাঞ্চিতা স্বপ্রাইবিধ ক্রিটিমেবাবেলার ১৯ ৪

তাহারই কি সংখ্যে করিতেছেন কিন্তা আমাদিগকেই বা অপরাধে নিঃকেপ করিতেছেন, ইইার কি করিতে বাসনা কিছুই বুকিতে পারিলেম না ॥ ১৪ ॥

খনস্তর ঋষিদিশের নেন বোধ ক্ইন আবালের কথায় ভগৰান্ আনল প্রকাশ করিতেছেন অতএব আহ্লাদে পুলকিত ক্ইলা কৃতাঞ্জলি পুটে বোলমায়া বারা পরমৈশুর্ব্যের পরম উৎকর্ষ প্রকাশক সেই ভগৰান্তে কহিতে লাগিলেন ম ১৫ ম ন ব্যাং ভগৰন্ বিল্ম স্তব দেব চিহ্নী-বিত'। কুতো নেহ্মুগ্রহশ্চেতি যদধ্যক্ষঃ প্রভাদদে ॥ ১৬ ॥ প্রক্ষাপ্ত পরং দৈবং প্রাক্ষাণাঃ কিল তে প্রভো। বিপ্রাণাং দেবদেবানাং ভগবানাস্থাদৈবতং ॥১৭॥ স্বন্ধ: দনাতনো ধর্মো। রক্ষাতে তমুভিস্তব। ধর্মদ্য প্রমো গুছে। নির্বিকারো ভবামতঃ ॥ ১৮॥

बी भद्रश्वामी ।

অধ্যক্ষাং সর্কেখিরং সন্ তরিজ্ঞাল্পকু বং মনা ইত্যক্র ময়।পরাধা কৃত ইতি। তথা তলস্থাকো মে ইত্যাদি বচনেন মনাস্থাহ-েশ্চতি বং প্রভাষ্যে তেন ব্রুকেকী বিভং ভর বিল্ল: ॥ ১৬ ॥

কিলেভি লোকশিকার্থনং স্টিভং। প্রমার্থমান্তঃ বিপ্রাণামিভি দ্বেদেবানাং দেবপ্জ্যানামপি ভগবান্ স্বং আত্মাচ দৈবভঞ্⊪১৭ লোকশিকার্থভা প্রপঞ্চঃ স্বত ইভাইভিঃ। ধর্মস্বত্ব এব ভবভি বক্ষাভেচ স্বৰভাবৈঃ প্রমঃ ফলরূপঃ স্বভএব শুস্থো গোপাঃ।

क्रममक्र ।

ন বয়ষিতি। অয়মর্থ: অনয়ে। বৈক্ঠদেবকয়ো র্বাক্ষণাবজ্ঞান সম্ভবতি অত্মাকঞ্চ ব্রহ্মনিষ্ঠানাং সামানাত এব কোণো ন সম্ভবতি বিশেবতো ভগবস্তকারাগতানাং পার্বদেব ইতি ভবৈব চিকীর্ষিতঃ ন বিল্ল:। ধেন তত্তদঘটনীয়ং ঘটিতং। তত্ত হেত্ঃ অধ্যক্ষঃ। অত্তর্জনির্দি সর্কেশরছেন সর্ক্মন্যথা কর্ত্ব্যুগ্রহণ। যদিবাত্মাকমেব দোষঃ তাৎ ভদধাক্ষেণ অয়া পূর্ক্মেবৈতয়ো রত্মাকঞ্চান্তঃকরণং ভভত্তত ঔষ্ণত্তা অপ্রিয়মেবতৎ তাদিতি। অয়ঞ্চ নিজাভীইসিদ্বিশ্বোভিপ্রেভেত্যাই। যদ্যকাৎ মে মহ্মমুগ্রহত কৃত্ত উত্তি প্রভাবের ॥ ১৬ ॥

যচোকাং বস্তামৃতেত্যাদিনা তত্ত্বাহ:। ব্ৰহ্মণাক্তেতি। কিলশপে। ফ্ৰন্তে। তচ্চান্তথাপ্যাপনং। ডচেহ লোকশিক্ষার্থ-মেৰেতি তথা ভৈর্ম্মাধ্যাক্তং। ভত্তচ ব্রাহ্মণশ্রেতি বদাপি সৌশীলোনেব তাদৃশগুণতা ভণাপি লোকশিক্ষার্থমণি করাত ইতি ভাষং অভএব ব্রাহ্মণত্বেনবাত্মাকং দৈবভত্তং সাধাতে তব তু দৈবতত্বং অর্পেণৈবেতি বিবক্ষিতং। ১৭।১৮।

श्रीविषनाथहळ वडी ।

তবেবং জাততত। অপি তদভিপ্রারং তর্থাদেব খোতুং পুন: প্রশ্নত্রিষ্টাই। ন বয়মিতি চীকর্বিতং অফ্এহং নিগ্রহং বেতার্বঃ। বলবাদধাকাং সর্বেধরং স্রমান্ প্রভাপি কতো মেহস্প্রহো যুমাভিরিতি ভাবদে ওদসংভাবাদাদারি জিতুক্বেব প্রথমম্পহসসি কিয়া ব্রহ্মণাডাং অরতধর্ম প্রবর্তনার্থ মমানক্তিস্ক্রেব বাতাবমেব তৌৰীতি ছচিকীর্বিতং জ্ঞাত্মসমর্থান জ্ঞানমান্ আবিশ্বারং জ্ঞাণ্যেতি ধ্বনিঃ ১৬ ঃ

ঊষুধ্বাকাানাং ছ্জের্মখং প্রণক্ষরত আন্তঃ। এফাগাল তব অন্ধাহেইনৰ আন্ধাহিন্বং নতু স্বভাবত ইতার্থঃ। দেব দেবানাং দেবপুল্যানামপি ভগবাংত্তমেবাত্মনা স্বভাবেইনৰ দৈবতমিতি তইবৰ দৈবতত্বং বাত্মবং নতু আন্ধানাং শ্লেবেণাত্মা দৈব-তক্ষেতি তাং বিনা তে মুক্তবাঞ্জ বিদ্যালয় চ্বণপত্মং পবিজ্ঞান্ত্ৰীক চাদি মনুবে তৎ কিং স্থিদিতি ভাবঃ । ১৭ ।

কিঞাহস্তীয়মাণেন ধর্মেণৈৰ লোকাঃ পূজা ভবতি। সচ ধর্মকৃত্তিকাকণ এব ন বর্ণাশ্রমনিঠঃ। ভঞ্চ ধর্মা ছত্তাএব প্রবর্ত্তবাতীতি ঘত্তকা ব্রাহ্মণেভ্যোপি শ্রেঠা ইত্যাতঃ। ছতঃ প্রাচ্ছ্ তো ভক্তিককণঃ সনাতবো ধর্মা দৃষ্টিঃ সভাং দর্শনেহল ভবত্ত

প্রভো! আপনি সর্বেশ্বর হইয়া এই ষে কহিতেছেন "আমার ভূত্যেরা যে অপরাধ করিয়াছে তাহা আমারই করা হইয়াছে এবং এই ফুইজনের বৈক্ঠ হইতে ভ্রফী করিয়া অভ্যত্ত বাস অচিরে সম্পন্ন করিলে আমি যথেই অসুগ্রহ বোধ করিব" এ সকল কথায় আপনকার কি করিতে অভিলাষ তাহা আমাদের বোধ গমা হইতেছে না॥ ১৬॥

প্রভো! তুমি ব্রহ্মণ্য অর্থাৎ ব্রাহ্মণহিতকারী ইহাতে ব্রাহ্মণগণ তোমার প্রম দেরতা সত্য, কিন্ত বস্তুত: ব্রাহ্মণ সকল দেবপুদ্য হইলেও তুমি তাঁহাদের স্বাস্থা এবং তুমিই তাঁহাদের দেবতা॥ ১৭॥

প্রভো! তোমা হইতে সনাজন ধর্ম উৎপদ্ধ হইয়াছে এবং তোমারই অবভার সকল বারা ভাহা রক্ষিত হইতেছে, আর তুমিই ঐ ধর্মের পরম গোপ্যফল অর্ধাৎ ভাহা নির্বিকার স্বর্গাদি কলের তুল্য তরন্তি হাজনা মৃত্যুং নির্ত্তা যদস্থাহাৎ। যোগিন: দ ভবান কিং বিদমুগৃহেত যৎপরে: ॥১৯॥ যং বৈ বিভৃতিরূপযাত্যমুবেলমজৈরর্থার্থিভি: স্বশিরদা ধৃতপাদরেণু:।
ধ্যাপিতান্তি তুলদী নব দাম ধালো লোকং মধ্বতপতেরিব কামযানা ॥ ২০ ॥
যস্তাং বিবিক্ত চরিতৈরসুবর্তমানাং নাত্যান্তিয়ৎ পরম ভাগবতপ্রদঙ্গঃ।

্রীধবভাগী।

নচ স্বৰ্গাদি ফলবদ্বিকারী কিন্তু নির্ব্বিকারো মতঃ অভ এবজুত্বা তব ইদং লোকশিক্ষামাত্রমিতি ভাবঃ । ১৮ ॥

বিপরীত খেদ্মিত। হিং তর্মীতি যস। সূত্রহাদের নির্ভাঃ বিরক্তা বোপিনশ্চ সন্তঃ মৃত্যুং তরন্তি স তবান্ পরৈরস্গৃংছতেতি মং তং কিং বিং ন কিঞ্দিত। ধঃ । ১৯ ।

যচ্চোক্তং বংসেবরা চরণপদ্ম পৰিএবেগুং সদ্যা ক্ষতাথিক মকং প্রতিক্রনীক্ষিত্যাদি তদত্যক্তমসম্ভাবিভমিত্যাহ: ছাডাাং। বং বৈ বিভৃতি ক্লী: অফুবেলং অবসরে অবসরে উপবাতি সেবতে। ধৃতঃ পাদরেগুর্বস্যাঃ। ধঠৈতঃ স্কুক্তিভিরপিতং অভ্যোষ্ট্রক্র্যা নবং দাম মালা ভদ্ধাম স্থানং বসা তস্য মধুব্রতপতেঃ ব্রমর মুধাত কোকং স্থানমন্তিশুং কাময়মানেব ॥ ২০ ॥

বিবিক্ত চরিতৈঃ বিশুলৈঃ পরিচরলৈঃ অনুবর্ত্তমানাং দেবমানামণি যে। নাত্যাদ্রিয়ৎ নাতীবাদৃতবান্। স এবস্কৃতবং। অসং

ক্রমসন্দর্ভ:।

তরস্তীতি বদমুগ্রহাৎ ডৎ কিং বিৎ তত্ত্তর্কাতীতমিতার্থ: । ১৯ ।

যমিতি। অত চ পূর্ববজ্ঞগার বিকারিণার লক্ষ্মী: ন তুসা তৎপ্রেরসী বৈকুঠলক্ষ্মী: অস্যা: পরমভাগবত শিরোমণিছাং। উপঘাতি আরাধন্তি। লোকং বিষয়ং। বৈকুঠকীটবিশেষস্যাণি বিষয়ং কামন্নমানেতি তস্যা বৈকুঠলক্ষ্মীতোহতিন্যুদ্ধং দশিতং। ইবেতি অবিষয়ে অগতি বৈরাগ্যাভাবেছণি দশিতঃ । ২০ ॥

অতঃ পুতচরিতৈঃ পরিচরস্তীমণি নাত্যাজিরং তলোকসালানাৎ অগতি মৃত্য তাপনাচ । পরমো নিছামঃ। অত টীকারা-

अविधनाशहळवर्शी।

ন্নামিতি দৃট্যা তব তল্ভিউকৈ রক্ষাতে সর্বাত প্রথবিনাধিত্যথ:। তজচ ধর্মজ পরম: ফলরপ: নচ পর্গাদিফলবিহিকারী কিছ নির্বিকার: ভবানেৰ মত: বংপ্রাপ্তিরেৰ বস্তুক্তে: ফলমিতার্থ:। অত সনাতন নির্বিকারণদাভামনো। ধর্মো ন ব্যাধ্যাত: ॥১৮॥ তেল্পি ব্যাহ্মণেযুমধ্যে প্রবৃত্তিনিঠেভো। নির্ভা: শ্রেষ্ঠা জেভো।পি বোগিন জেপি বদস্পাহাম্মৃত্যং ভর্ভি স ভবান্ যংপট্র-

রনৈারমুগৃভ্তে তৎ কিং খিদিতি প্রশ্নে। বিশ্বরাধিকোন । ১৯ ॥

যচ্চোক্রং বং দেবরা চরণপল্পবিত্রবেশুং সদাঃ ক্ষতাধিল্যলং প্রতিলক্ষ্মীলং। ন শ্রীবিরক্তমণি মাং বিক্রাতীতি তদপাসভবতা দিতি ত্জের্মিত্যাত্র্ভািং যং বাং বিভৃতিঃ সম্পতিরূপা লক্ষ্মী ক্ষুবেলং অবসরে অবসরে উপবাতি সেবতে বৃতঃ পাদরেণ্ র্সাাঃ সাধনৈ উক্তের্পিতং অভ্যো যতুলস্যা নবদাম ততৈবে ধাম ঐম্বর্যং বস্তু ভস্ত মধুব্রতপতে প্রমিরমুধ্যস্ত লোক্ষ্মিল্যুং কাম-রুমানা ইব ত্ৎকান্তাপি তৃত্তকৈবেতার্থঃ ॥ ২০॥

विविक हितरे छर्बि छरेब: পর हितरेश: नांछा जियर नांछी वान्छवान् अवाछि मस्यन भन्नी रवरेनव नाजियछ छक्षांश्यमपाजिय-

বিকারী নহে। অতএব তুমি এই প্রকার হইয়া যে ভাক্ষণদিগের প্রতি ঐ রূপ আচরণ কর, উহা কেবল লোক শিক্ষার্থ মাত্র॥ ১৮॥

প্রভো! তোমার অসুগ্রহ মাত্র লোক সকল বৈরাগ্য বৃক্ত ও যোগী হইয়া মৃত্যু হইতে পরিত্রাণ পায়, তুমি এবিষণ পুরুষ, তোমাকে অয়ে অসুগ্রহ করিবে এ কি কথা হইল ?॥ ১৯॥

হে ভগবন্! অস্থান্ত অর্থার্থী পুরুষ স্থান সভক দ্বারা বাঁহার পাদরেণুধারণ করে, সেই সম্পতি রূপা কমলা তোমাকে অবসরে অবসরে সেবা করিয়া থাকেন। প্রভো! ঐ বিষয়ে লক্ষীর আগ্রহ দেখিয়া এই রূপ ভাব বোধ হয়, স্কুভিশানী পুরুষ তোমার চর্গ মুগলে যে নবীন তুলদী দাম সমর্পণ করেন তাহাই বাঁহার আপ্রেয় স্থান এমত প্রধান জমরের স্থান বেন তিনি কামনা করিতেছেন ॥ ২০ ॥

প্রভো! কমলা যে ঐ রূপে ভোমার পরিচর্ম্যা করেন ভাছার ভাৎপর্য্য এই, তিনি মনে করেন ইনি

স হং বিজামুপথপুণারজঃ পুনীতঃ শ্রীবংসলক্ষা কিমগা ভগভাজনত্বং । ২১ । ধর্মদা তে ভগবত স্থিয় বিভিঃ ধৈঃ পদ্ধিশ্চরাচরমিদং বিজ্ঞাদেবতার্থং ।

क्रिवद्यामी।

ভাব: ইখং নামাতি লপ্টতরা লক্ষ্মী স্থাং সেবতে কবং এবং হি সা মেনে। অরং হি সারগ্রাহী মধুবত শক্ষলশ্চ সচালিবু প্তায়াং তুলভাং সপরিবারো নিশ্চলং সংরমছে। অতোহলিবু লাবণামভাধিকং ভাং। ততোহং বক্ষসি হিতাপি। বোগিজনাদি বহু সেবক সভ্য সভ্যবিদ্ধী কৃত্যাপি ভূলভা সহ সাপড়োমাপি চরণো সেবিবো ইভি। তদেবমোংস্কোনাম্বর্জমানামপি তাং স্থং নাজীবাজিরসে। যতঃ পরম ভাগবতেবের প্রকৃত্ত সক্ষবান্। স এব পরম সৌহাগানিধি স্থং মতো আদ্ধাপ্রসাদাং মাং শ্রীন বিজ্বতীতালভা লাভবেন নির্দেশান সমস্ত্রস্বাইত। কিঞ্জ সভএব স্থং ভগভালনং ভলনীরানাং ভণানামাশ্রয়। পরম ভ্রমণ ভং স্থাং বিজ্ঞানামন্ত্রপথং পবি পথি লগ্ধং যথ পুণাং রলঃ তথা শ্রীবংসলক্ষ্মত পুনীতঃ পৰিত্রী কুক্ষতঃ কিং কিমর্থক তে উত্তে অগাঃ প্রাপ্তঃ ভূষণ্যেম স্বীকৃতবানসি। অতো যথ সেবয়েত্যাদি বচনং লোকসংগ্রহমাত্রমিত্যর্থঃ ৪২১ ॥

ধর্ম মৃত্তেন্ত তবেণমূচিতমেবেত্যাহ: ধর্মতেতি তিভি:। তিবে ব বুগেল।বির্জবতীতি তিবুগ:। বলা ত্রীণি যুগানি যুগল।নি বড়্গুণা: ভগৰজ্জে বাচ্যা: সম্ভাজেতি তিবুগ: হে তিবুগ ধর্মরপত তব তিভি: পজি: বৈর্সাধারণৈ: তপ: শৌচ দ্যাদিভি: সত্যক্ত ধর্ম বিপ্লবেপি কলাবস্থবর্জমানতাৎ তিভিরিত্যক্ত:। ভ্তং পালিতং কিং কথা নোহ্যাকং বর্দরা সভান তহুবা তরা

ক্রমগন্ধর্ভ।

মেক্ষেৰ কিং পদমুভয়থোভয়ত্ত বোজিতং ছাকৈক্ছাপি ত্রহ্মবদিতি ন্যায়েন ॥ ২১ ॥

অথ নির্মেণাভারতবর্ষস্থিততত্ত্বলৰ গৃষভাবাবিউদাধারণবিতাবল্মান্যভয়া সদৈন্যমাছ: বিভি: পভিরিতি। একশেষোধন্ধ:। একৈকপদক্ত বিভিক্তিভিরংশৈরিতার্থ:। বিষুণ্থাৎ কলো তদাবিভাষাভাষেন চতুর্গচতুর্থাংশমাব্রক্ত স্থিতাং। তত্ত তেষাং

श्रीविश्वनाशहक्तवर्धी ।

তৈব। যতঃ প্রমন্তাগ্বতেষেব প্রকৃত্তীঃ সদ্ধাস্তিক্ষিত সং। সুষ্ণ লক্ষ্যা সদৈবাপেক্ষমণোপি তত্যাং নিরপেক্ষাপি বাজ্ঞণ প্রসাদাদেব মাং শ্রীদ দ্বাতীতি বদ্জবে তৎ কিং বিদিতি ভাবং। তথা বিজ্ঞানামস্পথং পথি পথি লগ্ধং যং পুণাং রজঃ তথা শ্রীবংসলক্ষ্যতিক জ্বপাঃ প্রাপ্তবাদিসি কিং তত্ত এব হেতোজং ভগভাজনঃ ষ্টেড্খগ্যবানত্য তথা পুনীতঃ তে এব পুণারজঃ শ্রীবংস লক্ষ্যী স্বাং পবিত্তীকুক্ত এতৎ সর্কাং হুজেরিং কিং বিদিত্যর্থঃ ১২১॥

কিঞ বিপ্রাবয়মিতঃ পূর্বাং দত্তঃ পরাভবং নৈব প্রাপ্তা ইডাাছঃ ধর্মছেতি ত্রিবেব যুগেরু ম্পষ্ট আবিভবনীতি হে ত্রিযুগ। যহ। জীপি যুগলানি বড় খুণাঃ ভগবছক বাচাাঃ সভতেতি ত্রিযুগা ত্রিভিন্তপঃ শৌচ দয়াদিভিঃ হৈ অসাধারণৈঃ পদ্ধিঃ ইনং বিখং ভ্

অতি সার্থাহী ভ্রম স্থরণ অথচ অতি চঞ্চল, কিন্তু যে ব্যক্তি ইহাঁর পদাবনত হয় তাহার প্রতি অধিক আছা করেন, অতএব চরণ বিলগ্ন তুলসীতে হৃষ্টির হৃইয়া ক্রীড়া করিয়া থাকেন, তাহাতেই ইহাঁর চরণের অভিশয় শোভা, আমি বক্ষঃছলে আছি যটে, কিন্তু এখানে থাকিয়া কি লাভ ? চরণে যাই, তুলসীর সহিত তাঁহারই আরাখনা করিব। হে ভগবন্! কমলা ঐ প্রকার ঐংহ্কা সহকারে বিশুদ্ধ পরিচর্ব্যা ছারা তোমার সেবা করিলৈও তুমি তাঁহার প্রতি সাতিশয় আদর প্রকাশ কর না, কেননা ভগবছকে জনেতেই তোমার সমাক্ সমাদর, তুমি এবশ্বিধ এবং স্বয়ং ভক্তনীয় গুণের ভাজন, তোমাকে কি বিপ্রগণের বৃদ্ধা ধূলি, তথা শ্রীবংস চিত্র পবিত্রীকৃত করে ? কেন ঐ ছুই ক্রব্যকে ভূষণ বলিয়া ধারণ করিয়াছ ? ফলতঃ ঐ ছুইয়ে তোমার প্রয়োজন নাই, তবে যে পূর্বের বলিলে ভ্রাহ্মণদিণের সেবায় আমার ঐশ্ব্যা ইত্যাদি, তাহা কেবল লোকশিক্ষার্থ ॥ ২১ ॥ °

হে ভগবন্! ভূমি ত্রিযুগ অর্থাৎ যুগত্তয়েই আবিভূতি হইয়া থাক এবং ধর্ম অরূপ, ভোমার অসা-ধারণ তপদ্যা, পৌচ ও দয়া রূপ তিন্টা চরণ, তাহাই আমাদের প্রতি বরদায়িনী সত্ত মূর্ত্তি ঘারা অ অ নৃনং ভূতং তদভিঘাতি রক্সনশ্চ সংখন নো বরদরা তকুবা নিরস্য ॥ ২২ ॥
ন খং বিজ্ঞানকুলং যদিহাস্থাপং গোপ্তান্ত্রস্ত্র্ণেন সস্নৃতেন ।
তত্ত্বি নজ্যাতি শিবস্তব দেব পদ্ধা লোকো গ্রহীষ্যদৃষ্ভস্য হি তৎ প্রমাণং ॥ ২০ ॥
তত্ত্বেভীকীমিব সন্থ নিধে বিধিৎসোঃ ক্ষেমং জনার নিজ্পক্তিভিক্ষ তারেঃ ।

श्रीभद्रशामी।

স্থমূৰ্ত্তা। তদভিষাতি তেবাং পাদানামভিষাতকং রজত ওমত নির্ভ নিরাফ্তা ছিলানাং দেবতানাঞ্প্রয়োজনার ন্নং ভূতং। বছা হি লোপে ক্লপং নিরভেতি অভাকং ভরিবর্তির্ভূয়ে ॥ ২২ ॥

আৰুগোপং ত্ৰৈৰ ৰক্ষীৰং বিজোজমানাং কুলং বলি হ ক্টং তংন গোপ্তা ৰক্ষিতা। তৃণপ্ৰতাৰাক্তৰাৎ ন ষ্টাপ্ৰয়োগঃ। বৃধঃ শ্ৰেষ্ঠঃ হে দেব পছা বেদমাৰ্গো নক্ষাতি নাশং ৰাজতি। অধ্যত শ্ৰেষ্ঠকা। হি ৰাখাদ্ৰণিং সহন্তক্ষ অঞ্চীব্যং। তহ্কং। গীতাত্ম্ যদ্যদা চৰ্বতি শ্ৰেষ্ঠ তত্তদেবেত্বো জানঃ। সুষ্ধ প্ৰমাণং কুকাতে লোককাদ্যুৰ্কতি ইতি । ২০॥

নশ্যথিতি চেত্ৰআছে:। অংৰদমাৰ্থ নশনমন্তী ইমিবেতি লোকোক্তিঃ স্ত্ৰনিধিত্বাৎ জনার কেমং বিধাত্মিছো:। অতএব নিজ শক্তিভি: রাজাদিভিক্তংশাটিত ধর্মপ্রতিপক্ষ অভত্তৰ অশ্বকুলেছ্বন্ডিযুঁ কৈব। নতুমহতোছ্রেছ্বন্তি তেলো হানিক্রী

क्रयममर्खः।

কালেন ক্রমশো নখাতামণি তদাবির্ভাবেনৈর চমুহঃ পুরণাত্তিতিরিত্যক্তং। অতোহতীই প্রদানায় তথা আর্তা। সবেন সহ তৎপদত্তরাব্যাতকং রল অমশ্চ নেহিমাকং নিরাক্ক। বৈঃ পার্বদানাং নিগ্রহাস্প্রহাদে প্রবর্তিতা মঃ তান্ গুণান্ নিজভন্থ-তেজসা স্থমপুনক্তবান্ কুর্বিতার্থ: ॥ ২২ ॥

তৎ প্রমাণং মধ্বেতি যোজ্যং । ২০ ॥

সত্ত নিধিঃ শেবধিমপোৰ অল। তেজসঃ অক্তৰে বেজুং বিশ্বতর্ত্বিভি। অপরিছেন্য তেলভাদিতি ভাব:। তাল্শ-

व्यविभागां भड़क्त वर्षी ।

পালিতং সত্যক্ত ধর্মবিপ্লবৈতি কলাবহুবর্ত্তমানস্বান্তিভি রিত্যুক্তং হিজ্ঞাবে হার্থং হিজ্ঞানাং দেবতানাঞ্চ প্রয়েজনাথ্য নৃনং ভ্তং কিং কর্মা নেহিলাকং বরদায়িতা তহুবা তবা তদভিমাতি তেবাং পাদানামভিমাতকং রলম্বন্ধ সংস্থানে নির্ভ্ত হংহ ভলাদধুনাপাশাহ্ম ভবামুগ্রহ এবায়ং নহু নিগ্রহ ইতি নিশ্চিত্য সমাধ্যিন ইত্যাহং। হিজোক্তমানাং কুলং আত্মগোপং হুয়ের বক্ষনীয়ং হং যদি স্পষ্টং ন গোণ্ডা নাগোপায়িবাং। বুবো ধর্মারণং লেটো বা তহি হৈ দেব পদ্ধাং বেদমার্গো নজ্জাতি অনজ্জাও অবভ্যাহ হি যন্থাৎ ভদনহর্শিং অস্ত্রহুক্ত অগ্রহীয়ং। তত্ত্তং গীতাক্ত্ব। যাবদাচরতি শ্রেইভড্তেদেবেতরো জনঃ। স্বং প্রমাণ্য কুক্তে লোকভদ্যুবর্ত্তে ইতি। অতোহ্যাপ্র্যটমানম্পি তৎসেবরেভাগি তহুচো লোকশিকার্থমেবেত্যভিপ্রায়ঃ। ২৩ ।

নত্ন শাতু পন্থা গুলাহা। তৎ বেদমার্গনশনং ইবেজি লোকোজিং। জনাছেতি ক্রিয়া সংপ্রদানং ক্রিয়াগ্রহণমণি কর্তব্যং ষষ্ঠার্থে চতুর্থীবা অভেএব নিজ্পাক্তিভিলেনিক রাজাদিভিকংপাটিত ধর্মদা প্রতিপক্ষ্যা নত্নতাপ প্রমোৎকৃষ্ট্র নিক্টেছবনতি

অভিবাতক রজন্তম নিরাকরণ পূর্বক দেব দিজ প্রয়োজনার্থ এই চরাচর পালন করিতেছ। ২২।

অত এব বিজ্ঞান্ত মদিলের কুল তোমারই রক্ষীয়, তুমি ব্যক্ত রূপে অর্চনাও হ্মধুর বচন ছারা তাঁহাদের মদি রক্ষা না কর তবে তোমারই মঙ্গল স্বরূপ বেদবর্ত্তা একেবারেই বিনফী হইবে, কেন না লোকে প্রধান ব্যক্তিরই আচরণ গ্রহণ করিয়া থাকে, তুমি যদি আঙ্গল কুলের আদর না কর তবে তোমার দুফীস্তান্ত্র লোক সকলও ছিলকুলের পূজা ও সমাদর করিবে না॥ ২০॥

প্রতা! বেদমার্গ বিনক্ত করা তোমার অভিপ্রেত নয়, যে হেতু তুমি সন্ত্তণের নিধি এবং লোক-দের কল্যাণ্ট বিধান করিতে ইচ্ছা করিয়া থাক, এ নিবিত্ত আপনার শক্তি করপ রাজাদি ঘারা ধর্ম প্রতিপক্ষ সকলকে সমূলে উৎপাটন করিয়া থাক, অতএব আক্ষাকুলে:অবনত হওয়া তোমার উপযুক্ত নৈতাবতা ত্র্যধিপতের্বত বিশ্বভির্ত্ত্তেজঃ ক্ষতং তব ন তদ্য দ তে বিনোদঃ ॥ ২৪ ॥
যং বা নয়ো দ্মমধীশ ভবান্ বিধতে বৃত্তিং মু বা তদমুমশাহি নির্ব্যালীকং।
অগ্যাহ্ম বা উপচিতো প্রিয়তাং দ দতো ধেনাগদে বয়মযুজ্জহি কিছিমেণ ॥ ২৫ ॥
জীভগবাসুবাচ ॥

এতে। হুরেতরগতিং প্রতিপদ্য সদ্য: সংরম্ভ সম্ভূত সমাধ্যসুবদ্ধবোগে।।

Buanin

ততাহ:। এতাৰতাত্ধৰ্মতাণ প্ৰয়োজনেন অবন্তশান্মনং ক্তত্তে তাৰ তেজঃ প্ৰভাবঃ নৃক্তং ন কীণং যতঃ সুন্মনাদি তে বিনোদঃ । ২৪ ॥

শাপাগ্রহং পরিত্যক্তা বিজ্ঞাপরন্তি। বং বা অন্যং দণ্ডং বিধাসাতি ভবান বৃত্তিং হু অধিকাং জীবিকাং বা তৎসর্কমহুমক্তা-মহে। বে বন্ধং নিরপরাধাবেতৌ কিবিবেশ শাপেনাযুজ্জাহি যোজিতবস্তঃ ॥ ২৫ ॥

মংকারিতস্বাচ্ছাপদা মুম্মাকং নাপরাধঃ ইত্যামাসমূলার এতৌ সদাঃ এব অস্ত্র বোনিং প্রাপাত ভূয়ো মংসমীপ মাগ-

ক্রমসন্দর্ভ:

স্যাবনমনাদৌ হেতু: বিনোদ ইতি। অধ্যম ইতার্থ:। স্বনিধিখাদিতি ভাব: ॥ ২৪ ॥

অত্র প্রীভগৰতঃ কিমপি চিকীর্ষিত্রমের কারণং নিশ্চিত্তাাতঃ বং বেতি। পুনঃ স্বাপরাধ্যের নিশ্চিত্তাতঃ অস্থাস্থিতি ॥ ২৫ ॥ তত্ত্ব তেবাং তয়োশ্চ চিত্রপ্রসক্তৌ স্বচিকীর্ষিত্রের কারণমাত্ত এতারিতি । গতিশেষ্টা অফুকরণমিতি বাবৎ । পূর্ব

बैविश्वनाथठक वर्छी ।

ন্তেজোহানিকরী তত্তাহ: নৈতাবভেতি। এতাবভাতু ধর্মআণ প্রয়োজনেন অবনত্ব্য নমনং ক্লতবভত্তব তেজঃ প্রভাবঃ ন ক্ষতঃ ন ক্ষীণং। ৰতঃ স নমনাদিত্তে বিনোদঃ কৌতুকবিশেষ এব ॥ ২৪ ॥

বস্ত ভস্ত ত্রবগাহাভিপ্রারং দাং কারমনোবাকৈ রবনতা বর্মিদং নিবেদরাম ইত্যাহ:। বং বা দমং দশুং ব্রহ্মণাত্তিথা ভক্ত বৎসলতাহ বিং বাং অধিকাং জীবিকাং বা ভবান বিধতে তৎসর্কাল্মন্যামহে অক্তল্পেনৈর প্রভাত তাং বিধেহি। অক্সতেহিভিশাণ স্ত রসাতলং গছেছিতি ভাব:। পুন্দ্র সভ্যাশ্রকল্পমাহ:। অক্যাত্তি যে বরং নিরপরাধাবেতে কিবিবেশ শাপেনাযুজ্জাহি ভোকিজবন্ধ: ৪২৫॥

মাতৈতৈতি ভানাখাসররাধ এতাবিতি সংবস্তেণ ক্রোণাবেশেন সংস্কৃতঃ সংপৃত্তো বং সমাধিশ্বনীরধ্যানপরিপাকজেনাত্মবদ্ধঃ প্রতি কণাভ্যত্তো বোগো মৎসংবোগো যাভ্যাং তৌ। তো বিপ্রা বো যুদ্মাকং শাপঃ স মরের নিমিতো নির্দ্ধিতঃ জনরোর্দ্ধৎ পরমভক্ত যোরস্ক্রভাবসিদ্ধার্থং যুশ্মান্ বৈকুঠমানীর ধারপালাবিমৌ শুদ্ধসক্ষরপারণি ব্রাহ্মণমাত্র পরমভক্তাবপি যুশ্মৎপ্রাতিক্লো প্রবর্ত্তা যুদ্মা-

বটে। হে ভগৰন্। ক্ষুষি ত্রিলোকের অধিপতি এবং এই বিখের পালনকর্ত্তা, ধর্মরক্ষণমাত্র প্রয়োজনে ত্রাক্ষণক্লের প্রতি ছুমি যে এ রূপ অবনত হইলে ইহাতে তোমার প্রভাব ক্ষীণ হইল না, ঐ অবনতি কেবল আমোদমাত্র ॥ ২৪ ॥

যাহা হউক, এক্লেক্ষাফাদের নিবেদন এই, আপনি এই ছুই ভৃত্যের প্রতি যদি ক্ষন্য কোন দণ্ডবিধান করেন, অথবা যদি ইহাদের জীবিকা কাধিক করিয়া দিতে ইচ্ছা হয়, হে ক্ষীশ! যাহা বিধান
করিবেন ভাহাত্তেই আমাদের দল্মতি আছে। আর এই ছুই ব্যক্তি নিরপরাধ, আমরা ক্ষরার ইহাদিগকে শাপগ্রন্ত করিয়াছি, যদি এমত বোধ করেন ভাহা ছইলে আমাদিশের প্রতি যাহা উচিত
হয় সেই দণ্ডই বিধান করেন ॥ ২৫ ॥

সনকাদি মুনিগণের এই সমস্ত বচন জাবণ করিয়া ভগবান্ কহিলেন এই ছুই ব্যক্তি এখনি অহর বোনি প্রাপ্ত হউক, জোধাবেশ বশভঃ সমৃদ্ধ সমাধি করাতে ইহাদের ধোগ দৃঢ়ীকৃত হইবে, ভাহাতে

ভূম: সকাশমূপযাস্তত আশু যো ব: শাপোমীয়েব নিমিতস্তদ্বেত বিপ্রা: ॥ ২৬ ॥ জীতকোৰচি ॥

वर्ष एवं मृत्यां मृष्ट्री नव्रनीनेन्नकांकनेः। देवक्ष्रीः उपिष्ठीनः विक्ष्रीक चेत्रः প্রভং ॥ ২৭ ॥ ভগবন্তং পরিক্রমা প্রণিশভ্যানুমান্য । প্রতিক্রমাঃ প্রমূদিভাঃ শংসন্তো বৈক্ষবীং প্রিন্নং ॥ ২৮ ভগবানসুগাবাহ বাজিং মাডিকীমন্ত শং। ব্রহ্মতেকঃ সমর্থোপি হক্তং নেছে মতং ভূমে ॥ ২৯ ॥

अधियाती ।

নিবাত:। সংরক্তেণ কোধাবেশেন সভ্তঃ সময়ে য: সমাধি: একাপ্রভা ভেনাস্থকো দৃটীক্ততা বোগো যারা: যে বিপ্রা: বো ব:শাণঃ যুখং কৃত: শাণঃ তদিতি স: মরের নিমিত: নির্নিত: ইতাবেও জানীত। ২৬ ॥

নেজোৎসৰ জনকং বিকুঠং হরিং ভরিবাসঞ্চ বৈকৃঠং র্যার প্রভিং প্রকাশান্তরান্ত্রশন্ধ সন্ধ্পরিদারভাৎ ॥ ২৭ ॥ অথেতি যুক্তিং। প্রতিভাগে অপ্রকাশং ভগবর্ধ সন্ধিরান্দীর্মানীর প্রাণ্ডিং ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

मर्टेम वकु मंक्र मंत्रकः हेमेमेके कवा वंशानि ममेक्नानीमाः टकार्या नं मक्क्षिकः । मह क्ष्मंद नाविष्टाः करमाः आमानेक्षालिक्नाः ।

क्यानमञ्ज्ञ ।

गःतरस्था नमाधिः गण्डार द्यारमा सक्तिरवानः यः चोकाविकः न अव वरवारको । नकानः नमीनः व्यक्तिमान् नस्रतमिक दक्षत्र ॥ २६ ॥

অপেতি যুগাকং। স্বর্তাতং স্থাকাশং ভপ্রবং সচিদানন্দরপদাং ॥ ২৭ । ২৮ ॥

ত চিক কীবিত খনেৰ স্পাইনতি ভগৰানিতি। মা তৈইমভ শমিত্যস্য আহ্বরভাবোহণি ভবতে। জ্লীবন্দুজানাং দেহাবেশ ইব

विविधनायहळवर्षी ।

কমাত্বারামচ্ডামণীনামণি জোধম্পণাল্য শাণমুৎণাদিতে। মবৈব নতু মৎপার্ববরোর্নাণি যুদ্ধাকং কোণ্যপরাধ ইতি ভাব:। নতু ভক্তবংসলস্যাণি তব ভক্তভোমাভ্যামীলৃশছ্ঃখলানে প্রস্তুত্তী কিং কারণং ভ্রাহ্ ভৎকারণং হে বিপ্রা অবেত পরাম্ভ সর্বজ্ঞত্বিবারণজ্ঞত কিং মরা প্রকাশিতেন ভক্ত কারণং ভর্বিভারের প্রেমবিজ্ঞতা কাচিদিছা। নাচ ভো প্রভ্রুর দেবাধিদেব বৈক্ষনাথ অন্ত্রার্বস্থা। অস্থাস্থ প্রাতিক্ল্যাভাবাং যদি ভত্ত ভবতো যুর্থসা স্থাং ন সংপদ্ধান্ত ভদা আবামেব কেনালি প্রকারেণ প্রতিক্লীক্তা তলব্ ক্স্থ মহত্রভামিত্যাব্রোত্মং সর্বস্থি পরিপূর্ণতারাং অনুমাত্রমণি নুনত্মসহদানরোঃ কিছবযোঃ প্রথিনা হঠঃ অভক্তবাংসল্য গুণমণি লঘু কৃত্য নিশ্বাল্যভামিতি মনোহলাপমন্ত্রী রসো বৈ স রস ইতি আনন্দমন্ত্রইতি সৈবা আনন্দ মর্স্য মীমাংসা ভবতীত্যাদি শ্রতিবির্ভিত্র ভগবতঃ পূলারাদি সর্ব্বরস্থিতি বিবেচন প্রস্কৃত্র বিরোধান করোমি বিবিধাঃ জিলা ইতি ভৎপ্রতার সন্পাহনে ভগবতোশীক্ষ্যপ্রকাতি রহস্যায় প্রকটাছক্তি রহোনহলপরাধাইত্রক্তিদিশি পরমসিভানামপ্রধং পাতো ভবেৎ কিং পুন মর্জ্যলোকাৎ সাধ্যভাসানামন্বাক্ষিতি সাধ্যকভক্তান্মহলপরাধ্যের কর্ত্তি ব্যাহ্বপরান্ধি কর্ত্তি ক্রেরা। ২৬ ॥

বিকুঠিং হরিং ভরষিষ্ঠানং বৈকৃষ্ঠং শ্বরং প্রজং প্রকাশং গুরুসন্তমরন্ধাৎ অনুমান্ত অনুজ্ঞাপা ॥ ২৭ । ২৮ ॥

करेनरवानशिकांबेन्द्रेशी अञ्चविकाती मुद्देश्य। वार्का देटिंग मर्कारनार्कर अध्यक्ष करेनेव वित्रव्याक्रिनी क्रक्का समस्त्री वीका

'অচিরে পুনরার আমার সমীপে আসিতে পারিবে। হে বিজগণ। ভোমরা যে ইহাদিগকে শাপ দিয়াছ ভাহাতে ভোমাদের কোন অপরাধ নাই, ভোমাদের প্রদত্ত ঐ শাপ আমারই নির্মিত ॥ ২৬॥

জন্মা কহিলেন অনন্তর সেই মুনিগণ বিকুঠ ও বৈকুঠ উত্তমরূপে দর্শন করিলেন। ভগবান্ এবং তদীয় নিবাস ভবন উভয়ই নেজোৎসব অনক ও সচ্চিদানন্দ প্রযুক্ত পন্নং প্রকাশমান, প্রকাং তদব-লোকনে ভাঁহাদের অভিশন্ন আনন্দাসুভব হইল॥ ২৭॥

পরে তাঁহারা প্রদক্ষিণ পূর্বক প্রণাম করিয়া ভগবানের অসুষ্ঠি গ্রহণ করত প্রনোধিত হইয়া ভগবানের ঐথর্যের কথা কহিছে কহিছে অ অ আনে প্রতিগমন করিলেন ॥ ২৮ ॥

মুনিগণ গমন করিলে ভগবান আপনার দেই ছই পার্ষকে সান্ত্রা করত কহিলেন, ভোষরা

. .. खिबबयाती।

নচ ভগৰতঃ বডকোপেকা। নচ বৈকুঠ গডানাং পুনর্জয়। তথাপি ভগৰতঃ নিজ্কাণিবৎ ক্লাচিৎ মুমুৎসা সমলনি। তলাতে বামরবলবাৎ বণার্বদানাক তুলাবলংখি প্রতিপক্ষার্পপত্তে এতৌ এব প্রাক্তা নিবারণে প্রতিবর্তা তেবু চ ক্রোধমুদীপা ভচ্ছাপ ব্যালেন প্রতিপক্ষাে বিধার মুদ্ধেনিতুকং সম্পাৰ্শীরমিতি ভগৰতৈব বাবনিতং অভঃ সর্কাং সংগচ্চতে ভনিদমূলং লাপে। মইরব নিবিত ইতি মাতৈটমত শমিতি হতং নেছে মডং জু মে ইভ্যাদিত ॥ ২৯ ॥

ক্ৰেন্স্ৰ্ডঃ

নটানাং তত্ত্বদক্ষরণমিৰ চ **তথাভাগ এব স্যাদিতি ভাবং। তথৈৰ হি বাণ্যাস্যতে হৈঃ সপ্তমে।** বিফুচক্রহতাংহ্সাবিত্যক্স তরে। রংহ এব হতং ন তু ভাবিতি। তদিবং ষ্ঠসন্মতে স্থম্বাক্যাবভারিকারাং **ক্চিচ্চ দীলা**শক্তিরেবেড্যার্ডা ব্লুডঃ তেন তথা উক্তবেন কোণাদি হেল্লাবাং ইভ্যেষ্ডেট্ডেন বিহুত্মতি।

তথাৰি কচিত দীলাশক্তিরের শ্বং ভল্লীলামাধুর্বাপোবার প্রতিক্লেব্যুক্লের্ চাজ্যোপকরণের ভাতৃল শক্তিং বিনাসা তালৃশ-তথারকানানাপি বিবয়াবেশাল্যাভাসং সন্পালরতি। বধা পুতনাবর্ণনে। বস্তুত্তিপালাল বিস্গ্রীন্দিতৈর্পনো হরতীং বনিতাং ব্রজীকসামিতি। ভলভাসন্থবিক্ষা চ মনোহরতী মনোহরেবাচয়ন্তীতি রিউমুক্তং। ভদত শক্তিত্ব তথা ভবৈব স্চিতং। ন বল্ল প্রবণাধীনি রক্ষোলানি শক্ত্ম । ক্র্মিন্ত সান্তাং, ভর্তু গ্রভ্যান্যত তল হীতানেন। তথৈবেদং ঘটতে অমংসভাজ্যেক্তরেণ রূপিনীং পোপ্যঃ প্রিরং জন্তু বিবাগভাং পতিমিতি। শ্রিরং প্রাক্তসম্পদ্ধিন্নালীং। পতিং বং ক্রিন্তিচিত প্রাচীনপুণ্যভাষ্মভিত্তিং: পূর্কবিদেব তাং তীক্ষ্টিভামিত্যাদৌ তথপ্রভাষাবর্ধবিতে জননী অভিন্ততামিত্যুক্তং। এব মেব কচিত্তান্থ্যান্যমিত বালানামিত বালানা মন্তবাঃ। বথাপ্রাহো সালান্ত মে ভর্তু নিভা মে হুপি বিমোহিনীত্যাদির শ্রীবলদেবা-দীনাং বধা কৈভাক্ষমনি কর্বিক্রমেরাঃ। অল পুর্কেবাং স্ক্র এব ভল্লভাসঃ ভরোম্ভ স্মাগিতি বিশেষঃ তথ্যে সাণীনামনা-

क्षिविषमापठक वर्छी ।

পুনঃ কুপান্তৰভিত্তনবনীত আহ। মাডৈটঃ শং কলাাণং যুববোরত। ইতো মা বাতং অতৈব বৈকুঠে মাং দেবমানো দদা ভিঠত বিভি মাপদমুক্তরভাবিতং পুনরানন্দিতো তৌ বীক্ষাহ বন্ধকেলঃ প্রন্ধাপণ হৃত্তঃ সমর্থোপাহং মেতৃ মমতৃ মতং নেজামি। প্রন্ধাপন্যামোঘত্তমধ্যালার। মইরব কৃতত্বাৎ অতে। বন্ধনাঘ্রহং রক্ষণার্থং গক্ষড়ো যথা পক্ষাংশমেকং দদৌ তইথবৈকাংশেন একৈক প্রকাশেন আহ্রভাবং গজ্তং বৈকুঠেশি অভ্যাপেণ ভিঠতমিতাতো বামনচরিতে তানভিত্তবতো দুই। দিভিলানীকপান্প। প্রহ্মান্তরা বিক্ষোঃ প্রত্যেবেধরু দাযুখাঃ। নন্দ্রনন্দোপ জবো বিজয়ঃ প্রবাবেশ:। কুমুদঃ কুমুদাক্ষত বিভ্যানে পত্তিরাভিত্যাদীনাং যুধ্যমানানাং ভগবৎপার্বদানাং মধ্যে জরবিজরবোরপুরেধং প্রন্থত ভদাত ভরোহিরণ্যাক্ষত্ব হিরণ্ডকিপুখানতবং রাবণকুজকর্ণত্ব প্রাপ্ত্যান্তরা বিশ্বের প্রাপ্তাপন্ত ইতি ভরোহুর্গপদের পার্বদান্তরহান)ধান্ত্পপ্রেরব্যবশ্যামের বাধ্যারং। অইত্ত্তব্যক্তি পদ্যং স্ব্রিক ভ্রমণ্যান্তরার বাধ্যাতং । ২১ ।

এ স্থান হইতে গমন কর ভয় নাই মঙ্গল হইবে। আমি ত্রক্ষাপ নিবারণে সমর্থ বটি কিন্তু ইহার প্রতিঘাত করিতে আমার ইচ্ছা নাই, আর এই শাপ আমার অভিপ্রায় মত হইয়াছে।

তাৎপর্য। যদিও সনকাদি মুনিগণের জোধ সম্ভব হয় না এবং ভগবৎ পার্বদ্বরের প্রাক্ষাণিদিগের প্রতি প্রাতিক্ল্যাচরণ অসম্ভব, আর ভগবানের নিজভজের প্রতি উপেকা নাই, তথা বৈকুণ্ঠ গত ব্যক্তি মাজেরই পুনর্জন্ম হয় না এ সকল সভ্য, তথাপি ভগবানের বেষন স্থিতি করিতে ইচ্ছা হর তজ্ঞপ কদাচিৎ যুদ্ধ বাসনা অন্মিয়াছিল। কিন্তু ঐ অভিলাষ কি রূপে পূর্ণ করিছে পারেন, আনু সকল ব্যক্তি তাহা অপেকা হীনবল, তাহাদের সহিত যুদ্ধ হইতে পারে না, আরু আপনার পার্বদ্যণ তুল্যবল হইলেও তাহাদের প্রতিপক্ষ হওয়া অসম্ভব অভএব আপনি সকলের বৃদ্ধির্তি প্রবর্তক এ প্রযুক্ত ঐ চুই পার্বদের আজাণ নিবারণে প্রস্তৃতি অনাইয়া তাহাদের প্রতি আক্ষাণির ক্রোধ উদীপন করিয়া অক্ষাণা ছলে তাহাদিগকে প্রতিপক্ষ করিলেন, যুদ্ধ বিষয়ে তাহার বে কোছুক জন্মিয়াছে অভংপর তাহা সম্পান করিবেন ॥ ২৯॥

ময়ি সংরম্ভযোগেন নিস্তীর্ব্য ব্রহ্মহেলনং। প্রত্যেষ্যতং নিকাশং মে কালেনালীয়সা পুনঃ ॥ দাংস্থাবাদিশ্য ভগবান্ বিদানপ্রেশিস্থাং। সর্ব্যাতিশয়য়া সন্মা। স্কুটং দং ধিফামাবিশং ॥ ৩০ ॥ তৌ তু গীর্বাণব্যতো তুস্তরাদ্ধবিশেকতঃ। হতপ্রিমে) ব্রহ্মশাপাদস্তাং বিগতস্মা। ৩১ ॥

श्रियत्रवात्री ।

क्षाकावाकः क्षाकावाकः निकामः नमीनः । 00 s

হতরাং ব্রহ্মণাপাৎ হরিলোকতঃ পভস্কাবিভি শেবঃ i হরিলোকত এব হতপ্রিরাবভূতাবিভি বা। বিগভগুরৌ নই গর্মোচ ৪০১।

क्षामण्डः।

বরণাক। অত্ত তেরাবৈরভাবপ্রাথ্যে ধনু মুনিক্তবং ন স্যাৎ মতং তুবে ইভাত ভগবদিছারা তংকারণবেন হাশিতভাং। নাপি সা ত্ৰীয় বৈবভাৰার সম্পণ্যতে খেছামরস্যেভ্যাদিতাঃ। देखदर्शिकाशाসविद्याভমশ্বপতি বিধাতে পুরুষস্য শক্তেভ্যা-দিভিঃ কৈমুভ্যাপাতাক্ত। অভএবোক্তং। তথা নতে মাঁধৰ ভাৰকাঃ ক্ষতিভুপ্ততি মাৰ্গাত্তীৰ ৰহুগৌহুলা ইত্যাদি। নচ उत्ताति चानताथराक्षानीय निष्तातार्थमिन कानुनीका कारकि वाहार। जानूरेमः नत्तन करेक र्द्ध किला निमा नारनाका मिकमनि নালীক্রিয়তে তৎসভাবে নিরব্রোহ্ণালীক্রিত ইতি নাতাতিকং বিগণরতীতালে: কামং তবং অবুভিটেন নির্বেরু নং তালিতাা-দেশ্য। অতএবাভ্যামণি ভবৈৰ প্ৰাৰ্থিতং মা ৰোহ্মভাশকলয়া ভগৰংম্বভিয়ো মোহো ভৰেদিই তুনো ব্ৰলভো রখোধ ইতানেন। ন চ তয়ো **র্বান্তৰ বৈশ্বভাগৰে সভি ভক্তান্তরাণাদণি সুধং স্যাদিভি বাচ্যং। ভক্তিবভাৰভক্তসৌর**দবিরোধাদেব। ভশান্তরোটর্রভাবাভাসত্বে এব ঐক্তগবত করে। রক্তেরাং ভক্তানামণি রসোদয়ং স্যাদিতি ছিভং। তত এব মর্থাপত্তিদরং। সর্বভক্তস্তরঃ ঐতগ্রদভিমত্যুদ্ধকৌতুকাবি সম্পাদনার্থং হৈরভাবাত্মক্ষারিকোপাধিং বাভাবিকাণিমাদিসিদ্ধিকেন শুদ্ধসন্তাত্ম অবিগ্রহেণ প্রবিশ্র অসালিখান চেত্রনীকুতা চ বিলীয় ছিতায়া অপি ভব্তিবাসনায়া: প্রভাবেণ তলানাবিটাবেব তিঠত:। অতো বৈরভাবল শ্বরণেন বৈরভাবোহণগত ইত্যজয়দশি বাহুং। এতদভিতেইতার জীবৈকুঠেনাপুলেং। যাতং মা তৈউমন্ত শমিতি। তথা वित्रशाक्त युद्ध भतासूबक्तमिजानिभाषा होका। श्राहश्वमसूबर अधिक्मशाक्त क्षासूबत्रमाजर देवजाबाकाकीकामार विवास ভয়নিবৃত্তরে। বস্তুত ভেন তথা। উক্তভ্রেন কোপাদিহেছভাবাদিতোবা। ব্রহ্মতেছ ইভি। বাবদ্ ব্রাহ্মণযোপহিত্যক্ষীনাং সারিধ্য মানীৎ তাবৎ ব্ৰহ্মণ্যভা ঋণ এব প্ৰবন আনীং। অধুনা গুৰুতক্তঋণনানিখো তু গুৰুতকৰাৎসনামেৰ। ভক্তৰিশেষং প্ৰাটণ্যৰ ভলাণ বিশেষ প্রকাশাদিতি ভাব:। এতৎ পুরৈব নির্দিষ্টং রময়া জুদ্ধা তলা। পুরা বরাবিতারারি বিশক্তি ময়াপারতে। এতদিতি পদাং বিগীতমাপ সর্বাত্র দুশ্যতে গুজ্জরদেশেতু টাকাচান্তি ॥ ২৯ ১

ভদপরাধাভাসত্থে কলভোগাভাসাত্বাদেন মর্যাদাং রক্ষাহ মরীভি। সংরক্তত যোগেন প্রভিদ্দেনাভাদেনেতার্থ: ৪০০ । তৃত্তরাৎ ভাজনুমশ্কাদ্ধেতোর্হতপ্রিয়ে তৃংধেন রানৌ বিভর্তিতো চাতৃভাং। এক্ষশাপং এক্ষশাপং পক্ষীকৃতা ভগবদিছ্রৈ-

श्रीविधनायहळ् वस्त्री ।

ন চৈকাংশেনাক্সভাবেশি চিন্তা কাৰ্য্যা ৰচোহমণাৰতার ক্ষেণ ব্যাজ্যাং সহ বীস্ত্রসময়ং মৃত্ত্রথমসূত্রিবাামীজ্যাক্ষ্রভাবেশি মংসেবৈৰ ভ্ৰম্ভাং সংপাদ্যিবাতে তৃতীয়েতু ক্সমি সাক্ষাদেৰ বাং শীক্ষিয়ে ইত্যাহ মনীতি সংরভেণ ক্রোধাবেশেন বোগঃ "যুদ্ধেরু মৃদ্ধি বং সংবোগো ধ্যানং বা তেন প্রত্যেষ্ডং প্রত্যেষ্থং নিকাশং সমীপং ॥ ৩০ ॥

इतिरमाक्छः भठछाविछि (भवः। विशवचरत्री नहीतरमो । ७১ ॥

অতএব গমন কর তোমাদিগকৈ অধিক কাল শাপ ভোগ করিতে ইইবেক না, তোমরা আমার প্রতি ক্রোধ্যোগে এই ব্রহ্মহেলন নিমিত্ত পাপ হইতে উত্তীর্ণ হইয়া ব্রহ্ম কালের মধ্যেই পুনর্ব্বার সমীপে প্রত্যাগমন করিবে। ভগবান ঐ ছই বারপালকে এই প্রকার আদেশ করিয়া আপনার আবাসে প্রবেশ করিলেন। চতুসার্বে বিমান সকল ভূরণ অ্রপে প্রেশী বন্ধ থাকাতে তাঁহার ভবন সর্বাপেক। অতিশ্য গোভমান ছিল ॥ ৩ ॥

অনস্তর ঐ ছুই দেবপ্রবর হস্তর ব্রহ্মশাপ বশতঃ বৈকুঠ লোক হইতে পভিত হইতে হইতে হতঞী

खेना विक्रीशिवनाखरा निर्मकर्मानरमाः। शेशकारित महोमोर्गीशिमानारवीर् भूककाः ॥ ०२ ॥ कीर्तित श्रमेना औरकी भाषण्यवर्धी हैर्रितः। मिर्ट्ड कीर्वनिर्दिकः कार्क्यभः उडेक छैन्देनः ॥ ०० ॥ करमानस्त्रत्योतमा उडेकेमा विनेर्द्यार्थि थः। खोक्किशः टेडके अविहे खनवेरः छैबिविटमिर्डि ॥ ०८ ॥ विश्वक यः चिकित्तास्वरस्कृतारमारगरमारमस्त्रम्भि कृतकाम्रस्यागमामः।

ক্ষেমং বিধাস্থতি স নো ভগবাংস্ত্রাধীশ স্তজাম্মদীয় বিষ্ণুশেন কিরানিহার্থ: ॥ ৩৫ ॥

क्षित्रवामी ।

विक्रेष्ठ धिरुगार श्वानार शूक्तका दह दिवाः । ७२ ॥

कार्शनर एडएवा वीदार खाखी । ००।

সহৈব গর্ভে প্রবিষ্টো বর্মো তারো ব্যেক্সো ব্যেক্স: জাব্দিপ্তং তির্ম্বৃত্ত: নচাজ প্রতিবিধিঃ প্রকাষত এতর্ভি ইদানীং ভগবানেব তদেবং বিধাতুর্মিছেতি ॥ ৩৪ ॥

ভবাণি কোপুশেরে। বিচার্যাভামিতি চেক্তআছ বিশ্বভেডি জন্মাণাং জ্বানাং জ্বানাং ক্রীণঃ স্তব সংস্থেত্তই কালেন ক্ষেমং বিশান্ততি। বিসুশেন বিমর্শনেন ॥ ৩৫ ॥

क्रममक्दः।

(बडार्थः । ७১। ७२ ।

208

তাবেৰেতি। তেই প্ৰিক্ষণাবেৰ সংস্থী স্থানিখাসিদ্ধা প্ৰান্থী প্ৰবিশ্বেটী । ৩০ ॥ অবোদ্ধিতাস্য টীকাৰাং তদেৰ বিধাত্মিতি তদিতাইক্সৰাৰ্থঃ । ৩৪ ॥

त्नाक्षाकः ककानां मुर्खना त्कमरमव कतिवाछि ॥ ०६ ॥

क्षितिश्वनाथठकवर्षी ।

বিকৃষ্ঠন্য বিশ্বাৎ স্থানাং বিদানাগ্ৰের্ স্ভাদিলোকজ্বিমানশ্রেষ্ঠ্ পুত্রকা হে দেবাঃ ॥ ৩২ ॥

কাশাপং ডেজঃ কশ্যপদা বীর্বাং প্রাপ্তেম করেছেনাদীকৃতবস্তাবিতার্থ: ॥ ৩৩ ॥

বমরোঃ শ্লোবণাক্তকভুলীরোঃ। ভার্হি কিমপ্রাণশমনং কুর্বিভি চেৎ ভাত্ত কৈ বরং বরাকাঃ। শাগভ্রীরোরণি ভগবৎপার্ব-দরোকণারি নাম্মাকং আভ্তেভায়ে ভং ধল্পশ্যবং সূত্র ভগবান্ বিধাভ্ষিত্তি । ৩৪ ॥

নত্ব বরং সংপ্রতি ব্রিরামহে স কদা উপশ্মং বিধাসাতীতিচে ত্রব ভবতো মিরস্তাং জীবন্ধ বা তলৈবেছা কারণং কিন্তু সংপ্রতি পালন সময়ে স্পালহিবোভোবেভাাই বিখাসোভি ভক্র প্রকারন্ত্র বরং নৈব জানীম ইত্যাহ বোগেখরৈরিতি। ভক্র সর্বজ্ঞানামণি ন জানমিতি ভাষ:। নত্ন ভলপাল বিপদ্ধাব স্থানিধি ভাষ:। কিমিপি পরামুশেতি ভক্তাই ভক্তাস্থলীয়েন বিমৃশেন কিমানর্থ ইতি অস্থাবিমৃশ্যমন্থাণি স কুর্ব্যাদিতি ভাষ:। ৩৫।

এवः गर्त्वणुग्र हहेन ॥ ७১ ॥

অতে পুত্রদকল ! তাহারা যথন বৈক্ঠলোক হইতে পতিত হয় তথন দেখানে বিমানাগ্রে অতিশয় হাহাকার হইয়াছিল ॥ ৩২ ॥

হে অমরগণ। ভগবানের সেই প্রধান পার্ষদই এক্ষণে দিতির গর্য্তে প্রবিষ্ট কশ্যপবীর্য্য প্রাপ্ত হই-য়াছে অর্থাৎ কশ্যপের উর্নে দিতির জঠরে জন্ম গ্রহণ করিয়াছে ॥ ৩০ ॥

(ह रहेन नकत ! व विषयंत्र के जात्रार्थ आसीर ते कि कि कि विषयं के हिंदी के विषयं कि ? यिनि कि जात्र श्रू के विषयं के विषय

॥ # ॥ ইতি জীভাগবড়ে মহাপুরাণে পারমহংকাং দংহিতারাঞ্চ বৈয়াদিক্যাং তৃতীয়ক্ষদে বিছুর মৈত্রেয় স্থানে কয় বিক্তর জংশঃ বোড়শোহধ্যায়: ॥ # ॥ ১৬ ॥ # ॥

बिरियद्धत छेयाह ॥

নিশমাজিজ্বা গীতং কারণং শঙ্করোজ্বিতা:। ততঃ দর্বে অবর্তন্ত তিদিবার দিবৌকদঃ। ১॥
দিতিন্ত ভর্তুরাদেশাদপত্য পরিশক্ষিনী। পূর্ণে বর্ষশতে সাধ্বী পুর্কো প্রজ্বাহ্ব বর্মো॥ ২॥
উৎপাতা বহবন্তত্ত্ব নিশেভু জার্মানয়ো:। দিবি ভুবান্তরীক্ষেচ লোকস্তোর্রভয়াবহা:॥ ৩॥
সহাচলা ভুবশ্চলু দিশিঃ দর্বাঃ প্রজ্বলুঃ। সোক্ষাশ্চাশনয়ঃ পেতুঃ কেতবশ্চার্তিহেতবঃ॥ ৪॥

विश्रवामी।

। • । ইতি তৃতীয়ে বোড়শঃ । • ।

ভতঃ সপ্রদশে জন্ম তরোবেঁ।ক ভরকরং। হিরণ্যাক্ষ প্রভারণ্ড বর্ণাকে সিগ্রুরেইকুডঃ। • । ক্ষেমং বিধান্তভীতি ব্রহ্মবচনাৎ শক্ষ্ম। ভাক্ষাঃ। ১ ॥

ভর্ত্রাদেশাং লোকান্ স্পালাংস্তীংশ্চন্তি মূচ্যাক্রন্ধিয়ত ইতি ৰাক্যাৎ। স্থাপত্যাভ্যাং পরিশন্ধিনী দেৰোণজবং শহমানা॥২ ভক্ত ওলা নিপেতুঃ উৰ্ভূবুঃ॥ ৩॥ অচলৈঃ সহিতা ভূৰং ভূঞ্জেশাং কেতৰঃ উদয়াঞ্জুবিতি শেষঃ॥ ৪॥

ক্ৰমন্ত্ৰ

্য * । ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ককে শ্রীকীবগোণামিকত ক্রমসন্মর্ভত বোড়শোহধ্যার: সমাপ্ত: । •।
কারণং ক্রোপদ্রবস্থাৎপত্ত্বী প্রতীকারে চ হেড়ং। শহরা সন্দেহেন ॥ > ॥
অপতাপরিশক্ষিনীতি । শহরানা সুরাদিনাধিতি পুর্কোক্রয়াও তরাত তর তর্মুক্তা চহাগাঙাঙাভাগানা১০।১১৷১২৷১০৷১৪৷

विषमाभठक्यकी ।

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিকাং হর্বিণাং ভজচেত্রসাং। তৃতীয়ে বোড়শোহধাায়ঃ সক্তঃ স্কৃতঃ স্তাং ॥ * ॥ তৃষ্ণো জ্বাক্রিয়ানি স্পাইং স্থাদশেহত্বন্। উপাহস্ক দিগ্জেতা হিরণাক্ষঃ প্রচেত্সং ॥ • ॥ শৃক্ষা উজ্বিতা ভগবত্যের বিশাসেনেতি ভাবঃ ॥ > ॥

ভর্বাদেশাৎ লোকান্ ক্রন্দরিয় ঠীতি ভয়াক্যাৎ অপভ্যাভ্যাং সর্ধলোকোপদ্রবং অপভাং প্রতি বিষ্ণুহন্ততো বধায়া শহমান। ॥২ নিপেতৃক্রভূব্ং ॥ ৩ ॥ কেত্রবল্ড উদপ্তরিতি শেষঃ ॥ ৪ ॥

॥ *॥ देखि कृजीस्त्र स्वाकृत्र ॥ *॥

সপ্তদশাধ্যায়ে ভগবৎপার্বদ হয়ের অহুর রূপে ভয়ক্ষর জন্ম এবং হিরণ্যাক্ষের দিখিজয় বিষয়ে অমুত

নৈজেয় কৰিলেন অক্ষার প্রমুখাৎ দিভিন গর্ততেজের কারণ শ্রবণ করিয়া তাঁহার বাক্যেই আপনা-দের শহা পরিভ্যাপ পুর্বক দেবগণ স্বর্গে প্রভিগমন করিলেন ॥ ১॥

° এথানে দিতি ভর্তার প্রমুখাং ভনিলেন যে আপনার পুত্রবয় কর্তৃক দেবতাদের ভাবি উপদ্রেব উপ-থিত হইবে এই বিষয় ভাবনা করিভেছিলেন, শতবর্ধ পূর্ণ হইলে ছইটী যমক পুত্র প্রস্ব করিলেন ॥২ উট্টার ছই সন্তান যথন ভূমিষ্ঠ হইল দে সময় স্বর্গ মর্ত্তা ও আকাশে বহুতর অমঙ্গল সূচক উৎপাত

छेश्राह इहेगा नम्छ स्मारक तहे महाच्य छेश्यम कतिल ॥ ० ॥

নেই সকল উৎপাতের কথা কি বলিব, স্থার সহিত সমস্ত স্থানেশ বিচলিত হইল এবং দিক্
সকল প্রদালিত হইতে লাগিল, আর অফিল হইতে অনেকানেক উদ্ধাপাত ও বন্ধ পতিত হইল এবং
গগণ মণ্ডলে লোকের আর্তি হেতু কেতু সকলের উদয় হইতে লাগিল। ৪ ॥

ববৌ বায়্ হতুস্পর্শ: কেৎকারানীরস্মুত্ত:। উমূলয়য়গপতীন বাত্যানীকো রক্ষাধ্বজঃ ॥ ৫ ॥
উদ্ধনন্তি দিন্তো দ্বটরা নই ভাগণে। ব্যোদ্ধি প্রবিষ্ট তমসা নম্ম ব্যাদৃশ্যতে পদং ॥ ৬ ॥
চুক্রোশ বিমনা বার্দ্ধিয় কুভিতোদর:। সোদপানাশ্চ সরিত শচ্কুভু: শুক্ষপক্ষা: ॥ ৭ ॥
মৃত্য় পরিধয়োহস্থান সরাহ্যো: শশিস্থায়ো:। নির্ঘাতা রথনিত্র দা বিবরেভ্য: প্রক্তিরে ॥ ৮ ॥
অন্ত গ্রামেয় মৃথতো বমস্ত্যো বহ্নিম্পাণ:। শৃগালোলুক টক্ষারৈ: প্রণেত্রশিবা: শিবা: ॥ ৯ ॥

क्रियद्वयामी।

কেৎকারানিতি তীব্রবার শব্দাস্করণং নগণতীন্ মহাবৃক্ষান্ বাংচ্যা এবানীকং বস । রজ এব ধ্বজো বস । ৫ । উঠিজহঁদন্তা ইব তড়িতে। বেবু তেরামন্তোধানাং ঘটরা সমূহেন নটো ভাগণঃ স্ব্যাদি প্রভা সমূহো বন্দিন্ পদং স্থানং। ন ব্যাদৃশ্যতেশ ঈবদশি নাদৃশ্যত ৫ ৬ ।

বার্দ্ধি: সমুদ্র: বিমনা ইব উদ্যাতা উর্নরো যশাৎ। কৃতিতা উদরত্বা মকরাদরো বিশ্বন্। উদণানৈর্বাপী কৃণাদিতি: সহিতাঃ শুফানি পত্নজানি বাস্থ ॥ १॥

পরিধ্যঃ পরিবেশাঃ সরাহেরাঃ রাত্রপ্তরোঃ নির্বাতানি নির্ত্তুগজ্জিতানি রখনিত্রাদ তুল্যা ধ্বনরঃ বিব্রেড্যঃ গিরিশুহাত্যঃ ॥৮ শৃগালানামুলুকানাঞ্ টফারৈঃ ধ্বনিভিঃ সহ ॥ ৯ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

কেংকারানিতি তীব্রবার্শকার্করণং বাত্যা এব অনীকং সেনা বত সং ॥ ৫॥
উচৈচ ইসজ্ঞা ইব ভড়িতো বেষু তেবামব্দানাং ঘটরা নটো ভাগণং স্থ্যাদি প্রভা বৃদ্ধিং শ্রমিন্ ব্যোরি পদং স্থানং ॥ ৬॥
বার্দ্ধিং সম্প্রং। সোদপানাং সক্পাং॥ ৭॥
নির্বাতা নিরভু পর্জিতানি রখনি হাদত্ল্যা ধ্বনরং বিব্রেজ্যং গিরিগুহাজ্যঃ॥ ৮॥
টিয়াবৈ ধ্বনিজিঃ সহ শিবাং শৃগালজিরঃ॥ ১॥

অপর বায়ু অতিশয় সুস্পর্শ হইয়া বারম্বার ফেৎকার শব্দ করিতে করিতে বহিতে লাগিল, তাহাতে প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বৃক্ষ সকল উন্মূলিত হইয়া পড়িল। প্রবল বাত্যা তাহার সৈন্য এবং উভ্ডীয়মান ধূলি তাহার ধ্বলা স্বরূপ হইয়াছিল॥ ৫॥

আর নিবিড়তর ঘনঘটা চারি দিক্ আছের করিয়া আদিল, তাহাতেই যেন উচ্চতর হাদ্য প্রকাশের ফার ক্লে ক্লে ভয়রুর বিচ্যুৎ প্রকাশ পাইতে লাগিল, তথাপি এ রূপ গাঢ় অন্ধকার হইল যে গগণ মণ্ডলে সূর্য্যাদির প্রকাশ এককালে বিন্ত হইয়া গেল, অত্যল স্থানও দৃষ্টি গোচর হইল না॥ ৬॥

অপর সমৃদ্র যেন বিমনক হইয়া শব্দ করিতে লাগিল, ভাহার ভয়ক্কর তরক সকল তীর পর্যান্ত আক্রমণ করিল এবং অভ্যন্তরত্ব মকরাদি জল জন্তু সমূহ অভিশন্ন ক্ষুভিত হইল। আর বাশী কুপাদির সহিত নদী সকল এরূপ কুক হইল যে সে সকলে যে সকল কমল ছিল তত্তাবৎ শুক্ত ইয়া গেল ॥৭

অপর রাত্থন্ত চন্দ্র স্থোর বার্মার পরিবেশ হইতে আরম্ভ হইল এবং বিনা সেখেও মৃত্র্ছ: নির্ঘাত অর্থাৎ মেম গর্জন ও গিরি গহরর হইতে রখনিহাদের ন্যায় মধ্যে মধ্যে এক একটা শব্দ হইতে লাগিল ॥ ৮॥

প্রামের প্রাপ্ত ভাগে শৃগালী সকল মুখ হইতে ভয়ন্তর অমি বমন করিতে করিতে শৃগাল ও পেচ-কের ধ্বনি সহ অমঙ্গল শব্দ করিতে লাগিল ॥ ১॥ সঙ্গীতবজোদনবত্বনয় শিরোধরাং। ব্যম্কৰ্ বিবিধা বাচ্চে গ্রামনিংহান্তভন্ত । ১০ ॥ ধরাশ্চ কর্ক শৈঃ ক্ষন্ত: খুরৈছ স্থো ধরাতলং। থাকার্রছদা মন্তাঃ পর্যধাবন্ বর্মপাঃ ॥ ১১ ॥ ক্রবন্তা রাদভাৎ জ্বো নীড়াত্বনপতন্ ধর্মাঃ। বোবেছরবোচ পশবঃ শক্ষা জ্বনক্র্বভ ॥ ১২ ॥ গাবোহত্রসন্তর্গদোহা স্থোরদাঃ প্রবর্ষিঃ। ব্যক্তদন্ দেবলিছানি জ্বনাঃ পেতু বিনানিলং ॥১০॥ গ্রহান্ প্রতমানন্য ভগবাংশচাপি দীপিতাঃ। ভভিচেক্র্বজ্গত্যা ব্যুধুশ্চ প্রস্পারং ॥ ১৪ ॥ দৃষ্ট্বান্থাংশ্চ মহোৎপাতারতভন্তবিদঃ প্রজা: । জ্বাপ্তান্তে ভীতা মেনিরে বিশ্বসংপ্রবং ॥ ১৫ ॥

धियदचात्री।

श्रामितःहाः भानः ॥ ১० ॥

কৰ্কলৈ: ভীকৈ: তে কৰা থাৰ্কারো প্রদূতভাতি শব্দ তিমিন্ রক্তস্য সন্ত্রমো হেবাং বর্গথশঃ সংঘশঃ ৪ ১১ ৪ বাস্তশব্দ অন্তাঃ সর্বজঃ ক্রেশবঃ ৪ ১২ ৪

গাবোহত্তসন্ অক্লেগাৰাত বভূবু:। বেবলিলানি ব্যক্তনন্। প্ৰতিমানাং অক্ৰেলাৰ আসীদিতাৰ্থ:॥ ১৩ ॥

প্ৰাতমান্ ওয়ণজ্ঞাদীন্ ভগণান্ বহুনি নক্ষজাণি বা অন্তে জ্বুগ্ৰহাঃ মঙ্গলাদয়ঃ অভিচেক্ষঃ অভিজেষ্য লগা; বক্তগভ্যা প্ৰভ্যা-বৃত্য ব্যুধুত । ১৪ ।

ব্ৰহ্মপুত্ৰানুতে বিনা তেখাং খণাপাদি আনাৎ। ১৫ ।

ক্রমসমর্ভঃ।

দৃষ্টেতি। একপুশ্ৰান্ সনকাদীন্তে একস্ঠা: স্কা এব প্ৰদা অভওত্বিদো ভীতা বিশ্বদানৰ মেনিরে। দেবাত একবাক্যা

अविधनाशहकवर्छी ।

গ্রামসিংহা: খান: । ১০ । তে কতঃ থার্কারো গর্জভশস্বাস্থকরণং তেনৈব রচ্চগো হর্ষো ধেষাং তে । ১১ । রাস্ভাৎ গর্জভশস্বাৎ অস্তা: । ১২ ।

অক্লোহা রুণিরত্থা:। দেবলিকানি দেবপ্রতিমা:॥ ১৩॥

পুণ্যতমান্ বৃহস্পতিভক্ষাদীন্ অভে জুব্এহা মধলাদয়ং অভিচেকঃ অভিক্ৰেম্য অগ্যুৰ্কজপভা। প্ৰভাৱিতা ধুৰ্ধুঃ । ১৪ ॥ বৃদ্ধুতান্ সনাকদীন্ তেবাং অশাপাদিকানাং । ১৫ ।

গ্রামিসিংছ (কুরুর) সকল যেখানে সেখানে গ্রীবা উন্নত করিয়া কখন সঙ্গীতের ন্যায় কখন ব। রোদন তুল্য শব্দ করত স্ব স্ব বদন হইতে নানা প্রকার বাক্য নির্গত করিতে লাগিল॥ ১০॥

অপর গর্দভ সকল দলবন্ধ হইয়া তীক্ষাগ্র খুর ছারা ধরাতল খনন করিতে করিতে চতুর্দিকে ধাব-মান হইতে লাগিল, তাহারা মন্ত হইয়াছিল এবং ব্যস্ত সমস্ত হইয়া কেবল স্বজাতীয় থাকার রবই ক্রিতেছিল॥ ১১॥

বিহুগকুল রাসভ শব্দে ভীত হইয়া নানাপ্রকার ব্যাকুলতার ধ্বনি করত স্থ নীড় হইতে উৎপতিত হইতে লাগিল, আর কি গোঠে কি অরণ্যে যাবতীয় পশু ব্যাকুল হইয়া মল মৃত্র পরিত্যাগ করিল ॥১২॥ অপর গাভী সকল ভয়ে ব্যাকুল হইল, তাহাদের ভন হইতে শোণিতময় ছয় করণ হইতে লাগিল, আর মেঘ হইতে পুয় রপ্তি হইল ও দেব প্রতিমা সকলের নয়ন হইতে অস্ফ্রণাত হইতে লাগিল এবং

বায়ু খ্যতিরেকৈ তরু দকল উন্মূলিত হইয়া পড়িতে লাগিল। ১৩।

আর শনি নসলাদি ক্রে গ্রহণণ অভিশয় প্রদীপ্ত হইয়া গুরু শুক্রাদি শুভ গ্রহণণকে অভিক্রমণ করিয়া গমন করিতে লাগিল এবং বক্র গতি দারা প্রভাবর্ত্তন করত পরস্পর যুদ্ধও আরম্ভ করিল ॥১৪॥ এই সমস্ত উৎপাতের তত্ত্ব ব্রহ্মপুত্র সনকাদি ব্যতীত প্রকাদিগের বিদিত ছিল না, অতএব ঐ সকল

1 94 1 79

তাবাদিলৈতা সহসা ব্যক্ত নাম্প্রানাম্পেকিবো। বর্ধাতে হশ্মদারেণ কায়েবাজিপতী ইব ॥ ১৬ ॥
দিবিস্পৃদ্ধে হেনকিরীটকোটিভি বিজ্ঞাকাতো স্ক্রদক্ষণাভূকে।
গাং কম্পরত্তো চরবোঃ পদে পথে কটা। স্কাঞ্চার্কনতীতা তশ্বভূঃ ॥ ১৭ ॥
প্রকাপতির্নাস ত্যােরকার্যীক্ষা প্রাক্ ব্যক্ত দেবাক্ষরায়তা।

विषयपानी ।

वाकाबामः वाचानीकवः भूक्तिवर चरलोकवः स्रवाः । २७॥

तिकका वाश्वाः कांक्री विष्णा वाष्ट्रारः। क्ष्मुवकाक्षणानि त्यव् एक्ष्मु वर्षाः। क्षम्पारि है विवस्तार्थाः। त्याक्ष्मी वर्षाः वर्षाः कांक्री वर्षाः वर्षाः

यमत्त्रा म'(या यः परम्बार ध्राथमसमायक्र कः वशा वित्रगाकिनिश्रः विदः ता निकिः ध्राथमः वमण्ड कः वित्रगाकिः वशा विदः छशा नाम कृत्वानिज्ञार्थः । ध्यमक्षायः यमादि सर्कायान त्राप्त त्यानिश्रणः विनयौर्धः विश विकक्तः ध्रानिशर्माकः ध्राप्ति छन। वर्षा क्रवाः । क्रियाकं शिक्कः ध्राप्ति क्रवः वित्राप्ति वर्षाः व

ক্রেবসমর্ভঃ।

खब्बिता जीजा जागम् मजू विचनः भवः स्मित्व देखार्थः । ১৫ ।

তাৰিতি। অতানয়েরেনিমাদি শব্দ্যা গুড়স্বিডৌ টীকা সম্বৃতিক। ১৬ র

त्नामनामस्यानमा मदसार्ति करवर । ३११३४।३३१२०।२३१२३१२०१३१२६ ॥

किविष्मायहरूव ही।

ত্ৰদ্মশাণেছণি অপবস্তুক্তানাং দ্ৰ্মাধিকামিতি বোধনিতুং ওয়োনকুতৈরতি ক্ষুইড: তৈলোকাধিণভাবলপ্রভাবভোগবোলি। নি কুতিরণি বহুতির্জুইড ন্রক্ষাত্রা গন্ধমাত্রাভাবক ৰজুমান ভাষিতি । ১৬।

शक्क मिन बहुद अद जादवमक् जामिजाह निरोठि कांडा मिन:। अवस्मिक ठावज्यमार्वः । ১० s

দশ্বেছিল নামকরণমাছ প্রস্লাপতিঃ কল্পপ:। ব্যরোমধ্যে খদেহাদ্য: প্রথমনজায়ত তং হিরণ্যকশিপুং বথা বিছঃ সা দিতিঃ বং অস্ত ডং হিরণাক্ষং বধা বিজ্ঞান তরো নাম অকার্যীদিতি। বথা তথরো রখাহারেণাবর:। বলা বিশেদ্ধিগভূতং বীজং

অমঙ্গল চিত্ন এবং অভাত বিবিধ ভয়ক্ষর ক্লকণ দেখিয়া কএকজন একভেনয়ভিন্ন দকল প্রজাই অতিশয় উদিয় হইল এবং মনে করিল বুঝি বিশ্ববিপ্লৰ উপস্থিত হইল ॥ ১৫ ॥

এ দিকে ঐ ছুই আদিদৈত্য ছুই প্রকাশ্ত পর্বত তুল্য এবং পাষাণের ন্যায় কঠিন কাম হইয়া দিন বৃদ্ধি পাইতে লাগিল, তাহাতে তাহাদের পূর্ব্ধসিদ্ধ আদ্মপৌরুষ আপনা হইডে প্রকাশমান হইতে লাগিল ॥ ১৬ ॥

তাহাদের মস্তকস্থ অর্থময় কিরীটের অগ্রভাগ অর্গ স্পর্শ করিল এবং ছই জনেই সমস্ত নিক্ অবরুদ্ধ করিয়া কেলিল, আর উভয়েরই হস্তে অঙ্গাদি ভূষণের দীপ্তি এবং কটিতটে শোভন কাঞ্চীর শোভা প্রকাশ পাইতে লাগিল কিন্তু চরণাঘাতে পদে পদে ভূকস্প হইতে লাগিল এবং কটিদেশ দারা যেন দিবাকরকে অতিক্রমণ করিতে উদ্যাত হইল ॥ ১৭॥

অনস্তর প্রজাপতি কণ্যপ তাহাদের সুইজনের নাম করণ করিলেন, তাহাতে তক্ষধ্যে যে ব্যক্তি কণ্যপের বদেহ হইতে প্রথমে জন্মিয়াছিল প্রজা সকল তাহাকে হিরণ্যকশিপু বলিয়া এবং দিতি ঘাহাকে অথ্যে প্রস্ব করেন তাহাকে হিরণ্যক্ষ বলিয়া জানিল। কর্মাৎ ঐ মুই দৈত্য ব্যক্ত, ভাহাদের মধ্যে অথ্যে যে ভূমিত হয় ভাহার নাম হিরণ্যক্ষ এবং যে শেষে নির্গত হয় ভাহার নাম হিরণ্যক্ষ প্রস্বাধী বিশ্বাত হইল।

उर देव स्त्रिमाकभिन्द विक्रं: शका यः छः स्त्रिमाकमम् गर्विष्ठः ॥ २৮ ॥ চক্তে হিরণ্যকশিপুর্মোভ্যাং ক্রমাবরেশচ। বলে সপালান্ লোকাংক্রীনকুভোয়্পুরুক্তাঃ ॥ ১৯॥ হিরণ্যাকোহসুক্তক প্রিরঃ প্রীতিক্শবহং। গদাপাণিদিনং যাতো বুযুৎক্ষু গয়নুশং ॥২০॥ णः वीका कुःमहत्ववः तनश्काक्षेत्रं मृत्युतः । रिक्षप्रस्ता खका स्केष्टमनाखे मेहानेपरे ॥ २० ॥ मरनावीर्यावरतार निक्रमनुगामकूरणांक्यः । जींजा निलिनारत रमवाशार्क्वछा हैवार्यः ॥ २२ ॥

व्यवस्थामी ।

ভবতো গর্ত্তো স্তির্কেশ বিপ্রায়াদিতি পিওসিদ্বিস্মরণাৎ অতঃ স্থদেহাং পূর্কং যো লাভঃ ভভ হিরণাক্শিপুরিতি দিভিঃ প্রথমং ষমসূত তম্ভ হিরণ্যাক ইতি নামকুত্বানিতি । ১৮ ।

দোর্ভ্যামুদ্ধতঃ এক্ষবরেপাকুতো সৃত্যা: ॥ ১৯ ॥

ज्ञानः युक्तः ॥ २० ॥

कु:बर्टा अर्टा (न्टर्गा वक द्रवर्ष्ट्वी कांकनमरत्री नृत्युरती वक्ष । व्यव्या अवस्थि गर्वा (यन व २) । त्रमत्र। त्नीर्राण वीर्षाण वरनम वरतम खेरिजिक्स नर्सिक्स अभूगार मित्रकूनः मिनिनारत नीमा वस्तुः । २२ ॥

क्रिविचना **थ**ठक वर्षी ।

পূষ্ণাং পরিক্ষরং। বৌ তলা ভবতো গর্ক্তে। স্তিক্ষেশবিপর্ব্যয়াদিতি পিশুনিভিমরণাৎ পিতৃক্লমেণ ছিরণাকনিপুর্জোষ্ঠঃ পিআ কশাপেন তত্তৈবাদাবাহিত্থাং। তথা মাতৃক্রমেণ হিরণ্যাকো জেটঃ মাত্রাদিতা ভততিখাদৌ প্রস্তম্বাং। এবং ক্রমবৈবিধান ছরোরপি জ্যেষ্ঠত্তে পিড়ঃ প্রাধান্তাৎ হিরণ্যকশিপুরের স্বোষ্ঠত্তেন বাছিকঃ । ১৮ ।

দোর্জ্যাং বাত্রলেনৈবেতার্থঃ। এক্ষবরেণ চেতি চকারাৎ এক্ষবরোহণি তত্ত সহায়ে।হত্তিভার্বঃ । ১৯।২০।২১। मत्ना वीर्यावदेवस्थात्नावन त्रव्यन त्रव्यावदेनक्रश्तिकः शक्तिकः व्यनुगाः निवस्नाः । २२ ।

তাৎপর্যা। হিরণ্যকশিপু দিতির গর্ম্ভে প্রথমে জন্ম গ্রহণ করিলেও যে শেষে ভূমিষ্ঠ হয় তাহার কারণ এই, গর্ত্তাধান সময়ে যোনি পুষ্পে শুক্ত প্রবিষ্ট হইয়া যদি ছুই বিন্দৃতে বিভক্ত হয় ভাহা হইলে यमक मुखान रुग, (महे हुई विन्तू खुक यथन मुखानकारण शतिनक रुहेश। गुर्द रुहेरक निःक्छ रुप्त छथन পিতৃদেক কৰে যে বিন্দু অগ্ৰবৰ্তী হয় ভতুৎপন্ন সম্ভান 'যদিও অংগ্ৰ' কলে তথাচ প্ৰসৰ সময়ে সন্মুখৰ বালককে উন্নত্তন করিয়া নিঃস্ত হইতে পারে না, হুজরাং পরবর্তি শুক্রবিন্দুজাত সন্তানই প্রসূত হয়। অতএব মাতৃক্রমে হিরণ্যাক জ্যেষ্ঠ হইলেও পিতৃক্রমের প্রাধায় প্রযুক্ত হিরণ্যকশিপুই জ্যেষ্ঠ হইল ।১৮॥

অথান্ধ হিরণ্যকশিপু খীর বাছবলে উদ্ধৃত এবং এক্সার বরে অমর হইয়া লোকপাল নহ জিলোকীকে

প্রাপনার বশবর্ত্তি করিল। ১৯।

তাহার অনুক হিরণ্যাক তাহার অভিশয় প্রিয়পাত্র ছিল এবং অমুদিন তাহার প্রীতিকর কার্ব্য সম্পদ্ধ করিত, সে গদা এহণ করিয়া যুদ্ধ বাসনায় সমরাম্বেশ কয়ত এক বিবস অর্থে বিরা উপস্থিত व्हेल । २०॥

छारांत शक्यत्व कांकेनमञ्ज मृशूत भंकाश्चमान अवः शतात्वाण देवकप्रकी माता लचमाना, आत करक नक्की गमा कक हिना अवर (म चकाक कूत्रोह (याम भगन क्तिएकहिन ॥ २) ॥

व्यश्र त्यांका कीका अवः क्य बावा नर्किष्ठ छ निवाद्रण अवः व्यक्ताछत्र रहेगाहित। छाहात्क দেখিয়া দেবগণ, গরুড় দর্শনে বজাপ অহিকুল ব্যাকুল হয় ভজাপ ভয়ার্ড হইয়া সুকায়িত হইলেন ॥২২॥ স বৈ তিরোহিতান্ দৃষ্ট্বা মহসা স্বেন দৈত্যরাট্। সেন্দ্রান্ দেবগণান্ ক্ষীবানপশ্যন্ ব্যনদদ্ভূশং।
ততো নির্ভ: ক্রীভিষ্যন্ গন্তারং ভীমনিশ্বনং। বিজগাহ মহাসন্থো বার্দ্ধিং মন্ত ইব দিপঃ॥ ২৩॥
তিন্মন্ প্রবিটে বরুণতা সৈনিকা যাদোগশাঃ সমধ্যঃ সসাধ্যমাঃ।
অহত্যমানা অপি তদ্য বর্চনা প্রধর্ষিতা দ্রভরং বিহুক্তবৃং॥ ২৪॥
সবর্ষপ্গাকুদধে মহাবলশ্চরমহোমীন্ শ্বসনেরিতামূতঃ।
ক্রেক্যাভিজ্পে গদয়া বিভাবরীমাসেদিবাং স্তাভ পুরং প্রচেতদঃ॥ ২৫॥
তত্তোপলভ্যাহ্রলোকপালকং যাদোগণানাম্যভং প্রচেতদং।
সায়ন্ প্রলক্ষ্ণ প্রণিপত্য নীচবজ্জগাদ মে দেহধিরাজসংযুগং॥ ২৬॥

जीधतयांगी

বেন মহসা তেজসা তিরোহিতান্ দৃষ্টা কীবা মতঃ নপশান্ সন্। ক্লীবানিভি পাঠে পৌক্ষহীনান্ ৷ ২০ ৷

সরা অবসরা ধীর্বেষাং। বর্চসা ভেজসা প্রধর্বিতা অভিভূতা: সন্ত: ॥ ২৪ ॥

মহোমীন অভিজয়ে। মৌৰ্ব্যা মারয়ভীতি মুর্বং কাঞ্জিয়সং তল্মধা। যথা মুর্বা নাম তৃণ বিশেষঃ তল্মর রজা দৃঢ়নিবদ্ধরে-ভার্থঃ। বিভাবরী সংজ্ঞানাসেদিবান্ প্রাপ্তঃ ॥ ২৫ ॥

অসুরাণাং লোক: পাতালং তৎ পালকং। প্রলক্ষ্ উপত্সিতুং প্রণিপত্য ॥ ২৬ ॥

बिविधनाथहळावळी ।

न भक्त मन कीवान मखान क्रीवानिक भार्क दशीकवरीनान् ॥ २० ॥

অপ্রতিযোজারং দশদিকু কাপি কমপ্যদৃষ্ট্। স্বীরমহাবলজ্যোত্মণাত্তথো বারিধি মধ্যে কথঞিং কশ্চিমা তিঠেতেন সহ যুজো-বেহত্যাকাজক্ষা বাহিং অগাহে ॥ ২৪ ॥

বর্ষপূগান বর্ষসমূহান ব্যাপ্য মহোমীনের গণয়া কলে চলন্ চপলং মৌর্বং কাঞ্চিল্যং মুর্বানাম তৃণবিশেষো বা তরায্যা। অহো অলমধ্যে কাচিৎ পুরী বর্ততে ভাদিমাং প্রবিশামীতি বিভাবিরীসংজ্ঞাং প্রাপ্তঃ ॥ ২৫ ॥

অনুরলোক্ত পাতাল্ত পালকং প্রলক্ষুপ্হসিতৃং প্রণিপত্য ॥ ২৬ ॥

ইল্রের সহিত দেবগণ সাথ তেকে অন্তর্হিত হইলে কাহাকে দেখিতে না পাইয়া ঐ দৈত্যরাজ হিরণ্যাক্ষ অতিমাত্র মন্ত হইল এবং বারস্থার গর্জ্জন করিতে লাগিল। কিয়ৎক্ষণ পরেই আপনি নির্ত্ত হইয়া মন্ত মাতঙ্গের ন্যায় জল ক্রীড়ার্থ উৎস্ক হইয়া ভয়ন্ধর স্বকারি গভীর সাগরে গিয়া অবগাহন করিল। ২০॥

সে জলে প্রবিষ্ট হইলে জলাধিপতি বরুণের সেনাশ্বরূপ জলজস্তুগণের বুদ্ধি ভয়ে অবসমা হইল, আপনাদিপের প্রতি আঘাত না হইলেও দৈত্যের হুঃসহ তেজে অভিভূত হইয়া দূরে পলায়ন করিতে, লাগিল ॥ ২৪ ॥

যাহা হউক, ঐ নহাবল দৈত্য সমুদ্র মধ্যে বরুণের বিভাবরী নামে পুরী প্রাপ্ত হইয়া বছ বংসর যাবং ওপ্পধ্যে বিচরণ করিল। তাহার ভয়ানক নিখাস বায়ু বারা মৃহ্মুছ বৃহত্তর তরঙ্গ হইয়াছিল। সে কৃষ্ণবর্গ লোহময়ী গদা হারা সেই সকল তরঙ্গের উপর আহাত করিতে লাগিল। ২৫॥

অনস্তর সাগর মধ্যে জল জস্তুগণের প্রধান এবং পাতোল লোকের পালক বরুণদেবকে দেখিতে পাইয়া সগর্বে উপহাস করিবার নিমিত্ত প্রধাষ করিল এবং নীচবৎ এই বাক্য কহিল। অহে অধিরাক! আমাকে যুদ্ধ দিতে আজা হউক॥ ২৬॥ ত্বং লোকপালাধিপতির হচ্ছুবা বীর্যাপতো ফুর্মন্বীরমানিনাং।
বিজিত্য লোকে কিল দৈত্য দানবান বজাজস্মেন প্রায়জৎ প্রভো ॥ ২৭ ॥
স এবমুৎসিক্তমদেন বিধিষা দৃঢ়ং প্রলজ্ঞা ভগবানপাংপতিং।
রোবং সমুত্বং শময়ন্ ত্বয়া ধিয়া ন্যবোচনকোপশমং গভাবয়ং॥ ২৮ ॥
পশ্যামি নান্যং প্রেষাৎ প্রাতনাদবং সংযুগে ত্বাং রণমার্গকোবিদং।
আরাধ্যিষ্যত্যক্তর্মভিত্তং মনন্বিনো যং গৃণতে ভবাদৃশাং ॥ ২৯ ॥
তং বীরমারাদভিপদ্য বিত্ময়ঃ শয়িষ্যুদে বীরশয়ে শভির্ভঃ।

श्रिववामी ।

যদ্ব সাজাজ সংগ্রন ভগবানধন্ত । ২৭ । উপশমং বৃদ্ধাদি কৌতৃ কালুপরমং । ২৮ । যুদ্ধমার্গনিপুণং আং য ভোবরিবাতি ইহি গত্ত গুণতে স্তবস্থি । ২৯ । আরাং শীলং। বিশ্বয়ং নইগর্কাং বীরশয়ে রণাক্ষার পাণি বরাহাদাবতারান । ৩০ ॥

क्रमगमर्खः

ছমিতি যুগাকং । ২৭।২৮ । অসুবলোকা: বানৰপ্ৰায়লনা:। তং গৃহীবানমভূতো। বলণভালুরোছলিকে ইতি দশমাৎ ৫২৯।০০।

बियमानहक्रवर्छी।

অয়জভাবানিতি পৃথ্যাকাং বিজিতোতি বিপরীতলক্ষণা তেন তদানীং দৈত্যানামভাবাৎ সহৈরপি রাজপুরং কর্তুং শক্তেম তেন সংপ্রতি মাং জিতা পুনরপি রাজপুরং ক্রিতি ভাব:। যথা ক্তোহণি রাজপুরতদৈব তে সিদ্ধাতি বণি মাং অসমীতি ভাব: ॥ ২৭ ॥

খ্যা ধিরা শময়য়িতি অত্র মে রোবোন ফলবান্ ভবিষ্যতীতি পরামর্শেনে তার্থ:। উপশমং গতা বরং সংপ্রতি প্রবিষ্ঠাতিত পরামর্শেনে তার্থ:। তেন যৌবনাবস্থায়াং যদি ছাং প্রাক্সাং তদা ছাদৃশানাং সহস্রমণ্যজেষামিতি ভাব:। বহা উপশমং সন্যাসং। তেন সন্মাসঞ্চেরাফরিবাং তদাধুনাণি ছামজেষামিতি ভাব:। ২৮॥

ত হি মে রণকণ্ডু রাতঃ কথং নিভার ভাতাহ পশ্যামীতি। তথাৎ হে জাত্রবর্ত সং ইছি গছে। মনস্থিনঃ শুরা গৃণতে রণকণ্ডু রা-পহজ্জেন ভবভি । ২৯ ॥

নমু তং ক্তিভি দিনৈ ল'ব্যা ইতি স্তত্তাৰ তমিতি আরাৎ পঞ্চিবরেৰ দিনৈরিতার্থ:। বিশ্বরে। বিগতগর্বা: নন্ শরিবানে সংপ্রতি

হে প্রভা ! আপনি লোকপালদিগের অধিপতি এবং মহা যশসী, বীরাভিমানি হুর্মাদ ব্যক্তিদিগের বীর্য্য নাশ করিয়া থাকেন, ইহলোকে দৈত্য দানবদিগকে জয় করিয়া রাজসূয় যজ্ঞ করিয়াছেন, এক্ষণে আমার সহিত যুদ্ধ করুন দেখি ॥ ২৭ ॥

ঐ দৈত্য এইরূপ উপহাস করিয়া ভর্মনা করিলে জলাধিপতি বরুণের অতিশয় জোধোদয় হইল,
কিন্তু ঐ দানৰ মদোৎসিক্ত,ভাহার সহিত বলে সমর্থহইবনা, আপনার বৃদ্ধি দারা ইহা বিবেচনা করিয়া
ক্রোধ শান্তি করিলেন এবং কোমল সম্বোধন পূর্বক কহিলেন, হে অস! আমরা সম্প্রতি যুদ্ধাদি
কৌতুক হইতে উপরত হইয়াছি॥ ২৮॥

অধিকন্ত হে অহরজেষ্ঠ ! তুমি রণবিষয়ে হৃপণ্ডিত, তোমাকে যুদ্ধ দিয়া সম্ভাউ করিতে পারে ।
এমন কোন ব্যক্তি নয়ন গোচর হয় না, কেবল পুরাতন পুরুষ ভগবান রণ করিয়া তোমার সভোষ ।
অত্মাইতে সমর্থ, অতএব তুমি ভাঁহার নিকট গমন কর, ভোষার মত বীর পুরুষেরা রণকণ্ডু বিনোদার্থ
ভাঁহারই তাব করিয়া থাকেন য় ২৯ য়

অপর তিনি মহাবীর, তাঁহাকে প্রাপ্ত হইলে বোধ করি তোমার গর্ক বিন্ট হইবে এবং তুমি কুকুর

यखंबिधानामम् जाः धामाख्या क्रिशानि शत्त मम्मू अरहण्डा ॥ ७०॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংশ্যাং সংহিতায়াং বৈশ্বাসিক্যাং ভৃতীরক্ষমে হিরণ্যাক্ষ দিখিবারে আদিদৈত্যোৎপত্তির্নাম সপ্তদশোহধায়েঃ ॥ * ॥ ১৭ ॥ * ॥ /

শ্রীনৈত্রের উবাচ ॥
তদৈবনাকণ্য জলেশভাবিতং মহামনান্তবিগণয্য সুর্মাদঃ ।
হরেবিদিদ্বা গতিমঙ্গনারদান্তেশাতলং নির্বিবিশে হুরাছিতঃ ॥ ১ ॥
দদর্শ তত্রাভিজিতং ধরাধরং প্রোনীয়মানাবনিমগ্রাদঃ ট্রয়া।

शिववायी

। •। ইতি ভৃতীরে সপ্তর্শ: । •।

আঠাদশে হিরণ্যাক ধরোজর্ড্ বরাহরো:। নির্কিশেবং মহাযুদ্ধ দেবকোভি নিরপ্যতে ॥ • ॥ প্রভিবোদ্ধারং শ্রুবা মহামনা: শরিবাস ইতি বহুক্তং তহিগ্ণবা অগণরিদ্ধা বতো হুর্দ্মর: ॥ ১॥ অভিতো অরতীতি অভিজিৎ তং শীহরিং প্রকর্ষেণার্দ্ধং নীরনানা অবনির্বেন। অগ্রদংট্ররা দংট্রাপ্রেণ। স্বক্ষচং হিরণ্যাক্

क्रमनमर्छः ।

। •। ইতি শ্রীমন্তাগৰত তৃতীরক্তরে গ্রীকীবর্গোখানিকৃত ক্রেবসক্ষর্তনা সপ্তরশোহ্ধ্যার: সমাপ্ত: । •। বিগণহা বিশেবেশ গণরিদ্ধা সম্মত্য । ১ । অফশক্রিয়েতি অকু: সামানাধিকরণ্যং পুংবন্ধক ভাবিত পুংক্ষাৎ । ২ ।

श्चित्रमाथहरू वर्षा ।

ভু গর্করোগলীড়িতো রণকণ্ঠু হোবেগেন বং ন শেবে ইভি ভাব:। বীরশরে বীরা: শেরতে বত্র ভত্র রণাঞ্জিরে ইভি তব শ্বাণি সৃষ্টিভা ভবিবাভীভাবে ভয় চরণায়। দ্বর্ণকারিণ: পরিচারকা অপি বহবো ভবিবাভীভাবে শভিরিভি নবেবঞ্চেভাকারং আপর। ব্ধায়ুনৈব ব্রহ্মাণভাত্তর্কবিরপি অবিবা তং নিভাশা তেন সহাহং বোৎতে কথং স যাং হন্যাদিভি বৃহং পশ্যবৈভি ভ্রাহ ব ইভি প্রশান্তরে নাশার রপাণি বরাহ বৃদিংহাল্যাকারান্ধ্যে ইভি সামান্তে ভানামি বাস্ক কেন রূপেণ ব্যব্যাভীভি বিশেষত্ব ন জাভামীভার্যঃ ৩৭ ৪

। ♦ ॥ ইতি সারার্থদিক্সিং হবিশাং ভকচেতসাং। তৃতীরেংমিন্ স্থেদশং সম্বভঃ স্বভঃ ॥ ● । অভ্যান্ত বরাহকাপুথকি প্রত্যুক্তানক্সং। অটাদশে গ্রায়ুক্তং প্রস্কৃতিনিয়ুচাতে ॥ ● ॥

অভিবোদ্ধারং শ্রুষা মহামনাঃ সোৎসাহতিতঃ শহিষ্যসে ইতি অশাতার ইতি বজ্কং তৎ ধলু স্বধস্যাসম্ভবদনিশ্চরাৎ বিগণবা জগণরিখা তমহং ক আব্যামীত্যবিধান বৈধাৎ প্রোণ্টারারণাৎ পৃটাৎ হরের্গতিং প্রনং বিদিখা রুসাতলং গর্ডোদমের প্রবিদেশ ৪১১ পূর্ব্বোক্তে বরাহ্চরিতে বুছলীলা বিশেষতো ন বিবৃত্তেতি ভাং বিবরীত্যাহ দদর্শেকাারি। অভিতো জয়তীভালিতং অভি-

গণে পরিবৃত হইয়া সমরাঙ্গণে শরন করিবে। ফলড: ভগবান্ সাধুগণের প্রতি অমুগ্রহ বিভরণ মানসে ভোমার ভূল্য অসাধু পুরুষদের বিনাশার্থ বরাহাদি অবভার গ্রহণ করিয়া থাকেন ॥ ৩০ ॥

॥ # ৷ ইতি তৃতীয়ে দপ্তদশ ॥ # ॥

व्यक्तीमणांशादम ध्वांत्र विवासकाति वहार (सटवत महिन्छ रित्रशादकत युद्ध 🖁 • 🛊

त्म चारन मर्ककती ध्वाधावी क्वाहक्रणी हति छाहात त्नख त्माहक हतेता तम डाहादक छेथहान क्वित्रा

280

मुक्क सङ्गा चक्र राजिक शिक्ष क्यां क्यां विवाद विवाद

विश्ववामी।

তেজাংসি অফণ প্রিয়াযুক্তং য় ওতেনাক্ষা নেত্রেণ মুক্ষ হা তিরন্থ কাষে। আছো চিত্রং বনগোচরো মুগঃ বারিচরো বরাইঃ । ২ ।

এহি আগত্র রেদীকসাং পাতালবাসিনাং নোহ্যাকং সমর্পিতা। অক্সণা পাতালাবভরণমভা ন ঘটত ইতি ভাবঃ। হিরণাংক্ষেণাধিক্ষেপার্থং প্রযুক্তাপি ভারতী বভতো ভগবভং তৌতি। তথাহি বনগোচরঃ জলণমনঃ জ্রীনারারণঃ স এব যোগিভি মুণ্যাতে
মুহীন্ বা হস্তং মুগয়তে ইতি মুগঃ। অক্সং নাতি জ্যো ব্যাৎ ধে সর্ক্সেইতার্থং। সুরা অধ্যা ব্যাৎ হে সুরোভ্যা। মমেক্ষ্মাণভাবি

क्रमञ्चल

হৈৰভাভাবভাৰা মাত্ৰছমেৰ বাৰ্থেন তদীৰ বাকোন বোধহঁতি আহেতি ত্ৰিভি:। বসৌৰ্নামিতি সংপ্ৰতিভূ বিভিতে খুৰ্গএবা-

श्रीविधनाथहळ्वर्शी।

জিলক্তাধিলৈ বতং বা। প্রকর্ষেণার্জং নীয়মানা অবনির্বেন ডং। স্বরুচঃ ছিলগাক্ষেড্ডাংসি বনগোচনঃ বারিচরঃ। ছিলগা-কেণাধিকেপার্থং প্রযুক্তাপি সরস্বতী বস্ততো ভগৰস্তং ভৌতি। বনগোচনঃ অসশসনো নারারশঃ স এব মুনিভিমুগ্যভাষু গঃ। যথা বনে বিবিক্তারণ্যে এব নতু গ্রামে ভবডির্দুর্শনার্ভ্রাধনগোচনঃ ॥ ২ ॥

বিখকলা ব্ৰহণা ব্ৰসেণা ব্ৰসেকসাং বিভজিপরিণামেন রসৌকোভ্য এবার্পিতা অন্তথা পাতালাবতরণমন্ত। ন ঘটরত ইতি ভাব:। ঈক্ষত: ঈক্ষমাণং মামনাদৃত্য অনয়া সহ পক্ষে ন বিদাতে লো বশাং হে সর্বজেত্যর্থ:। নো ইতি নিবেধে মহীং মা বিম্পেত্যর্থ:। হে বিশ্বক্ষ ইশুপধ্যাৎ ক:। ইরং মহী অর্পিতা ভূত্যমূপহারী কতা ন কেবল মিরমেব কিছু নোহ্যাকং খাত মললং রালাাদিকং অনমা সহৈব বাজসি প্রাপ্যাসি ন: খণ্ডীতি অনচিচেতি বাশরীতিচ সকারব্রসিদ্ধের্মাধ্যাদ্বং। নহু ক্ষামান্তং মহীং দ্বাসি ভ্রাহ

কহিল, কি আশ্চর্যা ! এটা যে জলচর বরাহ। ঐ সময়ে ছগবান্ দন্তাগ্র ছারা অবনিকে উন্নয়ন করি-তেছিলেন,দানব দর্শনে তাঁহার নয়নদ্ম ক্রোধে রক্তবর্ণ হইল তদ্ধারাই ঐ দৈত্যের তেজঃ হরণ করিতে লাগিলেন॥ ২॥

কিন্ত ঐ দৈত্য তাহাতে মনোযোগ না করিয়া অধিকেপ পূর্বক সম্বোধন করিয়া কহিল। অরে অজ্ঞ । এ দিকে আয়, আর ধরা ধারণ করিস্ না, পরিত্যাগ কর, বিশ্বস্তী পাতালবাসি আমাদিগকে ইহা সমর্পণ করিয়াছেন, তাহা না হইলে অবনি কেন পাতালে অবতরণ করিবে, আমার অঞ্জে কি এই পৃথিবীর সহিত কলাণে লাভ করিতে পারিবি !।

(তাৎপর্য) হিরণ্যাক যে ভগবান্কে অধিক্ষেপার্থ বাক্য প্ররোগ করিল, বস্তুতঃ ওদ্বারা বাক্য রূপা সর্ঘতী ভগবানের তাব করিতে লাগিলেন। হিরণ্যাক যে তাঁহাকে "বনগোচরো মুগ" অর্থাৎ জলচর বরাহ বলিয়া উপহাস করিয়াছে, তাহার প্রকারান্তরে এই অর্থ হয়, বনগোচর শব্দের অর্থ জলশারী প্রীনারায়ণ। মুগ শব্দের অর্থ অবেষণ অর্থাৎ জলশারী নারায়ণ যোগিগণের অবেষণীয়। অপর সে যে ভগবান্কে অন্ধ বলিয়া সম্বোধন করে তাহারও এই অর্থ হয়, তা শব্দে জ্ঞান, হাহা অপেকা তা অর্থাৎ অভিত্ত কৈই নাই, তুমি ডাদৃশ পুরুষ, অতএব তুমি সর্বত্ত। আর হুরাধ্ম বলিয়া যে সম্বোধন করে তাহারও এই কর অর্থাৎ দেবগণকে অব্য বলিয়া বোধ হয়, অতএব তুমি সেব্বতা। আর হুরাধ্ম বলিয়া বোধ হয়, অতএব তুমি স্বত্তি পারের বাহা আহারও এই মত অর্থ হয়, অতএব তুমি সেই পুরুষ অর্থাৎ হরোন্তম। ভংপরে যাহা যাহা বলে তাহারও এই মত অর্থ হইতে পারে, তুমি এই পৃথিবীর সহিত বর্তহান হইয়া আমাদের সমন্ত মঙ্গল অর্থাৎ রাজ্য প্রাপ্ত

নঃ স্বস্তি যাস্তসনয় মনেকতঃ হ্রাধমাসাদিত শ্করারতে ॥ ৩ ॥
ছং নঃ সপত্রৈরভবার কিং ভূতো যো মারয় হস্ত্যহ্রান্ পরোক্ষতি ।
ছাং যোগমায়াবলময়পৌরস্বং সংস্থাপ্য মৃঢ় প্রমৃকে হ্রচ্ছুচঃ ॥ ৪ ॥

विभवतायी।

সতঃ নামনাদ্ত্যাণি অমনয়া সহ বর্ত্তমানঃ নঃ অম্বনীয়ং স্বস্তি সমস্তং মঙ্গলং রাজ্যং বাঞ্চি প্রাঞ্জ্যি নাত্র সন্দেহঃ তথাপ্যস্ত্ কুপরা বিমুক্তেতার্থঃ। স্থাসাদিতা লীলয়া স্বীকৃতা শুক্রাকৃতি র্যেন ॥ ৩ ॥

অভবার নাশার ভ্তঃ পূট:। বস্ত তম্ব মোকার ভ্তো গৃতঃ আলিতঃ ইতার্থ:। যো ভবান্ পরোকেণ চৌর্যোণ অরতীতি তথা।
বস্ত তম্ব দ্বতএব স্থিম অরতীতি। সংস্থাগ হয়। বস্ত তম্ব বোগমায়ারপমচিন্তাং বলং বস্ত। অরং পৌরুষং যুমাৎ তং আং
সমাক্ স্থাপরিদ্ধা ভক্তা ক্লি স্থিরীকৃত্য ইতার্থ:। হে মৃঢ় প্রমৃঢ়ান্ প্রাতি আপারতীতি তথা। প্রাবিতি ধাতু:। স্ক্রনাং
তচঃ সংসার হ্থানি মৃকে নাশরামি। যুত্তং অর্ক্রির্বানিশি মোচ্যুসীতি ভাব:। ৪ ॥

क्रममम् छः।

নরোর্কাস: সম্পন্ন ইতি গমাতে। রসান্না অপি পৃথীবিবরকাৎ নঃস্বতীতাত্ত অনচি চেতি বা শরীতিচ স্কার্থরসিদ্ধে ব্যাথ্যাত্বরং ॥৩ বাক্তবার্থে মৃঢ়ান্ ভক্তিবিবশান্ প্রাতীতি ॥ ৪। ৫॥

अविधनाष ठक्कवर्शी।

মম ঈক্ষঃ ঈক্ষণং তন্মাৎ মৎ ক্র্মাকাৎ ক্লপাবলোকাদীদৃশাদ্ধেভোরিভার্থঃ। সুরা অধ্যা বন্ধাৎ হে স্থরোত্তম আগাদিতা প্রাপিতা অভক্তেভো দন্তা সেবার্থং পুকরাকৃতি র্থেন ॥ ৩॥

সপদৈ দিবৈনা হি যাকং অভবাক্ষনাশার বং ভৃতঃ কিং পালিতঃ বো মার হৈব হস্তি অতঃ পরোকং অরতি নতু সাক্ষাৎ তং বাং বোগমারের নতু দৈহিকং বলং যত তং সংস্থান হয়। হুজাং ওচঃ শোকাশ্রনি প্রমুলামি পকে অভবার মোকার ভৃতঃ গ্রতঃ আশ্রিত ইতার্থঃ। কিন্তু মাররা ক্রপরা অহ্বরানপি বোহন্তি বকর্ত্ক হননেন তেরামপি সপাতিং করোভি। অভএব ক্রপাধিক্যান্দের পরোক্ষাপি সর্বেরামপ্রত্যক্ষীভূতে।পি অর্থনির প্রসালনাক্ত বিবাহকার পরোক্ষাপি সর্বেরামপ্রত্যক্ষীভূতে।পি অর্থনির প্রেরাম্প্রত্যক্ষাধনের প্রত্যক্ষাধনের প্রত্যক্ষাধনের প্রসালনাক্ত হত বাং বিবাহকীয়ালি তদপি অরং অনহ্মপং যত তং বাং সমাক্ স্থাপমিদা প্রহ্ণরমন্দিরে ভক্ত্যা হিরীক্ত্যভার্থঃ। হে মৃচ্প্রমৃত্যান্ প্রাতি বভক্তিদানেনাপ্যায়র তীতি তথা। প্রাপ্রের্বিহ্বরা হতঃ সংসারহঃথানি মৃল্লে নাশ্রামি বতবং অর্জ্ ক্রিক্রবানপি মোচ্যুসীতি ভাবঃ ৪ ৪

হইতে পারিবে সন্দেহ নাই, তথাপি আমাদের প্রতি কুপা করিয়া এই ধরাকে পরিত্যাপ কর,, তুমি কেবল লীলাবশত: এই শুকর শরীর স্বীকার করিয়াছ॥ ৩॥

তাৎপর্য। আমাদের পরমশক্রে দেবসজ্ঞ আমাদের বিনাশার্থ কি তোকে আশ্রয় করিয়া থাকে ? তোর ক্ষমতা কি ? পরোকে থাকিয়া জয় করিস্, সর্ব্রদাই ত দেখিতে পাই মায়াযোগে অহুর সংহার করিয়া থাকিস্ অভএব যোগমায়াই তোর বল, দৈহিক বল নাই, যাহা হউক, আজি ভোকে সংহার করিয়া হুহুদোণের শোকাঞ্জ মার্জন করিব।

আমাদের বৈরিবর্গ অমর সকল মোক্ষার্থী হইয়া ভোমাকে সেবা করিয়া থাকে, তুমি দূরে থাকিয়া জয় কর, ভোমার যোগমায়া রূপ অচিন্তা বল, ভোমার নিকট পৌরুষ অতি তুচ্ছ পদার্থ, ভোমাকে ভক্তিবারা হালয়ে ধারণ করিয়া হুছালাণের সংসার ছঃখ ধণ্ডন করিব ॥ ৪ ॥

प्रित नः चिटि शम्या नीर्व निर्मायस्य हा उता (यह प्र्याः । विलः इत्रस्तु प्रदाः दिवेह दिन दाः चत्रः नर्द्ध नष्टि विश्वस्त मृत्राः ॥ ८ ॥ न प्रतादाधित प्रस्न का त्या प्रतादेश का त्या स्वाद्ध । टिलानः स्वादित स्वाद्ध स्वादित स्वाद्ध । । कः निः नत्रसः निल्लान मुख्या । हित्र गुरुष्ट । । ।

विश्ववामी।

আমত্ত্ৰচাত গালয়। অশীৰ্ণং শীৰ্ষং বস্তথা ভূতে ছবি অধং স্থিতে সতি বে তুভামধুনা বলিং হবভি নবীন। জকা: বে চ পুৰ্বেজ ভকা: ধবলো দেবাশ্চ তে সৰ্বেজ অধ্যামং বিনা এৰ অম্লান ভবিবাতি কিন্তু দৃচ্ম্লা ভবিবাতীত।ধা: । ৫।

স হরি: অরে ছ্রিকোনোর তোমরা: শ্রেবিশেষ। তৈজ্ঞামান: বাধমান: দংট্রাগ্রগভাং পৃথীং ভীতামালকা ভোদং চ্ক্জ-বাধাং ম্বন্ সহমান এব নির্গত: ক্রেব্: হত্তিনী বত্ত তত্ত অরিহ্রুক্জত: অমরৈনিমিওভূতৈ: তুলামান:। বধাঞ্তার্থগ্রাহিণাং ব্রুমানীনাং বাধাং দৃষ্ট্য অস্কুল্পারা পীডামান ইডার্থ:। ভোদং ম্বন্ ইভাভাগার্মেবার্থ:। ৬।

সলিব। রিগছিস্তঃ অমুগতঃ সন্ হিরণ্যবং কশিশাঃ কেশা বস্ত বৈত্যক। কবে। মকরঃ করালাদংট্রা যক্ত। অশনি ব্রিখনো যক্ত নিল

क्रमममर्जः।

স তুদ্যমানেতি। অত্র বাস্তবার্থেন তরো নির্গুচ্তক্তভাবদ্ধং স্পষ্টমেৰাদীক্তং ॥ ৬ ॥ তমিতি অত্র বস্তুতঃ কৈম্ভিকেনের শ্রীবরাহদেবক্ত হিরণ্যাক্ষক্ত চ তজ্জানাত্তরকাশি বাস্তবার্থক স্বভাবের পর্যাবসানং

श्चीविषमाधाळकवर्दी।

সংস্থিতে মৃতে সতি ন ভবিষাতি সরিবাতে পক্ষে অশ্বস্থা চাত্রাণি গদরা অশীর্ণং শীর্ষং বঞ্চ তত্মিন্ সংস্থিতে সতি যে ত্তামধুনা বলিং হরতি নবীনা জলা বেচ পূর্বে জলা খবলো দেবাণ্চ জে সর্বে শ্বয়মেব উদামং বিনৈব অম্বান ভবিষাতি কিছু দৃঢ় ম্বা এব ভবিষাতীতার্থঃ ॥ ৫ ॥

স্হরি: অবেদ্ধরত ত্রুজিভোমবৈশ্বদামান: পকেইবিত্রজিভিতে।ইমবৈবেব নিমিত্তৃতৈ স্বদামান: বণাশ্রতার্থাছিণাং এজানিশিং বাণাং দৃই। অত্কল্পরা পীডামান ইতার্থ: তোদং পাক্ষিত্রজ্জবাণাং মুবন্। পাক্ষিক্তৃত্তর্থ প্রাপ্তা সহমান ইভার্থ: । অত্ত এব গ্রাহেণ আহত: অহতত ক্রেণ্ড্জিনী ॥ ৩ ॥

তঃ ভগৰভঃ অহুজ্তোহ্মুণাৰন্ গভছিয়াং নিশ জ্ঞানামসভাষৰীরাণাং কিং বিগছি ভিং অপিতু নৈব নিল। প্রভিযোদারং দৃই ়া

ভূই অতি হীন বল, আমার হন্ত হ্**ই**তে এই গদা চ্যুতা হইয়া তোর মন্তক চূর্ণ করিয়া দিলে এখনি মৃত্যুমুখে পতিত হইবি, ভাহা হইলে যৈ সকল ঋষি ও দেবতা তোর নিমিত প্জোপহার আহরণ করিয়া থাকে, ভাহারা নির্দাল হইয়া আপনা হইতেই আর প্রকাশ পাইবে না।

প্রকারান্তরের অর্থ। আমার হস্ত হইতে চাতা গদা দারা তোমার মন্তক চুর্ণ হইবে না তাহাতে বরং হথে কবিছিতি করিবে। তুমি ঐ রূপ হইলে যে সকল ঋষি ও দেবতা তোমার নিমিন্ত পূজো-পহার আহ্রণ করেন, ভাহারা সকল ষ্বং উদ্যম না করিলেও তাঁহারা অমূল হইবেন না অর্থাৎ দূচ মূল হইবেন ॥ ৫॥

শক্রের এই প্রকার কটু জি রূপ তোমর (অন্ত বিশেষ) বারা অতিশয় ব্যথা জনিবলও ভণবান্
বরাহ দন্তাগ্র ছিতা পৃথিবীকে ভীতা দেখিয়া তাহা সহু করিলেন এবং কুন্তীর কর্তৃক আহত করী
যক্ত্রপ করেণুর সহিত জলাশয় হইর্তে নির্গত হয়, তাহার ন্যায় অবনিকে লইয়া সলিল হইতে
নিঃস্ত হইলেন ॥ ৬ ॥

ভগবান্ ষধন জল হইতে নিগতি হয়েন তথন মকর যেমন হতির অনুসরণ করে তথং ঐ দৈত্য

করালদংট্রোহশনিবিশ্বনো ত্রবীদগতব্রিয়াং কিং ত্বসভাং বিগর্হিতং ॥ १ ॥ স গাম্দস্তাৎ সলিলস্য গোচরে বিন্যস্য তস্যামদ্বাৎ অসত্ত্বং । / ু অভিকুতো বিশ্বস্কাং প্রসূত্রিরাপ্র্যমাণে বিবৃধৈঃ পশ্যভোহরেঃ ॥ ৮ ॥ পরাম্বক্তং তপনীয়োপকল্পং মহাগদং কাঞ্নচিত্রদংশং ।

विधवयामी।

জ্ঞানামসতাং কিং বিগহিতিমন্তি নিশাভয়াভাষাৎ প্লায়নং নাযুক্ষিভাৰ্থ:। বন্ধ ভন্ধ গতছিয়াং প্রাপ্তহিয়াং ন সন্তো বেভা তেবাং কুপালুনাং কিং বিগহিতং ন কিঞ্ছিং। অতঃ কুপালুড়াং দংষ্ট্রাপ্রিভঃ ভূমক্ষপার্থং কিঞ্ছিং প্লায়নমপি ন নিশিত্মিভার্থ:। বহা লোকোপকারায় ভূবসুদ্ধরভোহ্মুদ্রবন্মভূচিভং মহানো দৈতা আল্মানমেরাধিকিপভি। গভছিয়াং স্থাবৈক্পরাণাং অসভামস্থাকং কিং বিগহিত গণনাত্তি অপিতৃ নাভোব ধিপন্থানিতাত্রবীদিভার্থ: । ৭ ।

স ভগৰান বিশক্তলভিটুতে বিৰুধৈশ্চ প্ৰস্থানরাপূর্য্যমাণঃ। বিশক্তলাং প্রস্থাডিরিভি পাঠে বিশক্তলাং প্রস্তাভির্তিং অভিটুভঃ ইতি সলিলভোদন্তাৎ উপরি বাবহারগোচরে দেশে গাং বিজ্ঞাস স্বাসমাণার শক্তিং নিহিভবান্ অয়েন্তক পশাত এব ॥ ৮ ॥

পর। পৃষ্ঠতোধ্যুবক্তং লয়ং। তপনীয়োপকয়ং তুবর্ণভিরশং কাঞ্চনমন্ত চিত্রঃ দংশঃ ক্ৰচং ব্ ভং দৈতাং প্রচাপ্তমন্তাদ্ধ অধি-

ক্রমসন্দর্ভ:।

গমাতে॥ ৭।৮।৯॥

विविधना वहक वर्डी।

পলায়নং নাযুক্তমিতার্থ:। পকে গতা প্রাপ্তা দ্বীবৈন্ধেবাং ক্লপালুনাং বিগছিতিং অপিতৃক্তপালুদাদং ট্রাশ্রিতভূরকণার্থ কিঞ্ছিৎপলা-য়নমপি ন নিন্দিতমিতার্থ:। যবা লোকোপকারায় ভ্বমুদ্ধরতো ভগবতোহমুদ্ধবণমন্ত্রতিং মবানো দৈতা আত্মানমেবাধিকিপতি গতছিয়াং অবিধিকপরাণামসভামত্মাকং কিং বিগহিত গণনাত্তি অপিতৃ নাজ্যেব ধিগতানিতাব্রীদিতার্থ:। ৭।

পৃথীয়ং বিভেতীতোতৎ সহিত্স্য মমাহ্মেৰণ সহ যুক্ষং ন সাধিবতি স ভবান্ গাং পৃথীং সলিবত উলতাৎ উপরি গোচরে খনয়ন গোচরে দেশে বিজ্ঞা নিধায় তস্যাং গৰি অস্কং অশক্তিং ভ্রথাৎ বথা জলে সা নমজেদিতার্থ: বিশহুলা ব্রহ্মণা বিশহুলামিতি পাঠে প্রজাপতিভির্বিবৃশ্ধত প্রস্থানর ব্যামাণৈরাপূর্যামাণঃ। পশাভঃ পশাভ্রমবিমনাদৃত্য । ৮ ।

পরা পৃঠতো অত্যক্তং লগং তপনীয়োপকরং অর্থালভারং দংশং কবচং ছ্রুড়ে অদক্তং নতু স্টকেরিতি ভাব: অতএব ছ্রুক্তখ্র-

তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আদিয়া তিরক্ষার বচনে কহিল, আঃ! সজ্জাহীন অসৎ লোকের কিছুই গর্হিত নহে, নিন্দা ভয় নাই, হৃতরাং পলায়ন অষুক্ত নহে। তৎকালে ঐ অছর ভীষণ মূর্ত্তি ধারণ করিয়া-ছিল, তাহার কেশ গুলা কপিশ বর্ণ এবং দংষ্ট্রা অভিশয় করাল, আর সে বক্ত নির্ঘোষ ত্লা ধানি, করিতেছিল ॥ ৭ ॥

কিন্তু ভগবান্ তাহার প্রতি মনোযোগ না করিয়া তাহার সমকেই জলের উপরিভাগে পৃথিবীকে সংস্থাপন করিয়া তাহাতে আধার শক্তি নিহিত করিয়া দিলেন। ভগবানের ঐকার্য্য দর্শনে বিশ্বস্থা ব্রুলা তাঁহার তাব করিতে সাগিলেন, আর দেবগণ স্কাশাৎ আকাশ হইতে পুপার্ম্প্র হইতে লাগিল ॥৮॥

ধরা আধার শক্তি প্রাপ্ত ইরা জলোপরি সংস্থাপিতা হইলে ভগবান নিরুষেণে ঐ অস্থরের প্রতি মনোনিবেশ করিলেন। হে স্বর্ণান্তরণ ভূষিত এবং কাঞ্চনমর বিছিত্র কবছে স্বৰ্দু গাত্র হইরা মহতী গদা ধারণ পূর্বক সূরুক্তি বারা বার্ষার মর্ম স্থানে বাধা প্রদান করিতে করিতে পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতেছিল, ভগবান্ ভচ্চুবণে অভিশয় ক্রোধাষিত হইরা ভাহার উপহাদ শ্বাক্যের প্রস্থাতর মর্মাণাভীক্ষং প্রতৃদ্ধং ত্রুকৈ: প্রচন্তসমূত প্রহসং তঃ বভাবে । ৯ । প্রভিগবাসুবাচ ॥

সতাং বয়ং ভো বনগোচরা মূগা যুত্মবিধান মূগরে প্রামিদিংহান।
ন মৃত্যুপাশৈ: প্রতিমৃক্তস্ত বীরা বিকখনং তব গৃহুদ্ভাভত । ১০ ॥
এতে বয়ং ন্যাসহরা রসেকিসাং গতছিয়ো গদরা ত্রাবিভাতে।
তিন্তামহেপাশি কর্পঞ্চিনাকো ভেয়ং ক যামো বলিনোৎশাদ্য বৈরং ॥ ১১ ॥

श्रीपद्मामी ।

ক্ষেপাদিককাত্মকরণমাত্র:। বৈভাব।কাভীতানাং দেবানাং ভয়ুনিবৃত্তরে। বিশ্বতাকে কথাত্মকত্বেন কোপাদি বেতুদাভাবাং ॥ ৯ ॥ গ্রামসিংহান্ ভনঃ। প্রতিমূক্তক বন্ধক। বিকখনং স্নাধাং ॥ ১০ ॥

স্থাসহর। নিকেপহরা: জ।বিতা: পলায়নং কারিতা:। **অধাপি অসমর্থা অপি ভিঠাম:। তং কিং বত: ছের** স্থাতবামমাজি: তং কিমিতাত আহ ক বাম: পক্ষবাদেশ্লে।বাং ॥ ১১॥

क्रममञ्जूष्ठीः।

সভানিভালি আভগবদাকানি চ কেবলোপাধিপৃষ্টা। ভানিচোপদাস পরাণাপি ৰাভবার্থনিপি বছবি । তাল বন্ধগাচরভ্যেকান্ত বাসভং জেলং। তথাপি রূপরা মুক্তিধান্ আমাবিবরাশক্ত শেষ্ঠান্ মুগ্লামহে । মোচরিভ্যুম্ভেবরামঃ । নব্দিনীভান খান্কথং রূপর্সি ভলাহ। নমুখিতি । ১০ । ১১ । ১১ । ১৪ । ১৫ । ১৬ । ১৮ ।

विवयनायहक्त वहीं।

বংশন-প্রচাণ্ডমন্যাং স্কার্রণেন প্রহণন্ হিরণাক্ষরাক্যে সরস্ভীক্ষণ ভতিবচনত প্রতিবচনমব্রমণেক্ত ইত্যাডো ভগ্রহাক্যেশি হিতীয়োগো ব্যাপ্যাধ্যে । ৯ ।

গ্রামিসিংহান্ শুনঃ বীরা ক্ষান্থিং প্রতিষ্কৃত বন্ধত পকে বনগোচরাঃ বনকৈতাকেবিবরভাগৈর্জকৈরেব দৃষ্ঠান্তরণি কুপরৈব প্রামিসিংহান্ গ্রামিত্যা বিষয়াসকান্তর্পাদিশি মুধ্রে স্থান্ধ দাত্মবেষর।মি নবান্ধান্ধিনো ছর্বিনীতান্ কথং কুপরসীতি ভতাই। বীরাঃ অগ্রবিধা দরবীরা শুব বিকথনং দোবং ন গৃক্তি। ক্ষণতাব তব কণভূতত মৃত্যুপাশে: প্রতিম্কত ক্তিশ্রেন তাজত ক্ষান্ত্রিক ক্ষিত্র ক্ষান্ত ভর্ব কণভূতত মৃত্যুপাশে প্রতিম্কত ক্তিশ্রেন তাজত ক্ষান্ত্রিক ক্ষান্ত ভর্ব ক্ষান্ত হল স্বামিক ক্ষান্ত ভর্ব ক্ষান্ত হল বিশ্বত ভর্ব ক্ষান্ত ১০ ৪

কাক্কা। উপহসতি ভাসহরা ভব্ব বৰ্ত্তরা জাবিতাঃ পলারদং কারিত। অথাণি অসমর্থা অপি নমু কিমনেন ক্লেশন যথেষ্টং পলা রধাং। তরাহ ব্রেমের বৃত্তঃ কেতাদি পক্ষে রমৌক্সামস্থাণারণি ভাসহরা তক্তা। সমর্শিত প্লোপহারপ্রাহিণঃ পতরিরঃ তক্তবাংসল্যাদের হৈতো নলক্ষামহে ইভারঃ। বতো গণরা তব ছতি বাচা জাবিত। ক্রতিভীক্ষত। গণে জিলাদিরাদত্। অথাণি তদণি দ্বা সহ আবৌ বৃত্তেণি তির্চাহে প্রলোজেকং প্রকাশরাম ইভারঃ। প্রকাশনে আন্থানে পদং। নমুহে প্রভারে বিকৃতিং গাদা প্রধান বিরাজধাং কিং মুদ্ধেশন তরাহ স্বেমিতি সনকাদি দারা অভিশাণেন বৈরম্থপাদা মৃদ্ধ্বার্থিং বলিনা দ্বা সহালে। স্বেম্বের ক্রামঃ ৪ ১১ ৪

कत्रक हांगा वस्त कहिए नांशितन ॥ ১॥

আহে! আমরা জলচর বরাহ সত্য, কিন্ত তোমাঞ্জো সদৃশ গ্রামসিংহ সকল আছেবণ করিতেছি। আরে অভছে। জুই কি আছা শ্লাঘা করিতেছিন, ভুই ত মৃত্যুপাশে বন্ধ হইয়াছিস্, বীরপুরুষেরা কদাচ তোর প্রসংশা করিবেন নাঃ ১০ ঃ

আমরা রসাতলবাসিদিণের স্থাপ্য ধন হরণ করাতে তুই গদাঘাতে আমাদিগকে প্লায়ন প্রায়ণ করাইতেছিস্, তথাপি এই দেখু আমরা কোন প্রকারে এ স্থানে অসমর্থ হইরা রহিরাছি। অথবঃ আমাদিগকে যুদ্ধে থাকিতেই হইবে, বলবানের সহিত বিরোধ উৎপন্ন করিয়াছি কোথা যাইয়া আজ্মকা করিব, গমন যোগ্য স্থান দেখি না॥ ১১ ৯

ত্বং পদ্রথানাং কিল যুথপাধিপো **ঘটন্ন নোহন্দত্ত আন্তর্গন্ত ।** সংস্থাপ্য চাম্মান্ প্রমূজাশ্রু ন্বকানাং যং স্বাং প্রতিজ্ঞাং নাতিপিপর্ত্ত্যসভ্যঃ ॥ ১২ ॥ শ্রীমৈত্রের উবাচ ॥

নোহধিক্ষিপ্তো ভগবতা প্রলক্ষণ রুষা ভূশং। আজহারোজ্বণ ক্রোধং ক্রীড্যমানোহিরাড়িব ॥ ১৩ স্ফলমর্ষিতঃ খাসাম্মুলু প্রচলিতেপ্রিয়ং। আসাদ্য ভরসা দৈত্যো গদ্যা শ্বছনন্ধরিং॥ ১৪॥ ভগবাংস্ত গদাবেগং বিস্ফৌং রিপুণোরদি। অরঞ্চয়তিরশ্চীনো যোগারুত ইবান্তকং।

श्रीधतयामी ।

পত্ৰধানাং পদাভীনাং বে বুধপাতেৰামধিপঃ মুখা ইতাৰ্থঃ। অংশতেৰে পৰাভবাৰ্থং আশু ঘটন্থ বতন্ত্ৰ নিৰ্কিত্ৰ্কঃ। বো নাজিপিপ্ঠিন পুনৰ্ভি প্লাৰ্ভি বা অসাবসভাঃ সভায়ামনহঃ ॥ ১২ ॥

সেহিধিক্ষিপ্তং সন্ত্যং বন্ধমিতি স্লোকেন। কৃষা প্রস্ত্তঃ উপহসিতঃ এতে বন্ধমিতি ছাজ্যাং। ক্রীড়াং কার্য্যমাণোহহিরাট্ সহাস্প ইব ॥ ১৩ ॥

মহানা প্রচলিভানি কুভিভানী স্কিয়াণি বস সং॥ ১৪॥ অস্তকং মৃত্যুং॥ ১৫॥

बीविषनाथठकवर्छी।

পদ্রধানাং পদাতীনাং যে যুথপা তেষামধিপ: অস্বভয়ে পরাভবার্ধ আণ্ড ষ্টস্ব বভস্ব। অন্হো নির্বিতর্ক:। যো নাতি পিপর্তি নপুরয়তি অসে অসভ্যঃ সভায়ামনহাং পক্ষে তবৈর প্রেয়াম্মন্ত্রস্থাৎপাদনার্থ প্রতিজ্ঞায় ক্ষ্রভাবে।২সীকৃতঃ অভা বঃ স্থামিতাাদি। অতএব মিতাাদি নোহমান্ স্থিয়িতঃ ঘটস ক্রিয়ার্থোপপদক্ষেতাাদিনা চতুর্থী। অস্বামস্বভয়ে স্থাণত্যাগার্থং কিং ক্রমা সংস্থাণ প্রদাস সম্বাদ্ধ ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমান্ত বিষ্কি ক্রমান্ত বিশ্ব ক্রমা

সোহধিক্ষিপ্ত: সভ্যং বয়মিতি প্লোকেন ক্ষা প্ৰণদ্ধ উপহসিত:। এতে বয়মিতি ছাজ্যাং ক্রীড়াং কার্য্যাণোহছিরটি মহাসর্প ইব। পক্ষে অধিকিপ্ত: অধিকারাৎ পার্বদ্বলক্ষণাৎ কিপ্ত:। অভএব ক্যা কর্ত্তা কর্ষেণ লব্ধ-চ। ভগবলিছা প্রযুক্ত বন্ধপাণবশাৎ শুদ্ধসন্ত্রমাহেনি ত্যোম্যোহভূদ্ভার্থ:। ওলাভূ যুদ্ধকালে আসমাক্ প্রকারেণের উর্ণমত্যুদ্ধিকং ক্রোধং জহার জ্প্রাহ ॥১০॥১৪॥ অস্তবং মৃত্যুঃ ॥১৫॥

আয় শীত্র আমাদের পরাভব নিমিত্ত চেফা কর্, তুই পদাতিদিগের যে সকল যুথপতি তাহাদেরও তুই প্রধান, তোর ত ভয় ও সংশয় নাই, আয়ু আমাদের নিধন নিষ্পন্ন করিয়া আপনার হৃহদ্যণের শোকাশ্রু মার্জন কর্, অরে! প্রতিজ্ঞা করিয়া পূর্ণ না করিলে অতিশয় অসভ্যতা প্রকাশ পায় ॥ ১২ ॥

নৈত্রের কহিলেন বংগ বিত্রর ! ভগবান্ বরাহ দেই অহ্রেকে ঐ প্রকার তিরকার ও উপহাল করিলে মহাসর্গকে ক্রীড়া করাইতে গেলে ভ্রাহার যেমন ক্রোধ হয় তাহার ন্যায় সে তীব্র রোধে পরি-পূর্ব হলৈ । ১৩॥

এবং ক্রেমাণ বশতঃ তাহার ইব্রিয় সকল ক্ষৃতিত হইয়া উঠিল। কল্পিত কলেবর হইয়া ঘন ঘন নিখাস ত্যাগ করিতে করিতে বেগে ভগবানের প্রতি ধাবমান হইল এবং তাঁহাকে প্রাপ্ত হইয়া সদা হারা আখাত করিল। ১৪ ।

কিন্তু সে ভগৰাবের বক্ষা ভগ লক্ষ্য করিয়া গদা নিংকেপ করিয়াছিল ইহাতে যোগারত ব্যক্তি যেসন মৃত্যুকে বঞ্চনা করে ভাঙার ন্যায় ভগবান্ কিঞ্চিৎ বক্রীভূত হইয়া তাহার ঐ পরাবেগ বিচল করিয়া দিলেন। অনন্তর সে পুনর্বার আপনার গদা গ্রহণ করিয়া যার্যার ঘুরাইতে আরপ্ত করিলে ভগবানের পুনর্সদাং খাগাদার ভাষরস্তমভীক্ষণঃ। অভ্যধাবদ্ধরিঃ ক্রুদ্ধঃ লংরস্তাদ্ধলং । ১৫ ॥
তত্তশ্চ গদরার।তিং দক্ষিণস্যাং জ্ঞবি প্রস্তুঃ। আজমে সভু তাং দৌষ্য গদরা কেবিদাইছনং ॥১৬
এবং গদাভাগং গুবর্বীভাগং হর্ষাক্ষো হ্রিরেবচ। জিগীবরা হুসংরক্ষাবভোজমভিজসভুঃ ॥ ১৭ ॥
তরোঃ স্পৃধোন্তিকা গদাহতাদ্ধোঃ কভাশ্রবদ্ধাণ বিব্রদ্ধশ্বাঃ।
বিচিত্রমার্গাংশ্চরতো জিগীবরা ব্যভাদিলারামিব শুলিবেণার্ছ্ধঃ ॥ ১৮ ॥
দৈত্যক্ত ব্জাব্যবক্ত নায়য়া সৃহীতবারাহ্তনো মহাজনঃ।
কৌরব্য মহাং বিষ্তোহি মর্দনং দিদ্কুরাগাদ্ধিভিত্রতঃ স্বরাট্ ॥ ১৯ ॥

श्चिभव्रत्रामी।

ट्र तीमा विज्त जार शंनामध्याद्यारमवारून । ১७ ॥ व्याटका विज्ञाकः । ১९ ॥

শ্বাং পর্কমানরে। তিয়াভাং গদাভাং আহতানি অলানি বরো:। ক্লতাদালবভীতি কঞালবং ক্ষিরং ডভ লাগমবলাণং তেন বিবৃদ্ধো মহার্বরো:। বিচিআন্ মার্গার্কলমণপ্রভেদান্। ইলা গৌঃ ভ্রাং নিমিত্ত ভূতারাং তামিণো মন্তরো: বৃষ-ভয়ো:। প্রভতেহণি ইলা পৃথী ভদর্বং। বৃষভৌ হি ধনু বহুনি দিনানি সংগ্রনিতোকুল শৃদ সভাব বিদিশাল পলফ্রাইরৌ পর-প্রবোগমন্দ্রাগ্রোগ্রসংরভৌ চমৎকারিত গলমুণ্ণৌ যুক্ষমানৌ ভিঠত ইতি প্রসিদ্ধং ৮১৮ ॥

ষজা এব অবয়বা ৰদ্য ভড়চ মহাং মহীনিমিত্তং বিবজো: ॥ ১৯ ॥

क्रमनसर्फः

দৈভাভেতি। মার্মা রূপরা গৃহীতত্বং প্রপঞ্চ প্রত্যানীতত্বং । ১৯। ২০ ॥

ত্ৰীবিখনাপচক্রণতী।

সোহস্বত ডাং ভগবদানাং অপ্রাপ্তামেবাহন্ । ১৯ ॥ হর্তকা হিরণাক্ষঃ ॥ ১৭ ॥

ম্পুৰো: ম্পৰ্মানয়ো: ক্তাদাপ্ৰবতীতি ক্ষতাপ্ৰবং ক্ষিত্ৰং ভক্ত আণেন বিবৃদ্ধো মহাৰ্যবোচ ইলাবাং বাণিভালাং গৰি বিষয়ে তল্পিশোল্ডিয়োবু বিভয়েরিব ইলাবাং ভূবি ভলিণোভ্তিহ্বাক্ষোমূলে। ব্যভাৎ ক্ষমোভত ভূগোৰাচ্ছিড়া ইলাইভঃমর: ॥ ১৮॥

মামরা শক্তা। গৃহীতা অথানিবেনালীকতা বারাহী ততুর্বত তত মারাভর্তুররাহতেতার্থ:। মাররা ক্রপরা গৃহীতবং প্রাপঞ্চ প্রত্যানীভত্তিতি সন্দর্ভঃ। খরাট্ ব্রহ্মা । ১৯ ।

সমধিক ক্রোখোদয় হইল, রোষ বশতঃ দন্তবারা অধ্য দংশন করিয়া তাঁহার প্রতি ধাবমান হইলেন ॥১৫ এবং আপানার গদা বারা ঐ শত্রুর দক্ষিণ জ্রুতে আঘাত করিলেন, কিন্তু দৈত্য গদা যুদ্ধে স্থপশুত ছিল, ইহাতে ভগবানের ঐ গদা না আসিতে আসিতে প্রতিবাত করিল ॥ ১৬ ॥

় অহে বিছুর! হিরণ্যাক্ষ এবং ভগবান্ বরাহ এই ছাই জনের এ রূপে গদা যুদ্ধ হাইভে ্লাগিল। উভয়েই জয়েছায় সাতিশয় ক্রুদ্ধ হওয়াতে ছাই জনকেই গুরুতর গদাঘাত সহা করিতে হাইল ॥ ১৭॥

হুই জনই পরস্পারের উপর স্পর্কা করিভেছিলেন এবং তীক্ষ গদার আঘাতে ছুই জনেরই অঙ্গ কত নিক্ষত হুইডেছিল, অধিকস্ক শরীর হুইডে নির্মত ক্লধিরের আত্রাণ পাওয়াতে উভরেরই ক্লোধ উদ্দীও হয়, তাহাতে মুই জনেই পরস্পর জিনীযায় গদা বুদ্ধের বিচিত্র সার্গে দদন করিতেছিলেন, অতএব গাভী নিমিত্ত ব্যাক্ষর ব্যাক্ষর হয় ভাহার ভায় ভাঁহাদের সংগ্রাম ঘোরতর রূপে প্রকাশ পাইতে লাগিল ॥ ১৮॥

হে কোরবা। ভগবান বারা বারা বরাহ নৃতি ধারণ ফরিয়া হিরণাক্ষের সহিত এ রূপে যুদ্ধে প্রেক্ত হইলে অক্সা উভরের মুদ্ধ দর্শনেছার শাবিদণে পরিষ্ক্ত হইরা আগমন করিলেন । ১৯ ॥ আসন শৌগীরমণেত সাধ্বসং কৃতপ্রতীকার মহার্য বিজ্ঞাং। বিলক্ষ্য দৈত্যং ভগবান্ সহস্রা র্জগান নারায়ণমাদিশ্করং॥ ২০॥ / শ্রীক্রক্ষোবাচ॥

এব তে দেবদেবানাম ভিনু মূলমূপেরুষাং। বিপ্রাণাং পৌরভেরীনাং ভ্তানামপ্যনাগসাং। আগস্কুত্যেরুদ্দু ভ্রুদশুদ্ধান্দ বরোহত্বরঃ। অবেশনপ্রতিরধো লোকানটতিকণ্টকঃ॥ ২১॥ মৈনং মায়াবিনং দৃপ্তং নিরস্থানসভ্রমং। আক্রীড় বালবদ্দেব যথাশীবিষম্থিতং॥ ২২॥

अध्यय। भी ।

আগত্যত নারারণমা**হ কিং ক্লবা দৈত্যং বিশক্ষা। কথং ভূতং, আগরং প্রাপ্তং শেখিীরং শোর্যাং মনো বা বেন। অপেতং** সাধ্বসং ক্ষাং। ক্লতঃ প্রতী**কালো বেন। অংগিঃ অ**প্রতিকার্থো বিক্রমো বছা। সহস্রণী প্রিসহস্রাণাং নেতা॥ ২০॥

হে দেব তেই জিবু মূলং প্রাপ্তানাং দেবাদীনাং এবে।ইস্তরঃ আগস্কং বুণৈবাণরাধারোপকঃ। তৎপরিহারার প্রবৃত্তী তয়রুৎ ভীতং আধা হৃহৎ অর্থপ্রাণাদি হর্তা সমাজো রাছো লক্ষো বরো বেন স্ববেষন্ প্রতিরপ্প মবলে।করন্ স্প্রতিরপং প্রতিপক্ষ স্ক্রঃ ১২১ বং বস্থাপ্রেবং ভূতোইরং ভস্মাদেনং মা জীজ্ব। হে দেব বধা উথিতং ক্ষুভিতং স্থানীবিবং সর্পং বালঃ পূজ্যকর্ষণাদিনা জীত্বতি তথং ॥ ২২ ॥

क्रमममर्जः।

এव है जि मून्नकः । २३॥

মৈনবিত্যাদি প্ৰীব্ৰহণোৰাকাং ভালুপ ভগৰদৰ্ম দীলাবেশসন্থেন প্ৰোমবিশেষেইণগৰ্বাজ্ঞানং সংকোচাৎ টাকারাং ব্যবহাৎ ইতি ব্যাব্যানায়ৰদাশীবিধনিত্যেৰ পঠিঃ। সৰ্বতি হৈবত্ৰ অংখা ৰংখত্যধান্তাহিব্য ব্যাখ্যাভং । ২২ ।

Manages and

আসরং প্রাপ্তং শৌপ্তীরং শৌর্বাং মনো বা বেন তং কবিসহস্রাণাং নেতা সহস্তমী ব্রহ্মা । ২০ । হে বের আগদ্ধং বুবৈরাপরাণারোপকঃ ডং পরিহারার প্রবৃত্তী ভয়কং ভীতান্ কাষা তৃত্বং অর্প্তাণ।বিহর্তা । ২২ । এনং মা আক্রীড়র বালবং অক্ত ইব প্রবৃত্ত বিক্তচ্ডামনিরেরাসীতি ভাবং। ব্যবধা আশীবিবং সর্পণ উবিতং গরুড় ইতি শেবং। অব্যাব্যব্যাখাশীবিবস্থিতং এবং মনা ইতি শেবং। ২২ ।

श्वि महत्व्यत नांत्रक बक्ता श्वानिता तिथितिन तेन्छा त्मीर्या क्षा हिशाए मछ हरेताए, छाहात छत्र माज नारे अवः त्य त्य व्यक्तिकात छाहात कर्छवा, मकनरे कित्रप्ताह, किन्छ छ्रावान् हरेट कान क्षकाति विक्रत्यत श्विकित्रा हरेट हिला ना, बक्ता अरे मकन श्वित्रा कित्रप्ता श्वित्र नातात्र परक मत्यापन कित्रप्ता किहान ॥ २०॥

হে দেব। এই অহর আমাদের সকাশাৎ বর প্রাপ্ত হইয়া প্রতিপক্ষ শৃষ্ঠ হইরাছে, এ ব্যক্তি ভোমার চরণাপ্রিত দেবতা, ত্রাহ্মণ, গাভী এবং অনাম্য নিরপরাধ প্রাণিদিগের প্রতি বুধা অপরাধ আরোপ করে, বলি কেহ তাহা নিবারণ করিতে প্রবৃত্ত হয় তাহাকে ভয় দেখার, তাহাতেও ক্ষান্ত হয় না, ভীত দেখিলে তাহার ধন প্রাণ সকল হরণ করিয়া লয়, এ কণ্টক প্রতিপক্ষ নিরীক্ষণার্থ সকল প্রেণ পরিটন করিয়া বেড়ার ॥ ২১॥

হে দেব। এ ছুরাত্মা অতিশর অহছত মারানী এবং নিরত্বশ, বালক ষেমন কুভিত সর্পের পুছে আক-র্বণাদি বারা তাহার সহিত খেলা করে তাহার নাায় আপনি ইহাকে লইর। জ্রীড়া করিবেন না ॥ ২২ ॥ ন যাবদেব বর্দ্ধেত স্বাং বেলাং প্রাপ্য দারুণ:। স্বাং দেব সারাসাদ্ধায় তাবজ্জহুঘমচ্যুত ॥ ২০॥ এবা ঘোরতমা সন্ধা লোকজুল্মট্করী প্রভো। উপদর্শতি সর্বান্ধান্ পুরাণাং জরমাবহ ॥ ২৪॥ অধুনৈষোহভিজিলাস যোগো মোহুর্ত্তিকোহুগাং। শিবার নত্তং হুহুদামাশু নিস্তর্কুত্তরং॥ ২৫॥ দিন্টা ভাং বিহিতং মৃত্যুমরামাসাদিত: স্বয়ং। বিক্রান্ধান মুধে হন্ধা লোকানাধেহি শর্মণি॥২৬॥ ॥ ॥ ইতি শ্রিভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং তৃতীয়ক্তক্ষে হিরণ্যাক্ষ

वर्षश्कीपरभार्थाशः॥ # ॥ > । # ॥

विषंत्रयामी।

चाः चास्त्रीः ८१ (नव चाः माग्राः चवः भागक्रभः ॥ २० ॥

বেলামেৰাহ এবেতি। লোকানাং ছন্মট ্করী বিনাশকরী ভ্লুড়ি ভাৰসং বিনাশে বর্ততে । ২৪ ॥ 🐪 📑

অভিজিমাণ্যাত্র: স এব মৌতুর্তিকো বোগঃ সন্মুহ্র্জঃ শুক্তনঃ কালঃ অগাৎ পত্রারঃ অতো বাবমুহ্র্লেবোন্তি তাব্দেবাশু মুহ্তারমেনং নিন্তর জহি ॥ ২৫ ॥

তাং মৃত্যুং বহৈরৰ শাপাত্ত্রহকালে বিহিন্তং নির্দ্ধিতং আসাদিতঃ গ্রাপ্তঃ শর্মণি স্থবে আবেহি হাণর ॥ ২৯ ॥

॥ * ॥ देखि ज्ञीत्त्रक्षेत्रभः ॥ * ॥

ক্রমসন্ত:।

মারাং শক্তিং আহার প্রকটীরুতা ॥ ২০ ॥ প্রবিভি ভবেন নিকটম ক্র্ডে: ॥ ২৪ ॥ মুহুর্ত্তে ভবো মৌহুর্তিকোবোগঃ কালবিশেব: ॥ ২৫ । ২৬ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্ৰীমন্তাগৰত তৃতীয়ন্তকে শ্ৰীলীৰগোৰামিকত ক্ৰমসন্দৰ্ভণা অতীদশোহৰ্ণার: সমাপ্ত: 🖫 ।

श्रीविधनायहक्त वर्छो ।

স্বাং বেলাং আসুরীং ছে দেব সাং নারাং তেনাসূরবেলায়াং বিবৃদ্ধবলমেনং ছং প্রমেশরোপি ছন্তং নৈব প্রস্থিতি তিরাম্ব্য জ্ঞানবভোপি ব্রশ্ব: প্রেটেরবানিতাশন্ধি ক্ষেত্রং। ববৈশব্যক্ষানপূর্ণবারিপি বস্ত্বেবদেবক্যোঃ সম্বিলে ভবদেতে চাং কংসাদহমধী রধীরিত্যালি বাল্যং ॥ ২৩ ॥ ছল্ট ক্রী ছল্পিভাবারং বিনাশবাচকং ॥ ২৪ ॥

অভিত্তিৎ মধ্যাক্ত: মেছুর্জিক: মুহুর্জ এব ভব:। অগাৎ গতপার: অতো বাবদভাবলিটোহংশোন্তি ভাবদাও ত্তরগেনং নিতর জহীতার্থ: ॥ ২৫॥ স্বা স্বাং বিহিতং স্বটেরৰ শাপাত্তবহসময়ে নির্মিত্মিতার্থ: ॥ ২৬॥

■ ४ देखि नातार्थनर्निकाः वर्षिणाः खक्तरहण्याः । कृतीरबव्हानरनाव्यातः नवकः नवकः नकाः ॥ ● ॥

হে অচ্যুত। এই দারুণ দৈতা আহরী বেলা প্রাপ্ত হইরা যাবৎ বর্দ্ধিত না হয় তাবৎ নিজ নায়া অবলম্বন পূর্বক এ পাপটাকে বিনফ করুন । ২০॥

প্রভা। সম্প্রতি লোকবিনাশকারিণী ঘোরতমা সন্ধ্যা উপস্থিত হইতেছে, এই উপযুক্ত সময়, হে সর্বাত্মন্। এই সময়ে দেবগণের জয় বিধান করুন ॥ ২৪॥

হে ভগবন্! একণে অভিনিৎ নামে শুভদ মোগও আছে এই মৃহুর্দ্ত অভি উত্তম, ইহা প্রায় গত হয়, অধিক বিলম্ব নাই, যাবৎ অবশেষ থাকে তাবৎ আমাদের মঙ্গলের নিমিত্ত এই ছুন্তর দাব-বকে বধ্ করুন। প্রভো! আমরা আপনকার মৃহুদ্, আমাদের হিত করা আপনকার কর্তব্য ॥ ২৫॥

হে দেব। ত্মাপনি স্বয়ং শাপাসুগ্রহকালে আপনাকেই ইহার মৃত্যু স্বরূপে নির্দ্ধিত করিয়াছেন, একণে এই দৈত্য ভাগ্য বশতঃ আপনাকেই প্রাপ্ত হইয়াছে, অভএব বিক্রম প্রকাশ পূর্বক আভ রণা-জনে বিনষ্ট করিয়া ত্রিভূবনের কেম বিধান করুন ॥ ২৬ ॥

॥ * । रेंकि क्कीय वकीषण ॥ * ॥

Atacas Bais

অবধার্য বিরিঞ্জ নির্বালীকায়তং বচ:। প্রহস্ত প্রেমগর্ত্তেণ তদপাত্রন গোহগ্রহীৎ ॥ > ॥ তভ: দপত্বং মুগতশ্চরন্তমক্তোভরং। জন্মানেশেদ্য গদরা হনাবস্তরমক্তাঃ ॥ ২ ॥ সা হতা তেন গদরা বিহতা ভগবংকরাং। বিঘূর্ণিভা পভক্তেকে তদমূত্রিবাভবং॥ ৩ ॥

श्चिषद्वामी।

উনবিংশে বিরিঞাদি প্রাথিতেন মহামৃধে। বরাহেণ হিরণ্যাক্ষং বধলাবোমুবর্ণাতে ॥ • ॥ নির্বাদীক্ষ তদমৃতক। নির্বাদীক্মৃতমিতি পাঠাস্তরে। নির্বাদীতি প্রায়ক ঋতঞ। কালাক্সনোপি মম মুহুর্ত বলমুপদিশ-ভীতি প্রহল্প অপান্ধাবলোকনেন স্বীকৃতবান্॥ ১ ॥

মুখত: অভিমুখে। হনৌ কপোলভাখোডাগে। আক্তম: এমহণা আংগিজিরাদাবিভূতি: । ২ । সা অগদয়া তেন হতা ওতো বিহতা বিচ্যুতা সতী বিহুপিতা ভূষা অপতৎ রেজেচ। তৎ ভগবৎ করাৎ পতনং। যথা তৎ-পদভাবৃত্যা রেজে ইত্যনেনাপি সম্বন্ধ:। তদৈত্যপৌক্ষং রেজে ইতি ॥ ৩ ।

क्ष्यममर्छ

নিৰ্স্তালীক্ষকণটং অমৃতং প্ৰিৰ্ফ। প্ৰেনৈক্ষয়বাং। পাঠান্তরে ঋতমর্থতোপি নিছপটং॥১॥ অক্ষ: বোহক্ষোপি। সংপ্ৰতি নেআদিব্ প্ৰক্টীভূত ইতাৰ্থ:॥২॥ তত্তগ্ৰংক্রাং প্তন্মসূত্ৰনিবাভ্ৰদিতীৰ শব্দে ভগ্ৰদিছেয়া তত্তংসম্ভ্ৰাল ৰম্ভতোভূতমিতি বোধনতি ৮৩॥

@विधनापहत्कवडी ।

যুদ্ধ তভাসমর্থ সায়া: স্টবতো হরি:। সাজেণ ক্রা তমহন্ন্ন বি'শে র পাণিনা। নির্কালীকং নিষ্পটং অসাজান্ধররো-স্ব ইতি অমৃতং ন বাবদেব বর্দ্ধেতেতাানি প্রেমমর্থাদম্ভত্ন্যং বচক্তর্গবতাপ্যাদরেণাস্থানিতং তনিভাবি প্রহাতেতি। আহো মৎ প্রেম: সর্কবিস্বারক্তা সামর্থ্য যথ কালাজনোশি মম মুহুর্বক্সমুপদিশতীতি প্রেমগর্ত্বেশ্বাপালেন স্বীচকার সভাং সং বথা দিশসি তথেব কুর্বানিমমধুনৈব হনি। কিন্তু ম্মান্তচ যুযুৎসাস্থাং পূর্বাতামতোহণা রাজাবেব্বনং হনিব্যামীতি জ্ঞাপ্রামাসেতার্থ:॥ ১॥

মুখকঃ সংমুখএব হনৌ কপোলভাধো ভাগে অকল: একগো আপেজিয়াদাবিভূতিঃ ॥ ২ ॥ সা হরের্মদা তেনাস্বেশ বিহতা বিচ্যুতা সতী বিঘুর্ণিতা ভূগে অপতৎ বিরেজেচ ডৎ ভগবৎ করাৎ পতনং ॥ ৩ ॥

উনবিংশক্তি অধ্যায়ে জ্রক্ষার প্রার্থনায় আদিবরাহ কর্তৃক হিরণ্যাক্ষ বধ ॥ • ॥

মৈত্রেয় কহিলেন ত্রন্নার ঐ সমন্ত অকপট অথচ অমৃত তুল্য বচন প্রবণ করিয়া ভগবান্ বন্ধাহের বদন কমল ঈষৎ হাস্তে বিক্সিত হুইল অর্থাৎ তাঁহার মনে হুইল আমি স্বয়ং কালরূপী, ইনি আমাকে আবার মূহুর্তের বল উপদেশ করিতেছেন, এই বিবেচনা করিয়া হাস্ত করিলেন, পরস্ত তৎপরেই প্রেমগর্ত্ত অপাঙ্গ অবলোকন দারা ত্রন্নারু ঐ বাক্য বীকার করিলেন, অর্থাৎ হে ত্রন্ধন্! তুমি যাহা আদেশ করিলে এখনই তাহা সম্পন্ধ করিতেছি॥ ১॥

অনস্তর শক্তকে আপনার সম্পূথে বিচরণ করিতে দেখিয়া উল্লেখন পূর্বক ভাহার উপরে গিয়া পতিত হইলেন এবং তাহার কুপোলদেশের অধোতাগে গদাঘাত ক্রিলেন ॥২॥ •

দৈত্যও আপ্ৰমান গৰা ৰাবা ভগবানের গৰার প্রতিষাত করিল, ভাষাতে ভাঁছার গৰা হন্ত হইতে ভ্রম্ট হইরা ঘূরিতে ঘূরিতে নীচে পড়িরা সাভিশের দীপ্তি পাইতে লাগিল। অংহ বিচ্ন । ভগবানের হন্ত হইতে গদা পতিত হওরাতে হিরণ্যাক্ষের বিক্রম অভ্যাশ্চর্যা গোভা বিস্তার করিতেছিল ॥ ৩ ॥ স তদা লকতীর্থোপি ন ববাধে নিরায়্ধং। সাময়ন্ স মধে ধর্মং বিষক্ষেরং প্রকোপয়ন্।
গদায়ামপৰিদ্ধায়াং ছাহাকারে বিনির্গতে। মাতৈন্টেতি হারামুক্ত্বা হ্যনাককাশ্বর্যিছ্: 18 ॥
তং ব্যক্তক্রং দিতিজাধনেন স্বপার্থদ মুখ্যেন বিসজ্জ্বানং।
চিত্রা বাচোহত্দিদাং থেচরাশাং ত্ত্রাশ্বাসন্ স্বস্তি তেহুমুং কহীতি॥ ৫ ॥
স তং নিশাস্যাত্রথাক্সগ্রভো ব্যব্দিতং প্রাপলাশলোচনং।

खैबद्रश्रमी।

শক্তীথোঁ শক্ষাবসরোণি সান ববাধে ন প্রাহরৎ। সামানরন্ বস্ত্বেতি বাক্যভেদাৎ সাইত্যশ্রাণৌনক্স্যং । ৪। ব্যথ্য সসম্ভন্য চক্রং ব্যাঃ বিসক্ষমানং বিশেষেণ সঙ্গং প্রাপ্ত বৃত্তং প্রতি। অত্তিদাং তৎ প্রভাবমন্তানতাং আসম্ভাদাসন্ সাঃ । সাইবিভাত্যবাত্তক্রং নিশাম্য দৃষ্টা। অগ্রতো বাবস্থিত ক্বিলোক্য স্থমর্থেণ ক্রোধেন পরিপ্রতানি ক্তিতানি ইন্সিদানি বস্ত

क्रममण्डः।

नम्रा नगुरक करन (सा धर्मछः॥

স্থনাডফেতি চকারেণ পূর্ব্ব: গদামণি সন্মারেতি গম্যতে ॥ ৪ ॥

बीवियमाथ ठक्क वर्शी।

লক্তীর্থ: লক্ষাবসরোপি ন ববাধে ন প্রাছরৎ তত্র হেতু:। মানম্মিতি তেনচ প্রকোপন্মিতি কিমরে মামপি দ্বাছ্বলাদেব পতিত্পদং ব্যাক্লং জানাসি যৎ স্থার্নিক্ষং প্রথমন প্রহরসি। পশ্য বে পশ্ম ক্ষণমাত্রেণৈর স্বৎপ্রাণানেবাপহরামীতি ভগবাংশ্চু-কোপেতার্থ: ॥

অপৰিকারাং পতিতারাং নতৈতং শাৰ্যুকে সাক্ষিত্য পতন্মিৰ প্রমত্মাশঙ্কীরং। হিরণ্যাক্ষত পার্বদ্বাং পার্বদ্বাচ ভগৰত্না বলভাং ত্লাবলভাচ গদা পতনভাসন্তবভাভাবাং ত্লাবলভাং বিনাচ যুক্তর্থভাত্ংপত্তের্গদাপতন্তিদং ভগবত্ংশাহর্থক্ত্রভ্বেশ্যে নতু দ্বশং। ভক্ত হানে ভগৰতা প্রেমান্ধিনা অপরাভবত শতশোলীক্বভাদিতে।তদ্ধ ব্যক্তম্বরশ্লেকে অপার্বদ্ম্থ্যেন্তি পদ মত্সক্ষেয়ং স্থনাত্তেভি চকারালগদামলি পূর্কং স্থাবৈবেতি গমাতে। ৪ ॥

বাএং সন্ত্রমযুক্তং হ**র হত ভ**গবালাং শ্বতি শ্বেতি শ্বমেবাগতা **হতে লগং চক্রং হল। তং। আন দিতিপুত্রাভিধেন দিতিপুত্রা-ধন্মনেতি পাঠকরং। বিষক্ষমানং বীক্ষেত্রতি শেবং। ৫ ।**

व्यथममाख्यस्थानः निर्मामा मुद्दे। भूनवर्धात् । वावक्तिक विद्याका मस्त्रस्य व्यथनः ॥ ७ ॥

তথন ভগবান্ নিরায়ুধ হওয়াতে দৈত্য প্রহারের অবদর প্রাপ্ত হইয়াছিল, তথাপি ভাঁহার প্রতি প্রহার করিল না, কামণ সে মুদ্ধের ধর্ম রক্ষা করিডেছিল। বস্ততঃ তাহার ঐরপ করিবার অভিপ্রায় এই যে ভগবানের ক্রোধ উদ্ভাবন করিবে। যাহা হউক আদিবরাহের হস্ত হইতে গদা পতিত হইলে দেবসগুলীতে হাহাকার উপস্থিত হইল। অভ্যাব ভগবান্ অসরনিকরকে ভীত বিবেচনা করিয়া কহিলেন ভয় নাই, পরে আগনার হুনাভ নাবক হুদর্শন চক্র শারণ করিলেন ॥ ৪ ॥

দেবগণ যাহাকে অধন দৈত্য বিবেচনা করিয়া তয়ে তাঁত হইলেন, সে ব্যক্তি বস্তুতঃ ভগবানের একজন প্রধান পার্বদ, ভাহাতেই ভগবান আপনার চক্র ব্যক্ত করত তাহার সহিত বিশেষ রূপে মিলিভ হইতেছিলেন, ক্রিপ্ত এ ভল্ব বিদিত না থাকাতে আকাশ চারি অনরগণের বদন হইতে এই বিচিত্র যাক্য বারশার উচ্চারিত হইতে লাগিল। হে দেব। আপনকার মঙ্গল হউক, ইহাকে শীঘ্র বিনষ্ট কর্মন ॥ ৫ ॥

এ দিকে ঐ হৈত্য পদ্মশাশ লোচন ভগবান্কে চক্র গ্রহণ পূর্বক অগ্রে অবছান করিতে দেখিতে

বিলোক্য চামৰ্থ পরিপ্রতে জিরো রুষা স্বদস্ত ছে দমাদশচ্ছু দন্ ॥ ৬ ॥
করাল দং ষ্ট্রশ্চ ক্রু জ্যাং সকলাণোদহরিব। অভিজ্ঞতা স্থাদরা হতোসীভাইন দ্বিং ॥ ৭ ॥
পদা সব্যেন তাং সাধো ভগবান্ যজ্ঞশুকর:। লীলয়া মিষতঃ শত্রোঃ প্রাহর রাতরংহসং ॥ ৮ ॥
আহ চায়্ধমাধ্য ঘটস্ব স্থা ক্রিগীষ্দি। ইত্যুক্তঃ স তয়া ভূর ক্রাড়য়ন্ ব্যুনদন্ত শং।
তাং স আপততীং বীক্ষা ভগবান্ সমবন্ধিতঃ। জ্ঞাহ লীলয়া প্রাপ্তাং গরুদ্ধানিব প্রুগীং ॥ ৯ ॥
স্বপোরুষে প্রতিহতে হতমানো মহাহার:। নৈছেলাদাং দীয়মানাং হরিণা বিগতপ্রভঃ ॥ ১০ ॥
জ্ঞাহ তিনিখং শূলং স্থলক্ষলনলোলুপং। যজ্ঞায় ধ্তরপায় বিপ্রায়াভিচরন্ যথা ॥ ১১ ॥

विषयपामी।

तः। व्याननर महेवान् । ७ ॥

চক্র্ড্যাং দহরিব সঞ্চলাণ: শক্তন্। ইবেতি বস্ততঃ ক্রোধাভাবমাহ হতোসি আতোসীতি বাতবার্থ: ॥ १ ॥

वाजत्रस्मः वायु विशार ॥ ৮ ॥

च छेच छेन। सः कूकः। यज्ञ सः स्व कृ मिळ्नि ॥ २ ॥

হতো মানো গর্কো যক্ত ॥ ১ ।।

অপন্ যো অপন অবলোপুণং গ্রামবাগ্রং বজার বিজুমালকা অকার্যাকরতে দৃষ্টাকঃ। বিপ্রামৃদিকাভিচারং ক্র্ন্ব্বথা । ১১ ।

शिविधनायहळ्व ही।

সংচকাৰ: পণানু হতোসি পক্ষে জাতোসি ॥ ৭ ॥

वाजवःस्मः वायू (वर्गाः ॥ ৮ ॥

कार अमार ब के । ३० ॥

जन९ जानायूकर जनाता रहि चदातालूनः धननवाधाः बळात मूर्तिमसः बस्कमिव रदः। अलाखात्मोहित्ला मृहेत्वः। विश्वात

পাইয়া ক্রোধভরে প্রন্থলিত হইল, তাহাতে তাহার ইন্তিয়ে সকল কুভিত হইতে লাগিল, পরে রোষ বশতঃ উচ্ছাস ত্যাগ করিতে করিতে আপনি আপনার দশনচ্ছদ দংশন করিল ॥ ৬॥

তাহার দংখ্রী সকল অতিশয় করাল এবং সে চক্ষুর্দারা যেন দগ্ধ করত নিরীক্ষণ করিতেছিল। সে ঐ আকারে ভগৰানের প্রতি ধাবমান হইয়া "অরে হত ইইলি" এই বলিয়া স্থীয় গদা দারা তাঁহার উপরে আঘাত করিল॥ ৭॥

অহে বিছুর! ভগবান্ বজ্ঞপুকর ঐ শক্রর অফির সমক্ষেই আপনার বাম পদ বারা বায়্বৎ বেগ-বতী তদীয় গদার প্রতিঘাত করিলেন॥ ৮॥

এবং কহিলেন অরে ! জয় করিতে ইচ্ছা করিতেছিন্ ভাল, আবার আপনার আয়্ধ ধরিরা চেকী।
কর্। ভগবান্ এই কথা বলিবামাত্র সে পুনর্কার গদা গ্রহণ পূর্বক তাহা ক্লেপণ করিরা ভয়কর
গর্জন করিতে লাগিল। তাহার গদা ক্লিপ্তা হইরা বেগে আসিতেছে দেখিতে পাইরা পরুড় যেমন
প্রগী ধারণ করে তাহার তায় অবলীলাক্রমে ভগবান্ তাহা গ্রহণ করিলেন ॥ > ॥

দৈত্য দেখিল আপনার পৌরুষ প্রতিহত হইল অতএব আপনাকে হতমান জ্ঞান করিয়া অপ্রতিভ হইল, ইহাতে যদিও ভগবান্ তাহাকে তদীয় গদা পুনর্কার প্রদান করিতে চাহিলেন ভথাচ শজ্জা বশতঃ তাহা লইতে ইছা করিল না॥ ১০॥

অভিচারে প্রবৃত অকার্য্যকারী পুরুষ যেমন ভ্রাত্মণকে উদ্দেশ করিয়া মারণাদি প্রয়োগ করে তাহার

क्रिंग तिलामहास्में पिका हिन्द्र क्षान मसः थ स्मीर्ग मीर्थित । हिन्द्रम क्षिप्त विभाषित्विमा हिन्न ईशा कार्क्यक्यम्ब विकः ॥ >२ ॥ वृद्रक यम्टल वर्ष्यान्तिमा हिन्नः व्यव्हान्ता विक्षित्र । व्यव्हत्वायः मक्टीन्यक्षीना नमन व्यव्हान्त्र विश्वास्त्र ॥ >० ॥

खिरवयामी ।

আন্তঃ থে আকাশ মধ্যে চকাসং প্রকাশমানং উদীর্ণা উৎকট। দীধিভিদী থিওত। নিশাতনেমিনা নিশিওধারেণ হরিরিজ্ঞা যথা তাক্ষ্প্য পতত্ত্বসূক্ষিতং চিচ্ছেদ। দেবান্ বিনির্জিত্যামূর্তকলদং নয়তা প্রত্তেন ইক্সপ্রত্তুত বজ্ঞতামোদত মানং দাতৃং পিছেমেকং তাক্তং তদ্বপা ইক্সপিডেনে। ছিন্নঞ্চ তদ্বপা ধে প্রকাশত তম্বং প্রকাশনামিতাপি সম্বত্তঃ ১২ ৪

অরা: সম্ভাজেতি অরি চক্রং তেন বছণ। বুকুে ছিলে সতি প্রভোতা অভিমুধমার্থতা হলেকবে। বক্ষঃ প্রহত্য । ১০।

क्रममन्द्रः।

যজাবেতি। যজো বিষ্ণুগুদ্ধং লক্ষীকুভোতার্থ:। বিঝার্থং বিগ্রাম্মিল অভিচরন্ বর্ণা হবনীর জবাং গৃহণতি ভবং ॥ ১১ ॥
দৈতামহাতটেন হিরণ্যাকেণ অপিতং কিপ্তং। উজ্বিভমিতি তাক্ষণতে ডাক্রমানাংশে তাংশবাং। নতু ত্বলিছবৈর
তং সিদ্ধানিতাংশেশি ॥ ১২ ॥

বুকু ইত্যাদিরু পূর্ব্ব পূর্ব্ব কোধাদিকং ভদাভাসএব। প্রহারাদিকক ভগবতো মহাসার্বং ভাবৈৰ । ১৩ ।

बीवियमापहळा बढी ।

विथा रहा । >> ।

চকাসদ্দীপামানমন্তৰ্গন্ত তথা ধে আকাশে উদীণা উপাতা ৰহিবপি দীধিতহো বক্ত তং। বহা চকাসন্তঃ আৰু ধে আকাশমধ্যে উদীণা দীধিতহো বক্ত তং। নিশান্তনেমিনা ভীক্ষধারেণ হরিরিস্তো বধা তাক ক গ্রুক্ত পততাং পক্ষং উক্ষিতং তাকাং চিছেন। দেবান জিল্পা অমৃতকলসং নয়তা গরুড়েন ইস্তপ্রযুক্ত বস্তুক্তামোদ্যকশার্থং পিছেনেকং তাকাং তল্বপা ইস্তুল্ভিকেদ ছির্ক বধা ধে প্রকাশতে তহুৎ প্রকাশমানমিভাগি সম্বন্ধঃ । ১২ ।

तुदक हित्त छैतः श्रव्हा नाकान्त् एक चनामशीकायमवर्शामा मात्राः व्यक्तात्वस्रिशे । ১० ।

ন্যায় বরাহ্রপধারি ভগবান্ বিষ্ণুকে লক্ষ্য করিয়া প্রস্থালিত অগ্নি তুল্য প্রসনলোলুপ তিশিখশূল গ্রহণ পূর্বক কেপণ করিল ॥ ১১ ॥

দৈত্য মহাসৈন্যের নিক্ষিপ্ত ঐ শস্ত্র ভয়ানক তেজঃ সহকারে গগণ মণ্ডলে প্রকাশমনি হইলে, ইপ্র যেমন গরুভের ত্যক্ত পক্ষ ছিন্ন করিয়াছিলেন তাহার ন্যায় ভগবান্ বরাহ ভাহার ঐ অস্ত্র আপ-নার শাণিতাথা চক্ষ বারা ছেদন করিলেন।

এই বিষয়ে মহাভারতীয় ইতিহাস যথা। দেবগণকে পরাজয় করিয়া গরুড় অয়ত কলস এহণ পূর্বক যাইতেছিলেন তাহাতে দেবরাজ তাঁহার বিনাশ বাসনায় আপনার মহাত্র বজ্র ক্লেপণ করেন, গরুড় ভগবানের বরে অমর হইয়াছিলেন, অমরয়াজের বজ্র জাঁহার প্রাণ বিনাশার্থ সমর্থ হইল না, কিন্তু গরুড় বিবেচনা করিলেন পুরন্দরের বজ্র অনোঘ, আমার নিকট ইহার হতমান হওয়া উচিত হয় না, এ নিমিত্ত তাহার মান দানার্থ একটা পক্ষ ত্যাগ করিলেন, তাহা আকাশে প্রকাশমান হইলে ইন্দ্র তাহাই ছেইন করেন ॥ ১২ ।

আপনার মহান্ত্র শূল ভগবানের তীক্ষধার চক্রছারা বহুপ্রকারে ছিন্ন হইলে দৈতা ক্রোধে প্রস্থানিত হইয়া উঠিল, তাহাতে দে গভীর গর্জন করিতে করিতে তাঁহার অভিমুখে আগমন করিয়া তদীয় বিজ্-তিশালি বিস্তীর্ণ বক্ষে কঠোর মৃষ্টি ঘারা আলাত করণানস্তর অন্তর্হিত হইল ॥ ১০ ॥

তেনেপ্ৰমাহতঃ কত ভগবানাদিশ্করঃ। নাকস্পত মনাক্ কাপি অজাহত ইব দিপঃ। ১৪॥
অথোকণা স্জন্মায়াং যোগমায়েশ্বে হরে। যাং বিলোক্য প্রজান্ত্রপু মেনিরেইস্থোপদংঘমং॥১৫॥
প্রবৃর্বায়বশ্চণ্ডান্তমঃ পাংশবমৈরয়ন্। দিগ্ভ্যো নিপেতৃ প্রবিধঃ কেপণৈঃ প্রহিতা ইব॥ ১৬॥
দ্যো নস্ভগণান্ত্রে হৈছঃ পবিছাৎ স্তন্মিজুভিঃ। বর্ষদ্ভিঃ পৃয়কেশাস্থিম্ত্রান্থীনি চাদক্রং॥ ১৭॥
গিরয়ঃ প্রত্যদৃশ্যন্ত নানায়ুধম্চোইন্য। দিখাস্গো যাতুধান্যঃ শ্লিন্যো মৃক্তম্প্রাঃ। ১৮॥

विषद्रयामी।

मनाजीवनि कानाः दम ॥ ১৪ ॥

অক অগত: উপদংবমং প্রালয়ং ॥ ১৫ ॥

পাংশুকুতং ভমশ্চ প্রেরিতবস্তঃ কেপলৈর্থন্তঃ । ১৬ ।

নটো ভগণো নক্ষত্ৰ সমূহো যন্তাং। অনেন দৈতাবলাভিরেকাৎ ব্লগত মূহ্রীভিজ্ঞানা গমাতে। অহি নক্ষ্যাণামসভ্যাৎ ॥১৭ নানা আয়ুধানি মুক্তীতি তথা। যাতুধানাদ্চ প্রতাদৃখ্যত ॥ ১৮ ॥

क्रमनमर्छः ।

ত্তিখবানস্তরমাহ। তেনেখমিতি আদিঃ প্রম্কারণ রূপশ্চাসে শৃকরাক্তিশ্চেতি ॥ ১৪॥

প্রमा: उक्षभूजानमः ॥ ১৫। ১৬ ॥

खनित्रपूरवाक्ष (मण्टकाां जितावाा:। कर्जनि ध्वामांगां ॥ ১१। ১৮। ১৯। २०। २১। २२॥

बिविश्वनाथहळ्वछी ।

मनाक् जैवनिश काशाःरम ॥ ১८ ॥

व्यक्ष नमर्क व्यक्त विचना उनमारयमः धन मः । ১৫॥

(क्लिटेन बंदेख: 1 20 1

নষ্ট ভগণেষ্ঠানেন যুদ্ধ কুতৃহলিনা ভগবভা ব্ৰহ্মণত মুহুর্ত্ত্বচাতিক্রমো গম্যতে ॥ ১৭ ॥

नानाश्भभूता वाज्धानाक व्यजानुभाख ॥ ১৮॥

কিন্তু হ্রু বিজ্র! তাহার ঐ মুক্ট্যাঘাতে ভগবান্ আদি শৃকর আহত হইলেও কিঞ্মাত্র কম্পিত হইলেন না, মাল্য প্রহারে মদমত মতঙ্গজের কি কায়কম্পন সম্ভবে ? ॥ ১৪॥

অনন্তর ঐ দৈত্য যোগমায়ার ঈশ্বর হরির প্রতি বস্তু প্রকারে মায়া বিস্তার করিতে লাগিল। তদ্দ-র্শনে প্রজা সকল অতিশয় ভীত হইল এবং মনে করিল জগতের বুঝি প্রালয় উপস্থিত হইল॥ ১৫॥

ফলতঃ তাহার পরেই প্রচণ্ডবেগে বায়ু বহিতে লাগিল এবং ধূলি দারা দিক্ দকল যেমন তিমি-রাচ্ছেম হইল ও যেন ক্ষেপণ নামক যন্ত্র বিশেষ দারা ক্ষিপ্ত হইয়া অগণ্য প্রস্তর থণ্ড চতুর্দ্দিক হইতে পড়িতে লাগিল ॥ ১৬॥

আর তৎকালে গগনমগুলে মেঘ সমূহ আসিয়া উদিত হইল, তাহা হইতে বারম্বার বিদ্রাৎ ও বজ্জনির্ঘোষ সহ পূর, শোণিত, কেশ, অন্ধি, বিষ্ঠা, মূত্র বর্ষণ হইতে লাগিল এবং তাহা এ রূপ বিস্তৃত হইয়া চারিদিগে ব্যাপিল যেন নভোমগুলম্থ নক্ষত্রপুঞ্জ একেবারেই তিরোহিত হইয়া গেল এমত বোধ হইল ॥ ১৭ ॥

অপিচ পর্বত সকল এ রূপ দৃষ্ট হইল বেন তাহারা বিবিধ আয়ুধ বর্ষণ করিতেছে। তাহার পরে কতকগুলা রাক্ষ্যীও আসিয়া উপস্থিত হইল, তাহারা সকলেই দিখাসা অর্থাৎ নগা, সকলেরই মন্তকে আলুলায়িত কেশ এবং সকলের হস্তে এক একটা শূল ছিল ॥ ১৮॥

বক্তি র্থক রক্ষোতি: পত্তাশ রথ ক্থারৈ:। আততায়িতিরংংক্টা হিংআবাচোহতিবৈশনা ॥১৯ প্রাচ্ছতানাং নায়ানীমাহারীবাং বিনাশয়ন্। হৃদর্শনান্তঃ ভগবান্ প্রায়ৃত্ত দয়্ভাং ত্রিপাং ॥ ২০ তদা দিতে: সমতবং সহসা হাদি বেপথ্:। সারস্তা ভর্ত রাদেশং স্তনাকাত্তক্ প্রহক্তবে ॥ ২১ ॥ ব্যান্তাহ্ন ক্যানাহ্ন ভ্রশচাত্তর কেশবং। ক্ষোপগৃহ্মানোহ্মং দদৃশে হবছিতং বহি: ॥ ২২ ॥ তং মৃষ্টিভির্বিনিম্নতঃ বজ্রসারৈরধাক্ষর:। করেণ কর্ণমূলে হহন্ যথা ছাট্রং মরুৎপতি: ॥ ২০ ॥

औषद्रवामी ।

হিংলা: ছিদ্ধিতিদ্ধীতোবং ভূতা:। অভিবৈশসা: অত্যুগ্রা বাচ: উৎস্টাইডালৈব বাকা সমাধি:।১৯। প্রাছক্তানামিতি প্রকটিতা মায়া: বিনাশয়ন্। বিনাশন্মিতি পাঠে বথাক্ততেব বলী। তিপাৎ তীণি সৰ্নানি পাদা বস্ত ষঞ্জমুর্জিরিতার্থ:। ত্যোহস্ত পাদা ইতি ক্ষতে:॥২০॥

ভর্রাদেশং অংপ্তৌ ভগবান্ হনিষ্ঠীতোবং ॥ ২১ ॥ উপগৃহমান: বাহ্বোরস্ত নিধায় সংঘট্টবন্ ॥ ২২ ॥ অহন্ অহান্। আইং বৃত্তং মকংপতিরিক্তং ॥ ২৩ ॥

क्रमनमर्छः ।

তমিতি মরুংপতিরিক্ত:। বজেপেতি শেব: ॥২০॥

क्षिविधनाधरक्रवर्छी।

অভিবৈশসা অভাগ্ৰা বাচ-চ উৎস্থা উদস্জান্ত ॥ >> ॥
বিনাশনং বিনাশকং বিনাশম্মিতি পাঠে বিভীয়ার্থে বর্ষ্ঠাঃ। অম্বত্তপ আদমং পাদা বভাস তিপাৎ ধর্মমূর্তিঃ বরা তীপি সবনানি পাদা যভা। তামোহত্ত পাদা ইতি শ্রুতে ব্জামূর্তিরিভার্থঃ ॥ ২০ ॥

ভর্ষাদেশং দংপুরো ভগবান্ হনিষ্টীতোবস্তং । ২১ । বাহ্বোরস্তনিধার মর্দরিষার পুগৃহমানোপি তং স্বমাৰ্ছিরবৃত্তিং দদর্শ । ২২ ॥ তত্ত-চ তমস্বরং দাইং বৃত্তং মরুৎপতিরিক্তঃ । ২০ ।

আর বহু বহু রাক্ষদ এবং কুঞ্জর, অখ, রণ, পদাতি, আততায়ীরূপে প্রকাশমান হইয়া "মার্ মার্, কাট্ কাট্" এইরূপ হিংজ্ঞ এবং উত্রবাক্য প্রয়োগ করিতে লাগিল ॥ ১৯॥

যজ্ঞমূর্ত্তি ভগবান্ দৈত্য কর্তৃক প্রকটিত। ঐ সমন্ত আহ্নরী মায়া নিরীক্ষণ করিয়া তাহার বিনাশার্থ আপনার প্রম প্রিয় হুদর্শনাস্ত্র প্রয়োগ করিলেন॥ ২০॥

এই সময়ে দিভির ভর্তৃবাক্য অর্থাৎ "ভগবানের হস্ত হইতে তোমার ছুইটা পুজের বর্ধ হইবে" ইহা শুরণ হওয়াতে সহসা ভাঁহার হৃৎকম্প ও স্তন হইতে শোণিত আব হইতে শাগিল॥ ২১॥

ভগবানের স্থাপনিচক্র দারা হিরণ্যাক্ষের নায়া সমস্ত উদস্ত হইলে সে পুনরায় তাঁহার প্রতি ধাব-মান হইল এবং ক্রোধ বশতঃ তাঁহাকে ধরিয়া যেন বাছদ্বয়ের অন্তর্বন্তী করত মর্দ্দিত করিবার চেফা ক্রিল কিন্তু বৈ দেখিল তিনি বাছর বাহিরে অবস্থিত রহিয়াছেন ॥ ২২ ॥

অনস্তর ঐ অত্র বন্ধ তুল্য দৃঢ় সুষ্ঠি বারা প্রহার করিতে লাগিল। তাহাতে ভগবান্ আদিবরাহ মরুৎপতি ইক্রে যেমন ব্রোহ্ণরকে আঘাত করিয়াছিলেন তাহার ন্যায় আপনার সম্প্রত চরণহয় হারা তাহার কর্ণন্লে প্রহার করিলেন॥ ২০॥ ন আহতো বিশ্বস্কা হ্বজয়া পরিভ্রমন্গাত্র উন্তলোচন:।
বিশীর্ব বাহ্বজিত্র শিরোক্রহোহপভন্তবর্গা নগেকে। সুলিতো নভন্ততা ি ২৪ ॥
ক্রিতো শয়ান: তমকুঠবর্চসং করালদংট্র: পরিদ্রুলছেন:।
অক্রাদরো বীক্ষ্য শশংক্রাসতা অহো ইমাং কোকু লভেত সংছিতি: ॥ ২৫ ॥
যং যোগিনো যোগসমাধিনা রহো ধ্যায়ন্তি লিলাছসতো মুক্কয়া।
তিস্যেব দৈত্যথ্যভ: পদাহতো মুথং প্রপশ্যংস্তমুগ্রস্কর ॥ ২৬ ॥
শ্রীদেবা উচু: ॥
নমোন্যন্তেহ্ধিল যন্তভন্তবে ছিতো গৃহীতামলস্তম্প্রের।

श्रियत्यामी ।

পরিতো ভ্রমং গাত্রং শরীরং যত। উদত্তে বহিনির্গতে লোচনে যত। বিশীর্ণা বাহ্বাগরো যত। নগেছো মহাজ্রমঃ। লুকিড: উন্মূলিড: নভন্তা বায়্না ॥ ২৪॥ সংস্থিতিং মৃত্যুং ॥ ২৫॥

অসতঃ আরোপিতাৎ দিঙ্গদীরাৎ মোজুমিছেরা বরাহ্ত পূর্বপাদরোরের কর্ত্বাৎ করেণাহরিতি পদাহত ইতি চাবিক্লং। ১২৬ অথিল যঞানাং তম্ববে বিভারায় কারণায়েতি বা অক্সমুদঃ মর্যজেতা ॥ ২৭ ॥

क्षममण्डः।

অকাদর ইতি। ধ্বিসহিত্তাৎ । ২৪।২৫।২৬ । দেবা উচুরিভি। দেবা ইক্রাদর:। স্থিতি সময়ে প্রকটিত শুদ্ধসন্তাম্প্রে শ্রীবিজুদ্ধপার । ২৭ ।

श्चीविषनाथठक वर्षी ।

নগেছে। মহাক্রমঃ লুলিভ উন্মূলিভঃ । ২৪ ।

नःविज्ञिः मुकार । २८॥

পদাহত ইতি বরাহত পুর্রপাদরোরের করতাৎ করেণাহরিত্যনেনাবিরোধঃ মুনীনাং শাপাৎ হ স্পট্টং ॥ ২৬ ॥

ভস্তরে বিস্তারকায় কারণারেভি বা। .আকৃত্তদ: মর্ঘভেদী। ২৭।

যদিও ঐ দৈত্য ভগবান্ কর্তৃক অবজ্ঞা পূর্বেক আহত হইল, তথাচ এক পদাঘাতে তাহার দর্বি শনীর সুর্ণিত, লোচনদ্বয় বহির্গত এবং হস্ত পদ ও কেশ সমূহ বিশীর্ণ হইয়া গেল, অতএব বায়ুবেগে প্রকাণ বৃক্ষ যজ্ঞা উন্মূলিত হইয়া পতিত হয় তাহার ন্যায় ভূতলে পড়িয়া গেল॥ ২৪॥

তাহার অকুঠ তেজঃ ও ভীষণ দশন ছিল, আর আপনি জোধ বশতঃ সর্বনাই আপনার অধর দংশন করিত। সে ঐ রূপ নিহত হইয়া ভূতলশারী হইলে, ব্রজাদি যে দকল অমর দমর দর্শনার্থ আগমন করিয়াছিলেন, তাঁহারা তাহার ঐ একার আকার দেখিয়া পরস্পার সহর্বে কহিছে লাগিলেন, অহো! এ রূপ মৃত্যু কে লাজ করিতে পারে ? ॥ ২৫ ॥

আহা ! ইহার কি ভাগ্য ! যোগিগণ আরোপিত লিক শরীর হইতে মুক্ত হইবার বাসনায় নির্ক্ষনে যোগ ও সমাধি বারা বাঁহার ধ্যান করিয়া থাকেন এই লৈত্য কি না ,সেই ভগবানের চরণ বারা আহত হইয়া ইহাঁর মুখ ক্ষল সন্দর্শন করিতে করিছে আপনার কলেবল পরিত্যাগ করিল ॥ ২৬ ॥

তদনন্তর দেবগণ হর্ব প্রকাশ পূর্বক ভগবান্ বরাহের তাব করিয়া কহিতে লাগিলেন, হে ভগবন্! তোমাকে নমস্কার নমস্কার, প্রভো! তুমি অধিল যজের বিস্তারকারী, তুমি লোক স্থিতির নিমিত দিন্দ্যা হতোহয়ং জগতাসকল্পদন্তং পাদভক্ত্যা বয়নীশ নির্বতা: ॥ ২৭ ॥

শ্রীনৈত্রের উবাচ ॥ 4

এবং হিরণ্যাক্ষমস্থা বিক্রমং স সাদরিছা হরিরাদিশুকর: ।
জগাম লোকং স্বমধন্তিতোৎসবং সমীড়িতঃ পুকরবিক্টরাদিভিঃ ॥ ২৮ ॥

ময়া যথানুক্তমবাদি তে হরে: কৃতাবভারত্র শ্রমিত্র চেষ্টিতং ।

যথা হিরণ্যাক্ষ উদার বিক্রমো নহায়ধে ক্রীড়নবিদ্যাকৃতঃ ॥ ২৯ ॥

শ্রীসূত উবাচ ॥

ইতি কৌশারবাধ্যাতামাশ্রুত্য ভগবং কথাং । ক্রতানন্দং পরং লেভে মহাভাগবতো দিল ॥ ৩০

অন্তেমাং পুণ্যশ্লোকানামুদ্যান যশসাং সতাং । উপশ্রুত্য ভবেশ্লোদঃ শ্রীবংসাক্ষত্য কিং পুনঃ ॥ ৩১

🖻 धत्रत्रामी।

সাদরিবা হবেতার্থ:। পুকরবিষ্টরাদিভি এ স্নাদিভি: সংস্কৃত: । ২৮ ॥
यथाন্তং জকজমনভিক্রম্য ময়াহ্বাদি ভব কথিতং হে অ্মির ধ্থা বেন প্রাকারেণ । ২৯ ॥
হে বিল শৌনক ॥ ৩০ ॥ কথামুপশ্রত্য ॥ ৩১ ॥

क्रममन्दः।

স্থং বারাহমের ॥ ২৮ ॥ ইতি কৌশারবেত্যাদিকং শ্রীগুরুবচনাদ্ধিকং স্তৰ্চনমিতি গ্রমাতে ॥ ২৮ । ২৯ । ০০ । ৩১ । ৩২ ॥

श्रीविधनायहळावर्शी।

পুদরং পদাং ৰিষ্টর আসনং যক্ত স ত্রহ্মা তদাদিভি: ॥ ২৮॥

যথান্কং গুরুজননতিক্ষ্য। বহা যথা উক্তং প্রীপ্তরণেতার্থতো ল্ডাং। তথা অনু অনস্তরং তে তুড়াং অবাদি উক্তং। হে স্থমিত চেষ্টিতমেব কেন প্রকারেণ আতং ততাহ হথা যেন প্রকারেণ ॥ ২৯। ৩•॥

পুণালোকানাং যুধিষ্টিরাদীনাং পুণালোকো যুধিষ্টির ইতি প্রসিদ্ধ: ॥ ৩১ ॥

বিশুদ্ধ সন্ত মূর্ত্তি ধারণ করিয়া থাক, এই দৈত্য জগতের মর্মাজেদী ছিল, আমাদের সৌভাগ্য বশতঃ এ তোমা কর্ত্তক হত হইল, হে ঈশ। আমরা তোমার চরণারবিন্দে ভক্তি করিয়া থাকি, তাহাতেই আমাদের বিশ্ব সকল বিনষ্ট হইল, এখন আমরা পরম নির্বৃতি প্রাপ্ত হইলাম ॥ ২৭॥

মুনিবর মৈত্রের বিছরকে সম্বোধন পূর্বক কহিলেন, বংস। এই প্রকারে অসহ্য বিক্রম হিরণ্যাক্ষের বধানন্তর ব্রহ্মাদি দেবগণ কর্জ্ক সংস্তত হইয়া ভগবান্ আদি শুক্র আনন্দোৎসব পরিপূর্ণ স্থীয় স্থ্যয় ধামে গমন করিলেন। ২৮॥

• ভগৰান্ হরি জ্বভার গ্রহণ পূর্বক যে সমস্ত কার্য্য করেন এবং আদি বরাহের সহিত সমরে উদার বিক্রম হিরণ্যাক্ষ ক্রীড়নকের ন্যায় যে প্রকারে নিরাকৃত হয়, অহে বিচুর! তাহার এই বুতান্ত যেমন শুরুমুখে প্রবণ করিয়াছিলান ভজেপ ভোমার নিক্ট বর্ণন করিলাম ॥ ২৯ ॥

সূত কহিলেন হে দ্বিজবর শৌনক! মুনিবর মৈজেয় কর্তৃক বর্ণিত এই সমস্ত ভগবৎ কথা প্রবণ করিয়া মহাভাগবৃত বিত্র পরম আ্নন্দ লাভ করিলেন॥ ৩• ॥

হে মহাশয়। এ বিষয়ে তাঁহার হর্ষ্যেদয় বিচিত্র নয়। উদ্দাম যশঃশালি অন্যান্ত পুণ্যলোক সাধু-দিগের কথা প্রবণ করিলেও যথন আমোদ উপস্থিত হয়। তথন শ্রীবংশাক স্বয়ং ভগবানের কথায় যে আনন্দোদয় হইবে মা ইহা কি জাবার বলিতে হইবে ?॥ ৩১ ॥ (या भरक्तसः व्यव्यक्तः धात्रसः व्यविष्यः । ट्यांगसीनाः करत्वृनाः कृष्ट् ट्यां त्याव्यः । व्यव्यक्तः । व्यव्यक्तः व्यव्यक्तः । कृष्टसः । कृष्टसः । कृष्टसः । कृष्टसः । कृष्टसः । व्या देव हित्रगाक्रवधः भरासूष्ठः विक्वीष्ट्रसः कात्रगण्कताष्ट्रसः । भृत्यां कि भाष्टि भाष्टस् । विभूष्टाटक विक्वाप्यमः । भृत्यां कि भाष्टि । विक्र ॥ विभूष्टाटक विक्वाप्यमः । विक्र ॥ विश्वप्यसः भर्यास्य । विक्र ॥ विक्र । व

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়ক্ষমে হিরণ্যাক্ষ
বধ একোনবিংশতি তমোহধ্যায়: ॥ # ॥ ১৯ ॥ # ॥

क्रियतकारी।

ভিক্তিমাত্রেণ পশ্নামপি সুবজঃ অন্যথা দেবানামপি ছব্ল ভি ইভি তৎকথাশ্রবণে কন্তানন্দো ন তাদিভাছে য ইভি বাজাং। ঝবোগ্রাহং ক্রোশন্তীনাং সভীনামিতি ক্লপালুবমুক্তং। সকটাদমোচরং ॥ ৩২ ॥ কারণেন পৃথিব্। মরণাদিনা শুকররপত ॥ ৩০ ॥ এডদ্বে বিক্রীড়িতং শৃণ্ভাং অকে শ্রীনারায়ণোগতি ভবিত। মহপুণাং অর্গাদিপ্রদং অবং পবিত্রং অভিশবেন শোধকং। ধনাবহং। যশতং কীর্ত্তিকরং। আয়ুবশ্চ আশিবাঞ্চ পদং স্থানং পরিত্রাণং বা। প্রাণানামিন্তিরাণাঞ্চ পদং অবং হে শৌনকঃ৩৪ ॥ ৩ ॥ ইভি ভতীরে একোনবিংশঃ ॥ ৩ ॥

क्रमगमर्छः।

তমিতি। ঋফ্ভিরকুটিলৈ রতএবানস্তশরণৈ অসাধৃতি ভতে।২ন্তাদুশৈ:। ৩০।০৪। এতদিতি। অল হে শৌনক:।০৫।
। ৬। ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্তমে শ্রীজীবগোষামিকত ক্রমসন্দর্ভত একোনবিংশতিতমোহধ্যায়: সমাপ্ত:। ৬।

श्रीविषमाभठकवडी ।

কথাশ্রণমাত্রেণ মহুব্যাহ্ররভীতি কিং বজবাং বতঃ শ্রণেনাপি পশ্নপ্যুদ্ধরতি শ্রেতাাই ব ইতি। ধবো গ্রাহঃ ঝবাদিতি কিং বজবাং রুজ্ভঃ সংনারাদ্পি। করেণুনামিতি ভাসাং পতিমিতার্থঃ ॥ ৩২ ॥

অত: স সলবারাধ্রিত্ম্চিতমিত্যাহ ভমিতি কৃত । শরণাগতণালনাভিজ্ঞ:। অনাধুভিরনৃক্তিরস্থারণৈশ্চ ॥ ৩০ ॥ স্কামানপি ক্থাশ্রমণে প্রবর্ত্ত্যতি। যো বা ইতি ॥ ৩৪ । ৩৫ ॥

॥ • ॥ देखि नावार्थन मिंछाः दर्विनाः खखाठकनाः । एडीया धारकानियः नम्ना नम्बः नक्षः नकाः । • ॥

হে ব্রহ্মন্! একদা গজেন্দ্র থাহ্এন্ত হইয়া সহাবিপদ্ জ্ঞানে তাঁহার চরণাস্থল ধ্যান পরায়ণ হইতেছিল এবং তাহার করেণু সকল কাতর হইয়া আর্ত্তনাদ করিতেছিল, তাহাতে যিনি অমুধ্যান মাত্রে অমুকম্পা প্রকাশ প্রকি আগমন করিয়া তাহাকে সঙ্কট হইতে উদ্ধার করেন॥ ৩২॥

তিনি অনন্যাশ্রয় সরল চিত্ত সমুষ্যমাত্রের অতিশয় অধারাধ্য, কেবল অসাধু লোকেরাই তাঁহাকে ছুরারাধ্য বোধ করে, ইহাতে কোন্ কৃতজ্ঞ ব্যক্তি তিনি যে শরণাগত প্রতিপালক ইহা জানিয়া তাঁহায় সেবা না করিবে ? ॥ ৩৩ ॥

হে দ্বিজ । এই হিরণ্যাক বধ বৃত্তান্ত এবং ধরণীর উদ্ধারার্থ ভগবানের শুকর রূপ ধারণ পূর্বক আছুত জ্রীড়া বিবরণ যে ব্যক্তি প্রবণ অথবা গান কিন্তা অসুমোদন করেন ব্রহ্ম হত্যা জ্বনিত পাপ হইতেও তাহার পরিত্রাণ হইতে পারে ॥ ৩৪ ॥

হে ত্রহান্! ভগবানের এই জীড়া বিবরণ সহাপুণ্য জনক অতি বিশুদ্ধ, সদা ধনবিহ, সহাযশক্ষর, আয়ু: ও আশীর্বোদের স্থান এবং বুদ্ধে প্রাণ ও ইন্দ্রিয়ের শৌর্য্য বৃদ্ধিকারক, যাঁহারা ইহা প্রবণ করেন তাঁহাদের স্বস্তুকালেও ভগবান্ নারায়ণ গতি হ্রেন । ৩৫ ।

॥ # ॥ ইতি ভৃতীয়ে একোনবিংশ ॥ # ॥

शिएगीनक छेवाह ।

মহীং প্রতিষ্ঠানধ্যক্ষ সৌতে স্বায়স্থ্রো মসু:। কাল্যনতির্ভদ্যরাণি দার্গায়োবরজন্মনা:॥ ১॥
ক্ষা মহাভাগৰত: কৃষ্ণনৈত্রকান্তিক: হুহুৎ। যন্তত্যাকাঞ্ডলং কৃষ্ণে সাপত্যমহ্বানিতি॥ ২॥
বৈপায়নাদনবরো মহিছে ভক্ত দেহকঃ। সর্বান্ধনাশ্রিত: কৃষ্ণ: তৎ পরাংশ্চাপ্যসূত্রত:॥ ৩॥
কিম্মপুচ্ছনৈত্রেয়ং বিরক্ষান্তীর্থদেব্য়া। উপগম্য কুশাবর্ত আসীনং তত্ত্বিভ্নং॥ ৪॥

विश्वदायी।

বিংশে বরাই জন্মাদি বাবধানাদ্ধাদিতঃ। সংগাঁৎসুমার্যাতে বক্তুম্বরং প্রস্তুতং মনোঃ । • ।

প্রতিষ্ঠাং স্থানঃ। অধ্যক্ত প্রাণ্য সৌতে স্তক্ত রোমহর্ষণক্ত পূত্র। অবরং অর্কাচীনং জন্ম বেবাং তেষাং ঈশ্বরে লীনানাং মার্গার নির্গমার কানি দারাণি ক্লতবান্ অর্কাচীনান্ প্রাণিনঃ কৈঙ্গণাইরঃ স্টবানিভার্থঃ ॥ ১ ॥

বিহুবনৈত্রের সম্বাদেনৈ বৈত্ত জ্ঞান্তত ইতি তমেব সংবাদঃ প্রাই মাহ ক্ষত্তেতি পঞ্জি:। প্রীকৃষ্ণস্ক্তে হেতু: য ইতি হুর্গ্যেষ্
নাদিভিরপতৈয়া সহিতঃ অগ্রজং ধৃতরাষ্ট্রং। অববান্ কৃতাপরাধ ইতি হেতো: শ্রীকৃষ্ণোক্ত মুদ্রানাদ্রাৎ ব্তত্যাল ॥ ২ ॥
অনবরঃ অনুনা মহিছে মহিমি ॥ ৩ ॥

कुणांवर्स्त शकाबादत । 8 ।

क्रमनमर्भः।

বরাহলীশাং প্রাদলিকীং শ্রুতা প্রস্তুতং পুছতি মহীমিতি ॥ ১ ।

তদেবং স্বাভয়োগ প্রশ্ন বিছরপ্রশামর কথা অপ্রবারারস্থৃতিতং মন্ধা তংপ্রশ্নমেব পৃদ্ধতি। ক্ষত্তি পঞ্জি: । ২। ৩। তলচ বদি কচিতভারে বিভিন্নতি ভর্মপার্ভ্য তামেবাদিত: প্রবর্ত্তরেত্যাহ বিরাজাতীর্থনেবহেত্যাদিনা পাদোনপদান্তেরেণ

बीविधनाथठक वर्छी।

বিসর্বো বং সমাসেন পূর্বমুক্তঃ স এবছি। বিংশে ব্যাসাচাতে স্বায়স্কুবংশবিবক্ষরা ॥ • ।

প্রতিষ্ঠাং আগ্রয়ং। সৌতে রোমর্থণস্থনো। অবরজন্মনাং সনকাণিড্যঃ উত্তরকালল্যবভাং জীবানাং ঈশ্বরে লীনানাং মার্গায় নির্গমায় কানি যারাণি কৃতবান। অর্থাচীনান্ প্রাণিনঃ কৈফপালে: স্টবানিতার্থ: ॥১॥

এতংগ্রান্তরত্ব বিছর্বনৈত্রের সংবাদেনৈক জহীতাাশরেনাহ ক্তেতি। সাপতাং ছর্যোধনালৈঃ পুজৈঃ সহিতং ॥ २॥ অনবরঃ অন্নঃ॥ ৩॥

বিরজা: বিগতং রজো যমাৎ স:। তীর্থসেবয়েতি ছেত্জে:। প্রভাসত্তাচ ভীর্থানামেব রজোমালিভং বিগতমিত্যর্থ:।

বিংশতিতম অধ্যায়ে বরাহ জন্মাদি বর্ণন নিমিত্ত স্ম্তিপ্রকরণ কথনের ব্যবধান হইয়াছিল, এ প্রযুক্ত পুনশ্চ প্রধ্যাবধি সায়স্কুব মনুর বংশাসুস্মরণ ॥ • ॥

মুনিবর শৌনক সূতকে সম্বোধন পূর্বক জিজ্ঞাসা করিলেন হে সোতে ! স্বায়স্তুব মতু অবনীরূপ স্থান প্রাপ্ত হইমা প্রলয়কালীন যে সকল প্রাণী ঈশবে লীন হইমাছিল, তাহাদিগের নির্গমনার্থ কি করেন অর্থাৎ অর্বাচীন জন্মা প্রাণি নিকরের কি উপায়ে সৃষ্টি হইল ?॥১॥

অপর হে সূত। মহাভাগবত বিহুর ভগবান্ জীক্তফের অক্তিম নিত্র, তাঁচার অঞ্জ ধৃতরাষ্ট্র জীক্তফের মন্ত্রণায় অনাদর করিয়াছিল, তাহাতে তিনি সপুত্র ভাতাকে কুতাপরাধ বিবেচনা করিয়া পরিত্যাগ করিয়াছিলেন ॥ ২ ॥

আর তিনি মহর্ষি বেশব্যাদের অনুষ্ঠতে উৎপত্ত হন এ নিমিত্ত মহিমায় ঐ বৈপায়ন অপেকা বুনে ছিলেন না, অপর সর্বাত্তঃকরণে শ্রীকৃষ্ণের আজিত হইয়া তৎপরায়ণ জনের অনুগামী হয়েন॥ ৩॥ তিনি তীর্থ পর্যাটন ঘারা স্বীয় কবুষ কয় পুরঃসর গলাধারে উপনীত হইয়া তথায় আসীন তত্তত তরোঃ সংবদতোর্নং প্রবৃত্তা হ্যমলাঃ কথাঃ। আপো গাঙ্গা ইবাঘদী হ'রেঃ পাদাসুজাঞ্রাঃ॥ ৫ তা নঃ কীর্ত্তর ভদ্রতে কীর্ত্তন্যোদারকর্মণঃ। রসজ্ঞঃ কো সু তৃপ্যেত ইরিলীলায়তং পিবন্॥ ৬॥ এবমুপ্রপ্রবাঃ পৃষ্ঠ ঋষিভি নৈ মিষারনৈঃ। ভগৰত্যপিতাধ্যাদ্ধ স্তানাই প্রেয়ত্যমিতি॥ ৭॥ শ্রীসূত উবাচ॥

रदाश्व 'ठटकाफ्छरनाः समाग्रम। निममा रशाक्रवाशः त्रमाछलार ।

व्यथतयामी।

যং কিমপি পৃক্তু কিং তবেতি চেন্তআহ তয়োরিতি অবয়ঃ: কথা নৃনং প্রবৃত্তাঃ ॥ ৫ ॥
কীর্তনানি কীর্তনার পি উদারাণি কর্মাণি বস্য হরে: ॥ ৬ ॥
এবমিতি ব্যাসবাকাং । উগ্রেশ্বা বোমহর্ষণপূত্রঃ । নৈমিষমন্ত্রনাশ্রেরা বেবাং অপিতিমধ্যাত্মং মনো বেন ॥ ৭ ॥
গোক্ষরবাং দীলাং হিরণ্যাক্ষণ্থ অবজ্ঞার হতং নিশম্য ভারতো বিহুরঃ ॥ ৮ ॥

क्रममसर्छः

প্রথমং তাবৎ তীর্থদেবয়া বিরজা: ছ:দক ছ:ধরছিতা: প*চাৎ উপগম্য ॥ 6 ॥

প্রবৃত্তা ইত্যাদিনা পুনরাদিত এব শ্রবণেচ্ছা স্পষ্টীকৃতা ॥ ৫। ৬ ॥

ঋবিভিরিতি। ত্রীশোনকপ্রশ্লমনুমোদমানেঃ সর্বৈরের তদমুবাদাৎ॥ ৭॥

শীস্তত্ত ভগবৎ ক্রমবৎ শীবিহ্রত ক্রম ইতি ক্সাদ্ধারাবিচ্ছিদ্যেত্যেবং। তৎ প্রশংসাগর্ত্মুররমাহ। হরেরিতি। তদিদ মণি শীশুকোক্তমেব স্থতোহয়মসুক্রতবানিতি গমাতে। তদেবাসুস্ত্যাসে সর্বং কথরতি। গোরুত্ধরণক্রপাং দীলাং নিশম্য

बीविधनाध5कवर्जी।

क्रभावर्ख शकाबादत ॥ ८ ॥

অনলা: কথা ইতি তরোর্জকণে ভকানাঞ্চ ক্রফাল্লকথা রাহিত্যাৎ গলারা আপ: গাল্য: অবস্থীরঘ্রা: a ৫ ॥ ভদ্রং তে ইত্যৌৎসুকোনাশীর্মাল:। কীর্জ্ঞানি উলারাণি কর্মাণি বাসু যত বেতি কথারা হরের্মা। ৬ ॥ অধ্যাত্যং মন: a ৭ ॥

স্ঠু অমায়রা ধৃতা নিতান্থিতা ক্রোড়ভত্বত ওতা হরে: ডৌদাদিকত ধৃতং বিতাবিভাত রূপং। গো:প্থিব্যা:। ভারতো বিজুর:॥৮।৯॥

रेगरक प्रारंक कि किकामा कतिरलन ॥ 8 ॥

তাঁহাদের পরস্পার কথোপকথন সময়ে অবশ্য হরিপদাশ্রেরা অমলা কথাই প্রবৃত্তা হইয়া থাকিবে, সে কল কথার মহা মাহাত্ম্য গঙ্গান্ধলের ন্যায় কলাব সকল সংক্ষয় করে॥ ৫॥

হে সূত্ত! তোমার কল্যাণ হউক, তুমি আমাদিগের নিকট ঐ সকল পাপবিমোচনী কথা কীর্ত্তনকর, আমরা এত শুনিলাম তথাপি আমাদের বিশেষ পরিভৃত্তি বোধ হইল না, ভগবানের সকল কর্মই উদার এবং কীর্ত্তনার্হ, তাহার লীলামত পান করিয়া কোন্ রসজ্ঞ ব্যক্তি পরিভৃত্ত হইতে পারে অতএব যাহা যাহা জিজ্ঞানা করিলাম তৎ সমুদায় বল ॥ ৬ ॥

নৈমিষারণ্যবাসি মুনিবৃন্দ এই প্রকার প্রবণাভিলাষ প্রকাশ করিলে রোমহর্ষণ পুত্র উগ্রেখাঃ ভগবানের পাদপায়ে আপনার মন: সমর্পণ করত সাজাধন প্রবিদ্ধ কহিলেন, ভবে প্রবণ করুন । ৭॥

হে ঋষিগণ! আত্মনায়া দারা বরাহ মূর্ত্তি ধারণ করিয়া ভগবানের রসাতল হইতে ধরণী উদ্ধার লালা এবং অবজ্ঞা পূর্ব্যক্ত হিরণ্যাক্ষ দানব নিপাতের বিবরণ শ্লেবণ করিয়া বিকুরের চিত্তে সাভিশয় नीनाः हित्रगाक्तमयळवा रुठः नःबाउहर्दा मूनिमाह छात्रछः ॥ ৮॥ श्रीविष्ठत्र छेवाह ॥

প্রকাপতিপতি: স্থা প্রকাশর্গ প্রকাশতীন্। কিমার্ডত বে জন্ম প্রক্ষেব্যক্তমার্গবিং ॥ ৯ ॥ যে মরীচ্যাদর্গো বিপ্রা যস্ত স্বায়স্থ্বো মসু:। তে বৈ জন্মণ আদেশাং কথ্যতদভাবয়ন্॥ ১০ ॥ দ বিতীয়াঃ কিমস্কন্ স্বতন্ত্রা উত কর্মায়। আহে। স্বিং সংহতাঃ দর্ম ইদং স্মাস্মকল্লয়ন্॥ ১১ ॥ খ্রীদৈজেয় উবাচ ॥

দৈবেন ভূর্বিতর্কেণ পরেণানিমিষেণ্চ। ভাতকোভান্তগৰতো মহানাসীন্দুণ্তরাং ॥ ১২ ॥

वीपद्यामी ।

यश्वाक्रमवाक्रमार्गविष् । जन्मत्ना वा विद्रमवनः । ১ ।

এতৎ লগৎ অভাবয়ন্ উৎপাদয়ামাস্থ: । ১০ ।

সৃষ্ঠিরা: সভার্যা:। অভ্তা ভার্যানপেকা:। কর্মস্থ প্রকাস্থালিরু সংহতা: প্রস্প্রাপেকা: ইলং অগ্ ঃ ১১ ॥

ত্রশা কিমারভতেতি প্রশ্নত বক্ষাণীন স্টবানিভাত্তরং বক্তঃ পূর্ব্বোক্তাং স্টেম্প্রারহতি বৈবেনতি সপ্ততঃ। ম্বাদি প্রশানাং ত্ত্রাধ্যায়মারতা উত্তরং ভবিষাতি। ত্র্বিতর্কেণ দৈবেন জীবাল্টেন। পরেণ প্রক্ষতাধিঠাতা মহাপুক্রেণ। জনিমিবেণ কালেন চ হেজুনা। তগবতো নির্বিকারাৎ জাতকোতং ব্লগুণ্তরং প্রধানং তলাৎ মহানাসীৎ। তত্তকং তত্তে। বিজ্ঞোক্ত ত্রীণ ক্লণাণি

क्रमनमर्छः।

ख्यारमव हित्रगाकमवळ्या दखः। निम्दमाखार्थः ॥ ৮ ॥

অব্যক্তমার্গবিং। অক্সনাদ্যগোচর বস্তবেতা ॥ ৯। ১•। ১১ ॥

পালীয়বিসর্গং কথয়িত্ং সঙ্গতরে পূর্ববৃত্ত বান্ধীর সর্গম্পি স্থাবরতি লৈবেনেতি। ভগবতঃ পর্মকারণালহানাসীং তচ্চ

श्रीविधनाशहक वर्षी ।

এভজ্গৎ অভাবরন্ উৎপাদরামাত্র: । ১ - ॥

স্বিভীয়াঃ স্ভার্যাঃ কর্মস্থ স্ট্যানিযু খতল্লাঃ জনানিপেকাঃ । সংহতাঃ বছতরসংমেলনাপেকাঃ । ১১ ।

কিমারভতেতি প্রশ্নভোত্তরং বিস্পবিস্তারং বক্ষান্ তৎপূর্বভাগং সর্বাদ্ধশাপ কথাগোঠবার্থং সংক্ষেপণাছবদতি। দৈবেদ

হর্ষোদয় হইল, তিনি আনন্দে পুলকিত হইয়া মুনিবর মৈত্রেয়কে পুনর্কার জিজ্ঞাসা করিতে প্রস্তু হইলেন॥৮॥

বিচুর কহিলেন প্রক্ষাৰ ! প্রজাপতিদিগের পতি এক্সা প্রজা প্রজা করিতে প্রায়ুত্ত হইয়া প্রজাপতি-গণের স্ক্রনানস্তর কোন্ কার্য্য আরম্ভ করেন ? মুনে ! অভীতানাগত বিষয় আপনকার বিলক্ষণ বিদিত আছে, অনুগ্রহ পূর্ববিক বলিতে আজা হউক ॥ ১ ॥

হে মহাশর! মরীচি প্রান্থতি বিপ্রবৃদ্ধ, স্বায়স্কৃব মন্থ ইহাঁরা জ্বন্ধার আদেশে কি প্রকারে এই জগৎ উৎপাদন করিলেন ? ॥ ১০ ॥

তাঁহার। কি সন্তীক হইয়া শাষ্টি করিয়াছিলেন ? না স্বতন্ত স্বতন্ত স্কন করেন ? অথবা প্রজাসগাদি কার্য্যে সকলে মিলিড হইয়া পরস্পার সাপেক্ষ্যে কি ইহা রচনা করিয়াছেন ? ॥ ১১ ॥

মৈত্রের মুনি বিছরের এই বকল প্রশ্নের উত্তর দানার্থ পৃর্বোক্ত স্মৃতিপ্রকরণ অনুসারণ পূর্বাক কথা দোষ্ঠিব জন্য পুনশ্চ ভাহাই সংক্ষেপ করিয়া বলিতে আরম্ভ করিলেন। আহে বিছুর। সত্ত রজ: ত্য এই গুণত্রের স্বব্নপ প্রধান বা. প্রকৃতি নির্বিকার হইয়াছিল, কিন্তু ছুর্বিতর্ক্য দৈব অর্থাৎ জীবের অদ্ক্ত রজঃ প্রধানাশাহত স্ত্রিলিকো দৈবচোদিতাৎ। জাতঃ সমর্জ্জ ভূতাদি বিয়দাদীনি পঞ্চাঃ । ১০ ॥ তানি চৈকৈকশঃ অন্তুমসমর্থানি ভৌতিকং। সংহত্য দৈবধোগেন হৈমমগুমবাস্কন্ ॥ ১৪ ॥ দোহশিয়িন্টান্ধি সলিলে অগুকোষো নিরাজ্মকঃ। সাঞাং বৈ বর্ষদাহর্ত্মমন্ববাৎসীত্তমীশ্বঃ ॥ ১৫ ॥

अध्यक्षामी ।

बियहा भवत्य ।

পুরুষাখ্যাক্রথো বিছ:। প্রথমং মহতঃ স্রষ্ট্ বিভীরং জ্পুসংস্থিতং। তৃতীরং সর্বভূতত্বং তানি আবা বিষ্চাতে ইতি । ১২।
মহতো লাতো ভূতাদিরহকারঃ তিলিলল্লিগুণ:। রজঃ প্রধানাদিতি অতঃ সর্প্রধানস্থাপি মহচোহহকারোংপত্তিকানে কার্যা
মূলণং রজঃ প্রধানবং ভ্রতীতি ভাব:। পঞ্নং ত্রাত্রোণি মহাভূতানি আনানে ক্রিয়াণি কর্মে ক্রিয়াণিচ ততক্ষেবভাশেচতি পঞ্চ পঞ্চ স্মর্জেতার্থ:। ১৩॥

ভৌতিকং হৈমমণ্ডমেটককশঃ প্রত্যেকং প্রষ্টুমসমর্থানি সন্তি সংহত্য সম্ভূ: ॥ ১৪ ॥

व्यवादनीमिषिष्ठिउवान् ॥ > ॥

क्रममन्द्रः।

তত এব ন সাক্ষাৎ কিন্তু ভছেকে: প্রধান্যাখ্যালগুণসাম্যাদেব কীদৃশাৎ দৈবাদি হেতুনা আতকোভাৎ। ত্রানিমেবেণ কালেন দৈবাদপুত্তমেন ॥ ১২ । ১৩ । ১৪ ॥

অগুকোৰ ইৰাপ্তকোৰ: তদন্তৰ্মন্ত্ৰা। তক্ত নিরাত্মকত্বং তদানীমণি জীবানামণ্যসুৰোধাং। ঈশবো মহংপ্রটা

बिवनाथठक वर्शे।

জীবাদৃষ্টেন কীদৃশেন হর্সিতর্কেণ হজে মৃদ্দকেন পরেণ পরমেখরেণচ তদীয়সিস্করেতার্থঃ অনিমিবেণ কালেন জাতকোডাৎ গুণ অয়াৎ প্রধানাম্মহানাসীং। ভগবতঃ সকাশাৎ ভগবদীকিতাদিতার্থঃ ৮১২॥

রজঃ প্রধানাদিতি সম্বপ্রধানোহিশি মহান্ অহঙ্কারোংপত্তিকালে রজঃ প্রধানঃ প্রথা ভবেদিতি ভাবঃ। ত্রিলিঙ্গ বিশ্বতা ভূতানিরহস্কারঃ। বিবদাদীনি মহাভূতানি স্কুভূতানি জ্ঞানেবিস্কাণি কর্মেবিস্কাণি তত্তদেবতাশ্চ পঞ্চ পঞ্চ সসর্জেতার্থঃ ॥ ১৩ ॥ দৈববোপেন ভগবছুক্তিবোগেন সংহত্য মিশিশা ॥ ১৪ ॥

অনি সলিলে কারণার্থকলে নিরাক্সক: ভত্ততা সমষ্টিজীবসাফ্রোধাৎ। সাগ্রং কিঞ্চিদধিকং বর্ষসাহ্ত্রং অশ্মিষ্ট। অসু তদন-শুরং ঈশ্বরো মহৎত্রতী গর্ত্তোদশারিক্সশেশাবাৎসীৎ ৪ ১৫ ৪

এবং প্রকৃতির অধিষ্ঠাতা মহাপুরুষ আর কাল, এই তিন কারণে তাহা সংক্ষোভিত হওয়াতে তাহা হইতে মহতত্ত্ব উৎপন্ন হয়॥ ১২॥

রজোগুণ প্রধান ঐ মহতত্ত্ব হইতে ঈশ্রেক্ছা বশতঃ ভূতাদি অর্থাৎ অহকারতত্ত্ব আশো যদিচ মহতত্ত্ব হতঃ সন্ধৃত্য প্রধান তথাপি অহকারোৎপত্তি কালে কার্যাকুরপ রক্ষোগুণ প্রধান হইয়া থাকে। সেই অহকার ত্রিলিক অর্থাৎ সন্ধ্ রক্ষা তমঃ এই গুণত্তম ফ্রপ। ঐ অহকার উৎপদ্ম হইয়া পাঁচ পাঁচটী করিয়া আকাশাদি ভূত স্প্তি করে অর্থাৎ তাহা হইতে পঞ্চ তশাত্ত, পঞ্চ মহাভূত, জ্ঞানেব্দিয় এবং তত্তৎ অধিষ্ঠাতৃ দেবতা পাঁচ পাঁচটী উৎপদ্ম হয়। ১৩॥

ঐ সকল পঞ্চ তদ্মাত্রাদি এক একটা স্বতন্ত্র হইয়া কোন বস্তু স্ঞ্জন করিছে সমর্থ হয় নাই, পরে ভগবানের শক্তি যোগে মিলিভ হইয়া ভৌতিক হৈম অণ্ড স্ঞ্জন করিল॥ ১৪॥

ঐ অত্তকোষ নিরাত্মক অর্থাৎ জীব সমষ্টি অভাবের উবোধক হইয়া সাগর সলিলে শয়ান হয়। অনন্তর মহন্তবের স্প্রনকর্তা প্রমেশ্বর গর্ড্তোদশায়ি রূপে তাহাতে কিঞ্চিদ্ধিক সহত্র বংসর প্রয়ন্ত অধিষ্ঠিত হইয়া থাকেন ॥ ১৫ ॥ তত্ত নাভেরছৎ পদাং সহঁত্রাকোঁকদীখিতি। সর্বজীব নিকায়োকো যত্ত স্বয়সভূৎ স্রাট্ । ১৬। নোহতুবিকৌ ভগবভা যা শেতে সলিলাশয়ে। লোকসংস্থাং স্থা পূর্বাং নির্দামে সংস্থা স্বয়া ॥১৭ সসর্ভ চ্ছায়য়া বিদ্যাং পঞ্চ পর্বাণমত্রভা। তামিশ্রমন্ধভামিশ্রং তমোমোহো মহাতম:॥ ১৮। বিসদ্ধান্তন: কারং নাভিনন্দং স্তমোময়ং। জগৃত্বক রক্ষাংসি রাত্তি ক্সৃত্ট্ সমৃদ্ভবাং॥ ১৯॥

विषद्रश्रामी।

गरवार्कागामिव छेक्नो थिछि वंक ७९ मर्सबीव निकाबानारमाकः स्थानः भग्नः पत्राष्ट्रे बन्ना । ১৬ ।

যা সৰিলাশয়ে গর্ডোদকভাত্তা শেতে তেন ওগবতাত্বিটোহবিটিতা সন্স শরাট্। স্বয়া সংস্থা নামরপানি ক্রমেণ ৪ ১৭ ৪ ছারা প্রভা প্রতিযোগিনী তরা অবুদ্ধেতার্থা। বত্ত্বি কৃতা প্রভোৱিত্যুক্তবাং। মহাতম ইতি মহামোহা। স্বর্ণ নির্দেশ্যার বিবক্ষরা মোহ ইতি প্রথমান্তঃ প্রয়োগাঃ ৪ ১৮ ৪

তদেবং প্রথমোক্তাং সাধারণীং সৃষ্টিমন্দ্য কেনচিছিলেবেশাসাধরণীং সৃষ্টিমার স বিসসর্কেত্যাদিনা যাবং সমাধি। ত্তিস্টং

क्ष्मनगर्भः ।

য এবং এক্ষে করে স্টবান্ তত্ত প্রবিষ্টত সতঃ পালে করে নাতেঃ সকাশাৎ পদ্মস্তৃৎ ॥ ১৬ ॥ প্রা সংহয়া করিং তত্তরামরপাদ্যাবির্জাবক্রমেশ ॥ ১৭ ॥ ওবা দর্শন্তি সসক্রেতি ॥ ১৮ । ১৯ । ২০ । ২১ ॥

প্ৰীবিশ্বনাথচক্তবন্তী ।

নাভে: সকাশাৎ যৱ পালে স্বরাট্ ব্রহা । ১৬ ।

স একা ভগৰতা অসুৰিষ্ট: অধিষ্ঠিত: ভগৰানেৰ কন্তনাহ য ইতি তত্ত স একা ভগৰৎ প্ৰেরিত: সন্ লোকসংস্থাং লোকরচনাং বয়া সংস্থা পরিপাট্যা নামরূপাদি ক্রময়া ॥ ১৭ ॥

যক রাক্ষণদেবমন্ত্রাদি দেহের ব্রহ্মণা অইব্যের জীবানামহকারোহবিদারা বিনা ন সভবেদতঃ প্রথমমবিদ্যার্ভীঃ সর্মের ব্রহ্ ধারা আবিউবতীত্তম আদিরপেণ ব্রহ্মা তাঃ স্মর্জেড্যাহ। স্মর্জেডি ছোররা ছোরার্মধা তথা তম্পেড্যর্থ:। অত্ত তমো মোহ-মহামোহ তামিপ্রার্কামিপ্রাঃ ক্রমেণাজ্ঞানাত্মিতা রাগ্রেষাভিনিবেশা জ্ঞোরাঃ ॥ ১৮ ॥

কারং ছারারপং নাভিনন্দন্ হন্ত হন্ত স্ট্টারন্তে ভন্দৈবাবৃতোহ্ভ্ৰমিতি বিনিন্দ্য তত্যাল। স চ তৰিস্ট: কারো রাত্রিরভ্ ভাঞ্চ তত এব তদানীনেৰ লাতানি বক্ষরকাংসি লগৃহ: খীচকুরিভাবিদ্যাধর্মাবাৰরণবিক্ষেপৌ যক্ষরক্ষসামতাধিকাবিতি বিবৃদ্ধিং কীদৃশীং কুভ্ৰো: সমূত্রবো ষ্টাং তাং। অত বা অত তমুরাসীভামলহাৎ সা ভনিআভবদিভ্যাদিঞ্তিরমুসদ্ধের। অত বিপরাস্থায়বো অক্ষণ: কার্ড্যাগো নাম ভাৰভ্যাগ্তাব বিবৃদ্ধিত:। তত্যত অক্ষণো মনসি কোধাদিভামদো ভাবং আবিক্তিব। তথাদ্ধক্

অনন্তর ঐ গর্ট্তোদশায়ি ভগবানের নাভিদেশ হইতে একটা পদ্ম উৎপন্ন হইল, সহত্র সূর্য্য ভুল্য তাহার কিরণ অভিশয় প্রথর রূপে প্রকাশমান হইয়াছিল। যাহা হউক ঐ পদ্মই সমন্ত জীবের অধিষ্ঠান স্বরূপ এবং তাহাতেই ব্রহ্মা স্বয়ং উৎপন্ন হয়েন॥ ১৬॥

হে বিহুর! যে ভগবান্ গর্ট্তোদশায়ি রূপে ঐ হৈদ অত্যে শয়ান ছিলেন, ত্রক্ষা উৎপন্ন হইয়াই উাহা কর্ত্তক অধিষ্ঠিত হইলেন এবং পুর্বে যে প্রকার ছিল তত্রপে নাম রূপাদি ক্রেমে লোক সকল রচনা করিলেন॥ ১৭॥

অত্যে প্রভাপ্রতিযোগিনী ছায়া ছারা অর্থাৎ অবৃদ্ধি করণক পঞ্চ প্রকার অবিদ্যা অর্থাৎ তামিত্র, অন্ধতামিত্র, তমং, মোহ ও মহাত্রন এই পাঁচটা স্প্তি করিলেন ॥ ১৮ ॥

কিন্তু ঐ ছায়া রূপা সৃষ্টি ভ্রোমর হওয়াতে ত্রন্ধার মন: প্রদন্ন হইল না, এ নিমিত্ত তিনি ঐ ভ্রোময় শরীর পরিত্যাগ ক্রিলেন, ভাহাই রাত্তি রূপ হইল তৎকালে ঐ তামদ সৃষ্টি হইতে যে কুতৃড় ভাষপ্ত ভাষে তং কর্মভিছজে বৃ:। মা বক্ষতৈনং কক্ষিমিতৃ। চু: কুতৃড় দিতা: ॥ ২০ ॥

দেবভানাহ সংখিলো মা মা কক্ষত বক্ষত। আহো মে যক্ষরকাংসি প্রভা যুবং বভ্ৰিও ॥ ২১ ॥

দেবভা: প্রভাম যা যা দীব্যব্ প্রম্পতোহতক্ষেৎ। তে হার্দে বরজো বৈ বিস্ফাং ভাং প্রভামহঃ॥২২

अध्यक्षानी ।

কারং রাত্রিরপং। অভএব জাতানি যকরক্ষাংসি জগৃতঃ কুড়বোঃ সমূত্রবো যতাং তাং। অতাচ বাত তন্রাসীৎ তামপাতত সা তমিলা ভবদিতি শ্রুতিরস্সক্ষেয়া । ১৯ ॥

উপস্টা অভিজ্তা: জয়ুং ভক্রিত্:। যথে বরং কুর্ড্ডামর্শিতা:। অত এনং পিতেতি কুপরা মারকডেতোকে। অনোতু কুক্ষবং ভক্রতেতাক্রবন্। অক ভক্ক হসনরোরিতি ধাতু:। ২০॥

দেবো একা স্থিয়: ভীতঃ সন্মামাং মালকত নতক্ষত কিছু রক্ষত। আহোহে বক্ষ রক্ষাংসি। বৃষং মে প্রলাং পূত্রা বৃজ্ বিপ লাডাঃ হ। এবমুগ্র হভাবা যক্ষ রাক্ষসা জাভা ইতার্থঃ। তত্র যে যক্ষবমিত্যুচ্ছা তে হকাঃ। বেডু মারক্ষতেভি তে রাক্ষসা ইভি জেয়ং। এভক তির্যাগাদি ভাষস সর্গতাপুলক্ষণং । ২১।

প্রভন্ন দীবান্ দ্যোতমান: যা যা দেবতা: ছাতিমতা: সান্ধিকা: তান্তা: প্রমুধত: প্রাধান্যেনাস্তরং। তে দেবা:। দেবতা ইতি স্ত্রীবেন নির্দিষ্টানাষপ্যধ্যাত বিবক্ষা ত ইতি পুংখেন প্রতিমিদ্দেশ:। এবং ৰক্ষ রক্ষাংসীভাতাপি জেরং। তেন বিস্টাং

क्यगनार्छः।

त्ववत्र हेकि। निवृ व्यक्ति हेक्याचा कितानिकार वाहमान हेकार्यः । २२। २७। २८। २७ ॥

बिवियमां परक वर्छी ।

রক্ষাংসি ৰভূৰ্:। সচ ভাষ্ণো ভাষো রাত্রিরভূত্তাঞ্চ বক্ষ রক্ষাংছেৰ জগৃহরিভ্যেভাবানেভার্থ:। স্টার্থং বোগবলেন পৃথক্ পৃথক্ কায়গ্রহণত্যাগবল্বেশি হিপর। ছাঁ। যুদ্ধং তক্ত ন ব্যাহস্ততে বিষয়ভোগার্থমপীক্রাদি দেবানাং নানা রূপ গ্রহণ ত্যাগদর্শনাদিতাশি কেচিদাহ: ॥ ১৯ ॥

উপস্টা উপজ্ঞা: তং একাণং কথা ওজা বিজ্ং। তত্র কেটিদেনং পিডেডি রূপরা মারক্তেত্যুচ্:। ক্রক্ষেবিতি ক্র্তির্বাহি । ২০ ॥ দেবো একা মাং ন ভক্ষত কিন্তু রক্ষত করে। আশ্রেণিং হ ফ্রক্ষাংসি ॥ ২১ ॥

প্রভাগ প্রভাৱপদা সন্ধন্য। তথা দীবান্ ল্যাভমান:। যা যা দেবতা প্রাম্পতঃ প্রাথান্যেনাক্সং। আন বা ইভাতাপি তে ইভানেন প্রভিনির্দেশােহর্থমান দৃট্টাব জেল:। বিস্টোং ভেন ভাক্তাং ভাং প্রভাং আহং দিবসক্রপাং ভক্তরং আহারিবু দর্গৃহ:। কিমর্থং ভাং দেবলক্সঃ ক্রীড়লক্সঃ ক্রীড়লিজুং বধা রানির্ফরক্ষেভিঃ সহ ডিঠতি তথা আহােহিপি দেবৈ দীবিতীভার্থ:। দিব্

সকল যক্ষ রাক্ষণ জালিয়াছিল তাহানা তাহা গ্রহণ করিল। আহে বিছুর ! ঐ রাত্তি কেবল ভানোময় নয় তাহা হইতে কুণা তৃষ্ণারও সমুদ্ধ হইয়া থাকে ॥ ১৯॥

এই কারণেই ঐ সকল ব্যক্তি কুধা তৃষ্ণায় অর্দিত হইয়া ত্রন্ধাকেই ভক্ষণ করিতে ধাবমান হইল এবং কুধা পিপাসায় পীড়িত হওয়াতে তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ বলিতে লাগিল অহে। পিতা বলিয়া রক্ষা করিও না, কেহ কেহ বলিল খাইয়া ফেল॥ ২০॥

ব্রহ্মা তাহাদের ঐ কথায় সাতিশয় ভীত হইয়া ব্যগ্রতা পূর্বক কহিলেন, আমাকে ভক্ষণ করিও না রক্ষা কর। অহে যক্ষ রাক্ষণ সকল! তোমরা আমার প্রকা আমাকে নই করা ভোমাদের উচিত হয় না, অত্তর্ব "ভক্ষণ কর" এই কথা যাহারা বলিল তাহারা যক্ষ, আর "রক্ষা করিও না" যাহারা বলিল সে সকল রাক্ষণ হইল ॥ ২১॥

পরস্ত ঐ এক্সা প্রভাগালিনী সত্ত্যয়ী জমু বারা প্রকাশমান হইরা প্রাধান্য রূপে আহা স্তি করিলেন সে সকল ছাতিমৎ অর্থাৎ সাত্তিক হইল। অহে বিভুর। ভাঁহারাই দেবতা, ঐ স্তি স্থাৎ দেবোহদেবান্ জন্মত: স্ত্জতিস্মাতিলোলুপান্। ত এনং লোলুপতয়া মৈথুনায়াভিপেদিরে॥২০
ততো হসন্ স ভগবনৈহুরৈনিরপত্তপৈ:। অধীয়মানস্তরসা ক্রে ভীত: পরাপতৎ॥ ২৪॥
স উপত্রজ্য বরদং প্রপন্নার্তিহরং হরিং। অসুগ্রহায় ভক্তানামসুরপাত্মদর্শনং॥২৫॥
পাহি মাং পরমাত্মংস্তে প্রেষণেনাস্ত্রং প্রজা:।তা ইমা জভিত্ং পাপা উপক্রামস্তি মাং প্রভো॥২৬
ছমেক: কিল লোকানাং ক্রিফানাং ক্রেশনাশন:। ত্মেব ক্রেশদন্তেষামনাসন্নপদাং ভব॥২৭॥

अविवयामी।

প্রভাং অহা দিবসরপাং সভীং দেবয়য়ঃ ক্রীড়য়য়ঃ অহার্ অগৃত্: ॥ ২২ ॥

অংশবানিতি জেদ:। স অধনাদস্থানস্কতেতি ক্রতেঃ অভিলোল্পান্ স্তীলম্পটান্। অভিপেদিরে প্রাপ্তাঃ ১৩॥ পরাপতং পলায়তঃ ॥ ২৪॥ ভংকেছোহুরূপমাত্মানং দর্শয়তীতি ভ্রথ তং উপত্রকা পাহীতি ৰাভ্যাং প্রার্থিতবান্॥ ২৫॥ ফভিত্ং নৈপ্নেন ধর্ষিত্য ॥ ২৬॥ লোকানাং জনানাং তব অনাসন্ধৌ অনাপ্রিতৌ পাদৌ বৈভ্যোং ॥ ২৭॥

क्रगममर्खः।

ক্লেশদ ইতি। সংপ্রত্যসূৰীকর্ষিতি জেরং ॥ ২৭ ॥

श्रीविधनाथठक वर्षी ।

অর্দন ইতামাকোরাদিকাং যাচযানা ইতার্থ:। ইতি সক্ষতি:। অত ব্রহণো মনসি প্রসাদ: সাধিকভাব: আবির্ক্তৃব। তথা-দেবা বভ্বু: সচ প্রসাদো দিনং বভ্ব তচে তে এব জগৃত্রিতোভাবানেবার্থ:॥ ২২ ॥

এবঞ্জ জ মনসি কামো রাজস ভাবোহভূৎ জমাদস্র। বভূবু: সচ ভাব: সন্ধা। অভূৎ ভাং চাস্করা জগৃহরিত্যাহ দেব ইতি অদেবান্ অস্বান্স জ্বনাদস্কানস্জ্ভেভি শ্রুতেঃ কামাদনর্থো মহান্ ভ্ৰতীত্যাহ তএনমিত্যাদি ॥২০॥

भवाभावर व्यथनावर । २८ । छेभवना समरेनत्वाभागा नित्वत्वामारनकि (चव: । २६ ।

किछ्: भूगाः ममि माः मखाक्ः ॥ २७ ॥

তব অনাসরপর্বাং पर পার্বাবনাপ্রিতবতামভক্তানাং पং ক্লেশবঃ তেন ক্লিষ্টানামপি परপার্বাপ্রিতবভাং ভক্তানাং पং ক্লেশ

দেৰগণ ক্রীড়া করিতে করিতে ত্রন্মার বিদর্শ্লিত ঐ প্রভা যাহা দিবস রূপে প্রকাশ পায় ভাহাই ভাঁহারা গ্রহণ করিলেন ॥ ২২ ॥

তাহার পর ঐ ত্রেলা আপনার অঘন দেশ হইতে অহার গণের স্পৃত্তি করিলেন, তাহারা অতিশয় লোলুপ অর্থাৎ জ্রীলম্পট হইল এবং লাম্পট্য প্রযুক্ত মৈপুন নিমিত্ত তাঁহার প্রতিই ধাবমান হইয়া গেল ॥ ২৩ ॥

- অহে বিছর। ভগবান্ একা। অহের সকলের ঐ রূপ ছুশ্চেন্টা অবলোকন করিয়া প্রথমতঃ হাস্ত করিলেন, পরে যথন ভাহারা লজ্জা পরিভ্যাগ পূর্বকি বেগে পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হইল তথন ভাঁহার ত্রোধ কমিল, কিন্তু পরিশেষে ভীত হইয়া পলায়ন পরায়ণ হইলেন॥ ২৪॥

তিনি পলাইয়া বিপন্ন জনের পীড়াহারী দেই ভগবান্ হরির নিকট উপস্থিত হইলেন, যিনি ভক্তগণের প্রতি অনুগ্রহার্থ ঠাহাদের ইচ্ছানুরূপ আত্মরূপ প্রকাশ করেন॥ ২৫॥

ভগবান্ হরির সমীপে উপনীত হইয়া একা সকাতর বচনে বলিতে লাগিলেন, হে পরমান্ত্র আমাকে রক্ষা করুন রক্ষা করুন, প্রভাঃ আপনকার নিয়োগেই আমি প্রজা হার্তি করিতেছিলাম, আমার সেই এই পাপান্তা প্রজা সকল, আমি পুরুষ আমারে কল্পন করিবার উপক্রম করিতেছে ॥২৬॥

হে প্রভো! এক তুমি মাত্র ক্লেশে ুনিপত্তিত জনগণের ক্লেশহর্তা, যে সকল ব্যক্তি আপনকার

লোহবধার্য্যাত্ম কার্পন্যং বিবিক্তাধ্যাত্মদর্শন:। বিমুঞ্চাত্মত্মং ঘোরামিছ্যুকো বিমুমোচহ ॥ ২৮॥ তাং কণচ্চরণাডোজাং মদবিহ্বললোচনাং। কাঞ্চীকলাপবিল্যক কুপচ্ছমরোধ্যং॥ ২৯॥

व्यापायामी।

বিবিক্তমস্থিত্বং অব্যাক্সদৰ্শনং প্রচিত্ত জ্ঞানং বন্ধ হরে:। যোরাং কামকশ্মলাং স্বতন্থ বিমুঞ্চিত উক্তবানিতি শেষ:। ইত্যুক্তণ্ড ব্ৰহ্মা তাং তন্থ বিমুমোচ। সর্কাল তনুজাগো নাম তত্ত্বানোভাব ত্যাগো বিবৃক্তিতঃ। এহণ্ঠ ওওস্কাবাণতিরিতি দ্রষ্টবাং॥২৮॥

সাহোরাত্রবোঃ সন্ধিরভবদিতি শ্রান্তেঃ। সা তেন বিস্তা জন্ম সায়স্তনী সন্ধা। বভূব। সাচ কামোন্তেকবেলা অসুরাশ্চ রাজ-সন্থাৎ স্ত্রীলম্পটাঃ অভস্তাং সন্ধ্যামেব স্থিরং কর্মিয়া তে সম্মোহং প্রাপ্তা ইত্যাহ তামিতি জ্রিভিঃ। নৃপ্রাষ্ঠ্যাং কণস্তী চরণাস্তোজে মন্তাঃ। মদেন বিহুবলে লোচনে বৃত্তাঃ। কাঞীকলাপেন বিলস্কুক্লণ তেন চ্ছন্নং রোগঃ কটিউটং বৃত্তায়াং ॥ ২৯ ॥

क्रथमक्र

সোহবধার্যেতাক্ত টীকারাং ভাবো নাম স্ক্রাবেশোজের:। ভাবত্মননঞ্ তদায়্বোধিপরার্ক্ষিত্রাৎ ॥ ২৮॥ তামিতি ত্রিকং অক্টোক্তেতি লেথাদিবং শ্লেষাপাসীকৃতা। বহা স্পাং স্ব্রতিচাদিনা যা দেশ: ॥ ২৯।৩০।৩১।৩২।৩০॥

श्चीविधनाशहकवर्श्वी।

নাশন ইতি গম্যতে একা ইত্যেবছিধে। ভজ্জবৎসকঃ কোহপি নাজীতি ভাব:। ছচ্চরণমনাশ্রিতবতাং কালকর্ম গ্রহাদিরপেণ ছমেট্রক: ক্লেশিঃ তেবামেবাকক্ষাচ্চরণাশ্রিতহে সতি সাক্ষাৎ ছমেব তত্তৎ ক্লেশনাশনঃ ছত্তকেরু কালকর্মাদীনামন্ধিকারাছিত্যা-শমু:। ছমিট্বেম্যান্ডাবন্ধ ক্রতক্দৃষ্টাজেন ॥ ২৭॥

বিবিজ্যসন্ধিঃ অধ্যাত্মদর্শনং পরচিত্তজানং যন্ত সং বিম্কেতৃাক্তবানিতি শেবং। ইতৃাক্তণ্ট ত্রনা তর্মণ বিম্বোচ ॥ ২৮ ।
মত্বা মৃত্ধিয়ঃ ক্রিমসিতাগ্রিমোক্তেরাং সন্ধামের ক্রিয়ং করবিদ্ধা ত্রীলক্ষ্যা অহবা মুমুছরিত্যাই তাং কণদিতি অত্র স্থানীড়ং
প্রতি গন্তং নভিনি অপজ্যুত্তীনান্ চটকদারদাদীনের নৃপ্রকাঞ্চাদীন্ করবিদ্ধ অভবদাকারান্ মেঘণগুলনের চরণনমন নিত্ততনা
দীন্ অভগ্রেক্ত স্লেবেণ প্রোধরশন্ধ উপনাতঃ। সন্ধায়া আরুণামেবাকণত্ত্লং বোধং ক্টিতটং প্লেম্বেভি ভিধা ঘণ্ডস্কায়াণ
প্রতায়ঃ। ভিতাপি গুণ আর্ষঃ। অলোক্ত প্লেম্বা উপনার্জেনির হেতৃনা উত্তেশী নিরম্বরাব্যানী প্রোধরে বিভাব তাং
স্পাং স্প্রিত্যাদিনা টাপ্রতারক বাদেশোরা অন্তরাজিন্তোথে বং কিঞ্ছিৎ স্থা প্রকাশাবের হাসাবলোকনে কদাচিত্তন্মেদ্
গুলিক্তানিনা টাপ্রতারক বাদেশোরা অন্তরাজিন্তোথে বং কিঞ্ছিৎ স্থা প্রকাশাবের হাসাবলোকনে কদাচিত্তন্মেদ্
গুলিক্তান্ত্রা নিগৃত্নং উক্তিত্তলপর্যান্ত পতিভানি দীর্ঘ শ্যামমের থণ্ডানোর নীলালকবর্মধং। হে ধর্ম বিভ্র তাং
থিক্রম্মপ্রভার মন্ধা ॥ ২৯। ৩০। ৩১ ॥

চরণারবিদ্দের আশ্রেয় না করে তাহাদিগকে আপনিই ক্লেশ দিয়া থাকেন অতএব আমাকে এই আপদ হইতে পরিত্রাণ করুন ॥ ২৭ ॥

ভগবান্ হরি পরচিত্তাভিজ্ঞা, ইহাতে ব্রহ্মার ঐ প্রকার দৈন্য অবধারণ করিয়া কহিলেন, অহে । তোমার এই শরীর কামে কশাল হইয়াছে, অতএব ইহা ত্যাগ কর। ব্রহ্মা ভগবান্ হরির কারুণ্য অবধারণ এবং ঐ বচন প্রবণ করিয়া আপনার সেই শরীর অর্থাৎ তদ্রপ মনোময় ভাব তৎক্ষণাৎ বিসর্জন করিলেন ॥ ২৮ ॥

অহে বিছুর! জ্বলা এই যে তকু পরিত্যাগ করিলেন ইহা সায়ন্তনী সন্ধা হইল, ঐ সন্ধা কামোদ্রেকের কাল এবং অহার সকল রাজস প্রকৃতি প্রযুক্ত স্ত্রীলন্পট অতএব ছাইনরা ঐ সন্ধাকে স্ত্রী কল্পনা করিয়া সকলেই মুগ্ধ হইল। এবং পরস্পার কহিতে লাগিল এই সীমন্তিনীর চরণ কমল নুপুর শব্দে শব্দায়নান, ইহার লোচনদ্বয় মদবিহলে, ইহার কটিতট কাঞ্চিকলাপের বিলাদ্যাহিত ॥ ২৯ ॥

আকোনা শ্লেষ্ট্রের কুনিরন্তরপরোধরাং। হ্নাসাং হৃদিলাং স্নিগ্রহাসলীলাবলোকনাং॥ ৩০ ॥ গৃহন্তীং ত্রীড়য়াস্থামং দীলালকবন্ধবিনীং। উপলভ্যাহ্মা ধর্ম সর্বের্ব সংমুদ্ধ: ত্রিমং॥ ৩১ ॥ অহো রূপমহো ধর্মহো অক্ষা নবং বয়ঃ। মধ্যে কাময়মানানামকামেব বিসপ্তি॥ ৩২ ॥ বিতর্কয়ন্তো বহুধা তাং সন্ধ্যাং প্রমদাকৃতিং। অভিসংভাব্য বিশ্রম্ভাৎ পর্যাপ্তমন্ কুমেধসঃ॥ ৩৩ কাসি কম্মাসি রম্ভাকে কো বার্থন্তেইত্র ভামিনি। রূপদ্ধবিণপণ্যেন মুর্ভগানো বিবাধনে॥ ৩৪ ॥

विश्ववामी।

অভ্যোক্ত শ্লেষর। উপনর্কেন হেতুনা উত্কো নিরন্তরোচ প্রোধ্রো যকাঃ। স্থানাং স্বতীং । সিংগ্রা হাসো লীলাবলোক নঞ্বতাঃ ৪০০ ৪

সূহস্কীং বস্তাঞ্লেদার্ণাুনাং নীলানাং অলকানাং বর্ধঃ ভোমো বিদাতে যস্তা: । হে ধর্ম বিহুর তাং প্রিরম্পলভা মছা ৫০১॥ সম্মুদানাং বিভাবক্রমমাহ অহো ইতি ॥ ৩২ ॥

অভিসংভাবা সংক্লতা বিশ্ৰস্তাৎ প্ৰণন্নাৎ কুবুদ্ধন্ন তে তাং পঞ্চছ্ৰ: কাসীতি ত্ৰিতি: । ৩০ ॥

কাসি জাজ্যা কল্প বা কল্পা হে ভামিনি কোপনে ক্লপমেৰ জ্বিণং জন্মাং বস্তু ভদেব পণ্যং ক্রমার্ছং তেন ভদসমর্পণেন বিবা-ধ্যে পীড়য়সি । ৩৪ ।

क्रममण्डः।

বিবাধনে হেজু:। তুর্জগান্ এত মূলা জব্য হীনান্॥ ৩৪। ৩৫। ৩৬ ॥

अविषत्राभहक्तवती ।

रुवाः कामरमार श्रेनाशमार श्रह। ই**डि ॥ ७२** ॥

কিমিয়মখাবেবাছরাগিণী অনাত বা দেবী মানুষী বা ব্যস্ত জী অক্ষচারিণীবেডোবং বিভর্করন্ত: অভিসংভাবা সংকৃত্য । ৩০ ।
কপমেব জবিণমনর্ঘাং বস্তু তদেব পণাং ক্রেবাহ্ধ ভেনাম্মান্ ত্র্জগান্ ক্রেলিখনে বিবাধসে বধ্বা অসম্পত্র জিল্লুক্সি
বধা বিবাধসে নক্রীণাসি ধিগমান্ ত্র্জগানিতি ভাবঃ । ৩৪ ।।

অপর ইহাঁর স্তন্ত্র পরস্পার উপমন্দিত হওয়াতে অতিশয় উন্নত ও ব্যবধান শৃত্য, ইহাঁর নাদিকা ও দস্ত অতি হৃদ্দর এবং হাস্ত ও লীলাবলোকন অতিশয় হৃদ্ধিয় ॥ ৩০ ॥

ইনি কি ব্রীড়া বশতঃ বস্ত্রাঞ্চল দারা আপনাকে আরত করিতেছেন, আহা। ইহাঁর চূর্ণ কুন্তল শুলি কি মনোহর নীল কর্। অহে ধর্ম বিছুর। সেই সকল অহুর ব্রহ্মার উৎস্ফ শরীর ঐ সদ্ধ্যাকে এই প্রকারে স্কাঙ্গফক্ষরী রমণী কল্পনা করিয়া মোহ প্রাপ্ত হইল। ৩১॥

তাহারা কামমুগ্র হইরা পুনর্বার চিন্তা করিতে লাগিল, অহা। ইহাঁর কি আশ্চর্য্য রূপ, কি আশ্চর্য্য রূপ, কি আশ্চর্য্য বিষ্যু, কি চমৎকার নবীন বয়দ, আমরা দকলে ইহাঁর প্রতি অভিলাষ করিতেছি, তথাচ ইনি অকামার নার গমন করিতেছেন॥ ৩২॥

অনস্তর ঐ কুবৃদ্ধি অহরগণ সৈই সৃদ্ধাকে প্রমদা রূপিশী বিষেচনা করিয়া আরও বহু প্রকারে তর্ক বিভর্ক করিল, শেষে প্রশম বশতঃ তাঁহার বংবাচিত সংকার করিয়া জিজ্ঞাসা করিতে লাগিল ॥ ৩০ ॥

হে অ্প্রোণি! তুমি কে ? কাহারই বা কলা ? হে কোপনে ! তোমার এমানে প্রয়োজন কি ? তোমার এই রূপনাবণ্য অমূল্য পণ্য, ইহা আমাদিগকে অর্পণ না করিয়া কেন পীড়া দিভেছ ? ॥ ৩৪ ॥ যা বা কাচিত্ত্মবলে দিউটা সন্দর্শনং তব। উৎস্থনোধীক্ষমাণানাং কৃদ্কেক্টাড়য়া মনঃ॥ ৩৫॥
নৈক্ত্র তে জয়তি শালিনী পাদপত্মং স্বস্তা মৃহং করতলেন পতৎ পতঙ্গং।
মধ্যং বিধীদতি বৃহৎ স্তনভারভীতং প্রান্তেব দৃষ্টিরমলাঃ স্থাশিধাসমূহঃ॥ ৩৬॥
ইতি সায়ন্তনীং সন্ধ্যামস্থরাঃ প্রমদায়তীং। প্রশোভয়ন্তীং জগৃহ্মহা মৃদ্ধিয়ঃ ক্রিয়ং॥ ৩৭॥
প্রহ্ম ভাবগন্তীরং জিত্তান্ত্রান্মাত্মনা। কান্তা সদর্ক ভগবান্ গন্ধকাপ্রসাং গণান্॥ ৩৮॥

शिवत्यामी।

কিং জাতিক্লাদি প্রশ্নেন যা বা কাচিত্রব দিটা। ইদং ভারতজ্ঞং জাতং যন্তর দর্শনং কিছুকেবলং নো মন উৎস্থনোরি বিম্পুাসি ॥৩৫
ক্তিতি ত্রানাং বাক্যং হে শালিনি শ্লাঘ্যে একত্র ন স্কর্যাভি ন স্থিরী ভবতি। যথা নৈকত্র জনক গতি বিলাদের ক্ষরতি সংর্মাৎকর্ষেণ বর্ত্ততে। পতৎ পতলং উচ্চলন্তং কৃদ্কং। বুহতোভানরো ভারাৎ ভীতং তর কুলং মধ্যং বিবীদ্ভি শ্রামাতি শ্রামা মন্থরের
প্রস্ত্রতি। স্থাপিবাসমূহ: শোভন কেশকলাপত্তে। স্থাপিবাসমূহেভি পাঠান্তরে স্থাপিবাং শোভনান্ কেশানবলীর্ব্যাবাণান্ সমূহ বধানিভি। অত্তরে অতং গক্তন্ স্থা এব পতৎপতলং। নেষ্বিচ্ছেদো ম্ধাবিষায়ং। ভারকা ক্ষপাং দৃষ্টিং তম এব কেশা ইত্যাদৃ। হাং ॥৩৬
প্রমদেবাচরন্তীং প্রিরং মন্থা অগৃহং॥ ৩৭ ॥

প্রহলানামাত্মনা বিজ্ঞা কাস্তা। দৌলবোণ প্রহদনমায়াবভাশক সৌলবাছিত্ব চাতুর্গবিকার: ॥ ৩৮ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

ইতীতি সন্ধাহি কামিনাং স্ত্রীক্রিং করে।তি। তত্ত তেবাং তত্তাং ক্রম্ভী স্ত্রিকী স্ত্রিকরে তেরংগতা তদস্সারেণ ম্নী-স্ত্রেণাপি বর্ণিতেতি জেয়ং । ৩৭ ॥

ভাবঃ সৌলর্যাগর্কান্তেন গন্তীরং অনাত্রাদত্ত দৃষ্টিবংদিকং বধাকান্তবা প্রহৃদং অবিরেব প্রেমাতিশয়েন সৌরভ্যাতিশয়ামূভবেন

है।विश्वनायहत्कवादी।

উৎস্থানে বি মণুাদি। কল্কক্ৰীড়য়েতি অন্তং গছন্ চঞ্চল: স্থাএৰ অৰুণকল্কছেন কলিছ: । ৩৫।

ক্লুকক্ৰীড়াং বৰ্ণৰ বি । হে শালিনি শ্লাঘ্যে একৰা ন লগতি নহিবী ভৰতি পতৎ পতলং অধশ্বং কল্পুকং। পক্ষেইতং গছন্
প্ৰ্যা:। কৃষ্থা বিবীলতি দৃষ্টি বমলা নিকামেৰ বস্তুত্ত্ত্বং সকামৈৰেত। বি: প্ৰান্ত। কশ্কক্ৰীড়া শ্ৰমং বাঞ্চৰতী অতএব স্থলিধাঃ
শোভনান্ কেশান্ অবকীৰ্যামানান্ সমূহ বধান স্থলিধা সমূহ ইতি পাঠে বিত্যবাসং পৃথক্পদং। ততশ্চ শিধা সমূহণ্ড স্থলব
ইত্যবং ॥ ৩৬ ॥ প্ৰমদেৰ বিচৰকীং ক্ৰিয়ং মন্থা জগ্তং ॥ ৩৭ ॥

যণা এক্ষণ: সৌন্দৰ্যাং শ্বত্যাক্ষ্ণ বভূব তথা তথাপাৰ্মৰ্কান্ধো বভূব্ অচ সৌন্দৰ্যাং জোংস্বাভূতাঞ্চ এবং জগ্ৱবিতাৰ। প্ৰহ-তেতি কান্তা কীদৃশ্বা ভাবগন্তীৰং ব্যঞ্জিত্বাভিযোগং যথাভাত্তথা প্ৰহত আত্মনৈৰাত্মানং জিল্পড়াভি কান্তিকান্তিমভোৱৈকো

অথবা স্থাতি কুল জিজ্ঞানায় আমাদের প্রয়োজন নাই, হে অবলে। তুমি যে কেই ইও আমাদের ভাগ্যে মহৎ মঙ্গল উপস্থিত হইয়াছে, যে হেতু তোমার দর্শন প্রাপ্ত হইলাম, কিন্তু তুমি কন্দুকক্রীড়া খারা দর্শনকারি আমাদের মনঃ কেবল উন্থিত করিতে লাগিলে॥ ৩৫॥

হে শ্লাঘনীয়ে । ভূমি করতল দারা এই উচ্ছলিত কন্দ্ককে বারম্বার আঘাত করত জীড়া করি-তেছ ইহাতে তোমার পাদপত্ম এক স্থানে দ্বির হইতেছে না। তোমার এই কুশতর মধ্যদেশ রহৎ তন ভারে ভীত হইয়া আন্ত হইতেছে। অপর এই অমলা দৃষ্টি যেন মন্থরা হইতেছে। আহা ! তোমার এই কেশ পাশ কি শোভন ? ॥ ৩৬ ॥

মৃত্ বৃদ্ধি অহুরেরা এই প্রকারে দেই দায়ন্ত্রী দদ্ধার প্রমণা তুল্য বিবিধ চেন্টা কর্মা করিয়া লোভে মৃশ্ধ হইল এবং ভাহাকে স্ত্রী বলিয়া গ্রহণ করিল ॥ ৩৭ ।

অনস্তর ভগবান্ ব্রহ্মা হাস্ত করিয়া কান্তি দারা গন্ধর্ক অপ্যরাগণের স্থান্তি করিলেন। তাঁহার ঐ

বিদদর্জ তমুং তাং বৈ জ্যোৎসাং কান্তিমতাং প্রিয়াং। ত এবচাদত্ব: প্রীত্যা বিশাবস্পুরোগমাঃ॥ ৩৯॥ স্ফু । ভূত পিশাচাংশ্চ ভগবানাত্মতন্ত্রিগ।। দিখাদদো মুক্তকেশান্ বীক্ষা চামীলয়দ্দেশী॥ ৪০॥ জগৃহস্তবিস্ফীং তাঃ জ্ব্রুণাথ্যাং তমুং প্রভো। নিম্রোমিন্সিয়বিক্ষেদো যায়া ভূতেযু দৃশ্যতে। বেনোচ্ছিকীন্ ধর্মন্তি তমুনাদং প্রচক্ষতে॥ ৪১॥

উর্জ্বস্তং মনামান আত্মানং ভগবানজ:। সাধ্যান্ গণান্ পিতৃগণান্ পরোকেণাস্ত্রং প্রভু:॥ ৪২॥

শ্ৰীধৱসামী

জ্যোৎসাং চক্তিকারপাং ভ এব গন্ধ বিশাবিশা বিশাবস্থা পুরোগমো মুখো। বেশু ॥ ৩৯ ॥ জাত্মনন্ত দ্রিণা আলমোন। তাংশ্চ নগ্রান্ মুক্তকেশান্ বীকা নেত্রে নিমীলিভবান্ ॥ ৪০ ॥

ই জিলাণাং বিক্লেল: প্রাবেণ বরা তাং নিজাং প্রচক্ষতে। বেনে জিয়বিক্লেদেন হেতুনা উচ্ছিষ্টাংশ্চ সভঃ ধর্ষান্ত ব্রান্ত ক্রিজি তং ভূতাদিগণ মুঝালং প্রচক্ষতে। তত্ত্বী জ্জিকা নিজোমাল হেতুবেন ভূতাদীনাং তন্নাঞ্চ চাতুর্বিধামুক্তং ॥ ৪১ ॥ উর্জন্ম সম্ববস্থং পরে।কেণ অনুশা রূপেণ ॥ ৪২ ॥

क्ष्यमश्रद्धः

চ সম্মাত্মানং কিছাল। কান্ত্যা কাত্তিমত্যা তবা ॥ ৩৮। ৩৯॥

আত্মতাপ্রিণা আত্মনন্তপ্রাযুক্তন দেহেন উপলক্ষণ বৈতৎ জ্ঞানিজোরাদবত্বং তন্তাএৰ কার্যাক্রম রূপত্বাৎ এবাং ॥ ৪০ ॥
আগৃত্রিতি সার্থকে। অতএবাডেদেনাহ জ্ঞাণাথাং নিজাগিতি চ। ধর্মীন্তব প্রাধান্য বিবক্ষরা মত্ববিশ্ব ক্রতঃ।
তমিজিরবিক্রেদং যমুমাদং প্রচক্ষতে। ত্রোনাদোশি ভবতীতি তদভেদেন তমশি নির্দিশন্তীতার্থ: ॥ ৪১ ॥
উক্ষ্বিস্তং ব্রদানোৎসাহাদি লক্ষণস্ব্যুক্তং ॥ ৪২ ॥

बिवियमाध्यक्तवर्धी।

নোপচারাৎ প্রহলনাবজাণাদীনি স্বদৌন্দর্যাাস্থাদনচিত্রানি । ৩৮। ৩৯।

কদাচিৰু সংশ আলভানভূতৰাচে ভূতশিশাচ্যাদ্যা বভূব্তকালভং জ্ঞা নিআদিরপাভূতাঞ্চ তএব জগ্ছরিতাহে কংই তি তরা বভ কার্যাধেনাডি ভঙ্কি আলভং তেন ॥ ৪০ ॥

ৰয়া নিজয়া ভূতেৰু মহ্বাদিবু ইজিয়াণাং ম্থাদীলাং বিজেদঃ বেনচাৰিজেদেন হেতুনা উচ্ছিটানু সভো ধর্ষস্তি তং ধর্মুমাদং প্রচক্ষতে অভএৰ ভূতপ্রেতাদিধ্বিভা জনা উন্মত্তা উচাত্তে ॥ ৪১ ॥

ক্দাছিদাশ্বনো ৰলিঠলং পারোক্ষ ভাবরামাস তাভাাক সাধাাঃ। পিতরণ্চ ৰভূব্তেচ হৰাকৰো বভূবতুরিভাাহ ছাভাাং।

কান্তি আপনিই যেন ভাবগন্তীর আত্মার প্রাণ লইতেছিল ॥ ৩৮ ॥

সে যাহা হউক, তৎপরে এক্ষা আপনার ঐ পর্য প্রিয়ত্মা কান্তিগতী তমু বিসর্জন করিলেন, তাহাতে ভাহা জ্যোৎসা রূপা হইলে বিখাবহু প্রভৃতি গন্ধর্বণণ তাহাকে গ্রহণ করিল। ৩৯॥

তদনন্তর ঐ ভগবান আপানার আলস্ত বারা ভূত ও পিশাচদিগকে স্পৃতি করিলেন, কিন্তু তাহারা সকলেই নয় এবং মৃক্তকেশ হইল অতএব তাহাদিগকে অবলোকন করিয়া ত্রহ্মা আপনার নয়ন বয় নিমীলিত করিলেন ॥ ৪০ ॥

এবং কিয়ৎক্ষণ পরেই জ্ঞা অর্থাৎ আলতা নামিকা সেই তকুকে বিসর্জন দিলেন। ত্রক্ষার ঐ শরীর বিস্তৃত্ব হুইলে ঐ সকল ভূত পিশাচেই তাহা প্রহণ করিল। বংস বিত্র ! যে তকু বারা ইন্দ্রিয় বিক্লেদ হয় তাহার নাম নিজা, আন বে দেহ ইন্দ্রিয় বিক্লেদে উচ্ছিন্ত ব্যক্তিদিগকে ভ্রান্ত করে তাহাকে উন্মাদ বলে অর্থাৎ আলভ্য ভূজা নিজা এবং ভূমাদ এই চারিটীই ঐ সকল ভূত পিশাচাদি প্রহণ করিয়াছে এবং তাহাই তাহাদের শরীর হইরাছে ॥ ৪১ ॥

সে যাহা হউক, তদনস্তর প্রক্ষা আপনাকে বলবস্ত বিবেচনা করিয়া অদৃশ্য রূপ ছারা সাধ্যগণ

ত আজ্মর্সা: তং কায়ং পিতরং প্রতিপেদিরে। সাধ্যেভ্যণ্ট পিতৃত্যণ্ট কবয়ো ঘ্রিতরতে 189। সিদ্ধান্ বিদ্যাধরাংশৈচৰ তিরোধানেন সোহস্কাৎ। তেভ্যোদদান্তনাস্থানমন্তর্জানাথ্যমূতং ॥৪৪। স্কিন্নান্ কিংপুরুষান্ প্রত্যান্ত্রেনাস্কাৎ প্রভূঃ। মানয়নাজ্মনাস্কাভাদং বিলোকয়ন্ ॥৪৫॥ তেতু তত্ত্বগৃহুরূপ: তাক্তং যৎ পর্মেন্তিনা। মিধুনীভূয় গামস্কত্তমেবোষনি কর্মভিঃ॥ ৪৬॥

श्रीभवत्रामी ।

আাত্মন: সর্গোষত্বাত্তং বং যেন কায়েন সম্প্রদানত নিমিত্তেন। কবর: কর্ত্মকোবিদা: সাধোভ্য: পিতৃভ্যশ্চ ত্বপিতৃ রূপেভ্যো বিতরতে প্রাক্ষাদিনা হব্যং কবাঞ্চ দদতি ॥ ৪০॥

ভিরোধানেন দৃশ্যত্বে সভ্যপি অন্তর্জ্বানশক্ত্যা । ৪৪ ।

প্রভাজানে প্রতিবিধ্যেন আয়াভাসং প্রতিবিশ্বং। আয়ানা আয়ানো মানঃ প্রতিবিশ্বদর্শিনঃ সুক্ষরভা শিরঃ কল্পাদি চেটা। অভএব ওৎস্টানাং মিণঃ সম্মানেন নিভাং মিথুনীভাবঃ॥ ৪৫॥

তৎ প্রতিবিশ্ব রূপং। কর্ম্মি শুৎ পরাক্রমামূবর্ণ লৈ: ॥ ৪৬ ॥

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

্ত ইতি। তলৰু জনেৰ জ্ঞাছা তেভোগ দদতীতি ধং বেন ব লক্ষণেন কাষেনৈৰ হেতুনা # ৪০।৪৪।৪৫।৪৬।৪৭ 🛊

खीविश्वनाथहक वर्छी ।

উক্ষ্ প্ৰাং সম্বৰ্ত্তং তেল সংখ্যন সাধ্যান্ গণান্ পরোক্ষেণ পারোক্ষোণচ পিতৃগণান্ ॥ ৪২ ॥

তে সাধাা: শিতর চ তং কারং অনুরগমিতার্থ:। ব্যবহো হেতোর্বিতরতে সাধোডো। হব্যমরং পিতৃতঃ ক্র্যুস্রং প্রাদ্ধারিনা সম্প্রিয়ীতার্থ: ॥ ৪৩ ॥

অব্স্থৰ্জানং ভাৰ্যামাণ ভত্মাত দিজবিদাাধরা বভুবুরিভাাই দিজানিতি। ৪৪।

আ। আন: প্রতিবিদ্ধ ভাবয়াগাস তত্মাচচ কিল্লন কিংপুরুষা বভূব্রিত্যাহ স কিমিতি প্রত্যাহ্মন প্রাক্তিবিদেন। আহং সুলর ইত্যাআ্নেবায়ানং মানয়ন আ। আ।ভাসং মুকুরং॥ ৪৫ ॥

তৎ প্রত্যাত্মং স্ত্রীপুংস্যোঃ পাক্সারিকদর্শন রূপমভূদতত্তেপি তদেব জগৃহ্রিভয়াই তেবিতি ॥ ৪৬ ॥

ও পিতৃগণের স্থান করিলেন ॥ ৪২ ॥

অহে বিজুর! এক্ষার যে অদৃশ্য কায় হইতে পিতৃগণের সৃষ্টি হইল, পিতৃগণ দেই অদৃশ্য কায়ই আহণ করিয়াছেন, সেই কায়কেই সম্প্রদানের নিমিত্ত করিয়া পণ্ডিত সকল আপনাদের পিতৃ স্বরূপ সাধাপণ ও পিতৃগণের উদ্দেশে হব্য কব্য প্রদান করিয়া থাকেন। ৪৩॥

এই রূপে প্রক্ষা তিরোধান অর্থাৎ দৃশ্যত্ব সত্ত্বেও অন্তর্জান হইবার পক্তি ছারা সিদ্ধ ও বিদ্যাধর-গণের স্পৃত্তি করিয়া আপনার সেই অন্তর্জান নামক অন্তত দেহ তাহাদিগকেই প্রদান করিলেন॥ ৪৪॥

তাহার পর ত্রক্ষা আপনার প্রতিবিম্ব অবলোকন করিয়া প্রতিবিম্ব দর্শি স্থান্থার শির: কম্পাদি চেন্টা কল্পনা করত আত্ম প্রতিবিম্ব দারা কিমর ও কিংপুরুষগণের স্থান্ট করিলেন॥ ৪৫॥

ঐ সকল কিশ্বর ও কিংপুরুষ ব্রহ্মার পরিত্যক্ত প্রতিবিদ্ধ রূপ দেই গ্রহণ করিয়াছে এবং পরস্পরি মিথুনীভূত অর্থাৎ স্ত্রী পুরুষে ঐক্য হইয়া উধাকালে তাঁহারই পরাক্রনের অসুবর্ণন পুরঃসর গান করিয়া থাকে॥ ৪৬॥ দেহেন বৈ ভোগবতা শ্যানো ষ্চ্ চিন্তয়। দর্গেহকুপচিতে ক্রোধাচ্ৎসদর্জ হ ভন্ধণঃ ॥ ৪৭ ৫ বেহং বিশ্বতামূতঃ কেশা অহয়তেহক ক্রজিরে। দর্পাঃ প্রদর্পতঃ ক্রোমাগা ভোগোরুক্দরাঃ ॥ ৪৮ দ আদ্ধানং মন্যানাঃ কুত্রকুতামিবাজুতঃ। তথা মদুন সদর্জান্তে মন্সা লোকভাবনান্ ॥ ৪৯ ॥

शिववनायी ।

ভোগ আভোগো বিস্তারঃ। পান। নি প্রসারণবঁতা: বেছেন অনুপতিতে বুদ্ধিপ্রাপ্ত তদ্ধোগং ক্রোধান্তি ক্রাধান্তি হিন্দু করে। ৪৭ । অমূত: অমূত্রাক্ষেরাং বে কেশা অহীরস্ত প্রচাতাঃ তেহ্বরো জাত্রাঃ প্রস্তাতঃ প্রাণাকুঞ্চনেঃ প্রচনভাহমুদ্ধান সর্পাঃ। অন্তব্য অগা নভবজীতি নাগাঃ অভিবেশবস্ত ইভার্থঃ। ভোগবভো জাত্ত্বাগ্রোগেন ফলেন উক্রিস্তীর্ণা কর্রাঃ যেযাং। সর্ব্বেটিতে ক্রোধ্যোগং ক্রোঃ। ভেবামবাস্তর জাতিভেদঃ সর্পনিশ্বীক্ষে প্রসিদ্ধান্ত প্রসিদ্ধান্ত প্রসাধ্যাগ্রাং ক্রাঃ। ভেবামবাস্তর জাতিভেদঃ সর্পনিশ্বীক্ষে প্রসিদ্ধান্ত প্রসিদ্ধান্ত বি

यना गनामारनार्ज्छेना गन्म नन्त्र । ४० ।

ক্ৰ্পশ্ৰ্য:।

বে ইতি। কেশখলনমপাত ভাবমরতমেৰ জ্লেয়ং। ৪৮।

কৃতকৃতানিবেতি ইব শক্ষাং কৃতং পূর্বকৃত্তনিভাব:। মন্ন্ মহ্বান্ লোকভাবনান্ কর্মণা সর্কলোকোত্তব হেত্ন এতএব শ্রীমনো: প্রজাঃ ভবিষাতি ॥ ৪৯ ॥

क्षेत्रिमना**भ5क वर्षी** ।

মন সৈব শগানং দেহং ততাকি স্চাহি স্পাদিরপো বভূবেতাহে দেহেতি। ভোগ আভোগো বিভারতহতা পাদাদি প্রসারণ বতেতাগা। বহু চিভয়া সর্গে অলুপচিতে সতি কথা মে স্টো সিছ্যেদিতি ভাবনয়া তত্ত চিভামধা এব কন্চিদ্বিবেছে।১ভূথ বতো মহান্তোধো বভূব। তেথানভারং ত্রপুং উৎস্সর্জ ॥ ৪৭ ॥

অসুতঃ অসুমান্দের। বৈ কেশা অহীরম্ব বিচু। তা তে অহলো লাতাঃ। প্রান্দর্শতঃ পাদ্যাদ্যাকুঞ্চনঃ প্রচলতোহ্মুমান্দেরালে হতে পাদ্যাদ্যা বিচু।তা তে নর্পাঃ বেচ মুগুক্ষরাল্যা তে নাগাঃ কীদৃশাঃ ভোগবতো আত্থাৎ তোগেন কণেন উক্ বিতীর্ণা ক্ষর। যেবাং তে। সর্কেচ ক্রোধ্যোগাৎ ক্রুরা তেখামবান্তর আভিতেমঃ সর্প নিদ্ধান্তে প্রনিদ্ধান ৪৮ ॥

চিত্তানতরং স্টির্মে পূর্বৈ সম্পাত্তিত মনসি যদা মিথুনং সিস্কৃত তাত আনন্দো বছুৰ তথা তথাং মনবো অভুবং তেচ স্টি পৃতিগরীং পুক্ষাকারতাং জগৃহবিতাহে। স আয়ানমিতি ছাড়াং মন্নিতি তেরু তথানীং সারস্কুবো মহুং প্রকটং মইর্মনুলাত অনোচ যণাসময়ং দৃশ্যা ইতি জেরং। অতাতে ইতি প্রোপায়ামসুস্বেগিরং স্র্যান্তিমো জেয়ঃ। অত্তর তর্মজরং ব্লামাণাপি ধ্বিস্থ্ ততথা কর্মজনং ক্লামাণাপ্র কৃতি ক্লেমেণ ক্লিম্পুক্র তি সিংহাবলোকাদিন্যায়াৎ ক্লমাতি ক্রেমেণাপ্রান্তানাং স্থাপামায় ক্রেমেণ প্রপ্রান্তিমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাম্বান্তানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাং স্থাপামায়ং ক্রেমাণ্ডানাম্বান্তানা ক্রেমাণ্ডানাম্বান্তানা ক্রেমাণ্ডানাম্বান্তানা ক্রেমাণ্ডানাম্বান্তানা ক্রেমাণ্ডানাম্বান্তানা ক্রেমাণ্ডানাম্বান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রিমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানা ক্রেমাণ্ডানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানা ক্রেমাণ্ডানামান্তানা ক্রেমাণ্ডানা ক্রেম

কিন্ত হৈ বিজুর। পদাযোনি ত্রশা এই প্রকার কর চরণ প্রদারণ সমন্বিত দেহ বিশিষ্ট হইয়াও দেখিলেন আন্ধার স্থান্তি বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইল না, অতএব চিস্তাকুল হুদয়ে বহুক্ষণ শ্যান থাকিয়া পরে ক্রোধ বশকঃ ভোগাদি সমন্তি জাপনার ঐ শরীর দুরে নিক্ষেপ করিয়া দিলেন। ৪৭॥

তাহাতে ঐ শরীর হইতে যে সকল কেশ নিপতিত হইল তাহারা অহি হইয়া লামিল। প্রশাবংকালে ঐ দেহ পরিজ্যাগ করেন তথন তাহা প্রাদির আকৃষ্ণন হারা বিচলিত হইয়াছিল, এই কারণেই ঐ সকল অহির নাম সপহিইল, আর ঐ নিমিত্ত তাহাদিগকে নাগ অর্থাৎ অভিশয় বেগবস্তও বলা যার। অপর ভাহারা ক্রমার ভোগ বিশিষ্ট কায় হইতে উৎপন্ন হওয়াতে ভোগ অর্থাৎ ফণাদি হারা ভাহাদের ক্রমা বিস্তীপ হয়। আর ভাহারা ক্রোধ্যোগে উৎপন্ন হইয়াছিল এ কারণ সকলেই অভিশার ক্রের অভাব হইয়াছে । ৪৮ ।

সে যাহা হউক, লোকঅকা ব্ৰহ্মা, এই সকল ভাষময়ী তকু বিগর্জন পুরংসর আপনাকে কৃতকার্য্য মানিয়া অবশেষে মনো ঘারা মতুদিগকে হৃষ্টি করিলেন ॥ ৪৯॥ তেভাঃ সোতাস্ত্রং স্বীয়ং পুরং পুরুষমাত্মবান্। তান্ দৃষ্ট্বা যে পুরা স্ফাঃ প্রশাশংসঃ প্রজ্ঞাপতিং ॥৫০
আহো এতং জগং প্রফাং স্কৃতং বত তে কৃতং। প্রতিষ্ঠিতা ক্রিয়া যদ্মিন্ সাক্ষমদামহে ॥ ৫১
তপুরা বিদ্যায় যুক্তো যোগেন স্থামাধিনা। ঋষীনৃষি ক্রিকিশঃ সার্জাভিমতাঃ প্রজাঃ ॥ ৫২ ॥
তেভাইশ্চকৈকশঃ স্বায় দেহস্যাংশমদাদজঃ। যতং সমাধিযোগর্দ্ধি তপোবিদ্যা বিরক্তিমং ॥ ৫০ ॥
॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভৃতীয়স্কদ্ধে বিদ্বর
বৈত্রের সন্থাদে জগং সৃষ্টি বিংশতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ২০ ॥ ॥ ।

चिषतपाती ।

८७ छ। श्रीयः श्रुक्षाकातः श्रुतः (पदः अखान्यज्ञ पत्नी। जान् मन्न्। e • ।

তে তয়ার তং সুরুত্মনাত:। মহিনাসুসর্গ জিয়া অধিহোজাদ্যা:। অতোহিমিন্ সর্কে বরং সাকং সহ জরং হবিভাগাদি অদাম জক্ষাম। হে একান্। ৫১॥

ক্ৰিক্ষিমুক্ । ঝৰীণাং ক্টিমাছ ওগদেতি । বিদা উপাসনা বোগোছত্ত আসনাদিঃ স্থামাধিঃ । বৈরাগৈ শ্বীযুক্ত সমাধি তেনচ যুক্তঃ। স্ব্বীকেশঃ শ্বশেক্তিয়ে সন্ ঝবিত্র কা ঝ্বীন প্রজাঃ সন্ধঃ । ৫২ ॥

কিং তদেহং যক্তাংশমদাদিত্যত আহ বদিতি। সমাধিশ্চ বোগশ্চ ঋদিশৈচঋষ্যং তপশ্চ বিদ্যাচ বির্ক্তিশ্চ বিদ্যান্ত যদ্মিন্ এৎ আ ॥ * ॥ ইতি ততীরে বিংশঃ ॥ * ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

दिख्या देखि चाचारान् भारता अवः महिखार्थः ॥ द०। द०। द२। द०॥

॥ • ॥ ইতি এমিস্তাগ্রত তৃতীয়ক্তকে এজীবপোখামিকত ক্রমনক্ষত সা বিংশতি তমোহণার: সমাপ্ত: ॥ • ॥

बिवनायहक्तवहीं।

श्रीदर श्रदर श्रवाकांदर (महर जडाबर मत्ने। 0 0 ।

হে লগং অষ্ট তে ত্বা বিশ্বসূত্ৰ সতি ক্ৰিবা অৱিহোকাল্যা: প্ৰতিষ্ঠিতা ভবেৰ্ট্ডৰ্মপুটি: পালনাদিতি ভাব: সাকং সহৈব ৰয়ং সংৰ্শে অৱং ত্ৰিভাগাদি মদাম ভক্ষামতে ইতি পৃথক পদং ॥ ৫১ ॥

ততোৰিদায়া যুক্তন্য ব্ৰহণো মামুৰী কৃষ্টিমাহ তপলেতি বিদ্যা উপাসনা যোগোছ্টাক্ত স্থুলমাধিক্সনি বৈরাগ্যে শ্রীকেশ: প্র-শৈক্ষিঃ সন্প্রীন্সনকাণীন্ ॥ ৫২ ॥

কিন্তানের বস্থাংশমদানিত্যত আহ। সমাধি জ্ঞানক যোগত ক্ষি রশিমাদৈ। পর্যাঞ্চ ওপত বিদ্যাচ বিরক্তিশ্চ বিদান্তে বৃদ্ধি তং । এওদনস্করং রুদ্রেভিবন্ততত সমীচ্যাদিস্টিব বিশাধ্যালে জেয়া: ॥ ৫৩ ॥

। इति नातार्थनर्लिशाः वर्षिनााः खळाटाण्याः । पृश्वीतः विःमिष्ठिकाः नवः वक्षः नवाः । । ।

এবং আপনার পুরুষাকার শরীর তাহাদিগকে সমর্পণ করিলেন, যে সকল ব্যক্তি অত্যে স্ফ হই-য়াছিলেন আঁহারা ঐ মমুদিগকে অবলোকন করিয়া তাঁহার প্রশংসা করিতে করিতে কহিলেন ॥ ৫০ ॥

হে জগংঅফঃ একান্। আপনি অতি উত্তম কর্ম করিলেন, এই যে সমুস্তি হৈইল ইহাতে অগ্নি হোটোদি ক্রিয়া সমস্ত প্রতিষ্ঠিত হইবে এবং আমরাও সকলে একতা হবি ভাগাদি ভক্ষণ করিতে সমর্থ হইব ॥ ৫১ ॥

তদনস্তর ত্রক্ষা তপদ্যা, উপাদনা, আদনাদি যোগ এবং বৈরাগ্য ও অণিমাদি ঐশর্য দমন্তি দমাধি দারা ইন্তিরগণ বশীভূত করিয়া অহা এক প্রকার অভিমত প্রাদ্ধা অর্থাৎ ঋষিগণের হৃষ্টি করিলেন ॥ ৫২॥ এবং তাঁহাদিগকে এক এক করিয়া আপনার দেহের এক এক অংশ (বাহা দ্যাধি, যোগ, অণিমাদি ঐশ্র্যা, তপদ্যা, উপাদনা ও বৈরাগ্য দমন্তি ছিল) প্রদান করিলেন ॥ ৫০॥

॥ #॥ ইতি তৃতীয়ে বিংশ ॥ #॥

बीविष्ट्रत खेवांह॥

স্বায়স্থ্য চ মনোর্ব; भः পরম সম্প্রতঃ। কথ্যতাং ভগবন্ যত্র মৈপুনেনিধিরে প্রজাঃ॥ >॥ প্রিয়ন্ত্রে তানপাদে স্থানি স্বায়ন্ত্র্য বৈ। যথাধর্মঃ ভ্রপতুঃ সপ্তদীপবতীং মহীং। তক্ষ বৈ হহিতা ক্রমন্ দেবহুতীতি বিশ্রুতা। পত্নী প্রজাপতেরুক্তা কর্দমক্ত দ্বানদ ॥ ২॥ তক্ষাং স বৈ মহাযোগী যুক্তায়াং যোগলক্ষণৈঃ। সদর্ভ কৃতিধা বীর্যাং তম্মে শুশ্রুববে বদ॥ ৩॥ রুচি র্যো ভগবান ক্রমন্ দক্ষোবা ক্রমণঃ স্থতঃ। যথা সদর্ভ ভ্রানি লক্ষ্ণ ভার্যাঞ্চ মানবীং॥ ৪॥ শ্রীমৈত্রেয় উবাচ॥

श्रीभवत्रामी।

একবিংশে তপোবিদ্যা চোষিতেন তু বিফুনা। কর্দ্দস্য মনো: প্রাণ বিবাহষ্টনোচাতে ॥ • । এধিরে এদাঞ্জিবে ॥ ১ ॥ ধর্ম মহীক যথা কুণ্ডপতু: ররক্তৃ: তক্সে বদেতি তৃতীদ্বেনাষ্ম: ॥ ২ ॥ যোগলক্ষণৈম্মানিভিম্কায়াং কতিখা বীর্ঘাং সমর্জ কতি প্রাভ্ৎপাদ্বামাসেতার্থ: ॥ ০ ॥ মনো: কনাং আক্তিং প্রস্তিঞ্চার্যাং সক্ষ্ যথা ভূতানি সমর্জ ভচ্চ বদেতি চকারস্যার্থ: ॥ ৪ ॥

ক্ষ্যন্দ্ৰ :

দেবছুভিরিভি ক্চিৎ পঠি: । ১।২।৩।৪॥

श्रीविश्रनाथहक्तवर्शी।

একবিংশে তপস্থাই: কর্দমেন স্থান্তো হরি: । বিবাহ বটনামাহ মন্থন্ত নাজগামচ ॥ • ॥
এধিরে এধাঞ্জিকেরে ॥ ১ ॥
ধর্মানতিক্রমেণ যথাজ্পপতু স্থান্মে বদেতি তৃ হীরেনাম্বর: ॥
দেবহুতীতি দেবহুতিরিতার্থ: ॥ ২ ॥
বোগলক্ষণৈ ইমনিরমাদিতি: ক্তিধা বীর্যাং সুসর্জ ক্তাপত্যান্ত্পান্দ্রামান্তের্থ: ॥ ৩ ॥
মানবীং মনো: ক্নাাং আকৃতিং প্রস্তীঞ্ছ ॥ ৪ ॥

একবিংশতি অধ্যায়ে ভগবানের প্রদাদে কর্দ্দম ঋষির মসুকল্যা দেবছুতির সহিত বিবাহঘটনা॥ • ॥
মুনিবর মৈত্রেয়কে সম্বোধন করিয়া বিত্র কহিলেন ভগবন্! স্বায়স্ত্র মসুর বংশ অতি প্রশংসনীয়,
সাধুলোকে সর্বাদাই তাহার প্রতিষ্ঠা করিয়া থাকেন, ঐ বংশেই মিথুন ধর্ম বারা অর্থাৎ ত্রীপুরুষের
পরস্পার সহযোগে যে প্রজা রৃদ্ধি হয়, তাহার সবিস্তার রৃতান্ত বর্ণন কর্দ্দন ॥ ১॥

ৈ ধ্নিসভম ! স্বায়স্ত্ৰ মৃত্র ছইটা পুত্র প্রিয়ত্তত এবং উত্তানপাদ, ইহারা ধর্ম এবং দপ্তমীপবতী এই মহীকে কি প্রকারে রক্ষা করিয়াছিলেন ? ত্রক্ষন্ ! আপনি কহিয়াছেন মত্র দেবছুতি নামে যে ছহিতা ছিলেন, তিনি কর্দ্ধ প্রকাপতির পত্নী হয়েন ॥ ২ ॥

ঐ প্রকাপতি মহাযোগী এবং তাঁহার ঐ বনিতাও যম নিয়মাদি যোগলকণে যুক্ত ছিলেন, তিনি ঐ ভার্যায় কতকণ্ডলি অপত্য উৎপাদন করেন ? প্রভা । এ বিষয়ে আমার শুন্রাষা লনিতেছে অসুগ্রহ পূর্বকে বলিতে আজ্ঞা হউক । ৩ ।

অপর হে ব্রহ্মন্। মহর্ষি, ক্লচি মসুতন্য়া আকৃতিকে এবং ব্রহ্মপুত্র দক্ষ প্রসৃতিকে সহধর্ষিণী লাভ করিয়া যে প্রকারে প্রাণি সকল সৃষ্টি করিয়াছিলেন তাহাও বিস্তার করিয়া বলুন ॥ ৪ ॥ প্রকা সজেতি ভগবান্ কর্দমো এক্সণোদিতঃ। সরস্বত্যাং তপস্তেপে সহস্রাণাং সমা দশ ॥ ৫॥
ততঃ সমাধিযুক্তেন ক্রিয়াবোগেন কর্দমঃ। সংপ্রপেদে হরিং ভক্ত্যা প্রপদ বরদাশুনং ॥ ৬॥
তাবং প্রসন্ধো ভগবান্ পুক্রাক্ষঃ ক্রতে যুগে। দর্শ্যামান তং ক্ষতঃ শাব্দং এক্স দশ্বপুঃ॥ ৭॥
স তং বিরক্তমকাভং দিতপ্র্যোৎপল্রজঃ। স্মিন্ধনীলালক্রাত বক্তাক্তং বিরক্তান্তরং ॥ ৮॥
কিরীটিনং কুগুলিনং শশ্বচক্র গদাধরং। খেতোৎপল্কীড়নকং মনঃ স্পর্শন্মিতেক্ষণং॥ ৯॥

क्षित्रचारी।

महत्रांगार ममा प्रमा प्रमा मन महत्रांगि मध्दमत्रांगी छार्थः ॥ **८ ॥** "

তত অবিন্তণিন। ক্রিয়াবোগেন প্রাঞ্চলারেণ। সংগ্রাপেনে সিবেবে প্রপরেভ্যো ব্রদাতারং ॥ ৬॥
শবৈকবেদ্যং বব্দ ত্যায়ং বপুদ্ধং প্রত্যায়ানং দশ্রামাস ॥ ৭ ॥

স কর্দমন্তং বেছবাস্থা মৃদ্ধা কি ভাবপতৎ গীর্ভিশ্ভাগৃণাদিতি চতুর্গমন্বর:। পল্লোৎপলে দিন রাত্রি বিকাশে। বিতানাং পল্লানামূৎপলানাঞ্জগ্ৰস্তং। লিগ্গা নীলাশ্চ যে অলকা তেবাং ত্রাভে বঞ্জাভে বস্যা ৮॥ ব্যেতাংপলং ক্রীড়নকং বস্য। মনঃ স্পর্শং মনস্যানন্দ্রনকং ক্রিডমীক্ষণঞ্ যুস্য ॥ ৯॥

ক্রমসন্ত:।

প্রকাইতি। দশানাং সমানাং সহস্রাণীতি যদি সাাৎ তদা সম্মত্যোতরাশ্রহমে সহস্রাণামিত্যাদ্যণি তাদিতি ভাব: সহস্রাণাত বহুদ্মার্থি চে ৫ । ৬ ।

তাবলিতি। যাবতা কালেন সম্যক্ প্রপেদে তাবতেত্যর্থ:। শাস্কং শস্ক ব্রহ্ম প্রতিপাদ্যং যৎ পরং ব্রহ্ম তৎস্বরূপং দধৎ প্রকাশস্ত্য প স তমিতি চতুকং। সিদ্ধান নীলাক স্থলাকারাতো যত্র তাদৃশং ব্তুপ্তং যতা ॥ ৮। ৯।

এবিখনাপচক্রবর্তী।

সমা বৰাণি দশ সহস্ৰাণীভাৰ্থ: । ৫ ।

ততত্তপশ্চরণানস্তরং তাবতাপি তপসা দর্শনমপ্রাপ্যেতার্থঃ। সমাধিন্চিত্তৈকাগ্রাং ক্রিয়াংযাগেন পূজাপ্রকারেণ। প্রপান্তেয়া ভক্তেভাে বরাণাং দাতবং দাতারং ॥ ७ ॥

ভাবদিভি বাবৎ সংপ্রপেদে ইতি পূজায়াং সত্যাং ভৎপ্রসাদে বিলয়ভাব: স্থচিতঃ। শাক্ষং শইক্কবেদ্যং ব্যুদ্ধ তন্ময়ং বপুদর্ধদিভি শ্রীত্মামিচরণাঃ সফিবানক্ষয়মাকারং দধৎ প্রকটনন্ কর্মদন্তগ্রুমাল্যনৈবেদ্যাছ্যপচারেঃ পুরায়িভি বা ॥ ৭ । ৮ ॥

শহা চক্ৰ গদাধরমিত্যকৰ। চতুৰ্বে হতে পল্লভানে খেতোৎপল্মেৰ ক্ৰীজনাৰ্বং ধৃতৰানিভাহে খেতেতি। সনঃ স্পৰ্কং দুই ুমনঃ

মৈত্রেয় কহিলেন বংস বিচুর। ভগবান্ এক্ষা কর্দ্দম প্রজাপতিকে কহিয়াছিলেন তুমি প্রজা সৃষ্টি কর, ভাহাতে ঐ ঋষি সরস্বতী তীরে গমন করিয়া দশ সহজ্ঞ বংসর তপ্রভা করিলেন॥ ৫॥

ভাঁহার ঐ তপভায় স্বাধি যুক্ত পুজোপকরণ বারা ভগবান্ হরির আরাধনা হইতে লাগিল। দ্যা-ময় হরি ভক্তগণের বর দাতা ॥ ৬ ॥

কর্দম ঋষি ঐ প্রকারে সত্যযুগে তপদ্যা ক্রিলে ভগষান্ তাঁহার প্রতি প্রদর ছইলেন এবং শক্তৈক বেদ্য যে একা তন্মর মূর্তি ধারণ করিয়া তাঁহাকে প্রত্যক্ষ দর্শন দিলেন ॥ ৭ ॥

মুনিবর কর্মান তপতা করিতে করিতে উদ্ধৃতি দৃষ্টিপাত করাতে উচ্চার নয়ন গোচর হইল ভগবান্ বিষ্ণু দারীর পরিগ্রহ করিয়া দিবাকরের ফায় আকাশোপরি প্রকাশ পাইতেছেন, তাঁহার গলদেশে খেত পদ্ম ও উৎপদ মাল্য, বদন কমলে হুন্মিয়া নীলবর্ণ অলকাবলী, ক্টিতটে নির্মাল অহা ॥ ৮॥

मल्डरक कितीहे, कर्म कूछल धवः इल हजूकेटा मच्च हक शंता भग्रा वित्रास्त्रमान, स्थात जिनि दर

বিশুস্ত চরণান্তোজনংশদেশে গরুজত:। দৃষ্ট্বা খেহবন্দিতং বক্ষঃ প্রিরং কৌস্তভকদ্ধরং ॥ ১০ ॥ জাতহর্বোহপতন্মূর্ কিতে লক্ষমনোরধ:। গীর্ভিন্চান্ত্যগুণাৎ প্রীক্ত স্বভাবাদ্ধা কৃতাঞ্চলি: ॥১১ প্রীক্ষবিক্ষবাচ ॥

জুফং বতাদ্যাধিল সন্থ্যাশেঃ সাংসিদ্ধ্যমক্ষোন্তব দর্শনাদঃ। যদ্দর্শনং জন্মভিরীড্য সন্তিরাশাসতে যোগিনো রুঢ়যোগাঃ॥ ১২॥ যে মায়য়া তে হতমেধসন্ত্ৎ পাদারবিক্ষং ভবসিদ্ধুপোতং।

अपंत्रचामी ।

বক্ষসি প্রীর্যন্ত কৌছভ: কন্ধরায়াং বস্ত । ১০।

প্রীতিরেব খভাব: খভঃ সিজো ধর্মো যত ভথাবিধ আত্মা মনো যত । ১১ ।

ছামৃতে পরমাননাং ধিগঞ্জবরকামৃকং। অথাপি রুণণং মাসুগৃহাণ বরদামতঃ। বতেতি হবেঁ হে ইডা নোহছাতিঃ সমগ্র সত্ব নিধে তাব দর্শনাবদ্যাছোঃ সাংসিদ্ধং সাফল্যং জুইং সেবিতং। তদ্দর্শনমের মহাফল্মিত্বাপপাদরতি। যত তাব দর্শনং সন্তি-ফ্রবোত্তরমাপাদিত প্রকটর্বর্জন্মভিঃ ক্লঢ়ে। যোগো ঠেকতেপি । ১২ ।

সকামভক্তান্ বিগৰ্হয়রাহ যইতি। **হেঈশ বেনিরয়েণি স্থা ভেষাং কামানাং লবায় বে প্রায়য়া নট বুদ্ধঃ ত এবোপাসতে।** স্বং তু তেষাং কামানপি রাসি দদাসি। ১৩।

क्रममार्फः।

বিন্যস্ত ইতি গরুত্মতো বিনতাপুত্রত্বমাত্রং নিরস্তং তথা বিনতায়া করাভাবাৎ ॥ ১০ ॥ প্রীতি স্বভাবাত্মেত্যুক্তড়াস্তবসিদ্ধুপোতমিতানেন লোকানাং ভাগুশোপকর্ত্তরি ভন্মিন্ শ্রীভিরেব সম্চিতেভি স্চিতং ॥১১ ।১২।১৩।

विषमाभहक्तवर्षी ।

প্রমোদলনকং দ্বিত্নীক্ষণঞ্ যত তং। প্রীতিরেব প্রতাবং প্রতঃ দিছো ধর্মো যক্ত সং ॥৯।১০।১১॥

অহো সম্ভাগ্যন্ত প্রভাঃ কাক্ষণ্যন্ত প্রমা কাঠা যদচিরেশেৰ দর্শনং লক্ষ্যানদীত্যাই ক্টমিতি বতেতি বিদ্যুরে তব দর্শনা-মোহত্মাক্মক্ষোঃ সাংসিদ্ধাং মমান্দিণী অলৈ সমাক্ সিদ্ধে সকলে জাতে ইতঃ পূর্ব্যসিসি সিদ্ধে অন্দিণী অপানন্দিণী এবেত্যাভামিতি ভাবঃ। তব কীদুশক অবিলস্থানামতি নিক্ষ্টসন্থানামিত্যর্থঃ। রাশেঃ রাশিরপক্তেতার্থঃ। নৈতদক্ষপং ময়া সাধনক কৃত মিত্যাই ব্লিতি হে কৃত্য সম্ভিক্তরোত্তরপ্রেটি ব্লুভির্শি ক্ষাভিঃ কঢ়ো যোগো হৈ ভোশি আশাসতে এব নতু লঙ্জে ॥ ১২ ॥

হস্ত হস্ত এবং কুপাসমূল্লমণি খাং সকাৰ ভরা ভলকীতাহো মৌচাং লোকানামিতাহে বে তব মাননা হতবৃদ্ধো ভবস্তি তে এব নাক্তে কামলেশার কামলেশমেব প্রাপ্তমূপাসতে। স্বস্ত তেষাং কামানু বহুনেব অকামিতামণি রাসি দলাবি। অভ্যথা

হাস্ত ও অবলোকন করিতেছেন তাহা যেন সকলের মনে মহা মহা আনন্দ উদ্বাবন করিতেছে। ৯। অপর আপন বাহন গরুত্তের স্কন্ধদেশে তাঁহার চরণদ্বর বিশুস্ত রহিয়াছে এবং বক্ষঃস্থলে লক্ষ্মী, কণ্ঠদেশে কৌস্তুভ মণি শোভা পাইতেছে। ১০।

কর্দ্দম ঋষি এই রূপ ভগবানের মূর্ত্তি দর্শন করিয়া হর্ষে পুলকিত হইলেন এবং মনোরথ পূর্ণ মনে করিয়া মস্তক হারা ভূতলে প্রশিপাত পুরংসর প্রীতি প্রবণ চিত্তে কৃতাঞ্জলি হইয়া স্বিনয় বচনে স্তব আছল করিলেন ॥ ১১ ॥

কর্দন খাষি কহিলেন হৈ স্তত্য ! আপনি সমস্ত সন্তশুণের নিধি, আপমকার দর্শনে অদ্য আমার লোচনদ্বয় সকল হইল, হে স্তত্য ! আপনার দর্শন কে পায় ? যোগিগণ উত্তরোত্তর প্রকর্ষ প্রাপ্ত বহুতর জন্মে রুঢ়যোগ না হইলে আপনকার সাক্ষাৎ লাভের আশা করিতে পারেন না ॥ ১২ ॥

ट्रिकेन! (य नकल वाख्नित वृद्धि ज्ञाननात नाता बाता विनक्षे रस, छाहाताहै नकाम रहेगा य

উপাদতে কামলবায় তেষাং রাদীশ কামান্নিরয়েছপি যে ছাঃ ॥ >৩॥
তথাপি চাহং পরিবোতুকাম: দমানশীলাং গৃহমেধধেছা ।
উপেয়িবান্ মূলমশেষমূলং তুরাশায়: কামত্বাজ্ঞিপদ্য ॥ >৪॥
প্রজাপতেন্তে বচদাধীশ তন্তা লোক: কিলায়ং কামহতোহসুবদ্ধ:।

विषद्यामी।

য: সকামারিকামি সোহমণি তাদৃশ এবেতাাহ তথেতি। গৃহদেশো গৃহাশ্রম: তত্ত ধেকুং তিবর্গদোগুীং ভার্যাং পরিবোচু কাম: পরিগেত্মিছেন্ কামছ্যাভিছ্পদা ক্রজনেভ তব মৃল্মছিবুং উপেরিবাস্পপতোত্মি। নমু কামাদার্থমভং কিমপ্পাভতাং। ন বতঃ অশেবসা পুরুষার্থসা মূলমেত্দের।। ১৪।।

নমু তহি মুক্তাৰ্থমেৰ কিং ন ভল্পলি অন্ধিকারাদিতাহৈ হে অধীশ,যন্তং প্রজাপতি তথ্য জুব বচলা তত্তা অরং কামহতো লোকঃ

क्रमनमर्धः।

অশেষমূলমিতি। অর্গাপবর্গরোঃ পুংসাং রসারাং তৃষি সম্পদাং। সর্বাসামণি সিদ্ধীনাং মূলং ভচ্চরণার্চনমিতি॥ ১৪॥ তর্ধি প্রীতৈয়ব কেবলারা কিং ভঙ্কসি ততাহ। প্রন্ধেতি। তে তবাধীনো যঃ প্রজাপতিরিত্যাদি প্রীগীতোক্তঃ সোপি তদাক্ষা-মুসারেশের তথা বক্তীতি ভাবঃ। নমুকামহতোমুবদ্ধো ভর্তু নাম স্বং ন কামহতঃ কবং নারদাদিবতারাতিক্রামসি ততাহ। লোকালুগতঃ। তেরু লোকেরু প্রভিষ্ঠা লিঞ্সুরিভার্থঃ। প্রতিষ্ঠাত্যাগত হৃত্র ইতি ভাবঃ। তত্মাদনিমিবার কালাম্মক্সাৎ।

श्वीविश्वनाथहळ्वा ।

ভক্তি সুধানভিজ্ঞাত্তে বৃত্তক্তিমণি তাজুং নৈৰ বিশবেররিতি ভাব:। ভক্তেরতাাগেতৃ কালে ভেণি নিছামা ভবেয়ুরেবেত্যাশরেন লগানি নতৃ তদ্ধানে এব তাংপর্যাং বছতে কলত্র পুত্র কুটুছৈশ্বগাদ্যাং কামো নির্দ্ধে নারক্যামণি যোনো স্থাঃ। কিন্তু দর্গনরকরোঃ কর্মজন্ত্র নিয়মনাৎ বৃদ্ধানাজ তাল্শানামণি ভোগানাং কর্মজন্ত্রভাবাৎ বৃদ্ধক্রভাবেন নৈব বৃত্ততঃ স্বর্গ নরক শ্ববাপ্দেশ ভদণি ততুলাভাত্রবোজিরিতি ক্রেয়ং॥ ১০॥

বোহং সকাৰারিক্ষামি সচাহমের স্থানের মুধ্য ইত্যাহ। তথেতি গৃহমেশো গৃহাশ্রম ক্ষতা থেছং ত্রিবর্গবোদীং ভার্যাং পরিশেত্মিছনে ধেছপদেন ক্ষ্যানির ছিল্ড ব্রহ্ম ক্ষানির কিন্তি নির্ক্তিবিতার্থ:। বতঃ পরিবোচুকামএর কামত্বাকিবুপসা তব ম্বমজিবুমুপেরিবান্ ক্ষেম্বাং সংক্ষে এব পদার্থা মুলে ভবে যস্য তৎ। ক্র্যাপরগ্রোঃ পুংসামিত্যাত্যকেঃ॥ ১৪॥

নবেবং চেলন্তি বিবেক্তাই নিকাম এব কৰং ন ভলসীতাত আহ প্রজাপতে এ ক্লণন্তব খণীরসা প্রজাঃ স্ফেতি বচলা তথ্যা লোকো মরীচ্যাবিঃ। সহ বঞ্জাঃ প্রজাঃ স্টবু প্রোবাচ প্রজাপতিঃ। অনেন প্রস্বিব্যধ্বমিতি গীডোক্তেন্চ সোহিশি অধান্তস্থারেশৈব বকীতি ন অস্যাণি দোষ ইজি তে পদধ্বনিঃ। মসু কামহতো লোকো অসুবছো ভবতু নাম তুং ডকামহতঃ

কিঞিং কাম ভোগ নিমিত আপনকার পাদারবিন্দ সেবা করে আপনিও ভাহাদিগকে ভাহাই প্রদান করিয়া থাকেন, প্রভো! আপনকার চরণ কমল ভবন্ধলিধির পোত স্বরূপ, তাহার নিকটে কি ঐ সকল কাম প্রার্থনীয় ? ইহা ত নারকি যোনিভেও লাভ হইয়া থাকে । ১০।

তথাপি হে ভগবন্। আমি স্বরং সকাম ব্যক্তিদিগের এই রূপ নিন্দা করিয়াও ছ্রাশয়ত। প্রস্তুত্বরং তক্তেপ হইয়া গৃহাপ্রমের কামধেকু ত্রিবর্গ দোঝী সমান শীলা ভার্যা পরিণয়ন কামনায় আপনকার পাদপদ্ম রূপ ক্রপাদপের মূলে উপগত হইয়াছি। প্রভো! আন্দি সকাম হইলেও কামনা প্রণার্থ আপনা ব্যতীত কাহার উপাসনা করিব, আপনকার পাদমূলই আশেষ পুরুষার্থের মূল ॥ ১৪ ॥

হে অধীশ ! আপনি প্রকাপতি, আপনার বাক্য রূপ রজ্জু বারা কালোণ্ছত এই সমস্ত লোক পশুর স্থায় বদ্ধ আছে। হে ধর্মমূর্ত্তে । আমি ঐ সকল লোকেরই অনুগামী অন্তএব কালালা যে আপনি অহঞ্চ লোকামুগতো বহামি বলিঞ্চ শুক্লানিমিষার তৃত্যং ॥ ১৫ ॥ লোকাংশ্চ লোকামুগতান্ পশুংশ্চ হিন্তা জ্বিতান্তে চরণাতপত্তং। পরস্পারং তদগুণবাদশীধুশীযুষনির্বাপিত দেহধর্মাঃ॥ ১৬ ॥

विषत्रचामी ।

পশুবৰদ্ধ:। হে শুক্ল ধর্মমূর্ত্তে অহঞ্চ কিল লোকাত্মগতঃ অতস্ক্ষণ্ডাং বলিং বহামি হরামি। কর্মমন্ত্রীং দলজামত্বর্তে। জনিমিবার কালাত্মনে। তদর্থং ভার্যাকেজামীতি চকারস্থার্থ:। ল কেবলং লোকাত্মগতো বহামি কিন্তু খণ্ডমাণাকরণার্থমিতি কিলে ভাকেং ॥ ১৫ ॥

অনিমিবায়েত্যনেন কালাস্থকথাৎ পতো ভীতঃ কর্পকরোমীত্যকং এতত তরং প্রক্রানাং নাতি ইত্যাহ ৰাজ্যাং। লোকান্ কামাভিভ্তান্ তানমূগতান্ পশৃংশ্চ বিবেকে সভাপি পুন: কর্পজ্ঞান্ মাদৃশান্ হিছা অনাস্তা বে তব চরণক্রপমাজপত্তং প্রিভাঃ তানেবাহ তলগুণানাং বাদঃ তমেব শীধু সংসার বিশারক্তাৎ পীবৃষং ক্ষৃতিকর্তাৎ তেন নির্বাণিতা বিলাপিতা দেহ্ধর্মাঃ কুৎ পিপাসাদয়ো বৈঃ। এবামিত্যত্বেণাহয়ঃ ॥ ১৬ ॥

क्रममन्दः।

সর্ব প্রবর্তকার তুড়াং বলিং প্জোপহার্ঞ বহামি সমর্পরামি। তৃত্বলে লভেপ্যায়ত্যাং তাদৃশ তৃর্বাসনা নিবর্তাতামিতি বিচিত্তাতি ভাবং। যদ্যপাদৌ চামল্মভাবাং শুরুলোক্তঃ সংকোচেটনব ভাদৃশ নিজ তৃঃধ্যপাদীকরোতি ন তু প্রতিষ্ঠানীক্ষরা তথাপি প্রমাচার্যাশিরোমণিঃ হমিন্ তত্তদোষ্টেন্ব পশুভীতি জ্বোং । ১৫।

তত্ব ভক্তানাত্ত লোকসংকোচহেতুকালি কামান্যাশক্তিনিন্দ্যেত্যপি তথৈবাহ লোকাংশ্চেতি ॥ ১৬ ।

ৰীবিখনাগচক্রবন্তী।

কথং সনকাদিবত্তরাতি ক্রামসি তত্তাই অহঞ লোকায়গত: তদয়গামি বৃদ্ধিন্তু নারদাদি সদৃশী ভবিতুং সমর্থ ইতার্থ:। অতত্ততা বন্ধো বৃধ ইব বলিং বহামি কর্মমনীং অলাক্ষাময়বর্তে তদর্থমেকাং ভার্যামিছামীতার্থ:। চকারাৎ অভক্তিক ক্রোম্যায়ত্যাং অং প্রাপ্তার্থবিতি ভাব:। হে শুক্ল অনিমিবার কালরূপং আং প্রসাদ্যিত্মিতার্থ:। ১৫॥

নহ লোকাঃ পিত্রাদয় তদাজায়বর্তিনঃ পুত্রজাত্রাদয় লোকতে। ধর্মত ক্ বশবিনঃ হাধিনক দৃশুতে কিনিতি তান্ সকামঘানিকার। পিত্রাদীর হংগরতাং নিভামতজানাং নিশারিগ্রহাণাং কিং হৃথং কিং বা যশো যতজানভিনন্দির ইতি ভত্রাহ হাজাং। লোকানিতি পশ্নিতি তেবাং পশুবাতজ্যাগে দোবো নাজীতি ভাবঃ। ববা লোকান্ স্থায়মীয়াংসাদি শাল্লাভিজান্ তদয়গতাং ভত্পদেশবাকোর বিশ্বসতঃ শাল্লানভিজান্ তেবাম্ভয়েরামণি পতত্বং ভক্তিরাহিত্যাং। চরণমেরাজপত্রমান্ত্রিত ইতি নিরাত পত্রাং পশবত্ব জাজলাক এবেভি ভাবঃ। তেবাং হৃথমণরমপাহ ছলালানাং বাদঃ কথনমের সংসারবিদ্যাক্রছাং শীর্বং তেনের তৎ পানেন্ত্রের নির্বাপিতা দেহধর্ম। বালাপৌগভাদয়ঃ কুংপিণাসাদয়ো বা বৈ তে ভবতীতি ক্রিরা অহ্রঃ ৪ ১৬ ৪

আপনার চরণে প্জোপহার আহরণ করিতেছি এবং পত্নী লাভ করিতে অভিলাষ করিতেছি। প্রভো।
কলত্র প্রার্থনা কেবল লোকাত্মণত নহে, ভার্যা। ব্যভিন্নেকে দেব, ঋষি, পিড় এই তিনের ঋণ হইতে
মৃক্ত হইবার সম্ভাবনা নাই, তক্ষয়ত সহধর্মিণী প্রার্থনা করিতেছি । ১৫॥

ছে বিভো! আপনি কালরুপী এ নিনিত আপনাকে ভয় করিয়া আমরা কর্ম করিয়া থাকি, কিন্তু বাঁহারা আপনকার ভক্ত ভাঁহাদের কোন ভয়ই নাই, যে হেডু তাঁহারা কানোপহত লোকদিগকে এবং ঐ সকল লোকের অসুগানী অস্মংসভৃশ ইক্ষাজড় পশুদিগকে অনাদর করিয়া আপনার পাদপত্ম আপ্রয় করিয়াছেন, তাহাতে তাঁহাদের দেহধর্ম অর্থাৎ ক্ষুৎ পিপাদাদি আপনকার গুণ কথা রূপ পীব্ধ পানেই নিবারিত হয় ॥ ১৬ ॥ ন তেহজরাক্ষভ্রমিরায়ুরেষাং অয়োদশারং ত্রিশতং ষ্টিপর্ব।
যধ্মেমানন্তছেদি যথ ত্রিনাভি করালভ্রোতো জগদাছিদ্য ধাবৎ, । ১৭ ।
এক: স্বয়ং সন জগতঃ সিস্ক্রমা দিতীয়য়াত্মদধিযোগদায়য়া।

विषत्रवामी।

তব যৎ ত্রিনাভি কালচক্রং তৎ লগদাজিদ্য লগদাক্রয় ধাবদিশি এবাং ব্যক্তানাং আয়ুরাজিদ্য ধাবর ভবতি। কথং ভূত মলমং ব্রদ্ধ। তবিরক্ষরণে ত্রি প্রমণং ব্রদ্ধিতি বক্তবো অতিত্রণশীল্ডাৎ উপচারেশ ত্রমিরিত্যতেদ নির্দ্ধে:। অধিমানেন সহ ত্রোদশ নাসা অরা বস্ত। ত্রিশতং বৃষ্টিশ্চাহোরাত্রাঃ পর্কাণি বস্ত শতশব্দে বিভক্তে রলুগার্থ: বট্বতবো নেমধাে বস্ত। অনন্তাঃ কণলবাদরক্ষণ পত্রাণি পত্রাকারা ধারাঃ সন্তি বস্ত। ত্রীণি চাতৃত্রিভানি নাত্রঃ আধার ভূতানি বলবানি বস্ত। করাল স্রোভন্তিবির্গং। এতৈর্থিশেরণৈরের বংসরাজ্বকং চক্রম্কং ইণ্ডি ত্রইবাং॥ ১৭॥

নমু নিরুপাধিমুদাসীনং মাং কিং বাচসে। তথাপি মানমা বিশ্বস্টাাদি কর্ত্বাৎ ওনেব বাচ্য ইত্যাহ। অর্মেক এব সরপি : আল্লেন্তবিক্তমা বোগমারমা হেতুনা যাঃ বীকৃতাঃ শক্তমঃ সন্ধান্যাঃ তাজিঃ অবে। বিশং। অব্যতিরিক্ত সাধনানপেক্ষমে দৃটাকঃ যথেতি ॥ ১৮ ॥

क्रममर्णः।

টীকারাং ত্রিশুণেভাধিকমেবাত্র ভাতি ত্রিনাভি শক্ষিভান্তবৈব ব্যুৎপাদ্যত্বাং। পাঠত ত্রিনাভীভোব সং প্তকে । ১৭ ॥ সকাদৈরপি সর্কাত্মা ভবানেব প্রার্থ্য ইত্যতিপ্রায়েশাহ। এক ইতি। সিস্করা হেতুন। আত্মন্ আত্মতবিকৃতা বা বোগমারা ভবা চাধিকৃতা যাঃ স্পক্তরঃ ভাভিঃ সর্কাত্রৰ বিশেষণং। অধিতীয়য়েতি। অর্থবশাহিতকিবিপরিণামঃ। ভবানিতি কচিং পাঠঃ ১১৮

बिविधनायहळ्नवहीं।

তথ্ব কালং জয়ত্তি নাজে ইত্যাহ ন ডে ইতি যজিনাতি কালচক্রং ডক্ষণদাছিল্য স'ক্ত্য ধাবদিপি এবাং ছড্জানাং আয়ুরাছিল্য ধাবনত্বতীতাবর: । কণ্ডুতং অজরং এক তিমিনক্রণে এমি:। এমদিতি বক্তব্যে অতিভ্রমণশীলদাং উপচাবেণ
অমিরিত্যভেদনির্দেশ:। অধিমাসেন অরোদশমাসা অরা যক্ত ৩৭। ত্রিশতং ষ্টিণ্চাহোরাত্রাঃ পর্বাণি যক্ত ৩৭। শত শব্দে
বিভক্তেরলুগার্ব:। বটু গড়বো নেময়ো যক্ত। অনক্ষাঃ কণলবাদয়শহলা প্রাণি প্রাকার ধারাঃ সন্তি বক্ত। ত্রীণি চাতুর্পালন নাতরঃ আধারভূতানি বল্বানি বক্ত ক্রালপ্রোত্তীপ্রবেগং। এতৈর্কিশেষণেরের সংবৎসরাত্মকং কালচক্রমুক্তমিতি জটবাং ॥১৭॥

নৰেবং নিছামভজানেৰ ধন্তান কৰে অথচ নিছামো তবিত্ং ন শক্তোবি তহা তথাদেব বেবভাস্তরাৎ শীল্পকণপ্রদাৎ কথং অকামং ন সাধরনি তল ডাং বিনা লগত্য নিরন্তং কমপি নপপ্রামীত্যাহ অবযেক এব সন্নপি ইন্ধায়া বিভীয়বাভাবাৎ অবিতীয়য়া সিত্করা বহা তব সিত্সা ব্রন্ধানি সিত্কৈব নালালুরোধবভীত্যথা। আছানি অন্তির্ধিগতঃ প্রাপ্তা কিকণবোগাৎ বোগো বতা তথা মার্বা স্ট্রাহিকং করোবি বহা আল্কাধিকতরা বোগমার্যা চিন্দ্ক্যা। হেতুনা যাং বীকৃতাঃ স্বাধ্যাঃ শক্তমতাভিরদো

প্রতরাং আপনকার ত্রিনাভি রূপ কালচক্র এই জগৎকে আকর্ষণ করিয়া ধাবমান হইতে থাকিলেও ঐ সকল ভক্তজনের আয়ুকে বল বারা হরণ করিয়া লইরা ঘাইতে পারে না, প্রভা ! আপনকার এই কালচক্রে অতি আশ্চর্যা! উহা অজর প্রস্না স্বরূপ অক্ষের উপরে নিরস্তর প্রমণ করিতেছে, মলমাণের সহিত ক্রয়োদশ মাস ইহার ক্রেরাদশ আর, ইহাতে তিন শত বস্তি অহোরাক্র রূপ তিনশত সাইটটা পর্বে আছে, ছর ঋতু ইহার ছয়টা নেমি, অসংখ্য কণ লবাদি ইহাতে প্রকার ধারা, তিন চাতুর্যান্ত ইহার নাভি অর্থাৎ আধার প্ররূপ বলয়, ইহার বেগ অতি তীক্র অভএব ইহা ছয়ভিক্রম্য ॥ ১৭ ॥

হে ভগবন্! আপনি স্বয়ং এক হইয়াও অগতের হজন বাসনায় আস্থাতে অধিকৃত বিতীয় যোগ মায়ার প্রভাবে সন্ত্রাদি শক্তি তায় স্বীকার পূর্বকে সেই তিনটা শক্তি ছারা উর্ণনাভি অর্থাৎ নাকড়সায় স্জস্যদঃ পাসি পুন্এ সিষ্তে যথোৰ্নাভি উপৰান্ স্বশক্তিভি: । ১৮ । নৈত্বতাধীশ পদং তবেশিতং যশ্মায়য়া নত্তসুবে স্ভস্কা । অনুগ্ৰহায়া স্থপি যহি মায়য়া লসভুলস্যা ভগৰান্ বিলক্ষিতঃ । ১৯ ।

क्षित्रपाधी ।

যদাপি মারিকরারজেভাো বিবরস্থা দাতুং নেজ্বি ভর্মাণাস্থভিপ্রারাছ্সারেণ সম্পাদরেভ্যাহ নৈতদিতি। হে স্থীপ নোহস্বাকা ভল্জাং তৃতস্ক্ররণ পদং পদাদি বিবর সুধা দারুরা তহুবে বিভারস্থীতি বং এতং তব যদাপীলিতং ন ভবতি ভর্মাণাস্থলপ্রারাত্ত অণ্ডরগাকরণানভ্রমেবাপবর্গার ভবতিভার্য। বহি বতঃ মার্রা পরিছিল্ল ইব লস্ত্যা তুলস্যা যুক্তস্থা বিলক্ষিতোসি। এবভূচসা ভব দর্শনং যতো ভূজিমুক্তিপ্রদ্যাত্যর্থঃ ৪১৯৪

ক্রমসকর্ড:।

অতঃ সকামবাততো বহিমুখি এব মাৰ্শ বংত্ তথাপি পরম ক্রপাসুরিত্যাহ। নৈতদিতি। বং শল্পাদি রূপং বিবর্মনতাং তন্ত্বে এতত্ব ঈশ্তিং ন সাাৎ কথং তহি তনোমি তথাহ। বাষরা বাজেনৈব সিংগ্রনাগ্রিলেন স্বামিং তং সেহবর্জনার্থমিতি বালাক্ষার ওওলভ্চুক দানবং তথাকোন্থানি হেহমেব বর্দ্ধরিত্নিতার্থঃ। অভতকানমন্ত্রহারাভ তবেং। তথা লিদং। বহি ব্রর্দান সময়ে মার্যা ক্রপরা হেতু ভূতরা বং বৃটোসি ভথাপি লসস্তা। ভক্তকান্তঃ পরম স্থান্যা তুলস্যা যুক্ত ইতি ভগ্বানিতার তহুবেতি পাঠে তাল্শ তুলসিক্যা তবেতার্থঃ। ব্রন্দান্যাগ্রং পারোক্ষ্যোপি ভবেবিভি ভাবঃ। ১৯॥

धिविधनाथहळ्यकी ।

বিশ্বং শ্বাতিরিক্ত সাধনানপেক্ষরে দৃষ্টান্ত:। অতন্তভিরস্য দেবভান্তরস্যান্তাবাৎ স্কামেনাপি ময়া প্রমেব সেবাসে ইতি ভাব: ৪১৮ ৪

এবংকতির্হি মংপ্রসাদাং তব ক্রুত্রপাতাভোগৈশ্ব্যাণি পরমোত্তমানি ভব্ছিত বরং দদানং ভগবন্তং স্প্রণামমাহ নৈতণিতি

ছাভ্যাং। হে অণীশ এতৎ পদং মংকামামানং বর তব বভক্তমাত্রহিতকারিপো দাতৃষীল্যিতং ন ভবতি। নরাতি রোগিণো
পথাং বাঞ্চলোপি ভিষক্তম ইতি ছত্কেরবসীরত ইতি ভাবং। কথাং তর্হি দদামীতি ভত্তাহ যুক্তমারান্ত্রাং ভৃত্তস্ক্রং
শকাদীক্রিরভোগাং বিষয়ন্ত্র্যং তন্ত্রে দদাসি তৎ থলু মার্যরেব নত্ত্মার্র্যা অনভিজ্ঞতক্তাহ্মমন্যথা বিমনফোভবিষ্যতীতি
মদক্রোধেনৈবেত্যপ্র:। বাসনাম্যং বিষয়ন্ত্র্যক্রেরণ বর্ত্ত এব তদেব ব্রদানেন বিভারম্বনীতি ভন্ত ধাত্বর্য:। নহেবঞ্চেং
তহি নিদদামীতি তত্তাহ অন্তর্যান্ত্রাভ দীর্মানমেতদন্ত কিং ভন্তগ্রহারাপি। হন্ত হন্ত মইরব দক্তেন বিষয় স্বধ্বরেণ ভল্তোর্য
মনের ভ্রমণি পাতিত ভদিমমুদ্ধন্নমীভানিত্যাং ছব কুপা প্রাপ্তার্থনিপ্যন্তিত্র্যান্তি ভ্রমণক্রিনিত্রক্রপ্রিভ্রমণি বিভিন্ন ক্রিনা সমরে সংপ্রতি বিদ্যান্তিত
বিশেবেণ ছং দৃষ্ট ভবি মাররা ক্রুণ্যা মনঃস্পর্শন্তিতক্রপ্রিভ্যান্তে:। শিতদোভিত ক্রুণাক্রান্তিনিক্র দৃষ্টঃ। ভল্রাপি
লসন্ত্রা ভক্তকনৈং পরিচর্যারাং সমর্পতিরা দৃষ্টে: পর্যন্ত্রশ্বন প্রদানমের ক্রুণারাং লিকং। ভগ্রানিত্যপ্যান্ত পাঠঃ ৪ ১৯ ৪

ন্যায় এই বিষের স্থ**ষ্টি ছিভি ল**য় করিচেতছেন ॥ ১৮॥

হে অধীপ। আমরা আপনকার ভক্তা, ইহাতে আমাদের জন্ম বিষয় তথ মায়া দারা বিস্তার করিতে যদিও আপনকার ইচ্ছা হইবে না, তথাচ আমাদের অভিপ্রায়ামুসারে তাহা সম্পন্ন করিয়া দিউন, তাহা হইলে আমাদের প্রতি যথেক অমুগ্রহ হইল, ইহাতেই আমরা দেব, ঋষি ও পিতৃ ঋণ মোচন পুরংসর মুক্তি লাভ করিতে পারিব। প্রভাগ আমরা আপনাকে মায়া দারা পরিচিদ্র ফ্লা বিলাসপালিনী তুলসীতে সমন্বিভ অবলোকন করিডেছি, এবছিধ ভবদীয় দর্শনের ফল, ভোগ ও মোক তুই হইয়া থাকে ॥ ১৯ ॥

তং ত্বাস্তৃত্যোপরতক্রিয়ার্থং অমারয়া বর্দ্ধিতলোকত্রং।
নমান্যভীক্ষং নমনীয় পাদসবোক্ষলীয়সি কামবর্ধং॥ ২ ॥

শ্রীমৈত্তের উবাচ॥

ইত্যব্যলীকং প্রণুতো হক্সনাভন্তমাবভাষে বচদায়তেন।

ত্ৰপূৰ্ণকোপরিরোচমানঃ প্রেম্মিতো বীক্পবিজ্ঞমদ্জঃ ॥ ২১ ॥

প্রীভগবাসুবাচ ॥

विभिन्ना कव देवकाः तम श्रुदेतव नमरवाकि छर । यनर्थमान्यनिम्रदेमखदेमवाहः नमर्किकः ॥ २२ ॥

अध्यवामी ।

তং তাং ভূক্তি মুক্তিপ্রাদং নমামি। মুক্তিতে হেছ: অন্তভ্তা। জ্ঞানেন উপরতঃ ক্রিরার্থ: কর্মকলতোগো বিদিন্। ভোগ প্রদত্তে হেছু: অমার্যা আবর্ত্তিতং লোকতন্ত্রং বিশোপকরণং বেন। অতঃ সকামে নির্কাইমণ্ড নমনীয়ং পাদসবোজং যক্ত তং ভ্রোরীয়সি সকামে পুংসি ভ্রমে বা কামান বর্ষতীতি তথা তং । ২০ ।

অমৃতেন সুথকরেণ প্রেমমিতাভাগে ঈশপেন বিভ্রমন্তী ভ্রর্যন্ত ॥ ২১ ।

टेडकार हार्कर छावर दम मन्ना जनरनाकि मरपिकर यमर्थरमवाहर ममर्किकः छ९ ॥ २२ ॥

क्रममर्खः।

তং পর্য প্রীতিদং তত্র হেতু:। ভকানাং নিজাহভবেন শিথিলিত কর্মফলভোগং তদ্মুভবাদক্তর তু স্বেত্যাদিরপং। তন্মান-হতাং স্বভাবত এব নমনীর পদাকং অতি কুদ্র এব কামবর্ধিছেন ক্রন্তমিতি ॥ ২০ ॥

প্রেম পূর্বকং যংশ্রিতং তৎ পূর্বকং যবীকণং তম্ম গরুড়াদিবু তৎ সৌজনা ব্যঞ্জনার বিভ্রমন্তো ক্রবৌ যম্ম । ২১ ।

টেচতাং লোকব্যবহারামূস্তাবপি মৎপ্রীতৈয়কভাৎপর্য্যমন্নং হার্দিং তব আছো ততুচিতমেব সমধোজি পর্যাবদানতঃ স্বন্ধনৰ পূতঃ ভামিতি। অতঃ স্বকার্যদেপি মৎপ্রীতৈয়ক তাৎপর্যাজাজ্বৈরাহং সমাগঠিতিঃ। তথানানৈয় নির্কাট্যেরপীতার্বঃ ॥ ২২ ॥

विविधनाधहक्क वर्छी ।

নত্তেত্ব্যসম্ভৰ্মিত্যাই তং স্থাং অমূত্ত্যা উপরতঃ ক্রিয়ার্থ: কর্মকলভোগো যদাতং বদা কুপয়া স্থায়্ত্তবং দাস্থলি তদৈব ভোগেছো স্বন্ধেবাপবাস্থাতি ভাবঃ। স্মায়য়া স্বীয়মায়াশজি প্রের্মিয়া বর্ত্তিঙ জনিতং লোকানাং দেবতির্যাদীনাং তন্ত্রং কর্মকল স্থত্থে সম্বন্ধি পরিজ্বো বেন্তং। স্বাবদ্বিদ্যাং প্রের্মিস তাবভোগেছা ভবভোবেতি ভাবঃ। তেন সংপ্রতি স্তিং বিবর্দ্ধরিষ্রস্থান্ কামসম্বন্ধিতান্ করোধীতি সভাপি বিবেকেন কামাংভাজ ুং নশকুম ইত্যাহ। অনীয়ভতি নিক্টেপি মহিণে জনে কামান্ বর্ষসীতি ভাগা তং ॥২০॥ স্বাসীকং নিক্পটং॥২১॥

देठळार ठिखांकि श्राबर निर्शानियमचार चार्यरेन तम मदा नगरताखि मरपंष्ठित प्रता प्रस्टाम नामाः । २२ ।

হে ভগবন্! দ্বিররক জ্ঞান দ্বানালে কর্মের ফলডোগ উপরত হইয়া যায়, আর আপনি দ্বীয় নায়া দারা এই লোকতন্ত্র অর্থাৎ বিশ্বের উপকরণকে সর্বাদা আবর্ত্তিত করিতেছেন, দ্বিকস্কু আপনি ক্ষুদ্র জনের অর্থাৎ সকাম পুরুষের কাম বর্ষণ করিয়া থাকেন, এই নিমিন্তই কি সকাম কি নিকাম সকল ব্যক্তিই আপনার পাদপদ্মে প্রণত হয় অতএব আপনিই ভুক্তি মৃক্তি দাতা, আমি সর্বাদা আপনাতেই প্রশাম করি॥ ২০ ॥

নৈজের কহিলেন পদ্মনাত ভগৰান্ গরুড়ের পকোপরি বিরাজ করিছে করিছ

অহে ঋবিষর কর্মা । ভূমি বে জতা আত্ম নিরম বারা লক্ষা প্রকারে আমার আরাধনা করিলে, ভোমার মনোভিল্যিত অবগত হইয়া আমি পূর্বেই তাহার সংযোগ করিয়া রাধিয়াছি ॥ ২২ ॥ नरि काष्ट्र इरेवर नार टाकाशक्षममर्गरः। उनिविध्याजिकाः महि मरगृजिजानाः ॥ २०॥ टाकानिजनिजः नजार्दे मन्दिनाजननाः। उन्नावर्तः रवाश्यितमन् मासि मरानिवाः महीः ॥२॥॥ मरम् विद्याः मज्जनाः। वाजानिकः रवाश्यितमन् मासि मरानिवाः। मज्जनाः विद्याः मज्जनाः। वाजानाजि निमृक्षाः नजर्वा वर्षाः वर्षाः विद्याः। वाजानाजि निमृक्षाः नजर्वा वर्षाः वर्षाः । वर्षाः वर्षाः नजर्वाः वर्षाः वर्षा

श्रियवामी।

মরি সংগ্রিতঃ সংগৃহীতঃ একাঞ্জীকৃতঃ আন্ধা চিতং বৈঃ তেখাং ব্যাদ্ধণা স্বাদ্ধিযু অভিভরাং সর্বাণা মুখা নিফ্লং ন ছাৎ ১২০। বিখ্যাতং মললং অভ্যাদর স্বাচারাদি লক্ষণং য়ছ ॥ ২৪ ॥

(इ विश्व महिवा। मह । २०।

यज यक्षाः कार्याद्वाः न्यादिकः अकिमद्वातन विकः। नृभवधः दाकः छ। ॥ २७॥

क्रमम्बर्धः।

ততা কৈমুডোন হেত্: নবা ইতি। সতাং দিশতার্থিতম্থিতো নৃণামিজ্ঞাদি ন্যায়েন মদর্শমাত্রং মুইবর জুক্ত কল্যমের ন ভাব। কিবেতেবাং প্রমার্থ কল্মপি ভাব মরি সংগ্তিতাত্মনাং মধ্যে তাদুশের ততিত্রামিত্যর্থ: ॥ ২৩॥

সপ্তাৰ্বামিতি। ভাবিনি ভূতবত্পচার:। গ্রিরত্ত রথধাতখাত্তবাং । ২৪।

टाएका ८इ महात्राधन छात्र कु ॥ २६ ॥

ইমান্ এতান্ বৎসরান্ ব্যাপ্য সমাহিতং মদপিতিং **যভ্ৰজ্যলয়ং তদ্মন্ত বর্ততে। যভামের** সধ্যতিরি**শীত্তর্গ্যং জনীয় হ**দয় ভূল্যং হ্রদয়ং বর্ততে ইত্যর্থ:। বক্ষতে চঞ্জীমহুনা। সর্কাত্মনাহুরপাং তইতি॥২৯।২৭॥

शिविष्रनाभष्ठकवृद्धी ।

নচ মন্ত্ৰমণ কামং দকৈৰ কেবলস্পক্ষীয়তে কিন্তু মৎপদমণি দলভীতি সমাধ্যিষ্ঠীত্যাই সভাং দিশতাবিভয়বিতো নৃণামিতি ভায়েন মহলহৰ্শমাত্ৰং স্টেম্ব ভূজকলদমেৰ ন ভাং কিন্ততে মহপদ্ধানমৰ ভাং আত্ৰাণি মন্ত্ৰি গংগৃভিভাত্মনাং নিহিত্মন্সাং ভক্তামাং মন্ত্ৰা আদৃশ্ৰু ভৃতিভান্ধিভাৰ্য: ভ্ৰাৰেভিজ্জনীতি ভকারঃ ক্ৰম্বাৰ্থং । ২০ । ২৪ ॥

CE Tamin

বয়:শীলাদিভিরতুরপার 🛚 ২৪ 🗈

यव बचार उर छारवः नगरिङमानकः। नृश्वश्ः बाधकना ॥ २७ ॥

হে প্রজাধাক। তোমার সদৃশ যে সকল পুরুষ স্ব হাত আমাতে একাথ্য করিয়া আমার অর্জনা করে ভাষাদের সেই অর্জনা কখন নিম্মলা হয় না, অভএব ভূমি বাহা বাস্থা করিতেছ অবশুই ভাহা সিদ্ধ হইবে॥ ২৩॥

প্রজাপতিদিদের পতি স্ত্রাট্রস্র স্পাচারাদি রূপ নঙ্গল সর্বত্ত বিখ্যাত। যিনি ত্রনাবর্ত দেশে বাস করিয়া সপ্ত সাগর সমন্বিভা পৃথিবী শাসন করিতেছেন ॥ ২৪ ॥

হে বিশ্ব । সেই ধর্মজ মসু তোসাকে দেখিবার নিমিত মহিনী শতরপার সহিত পরখ দিবস আগ্রমন করিবেল । ভাঁহার একটা পরমা জন্মরী কলা আছে, সে ভরণ বরকা এবং শীল গুণ সমবিতা, আগ্রমান অনুরূপ পতি অবেষণ করিভেছে, ভূমিই ভাহার উপস্ক পাতে, বোধ হয় সন্ম তোমাকেই সেই কলা সম্প্রদান করিবেন । ২৫ ॥

বহন কর্মন। ভার্মা নিনিত্ত ভোমার চিত বহু বংগরাক্ষি স্মাহিত হইরাছে, আর চিতা করিতে হইবে না সেই রাজক্যা অচিরে ভোমাকে ভজনা করিবেন ॥ ২৬ ॥

যা ত আত্মভূতং নীর্যাং নবধা প্রদ্বিষ্যতি। বীর্ষ্যে ত্বদীরে ঝবর আধান্যস্তাঞ্জনাত্মনঃ ॥ ২৭ ॥ ত্বঞ্জ সম্যুগমুষ্ঠার নিদেশং মে উশত্তমঃ । মির তীর্থীকৃতাশেষ ক্রিরার্থী মাং প্রপৎস্তে ॥ ২৮ ॥ কৃত্রা দরাঞ্চ জীবের দক্ষাভারমাত্মবান্। ময্যাত্মানং সহ জগৎ ক্রক্ষ্যাত্মনি চাপি মাং ॥ ২৯ ॥ সহাহং ভাংশকলরা ত্বীর্যোণ মহামুনে । তব ক্ষেত্রে দেবহুত্যাং প্রাণেষো তত্মশংহিতাং ॥ ৩০ ॥

विषयपामी।

শ্ৰীৰম্ভাগৰতম।

তে বীৰ্যাং আত্মনি ভূতং ধৃতং যা প্ৰস্বিষ্যতি সাজে জিবাতি। বীৰ্যা বীৰ্যাপ্ৰস্তাস্থ কন্যাস্থ সঞ্জনা আত্মনঃ প্ৰানাধা-

নিদেশমান্তাং উপরমঃ শুদ্ধসন্থ: তীর্থং পাত্রং তেন দানং লক্ষাতে মরি সমর্পিত সর্ব্ধ কর্ম ফল ইতার্থ: ॥ ২৮ ॥ গাহ্ স্থোন দরাং ক্লবা সংন্যাসেনচ অভরং দত্তা ময়ি আত্মানং ক্লগচ্চ সহ একীভূতং ক্লক্সনি ॥ ২৯ ॥ ভ্রীর্যোগ সহ দেবহুত্যাং অবতীর্যোতি পেবঃ ॥ ৩০ ॥

क्रमगमर्छः।

আছং তাবৎ পাত্রবাস্তীর্থং। ততো ময়ি যৎ সমর্পিতং তদপি মদস্কঃ পাতাতিশন্ন বিবক্ষরা তীর্থমেবোচাতে ইতি ভাবঃ ॥ ২৮ ॥ ময়ি পরমাশ্রমে আবানং দ্রকাসি। আবানি তদধিষ্ঠানে মাং। তচ্চ সহ জগদ্বধা আইথৈব জগদ্পি দ্রকাসীতার্থঃ ॥ ২৯ ॥ বীর্যাং প্রভাবং তেন সহ ব্যক্তিভূষেতি শেবঃ। মহাকৌ দ্বরণঃ প্রভাবো ব্যক্তী ভবিষ্যভীত্যর্থঃ। বক্ষ্যতেচ প্রজাপতিনাশুরোবিত্রস্থামকং যশ ইতি ॥ ৩০ । ৩১ । ৩২ । ৩৩ ॥

গ্ৰীবিখনাপচক্ৰবৰ্তী।

তে বীর্যাং আত্মনি ভূতং নবধা নবাপত্যরপেণেতার্থ:। বীর্য্যে বীর্য্যপ্রস্তাস্থ কন্যাস্থ অঞ্বা আত্মনা বীর্য্যাধাত হৈ । ২৭ চ অস্ত্রহারাত্মিত যথ প্রাধিতঃ ত্রাহ ত্থেতি হাভ্যাং। তীর্থং পারেং তেন দানং লক্ষ্যতে মরি সমর্পিত সর্বকর্মকর্ম ইত্যর্থ: । ২৮ গার্হত্বে অরাজ্ঞানাদিদানৈত্রী বেরু দরাং রুলা হৈরাগ্যে অভরং মন্তল্পাদদেশনেতার্থ:। মঘাধিষ্ঠানতত্বে পরমেখরে সর্বাং কাগদাত্মসহিত্রতীতি যথ শাত্রদৃষ্ট্যা সাম্প্রতং জানাসি তদেব তদা সাক্ষাদেব ক্রক্ষাসি প্রথমাদিপুরুবং কারণার্থবশারিনং সহক্র শীর্ষাদিত্মসং মাং ক্রক্ষাসি। তত্ত্বতৈত্ব মন ব্যোমক্পেরু অনক্তকোটি ব্রহ্মাতানাক্ষ্মহিতানি সাক্ষ্মস্থাতার্থ:। তথা আত্মনি অনিমন্তর্থানিশং মাং সন্তমধুনা জানাত্মব তদাত্ব কৈছি অদেহাত্তর্পন্তাবস্থান প্রাদেশনাত্রং পুরুবং কারণান্ত্র কিছে স্বাদানীতি বিতীয়ন্তর্ভাত্তং তৃতীরপুরবং কীরোদনাথং মানেব সাক্ষান্ত্রকাসীতি স্বল্যাম্প্রভাং সর্বাং বন্ধ স্থানের জগদাত্মানং ক্রক্ষাসি তথাত্মনি চাপি মাং জ্রীরোপীর তং কাচিন্নেক্সরজ্বে কৃদি কুত্য নিমীলাচ। পুরুব্যুস্থাতে বোগীবানক্ষ সংগ্রহত্ত্যক্তিরীত্যা ক্রক্ষাসীতি । ২৯ ৪

किशानाक काकितानलक वार्काः भृगिषाह । সहाहमिछि वदौर्याग पश्कनााभखादुरस्य गर व्याविष्ट्रशिष्ठ (भदः । ०० ।

এবং তোমার যে বীর্যা আত্মাতে ধৃত আছে, তাহা নর প্রকারে প্রস্কাবন। অপর তোমার উরসে যে সকল কন্যা জন্মিবে ঋষিগণ তাহালের গর্ম্ভে পু্জাধান করিবেন॥ ২৭॥

বংস! তুমি আমার আজ্ঞা সমাক্ রূপে পালন পূর্বক আমাতে সকল কর্মের ফল সমর্পণ কর, তাহা হইলে তুমি শুদ্ধ সন্ত্ হইয়া অবশেষে আমাকেই প্রাপ্ত হইবে॥ ২৮॥

তুমি গৃহাশ্রমে প্রবিষ্ট হইয়া জীবের প্রতি দয়া করিও অর্থাৎ অনাদি দান ঘারা তাহাদের পরি-তোষ জন্মাইবে, তদনন্তর সন্ন্যাস ধর্ম অবলম্বন করিয়া প্রাণিমাত্রকেই অভর দান করিও, এই রূপ করিলেই শেষে আমাতে তোমার আত্মা ও জগৎ এই সূইকে একীভূত এবং ভোমার আত্মাতে আমা-কেও অভিন্ন দেখিতে পাইবে॥ ২৯॥

তাহার পর আমিও তোমার বীর্যা সহ আপনার অংশ কলাক্ষতোমার ক্ষেত্র দেবছুতির গর্ত্তে জন্ম গ্রহণ করিয়া তত্ত্বসংহিতা প্রণয়ন করিব ॥ ৩০ ॥ এবং তমসুভাষ্যাৰ ভগবান্ প্রত্যাক্ষত্ম:। জগাম বিদ্দুদরদ: দরস্বত্যা পরিপ্রিতাৎ ॥ ৩১ ॥ নিরীক্ষতন্ত্রদ্য ব্যাবশ্বেষবিদ্ধেশ্বরাভিক তিদিদ্ধার্গ:।

শাকর্ণয়ন্ পত্ররধেক্সপকৈক্সভারিতং ভোমমুদীর্ণ সাম ॥ ৩২ ॥

অধ সংপ্রন্থিতে শুক্রে কর্দমো ভগবান্যি:। আন্তে শ্ব বিন্দুসরদি তং কালং প্রতিপালয়ন্। ৩০॥ মন্তঃ স্যান্দনমান্থায় শাতকোম্ভপরিচ্ছদং। আরোপ্য খাং চুহিতরং সভার্য্য: পর্যাটন্মধীং। ৩৪॥

विधवनामी।

প্রতাগ্ভ্তেক্ষেত্র লায়তে আবির্ভবতীতি প্রতাগক্ষল: সর্বত্যা নদ্যা পরিবেটিডাং ॥ ৩১ ॥

অশেবৈ তথে। মন্ত্রাদি সিংকশবৈরভিষ্ট্ সিক্ষার্গে। বৈকৃষ্ঠমার্গো বক্ত বহা অশেব সিংক্ষরভিষ্ট্ তলাসে নিকৈম্পাত ইতি সিক্ষার্গল স্ যবৌ। প্রার্থেকো গরুড়তার পাইকর্কীর্ণং অভিব্যক্তং সামাকর্ণরন্। বৃহত্তথক্তরে পক্ষাবিতি শ্রুতে:। উচ্চারিতং তোমক সামাধার ভ্তানাম্চাং সম্পারং শৃণ্ন তোম আছেতি শ্রুতে:। সমাস পাঠে উচ্চারিতঃ তোম তোমীর সম্পারো বক্ত সায় ইতি ॥ ৩২ ॥

তং কালং পরশ্ব ইত্যুক্তং প্রতীক্ষ্যমাণঃ । ৩ ।

শাতকৌছাঃ সৌবর্ণাঃ পরিকরা বিশ্বন্ তং রথমান্থার ত্হিতরকারোপা বরান্থেরণার্থং পর্টন্ । ৩৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

মহুরিতি যুগাকং । ৩৪। ৩৫।

वीविधनागठक वर्षी ।

প্রভাগভূতে ছক্ষের জারতে আবির্ভবতীতি সঃ। সরস্বত্যা নদ্যা পরিপ্রভাগ পরিবেটিতাং । ৩১।

তক্ত কর্দমক্ত নিরীক্সমাণক্ত সত:। অশেবৈ: সিদ্ধেবরৈর ভিষ্ট্ চা সিদ্ধার্গে। বৈকুঠমার্গে। বস্য স:। প্ররেপেস্তো গকড় ভক্ত পশ্চৈক্তারিভং ভোমং অক্সমূলায়ং পৃণ্ন কীদৃশং উদীর্ণমভিষ্যক্তং সাম বৎ তৎস্বরূপং। সমাস্পাঠে উচ্চারিভঃ ভোমং ভোত্রীর সমুলারো বস্য ভ্রাভূতং ব্লুনীর্ণং সাম তৎ বৃহত্তপান্তরে পকাবিতি স্থাতঃ। ৩২ ॥

खः कानः भवत्र हेज्युकः खडीकामानः ॥ ७० ॥

यन हा जगवान गमानिमेर जिल्लाहिन महीर शर्या हेन् मूरनदा अभाग र जेशा वानिकावतः । ०८ ॥

কর্দ্দের স্তবে আবিস্থৃতি ভগবান্ ঐ প্রকার উপদেশ করিয়া সরস্বতী নদী বেষ্ট্রিত সেই বিদ্দু সরোবর হইতে প্রস্থান করিলেন॥ ৩১॥

কর্দম দেখিতে লাগিলেন, ভগবান্ ভাঁহার সমক্ষেই ততুজারিত সামবেদের ঋক্ সকল প্রবণ করিতে করিতে যাইতে লাগিলেন, ঐ সকল সামধ্যনি পতগপ্রেষ্ঠ গরুড়ের পক্ষাতে সর্বতোভাবে ব্যক্ত হইতেছিল, হতরাং হৃদ্দর রূপে প্রবণগোচর হইতে লাগিল। খহে বিহুর! কর্দম যে ভগবানের ত্তব নিমিত্ত সামবেদীয় ঋক্ উচ্চারণ করিয়াছিলেন ইহাতে আশ্চর্য বোধ করিও না তপোমন্ত্রাদি সিদ্ধ অন্যান্ত ঈশ্বরণণ যাঁহার তাব করেন এবং সিদ্ধ অনে বাঁহার বন্ধ অন্যেষণ করিয়া থাকেন ভাঁহার স্তৃতি কে না করিবে ? ॥ ৩২ ॥

সে যাহা হউক, ভগৰান্ প্রস্থান করিলে ঋবিবর কর্দম সেই কাল প্রতীক্ষা করত বিদ্দুসরোবরের তীরেই অবন্ধিতি করিলেন । ৩৩ ।

অহে বিহুর। এই সময়ে স্বারস্কৃব সন্মু ভার্যার সহিত স্বর্ণমরী সক্ষায় প্রসন্ধিত রথে আরুচ় হইরা আল্লভাকে তদুপরি আরোপণ করত ভাহার বরান্থেযণার্থ পৃথিবী পর্যাটন করিতে করিতে ৪ ০৪ ৪ ত্ত্মিন্ অধ্বরহ্নি ভগবান্ যৎ সমাধিশং। উপায়াদাশ্রেষপদং মুনেঃ শান্তক্ত তৎ ॥ ৩৫ ॥ যদ্মিন্ ভগবতো নেত্রাম্পতন্ হর্ষিশেবঃ। ফুণরা সংপরীক্তস্য প্রশাসংগতিরা ভূশং ॥ ৩৬ ॥ তবৈ বিন্দুসরো নাম সরস্ভ্যা পরিপ্লুডং। পুরুং শিবামৃতভালং মহর্ষিপ্রেষিতং ॥ ৩৭ ॥ পুরুক্তমলভাজালৈঃ কুলং পুরুষ্গ্রিভঃ। সর্বর্জুক্ত পুলায়ার বনরাজি জিয়াছিডং ॥ ৩৮ ॥ মত্ত্রিজগগৈত্তীং মত্তভ্যর্বিভ্রং। মত্ত্রিস্টাটোপমাহ্যমুক্তবেক্তিলং ॥ ৩৯ ॥

वीरद्रश्रमी।

(ह स्भावन विज्य यद खहः । ७८ ॥

তৎ প্রবেশ মাত্রেণ পরমানন্দং প্রাপ্ত ইতি দর্শরিভূং আশ্রমং বর্ণরতি ধ্যারিভ্যাদিভি: সপ্ততিঃ লোটক:। প্রপরে কর্দমে ॥৩৬ শিব্যারোগ্যং অমৃতবং স্বাতু স্কলং যদ্মিন ॥ ৩৭ ॥

কৃজস্তঃ পুণা মৃগা বিজাশ্চ বেষু তৈঃ পুণাক্রমলভানাং জালৈঃ সমূহৈঃ যুক্তং ॥ ৩৮ ॥

ঘুইং নাদিতং মন্তল্লমরাণাং বিল্লো বিনোদো যদিন্। মন্তা বহিণি এব নটা কেবামাটোপো নুতা সন্তমো বিদিন্। আহ্বরন্তা মিথো মন্তাঃ কোকিলা যদিন্ ॥ ০১ ॥

क्रमम्बर्छः।

যনিরিভি সংগ্রকং। আলপারে প্রপদ্মাতে । অপিতিয়া তাদেকসংজ্ঞতরেতার্থঃ। যদিরিব তথ। অঞ্বিশুবুন বরপং বিশু-সবো নাম সবোষ্ট্রিভার্থঃ। টীকায়াং শিবমারোগ্যমিতি আয়ুর্তিমিতিবৎ আবোগ্যজনক্মিতার্থঃ। অরোগমিতি কাশি ॥ ৩৬ । ৩৭ । ৩৮ । ৩১ । ৪১ । ৪১ । ৪১ ॥

बिविधमाधहक्कवर्ती।

(ह स्थवन् (ह विक्रत । ०५ ॥

আশ্রমং বর্ণরতি যশ্বিরিতি সপ্ততিঃ প্লোটকঃ প্রপত্নে কর্দমে । ৩৮। ৩৭ ॥

मजामारेमत्रविकः । ७৮ ॥

ঘুটং নাদিতং। মতা বহি পিএৰ নটাভেৰামাটোপো নুভাগ:ল্ৰাে ব্ৰিংছং মিথ আহ্বছতা মতা কোকিলা ব্ৰিংভং ১০১। ৪০॥

ভগবান্ যে দিবস আসিবার কথা বলিয়াছিলেন সেই দিনেই শান্তব্রত ঐ কর্দ্ধ মুনির আশ্রমে আসিয়া উপন্থিত হইলেন। ৩৫॥

বংস বিদ্ধর। ঐ আশ্রেম সামান্ত নতে, মেই ছানে ঋষিবর কর্মন ভগবানের শরণাপর হওয়াতে তাঁহার প্রতি ভগবানের অন্তঃকরণ করুণায় আন্ত্রেবং নেত্র হইতে আসন্দ্রান্তি পতিভ হইয়াছিল ॥৩৬॥

বিছুর ঐ আঞ্জের নামই বিক্সুনরোগর, উহাই সরস্থাীর জালে অভিষিক্ত হয়। বংগ ! ঐ ছান সামাক নহে, অভি পবিজ, সেথানকার জল রোগ নাগক ও অমৃত জুলা ফ্যালু, নহর্বিগণ সর্বাদাই ঐ, নালিল সেবন করিয়া থাকেন ॥ ৩৭॥

আপার সে ভান অনেকানেক পুণ্যবৃক্ষ ও লভা সৰ্হ ছারা বিরাজনান, ঐ দক্ষ পাদণ ও লভার দাধার পজিগণ এবং তলে মুগ ঘকল সন্মেছর আরে নানা প্রকার অব্যক্ত শক্ষ কলিছেছে। জার তথার সকল ঋতুর ফল পুতা সর্বাদাই সমৃদ্ধিশালী এবং দেই ছল বহু বনরাজির পোভা-সম্ভিত্ত । ও৮ ।

অপিচ তথাকার বিহণকুল মত হইয়া অমধুর বারে শব্দ করাইত কতাই কলপুৰ বোধ হয়, আর
ক্রধার জন্ম কিক্র মত হইয়া নামা প্রকারে জীড়া কঙ্গে এবং বাধ বাধ সমুরগণ নটের ন্যার নৃত্য
ক্রিয়া কেড়ায়। অপুর কেটকিবকুলও মত হইয়া প্রস্থাবের আহ্বাব নিমিত বাক্য বিয়ন্তন করে। একা

কদম চম্পকাশোক করঞ্জ বকুলাদনৈ:। কুন্দ মন্দার কুটজেন্চ তিপোতৈরলয়ত:॥ ৪০॥ কারওবৈ: প্লবৈ হৃংদৈ; কুরবৈর্জনকুকুটি:। দারদৈন্দক্রবাকৈন্চ চকোরে বৃদ্ধকুজিত:॥ ৪১॥ তথিব হরিলৈ: কোড়ৈ: খাবিলাব্য কুপ্লবৈ:। গোপুচ্ছেইরিভিন্মকৈ নকুলৈ নাভিভিত্নতং॥ ৪২॥ প্রবিশ্য ততীর্থবর্মাদিরাজ্য সহামুগ্য। দদর্শ মুনিমাদীনং তন্মিন্ ত্তত্তাশনং॥ ৪৩॥ বিদ্যোত্মানং বপুষা তপস্যুগ্রযুকা চিরং॥ ৪৪॥

নাতিকামং ভগৰত: স্নিগ্ধাপাঙ্গাবলোকনাৎ। তথাছতামৃতকলা পীযুষ প্রবণেনচ ॥ ৪৫॥

अभित्रवामी ।

कम्यामिछि द्रिकत्नक्र छ । ८० ॥

কারওবাদিভি: পক্ষিভি: বস্তু যথা ভবঙি যণা কৃত্মিতং ॥ ৪১ ॥

ছরিণাদি ভিরুতিং তত্র ক্রোড়ং শৃকর:। খাবিৎ শলকং মকে। মকটং তবিশেষা গোপুছা হরিকানিরং নিংছো বা নাজিং কজুরী মুগং॥ ৪২ ॥ হত: হুতাশনো বেলচোরি যোগ্যো ধেন ॥ ৪০ ॥

উগ্রা যুক্ যোগো বস্য তেন বপুরা বিস্যোতমানং ॥ ৪৪ ॥

ভল ভগৰতো বাজ্তং ভাষণমেৰামূভকলা অমৃত মণ্ডলক চক্তক কলা তথায়ং পীযুৰং তক শ্ৰেণেনচ নাতিকামং তপদা কুশং তথাপাকুশং 1 ৪৫ 1

ক্রমসন্দর্ভ:।

প্রবিশ্রেতি সাহ্মব্যকং। নাতীলি নৈবেতার্থ: ॥ ৪০। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯॥

श्रीविधनां शहक वसी ।

তত্রত্যান্ বৃক্ষাস্কৃ। পক্ষিণ আহ কারগুবৈরিত্যাদি ॥ ৪১ ॥

মৃগানাহ তথৈবেতি। ক্রোড়: শৃকর:। খাবিৎ শলক:। মর্কো মর্কট:। গোপুছেত্তবিশেষ: হরি: সিংহ: নাতি: কন্তু রীমৃগ: ॥ ৪২ । ৪৩ ॥ তপসি তপোমধ্য এব উগ্রাযুক্ যোগো যত্ত তেন ॥ ৪৪ ॥

তদ্পি ন অভিকামং অনতিকুশং। তত্ত্ব ক্লপাপাকেতি ভ্রাজ্ভেতি হেত্বনং ভ্রাজ্ভমেবামৃত্কলত চক্তত্ত আ সমাক্পীয্ৰং ভত্ত অবংশনেভানেন হুমুধ্তামৃতকল্ভমুক্তং । ৪৫ ।

বিত্র! সেই আশ্রমে কদম, চম্পক, অশোক, করঞ্জ, পনস, আসন, কুন্দ, মন্দার, কুটজ, আত্র ইত্যাদি বিবিধ পাদণে কতই শোভা বিস্তার করিয়া রাথিয়াছে ॥ ৪০ ॥

অপর সে ছানে কারওব, প্লব, হংস, কুরর, জলকুরুট, সারস, চক্রবাক, চকোর প্রভৃতি খগরুদের মনোহর কুজনে সকলের মনোহরণ হয় ॥ ৪১ ॥

, স্থার তাহার চারিদিকে বহু বহু হরিণ, শৃকর, শল্লক, গবয়, ক্ঞার, গোপুচছ (বানর বিশেষ) মকটি, নকুল এবং কস্তুরী মৃগ ভাষণ করে॥ ৪২॥

সে বাহা হউক, সেই আদিরাক সমু অমুচরগণের সহিত সেই তীর্থবরে প্রবিষ্ট হইয়া দেখিলেন এক জন মুনি অক্ষচারিকোগ্য হতাশনে আহতি প্রদান পূর্বক অধ্যাসীন হইয়া আছেন ॥ ৪০॥

ঐ শ্ববি বহুকাল তপস্থায় সমাহিত থাকাতে তাঁহার শরীরে অনেক অনেক উগ্র যোগ হইয়াছিল, তাহাতে তিনি দৈহের জ্যোতি ঘারা যেন জ্লিতেছিলেন ॥ ৪৪ ॥

যদিও তাঁহার শরীর তপক্ষায় অর্ডিখয় শীর্ণ হইয়াছিল, তথাপি ভগবান্ তাঁহার প্রতি হ্নিয় অপাস মিক্ষেপ পূর্বক যে বাক্য বলিয়া যান ঐ বাক্য অমৃতমণ্ডলের কলা ফরপ অমৃতময়, তাহা আবণ করাতে কুশ বোধ হইল না । ৪৫॥ প্রতিং পদ্মপদাশক্ষিং কটিলং চীরবাসসং। উপসংস্তা সলিনং যথার্হণমসংস্কৃতং ॥ ৪৬ ॥ অবেটিজন্পানান্তং নৃদেবং প্রধানা সপর্যায়া প্রত্যন্ত্রকাৎ প্রতিনন্দ্যাকুরপরা। গৃহীতার্হণনালীনং সংযতং প্রীণয়ন্দ্বনিঃ। স্মানন্ ভগবদাদেশযিত্যাই ম্লক্ষ্মা গিরা ॥ ৪৭ ॥ নুনং চংক্রমণং দেব সভাং সংরক্ষণার তে। বধার চাসতাং স বং হরেঃ শক্তির্হি পালিনী ॥ ৪৮ ॥ যোকেন্দ্রীক্র বায়ুনাং যম ধর্ম প্রচেতসাং। রূপাণি স্থান আধৃৎদে তথ্যৈ শুক্রার তে নমঃ ॥৪৯ ॥

विषत्रयामी ।

প্রাংশুমূরতং উপসংস্তা সমীপং গন্ধা মলিনং দদর্শেতি পূর্টেশ্ব জিরা অফ্ তেহনেনেতি অর্থং মহারত্বং তৎ অসংস্কৃতং অনি-নিজিং যথা মলিনং দৃশ্যতে তবং ॥ ৪৬ ॥

উটকং পর্ণালাং প্রাপ্তং প্রঃ পাদসমীশে প্রণতং আশীর্জিরভিন্দ্য স্পর্যারা প্রস্থা প্রস্থা প্রস্থাত সংস্কৃতবাম্ ॥ ৪৭ ॥ তে চংক্রেমণং পর্যাটনং বি যত্মাৎ ॥ ৪৮ ॥

মনুত্ং বিষ্ণুং প্রণমতি ব ইতি। স্থানে তত্তৎ কার্য্যাবদরে শুক্লায় বিষ্ণুবে ॥ ৪৯ ॥

ঐবিশ্বনাধচক্রবন্তী'।

প্রাংশুং অটবিত্ততি প্রমাণভত্য উপসংস্তা নিকটং গম্বা মলিনং দদর্শেতি পূর্বৈধিব ক্রিরা। অর্জতেহনেনেড্যর্থ মহারত্ম তৎ অসংস্কৃতং ব্যা মলিনং দুখাতে তবং ॥ ৪৬ ॥

উটলং পর্ণশালাং প্রাপ্তঃ। পুর: পাদসমীশে প্রণতং। পুনরণি পাদৌ গৃহস্তং অনুদ্ধপরা আভিথ্যেটিভরা দপর্বারা সহিতঃ প্রভাগৃহ্যাৎ ভ্রাভ্যামুখাপ্যালিলিক। কিং কথা প্রতিনন্ধ্য অদ্য মূর্তমেব ভংগামরং তেলঃ সাক্ষাৎ কৃত্য কৃতকৃতোহ দীতাভিনন্দতং রাজানং রাজস্বয় ভাগ্রতী বিশ্বপালনী শক্তিব্যবলোক্যনে ইতি প্রত্যাভিষ্কুভ্যেভার্যঃ র

ক্ষালিজচরপমুচিভদর্ভান্যাসৰে আসীনং গৃহীতানি অর্থানি পূপাচকনদুর্বাদশ ফলাদীলি দেল ভং। সংবতং জুফীং স্থিতং ॥৪৭ তে দেব বস্ত চংক্রমণমিত্যানি। স এব সং হরেঃ পালিনী শক্তির্ভবিদি ॥ ৪৮ ॥

'আর্কাদীলাং দ্বপাণি স্থানে বৃক্তমেব দং আ সমাক্ দ্বদা ধথ্যে তক্ত প্রতাপেন ক্ষর্মঃ। যণপা চন্ত্রঃ। আধুলংক্তলারিঃ। ঐখ-ব্যাপেক্তঃ। সর্বব্যে প্রবেশবন্দেন বায়ুঃ চুইনিগ্রহ্থেন যমঃ। শিষ্টপালনেন ধর্মঃ। সাজীর্ব্যেপ অস্তবিজ্ঞান্তর প্রতিকাঃ অতথ্য তথ্যৈ মদতীইদেবায় দ্বন্ধপিণ পুনরপি মমোটজমাগতার শুক্তাঃ ক্ডাং নমঃ॥ ৪৯ ॥

আর ওঁহার শরীর উন্নত, চক্ষু: পদ্মপলাশ জুল্য হস্পর, মস্তকে জটা এবং পরিধানে চীর বসন ছিল।
মুনি নিক্টে গিরা পুনর্কার অবলোকন করিলেন, জাহাতে অসংস্কৃত মহারজের ভায় ঈষং মলিন বোধ হইল ॥ ৪৬ ॥

অনস্তার আদিরাজ মতু অবির পর্ণাদার নিকটে গমন করিয়া তাঁহার পাদ সমীপে প্রবত হইলেন, মুনিও আশীর্কচন প্রয়োগ দারা অভিনন্দনা করিলেন। মতু অর্হণ গ্রহণ পূর্বক আসনে আসীন হইলে শার মুনিবর কর্দম ভাগবানের সেই ভালেশ স্বরণ করিয়া ত্যশুর কচনে কহিতে লাগিলেন॥ ৪৭॥

হে রাজন্! বোধ করি সাধ্যানের পরিপালন ও অলাধ্য কষন মানকেই ভোনার এই পর্যাটন আরম্ভ হইরাছে, কেন না তোমরা ভগবানের অক্তি, ভগবৎ শক্তির লোকগালন ব্যক্তীত আর কি কার্য্য আছে ? ॥ ৪৮ ॥

শবিষর কর্মন স্বারস্কৃষ নকুকে এই রূপ বলিরা জনতর্যানি কিছুকে প্রণান করত করিবেন, তগবন্! আপনিই তত্তৎ কার্য্যাবসরে চক্ত, সূর্য্য, দায়ি, বাদু, অন, ধর্ম ও ক্ষেপ প্রস্তৃতির রূপ ধারণ করিয়া থাকেন, অতএব আপনাকে নমস্কার করি ॥ ৪৯ ॥ ৰ যদা রথমান্থার জৈলেং মণিকণাপিতং। বিক্ষৃত্বকণ কোদণে রাজ্যন্থান্য বছ ॥
বিশিন্ত চনণকুলং বেপয়মাণ্ডলং ভূবঃ। বিকর্ষন্ বছণীং দেনাং পর্যাইসাংশ্রমানিব ॥ ৫১ ॥
তদিব দেতবং দর্বে বর্ণাশ্রমনিবন্ধনাং। ভগবত্ত চিতা রাজন্ ভিদ্যেরন্ বক্ত কছাভিঃ ॥ ৫২ ॥
অধর্মত সমেধ্রেত লোকুপৈর্ব্যক্তিব্য শ্রমানে ছলি লোকোছনং দহাপ্রত্তো বিন্তব্যতি ॥৫০
অথাপি প্তেছ ছাং বীর বদর্থং ছবিহাগতঃ। তদমং নির্বালীকেন প্রতিপদ্যামহে হাদা ॥ ৫৪ ॥

विश्ववामी।

ন বদেতি পঞ্চানাময়মৰ্থঃ। ফলাপি ধর্মারকার্যাধি সর্বাজ্ঞ পর্যাটিত তব আসকারজাণাগ্রামানং সম্ভবতি। তথাপি বিশেষ কার্যাং চেদতি তৎ কথাতামিতি জৈলং জয়প্রাণং মণিগণা ক্ষপিতা বিশ্বন্ তং রথমারক্ত বং বদা ভূবো মণ্ডলং ন পর্যাটিনি তদা সেডবো তিলোর্নিতি লয়াণাম্বরঃ। বিক্তর্ক ব নাদং কুর্বাৎ চণ্ডং কোদণ্ডং বস্তা ৫০ ॥

স্থানৈ নাজ চরণৈ: কুঞ্জ সংঘটিত । ৫১ । বর্ণাশ্রমাণাং নিবন্ধনং ধৈ: বত অহো । ৫২ ।

नित्रकृरेभ न् किनि भिक्रकृरेकः भद्रात्न निकिष्टि । ৫० ।

নির্ম্নালীকেন সহর্ষেণ প্রতিপদ্যামহে খীকুর্ম্মছে। ৫৪ ॥

क्रमगसर्वः ।

न यानि नाई जिक्श। त्रार्थन त्रथन त्रिश्रमात्वन । ६० । ६० । ७२ अ

শয়ান ইভার্ককং ধর্ণাধর্ময়োঃ পালনসংহারে বদ্টাবেব সমাক্ ভাতাং দক্ষানিবারণং অদত্যকানমাত্রেণ ভাদিতি ॥ ৫৩। ৫৪ ॥

এীবিখনাপচক্রবর্তী।

হে রাজন্ কিমর্থমারাতোহনীতি তাং কথং পৃচ্চামো বতত্তৎকারণং জানাধেয়নেতি ব্যতিহেকেশার। ন বলেতি। বুলা ভূবে মণ্ডলং ন পর্যাটিসি। তদা সেতবো ভিজেন্তি করাণামন্তরঃ। মণিগণানামর্পিভ্রমর্পনং যুক্ত তং লৈজেং জর্পীনং বৈজ্ঞত্তমবাহ রথেন রথসারিধামাত্রেণ অঘানু হুটান্॥ ৫০। ৫১। ৫২। ৫০॥

অথাপি ষ্যাপি সামানাতো আনামি তৃত্বপি পুছে পুজ্জামি ইত্ মংপর্ণশালায়াং ব্দর্থং ইজি নহি ছুইনিগ্রহার্থং প্রাটনং মংপর্ণ-। শালায়াং স্ফলীজবভীতি ভাবং । নির্মালীকেন নিষ্পটেন সহর্বেণ বা কুলা প্রাতিপ্রামহে স্বীকুর্মতে । ৫৪ ।

অনন্তর মকুকে সম্বোধন পূর্ণকৈ কহিলেন মহারাজ! মণিগণে ভূষিত এই জয়শীল রথে আরোহণ পূর্বিক ধকুর্বাণ গ্রহণ করিয়া যদি তুমি ভূমগুল পর্যাটন না কর, তবে ধর্ম মর্যাদা সকল একেবারে বিশুৱাল হয়। রাজন্। তোমার ধকুকের টকার ধ্বনিতেই পাপিগণ ভয় পায়॥ ৫০॥

হে স্মাদিরাক। তুমি এই যে মহতী সেনা সঙ্গে লইয়া সংস্থানি সূর্য্যের স্থায় পর্যটন করিতেছ ইহাতে তোমার দৈন্য সকলের চরণকুল্ল হইয়া এই সুমগুল কম্পিত হইতেছে। ৫১।

মনি ভূমি এরপে অমণ না করিতে তাহা হইলে ভগবান্ যে সকল বর্ণাঞ্জম নিবন্ধনার্থ দেতু রচনা করিয়াছেন ভাহা কি এই ত্রেপ থাকিত ? দহালগ কোন কালে ভালিয়া কেলিত ॥ ৫২॥

তে রাজন্। ছুমি নিশ্চিত হাইয়া শ্যান থাকিলে লোলুণা লোক সকল নিঞ্ছুশ হইয়া উঠিবে, তাহাতে অধর্ম অতিশয় বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইবে, হুতরাং এই ধ্রামগুল সন্ত্যু গ্রস্ত হইয়া একেবারে বিনষ্ট ছইয়া বাইবে ৪০০০ ঃ

অতএব যদিও তোমার এই পরিটেন নিশুদ্রোক্সন নহে গুণাচ তোমাকে বিজ্ঞানা করি কি নিমিত্ত এ স্থানে আগমন হইণ অভিপ্রায় ব্যক্ত কর, যাহা কহিবে, ছাটচিয়ে ভাহাই স্থীকার করিব । ৫৪ ॥ 2500

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং তৃতীয়ক্ষে মসুকর্দ্দন সম্বাদে একবিংশতিভ্রমোহধাায়: ॥ # ॥ ২১ ॥ # ॥

শ্রীমৈত্রেয় উবাচ ॥

এবমাবিক্ষতাশেষ গুণকর্মোদয়ো মুনিং। সত্ত্রীড় ইব তং সন্ত্রাভূপারতমুবাচহ॥ ১ ॥ শ্রীমকুরুবাচ॥

ব্ৰহ্মাস্ত্ৰৎ সম্থতো মুম্মানাত্ম পরীপ্সয়া। ছম্মোময়স্তপো বিদ্যা যোগমুক্তানলম্পটান্॥ ২॥ তত্তাণায়াস্ত্ৰচ্চাম্মান্ দো: সহস্ৰাৎ সহস্ৰপাৎ। হৃদয়ং তস্য হি ব্ৰহ্ম ক্ষত্ৰমসং প্ৰচক্ষতে॥ ৩॥

श्रीभव्याशी।

॥ । ইতি ভৃতীয়ে একবিংশ: ॥ । ॥

षाविংশে কর্মায়াদাদ্যথাদিরং হি বিফুনা। মতু তু হিতরং দেবহুতিমিতাত্বর্ণাতে ॥ • ॥

প্রমাবিস্কৃতঃ অশেষাণাং গুণানাং কর্মণাঞ্জ উদয় উৎকর্ষো ৰক্ষ স্ব স্থাট্ মস্থা। স্থীড় ইব স্বকীর্ষিশ্বণাৎ। প্রভ্যাধানি শক্ষা বা তং মুনিমুবাচ। উপারতং নিবৃত্তিনিরতং ॥ ১ ॥

মণীয়া কনা। ত্রা পরিণেয়েভি বিজ্ঞাপয়িবান্ যুম্পমৎ সম্বন্ধ: তাবদীখারেণ পূর্বমেব ঘটিত ইত্যাহ ব্রেছেতি সার্দ্ধিভাং আত্মন: প্রীপ্রয়া পর্যাপ্তিমিজ্বা ছলোমম্বাত্মন: পর্যাপ্তি: পালনং বেদ প্রেস্তিনং তত্ত ইচ্ছ্যা যুমান্ আহ্মণান্ অস্তলং ॥ ২ ॥
তিজ্ঞাণায় বাহ্মণালনায়। ব্রহ্ম বাহ্মণজাতি: ক্রেং ক্রিয়েভাতি: ॥ ৩ ॥

क्रममन्द्रः।

॥ * ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত তৃতীয়ন্তকে শ্রীকীবগোম্বামিক্কত ক্রমসন্দর্ভদা একবিংশোহগ্যায়: সমাপ্ত: ॥ * ॥ ব্রহ্ম বিরাট্রাপ: মুম্বত ইতি জাতিমাত্রাপেক্ষরোক্তং ॥ ১ । ২ ॥ এবং বো: সহস্রাদিত্যাদীতিচ । ত্রয়ং জ্ঞানশক্তিপ্রাধান্যাৎ ক্ষকং ক্রিয়াশক্তিপ্রাধান্যাৎ ॥ ৩ । ৪ ॥

बिवियनायहळ्ववं ।

॥ • ॥ ইতি সারার্থদর্শিক্তাং হর্ষিণাং জক্তচেত্রসাং। একবিংশকৃতীরত সঙ্গতং সঙ্গতং । • ॥
বাবিংশে প্রিরভাবী স্বাং আত্তক্তব্য কন্যকাং। কর্মনায় নৃপো দক্তা সংধ্যমাগাদিতীর্ঘতে ॥ • ॥

আবিষ্কৃত্তাহশেষাণাং গুণানাং কর্ম্মণাঞ্চ উদয় উৎকর্ষো বস্ত সং। বচনাত্নারতং নিবৃত্তি নিবতং বা মৃনিং। সত্রীড় ইবেতি স্বকীঠি প্রবশাৎ পরমার্ষপরায়ত্ব গুমিন্ ব্যবহার বার্তায়া বস্তব্যস্থাচ্চ ॥ ১ ॥

সহসা অকন্যাপ্রদান প্রস্থাস তৎ প্রত্যাধ্যান শ্বরা প্রথমং এ।জণফ ত্রিমরোঃ কমপি স্বর্জ্বং সন্যারমাহ এক্ষেতি সার্জাভ্যাং। আগ্রনশ্বন্দামরস্য অস্য পরীপ্রয়া বেদপ্রবর্তনেন পালনেচ্ছ্যা ব্যান্ আজ্ঞান্ অস্ত্রং। পর্যাপ্তিঃ পালনং ॥ ২ ॥ এ।জ্ঞান্ কে পালরের্রিভ্যক আহ তদিভি দোঃ সহস্রাদিভি প্রমেখ্রেণৈক্যাং নমু ক্তিরান্পি কঃ পালরেত্ত্রাই বন্ধ তাহ্মণা

॥ # । ইতি ভৃতীয়ে একবিংশতি ॥ #॥

ছানিংশাধ্যায়ে সায়স্থা মসু কর্তৃক ঋষিবর কর্দমের হত্তে ভগবানের আদেশামুরপ কদ্মাসপ্রদান ॥ ।॥
নৈত্রের কহিলেন মহর্ষি কর্দম এই প্রকারে আদিরাজ মমুর অশেষ গুণ ও কর্মের উৎকর্ষ প্রকাশ
পূর্বিক প্রশংসা করিলে স্ত্রাট্ আত্ম স্থ্যাতি বাদে লচ্ছিত হইলেন এবং আপনার অভিপ্রেত বিষয়ে
প্রত্যাধ্যান আশকার কহিতে লাগিলেন ॥ ১॥

হে ত্রহ্মন্! বেদময় ত্রহ্মা আত্ম পর্যাপ্তি বাসনায় অর্থাৎ বেদ প্রবর্ত্তন মানসে আপনাদিগকৈ তপস্থা বিদ্যা এবং যোগযুক্ত ও অলম্পট করিয়া আপনার মূথ হইতে স্কুলন করেন ॥ ২ ॥

তিনিই আপনাদিগের পরিপালন নিমিত বীয় বাহু সহত্র হইতে আমাদিগকে স্প্তি করিয়াছেন,

পটোক্র-ডানারাপ্রার: প্রায় ক্ষঞ্জ বক্ষণ্ড:। রক্ষজিয়ান্যরেরা বের ল করে র্ছনর্গজ্ঞ । ৪ । তর লালান্ট্রের ভিছ্না কো বর্ষে সংশ্রার:। যৎ স্বয়: ভারার বীজ্যা প্রান্তার বিজ্ঞান্ত:। দিন্ট্যা বে জ্ঞানান্ পৃত্তে ক্রমির্রো। যোধ্যুক্তাপ্রারান। দিন্ট্যা পার্যালক্ষ্ণের ক্রিয়া ক্রমির্র ক্রিয়া ক্রায় ক্রিয়া ক্রেয়া ক্রিয়া ক্রি

श्रीश्रवश्रामी ।

এবং স দেব এব রক্ষতি সা। বোহদৌ যা সদসদাস্থাকা সর্কান্মকা তথাপাবামো নির্কিকার: в б । তং বিজ্ঞাপরিত্যের ভদর্শনাদিকমভিনন্দতি তবেতি ক্রিভিং । ৫ ॥ অন্প্রাহোহস্থাসনাদিরপ এব উপতী: উপতা: ৮৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

যন্ত স্বৰং ভগবান্ধৰ্মমাই তদিবং ছধিকমিতি শেষ:। বৰা। বং ৰশ্বাং সংদৰ্শনিবেৰমধোণাভাষাং কাৰণাং স্বৰং ধৰ্ম-পাাহ। সংশয়েছিত তং কারণং চিত্তমলং । ৫ ॥

শম্প্রহ: অশিকাগ্রহণ সামর্থ্যে হেড়: কুপাদ্ট্যাদিরপ:। অপার্তৈর্কাধিত কার্যানবধানাদিলোবেণাছেলৈর্ক্তম্বং শৃহ্যানে কার্যানবাং ॥ ৬ । ৭ ॥

. अविधनाशहकवर्त्वी।

অবং ভূবং। অৱমর্থং লোকেহি হনরে প্রহার আপতিতে ভূবাজাংক্তংকত গোপনং দৃশাতে। ভূবেচ প্রহার আপতিতে দেহং ক্লিডীকেতা হ্রনত্তমধ্যে এব ভূকো গোপাতে ইতি হন্যক্ত পালকো ভূবং। ভূবেক শ্রাহণ হ্রনতংক্রনতা ৬-৪

এবং এক প্রাক্ষণেরবেন ক্ষত্রিয়ং পালয়তি। 'ক্তবং ক্ষত্রিয়:শানীরবলেন ,আঙ্গনিক্তি ক্ষত্রন্ত দেবং প্রয়োজ্যং রক্তি । সদসন্ত্রাক্তরং এদপানার কিংকারং এ ৪ ॥

জাতোহহং প্লান্ত গোনকং গোনাগতজনাচ ত্ৰ কলপনেনৈ বাহং পালিত, ইক্ৰান্থ ক্লান্তি। বিন্ধলিয়েরাঃ ক্লান্তিরত । অকতাখনাং অপুণাখনাং,।.৫।

উশতীক্ষতা: ॥ ৬.॥

এই নিমিত ,লোকে জাপনাদিগকে ,(ত্রাহ্মণ জাতিকে,) ,ত্রহার ক্রন্ম , এবং জামাদিগকে (ক্রিয় জাতিকে) তাঁহার অঙ্গ বলিয়া থাকে॥ ৩॥

শতএব জানরা, (প্রাজণ ও জাত্রিয়) প্রস্পারকে ককা করি, ক্লিন্ত, য়কিও এই, রকা-আন্তান্তের আত্ম ক্তে.রোধ হন, তথাচ যিনি বৎ ও অসতের আত্মা হইয়াও নির্বিকান, দেই প্র্যোধন, হইছেই, ঝ্লেকিক ককা হয়॥ ৪॥

্ছে মহাশর । এ বিষয়ে আমার যে সকল সংশয় ছিল এক্ণে আপ্রার দর্পন সালে তৃত্বসূত্র ছিল হইয়া গেল, বে ছেছু আমি ক্রিয়, ক্লা কার্য় করিছে ইচছুক আপনি প্রীত হইয়া আমার ধর্ম কহিয়া দিলেন। প্লাভো! আমি নোভাগ্ন ক্রেন আপনার দর্শন প্রাইবান, অক্তান্ত্রেলেকে কি আপনার দর্শন পার ? আয়ার এই সোভাগ্য যে আপনার প্রাপ্তরেণু নিজ মত্তক নারা স্পর্শ করিলাম । ৫ এ

জপর, ভাগ্য বশৃত্তই আমি জাপনার জুকুশানন ও হুমুহৎ জুকুগুছ লাজ করিবাস। ক্লার জনারত কর্ণরজু বারা যে আপনার করনীর বচনাবলী সেবিত হইলু, ইহাও আমার হুমূহৎ ভারোর ক্লান ছ স ভবান্ তুহিত্দেহপরিক্লিন্টান্থনোমম। প্রোত্মহতি দীনস্য প্রাবিতং কুপরা মুনে ॥ প ॥
পিরব্রেভোতানপদোঃ অদেরং তুহিতা মম। অন্ধিছতি পতিং যুক্তং বয়ঃশীলগুণাদিভিঃ।
বদাতু ভবতঃ শীলপ্রভরূপ বয়ো গুণান্। অশুণোনারদাদেষা অ্যাসীৎ কুতনিশ্চরা ॥ ৮॥
তৎপ্রতীচ্ছ বিজ্ঞাঝ্যোষাং প্রদ্ধাপাহতাং নয়া। স্ক্রাজ্ঞনামূরপাং তে গৃহমেধির কর্মান্ত ॥ ৯॥
উদ্যত্স্য হি কামস্য প্রতিবাদো ন শহাতে। অপি নিম্ক্রিস্কুসক্ত কামরক্তম্য কিং পুনঃ ॥ ১০॥

वीधत्रवामी।

বিজ্ঞাপরতি স ভবানিতি সপ্তভি:। ত্ৰিতৃ: সেহেন পরিক্লিষ্ট আত্মা বস্ত । শ্রাবিতঃ বিজ্ঞাপিতঃ । ৭। প্রিরব্রতোতানপদো: স্বদেতি পুত্রিকাকরণ শক্ষা নিরস্তা। মম স্ব্রেতি ক্ষত্রিয়কন্যা তব যোগ্যেতি দর্শিতং ॥ ৮॥ প্রতীক্ষ সীক্র ॥ ১॥

উन्। जन चरु: श्राश्चन विषयन श्राहिवानः श्राह्मानः ॥ > ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

বয় আদাসুস্কানং তথ কথনং চ তাদৃশাং ধর্ম সাচিৰা প্রাধানোটনৰেতি ন কজাকরং ॥৮।৯॥ উন্তত্ত ধানা অমুপ্সাদিভত নিযুক্তি সক্ত কেবলং ধর্মার্থং বিষয়েশার্জ নিমিতি মনভাস্তি রহিভত ॥১০॥

शिविधनां पठ व्हेन वी।

এবঞ্চ স্থন্দনিশ্মে সর্ব্বে ক্লেনা গভা এব কিন্তেক: ক্লেনস্ত ত্র্বারো হাদি বর্ত্ত এব। তমপি তৎকুপন্ধা দ্যাখানো বিপতভীবেবোদবাট্রামীভাহে স প্রসিদ্ধান কুপানিজ্বিভার্থ:। পরিক্লিষ্ট ইভি এব কেলো মে বিবেকেনাপি নাপযাভীতি ভাব: ॥ ৭ ॥
প্রিয়ন্তভোৱানপদো: স্থাস্তি পৃত্তিকাকরণশহা নিরস্তা। মম তুহিতেতি ক্ষত্রিয়কন্যা তব যোগৈ্যবৈত্তি ভাব: ॥ ৮ । ৯ ॥
নচাহং বিশ্বকন্তপত্তী স্থাক্রন্যাং কথং স্থীক্রোমীতি বাচ্যমিত্যাহ। উদ্যত্ত স্বতঃ প্রাপ্তত বিষয়ত্ত প্রতিবাদঃ প্রভাগোনং
কামরক্তান্তি ভবান্তর্গতং কামং আইছবাহ্মিহাগছ্মতো মন্ধি কামো নাপলপনীয় ইভি ভাব: ॥ ১ « ॥

প্রভা! আপনি আমার প্রতি অশেষ প্রকারে অমুগ্রহ করিলেন, ছহিতার প্রতি স্নেহ বশত: আমার অস্তঃকরণ ক্লিফ হওয়াতে আপনাকে একটা নিবেদন করিতে বাঞ্ছা করি, দীনের প্রতি অমুগ্রহ প্রকাশ পূর্বকি শ্রেষণ করিতে আজা হউক ॥ ৭॥

হে মুনি সন্তম। এইটা আমার ছহিতা, ইনি প্রিয়ত্তত ও উত্তান পাদের ভগিনী, ইনি বয়:শীলাদি সম্পন্ন পতি অম্বেশ্য করিতেছিলেন, নারদের প্রমুখাৎ আপনার কুল, শীল, বয়স্, বিদ্যা এবং রূপ গুণের কথা শুনিয়া আপনাকেই পতিছে বরণ করিতে কুতনিশ্চয়া হইয়াছেন ॥ ৮॥

অতএব হে ছিজবর ! আপনি আমার এই কন্যাটীকে স্বীকার করুন, আমি প্রদা পূর্বক উপহার শ্রুপ ইহাকে সম্প্রদান করিতেছি। হে মুনে ! আমার এই তনয়া সর্ব্য প্রকারে আপনার অমুরপা, ইহা হইতে আপনার গ্রহাশ্রম নিবন্ধন কর্ম সকল ফুন্দর রূপে সম্পন্ন হইবে ॥ ৯ ॥

হে ধাষিবর ! যে ব্যক্তি সঙ্গত্যাগী তাহার নিকটেও যদি ভোগ্য বিষয় আপনা হইতে উপস্থিত হয়, তাহার পক্ষেও তাহা ত্যাগ করা উচিত হয় না, কামাসক্ত ব্যক্তির কথা কি ? অর্থাৎ যে ব্যক্তির বিষয়ে আগক্তি আছে তাহার পক্ষে বত: উপস্থিত বিষয় উপেক্ষা করা কোন ক্রমেই জ্লেম্ফর নহে অতএব আপনি এই ক্রাটিকে গ্রহণ করুন ॥ ১০ ॥

য উদ্যতমনাদৃত্য কীনাশমভিযাচতে। কীয়তে তদ্যশঃ ক্ষাতং মানশ্চাবজ্ঞয়া ছত: ॥ ১১ ॥ অহং ডা শূনবং বিষমু ঘাহার্থং সমুদ্যতং। অতত্তমূপকুর্বানঃ প্রতাং প্রতি গৃহান সে॥ ১২ ॥ শ্রীঞ্যিক্ষবাচ ॥

বাঢ়মুখোঢ়ুকামোহত্মপ্রস্তাচ তবাশ্বলা। আবয়োরসুরপোদাবাদ্যো বৈবাহিকোবিধি: ॥ ১০ ॥ কান: সভ্যান্নদেব তেহ্ভা: পুত্রা: দ্যান্নায় বিধে প্রতীত:।

क्षेत्रवामी।

कीनामः कृपनः। अवक्रमा पदाप्रमातन ॥ ১১ ॥

यञ्च नावित बन्नहर्गाः न উপকूर्वानः श्वदाः मग्रा पदाः । ১২ ॥

অপ্রভাচেতি মব্যের কুত্নিশ্চম্বাৎ কলৈছিং প্রতিশ্রতা নৃভবভীতার্থ:। আদাঃ প্রথম:। ততঃ পূর্বং বিবাহাভাবাৎ মুধ্য ইতি বা ॥ ২০ ॥

ভূমাৎ ভবেৎ প্রতীতঃ। গৃভামি তে সৌভগবার হত্তং ময়া পতোত্যাদি মত্তঃ প্রসিদ্ধা। স্বরাসকাইতাব প্রিয়ং বিভূষণাদি

জমগৰ্ভ:।

ष्यवश्रद्धाः चत्रकृष्ठाश्रमादनन ॥ ১১ । ১২ ॥

বাঢ়মিতি। কচেঃ প্রথমতো দানবেপি বৈবাহিকবিধেরতাৈব প্রারক্ষাদাদ। ইত্যুক্তং । ১৩।

কামঃ স জুয়াদিভাাদি অয়ভায়মর্থঃ তাদৃশীরং মাং তপত্মিনম্পি প্রার্থয়তে। তত এনাং শুল্লভকাং ক্থং ভালেয়মিতি

विवनाथठकवर्छो ।

ড জ ব্যাবহারিকীং নীতিমার য ইতি। স্থানাদ্তা প্রতিষ্ঠান্ত্রোধাল্লজ্বা প্রত্যাথ্যায় পুন: কুপণমদাতারমণি জনং তদেব কামং যাচতে কামেনৈবাচিরাদেব প্রাব্লাবতা লজ্জাপ্রতিষ্ঠরোর্জাস্যমানস্থানিতি ভাবং। মানশ্চ হতো ভবতীভার্থং। তেন পরিণামদর্শিনা বিহুবা বর্ত্তমানমণি বৈরাগ্যং স্থমনো মধ্যবর্ত্তিনা কামেনাগ্রতো প্রবিষ্ঠানমন্ত্রার প্রথমদেব দৈবাদ্যাচিত এবা-মাতেছাহনিবিজ্ঞা বিষয়োহসীকর্ত্তব্য এবেতি ধ্বনিঃ ॥ ১১॥

নত্ম মানে মধাবর্তিনং কামং দং কেন লকণেনাজাদী শুত্র জ্ঞানস্য কা কথা প্রবণমণি মে জাত্মিতাহি। অহং দেতি। তা দাং অশৃণবমিতি প্রবণমিদং ক্রিপ্রাপ্তদ্য ভগবত এব মুধাদিতাবগস্তব্যং। বস্য সাবধি প্রক্ষাত্ম উপকুর্মাণ: প্রভাং ময়া দ্বাং ॥ ১২ ॥

অপ্রভা কলৈচির প্রভিক্রতা আদ্য: ভতঃ পূর্বং বিবাহাভাবাৎ ॥ ১০ ॥

অন্যা: কামো ভ্রাৎ ভবতু। সমাগামায়োক্ত বিবাহবিধে প্রতীত:। গ্রুমি তে সৌভগবার হতঃ মরা পত্যা জরণষ্টির্ভবেথা

হে বিশ্বন্ ! উপস্থিত বিষয়ে অনাদর করিয়া যে ব্যক্তি পশ্চাৎ কুপণ সন্নিধানে যাচ্ঞা করে, তাহার যদি স্থবিস্তীর্ণ যশঃ থাকে তাহাও ক্ষু হয় এবং অবজ্ঞা দ্বারা মানও বিনফ হইয়াযায়॥ ১১॥

হে ৰিজ্ঞেষ্ঠ। আমি শুনিলাম আপনি বিবাহ করিবার নিমিত্ত উদ্যত হইয়াছেন তাহাতেই এই কন্যার পাশি গ্রহণ করাইতে আগ্রহ করিতেছি, আপনি ত্রক্ষানারী বটেন, কিন্তু আপনার ত্রক্ষার্য্য দাবধিক, অত্তর্ব ত্রত সমাপন পূর্বকে এই মন্দ্রো কন্যা প্রতিগ্রহ কর্মন ॥ ১২ ॥

কর্দম কহিলেন ভালই হইল আমিও বিবাহ করিতে বাসনা করিয়াছি, ভোমারও এই কন্যা আদত্তা আহৈন এবং ইনি আমাকে পতিছে বরণ করিবার নিমিত্ত ক্বত নিশ্চয়া হওয়াতে তুমি অন্য কোন ব্যক্তিকে সম্প্রদান করিতেও স্বীকার কর নাই, ইহাতে এই প্রথম বৈবাহিক বিধি আমাদের উভরেরই সমুদ্ধপ হইবে ॥ ১০ ॥

অভএব হে নরদেব ৷ বিবাহ বিধিতে যে সকল মন্ত্র প্রসিদ্ধ আছে ভাহা আপনার এই পুঞীর

ক এব তে ভন্তাং নাডিটেরত ছবৈষ কান্ডা কিল তামিব ভিনা । ১৪ । বাং ছদ্যান্তি কানিতি শৈভিং বিজ্ঞান কন্ত্ৰিমানীং। বিখাবহানাগতৎ স্বাহিমানাহিলোকা সম্মোহ বিষ্চুচেতাঃ ॥ ১৫ ॥ তাং প্রার্থীং লাস্মালকামসমেষিত জ্ঞানিস্বদৃত্তাং। বংসাং মনোক্তপদঃ স্বানার স্বেমানুমনোত সুধোহভিয়াতাং ন ১৬ ॥

विषदंचामी।

CHIBIT I SE

বাং বিলোক্য নাগতৎ সংখাহেন বিমৃতং বাজ্ক চেতোৰসা কণ্ডামন্তি ভাগেশৈতা বসাংলা ১৫ ।
কলননিং নিন্দিং ভূববভূতাং অসেধিতে শিল্পিন করনৌ বৈতিষ্ক দুষ্ঠাং উট্টুম্পাৰোগ্যাং। উচ্চপদঃ উত্তানশাদস্য। প্ৰতিৰাতাং
প্ৰয়ং প্ৰাপ্তাং । ১৬ ।

क्रमममर्छः ।

বক্ষাতেচ। পিতৃভাং প্ৰস্থিত ইত্যাদিভি:। শ্ৰিমং জগল্পীং"। ১৪'। যামিত্যাদি যুগ্মকং উত্ৰোৱপি কামাদূহিত চিত্তহেন সইৰ্কঃ প্ৰতীন্নমানম্বাং ন লক্ষাকৈয়ং বিশ্বৈতিস্য তমা বিরক্ষাগতমাং উচ্চপদ ইত্যক্তং । ১৫ । ১৬ ।

बिवित्रनागहकावडी ।

रेजानि मजः अनिकः। अत्रः कृतनत्माजाः । ১৪ ।

किंगजी निन ' প্রিথমিতি ব্যক্তি বৈকাল ছাইলে তানাং সৌন্ধী নালা গালিকং ' নিক্পম মুক্তা বিভাবিকং প্রভাবৰণ্যাহ যা নিজ ক্রিয়া নিক্তি ক্রিয়া ক্রি

প্রতি প্রয়োগ করা হউক। মহারাজ! আপনার এই তনয়ার প্রতি সামার অনুরাগ এই বি না এ বিষয়ে কোন চিন্তা করিবেন না, ইহাঁর অঙ্গকান্তি দারা ভূষণাদিরও শোভা সংস্কৃত্তা হয়, সক্তঞ্ব ইহাঁকে কেনা আদর করিবে ?॥ ১৪॥

মহারাজ । একদা তোমার এই কন্যা হর্মাপুঠে আরোহণ পূর্বক করুক লইরা ক্রীড়া ক্রান্তেছি-লেন, তথন জীড়নক কলুকৈই ইহাঁর নেত্র সংলগ্ন ছিল, জীড়ার্থ ইতন্ততঃ গ্রাব্যানা হুঞ্যাতে ইহাঁর নূপুর শব্যায়মান হওয়ায় চরণের অভিশন্ন শোভা হইয়াছিল। বিশাবস্থ প্রথম ইহাঁকে এই প্রফার অব-লোকন করিবা বাত্র সংলাহে ব্যাক্ল চিত হইয়া আপনার বিমান ছইতে প্রভিনা বিশ্বাছিল ১-১৫-৪

অতএব ইনি ল্যানাল্লাম অপ্নিং স্ত্রীগণের ভূষণ রূপা, ক্ষলার চরণ সেক্ষ ব্যক্তীক কর্মান লাভ হইতে পারে না, অপন তুমি আদিরাজ মতু, ইনি তোমার কন্যা এবং উত্থানপালের ক্রিণিনী, ক্ষাং আগমন ক্রিয়া-প্রার্থনা-ক্রিতেছেন, ইইগন প্রার্থনায় কে সম্মত না ছাইবে ?:॥১৯৬৪। चर्षा कविता नगरतन नाथीः वानरक्षा विकृतानाम्यतास्य ।
चर्का धर्माम् भातमदः अमृशान् अक्ररक्षाकान् वहमरकश्विदिः व्यान् ॥ २० ॥
मरका कवित्रमिनः विकितः नः व्यानारक व्याक वाविकिरक ।
क्षांभकीनाः भक्तित्व मक्यः भन्नः क्षांभार क्षांमनसः ॥ २৮ ॥
क्षिरेमरखन्न केवा ॥
न উश्चर्यवित्रस्वावकार्य चानीककृष्कीनन्नविक्ताकः ।

अगतपानी ।

ভালব্যে স্বীক্রিব্যে। বাবদ্পত্যোৎপত্তি স্বাবন্ধার্ত্যং ভতঃ পরং সর্যাস ইতি ভাষাবদ্ধঃ সমরঃ তমেবার বাববাদ্ধনে।
মুমান চেলো গর্ডা বিভ্যাৎ। বহা মুমান্থনো দেহাচ্চ্যুতং তেলোবীর্যাং বিভ্যানিতি। স্বতঃপরং পারমহংস্যং জ্ঞানং ত্মিন্
মুম্যান্ শুক্রেন বিষ্কুনা সাক্ষাৎ প্রকর্বেণাক্ষান্ স্মবিহিংলান্ হিংসারহিতান্ শ্রাণীন্ বহু বধা তবতি এবমস্টেরাল্ডে । ১৭ ।

নমু তব পিতৃ: প্রজাপতেরাজা স্টাবের ন সংস্থাবে ওজার যত ইতি সংস্থাপতে চ সরং বাস্ততি। বাবেতি এবার্থে রণমরা-পাকরণানস্তরং সংস্থাস এব মাদৃশানাং ভগবডোক্স ইত্যর্থ: ৪ ১৮ ৪

হে উত্তাধৰন্ সূল্তে মুনে মুখেন প্ৰলোভ্যতেশ বৰা মুখেন প্ৰলোভিভবান্। ১৯।

ক্ৰমসন্বৰ্ড:

আত্মনঃ পরমাত্মনঃ কপিলাথাং তেজোমে মজো বাবৰিজ্বাৎ । ১৭ । ১৮ । জন । ১৮ । আরবিজ্বাতামুভবজাত প্রসাদরূপে বিতেন বংশোভিতং শোভাবিশেবং প্রাপ্তঃ তেন মুখেন সূন্তে। অর্থেব মহা-

अविषमाथठक वर्शे ।

সমবেনে দি বাবদপতে যাৎপতি ভাবদার্থ হৈ তেওঁ পরং সর্যাস ইতি ভাবাবদ্ধর সমস্বতন ব্যা বাবৎ মনাজনো দেহাক যুগ্ত তেলো বিভ্রাৎ ভাবভিন্তে ভলাপ সমস্ব মন তপা পেবসমাপ্তানভরং ব্রাবকাশং লগ্যে তলৈবভাগঃ। আন মনাজনো মংগ্রিরেটনেবভ দ্বেভা কপিলনেবাথ। মিভি ব্রহ্পত জেরঃ। আভোহনভরং পারমহংতেরু মুখান্ ব্যা পারমহংভাৎ আনাদিশি মুখান্ নিপরিগ্রহভঙ্কি দ্বান্ত তেলেন বিভ্না সাক্ষাৎ প্রকর্পোকান্। অবিহিংলান্ হিংসারহিভান্ বহু ব্যাসাদেব্যহ্তে নালাকে ৪ ১৭ ৪

জ্ঞার্থে প্রধাণং তর মন্ত শৃত্যাক্ষণে ভগবানেবেতাহ বত ইতি। বহা নত্ন তব পিজু: প্রজাপতে রাজ্য স্থাবের ন বৈরাগ্যে তথাই। বত্ন ইতি সংস্থাসাইক লবং বাসাতি বাবেত্যেবার্থে। প্রজাপতীনাং মংপিঞাদীনামণি পতিঃ জতঃ স্থাব পরং প্রমাণং। তস্যাক্ষৈত্র মন্ত্রা পালনীয়া নজু পিজুরেবেডি ভাবঃ । ১৮ ।

८६ छेअथवितिछि । पर यथा दीता मुद्दाव अखा । वर्षा तार्शि वाखिमछाडमवदर्मामिछ छातः । छङक प्रवह्णाः

, কিন্তু আমি একটা প্রতিজ্ঞা করিতেছি যাবৎ সন্তানোৎপত্তি হয় তাবৎ গৃহধর্মে প্রবৃত্ত থাকিব অতএব যত দিন পর্যান্ত ইনি জ্ঞাপনার এবং আমার তেজঃ ধারণ করিবেন অর্থাৎ যাবৎ গর্ত্তবি ইইবেন তাবৎ ইইার সহিত বাস করিব, তাহার পর ভগবান বিষ্ণু, জ্ঞান বিবরে মুখ্য শম দমাদি যে সকল ধর্ম প্রবৃত্ত ক্রপে কহিয়াছেন জাহাই অনুঠের রূপে গণ্য করিব ৷ ১৭ ৷

হে রাজন্। এই বিচিত্রে বিশ্ব বাঁহা হইতে উৎপদ্ধ হইয়াছে এবং বাঁহাতে অবস্থিত আছে ও পেৰে বাঁহাতে লীন হইবে প্রজাপতি বিগের পতি সেই ভগৰান্ অনন্তই এ বিবদ্ধে আমার প্রমাণ অর্থাৎ ডগনান্ আমাকে পিত্রোধির অগ্রেয় সোচন পূর্বাক সন্ধান ধর্ম অবসন্থন করিতেই অসুমতি করিয়াছেন ১১৮২ বৈত্রেয় কহিলেন হে উএধধন্ বিছুর। কর্মন ঋষি এতাবন্মাত্রে বলিয়া ভগবান্ পদ্মনাভকে মনো-

ধিরোপগৃহন্ আতিশোভিতেন মুগেন চেডো পুরুতে দেবছুত্যাঃ ॥ ১৯ ॥
নোহ্যুজ্ঞাছা ব্যবসিতং মহিষ্যা ছহিছুঃ আতু টা । তথৈ শুপ্রগাঢ়ার দদৌ ছ্লাই প্রহিছা ॥ ২০
শতরপা মহারাজী পারিবর্হায়হাধনান্। দম্পত্তাঃ পর্যালাহ প্রজ্ঞা ছ্লানাসঃ পরিচ্ছণান্॥ ২১
প্রতাং ছহিতরং স্ফাট্ সদৃক্ষায় গতব্যপ্রঃ। উপগুক্ত বাহ্ছ্যাসেনহক্ঠোমাধিভাশয়ঃ ॥ ২২ ॥
অশকু বংস্তবিরহং মুকন্ বাম্পকলাং মুহঃ। আসিকদের বহসেতি নেত্রোলৈছ্ হিছুঃ শিধাঃ।
আমন্ত্রা তং মুনিবরমসুজ্ঞাতঃ সহামুগঃ। প্রক্রেরেরধনাক্ষ্পেভার্যঃ অপুরং নৃপঃ ॥ ২০ ॥

शिवयां मी।

স মহ: অন্থ অনন্তরং মহিব্যাশ্চ ব্যবসিতং নিশ্চয়ং জ্ঞাখা ॥ ২০ ॥
পারিবহান বিবাহকালে প্রদেষান্ ভূবা ভূবণানিচ বাসাংসিচ পরিচ্ছদান্ গৃহোপকরণানিচ ॥ ২১ ॥
প্রায়ে প্রদেষার সদৃশার গভা ব্যথা চিন্তা বসা। ঔৎকঠোন উন্মধিতঃ ক্লুভিতঃ আশারো বস্য ॥ ২২ ॥
ভিস্যা বিরহং সোচুং হে অন্ব হে বংসে ইতি ক্রবন্ সন্ধিরার্হঃ। শিধাঃ কেশানাসিঞ্ছ ॥ ২৩ ॥

ক্ৰেসন্দৰ্ভঃ ।

ভাগবতো মৎপতিদ্বোগা ইতি লোভং চকার ।। ১৯ । ২০ । ২১ । প্রস্তামিতি মুশ্মকং ।। ২২ ।। আমস্ত্রে:তি বুশ্মকং ।। ২৩ । ২৪ । ২৫ ।।

अविश्वनाथहळ्यकों।

শ্বিত্তশোভিতেন মুখেন চেতো সুসূতে। অর্থাৎ কর্মমনা চেতজসাং সুবাং বভূব তেনচ হস্ত হস্তাভিবিরক্তে কন্তার্পিতেতি মহ শত-রূপয়োরমূতাশো নাভূদিতি ব্যক্তিত।। ১৯।।

স সমু: অমু অসম্ভর: ছহিডুদেবিহুতেম হিয়া অমাতৃণ্চ ব্যবসিভমভিপ্রার: ॥ ২০ ॥ পারিখর্ছান্ বিবাহে প্রদেরান্ মহান্তি ধনানি স্ব্যানি বেয়াং ভাননর্য্যানিভার্য: ॥ ২১ । প্রস্তাং প্রদেরাং হে বংসে ইভি ক্রবন্ ॥ ২২ । ২০ ॥

মধ্যে স্মরণ করত তৃষ্ণীস্তূত হইয়া রহিলেন। কিন্তু তাঁহার সহাস্য বদন দেবহুতির চিত্তে লোভ জন্মী-ইতে লাগিল ॥ ১৯ ॥

অন্তর মনু আপনার মহিনী এবং তন্যার অভিপ্রায় অবগত ইইয়া প্রফুল্ল চিত্তি বছওণালয়ত সেই মুনিবরকে অনুরূপা কন্যা সম্প্রদান করিলেন ॥ ২০ ॥

বিবাহ সম্পন্ন হইলে মহারাজী শতরূপা প্রতিমনে ভূরি ভূরি মহাবৃদ্য বসন, ভূষণ ও বিবিধ গুরুপেকরণ সকল ক্র্যা আমাতাকে যৌতৃক দিলেন ॥ ২১ ॥

যোগাপাতে ক্রা সম্প্রদান করিয়া সমু নিশ্চিত হইলেন, কিন্তু তনগার প্রতি উতিনির সৈই প্রযুক্ত তাহার মনে, অন্য প্রকার উৎক্রা জন্মিল, তাহাতেই চিত কুক হইতে লাগিল, অতথিব স্থৈতি ভূকী দ্যা প্রসারণ পূর্বক তনগাকে সালিকন করিলেন। ২২ ।

এর: চাঁহার বিরহ নহ করিছে অশক্ত হইরা "নাতঃ, বংগ" এই রূপ বলিতে বৈলিতে, বার্থার অঞ্চ বিমোচন প্র্বৃত্ত ভাঁহার কেশ আন্ত করিছে লাখিলেন। অনন্তর্ম দুনিবর কর্মনতে সভাবণ করিছা তাঁহার নিক্ট বিদার প্রহণ প্রক ভার্যার সহিত রখে আমোহণ করিলেন এবং ভ্তাপণ সলে লইরা আপনার পুরে প্রায়ান করিলেন। ২০॥

উভরোখ বিক্ল্যারা: महत्रकाः ছরোধনো: । असेगाम्भश्रकानाः भरणावावाममण्याः ॥ २८ ॥ তমারাস্তমভিপ্রেজ ব্রহ্মাবর্তী । অপতন্ মত্র রোমানি যজ্ঞসালে বিধৃত্বত: ॥ २৬ ॥ वर्षा कोणान्छ वर्षाम् भर्मा अस्ति । अप्रति । अप

. अवस्यामी ।

প্ৰিকুল্ছিতায়া উভরো: হ্রোধসো: শোভনতট্রো: ॥ ২৪ ॥

अभित्यका खाषा वकावकार तमार अवाः निकः खेकाकम्: । २६ ।

কোৎসৌ ব্রহ্মাবর্ত ইত্যপেক্ষারামাহ। বত্র বর্ষিয়তী নাম প্রীতি। সাপি কুত্র যত্র বজাত বক্সবরাহত রোমাণি ভূপতলিতি। মতেতি সর্বত্র সম্বধ্যতে । ২৬ ।

वर्डियाणीनाम निक्षाक्तिः क्वन् व्यापनाद्यसमा देशक्षेत्राह बाखार । कूमाः कामान्तामन् मधर निखाः हतिकः वर्ति। दर्गाः । बळ्यान् ताक्रणानीन् शत्राख्यः नीषा बळार विक्रूर । २९॥

ি যত ইতি যতায়ৰণ ভূবং স্থানং লভ্ৰেতি ভূণ্প্ৰভাষাস্তং। লভ্ৰান্সলিভাৰ্থ:। যভো লভ্ৰান্তং যজ্ঞপুক্ষমিতি বা স্বৰ্গা-দলি ভূমি: শ্ৰেষ্ঠা তথাশি তৎ স্থানং শ্ৰেষ্ঠমিজাক্তং ভৰতি ॥ ২৮ ॥

ক্ৰ্যসম্পৰ্য:।

ক্ৰকাশা ইভি তএৰ ভক্ৰপা এৰ ॥ ২৭। ২৮। ২৯॥

बिविधनाध5 कवळी ।

খৰিকুলাবা খৰীণাং স্বিত: ধ্বিকুলহিতারা বা। উভবো: সুরোধ্সো: শোভনতট্রো: ॥ ২৪ ॥ প্রেচ্ছানীয়ু: প্রত্যজ্ঞানু: ॥ ২৪ ॥ কোহসৌ অক্ষাবর্ত ইত্যপেকারামাহ। ব্যুবহিল্লতী নাম পুরী। যুগ্রচ পুর্গাং ব্যুবরাহ্স্য । ২৬ ॥ বহিল্লতী নাম নিব্যুক্ত রোমাণ্যের কুশাজ্ঞে আস্বিত্যবল্ল: ॥ ২৭ ॥

কুশকাশগরমিতি বহিঃ শংকনোভয়োজেঃ ভ্বং ভ্রুণং স্থানং লক্তেতি তৃণ্প্রভাষাত্তং ॥ ২৮ ॥

ঋষিনদী সরস্ভীর উভয় তটে প্রশান্ত মুনিগণের আশ্রম ছিল, মসু সে সকলের শোভা সম্পত্তি দেখিতে দেখিতে আসিতে লাগিলেন, তাহাতে ভাঁহার চিত্ত প্রম পরিভ্পত হইল ॥ ২৪ ॥

শনস্তর পুরদ্ধিখানে আদিয়া উপস্থিত হইলে উহার প্রফাগণ সমাদ পাইল আমাদের অধিপতি প্রত্যাগমন করিতেছেন, অতএব তাহার। রাজদর্শন মানদে হুইচিত হইয়া বিবিধ গীত, বাদ্য ও স্তব করিতে করিতে আপনাদের দেশ প্রকাবর্ত্ত, হইডে নির্গমন পুরংশর অগ্রসর হইয়া আনিতে আদিল ॥ ২৫

বিষ্টুর ! কোন দেশ একাবর্ত তাহার পরিচয় শুনিবে ? যে স্থানে সর্ব্ধ সম্পতি সমন্বিতা বহিমতী নামে পুরী আছে তাহাই একাবিত দেশ ! এ পুরীও যদি জানিতে না পার তাহারও পরিচয় দি শুন, মেথানে ব্যাস্থ্য ব্রাছ আপুনার অল্ল কম্পিত ক্রাতে তাঁহার শরীর হইতে লোম সকল পতিত ইয়াছিল, সেই স্থানের নাম বহিমতী পুরী ॥ ২৬ ॥

বিত্র। ঐ পুরীতে হরিত্র কুন্ এবং কাশ সর্বদা পাওরা বাম, ভদারা সভত ই ঋষিপণ যজবিস্কারি সাক্ষানিতিব পরাভূব করিয়া ভ্রথার বজাসুঠান পূর্বার মন্দ্রের বিষ্ণুর আরাধনা করিয়া থাকের ॥ ২৭ ॥ রাজবি মুকুও ভূমওল রূপ আন প্রায়ে হইয়া ঐ স্থানে কুল ও কাল আন্তরণ পূর্বাক বজ্ঞপুরুষের অর্জনা করিয়াছিলেন, অতএব ঐ স্থান অভিনয় শ্রেষ্ঠ ॥ ২৮ ॥

বর্হিন্নতীং নাম বিভূর্বাং নিবিশ্য সমাবসং। তক্ষাং প্রবিষ্টো ভবনং ভাপত্তর বিনাশনং ॥ ২৯॥
সভার্যাঃ সপ্রজঃ কামান্ বৃভূত্তেখনাবিরোধভঃ। সংগীরমানসংকীর্তিঃ সন্ত্রীভিঃ হুরগারকৈঃ।
প্রভূত্তেম্বস্থুবৃদ্ধেন হুলা শুণুন হুরেঃ কথাঃ॥ ৩০॥

নিফাতং যোগমারাহ মূনিং সারস্কৃবং মনুং। যদা জংশরিতৃং ভোগানশেকু র্জগবৎপরং ॥ ৩১ ॥ অধাতধামা স্তদ্যাদন্ধামা: সাস্ত্রর ধাপনা:। শৃণুভোধ্যারতো বিফো: কুর্বতো ক্রবত: ক্থা:॥৩২

विश्वचामी।

প্ৰভাগৰ ৰাং বহি মতীং নাম প্ৰীং সমাবসং প্ৰাং ৰস্যাং উৰিতঃ ভস্যাং নিৰিশ্ৰ ভবনং প্ৰবিষ্টঃ সন্ ভোগান্ বুভ্ৰে ইত্যৰয়: ॥ ২৯ ॥

অভেষাং ধর্মাদীনাং অবিরোধেন। প্রাকৃত্বের উবঃস্থ সংশীরমানা সংকীর্তি র্বস্য। তথাপি পরং হরেরের কথাঃ পৃণুন্ ভোগান্
বুজুলে । ৩০ ।

বোগনারাত্র ঐজিকভোগ রচনাত্র বং যতঃ আত্রংশদ্বিতৃং ঈশদ্পি ত্রংশদ্বিতৃং অভিভবিতৃং ।। ৩১ ।।

শ্বতঃ যাতঃ বামো বদ্য প্ৰস্যাৱদ্য তলাওসারং ভবতি শতোহনাদণি প্ৰসারং যাতবামমূচ্যতে। অ্বতিহামা আগ্তসারা শাসন্ স্বাত্তরং তদীরং মুবস্তরং নরভি বে বামা কালাব্যবাঃ। কুর্বতঃ স্বাক্তয়প্রিব্যুতঃ ।। ১২।।

क्रियमसर्घः।

সভার্যা ইতি সার্দ্ধকং ॥ ৩• ॥

নিফাতং ইতি ব্যাকং। অবাতবামা ন জীর। রখা নাগকীণা ইতার্থ:। অভজাতা ইতি বা জীর ক পরিভ্তক বাতবামমিদং বর্মিতামর:। শুণ্ত ইত্যাদিকং বথাক্রমমেৰ ক্লেরং। খ্যারতত্তবৈশিট্যেন শ্বতঃ। কুর্বতত্তং কথা গ্রহান্ রচয়তঃ ক্রমভত্তা- ল্পানিভঃ। ৩১। ৩২। ৩২।

विषमापठकवर्ती।

প্ৰস্ততমাহ ৰাং সমাৰসৎ বস্যাং পূৰ্কমূবিভন্তস্যাং প্ৰথমং নিবিশ্ব শীঘং ক্ষবনং ॥ ২৯॥

অস্তুসা ধর্মসাবিরোধেন প্রজ্বের্ প্রজ্বাহস্থ প্রজ্বে আরেজোতার্থঃ। কথলৈর স্বাধুর্বোগান্থবিদ্ধেন বনীক্তেন জ্লা।। ০০।। বোগালটালবোগান্তাসানের মারাক্সানার্ নারাজ্ঞানের নিকাতং পারগং তথাসো বিষয়ান্ ভোজুং জানাতি বথা সমাগ্র্কা অপি বিষয়া ব্যোগালিকস্থপাদরিজুং ন শকুষ্থীতার্থঃ। তলা জন্য বাদা অবাত বাদা অবার্থাঃ। জীর্ণা পরিজ্কক বাতবামনিদং হরমিতামরঃ। কীলুশাঃ স্বাস্ত্রং স্বীরং মর্ভরং বাণরভীতি তে কুর্বভঃ স্বাটকা দুক্তিপ্রাক্তাবারণেশোপনিবন্ধতঃ।। ০১। ০২।।

সে বাহা হউক স্বায়স্ত্ৰ যে বৰ্ষিয়তী পুরীতে বাদ করিতেন তথায় প্রত্যাগত হইয়া আধ্যান্মিকাদি তাপত্রে নাশক আপন ভবনে প্রবেশ করিলেন ॥ ২৯ ॥

এবং পুত্র কলত্র সমন্বিত হইয়া ধর্মাদির অবিরোধে বিবিধ ভোগ করিতে প্রবৃত হইলেন। প্রত্যাহ প্রত্যাহ সমরে সন্ত্রীক প্রগায়কগণ তাঁহার সংকীর্তি গান করিত, নিদ্রোভঙ্গ হইলে তিনি হরিকধার বন্ধীকৃত চিত্ত হইয়া ভগবানের ভণাত্রাদই প্রবণ করিতেন অর্থাৎ সর্বাদা ভগবৎপরায়ণ হইয়াই বিষয়াদি ভোগ করিতেন ॥ ৩০ ॥

আদিরাজ মতু এই রূপে ভগবানের আশ্রিত হইয়া ঐহিক ভোগ রচনায় অবহিত হওরাতে ভোগ সকল তাঁহাকে অত্যন্ত অভিভব করিতে পারিল না ॥ ৩১॥

অতএব কালের যে সকল অবরব কণমূহুর্তাদি তাঁহার আপনার মরস্তর পূর্ণ করিতেহিল, তাহাদের সার বিগত হইল না। ফলতঃ তিনি সর্বান ভগবৎ কথা প্রবণ, ওগবানের ধ্যান এবং আপনার বাক্য ঘারা ভগবৎ কথা রচনা করিতেন, ইহাতে তাঁহার সমর র্থা যাণিত হর নাই অযাত্যামই হইরাছিল ॥৩২ न धवः वास्त्रः निष्ठ वृत्रानाद्यकमश्रिक्तः । वाद्यापवश्यमहत्त्रन भित्रकृष्ठगण्डिस्तः ॥ ०० ॥ भाजीता माममा विका देवज्ञादमं देव ॥ बाजूबाः । एकोजिकान्त कवः दक्षेत्रां वाद्यज्ञम् ॥ १८॥ याः भृत्का वृत्तिकः श्रीष्ट वर्षाभागाविधाम् संस्तृत् । भृगाः वर्षाध्यमानाकं मर्थ्वपृष्ठ दिस्तः मा ॥ ०० ॥ धक्रद्रक भाविज्ञानमा महनोष्ट्रिक्षित्रकृष्ठः । वर्षिकः वर्षनीष्ठमा एकमहस्त्राप्ताकः भृगू ॥ ७० ॥

॥ ७ ॥ **रेडि क्रिकानस्ट महागुत्रार्थ भावनहरूकार मरिकान्नार दिनामिकार क्**रिकान क्रिकान क्रिकान

विश्वतारी ।

गतिक्कः पश्चित्रः वाधानीति जाविकानि वा दर्ने इं do ह

निवाश्वास्त्रतीका बाल्याः भक्त शक्याः (कोष्ठिकाः भीरकाकानि शक्याः देवतात विভूत s ৩৪ s

७७ स्थानाष्ट्रियम्बाह र हेखि नृशार नाथात्रश्यान् ॥ ०६ ॥

· उत्र वन्नकार (नवह्कि: क्या केन्द्रर क्रांकावर । ob ।

। • । देखि कृषीत्र पादिलाः । • ।

क्षणभूष्टः।

শারীরা নানসাশ্চাথ্যাত্মিকাঃ দিব্যা আধিবৈধিকাঃ। নাহবা ভূডাভরজাশ্চাধিডৌডিকাঃ। উওপ্রাপ্তর্গতিক বিষ্ণারাত্ম ব্যোতিকাঃ ৪ ৩৪ ৪

আতো বক্ত স্বৃতিসকরোৎ তদশাবিকারাস্থারেশ ক্রমশোর্জগবন্তকৌ তান্ প্রবেশারিত্যিক্টরেবতি ক্রের্মিত্যাই। য ইতি। মন্ত্ তানৃশক্তেকানেবাস্থগরাত্ত। কিং তবিস্থৈরিত্যাশকাহে। সর্বাস্থৃতবিতঃ সদেতি ॥ ৩৫ ॥ ততাপত্যানাং দেবহুত্যাদীনামুদরং ॥ ৩৬ ॥ ৩॥ ইতি শ্রীমতাগবতে তৃতীয়ক্তমে শ্রীকাবগোধানিকত ক্রমসক্তিত বাবিংশোহধ্যারঃ সমাপ্তঃ ॥ ৩॥

विविधनाथकळक्षा ।

গভিজ্ঞাং স্বার্জনাদি গদাদি বা তাপত্রন্থং বা ॥ ৩৩ ॥

ত্ত্ৰ ভক্তিৰেৰ কাৰণমিত্যাহ শারীরা ইতি বিবা আন্তৰীক্ষাঃ মাহ্ৰাঃ শত্তপ্ৰক্ষাঃ । কৌডিকাঃ শীক্ষাকোৰি প্ৰক্ৰাঃ বৈবাসে হে বিছব ৪ ৩৪ । ৩৫ । উদৰং প্ৰভাবং ৪ ৩৬ ৪

विक नावार्यमिन्छाः वृद्धिन्ताः ककारम्कनाः । वार्षिःत्मध्यः कृष्ठीवना नक्षकः नक्षकः मकाः । । ।

বংস বিচ্তা। ঐ প্রকারে খারভূব মতুর আপনার অন্তর কাল এক সগুভি গুণ বাপন করিলেন। ভগবান বাহুদেবের কথা প্রসঙ্গে সর্কাট ভাষার আসক্তি থাকাতে, ভিনি জাত্রং ক্রান্থি এই ভিন অবস্থাকে পরিভূত ক্রিনাছিলেন॥ ৩০ ।

হে ব্যাসনক্ষর। ঐ বসুকে কোন সময়ে কোন প্রকার ক্রেশে বাধা দের নাই। বংগ। পারী-রিক্ষ, সাসসিক, বৈধিক, প্রশেশত এবং পিভোফাদি প্রভব ইভাাদি বিধিধ শ্লেশ খাছে সভা, কিন্ত নে সকল ক্ষিত্রশালিক ব্যক্তির পীড়া ক্যাইতে সমর্থ হয় । ৪৪ ॥

আলিচ জ বানুত জানাভিশবোদ কৰা কি বলিব ৮ ঘুনিগৰ জাহাকে ধৰ্ম জিজালা করাতে তিনি শৰ্ম জানিম বিভাগে বিনিধ ভজাৰত কৰ্ম জবং নামৰ জাতিয় সাধানৰ ধৰ্ম জবা ধৰ্ম ও লাজম ধৰ্ম সমাকৃ জ্বাবারে ক্ষিয়াটিকেন না ৩৫ ছ

বংস। আবিয়াত সমূত্র এই অভুত ভারিত্র ভোজার নিজট বর্ণন করিলার একণে তাঁহার কভা দেব-ছুতির এভার রবি অবন কর ৪ ২০০।

101 रेडि कृष्टीरत वाविश्न । # 1

ঐমৈতেয় উবাচ ₽

পিতৃত্যাং প্রস্থিতে সাধনী পতিমিলিতকোবিদা। নিজ্যং পর্যাচরৎ প্রীত্যা ভবানীৰ ভবং প্রভুং।
বিশ্বস্থেগাত্মশোচেন গোরবেশ দমেনচ। শুক্ষাব্যা সোহদেন বাচা মধুরুলা চ ভোঃ ॥ ১॥
বিস্তৃত্য কামং দম্ভঞ্চ দেবং লোভম্বং মদং। অপ্রমন্তোদ্যতা নিজ্যং ভেক্ষানাংসমতোবরৎ ॥ ২॥
স বৈ দেবর্ষিবর্যান্তাং মানবীং সমস্ব্রতাং। দৈবাদ্যারীয়সঃ প্রভুরোশাসানাং মহাশিষঃ॥ ৩॥
কালেন স্থাসা ক্ষামাং কর্শিতাং ব্রভচর্যারা। প্রেম্গদ্যাদ্যা বাচা পীড়িতঃ কৃপ্যাব্রবীৎ ॥ ৪॥

विषयपामी।

জ্যোবিংশে তপোৰোপ নির্নিতে সর্ক্সম্পদি। বিমানে কামপে চিজা ত্যোত্তি ক্লীর্য্যতে । • । প্রতিতে গমনে ক্তে সতি । ১ ।

দস্তং কপটং অবং নিবিদ্ধাচরণং। তেজীয়াংসং অভিতেশবিনং । ২ ॥

দৈবালগরীয়সঃ দৈবাদিশি শুক্তরাৎ দৈবমপাঞ্ডবাকর্জুং সমর্থাদিতঃবঃ । ৩ ।

ব্রভচ্যায়া কর্শিভাং ত্ত্রাপি ভূরসা কালেনাতিক্ষামামিত্যবঃ । ৪ ।

. क्यान्दः।

বিপ্রস্থেপেতি যুক্সকং । ১। ২। সবৈ ইতি যুক্সকং মহাশিষ ভাদৃশ সম্ভতি পর্যাবসানাঃ । ৩। কাসাং ক্ষীণশক্তিং কর্মিতাং তনুকুত দেহাং কর্ম্ম উবাচেতি কৃচিৎ। ৪। ৫॥

श्रीविधनाशहकवर्ती।

দেবহুত্যা বরগুলা বাঞ্ডা দিব্যসম্পৃদঃ। স্ট্রারতিঃ কর্দমণ্ড অহোবিংশে নিরপ্তে । • ॥

লৈবালারীরস: দৈবাদপি ওকতরাৎ দৈবমপ্যস্তপা কর্তুং সমর্থাৎ। বরা বিক্ত্যু কামনিজ্ঞেং। ওদপি কিরৎ সময়ানগুরং দৈবাৎ প্রমেখনপ্রেরণ্বশাৎ মহাশিব: কামান্ আশাসানাং ইছেন্তীং॥ ৩॥

ক্লপর। পীড়িততভা: কার্শ্যনর্শনেন স্তপ্ত: । ৪ ।

অয়োবিংশ অধ্যায়ে তপঃ প্রভাবনিশ্তিত বিমানে কর্দম ও দেবহুতির রতিক্রীড়া॥ •॥

মুনিবর নৈত্রেয় সংখাধন পূর্বক কহিলেন, বংস বিচুর ! পিতা নাতা খনেশে প্রস্থান করিলে সাধনী দেবহুতি সাতিশয় প্রীত হইরা পতির অভিপ্রারাসুসারে নিত্য তাঁহার পরিচর্য্যা করিতে আরম্ভ করি-লেন, ভবানী যে প্রকারে ভগবান্ ভবের শুল্রাষা করিয়াছিলেন তদস্ত্রপ আগির সেবায় রত হওয়াতে কি বিখাস, কি শোচ, কি গোরব, কি ইল্রিয় দমন, কি সোহার্দ্ধ প্রদর্শন, কি হুমধুর সম্ভাষণ, কোন বিষয়েই তাঁহার ক্রেটি হইল না এ ।

তিনি কাম, কপট, বেষ, লোভ, অহন্তার এবং নিষিদ্ধাচরণ এ সকল বিষ্ণান্ধন পূর্বক নাবধান হইয়া শুলোষা ঘারা অহরহঃ কেরল সেই ভেলীয়ান পতির পরিতোম জন্মাইতে লাগিলেন।। ২.#

্বংস। মসুতন্যা দেবহুতির দৈব অপেকাও গুরুত্র পতির নিকট হয়হৎ সানীবাদ লাভের অভিলাম ছিল, এ নিমিন্ত তিনি সর্বা প্রকার শুপ্তার দারা প্রতির চিতামুবর্ত্তনে প্রকৃত্তিনা থাকিলেন।এ।

তাহার শরীর একে ব্রতাচরণ দারা কীণ হইরাছিল, তাহাতে আরার স্থাবি কলে জিলে গত হওয়াতে আরও শীর্ণ ছইল। একদা মহর্ষি কর্দম সহধর্মিইর প্রক্রিছ ছিল্লাক্ত ক্রিয়েল, প্রেয়ণীর কীণকায় অবলোকিত হওয়াতে কর্দমের অন্তঃকরণ কর্মণারস সঞ্চারে প্রক্রিছ হইল, স্তরাং ক্রেমণান্স বচনে সম্বোধন পূর্বেক তাঁহাকে কহিতে লাগিলেন। ৪। ভূকোহমদ্য তব মানবি মানদারা: শুলাবরা পরময়া পররাচ ভক্তা।
বোদেহিনাময়মতীব হুহুং স দেহো নাবেক্ষিত: সমৃচিত: ক্ষপিতুং মদর্যে এ ৪ ॥
বে মে বংশ্ম নিরতস্য তপঃ সমাধি বিদ্যাত্মবোগৰিক্ষতা ভগবং প্রসাদা:।
তানেব তে মদকুদেবনয়াবক্ষদান্ দৃষ্টিং প্রপশ্য বিতরাম্যভয়ানশোকান্ ॥ ৬ ॥
অয্যে পুনর্ভগবতো ভাব উবিজ্ঞ বিভঃশিতার্থরচনাঃ কিম্কুক্রমদ্য।

अवद्यामी।

স্থংপ্ৰিয়: মদৰ্থে কণয়িছেং নাবেকিড: নগণিত: সম্চিত; প্লাৰ্যোগি মংসেবাস্কয়। উপেকিড ইতাৰ্থ: ৫ । তপশ্চ সমাধিক বিদ্যাচ উপাসনা তাক্স ৰ আত্মব্যেগক্তিকৈগ্ৰাং ডেন বিবিতা: প্ৰাপ্তা: ভগৰৎ প্ৰানাণ দিব্যা ভোগা। ভানেব তে অবক্ষান্ হয়ণি বশীক্তান্ প্ৰণশ্চ তে দিব্যাং দৃষ্টিং বিভয়মি বন্ধা দৃষ্টা। মুক্সসি । ৬ ।

অতে প্নর্ডোগাঃ কিং ন কিম্পি অতিতৃহ্বা ইতার্থঃ। অত হেতৃঃ ভগরত উক্কম্ভ যা জঃ ততা উৰিফ্ভো বক্রীতারঃ তেন বিজ্ঞাত অর্থ্যসনা মনোর্থা বেষু। নিজধর্মেণ পাতিব্রতান তৃত্ত ইতি তথা তানু ছ্রধিগ্নান্ ছ্লাণান্ন্পা বর

ক্ষ্মশ্ৰহ

বে ম ইতি। পূর্কং অংশ:। তৎ প্রধান পূজা। তততপঃ। ততঃ সমাধিরে কাগ্রতা। ততো বিদ্যাস্তবঃ। তত আহান ভগবতা তক্ষেন যোগঃ সংযোগঃ। তৈর্কিলিভা ইতি অংশাদীনামণি তৎ পর্যেন ক্বতির্গমাতে ॥ ৬ ॥

নৃপাশাং বিক্রিয়াভি: সামাত্যপারে: 🛚 ৭ 🗷

कीविश्वनायहळ्य वर्षी

সংলহো নাবেক্ষিতঃ তিষ্ঠতু নশাসু বেত্যেবং ন গণিত ইতার্থঃ। প্রমণ্ডিব্রতারাত্তবৈতৎ যুক্তমেবেতি দেহং বিশিন্তি মনুর্গে মংসেবার্থে এব ক্ষণরিজুং ক্ষীণীকর্তুং সম্ভিতঃ ॥ ৫ ॥

তমাদেত নিজপাধিবেবা ঋণপরিশোধনার্থমনাৎ কিঞ্চন তুভাং দাতুং নোপযুক্তাতে কিন্তেভদেব পরমন্ত্র ভং বিদ্যান্ত বে ইতি সমাধিধ্যান পরিপাকঃ বিদ্যান্ত পাননা তাবেবান্ধবোগে তাভাাং বিজিতাঃ প্রাপ্তাঃ ক্ষরক্ষান্ধরাণি বশীকুতান্ স্থান্ধতো লক্ষানেবেতার্থঃ। প্রশাস্ত তে দিবাং দৃষ্টিং বিতরামি বরা দৃষ্টা। তানেবাধুনা সাক্ষাদ্কাসি। যথা মংকুপরা দৃষ্টিং প্রকর্মেণ পশ্র ক্ষর লক্ষরেতি ভাবঃ। অত স্বধর্মতেশানিশ্র ভগবদ্ধানাদিভি র্যে ভগবং প্রসাদা তেভাো ভোগমোক্ষাব্যাধিতাবেব ভাতানিভাভি প্রারেশাহ ক্ষরনালাকিতি । ৬ ৪

অন্যে শচ্যাদিভির্ণি ভূজামানাঃ স্বর্গীরা অণি ভোগা ভর শোক্যাধা এবেভাছে অন্যে ইভি কিং ন কিম্পি ভূছে। ইতার্থ:।

হে মানবি ! তুমি অতি মানদা, তোমার এই প্রকার শুশ্রাষা এবং ভক্তিতে আমি পরম পরিতৃষ্ট হইয়াছি। কি আশ্চর্য্য ! যে দেহ দেহিমাত্রের অতিশয় প্রিয়, তুমি দেই দেহকেও আমার নিমিত্ত ক্ষম করিতে উদ্যত হইয়াছ ? একি ! আমার দেবায় আদক্তি বশতঃ স্লেহাস্পদ দেহকেও উপেকা করিয়া-• ছিলে ? ॥ ৫ ॥

হে প্রিয়তমে! আমি অধর্মে রত থাকিয়া তপদ্যা, স্মাধি, উপাদনা প্রভৃতি ছারা চিত্তকে একাগ্র করত তছারা ভগবানের প্রদাদ অরপ ভয় শোক বিহীন যে যে দিব্য ভোগজয় করিয়াছি, তুমি আমার দোবা ছারা দেই সকল:ভোগ আয়ত্ত করিলে। আমি তোমাকে দিব্য চকু: প্রদান করিতেছি তুমি ভদ্যারা ঐ সমস্ভু দেখিতে পাইবের ৬ ॥

প্রিয়ে! অন্যান্ত অনেক ভোগ আছে সভা, কিন্তু সে সকল কি ভোগার ভোগাঃ । ভগবান্ উরুক্রমের জন্দির মাজে দে সকলের প্রতি মমোরথ জংশিত হর, অতএব তৎসমুদায় ভোগার উপযুক্ত নয়, তুমি দিছ হইয়াছ, আপনার পাতিব্রতা ধর্মে উপার্ভিরত দেই সকল দিব্য ভোগ উপভোগ কর। হে খুলরি!

निकानि प्रकृ विख्याबिक्यविद्यासान् नियाबदेवक् विधिवान् विक्रित्राख्यः ॥ प ॥ ध्वरः व्यवान्यवनाथिनत्यानवाम् विष्या विक्रमन्तरम् नेषावित्रानीय । मः প্রজের প্রধরবিজ্ঞার বিরেষণী জাবলোকবিলাসন্থ সিতাননাত a ৮ a . श्रीरमवङ्गिक्षकाठ # ताकः वछ विजयदेवजनद्वाय द्यानमात्राविदन यन्नि विद्धा खब्देवित खर्कः ।

क्षेत्रवामी ।

ৰিতি বা বিক্রিয়া স্তর্ত্তাগবিক্তর: ডাভি: । १ ।

व्यविम द्यानवादाष्ठ विशान्त उद्यविभागमा कार्च विष्यपर मिनूनर अवर क्रवांगर अखिमारवक्ता नेवांवि मिनित्वा बाला । मध्य-व्यवश विनवा व्यव द्वा कांचार विकास अस्तिन क्या शिता । जैवबीका महिल्का दिनम्बनिक्यासनर वजाः गा जाए जनेति १४ ।

नरकि वर्षे विषयुप विकास है दर कर्तः पति अठर नर्सर बादर निर्दाधिक कर बहमदेवीय क्रांगायि । किन्द्र प्रता पत्री नमस्त्री-২ভিৰিতঃ স ভাৰত্বাং। সক্ষতি গৰ্জ সম্ভৰ মাত্ৰ পৰ্যান্ত ইণ্ডাৰ্থঃ। বিদ্যালগর্মীসি শ্রেছে ভর্তমি হেডুড়তে শ্রীণাং প্রসাবো গুণো প্রমাস পার্টে সরীর্মাস পভা) সভি সভীনাং বভা ভবপ্রসংখা ভববিস্তারো ভবতি। অভঃ পুরোৎপত্তা

क्षममन्द्रः।

ध्विष्ठाख रुनिक्टेमार जेरिक्शिश विश्वितः । ৮ । भक्तक देखारनन व्याखाः महरनाड्यरमाध्यक्षाः सञ्चार बाह्यकि । अही देशी छि । अ ।

विविधापडळवणी ।

निव्यस्त्रं न नाष्ट्रित्या इक्नानान् नृत्नावः मुननद्वी ठारमिषि वा विक्रियाचा विक्र देखिनयान् इस छानिकार्यः । १ अ

বোগমায়া খোগোখবিতৃত্ব: বিল্যা উপাসনাল্ড ভাত্ন্ত বিচক্ষণং মন্তর্জা মুৎপান্তলীক্ষীক্ষোগ্রোক্ষন্থেলে মন্তং নদান্তি नरेपिरिकीविकि मनति विमुणकी गःश्राद्यादा दिमवः व्यवदः त्थापवित्यकार्यय विक्षानः व्याकाकथा वासी कर्कमः श्राकि शक्की यां गीयमा । विकासपाणि तामना मक्तर । विकासिकार्का विकास विकास निवास निवास कार्या ना बाह नामने विकास विकास विकास व्यर्थिनात्रा त्रमाणामचार छणा (वरहूरछरम्भाखनाव्यमा पूक्षेत्रनिचार बाद्यमिणापि भवावत्रमा त्रूर्थम चक्क्ष्मप्रचार छवाइनार्थर नकारनिष्यक्रियनरमाक्त्यन मूथककात । एव बाबाबार्त्नो निमद्यनेनत्रात्वन नेन्नवनिकात क्या वर्षा प्राव्यक्रियानि अनावतः न्नडेम्ठामानः रकृतः मूर्यनज् ना जुकीरम्य छन्। छन्नादिलार्थः । ৮।

१९वद्धकिम्बारकि दगरविष्टरमञ्जि (११४) । एर विषयुव जामागराई व्यक्तर पवि वाक्रर निकारव क्षेत्ररामवादेवित क्षेत्रमादमाव विश्व बटक कार मबरबाकाशांति के कः म कृताच मङ्गविकि मङ्गलाक्यकारकारकारकारकार विकार । वादाकारीयानि व्यक्ति सरकारी रहक् कृटण मजीमार श्रीनार अनः थम् अमरवार्भरजार्भिकत्त्रय यमजायात्रकात्रविकि श्रीवृ निरेमरविक जादः। निर्विमर्गमार्ट्य

ঐ সকল ভোগ মানবদিগের অতি ছপ্রাণির "আমরা মৃণাত্ত" এই রূপ বিজিয়া অর্থাৎ এই প্রা**ক্ষার হ**য জাগ্য বিকৃতি তদারাও ঐ সকল জোগ ভোগ্য হইছে পারে না ৰ ৭:৪

महर्षि कर्मम अधिन योश मात्रा अवः देशाननात्र छविशुन हिलान जिनि अहे सामास निक्छ नानिल पॅशिएक अन्दर्शाकन कतियाँ ए स्टूडि निन्दिक्क हरेरमत अन्दर जन्म। अकान मुत्रामय पानिय थि पृष्टिभांक कतित्वन, जाराटक जारात्र वरदनत गाविभन्न ट्यांका स्वेत । भारत वृत्वित्व मरधायम क्षिया निवयं ७ क्षाप्य वर्णकः भवन्त्र बस्ट्रिक मानिह्म्य है 🔭 🛊 🖂

(र विकालके। दर चानिन्। चानिन चाना दर्गात दर्गात के कांक्रके चित्रके विकालके का का किए। व्याननारक निष व्याद्य नामत्र नारे, किस वाननि वाकति नानिवर्ष नवर्षः स्व व्यानिवाद कतिवारक्ष যতেভাধারি সময়: সক্তদঙ্গসঙ্গো ভ্রাকারীয়সি গুণ: প্রসব: সভীনাং ॥ ৯ ॥ তত্ত্তেতিকুত্যমুপশিক্ষ যথোপদেশং যেনৈব মে কর্ষিভোছভিরিরংসয়াত্মা। সিব্রেড ভে কুত্রনোভবধর্ষিভায়া দীনন্তনীশ ভবনং সদৃশং বিচকু ॥ ১০ ॥ প্রীমৈত্তেয় উবাচ ॥

প্রিয়ায়াঃ প্রিয়মবিচ্ছন্ ক্র্মিমো যোগমাবিত:। বিমানং কামগং ক্ষত্ত তত্ত্বিবিরচীকরং ॥ ১১॥

श्रीयत्रचामी ।

ষম খণবিতারে জাতে পশ্চাৎ বছ্কাং সর্বং ভব্দ্বিভি ভাব: । ৯,।

অন্সন্ধাৰ্থক প্ৰথমমিতিকৰ্জব্যং সম্পাদরেতাহে। হে ঈশ ততাক সকে ইতিকৃত্যং সাধনং যথোপদেশং কামশাস্ত্ৰাস্থারেণ উপশিক্ষ আনীহি উপক্ররেতার্থ: বেন সাধনেন অভাক ভোকন পানাদিনা ৷ অতীব রম্ভমিছ্রা কবিছো দীনশ্চ মইমর আত্মা দেহঃ সিধোত রতিস্মর্থো ভবেৎ। ক্থকুতারাঃ তে দ্বৈৰ কৃতঃ কোভিতো যো মনোন্তৰ তেন ধবিভারাঃ তরতোহ্মুরপং ভব-নক বিচক্ষু বিভর্কর বিভারের ইতি বাবং ॥ ১০ ॥ তহি ভৎক্ষণমের আবির্কীকরং আবির্বাহ্মভূব ॥ ১১ ॥

क्रममण्डः।

তত্ত্ব সংপ্তোৎপত্তিকামনামাং ইভিক্তব্যং শিক্ষ। বংগাগদেশং ছচ্ছিকাত্ত্রপং যেন চ তৎ কর্তব্যেন হেতুনা তৎকৃত কাম-ধর্ষিতী ভবস্তা। মে মম এব আত্মা দেহঃ তপ আদিনা অণি কর্ষিতো দীনন্চাপি রিরংসয়া সিধ্যেৎ। তদেখাগাঃ ভাৎ তদনস্তর্ঞ।১০ প্রিরামা ইতি দশকং ॥ ১১ । ১২ । ১২ ॥

জীবিখনাগচক্র বছী।

খণানাং প্রসৰ ইতি সমানে২পভামিৰেণ পড়ার্খণ। এব প্রস্থরন্তে ভাভিরিতি মে ছতঃ সম্পত্যানি ভবছিতি ভাব: ॥ ১ ॥

নমু তহি প্রবিশ পর্ণশালাং তত্তে ৰাঞ্চিতং করবাণীতি চের তদীদৃশ মলিন কুশশরীরেণ নৈতাদৃশ পর্ণশালায়াং নৈতাদৃশ পরিক্ষেন সিদ্ধাদিতাহি তত্তেতি। তত্ত অলসকে ইতিক্রতাং সাধনং বংধাপদেশং বাংখারনাদিশান্ত্রোপদেশমনতিক্রয়া উপশিক্ষ।
স্বাদেব জানীহি কামপ্রক্রিয়ায়াঃ স্বৈক্যমাঝাং। আধাচি তত্তং সম্চিত বস্তু জাতং রসোদীপনাদিকমভালভোললপানাদিকঞ্চ
সাধু সম্পাদরেতার্থ:। বেন এব আত্মা দেহং অতিরিরংসয়া ক্ষিতঃ ক্ষেভিতঃ সন্ সিদ্ধাত রভিসমর্থো ভবেং মম কীদ্খাং তে
ঘবরৰ কৃতঃ স্বদ্ধাদিন। জনিতো যো মনোভব জেন ধ্বিতিয়ায়া দীনঃ সংপ্রতিজু দ্রিজ এব তত্ত্বাং হে ঈশ বোগবলেন সর্বং
প্রইং সমর্থ সদৃশং রভাক্রপং ভবনঞ্ বিচক্ষ বিচারর ॥ ১০॥

ভূকীং ছিত্রা দেবছুত্যা নেত্রেজিতেনৈৰ এতক্ষত্তকং কর্দমোছণি ভূকীং ছিত এব তদৈব তত্তৎ সর্বাং সম্পাদরসাসৈব নতু প্রভূত্তিরং দদাবিত্যাহ প্রিয়ার। ইত্যাদিনা । ১১ ৪

তাহা সম্পন্ন করুন, যাহাতে আমি গর্ত্তবিতী হইতে পারি এমত অঙ্গ সঙ্গ একবার হউক। প্রভো! সাধ্যী জীপণ জোষ্ঠ পতি লাভ করিয়া যদি পুক্র প্রস্ব করিতে পারে তাহাই তাহাদের হুমহৎ লাভ ॥৯॥

ে ঈশ। যদি স্বীকৃত পালন নিমিত অঙ্গলন করিতে মানস হয় তবে তৰিষয়ের ইতিকর্তব্যতা সম্পাদন করন অর্থাৎ কাম শাস্ত্রে যে রূপ উপদিষ্ট আছে উপকল্লিত করিতে আজ্ঞা হউক অর্থাৎ ভোজনাদিঃ আরা শরীরে বলাধান সাধন করিতে অসুমতি দিউন, তাহা হইলে আমার এই কলেবর রতি জীড়ায় সমর্থ হইবে, প্রভা। মনোভব কাম আপনার নিকট ক্ষোভ প্রাপ্ত হইয়া আমার উপরে দন্ত প্রকাশ করিতেছে, তত্ত্বত আমার মনঃরমণেছায় আকর্ষিত হওয়াতে মদীয় দেহ দীন হইরা পড়িয়াছে, অভঞ্জ আমার মনঃরমণেছায় আকর্ষিত হওয়াতে মদীয় দেহ দীন হইরা পড়িয়াছে, অভঞ্জ বলাধান করা আবশ্যক এবংঃ রতি সাধনের অসুদ্ধপ ভবনও নিরূপণ কর্ষন ॥ ১০॥

মৈত্ত্রয় করিলেন ছুনিবর করিনে, আপনার প্রেয়পীর এই সকল বাক্য প্রবণ করিয়া তাঁহার সন্তোষ জন্য যোগাবলম্বন করিলেন, মুনির যোগবলে ভৎক্ষণাথ একটা বিমান আদিয়া উপস্থিত হইল ॥ ১১ ॥ দর্বকামছ্বং দিবাং দর্বরত্বদমন্বিতং। দর্বর্দ্ধু পচয়োদর্বং মণিস্ত হৈরুপদ্ধতং ॥ ১২ ॥
দিব্যোপক্ষরণোপেতং দর্বকালম্থাবহং। পদ্ধিকাভি: পভাকাভিরিচিজ্ঞাভিরুলম্বতং ॥ ১০ ॥
অগ্ভিবিচিত্রমাল্যাভির্মঞ্জিম্বর্দ্ধি ভি:। গুকুলকে দকে শৈরেনালার হৈ বিরাজিভং ॥ ১৪ ॥
উপর্পুপরি বিহাস্ত নিলয়ের পৃথক্ পৃথক্। ক৯ গৈ: কশিপুভি: কাস্তং পর্যাম্বর্জনাদনৈঃ।
তত্ত্ব ত্বিনিক্ষিপ্ত নানাশিল্পোপশোভিতং। মহামরকত স্থলা কুইং বিক্রমবেদিভি:॥ ১৫ ॥

श्रिवचामी।

তদেব বিশিন্তি সর্বকাম্ছ্যমিতি নবভিঃ। সর্বৈশ্চ র্ছাণিভিঃ সম্বিতং সর্ব্ধীনাং সর্বসম্পদাং য উপচয় অস্ত উদর্কঃ উত্ত রোভনতি বুদ্ধিশিন্ উপস্কৃতং শোভিভং ॥ ১২॥

উপস্করণং পরিকর: পট্টিকা অরবিন্তার পট্টবন্ত বিশেষা: পতাকা বিন্তৃতা তাতি: ॥ ১০ ॥ বিচিত্রাণি মাল্যানি পূজাণি যাস্থ। মঞ্ যথা ভবতি এবং সিঞ্জ: বড়ক্র রো যাস্থ তাতি: অর্গ ভি: ॥ ১৪ ॥ উপর্যুপরি বিরচিতা গৃহেরু কশিপুভি: শ্যাভি: কান্তং কমনীয়ং। পর্যায়াদিভিশ্চ কান্তং ॥ ১৫ ॥

क्रमगमर्खः.

তুক্লকোমে অভগীতত সম্ভবত্বেন সমানেপ্যবাস্তর ভেলে ক্রেরে। তুকুলং ক্রেমমন্ত্রিরামিভামরঃ 15815৫15৬15৭15৮ট

क्षिविषमाथ हक्त बखीं।

নচ দেবমস্ব্যাদিকতমিব তদপূর্ণস্থময়মিত্যাহ সর্বেতি নচ সামান্তবিমানমিব উত্তরোভার কালকতাপচয়এব উদর্কঃ উত্তরো-ভার ফলং বল তেং ॥ ১২ ॥

উপররণং পরিকর: নচৌফাশৈত্যাদিকালিক ছংখসন্থিনিভ্যার সর্বালেতি। পত্তিকাভিঃ কুত্রপতাকাভিঃ পতাকাভি-বৃহিন্তীভিঃ॥ ১৩ ট

প্রগাড়ির ডিপ্রেটির র্বাপান নীপরাভিঃ বিচিত্রানি রক্তিশী তাদিবর্ণানি মালাাগুডরান্তরা প্রোতানি বাহু ভাঙিঃ। ত্ত্তির ক্তুলাক্ষমিকোবোর পট্টবলৈ ক্লেটিমর ড্লীত ব্রতীক ক্তেনিকোনে বিদ্যালিক ক্লেটিমর ড্লীত ব্রতীক ক্লেটিমর ড্লীত ব্রতীক ক্লেটিমর ড্লীত ব্রতীক ক্লেটিমর ডিলা বিদ্যালিক ক্লেটিমের ডিলা বিদ্যালিক কলেটিমের ডিলা বি

कमिन्छिः भवार्षिः । ১৫ ।

সেই দিব্য বিমান থানি সকল কামনার দোহনকারী, ভাহা বিবিধ রত্ম সমন্ত্রিত জবং ভন্মধ্যে সমন্ত সম্পত্তির উপচয় উত্তরোত্তর বৃদ্ধিশীল হইতে ছিল, এবং তাহা মণিমর ভাভে শোভিভ ছিল । ১২ ॥

অপর তাহার মধ্যে বহু প্রকার সজ্জায় সঙ্কলিত ইহয়াছিল এবং শক্তিকা নাসে ক্ষর পারিসর সন্ত্র বিশেষ তথা বিচিত্র পতাকাদি ধারা তাহার অলঙ্কার ব্রী প্রকাশ শাইভেছিল, অন্তএব দর্শন করিবা মাত্র বোধ হইল ইহা সকল কালেই ত্বধ বিভারে করিবে ॥ ১৩॥

অপিচ সেই বিমান মধ্যে বছবিধ বিচিত্র মাল্য এবং পুলা ককল সঞ্চিত্ত ছিল, বে সকলের লোরভে অলিকুল আকুল হইয়া ইতন্ততঃ অমণ করত মনোহর ধানি করিতে লাগিল, অপর ভাহার সকল অংশই ছুকুল, কৌম, কোলেয় প্রভৃতি বসনে আন্তুত ছিল ৷ ১৪ ৷৷

বিজ্য । সেই বিমানের উপর্পারি ভাষে বে সমস্ত গৃহ নির্মিত ছিল লে লকলের মধ্যে উত্তম উত্তম প্রাণিত বিরচিত ছিল এবং পর্যাস্থ্য , বাজন, জ্বা আগন আনে আনি হলজিত বাকাতে সকল ভানই রমনীয় বোধ হইল। অপর ভালে ভালে নানাধিধ পিল্লকর্ম এবং ছোন আনে মন্ত্ৰত মনির শ্বন, কোথাও বা মনোক্র বিক্রম বেলি দুই ইইল ॥ ১৫ ॥

षात्र विक्रमत्महन्ता चाकः वक्षकविष्ठः । भिश्वतिष्ठिम् तित्र दहनकृष्टिम् विक्रिक्ष । ३७॥ क्ष्म् भाषात्र विक्रमत्म वि

खिश्रवामी ।

ষার্বাবের বিক্রম রচিতা দেহলী উভুষর ভারা ভাতং লোভিতং বক্লখচিতকবাটযুক্তং। ইক্রনীলমণিমরের শিধরের প্রানালাপ্রভাবের । ১৬ ।

চকুমত ইব বে পল্লাপাত্র্যাতৈ:। বৰা চকুম্পির হৈ: পল্লাপাঠ্ঞ্যা: বিচিট্টেইব্ডাটন বিভানসমূহৈ: ॥ ১৭ ॥ ক্ষমিনানিপ হংসাদীন স্থান্স্থলাতীয়ান্মভানাটন: তত্ত তত্ত্বাধিক্ষ্পিষ্টিক্ নিক্জিত: ॥ ১৮ ॥

विराज्ञञ्चानः क्वीकृष्टारमभः। विश्वासः भवनशृहः। त्रःदिभ छेशरणात्र ज्ञानः श्रीवनः शृहाहहिः। स्रक्षितः श्रीकांत्राहिः। यर्षाशरकावः यथासूर्वभाषानः त्रत्रा मात्राविरनाहित वित्रव्यक्षनक्षित्॥ ১৯ ॥

নাতিপ্রীতেন মলিনদেহম্বাৎ পরিচারিকাভারাচ্চ । ২০ ।

क्षमन्दः।

আত্মন ইতি। বিমানস্যাপি বিভাগনমিবেত্যুৎপ্রেকামানং ॥ ১৯ ॥ মনিনে দেহাদিত্বেন ভাবালুদীপ্রেনাতিপ্রীতেন স্বয়মিতাক প্রিয়ামিতি কচিৎ ॥ ২০ ॥

बिवियमाध्यक्तवर्धी ।

বিজ্ঞমম্যা। দেহলা। ভাতং বার্ বজ্ঞকবাটবং হীরককবাটব্স্কং শিধরের সর্কোর্ম প্রাসাদচ্ড়াস্থ । ১৬ । হীরকমন্বভিত্তির অপিটত: পলুরাগাগ্রাথটেড-চক্মদিব বৈভাটন বিভানসমূহৈ: হেম্বেরটেবর্মনমাল্যেতি থাটিড: । ১৭ । ক্লিমানশি হংগাদীন স্থান স্থলাভীয়ামুক্তমালৈ তক্ত তক্ত স্থাপমধ্যে অধিকস্থ নিভবাং কৃষ্ণিতং ॥ ১৮ ॥

বিহারস্থানং ক্রীড়াপ্রণেশঃ বিশ্রামঃ শয়নগৃহঃ সংবেশঃ দল্ভোগান্তনিস্তাগৃহং। প্রাক্ষনং গৃহাবহিঃ অবিরং প্রাচীরাবহিঃ যথোপাব্যাবং বথাস্থাং আত্মনঃ ত্বস্য কর্মন্য্যাপি ইবেতি অনিশ্বিতহাৎ অভ বত্তভো নবিত্যাপদ্যতি । ১৯ ॥

नां कि श्री (करमे कि विवास क्षार श्री का का वास कि का वास कि का वास कि वास कि का वास कि का वास कि का वास कि का

আহে বিজুর ! দেই বিমানের বার সকল বিক্রেম নির্মিত হওয়াতে তাহারই বা শোভা কত ? তাহার কবার্টে ক্রেই বজু (রজু বিশেষ) ধচিত ছিল। তাহার অগ্রভাগ ইন্দ্রমীল মণিময় এবং ভাহার উপর স্বর্ণ কলস সংস্থাপিত ছিল। ১৬।

অপর সেই বিমানের বক্তময় ভিত্তি সকলে রহৎ রহৎ জ্যোতির্দায় প্যারাণ খচিত ছিল এবং বিচিত্র বিমান, হার, তথা অর্ণ তোরণ যথাস্থানে বিন্যন্ত থাকাতে দর্বা প্রকারে রমণীয় বেথে হইল ১১৭॥

অপিচ তাহাতে বছবিধ হংস পারাবত প্রভৃতি পক্ষি সকল এ রূপে চিত্রিত ছিল যে অকৃত্রিম হংলাদি জাহাদিশকৈ অবলোকন করিয়া ভছুপরি কার্যার প্রচন পূর্বক ক্রাণ জনে শব্দ করিতে লাগিল ॥ ১৮ ॥

বংকা শ্রেমিক কি বলিব সেই বিমানে জ্রীড়া ছান, শরন গৃহ, উপবেশন ছান, প্রালন এবং প্রাচী-রের বহিছে শ্রেমি ইজ্যানি নর্মে প্রকার ছুখনায়ক ছানই উত্তমরূপে নির্মিত ছিল, এমন কি! ভাষা বেধিয়ে নামানিয়েও প্রম নিশার ক্ষিত । ১৯ ।

এই প্রকার গৃহ অবলোকন করিয়াও দেবহুতির কেহ মানিস্য এবং পরিচারিকার অভাব প্রযুক্ত চিত

নিমজ্যান্মিন্ হ্রদে ভীরু বিমানমিদমারুহ। ইদং শুরুক্তং তীর্থমাশিষাং যাপকং নৃণাং ॥ ২১ ॥ সা তমুর্জু: সমাদার বচঃ কুবলয়েক্ষণা। সরজং বিজ্ঞতী বাসো বেণীস্তান্ শুম্জান্ ॥ ২২ ॥ অঙ্গঞ্চ মলপক্ষেন সংছ্মং শবলস্তনং। আবিবেশ সর্পত্যাঃ সরঃ শিবজ্ঞলাশরং ॥ ২০ ॥ সান্তঃ সরসি বেশ্মন্থাঃ শতানি দশকন্যকাঃ। সর্বাঃ কিশোরব্যসো দদশোৎপলগন্ধরঃ। তাং দৃষ্ট্যা সহসোধার প্রোচুঃ প্রাঞ্জলয়ঃ গ্রিয়ঃ। বয়ং কর্মকরী স্তভ্যং শাধি নঃ কর্বাম কিং ॥২৪॥

व्यापत्रवामी ।

অবিন্ হদে বিন্দুসরসি। আক্রেছ অধিরোহ ওক্লেন বিষ্ণুনা ক্রতং আনন্দ বিন্দুনিপাতেন বাপকং প্রাপকং ॥ ২১ ॥ সমাদার আদৃত্য সরকং মৰিনং ॥ ২২ ॥

শবলো বিবণো অনো যশ্মিন্ তথ। সরস্বত্যাঃ শিবানি জলানি আংশেরতে বন্মিন্ শিবা জলাশ্রা জলচরা বন্মিন্ ইতি বা ॥২৩ সা তত্ত্ব নিমগ্রা সভী বিশ্ববং দদর্শ। তুমাই সান্তঃসরসীতি দশক্তিঃ উৎশলগদ্ধরঃ জিবঃ প্রোচ্ঃ তব কর্মকরী পরিচারিকা বৃহং অস্থানাজ্ঞাপ্রেতি ॥ ২৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ইতি ক্লত্যংশিক্ষতি। নিমজ্জেতি যুগ্মকং। বেণীভূতান্ অমুর্জ্জানিতি কচিৎ ॥ ২১ । ২২ । ২০ ॥ সাস্ত্রিতি যুগ্মকং। কর্মক্ষী নঃশাধি। বয়ংকিংকরবামেতঃস্বয়ং । ২৪ ॥

- এ বিশ্বনাধচক্রবন্তী ।

ব্রুদে বিন্দুসরসি বাপকং প্রাণকং ॥ ২১॥ সমাদার আদৃত্য ॥ ২২ । ২৩ ॥ ভুজ্যং তব কর্মকরীঃ কিম্বর্যঃ । বহা ভুজ্যং স্বাং পরিচরিত্ং স্বমন্মান্ শাধি স্বাজ্ঞাপর ॥ ২৪ ॥

সাতিশয় প্রীত হইল না, ঋষিবর কর্দম যোগ প্রভাবে সকল প্রাণিরই মানস জানিতেন, প্রেয়সীর আশয় জানিতে পারিয়া তাঁহাকে কহিলেন ॥ ২০ ॥

হে ভীকা। এই প্রদে অবগাহন করিয়া আদিয়া এই বিমানে আরোহণ কর, ঐ সরোবর সামান্ত নহে উৎকৃষ্ট তীর্ধ, ভগবান্ বিষ্ণু ঐ তীর্থ নির্মাণ করিয়াছেন, উহা আনন্দবিন্দুপাত ছারা মানবগণের অভিল্যিত প্রদান করে ॥ ২১ ॥

পদ্মাকী দেবছুতি সানন্দ মনে ভর্তার ঐ বাক্য গ্রহণ করিলেন। তাঁহার পরিধান বসন মলিন এবং কেশ সকল সংস্কার বিরহে বেণীভূত ॥ ২২ ॥

ও শরীর মলরূপ পক্ষে আচ্ছম থাকাতে শুন্দয় পর্যন্ত বিবর্ণ হইয়াছিল। পতির আদেশমাত্রে সরশ্বতী সরে গিয়া প্রবেশ করিলেন, ঐ সরোবরের জলে পবিত্র জলচর সকল বাস করিত ॥ ২৩ ॥

অলে প্রের্থের করিয়াই দেবসুতি আশ্চর্য্য দেখিলেন, সরোবরের অভ্যন্তরন্থ গৃহ মধ্যে দশশত কথা রিছিয়াছে, ভাছাদের নকলেরই তরুণ বয়স, সকলের গাত্র হটুতেই উৎপলের গন্ধ বছির্গত হইতেছে। ঐ সকল কন্যা তাঁহাকে দেখিয়া সসজমে গাত্রোখান করিল এবং অঞ্জলি বন্ধন পূর্বক কহিতে লাগিল, আমরা আপনকার পরিচারিকা আমাদিগকে আজ্ঞা করুন, আমরা কি করিব ॥ ২৪ ॥

সানেন তাং মহার্হেণ স্নাপন্নিছা মনস্থিনীং। তুকুলে নির্দ্ধলে মৃদ্ধে দত্রসৈচ মানদাঃ ॥ ২৫ ॥
ভূষণানি পরার্দ্ধানি বরীরাংগি চামস্তি চ। অন্ধং সর্বাগুণোপেতং পানকৈবায়্তাসবং ॥ ২৬ ॥
অথাদর্শে স্বমান্ধানং অধিনং বিরন্ধান্বরং। বিরন্ধং কৃতস্বস্তায়নং কন্যান্তি বঁত্নানিতং ॥ ২৭ ॥
স্লাতং কৃতশিরঃ স্থানং সর্বাভরণভূষিতং। নিজ্ঞীবং বল্যানং কৃত্তংকাঞ্চনমূপ্রং॥ ২৮ ॥
শ্রোণ্যোরধ্যস্তায়া কাঞ্চা কাঞ্ন্যা বহুরত্বয়া। হারেণ্চ মহার্হেণ ক্রচকেন চ ভূষিতং॥ ২৯ ॥

श्रीश्रवचायी ।

७७७ मार्विन मान्यांशा देखनाविना ॥ २८ ॥

পরার্দ্ধানি উৎকৃষ্টানি ব্রীরাংদি তৎ প্রিয়াণি দীপ্তিমন্তিচ পানং পেরং অমৃতং স্বাচ্ স্থাস্বং মাদকং ॥ ২৬ ॥

আদর্শে অমাআনং দদর্শেতি শেষঃ। আত্মানং বিশিন্তি চতুর্ভিঃ ক্রতং অন্তঃরনং মদশাং যত। পুংখ্যাত্ম শব্দ সামানাধি-করণাথে ৪২৭॥

বিরক্ষমিভাত প্রশক্ষঃ স্থানং উবর্ত্ত ক্ষালিতং কুডং শিরঃ স্থানমতালো যেন। ভ্ৰিতস্থমেৰাই নিকং পদকং গ্রীবারাং বস্ত ।২৮ বছুনি রম্থানি যতাং ভরা রচকেন মঙ্গল জবেরণ কুকুমালিনা। ভত্তং বিশ্বপ্রকাশে। ক্ষতকং মঙ্গল জবের গ্রীবাভরণ দত্ত-যোৱিতি । ২৭ ॥

ক্রমণকর্মতঃ।

লানেনেডি যুগাকং। প্রাখ্যানীতি পাঠো বছতা॥ ২৫। ২৬॥ অধাৰণ ইতি চতুছং॥ ২৭॥ কুডশির: লানং তৈলাদিনা আ শির আরভা স্কাল্লানং॥ ২৮। ২৯। ৩০॥

श्रीविद्यमाथहळ्वा ।

ল্লানেন স্থানবোগাতৈলাদিনা ভূষণাদীনি পরিণাত্ং দতং। অর্পানেচ ভোক্তুং দত্ং । ২৫। ২৬ ।

স্থাত্মানং গদর্শেতি বেবং। কাশ্চিৎ পাশ্চাতাঃ প্রিরং শিরদা ন মাস্তীতি তরারণার্থমাহ। কৃত্ধারং স্থানমিতি। স্রোপ্যোঃ কোট্যোরধাত্তরা উপরি বিজ্ঞারা কাঞ্চা ক্লচকেন মক্লজবোণ। রুচকং মললজবো গ্রীবান্তরণ দক্তরারিতি বিশ্বং। স্থাক্তা স্থাক্রবা চক্ত্রেতি লাভাবেকবচনানি। প্লক্ষো মনোহরং। স্লিগ্রোহ্পাল্যে ব্য তেন পল্লাবেশ সহ স্পর্কত ইতি পল্লাবেশ্থ তেন ॥ ২৭ । ২৯ । ২৯ । ৩০ ।

এই বলিয়া' আপনারাই সান যোগ্য মহার্হ তৈলাদি লইয়া তাঁহার অঙ্গে লেপন পূর্বক সান করা-ইয়া দিল, তাহার পরে নির্মাল ছুই খানি নৃতন ছুকুল পরিধান করাইল ॥ ২৫ ॥

এবং যে সকল উত্তম উত্তম অলহারে তাঁহার প্রীতি জন্মিত এবং যাহা যাহা অতিশয় দীপ্তি যুক্ত ছিল, সে সকল আভরণে তাঁহার সর্বাঙ্গ ভৃষিত করিল। তদনন্তর সর্বে গুণ্যুক্ত ভক্ষ্য পের এবং হ্যাতু আসব আনিয়া সন্মুখে রাখিল ॥ ২৬ ॥

অনন্তর দেবছুতি তত্ত্ব আদর্শে আপনার প্রতিবিদ্যিত অঙ্গ অবলোকন করিলেন, তাহাতে তাঁহার দৃষ্টিগোচর হইল যে, গলদেশে মালা লখমান এবং নির্দ্তল বসন পরিধান, শরীরে মলামাত্র নাই, যে অঙ্গে বে রূপ মঙ্গাবহ সূবণ ধারণ করিতে হয় সে সমুদায় সন্নিবেশিত করিয়া কতক গুলি কন্যা প্রশংসা করিতেছে ॥ ২৭ ॥

আরও দেখিলেন আপনার দেহ উত্তর্জনাদি বারা উত্তম রূপে মার্জিত ও ক্লালিত এবং মন্তক তৈল বারা অভ্যক্ত হইয়াছে, আর অক সকল সর্ব্ধাভরণে ভূষিত অর্থাৎ গ্রীবাদেশে পদক, হত্তে বলয়, চরণ বয়ে শব্দায়মান বর্ণ নৃপুর ॥ ২৮ ॥

নিতখদেশের উপরি ভাগে বিবিধ রত্ন থচিত কাঞ্চনময় কাঞা এবং গলদেশে মহার্হ হার ও স্বস্তাস্ত মাসল্য দ্রব্য শোভা বিতার করিতেছে॥ ২৯॥ হুক্রবা হনতা প্রক্ষ নিয়াপাকেন চক্ষ্যা। পদ্মকোশস্প্রা নীলৈরসকৈন্দ সনমূরং ॥ ৩০ ॥ যদা সন্মার ঋষভম্যীণাং দয়িতং পতিং। তত্ত্ব চাত্তে সহ স্ত্রীভি র্যক্রাতে স প্রকাপতিঃ ॥ ৩১ ॥ ভর্তু: পুরন্তাদান্মানং স্ত্রীসহত্ত্বরুতং তদা। নিশাম্য ভদ্যোগগতিং সংশয়ং প্রভ্যপদ্যত ॥ ৩২ ॥ স তাং ক্রতমন্ত্রানাং বিজ্ঞাকস্ত্রীমপূর্ববিধ। আজ্মনো বিজ্ঞতীং রূপং সংবীত ক্লচিরস্তনীং ॥ ৩০ ॥

विषयभागी।

অ্বতা অ্ক্রবা চক্ষেতিচ আতাবেক বচনানি এতৈ সঁগৎ শোভমানং মুধং বন্ধ কথং ভূতেন চক্ষ্যা সঞ্চো মৰেছেবঃ সিংশ্বাহ-পালো নেঅপ্রায়ো বস্তু । পল্লকোশেন স্পৰ্য্ধন্ত ইতি গলকোশস্থ তেন ॥ ৩০ ॥

षृद्धे। वसा शिक्षः मचात्र जमा बबादमी करेवाद चममना। एक । ०১ ।

আত্মানং নিশামা দুট্র তাঞ্ তক্ত বোগগতিং খোগপ্রভাবং দুট্র সংশরং কিমিদমিতি বিশ্বরং । ৩২ ।

স মুনিঃ বিবাহাৎ প্রাগান্মনো বংরূপং তদেব পুনবি ভিতীং সম্বীতে প্রাবৃত্তে ক্লচিরেট কলৌ বস্তাঃ। সম্বীভক্তিরন্তমমিতি পাঠে রূপবিশেষণং । ৩০ ।

ক্রমসন্দর্ভ:।

ততক্ষ ভাবোলাত ইত্যাহ। যদেতি । ৩১। ৩২ ॥

স তামিতি যুগাকং। অপূর্বন্ধে হেতু:। আত্মন ইতি টীকারাং বিবাহাৎ প্রাগিত্যাদিকং অপূর্বনিতি ৰতি প্রতান সার্ভা-লভাতে অপূর্বন্ধ হি তপোমরদশামাত্রাপেক্ষ্য। ॥ ৩৩ । ৩৪ ॥

शिविधनायहळ्यार्थी

দৃষ্ট্রাচ পত্যক্তরা রমণবোগ্যমাত্মানং মত্বা যদা ডং সন্মার তদা যত ব প্রজাপতিত্ততৈর স্বয়নগাতে ইতি ওতাত্মানং পত্যরে-কাসনে স্থানীনমের বিবেদ। নতু অলহদাৎ পদব্যাপারেণ বাস্তমিতি তভাস্তৃতৈর বোগগতিঃ॥ ৩১॥

নিশাম্য দৃষ্ট্ৰ ভক্তৈৰ যোগগভিং যোগপ্ৰভাৰঞ্ছ দৃষ্ট্ৰ সংশবং কথ্যেতদভূদিতি বিশ্বৰং ॥ ৩২ ॥

স মুনিঃ আত্মনো রূপং বিবাহাৎ প্রাক্ষমাসীজনেৰ পুনবি ভ্রতীমিত। গংবীতে প্রার্ভৌকচিরৌ অনৌ বভাডাং নপুংসক্পাঠে রূপবিশেষণং হে অমিত্রহন্ জিভকাম: ৫ ৩০। ৩৪ ।

আরও দেখিতে পাইলেন হান্দর জা, শোভন দশন, পদ্মকোষের সহিত স্পর্কারে হাস্ত্রশ্ব অপাঙ্গাম্বিক নয়ন এবং বিলাস শালিনা অলকাবলী এই সকল দারা আপনার বদন সাভিশয় শোভা পাইতেছে ॥৩০

দেবসূতি আদর্শ মধ্যে আপনার ঐ প্রকার অসামায় রূপ লাবণ্য অবলোকন করিয়া ঋষিপ্রেষ্ঠ প্রিয় তম পতিকে স্মরণ করিলেন, তাহাতে তাঁহার পতি ঐ প্রকাপতি যে স্থানে অবস্থিতি করিতেছেন, ক্ষণা মাত্রে সেই স্থানে ঐ দকল কন্যাগণ পরিবৃতা হইয়া আপনাকে উপস্থিত দেখিলেন ॥ ৩১ ॥

কিন্তু ভর্তার অত্যে গিয়া যখন স্ত্রী সহত্র পরিবৃত আপনার প্রতি এবং স্বামির যোগপ্রভাবের দিকে তাঁহার নেত্রপাত হইল, তখন মনোমধ্যে সংশয় জন্মিল, অর্থাৎ কি প্রকারে এই সকল হইল। এই বলিয়া বিশ্বর প্রকাশ করিলেন ॥ ৩২ ॥

সে বাহা হউক দেবহুতি কৃত সান হইয়া প্রত্যাগমন করিলে মুনিবর প্রেরণীর পরম শোভা হইয়াছে, বিবাহের পূর্বেই ইবার যে রূপ মনোহর রূপ ছিল, পুনর্বার সেই রূপ প্রাপ্ত হইয়াছেন, আর
ইহার ক্রচির অনুযুগল বসন দারা আরুত হওয়াতে সাতিশয় শোভা পাইছেছে ॥ ৩০ ॥

বিদ্যাবনী সহত্ত্বণ সেব্যমানাং হ্বাসসং। জাতভাবো বিমানং ভদাবোহরদ্বিত্তন্ ॥ ৩৪ ॥ তিরিমস্থেমহিনা প্রিয়মাস্রভৌ বিদ্যাধরীভিরপচীর্ণবপ্রিমানে। বজাজ উৎকচ কুম্দর্শবনিপীব্য স্তারাভিরারত ইবোড় পতি র্নভন্তঃ ॥ ৩৫ ॥ তেনাউলোক পরিহার ক্লাচলেন্দ্রভোণিয়নসস্থ্যারভ্নোভগাল্। সিকৈর্ম তো হ্যুধ্নিপাতশিবখনাল্ল রেনে চিরং ধনদবল্পলাবর্ণী ॥ ৩৬ ॥ বৈশ্রেজকে স্রসনে নন্দনে পুজাভত্তে। মানসে চৈত্তরপ্যেচ স রেমে রাম্যা রতঃ ॥ ৩৭ ॥

वी धर या भी।

শোভনে বাস্সী যক্তা:। আভোভাব: থেম বস্ত। হে অমিত্রহন্ বিভক্ষ । ৩৪ ।

তিমিন্ বিনানে মুনিবঁজাজে। ন লুংগাে মহিমা খাত্ডাং বস্য উপচীৰ্ণ শুঞ্জাৰিতং বপুৰ্বস্য বিভসিত কুমুদাণবান্ অণীাৰ্যাইতি সুন্দর:। পুৰ্ণচক্ত ইৰ মুনিঃ। নভ ইৰ বিমানং তারা ইৰ তাঃ ব্ৰিয়ঃ কুমুদানীৰ ডাগাং নেআণীতি জেলং॥ ৩৫॥

তেন বিমানেন আইলোকপালানাং বিহারো যদিন কুলাচলেজে মেরৌ তস্য দেণীয় দরীয়। আনদত স্থা বো মারত: শীত ক্ষান্ধ মন্দানিলা তেন সৌভগং সৌন্ধীং থাক। সিহৈছে তিঃ ভতঃ সন্। ছাধুনী গলা ততাঃ পাতেন শিবঃ খনো বাক ভাকু বেংক লক্ষাব্রাথী শ্রীসমূহবান্॥ ৩৬॥

বৈশ্রম্ভকাদিরু দেবোদ্যানেরু। মানসেচ সর্সি রভ: প্রীত: সন্॥ ৩৭ ॥

ক্রমসন্ধর্য:।

উজুপতিরিতি। উজু: রোহিণী সাচ প্রিরাস্থানীরা জেরা। প্রিরাশক্ষ এবোভরবোরীরতে । ৩৫। ৩৬। ৩৭ ।

बिविधनाथहळ्कवर्शी।

ভিমিন্ বিমানে মুনির্বল্লাকে। উপচীর্গ: শুঞ্জবিতং বপুর্বসা সং। বিক্সিডকুম্লগণবান্ অণীব্যাহ্ তিকুল্লরঃ। পূর্বচঞ্জ ইব মুনিং নভ ইব বিমানং ভারা ইব তা জিলং। কুম্লানীব ভাসাং নেআনীতি কেলং। ৩৫ ॥

তেন বিমানেন বেৰে। কুলাচলেক্তো থেকঃ ছাধুনি গঁলা ভক্তা উদ্ধতঃ পাতেন শিবং খনো যাস্থ ভার্য ললনাসমূহবান্। ৩৬ বৈশ্রম্ভকানির দেবোল্যানের মাননে সরসি। ৩৭।

অপর ইহাঁর শোভন বদন পরিধান এবং দহত্র বিদ্যাধরী চারিদিকে দেবার্থ উদ্যত। ঐ ঋষিবর প্রেয়সীকে ঐ রূপ অবলোকন করিয়া হাউচিত্তে প্রেমবান্ হইয়া কর ধারণ পুরংসর দেই বিমানোপরি আরোহণ করাইলেন ॥ ৩৪ ॥

কর্মম অপুরক্ত হইরা প্রিয়তমার সহিত বিমানে আরত হইলে তাঁহার অতিশয় শোভা হইল, তৎ কালে তদীয় মহিমাও কোন অংশে পুগু হইল না, বিদ্যাধরীগণ নানা প্রকারে তাঁহার শরীর শুজাষা করিতে লাগিল, অতএব কুমলাণের প্রকাশক গগণমগুলন্থ পূর্ণস্থাকর তারানিকরে পরিবৃত হইলে তাঁহার যজেপ সৌক্ষা হয় ঐ মুনির অবিকল তজেপ প্রী প্রকাশ পাইতে লাগিল॥ ৩৫ ॥

অনন্তর তিনি স্ত্রী সমূহ পরিষ্ত হইয়া সেই বিমানোপরি বছকাল জীড়া করিতে লাগিলেন, তাহাতে অইলোকপালের বিহার পাল কুলাচলেন্দ্র অর্থাৎ হুমেরু পর্বতের যে যে কলর হুণীতল অথচ হুগল্প কাশু কল বহনশীল অনিলের দারা রম্ণীয় এবং যে হান অর্থনদী সন্দাকিনীর পতনে শব্দায় নাম, তথায় সিদ্ধাণ কর্ত্ব স্তত হইয়া ক্রমণ কারি কুবেরের যজাপ প্রীতি জন্মে তিনিও তজ্ঞপ প্রীতি ক্রম্পুর করিতে লাগিলেন। ৩৬॥

व्यर्थार तिष्ठी विभारत व्यविष्ठ हरिया दिख्यक्रक, श्रेत्रमन, नम्मन, भूष्णवस्त्रके, देख्यत्रथ हेल्यामि विविध

ভাজিকুনা বিমানেন কামগেন মহীয়দা। বৈমানিকানত্যশেত চরল্লোকান্ যথানিল: ॥ ৩৮ ॥
কিং ছুরাপাদনং তেষাং পুংসামুদ্দামচেতদাং। বৈরাভিততীর্থপদশ্চরণো ব্যসনাত্যয়: ॥ ৩৯ ॥
প্রেক্ষিত্বা ভূবো গোলং পজ্যে যাবান্ স্বসংস্থ্যা। বহুনাশ্চর্য্যং মহাযোগী স্বাঞ্জনায় ন্যবর্ত্তত ॥৪%
বিভজ্য নবধাল্মানং মানবীং হুরতোৎক্ষকাং। রামাং নিরময়ন্ রেমে বর্ষপ্গান্ মুহূর্ত্তবৎ।
তিন্মিন্ বিমান উৎকৃষ্টাং শয্যাং রতিক্রীং প্রিতা। নচাবুধ্যত তং কালং পত্যাহশীব্যেন সংগতা ॥৪১

श्रीभवत्यामी।

ষত্যশেত অভিক্রমা স্থিতঃ ॥ ৩৮॥

উদানচেতসাং ধীরাণাং বাসনং সংসার শুভাতায়ো যত্মাৎ ॥ ৩৯ ॥

প্রেক্ষিয়া দশীয়িয়া। গোলং মণ্ডলং অসংজ্য়া বীপবর্ষাদি রচন্যা যাবান্ ভাষতা। বছুনি আশুর্যাণি বন্মিন্ তং ॥ ৪० ॥ বিভক্তা নৰ্ধা নব প্রভেদ্মাত্মানং কুড়া ॥ ৪১ ॥

क्रममन्दः।

কিমিতি। উদ্ধান চেডসাং অপেকাস্তরাবদ্ধ চিত্তদেন নিকাশ্রেরে ধৈর্যাং গভানাং। বরা। সর্কাডঃ কুঠ্ঠতার্থিত চিত্তানামিতি ভীর্থপদ ইতি বাসনাডায় ইতি চ ছ্:সাধ্যদমের ব্যাবর্ত্তয়তি। সর্ক্রিয়াত্যয়পূর্ক্কং সর্ক্ সম্পাদনভ বিবক্ষিত্তাং ॥ ৩৮। ০৯। ৪০॥ ভত্তদপ্রোংপত্তৌ ভত্তকাণ প্রধানদ্বেন নবধা॥ ৪১। ৪২॥

श्रीविषमा भडक वर्षी ।

অত্যশেত অতিক্রান্তবান্ ॥ ৩৮ ॥ উদ্ধানচেত্তসাং ভচ্চরপাদক্তত্তাবদ্ধনসাং ॥ ৩৯ ॥

(शांनाः मखनः चत्रःह्या शैनवर्षामित्रहनमा वावान कावसः । १० ॥

नवर्ग नवर्थाक्तमाञ्चानः कृषा ॥ ४১ ॥

দেবোদ্যান সকলে, তথা মানস সরোবরে, মহর্ষি কর্দম আপনার প্রিয়তমার সহিত প্রীত হইয়া ঐ সকল স্থানে জীড়া করিতে লাগিলেন স্থতরাং তাঁহার অন্তঃকরণে ধনদের তুল্য সন্তোষ জনিতে লাগিল । ৩৭

তিনি দীপ্তিযুক্ত ও কামগামী সেই বিমান যোগে আকাশ মার্গে বায়ুর নাায় সকল লোক ভ্রমণ করিতে আরম্ভ করিলেন, তাহাতে অত্যল্ল কণ মধ্যেই বৈমানিক লোক সকলকে অতিক্রম করিয়া অবস্থিত হইলেন ॥ ৬৮ ॥

অহে বিচুর! কর্দ্দ ঋষির সহসা বৈমানিক লোক অতিক্রমণে বিস্ময়ান্থিত হইও না, ভীর্থপাদ হরির যে চরণদ্বয় স্মরণ মাত্রে সংসার নাশ করে, সেই চরণ কমল যে সকল ধীর ব্যক্তি আশ্রের করেন ভাঁহাদিগের কি ক্রপ্রাপ্য থাকে ? ॥ ৩৯ ॥

মহাযোগী কর্দ্দন ঐ প্রকারে পর্যাটন করিতে করিতে বহু বিচিত্রময় অবনীমগুলের দীপবর্ষাদি যাবন্ত অংশ প্রিয়তমাকে অবলোকন করাইয়া পরে আপনার আশুনে নির্ত হইলেন ॥ ৪০ ॥

অনস্তর প্রেয়সীর দিকে দৃষ্টিপাত হওয়াতে তাঁহার বােধ হইল, তিনি হুরভার্থে উৎস্কা হইতেছেন অতএব মহামূনি কর্দম আপনাকে নয় প্রকারে বিভক্ত করিয়। সেই রামার সহিত রম্প করিতে প্ররভ হইলেন। বিছুর। ঐ ঋষি বহু বংসর হুরত ফ্রীড়ার বাাপৃত ছিলেন সতা, কিন্ত তাঁহার পক্ষে ঐ সময় মৃতুর্তের আয় হাপিত হইল। তাঁহার পক্ষী দুশবহুতিও সেই বিমানে রতিকরা উৎকৃষ্ট শব্যায় পতির সহিত সঙ্গতা থাকাতে তাবং কাল বে গত হইল তাহা জানিতে পারিলেন না ॥ ৪১ ॥

এবং যোগামূভাবেন দম্পত্যো রমমানয়োঃ। শতং ব্যতীয়ুঃ শরদঃ কামলানসয়োর্মনাক্॥ ৪২॥ ভক্তামাধন্ত ক্ষেত্রভাগ ভাষয়দাক্ষমাক্ষবিৎ। নোধা বিধায় রূপং বং সর্বাসংক্ষমিবিছিত ॥ ৪০॥ অতঃ সা স্মূবে সদ্যোদেবহুতিঃ ব্রিয়ঃ প্রজাঃ। সর্বান্তাশ্চারু সর্বাদ্যোধনাহিতোৎপলগদ্ধয়: ॥৪৪

धिवद्रश्रमो ।

भद्रमः त्रष्ट्यद्राः प्रनाक् स्वयम्व वाकीशः । हर ।

আত্মনা অদেহার্ক্রণেণ। অতিপ্রীতাা ভাষরন্। তথা সন্ধি সম্পতাং ভবেদিতি নোধা নবধা। সর্বা সংক্রবিদিতি ওতা বহবপক্তাসংক্রং কানব্রিক্তার্থ:। বিভূতধা কর্ত্ব্যবর্ধ । আ্বাত্মবিদিতিচ ভতামনাদক্তবাৎ ত্রিরং লাভা ইতি ভাষং পুমান্ পুংসোহধিকে ভক্তে ত্রী ভবেদধিকে ব্রিরাইতি স্ভেঃ ৪০ ।

चारणाधनस्वत्रामन नवाः धाकविरव्यनांद्वि कांत्र्वि नर्त्वावाद्यामि वानार । 88 a

क्रममण्डः।

তন্তামিতি সংক্ষাং ব্ৰহ্মণো মরীচ্যাদি প্রজাণতীনাঞ্চ স্টেকামনরা বং স্বর তাবিৎ তথা আয়ানং তগবন্তঞ্চ নিজোপনেধকং বেডীতি তথা যা ত আয়ুভূতং বীর্যাং নবধা প্রস্বিষ্যতি । বীর্যাে ছমীরে ধ্বর আধাস্যভাগসাম্বনঃ। স্বাহং স্থাংশকলয় স্বীবিধা মহামুনে। তব ক্ষেত্রে দেবহুভ্যাং প্রণেব্যে তত্মসংহিতাং। ইতি হি তত্পদেশাং বদ্যপীপং তথাপি তদস্মাধ্যে প্রবিশ্বনাত্ত মিতি তভাগ্রিম তৎ প্রার্থনাত্তর সম্যতে প্রীদেবহুভ্যান্ধ বাবতেলোবিভ্যাদান্মনো মে ইতাত্রার্থ বিশেবোনাবগত ইতি ॥ ৪০। ৪৪॥

बिवनायठक वर्छी।

भनाक जेवनिव वाडीयुः ॥ ८२ ॥

তাং স্ত্রিরং ভাবররিতি আধানকালে স্ত্রীধানেন স্ত্রাপত্যং স্যাদিতি তদ্যাঃ স্ত্রাপত্যকামনাং ভানরিভার্থঃ। আত্মনা ব্রা আত্মবিধিরক ইতি তদ্য কামারবাৎ শুক্রার্থমতোশি স্ত্রাপত্যং ভবেক্তৃকং পুমান পুংদোধিকে শুক্রে স্থাভবেদধিকে ক্রিয়া ইতি নোধা নৰধা দর্জাশংকরবিদিতি তদ্যা বহুবপত্যশংকরং জানরিতার্থঃ বিভূঃ শর্কার সমর্থঃ ৪০॥

मध्य धकचित्रवाहनि । ८८ ।

ফলতঃ ঐ দম্পতী যোগপ্রভাবে হারত ক্রীড়ার আগত হইয়াছিলেন, অতএব রমণ ব্যাপারে শত সম্বংসর অতীত হইলেও কামমুগ্ধতা প্রযুক্ত তাঁহাদের পক্ষে ঐ হুদীর্ঘ কালও অত্যক্ষণ সুস্যা শীস্তই পত হইল ॥ ৪২ ॥

কর্মন থবি বোগবলে সকলেরই নানস জানিতে পারিতেন, জাপনার পত্নীর বছ অপতা নিমিত বে সঙ্কর ছিল তালা অবগত চইলেন এবং তাঁলার অভিলাষপুরণে জাপনার সাবর্থ্য আছে ইলাও বিবেচনা করিয়া দেখিলেন, অতথাৰ লাভিশর প্রীতি প্রকাশ পূর্বক তাঁলাকে আছা দেলার তুল্য ভাবনা করিয়া আপনাকে নয় প্রভাৱে বিভক্ত করত তদীয় গর্বে বীর্যাধান করিলেন। বংস বিজ্ব। প্রজাপতি কর্মন আক্ষম ছিলেন এ নিমিত্ত পত্নীতে ভাঁলার চিত্ত আসক্ত হর নাই, হতলাং সম্থিক রেডঃ পাত না ইপ্রাক্তে এ বর্বে ক্ষ্যা ক্ষমিল । ১০ ।

শান্ত এবা ভাষার পরে সদাই শার্বাং এক দিবসের মধ্যেই তাঁহার পত্নী দেবহুতি কতকগুলি স্ত্রীক্ষান্ত প্রান্ত করিলেন, লেই করোবিগের সকলের অঙ্গই শান্তিপর হালার, সকলেরই কলেবর হইতে রক্তোৎপলের সৌরভ সহির্থত কইডেছিল 🖟 ৪৪ । পতিং দা প্রব্রজয়ন্তং তদালক্ষ্যোশতী বহিঃ। স্ময়মানা বিরুবেন হৃদয়েন বিদ্য়তা ॥ ৪৫ ॥ লিখন্তাধোমুখী ভূমিং পদা নথমণিপ্রিয়া। উবাচ ললিতাং বাচং নিরুদ্ধাঞ্চকলাঃ শনৈঃ ॥ ৪৬ ॥ শ্রীদেবহুতিরুবাচ ॥

সর্বং তম্তগবান্ মহমুপোবাহ প্রতিশ্রুতং । অথাপি মে প্রপন্নায়া অভয়ং দাতুমর্হদি ॥ ৪৭ ॥ ব্রহ্মন্ চুহিত্ভিস্তভ্যং বিমৃগ্যাঃ পতয়ঃ সমাঃ । কশ্চিৎ স্থামে বিশোকায় ছয়ি প্রব্রজিতে বনং ॥৪৮॥

अध्यक्षामा ।

প্রবিজ্ঞালকঃ বিতর্কা। অয়মানা বহিঃ অক্তম্ব বিরুবেন ব্যুক্লেন বিদ্যুতা সংভপামানেন হৃদা উবাচেত্যুত্তরেণাবরঃ ॥৪৫ নধাএব মণরঃ তৈঃ শ্রী: শোভা বস্যু তেন পদা ভূবং নিধন্তীতি হুর্ম্বচিত্তাকশং ॥ ৪৬ ॥

উপোবাহ সম্পাদিতবান। অভয়মিতি ভাবিনো বৈত্যাৎ সংসারাচ্চ বস্তুয়ং তল্পিবর্তন ইত্যর্থ:।। ৪৭ ।।

তত্ত্ব দৈনাং নিবেদয়তি তুভাং তব ছহিত্তিঃ সম্মেৰাক্সনঃ সমা বোগাাঃ পত্যো বিমৃগা। ইতি দৈনাং প্ৰাপ্তং সংসার ভয়ং উর্মীকৃত্যাহ কল্চিদিতি। বিশোকায় জ্ঞানোপদেশায়। ত্ত্ৰীতিঃ ঝণানপক্ষণাং। কঞ্ছিৎকালং তদৰস্থানেন ব্ৰহ্মবিং প্ৰঃ কল্ডিং কিং নগাদিত্যর্থঃ। ৪৮।।

क्रममण्डः ।

পতিমিতি যুগাকং। ৪৫। ৪৬।

অথ ঐদেবহুভিক্বাচেতি কচিৎ অভয়ং পুনঃ প্রার্থনা ক্ষমা রূপং ॥ ৪৭ ॥

প্রার্থনামেব।হ। ব্রহ্মরিতি। তুভাং দ্বরা ছুহিত্তি: সমান্তাসাং বোগাা: । ৪৮। ৪৯। ৫ - ॥

अविभगावहळावळी ।

মরমানেতি পতিদর্শনস্বাভাব্যাৎ বস্তুত্ত বিক্লবেন ব্যাকুলেন বিদ্রমানেন চিস্তাভিরিভার্থ: ॥ ৪৫ । ৪৬ ॥ উপোবার সম্পাদিতবান্ ॥ ৪৭ ॥

ভূজাং তব শ্বরমেব বিষ্ণ্যা ইত্যাসাং বিবাহচিন্তাপ্তি নে নাজীতি ভাবঃ। বিশোকায় শোকদুরীকরণার তেন কমণি বোগাং পুত্রমণি ত্তোহং প্রাপ্রামতি কুণয়া কতিচিন্দিনানি তিঠেতি ভাবঃ। ৪৮॥

মহামুনি কর্দম ঐ সময়ে প্রবেজ্যাশ্রমে গমন করিতে উদ্যত হইলেন, তাঁহাকে তদ্রপ দেখিয়া দেবহুতির বাহে বিশায় এবং অন্তরে ব্যাক্লতা জন্মিল ও তাঁহার হৃদয় শোকে সাভিশয় সম্ভপ্ত হইল ॥ ৪৫ ॥

তিনি চুরস্ত চিন্তা প্রকাশ করত অধোমুখী হইয়া নথমণি শোভিত চরণ দারা ভূমি খনন করিতে লাগিলেন, তদনস্তর নেত্রবারি সংরোধ করিয়া মুছুস্করে কএকটা কোমল বচন প্ররোগ করিলেন ॥ ৪৬ ॥

দেবহুতি কহিলেন ভগবন্। আপনি আমার নিকট যাহা বাহা প্রতিশ্রুত হইয়াছিলেন সকলই, সম্পন্ন করিয়াছেন, আমি পুনরার আপনকার শরণাপন হইতেছি আমাকে অভয় দান করুন। প্রভো! ভাবি দৈনা ও সংসার হইতে যে ভয় সম্ভাবনা আছে তাহা নিবর্ত করিয়া দিউন ॥ ৪৭ ॥

ব্ৰহ্মন্ । আপনি প্ৰব্ৰহ্মা ক্রিয়া বনে গমন ক্রিলে আপনকার এই কন্যাদিগকৈ স্বয়ং স্ব স্থ যোগ্য পতি অস্বেশ ক্রিতে হইবে ইহা আমার পক্ষে ক্রিপে দৈন্য, বিবেচনা কল্পন । অপর আপনি সম্যাদ ধর্ম অবলম্বন ক্রিয়া যাইতেছেন, আমাকে জ্ঞান শিক্ষা কে প্রদান করিবে, আমার জ্ঞানোপদেশের নিমিত কাহাকেও রাখিয়া বাইতে আজ্ঞা হউক অর্থাৎ যদি আরও আপেনি কিছুকাল অবস্থিতি করেন তাহা হইলে আমার গর্বে ব্লাজ্ঞ কোন একটা সন্তান অবস্থাই হইতে পারে ॥ ৪৮ ॥

এতাবতালং কালেন ব্যতিকোন্তেন মে প্রভো । ইন্দ্রিরার্থপ্রসঙ্গেন পরিত্যক্তপরান্থন: ॥ ৪৯ ॥ ইন্দ্রিরাধের্ সঞ্জন্তা প্রসঙ্গন্তর মে হ ৫০ ॥ কালেন্ত্রা পরং ভাবং তথাপান্ত্ররায় মে ॥ ৫০ ॥ সঙ্গো ব: সংস্তে হৈত্রসংহা বিহিতোহধিয়া। স এব সাধ্র কৃতো নিঃসঙ্গায় করতে ॥ ৫১ ॥ নেহ যৎ কর্ম্ম ধর্মার ন বিরাগায় করতে । ন তীর্ধপদসেবারে জীবন্ধি মুতো হি সঃ ॥ ৫২ ॥

ख्या वामी।

বিষয়ান্ ভূজ্জান বিষয়াই তি চেডআই এডাইডা অলং পূর্যাতে। পরিডাক্ত: পর আত্মার্যা ডড়া ম্য । ৪৯ । বরুত্মলুশোচন্তাই ক্রিরার্থেন্ডি চতুর্জি:। মে মরা স্থাবং ডত্বং তং এক্ষবিদিতি । ৫০ । প্রসাল: কথ্মভবারাত্ম ডআই সন্ধাইতি। অধিয়া অক্সানেন ॥ ৫১ ।

খভাবতঃ প্রবৃত্তং বস্ত কর্ম ধর্ম।র্থং ন প্রক্রেরে ধর্মাভিমুধং ন ভবেং। ভজাপি নিছাম ধর্মবারা বিরাগার ন করতে ভছারাচ ভীর্ষপদত হরে: সেবার্থং ন প্রাবজেদিভার্থ: ৪ ৫২ ৪

क्रममर्ग्डः।

সঙ্ক ই জি। সূত্ৰ সোণি অজ্ঞান পূৰ্ককোপীভাৰ্ব: । ১ । ভীৰ্বপদা: সাধব:। ভীৰ্থীকুৰ্কজি ভীৰ্থানীভাছাজে: । ৫২ ।

क्षेविश्रनाथहळवळी ।

নতু কিমেওছুক্তি ভক্ষা পুনরণি মত্তো বিবরস্থাং বাছদীতি ভত্ত সগজ্জমাছ। এতারতা কালেন ব ইচ্ছিরার্থ প্রসক্তেনালং যতঃ পরিভাক্ত: পর জালা পরমেখরো ধ্যা ভক্ষা ইতি ভেনৈভাবান্ কালোমে বার্থএর গত ইতি ভাব: ৪৯॥

মহাভাগৰতস্য তব ক্ষণিকেনাপি গলেন লোকা নিজয়ন্তি। মমবেজাৰছাৰ্বিকেণাপি ব্যৱস্থারো নাভ্ততৈতবে হেত্বর মিত্যাহ ইজিরার্থেবিতি পরং ভাবং তবৈবং মহাবৈরাগ্যং মহাজাগৰতত্বক বংকণমাত্রেগৈর সর্বাং মমতাস্পানং তাজুং প্রাবৃত্তা সীতি ভাবং। তথাপীতি তগপি ম্বাপরাধিনাাং কুপাং কুর্বিতি ভাবং। ৫০ ম

কিঞ বল্পজিবু দিং নাপেকত ইভাতো ভবৰিধ সাধ্যকো বিফলো ভবিজুং স্প্রিধৰ নাইভীতাহ সৃষ্ট ইতি ভবিয়া জ্ঞানেনাপীতাভয়ত্তাপাৰেতি । ৫১ ।

নমু কিমেবং নির্কিষ্যদে ডবৈতাৰতী সম্পত্তি রতো বিবয়ান্ ভূজেকৃতি ভত্তাৰ নেকেতি বস্য কর্ম দেবেজিয়াদিব্যাপারে। ধর্মান

প্রভো! আর আমার বিষয়ভোগে অভিলাষ নাই, এতাবং কাল তাহাতেই বাপন করিলাম, তাহা পূর্ণ হইয়াছে। আমি ইন্দ্রিয় ভোগ্য বিষয়ে এমত রত ছিলাম বে তদাসক্তি বশতঃ আমার প্রমাত্মা পর্যান্ত পরিত্যক্ত হইয়াছিলেন ॥ ৪৯॥

হে এক্সন্! আমি ইন্দ্রিয়ের বিষয়ে প্রদক্ত হইরা আপনাতে আগক্তি করিতান, কিন্তু আপনকার পরম ভাব আমার বৃদ্ধিতে উদিত হইত না, প্রার্থনা করি আপনকার অনুগ্রহে ঐ সকল বিষয় আমার •অভয় নিমিত্ত ইউক॥ ৫ • ॥

হে মুনিবর। যদিও বিষয়াসক্তি অভয়ের নিমিত হয় না সত্য, তথাচ আমার শ্রুত আছে যে আসক্তি অসং বিষয়ে অভ্যান পূর্বক বিধান করিলে সংসার বিষয়ক ভয়ের কারণ হয়, তাহাই আবার সাধু পুরুবে বিহিত হইলে নিঃসঙ্গছের ফল দের ॥ ৫১ ॥

প্রতো! যাহার কর্ম অর্থাৎ দেহেন্দ্রিরাদির ব্যাপার ইহলোকে ধর্ম, বৈরাগ্য এবং ভগবানের শেবা নিমিত করিত না হয় অর্থাৎ সন্ধাবতঃ প্রবৃত্ত কর্মেরও ধর্মাভিমুধ হওয়া উচিত, পরে নিকাম ধর্মের হারা ভগবৎ দেবার তাহার পর্যাবদান ক্রা কর্তব্য, বে ব্যক্তির কর্ম ঐ প্রকার না হয় সে শীবন সন্ধেই মৃত ॥ ৫২ ॥ সাহং ভগৰতো নৃনং যকিতা মায়য় বৃঢ়ং । যত্তা বিমৃত্তিদং প্রাণ্য ন মুমুক্তের বন্ধনাৎ ॥ ৫০॥
॥ ॥ ইতি জ্ঞীভাগৰতে মহাপুরাণে পালমহংসাং সংহিতায়াং বৈয়ালিকারং ভৃতীরক্তে দেবছুত্যমুতাপো নাম ত্রোবিংশোহধায়ঃ ॥ ॥ ২৭ ॥ ॥ ॥

প্রিমৈত্রেয় উবাচ ॥

নির্বেদবাদিনীমেবং মনোত্র হিতরং মুনি:। দয়ালু: শালিনীমাহ শুক্লাভিব্যান্ততং স্মরন্॥ ১॥ জীঞ্জিফবাচ ॥

মা থিলো রাজপুত্রীখমাত্মানং প্রভানিশিতে । ভদবাংত্তেহকরো পর্ত্তমদূরাৎ সংপ্রশৃৎক্ততে ॥ ২ ॥

श्रीयतत्रामी ।

ন মুমুকের মোকে, মিছোং ন রুভৰভ্যবি॥ ৫৩॥

৷ ইতি তৃতীয়ে অয়োবিংশ: ৷ ● ৷

চত্বিংশে ততো জন্ম কপিলজাহ তৎপিতৃ:। প্রাপ্তজ্যাং তমস্কাপ্য প্রণক্তম বিমোকতঃ॥ • ॥ শালিনীং শ্লাঘাং শুক্লেনাভিব্যাহ্লতং সহাহং স্থাংশ কলরা ইত্যাদি॥ ১ ॥ ইখং মাথিদঃ থেদং মাকাষীঃ আন্মানং প্রভাহং কাগ্যহীনেতি। অদুরাৎ শীল্লং ॥ ২ ॥

क्रमनमर्छः ।

সা যথা কথঞিং ক্রতভবংসংলাপাছং দ্বাহিমাজানাংশেন বঞ্চিতা। আডো ভগৰরাবৈৰাত কারণমিজার্থ: । ৫০।

। ৩। ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্ষরে শ্রীজীবগোস্বায়িক্ত ক্রমসম্মর্ভক ক্রমেবিংশোহধ্যারঃ সমাধ্য: । ৯।

শালিনীমিতি শতুলাঘারাং শাভনং শাল: সোহস্যাতীতি শালিনী ভাং শুক্লাভিনাক্তং দ্বারীতি ভলেক ধ্যানঘাৎ ঃ১৷২৷০।

खैवियमाधहक्रवर्छो ।

छाळालाहत्रवमहत्मरविकाह नाहर कीव्या कान् मूम्रक्ति सांक् मिल्हामाखमिन सङ्गलविकाची नाक नाक नाकाहवाकार । €० ।

♦ ॥ ইতি সাধার্থদ শিক্তাং হবিণ্যাং ভক্তচেচনাং। অবেধিংশতৃতীয়স্য সঙ্গতঃ সভাঃ সভাং ॥ ♦ ॥
চতুবিংশে ততঃ প্রোক্তং কপিল্যা বিধেবিচঃ। কনোবাহং কর্দম্যা প্রক্রেমা ভক্তনন্তর। ॥ ● ॥

শালিনীং শাখাং শুক্লোভিব্যাহ্রতং সহাহং আংশকলবেভ্যাদি ॥ ১ ॥

८६ অনিন্তিতে ইথং আধিন খেনং ॥ কার্যাঃ ॥ ২ ॥

বে আনাক্ষেত্ৰ ব্যাবদ্বেদৰ দা কাবাঃ । ব । নচানাঃ প্ৰাকৃতীবন্ধমকত পুণোত্যাই ধৃত্ৰভাগি পূৰ্ধনিয়ানি কৃত্ৰভাগি নিয়মাকত ইহাপি নমনি তে ভক্তং ভবিহাভি । ৩ ।।

যাহা হউক, আদি ভগৰানের মান্নতে অতিশন্ন ৰঞ্জি হইয়াছি, মুনে। একি শামাভা তুরখের বিষয় নয় ? আমি মোক্ষপ্রক আমি প্রাপ্ত হইয়াও মুক্ত হইবার ইচ্ছা করি নাই।। ৫০ ।

॥ 🗰 ॥ ज्ञीरम् व्यत्यांनिः म 🗯 ॥

চতুর্বিংশ অধ্যারে দেরছুতির গর্ব্তে কশিলদেবের জন্ম এবং তাঁছার অনুষতি জ্ঞানে কর্মনের প্রব্রজ্যার গ্রন্থ ।

নৈত্রেয় কহিলেন বৎস বিচ্র! মতুতনয়া দেবছুতি এই প্রাকার নিত্রেদ বাক্য বলিতে বাকিলে মুনিবর কর্দদের করেবরণ করুপার্সে আরু ক্ইল, ভগরান বিষ্ণু বাহা কহিয়াছিঃলুম সম্প করত কহিলেন।

द् चनित्रका बाजभूकि । कृषि चाननादक क्रिकानीना निवता द्राक्त क्रिकाना, क्रि

ধৃতব্রতাসি ভবং তে দরেন নিরমেনচ। তপোত্রবিণদানৈশ্চ প্রেরা চেশরং ভক্ত ॥ ৩॥ স দ্যা রাখিতঃ ভব্নো বিতরন্মানকং যশ:। ছেড়া তে হুদরপ্রস্থিমৌদর্য্যো ব্রশ্বভাবনঃ॥ ৪॥ শ্রীদৈব্যের উবাচ॥

स्विद्वानि न्यान्यः शोत्रदेव ध्यानितः नमाक् ध्यक्षात्र भूक्ष्यः कृष्ण्यभ्यक्षम् श्रुकः ॥ ८॥ जन्ताः वङ्कित्थं कारम् कर्गवान् मधूनृतनः । कार्क्षमः वीर्वामानिता कत्व्वश्वितिव ताक्रिनि ॥ ७॥ भवानतः श्वना द्वाप्ति वानित्वानि धनाधनाः । शात्रश्चि जः त्र शक्यवां नृज्यश्वन्तरमा मूना ॥ १॥

विश्ववामी।

परमत्त्रित्रमः परम निश्चरमन चथरर्षन छनाः नि खविनवानानि ह देखः । ०।

क्षवत्रअध्यक्षत्रमण्यः वसः (इस्ता (इस्ताकि चेन्याः भूकः मन् उत्त कारविक छेन्दिमकीकि छथ। । । ।

खदान विचना । ६॥

বছভিথে বছতরে কালে অভিক্রান্তে। ৬।

यनायना रेट्छाकः भार वर्षस्था (मयाः। शावस्थित नृकास्थित ॥ १ ॥

क्रमम्बर्धः ।

न परविछ । क्वांतिविश छिवचर्तुः नमस्त्रां छ वः न देखार्थः उम्म कर्गवछवः ॥ ३ ॥

नत्मभूभरत्भः धक धक्षका विद्यामानः ॥ ८ ॥

বছভিখে বহুনাং প্রণে কালে বহুবুগগণ সংখ্যা তিথুগিতি প্রণ প্রকরণে পাণিনিজ্জং। বীর্যাং ভক্তিপ্রভাবং ভদাণরতেন বশীকৃত ইতার্থ: । ৬। ৭। ৮। ৯।

विवनाथठकवर्त्वी।

क्षत्रश्रीह्मह्दात्रनक्षनः वृक्षः छेवर्गः छेवत्रवाषः नन् ब्रह्मकावनः ब्रह्मानादेश । । ।

मत्मनम्भारतमः शकः वः भूत्व। ज्वा शक्खिविवाछि छः । ६ ।

বহু তিখেতি বহুনাং পূরণে বহুতরে কালে অভিজ্ঞান্তে সভীভার্থ: বহুব্গগণসভাৱ ভিথুপিতি পূরং। কার্দ্মং বীর্থাং কর্মনত ভক্তিপ্রভাবং আপরতেন বশীকৃত ইভার্থ:। অধিরিব দাক্ষীতি তস্যামন্তর্গানিরপেণ ছিতএব স প্ররপেণ প্রকটীবভূবেতার্থ: ১৬৪ ঘনাঘনা গর্জতো মেঘা ইব দেবা ইতার্থ:। বহু কাজা ঘনাঘনা ইভামর: ৪৭৪

ত্মি ধৃতত্ততাই আছে, একণে ইন্দিয়দমন, অধর্মাচরণ, তপস্থাসুষ্ঠান এবং ধনাদি দান বারা শ্রেছা প্র্বেক ভগবানের আরাধনা কর ॥ ৩ ॥

থিরে। তুমি ভগবানের মারাধনার প্রস্তুত হইলে তিনি মামার যাশ: বিস্তার করিয়া ভোষার পুত্র রূপে জন্ম গ্রহণ করিবেন এবং তোমাকে পরম জন্ম উপদেশ করিয়া ভোমার হৃদরগ্রন্থি মর্থাৎ সংদার বন্ধন ছেদন করিবেন। ৪॥

বৈজেয় কহিলেন বংগ বিছুর! কর্দম প্রজাপতি এই প্রকার আদেশ করিলে দেবছুতি গৌরব করিয়া তাঁহার উপদেশ বাক্য গ্রহণ করিলেন এবং তাহাতে সম্যক্ বিখাস করিয়া স্ক্রিকাল ব্যাপি পরম পুরুষ ভগবানের আরাধনায় প্রবৃত্ত হইলেন । ৫ ॥

প্রপ নারাধনার বছতর কালু অতিক্রাম্ভ হইল, কাঠে যেমন অগ্নি উৎপদ হয়, তাহার ন্যায় ভগবাৰ মধুসুদন কর্মনের বীর্ব্য আশ্রেয় করিয়া দেবহুতির গর্ক্তে ক্রম গ্রহণ করিলেন ॥ ৬ ॥

यथन मिरह जित्र गर्ड अगरान् छेर्पन इहेरान ज्थन गंगममश्राम यह क काधत शहेन हहेरा विविध वामा हहेन अवः गंकर्सन् शान कतिराज गामिन ७ चन्पता नकन जानत्म नृज्य जाता कतिन ॥ १॥ পেছ: ক্ষমনগো বিখ্যাঃ খেচবৈরশবর্জিনাঃ । প্রেসেছ্নত বিশাং নর্ধা অন্তাংকিচ ন্যাংকিচ এ ৮॥
তৎ কর্মনগো বিখ্যার ব্যক্তা পরিপ্রিক্ষণ ব্যক্তা সাকর্বিভিন্ন রাজ্যারিভিন্ন সালাল বিভাবের পরং এলা দক্ষেনাপেন শত্রুহন্ । তত্ত্বংপ্যান বিভাবের কাজঃ বিশ্বাক্ষণ পরাই ॥ ১০॥
সভাজরব্ বিভাবের চৈত্রণ ভক্তিকীর্ষিতং । প্রক্ষেনাশৈরক্ষিঃ ক্ষুন্নক্ষ্মগ্রাং ॥ ১১॥
শীক্ষেনাবাচ ॥

ত্বলা বেছপছিভিতাত কলিতা নিৰ্বালীকতঃ। ৰাজ গঃলমূহে খাক্যং ভৰানু মানদ কানৱৰ ॥১২ ॥ এতাৰত্যেৰ শুলাৰা কাৰ্য্যা পিত্ৰি পুলুকৈঃ। খাচুমিত্যমুমন্যেত গোৱৰেণ শুৱোৰ্ফ্চঃ ॥ ১০ ॥

विश्वतामी।

অপবর্জিতা মুক্তা: 🕪 🛚

পরিশ্রিতং বেষ্টিতং । ৯ ।

আগত্য কিং ক্লওবান্ তদাহ ভগবভ্যিতি বাভ্যাং তথানাং সংখ্যানং যদিন্ ভক্ত সাংখ্যাস্থিকটেন্তা বিশেৰেণ ভাগনার ভগবভং ভাতং বিবান অভাে বন্ধা বরাট্ খতঃ সিম্ভানঃ ॥ ১ • ।

ভক্ত চিকীবি তিং সভাজয়ন্ প্ৰয়ন্। প্রবামাণে রহ্মভি রিপ্তিরৈরণলক্ষিতঃ কর্দমঞ্চেদমভাধাৎ ইতি ছবোরবয়ঃ ৷ চকারাৎ দেবতুতিক ॥ ১১ ॥

ভত্ত ব্য়েতি পঞ্জি: কৰ্দমং প্ৰাৰ অপচিতিঃ পূজা কৃতা। বৰখাৎ নিৰ্পট্ধ সমাকৃ গৃহীভবান্ । ১২ এ সম্মন্তাত্তি বনেতাৰভোৰ । ১৩ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

खगवस्ति वि युग्नेक्श ॥১•।১১।১२।১०।১৪।১৫।

श्चीवित्रतायमञ्जालको ।

অপবর্জিতা বিস্টা: ॥ ৮ । পরিপ্রিতং বেষ্টিতং ।
সংঘন শুদ্ধসম্প্রজ্ঞানেশ অংশেন নতু পূর্ণসকলেণেভার্থ: । ভাষদা সংখ্যানং বানিন্ তদা সাংখ্যা বিজাই বিশেষণ আপনায়
সাভ্যাবিত্তিঃ ধানস্ পভালনম্ পূজ্বন্ প্রজ্বামাণৈরস্ভিবিজ্ঞিকৈশ্বসাক্ষিতঃ কর্মকালাকেবহুভিক । ১০ । ১১ ।
অপচিতিঃ পরিচর্যা কুতা ॥ ১২ ॥ পুত্রিকঃ সংপ্রজঃ । বাঢ়মিতি যধাঞ্চাপদ্দি তথা ক্ষমণীতি ॥ ১০ ॥

অপন আকাশ ইছতে অনরবৃদ্ধ কর্তৃক পরিমুক্ত দিব্য পূচ্প বৃষ্টি পতিত ছইতে লাগিল, জার দিক্, জল, তথা সর্ব্ব প্রাণির মনঃ প্রসন্ন হইয়া উঠিল ॥ ৮ ॥

ছে শক্তিনাশন বিহুদ্ধ। ভাদনন্তর মরীটি প্রভৃতি ধ্রমিণণ সমৃতিব্যাহারে প্রক্রা কর্দ্ধির আগ্রেম

স্বতঃসিদ্ধ জ্ঞান প্রভাবে ত্রক্ষার বিদিত হইল যে,বিশেষ রূপে সাংখ্য জ্ঞান উপদেশার্থ পদ্ধস্থক্ষ স্থাত ভগষান সন্ধু সংশোধান গ্রহণ করিয়াছেন ॥ ১০॥

বিহুত্ত চিত্ত থারা ভগৰানের ঐ চিকীর্ষিত অবগত হওরাতে তদীয় বাসনার প্রশাসো করিলেন পরে প্রহাউন্সিয়ে হইয়া আনন্দ প্রকাশ পূর্বক কর্দম এবং দেবহুতিকে বলিলেন । ১১॥

विश्वा संबंधकः कर्षमध्य गरेबोधन कड़िया कहिरतन, दर जाउः। पूनि नर्भीकः स्वकारित क्षिप्तीत श्रृका कतिरत, द्य एक्ट्र व्यक्त एटि व्यक्तित स्वित्वान त्रान न्युक्तक व्यामात वीका खर्षन क्षित्री है ॥ अरे ॥

यहन । निजापि खेल्लिनारक रकान चार्तन क्षिति "र्य बोकान विशे क्या विशा रतीन्नव दाननिन भूक्षक रये बाना क्षेत्रा छोहरिक छल खेलावा भूजरेनेत्र निजात खाक वह दोकात रनेवा क्रति कर्वेरा ॥>० देमां क्वितः महाक्ष्य वश्य व्यवध्याः । वर्गातकः व्यक्षादेशः देवत् रहतियाधि देवक्षां ॥ २०॥ व्यव्यव्यविष्ठां वर्षाचेतः यथाक्षि । वाष्ट्रवाः शतिरमञ्जा विकृषि वरणाकृषि ॥ २०॥ देवताव्यानाः भूत्रमत्त्रवेक्षानाः वर्षामानाः भूत्रमत्त्रवेक्षानाः वर्षामानाः वर्षामानाः वर्षामानाः वर्षामानाः वर्षामानाः वर्षामान् वर्षामानाः । वर्षामानाः वर्षामानाः वर्षामानाः । वर्षामाना

विषक्त्रानी ।

चारनक्षा श्राप्तादेव वर्रतेन वृर्व्यिवासि वर्षतिवासि । ३८ ॥

প্ৰিমুখোভো মরীচালিভা: 🛚 ১৫ 🗳

भूजव ना कानी वन थे एकाह दनहाइनिकि। त्नविश निर्मेश नर्भा के हेमर इ १७ इ

দেবছুতিং প্রত্যাহ ত্রিভি:। জ্ঞানং শাত্রোখং বিজ্ঞানমণরোক্ষং তে এব বোগ উপার তেক কর্মণাং কটা: মূলাসি বাসনা উদ্ধান উৎপাট্যিবান প্রমুত্তাযুক্তং প্দাযুক্তং বস্য । ১৭ ৪

रह मानवि कविना। चत्रभाखानः नःभना मिथाकानानि **उत्रतः छव जनत**शिवः । ১৮ ।

क्रमगण्डः।

(अब् गांग्रवा क्रांप्रा ॥ ३७। ३१ ॥

क्षित्रातिकमत्मावार ছिष्टि @ अतर । अभवर श्रीकृषीय स्थान क्षत्रकाश्वकवार। उद्य म मार्करिक जिनामगानिकक

श्रीविधनायहरूवर्थी।

্ৰতব পূজা যদ্যজনিষ্যস্ত ভদাপোৰং সৰ্পো নাৰ্ছিষ্যত। বধা আভিছ্ ছিত্তিঃ সূৰ্গো বিস্তার ক্ষিত্রতে ইত্যাহ ইমা ইতি পাঞ্চিৰঃ প্রভাববৃত্তিরংগৈঃ ১৪। ১৫।

স্মার্টরৰ ভূতানাং শেববিং নিধিং স্বাভীইপ্রদং সাধিক জানাদি প্রদাভারং বিস্তাণং বন্ধ তল্প নিভাদেহমেৰস্বভীণ-মিকার্গং ৪১৬ ॥

দেবহুতিং প্রত্যাহ জ্ঞানং পরোক্ষং বিজ্ঞানমূপরোক্ষং তে এব বোগ উপায়জেন কর্মণাং ক্রটা ক্লালি বাসসা উদ্ধান উৎপাই-যিতুমিতার্থঃ। অবিদ্যা অরূপাজ্ঞানং সংশয় মিধ্যাজ্ঞানানি ভন্তবং ক্লক্পছিং ৫ ১৭ ৪

অয়ং সুসম্মত ইতানাস্ত সিদ্ধবিশেবঃ কপিলে। দর্শনকর্তা ন মুঠু সমতঃ বেদবিকদানীধারবাদান্তবৈধিছি পাল্লকরং ভাষাক্ষতি-কৃত্যং। কপিলো বাসুদেবাধান্তবং সাংখ্যং অগাদহ। একাদিভাশ্চ দেবেভো ভ্রাবিভাশ্ববৈচ । ভবৈধান্তবন সর্ববেদাইর্থকপ-

বংস! তোমার এই সকল হারপা তনয়া পতিপরায়ণা হাইবেন এবং ইহাঁরা স্ব স্থাংশ ছারা অনেক প্রকারে আমার স্টে বৃদ্ধি করিবেন॥ ১৪॥

অতএব এই সকল প্রধান ঋষি মরীচি প্রভৃতি আমার সমভিব্যাহারে আগমন করিয়াছেন, বাঁহার যে রূপ শীল বিবেচনা করিয়া বেচ্ছাক্রেমে অস্যই আপন ক্সাদিগকে এই সকল পাত্রে সম্প্রদান কর, তাহা হইলে ভূমগুলে ডোমান্ন যশং বিশ্তীণ হুইবে । ১৫ ।

হে মুনে। ভোষার এই যে পুরুতী, ইনি সাক্ষাৎ ঈশ্বর, দেখিরাই আমি জানিতে পারিলান, আদ্য পুরুষ ভগবান স্থীয় সারাজারা প্রাণি সমূহের সর্বাভীউপ্রদ এই দেহ ধারণ করিয়া কণিলরণে তোমার ক্তে অবতীন ইম্মান্তের ॥ ৩৬॥

তদনন্তর দেবহুতির প্রতি দৃষ্টি নিকেপ করিয়া কহিতে লাগিলেন দংগে ! তোমার এই বালকটির ছফুর্জ্বর প্রস্তৃত্যী, কেল ছিরণার্থী এবং পালগায়ে শক্ষ্মলা রহিয়াছে; ইনি সাধান্য বালক নহেন, শাল্লকন্য জানু ও পরোক জানুরুপা তপায় বাল্ল কর্মল আলানকে লখুনে উৎপাটন করিবেন ॥ ১৭ ॥ হে মানবি ! ইনি কৈটজনাশান জগবান, তোলার কর্মে প্রতি হইরাছিলেন, ইনি ভৌমার অবিদ্যা

णतः निष्मनाशीनः সাংখ্যাচার্টিয়ঃ স্থলমতঃ। লোকে কলিন ইত্যাধ্যাং পতা তে কীর্তিবর্ত্তনঃ ॥১৯
শ্রীনৈত্তের উবাচ ॥

এ বিভাগৰত য

ভাষাখান্য জগৎঅন্টা কুমারৈ: নহ নারদ:। হংসো হংসেন যানেন ত্রিধান পরসং যথো॥ ২০॥ গতে শতগ্রতো ক্তঃ কর্দনন্তেন চোদিত:। যথোচিতং ক্ষত্তিতুঃ প্রাণাধিশক্তরাং ভতঃ॥ মরীচয়ে কলাং প্রাণাদনসুয়ামধাত্তিয়। প্রধানসিরসে ফছৎ পুলস্তাার হরিভুবিং॥ ২১॥

विश्वचामी ।

অ্সন্মত: সুপুঞ্জিত: সন্ গস্তা প্রাঞ্চাতি । ১৯ ।

কুমারে: সহেতি শেবঃ। সহ নারদ: নারদসন্থিত । মরীচ্যাদীন্ বিবাহার্থমবস্থাপ্য নৈটিকৈ রেটেড: পঞ্জি: সহিতো হংসো একা ববৌ অধায় ভূতীরং ধায় অর্গ: তস্যু পরাং কাঠাং সভ্যাদোকং ॥ ২০ ॥

শভরতৌ ত্রন্ধণি ॥ २১ ॥

ক্রমসমর্ভ:।

लाकि छार्थः बर्याक्षवामाविकि विरवहमीबर ॥ ১৮॥

चार्ययिष्ठ । चार्याच विद्यंचः क्रिलान्यम्भक्षं। न सूत्रच्छः । दिन्दिक्षानीचरदोन्न । ७देववदि शान्नद्वनः । ভाষাকृष्ठि-कृष्ठः । क्रिला साञ्चरत्वाया चुच्चः त्राःथाः चशान्द । उत्तानिकान्त स्वर्याक्षेत्र ज्वानिकाच्येयकः । ७देववास्त्रदत्र तर्वद्वनादेवकः न दृश्विष्ठः । तर्वद्वत्व विक्रष्ठकः क्रिलाक्टना वशान्द । त्राःथासास्त्रदत्वक्रनोदेषः कृष्ठकंशविद्वः विक्रिकः । ১৯। २०॥

कनाशाः नर्सा ध्वर क्रश्वकक्रियन व्यक्ता ॥ २५॥

विविधनाथहळावळी ।

বুংৰিভং। সর্কবেদ্বিকদ্ধ কলিলোনো। দ্বগাদ্ধ। সাংখ্যান্ত্রের্ন্ট্র কুতর্কপরিবুংৰিভনিভি॥ ১৮। ১৯॥

কুমারি: স্বেভি শেব: । ম্রীচ্যাদীন্ বিবাহার্থমবস্থাশ্য নৈটিকৈরেটেঃ পঞ্জি: স্থিতো হংলো জন্ধা জিধান তৃতীরং ধাম স্প্রিয়াদ্পি প্রমং স্ভালোকং । ২০ ॥

नेक्ष्रको उक्ति व्यामिकः भारतामिकमनिक्तमा विवेशकाः विवेशकाः ॥ २১ ॥

অর্থাৎ শ্বরূপের অজ্ঞান এবং সংশয় অর্থাৎ মিধ্যা জ্ঞান শ্বরূপ ক্লয়গ্রন্থি ভেল করিয়া অবনীমগুলে বিচরণ করিবেন ॥ ১৮ ॥

পুত্রি! ইনি সিদ্ধানের অধীশ্বর এবং সাংখ্যচার্য্য কর্ত্ব পুলিত হইয়া লোকে কপিল এই আখ্যা প্রাপ্ত হইবেন অতএব ইহাঁ হইতেই তোমার কীর্ত্তি বৃদ্ধি পাইবে ॥ ১৯॥

মৈত্রের কহিলেন কর্দ্দম এবং দেহুতিকে এই প্রকার আখাদ প্রদান করিরা জ্বনা হংস্থানে আরোহণ পূর্বক্ নারদ ও অন্য কতিপর কুমার সহ তৃতীয় অর্গের পরা দীমা সভ্যলোকে গমন করিলেন। অর্থাৎ বিবাহার্য মরীচ্যাদি বিপ্রদিগকে সেই স্থানে সংস্থাপন পূর্বক পাঁচক্ষন নৈষ্ঠিক ক্রন্ধচারি সম্ভিব্যাহারে অস্থানে প্রতি নির্ভ হুইলেন ॥ ২০ ॥

পাহে বিছর ব্রক্ষা গমন করিলে মুনিবর কর্মন তাঁহার আদেশার্মুসারে সেই সকল বিশ্বস্থী থবি-গমতে যথাবিধি পাত্মকভা সম্প্রদান করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। মরীচিকে কলা, পত্রিকে প্রসূত্রী, অসিরাকে প্রদা এবং পুলস্তাকে হবিছু নামী কন্তা প্রদান করিলেন ॥ ২১॥ পুনহার গজিং মুক্তাং ক্রন্তবৈচ ক্রিয়াং সভীং। খ্যাতিঞ্চ ভূগবে যদ্ধং বলিষ্ঠারাপ্যক্রন্তীং। ২২ অথব্বিশেহদদাক্রীন্তিং যায়া বজ্ঞা বিক্রন্ততে। বিপ্রবিভান ক্রুতোবাহান্ সদারান্ সমলালয়ং॥২৩ তত তে অধ্যঃ ক্রেই ক্রুতদারা নিমন্ত্রা তং। প্রাতিষ্ঠরন্দিমাপারাঃ বং অমাপ্রমন্তবাং॥ ২৪॥ সচাবতীর্বং ক্রিমুগমাজায় বিবৃধর্বভং। বিবিক্ত উপসংগম্য প্রথম্য সমভাব্ত ॥২৫॥ প্রকর্ম উবাচ॥

অহো পাপচ্যমানানাং নিরয়ে স্বৈরমঙ্গলৈ:। কালেন ভ্রদা নৃনং প্রদীদন্তীহ দেবভা: ॥ ২৬॥

श्रीभवतामी।

যুকাং যোগ্যাং অয়ন্ত্ৰং আদাং ॥ ২২ ॥
বিতন্যতে সমূদ্ধ: ক্রিয়তে শাস্ত্রাধিঠাতীং দেবভামিত্যর্থ:। সমলালরং সম্বোধিতবান্ ॥ ২৩ ॥
নিমন্ত্র্য পৃষ্ঠা। নন্দিং হর্ষং প্রাপ্তাঃ সম্ভঃ ॥ ২৪ ॥
সচ মুনিঃ ত্রিযুগং বিষ্ঠুং বিবিক্তে রহসি ॥ ২৫ ॥
পাপচ্যমানানাং ভূশং দক্ষমানানাং নিরবে সংসাবে স্বীবৈরমক্টেলঃ পার্টিগঃ ॥ ২৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

অরুদ্ধতীচ পাতিত্রতাশক্তি জেরা ভরামাহি পতীচ্ছারোধনাকরণাৎ বুকামিতি সতীমিতি চ সর্ব্ধত্র বোজ্যং ॥ ২২ ॥ এবং বরেতিচ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

নাধারণ্যোপি দেবতা ভূষদা কালেন প্রসীদন্ধি দং ন তথেক্যাহ ॥ ২৬ ॥ বহিবতি যুগ্মকেন। তত্তানাধারণদ্বনাহ প্রথমেন। বোগো ১টাকঃ সভক্ত সংক্ষমাত্র বশত্বমাহ। বিতীয়েন স্থানাং ওক্তকানাং পকাষ্ণতঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

এ বিশ্বনাথচক্রবন্তী।

যুক্তাং বোগ্যাং ॥ ২২ ॥ ষরেতি শাজ্যৈর তপো যজ জানবজ্ঞান্য বিভৃতাঃ সফ্লা ভবস্তীতার্থ: ॥ ২৩ ॥ নিমন্ত্র পৃষ্ট্র নন্দিং হর্বং ॥ ২৪ ॥ সচ মুনিঃ ॥ ২৫ ॥

মদগৃহে খদাবির্ভাবে নিরুপধিশ্বৎ কুপের কারণং নতু মরি কিঞ্চিল্লশমন্তীতাছ অহা ইতি ত্রিভি:। অত্র লোকে ত্রিবিধা জনা দৃশাতে দেবতাশ্বরোপাসকা তারজাপাসকা ভগবত্পাসকাশ্ব। ভ্রাদ্যানামুপাসনাকবদশাং দর্শরতি। পাপচ্যমানানাং নিরুষে সংসারে সংস্থ্যানানাং ভূরসেতি একমিরপি জন্মনি চেৎ প্রসীদ্ধি ভদপি ভূরসৈর কালেন নতু শীল্পমের তত্ণত তত্তৎ কামিতানি ফ্লান্যপি দদতি ॥ ২৬ ॥

অপর পুলহকে তাঁহার উপযুক্তা গতি নামী কন্তা, ক্রতুকে ক্রিয়া, স্থাকে খ্যাতি, তথা বশিষ্ঠকে অক্লব্ধতী সমর্পণ করিলেন॥ ২২॥

আর যে পান্তি হারা যজ্ঞ সমৃদ্ধ করা গিয়া থাকে সেই শান্তি নাপ্নী তুনয়া অথব্যাকে প্রদান করিলেন। মুনিবন্ন কর্দম এই প্রকারে কন্যা সম্প্রদান করিয়া সাদরে ঐ সমস্ত বিজ্ঞোষ্ঠ জামতাদিগকে কিছুকাল সাসন করিলেন ॥ ২৩ ॥

আহে ৰিছুর! তদনন্তর দেই দকল ঋষি কৰ্দমের অনুক্তা গ্রহণ পূর্বক দহর্ষ মনে স্ব স্থাপ্রমের প্রতি প্রস্থান করিলেন॥ ২৪॥

উহোরা সকলে বিদায় হইলে প্রজাপতি কর্দম, দেব শ্রেষ্ঠ ভগবান্ বিষ্ণুকে স্থীয় গৃহে অবতীর্ণ জানিরা নির্দ্ধনি উহির সহিত সাক্ষাৎ করিলেন, এবং প্রণাম পূর্বক তাঁহাকে কহিতে লাগিলেন ॥ ২৫ অহো । কি আশ্রেরা । বে সকল খ্যাজি এই সংসারে পাপ রূপ অগ্নি বারা অতিশয় দহ্মান, তাহা-দের প্রতি বহুকালে দেবকা সকল প্রসন্ধ হয়েন ॥ ২৬ ॥

বহুজন্ম বিপক্তেন সম্যগ্যোগসমাধিনা। দ্ৰাফ্টুং যততে যতয়ঃ শূন্যাগায়ের যৎপদং ॥ ২৭ ॥
স এব ভগবানদ্য হেলনং ন গণষ্য নঃ। সৃহের জাতো আম্যাণাং বঃ স্থানাং পশ্পোষণঃ ॥ ২৮ ॥
বীয়ং বাক্যমূতং কর্ত্ত্বিতীর্ণোসি মে গৃছে। চিকীর্র্ডগবন্ জ্ঞানং ভ্রুভানাং মানবর্দ্ধনঃ॥ ২৯ ॥
তান্যেব তেহভিত্তপাণি রূপাণি ভগবংশুব। যানি বানিচ রোচন্তে স্ক্রমানা মর্লপিণঃ॥ ৩০ ॥

अध्यक्षामी ।

কুতঃ সর্বাদেবতাঃ প্রসন্না ইতি জ্ঞাতং। অলভ্যলাভাদিত্যাহ ৰাভ্যাং বহুত্ব ক্ষমন্ত্র বিপক্ষেন স্থাস্থাবোগা ভক্তিবোগং ভদ্মিন্ সমাধিবৈকাগ্রাং তেন শৃক্তাগাবের বিবিক্ত স্থানের বস্তু তব পদং ॥ ২৭ ॥

হেলনমবজ্ঞাং লাখবং নগণব্য অগণবিশ্বা। উচিত্যেব তবৈতদিত্যাহ বন্ধং স্থানাং ভক্তানাং পক্ষং পৃঞ্চাসীতি তথা সঃ॥ ২৮॥
এতং প্রেপঞ্মতি ছাত্যাং। স্থানেবাবতীর্ণোসি। স্থাক্যং তব প্রো ভবিষ্যামীতি বন্ধং স্তাং কর্ত্তুং জ্ঞানং জ্ঞান
সাধনং সাংধ্যক্ষ চিকীর্থ: সন্॥ ২৯॥

যানি তবালৌকিকানি চত্তু জাদীনি রূপাণি তানোব তেংভিরূপাণি রূপাণি যোগ্যানি যানিচ স্বন্ধনানাং রোচত্তে মহুব্য ক্রমসন্ধর্য:।

ভাদুশবাক্যথে হেতু:। ভক্তানামন্দ্রণাল্যাশ্রর রূপাণাং ব্রহ্মাদীনামপি॥ ২৯ ॥

ৰানি যানি ঘণীর অঞ্চনেভ্যোরোচন্তে তানি তান্যেব রূপাণি যোগ্যানি নান্যানীত্যর্থ:। অন্যানিচ যাদৃশং বদস্তি তব অভিরূপাণি যোগ্যানি নান্যানীত্যর্থ:। অন্যানিচ যাদৃশং রস্তিদেবার কুৎসিতং রূপং প্রপঞ্চিতং তাদৃশানি জেরানি তাদৃশস্যচ মারিকদমেবহি ভজোক্তং। তস্য ত্রিভূবনাধীশাঃ ফলদাং ফলনিচ্ছতাং আত্মানং দর্শরাঞ্জুম্বারা বিষ্কৃবিনির্মিতা ইতি। টাকাচ ত্রিভূবনাধীশাঃ

শ্ৰীবিশ্বনাপ চক্ৰবন্তী।

ৰিতীয়ানান্ত বছভিবেৰ জন্মতি: দিছি: সংভাৰ্যত ইত্যাহ। বহিনতি সমাগেব যোগৈ ৰ্য: সমাধি জেন যস্য তব পদং নিৰ্বি-শেবং অৱপং এটুং সাক্ষাৎ কৰ্ত্তুং যততে তৃতীয়েৰু মধ্যে বয়মতিমলা শুদপি তংক্পা মহিমা অপার এবেত্যাহ সএবেতি। হেলনং লোকক্কতাবজ্ঞাং অলাঘবং ন গণ্যা অগণ্যিতা অভাব এবায়ং তে যত্তভাভাসানপূহেকর্যসীত্যাহ। ৰন্তং আনাং ভজানাং পৃক্ষাসীতি তানেবাত্মীয়ান আনাসীতি ভাবং ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

এতদেব প্রপঞ্জতি ৰাভ্যাং জ্ঞানসাধনং সাংখ্যং চিকীবু তিলপি জ্ঞানিভাঃ স্কাশাদিশি ভক্তানাং সান্সাদরং বছরতীতি সঃ। ভক্তিং বিনাভূত জ্ঞানসাফিকিংকরত্বৈব ব্যবস্থাপনাদিতি ভাবঃ ৪২৯ ঃ

তে তব নিত্য সচিত্রনন্দ্রস্য তান্যেব রূপাণি অভিরূপাণি সমূচিতানি সচিত্রনন্দ্রনানীত্যর্থ:। যানি তব স্বস্ত্রনানাং স্বস্তুনেত্য: রোচস্ত ইতি অন্যান্যরোচকানি বস্তুতম্বণীয়ানি রূপাণি ন তবস্তি কিন্তু মারিকান্যেব। যতোহ্রপেণ: প্রাকৃত্রপর-

যতিগণ নির্জন স্থানে অবস্থিতি করিয়া বহু জন্মে ভক্তিযোগ পূর্ব্দক চিতের একাগ্রতা স্থাসিদ্ধ করিয়া তদ্ধার। যাঁহার পাদপল্লের দর্শন প্রাপ্ত হন্॥ ২৭ ॥

সেই এই ভগবান্ আমাদের সমূতা গণ্য না করিয়া আমরা আম্য অর্থাৎ নীচ হইলেও আমাদিগের গৃহে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন। প্রভো! তোমার ইহা উচিতই বটে, যেহেতু তুমি আপনার ভক্তদিগের পক্ষ পরিপুষ্ট করিয়া থাক॥ ২৮॥

অপর হে ভগবন্। আমি জানিতে পারিলাম তুমি আপনার বাক্য অর্থাং "তোমার পুত্র ছইব" এই অঙ্গীকার প্রতিপালন জন্ম এবং জ্ঞান সাধন সাংখ্যশাস্ত্র উপদেশ করিবার নিমিন্তই স্বয়ং আমার গৃহে অবতীর্ণ হইয়াছ। প্রভো। তুমি ভক্তগণের মান বর্জনকারী, এই রূপ করিলে ভক্তদিগের সম্মান বৃত্তি হইবে, এতদ্যিপ্রায়েই এই অবতার স্বীকার করিয়াছ ॥ ২৯ ॥

কিন্তু হে ভগবন্! যদিও তুমি বস্তুতঃ প্রাকৃত রূপ রহিত, তুপাচ তোমার বে সকল ললোকিক

ষাং স্বিভিত্তত্ত্বৰূত্ৎসঞ্চীকা সদাভিবাদাৰ্থপাদশীঠং। ঐশব্য বৈরাগ্য বশোহৰবোধ বীৰ্যঞ্জিয়া পূর্তমহং প্রপক্ষে ॥ ৩১ ॥ পরং প্রধানং পুরুষ্ণ মহান্তং কালং কবিং ত্রিবৃতং লোকপালং। আত্মানুভূত্যানুগতপ্রপঞ্চং ব্রজ্ঞানতিং কপিলং প্রপদ্যে ॥ ৩২ ॥

श्रीभवत्रामी।

ভাষ্ঠপি তে রোচন্ত ইত্যর্থ:। অরূপিণ: প্রাকৃতরূপরহিত্ত । ০০ ।

व्यक्तिवार्गरं शामनीर्वर यञ्च केचर्गाविष्ठः भृतः पूर्वः ॥ ०० ॥

ঐখর্যাদিকং বির্ণুদাহ। পরং পরমেখরং। তত্র হেছুঃ অফ্লাঃ স্বাধীনাঃ শক্তরো বস্ত ভা এবাই। প্রধানং প্রকৃতিরপং পুরুষং তদ্ধিষ্ঠাতারং। মহান্তং মহত্তর্রপং কালং তেবাং ক্লোভকং। তিত্তসহলাররপং। লোকাত্মকং তৎপালনাত্মক। তলেবং মাররা প্রধানাদিরপতামুক্ত্যা নিপ্রপঞ্চতামাহ। আত্মাসুভ্ত্যা চিচ্ছক্ত্যাস্থাতঃ অত্মিন্ লীনঃ প্রপঞ্চো বস্ত তং কবিং স্ক্রিজং প্রধানাদ্যাবির্ভাব লয় সাক্ষিণমিভার্থঃ॥ ৩২॥

क्रममन्द्रः।

ব্ৰহ্মালয়: মারা তলীয় ধৈৰ্য্যপরীক্ষাৰ্থ: প্রথমং মার্যা ব্ৰলালি রূপেণ প্রছিতা: সম্ভ ইত্যেষা। অনভিরূপতে হেছু:। অরূপিণ ইতি। প্রাকৃত রূপ রহিত্ততেতি টাকাচ। অপ্রাকৃত্বেন কুংসিতভাসস্তবাৎ অফনেভ্যোরোচমানভালেবং রূপং ঘোগাং ন ভবতীতাপি নেতি ভাবঃ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ কবিং জীবং ॥ ৩২ ॥

डे।विधना शहक वडी ।

হিতস্যেতি স্থামিচরণানাং ব্যাথ্যা। বৈরাজক্ষপদ্য কৈশ্চিস্ককৈঃ প্রথমদশারাং ধ্যেরন্থেন রোচকন্থেপ্যারত্যামরোচকর্থাৎ তদপি ক্লপং প্রকৃতন্থার ভগবতঃ স্থীয়ং ক্লপমিত্যাশয়াং ॥ ৩ • ॥

ভক্তজন রোচকস্যাভিত্রপস্য লকণং বদরেব শ্রীকণিলদেবং বিশিনটি স্বামিতি। ঐশ্ব্যাদীনাং বরাং ভগশন্ধবাচ্যানাং চিম্মর গুণানাং পৃষ্ঠং মছা তড়াগং তেন ভক্তানামভিবাদনার্চন পরিচ্গাদি বিষয়ীভূতং বতৈত্বব্যপূর্বং অরপমেবাঞাক্তং ভব রুগমিতি দ্যোভিতং॥ ৩১ ॥

উন্ধ্যাং বিরুণ্ দেবানভিজ্ঞপমপ্যাহ। পরং ঘডোছন্যং বহিরক্ত্রপং প্রধাসাধিকমণি বাং ক্পিল্মের প্রপালে। তত্ প্রধানং প্রকৃতিরূপং পূক্ষং জীবং মহান্তং মহন্তক্ত্রপং কালং তেবাং ক্ষেভকং কবিং প্রতেষ রূপং ত্রিকৃতমহন্বাররূপং লোকপালমিলালাল্যক্ত্রে কিঞ্চ প্রপঞ্চার্থানিখাং প্রপঞ্চর আন্তর্ভাগ চিল্ল্ড্র্যা প্রপঞ্চারহিং হিতেনাণি অনুপত্যেইকৃত্রে প্রথমি হার প্রথমি আন্তর্ভাগ চিল্ল্ড্রা প্রপঞ্চারহিং হিতেনাণি অনুপত্তেইকৃত্রে প্রথমি হার প্রথমি কাল আন্তর্ভাগ ক্রিক্তরা মারাল্য যায় তং। ছিল্লিয়া মারালিভিঃ শক্তিভিরের সর্বন্ধ্র প্রথমি কাল ক্রিক্তরাং মারালীনাং ভক্তিরেনাভির্বাৎ তং কার্যাণাঞ্চ তদভির্বাৎ তবৈবেদং সর্বাং মারিকং রূপমন্তির্পনিভার্থঃ এই ।

চতুতু জাদি রূপ এবং যে যে রূপ তোমার ভক্তজনের অভিক্রচি হয়, সে দকল রূপই তোমার উপযুক্ত ॥ ৩ • ॥

হে প্রভো! পণ্ডিতগণ আত্মতত্ত্ব অবগত হইতে অভিলাষ করিয়া সর্বাদা তোমারই আরাধনা করিয়া থাকেন, তোমার পাদপীঠই অভিবাদনের যোগ্য এবং তুমি ঐখর্য্য, বীর্য্য, যশঃ, শ্রী, জ্ঞান, বৈরাগ্য, ইত্যাদিত্তে প্রিপূর্ণ, অতএব আমি তোমারই শরণাগত হইলাম। ৩১॥

হে ইশ। তুমি পরমেশ্বর, যেহেতু তোষার শক্তি বাধীন, তুমিই প্রধান অর্থাৎ প্রকৃতি বরূপ, তুমিই পুরুষ অর্থাৎ প্রকৃতির অধিষ্ঠাতা, তুমিই মহৎ অর্থাৎ মহতত্ত্ব, তুমিই কাল অর্থাৎ সকলের ক্লোক্ত, তুমিই কবি অর্থাৎ সুক্র ভালুরূপ, তুমিই ত্রিবিৎ অর্থাৎ অহঙ্কার বরূপ, তুমিই লোকপালে অর্থাৎ প্রকৃত্তির পালুক এবং এই প্রপঞ্চ বাহাতে জ্ঞানশক্তি যারা লীন হয় তুমি সেই সর্ব্বহ্ন অর্থাৎ প্রধানাদির অভিনিধ্ধ ও তিরোভাবের সাক্ষি অভএব আয়ি তোমারই শরণাপন হইলাম । ০২ ।

আম্মাভিপুচ্ছেদ্য পতিং প্রজানাং ত্রাবজীর্ণ উতাপ্তকাম:। পরিব্রজৎ পদবীমান্তিতোহং চরিষ্যে ছা হৃদি বৃ্গুন্ বিশোক:॥ ৩০॥ শীভগবাসুনাচ॥

मन्ना तथाकः हिलाकम् धर्मानः मठारमोकिरक । अथाक्रिन मन्ना जूकाः यंनरवाष्ट्रमुखः मूरन ॥ ७४

शिभवतामी।

সর্যাসাল্কাং প্রার্থরতে। আত্মাভিপ্ছে যৎ কিঞ্চিপি পৃদ্ধায়ীভার্থ:। তয় পুত্র রপেণ অবতীর্ণানি নির্ভানি খণানি দৈবাদি
রূপাণি:বয়্য সঃ। আপ্রকামশ্চাহং পরিব্রল্পতাং সংস্থাসিনাং পদবীং মার্গমাঞ্জিত: সন্ ভা ভাং বৃঞ্জন্ ত্ররন্ বিচরিব্যামি । ৩০ ॥

অহং তাবদ আনোপনেশানৈৰ বন্ধাহে অবতীৰ্ণ: অতত্তব গৃহে বসতোপি মুক্তি: স্বলভৈৰ বন্যপাৰশাং গৰবামেৰ ইত্যাগ্ৰহ: তথাপি মামেৰাজ্মৱৰ্ গদ্ধেত্যাশ্বেনাহ ময়েতি বড়ভি:। সভালৌকিকে বৈদিকে লৌকিকেচ কড়ে। স্বোক্তনা প্ৰামাণ্যমভি দুৰ্শয়তি। বন্ধমান্ত্ৰাং তব পুলো ভবিষ্যামীতি অবোচং। অতথ্য তদ্ভং বধা ভবিতি তথা ময়া অজনি জন্মখীকৃতং॥ ৩৪ ।

क्रममन्डः।

ঋণমত্র পিতৃরাজ্ঞাপালন রূপং ॥ ৩৩ ॥

যত্মানারা প্রোক্তং সর্কারের প্রমাণং অথ অভোহেতোরের ময়া অব্দনি ওলগৃহে ব্লাতং। তক্ত হেতৃমের দর্শয়তি। বতুভামবোচং। তদ্পি কুতমিতি। অক্তথা মৎপ্রোক্তন্য প্রামাণ্যং ব্যক্তিচরেদিতি ভাবং। স্তিচ প্রামাণ্যে মমোপদেশমের গৃহাণেতি তাৎপর্যাং ॥৩৪।৩৫

শ্ৰীবিখনাগচক্ৰবন্তী।

শাভীতি পাদপূরণার্থং। আপৃচ্ছে অন্য সংপ্রতি সন্ন্যাসার্থনাজ্ঞাং প্রার্থনে। দ্বনা হেতুনা অবতীর্ণং নির্বং প্রদাঃ স্ক্রেতি পিতৃরাজ্ঞান্ধণং ঋণং বস্য স:। আপ্রকাম: পূর্ণমনোরথশাহং পরিব্রজ্ঞাং সন্ন্যাসিনাং পদবীং আদ্বিভেদাং কৃদি বুজন্ মন্ চরিব্যে যতন্ততঃ পর্যাটিয়ামি অত্র শীক্দমেন মনস্যেবং পরাম্টং শুক্রাভিধানে শীনারারণে মৎপ্রভৌ মনাজ্মত এব দাস্যনিষ্ঠা বরীবর্ত্তি। সংপ্রতি পূজীভূতেচামিন্ ছ্র্পার বাৎসল্যমপ্যদেষ্যত্যেবেতি দাস্যবাৎসল্যন্থোগপদ্যং ন রসাবহং। কিঞ্চারমীশবঃ শতজ্ঞব মাং শোকসমূদ্রে নিমজ্যাতিরাদেব প্রব্রজ্যত্যতঃ প্রথমমহমেব কিং ন প্রজ্ঞামি। নচ গৃহেহবতীর্ণং প্রভুং বিহার গছেতো মমাত্রাপরাধো যতোহ্মাকং বৈষ্ণবানাং মতে ভলনীয়ঃ প্রভুং ধন্ ভলনাধীন ইতি ভলনীয়াদপি ভলনে ভূয়ানাগ্রহঃ কর্ত্ব্যুচিত ইত্যস্য ভলনমেবঃই্থামিকং বিবিক্তারণ্যে নিপ্রভূহং চিকীর্ষামীতি ॥ ৩৩॥

ভো মহামুনে দং মদভিপ্রেডমেব চিকীর্ষসি সর্কাং ত্যক্ত্য মন্তজনস্য মরৈব কর্ত্তবাদ্ধন প্রোক্তশাদিত্যাহ হি নিশ্চিতং
ময়া যৎ প্রোক্তং সর্কা ধর্মান্ পরিত্যক্ষোত্যাদি গীতোপনিষদাদিভি তাদেব লোকস্য প্রমাণং। ক সত্যলৌকিকে সতি সর্কোভ্রমেহলৌকিকে জয়মর্থা:। লোকে ভবো লৌকিক জিবর্গ প্রাপ্তিলক্ষণো ধর্মন্তত্ত মন্বাদিভিরপি প্রোক্তং লোকস্য প্রমাণং।
জলৌকিকন্তত্তিয়ো মৎপ্রাপ্তিলক্ষণো যোধর্ম তাত্ত সর্কোভমভাগবতধর্মে ময়া প্রোক্তমেব লোকস্য প্রমাণং। বহুক্তং।
যে বৈ ভগবতা প্রোক্তা উপায়া আত্ম লক্ষর ইছি। জাতত্ত্বা সাধু বিচারিতং বং সর্কাং ত্যক্ত্য বামীতি ভাবং। খোকস্য
প্রামাণ্যমভিদর্শন্তি অথ অতএব মায়া অজনি বন্তুভাং তব পুত্রো ভবিব্যামীত্যবোচং। তং শ্বভং সভ্যমেব ॥ ০৪ ॥

প্রভো! তুমি পুত্ররূপে অবতীর্ণ ইইবামাত্র আমার ঋণত্রয় নির্ত্ত ইইয়াছে, ভাহাতে যদিও আমি প্রাপ্তকাম ইইয়াছি, তথাপি ভোমাকে কিঞ্ছিৎ জিজ্ঞাসা করি। তাহার পর আমি পরিপ্রাজকদি-পের বন্ধ আশ্রেয় করিয়া হৃদয় মধ্যে তোমাকে শরণ করত নির্ভয়ে অবনীমণ্ডল বিচরণ করিব ॥ ৩০॥

ভগবান কপিল কর্দমের এই সমস্ত বঁচন প্রবণ করিয়া কহিলেন, হে মুনিবর ! বৈদিক প্রবং লোকিক কত্যে আমার উক্তিই লোকের প্রমাণ হইয়া থাকে, ইহাতে আমি ভোমাকে "তোমার পুত্র হইব" এই বে কথা বলিয়াছিলাম তাহা সভ্য করিবার নিমিত ভোমার গৃহহ প্রশ্ন বীকার করিয়াছি ॥ ১৪ এতন্ম জন্ম লোকেং স্থিন মুমুক্ণাং ত্রাশরাং। প্রসংখ্যানায় তত্থানাং সন্মতায়াজদর্শনে ॥৩৫ এব আজ্বপথোহব্যক্তো নক্টঃ কালেন স্থানা। তং প্রবর্তনিজ্ং দেহমিমং বিদ্ধি ময়া ভৃতং॥ ৩৬ গছে কামং ময়া পৃট্টো ময়ি সংন্যস্তকর্মণা। জিছা হৃত্র্র্রেয় মুজ্যুমমূতছায় মাং ভজ ॥ ৩৭ ॥ মামাজ্বানং স্বয়ংজ্যোতিঃ সর্বাস্ত্রত্থানায়ং। আত্মন্যেবাজ্বনাদীকন্ বিশোকোহভয়মূচ্ছিদি॥ ৩৮ ॥ মাত্রে চাধ্যাজ্বিকীং বিদ্যাং শমনীং সর্বাকর্মণাং। বিতরিষ্যে য়য়াচাদে ভয়্রাণতিতরিষ্যতি॥ ৩৯

क्षेत्रवामी।

ছ্রাশ্রালিকাৎ মুমুক্ণাং মুনীনাং আত্মদর্শনে সম্তায় ভরানাং প্রসংখ্যানায় বিশ্বীভ্যন্তরস্যাহ্বক: ॥ ৩৫ ॥
নব্যমাত্মজান সার্গ: প্র্কিদির এব নেদানীমপূর্কবিৎ প্রবর্তনীয়ত্তআছ এব ইতি । অব্যত্তঃ হলঃ ॥ ৩৬ ॥
কামং যথেচ্ছং আপৃষ্টঃ অনুজ্ঞাতঃ । বরা যথা ত্বং গত্তং মাং পৃষ্টবান্ তথাআবস্থাত্বং ময়াপি ত্বরা পৃষ্ট ইত্যর্থঃ । ময়ি সংন্যত্তেন
সমর্পিতেন কর্মণা । অবিদ্যরা মৃত্যুং তীর্মা বিদায়ামৃত্যকুতে ইতি প্রতেঃ ॥ ৩৭ ॥

ভতত মাং প্রমান্থানং আত্মনি স্থামিন্ আত্মনা মনসা অধীক্ষমাণোহভরং মোকং প্রাঞ্জাসি ॥ ০৮ ॥ মাত্রে দেবছুতৈতা। শ্মনীং উন্মূলনীং। ভরমতিশরেন তরিষাতি। প্রদানলঞ্চ প্রাঞ্জাতীতি চকার্স্যার্থ:॥ ৩৯ ॥

ক্রমসন্ত: ।

ख्ठः প্রকটীরুতং॥ ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪०। ৪১॥

শ্ৰীবিশনাথচক্রবন্তী।

স্থাৰতারপ্ররোজনং জ্ঞাপরতি। ত্রাশরাৎ ত্টলিলশরীরাৎ মুমুক্ণাং আপুলর্শনে সংমতার তথানাং প্রসংখ্যানার বিদ্ধীত্য-লবসাক্ষিক: ৪ ৩৫ ॥

অব্যক্ত: সৃদ্ধ: ঈশ্বরে দেহিদেহবিভাগাভাবেপি বৃদ্ধিহি ভগবতী অভেদেপি ভেদং জনরতীতি ন্যায়েন দেহং মরা ভ্তমিতি লোকরীতাৈবাক্তি: সৃদ্ধ: রজক্তম ইতি নিশু পালুর:। স্থিতিস্গনিরোধের গৃহীতা মার্যা বিভোরিতি বজ্জেরা ॥ ৩৬॥

মন্ত্ৰ পৃত্তি হৈ গং গৰং বথা মামাপ্টবান্ তথাং আবিছাত্ং মন্ত্ৰণি ছমাপ্ট ইতাৰ্থং কথং মন্ত্ৰা গছেতি নিচুরং বক্তব্যমআবিছতস্যাপি তব বাহিতং সেংসাত্যেবেতি ভাব:। তদপি গৰ্মেব তে মনশ্চেৎ কামং গছে। অমৃতভাৱ তল অবিদ্যা মৃত্যুং তীৰ্থ
বিদ্যান্ত্ৰস্তু ইতি শ্ৰে:। যৰা অমৃতভাৱ মনগ্ৰাহিত্যান ভগৰতো নামক্ষাদিছেন জন্মবন্থপাৰ্থদভাং প্ৰাপ্তস্যাপি তব
মংস্কিত্রা জন্মত্ব ভবিষ্তোবেতি ভাব:॥ ৩৭॥

আন্ধানং কেচিৎ অদেহান্তর্পনাবকাশে প্রাদেশনাতঃ পুরুষং বসন্তঃ। চতুর্জনিত্যাত্ব্যক্তপ্রকারং অন্তর্গানিনং ছদিইদেবং ভক্নং আত্মনি স্বস্থিন্ আত্মনা বৃদ্ধা ॥ ৩৮ ॥ পুরুষ্য মমেশরত্বাৎ ক্লত্তন্ত দেবহুভেন্চ ক্লতে চিন্তা ন কার্যোত্যাহ মাতে ইতি ॥ ৩৯ ॥

কিন্তু ইহলোকে আমার এই জন্ম তুরাশয় লিঙ্গ দেহ মোচনেচছুক মুনিগণের আত্মদর্শন সন্মত তত্ত্ব প্রসংখ্যানের নিমিত্তই জানিবে॥ ৩৫॥

মূনে । আত্মজানের এই সৃক্ষমার্গ পূর্ববাবধি সিদ্ধ আছে সত্য, কিন্তু কাল বশতঃ বিনষ্ট হইয়া-ছিল, আমি তাহা পুনর্ববার প্রবর্ত করাইবার নিমিত্ত আত্মমায়া ঘারা এই দেহ ধারণ করিয়াছি ॥ ৩৬ ॥ তুমি আমার নিকট অস্জা চাহিতেছ, ভাল, আজ্ঞা দিতেছি যথা ইচ্ছা গমন কর, কিন্তু আমাতে

ক্ষু সমর্পণ করত **মুক্তার** মৃত্যু জয় করিয়া অমৃতত্ত্ব নিমিত্ত আমার ভলনা করিও ॥ ৩৭ ॥

এই রূপ করিলেই আত্মস্বরূপ স্বয়ং প্রকাশক সর্বভূতের অন্তর্যামী যে আমি, আমাকে ভোমার আত্মতে মন: মারা অবলোকন পূর্বক শোকহীন হইয়া মোক প্রাপ্ত হইবে॥ ৩৮॥

পিতঃ! আমি আমার মাতা দেবহুতিকেও সর্বা কর্মের উন্মুলনী আত্মবিদ্যা বিতরণ করিব, ভাহাতে তিনি সম্পূর্ণ সংসার ভয় হইতে পরিত্রাণ পাইবেন এবং তাঁহার পরমানন্দও লাভ হইবে॥ ১৯ শ্রীমৈত্রেয় উবাচ।

এবং সম্নিতত্তেন কপিলেন প্রজাপতিঃ। দক্ষিণীকৃত্য তং প্রীতো বনমের জগাসহ॥ ৪০॥ বতং স আছিতো মৌনমাজৈকশরণো মূনিঃ। নিঃসঙ্গো ব্যচরৎ ক্ষেণীকৃনগ্রিরনিকেতনঃ॥ ৪১॥ মনো ব্রক্ষণি যুঞ্জানো যত্তৎ সদসতঃ পরং। গুণাবভাসে বিগুণ এক ভক্ত্যামুভাবিতে॥ ৪২॥ নিরহংকৃতিনি ম্মশ্চ নির্দ্ধিঃ সমদৃক্ সদৃক্। প্রত্যক্ প্রশান্তধীধীরঃ প্রশান্তোর্দ্মিরিবোদ্ধিঃ॥ ৪০॥

शिभवयामी।

সমূদিত: সম্যগুক্ত: সন্ তং প্রদক্ষিণীকৃত্য ॥ ৪০ ॥ মুনীনাং ব্রতং মৌনং অহিংসাদি লক্ষণং ॥ ३১ ॥

সদসতঃ পরং বত্তবিন্ বৃদ্ধণি গুণাবভাবে নিগুণে। একভক্তা অব্ভিচারিণা ভক্তা অস্ভাবিতে অপরোক্ষীকৃতে ॥ ৪২ ॥ অতো দেহাদিব্ অহকারাদিরহিতঃ অতএব নির্দ্ধঃ শীতোফাদ্যনাকুলঃ সমদৃক্ ভেদাগ্রাহকঃ। কিন্তু বৃদ্ধু সমেব পশুন্। প্রত্যুক্ প্রবণা প্রশান্তা বিকেপরহিতা ধীর্যাসা ॥ ৪০ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

মন ইতি পঞ্চকং। আরোহ ভূমিকা ক্রমেণাণি তত্তৈবাধিক্যমাহ মনো ব্হমণীতি। একভক্তা অব্যভিচারিণ্যা সাধন লক্ষণয়া ভক্তা অনুভাবিতে নিরস্তরমণরোক্ষীকৃতে তাং বিনা ক্স্যচিদপার্থস্যাসিছে: ॥ ৪২ ॥

নিরহংকৃতত্বাদেব নির্দাম: । তদ্মাভাবাদেব মন আদীনামপ্যভাব: সিদ্যতি । সমদৃক্ ভেদাগ্রাহক: । খদৃক্ স্বস্থ রূপা ভেদেন ব্ৰৈন্ধ পশ্যন্ । প্রভাক্ অন্তর্মুধী প্রশাস্তা বিকেপরহিতা ধীর্জানং যস্য স: ॥ ৪০ ॥

औरिधनाषठक वर्छी।

সম্যুক্তকতঃ প্রদক্ষিণীকৃত্য ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥

ৰং সদসতো ভত্তাভজাৎ ব্যবহারিকবন্ধন: পরং তত্মাদভীতং তমনো ব্রহ্মণি যুঞ্জান: কীদৃশে গুণানাং সৌন্দর্যাদি মাধুইর্যাখর্য ক্ষণাণাং চিন্মরানামবভাগ: প্রকাশো যত্ত তিমিন্ বিশুণে বিগতপ্রাকৃতগুণে। এক ভক্ত্যা অব্যভিচারিণ্যা ভক্ত্যেব অফ্ভাবিতে নেজাদি সর্কেজিয়াত্ত্ব গোচরতাং প্রাপিতে ॥ ৪২ ॥

তত্তক ব্যাবহারিকে সর্ব্যবন্তনি নিরহঙ্কতীত্যাদি। স্বসিন্নেব ভক্তিঃ কিমত্যভূত্তবতি ভবিষ্যতীতি দৃগদ টের্যস্ত সং। প্রতাক্ বহির্বান্তিরহিতা অতথেব প্রশাস্তা ধীর্যস্য সং॥ ৪০॥

মৈত্রেয় কহিলেন বৎস বিজুর! ভগবান্ কপিল এই প্রকার কহিলে প্রজাপতি কর্দ্দন তাঁহাকে প্রদক্ষিণ করিয়া প্রতিমনে অরণ্যে গমন করিলেন॥ ৪০॥

এবং আজারই শরণাপন্ন হইয়া মুনিদিগের অহিংসাদি ত্রত অবলম্বন করিয়া অবনীতলে পর্যাটন করিতে লাগিলেন, কোন বিষয়েই তাঁহার আর আসক্তি রহিল না, অগ্নিও নিকেতন পর্যান্ত পরিত্যাগ করিলেন ॥ ৪১॥

অনস্তর সং ও অসং হইতে ভিন্ন যে ত্রন্ধানিত গ হইয়াও সগুণ ভাবে প্রকাশ পান, তাঁহার প্রতি
মনোযোগ করিলেন। তাহাতে অব্যভিচারিণী ভক্তি বারাঅচিরেই তাঁহাব ত্রন্ধান্ধান্ধার হইল ॥৪২
অভএব দেহাদিতে অহং বৃদ্ধি ও মমতা শ্ন্য হইলেন, স্কুরাং শীতোফাদিতে অনাকুল এবং ভেদ
বৃদ্ধিরহিত হইয়া কেবল স্কুল মাত্রেই দেখিতে লাগিলেন। তাঁহার বৃদ্ধি প্রত্যাগাত্ম মাত্রে প্রবণা
হইয়া শান্তভাবে থাকাতে যেমন তরঙ্গ প্রশান্ত হইলে জলনিধি দিন্তর হয়, তাহার মাণ্য তিনি নিশ্চল
ও নিঃশক্ষ হইয়া বহিলেন ॥ ৪০ ॥

বাহদেবে ভগবতি সর্বজ্ঞে প্রভ্যান্থনি। পরেণ ভক্তিভাবেন সন্ধান্থা মুক্তবন্ধন: । ৪৪ ॥ আত্মানং সর্বস্থিতের ভগবত্তমবন্ধিতং। অপশ্রতং সর্বস্থানি ভগবত্যপি চান্ধনি ॥ ৪৫ ॥ ইচ্ছাবেববিহীনেন সর্বত্ত সমচেতসা। ভগবত্তক্তিযোগেন প্রাপ্তা ভাগবতী গতিং ॥ ৪৬ ॥

विभवनामी।

ভবেবং করিতোপাধি নিবৃত্তিমূক্। প্রমেখবপদ প্রাপ্তিমাহ বাহুদেব ইতি ত্রিভি:। প্রতীচো জীবস্যাত্মনি লক আত্মা চিত্তং বেন। ব্তোমূক্তং বন্ধনং অজ্ঞানং বস্য ৪ ৪ ৪

লকাত্মতামেবাহ আত্মানমিতি॥ ৪৫॥

তদেবং তেন ভাগবতী গতিঃ প্রাপ্তা । প্রাপ্তো ভাগবতীং গতিমিতি পাঠে দ এব তাং গতিং প্রাপ্ত ইতি ॥ ৪৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তদেবং ব্ৰক্ষান মিশ্ৰভজিদাধনবশেনব্ৰনাস্ত্ৰে আতেহণি ভজিদংকারবদেন দক প্রেমানেন্তন্ত্র্নণি প্রীভগবদস্ত্ৰমাহ। বাস্থানে ইতি। প্রত্যাত্মনি সর্বেধাশাশ্রম্ভ্রে। পরেণ প্রেমানকণেন ভজিভাবেন তচ্ছকৈয়ৰ ন্ধানান্তনীয়তাক্মকা। অহংকারাদরো বেনেতি। ব্রক্ষানেন প্রাকৃতাহংকারাদিল্যানস্তরমাবিভূজান্ প্রেমানক্ষাত্মক শুক্রম্থনান্ নধ্বানিতার্থঃ। নস্থ তএব প্রত্যাবর্ত্তরাং কিং বা পূর্ববেদ্মী অপি ব্রহ্তেবোভবত্ত নেতাছ। মুক্তবন্ধনা অনাবৃত্তিঃ শক্ষাদিতি ন্যায়াং॥৪৪॥ ভক্তাতিশবেন ল্রাক্র্ত্রের প্রতিপাদয়তি। আত্মানমিতি আত্মাত্ম পর্মাত্ম। সর্ব্বান ত্র্যানিবাক্ত্রদিতি বাক্যার্থঃ ॥৪৫ ততঃ সাক্ষাদেব তৎপ্রাপ্তিমাহ। ইচ্ছেতি। তদেবং ভাগবতী গতিঃ প্রাপ্তা। হের্থাদন্যজেছাব্রের বিহীনেন। তত্মান্ব্রেরা সর্ব্বান ব্রহ্তি সম্ভূতি।

তেও: সাকালের তর্মান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার তরের তালের বার্নান্তর আবাল ব্যান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার নির্মান্তনার বিশেষানিত । এবনেবাকেং প্রীভগবছপনিষ্থস্থ । বৃদ্ধা বিশুদ্ধা বৃদ্ধা বিশ্ব বৃদ্ধা বৃ

এবিখনাপচক্রবর্তী।

এতাৰদত্ত সভাবতং তস্য সহদৈব কথমভ্ততাহ ৰাজ্দেব ইতি প্ৰতীচো জীবসাত্মনি ভক্তিভাৰেন ভক্ৰোখেন ভাবেন পরেণ শ্রেজন প্রেয়া হেতুনা লিজনেহশাশার্টা অপি পুনল'রা আত্মান-চিত্তমনোব্র্যাদয়োহপ্রাক্তা বেন সং। নতু পূর্ক্ৰণমী অপি ব্রুহেত্বো ভব্তি ততাহ মুক্তব্রনং অনাবৃত্তিঃ প্রাণিতি ন্যায়াং॥ ৪৪॥

অতক তস্য ভগবৎ সাক্ষাংকারো ভূদিত্যাহ আয়ানং সর্বাস্তর্থামিনং তৃতীয়পুক্ষবং কীরোদশায়নমিত্যর্থ:। ভগবস্তং তমেব বেইদেবং শুক্লং চতুর্ভ্রমপশাৎ। তথা আয়ানি প্রকৃত্যন্তর্থামিনি প্রথম পুক্রে কারণার্গবশায়িনি সর্বভূতানি ভদীর রোমকৃপ-গতনতাটি ব্রজাশুহানি যোগজ নেত্রেণাত্ত্বব স্থিয়া অপশাৎ তেন বিতীয়য়য়োক্তাৎ ক্রমমুক্তাদেগাগিনঃ সকাশাৎ অস্য উৎকর্ষ জ্বঃ। সহি ব্রজাশুহ সর্বাস্ত ভ্রত্ত ভ্রত্ত স্থানেহং ভ্যতা গছেতি অয়স্থতৈব হিছা সর্বব্রমাশুহিং কারণার্গবশায়িনং ভ্রেমেক্ত্রের ক্রিছা সর্বব্রমাশুহিং কারণার্গবশায়িনং ভ্রেমেক্ত্রের ক্রিছা বর্ষাপ্রকৃত্তানি শিক্ষাম এবাপশাৎ ভগবত্যাপি চেতি ভ্রেমেবায়ানং স্বেইদেবং শুক্লং ভগবত্যমপণা্ছ। ভ্রিরপি সর্বভূতানি শীক্ষকে বশোদেবাপশানিত্যেশ্র্যোপাসকে শ্রীকর্দমে ভান্টেগ্র্যাদর্শনমূচিভ্রেমবেভি ক্রেরং॥ ৪৫॥

স্থান প্ৰত্যান স্থান সংগ্ৰাহৰ বিহীনেন জন্মানেৰ হেজো: সমচেতলা কৰ্দমেন ভাগবতী ভগৰৎ পাৰ্থনত্ব লক্ষণা গতিঃ প্ৰাণ্ডা।

তদমন্তর বন্ধন হইতে মুক্ত হওরাতে ভাঁহার চিত্ত পরম ভক্তিভাবে জীবাদ্ধা স্বরূপ ভগবান্ বাস্থদেবে সম্প্রভাইল 🕯 88 🖟

ভাইতে বৃদ্ধং ভগৰৎ স্বব্ধপ ক্ট্রা সকল প্রাণিতে ভগৰত্রপ দাল্লাকে অবস্থিত এবং সকল ভূতকে ভাষাক্রম দাল্লার অবস্থিত দেখিতে লাগিলেন ॥ ৪৫ ॥

च्छे अर जाग (बर विरीन अर गर्याव मनवर्गि विस बाजा जगरहकि वारा जगरर गयकिमी गठि

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়ক্ষে কর্দম প্রবজ্যা নাম চতুর্বিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ١ ২৪ ॥ # ॥

প্রিশোনক উবাচ॥

কপিলস্তত্বসংখ্যাতা ভগবানাত্মমায়য়া। জাত: স্বয়মজঃ সাক্ষাদাত্মপ্রপ্রপ্রে নৃণাং॥ ১॥ নহস্যবন্ধ গং পুংসাং বরিদ্ধঃ সর্বযোগিনাং। বিশ্রুতে শ্রুতদেবস্য ভূরি তৃপ্যস্তি মেহসবঃ॥ ২॥

क्षेषद्रश्वाभी।

। * ॥ देखि जृजीत्म ठूजूविः मः ॥ * ॥

পঞ্জিশে জনন্যাতৃ পৃষ্টো বন্ধবিমোচনং। আদাবাহ পরং ভজিলকণং কপিলঃ স্কৃতঃ। কপিলেনার্পিতা মাত্রে গুঢ়ভাব নিষ-ব্রিতা। বোগমাণিকামঞ্জু যা ফুটমুদ্বাট্যতেহধুনা॥ • ॥

উক্তান্ধ্বাদ পূর্বাকং কাপিলং যোগং পৃছতে কপিল ইতি ত্রিভি:। তথানাং সংখ্যাতা গণক: সাংখ্যপ্রবর্ত্তক ইত্যর্থ:। অতএব স্বয়ং জাত:। আব্যুপ্তজ্ঞপ্তরে আক্সপ্তাশনায় । ১॥

পুংসাং মধ্যে বর্ম ণ: বৃদ্ধস্য উত্তমস্যেতার্থ:। সর্ক্ষোগিনাং মধ্যে বরিম: বরস্য ভাবো বরিমা ভবিতৃপ্রধানোত্রং নির্দেশ:

ক্রেমসন্দর্ভ:।

কারং বলং দর্পং কামং কোধং পরিগ্রহং। বিমৃচ্য নির্দাম শাস্তো ব্রহ্মভূবার করতে। ব্রহ্মভূত: প্রসরাঝান শোচতি ন কাজকতি। সম: সর্প্রেষ্ ভূতের্ মন্তকিং লভতে পরাং। ভক্তা মামভিজ্ঞানাতি যাবান্ যশ্চামি তত্বত:। ততো মাং তত্বভাজাতা বিশতে ভদনস্তর মিতি। অতা বিশতেমি লনার্গ:। যথা ত্র্যোধনং পরিত্যজ্য যুধিটিরং প্রবিষ্ঠবানয়ং রাজেতি। শ্রীদশ্মে শ্রীগোপৈর্ক্সংপক্তানস্তর্মেব বৈকুঠো দৃষ্ট ইতি শ্রীমাভিবেব চ ব্যাধ্যাতং ॥ ৪৬ ॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীমন্তাগৰতে তৃতীয়ক্ষদে জীবগোসামিকত ক্রমসন্দর্ভস্য চকুর্বিংশোহধ্যার: স্মাপ্ত: ॥ * ॥ স্বয়মজোপি জক্তবিষয় যৎ রূপা তয়া সাক্ষাজ্ঞাত: প্রকটোবভূব ॥ ১ ॥

উরোর্ভাব: বরিমা ধর্মি তাৎপর্যাক:। শ্রোত্রমাত্রাবেশে বক্তব্যে অসবো ন তৃপ্যক্তি ইতি বছত্তঞ্চকুরাধীনামণি ভর্তক্র্যাবেশ-

श्रीविधनाण ठळवडी ।

फाগবতীং গতিং প্রাপ্ত ইতি পাঠে সমচেতসা যুক্ত: কর্দমঃ ॥ ৪৬ ॥

। 📲 ইতি সারার্থদিশিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তেত্সাং। চতুর্বিংশকৃতীরস্যু সক্তঃ স্কৃতঃ স্ভাং 🖫 🛊

माजा পृष्टे: পঞ্চবিংশে কপিলো ভক্তিমাহ তাং। তল্পকণং তৎপ্রভাবং তত্ত্ৎকর্ষঞ্চ সর্ব্বত:॥ •॥

তত্বসংখ্যাতা তত্বসংখ্যানকণ্ঠা সাংখ্যপ্ৰবৰ্ত্তকঃ। স্বয়মজন্তদিপি আত্মনায়ন্তা জাতঃ অতৰ্ক্যবোগনায়াশক্যা প্ৰাক্ৰিবিতা প্ৰাক্তজন্মলীল ইতাৰ্থঃ। জন্ম কৰ্ম্মচ মে দিবামেবং যো বেত্তি তত্বত ইতি ভগবছক্তে ৰ্ভগবজ্জনানো মায়িকত্ব্য ব্যাখ্যাতৃ-মশক্ষাতাং ॥ ১ ॥

পুংদাং কীরোদশারি প্রভৃতি পুরুষাণাং তথা সর্ক্যোগিনাং দ্তাত্তেয়াদীনাঞ্চ মধ্যে অস্য বয়্প: কপিলাকারস্য দেহস্য বো

व्यक्तिदारे लका रहेल ॥ ८७॥

॥ 🛪 ॥ ইতি ভৃতীয়ে চভুর্বিংশ ॥ 🛊 ॥

পঞ্চবিংশ অধ্যায়ে ভগবান্ কপিল জননী কর্ত্ব জিজ্ঞাসিত হইয়া প্রথমতঃ বন্ধন মোচনকারি অভ্যুৎকৃষ্ট ভক্তি লক্ষণ বর্ণন করেন। এবং ঐ ভগবান্ যোগরূপ মাণিক্য মঞ্যা (পেটরা) গুড় ভাব দারা আবন্ধ করিয়া যে মাতাকে সমর্পণ করেন একণে স্পাইরপে তাহারই উদ্ঘাটন করা হইতেছে ॥ শানক কহিলেন অহে সৃত! তব্ব সকলের সংখ্যাকর্তা অধ্যুৎ সাংখ্য শান্ত প্রবর্ত্তক ভগবান্ ক্রপিল জ্বা রহিত হইয়াও সানবগণের আত্ম বিজ্ঞাপনার্থ আপনার মায়া দারা ত্বরং জন্ম এহণ করিয়াছেন ॥ >

ভিনি পুরুষদিশের মধ্যে উত্তম এবং যোগিদকলের মধ্যে পরিষ্ঠ, আমি দৈই দেবের চরিত্র বছবার

যদ্যবিধতে ভগবাৰ সক্ষাত্মমায়য়। তানি মে গ্রহ্মধানদ্য কীর্তন্যাক্তমুকীর্তর ॥ ৩।।

ছৈপায়নসথস্কেবং মৈত্রেরো ভগবাংস্তথা। প্রাছেদং বিছরং প্রীত আদ্বীক্ষিক্যাং প্রচোদিত: ॥ ৪ শ্রীমৈত্রের উবাচ ॥

পিতরি প্রস্থিতে হরণ্যং মাতৃঃ প্রিয়চিকীর্ষয়া। তিন্দ্রিন্ বিন্দ্র্পরে হবাৎসীৎ ভগবান্ কপিলঃ কিল ॥৫ তমাসীন্মকর্মাণং তত্ত্বার্গাগ্রদর্শনং। স্বস্থতং দেবহুত্যাহ ধাতৃঃ সংস্মরতী বচঃ॥ ৬॥

अध्यक्षामी ।

বরিষ্ঠন্যেত্যর্থঃ। ববা বরীয়কাদিত্যর্থঃ। বিশ্রতী কীর্ত্তী অসবঃ ইল্রিয়াণি ভূরি অলং নত্পান্তি শ্রুতন শ্রুবণেন দীব্যতি দ্যোততে ইতি তথা তস্য। যমা ভূরি বহুশোণি শ্রুতো দেবো যেন তস্যাপি মে হস্ব ইতি সম্বদ্ধঃ ॥ ২॥

স্থানাং ছন্দেন ইচ্ছবা আত্মা দেহো যদ্য দ:। যদবং কর্ম বিধত্তে ডানি তানি কর্মাণি কীর্ত্তনার্ছণি অনুকীর্ত্তম ॥ ০ ॥ যথা দং মাং প্রচোদয়দি এবং প্রচোদিত: দন্ তথা তৎ প্রস্নান্দ্রারেণ আধীক্ষিক্যাং আত্মবিদ্যায়াং ॥ ৪ ॥ বিদ্দুদ্রে বিশুদ্রস্থি ॥ ৫ ॥

তত্বমার্গসারিং পারং দর্শয়তি ইতি তথা এব মানবি তে গর্ত্তং প্রবিষ্টঃ কৈটভার্দন ইত্যাদি ধাতুর্বচঃ সংক্রম্ভী প্রাছ ॥ ৬ ॥

क्रमममर्खः।

ছাং। ব্রা। শ্রোত্রবারা তাদৃশ ভগবক্রপাদীনামণি ক্রে:। শ্রোত্রসৈত চক্রাদিমরছং নির্দিষ্টং ॥ ২ ॥
ভক্ষাং যদ্যদিতি হলেতদ্যকোন্যদিত্যর্থ:। আত্মনার্যা অরপশক্যা ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ:॥ ৩ ॥
শ্রৈপায়নেতি। এবং শ্রীকৃষ্ণতাংশ্র্যারীত্যা ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ অন্ত্রমিতি । ঐষ্ঠ্যদর্শনেপি অহাতিশয়ো ব্যক্তিতঃ ॥ ৬ ॥

শ্ৰীবিখনাপ চক্ৰৰত্তী।

বরিমা শ্রেষ্ঠত্বং তস্য বিশ্রুতে খ্যাতৌ মে অসবং প্রাণাং শ্রবণাদী স্তিরাণি বা ভূরি অবং ন তৃণাত্তি মম কীদুশ্স্য শ্রুতেন শ্রবণেন দীব্যতি দ্যোতত ইতি তথা তস্য ভূরি বহুশং শ্রুতো দেবো বেন তুস্যাণীতি বা ॥ ২ ॥

স্বচ্ছন্দ: স্বাধীনো সতু জীববৎ কর্মাধীন: আত্মা দেহো যস্য স:। স্থানাং ছলেন ইচ্ছয়া আত্মা দেহো দেহোবির্ছাবো ফল্ডেভি বা। আত্মমায়য়া বোগমায়য়া যদবৎ কর্ম বিধতে নতু বহির্দমায়য়া জন্ম কর্মচ মে দিব্যমিত্যুক্ত:। যদ্যদিষ্টেক্ডেপি বীপারা বাহল্যাতানীত্যনেন বহুবচনাস্তেন সহ স্থর:। কীর্জন্যানি কীর্তনার্ছণি॥৩॥

এবনিতি যথা দং মাং পৃদ্ধনীতাৰ্থ:। আৰীক্ষিক্যাং আশ্ববিদায়াং ॥ ৪ ॥ বিক্ষুদ্ৰনি মাতৃ: প্ৰিশ্নচিকীৰ্বন্বেত্যনেন কোমানোচিত গুনপান। দি দীলাগি ক্ষেয়া ॥ ৫ ॥ তত্মাৰ্থসাগ্ৰহ পাবং দৰ্শন্তীতি তথা। এৰ মানবি তে গৰ্ডং প্ৰবিষ্টঃ কৈটভাৰ্দন ইডাদি ধাতৃৰ্ব্বচঃ ॥ ৬ ॥

প্রবণ করিয়াছি, তথাচ তাঁহার কীর্ত্তি প্রবণে আমার ইন্দ্রিয় সকল বিশেষ পরিতৃপ্ত হইতেছে না॥ ২॥
তিনি ভক্তগণের ইচ্ছামূরপ দেহ ধারণ করিয়া, আতা মারা দ্বারা যে যে কর্ম বিধান করেন
কীর্ত্তনাহ সেই সকল কর্ম আমার নিকট কীর্ত্তন কর, আমি প্রদায়িত হইয়া প্রবণ করিব॥ ৩॥
সৃত্ত কহিলেন হে দ্বিক্বর শৌনক! আপনি যেমন আমাকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, মহাত্মা

সূত্ত কহিলেন হে ভিজবর শোনক! আপান বেষন আমাকে জিজানা কার্য়াছিলেন, মহাত্মা বিছুর মুনিবর মৈত্রকে এই রূপই জিজানা করিয়াছিলেন, তাহাতে তিনি প্রীত হইয়া আত্মবিদ্যা বিষ-মুক প্রশ্ন বিভূরকে যে রূপ কহিয়াছিলেন তাহা বলি প্রবণ করুন ॥ ৪ ॥

মৈত্রের কহিলেন বংগ বিছুর ? পিতা অরণ্যে প্রস্থান করিলে মাতার প্রিয় করিতে ইচ্ছা করিয়া ভাগবান কপিল সেই বিন্দুসরোধরের তীরস্থ আশ্রমেই অবস্থিত হইলেন ॥ ৫॥

তিনি তত্ত্ব মার্পের পারদর্শক এ নিমিত্ত অকর্মা হইয়া উপবিষ্ট থাকিতেন। এক দিন দেবছুতি

धीरनवर्शिक्तवां ।।

নির্বিশ্বা নিতরাং ভূমরদদিন্দ্রিয়তর্ষণাৎ। যেন সংভাব্যমানেন প্রপন্ধান্ধং তথঃ প্রভাগ ৭ ॥
তদ্য তং তমদোহদ্বদ্য ত্রুপারদ্যাদ্য পারগং। সচ্চকু র্জন্মনামন্তে লক্ষ: যে ত্বদুপ্রহাৎ ॥ ৮ ॥
য আদ্যো ভগবান্ পুংসামীখরো বৈ ভবান্ কিল। লোকস্য তমদাদ্বস্থ চকুঃ সূর্ব্য ইবোদিতঃ ॥৯
অথ যে দেব মন্মোহমপাত্রেলাকীঃ ত্বমর্হসি। যোহবগ্রহোহহং মমেতীত্যেত্বিন্ যোজিতস্কুয়া ॥১০

अध्वयामी।

অসতামিক্সিয়াণাং তর্ষণাৎ বিষয়ভিলায়াৎ নির্বিশ্ব প্রান্তান্থি বেন সংভাব্যমানেন পূর্য্যমাণেন॥ १॥ পারং গময়তীতি পারগং ছমেব প্রেষ্ঠং চক্ষ্মায়া লব্ধং ছদম্প্রাহাৎ জ্বনামত্তে ভাব্যে সভি॥৮॥ তৎ প্রপঞ্চয়তি য ইতি স ভবান্ চক্ত্রপ উদিতঃ স্ব্যোয়থা॥ ১॥

অপাকোট মপনেতং কোনৌ সন্মোহ তমাহ এত মিন্ দেহাদৌ প্তরেব বোজিতো বোহহংমমেতাবগ্রহ আগ্রহঃ বিতীয় ইতি
শল্প: তৎকার্যা রাগাদি গ্রহণার্থ: ॥ > ০ ॥

क्रमममर्छः।

নির্ক্তিপ্রতাস্য প্রাক্ শেবছতি কবাচেতি কচিৎ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ সচ্চকুন সাধারণং কিশ্বনন্যাপেক্যং সর্ক্ প্রকাশক্তাৎ স্ব্য ইব ॥ ৯ ॥ ১० ॥

शिविधना शहक वडी ।

ভৰ্ষণাৎ বিষয়াভিলাষাৎ নিবি গ্লাপ্তাধিকায়া যেন ভৰ্ষণেন সমাক্ ভাবামানেন এভাবং কালপ্ৰ্যান্তং ক্ৰিয়মাণেন অন্ধং তমঃ সংসারং ॥ ৭ ॥

পারগং পারং গময়তীতি তৎ সচ্চকু: তমঃ পরিভবিষ্ণু নেত্রং ৫৮॥

ন কেবলং মনৈব চকুরপিতু সর্কব্যৈবেত্যাহ য ইতি সুর্য্য ইব সর্কতমোহস্তা ॥ ৯ ॥

অথ অতএব প্রথমং মম সংমোহাদ্ধকারং অপাক্রন্তঃ দ্রীকর্ত্বঃ খনু সংমোহোহ্বগ্রহঃ ভক্তামৃত্রুটো প্রতিবন্ধকঃ কীদৃশঃ এতিমিন্ দেহগেহাদাবহং মমেতীতি প্রথম ইতি শক্ষঃ সমাধ্যে দিতীয় ইতি শক্ষঃ প্রকারে। আহং স্থী মম গেহং সমৃদ্ধিমদি-ত্যেতাবং প্রকার ইত্যর্থঃ। ত্যায়া ক্রিতখাত্তির ঘোজিতঃ॥ ১০॥

ত্রকার বাক্য স্মরণ হওয়াতে অর্থাৎ "ত্রক্ষা দেবহুতিকে সম্বোধন পূর্বক কহিয়াছিলেন যে, বংদে ! এই কৈটভনাশন ভগবান তোমার গর্ত্তে প্রবিষ্ট হইয়াছেন, ইনি তোমার অবিদ্যা এবং সংশয় রূপ হৃদয় গ্রন্থি ছেদন করিয়া অবনীমগুলে বিচরণ করিবেন" ইহা স্মৃতি পথে উদিত হওয়াতে আপনার ঐ পুত্রের নিকট গমন পূর্বক সম্বোধন করিয়া কহিলেন ॥ ৬॥

হে এক্সন্! অসৎ বিষয়াভিলাষে আমি নিতান্ত প্রান্তা হইয়াছি, বিভো! ঐ বাসনা পূর্ণ করাজে আমার অন্তনঃ অর্থাৎ সংসার উপস্থিত হইতেছিল ॥ ৭ ॥

কিন্তু অদ্য তোমার অমুগ্রহে দেই ত্লপার অন্ধতমের পারগামি সচ্চক্ষু: রূপ তোমাকে প্রাপ্ত হই-লাম এবং ভবিষ্যতে যে অজ্ঞানান্ধে পতিত হইয়া জন্ম মরণ নিবন্ধন ক্লেশ পরস্পারা ভোগ করিতে হইত তাহারও অন্ত হইয়া গেল ॥ ৮॥

অথবা তুমি আদ্য ভগবান্ এবং পুরুষ সকলের ঈশ্বর, অজ্ঞানাদ্ধ লোকদিগের পক্ষে চকুঃ প্রকাশক সূর্য্যের ন্যায় উদিত ইইয়াছ ॥ ৯ ॥

হে দেব! এই দেহে আমার যে "আমি আমার" ইত্যাদি আগ্রহ হইয়াছে ইহা ভূমিই যোজনা করিয়াছ, অতএব ভূমি আমার এই মোহ দ্রীভূত করিয়া দাও ৷ ১০ ৷

তং দা গভাহং শরণং শরণাং স্বস্থাসংসারতরোঃ কুচারং।

জিজ্ঞাসয়া প্রকৃতেঃ প্রুষস্য নমামি সদ্ধাবিদাং বরিষ্ঠং ॥ ১১॥

শীবৈত্রের উবাচ॥

ইতি স্বমাতু নির্বদ্যমীপিতং নিশম্য পুংসামপ্রগবিদ্ধাং।

ইতি স্বমাতু নির্বল্যমীপিতং নিশম্য পুংসামপবর্গবর্দ্ধনং। ধিরাভিনন্দ্যাত্মৰতাং সতাং পতির্বভাষ ঈষৎস্মিতশোভিতাননঃ॥ ১২॥ শ্রীভগবামুবাচ॥

যোগ আধ্যাত্মিক: পুংসাং মত্তো নিশ্রেয়সায় মে। অত্যক্তোপরতি র্যত ছ:খস্যচ হুথস্যচ ম

শীধরস্বামী।

প্রকৃতেঃ পূক্ষত চিজ্ঞাসরা খামহং শরণং গতা সতী নমামীত্যখার:। কুঠারং ছেড়ারং॥ ১১ ॥ অপবর্গবর্জনং মোকে রতি জনকং ঈষৎ মিতেন শোভিতমাননং যক্ত॥ ১২ ॥ আধ্যাথ্যিকঃ আত্মনিষ্ঠঃ যত্র যশ্মিন॥ ১৩ ॥

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

স্বোং ভক্তানাং যে ভ্তা বেতনেনাপি ভরণীর। স্তেষামপি সংসারতরোঃ কুঠারং ভক্তি কর্তৃক ছেদনাননাসাধনং। সংসার শব্দেন চাত্র লোভনীয় ত্তৃপ কণ্টক জালময়ত্যা বন্ধকত্তং জ্ঞারতে। প্রাক্তিস্মায়ায়াঃ প্রবস্য পরমেখবস্য বিজ্ঞাসরেতি প্রকৃতৌ জ্ঞাতারাং ভত্তাগেন পুক্রাহ্গতেঃ সংভ্রাং ॥ ১১॥

ইতীতি প্ংসাং সাধারণানামেব অপবর্গ বর্দ্ধনং। অবৈগ্রতু মন্তকাথাং প্রমং স্থমপি দাস্যামীতি শ্বিত তাৎপর্যাং। ঘরা। তেবামপি অপবর্গাণ্য ভক্তিযোগবর্দ্ধনং। যতঃ সতাং গতিঃ তৎসম্বন্ধেনেতি ভাবঃ। কিমৃতাস্যাং স্বনাত্রিতি ॥ ১২ ॥ তত্র প্রথমং তাবলুক্তি মাত্রোপার্মাহ। যোগ ইতি। আধ্যান্তিকং প্রমান্ত্রিভিঃ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী।

দা বাং প্রকৃতেঃ পূক্ষণা চ কিজাগরা পূক্ষং ধলু কো বং সংসারী প্রকৃতিশ্চ কা যতোহ্যা সংসার ইতি জ্ঞাতুমিছেয়া। নচাত্র কশ্চিদনাঃ প্রইব্য ইত্যাহ সভাং যে। ধর্মজ্ঞাদৃশ সংসার নিবর্ত্তক ভক্তিরূপ শুবিদাং মধ্যে প্রেষ্ঠং ॥ ১১ ॥

অপবর্গন্য মোক্ষন্য বর্দ্ধনং বৃদ্ধিং ক্লেৰেণ অপকৃষ্টবর্গন্য তিবর্গন্য ছেদনং যতন্তং। আত্মা দএব দেব্যত্বেন বর্ততে থেষাং তেষাং দতাং ভক্তানাং গতিঃ ঈষৎমিতেতি মম প্রমেশ্রন্য তং মাতা ভবসি ত্বাপি কং সংসারো ভবতু তদ্পি তাং লক্ষীকৃত্য লোকামুদ্ধর্ভ্ঃ কিমপ্যুপদিশামীতি ভাবং॥ ১২॥

জাধাাত্মিক: জীবাত্মনিঠ: যোগ: নিজেমার্থমুপায়: সচ ভক্তির্জানং বোগণেচতি ত্রিবিধা বক্তব্য:। তত্র ভক্তিপকে নিঃখ্রে-

হে ভগবন্! ছুমি শরণাগত পরিত্রাতা এবং আপনার ভৃত্যগণের সংসার রূপ তক্ষচেছদমকারী কুঠার স্বরূপ। আমি প্রকৃতি এবং পুরুষ জানিবার বাসনায় তোমার শরণ লইলাম, এই আমি প্রণাম করিতেছি, তুমি ধর্মবেতাদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, অতএব আমার এই অভিলাষ পূর্ণ কর॥ ১১॥

মৈত্রের্ কহিলেন, ভগবান্ কপিল স্বীয় জননীর এই রূপ শোভন বচন প্রবণ করিয়া বিবেচনা করিলেন, এ সকল বাক্য মোক্ষ বিষয়ে রতি জনক বটে, স্মতএব তাঁহার মনো মধ্যে মহা মহা আনন্দ জন্মিল এবং ইবংহাস্যে বদন কম্ল বিক্ষিত হইল, পরে তিনি সম্বোধন পূর্বেক কহিতে লাগিলেন ॥১২

হে অপাপে ! আমার মতে আত্মদির্চ যোগই পুরুষ সকলের নিংশ্রেরদের কারণ, যে হেতু তাহাতে হুখ এবং চু:থ উভয়েরই স্মতিশর রূপে উপরতি হয়, অতএব আপনাকে সর্বাদ সম্পন্ন ঐ যোগই

তিমিনং তে প্রক্রামি যমবোচং প্রান্তে। ঋষীণাং প্রোত্কার্মানাং যোগং সর্বাঙ্গনৈপুণং ॥ ১৩ চেতঃ থবার বৃদ্ধার মৃক্তরে চাত্মনো মতং। গুণের শক্তং বন্ধার রতং বা পুংসি মৃক্তরে ॥ ১৪ ॥ অহং মমাভিমানোথৈঃ কামলোভাদিভির্মালেঃ। বীতং যদা মনঃ শুদ্ধমৃত্যুখমইখং সমং ॥ ১৫ ॥ তদা পুরুষ আত্মানং কেবলং প্রকৃতেঃ পরং। নিরন্তরং স্বয়ং জ্যোতিরণিমান্মথিভিতং ॥ ১৬ ॥ জ্যানবৈরাগ্যযুক্তেন ভক্তিযুক্তেন চাত্মমা। পরিপশ্যভাদানীনং প্রকৃতিক হতেজিসং ॥ ১৭ ॥

শ্রীধরত্বাসী।

ভতুসকলি নৈপুণ্যং চিত্তসংযমাধীনমিতি দর্শয়লাহ চেত ইতি। অস্যাত্মনো জীবস্য ওণের বিষয়ের । পুংসি পরমেখরে বাশক অংশকার্থে । ১৪ ॥

যথাচ চিত্ত সংযমে পুরুষার্থ সিদ্ধি জ্ঞদর্শয়তি অহমিতি ত্রিভি:। মলৈ বীতিং বিরহিতং বদা গুদ্ধং মনো ভ্রবতি। মন: গুদ্ধে জ্ঞাপিকমাহ অন্তঃথমিতি ॥ ১৫ ॥

নিরস্তরং নির্ভেদং। অণিমানং ক্রমং। অপণ্ডিতং অপরিচ্ছরং॥ ১৬॥ ছভৌজসং ক্ষীণবলাং॥ ১৭॥

ক্রমগন্ধ:।

যোগমুর্কক নৈপুণ্যমিতি পাঠঃ সহদ্ধোক্তিসম্বতঃ সর্কালেতি তু স্বাধিলিখিতং ॥ ১৩ ॥ পুংসি প্রমান্ত্রনি রতং রতিমাত্র প্রাপ্তং ॥ ১৪ ॥

আহমিতি ত্রিকং॥ ১৫॥ নিরস্তরং নিত্যং যতোহধণ্ডিতং ছেদাদি রহিতং। যতোহণিমানং ক্রের্জমিত্যর্থ:॥ ১৬॥ জ্ঞানং বিবেকঃ স চ বৈরাগ্যং চ অহং মমেত্যাদি রাহিত্যেন প্রতিপাদিতং ভক্তি ভাগবতী। তাং বিনা সর্বার্থানিছে:। ইত্যেজসং স্বাহ্মিন কিঞ্ছিদিপি কর্ত্ত্মশক্তাং॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥

শ্ৰীবিখনাপচক্রবন্তী।

রসরনত্বহিতং ফলং জেরং। যত্র যোগে সতি সাংসারিকস্য তৃ:ধস্য স্থস্য চোর্লনং॥ ১০॥ ঋষীণাং ঋষীরারদাদীন্ উরুণ্জানি নৈপ্ণানি তদমুষ্ঠান চাত্র্যাণিচ যত্র তৎ ॥ ১৪॥

জীবাত্মানং থলু মনএব ছংসঙ্গ স্থাপজাং বগাতি মোচয়তি চেত্যাই চেত ইতি গুণের স্থাবন্ধনসাধকতমের সক্তমাসক্তমিতি বন্ধনে ন্যায় উক্তঃ পুংসি পুক্ষোত্তমে নিগুণে গুণবন্ধবংসকে রতং রতিমদিতি মোচনেচ ন্যায়:। বা শব্দত্ব শব্দার্থ:। অত্র প্রপুক্ষোত্তমবিষ্ট্রিণ্যা রতেঃ কারণং ভক্তিরেব ভবেলজানং নাপি যোগো মোচকত্বেন কেবলা ভক্তিরেব সমূচিতা জেলা ॥ ১৫॥

জ্ঞানযোগায়েরপি মোচকরং ভক্তিসাহাব্যেনৈবাহ অহমিতি ত্রিভি:। বীতং রহিতং। কামাদি মলরাহিত্যঞ্চ মনসং শব্দ দুমাদিভি: যম নির্মাদিভিশ্চ ভবতীতি জ্ঞানযোগায়েরঙ্গানি স্চিতানি। ভবেক্তাপকমাছ অত্ঃথমিত্যাদি স্যাদিতি শেষ: ॥১৬॥ তদা পুক্রবো জীব আত্মানং অং প্রক্তেরবিদ্যাতঃ পরং নিরন্তরং দেহধ্রবাবধান শ্ন্যং অতএব অরং জ্যোতিরনার্ত প্রকাশং।

বলিতেছি,পূর্বে ঋষিগণ প্রবণ করিতে অভিলাষী হইলে ভাঁহাদের নিকটে উহাই কহিয়াছিলাম ॥ ১০ কিন্তু এই যোগ চিত্ত সংযমন ব্যতিরেকে হইতে পারে না, ফলতঃ চিত্তই জীবের বন্ধ ও মুক্তির কারণ। চিত্ত বিষয়ে আদক্ত হইলেই জীবের বন্ধন এবং পরমেশ্বরে সংলগ্ন হইলেই ভাহার মোচন হয়॥ ১৪

আছ। কাম লোভ প্রভৃতি যে সকল মল "আমি আমার" ইত্যাকার অভিমান উৎপদ্ধ করিয়া থাকে, চিত্ত ব্যন সেই সকল মলে বিরহিত হইয়া শুদ্ধ হয় অর্থাৎ অন্তঃখ ও অত্থ হইয়া সর্বাত্ত স্মান থাকে ॥ ১৫ ॥

সেই সময় পুরুষ, যে আত্মা প্রকৃতির পর, নির্ভেদ্য, স্বয়ং প্রকাশ, স্কৃত্যর এবং অপরিচিছ্য । ১৬ ভাষাকে জ্ঞান, বৈরাগ্য এবং ভক্তি যুক্ত চিত্ত ছারা উদাসীনের তুল্য অর্থাৎ আসক্তি শ্ন্য অবলোকন

ন যুজ্যখনিয়া উজাই উপনতাধিলাক্ষমি। সদৃপৌতি শিবং পদা যোগিনাং এক্ষসিদ্ধয়ে ॥ ১৮ ॥ প্রসন্ধনিয়া উজাই উপনতাধিলাক্ষমি। সংগ্রহণতি শিবং পদা যোগিনাং এক্ষসিদ্ধয়ে । ১৯ ॥ তিতিক্ষবং কারুণিকাং হুছদং সর্বদেহিনাং। অজ্ঞান্তপত্তবং শাত্তাং সাধ্যং সাধ্যুষ্ণাং। মধ্যুহনান ভাবেন ভক্তিং কুর্বিত্তি যে দৃঢ়াং। মহকুতে ত্যক্তক্ষাণস্ত্যক্তস্ক্ষনাদ্ধবাং ॥ ২০ ॥

श्रीभद्रवामी ।

মন: শুদ্ধোচ ভক্তিরেবান্তরক সাধনমিত্যাহ নেতি ॥ ১৮ ॥ অক্স সর্বজ্যোপি সংসক্ষো মূলমিত্যাহ প্রসক্ষমিতি । অপাবৃত্তং নিরাবরণং ॥ ১৯ ॥ সাধুনাং লক্ষণমাহ তিতিক্ষব ইতি চতুর্জি: । সাধবঃ শাস্তাত্মবর্তিনঃ সাধু স্থশীলং তদেব ভূষণং যেষাং ॥ ২০ ॥

क्रमगन्छः।

শাস্তা: শমদমাদি সাধন চতুইর সংগরা জ্ঞানিন: সাধব উচ্যান্ত বক্ষান্তে চ। মহাস্ততে সমচিন্তা: প্রশাস্তা ইত্যাদিনা তেৰামাত্ত সঙ্গিকান্ গুণানাহ। তিতিক্ষব ইত্যাদিনা। স্বয়ং সাধবোপি যে সাধ্নন্যান্ ভ্বরন্তি মানম্ভি সাধব এব বা ভ্রণানি পরিচ্ছদ। বেবাং তে তথা প্রসঙ্গত: সাধু বিশেষানপ্যাহ। মন্ত্রীতি সার্দ্ধেন ॥ ২০॥

श्रीविधनाशहक्रवाही।

অণিমানং সৃদ্ধং সৃদ্ধাণামপাহং জীব ইতি ভগবছুকো:। স্বরূপত এব প্রমাণ্প্রমাণমিত্যর্থ:। বিষয়বাসনাভির্থতিতং জ্ঞানবৈরাপাযুক্তেনাজ্বনা মনসা ভক্তিযুক্তেন চেতি চকারাভকে স্বত্ত সাহাব্যমেব তহিনা জ্ঞানস্য সীয়ক্সসাধক্ষাশক্তে:। উদাসীন মনাসক্তং প্রকৃতিং স্বাবিদ্যাং হতৌজসং স্বন্ধিন কিঞ্দিপি কর্তুমশক্তাং ॥ ১৭ ॥

ত্ররাণাং মধ্যে কেবলা ভক্তিরেব শ্রেষ্ঠা প্রথমন্ত্রী পরমমঙ্গলাচেত্যাহ নেতি। যুদ্ধামানরেতি ভগৰতি ভক্তিরেব যুদ্ধাতে সম্-চিতা ভবতীতার্থ:। কাচিত্বযুচিতা ভক্তিরিত্যুত্তরোক্তে:। যোগিনামুপান্নবতাং ব্রন্ধণি প্রমেখনে বিবরীভূতে সিদ্ধিদাস স্থ্যাদি নিশ্তিস্তব্যে ॥ ১৮॥

তস্যা ভক্তে: সাধুসক্ষএব মৃশমিতি সমৃক্তিকমাহ প্রসক্ষিতি। মোক্ষস্য সালোক্যাদের রিং অপার্তং নিরাবরণং ঐকাত্তিক ভক্তানামপি মোক্ষো ভক্তেরনমুসংহিতং ফলং ভবভীতি তথোক্তং ॥ ১৯ ॥

সাধ্নাং লক্ষণমাই চতুর্জি:। তত্র তটস্থলক্ষণমাই তিতিক্ষর ইতি। শাস্তা অন্থাঃ সাধবঃ সরলাঃ। সাধুন্ ভ্রম্থি মানরভীতি তে। যথা সাধব এব ভ্রণানীব প্রিয়া যেবাং তে। অরপলক্ষণমাই মরীতি। অন্যাদিপদানাং সমূলার্থগাইকথাং ন বিদ্যুক্তেইনোইইমিবারাধ্যো ব্রক্ষজাদিবিষয়ো বস্যু তেন ভাবেন দাস্য স্থ্যাদিনা অতএবৈক্ষাত্র বিষয়ভাং দৃঢ়াং। মংকুতে মংপ্রাপ্তার্থং সর্ক্ষেশ্বান্ পরিভাল্যেভ্যাদি মহ্কেন্ডাক্ষক্ষাণ যে দারাগারেভ্যাদে কথং ভাংক্যক্তৃমুৎসহে ইতি মহ্কেন্ডাক্ষ অ্যক্ষ অন্যাদ্যাঃ॥ । • ॥

করে এবং প্রকৃতিকেও ক্ষীণবলা দেখিতে পায়॥ ১৭॥

মা! যোগিদিগের ত্রহ্মজ্ঞান সিন্ধির নিমিত অথিলাক্সা ভগবানে ভক্তিযোগ ব্যতীত শুভদায়ক পথ বিতীয় নাই ॥ ১৮ ॥

কিন্তু সাধ্যপৃত্ত ঐ সকলের মূল, এই নিমিত পণ্ডিতেরা কহিয়া থাকেন যে, প্রসক্তি আত্মার অজর পাশ, তাহাই আবার সাধু প্রক্ষের প্রতি বিহিত হইলে নিরাবরণ মোক্ষের দার বরূপ হয়॥ ১৯॥ না! কি রূপ লোকদিগকে সাধু বলিয়া চিনিতে পারা যায় তাহার লক্ষণ বলি প্রবণ করুন, যে সকল পুরুষ সহিষ্ণু, করুণাশীল, সকল প্রাণির হুহুৎ এবং শান্তপ্রকৃতি, আর যাহাদের কেই শক্র নাই, তাহারাই সাধু অর্থাৎ শান্তাস্বতী এবং স্থানতাই তাহাদের ভ্ষণ। তাহারা আমার প্রতি অনন্য ভাবে দৃত্তর ভক্তি করিয়া থাকেন এবং মদর্থ কর্ম ত্যাগ করেন, আর আমার নিমিত্ত বদি ব্যান ও বন্ধু বান্ধব্ ত্যাগ করিতে হয় তাহাও করিয়া থাকেন॥ ২০॥

মদাশ্রমাকথা মৃষ্ঠা: শৃণু তি কথয়ন্তিচ। তপস্তি বিৰিধা তাপা নৈতান্দরত ক্রেন্ত্রনার ত একে নাধব: সাধিব সর্ববিদ্ধ বিবর্জিকা:। সলতেত্বও ক্রে প্রার্থ্য: সলকেন্ত্রনার হি তে॥ ২১॥ সতাং প্রসলামন বীর্যাসবিদো ভবন্তি হুৎকর্ণরসায়না: কথা:।
তক্তোষণাদাশ্রপবর্গবর্জনি শ্রনা রতিভিক্তিরস্ক্রমিষ্যতি॥ ২২॥
ভক্তা পুমান জাত বিরাগ ঐন্তিয়াৎ দৃষ্ট শ্রুডান্মচেচনামুচিন্তরা।

क्षेत्रवामी।

এতাংস্তাপা আধ্যাত্মিকাদয়ে। ন তপস্তি নব্যথয়ন্তি। কুজঃ মনুদক্তং চেতো বেবাং তান্। বে তাপৈন ভিত্রস্তে তে সাধ্ব ইতার্থ: ॥ ২১ ॥

সংসদত ভক্তালভাৰূপপাদরতি সভামিতি। বীর্ষ্ট সম্যোদনং বাহু তা বীর্ষ্সবিদঃ। ছংকর্ণরো রসারনাঃ স্থ্যা স্থাসাং লোষণাং সেবনাং অপবর্গোহবিদ্যানিত্তি বঅ বিভিন্ ভত্নিন্ হরৌ প্রথমং শ্রদ্ধা তভোরতিঃ ততে। ভক্তিঃ অভ্কমিব্যতি ক্রমেণ ভবিষ্যতীত্যর্থঃ॥ ২২॥

ডতঃ কিমত আহ ভক্তোতি মম রচনা বা স্ট্যাদি লীলা ভক্তা অফুচিন্তরা বা ভক্তিঃ তরা ঐক্রিরাৎ স্থাৎ লাভবিরাগঃ সন্

ক্রমসন্দর্জ:।

ভনানতপন্তীতি উপসংহরতি। ত ইভি। সর্বসন্ধ বিবৰ্জিতাঃ পুরুষার্ধচতুইয়াসজিশুন্যাঃ ॥

সঙ্গ ইতাৰ্কং। হি শব্দ উত্তরবাকোপি হেতু: ॥ ২১ ॥

সভামিতি। রসায়নছেন প্রথমং ক্ষচি:। ভ্রাপি পভিতোদ্ধরণাদি চরিত প্রবশেন প্রদাবিখাস:। ততো রভিভক্তী ভক্তে: পূর্ব্বাপরাবস্থে॥ ২২॥

ভত্ৰ তৰ সং সন্ধিনোধিবিধাঃ সংস্থ জানাদি সাধারণ দৃষ্ট্র ভেজ্যোপুৎকৃষ্ট দৃষ্টয়শ্চ। তন্তান্ত্যানাং মুধ্যাং ভক্তিং অগ্রে বৈশিষ্টোন

अविभगाशककवर्ती।

মৃষ্টা: শুদা অমায়িকী: এতান্ ভকান্ তাপ। আধ্যাঝিকাদরো ন তপত্তি ন বাধ্য়েস্তি। এতে তাপৈন ভিত্যতে চেল্লাত চেত্র: শ্বরণদার্চ্যবন্ধা জ্বো:। সর্বস্থ বিবর্জিতা: পুক্ষার্থচতুইরাস্জিশ্ন্যা: ॥ ২১ ॥

সাধু সক্ষত এব তগৰতি মনোরতিং বহতীতাত্ত ক্রমনাহ সতামিতি সক্ষঃ প্রার্থ্য ইতি পূর্ব্বোক্তেঃ প্রথমং প্রদা ততঃ সতাং প্রকৃষ্টাৎ সকালম কথা ভবন্তি তালাবপ্রকৃষ্টাৎ সকাল জক্ষা করা ভবন্তি ততভাএব কথা নিষ্ঠানুৎপালয়ক্ষো মন বীর্যাস্য নলাহাত্ম্যস্য সন্ধিৎ সন্যাধেদনং বত তথা ভূতা ভবন্তি ততো কৃষ্টিমুৎপালয়ক্ষো হৃৎকর্ণরসারনা ভবন্তি। ততভাসাং কথানাং বোষণাৎ প্রীত্যা আল্লাদনাৎ অপবর্গো বর্মন্যেব যস্য তলিন্ ভগবতি প্রদা আসক্তিঃ রতির্ভাব ভক্তিঃ প্রেমা অন্ত্রমেণ্ড বিষ্টিত বিষ্টিত মন্ত্রা প্রবিষ্টা সংপ্রতি মন্ত্রা প্রবিষ্টা তিভিন্নেব্যম্ক্রমেণ্লোকে প্রচিন্নিয়তীত্বিং॥ ২২॥

ভদ্ধাং ভক্তিমূক্ত্বা যোগমাহ ভক্তোতি দৃষ্ট প্রভাবৈহিকামুম্মিকাৎ স্থপাৎ মন্তচনানাং মন্ত্রীলানাং অহতিস্কা যোগযুকঃ সন্

আর দর্বদা অপ্রল্ভ হইয়া আমার বিশুদ্ধ কথা প্রবণ এবং আমার বিশুদ্ধ কথাই কীর্ত্তন করিয়া থাকেন। মা! তাঁহাদের চিত্ত আমাতে সংলগ্ন থাকাতে আধ্যান্মিকাদি যে দকল বিবিধ তাপ আছে তাহা তাঁহাদিগের ব্যথা জন্মাইতে সমর্থ হয় না। যে দকল ব্যক্তি উক্ত প্রকারে দর্ব্ব দঙ্গ বর্দিত, তাঁহারাই সাধু। সাধিব! আপনি ঐ প্রকার সাধুজন সহ দক্ষ করিতেই বাহ্না করিবেন, যে হেতু সাধুগণ দক্ষ জনিত দোষ দকল হরণ করিয়া থাকেন॥ ২১॥

মা। সাধুজনের সহিত প্রকৃষ্ট রূপে সঙ্গ হইলে আমার বীর্য্য প্রকাশক কথা উপস্থিত হয়, তাহা হৃদর ও কর্ণের হ্র্থদায়ক, হৃতরাং তাহার সেবন স্বারা আশু আমাতে অর্থাৎ হুপ্রগ বৃদ্ধ বৃদ্ধ বুদ্ধ-বান্ হরিতে প্রদা, রক্তি এবং ভক্তি, ক্রমে ক্রমে উৎপন্ন হইরা থাকে ॥ ২২ ॥

তাহার পরেই পুরুষ আমার স্ফাটি লীলা চিন্তা করে, ডদ্মারা ভক্তি উৎপদা হইলে দুক্ত আচত

চিক্সা যজে। এহংশ বে! গবুকো বজিবতে শক্তিযোগনাগৈ: ॥ ২০ ॥ অনেব্যারং প্রকৃতে শুণানাং জানেন বৈশাগ্য বিজ্ঞতিত । যোগেন ম্যাপিতিয়াচ ভক্ত্যা সাং প্রত্যগাজান্মিহাবক্সত্থে ॥ ২৪ ॥ জ্ঞীদেবহুভিক্তবাচ ॥

কাচিত্বসূচিত। ভক্তি: কীদৃশী মম গোচরা। যন্ত্রা পদং তে নির্বাণমঞ্জগাদাশবা আহং ॥ ২৫॥

थिशतयामी ।

ছৃষ্ট ক্রানৈহিকানুমিকাৎ ততো যতঃ উলবুক্ত: সন্ চিন্তস্য গ্রহণে যতিষ্যতে ঋকুভিন্ত প্রধানস্থাদনাম্বাসঃ ॥ ২০ ॥
ভলেবং প্রকৃত্তে র্থানামসেবয়া জ্ঞানাদিভিশ্যায়: জীব ইহৈব দেহে মামবক্ষদ্ধে প্রাপ্নোতি ॥ ২৪ ॥
কাচিদিতি কান্দিলিতার্থ: উচিতা যোগ্যা তত্রাপি মন ত্রিয়া: কীদৃশী গোচরা যোগ্যা নির্বাণং মোকাত্মকং তব পদং স্বরূপং
অবাস্নবৈ অনস্তর্মের স্বাধানা প্রাপ্যামি অঞ্জসাতিতি পাঠে অহস্থিতি সম্বর্জ: ॥ ২৫ ॥

ক্রমসন্ধর্তঃ।

মাতুক ংকঠান ভবং নির্দেষ্ট্ং সাধারণ দৃষ্টানাং গোণীং নির্দিশতি। ভক্তোতি বাজ্যাং। ভক্তোব বিরক্ত অমৃক্ত যোগ্যত্তং চেতাধিকারিবিশেষণানি ॥ ২৩ ॥

অদেরয়া হেয়ঝ বিচারেণ জ্ঞানেন তবং পদার্থমবরুদ্ধে। স্বং পদার্থ নির্মারেন বিবয়বৈ ভূঞ্চ প্রকাশিকেন বোগেনাটাকেন। ম্যার্শিভ্যা মদনন্য বিষয়মাচ ভক্তা। মাং প্রত্যগাত্মানং তৎপদার্থমবরুদ্ধে। স্বং পদার্থতাদায়্মেন প্রায়োতি ॥ ২৪ ॥

অথ পূর্ব্ব পূর্ব্ব নির্দিষ্ট ভক্তেরেব সর্বজীবন্ধনিধান্যভামেব পূজ্ন্তী তত্তাপি দৈন্যেন সর্ব্বত নিশানধিকারিতাং মধানা ত্রিশেষং পূজ্জি কাচিদিত্যাদিনা। ভক্তিন মি কিদৃশী কিং লক্ষণেত্যর্থঃ। তস্যাং চ তক্তিদাত্তোকাচিম্বক্তিত্বনি মমোচিতা সতী গোচরী-কর্তুং শক্যা স্যাদিতি ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

ঐবিধনাপ চক্রবতী।

চিত্তস্য গ্রহণে স্ববশীকারে যত্তো যদ্ধবানপি ঋজুভি জজিসংবলিতত্বেন স্থগনৈর্যোগমাইর্গ: সংপ্রতি মৎপ্রবস্তায়িষ্যমাইণ ইতিষ্যতে সংগ্রেজনিব্যমাণঃ পুমানিজ্যর্থ: ॥ ২০ ॥

ৰোগমুক্তা জ্ঞানমাই অসেবরেতি প্রকৃতেগুণানাং বিষয়াণাং যা অসেবা নিদামকর্ম্মলন্তা তয়া বজ্ঞানং তেন মাং প্রত্যান্ত্রানং তৎ পদার্থং অবক্ষরে প্রাথোতি বোণেনেতি বমাদীনামণি জ্ঞানাক্ষাৎ ভক্তেতি ভক্তিং বিনাভৃত্যা জ্ঞানস্য বৈক্ল্যাং ॥২৪ কাচিদিতি কাম্বিদিত্যথং ম্ব্যুচিতা দ্বি যুজ্যত ইভার্থং। ন যুজ্যমানরেত্যনেন যুজ্যমানায়া ভক্তেক্বংকর্ম প্রবাং মম প্রিয়াং কীদৃশী গোচরা জ্ঞাতুং কর্ত্ ক্ শকোতার্থং। পদং ম্বতরণারবিন্ধং নির্মাণং নির্বৃতিম্বরূপং নির্মাণমন্তং গমনে নির্তৃত্য গ্রুক্তনে। সক্ষমেপ্যপ্রবেহিতি মেদিনী। বহা নির্মাণং নিক্তিকং ব্ধাস্যাৎ তথা অবাশ্ববৈ প্রাপ্যামি জ্ঞাসা মুশ্বা ইতি কাঠে অহম্বিতি সম্বর্জঃ ৪২৫ য়

অর্থাৎ ঐহিক ও পারত্রিক ইন্দ্রিয় জনিত হথ হইতে বিরক্ত হয়, তদনস্তর উদ্যুক্ত হইয়া ঋজু অর্থাৎ ভক্তি প্রধান যোগমার্গ অবসম্বন করিয়া চিত্ত বশীকরণে যত্নবান্ হয় ॥ ২৩ ॥

জননি! ঐ প্রকার করিয়াই এই জীব প্রকৃতির গুণ সকলের অসেবন,বৈরাগ্য বিবর্দ্ধিত জ্ঞান,যোগ, তথা আমাতে অপিত ভক্তি ইত্যাদি বারা এই দেহেতেই প্রত্যাগাত্ম স্বরূপ আমাকে প্রাপ্ত হয়॥ ২৪ ॥ দেবছুতি কহিলেন পুত্র! তোমাতে (ভগবানে) কি প্রকার ভক্তি করা উচিত ? এবং আমি

ত্রীকাজি, আমারই বা কিদুশী ভক্তি করা কর্ত্তব্য, অসুগ্রহ পূর্বক উপদেশ প্রদান কর, আমার অভিনাধ এই, ভক্তিযোগ ধারা অনায়ানে ভোমার মোকাত্মক পদ সর্ব প্রকারে প্রাপ্ত হই ॥ ২৫॥ যোষোগো ভগৰবাণো নিৰ্বাণাৰ্থস্থয়োদিজ:। কীদৃশ: কতি চান্নানি ৰতন্ত্ৰাণবৈধিনং ॥ ২৬ ॥ তদেতশ্মে বিজ্ঞানীহি যথাহং মন্দ্ৰীহ ত্ৰে। স্বৰং বুজোয় প্ৰবেশিং বেশ্বা ভবদকুত্ৰহাই ॥ ২৭ ॥ প্ৰীনৈত্ৰেয় উবাচ ॥

বিদিত্বার্থং কপিলোমাতুরিত্থং জাতত্নেহো যত্র তত্বাভিজাত:।

তত্ত্বাস্বায়ং যৎ প্রবদন্তি সাংখ্যং প্রোবাচ বৈ ভক্তিবিভানযোগং ॥ ২৮ ॥

শ্রীভগবাসুবাচ॥

দেবানাং গুণলিঙ্গানাগামুঞ্জবিককর্মণাং। সত্ত এবৈক মনসো বৃত্তিঃ স্বাভাবিকী তু যা।

এপরস্বামী

ন্তগৰবাণো যো ভগৰস্তং লক্ষ্যী করোতীত্যর্থ:। যতো যন্ত্রাৎ বোগাৎ॥২৬॥

विकानीहि विभारमण कालग्र अध्यमनात्रारमन ॥ २१।

্ইখং মাতুরর্থং প্রয়োজনং বিদিত্বা কাতলেহতে হেতুঃ যত্র যতাং তথা দেহেনাবিভূতি স্তবাস্থায়ারত্তে অমুক্রমান্তে যদিন্ কিং তৎ বং সাংখ্যং প্রবদ্ধি তৎ প্রোবাচ ভক্তিবিতানক যোগক। ১৮॥

কাচিং ব্যুচিতা ভক্তিরিতিপ্টাম্ত্রমাং ভক্তিং লক্ষতি। গুণা বিষয়া লিক্সতে আয়তে বৈতেবাং দেবানাং দ্যোতনাত্ম কানাং ইক্রিয়াণাং ঘদধিষ্ঠাতৃণাং বা সত্তে সত্তমূর্তে । হরাবেব যা বৃত্তি সা ভক্তিং সিদ্ধেম্ক্রেরপি গরীয়সীত্যুত্তরেণাত্ময়:। কথস্তুতা ক্রমসন্ধর্ড:।

দেবানামিতি যুগাকং। ততঃ করুণয়া তছ্চিতং ভক্তিবিশেষমপি প্রতিপাদরিবার্থ্যামেব ভক্তিং লক্ষরতি দেবানামিতি সার্ক্ষেণ। পূর্বং শ্রদ্ধা রতিউক্তিরমুক্তমিব্যতীত্যুক্তং। তত্র যদ্যপি রতিভক্ত্যোদ মোরপি তারতম্য মাত্রভেদরোঃ। প্রীভিত্যেব

ऒविश्वगाशहकवर्त्ती।

ষদ্যণি স্বং সংমতায়াং ভক্তাবেব মম জিজাসা চিকীধা তদপি জিজাস্না নিজমতং জেরং পরমতং বুবৈরিতি নিত্যবোগশ্চ জ্ঞানক মম জিজাস্যমিত্যাহ যো যোগ ইতি ভগবতি বাণ তাত্র কিংপ্তঃ শর ইব যো ভগবতং লক্ষীক্রোতি ইত্যর্থ:। নির্বাণার্থ: মোকপ্রেরাজনক:। তথা যতন্ত্রশাস্যববোধনং তজ্জানক কীদৃশ্ং॥২৬॥

ওত্তমাৎ এতমে মাং বিজানীহি বিজ্ঞাপর ॥ ২৭॥

অৰ্থং প্ৰয়োজনং ক্লেছে হেতৃ ৰ্যতা তৰা দেহেনাবিভূতিঃ তথান্যায়ায়তে অফুক্ৰমাতে বন্ধিন্ কিং তৎ যৎ সাংখ্যং প্ৰবদন্তি তৎ প্ৰোবাচ ভক্তিবিভানং বোগঞ্চ ॥ ২৮ ॥

তত্ত্ব ভক্তিবিতানং বক্তুং কাচিৎ স্ব্যাচিতা ভক্তিরিতি পৃষ্টাং ভগবতি যুক্তামুন্তমাং নিশুণাং ভক্তিং লক্ষতি দেবানামিতি লগ এব ভন্ধস্থে ইহাবেব নতু দেবভাগুরে। একমেব স্বরূপমেব দেবাবৃদ্ধিময়খেন স্ক্রপনামাত্নাগৈদিংস্থ নতু যোগিঞ্চনাদেরিবা-

অপর ভগবানের প্রতি লক্ষ্য কারি যে যোগকে মুক্তির কারণ করিয়া বলিলে, যাহা হইতে তত্ত্ব সকলের অববোধ হয় সেই যোগই বা কি প্রকার ? এবং তাহার অঙ্গই বা কত ?॥২৬॥

আমি অবলা, আমার বুদ্ধি অতি মন্দ, এই সকল ছুর্কোধ্য বিষয় তোমার অমুগ্রহে অনায়াসে যাহাতে বুঝিতে পারি সেই প্রকার করিয়া বিশেষ রূপে জ্ঞাপন কর ॥ ২৭॥

মৈত্রেয় কহিলেন বিত্র! ভগবান্ কপিল দেবছুতির তমু হইতে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন,একারণ জননীর ঐ সকল বাক্যে তাঁহার প্রতি তাঁহার অতিশয় স্নেহ জন্মিন, অতএব মাতার অভিপ্রায় অবগত হইয়া যাহাতে তত্ত্ব সকলের অমুক্তম আছে এবং যাহাকে সাংখ্য বলিয়া থাকে সেই শাস্ত্র ভজি বিস্তারকারী যোগ ইত্যাদি সকল কহিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ২৮॥

ভগবান্ কহিলেন মাতঃ ! যাহাদের ছারা শব্দ স্পর্ণাদি বিষয় অনুস্ত হয়, সভ্যুতি ভগবান্ ইরিয় প্রতি সে সকলের যে স্বাভাবিকী বৃত্তি তাহাকেই নিকামা ভাগবতী ভটি বলা সিয়া থাকে, ৩ছ সছ

প্রিমিন্তা ভাগবতী ভক্তিঃ সিকের্মীয়দী ॥ ২৯ ॥ জনমত্যাশু যা কোশং নিগীর্থননলো যথা ॥ ৩০ ॥

शिधततामी।

অনিমিতা নিকামা স্বাভাবিকী অধ্যাসিকা। তেবামেবংবিধবৃত্তী হেতুমাহ গুরোকচ্চারণমছ্ঞারতে ইত্যন্ত্রাবা বেদস্তবি হিতমান্ত্রাবিকং তদেব কর্ম বেবাং। অতএব একরূপং অবিকৃতং মনো বস্য প্ংস:। গুরুসক্তেত্যর্থ: ॥ ২৯॥

মুক্তিশ্চ প্রাসন্ধিকী ভবত্তোবেত্যাহ বা ভক্তি: কোশং নিকশরীরং জরমতি ক্ষপরতি। স্ব প্রবন্ধং বিনৈব সিছে। দৃষ্টান্তঃ

क्रभाजनार्छः।

ভথাপি প্রীত্যভিশর লক্ষণারাং প্রেমাখারাং ভক্তে তদভিক্ ইং সাদিতি কর্ষা ভক্তিপদেন ভাম্পাদার লক্ষতি। অর্থনারং। গুণলিসানাং গুণত্রপাধীনাং আহ্প্রবিকং শ্রুতিপুরাণাদিগমাং কর্মাচরিতং ঘেবাং ভে তথোক্তঃ। তেবং দেবানাং প্রীবিক্ বন্ধ শিবানাং মধ্যে সতে সারিধা মাত্রেণ সম্বন্ধবিকং কর্মপশক্তি বৃত্তিভূত গুদ্ধসন্ধান্ধকে বা বিক্রো। প্রভাগেলকাং প্রীতগ্রনার্গালিকার্গবিভাবেকে নির্মাণীতার্থঃ। এবকারেণ নেতরত্র নচ তত্রাপিচ। এক মনসং পুরবস্য যা বৃত্তিঃ তদান্ত্রক্ল্যালান্ধকো জানবিশেবঃ। অনিমিত্রা কলাভিসন্ধিশ্রা স্বাভাবিকী স্বরসভ্রব বিবরসৌক্ষ্যাদ্যক্রেনের জারমানা। দ বলাদাপদ্যমানা সা গুণাবতী তক্তিঃ প্রীতিরিভার্থ প্রীতিসম্বন্ধাদেবাস্যা ভক্তেঃ স্বাভাবিকস্থং স্যাৎ। তত্মাদৃত্তি শক্ষেন প্রীতিরেবাত্র মুধ্যক্ষেন গ্রাহ্মেতি। সাচ সিন্ধের্শাক্ষাক্ষারীয়সী সালোক্যসাস্ত্রিগোলি প্রবর্ধাৎ। অভগ্রব জানসাধ্যস্তাপি তিরকার সিন্ধের্জানাদিতি ব্যাধ্যানমস্কৃশং অত্র মোক্ষাক্সরীয়ক্তেম তস্যাবৃত্তেগুণাতীতত্বং ভতোপি ঘনপরমানক্ষম্বং। শ্রীভগ্রবং প্রসাদ বিশেবেণের মনস্থাদিতরম্বং ত্রাদা ব্যোনের তদ্বিত্বগ্রপদেশাত্বং চ দর্শিতং॥ ২৯ ॥

তস্যাসুস্ক্রিকং গুণমাহ। ব্রুরতীতার্দ্ধেন ॥ ৩ ।।

ৰীবিখনাপ চক্ৰৰন্তী।

রভ্যাং যজ্জিহাল্ল মনো যস্য তন্ত প্রবন্ধ । তথা একজিন্ ভজন এব নতু জ্ঞানকর্দাদিব্ মনো বন্ধা তন্য প্ংসঃ । গুণাং শক্ষাদরো বিষয়াং লিক্যন্তে রাপান্তে বৈ তেবংগ দেবানামিল্রিমাধিঠাত্পাং সহিবর্গদীবাতাং ক্রীড়তামিল্রিমাণাং বা সহে হরাবেব বা র্ডিত্তনীয় শব্দাদিগ্রহণক্রপা ব্যাপ্তিরনিমিন্তা নিহামা ভাগবতী ভক্তিরিভাবরঃ । অত্র সম্বত্তবি ক্রক্ষক্রাদাবিতি নাশক্ষ্য এব ইল্রিয়াণাং বৃত্তিরিতি কাকাক্ষিগোলকন্যারেনোভর্ত্রাধিতং । অত্র সম্ব ইভানেন সম্বত্তণহতি ক্রক্ষক্রাদাবিতি নাশক্ষ্য ভাগবতীত্যনেন তথ্যাবৃত্তেঃ । বরা সভাং ভাবং সৃষ্ণং বৈক্ষবহুং তত্ত এক মনসঃ বৈক্ষবে ভবের্মিভোকান্ত্রমনসো বৈক্ষবদ্ধে এব বা ইল্রিয়াণাং বৃত্তিঃ সা ভক্তিঃ । নচ ক্ষ্মেলেনৈর প্রবর্ত্তমানানাং তেবাং বৃত্তি উক্তিঃ কিন্তু শ্রীগুরুলপিইমরোচিভাচরণবভামিত্যাহ গুরেক্ষান্ত্রমান্তর ইভান্তপ্রবাধ মন্ত্র ভহিত্যান্ত্রশ্রিকাং ভবেব কর্ম্ম নিত্যকৃত্যঃ বেবাং তেবাং কিন্তু উৎসর্গান্ত্রন স্থানানিত্র বাহাহং বতা ভবেং । অতঃ পাযুক্তপত্বভূত ভদারাধন সাধনমিতি বিক্ষ্যহস্যোক্তেঃ পাযুপত্ররোরণি বৃত্তি উক্তিসবদ্ধেন ভক্তিরিতি বৈদ্যাধন ভক্তির্গক্তি । অথ জুকারেণ পৃথক্কতা তৎসাধ্যাং ভাবভক্তিং রাগাহুগাধ্যাঞ্চ ভক্তিং তরেলৈ কক্ষিতি । বাড় তেবামিল্রিরাণাং তথা ভূতানামের স্বাভাবিকী বৃত্তিং বিধিধা কন্যচিং পান্ত্রশান্তনির প্রথির ক্ষত্তনা প্রতিমতো ভন্তনাভ্যাস পৌনঃ প্রানানির ক্রানাক্রিমান ভাল্প মহৎসক্ষ্যপান্তনির প্রত্তি বিদ্যা ক্রাচিত প্রতিনাক্রিমান ভাল্প মহৎসক্ষ্যপান্তনিক বিক্ষণ সংলার বলেন গুরুপদেশাং পূর্ক্রমান বা পান্তলানান বিইনব স্ক্রিরাণাং ভিজ্যিক্রিক্রিলি ভাল্প মহৎসক্ষ্যপান্তনির বিভ্রা নাপি স্বাভাবিকী জ্ঞেরা । পূর্ক্রমা বৈধতকেঃ প্রমাণেইন বেহিক্স উন্নাভ্য ক্রিরাণাং ভালিক্র উন্নাভ্য ক্রিরাণাং বিভ্রুল প্রানাক্রিরাণাং বিক্রেক্ত প্রানানির বিভ্রুল প্রতিনা ক্রাচিত্রাক্রিরাণানির ক্রান্তর বিত্তা বিত্ত স্বানাণিই বিভ্রুল ক্রিরাণাং ক্রিরান্তনির ক্রান্তামিতানি ক্রান্তনির বিত্তা প্রতির স্বান্তন্তির বা হরে বৃত্তিং নাপি স্বাভাবিকী জ্লোন প্রত্তানিকর প্রানানির বাহকর প্রতানিকর বিত্তানিক বিত্তানিক বিত্তানিক বিত্তানিক বিত্তানিক বিত্তানিক বিতানিক বিত্তানিক বিত্তান

প্রসা রাগানুপুরাত্ত আইভাবোৎকর্বঃ উদাহরণঞ্চ ম কহি চিদিতি পদাং । অভাতাবিকাাত্ত ভাতাবিকীভাাং সকাশাৎ প্রমাণেম

পুরুষের পক্ষে তাহা মৃক্তি অপেকাও গরীয়সী, কিন্তু ইন্সিয় সকলের ঐ বৃত্তি বেদ বিহিত কর্ম ব্যতি-মেন্তে হাইতে পারে না, ক্ষিক্ত কর্মে প্রবৃত্তি ক্ষমিণে পর হয় ॥ ২১॥

के अनात कि इरेटन क्षत्रकाः बुक्ति ध्रत्रका रहा, द्वन ना तारे एकि, रामन करत्र चनन

নৈকাত্মতাং মে স্পৃহয়ন্তি কেচিন্মৎপাদদেবাভিন্নতা মদীহাঃ। 💛 💛 🖰

शिश्वंत्रामी।

নিগীর্ণং ভুক্তমন্নং অনলো জাঠরো যথা জরমতীতি ॥ ৩০ ॥

ভক্তেগ্রিষ্ঠভুমেবোপপাদরতি নৈকাত্মতামিতি পঞ্চিঃ। একাত্মতাং সাযুদ্ধামোকং মদর্থমীহা কিয়া বেবাং। প্রসদ্ধা

ক্রমসন্দর্ভ:।

নমু পূর্বাং মুক্তিফলবেনোক্তং। কথং ওস্যা গরীয়সীত্বং ভত্তাহ। নৈকাত্মতামিত্যাদি। কেচিদসাধারণ্যা ভক্তিরসিকা ইহা-

श्रीविश्वनाशहकवार्ती ।

कांछाां निकर्दः। উताहत्र । क्यां हत्र । क्यां विविधात्रा अपि छटकं निकाम चानस्त्र । हिंदिधात्रा अपि छटकं निकाम चानस्त्र । हिंदिधात्र अपि छटकं निकाम चानस्त्र । ফলং দৈব ভক্তিরনমূদংহিতং ফলস্ক মোকস্তমাহ। অরম্ভীতি যা ভক্তিং কোশং নিঙ্গপরীরং অরম্ভি ক্লপরতি। কিঞ্চজান হেতৃকান্মোকাদ্দা মোক্দ্যা দৃষ্টাত্তেন বৈলক্ষণামাহ। নিগীর্ণং ভুক্তমনাদিকং অনলো জাঠরো যথা জরম্বতীতি সহি জাঠরানলো দেহপুটান্যথালুপপতে ভুক্সারাদেরসারাংশমেব জরয়ভি সারাংশেনতু প্রাণেক্রিয়াদীনি সপ্তধাতৃংশ্চ পুষাভি। যেনৈবোজঃ স্হো বলবান্ দেলো ভবতি তথৈব ভক্তিম বিকানেৰ শব্দাদীংভং ক্রণকর্ভাদীংশ্চাসারাংশানেৰ ধ্রমতি নতু সারাংশান্ ভগবং স্বৃদ্ধিন: শ্রাদীন প্রাকৃতাংক্তবিজ্ঞিরাদীংশ্চ অরমতি চকুষশ্চকুরত প্রোত্তগা প্রোত্তিমিত্যাদি প্রতে:। বৈরেব ভক্তানাং দেহ: দিলো ভবতি অতএব মায়িকোহসারাংশএব লিক্লকোশো লেহেক্সিরাদি শক্তৈ: শাস্ত্রেষ্চ্যতে। যথা দেহেক্সিরাস্থীনানাং বৈকৃষ্ঠপুরবাসিনামিত্যাদি যথা চ পুরুষপ্রযত্ত্বং বিলৈব জাঠরোগ্নিভ্ কারাদিকং জরম্বতি যেন প্রকারেণ জরমতি তং প্রকারঞ্চ পুরুষো নজানাত্যেবং মোকার্থং কিমপ্যযতমানং প্রবণকীর্ত্তনাদিকমেব নিত্যং কুর্ব্বাণং তল্মাধুর্য্যাম্বাদবন্তং ভক্তজনং ভক্তিঃ সংসারাম্মোচ-য়তি ভক্তস্ত কেন প্রকারেণ কদা মে মুক্তিরভূদিতি নামুসন্ধতে। বহুক্সতে ছৎপাদপোতেন মহৎক্তেন কুর্কৃত্তি গোবৎসপদং ভবান্ধিমিতি পথি পচ্ছতঃ পুংসো গোপদ লজ্মনামূদকানং যথা ন ভবতি। তথেতি ভক্তানাং ত্রিভূমিক ব্রহ্মজ্ঞানাভাবেপি নায়-মাঝা প্রবচনেন লভ্যোন মেধরান বহুণা শ্রুতেন যমেবৈষ বুণুতে তেন লভ্য স্তুলৈয়ৰ আত্মা বিরুণুতে তহুং স্বামিতি শ্রুতের্ভগবং কারুণাাভজ্যা তত্রপগুণনীলৈখর্য্যমাধুর্যামূভবরপাক জানাদেব মোক:। তমেব বিদিদ্বা অতিমৃত্যুমেতীতি প্রতাবপ্যেবকারেণ মুক্তে তিসাব জ্ঞানস্য কারণদ্বেনোক্তে ত্তজ্ঞানং চোক্তপ্রকারকমেব সর্বাণা তৎম্বরপঞ্জানস্ক যতো বাচো নিবর্তত্তে অপ্রাণ্য মনসাস্তেতি যস্যামতং তস্যুমতং মতং যস্যুন বেদ সংইতি। হ্যুপত্যু এব তে ন য্যুরস্কমনস্তত্যেতাাদি প্রতিভোগ ন কস্যাপি সংভবত্তোর জীবত্রদৈক্যরূপা মুক্তিত্ত ভক্তৈস্ত্যাকৈয়বেতাগ্রে বক্ষাতে। কিঞ্চ ভূক্তমরাদিকং জাঠারানলো ভোজনক্ষণতএব জর্মিতৃং প্রারুত্তোপি ত্রিচতুর্যামানস্তর্মেব সম্যক্তরা জরম্ভি বথা তথা ভলনক্ষণতএব শোক্ষোহাদ্যাম্মকং সংসারং নাশ্মিতৃং প্রবৃত্তাপি ভক্তি: কিঞ্ছিৎকাশবিল্ছেনের সম্যক্তয়া নাশমতীত্যতো ভজনদশায়াং শোকমোহাদ্যনপগ্মেপি ভক্তের সংসারোয়-মিতি ন প্রত্যেতব্যমিতি জ্বেয়ং। তদেবং শ্বরূপদিষ্টমন্ত্রৰতী ভক্তিশাক্ত্রোক্তবিধান্ত্সারিণী অন্যাভিলাবিতাশ্না। জ্বানকর্মাদিরহিতা ভগৰতি শ্রোত্রাদীক্সিয়াণাং বৃত্তিউক্তি:। সাচাল্পমাণা সাধনতক্তিরখাভাবিকী ভবতি। সৈব পূর্ণপ্রমাণা সাধ্যতক্তিং খাডা-ৰিকী ভাৰজক্তিৰতি। দৈৰ কাচিদল্পপ্ৰমাণাপি জাতৈগ্ৰাধিকাাৎ স্বাভাবিকীচেডাগান্থা নামী সাধনভক্তি:। সাচ জাতি প্রমাণান্ত্যাং পূর্ণা রাগান্তুগীর ভাবভক্তির্জবতীতি বিবেকো ভক্তিরসামৃতদিকৌ জের: ॥ ০০ ॥

দক্ষণমূজ্য উদাহরণমাহ সপ্ততিত্তত্ত প্রথমং স্বাভাবিক্যা ভাবতক্তেকদাহরণঞ্চুর্ভির্বদরেবানিমিন্তেত্যেতং সহেতৃকং স্পইরতি নেতি। একাত্মভাং একৈক্যরূপা যে মুইক্ত্যে ন স্পৃহয়ন্তি ইতি সিজে: স্কাশাক্ষরীয়ন্তং নতু কেন স্থেন পূর্ণান্তে ব্রহ্ম স্থং ন বোচরন্তি ভতাহ মম পাদরো: সর্কেক্তিবৈর্ঘা সেবা ভস্যামেব নতু কর্মজ্ঞানাদির অভি শাস্তাভিমুখ্যেন রতা অত্যাসন্তিমস্তঃ। অনেন ভক্তে র্ভগৰ্মিরন্তং সর্কেক্তির বৃত্তিরূপত্য কর্মজ্ঞানাদিরাহিত্যং শাস্তাহ্সারিত্য স্বাভাবিকত্ত্যক্তাত্তং। মধ্যের মংসৌন্দর্য্য

ভুক্ত অন্ন জীর্ণ করে তাহার ন্যায় আশু লিঙ্গ শরীরকে দগ্ধ করিয়া দেয় ॥ ৩০ ॥

কিন্তু মা! যাহারা আমার পাদ সেবায় অপুরক্ত, যাহাদের আমায় নিমিতই নমত চেকা, বিশে-মতঃ যাহারা প্রস্পার মিলিত হইয়া আসক্তি বুক্ত চিতে আমার বীর্য্য বর্গন করিতে আমার প্রকাশ যেহন্যোন্যতোভাগবতাঃ প্রসন্ধ্য সভাক্রয়ের মম পৌরুষাণি ॥ ৩১ ॥ পশুন্তি তে মে রুচিরাণ্যর সন্তঃ প্রসন্ধ বক্তারুণলোচনানি। রূপাণি দিব্যানি বরপ্রদানি সাকং বাচং স্পৃহণীয়াং বদন্তি॥ ৩২ ॥ তৈর্দশনীয়াবয়বৈরুদার বিলাস হাসেক্তিত বামসূক্তিঃ।

ध्येभव्यामी।

আদক্তিং কুতা পৌক্ষাণি বীৰ্য্যাণি॥ ৩১॥

প্রসন্ধানি বজুণণি অরুণানি লোচনানি যেবু। তৈম জাগৈঃ সাকং সহ নিতাং পুরমেশ্বরাত্তব সুধং ভক্তাবধিকমিতি ভাবঃ ৪৩২ আত্মানকত্বশাং ভাবীত্যাহ তৈরিতি। দুর্শনীয়া মনোহরা অব্যবা মুখনেত্রাদয়ো যেবু তৈঃ হৃত আত্মা চিত্তং দ্বোং। হৃতা

ক্রমসন্দর্ভ:।

ভিনাব:। তশাভ্তলাভাদএব পূর্বেবাং জায়তে ইতি ভাব: ॥ ৩১ ॥

ক্লপাণীতি। বাসনা প্রসক্ষোর্নানাভেদেন। সাক্ষিতি। যিথো মিলিছেতার্থ: ॥ ৩২ ॥

স্বকর্মফলনি দিউ।মিত্যাদি রীতা। দৈন্যেন শুদ্ধভক্তিমাত্রেচ্ছুস্বাদনিচ্ছতোপি স্বশীং স্কাং প্রকৃত্যতীত্ত্বেন হুক্তেরাং পার্বদ্দদ্ লক্ষণাং ॥ ৩০ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবন্ত্রী।

মাধুর্যাদ্যান্থাদনএব ঈহা বাঞ্চা বেষাং তে ইত্যন্যাভিলাযশূন্যন্থং। প্রসজ্ঞাসজ্ঞ পৌরুষাণি প্রীগোবর্ধনোদ্ধরণাদিলীলামৃতানি সভাজয়ন্তে সন্ততিকমান্থাদয়প্তি। তেন চরণবেধানক্ষাভাবাৎ সৌক্ষ্যা সৌরভ্যাদহভবাভাবাৎ দীলামৃতান্থাদনাভাবাচ ব্রহ্ম অধংন বোচম্বতীতি মুক্তাবস্পৃহায়াং হেত্বলমুকং॥৩১॥

ষত: সাযুজ্য পর্যান্তের কলেব স্পৃহা রহিতা অভতে মন্ত এতৎ প্রাপ্ত বৃদ্ধীত্যাহ ৰাভ্যাং। পশাস্তীত্যপদকণং শৃণ্ বি স্বিজ্ব আবি আদি মন্ত্রীত্যাদ্যালি। কলাণীত্যপদকণং শৃণ্ বি স্বিজ্ব আবি আবি আবি বির্দ্ধানি। কলাণীত্যপদকণং শৃণ্ বি স্বেল্ড বির্দ্ধানি। ব্রাধ্ব ভক্তা বরং বৃণ্তেত্যাহাজিমন্তি সাকং মন্ত্রাক্তি বির্দ্ধানি বিল্লাইতি ন কামমেইনাং তব পাদসেবনাদকিঞ্চনপ্রাপ্তি নাম্বাহ হিতি ন পারমেষ্ঠাং ন মহেক্ষিক্তামিত্যাহাজাবরন্তি স্পৃহণীয়ামিতি তহত: ভক্তাব্রিক্তি মন্ত্রাক্তিতাহাত্যতে নম্বন্ধান্ত ব্রাহ্বিক্তি শ্রীক্ষামিত্র পারামিত তহত: ভক্তাব্রিক্তি শ্রীক্ষামিত্রণাঃ ॥ ৩২ ॥

মন্দর্শনাদি মাধুর্যেটণৰ স্বন্ধকার্মস্থ্রমানেন ব্রহ্মসার্ম্বসায়রাক্ত ধুন্ণাদ্যত ইত্যাহ তৈরিতি দর্শনীরা। অতি মনোহরা যে অবয়্যবাং প্রীকৃষ্ণ রামাদ্যলানি তৈ:। উদারা ভক্তাভীইপ্রদাতারো বিদাসাদ্রো যেষু তৈছঁত মনং প্রাণ্ডাদনিছে-তোপি ভক্তান্ ভক্তি: অণ্টাং গতিং প্রযুক্ত কে ভো ভক্তাং ব্রেক্ত কণাং মুক্তিং গৃহীতেতি প্রয়োগমাত্রং করোতি নতু দাতুম্বকাশং লভতে। ভগবতো লীলাবিলাসহাসাবলোক মধুর ভাবণৈত্তেবামান্মনাং চোরিতত্ত্বন সংপ্রদানাভাবাদিতি ভাবং। নদ্ববঞ্জেহি পর্ম বিক্তা ভক্তিমনিছতে: তান্ কথমেবং প্রযুক্তে। উচাতে কন্ডিভিয়ামণি স্পর্শহীরক প্রারাগদি মহারত্বানাং দাতা থব

করেন, এবস্থিধ কোন কোন ভাগবত পুরুষ ঐ প্রকার মুক্তি অর্থাৎ আমার সহিত একাত্মতা স্পৃহা করেন না॥ ৩১॥

বরঞ্চ হে মা! তাহারা আমার যে যে মূর্ত্তির প্রদন্ধ বদন এবং অরুণবর্ণ লোচন, দেই দেই দিব্য ও বরপ্রদ মূর্ত্তি দকল দর্শন করিতে অভিলাষ করেন, আর ঐ দকল মূর্ত্তির সহিত স্পৃহণীয় বাক্যও বলিয়া থাকেন। ফলতঃ মুক্তি অপোকা ভক্তিযোগে পরনেশ্বরামূভব স্থুখ অধিক আছে, একারণ ঐ দকল ব্যক্তির মুক্তিতে দে রূপে আদর হয় না ॥ ৩২ ॥

शत्रस्य मानात्र मरनार्व मूच निकानि चरत्रत शूक के नमछ मूर्जित नीमा रामा मचनिष्ठ चरानाकन अवः मरनाकारन सम्मूत कार्यानि चात्रा के नकन शूक्रावत्र मनः ७ हैक्तित्र मकन चाकृष्ठे रहेरान अवः

হৃতাত্মনো হৃতপ্রাণাংশ্চ ভক্তিরনিছতে। গতিমণীং প্রযুঙ্কে ॥ ৩০ ॥ । অথো বিভূতিং মম মায়য়াচিতামৈশ্বর্যমন্টাঙ্গমমুপ্রবৃত্তং।

क्षिभवत्रामी।

আরুষ্টা: প্রাণাশ্চ ইন্দ্রিয়াণি হেষাং তান্। ভজতঃ অনিচ্ছতঃ ইচ্ছাহীনানপি অণীং গতিং মুক্তিং প্রযুঙ্কে প্রাণয়তি। কৈঃ সাধনৈ: স্তাত্মন: উদারেবি সাসাদিভিঃ। তত্র বিলাসো লীলা। বামং মনোহরং স্ক্তং মধুরভাবণং ॥ ৩০ ॥

বিভৃত্যাদিকত্ব ততাধিকমিত্যাহ। অথো অবিদ্যা নিবৃত্যমন্তরং বিভৃতিং সত্যলোকাদি গতাং ভোগসম্পত্তিং। অশিমাদ্য-

क्रमममर्खः।

তামেবদশয়তি অংণা ইতি ৰাভ্যাং। অংণা পার্ষদথানস্তরং। মম সায়য়য়া ভক্তবিষয়ক রূপয়াচিতাং তদর্থং প্রকটিতাং বিভৃতিং ভোগসম্পত্তিং তথানিমাদ্যটেখর্ন্যং অফ্পরুডং স্বভাবসিদ্ধং। তথা ভাগবতীং প্রিয়ং সাক্ষান্তগবং সম্বন্ধিনীং সার্ষ্ট সংজ্ঞাং সংপত্তি মিপ। অম্পূর্মন্তি ভক্তি স্থামালাভিলাবেণ। যদাপি তেভ্যো নম্পূর্মন্তীতার্থঃ। তথাপিতু তে মম লোকে বৈকুঠাবো অলুবৃত্তি এবেতি স্ববাৎসালাবিশেবোদর্শিতঃ। যথা স্পামমালাকারবরে। সোপি বত্রেছচলাং ভক্তিং তল্মিরেবাছ্থিলাত্মনি। ভত্তকের্ চ সৌহাদিং ভৃতের্চ দয়াং পরাং। ইতি তথ্ম বরান্ দয়া প্রিয়ং চায়য়বর্দ্ধনীমিত্যাদি। অভতেরাং ত্রানাশক্তিম্চ দ্যোভিতা। অবিদ্যানস্তরমিতি। মম কুপয়াচিতামিতিচ। তেরামন্ত্রপত্তং পণ্ডিতং। কিংবা মায়য়াচিতাং বন্ধলোকাদিগতাং সম্পত্তিমণীতি তেরাং স্ক্রিবলীকারিজ্বেব দর্শিতং। নতু তত্তোগঃ। তস্যাতিভ্তত্ত্বেন তেরনহ্বিং। শ্রুতিশ্বার। তল্যথেই কর্মজিতোলোকঃ

শ্ৰীবিখনাণচক্ৰবতী ।

থিতাঃ কনকমণি দাতৃং দর্শসন্ত্রান্যপা কনকমস্যদাতৃন তি কনক মাত্রাথিতি মুন্দধীতিরপ্রতিষ্ঠাক্রিয়েতেতি বছক্তিরপি মুক্তি মাত্রাথি ক্লানিমানিলোক বল্পনিরাস্থিং সীলাং স্তানপি তথা প্রত্কে ন পুনম ক্রিমেব তেভোদিংসতীতাবধেরং। যহা ভক্তিরেব তান্ হৃতাশ্বনোজনান্ অণীং গতিং অনিছেতঃ প্রযুত্কে অণীং গতিং ন এবয়তি নাভিলাবয়তি অনিছেবাঃ প্রযোভিকা ভবতীতার্থং। যথা ক্রেন্তং প্রযুত্তক ইতি কারয়তীতানয়োণি চ্প্রতায়বাক্যণিজন্তরোল্ললা এবার্থং। তথাহি ন পাচরতায়মিতি বক্তব্যে ন পচন্তং প্রযুত্তকে ইতি ন পচন প্রযোজকোহয়মিতি চ যথোচাতে তথৈব ভক্তি জিল্লনান্ অণীং গতিং নেরয়তি নাভিলাবয়তীতি বক্তব্যে অণী গতিং অনিছেবঃ পায়ুত্তক ইত্যুক্তং। যথা স্বর্গফল নির্দিষ্টাং যাং যাং যোনিং বজান্মহিত্যাদি রীত্যাদন্যেন শুদ্ধ ভক্তি মাত্রেছ্ম্মাদিছেতোপি অণীং প্রক্রমতীত্তকে হল্পেয়াং পার্মদ্বাধাাং গতিং প্রযুত্তকে প্রাপ্রমতাদিভি হ্রত্মনং প্রাণান্ কুক্রত ইতি প্রীক্রপগোস্বামিচরণাঃ। প্রভাবীনানপি অণীং গতিং অনিছেতো জনান্ বিলাসাদিভি হ্রত্মনং প্রাণান্ কুক্রত ইতি প্রীক্রপগোস্বামিচরণাঃ। অত্যাধানমপি নাত্যসক্তং। যপেক্রিয়ের পৃথক্ হারিরানানপি অণ্ীং গতিং প্রযুত্তকে প্রাণম্বাস্থান্যমানস্বাং। ততণ্ট ভক্তিরিছা হীনাপি তান্ বলালু জন্ত্রপ্রস্থান্ত্র হারিরাং ভক্তিং প্রাপ্রা তে তু ব্রম্মহণ নীতা ময়াঃ ক্রফেন চোজ্তা ইতি রীত্যা ততো নিক্রময় ভগবদািরি তাং তথ পার্বনান্ বিধার ভজনানকৈঃ সদা নিমজ্বনতীতি তাৎপর্য্যমূত্র প্লোকাথিবগাহনা ক্রেম্মিতি চ কেছিদাহঃ॥ ৩০॥

কিঞ্চ কর্মজ্ঞান বোগাদীনাং ভক্তাবিনাভাব সিদ্ধান্তত্ত্বিনাভূতায়। অপি ভক্তে শুত্তং ফলাদায়িছেন বং কর্মজির্মন্তপ্রে ভালে শুত্ত্বাং সর্গাদীনাপি বন্ধতো ভক্তেরের ফলানীতি গুদ্ধভক্তিমন্তো মল্লোকবাসিনএর মন্তদ্মনারস্তৃতানোর সর্বস্থিতাহ-ভবন্ধীত্যাহ। অবো অবিদ্যা নির্ভানস্তরমের মার্যাচিতাং বিভূতিং সর্ব্ বন্ধান্ত গত ত্থানি। মার্যানিতি চ পাঠঃ। অধিমাদান্ত বোলেশ্বা অধ্যান্ত্রির্ভং ভক্তিমন্ত্ স্বভ্এব প্রাপ্তং তথা ভাগবতীং প্রিয়ং বৈকুঠছাং সাম্ভি সংক্ষাং সম্পৃতিং ন্থি নিশ্ভিং

তাহাতে তাহাদের মৃক্তার্থ ইচ্ছ। না থাকিলেও আমার ভক্তি স্বয়ং তাহাদিগকে মৃক্তি প্রদান ক্রিয়া থাকেন॥ ৩৩॥

জননি। এরপ মুক্তিতে বিভূতি আদি অধিক আছে, এই প্রকারে মুক্ত পুক্তর অবিদ্যা নিয়ুছির পর আমার মায়া বারা বিরচিত সত্যলোকাদি গত ভোগ সম্পত্তি এবং ভক্তির পশ্চাৎ বরং উপস্থিত জিয়ং ভাগবতীয়া স্পৃহরম্ভি ভক্রাং পরস্য মে তেহর্মুবতে মূলোকে। ৩৪। ন কর্ছিচিমংপরাঃ শাস্তরূপে নঙ্ক্যম্ভি নোমেংনিষিবো লেড়ি ছেডিঃ।

शिशतवामी।

টাকনৈখব্যমক্পাবৃত্তঃ ভক্তিমলু স্বতএব প্রাপ্তমণি ভাগবতীক প্রিত্তঃ বৈজ্ঠতাং সম্পত্তিং অম্পূত্রতি তে বল্যণি ন ম্পৃত্রতী-ভার্থঃ। তগাপিতৃ লোকে বৈকুঠে অলুবতে প্রালুবতের। ৩৪॥

নবেবং ভর্তি লোকদ্বাবিশেষাৎ সর্গাদিবৎ ভোক্ত ভোগ্যানাং কদাচিৎ বিনাশ: স্যাৎ তত্তাহ। হে শান্তরণে। বহা শান্তং শুদ্ধং সদ্ধং জজ্ঞপে বৈকুঠে। মৎপরা কদাচিদপি ন নঙ্কান্তি ভোগাহীনা ন ভবন্তি। অনিমিবো মে হেভিম্দীরং কালচক্রং

ক্রমসম্মর্তঃ।

ক্ষীরতে এবমেৰামূত্র পুণাজিতোলোক: ক্ষীরতে। ইত্যনস্তরং। অপ য ইছাম্মানমসূবিদ্য বস্ততোতাংশ্চ স্ত্যকামাং দ্বেষাং সর্কোব্ লোকেবু কাষচারে। ভবতীতি ॥ ৩৪ ॥

নষেবং তর্হি লোকজাবিশেষাথ স্থর্গাদিবথ ভোক্ত লোগানাং কদাচিছিনাশং স্যাথ ত্রাহ। শান্তরূপে শান্তমবিক্লতং রূপং বস্য জিন্ বৈকুঠে মথপরান্তলাদিনো লোকাং কদাচিদিপি ন নক্ষান্ত ভোগহীনা ন ভবন্তি। অনিমিষো মে হেতিম্পীরং কালচক্রং নোলেঢ়ি তার প্রসতে। ন স পুনরাবর্ত্ত ইতি ক্রতে:। আব্রুজ্বনারোকাং প্নরাবর্ত্তিশেহর্জ্ব। মাং প্রাণাপ্রত্বিভাগ প্রক্রিম পুনক্জির ন বিদ্যুতে ইতি গীতোপনিষত্তা:। সহস্রনামভাবোপ্যক্তং পরম্থক্ত মন্তর্ম প্রান্তিশন্তাইতি মিতি প্রায়ণং পরায়ণ ইতি প্রেল পক্ষে বহুব্রীহিরিতি। ন কেবলমেতাবত্তেবাং মাহাল্পামিত্যাহ। বেবামিতি। প্রিয়ো লক্ষ্যাদীনামিব। তত্ত্বা ভাবনীয়:। এবমাত্মা পরমাত্মা সনকাদীনামিব। স্তত্যেতবদাদীনামিব স্থা প্রদামাদীনামিব। গুরুঃ প্রচ্নান্তিশিক বিভাগিবিদিব। ক্রিম্ভ্রালীনামিব। ক্রেম্ভর্মালীনামিব অভ্যন্তবিভাতে মন্ত্রি স্ত্রেম্ভর্মেণ ভক্তিভ্রে বিভাগিত দর্শিতঃ। অন্তিমনিষ্ঠাত তত্তাত্তথা জ্ঞাততভাগ্যভ্রতে বংসে গৌরিব বংসলেতি। বেবাং মাং বিনা ন কন্দিদপর প্রেমভাজনমন্ত্রীত্যর্থ:। যবা। গোলোকাদিকমপেক্ষ্যেব্যুক্তং। ত্রেহি তথাভাবা এব শ্রীগোপা নিত্যা বিদ্যুক্তে। অথবা তং লোকং কীদৃগ্ভাবা অবিশানন্তরং প্রাপুর্বিভ ভ্রাহ। বেহামিতি। যে কেচিৎ পালোত্তরণও দর্শিত মুনিগ্রণ স্বাসনাঃ

श्चीवित्रनाथठकवडी।

চকারাৰু স্থানলক অস্থ্যন্তি ষদীয় হাসাবলোকাদি হতাত্ম মনঃ প্রাণত্বাল্যদাপি তেভাো ন স্ত্রতীত্যর্থ:। তথাপি প্রমেশ্রস্য মে মম লোকে বৈকুঠে অশুবতে প্রাপুবত্তোবেতি স্ববাৎস্লা বিশেষো দর্শিতঃ ॥ ৩৪ ॥

নবেবং তর্হি লাকথাবিশেষাৎ স্বর্গাদিবভোক্ ভোগ্যানাং কদাচিছিনাশঃ স্থান্তআই শান্তমবিক্লত রূপং যন্ত তদ্মিন্ মদোকে মংপরা ভ্রমিনোলোকাঃ কদাচিদিপি ন নক্ষান্ত । ভোগ্যহীনা ন ভবন্তি অনিমিবো মে হেতিম দীরং কালচক্রং নোলেড়ি তার প্রসতে ন স পুনরাবর্তত ইতি শ্রুতে। আত্রন্ধ ভ্রুবনারোকাঃ পুনরাবর্তিনোহর্জ্বনঃ। মামুপেতাতু কৌত্রের পুনর্জন্ম ন বিদ্যুত ইতি গীতোপনিবত্তাঃ। সহস্রনামভাবোপি পরমুৎকৃত্রমন্ত্রনং স্থানং পুনরাবৃত্তিশভারহিতমিতি পরারণ পদং ব্যাখ্যাতং। বেরামহং প্রিদ্র ইতি প্রেরসীভাববতাং। আন্তেভি পান্তভাবাং। স্বত ইতি বাৎসঙ্গা ভাববতাং। সংগতি স্থাবতাং ভরুরিতি দান্তবিশেহবতাং। স্ক্লেইতি বহুত্বমার্গং স্থাভেদ্বতাং। ইত্রং দৈব্যিতি দান্তভাবহতাং। তথাচোক্রং নারারণ্ব্যুহত্তবে। পতিপুত্র স্বন্ত ব্রুবিভি

অণিমাদি অই ঐশর্য্,তথা ভাগবতী এ অর্থাৎ বৈকৃষ্ঠত সাষ্টি নাল্লী সম্পত্তি ও এক্ষানন্দ হৃথ,এই সকল ভোগ যদিও ম্পৃহা না করে তথাচ বৈকৃষ্ঠলোকে উপন্থিত হইয়া অনায়াসে তাহা প্রাপ্ত হয়॥ ৩৪॥

হে শান্তরূপে! আমার ভক্তিবোগে মৃক্ত পুরুষ বৈকৃষ্ঠবাসী হইয়া বিবিধ ভোগ্য বস্ত প্রাপ্ত হয়, ইহাতে এমত আশহা করিবেন না যে স্বর্গাদির ন্যায় বৈকৃষ্ঠলোক স্থিত ভোক্তাও ভোগ্য সকলের কাল বশতঃ কর হইরা থাকে, যে সকল ব্যক্তি আমাকে একান্ত ভাবে আঞায় করে কোন কালে ভাহারা ভোগ্য বস্তু বিহীন হর না এবং আমার অনিমিব কালচক্রও তাহাদিগকে গ্রাস করিতে পারে না। ফলতঃ আমি যাহাদের আত্মবৎ প্রিয়, পুরুর হ্যায় স্নেহভাজন, স্থা তুল্য বিশাসের আম্পদ, শুরু সদৃশ

যেয়ামহং প্রিয় আত্মা হতশ্চ স্থা গুরুঃ হুছাদো দৈবমিইং 🛊 ৩৫ 🞼 🔆 🔻 🕬 ইমং লোকং তাথবামুমাত্মানমুভরায়িন:। আত্মানমসু যে চেহ যে রায়ঃ পশালে গৃহছৈ। ৩৬। বিস্কা সর্বান্যাংশ্চ মামেবং বিশ্বতো মুখং। ভক্তরান্যা ভক্তরা তান্ মৃত্যোরতিপারেরে ॥ ৩৭ নান্যত্র মন্তগবতঃ প্রধান পুরুষেশ্বরাৎ। আত্মনঃ দর্বভূতানাং ভয়ং তীব্রং নিবর্ত্ততে ॥ ৩৮ ॥

श्रीभवत्रामी ।

চ নোলেটি তান্ন এসতি তত্ৰ হেতুঃ বেৰামিতি। স্থত ইৰ সেহবিষরঃ। সধেব বিশাসাম্পদং। গুরুরিব উপদেষ্টা। স্থভ্দিব हिতकाती। ইটং দৈবমিব পূজ্য:। এবং সর্বভাবেন যে মাং ভজ্ঞ তান্ মদীয়ং কালচক্রং ন গ্রসতীতার্ধ: ॥ ৩৫ ॥ এবস্কৃতান্ত একান্ত ভক্তেভো দদামীতাাহ ইমমিতি ছাভাং। উভয়ায়িনং লোক্ষয় গামিনং আত্মানং দোপাধিকং। আত্মানমন্ত্ বে পুত্রকল্ঞাদর: বেচ পরাদ্যো রায়ে। ধনানি ॥ ৩৬ ॥ অফ্রাংশ্চ পরিগ্রহান্ মৃত্যোঃ সংসারাদ্তিপার্যে অভিতারস্বামি ॥ ৩৭ ॥ অভকানাত্ত ন কণ্ডিদ্পি মোক্ষ ইত্যাহ নেতি। মন্তগ্ৰতোহন্যত্ৰ ভগৰতো মতো বিনা। সৰ্বভৃতানামাত্মনঃ ভগ্ৰদাদি

क्रमममर्खः।

প্রির: পতিরিতি মাং ভাবয়িও যে কেচিচ্চ সনকাদি স্বাসনা:। আত্মা এক্সেবায়ং সাক্ষাদিতি মাং ভাবয়ত্তি এবমনোচ যে যে তএব প্রাপুৰস্তীত্যর্থ:। স্কল্প ইতি বছত্বং সৌল্লাস্য নানাডেলাপেক্ষরা এবং চতুর্থে খ্রীনারদ্বাক্যে শাস্তাঃ সমদৃশঃ ওদাঃ স্কভ্তাসুরশ্বনাঃ। যাজ্যঞ্সাচ্যতপদমচ্যতপ্রিয়বাদ্ধবা ইতি ॥ ৩৫॥

তবৈবোপদংহরতি। ইমমিতি বুগাকেন। এবং প্রিয়ম্বাদি প্রকারেণ॥ ০১॥ বিশ্বতো মুধং তত্তভাবামুসারেণানস্তাবির্ভাবং অননায়া ভাবাস্তরামিশ্রয়া॥ ৩৭॥ ষচ্চ ভবতাা জিল্পাসমা প্রকৃতে: পুক্ষসোত্যক্তং তত্তু কেবলং ন কিঞ্দিত্যাহ। নান্যত্তেতি ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥

औविश्वनाथठकवर्डी ।

বিশ্বিত্রবন্ধরিং। বে ধারিতি সদোদ্যুক্তাত্তেভ্যোপীহ নমোনমঃ ইতি। যমেবৈষ রুণুতে তেন লভ্য ইত্যভাঃ ঐতেরপি। যং প্রিয়দেন বা পিতৃছেন বা প্রত্থেন বা স্থিছেন পুত্র ভ্তাদিছেন বা রুণুতে তেন লভা ইতার্থোবেদিতবা ইতিরাগাফুগায়াঃ चां ভाविका। ভক্তে क्रमाह्र तर्गः (क्रायः ॥ ७० ॥

অস্বাভাবিক্যাঃ সাধনভকেকদাহরণমাহ ৰাভ্যাং। ইমং দৃইভোগাস্ফিং অমুং অদৃষ্ট ভোগা স্কিং উভরারিনং তহ্ভয়গামিনং আত্মানমিত্যহস্তাম্পদে ভোক্তরি চাসক্রিং বিক্সজ্যেতি যথৈব ভোগাদ্যাস্তিক র্ভোগাদি প্রশংসা গম্যা তথৈব তত্তদাস্তিক্তাগ্য শুত্রিকাগমা ইতি যথোক্তং জুষমাণ চ তান্ কামান্ ছংথোদকাং চ গর্ষরিতি। তথা আনমত্ল কণীকৃত্য যে পুত্রকল্তাদয়ং যে চ वाविश्विका देवश्रक्षाः। वाद्याधनानि ॥ ०७ ॥

বিশ্বতোমুশং তে যক্তাং দিশি যাঞ্জি তত্তৈবাহং তেষামন্তিমুথ এব বর্ত্তে ইতার্থ:। অননায়া দেবতান্তর ভক্তিজ্ঞান কর্মাদি শূন্যয়া। মৃত্যো: সংসারসিকো: অতিপারয়ে ভক্তিমাত্রাভিলাবিত্বেন সংসার পারমনিচ্ছতোপি তানতিক্রম্য পারয়ে পারং প্রাপয়ামীতি তানেবমজ্ঞাপয়িকৈবেতার্থ:। যতুক্তং জরয়ত্যাশু যা কোশমিত্যাদি॥ ৩৭॥

মন্ত্রকিং বিনাতু নৈব নিস্তার ইত্যাহ মত্তোহনাত্র মাং বিনেতি মন্ত্রকিং বিমেতার্থ:। ভক্তিবিষয়ীভূতত অভানত

উপদেক্টা, অ্হতং সম হিতকারী, ইক্টদেব তুল্য পূজনীয় অর্থাৎ ঘাহারা এই প্রকার সর্বতোভাবেঁ আমার ভক্তন করে আমার কালচক্র তাহাদিগকে কি কথন আসি করিতে সমর্থ ইয় ? ॥ ৩৫॥

কিন্তু আমি এই রূপ মৃক্তি যে কোন ভক্তকে প্রদান করি না, ইহলোক এবং পরলোক এই উভয় লোকগামি সোপাধিক আত্মা, অপর ঐ আত্মাকে আত্ময় করিয়া যে সকল পুত্র কলত্রাদি ধাকে, এবং আর আর যে সকল ধন পশু গৃহ। ৩৬॥

তথা অন্যান্য যে সমস্ত পরিএই আছে,তৎসমুদায় বিসর্জন দিয়া যাহারা ঐকান্তিকী ভক্তি ৰারা আমার আরাধনা করে, কেবল তাহাদিগকেই সংসার হইতে উদার করিয়া ঐ প্রকার মুক্তি প্রদান করি।। উদ্ধা मा । जामिरे छशवान्, जामिरे अधान शूक्तरवत स्वत, जामिरे गर्दाशीनित जाजा, जामाणिय जना

মন্ত্রাবাতি বাতোরং সূর্বান্তপতি মন্তরাং । বর্বতীক্রো দহতায়ি মৃত্যুশ্চরতি মন্তরাং ॥ ৩৯ ॥
ভাৰ বৈরাণ্য বুজেন অভিবেশেন বোগিনঃ । কেনায় পাদকৃলং মে প্রবিশন্তাক্তোভয়ং ॥ ৪০
এতাবানেব লোকেহন্দ্রিন্ পুংসাং নিঃপ্রেরসোদয়ঃ । তীত্রেণ ভক্তিবোগেন মনো মঘার্পিতং দিরং॥ ৪১
॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভৃতীরস্কলে কাপিলেয়ে
ভক্তিযোগং পঞ্চবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ৯ ॥ ২৫ ॥ ॥ ॥

अध्यक्षामी।

বিশেষণত্তায়েণ সামর্থ্যং নিরপেক্ষত্বং হিতকারিত্বঞোক্তং ॥ ৩৮৽॥

ঐমর্থাং ক্টরতি মন্তরাদিতি। প্রতিশ্চ জীবাঝানাতঃ প্রতে জীবোদেতি স্থাঃ ভীবাঝাদমিশ্চেক্রণ্ট মৃত্যুর্ধাবতি পঞ্চম ইতি॥৩৯
মন্তর্জনাদের মোক্ষ ইতাত্র সদাচারং প্রমাণয়তি জ্ঞানেতি॥ ৪০ ॥

উপদংহরতি এতাবানিতি। ময়ি অর্পিতং দল্পনঃ ভিরং ভবতীতি যৎ এতাবানেব ॥ ৪১ ॥

॥ * ॥ ইতি ততীয়ে পঞ্বিংশ: ॥ * ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

দেবানামিত্যাদিবৎ স্বস্য তুমতমাহ। এতাবানিতি। তীরেণ দৃচ্চেন বোগকর্মাদিতিরভঙ্গুরেণ তদ্ধেনেত্যর্থ:। তেনৈবা-পিতং সং স্থিরং ভবতীতি যৎ এতাবানেব নিশ্রেষসস্য পরম পুরুষার্থস্যাবির্ডাব: ॥ ৪১ ॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ন্তকে জীবগোলামিকত ক্রমসন্দর্ভে পঞ্বিংশোহধাার: সমাপ্ত: ॥ • ॥

टीविश्वनां शहक्त वहीं।

সক্ষপত্তি বিশেষণ এয়েণ পূর্ব্ব পূর্ব্ব মৃথ্যানি সেব্য সক্ষপাণি কানিচিৎ স্চয়তি। ভগবান্ প্রথমতঃ পূর্ণ: আক্তিঞ্জ এব। ততঃ জীরামঃ প্রধানপূক্ষেখরঃ পরব্যোমনাথঃ। তত আত্মা প্রকৃত্যন্তর্যামী সমষ্ট্যন্তর্যামী ব্যষ্ট্যন্তর্যামী চেতি পূক্ষএয়ঃ। পূক্ষাবতারা মৎক্র কুর্মান্যোগি জেয়াঃ ॥ ৩৮ ৪

নবনস্ত্রয়া ভক্তোতি অয়োক্তং অতঃ অন্যে ধরসেবিতা দেবাঃ কুণারস্বস্তক্তং কদাচিদ্যুথরন্তি নবেতি তত্র সাটোপমাহ মদিতি। প্রতিক্তা ভীষাআঘাতঃ পবতে ভীষোদেতি ত্র্যঃ। ভীষআদি মিশ্চেক্ত মৃত্যুধাৰতি পঞ্চম ইতি। তেন যদি কমণি তে মন্তক্তং কদাচিদপি চ্বস্তি তদা তাংস্তরদধিকারাদপাধঃ পাতরিত্ং নৈবাহং বিলম্বে ইতি ভাবঃ॥৩৯॥

শুদ্ধাং ভক্তিমুক্তা জ্ঞানাদিমিশ্রাং ভক্তিমাই জ্ঞানেতি ॥ ৪০ ॥

তদপি মন শুকৈৰ ভক্তিঃ সৰ্ব্বতঃ শ্ৰেষ্টে তাহি। এতাবানেবেতি। ইতোহধিকোনিঃশ্ৰেমসোদয়ো নৈবকোপাতি কিন্ধিতো নান এব সৰ্ব্ব ইতিভাবঃ। তীব্ৰেণ দুঢ়েন জ্ঞানকৰ্মাদিভিরভঙ্গুরেণ শুকেনেতার্থঃ নিশ্রেমস্সা প্রমপুক্ষার্থসোদয়ঃ ॥ ৪১॥

॥ * ॥ ' ইতি সারার্থদ শিক্তাং হর্ষিণ্যাং ভক্ততেজসাং। তৃতীয়ে পঞ্চবিংশোহয়ং সঙ্গতঃ সঙ্গতঃ সভাং । । । ।

কাহা হইতেও সংসার ভয় নিবৃত্ত হয় না॥ ৩৮॥

আমার ভয়েতেই বায়ু বহন করে, আমার ভয়েতেই সূর্য্য উত্তাপ দেন, আমার ভয়েতেই ইস্ত বর্ষণ করেন, আমার ভয়েতেই অগ্নি দন্ধ করে এবং আমার ভয়েতেই মৃত্যু সকল প্রাণির উপর ধাবমান হয়॥৩৯

মা! আমার ভজন হইতেই যে মোক হয় এ বিষয়ের সদাচার প্রমাণ দেখ, যোগিগণ জ্ঞান বৈশ্বাগ্য যুক্ত ভক্তিযোগ ৰারা আপনাদের কেম লাভ নিমিত আমার অক্তো ভয় পাদমূল সেবন ভ্রিয়া থাকেন ॥ ৪০ ॥

ফলত: দৃঢ় ভক্তিযোগ ৰাৱা আমাতে মন: অপিত হইয়া যদি স্বস্থিয় হয়, তবে তাহাই ইহলোকে কুলুৰ সকলের প্রস্কু পুরুষার্থ ॥ ৪১ ট

्रेक्टिक करिया कर । का देखि प्र**की**ता नकविश्न । । का

এ ভগবামুবাচ ॥

অথ তে সংপ্রবন্ধ্যামি তত্ত্বানাং লক্ষণং পৃথক্। যদিছি বিষুচ্যেত পুরুষঃ প্রাকৃতৈ ও শৈঃ॥ ১॥ জ্ঞানং নিঃশ্রেয়সার্থায় পুরুষস্যাত্ম দর্শনং। যদাত্ত্ব প্রে তত্তে হৃদয়প্রতিভিদনং॥ ২॥ অনাদিরাত্মা পুরুষো নিগুণঃ প্রকৃতেঃ পরঃ। প্রত্যধাষা বয়ং জ্যোতি বিশিং যেন সমন্বিতং॥ ৩

शिववाशी।

ষজিৃংশে পুং প্রক্তোম্ব বিবেকায়োপবর্ণাতে। সাংখ্যেন সর্ক্তাবানাং জন্ম লক্ষণভেদতঃ। ধাতা পুতার বংপ্রোক্তং ক্ষতে মিত্রাস্থতেন বং। মাত্রে সাধ্যং ভদধ্যাঝং প্রাধান্যেনাছ তম্ববিং ॥ • ॥ ˈ

তত্ত্ব মানং যৎ প্রবৃদন্তি সাংখ্যমিতাত সাধাং ভঁজি শেতিত ত্বরমুপক্ষিপ্তং তত্ত ভক্তিমুক্ত্ব। ইদানীং সাংখ্যমাহ অথেতি ॥ ১॥
নমু মুক্তিরাত্ম জ্ঞানাদের নতু তত্ত্বকণজ্ঞানাৎ। ত্বের বিদিয়া অতিমৃত্যুমেতি ইতি প্রতঃ। অত আহ আনমিতি আত্ম
দর্শন রূপং জ্ঞানং অতএব ভ্রদ্যপ্রস্থিভেদনং অহত্বারনিবর্ত্তকং। নিঃপ্রেরসপ্ররোজনার যদাহঃ তত্তে বর্ণয়ামি। তত্ত্বকণ জ্ঞানাদেব বিবিক্তাত্মজ্ঞানং ভবতীতি ভাবঃ॥ ২॥

ততে প্রবং লক্ষরতি অনাদিরিতি আহৈরব প্রয়ুঃ কোসাবাত্মা প্রত্যক্ প্রতিলোমং ধাম ক্রির্থস্য। ক্ষণিকপক্ষং ব্যাবর্তয়তি অনাদিরিতি সংসারিত্ব পক্ষং ব্যাবর্তমতি প্রকৃতেঃ পরোহন্যঃ অসঙ্গঃ। জ্ঞানাদি গুণত্বং বারমতি নিগুণঃ। মীমাংস্কাদ্যভি মতজ্ঞান বিষয়ত্বং বারমতি তামং জ্যোতিঃ। অনেনৈব প্রতাকরাদি মতং জ্ঞানাধারত্বন ক্রুবণমণি নিরস্তং। তামং জ্যোতিটে

ক্রমদন্দর্ভঃ।

তদেবং ক্লতার্থরিতা বিবেক মাত্রায় সাংখ্য জ্ঞান যোগাদি মার্গানপ্যাহ। বাবৎ সমান্তি যথেতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ জ্ঞানিবিতি । জাত্মা প্রমাধ্যেব পূক্ষ: নিও'ণঃ প্রাকৃতগুণরহিতঃ শিষং যেন সম্মতিমিতি সর্ব্ধ কারণত্বং তেন বিচিত্র

डीविधनाणहक्रवडी ।

ষড়বিংশে মহদাদীনামুৎপত্তিল কাণং তথা। তৈবি রাট্ ওতা চৈতন্য মুক্তমাত্মপ্রশেতঃ ॥ • ॥

মাত্রা পৃষ্টের্ ভক্তিজ্ঞানবোগের্ ভক্তিমৃক্যু মাতরং তরৈব কৃতার্থী কৃত্যাপি কর্মজ্ঞানবোগাদিভিঃ স্বর্গমোক্ষাদিকলানাং ভক্তা বিনা দাত্মশকাস্থাত্তেলপি ভক্তি মহাদেবাা অধিকারাৎ সর্বত্র সাম্রাজ্যবত্যাক্ত উপাসকজনৈরপি কৌতৃহবশাৎ কর্মজ্ঞানাদয়োপি ক্ষিজ্ঞাসনীয়া এবেতি সাম্প্রভং জ্ঞানং বক্তুমাহ অথেতি ॥ ১॥

নমু তত্বলক্ষণজ্ঞানেন কিং ভবিষ্যতীত্যত আহ জ্ঞানমিতি তত্বলক্ষণ জ্ঞানাদেব বিবিকাত্মজ্ঞানং ভবতীতি ভাবং ॥ ২ ॥ তত্ত্ব পুরুষং লক্ষয়তি অনাদিনিত্যং আত্মা প্রমায়েব পুরুষং নির্ভাণং প্রাকৃতগুণরহিতং। যতং প্রকৃতেং পরং। প্রতাক্ সর্কেন্দ্রিয়াগস্যং ধাম কারণাণ্বোদ্ভ সং। অতত্ত্ব স্বয়ং জ্যোতিং স্বপ্রকাশং স্বয়ং জ্যোতিটো হৈতং বিশ্বং যেন সমন্তিং সং

ষড়্বিংশ অধ্যায়ে প্রকৃতি পুরুষের বিবেচনার্থ মহদাদি তত্ত্ব সকলের উৎপত্তিভেদে সাংখ্যযোগ কথন॥ • ॥

ভগবান্ কহিলেন হে নাতঃ! একণে আপনাকে তত্ত্ব সকলের পৃথক্ পৃথক্ লক্ষণ বলি, তৰিষয়ে জ্ঞান স্কুমিলে প্রকৃতি সম্বন্ধীয় গুণ হইতে পুরুষ মুক্ত হইয়া থাকে॥ ১॥

অপন্ধ আত্ম দর্শন রূপ যে জ্ঞানে হৃদয় গ্রন্থির ভেদ হয় অর্থাৎ যাহা অহন্ধার নির্ভ করে এবং পণ্ডিতেরা নিঃজ্ঞায়সার্থ অর্থাৎ আত্যন্তিক হুঃথ নির্তির নিমিত্ত যাহ। কহিয়া থাকেন, আপনার নিক্ট তাহাও বর্ণন করিতেছি॥ ২॥

মা ! সর্বেজিনের অগম্য ধান বিশিষ্ট যে আত্মা তিনিই পুরুষ, সেই পুরুষ অনাদি এবং প্রকৃতি হুইতে ভিন্ন অর্থাৎ সঙ্গ রহিত ও নিগুণ, তিনি অয়ংই প্রকাশ পান, এই বিশ্ব তাঁহার সহিত সম্বিক

मृश्व शक्किः मृक्याः रेववीः श्रृथमग्रीः विष्टः । यमृष्टरेग्नर्वाशशामग्राभगाण नीनशा ॥ 8 ॥ श्रोतिकिकाः रक्किः महनाः बङ्गिर बङ्गाः । विरमाका मृगूरः नषाः न देर कानगृहशा॥ ৫॥

अवत्यामी ।

হেতৃঃ বিখং বেদ সম্বিতং প্রকাশত ইভি শেবং। এতৈরেব হেতৃভিঃ প্রব্দ্যা প্রকলেঃ পর্বদ্ধি সিদ্ধং ॥ ৩ ॥

তত্র চাবরণ বিক্ষেপ শক্তিভেবেন প্রকৃতিবিধা তত্রাবরণ শক্ত্যা সৈব শীবোণাধিরবিদ্যা। বিকেপ পক্ত্যা সৈব নারা পারমেখরী। পুরুষক শীবেশ্বর রূপেণ বিবিধঃ তত্র যঃ প্রকৃত্যবিবেকেন সংসরতি স জীবঃ। বন্ধ প্রকৃতিং বশীকৃত্য বিশ্ব স্থায়াদি করোতি স প্রমেশবঃ। তত্র প্রকৃত্যবিবেকেন জীবক্ত সংসার প্রকারমাহ স এব ইতি পঞ্চতিঃ। স্ক্রামব্যক্তাং দৈবীং দেবক্ত বিক্ষোঃ শক্তিং লীলয়া উপগতাং বদৃদ্ধবৈধান্তপদ্যত ইত্যবয়ঃ॥ ৪॥

ভক্তা লীলামাহ গুলৈরিভি জ্ঞানং গৃহতে আবৃণোভি ইতি জ্ঞানগৃহা তয়া তথাচ প্রভি: অলামেকাং লোহিত ওক্লকুঞাং বছবীঃ

क्रमनमर्जः।

প্রকাশকভরা অনন্তশক্তিত্বং দর্শিতং॥ ৩॥

স এব পরমান্তা বৰ্জহো বৈরিতরা যা লীলা তরা অভ্যপদ্যত ঐকত লোকবন্ত লীলাকৈবল্যমিতি ন্যারাং। স ঐকত ইতি খ্যতে: ॥ ৪ ॥

ততক্ষ পুক্ৰান্তরস্যাবস্থামাহ। ওগৈরিতি। তাং চৈকাংশেন ক্লন্তীং ইহ শরীরে প্রসিদ্ধো লীবাধ্য: পুক্ষন্ত মুখ্তে জান গৃহ্যা তস্যা: প্রকৃতেরেবাবিদ্যাধ্যয়া বৃত্তা অল বিলোক্যেতানেন মুম্ছ ইত্যনেনচ পরাগ্ভূতারা: প্রকৃতেঃ তৎক্লালজানাঞ

अविषनाथ ठक्कवडी ।

প্রকাশত ইতি শেষ: ॥ ৩॥

এব পরমাত্মা যদৃচ্ছদৈব বৈরিতদৈব অশক্তিভাগুপগতাং কর্মবন্ধ লগৎ সিক্তলাসময় এব দীলয়া অভ্যপন্যত জীবলক্তিক্সপং বীধ্যং ভক্তামাদধান ঐকতেত্যর্থ: ॥ ৪ ॥

ভত্র জীবস্য মোহমাহ প্রকৃতিং বিলোক্য স জীবাস্থা ইহ প্রকৃতে দ্বিভ: সৃদ্য: প্রকৃতিসংসর্গদমন্ন এব জ্ঞানগুঁহরা প্রকৃতেরেবা-বিল্যাথ্য বৃত্তা। যুক্তোমুমুহে স্বরূপং বিদ্যার সদৈবানাদ্যবিদ্যার। যুক্তোশি জীব: স্বর্থে বথা স্বরূপং কিঞ্ছিপলভতে তথৈৰ স্থাই: পূর্বং প্রলায়েবি স্বরূপমুপলভ্যান এবাসীৎ স্ট্যারম্ভেত্ ভ্রিসন্মারেত্যর্থ:। কীদৃশীং ভগৈ: স্থাদিভি বিক্রিয়া প্রকা: স্ক্রীং

र्हेश श्रकाम शाहेश थाटक ॥ ०॥

সেই পুরুষের নিকট বিষ্ণুর শক্তি রূপা অব্যক্ত গুণময়ী প্রকৃতি লীলাবশতঃ উপগতা হইলে তিনি যদুচ্ছাক্রমে তাহাকে গ্রহণ করিয়া থাকেন॥

তাৎপর্য। আবরণ ও বিক্ষেপ শক্তি ভেদে প্রকৃতি ছুই প্রকার, তন্মধ্যে আবরণ শক্তি ছারা জীবের উপাধি স্বরূপ হইয়া ঐ প্রকৃতি অবিদ্যা রূপা হরেন এবং বিক্ষেপ শক্তি ছারা মায়া রূপে পার-মেশ্রী বলিয়া কথিতা হইয়াছেন, অপর জীব ও ঈশ্বর ভেদে পুরুষও ছুই প্রকার হয়েন, তন্মধ্যে যিনি প্রকৃতিতে মুগ্ধ হইরা সংসার ভোগ করেন তিনি জীব, আর প্রকৃতিকে বশীভূত করিয়া তন্ধারা যিনি স্ট্যাদি করেন তিনি পরমেশ্বর ॥ ৪ ॥

ঐ প্রকৃতি আপনার গুণ বারা আপনার সমান রূপ বিচিত্র প্রজা সৃষ্টি করিতে থাকেন, তাহাতে তাঁহাকে অবলোকন করিয়া ঐ পুরুষ জ্ঞানের আবরণ রূপা অবিদ্যা বারা সদ্যঃ মুট্ট হারা পড়েন। ভাৎপর্যা। একটা অভা (প্রকৃতি) তাঁহার লোহিত শুরু কৃষ্ণ অর্থাৎ সহ রজঃ তমঃ ভেদে বিক্রী এব আছে, তিনি আপনার ঐ রজঃ আদি গুণত্রর বারা আপনার সমানরণা অর্থাৎ রাজস, সাজিক এবং তামস ভেদে বহু প্রকার প্রজা স্কান করিয়া থাকেন, অপর একজন অক অর্থাৎ প্রকৃষ

এবং পরাভিগ্যানেন কর্তৃত্বং প্রক্তেঃ পুমান্। কর্মান্ত ক্রিয়মাণের গুণৈরান্ধনি দন্যতে ॥ ৬ ॥ তদস্য সংস্তির্ব দ্ধঃ পারতন্ত্র্যঞ্চ তৎকৃতং। তবতাকর্ত্রনিশ্য সাকিশোনির তান্ধনিঃ ॥ ৭ ॥

विधवसामी ।

প্রজা অনুরন্তীং সর্পাঃ। অলোহেকো স্ব্যাণোহ্দুশেতে জহাজোনাং ভ্কতোগামলোহনা ইতি মুমুহে আস্থানং বিশ্বতবান্ । ৫ পরাভিধানং প্রত্যধাসঃ তেন প্রকৃতি কর্ম কর্ম কর্ম কর্ম কর্ম কর্ম আমুনি মন্তে ॥ ৬ ॥

তদিতি কর্ত্মননমের অভ প্রবভ সাকিমাত্রখাং অকর্তুরের সতঃ কর্মভিব কঃ। ঈশভাপরতর্ভৈর কর্ম বন্ধকৃতং ভোগ পারতর্ডাং। নির্তাশ্বন অংশাথ্যকভৈব সংস্তিঃ ক্যামৃত্যুপ্রবাহঃ। প্রকৃত্যবিবেককৃত্মেতং সর্কং ভবতীত্যর্বঃ॥ ৭ ॥

ক্রমদন্তঃ।

প্রত্যগৃত্তং বজ আনং তত্ত্ব্য স্বরূপশক্তিরের ব্যাদিতি গম্যতে। জ্বীনীতোপনিবদিচ তথা। অজ্ঞানেনাবৃতং জ্ঞানং তে ন মুছব্তি জব্ব ইতি ॥ ৫॥

পরাভিধ্যানেন প্রকৃত্যাবেশেন প্রকৃতিরেবাহং ইতি মননেন। প্রকৃতেপ্রতিং ক্রিরমাণের কর্মক কর্ত্থমার্থনি মন্যতে। অল্ল নির্বংভাবস্য পরাভিধ্যানাভাবাৎ পরাবেশলাতাহংকারস্য চাবরক্ষাদন্ত্যের তিম্নিরন্যাহং ভাববিশেবঃ। সচ ভদ্ধ স্বরূপ মাল্ল নির্বান্ন সংসার হেতুরিভি স্পষ্টঃ। এতদেবাহংকার্বয়ং সরে যদিক্রিরগণেহহমিচ প্রস্থেও কৃট্যু আশরমূতে তদম্মৃতি ন :।
ইত্যাল দর্শিতং। উপাধ্যভিমানাত্মক্স্যাহংকারস্য প্রস্থেত্থাং। তদম্মৃতিন ইত্যানেন স্থমহম্মান্সমিত্যাত্মনোহংং ভবৈর পরামর্শান্ত। অভএব মামহং নাজ্ঞাসিষ্মিত্যল পরামর্শেণি উপাধ্যভিমানিনোম্সদ্ধানাভাবঃ। অন্যস্য ওজ্ঞানসাক্ষিত্বেনাস্ম্বান্মিতি দিক্॥ ৬॥ १॥

এীবিশ্বনাগচক্রবন্তী'।

তথাচ শ্রুতিঃ অক্তামেকাং লোহিতগুরুক্ষণং বহুবীঃ প্রকা জনমন্তীং সরপাঃ। অলোহেকোজ্যমাণোহ্মুপেতে জহাত্যেনাং ভূককোগামজোহন্য ইতি ॥ ৫॥

এবং নৃত্যতোগারতঃ পশ্যন্ যথৈবাত্ত্বরোতি তানিতি রীত্যা পরাভিধ্যানেন প্রকৃত্যধাদেন সাচ প্রকৃতি দেহি এবেতি দেহিএবাহমিতি মননেন প্রকৃতেগুঁ গৈঃ ক্রিয়মাণের কর্মস্থ রূপাদিগ্রহণের কর্ত্ত্যামানি মন্যতে তক্ত নিরহংভাবস্য পরাভিধ্যানা সম্ভবাৎ পরাবেশ জাতাহছারস্য চাবরক্ষাদন্ত্যেৰ তিম্মিন্যাহ্ছং ভাববিশেষঃ সচ গুদ্ধ স্বরূপমাত্র নিঠ্ছার সংসার হেতু রিতি স্পট্টং বিপ্রকৃষারত সাহজারসৈয়েব ভৃতাবেশত্বে সতি ভৃতোহমিতিবদিতি বিবেচনীয়ং ॥ ৬ ॥

তদিতি কর্তৃত্ব মননমেবাস্থ জীবস্ত বস্তুত: সাক্ষিমাত্রখাদকর্ত্ত্বেব সতঃ কর্মজিরেব বন্ধঃ। যথা রাজকীয়ঃ পুক্রো রাজোচ্যতে তথৈৰ ঈশস্ত ঈশ শক্ষ বাচ্যতেশ্বর শক্তি রূপস্যাপি কর্মবন্ধকৃতং ভোগপারতন্ত্যং নির্বৃতাত্মনঃ অধ্যারপ্যাপি সংস্তির্জন্ম মৃত্যু প্রবাহঃ॥ ৭ ॥

ঐ প্রকৃতিকে সেবা করিয়া মুগ্ধ হয়েন, আর একজন তাহাকে ভোগ করিয়া পরিত্যাগ করেন, যিনি মোহিত হন, তিনি জীব, আর যিনি পরিত্যাগ করেন তিনি ঈশ্বর ॥ ৫॥

তৎপরে প্রকৃতির শুণে যে সকল কার্য্য হয় ঐ প্রকারে প্রকৃতিতে অধ্যাস হওয়াতে তদ্ধারা ঐ পুরুষ আপনাকে সেই সকল কার্য্যের কর্তা বলিয়া অভিমান করিয়া থাকেন ॥ ৬ ॥

মা। পুরুষ কেবল দাক্ষি মাত্র, তিনি কোন কর্মের কর্তা নহেন, স্বয়ং হব স্বরূপ, ভাঁহার ঐ প্রকার কর্ত্ত অভিযান হইলেই সংসার অর্থাৎ জন্ম মৃত্যু প্রবাহ এবং কর্ম মারা বছন ও বছন কৃত পার্তন্ত্যু উপস্থিত হয় ॥ ৭ ॥

কার্য্যকারণ কর্তৃত্বে কারণং প্রকৃতিং বিছ:। ভোজ্তে হংখ হুংখানাং পুরুষং প্রকৃতেঃ পরংনা ৮
কার্য্যকারণ কর্তৃত্বে কারণং প্রকৃতিং বিছ:। ভোজ্তে হংখ হুংখানাং পুরুষং প্রকৃতেঃ পরংনা ৮

প্রকৃতে: পুরুষস্যাপি লক্ষণং পুরুষোত্তম। জৈহি কারণয়োরস্য সদসচ্চ যদান্ত্রকং ॥ ৯ ॥ শ্রীভগবাসুবাচ ॥ '

श्रीभवत्रामी ।

নমু চৈ ভক্ত সামানাধিকরণ্যেনৈব কর্ত্বাদি প্রতীতে:। ততৈব তদলীক্রিয়তাং নেতাাহ। কার্যাং শ্রীরং কারণ্মিস্তিরং কর্তা দেবতাবর্গ:। তত্ত্বাপতৌ প্রক্ষস্য প্রকৃতিং কারণং বিহু:। কৃট্যুস্স স্বতো বিকারাভাবাং। প্রকৃতি পরিণাম ভূত দেহাদ্যহহার কৃত্যেব কর্ত্বাদিকমিতার্থ:। ভোকৃত্বে তু পুকৃবং কারণং বিহুরিত্যভারং তাব:। যদ্যহহার গতমেব কার্যাছাদিকং ভোকৃত্বক তথাপি বিকারভ জড়াবসান্তাহ্পাধিপ্রাধায়াং ভোগভ চিধ্বসায়ছাৎ উপহিতপ্রাধায়ামিতি ॥ ৮॥

ভাষেরং সংসারিণং পুক্ষং তভেতুং প্রকৃতিঞ্জাত্বা ইদানীং লগৎ কারণং ঈশরং তৎ প্রকৃতিঞ্চ পৃদ্ধতি প্রকৃতেরিতি। অভ বিশ্বত সদসচ ভূলং ক্ষমঞ্চ কার্যাং বদাত্মকং তয়োঃ প্রকৃতিপূক্ষয়োঃ ॥ ৯ ॥

क्रमममर्छः।

ভত্পাধি প্রাধান্তেন প্রবর্তমানম্পাধি ধর্মদেন বাপদিখত ইত্যাহ। কার্যোত্ত। কার্যাকারণকর্ত্যে কারণং প্রকৃতিং বিছ্-রিত্যাদৌ প্রমান্মপ্রাধান্তেন প্রবর্তমানংত্ নিরুপাধিকমেব। অব ভোক্তৃত্য সংবেদন রূপদেন যথা তথা তবৈর চিক্রাপে পর্যাবস্ততীত্যাহ। ভোক্তৃত্ব ইতি কারণং বিছ্রিতি পূর্বেশিবাহরঃ। অব টাকামতে প্রতিবিহ দৃষ্টারো ক্ষেরঃ। ভবছি কম্পাদিক উপাধের্দ্ধরঃ প্রকাশত্পহিত্য। খনতে তু তদপি নেব্যতে। ক্রিরাপি চৈত্যং বিনান সম্ভব্তি ইতি দৃষ্টায় বৈষ্যাও॥৮॥

এবং পুরুবন্ধরত প্রাকৃতেশ্চ বিবেকং শ্রুতা বিশেষতঃ প্রমাত্মাধ্য পুরুষত তদীর শক্তেঃ প্রতেশ্চ লকণং পৃত্তি প্রস্কৃতেরিতি। প্রশ্নপ্রংপ্রাচেরং স্তত্ত চিরন্থিতি বাধ্যা কেবলমিতি জ্বেরং। পূর্ক্ষেব জ্ঞাতাকীট্রাং॥ ৯॥

बीविचनाशहकवडीं।

জীবস্য কর্মজিরের বন্ধন্তেবাং কর্মণাঞ্চ সাধনে ফলভোগেচ ক্রমেণ প্রকৃতি পুক্ষাবের কারণে ইত্যাছ কার্যোতি। ভূতে ক্রিয় দেবতাভিরের কর্মসিন্ধেতেরাং ভূতে ক্রিয় দেবতানাঞ্চ কার্যা কারণ কর্ত্তি প্রকৃতিমের কারণং বিহং। প্রকৃতিয়ব তেবাং তথাবত স্টেম্বাজ্ঞীবস্য কর্মকরণং মায়াধীনমিত্যর্থ:। কর্মকলদাতাচ পর্মেশ্বর এবেতি জীবস্য কর্মফলভোক্ত্মশীশ্বরাধীনমেবেড্যাহ ভোক্ত দে জীবস্য কর্মফলানাং ভোগে পুক্র কারণং বিহ্রিতাশ্বয়:॥৮॥

তত্ত্বত তাবেব প্রকৃতিপুরুবে। বিশেষতো জিঞাসমানাহ প্রকৃতেরিতি অত বিখ্যা সদস্ট ছুলং ক্লঞ্চ কার্যাং বদান্মকং॥ ৯॥

মা। কার্য্য কারণ কর্তৃত্ব অর্থাৎ দেহ, ইন্দ্রিয় এবং দেবতা বর্গ, এ সকলের তন্তন্তাব প্রাপ্তি বিষয়ে পণ্ডিতেরা প্রকৃতিকেই কারণ বলিয়া থাকেন, কেন না কৃটদ্ব আত্মার স্বতঃ বিকার নাই, কিন্তু হুখ ছুঃখের ভোক্তৃত্ব বিষয়ে প্রকৃতি হইতে ভিন্ন যে পুরুষ তাঁহাকেই কারণ বলিয়া থাকেন অর্থাৎ যদ্যপি কর্তৃত্ব ভৌক্তৃত্ব এই উভয়ই অহস্কার কৃত হইল তথাচ কার্য্য মাত্রই জড়াবসান, এই কারণে তাহাতে প্রকৃতির প্রাধান্য, প্রস্তু ভোগ জ্ঞানাবসান এ প্রযুক্ত তাহাতে প্রকৃত্যুপহিত চৈতন্যের প্রাধান্য॥ ৮॥

ভগবান কপিলের প্রমুখাৎ এই প্রকারে সংশারি পুরুষ এবং তাহার কারণ প্রকৃতির বিষয় অবগত হইয়া তদনতার দেবছুতির জগতের কারণ ঈশার এবং তাঁহার প্রকৃতির বিষয় জানিতে ইচ্ছা হইল, অতএব পুত্রকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন হে পুরুষোত্রম। এই বিশের স্থল ও স্ক্রম কার্য্য বাহার স্বরূপ, সেই প্রকৃতিই এই বিশেষ কারণ, অতএব প্রকৃতির লক্ষণ কি ? বর্ণন কর ॥ ৯ ॥

• যতৎত্তিগুণমব্যক্তং নিত্যং সদসদান্ধকং। প্রধানং প্রকৃতিং প্রাক্তরবিশেষং বিশেষবধ্য ১০॥ পঞ্চতিঃ পঞ্চতি প্রকৃতি কিন্তু প্রধান প্রকৃত্তিকং প্রধানিক কিন্তু ॥ ১১॥

शिववामी

তত্র আছিছিং লক্ষরতি। বং প্রধানং তদেব প্রাকৃতিং প্রোক্তঃ। কিং ছং প্রধানং স্বভোইনিংকক বিশেষণা নাশ্রমঃ। তহি কিং ব্রক্তন ত্রিগুণং কিং মহত্তথাদি ন অব্যক্তং অকার্য্যং কিং কালাদি ন সদস্যাত্মকং কার্য্যকারণ ক্লপং কিং শীব প্রকৃতিঃ ন নিত্যং ॥ ১০ ॥

অত্যেষাং ভবানাং লক্ষণং ৰক্ষ্ণ তানি গণহতি পঞ্চিরিত্যাদি সংখ্যাভেদেন । এতচ্ছত্বিংশতিকং এতানি চতুবিংশতি ব্যাহন গণে তং গণং আধানিকং অধানকাৰ্য্যাত্মকং বন্ধ বিহুঃ ॥ ১১॥

क्यमम्बद्धः।

অথোপাদানাংশত প্রধানত লক্ষণমাহ। যতদিতি। যথ খলু ত্রিগুণং স্থাদিগুণত্বর সমাহার উদ্বোধ্যক্তং প্রধানং প্রকৃতিক প্রান্থা। তথাবাজসংক্তর্মে হেতুঃ। অবিশেষং গুণত্রর সাম্যা রূপদাদনভিব্যক্ত বিশেষং। অন্তর্জন সংস্তাঞ্জিতি গণিতং। প্রধান সংক্রমে হেতুঃ বিশেষবং। স্বাংশ কার্য্যরূপাণাং মহদাদি বিশেষাণামাশ্রর রূপত্রা তেন্তঃ শ্রেষ্ঠং। প্রকৃতি সংক্রমে হেতুঃ সদসদাত্মক সদসংস্থা কারণ রূপের মহদাদির কারণছাদ্রগত আত্মা অরূপং যত্ত তথা তথাদি নিত্তাং প্রবান্ধ কারণমাজাত্মনাবস্থিত সর্বাংশদেবন স্বান্ধিভিত্যাশ্চাপকীকৃতাংশদ্বেনাবিকৃতং অরূপং যত্ত তাদৃশমিতি ব্রক্ষয়ং মহদাদি রূপত্বক ব্যার্তং। ব্রহ্মণো নির্পত্বান্ধ। মহদাদীনাং চাব্যকাণেকরা কার্য্যরূপথাথ। যথা। সর্বতোগ্যাশ্চর্য্যরূপথেন নির্ক্ত্য মশক্ষাথা। বত্তক্রেনাক্তমতএব সর্বাশ্রেষ্ঠাথ প্রধানশন্দেন খ্যাতং। বস্তু প্রকৃতিং প্রান্থ: শ্রোতাঃ আত্মাপ নিত্যং। কার্যাং ক্রপথ্যবাদ্ধি। তথা স্থাদিভি বিশেষবদ্ধি গুণসাম্য রূপত্বেনাবিশেষং নৈব্যন্তদিতি। তদ্বেবং সিদ্ধে পূর্ম বাক্ষ্যার্থইছিব্যাণ্ডমন্ত ব্যান্ধিহিতিব্যাণ্ডমন্ত ম্বান্ধানি প্রকৃত্যাঃ॥ ১০॥

বন্ধ বিছরিতাধয়:। বন্ধছেনোপাসত ইত্যর্থ:॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

चैविषना **थठक वर्डी**।

তত্র প্রকৃতিং লক্ষতি। যথ খলু ত্রিশুণং স্থাদি গুণতার স্মাহার অদেবাব্যক্তং প্রধানং প্রকৃতিক প্রাহঃ। তত্রাব্যক্ত সংক্রতে হেতুঃ অবিশেবং গুণতারসাম্য রূপবাদনভিব্যক্ত বিশেবং প্রধানসংক্রতে হেতুঃ। বিশেববং। স্বাংশকার্যারপাণাং মহদাদি বিশেবনামাশ্রমরপথেন তেভাঃ শ্রেষ্ঠ প্রকৃতিসংক্রতে হেতুঃ। সদসদায়কং। সদসংক্র কার্যাকারণরপেদু মহদাদি বুকারণয়াও অন্ধাও আত্মা স্বরূপং বছাও প্রধানং তথ প্রকৃতিং প্রাহঃ। বছা। যত্তদনিব্দনীয়ং শ্রেষ্ঠিছাৎ প্রধানং তথ প্রকৃতিং প্রাহঃ। অনিব্দনীয়গুমেবাই ত্রিগুণস্বাক্তং সগুণং খলু ব্যক্তী ভবতোব ভ্রথা সংকার্যামসংকারণং তওদাত্মকমণি নিতাং। তথাভূতং মৃদাদি ধ্রনিভামেব দৃষ্ঠং তথৈব মহদাদি বিশেববদণি গুণসাম্য রূপস্থাদ্বিশেষং পৃথিব্যাদি বিশেববং ক্রাংখ খলু অদন্যক্রপমবিশেবং ন দৃষ্টমিতি ॥ ১০ ॥

অন্যেবাং তথানাং লক্ষণং বক্ষুং তানি গণরতি পঞ্জিরিত্যাদি পঞ্জি তথা পঞ্জিকতৃতিদ শভিদ্দ বো প্রশৃতং প্রাধানিকং বিহুরিত্যধর:। প্রাধানিকং প্রধানাত্ত্তং গণং ক্রন্ধ ক্রেক্তেনোপাতং বিহুর্জানিন:। গণং কীলুশং এতানি মহাভূতাদীনি চত্রিংশতি ব্রুতং ৪১॥

ভগৰান কপিল কহিলেন, মাতঃ! নিজে অবিশেষ অথচ বিশেষের আজার বে এধান ভাহার নায প্রস্তি। ঐ প্রধান সন্থাদি গুণতারের সমাহার, সতএব জালা নিছেন এবং ভাহা অবজে অর্থা আজএব নাইভত্ত নহে, অপিচ তাহা কার্যা ও জারা ব্যার না এবং ভাহা নিভা, অতএব জীবের প্রস্তৃতিও নয় ১০ ক

ঐ প্রধানের কার্যা স্বরূপ চত্বিংশতি গণ আছে, ভাষা পাঁচ, পাঁচ, ভারি এবং ক্ষা ই প্রভাগ সংখ্যা সংক্ষামে সামাতি হইয়াছে, পণ্ডিতেরা উপাসনাথ উহাতেই আছু বেছিনার ১১১ মহাস্তামি পশ্চৈব স্থাপেছিয়ির্ম ক্রমতঃ। তথাতাণিচ তাবন্ধি গন্ধাণীনি মতানি মে।
ইন্দ্রিয়াণি দল ত্রোত্রেং দ্বগ্রন নাসিকাঃ। বাকরো চরণো মেচুং পার্দ শম উচ্যতে ॥ ১২
যনোবৃদ্ধিরহকারশ্চিত্তমিত্যন্তরাদ্ধকং। চতুর্বা কক্যতে ভেলো হত্যা কক্ষণরাপরা ॥ ১০ ॥
এতাবানেব সংখ্যাতো ত্রহাণ সন্তাপ্য চ। সন্ধিবেশো ময়া প্রোক্রো যঃ কাল পঞ্চবিংশকঃ ॥১৪
প্রভাবং পৌরুষং প্রাত্তঃ কালমেকে যতোভয়ং। অহকারবিমৃচ্স্য কর্ত্তুঃ প্রকৃতিমীয়ুষঃ ॥১৫॥

व्यक्षामा ।

এত বির্ণোতি মহাভূতানীতি ত্রিভি:। তাবস্তি পঠেখব ॥ ১২ ॥ অস্তরাম্মকমন্তঃকরণং লক্ষণরপরা ব্যবছেদিক্যা ॥ ১৩ ॥

বাবারারা প্রোক্তঃ এতাবানের সংখ্যাতো গণিতঃ তম্বক্ষৈঃ। কালেতু, মতম্মাহ যা কালা স পঞ্জিংশকঃ প্রকৃতেরেবারভা বিশেষ ইত্যর্থঃ ॥ ১৪ ॥

একেতৃ পৌক্বং পুক্ৰসা ঈশবসা প্ৰভাবং বিক্ৰমং কালমাছ:। তমেৰ কালং দ্বেশা লক্ষ্যতি বতো ভয়ং ভবতি কণ্ঠ প্ৰকৃতি মীযুৰং প্ৰাথস্য অতএব দেহেন অহলাৱেশ বিমৃদ্যা কৰ্তৃ জীবিষ্য অনেন সংহারক্ষেন লক্ষিত: ॥ ১৫ ॥

क्रममण्डः।

প্রাধানিকং গণং দর্শয়িছা পৌরুষং গণং দর্শয়তি। এতাবানিতি। য এব প্রুষ: কালঃ স এব পঞ্চবিংশকো জীবন্চ তদং-শাবেব তাবিত্যর্থ: ॥ ১৪ ॥

তত্ৰ কালস্য পৌক্ষবগণৰং বিবিধা দৰ্শয়তি প্ৰভাবমিতি ৰাভ্যাং ॥ ১৫ ॥

এবিখনাপচক্রবর্ত্তী।

ভানি বিরুণোতি ত্রিভি:। তাবস্তি পঞ্চৈব ॥ ১২ ॥

ष्यस्त्राञ्चकमस्यः कत्रनः। जन्मनक्रममा वाव्यक्तिकत्रां वृखां । ১०॥

সপ্তণত মহাদাদি প্রণঞ্চত কালেত্ মত্বরমাহ যা কালা স পঞ্বিংশকঃ প্রক্ততেরেবাবছাবিশেব ইত্যর্থ: ॥ ১৪ ॥ একেতু পৌক্ষবং পুক্ষতেশ্বরত প্রভাবং বিক্রমং কালমাহা কর্তুলীবিস্য বতোভর্মিতি জীবজোভকত্বেন কালো লক্ষিতঃ ॥ ১৫

ভূমি, জল, অনল, বায়ু, আকাশ এই পঞ্চ মহাভূত। গদ্ধ তন্মাত্র, রস তন্মাত্র, রপ তন্মাত্র, লপ তন্মাত্র, লপ তন্মাত্র, শব্দ তন্মাত্র, এই পঞ্চ তন্মাত্র এবং শ্রোত্ত, দ্বক্,চকুং,জিহ্বা,জাণ, তথা বাক্, পাণি, পাদ পায়ু, উপশ্ব এই দশ ইন্দ্রিয় ॥ ১২ ॥

এবং মনঃ, বৃদ্ধি, অহসার ও চিত্ত এই চারি অন্তরিন্দ্রির যদিও অন্তঃকরণই অন্তরিন্দ্রিয়, তথাচ তাহার বৃত্তিভেদে উক্ত চারি প্রকার ভেদ হইয়া থাকে ॥ ১৩ ॥

মা। আমি যে চতুর্বিংশতি তত্ত্ব বলিলাম তত্তত পণ্ডিতগণ কর্তৃক ঐ সকলের গণনা বারাই তাহা সংখ্যাত হইলাছে। এই চতুর্বিংশতি তত্ত্বই সপ্তণ ব্ৰহ্মের সন্নিবেশ স্থান, এতন্তিন্ন কাল পঞ্চবিংশ তত্ত্ব অর্থাৎ প্রেকৃতির অবস্থা বিশেষ ॥•১৪॥

ঐ কালের প্রতি হুই প্রকার মত আছে, কোন কোন পতিতেরা ঈশরের বিজমকেই কাল বলিয়া থাকেন। ঐ কাল ছইতে প্রকৃতি প্রাপ্ত দেহে অহং বৃদ্ধি খারা বিমৃত কীবের ভয় উৎপদ হয় । ১৫ । প্রকৃতিত প্রামাত নির্বিশেষদ্য মানবি। চেকা যতঃ লগুগবান্ কাল ইত্যুপ্রকৃতিতঃ । ১৬॥
অন্তঃ পুরুষরূপেণ কালরপেণ যোবহিঃ। সমবেত্যের সম্বামাং ভগবানবান্ত্রার ৯৭ ।
দৈবাৎ কুভিতধর্মিণ্যাং স্বত্যাং যোনো পরঃ পুমান্। আগত বীর্ষাং সাসুত মহত্ত্বং হিরগ্নায়ং ॥ ১৮

विधवनामी ।

স্ষ্টিহেতুদ্বেন লক্ষ্যতি প্রস্কৃতেরিতি ॥ ১৬॥

কোংসৌ ভগবাংক্তমাহ। অন্তঃ প্রাণিনাং বং পুক্ষরপেণ নিষক্ত্বন সমবেতি সমাক্ তি কোর রহিত এবাকুসাতো বর্ততে। বহিত কালরপেণ এব ভগবান্। ববা বং পুক্ষ ইতি প্রসিদ্ধঃ কালঃ স পঞ্চবিংশকঃ। একেতু পুক্ষক প্রভাবং কালমাহঃ প্রভাবকৈ লক্ষণং বত ইতি। পুক্ষকৈর কাগতে হেতুঃ প্রকৃতেরিতি। উভর্পা বিবক্ষারাং হেতুঃ অন্তরিতি। শেবং সমানং তদেবং প্রকৃতেশত্ত্বিংশতি ভেদাঃ জীবেশ্বরেরা শৈক্যবিবক্ষা অভঃ পঞ্বিংশতি ভ্রানি ভবন্তি। তরোর্ভেদবিবক্ষারাং ত্ বড়বিংশতি ভবন্তি। ১৭॥

ইদানীং তত্থানামুৎপত্তি পূর্ব্বকং লক্ষণান্যাহ দৈবাদিত্যাদিনা এতান্যসংহত্যেত্যতঃ প্রাক্তনেন গ্রন্থেন। তক্র চিন্তস্যোৎপত্তি পূর্ব্বকং লক্ষণমাহ চতুর্জি:। দৈবাৎ জীবাদৃষ্টাৎ ক্তিতা ধর্মা গুণা যস্যা:। যোনৌ অভিব্যক্তি স্থানে প্রকৃতৌ বীর্ব্যং চিচ্ছক্তিং সা প্রকৃতি: মহন্তত্থ্যস্ত । মহতঃ স্বরূপমাহ হির্পায়ং প্রকাশবহলং॥ ১৮॥

ক্রমসন্ধ:।

তত্ত্ব সমতমাহ। প্রকৃতেরিতি। দ ভগবান্ পুক্ষএব স্থাংশেন কালঃ ভদেব মনেন লকণেন কালস্য প্রাধানিকত্বং প্রত্যাধ্যাতং। তক্ষাপি কোভহেতৃত্বাৎ ॥ ১৬॥

কালক জীবকাপি তঘদংশঘনেবাহ অন্তরিতি। স্থানাং দেবাদ্যাখ্যানামুণাধীনাং এবং পৌক্ষে গণে বিসংখ্যাকঃ কালোজীবশেতি প্রকৃতিপুক্ষে তু ছৌ প্রাধানিক শুতুর্কিংশতি সংখ্যঃ। ততো বিবেকে স্তাষ্টাবিংশতিরের তত্মনি ॥ ১৭ ॥

দৈৰমত্ৰ কালএব। পূৰ্ব্বশংৰাদাং। জীবাদৃষ্টভাপি প্ৰকৃতে লীনমাং। ৰীৰ্যাং জীবাথ্য চিজ্ৰপ শক্তিং। ইমান্তিশ্ৰো দেৰতা ইতি শ্ৰুতে: ॥ ১৮ ॥

শীবিশ্বনাগচক্রবন্তী ।

প্রাকৃতিকোডকছেনাপি তং লক্ষ্মতি প্রাকৃতেরিতি ॥ ১৬॥

অভএব অন্ত: পুরুষরপোত্তথামি রূপেণ নিয়ন্তা সমবেতি সমাক্তি কিবার রহিত এবাহুস্তাতো বর্ততে বহিন্দ কাল রূপেণ নিরন্তা সন্থানাং সর্ব্বাধিনাং তদেবং প্রাধানিকো গণশ্চতুর্বিংশতিসংমাঃ কালোজীবন্দেতি ছৌ প্রকৃতিপুরুষৌচ ছৌ মিলিছা অষ্টাবিংশতিস্তন্তানি ভবন্তি॥ ১৭॥

ইদানীং তত্তে লক্ষ্মতব্যের প্রথমং চিত্তজ্ঞোৎপত্তি পূর্ব্বকং লক্ষণমাহ। দৈবাৎ কালাৎ ক্ষ্মতা ধর্মা গুণা যভাতভাং যোনা-বভিব্যক্তিস্থানে বীর্যাং জীবশক্ত্যাধ্যং চৈতন্যং সা প্রকৃতিম হুত্তমুত্ত হির্থায়ং প্রকাশ বছলং ॥ ১৮॥

অপর কেহ কেহ কহেন ত্রিগুণের সাম্যাবস্থা রূপ প্রকৃতির চেক্টা যাহা হইতে হয় সেই ভগবান্ই "কাল" নামে কথিত হয়েন ॥ ১৬ ॥

ভগবান কে ? তাহাও বলি জাবণ করুন, যিনি আত্মায়া ছারা প্রাণিসকলের অন্তরে নিযক্ত্রেরপে এবং বহিংকাল স্বরূপে সমাক্ প্রকারে অর্থাৎ তাহাদের বিকারে অসংস্পৃক্ত হইয়া অসুস্ত আছেন তিনিই ভগবান, তিনিই কাল, অর্থাৎ কালকেই পঞ্বিংশ তম্ব বলা যায় ৮১৭ ॥

মা। একণে এ দকল তত্ত্বের উৎপত্তির প্রকার এবং তাহাদের যে, রূপ লক্ষণ ভাহা বর্ণন করি আবণ করন, জীবের অনুষ্ঠ বশতঃ প্রকৃতির গুণকোভ হইলে পরম প্রকৃত নেই প্রকৃতির মোনিছে অধিং অভিব্যক্তি হাবে আগণনার চিৎস্বরূপ বীর্ঘ্য আবান করেন, তাহাতে রেই প্রকৃতি সহত্ত্বেরে প্রস্কৃত করে। এ মহতত্ত্ব হিরণ্ডর অর্থাৎ প্রকাশ বহল ॥ ১৮ ॥

বিশ্বরাশ্বরতং রাঞ্জন ক্টালো জনসভ্র:। অভেজনা শিবজীওমাশ্বপ্রবাপনং তনঃ ॥ ১৯ ॥

যতৎ সম্বন্ধনং অর্থং পান্তং ভগবতঃ পদং । যদাত্র্বান্তদেবাধাং চিতং তত্মহদাশ্বকং ॥ ২০ ॥

অক্ত্যবিকারিছং শান্তদ্মতি চেতসঃ । বৃতিভিন্ন কণং প্রোক্তং যধাপাং প্রকৃতিঃ পরা ॥ ২১ ॥

ध्येथत्रवामी ।

বিশমহভারাদি প্রপঞ্জাত্মগতং অন্ধিন্ ক্লারপেণ স্থিতং ব্যঞ্জন প্রকটন্ত্মহান্ তীবং প্রবন্ধ কালীনং মহন্তমোহপিবং। কুটকু: লয়বিক্ষেপ শুনাঃ! আত্মানং প্রতাপন্নতীতি তথা যংপুর্কং প্রদান সমরে মহাতং প্রকৃতৌ বিলাপনামাদেত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

প্রস্থাক কুর্নাহোপাসনমাহ যন্ত্রনিতি সর্বাগন প্রসিদ্ধন্দায়। স্বাজং বিশবং শাস্কং রাগানি রহিতং। ডগবতঃ পদং উপদদ্ধি স্থানং অতএব বাস্থানেবাধাং যদাহং অয়মর্থ: অধিভূতরপে তল্যৈৰ মহানিতি সংজ্ঞা। অধ্যাত্ম রপেণ চিত্তিমতি। উপাস্য রপেণ বাস্থানেব ইতি। অধিষ্ঠাতা তু তস্য ক্ষেত্রজঃ। এবমহন্ধারে সংস্কর্মণ উপাস্যঃ রুজাহ্বিষ্ঠাতা। মনসি অনিক্রম্ব উপাস্যঃ চল্লোহ্ ধিষ্ঠাতা। বুক্ষো প্রভাল্ল উপাস্যঃ ব্রহ্মাধিষ্ঠাতেতি জ্ঞাতবাং॥ ২০॥

স্বন্ধ্য শুগৰিম্বগাহিত্য। অবিকারিত্বং লর বিক্ষেপ রাহিত্যং। অপাং প্রকৃতিঃ ফেণতরকাদি রহিতাবস্থা পরা ভূমিসংস্গাঁৎ প্রাক্তনী সা যথা মধুরা স্বভা শীতাচ তম্বদিত্যর্থ: ॥ ২১ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ

কৃটত্ব: মনোবল্লয় বিকেপ রহিত:। স্বতেলগা স্বপ্রভাবেণ তম: অঞ্চানং॥ ১৯॥

স্বজ্জাদেব ভগবৎ পদস্থ ততো ল্ব্যাদিমাল প্রহণ হেজ্জং জেয়ং। বদাহর্কাস্থদেবাধ্যমিত্যপাস তদবিষ্ঠানরোরভেদোকি স্তাদাস্থা ভাবনরোপচারাং। টীকায়াং চিত্তমিতানস্তরং। ক্রিয়া শক্ত্যাস্থাকেন স্ক্রমিতি চ জেরং ॥ ২০ ॥ ২০ ॥

धोवित्रमाथठकवन्त्री।

বিশ্বমহন্ধানি প্ৰপঞ্জ আত্মগতং স্থানিন স্কারণেণ স্থিতং ব্যঞ্যন্ প্রকট্যন্ সর্ক্তি প্রাণ্ড তর্পদ ত্যাগেন মহানিভোতভৈত বিশেষ্টীকৃতভাব। কুটস্থ মনোবল্লবিক্ষেপ শ্ন্য: আত্মানং প্রত্বাপয়তীতি তথা যন্তমঃ। পূর্ব প্রবাহ সময়ে মহাতঃ প্রকৃতৌ বিলাপ্রামানেভার্থঃ॥ ১৯॥

বত্তৎ প্রসিদ্ধং চিত্তং তল্মহদাত্মকং মহত্তদ্মেৰ দেহে চিত্ত ক্লপেণ তিষ্ঠতীতার্থ:। স্বচ্ছং নির্মালং শাস্তং রাগাদিশ্ভাং ভগৰতঃ পদং উপাসনাপীঠং বন্ধং ভগৰতঃ বাস্তদেবাথাং আহ্বিতি চিত্তাহ্বার বৃদ্ধি মনঃস্থ ক্রমেণ বাস্তদেব সম্বর্ধণ প্রহান্ত্রীন ক্রমা উপাভা দেবতাঃ চিত্তাদি শুদ্ধার্থং ক্রেরাঃ বিষ্ণু ক্রক্ত ব্রহ্ম চক্রাম্বধিষ্ঠাতারঃ ॥ ২০ ॥

নতু দেহত্ব্য চিত্তব্য সর্পত্র অজ্জাদি গুণোলভাতে ততাহ। অজ্জং ভগবৰিশ্বাছিত্বং অবিকারিত্বং লয় বিক্লেপ রাহিত্যং শাস্তব্য রাগাদি রাহিত্যমিতি লক্ষণং চেতসন্চিত্তব্য বৃদ্ধিভিঃ খাভাবিকীভিরেব প্রোক্তং যথা অপাং পরা প্রকৃতিকৃৎকৃষ্টঃ অভাবঃ। তেন ধৰাপঃ অজ্ঞাং কেন তর্গাদি রহিতা মধুরাঃ শাস্তা ভবস্তি। যথা চ ভূমাাদিসংস্গাদ্যজ্জ্বাদিমত্যোভবস্তি তথৈব চিত্তমপি ছবিব্যে আস্কাং চেতনাসংস্গাদ্যজ্মণি ভবতীতার্থঃ॥ ২১॥

ঐ তত্ত্ব কৃটস্থ অর্থাৎ লয় বিক্ষেপ শৃষ্য এবং জগতের অঙ্কুর স্বরূপ, আপনাতে সূক্ষারূপে অবস্থিত এই বিশ্বকে প্রকটিত করিয়া আপনার তেজঃ ধারা প্রলয়কালীন স্থমহত্তমঃ পান করিল অর্থাৎ প্রলয় সময়ে যে তমঃ ঐ মহতত্ত্বকে প্রকৃতিতে লীন করিয়া রাধিয়াছিল তাহাকে দুরীকৃত করিয়া দিল ॥ ১৯॥

জননি! সম্বশুণ বৃক্ত, বিশদ, রাগাদি রহিত এবং উপলব্ধি স্থান যে চিত্ত তাহার নাম বাস্তদেব, শেই চিত্তই ঐ মহতব্বের স্থরপ অর্থাৎ একচিত্তই অধিস্তুত রূপে বাস্তদেব এবং অধিষ্ঠাতা রূপে ক্ষেত্রত হুইয়া থাকে ৪২০ ৪

কিন্ত ভিন্ন বৃত্তি ছারা সেই চিত্তের অচ্ছত্ব অর্থাৎ ভগবৎ প্রতিবিধের আহকত্ব, অবিকারিছ ছার্থাৎ লার বিক্ষেপ রাহিত্য এবং শাস্ত্রত্ব রূপ লক্ষণ জানিবেন। কলতঃ যেনন জলের ফেণ তর-জানি রাহিত্য পরা প্রকৃতি, ভূনি সংসর্গ ভেলে মধুর, বৃদ্ধ এবং শীতল হর, তাহার ন্যায় চিভেন্নত বৃত্তি-জোনে ভিন্ন ভিন্ন লক্ষণ হইয়া থাকে॥ ২১॥

মহতথা বিক্রাণা দুগবদী গ্রস্তবাং। ক্রিয়াশ ক্রির্ছার ক্রিবিধঃ সমল্যান্ত । ইর্ । বিকারিক ত্রৈজসন্চ তামসন্ট যতোভবঃ। মনসন্টে ক্রিয়াণাঞ্চ ভূতান্তি মহতামাপি ॥ ২০॥ সহত্রশিরসং সাক্ষাদ্যমন্তঃ প্রচ্ছতে। সক্ষ্ণাধ্যং প্রেষ্টং ভূতে ক্রিয় মনোমরং ॥ ২৪॥ কর্তৃত্বং কারণত্বঞ্জ কার্যান্ত্রে কিব্লিক কার্যান্ত্রিক কার্যান্ত্রকৈতি লক্ষণং। শান্ত ঘোর বিমৃত্ত্বমিতি বা স্যাদ্হস্কৃতেঃ॥ ২৫॥

क्षित्रत्रामी।

অহস্কারস্যোৎপত্তি পূর্ব্ধকং লক্ষণমাহ মহন্তবাদিতি চতুর্ভিঃ ক্রিয়াস্থ শক্তির্যস্য স ক্রিয়াশক্তিঃ ॥ ২২ ॥ কৈরিধামাহ বৈকারিক ইতি তস্য কার্য্যমাহ। বতো যত্মাৎ মন আদীনাং ভব উৎপত্তিঃ ॥ ২৩ ॥ তত্মির পাস্যং ব্যহমাহ। সহ্ত্রশিরস্মিতি ॥ ২৪ ॥ কর্তৃত্বং দেবতারপেণ কারণস্থামিলয়রপেণ কার্যাত্বং ভূতরপেণ শাস্তবাদিকস্ক তৎ কারণগুণুত্রররপেণ ॥ ২৫ ॥

क्रमगन्दर्धः ।

कियां स्मन आंद्रार्शानतम् मक्तिर्यञ्च मः॥ २२॥

মনদ ইত্যুপলকণং দেবানামপি ভূতানাং মহতামপীত্যত্র ভূতহন্তাদি ক্রমন্থবাস্তরো জ্ঞের: ॥ ২৩ ॥

যমহংকারং সাক্ষাদনক্তং প্রচক্ষতে উপাস্ত তদধিছানয়ে। কাদাস্মাপত্তিং দৃই। ততু লাং বদকীতার্থ:। সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষ তুল্য-রোরিত্যমর:। অহস্কারং বিশিন্তি ভূতেতি। অনক্তং বিশিন্তি। সহস্র শিরসমিত্যাদি পদ্র্যোগ। তত্র সংকর্ষণাথ্যং পুরুষং প্রথমং পুরুষমিত্যর্থ: ॥ ২৪ ॥

कर्जुषः (इजूकर्जुषः॥२৫॥२७॥

শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবর্ত্তী।

অহনার ক্রোৎপত্তি পূর্বকং লক্ষণমাহ মহত্তবাদিতি। ক্রিয়াশক্তিরিত্যুপলক্ষণং জ্ঞানক্রিয়াদ্রবেদ্ধি ওচ্চ শক্তিত্বাৎ ॥ ২২ ॥ যতোযেত্যো বৈকারিক তৈলস তামদেভ্যো মন ইন্দ্রিয় ভূতানাং ক্রমেণ ভব উৎপত্তিঃ ॥ ২০ ॥ তত্ত্বোপাচ্চদেবতামাহ সহত্রেতি। যমিতি মঞ্চাং ক্রোশস্তাতি স্থায়েন যংক্ষিত্যুর্থঃ ॥ ২৪ ॥ কর্ত্তং দেবতা রূপেণ করণত্বিন্দ্রিয়ার রূপেণ করণত্বিন্দ্র রূপিণ করণ্টিন্দ্র রূপিণ করণ্টিন্দ্র রূপিণ করণ্টিন্দ্র রূপিণ করণত্বিন্দ্র রূপিণ করণত্বিন্দ্র রূপিণ করণ্টিন্দ্র রূপিণ করণ্টিন্দ্র রূপেণ করণত্বিন্দ্র রূপিণ করণত্বিন্দ্র রূপেণ করণত্বিন্দ্র রূপেণ করণত্বিন্দ্র রূপেণ করণ্টান্দ্র রূপিণ করণত্বিন্দ্র রূপিণ করণ্টান্দ্র রূপিণ করণ্টান্দ্র রূপি করণি কর্মিন্দ্র রূপিণ করণ্টান্দ্র রূপিণ করণ্টান্দ্র রূপিন বিদ্যা বিশ্বনিদ্যা বিশ্বনিদ্য বিশ্বনিদ্যা বিশ্বনিদ্যা

একণে অহকার কিরাপে উৎপন্ধ হয়, এবং তাহার লকণ কি ? প্রাবণ করুন্। ভগবানের বীর্যা ইইতে উৎপন্ন হইয়া ঐ মহতত্ত্ব বিকার প্রাপ্ত হইলে তাহা হইতে ক্রিয়া শক্তি প্রধান অহক্ষারের উৎপত্তি হয়, ঐ অহকার তিন প্রকার ॥ ২২॥

যথা বৈকারিক, তৈজন এবং তামন। ঐ অহন্ধার হইতে মনঃ, ইন্দ্রিয় এবং মহাস্কৃত সকলের উৎপত্তি হয় ॥ ২৩ ॥

মা। এই অহস্কারের মধ্যেও উপাদ্য দেব আছেন, যিনি সক্ষ্ণাখ্য দহত্র শীর্ষ পুরুষ, বাঁহাকে তত্ত্ত পশুতেরা সাক্ষাৎ অনন্ত বলিয়া থাকেন, তিনি এই অহক্ষারের কার্য্য যে ভূত ইন্দ্রিয় এবং মনঃ, এ স্ক্লের স্বরূপ ॥ ২৪ ॥

অপর ঐ অহমারের দেবতা রূপে কর্ড এবং ইন্সিয় রূপে করণত ও ভূত দ্ধাপে কার্যত্ব আরে শান্তত্ব, বোরত্ব এবং বিমৃত্ত্ব এই তিনটাও ঐ অহমারে বিদ্যমান, কিন্তু এই তিন ইহার তিন কারণের গুণ স্বরূপে ইহাতে বর্তমান আছে ॥ ২৫ ॥

বৈক্ষীক্ষীপ্ৰাণাদ্ধ ভৰষজায়ত। মংসংক্ষা বিক্ষাভাগ কৰ্তকে কাৰসভবঃ ॥ ২৬ ॥ বিষয়ত নিক্ষাণাং অধীকাণামৰীপৰং । শারদেশীবরতাবং সংরাধ্যং বোগিভিঃ শনৈঃ ॥ ২৭ ॥ ভৈজসাতু বিক্ষাণাৰ ছিতত্বসূহ পতি । দ্রব্যকুরণবিজ্ঞানবিজ্ঞিরাণামসূগ্রহং ॥ ২৮ ॥

अधवयामी

মনস উৎপত্তি পূর্বকং লক্ষণমাহ বৈকারিকাদিতি ৰাজ্যাং। সংকর: চিছনং বিকল্লে বিশেষচিন্তনং বস্য মনসঃ সংকরবিক-রাজ্যাং কামসন্থবো বর্ততে ইতি কামরূপা বৃত্তি র্লক্শছেনোক্তা নড় প্রছার্ন্যহোৎপত্তিঃ তস্য সংকরাদি কার্যাদ্বাভাবাং। উপাস্য বৃহস্য চানিক্রস্যোক্তেঃ॥ ২৬॥

শারদং শরৎকালীনমিন্দীবরং নীলোৎপলং তদিব শ্রামং যক্তনৈঃ সংয়াধাং বন্ধকর্তুং বোগ্যং চ্প্র হয়াৎ । ২৭ ॥
ব্দের্মৎপত্তি পূর্বকং লক্ষণমাই তৈজসাদিতি হাভ্যাং। হে সতি দ্রবাক্ত্রণ রূপং বিজ্ঞানমিতি চিত্তব্যাব্ভ্যার্থ্যুক্তং। ইক্রিয়াণামস্প্রহ ইতি স্বিক্রক্জানে শ্রীকাণামধীখরমিতি বহুক্তং ততু নির্বিক্রক্জানে ॥ ২৮ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

यविष्किति अर्थिव ॥ २१॥

তৈজসাদিক্ষিতি যুগ্ৰকং। চিত্তসা এহণমাঅং বুদ্ধেত ক্ৰব্য ক্ৰুগ্ৰন্ধণং বিজ্ঞানং বিজ্ঞানমত বিচারঃ মনসন্ত চিত্তনমাঅং। তদিদঞ্চ সবিকল্পক জ্ঞানানত্তরং তদিদমিতি স্বৃতিঃ॥ ২৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাপ চক্ৰবৰ্তী।

যালতে মনসঃ সংক্রঃ সামান্যভোবিষয় জিল্লকা সামান্য বিব্রুস্থাৰ বিব্রু সংক্রনেদ বিশেষতো জিল্লকাৰিকরণ ভাভ্যাং কামস্য মনোর্থস্য সংভ্বোভ্বতি ॥ २७ ॥

वद यदऋर ॥॥ २१ ॥

ত্রবাক্রণরপং বিজ্ঞানমিতি চিত্তবার্ত্যর্থ চেতনারপং বিজ্ঞানত চিত্তধর্মেজেয়ঃ। ই জিয়াণামত্থত ইতি ব্র্যা বিনা পঞ্জেজিয়াণি ন প্রবর্তিত্ব পর্বৃত্তীতার্থ: বদ্যপি চিত্তাহভার মনাংস্থাজিয়াত্ত্যাহকাণি তদপি বৃদ্যা তদত্থত বিশেষো জেয়ঃ। তথাতি শব্বং প্ণোমীতাত্র প্রথমং চিত্তেন চেতনামাত্রং নিণীয়তে। বৃদ্যা শব্যেহ্মিতি ক্রিঃ মনসা পব্দ বিভ্বনা অহকারেণ তত্র স্বাভিমানার্পণমিতি জেয়ঃ। তার ক্রণতৈব প্রপকঃ॥২৮॥

এক্ষণে মনের উৎপত্তি কি রূপে হয় তাহার লক্ষণ কি বলি প্রবণ করুন। পূর্বে যে বৈকারিক অহঙ্কারের কথা বলিয়াছি, সেই বৈকারিক অহঙ্কার বিকার প্রাপ্ত হইলে অর্থাৎ স্ফার্থ উন্মুখ হইলে তাহা হইতে মনস্তত্ব উৎপত্ন হয়, ঐ মনের সঙ্কর (চিন্তা) এবং বিকর (বিশেষ চিন্তা) দারা কামের উৎপত্তি হয়, অর্থাৎ কাম রূপা যে বৃত্তি তাহাই মনের লক্ষণ ॥ ২৬॥

তত্ত্বজ্ঞের। ঐ মনস্তত্ত্বকেই ইব্দিয়গণের অধীয়র অনিরুদ্ধ বলিয়া জানেন,তিনি শরৎকালীন নীলোৎপ-লের ন্যায় শ্যামবর্ণ এবং যোগিরা তাঁহাকে ক্রমে ক্রমে বশীস্তৃত করিতে পারেন ॥ ২৭ ॥

মা। একণে বৃদ্ধিতথের উৎপত্তি ও তাহার লকণ বলি আবণ করুন। তৈজস তত্ত্ত বিকার প্রাপ্ত হইলে তাহা হইতে বৃদ্ধিতত্ত্ব উৎপত্ন হয়, তাহা দ্রব্য ক্ষুরণ রূপ যে বিজ্ঞান তৎসরপ এবং ইন্তিয় সকলের অনুগ্রহ রূপও বটে অর্থাৎ বৃদ্ধিতত্ত্ব ব্যতিরেকে পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রিয় কোন বিষয়েই প্রবর্ত হিতে সমর্থ হয় না, যদিও চিত, অহমার এবং মনঃ ইহাদের ইন্তিয় সকলের প্রতি অনুগ্রহ আছে তথালি বৃদ্ধির ত্রিবারে বিশেষ অনুগ্রহ বলিতে হইবে, বধা শঙ্গ শুনিলাম ইত্যাদি বলে প্রথমতঃ তথালি বৃদ্ধির ত্রিবারে বিশেষ অনুগ্রহ বলিতে হইবে, বধা শঙ্গ শুনিলাম ইত্যাদি বলে প্রথমতঃ চিতের চেত্র বালে বিষাদ, বৃদ্ধি যারা এইটা শঙ্গ এরণ ক্ষুত্তি, মনের হারা চিত্তন এবং সহস্কারের বিশেষ অবিধান প্রবাৎ আনি শুনিলাম ও প্রকার আনি এই মালে প্রভেষ ॥ ২৮ ॥

সংশয়োথ বিপর্যাসো নিশ্চয়: শৃতিরেবচ। খাপ ইত্যুচ্যতে বুৰেন কণা শৃতিতঃ পূথক ॥ ২৯॥
তৈজসানী শ্রিয়াণ্যের জিয়াজান বিভাগণা:। প্রাণগতিই জিয়াশতিই ৰে বিজ্ঞান শক্তি।॥ ৩০
তামসাচ্চ বিক্রাণান্তগবধীর্যচোদিতাং। শক্ষাত্রস্ত্তশাসতঃ প্রোক্ত শক্ষাং ॥ ৬১॥

श्रीभव्यामी।

জব্য ক্রণসৈত্র প্রপঞ্চঃ সংশ্রাদিঃ। বিপর্যাসো মিধ্যাজ্ঞানং। নিশ্চরঃ প্রমাণজ্ঞানং স্বাপো নিজা। প্রমাণ বিপর্যার বিকর নিজা স্বতর ইতি পাতঞ্জলোক্তেঃ॥ ২৯॥

ইন্দ্রিয়াণামুৎপত্তিমাহ তৈজসানি তৈজসাহস্থারাজ্ঞাতানি জ্ঞানে ব্রিয়াণাং বৈকারিকত্ব শক্ষা নিবৃত্যর্থমেবকার:। বিবিধাস্থপি ইন্দ্রিয়াণি তৈজসানে তেজসভাই ক্রেয়াণি তৈজসানি ক্রেয়াণালিক ক্রেয়ালিক ক্রেয়াণালিক ক্রেয়ালিক ক্রেয়ালি

তরাত্রোৎপত্তি পূর্ব্যকমাকাশাদি মহাভূতোৎপত্তিং তরক্ষণঞ্চাহ তা্মসাদিতি পঞ্চদশভিঃ। শ্রোত্রন্ত শব্দগমিত্যাদিভিঃ বিষয়োৎ পত্ত্যনস্তরং তৎ সম্বন্ধমাত্রং কথ্যতে নতৃৎপত্তিঃ প্রাগেবোৎপরত্বাৎ শব্দং গছতি প্রাপ্রোতীতি শব্দগং॥ ০১॥

क्रममर्खः।

বুজের সংশ্যাদি জ্ঞানানশ্বরং তত্তবিশেষ চিত্তন রূপেতি ভেদঃ। অত্তু বুছাবধিঠাত। ত্রহা উপাস্যঃ প্রত্যাসনার্থমভেদ উক্তঃ॥ ২৯॥

काনেক্তিরাণামপি তৈজসম্বং স বিকরক জ্ঞানছেন রক্তঃ প্রচুরস্থাৎ ॥ ৩০ ॥

ভগবৰীর্যাং কাল রূপন্তৎ প্রভাব:। শ্রোত্রন্ত শব্দগমিতানেন তটত্বলক্ষণং লক্ষ্যতে। শ্রোত্রগাহ্বং শব্দমিতি। অন্যদন্যতু বিবরণমাত্রং। এবমুত্রতাপি ॥ ৩১ ॥

গ্ৰীবিশনাপচক্রবন্তী'।

সংশ্রাদি:। বিপর্যাসোমিধ্যাজ্ঞানং নিশ্চরপ্রমাণ্ডাদং বাণোনিজা প্রমাণ বিপ্র্যার বিকর নিজা স্বতর ইতি পাতঞ্জ-লোডে:॥ ২৯॥

ইব্রিরাণি তৈজসান্যের তৈজসাহস্কারাজ্ঞাতানি জ্ঞানেক্রিরাণাং বৈকারিকত্বশস্থানির্ভার্থমেবকারঃ বিবিধানামপীক্রিরাণাং তৈজসত্বে হেডু: .প্রাণক্তেতি হি যত্মাৎ প্রাণন্য ক্রিরাশক্তিরতঃ প্রাণন্য তৈজসত্বতে ক্রিরাশক্তিয়তামপীক্রিরাণাং তৈজসত্বে ।
তথাবুদ্ধেবিজ্ঞানশক্তিতা অতো বৃদ্ধেঃ সবিকরক জ্ঞান বৃত্তিত্বেন রজঃ প্রচুরত্বাৎ তৈজসত্বেন তদীয় জ্ঞানশক্তিয়তামিক্রিরাণামপি
তৈজসত্বে ৪ ৩০ ॥

ভগৰদীৰ্য্যং কালরূপন্তৎ প্রভাবন্তেন প্রেরিভাৎ স শব্দ কেন গৃহুতে ইত্যপেকায়ামাহ শ্রোত্রং তৈজসাহকার্কার্য্যং শ্রোত্তে কিন্তু শব্দং গছেতি প্রাপ্রোভীতি তৎ ॥ ০১ ॥

এই বুদ্ধির বৃত্তিভেদে সংশয় (সন্দেহ) বিপর্য্যাস অর্থাৎ মিপ্যাজ্ঞান, নিশ্চয় (প্রমাণ জ্ঞান) স্মৃতি এবং নিজা এই কএকটী লক্ষণ ॥ ২৯ ॥

এক্ষণে ইন্দ্রিয় সকলের উৎপতির বিবরণ বলি গ্রেবণ করুন, ক্রিয়া ও জ্ঞানরপ বিভাগ হেডু ইন্দ্রিয় তুই প্রকার হর, যথা— কর্মেন্দ্রিয়ে ও জ্ঞানেন্দ্রির, এই দ্বিধই তৈজস অর্থাৎ রজ্ঞাঞ্চণ প্রভব অহঙ্কার হইতে উৎপন্ন, যে হেডু প্রাণের ক্রিয়াশক্তি ও বুদ্ধির বিজ্ঞান শক্তি অতএব প্রাণ তৈজস হওয়াতে তদীয় জ্ঞানশক্তি যুক্ত ইন্দ্রিয় সকলেরও তৈজসত্ব জ্ঞানিবেন ॥ ৩০ ॥ .

সে যাহা হউক এখন তথাত সকলের উৎপত্তি পূর্বক মহাস্থানের উৎপত্তি ও লক্ষণ বলি এবে কর্মন।
তামস অহস্কারতত্ত্ব ভগবানের বীর্য্যে অর্থাৎ কাল প্রভাবে প্রেরিড হইয়া বিকার প্রাপ্ত হওয়াতে ভাষা
হইতে শব্দ তথাত্ত উৎপত্ম হয়। ঐ তথাত্ত হইডে লাকাশ এবং শব্দ প্রহণকারী প্রোত্ত হয়॥ ১৩ ই

শর্পানার হং শব্দক ক্রক কি ক্রমেবচ। তথাত্রত্বক নতনো লক্ষণং করমো বিহঃ ॥ ৩২ ॥
ভূতানাং ক্রিমেরাভ্যং বহিরস্তরমেবচ। প্রাণেক্রিয়াদ্ববিদ্যাদ্বং নতনো বৃত্তিলক্ষণং ॥ ৩৩ ॥
নতনঃ শব্দক্ষাত্রাই কালগত্যা বিক্রবিতঃ। স্পর্শোভবততো বার্ত্তক্ স্পর্শন্যচ সংগ্রহঃ ॥ ৩৪
মৃত্তবং কঠিনত্বক শৈত্যমুক্ষত্বমেবচ। এতহ স্পর্শন্য স্পর্শন্তং তথাত্রতং নতবতঃ ॥ ৩৫ ॥

ध्या भागी।

শক্ষ্য ৰকণমাহ অৰ্থাশ্ৰমত্বং অৰ্থাচকত্বং দ্ৰষ্টু বিশ্বতং ক্ত্যাস্ত্ৰিত্ব্য বক্ষাপকত্বং। তহুক্তং বিদং বৎ দ্ৰষ্টু দৃশ্যযোৱিতি নভন: তন্মাজত্বং ক্ষ্মতং শক্ষ্য ৰকণমিতাহরঃ॥ ৩২॥ •

ছিত্ত দাত্তমৰকাশদাত্তং। বহিরন্তর ব্যবহারাস্পদত্তং। আত্মা মন: প্রাণাদীনাং ধিকাত্তমাত্রহতং নাড্যাদি ছিত্তরপেণ বৃত্তি: কার্য্যমেব লক্ষণং বৃত্তিলক্ষণং। এবমূত্রকাপি। একেন শ্লোকেন জন্মাক্র মহাভূতবোরংপত্তি:। দিজীরেন জন্মাক্র লক্ষণং তৃতীয়েন মহাভূত লক্ষণং ইত্যমুসক্রেরং॥ ৩৩॥

সা অক্ স্পর্ণসা সংগ্রহ: সমাক্ গ্রহণং যয়া পুংস্কং নিয়ত লিজ্বাৎ যয়া স্প্রাহততো ভবতীতি শেব: শক্ত আন্তা-দিত্যাদি ত্যাবাণাম্তবোভরাব্যার্থম্কং॥ ৩৪॥

স্পর্শবং স্বরূপ লক্ষণমিত্যর্থ:। নভস্বতো বায়োক্তমাত্রক্ত ॥ ৩৫॥

ক্রমসন্ধর্ভ:।

অর্থাশ্রয়ন্তং শব্ধবিশেষস্য। এই নি স্বিক্ষণ সর্গ লকণত্ত তন্মাত্রন্তং নডস ইতি লকণ্ণেদমভেদ বিবক্ষয়ৈব। বস্তু তস্ত শব্দাদেরাধিবিধা। আকাশাদি এব্যাণাং স্ক্রাবস্থা গুণাবস্থান্দ। তত্ত্বাদ্যান্তন্মাত্ররূপাঃ অর্থাশ্রয়দি রূপান্থন্যে ইতি॥ ১২॥ ৩০॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥

এ বিশ্বনাপচক্রবন্তী।

শবস্য লক্ষণং কৰর আহঃ কিন্তং। অর্থাশ্রবং অর্থবাচকবং তাই বিলিখং রামক্ষাদি লীলা ডাই ব্যাসগুকাদি জ্ঞাপকবং। বৰা কুড্যাস্তরিতস্যাপি বক্তুর্জাপকবং তথা নভসগুন্মারবং আকাশ স্ক্রপদ্ধ ॥ ৩২॥

আকাশস্য লক্ষণমাহ ছিড্দাতৃত্বং বহিরস্তরং অবকাশদাতৃত্বং বহিরস্তর ব্যবহারাম্পদত্বং। প্রাণেক্রিয় মনসাং ধিষ্ণাত্বং নাড্যাদি ছিক্রনেপেণাশ্রমত্বং নভসে। বৃত্তিভিধ দৈর্ফক কণং॥ ৩০॥

শব্দএব তল্পাত্রং বস্য তথাভূতারভসঃ সকাশাৎ সংগ্রহঃ সমাক্ গৃহতে হনরেতি করণে অপ্। স্বক্ স্থানি ব্রিয়ং স্পর্ণ গ্রহণে করণমিত্যর্থঃ ॥ ৩৪ ॥

ম্পর্শস্য লক্ষণমাহ। স্পর্শস্থং স্বরূপ লক্ষণমিত্যর্থ:। নভস্বতো বায়ো স্তন্মাত্রত্ব:॥ ৩৫॥

মা ! শব্দ কাহাকে বলে জানেন, আকাশের যে তমাত্র অর্থাৎ সূক্ষত্ব আছে পণ্ডিতেরা তাহাকেই শব্দের লক্ষণ বলিয়া থাকেন। ঐ শব্দ অর্থের আশ্রয় এবং ক্রন্তার লিঙ্গ অর্থাৎ ভিত্তির ব্যবধানে থাকিয়া কেহ কোন শব্দ করিলে উহা সেই বক্তাকে প্রকাশ করিয়া থাকে॥ ৩২॥

আকাশের বৃত্তি ও লক্ষণ কি রূপ তাহাও বলি তাবণ করুন। প্রাণি সকলের অবকাশ দান এবং বাছাভ্যন্তরে ব্যবহারাস্পদ হওয়া, আর প্রাণ, ইন্তিয়ে এবং মনঃ এই তিনের আশ্রয় হওয়া, এই সকল আকাশের বৃত্তি ও লক্ষণ ॥ ৩৩ ॥

উক্ত শব্দ তথাত্ত রূপ নাকাশ কাল বশত: বিকার প্রাপ্ত হওয়াতে তাহা হইতে স্পর্শ তথাত্ত এবং তংগদন্ত বায়ু ও তুক্ উৎপন্ন হয়, সেই তুক্ হইতেই সম্যক্ রূপে স্পর্শক্তান জন্মিয়া থাকে ॥ ৩৪ ॥ স্পার্শের অরূপ ও লক্ষণ কি তাহাও অবণ করুন। মৃত্ত্ব, কঠিনত্ব, শীতলত্ব এবং উক্তত্ব, এই সকলের নাম স্পর্শন্ত ঐ স্পর্শন্ত বায়ু তথাত্ত বলে ॥ ৩৫ ॥

890

ठालनः वृष्ट्नः श्राखित्न एषः प्रवासन्याः। मर्व्यक्तियागमाञ्चरः वार्त्ताः क्याकिक्नाः। বাংয়োশ্ট স্পর্শতন্মাত্রাজপং দৈবেরিতাদভূৎ। সমুখিতং ততত্তেজশতক রূপোশিল্ভদং ॥ ০৬॥ দ্রব্যাকৃতিখং গুণতা ব্যক্তি সংস্থাখনেবচ। তেজস্বং তেজসং সাধিব রূপমান্দ্রস্থা রুভয়: ॥ ৩৭॥ দ্যোতনং পচনং পানমদনং হিমমর্দনং। তেজদো বৃত্তয়ত্ত্বতাঃ শোষণং কুর্ড়েবচ ॥ ৩৮ ॥

श्रीभव्यामी।

চালনং বৃক্ষশাথাদেঃ বৃাহনং মেলনং ভূণাদেঃ প্রাপ্তিঃ সংযোগঃ জব্যস্য গন্ধবতো ছাণং প্রতি তথা শৈত্যাদিমতঃ পর্শনং প্রতি শব্দস্য খোত্রং প্রতি নেতৃত্বং সর্বেজিয়াণামুত্মত্বং উপোছলকর্ত্বং। কর্মণা কার্য্যেণাভিলক্ষণং ভাবে সূট্। কর্মেরাভি লকণমিতি বিগ্রহেতু করণে॥ ৩৬॥

দ্রব্যাকৃতিত্বং দ্রবস্যাকার সমর্পকত্বং গুণতা দ্রব্যোপসর্জন তথা প্রতীতি:। শব্দস্য তু স্বাতন্ত্রেটণর প্রতীতি:। অপ্রত্যক ন্ত্ৰাক্ত স্পৰ্লাদেরপি স্বাভন্তোশৈব প্ৰকীতিঃ। রূপস্য তু নৈৰ্মিতি তস্যায়ং বিশেষ উক্তঃ। ব্যক্তিসংস্থান্থং দ্ৰব্যস্য বা সংস্থা সন্নিবেশ: দৈব সংস্থা সংনিবেশ: যস্য দ্রব্যপরিণাম তরা প্রতীতিরিত্যর্থ:। তেজসন্তেজভ্রমসাধারণত্ব: ॥ ৩৭ ॥

দ্যোতনং প্রকাশকং। পচনং ত গুলাদে:। কুতৃট্ অশনা পিপাসাচ তত্বারেণ পানমদনঞ ॥ ৩৮ ॥

ভেজসভ্জেজ্বমসাধারণছমিতি ত্ৰোধক্মিতার্থ:। রূপেণেণ্ডিছে তেজসোহ্বাধারণছং গ্রাতে। অসাধারণ রূপবন্ধুব্যং टि**अ देखि॥ २१॥ २५॥ २३॥ ४०॥**

औविभग। १८क वडी ।

বারোল কণমাহ। চাননং বৃক্ষ শাধানে:। বৃাহনং মেলনং তৃণাদে:। প্রাপ্তি ব্সত্মাত্তেণ সংযোগ: দ্রব্য শব্দরো: দ্রব্যস্য গদ্ধবভোষাণং প্রতি শৈতাাদিমতব্বচং প্রতি । শব্দ্যা শ্রোকং প্রতি নেতৃহং ৷ অত্র প্রাপ্তি: সংযোগ এব চালন বাহন নেতৃ-षानि সংবোগ दिस्पि हेि उक्कार । मर्ट्स खियानामायायः मःश्रीयकयः वार्याः करैर्यव अख्मिर्सरजाखारन नकनः नकारज **३८नत्निक नक्न क्तर्य मृ। हे ॥ ७७ ॥**

রূপন্য লক্ষণমাহ দ্রব্যস্যারুতিত্বং আকার সমর্পকত্বং। গুণতাদ্রব্যোপসর্জ্ঞনতরা প্রতীতিঃ শব্দস্ততু স্বাতর্রেটেণব প্রতীতিঃ। অপ্রত্যক দ্রবাস্য স্পর্ণাদের স্বাতদ্রোণৈর প্রতীতি:। রূপস্তত্ নৈবং। বাক্তিসংস্থাতং। বাক্তের্যাস্য যা সংস্থা সংনিবেশ: সৈর সংস্থা বস্যু ভারতাত্ত্ব ক্রেরপরিমাণেটনর যৎপরিমাণপ্রতীতিরিতার্থঃ। তেজসত্তেজত্বং তল্মাত্রত্বং । বুত্রেরাধর্মাঃ ॥ ৩৭ ॥

ভেলসো সক্ষণমাত্ ল্যোতনং প্রকাশনং। পচনং তণুলাদে: ক্ষুং কুখা তৃট ্ তৃষ্ণা তত্বারেণ অদনং পচনং চ ॥ ৩৮ ৪ ৩৯ ॥

মা! वाश्रुत नक्षण श्रानित्व, त्रक्षणाथानि मक्षानन, ज्ञानित এक व भिनन, मः योक्षन, शक्षाविक দ্রব্যকে জ্রাণের প্রতি তথা শৈত্যাদি গুণ যুক্ত দ্রব্যকে স্পর্শের প্রতি, স্থার শব্দকে প্রোত্তের প্রতি লইয়া যাওন ইত্যাদি দকল বায়ুর কর্মা, এতদ্তির দকল ইচ্ছিয়ের আত্মত্ব অর্থাৎ দঞ্চালকৃত্ব ও ডাহার कर्षा, व्यर्थाय देशारमञ्ज बाजाहे छाहात्र छान हहेगा थारक।

উক্ত স্পর্শতনাত্র রূপ বায়ু, ঈশবেচ্ছায় প্রেরিড হইয়া বিকার প্রাপ্ত হইলে ভাহা হইতে রূপ, তদনস্তর তেজঃ এবং রূপের গ্রাছক চকুঃ উৎপন্ন হয়।। ৩৬॥

সাধিব। এক্সণে তেজের বৃত্তি ও তাহার লক্ষণ বলি প্রবণ করুন। এব্যের আকার সম্পর্ক হওয়া, ভণতা অধীৎ মেব্যের বিশেষার্থ দ্যোতক জ্ঞান এবং ব্যক্তি সংস্থাধ অধীৎ মেব্যের পরিণামত রূপে প্রতীতি, এই সকলই তেজের তেজত্ব অর্থাৎ অসাধারণ লক্ষণ ॥ ৩৭ ॥

(पाछन (প্রকাশ করণ) পচন, (তখুলাদি পাক করণ) क्याना পিপারা बांबी পান এবং ভোকন, "লোষণ, হিমমর্দন ইত্যাদিও ঐ তেজের হৃতি॥ ৩৮॥ "

রূপনাত্রানিক্র্রিগোরেজ্বনে। বৈব্রেনিভাই। রসমাত্রমভূত্যাদভো জিহ্বারস্থাই: ॥ ৩৯ ॥ কললো নর্বতিভাঃ কটুল ইভি নৈকধা। ভৌজিলানাং বিকারেণ রস একো বিভিন্ত ॥ ৪০ ॥ কেলনং পিওমং ভৃতিঃ আগনাল্যায়নোদনং। তাপাপন্যোদোভ্রত্মত্ত্যা র্ভয়ন্মিয়াঃ ॥ ৪১ ॥ রসমাত্রানিক্রিগাদভসোদৈবচোদিতাই। গদমাত্রমভূত্যাই পৃথী আগন্ত গদ্ধা ॥ ৪২ ॥ করম্ভ পৃতি সৌরভ্য লাভ্যোদ্থাদিভিঃ পৃথক্। ক্রব্যাবয়ববৈষম্যাদসদ্ধ একো বিভিন্তে ॥ ৪০ ॥

शिश्वचामी ।

লিহ্বা রসনেক্রিরং রসো গৃহতে অনয়েতি রসগ্রহ:। যহা রসগ্রহ স্ততো ভবতীতি শেব: ॥ ৩৯ ॥

ক্ৰায়ানির লবণোপি এইবা ভৌতিকানাং সংসর্গি জব্যাণাং য একো মধুর এব সন্ এবমনেকথা ভিদ্যতে স রস ইত্যর্থ: ॥ ৪০ ক্রেলনমান্ত্রী করণং। পিঞানং মূলাদেঃ পিঞাকরণং। ভৃতিঃ ভৃতিলাত্তং। প্রাণনং জীবনং আপোমর প্রাণ ইতিশ্রুতে:। আপোরনং তৃত্বৈক্লবা নিবর্ত্তনং। ভিলনং মূল্করণং উল্লন্মিতি পাঠে স এবার্থ:। ভূমত্তং কৃপাদাবৃদ্ধত্য্যাপি পুন: পুন: রূপামা ॥ ৪১ ॥

গন্ধগঃ গন্ধং প্রাপ্রোতি ॥ ৪২ ॥

করভো মিল্রগরুং বথা ব্যঞ্জনাদীনাং বিশ্বাদি সংহারে পুতি ছর্গরুং সোরভাং কপুরাদে: শাস্তঃ শতপত্রাদে: উদ্প্রো লগুনাদে:

क्रममम्बः।

जुत्रच् हक्ता पिनर्नेटनन मम्जान विव ॥ ४३ ॥ ४२ ॥ ४० ॥

बीविद्यमाभठकवडी।

রস্সালকশমাহ ক্ষায় ইতি। ক্ষায়াদিবু শ্বণোপি জ্ঞাইব্যঃ। ভৌভিকানাং সংস্থি জ্ব্যাণাং য একো মধুর এব সন্ এব মনেক্ধা ভিলাতে সুরস্ইত্যুধঃ ॥ ৪০ ॥

অন্তলো লক্ষণমাহ। ক্লেনমান্ত্ৰীক্ষণং পিঙানং মৃদাবেঃ পিঙীক্ষণং। তৃথিতৃথিদাভূছং। প্ৰাণনং জীবনং জ্যাপোমরঃ প্ৰাণ ইতি প্ৰতে:। আপ্যায়নং তৃড বৈক্লব্য নিৰ্ভনং উদনং মৃদ্ক্ষণং। উদ্দামতি পাঠেপি স্থবার্থ। ভূমখং ক্পাদার্থ্-ত্যাপি পুনং প্নক্লামঃ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥

গন্ধস্য লক্ষণমাছ ৷ করভোমিত্রগন্ধ: । যথা বাঞ্চনাদীনাং হিঙ্গাদিসংকারে পৃতিত্র্গন্ধ: ॥ ৪৩ ॥

মা! এক্ষণে রসের লক্ষণ বলি শ্রেবণ করণন, রূপ তথাতি স্বরূপ তেজঃ ভগবদিছার প্রেরিত হইলে তাহা হইতে রস তথাতে উৎপন্ন হয়, তাহা হইতে জল এবং রসনেন্দ্রির হয়, তদারাই রসের এহণ হইরা থাকে॥ ৩৯॥

সেই রস এক (মধুর মাত্র) হইয়াও সংসর্গদ্রের সকলের বিকার বশতঃ কষায়, মধুর, কটু, অম, লবণ, এই রূপে অনেক প্রকারে বিভিন্ন হয় ॥ ৪০ ॥

ঐ জলের বৃত্তি অনেক প্রকার, ক্লেদন (আটো করণ) পিশুন (মৃত্তিকাদির পিশুকরণ) তৃত্তিদান, প্রাপন, (জীবন) আপ্যায়ন (তৃষ্ণাদি জনিত বৈক্লব্য নিবারণ) উন্দন (মৃদ্করণ) তাপ নিবারণ এবং ভূমস্ক অর্থাৎ কুপাদি ছইতে উদ্ধৃত হইলেও পুনঃ পুনক্ষদাত হওয়া॥ ৪১॥

প্রকাশ প্রক্রের উৎপত্তি ও ভাহার লক্ষণ বলি প্রবণ করুন, রসতমাত্র ব্রুপ জল ঈশরেচ্ছা বশতঃ বিকার প্রার্থ হুইলে ভাহা হুইতে গন্ধ ভদ্মাত্র উৎপন্ন হয়, ভাহাতে ভূমি ও গন্ধের গ্রহণকারি আণ

कार । १३ ॥ अस्य प्रकाश भागार्थि प्रवादिकार्यत रेवसमा श्रामक कृतक (मिल्लाक) त्रीतका (कर्श्वामित गक्त) ভাবনং অন্ধাঃ স্থানং ধারণং সন্ধিশন্ধ। সর্বাসন্ধানিকের পৃথিনীর্ভিসক্ষণং ॥ ৪৪ ॥
নভেভিশ্বিশেবাহর্থো যস্য তহ প্রোক্তরতে । বারোগ্রেশিবশ্বের্থো বস্ত ভ্রুহ স্পর্লিরং বিছঃ।
ভূমেগ্র্পবিশেবোহর্থো যস্য ভালং স উচ্যতে ॥ ৪৫ ॥
পরস্য দুল্যতে ধর্মো ভ্রমর্মিন্ সমন্ধার্থ। প্রেণা ভাবানাং ভূমাবেবোপল্ডাতে ॥ ৪৬

श्रीधत्रवामी ।

मःमर्तिशाः जवााब्यवानाः देवनमारं व अवः विक्रिमाटक म शक हेकार्यम ॥ ३० ॥

বৃদ্ধণোভাৰনং প্রতিমাদি রপেণ দাকারতাপাদনং। স্থানং জলাদি বিলক্ষণতরা দৈরপেক্ষেণ স্থিতিঃ। ধারণং জলাদ্যাধারতং সতামাকাশাদীনাং বিশেষণ্মবজ্ঞেদকত্বং। সর্বেবাং স্থানাং প্রাণিনাং তদ্গুণানাঞ্চ পুংখাদীনাং শ্লাদি প্রাহকত্বং উক্তং তেরাঞ্চ শক্ষণং তদেবেত্যাহ পঞ্চতঃ প্রোকার্টিছঃ। নভোগুণবিশেষঃ শক্ষো বভার্বো বিষয়ঃ ॥ ৪৫ ॥

গুণ বিশেষ শক্ষব্যাবর্ত্তাং দর্শরতি পরস্ত কারণত ধর্ম: শক্ষাদিঃ অপর্যমিন্ কার্য্যে বাষ্বাদেশ কারণাম্বরাদ্দ্র্শ্যতে। অতো ভাষানাং আকাশাদীনাং বিশেষো গুণ: সর্কোপি শক্ষাদিঃ ভূমাবেৰোপনভাতে। চতুর্ণাং তত্তাম্বরাৎ ক্লাদির্যথা স্বর্যের ন সর্ক্য আকা-

ক্রমসন্দর্ভঃ

ভাবনমিতি। ব্রহ্মণঃ প্রমেখরস্য তম্ম ভাবনং ইক্রনীলাদি রূপারা অসা রূপাদি দৃষ্টাস্তত্বেন অরণহেতৃত্বং জলাদৌ গ্রাদ্য ভাবাৎ অসম্যক্ষমিতি। যদা। বির্ভিণেশ তস্য ভাবনং ভাবনোপাধিত্বং ॥ ৪৪ ॥

एक्न हेकि नार्ककर ॥ 80 ॥ 86 **॥**

क्षिविश्वनाथठकवर्की i

পৃথিব্যা লক্ষণমাহ। এক্ষণ: পরমেখনস্য ভাবনং প্রতিমানির্দ্ধাণ কারণদং। স্থানং জলাদি বিলক্ষণতয়া নৈরপেক্ষেণ স্থিতি:।
ধারণং জলাদ্যাধারদং। সভামাকাশাদীনাং বিশেষণং বিশেষণহেতুঃ মলিনমাকাশং ধ্বরোহনিল: ইত্যাদি প্রতীতির্বত ইত্যর্থ:।
সংশ্বাং সন্থানাং প্রাণিনাং তদ্যুগানাঞ্ প্রেদীনামৃত্তেদঃ পরিশামবিশেবৈঃ প্রকটীকরণং ॥ ৪৪ ॥

শ্রোত্রাদীনাং শলাদি আহক্ষমুক্তং। তেবাঞ্চলকণং তদেবেত্যাহ ন্তনো শ্রণ বিশেষঃ শলো মস্যার্থো বিষয় তং

কিঞ্পঞ্জু ভূতেৰু মধ্যে যথোজনং গুণাধিক্যমাহ পরস্য কারণস্য ধর্মঃ শব্দাদিঃ অবর্ষ্মিন্ কার্যোবাদৌ কারণাব্যাদৃশ্যতে তলাকাশেহন্যাব্যাভাবাদেক এব শব্দঃ বাবৌ বৌ শব্দশাশৌ। তেলসি জীপি শব্দশৰ্শ রূপাণি। বাবে চ্ছান্নঃ। শব্দ শর্শ

শাস্ত (পন্মাদির গন্ধ) এবং উতা (শশুন ও হিঙ্গু প্রস্তৃতির গন্ধ) এই রূপে ভিন্ন ভিন্ন হয়॥ ৪০॥

মা! উল্লিখিত ভূমিরও এই রূপ ভেদ আছে, যথা ত্রেক্সে ভাবন অর্থাৎ প্রতিমাদি রূপে সাকা-রতা সম্পাদন, স্থান অর্থাৎ জলাদির নৈরপেক্ষে স্থিতি, ধারণ অর্থাৎ জলাদির আধার হওন, সহিশেষণ (আকাশাদির অবচ্ছেদক হওন) এবং সর্ব্ব প্রাণির ও তাহাদের পুংস্থাদি গুণের প্রকটীকরণ ॥ ৪৪॥

হে নানবি! শ্রোত্রাদি ইন্দ্রিয় বারা শব্দাদি জ্ঞান হয়, পূর্বে বাহা কহিয়াছি ভাহাতেই শ্রোত্রাদির লক্ষণ জানিবেন, যে হেডু আকাশের গুণবিশেষ শব্দ যাহার বিষয়, পণ্ডিভেরা ভাহাকে শ্রোত্র
কহিয়া থাকেন, ঐ রূপ বায়ুর গুণ বিশেষ স্পর্শ যাহার বিষয়, ভাহাকে স্পর্শন অর্থাই ছক্ কহিয়া
থাকেন, জার ভেজের গুণবিশেষ রূপ যাহার বিষয়, ভাহাকে চকুঃ, জলের গুণবিশেষ রূপ বাহার
বিষয়, ভাহাকে রুসনা এবং ভূমির গুণবিশেষ গন্ধ যাহার বিষয়, ভাহাকে আবি কহেন। ৪৫ টি

কিন্তু মা! বায়ু ইডাটি অপর অপর পদার্থে পর পর আকাশাদির বিশেষ বিশেষ অপ শক্ষাদি, কারণাখ্য হেতু কার্য্যে মিলিত হইয়া থাকে, এই কারণে আকাশাদি চায়ি পনার্থের বিশেষ বিশেষ এতাফ্রসংহত্য যদা সহদাদীনি সপ্তবৈ। কাল কর্ম গুণোপেত্যে জগদাদিরূপাবিশৎ ॥ ৪৭ ॥ ততত্তেনালুবিছেভো মুজেভোহ্ওমচেতনং। উথিতং পুরুষো মন্ত্রাত্মতিদদে বিরাট্। এক্রমঞ্জিশবাধ্যং ক্রমর্থৈদ শোভরে:। তোরাদিভিঃ পরিষ্তং প্রধানেনার্ভৈর্বহিঃ ॥ ৪৮ ॥ যত্র লোক্ষিভানোয়ং রূপং ভগবতো হরে: ॥ ৪৯ ॥

औभव्यामी।

শেতৃ অন্যাৰয়াভাবাৎ এক এবেতি ॥ ৪৬ ॥

এবং কারণোৎপত্তিমূক্। কার্যোৎপত্তিমাহ সাহৈছিভিঃ। এভাজসংহত্য ক্ষিনিদা বদা ছিতানি জগদাদিরীখর: প্রাবিশং। সংগ্রতিচ প্রাধান্তাভিপ্রায়েণোক্তং প্রবেশন্ত সর্কেছিপি বিবন্ধিতঃ॥ ৪৭॥

অনুবিদ্বেড্যঃ কুভিতেভ্যঃ। বসাদগুলিনৌ বিরাট পুরুষ উদভিষ্ঠৎ । ৪৮ । ভগবতো ত্রপষিতি পুরুষাভেলাভিপ্রাবেণ॥ ৪৯ ॥

क्रमनमर्छः।

এতানীতি। অধুনা কালাদি বিশেবৈরূপেত ইতি জ্ঞেরং ॥ ৪৭ ॥ উথিতমুৎপরং পুরুষো হিরণাগর্জাত্মক: সমষ্টি জীব: উদ্ভিচ্ছ । সুৰুষ্ঠমিবাতিক্রমা সচেতনোবজুব ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥

श्रीविधनाथठकवर्त्वी।

রূপ রসা:। ভূমৌ পঞ্চৈব শব্দ স্পর্শরপরসগন্ধা ইত্যাহ অত ইতি ভাবানামাকাশাদীনাং বিশেষঃ সর্বাএৰ ঋণঃ ॥ ৪৬ ॥
এবং কারণোৎপত্তিমূক্। কার্যোৎপত্তিমাহ এতানি তথানি অসংহত্য অমিলিছা বলা ছিতানি তলা অগলাদিরীশরঃ প্রাবিশং
প্রথমং সংহ্ননকারিণ্যা শক্ত্যা সর্বাত্ত সংমেলনার্থমবিশং। ততো বর্ষ সহস্রাত্তে তলত্ত্বীমিছেন প্রাবিশনিতি ক্রেয়ং। কালঃ
ক্রোভকঃ কর্ম ক্রীবানৃষ্টং ঋণঃ প্রাকৃতিকৈঃ সহিতঃ। সংগ্রতি প্রাধান্যাভিপ্রারেণাক্তং। প্রবেশন্ত সংক্রেব বিবিক্ষিতঃ ॥ ৪৭ ॥

তেন তৎ প্রবেশেন অত্বিদ্ধেতা আদৌ ক্তিতেতা তৎকণাদেযুবকেতো। মিলিতেতা তদেতো। ধম্পিতম্পারং। যখাবিরাট্ পুরুবো হিরণ্যার্থাত্বক: সমষ্টি জীব: উলভিছৎ নিজামিবাতিক্রমা সচেতনো বভূব ॥

অভমিতি বিশেষ ইত্যাপ্যা নাম বস্য তৎ দশগুণাধিকৈক্তরোজকর: বহিংছিত প্রকৃত্যাবরণেনার্টতঃ । ৪৮॥ ক্লণং সামিকং ॥ ৪৯॥

গুণ ভূমিতেই দৃষ্ট হয় অর্থাৎ ভূমিতে যথাক্রমে কারণ স্বরূপ আকাশাদি ভূত চতুষ্টরের সম্বন্ধ থাকাতে, তাহা শব্দাদি সমস্ত বিশেষ গুণই ধারণ করে। ৪৬॥

মা। এইত কারণের উৎপত্তি বলিলাম, একণে কার্য্যোৎ পত্তির বিবরণ বলি আবণ করুন। পূর্ব্যেক্ত মহত্তত্ত্ব প্রভৃতি পদার্থ যখন পরস্পর মিলিত না হইয়া অবস্থিত হইল, তথন জগদাদির ঈখর কাল, কর্ম ও গুণ বুক্ত হইয়া ঐ সপ্ত পদার্থের মধ্যে প্রবেশ করিলেন ॥ ৪৭ ॥

তাহাতে ঐ সকল পুদার্থ ক্তিত হইয়া পরস্পর মিলিত হইল, তৎপশ্চাৎ তাহাদের হইতে একটা অচেতন অও উৎপদ্ন হুইল, সেই অও হইতে বিরাট্ পুরুষ আবিস্তৃত হয়েন, ঐ অতের নাম বিশেষ, তাহা বহির্দাণে ক্রমণ: দশগুণ বর্তিত প্রস্কৃত্যাবরণ ক্লাদি খারা আরত আছে ॥ ৪৮॥

সেই অঙেতেই ভগবানের মূর্তি বরূপ চতুর্দশ ভূবন বিস্তৃত রহিয়াছে ॥ ৪৯ ॥

হিরগারাকওকোষাতুপায় সলিলেশয়াৎ। তমাবিশ্য মহাদেবো বছণা নির্বিভেক্ত প্রায় ৫০ ।
নিরভিদ্যতাস্য প্রথমঃ মুথং বাণী ততোহভবৎ। বাণ্যা বছিরবোনাসে প্রানেশ্য বিশ্ব বি

নির্বিভেদ বিরাজন্ত্রোম শুঞ্জানমন্ততঃ। তত ওববয়ন্চানন্ নিমাং নি

বেতত্ত্বাদাপ আসন্ নিরভিদ্যত বৈ গুদং। গুদাদপানোহপানাক মৃত্যুদে বিভিন্ন বিঃ॥ ৫৩॥

शिभववागी।

ত্ৰিল্লগ্যাত্মাদি বিভাগনাই হিবল্লগাদিতি নৰভি: উথাৰ ঔদাসীলাঃ বিহাৰ ত্নাবিশ্য অধিষ্ঠাৰ নহাংশ্চাসৌ শেৰশ্চ খং ছিল:॥৫০
বাণ্যা সহ বছিৰভৰ্থ প্ৰাবিশং নাসে নিৰ্ভিটেগতাং। প্ৰাণোডঃ প্ৰাণেশ উডঃ স্ভঃ সন্ আণ এতৰোন সিক্লোৰভৰ্দিতাত্ম লগঃ॥ ৫১॥

আণাদনম্বরং বাযুশ্চ প্রাণোত ইতি বিশেষণং সর্কেক্তিয়েম্বাপি জ্ঞেইবাং। স্তাভিব্যেতাং অবভিব্যেতামিতি পাঠবরেপ্যেক এবার্থ: অতো দিশঃ প্রাবিশন্॥ ৫২ ॥ আদিশকেন কেশাঃ ॥ ৫০ ॥

क्रममन्दः।

থং আকাশং বহুধা নির্কিভেদ পৃথক্ পৃথক্ কৃতবান্। ৫০ ।
মূথং বাষ্টি মুথানাং কারণাংশং। এবং বাণ্যাপি। ৫১ ॥
ঔষধ্য আপশ্চ তত্তদভিমানিন্যঃ॥ ৫২॥ ৫৩॥

श्चीविचनाशहक्तवही।

তিমিলগাত্মানি বিভাগমাহ হির্ণালানিতি আবিশা অধিষ্ঠায় মহাংশ্চামে দেবশ্চ বছবিধং ধং ছিলং নিবিভিদ পৃথক্ সৃথক্ চকার॥ ৫০॥

বাণ্য। সহ ৰছিবভবৎ প্ৰাবিশং। নাসে নিবভেল্যেতাং প্ৰাণেতঃ প্ৰাণেন স্থাতঃ সন্ ছাণঃ। এতথাে ন'সায়েবভবদিত ক্ষল:। প্ৰাণেত ইভি বিশেষণং সংক্ষিত্ৰেৰু লিক্ষবিপরিণামেন জইবাং ॥ ৫১ ॥

জাণাদনন্তরং বায়ুরাবিশং। এবনেবাগ্রেপি পঞ্চয়তানাং তদনত্তরমিতি ব্যাথ্যা জেলা। সূর্ব্যোহস্ভিদ্যেতাং ন্যভিদ্যেতা মিতি পাঠবয়ং॥ ৫২॥ ৫০॥

সেই মহান্দেব আবির্ভাবের পর জলশায়ি ঐ হিরগ্নয় অও হইতে উথিত হইরা ঔলাসিন্য ভাব পরিত্যাগ করিলেন এবং ঐ অঙে অধিষ্ঠান পূর্বাক বহু প্রকার আকাশ অর্থাৎ ছিদ্র ভেদ করিয়া দিলেন। ৫০ ।

তাহাতে প্রথমতঃ তাঁহার মুখ নির্ভিন্ন হইল, তৎপরে বাক্য হইল, তদনন্তর বাক্য সহ অগ্নি হইল, তৎপরে নাসিকা হয় নির্ভিন্ন হইল, তাহার পর ঐস্থই নাসিকা হইতে প্রাণবায়ু বিশিষ্ট আণেক্রিয় জন্মিল। ৫১॥

জাণের পর বায় প্রাণযুক্ত হইনা উৎপন্ন হইল, পশ্চাৎ তাহা হইতে সূর্য্য নির্ভিন্ন হইলেন। ভাহার পরে কর্ণ শঙ্কুলি হয় ও কর্ণেন্দ্রিয় প্রকটিত হইল, পরে ঐ কর্ণেন্দ্রিয় হইতেই নিক্ সকল আহিছুত হইল। ৫২॥

ত শেকাৰ বিশ্বাস পূক্ষ নিভিন্ন হইলেন, তাহার পরে ছক্, রোন, শাঞ্জ, ফেশ ইড়ানি নিভিন্ন হইল। ভাননার ওবাধ সকল, তাহার পরে শিল্প একাশ গাইল এবং এ শিল্প হইছে ভান ক্ষিল, তৎপশ্চাৎ জল হইল, তাহার পরে পায় ভেল ইইল, তাননায় এ পাছ হইছে জ্বলাস এবং অপান হইতে লোক সকলের ভয় জনক মৃত্যু প্রকৃতিও ইইল ॥ ৫০॥

হজৌচ নিরভিদ্যেতাং বলং তাভাাং ততঃ স্বরাট্। পাদৌচ নিরভিদ্যেতাং গতিস্তাভাাং তঃতাঁহরি:॥৫৪ নাডােহিস্তা নিরভিদ্যস্ত তাভাাে লােহিতমাভ্তং। নদ্যস্ততঃ সমন্তবন্দ্রং নিরভিদ্যত। কুংপিপাােম ততঃ সাাতাং সমুদ্রস্তেরােরভূং। অধাস্ত হাদয়ং ভিন্নং হাদয়ামন উত্তিতং॥ ৫৫॥ মনসশ্চন্তমা জাতে বৃদ্ধি বৃদ্ধি গিরাংপতিঃ। অহকারস্ততাে ক্রন্তশ্চিতং চৈত্যস্ততােহভবং॥৫৬॥ এতেহভূাপিতা দেবা নৈবাস্থােপানি হশকন্। পুনরাবিবিশুঃ থানি তমুখাপারিতুং ক্রমাং।

विवत्रवामी।

স্বরাড়িক্স:। হরি বি ফু:॥ ৫৪॥ আভ্তং ফাতং॥ ৫৫॥
বুজাদির জ্পর্মেবাধিষ্ঠানং। গিরাংপতি রুজা চৈষ্ঠা: ক্ষেত্রজা:॥ ৫৬॥
অবস্ব বাতিরেকাভাাং ক্ষেত্রজাং বিবেকাং সর্কেবাং পুনা প্রবেশ্যাহ এত ইডি নিব্দিঃ॥ ৫৭॥

ক্রমসন্দর্ভ:

रतिखनारवभावजारता रमवजाविरभवः ॥ es ॥

নাডা ইতার্দ্ধকং। লোহিতং রক্তাদিসঞ্চারিকা শক্তি:॥ ৫৫॥

অহমিতি। অত্র চৈত্তাঃ কেত্রজো হিরণাগর্ডান্তর্থামাবস্থ ঈশবঃ প্রহান্তরপোহরং জ্ঞের:। জীবসা কর্ত্তু: ক্রণছাভাবাৎ দেবতাছাভাবাচে। ঈশব প্রথ গতত্ত্বিব প্রশ্নোন্তরাভ্যাং চ। অতোহসৈদ্ব সর্বাধিকসামধ্যং দশ্রিবতে চিত্তেনেত্যাদিনা ॥৫৬ অভ্যাধিতাঃ স্ব লাধিকান সংযোগং প্রাপ্তা অপি অস্য বিরাশ্বঃ। উত্থাপনে বহিন্দেক্তাসম্পাদনে আবিবিতঃ প্রযন্ত্রং চক্তঃ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

चत्राहे हेक्ट:। हतिः हतिशा व्याविष्टा त्वविष्टन हेलि ममर्कः॥ ८८ ॥

লোহিতং রক্তাদি সঞ্চার কমিক্রিয়ং আড়তং জাতং॥ ৫৫॥

क्षपत्र এব यन कामाखःकत्व हजूष्टेत्रमाधिष्ठीनः निताःপতি उक्ति॥

চৈন্তঃ: চিন্তাধিষ্ঠাতা বাস্থানের স এব চিন্তে উপাস্য দেবতা চ। স এব সমষ্টি ; জীবস্য হিরণ্যগর্জস্য প্রছান্ত্রনান্তর্যামী স এব ব্যষ্টি জীবানামনিক্ষ্ণেনান্তর্যামীতি ভাগবতামূভমিতি জ্বেয়। নতু চিন্তাধিষ্ঠাতা ক্ষেত্রজ্ঞা জীব ইতি বাচাং ত্রু কর্ত্ব ক্রণশ্বাদ্ভাবস্য সর্বাত্র প্রতিপাদিতথাং। আচার্য্য চৈন্তাবপুরা অগতিং ব্যনজীত্যাদাবপি চৈন্ত্র শব্দেনান্তর্যামিণ এবোজি:। কচিচ্চ চৈন্ত্রে শব্দেন জীবাভিষানং তু চিন্ত্রোপাধিশ্বাদেব নতু চিন্তাধিষ্ঠাভ্যাদিতি জ্বেয়ং॥ ৫৬॥

•

অব্যব্যভিরেকাভ্যামন্তর্যামিণ এব সর্ব্ধ শক্তিমবং দর্শনিভূম্কমেব প্রবেশং সর্ব্বেগং পুনরাহ এত ইত্যাদিনা ॥

তদনস্তর হস্তবর নির্ভিন্ন হইল, পশ্চাৎ ঐ তুই হস্ত হইতে বল প্রকাশ পাইল, তৎপরে ইন্ত্র আবিষ্ঠ্ ত হইলেন। তদনস্তর চরণহয় নির্ভিন্ন হইল, পরে ঐ তুই চরণ হইতে গতি নির্ভিন্ন হইল, তৎপরে বিষ্ণু প্রকাশ পাইলেন ॥ ৫৪ ॥

অতঃপর ঐ বিরাট্ পুরুষের নাড়ী সকল নির্ভিন্ন হইল, পরে সে সমস্ত হইতে রক্ত জমিল, অনন্তর
ঐ রক্ত হইতে নদী সকল উৎপন্ন হইল, তৎপশ্চাৎ উদর নির্ভিন্ন হইল, তাহার পর ক্ষা ও পিশাসা
প্রকাশ পাইল, তাহাদের হইতে সমুদ্র জমিল, অনন্তর বিরাট্ পুরুষের হৃদয় নির্ভিন্ন হইল। পরে
সে সকল হইতে মন উৎপন্ন হইল॥ ৫৫॥

পশ্লাৎ ঐ মন হইতে চন্দ্ৰ জিখিলেন, তাহা হইতে বৃদ্ধি এবং বৃদ্ধি হইতে বাক্পতি প্ৰক্ষা আবিস্তি হইলেন। পারে অহকার জিখিল, তাহা হইতে ক্ষত্ৰ, ত্বনন্তর চিত্ত এবং চিত্ত হইতে চৈত্ত অর্থাৎ ক্ষেত্রভাৱ আবিষ্ঠাৰ হইল ॥ ৫৬ ॥

क्छिता। धरे मक्न एम्बर्श व्यक्तिक रहेता दिवाहे, शूक्तिक छिथित कतिहरू मनर्थ रहे-

200

শুলি বাচা মুখং ভেজে নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। জাণেন নাসিকে রায়ুর্নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। আদিনী চকুবাদিতোা নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। আদের কণোঁচ দিশো নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। ছচং রোমভিরোবধ্যা নোদতিষ্ঠন্ততা বিরাট্। রেডসা শিশ্বমাপস্ত নোদতিষ্ঠন্ততা বিরাট্। গুদং মুত্যুরপানেন নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। হস্তাবিস্তো বলেনৈব নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। বিষ্ণুর্গত্যৈব চরণো নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। নাড়ী র্মদ্যো লোহিতেন নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। কুন্ডুড্ভ্যাম্বরং সিন্ধুর্নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। ছবরং মনসা চল্লো নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। বুদ্ধা বেলাপি হৃদ্ধাং নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। কুল্ডো হৃদ্মত্যা হৃদ্ধাং নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। কুল্ডো হৃদ্মত্যা হৃদ্ধাং নোদতিষ্ঠন্তদা বিরাট্। চিত্তেন হৃদ্ধাং চৈত্যঃ ক্ষেত্রজ্ঞঃ প্রাবিশাল্যদা। বিরাট্ তিদেব পুরুষং সলিলান্ত্র্দতিউত ॥ ৫৭ ॥ যথা প্রস্তুষ্ণ প্রকৃষং প্রাণে ক্রিয়মনোধিয়ং। প্রভবন্তি বিনা যেন নোখাপয়িত্বাজনা ॥ ৫৮ ॥

श्रीधत्रवामी।

विताषे (तरुमा नाहित्तरः पृष्ठीखायन पर्नत्रन् नारशास्त्रकथनमा आत्राक्षनमार याथि बाक्षार् ॥ ०৮ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

চিত্তেনেতি প্রাবিশং বহিল্টেষ্টাসম্পাদনার্থং স্বরমেব সর্কোথাপনে পুনক্ষ্যমং ক্লুতবান্। উপতিষ্ঠৎ বহিরপি চেষ্টাং প্রাপ্তবান্॥ ৫৭ ॥ বংগতি যুগ্মকেন। তথা বেন বিনা বিরাট্ নোদতিষ্ঠৎ ॥ ৫৮ ॥

এ বিশ্বনাথচক্রবন্ত

হৈছো৷ বাস্থদেব: স এব ক্ষেত্ৰতা হস্তৰ্বামী ক্ষেত্ৰজ্ঞাপি মাং বিদ্ধি সৰ্ব্বক্ষেত্ৰখবস্থিতমিতি গীতোক্তে: ॥ ৫৭ ॥ সমষ্টি विद्राष्ट्र एक्ना वाहिएवर मृद्धी खन्नि वर्षिक एवन विखादिकांका भन्नरम्भदन विना श्रान्त्रश्चर वाहिर वर्षा केचाशितकूर न मक्न-লেন না ইহারা তাঁহার উত্থান নিমিত পুনর্বার স্ব স্ব ইন্দ্রিয় রক্ষে ক্রমশঃ এবিষ্ট হইলেন অর্থাৎ বহ্রি বাগিন্দ্রিয় দারা মুখে প্রবিষ্ট হইলেন কিন্তু তাহাতেও বিরাট্ পুরুষের উত্থান হইল না । পরে বায়ু ত্রাণেজিয়ে বারা নাগারছে প্রবেশ করিলেন, তাহাতেও বিরাট্ পুরুষ উত্থিত হইলেন না। তৎপরে আদিত্য চকুরিস্তিয়ে ঘারা অক্ষিগোলকে প্রবিষ্ট হইলেন, তাহাতেও বিরাট পুরুষ উঠিলেন না, তদন-স্তর দিক্ সকল কর্ণেন্ডিয় দারা কর্ণবিবরে প্রবেশ করিলেন, তাহাতেও বিরাট পুরুষের উত্থান হইল ना. भारत अविधि मकल त्लाम बाता परक व्यविष्ठ रहेल, जाहारज्य वितावे भूक्षव छिथिज रहेरलन ना व्यनस्तर कन मकन एक बाता भित्य अविके इहेन, जाहाराज्य वितारहेत छेवान इहेन ना। जरशन्हार মৃত্যু অপান দারা পায়ুদেশে প্রবেশ করিলেন, তথনও বিরাট্ পুরুষ উঠিলেন না, তদনন্তর ইন্দ্র বল बाता रखबरत्न ध्वविके रहेरलन जाराज्य वितारे श्रुक्रस्तत छेथान रहेल ना । जारात शर्त विक गण्डि-मिकि बाजा চরণ पा थारान कतिराम काहाराज्य विज्ञा के खेखिल हरेरामन ना। जल्लामा निमान मन রক্ত বারা নাড়ীতে প্রবেশ করিল, তাহাতেও বিরাট উঠিলেন না। পরে সমুদ্র, কুধা ও তৃষ্ণা বারা উদর আশ্রের করিল, তথনও বিরাট্ পুরুষের উত্থান হইল না। তদনস্তর চক্রমা মনের খারা হৃদয়ে व्यादम कतिरलन, ठाहार७७ विदार्हे शूक्रव छिथिछ हरेरलन ना । छाहात शरत खन्ना दृषि बाता हमरत धविके एरेटनम जथनक वितारे शुक्रव छिटिनम ना । शदत क्रम अधिमान बाता रमरे शबंदय क्षादम कृतिराम्न, प्रांशाराज्य वितारे शूक्रायक देशान रहेग ना । अवरणात् द्रकावक यथम क्रिस वाता समस्त थविके इंदेरनन ७ वन विवार्ष भूकार्यक मिन इंदेर कथान इंदेन ॥ १९ ॥

मा ! दबनन थींन, रेखिन, मनः, वृषि, रेहान्ना विखिषिष्ठां शब्दम्बन गुर्किदारक श्रम्भ शुक्रमहरू

তমন্মিন্ প্রত্যগাল্পানং বিরা যোগপ্রবৃত্রা। ভক্তা বিরক্তা জ্ঞানেন বিবিচ্যাল্পনি। তিরেই।৫৯
॥ # ॥ ইতি প্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংক্তাং সংহিত্যারাং বৈরাসিক্যাং তৃতীয়ক্তরে তত্ত্বসমাল্লারঃ বড়বিংশো হধ্যারঃ ॥ # ॥ ২৬ ॥ # ॥

- প্রিভগবাসুবাচ। ।

थक् जिल्हारे भि भूकरवा नाकारक थाकरेक श्रीतः। व्यविकातामक र्वृष्टा मिश्च ने पाइक लाकिय ।

धिशतवामो ।

প্রথমং পরমেশরে ভজিততো ২নাত্র বিরক্তি ভতে। যোগপ্রবৃদ্ধা ধীঃ একাগ্রং চিত্তং ততো যজ্জানং তেন প্রত্যপাস্থানং ক্ষেত্রতা। অমিলাম্মনি কার্যকারণসংখাতে যিবিচা চিত্তরেং॥ ৫৯॥

॥ • ॥ देखि कृषीत्त्र वक् विश्नः ॥ दे॥

সংবিংশে ততঃ সমাক্ বহুসাধনবাগতঃ। পৃংপ্রকৃত্যো বিবৈকেন মোকরীতি নির্মাতে ॥ • ॥ বিবেকজানেন মোকমুপপাদয়িতুং ভর্মসার পুরুষস্য পুর্কোক্তং প্রাকৃত্যবিবেকতঃ সংসারমন্ত্রারমতি প্রকৃতিছে। ইঞ্জিত

क्रममण्डः।

তৰিতি ৰাভ্যামৰর:। প্রত্যগাত্মানং অন্তর্যামিণং॥ ৫৯॥

৪ * ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়য়য়ে শ্রীলীবগোষামি য়ত ক্রমসক্ষেতি বৃত্বিংশোহধায়: সমাপ্ত: ॥ * ॥
 শ্রপ লীবাধাং পুরুষমণি প্রকৃতে বিবিনক্তি প্রকৃতিছোহণীত্যাদিনা। যথা ললে দৃটোহণাকত্তেন ন লিপাতে তথেতার্থ:॥
 কিছক লগাক দৃটান্তত্বন দর্পণমুখদৃটান্তো লকান্তকাৎ ব্যুখন্য দর্শণ দোব লিপাবত তরিপ্তবেন মিধৈবাভিমানং কুফতে

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰব হী।

বৃত্তি তথৈব যেন বিনা সমষ্টি বিরাড়ীপ নোদভিষ্ঠদিতি পুর্ফোণাধ্য: ॥ ৫৮ ॥

সাংখ্যাস্কর্থনস্য প্রয়োজনমার। তং প্রত্যুগান্ধানং প্রত্যুগ্ জানগম্যং প্রমান্থানং অন্মিন্ কার্য্কারণ স্ংঘাতে আন্ধান দেহে জীবান্ধন্যের বা চিন্তবেং ॥ ৫৯ ॥

॥ । ইতি সারার্থনিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। বড় বিংশোহয়ং তৃতীয়স্য সম্বতঃ স্কৃতঃ স্তাং॥ • ॥ সপ্তবিংশে ভক্তিমিল্ল জ্ঞান সাধনবিত্তেঃ। পুংপ্রকৃত্য়ে বিবেকাচ্চ মোক্ষরীতি ক্ষণীর্যাতে॥ • ॥

বিবেক জ্ঞানেন মোক্ষম্পপাদরিভুং শীবাঝানং প্রকৃতে বিবিক্তারেন দর্শাতি। প্রকৃতিহোহিপি প্রবাধা শীবঃ সুবৃধি প্রদর্মোনি প্রথা দলির তাহিব তাহারেত। নালাতে। নালাতে। নালাতে। নালাতে। ক্যাক্ষর ক্ষান্ত ক্ষান্ত

শতএব যোগপ্রবৃত্ত। বৃদ্ধি এবং ভক্তি ও বৈরাগ্য, তথা জ্ঞাক ইত্যাদি দারা ঐ কারণ সংঘাত শাস্মাতে ঐ ক্ষেত্রজ্ঞের বিবেচনা পূর্বক চিস্তা করিবে॥ ৫৯॥

॥ 🕶 ॥ देखि ज्जीस यज्विश्य ॥ 🕸 ॥

সপ্তবিংশ অধ্যায়ে বহু বহু সাধন যোগ বশতঃ পুরুষ ও প্রকৃতির বিবেক ছারা মোক্ষরীতি বর্ণন হইতেছেন • ম

खग्रान् कहिलान मा। शतम श्रूक्य शतमाश्वा निर्श्व , श्रुक्ताः सक्छा ७ निर्विकात, जन मधा त्र्यम्थल क्षितित्रिक हरेला .तं त्यम्न कद्याकास हत्र ना, काहात स्थान के शूक्त्य त्यहर हरेला व्यक्तित अन्य प्रश्वातिक विशेष हत्यन ना। किस ताई श्रूक्तक तथन क्षत्रित अन्य प्रश्वातिक विशेष हत्यन ना। किस ताई श्रूक्तक तथन क्षत्रित अन्य प्रश्वातिक विशेष हत्यन ना। 565

সংশ্য বিষ্ প্রকৃতে প্র নির্ভিটি সকলে । অহকারবিস্টার্থা কর্তাহিমিতি মন্যতে ॥ ১ ॥
তেন সংসারপদ্ধী মবশো হতেতা নির্ভিটি প্রাস্থিকৈঃ কর্মানেটকৈঃ সদস্যিপ্রযোনির ॥ ২ ॥
অর্থে অবিদ্যমানে হপি সংস্তিন নিবর্তি । ধ্যায়তো বিষয়ানক সংগ্র হনবাগমো যথা ॥ ৩ ॥
অত্তবে শনৈশ্চিতং প্রসক্তমস্তাং পথি । ভক্তিযোগেন তীত্রেণ বিরক্তাচ নয়েষ্পং ॥ ৪ ॥

अध्वयां भी।

ত্রিভি:। দেহস্থোহপি নাজ্যতে ন লিপাতে। তাওঁ তথকতৈঃ ক্ষম ছংগাদিভি:। নিগুণিখাদকর্ত্ত্বং ততোহবিকারিক্ষ তত্রাথ॥ ১॥ অনিবৃতিঃ সন্প্রকৃতিঃ সদস্ত্রিশ্রেষানিবৃদ্ধি ভিত্তি নামাদিবৃদ্ধি প্রায়েশিকীং প্রায়েশিকী । ২॥

নমু তছ বান্তবত্বাৎ সংস্ততেঃ কিং তরিবৃত্তিপ্রমানেন তত্তাহ অর্প্রেহীভি ॥ ৩ ॥

যতো বিষয় ধ্যানমনর্থহেতুরতো মনো নিজ্ঞব্যক্ষিতাহে অতএবেতি। অসভামিঞিরাশাং পথি বিষয়মার্গে। তীত্রেশ দৃদ্দেন বিরক্তা তীত্রয়॥ ৪॥

ক্রমসন্ধর্ড:।

हेजाह म हेजि॥ >॥ २॥ उ॥

ভক্তিযোগেনেতি তদ্য দাধনত্বমুক্ত্ৰণ কলান্তৰতাৎপৰ্য্যত্বাৎ দক্তিতবহুং দৰ্শিকং 🛊 🕏 🛊

वीविधनाथहळ्वा ।

সমীরবেগাসুগতং বিভাব্যত ইতি অতএব মনসং সম্যক্ **ওছে। সভ্যাং কল্পনার্থেছিণি ওদ্বাতীতি। মন এব সম্ব্যাণ্ডাং কারণ** বন্ধনোক্রোরিতি পারুং॥

তস্যাভিমান নিবন্ধন এব সংসার ইত্যাহ স এবেতি বাভ্যাং বহি ভাগর স্বপ্নরোঃ ॥ > ॥ °

প্রাদঙ্গিক: প্রকৃতি প্রদক্ষভবৈ:॥ ২॥

নত্ তস্য জীবস্য কর্ত্ব কারণছাদ্যভাবাদ্বস্তা: কর্ম্মাভাবেহপি দেহতুতৈ: কর্মমিভা কথং বন্ধ ন্ততাহ। ক্ষেপ্র কর্মান বিষয় ধ্যান পরি-বস্তাতা হবিদ্যমানেহপি কর্ত্বাভিমানেন বিষয়ান্ ধ্যায়ত:। তত্ত্ব দুষ্টান্ত: বংশ ধন্ধন্যাপ্যধিপন্ম: সাভিমান বিষয় ধ্যান পরি-পাকাদেবেত্যর্থ:॥ ৩॥

যতো বিষয় খ্যানমন্থ হৈতুরতো মনো নিয়ন্তব্যমিত্যাহ অত ইজি ভক্তিক বোগ্দ ভয়োৰ হৈৰ্জাং ভেন ভীত্তের বলিছেন। । । । । । । । । । ।।

তজ্জনাই হৃথ ছঃখাদিতে আসক্ত হয়েন, তখন তাঁহার আত্মা অহকারে বিষ্ট হয়, "আমি কর্তা" এই অভিমান করিয়া থাকেন ॥ ১ ॥

স্তরাং অবশ হইয়া প্রাস্থিক কর্ম দোষে সং অসং ও মিপ্র যোনিতে অর্থাৎ দেব তির্যাক্ নরা-দিতে জন্ম গ্রহণ করিয়া সংসার পশ্বী প্রাপ্ত হয়েন। তথন তাঁহার কোন অবস্থাতেই নিয়ন্তি লাভ হইতে পারে না॥ ২॥

মা। সংসারের অর্থ সকল বস্ততঃ মিখ্যা, এপ্রবৃক্ত তাহা অবিদ্যমান হইলেও সংসার নির্ভ হর না, বিষয় চিন্তা করিতে করিতে করেও যেমন বাস্তবিক বস্তু সকল না থাকিলেও তাহাদের সহিত সমাগম হয়, তাহার ন্যায় এই সংসার অবাস্তব হইয়াও উপস্থিত থাকে॥ ৩॥

ফলত: বিষয় গ্যানই অনর্থেয় হেছু, অভএর সংলার পদী অভিক্রমণেচ্ছুক পুরুষ ইন্তির সকলের বিষয় রূপ পথে চিষ্ক প্রদক্ত হইলো, ছন্ট উল্পিরোগ এবং ভীল্ল বৈরাগ্য ছারা ক্রেম ক্রেম ক্রিয়া আধানার বংশ আনিবেশ ৪৪ । যমাদিভি বোগপথৈরভাসন্ প্রান্ধান্ধিতঃ। ময়ি ভাবেন সভ্যেন মংকথাপ্রবণেন চ ॥ ৫॥
সর্বস্থিতসমন্থেন নির্কিরেণাপ্রসঙ্গ । ত্রক্ষাচর্যোগ মোনেন স্বধর্মেণ মহীয়সা॥ ৬॥
যদৃচ্ছব্যোপস্থিতেন সন্তক্ষো মিতভুঙ্ মুনিঃ। বিবিক্তশরণঃ শাস্তো মৈত্রঃ করুণ আত্মবান্॥ ৭॥
সামুবদ্ধে চ দেহে হিমানক্রিমসদাগ্রহং। জ্ঞানেন দৃষ্টতত্ত্বন প্রকৃতেঃ পুরুষস্থাচ॥ ৮॥

धिशतवामी।

ভজিবিরজ্যো ভীত্রছে কারণানি বর্ণরন্ জ্ঞানেন মোক্ষকারমাই ষড্ভি: ইমাদিভি: যোগমার্কৈ ভিত্রমভাসন্পুন: পূন-রেকাঞীকুর্বন্ আত্মানমুপ্দভা দর্বাহুস্তমন্বরং প্রমাত্মানং প্রতিপ্দাত ইতি বর্তেনারয়:। সভ্যেন নিরুপটেন ভাবেন প্রেয়া॥৫ অপ্রসম্ভ: সম্বাহান্য স্বাহ্রস্পিতেন॥ ৬॥

বিবিজ্ঞশবণ একান্তবাদী॥ १॥

অসদাগ্রহং অহং মমতাং প্রকৃতেঃ পুরুষস্যাচ দৃষ্টং তত্ত্বং বেন তেন জ্ঞানেন ॥ ৮॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

অত এব জ্ঞান কর্ম মিশ্রত্মাহ। যমাণীতি বট্কেন। ভাবেন ভক্তা। সত্যেন বথার্ধব্যবহারেণ। তঁনেবং সিদ্ধং জীবস্য শুদ্ধত্ব জ্ঞানমীশ্রোপলন্ধ্যক্রেন যোজস্তি॥ ৫॥ ৬॥ ९ ॥ ৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

উক্তমর্থং প্রপঞ্চনন জ্ঞানেন মোক প্রকারমাহ বমাদিতি বোঁগণথৈং অভ্যসন্ অভ্যাসেন চিন্তমেকাগ্রীকুর্মন্ জীবাখা প্রমাজানমুপগভা সর্মাস্থাতমহরং তং প্রতিপদ্যতে ইতি বর্ত্তনাহরং। মরি সভ্যেন ভাবেন মজপ নাম শীলাদীনাং সভাষ্দ্রীয় মরি বং সভ্যো ভাবং সভ্যন্থ ভাবনা তেন নতু মারাশবলিত ব্রহ্ম দৃট্যা ময়ান্মত্যামসভাষ্থ ভাবনরেভ্যর্থঃ। তথাতে ত্বাক্ত ভাবাদবিশুদ্ধ বৃদ্ধরঃ। আরুত্ত রুক্তেণ পরং পদং ততঃ পতজ্যাধা হনাদৃত ব্রহ্মকনুর ইতি নৈক্ষ্যমপ্যচ্যুভভাব বর্জিত মিতি। অবজানতি মাং মৃঢ়া মাস্থীং তহুমান্রিভমিতি। ন ভলস্কার্কানতি হানাভ্রাং পতজ্যধ ইত্যাদিভ্যো ভগবিষ্প্রহাদে। চিদানশ্ব-ভিন্ন ভাবনা কৃষ্ণাব্রকার জ্ঞাননামপি সোক্ষাভাবাৰগভোষে। ৫॥

মহীৰুসা ঈশবার্ণিতেন ॥ ৬॥

বিবিক্ত শরণঃ একান্তবাসী। আত্মবান ধৃতিবুক্ত:। অসদাগ্রহং অহং মমতাং॥ ৭ ॥

প্রক্রংজ্য প্রক্রস্যত দৃষ্টা তক্ষ বেন তালুশেন জ্ঞানেন নির্ভানি ব্রাবহানানি জাগ্রদাদীনি বস্য সং । অতথ্য দ্বীত্তমন্যস্য বিব্যুস্য দর্শনং বস্য সং ॥ ৮ ॥

অপর, বমাদি যোগ পথ দারা চিত্তকে পুনঃ পুনঃ একাঞা করিয়া থাকেন এবং আদাবিত হইয়া আমার প্রতি নিচ্চপট ভাব প্রকাশ ও আমার কথা প্রবণ করেন ॥ ৫॥

অপিচ, সকল প্রাণিতে সমদৃষ্টি এবং একেবারে বৈরশ্ন্য হইয়া সঙ্গ ত্যাগ পূর্বক ব্রহ্মচর্য্য, অথবা মৌনব্রত কিমা ঈশ্বরার্পণ পূর্বক স্বধর্ম অনুষ্ঠানে রত হয়েন ॥ ৬ ॥

আর, অষমতঃ বাহা উপন্থিত হয় তাহা তেই সম্ভট এবং পরিমিত ভোজী, মনন শীল, একান্তবাসী, শান্ত, মৈত্র অর্থাৎ সর্ম্বপ্রাণিক্ষর্হ, কুপাবান্ ও বৈর্যযুক্ত হরেন ॥ ৭ ॥

অধিকস্ক, এই দেহে অধবা এই দেঁহের আসুবঙ্গিক জী পুজাদিতে "আমি আমার" এইরূপ অসৎ আগ্রহ করেন না, বরঞ্চ যেজ্ঞানে প্রকৃতি ও পুরুষের তত্ত্ব অবগত হওয়া যায়, কেবল সেই জ্ঞানে সমথিত হইয়া থাকেন ॥ ৮॥

248

নিবৃত্বস্থাবন্ধানো দ্বীভূতাক্সপূর্ণনঃ। উপসভগাত্মনাত্মানং চক্সবেরার্কনাত্মসূত্র ৷ ৯ ॥ মৃক্তলিক্সং স্বাভাষ মসতি প্রতিপান্ধতে। সভো বন্ধু মসকক্ষ্ণ সর্বস্থিত্সভ্যসন্থং ॥ ১০॥ যথা জলক আভাসঃ ক্লান্থেনাবদ্যাতে। সাভাবেন মধা সূর্য্যে জলকেন বিবি ক্রিডঃ॥ ১১॥

द्यीधवयामी।

নিব্তানি বৃদ্ধাবস্থানানি স্বার্থাদাদীনি যস্য স:। অতএব দ্বীভূতমন্দর্শনং যস্য। আত্মনাহহরাবাদ্ধিরেন আত্মানং ওদ-মুপলত্য একলৈয়বাবচ্ছেদানবচ্ছেদাভ্যাং করণত্বকর্মতে দৃষ্টাস্তমাহ। চক্ষ্বা চক্ষ্ববিদ্ধিরেন অর্কেণ গগণস্থমক্মিব এবমাআদৃক্ ওদ্মাত্মানং পশ্যন্॥ ১॥

মুক্ত নিক্তণ নিক্তণাধিকং। অসতি মিধ্যাভূতে হহকারে সদাভাসং সক্তপেণাভাসমানং ব্রদ্ধ প্রাপ্নোতি। ওদ জীব প্রপাদিশের মাহ সতঃ কারণস্য প্রধানস্য বন্ধ মিষ্ঠানং। অসতঃ কার্যস্য চক্ষ্রিব প্রকাশকং সর্বেধ্ কার্য্যকারণের অফ্সতে মবয়ং পরিপূর্ণং ৫১০ অহকারোপহিতেন ওদ্ধ ব্রদ্ধ প্রতিপত্তিং সদৃষ্টান্তমাহ যথেতি। জলে স্থিত আভাসং স্থাপ্রতিবিধা বদা গৃহান্তর্বার্তি তিত্তী

ক্রমসন্দর্ভঃ।

উপলভ্যেতি সাৰ্দ্ধকেন। অসতি ঔপাধিকে২হকারে আত্মনা তত্ত্পাধিকেনৈব দারভূতেন॥ ৯ ॥

মুক্তনিকং উপৃধি শ্রণ শৃন্যং। ক্ষতএব সক্তপেণ আ সমাক্ ভাস্মানমান্ত্রানমুপ্রভা ততত্তস্যাপি ভাসনাছাপকারকতরা তত্ত্বৈব স্থিতং পরমান্ত্রানমণি প্রতিপদ্যতে জানাতি। তমেব বিশিন্তি। অসতাং তদন্যেমাপি চক্ষ্ডাসকং সর্কত্ত অসতিচ অমুস্যতং। অতএবাদ্যং। ততাে মুধ্যত্বাস্তত্ত্পসন্ধার্থমেব শুদ্ধাত্ম দর্শনমিতি ভাবং। অন্যার্থশ্চ পরামর্শাদিতি ন্যায়েন॥ ১০॥ এবং স্থাংশ পরম্পর্যা মুল দর্শনং দৃষ্টাস্তয়তি যথেতি যুক্তকেন নিগময়তি এবমিতি। ভৃতাদিমরে: সংঘাতোপাধিকৈঃ

विविधनाथठक वर्षी ।

ততক জ্ঞানী ভ্রেন জীবামনৈব প্রমান্থানং তকৈ বাহত্ব তমেব প্রাণোতীতাহ। উপলতোতি আত্মনা ভ্রে জীবেন চিংকণেন আত্মানং প্রমান্থানং পূর্ণ চৈতন্যনিধিং উপলতা তজ্যামভূর চকুবা প্টলাদি লোব রহিতেন জ্যোতিংকণেন অর্কং জ্যোতিনিধিনিব। আত্মনৃত্ জ্ঞানী প্রভিপদ্যতে প্রাণোতি। অত্র পটলাদি দোব রহিতেনাপি চকুবা যথোল কাদিরকং ন পশাতি কিছে তদ্ভিনো মন্থ্যাদিরেবার্কং পশাতি তথৈব ভ্রেনাপি জীবামনা ভ্রিক্তিতা জ্ঞানী প্রমান্থানং নাম্ভবতি কিছ ভ্রিন্তিত তিনি ভ্রাহ্মেকরা গ্রাহ্ম ইতি। ভ্রন্তা মামতিজ্ঞানাতি যাবান্ বশ্চাদি তত্বতঃ। ততাে মাং তত্বতাে জ্ঞাতা বিশতে তদনক্রমিতি ভগবহুজেঃ॥ ১॥

় ওং কীদৃশং মুকৈলি ক্যতে জায়তে ইতি তমিতানেনামূভবজ্ঞান বিষয়ীভূতখং তস্যোক্তং অসতি নধ্বে কগতি সদৈৰ ভাসতে হস্তগামিখেনেতি তং সতঃ কারণস্য বন্ধুং পতিং অসতঃ কার্য্যয় মহদাদে শুকুরিব প্রকাশকং সর্বেষ্ কার্য্যকারণেৰসূত্যতং পরিপূর্ণং অবন্ধমক্মিতি বিশেষণপঞ্চকেনামূভব জ্ঞান পূর্ব্বদশারাং তস্য শাল্রোখ জ্ঞান বিষয়ীভূতখং জ্ঞাপিতং ॥ ১০ ॥

প্রথমং জীবাল্মের কেন প্রকারেণ জাতব্যস্ততত্ত্বন পরমাত্মা চেত্যত্র সনৃষ্টাত্তমাহ যথেতি, জলে স্থিত আভাস: প্রতিবিশাকারে।

এইরপ করাতে বৃদ্ধির অবস্থা বিশেব জাএৎ স্বপাদি নিয়ত হুইয়া যায় এবং জন্য দর্শন আর্থাৎ বিষয় চিন্তা দুরীভূত হয়, স্কুত্রাং তথন ঐ পুরুষ আত্মালী হুইয়া বেষন নেয়ে ছিল সুর্ব্ধ বারা গ্রামন্ত সুর্ব্ধ বারা গ্রামন্ত সুর্ব্ধ বারা গ্রামন্ত স্থানত স্কুল বারা স্কুলাল্কাকে উপ্লেশিক স্বাস্থানত বিশ্বত নারা স্কুলাল্কাকে উপ্লেশিক স্বত—॥ ১॥

निक्क्शिक्षि अरः निशाप्त परकारत मुक्काल प्रांतमान सक्त क्षांच रहत । यो। अर्थ संक्र एक, जीरवत यक्तण स्वेटज कित, त्य द्राष्ट्र हेनि मृद्धक प्रधंद सात्रक क्षां क्षांचारत क्षा (परिक्रीत) अवर प्रमादक प्रधंद स्वतंत्र क्षांचार क्षांच

मा ! **परकात विभिन्ने पाका**षाता एक जक्त श्रीश रूप, रेरा प्रमुख दर्गात कतिरयन ना, द्रमूब सक्त

এবং ত্রিবুদ্ধস্কারে স্কৃতেজ্ঞিয় মনোমারেঃ। স্বাচ্চানৈ লক্ষিতো হলেন সরাভাবেন সত্যদৃক্॥১২॥ স্তস্কাক্ষিয়মস্পোন্ত্রাবিধিছ দিক্সা। লীনেম্বসতি যতকে বিনিয়েন নিরছিছিরঃ॥ ১৩॥ :

. विश्वतामी।

কুরতি জন। পূহকোণস্থিতঃ পুকবৈ জিজাদৌ হলে বিতেন স্নাভাসেন স্ব্যপ্তজিবিদেন মুগা প্রথমং জলস্থ আজাদো ২বল্শাতে লক্ষ্যতে গগণস্থদ্য গৃহমধ্যে প্রতিবিদ্ধ যোগাৎ। চার্থে তথা শব্দঃ বথা চেতার্থঃ। যথাচ জলম্থেন দিনি স্থিতঃ স্বর্যো লক্ষ্যতে ॥১১॥

এবং ভূতেক্রিয়মনোমরৈ দেহিক্রির মনোভিরবচ্ছিরৈঃ স্বাভাসেরাম্বপ্রতিবিধৈ স্বিগুণোধ্যকার; রতো এক্ষণ মাভাসো যদিন তেন রপেণ ক্রিতাধ্যকারস্থাভাসং বিনা বিষয়াভাসামুপপত্তেও। অনেন চাহকারেণ সদা ভাসবতা সত্যদৃক্ প্রমার্থক্তবি রূপ সাম্মা বাহ্নিত ইতার্থ: ॥ ১২॥

ইদানীং সুষ্থি সাক্ষিদ্ৰেন গুদ্ধাস্বপ্ৰতিপত্তিমমুভবতো দৰ্শয়তি ত্তিটো। ভূতাদিরু অসতি অসম্ভূল্যে অব্যাহতে নিম্রখ শীনেরু সংস্থান্ততে তদা বিনিদ্রো নিরহন্ধিয়ং তমাস্থানং প্রতিপদ্যত ইতি তৃতীয়েনাম্বয়:॥ ১৩॥

ক্রমসন্দর্ড:

স্বাভাব্য: স্বস্যাহস্কারোপাধিকস্যাভাসে। যেরু তৈ গৃহিকোণস্থিত পুরুষস্থানীরৈ: পুরুষস্কার উপাধিষেন বর্ততে যস্য স লক্ষিত: ততশ্চ ক্রমাদনেনাহকারোপাধিকেন পারম্পরিক হারভূতেন তথা সদাভাসেন ভক্ষেন চ সাক্ষাদ্বারভূতেন সত্যদৃক্ পরমা-স্মাপি লক্ষিত ইত্যর্থ:॥ ১১॥ ১২॥

ভৃতহক্ষেতি ত্রিকং। অসতি সতঃ শুদ্ধ জীবাদিতরশ্বিন্ অব্যাহতে ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

এবিশ্বনাপচক্রবত্ত

নিক্ষশাঃ স্ব্যপ্রকাশো বদা গৃহাত্তবি অফ্ডিজাদৌ স্থলে ক্রতি তল গৃহকোণস্থিতঃ প্রক্ষিং প্রথমং স্লস্থ আভাদো দৃশাতে তক্তক কুতোহরং প্রকাশ ইতি পরাম্বত্তি কে ক্লেক্ স্বাভাদেন শোভন স্ব্যপ্রকাশেন জনহো নিক্ষ্প আভাদো হবদুলাতে লক্ষাতে। প্রশাসমণ্যাভাসঃ কৃত ইতি তথা তেনৈব প্রকারেণ জেন ক্লেক্নে স্থাভাসেন শোভন প্রকাশেন দিবিস্থিতঃ স্ব্যোহিব্দুলাতে ॥ ১১ ॥

এবনেব বিবেকিজি: প্রথমং ভূতেক্সির মনাংসি চৈতন্যবন্ধাৎ পরমাত্ম প্রকাশবন্ধি দৃশান্তে তত্তক অড়েবেৰু পরমাত্ম প্রকাশ শোহরং কৃতন্তা ইতি ভূতেক্সির মনোমরে: ভূতেক্সির মনোবর্ধিভি: স্থাভাগৈ স্তির্দহন্ধার উপাধিত্বেন বর্ততে বস্য স জীবাত্মা প্রমাত্মন: প্রকাশ সংভ্তঃ কিরণক্ষণো লক্ষিত: । তত্তকানেনু জীবাত্মনা সদাভাসেন সতা ভক্তিমতা প্রকাশেন সত্যদৃক্ সত্য-জ্ঞানালক্ষঃ প্রমাত্মা শক্ষিত উপলক্ষঃ ॥ ১২ ॥

নমু আর্কেণ চকুবৈবার্ক ইবায়নৈব ভক্তিমতা জ্ঞানিন। পরমান্তাপুত্রত ইতি সত্যং জানীম: কিন্ত চকু: শ্রোত্রাদিক্ষিব তং জীবান্তানং ত্রিব্দহন্তারাৎ পৃথগ্ভূতং সাকান্ত্রতাপেকারামাহ ভূতেতি ত্রিভি:। ভূতাদিবু অসতি অনভিব্যক্তনাদসভূলো প্রধানে নিদ্ররা লীনেবু সংস্কৃষ স্তত্ত্ব তদা বিনিদ্রো নিরহন্তিরঃ তমান্তানং জীবং প্রতিপদ্যতে লোকোহমুভবতীতি ভূতীরেনাম্যঃ॥ ১৩॥

ছিত আতাস অর্থাৎ সূর্যাপ্রতিবিদ্ধ যথন গৃহান্তর্বার্তি ভিত্তির উপরে পরিক্রিত হয়, তথন দেই গৃহ্বের কোণস্থিত প্রক্রম কর্তৃক দলস্থিত ঐ সূর্যাপ্রতিবিদ্ধ দারা সূর্য্য দৃষ্ঠমান হয়েন, অথবা জলক সূর্যা-বিদ্ধ দারা গগেবন্ধ সূর্য্য লক্ষিত হয়েন। >> ।

সেই স্থান দেই ইজির মদঃ এতজিত্য অবস্থিত আকু প্রতিবিদ্ধ বারা জিগুণ স্থাপ অহলার একোর প্রতিবিদ্ধ রূপে দৃষ্ঠ হয়, পরে: কেই অহলার বারা স্থাৎ পরমার্থ জাতি রূপ আজা দৃষ্ঠ হয়েন ॥ ১২॥ মা। এই আজা বে শুলু প্রপান্ধ জান ব্রুপ্ত ভাল অনুধ্ব সিন্ধই হইতেছে; সৃষ্ঠি অবস্থার যথন স্ক্রেন্ড, ইতিয়ে, মনঃ, বৃদ্ধি ইত্যাদি সকল বিদ্রা বারা অসত্যা অব্যাকৃত প্রকৃতিতে লীন হয়, তথন এ আজা বিনিয়ে এবং নিরহকার হইয়া আপনার স্থাপ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন ॥ ১০॥

মন্তমানন্তদান্ত্রান মনকৌ নউবমূষা। নকে ২হঙ্করণে দ্রন্তী নউবিত ইবাছুর: ॥ ১৪॥ এবং প্রত্যবম্খাসাবাত্রানং প্রতিপদ্যতে। সাহস্কারত দ্রব্যত্ত যোহুবস্থান মন্ত্রহঃ ॥১৫॥

शिश्त्रवामी।

নমু যদি তদা বিনিজোৎশাবন্তি তহি জাগ্রৎ স্বপ্নারের ক্টঃ কিং নাভাসতে তত্তাই। পূর্বং স স্তই৷ অতো স্তইছেন স্বিকন্ন-ত্যা ক্টং প্রতীত:। স্ব্রেটা তু ভূতাদেরহন্ধার বিষয়দা লীনভাৎ তদ্বিন্নেহ্ছারে নষ্টে স্তি স্বয়মনটো ছপি মুবৈৰাভ্যানং নইবন্ন-ন্যমান: যোহন্যস্য নাশে অন্যস্য নই ভূলান্তে দুষ্টান্ত: নষ্টবিজা বধা আভূরো বিবশো নষ্টবন্তবতীত্যর্থ:॥ ১৪ ॥

নমূ সুর্থৌ ন কিঞ্চিদমূভ্যতে নৈবং সুধ্যহমস্বাপাং ন কিঞ্চিদবেদিয়নিতি বিশেষ জ্ঞানং বিনা কেবলগাঁদান: প্রতি-সন্ধানাদিত্যাহ এবমিতি। নমু প্রতিসন্ধানে সাহস্বারস্য প্রতীতেঃ কথং নিরহন্ত্রিদ্ধ তত্তাহ সাহদ্ধান্য প্রবাস্য কার্যকারণ-সংঘাতস্যাম্প্রহঃ প্রকাশকঃ অবস্থানঞ্চ প্রবাস্য বিশেষণতরা অহন্বারস্যাপি দৃশ্যদান্ত। তদ্বীশ্বা তদ্বাতিরিক্তঃ তমান্বান-যিত্যবয়ঃ ॥ ১৫ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

সাহকারে সতি মানহং নাঞাদিবমিতি স্বৰ্ধানস্তরমেব প্রতিদ্বানান্তরে মাং পলোক্ত ভৃতস্কাদি দক্ষাত লক্ষ্ণ এবা

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

নয়লং তহি যোগাভ্যাদেন মনোবৃদ্ধীন্তিয়াদি লয়ে সতি যঃ কেবলাত্মাস্ত্বো বোগাভ্যাস কল রূপ তং ধলু নিত্রৈব কারয়তীতি তত্তাহ্ মন্যমান ইতি তদা ভূতাদীনামহলার্যাণামহলারস্য চ লয়াদহলরণে নাষ্টে সতি তাই জীবো দৃশ্যানামভাবাদ্দনিচ নাই সতি স্বয়মনাই। হিলি আত্মানং নাইবন্ধা মন্যমানো য ইত্যবিদ্ধাবন্তং জীবং স্বর্থাব্ৎপ্রেক্ষতে নাইবিত্ত ইব নতু নাইবিত্তাসজিরিত্যর্থ:। অয়মর্থ:। যোগাভ্যাদেন জীবোপাধিভূতানাং ভত্তানামাত্যন্তিকে লয়ে সত্তাব জীবং স্বীয়রপানস্বমানে ভবতি। নতু নৈমিত্বিক্রো: স্বর্ধ্তি প্রলম্বান:। যথা বিত্তে নাই সত্যাকিক্ষন্যং স্বর্থং ন ভব্তি কিন্তু বিভাসজাবের নাইবাং স্ত্যাং তবৈর জীবক্ষ
নৈক্র্যাং বিনা স্বর্ধি প্রলম্বোর্লপাধিনাশেহপি ন স্বরূপ প্রাধিনক্র্যাঞ্চ ভক্তিজ্ঞানাভ্যাং বিনা ন ভবেদিতি স্বর্ধ্বে) জবিদ্যা
তৎ সংস্বারাণাঞ্চ বিদ্যানাত্যাৎ কেবলাত্মান্তবোহপ্যকিঞ্চিৎকর ইতি ॥ ১৪ ॥

নত্ন স্থাব্ধী ন কিঞ্চিদহভ্রতে নৈবং স্থমইমযাকাং ন কিঞ্চিদবেদিয়মিতি বিশেব জ্ঞানং বিনা কেবলস্যাত্মনঃ প্রতিসন্ধান নাদিত্যাই এবমিতি কিঞ্চ সাহভারস্য স্তব্যস্য ভূতেক্রিয়াদি সংঘাতস্য দেহস্য বোহবস্থানং আশ্রয়ঃ বনেব জীবাস্থানমাশ্রিত্য

দে সময় সেই আত্মা দ্রুফী স্বরূপে অবস্থিত হয়েন, আপনার উপাধি অহকার বিনষ্ট হওয়াতে স্বরং নন্ট না হইলেও আপনাকে নন্টভুল্য জ্ঞান করেন। উপাধির বিনাশে আপনার বিনাশজান হতয়া অসভত্তব নহে, ধন বিনষ্ট হইলে আপনিই যেন নন্ট হইল এ রূপ কাতর হইতে প্রায় সকলকেই দেখা যায়॥ ১৪॥

মা। আমার বোধ হয় আপনার মনে এমত আশক্ষা হইতেছে যে, স্বৃত্তি অবস্থায় কোন বিবরের অনুভব হয় না, একারণ তৎকালে আজার দাক্ষিত্বরূপে বিদ্যমান থাকা কি প্রক্রারে সম্ভব হইতে পারে, কিন্তু মা। যদি বিবেচনা করিয়া দেখেন তাহা হইলে আপনার এ রূপ সংশয় স্থান প্রাপ্ত হইবে না, স্বৃত্তি প্রাপ্ত ব্যক্তির স্বৃত্তি ভঙ্গ হইলে এই কথা বলিয়া থাকে "আজি আমি স্থে নিত্রা গিয়াছিলাম কিছুই জানিতে পারি নাই" নিত্রা হইতে উত্তিত পুরুষ্ধের মধন এরপ তারণ হয় তখন স্থানাং বোধ হইতেছে স্বৃত্তি কালে কেবল আজা সাক্ষিত্রশ্বে স্বৃত্তি করেন, ভাষা না থাকিলে প্র রূপ জান হইবার স্ক্রারনা নাই। মা। প্র রূপ জানে অহকার মৃক্ত লাল্বা প্রতীয়মান হওয়াতে ভদবস্থায় আলার নিরহ্রারিজ স্ক্রাবনা এমত আশক্ষা করিবেন না, প্র প্রালাই অহকার বিশিক্ষ প্রব্যের

बिम्डागवजम्।

बारिनवङ्गिकक्रवाछ॥

পুরুষং প্রকৃতি এ আনন্ ন বিমুঞ্চি কহিচিৎ। অন্যোম্যাপাঞ্যম্বাচ্চ নিত্যম্বাচনয়েঃ প্রভো॥১৬
যথা গদ্ধস্য ভূমেন্ট ন ভাবো ব্যতিরেকতঃ। অপাং রসম্যাচ যথা তথা বুদ্ধেঃ পরস্থাচ ॥ ১৭ ॥
অকর্ত্যঃ কর্মবন্ধোহয়ং পুরুষস্থ যদাঞ্জাঃ। শুনেরু সংস্থ প্রকৃতেঃ কৈবল্যং তেমতঃ কথং॥ ১৮॥

अध्यक्षामी।

ভক্তি বিরক্তিভাগে সতাপি বিবেকে প্রকৃতিপুরুষদ্ধে: পরম্পরত্যাগাভাবাৎ কথং মুক্তিরিতি পৃছ্তি পুরুষমিতি চতুর্ভি: ॥ ১৬ ॥ ব্যতিরেকাভাব মাত্রে দৃষ্টান্তঃ । বথা ব্যতিরেকতো ভাবং ব্লন্তা নান্তি গন্ধীয় কদাচিদপক্ষর দর্শনাৎ দৃষ্টান্তান্তরং অপামিতি। বুদ্ধে: প্রকৃতে: পরস্য চ পুরুষ্যা ॥ ১৭ ॥

ত उः কিং অত আহ অকর্ত্রিতি। যে গুণা আল্রো বস্য স:। তেরু প্রকৃতে গুঁণেরু সংস্থ পুরুষস্য কৈবলাং কথং ॥ ১৮ ॥

ক্রমসন্ধর্ত:।

বিশেষণতরা তদহত্বারস্যাপ্যন্যদা দৃশ্যবাপত্তেরহংপদোক্ত তদ্ধু ইাত্মা তত্তাতিরিকো যা প্রকাশক আপ্রয়ক্তেত্যর্থ: ॥ ১৫॥ অন্যোন্যাপাপ্রয়ত্ত্বপোক্ষ্যা নম্বর্থে বিমুক্ষ্ নাম ওচ্চ নেত্যাই নিজ্যত্তাদিতি॥ ১৬॥ ১৭॥ অকর্কুরিতি। অতঃ পূর্ব্বোক্তাছেরতোঃ॥ ১৮.॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী ।

অহস্কারাদরো ভোগ্যের বিষয়ের প্রবর্ত্ত ইত্যর্থ:। তথা য এব জীবান্ধা অস্থাহ: স্বীর ভোক ্রলকণধর্ম প্রদানাদস্থাকি ইত্যর্থ:॥১৫ নম্ ভক্তৈরপি জানব্রেরাগ্যাদিভি মে'কেন ছ্র'ভ এবেত্যক যুক্তিমাহ পুরুষমিতি। অন্যোন্যতি পুরুষ: শক্তিম্বাৎ বিষ্ফ্ট্যাদি লীলার্থ: স্বশক্তি প্রকৃত্তিরপালারতে। প্রকৃতিরপি শক্তিমাৎ স্বীরং পুরুষমাল্রত এবেত্যর্থ:। ব্রোরেক্তর্ব্য নশ্রুষে বিষ্কৃত্ত নাম তচ্চ নেত্যাহ নিত্যুদ্ধিতি॥১৬॥

ব্যতিরেকতো ভাবং সত্তা নান্তি গদ্ধস্য কদাচিদপক্ষর দর্শনাদৃষ্টান্তান্তরং অপামিতি বৃদ্ধে প্রকৃতিং পরস্য প্রক্ষস্য ॥ ১৭ ॥ ততঃ কিমত আহ অকর্ত্রিতি বে গুণা আপ্রয়ো বস্য সং। তেরু প্রকৃতেগুণেরু সংস্থাক্ষরস্য জীবস্য অতএব হেতোং কর্বং কৈবন্যং॥ ১৮ ॥

অর্থাৎ কার্য্য কারণ সংঘাতের প্রকাশক এবং তাহার অবস্থান অর্থাৎ তথন ঐ অহকারও দৃশ্য স্বরূপ হয়, তথ্যতিরিক্তু ত্রকী আত্মাই কেবল আত্ম স্বরূপ অনুভব করেন॥ ১৫॥

দেবছুতি জিজ্ঞানা করিলেন, ত্রহ্মন্ ! ভক্তি এবং বৈরাগ্য বারা যদিও বিবেক ইইতে পারে তথাপি পুরুষ ও প্রকৃতির পরস্পার নিত্য সংযোগ হেডু প্রকৃতি কখন পুরুষকে ত্যান করে না, তবে কি প্রকারে মৃক্তি হইবে ? ॥ ১৬ ॥

কলতঃ বেমন ভূমি ও গন্ধ এই তুইয়ের মধ্যে একটা অন্য ভিন্ন থাকিতে পারে না, অথবা যেমন রস ও অন ইহাদের মধ্যেও একের অভাবে অন্যের অভাব হয়, তেমনি প্রকৃতি ও পুরুষ ইহাদেরও এক ব্যক্তিরেকে অন্যের সভা হইতে পারে না, এই তুইয়ের পরস্পার বিয়োগ ঘটিলেই ত মুক্তি হইতে পারে ? নভূবা মুক্তির সম্ভাবনা কই ? ॥ ১৭ ॥

ত্বপর, পুরুষ অকর্তা সত্য, কিস্কু তাঁহার এই কর্মবন্ধ, প্রকৃতির যে সকল গুণকে আত্রয় করিয়া হইরাছে, প্রকৃতির সেই সকল গুণ বর্তমান থাকাতে পুরুষের কি প্রকারে মুক্তি হইতে পারে? ॥ ১৮॥ কচিত্তবাবমর্শেন নির্তঃ ভয়মুখ্বণং। অনির্তনিমিত্তাৎ পুনঃ প্রত্যবতিষ্ঠতে॥ ১৯॥ শ্রীভগবাসুবাচ॥

শ্বনিষ্ঠিনিমিত্তেন অধর্মেণাম্বাস্থন। তীত্রয়া ময়ি ভক্তাচ শ্রুত্যা চিরং। জ্ঞানেন দৃষ্টতত্ত্বন বৈরাগ্যেণ বনীয়সা। তপোযুক্তেন যোগেন তীত্ত্বেণাস্থ সমাধিনা॥ ২০॥ প্রকৃতিঃ পুরুষস্থেহ দহুমানাস্থহর্নিশং। তিরোভবিত্রী শনকৈরগ্রের্যোনিবারণিঃ॥ ২১॥

अध्वयामी।

অতএব কচিন্নিবৃত্ত প্রায়দ্যাপি সংসারভয়স্য প্নক্লডবো দৃশ্যত ইত্যাহ কচিদিতি ॥ ১৯ ॥

ন প্রকৃতিসম্বন্ধ নাত্রং বন্ধতে তুং কিন্তু গুণ বুল্লা তদাস্তিঃ তরিবৃত্তে স্ত্যাং মোকোহপি ঘটতে। ক্টিছের স্থান বৈক্ল্যা-দিত্যভিপ্রেত্য সাধনাতিশরং কথ্যন্ পরিহর্তি ত্রিভিঃ। নিমিত্তং ফলং তর নিমিতং প্রবর্তকং যশ্মিন্ নিক্ষামেণ ধর্মেণ অমশাস্মনা নির্দালন মনসা প্রতেন কথা প্রবশেন সংভ্তরা পুষুষ্ণ ॥ ২০ ॥

দহমানাভিভূয়মানা তিরোহিতা ভবতি॥২১॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

অন্যাশ্রমত্বেপি নভোবদন্যাম্প্ ইত্বং পুরুষস্যেতি তত্ত্বিবেক:। কর্ত্তব্য ইত্যপ্যকিঞ্চিৎকর্মিত্যাহ কচিদিতি কচিৎ পাঠ:। এয় সর্বসন্মত:॥ ১৯॥

অত্যোচাতে। যদি তদবিবেকএব পূর্ব্বোক্ত হেতৃন্তদা তত্বাবমর্শনাত্রং তত্ত্রোপযুক্তং স্যাং। পূর্ববীশ্বরবৈষ্ণ্যমেব। ভরং বিতীয়াভিনিবেশতঃ স্যাদিত্যাদেঃ। ততঃ সর্বত্যেশ্বারাধন পূর্বক্তমেবোপযুক্তমিত্যপদিষ্টমণি নির্দ্ধার্যতি বড়ভিঃ। অত্র অনিমিত্তেতি ত্রিকং। জ্ঞানং বিচারঃ। দর্শনং নির্দ্ধারণং। তপঃ শমদম্মাদি। যোগো শীবাত্মপরমাত্মনো ধানিং। যোগঃ সংহননোপার ধ্যান সঙ্গতি যুক্তিবিভি নানার্থবর্গাং। ধ্যানমেব ধ্যাতৃধ্যের বিবেকরহিতং সমাধিঃ। অংলঃ প্রাবল্যে সতি তরি-র্ব্বাপার্থং তদাবিভাব কারণমরণি র্বণা অনৈ স্ততোপাস্তরিতা ক্রিরতে। তথা সাপি মারা স্থাংশেন ততস্তিরোভ্বতীত। আত্র সর্বাধামণি দিন্দীনাং মূলং তচ্চরণার্চনমিত্যক্ত্যা ভক্তের্বিতে অক্বরিদে শিঃ। তেঘাং তত্র সাধনান্তর সামান্য দৃষ্টিরিত্যভিত্যায়েণ। অতএব তেবাং মোক্ষমাত্র ফ্রমিতি॥ ২০॥ ২১॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

অতএব কচিন্নিবৃত্ত প্রায়স্যাপি সংসার ভরস্যোন্তবোদৃশ্যতে ইত্যাহ কচিদিতি॥ ১৯॥

হে মাত ন' প্রকৃতি জীবিদ্য বন্ধহেতুঃ কিন্তু তদীয় গুণাধ্যাদ এব দচাবিদ্যাক্বত এব অতএবাবিদ্যা নির্ত্তী মোকো ঘটতে কচিত্তমস্যোত্তবন্ত দাধন কৈবল্যাদিত্যভিপ্রেত্য দাধনাতিশয়ং কথ্যন্ পরিহরতি। নিমিত্তং ফলং তদভাবো হনিমিত্তমেব নিমিত্তং প্রবর্তকো যত্র তেন অমলঃ গুদ্ধ আত্মা অস্তঃকরণং যতঃ স্যাত্তেন। তীত্রয়া অভাবাদেব সর্বত ক্তেজবিন্যা শ্রুতসংভূত্রা মৎকথা শ্রবণপরিপ্রব্যা। ২০.॥

প্রকৃতি লি লিদেহ: পুরুষস্য এডি: সাধনৈ দ হিমানা অভিভূমনারী। তিরোডবভি অরেরিভি অরণি: কার্চং। অধি বঁণা কার্চা-দেবোৎপদ্য কার্চং দৃহতি তথৈৰ জ্ঞানং লিলদেহাত্ৎপদ্য তমেব দৃহতি ॥ ২১॥

এই নিমিত্তই ত কুখন কথন তত্ত বিচার দারা কোন কোন পুরুষের সংসার ভয় নিয়ন্ত হইলেও তাহার কারণ একেবারে নিয়ন্ত না হওয়াতে পুনর্বার সেই ভয়ের উত্তব হইতে দেখা সিয়া থাকে, অতএব এ বিষয়েয় যথার্থতন্ত্র বর্ণন কর॥ ১৯॥

ভগৰান্ কপিল এই সকল প্রশ্নের উত্তর দানার্থ সম্বোধন পূর্বক কহিতে লাগিলেন, মা! নিজাম ধর্ম, নির্মাল মন, আমার কথা প্রাবণ দারা পরিপুষ্ট মিদ্বিরক দৃঢ় ভক্তিযোগ, তক্ত্বিভিজ্ঞান, প্রবল বৈরাগ্য, তপোসুক্ত যোগ এবং তীত্র আত্ম সমাধি এই সকল দারা ॥ ২০ ॥

অহর্নিশ পুরুষের প্রকৃতি ভূরোভূয়: অভিভূয়মান হইলে ক্রমে ক্রমে অগ্নিযোনি অরণির ভূল্য অর্থাৎ বেমন অগ্নি কার্চ হইতে উৎপন্ন হইরা ঐ কার্চ দশ্ম করিয়া থাকে তাহার ন্যায় ভিরোহিত হইতে পারে ॥ ২১ ॥ ভূকভোগা পরিত্যক্তা দৃষ্ঠদোষাচ মিত্যশং। নেশ্বরক্তাশুভং ধতে যে মহিলি স্থিতস্ট ॥ ২২ ॥
যথাহাপ্রতিবৃদ্ধস্য প্রয়াপো বহুনর্থভূৎ। স এব প্রতিবৃদ্ধস্য ন বিশোহার করতে।
এবং বিদিততত্ত্বস্য প্রকৃতি মরি মানসং। যুঞ্জতো নাপকুক্ত আত্মারামস্য কহিচিৎ ॥ ২০ ॥
যদৈবমধ্যাত্মরতঃ কালেন বহুক্তমনা। সর্ব্বে জাতবৈরাগ্য আব্রেল ভ্রনামূনিঃ ॥ ২৪ ॥

श्रीशत्रवामी।

· এবঞ্চ পতি পুনক্ষবো নাস্তীত্যাহ। ভূকো ভোগো যদ্যা: নিত্যশ: দলা দৃষ্টোদোষো যন্তা:। অতএব পরিত্যক্তা সতী ঈশ্বক্তা পরতন্ত্রন্ত স্বে মহিদ্ধি স্থিত্ত স্থানন্দং প্রাপ্তদ্য ॥ ২২ ॥

অবিবেকাবস্থালামনর্থহেত্রপি বিবেকানস্তরং ন ভবতীতি সদৃষ্টান্তমাহ যথেতি ছাভ্যাং। প্রস্থাপ: স্থা: বহুবন্থান বিভর্তি প্রাতি প্রতিবৃদ্ধস্ত সংস্কারবশেন ক্রেপ্লি ॥ ২৩ ॥

উপসংহরতি যদৈবমিতি তিভি:। বহুনি জন্মানি यन्त्रिन् काला ॥ ২৪ ॥

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

ঈশ্বন্য ভগবচ্ছক্তাংশে শক্তিমত: দৈ মহিদ্ধি মহিমহেতাবীশ্বদ্ধে স্থিতস্য প্রাপ্ত ক্রেরিতি শীবস্য শ্বরূপ শক্তিখং দর্শিতং। সুযুদ্ধমামিত্যাদে:॥ ২২॥ ২৩॥

যদৈবেতি ত্রিকং। মন্তক্তর মৎ প্রসাদেনার্ত্রেব নিংশ্রেয়সং প্রাপ্রোতীত্যাহ। মন্তক ইতি যদি মন্তক সঙ্গেন মন্তকো ভবতি ভবৈবেত্যর্থ:। ভ্রস্যা সর্বত্র বলবত্রয়েত্যর্থ:। অহমেবাশ্রয়ে যস্য ভং। তহ্কং গীতাহা। যে। মামব্যভিচারেশেত্যারভ্য ত্রহ্মণোহি প্রতিষ্ঠাহমিতি॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥

এীবিশ্বনাথচক্রবত্ত

কিঞাবনিষ্টাপি দহ্মানারণিবল্লিকদেহরূপ। প্রকৃতিঃ খবেবস্থৃতা চেন্নাপকুরুত ইত্যাহ ভূকোভোগে। বহুধা স্বর্গ নরকাদি বঁদ্যা অতএব বিবেকিনা চর্বিতবন্তাক। তদপি দৈবাদাপতন্তী চেদ্ষো দোষো যদ্যাঃ দা। ঈশ্বর্দ্য নিত্যমেবং সদস্বিবেচনে ভূক্। পরিত্যজনে দোষদর্শনে চ সমর্থস্য স্বে মহিদ্ধি স্থায়ে মহত্বে গুরুপদিষ্ট সাধ্বর্দ্ম নি॥ ২২॥

অবিবেকাবস্থায়ামনর্থহেতু র্য: স থলু বিবেকে সতি ন তথৈবেত্যাত যথেতি ছাভাাং। প্রশ্বাপ: স্বপ্ন: বছনর্থান্ ব্যাঘ্র সর্পাদি দংশান্ বিভর্তি প্রতিবৃদ্ধস্য সংস্কারবশেন ক্রেল্প ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥

পুরুষের প্রকৃতি এই রুপে তিরোহিত হইলে আর তাহার পুনরুদ্ধে হয় না, তখন পুরুষ তাহাকে এইরূপ বোধ করেন ইহার ভোগ ভুক্ত হইয়াছে এবং সর্বাদাই তাহার দোষের প্রতি দৃষ্টি করিতে থাকেন, হুতরাং দে পরিত্যক্ত হওয়াতে পুরুষের আর অশুভ জ্ব্মাইতে পারে না, ফলতঃ যখন পুরুষ আপনার মহিমাতে অবহিত হইয়া সানন্দ প্রাপ্ত হয়েন, তখন আর তাঁহাকে অভিভব করিতে প্রকৃতির সামর্থ্য কি ? ॥ ২২ ॥

মা! যেমন পুরুষ যথন নিজিত থাকে তথনই তাহার স্বপ্ন যোগে বহু বহু অনর্থ ঘটে, কিন্তু সেই পুরুষ জাগরিত হইলে সংস্কার বশতঃ ঐ স্বপ্ন যদিও স্মরণ হয়, তথাচ তাহা পুরুষের মোহ জন্মাইতে পারে না, তাহার ন্যায় পুরুষ, তত্ত্ত হইয়া যথন আমার প্রতি আপনার মনঃসংযোগ করত আজারাম হয়েন, তথন সার তাঁহার স্পাকার করিতে সমর্থ হয় না ॥ ২০॥

भू कर वह जाता अहे अकादत जाशी का वह है या यथन जन्म त्नाकाविध नर्सक का उ देवता थे। यथन अन्य स्वाप्त का विकास का

মন্ত্রীক্তঃ প্রতিবৃদ্ধার্থে। মৎ প্রসাদেন ভূষসা। নিঃজ্যোসং স্বসংস্থানং কৈবল্যাখ্যং মদাশ্রমং ॥২৫॥ প্রাপ্রোতীহাঞ্জসাধীরঃ স্বদৃশা চিছ্নসংশয়ং। যদাত্বা ন নিবর্ত্তেত যোগী লিঙ্গবিনির্গমে ॥ ২৬॥ যদা ন যোগোপচিতাম্ব চেতো মায়াম্ব সিদ্ধস্য বিসক্ষতেহঙ্গ। । । প্রমান্ত তিত্তা মায়াম্ব সিদ্ধস্য বিসক্ষতেহঙ্গ। । । । প্রমান্ত স্থাদাত্যান্তিকী যত্ত্ব ন স্বৃত্যহাসঃ ॥ ২৭॥

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়ক্ষমে কাপি-লয়ে প্রকৃতিবিবেকঃ সপ্তবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ 🛊 ॥ ২৭ ॥ 🛊 ॥

शिश्त्रकामी।

প্রতিবৃদ্ধার্থ বিদিতাত্মতত্বঃ কৈবলাধ্যং অসংস্থানং দেহাদিব্যতিরিক্তং অরূপং মদাশ্রয়ং নিঃশ্রেরসং। নির্তিশ্রানন্ধং ॥ ২৫ ॥ অদুশা আত্মজানেন ছিল্লাঃ সংশ্যা মিধ্যাজ্ঞানানি যদ্য লিঙ্গাছিনির্গমে লিঙ্গশরীর নাশে সতীত্যুঁওঃ ॥ ২৬ ॥

তদাভূ অণিমানি সিন্ধয়ে হত্তরার রূপা ভবস্তি তাহ্ম যোগেনোপচিতাহ্ম সমুদ্ধাহা। ন যোগানন্যো হেতুর্থাসাং তাহ্ম বদা সিদ্ধন্ত চেতো ন বিসক্ষতে। অল হে মাতঃ অথ তদা অলং অতিক্রান্তোহতারো যোহহং তৎ সবদ্ধিনী বত্র বস্যাং গতৌ মৃত্যোর্হাসো ন ভবতি। বিষয়াসক্ষী তু সিন্ধোহণি মরা বদীক্ষত ইতি মৃত্যোর্হাসো গর্কো ভবতীতার্থঃ ॥ ২৭ ॥

॥ • ॥ ইতি ভৃতীয়ে সপ্তবিংশঃ ॥ • ॥

ক্রমসন্দর্জ:।

. यहां य९ व्यनांत निज ॥ २१ ॥

॥ • ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্ত্রে শ্রীকীবগোশামিকত ক্রমসন্দর্ভে সপ্তবিংশোহধ্যাক্র সমাপ্ত: ॥ • ॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্বসংস্থানং দেহাদি ব্যতিরিক্ত: স্বরূপং কৈবল্যাথ্যং ব্রহ্ম। অহমেবাশ্ররো যদ্য তৃৎ। বছকং ব্রহ্মণোহি প্রতিষ্ঠাহমিতি। স্বৃদ্ধা শুদ্ধান্ত ক্রান্তেন বিকাষিনির্গমে বিকশরীরে নষ্টে সতীত্যর্থ:॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥

কিঞাণিমাদি দিছি প্র্যান্ত বিবিশা ভোগা অন্তরার রূপা ভবন্তি তাহ্ন বোগী ন বিসক্ষেদিত্যাই যদী বোগী উপচিতাহ্ন সম্-ছাল্ল মায়াহ্ম বিবিধভোগাবন্তর দিছ্না চেতো ন বিসক্ষতে তদা আত্তিকী গতিস্কিঃ স্যাৎ। মারাহ্ম কীলুনীহ্ম ন বোগাদন্যো হেতু যাসাং তাহ্ম। যত্র যস্যাং গতৌ সত্যাং মৃত্যোহাসো ন ভবতি। বিদক্ষো তু সিছোহিশ মন্ন বলীক্ষত ইতি। মৃত্যোহাসো প্রেলি ভবতীত্যরিঃ ॥ ২৭॥

ও আমার প্রতি ভক্তিমান্ হইয়া আমার প্রদাদে আত্মতত্ত্ত জানিতে পারে, তখন কৈবল্য ধামে দেহাদি ব্যতিরিক্ত স্বরূপ মদাশ্রেয় নিরতিশয় আনন্দ প্রাপ্ত হর॥ ২৫॥

তৎকালে তাহার লিঙ্গণরীর নাশ হওয়াতে ঐ আনন্দ প্রাপ্ত হইয়া পুনর্বার স্বার ভাহাকে নির্ভ হইতে হয় না এবং আত্মজ্ঞান দারা তাহার সংশব্ধ সকলও ছেদন ইইয়া যায় ॥ ২৬ ॥

মা। ঐ রূপ অবস্থা প্রাপ্ত ব্যক্তির তৎকালে অণিমাদি সিজিযোগ স্থারা সমৃদ্ধ এবং যোগবাড়ীত তাহার অন্য কারণ নাই, এইরূপ বোধ হওয়াতে তাহাতে আর চিত আসকত হয় না, কেবল এইরূপ বোধ হয় সীমার অতিক্রমণকারী যে আত্মা তৎসম্বন্ধিনী গতি আমার হউক, মাহাতে মৃত্যু হাস্য করিতে পারিবে না॥ ২৭॥

॥ 🗱 ॥ ইতি ভৃতীরে স্থ্বিংশ ॥ 🕸 🗓 😷

०का २५वा]

ঐমভাগবতম।

প্রীভগবামুবাচ ॥

যোগতা লক্ষণং বক্ষ্যে স্বীজ্বতা নৃপাত্মজে। মনো যেনৈব বিধিনা প্রসন্ধ যাতি সংপ্রধং॥১॥
স্বধর্মাচরণং শক্ত্যা বিধর্মাক নিবর্ত্তনং। দৈবাল্লকেন সন্তোষ আত্মবিক্তরণার্ক্তনং॥২॥
গ্রাম্যধর্ম নিবৃত্তিশ্চ মোক্ষধর্মরতিস্তবা। মিতমেধ্যাদনং শখিষবিক্তক্ষেমসেবনং॥৩॥
অহিংসা সত্যমত্যে যাবদর্থপরি গ্রহঃ। অক্ষচর্য্যং তপঃ শৌচং স্বাধ্যায়ঃ পুক্ষার্ক্তনং॥৪॥

अध्यक्षामी।

चंडीविश्त ততোহ हो क्र যোগেন খ্যানশোভিনা। সর্ব্বোপাধিবিনিম্ ক স্বরপ জানমীধ্যতে। ভক্তিং সংক্ষেপতঃ প্রোচ্য সাংখ্যমাধ্যায় বিস্তৃতং। অধাহ বৈষ্ণুবং যোগমন্তাকং কণিলো হরিঃ॥ • ॥

স্বীজ্ম্য সাবলম্বন্য প্রসন্ধং সং॥ ১॥

তত্র যমনিয়মানাহ ত্রিভিরক্ষরদ্বাধিকৈঃ শক্তা স্বধর্মাচরণং॥ ২ ॥

গ্রাম্য বৈবিদিকো ধর্ম: তথা রিবৃদ্ধি:। মিতঞ্চ তরেধাং শুদ্ধান তথা সিতং নাম। বৌ ভাগে । পূর্বেদ রৈ খোমেনৈ কঞ্পুরুরে । মাক্ত অপু প্রার্থ: চতুর্থনবশেষরেদি ভিশ্বতিপ্রসিদ্ধা। বিবিক্তং বিজনং কেনং নির্কাধং তভা স্থানভা সেবনং ॥ ৩ ॥ যাবতা অর্থ: প্রয়োজনং তাব্যাত্রভাপরিপ্রহ: ॥ ৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

বেইনব বিধিনা প্রকারেণ তৎ প্রকারকং লক্ষণমিত্যময়: ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥

শ্রীবিখনাগ্রচক্রবর্তী।

অষ্টবলেষ্ যোগদা ধানং বিভাগ্য বর্গতে। অষ্টাবিংশে যতোযোগী মুক্তিং বিদেশ্যস্ত:। স্বভক্তিমুপ্দিশ্যৈবং দাঝ্য মুক্তা তদ্যিতং। অষ্টাক্ষোগং ত্রিশ্রমারেতে বক্তুমীশ্বঃ॥ •॥

नवीक्ता नावनवनगा। । । । ।

ত্র ধমনিরমানাহ ঝিজিরক্ষরবরাধিকৈ:। ত্রাহিংসা সত্যতেরাপরিগ্রহ ব্রশ্ধর্য মৌনানি বমা:। তদন্যানি অধ্পাচরণান্দীনি নিরমা:। প্রামান্ত্রবর্গিকে। ধর্ম:। মিত্রমধ্যাদনমিতি। ত্র মিতং নাম। বৌ ভাগৌ প্রয়েদলৈরেটেরেটনকং শুপ্রপূর রেং। মাক্ত্রস্থ প্রচারার্থং চতুর্থনবশেষরেদিতি স্বৃত্তিপ্রসিকং। বিবিক্তং নির্জনং ক্ষেমং নির্ভন্ন বংস্থানং ত্র স্থিতি:॥ ৩॥
. যাবতা অর্থং প্রয়োজনং তাবনাত্রস্য নম্বধিক্স্য বস্তুনঃ পরিপ্রস্তুঃ॥ ৪॥

অন্তাবিংশতি অধ্যায়ে ধ্যানশোধিত অন্তাক যোগ দারা সর্বোপাধি বিনিমুক্তি স্বরূপ জ্ঞান কথন ॥ । ভগবান্ কপিল কহিলেন, হে নৃপাত্মজে! একণে সাবলম্বন যোগের লক্ষণ বলি ভাবণ করুন। এই যোগ অনুষ্ঠান করিলে তদ্ধারা মনঃ প্রদার ইয়া সংপ্রে গমন করিবে। ১॥

আপনার খাজি অনুসারে বাংশের আঁচরণ, বিরুদ্ধ ধর্ম হইতে নির্ত্ত থাকন, যদৃচ্ছা লাভে সম্ভোগ, আত্মতব্যক্ত লোকনিগের চরণার্চন ॥ ২ ॥

গ্রাম্য ধর্ম হইতে অর্থাৎ ধর্ম অর্থ কাম বিষয়ক কর্ম হইতে নির্ত্তি, মোক্ন বিষয়ক ধর্মে রতি, পরিমিত অথচ পবিত্ত খাদ্য দ্রব্য ভক্ষণ, নিরস্তর বাধা শৃশু নির্জ্তন স্থানে অবস্থান ॥ ৩ ॥

অহিংসা, সত্যবাক্য কথন, অত্তের অর্থাৎ অস্থায় পূর্বক পরধন না লওয়া, যৎপরিমিত বস্তুর প্রক্ষো-জন তাবলাত্তে পরিগ্রহণ, ত্রকাচর্ব্য, তপস্থা, বাহ্য ও অভ্যন্তর শৌচ, বেদাধ্যয়ন, পরম পুরুষ ভগবানের অর্চন ॥ ৪ ॥ নৌনং সদাসনজয়কৈর্য্যং প্রাণজয়ঃ শনৈ:। প্রত্যাহারশ্চেক্তিয়াণাং বিষয়ান্মনসা হালি ॥ ৫॥ বিষয়ানামেকদেশে মনসা প্রাণধারণা। বৈক্তলীলাভিগ্যান্থ সমাধানং তথাত্মনঃ ॥ ৬॥ এতিরবৃত্যান্চ পথিভিম নো জ্ফুম্সংপথং। বৃদ্ধা যুদ্ধাত শনকৈ জিতপ্রাণোহতন্তিতঃ ॥ ৭॥ শুচো দেশে প্রতিষ্ঠাপ্য বিজিতাসন আসনং। তন্মিন্ স্তিক্মাসীন ঋকুকায়ঃ সমভ্যসেং ॥৮॥

व्यिधतवामी।

আসনাদীনি অপাতাহ ত্রিভি:। সতঃ আসনত করেন হৈর্ব্যং॥ ৫॥

অধিফ্যানাং প্রাণ্ডানানাং মূলাধারাদীনাং মধ্যে একস্মিন্ দেশে মনসা সহ প্রাণ্ডা ধারণং। **আস্মিনো** মনসঃ সমাধান-মান্মাকারতা॥ ৬॥

অতৈশ্চ ব্ৰত দানাদিভিঃ পথিভিক্নপার্যৈঃ॥ १॥

আসনাদীনি প্রপঞ্চয়তি ভাচবিতি যাবৎ সমাপ্তি। আসনং কুশান্তিন চেলোন্তরং প্রতিষ্ঠাপ্য স্বপ্তিকাসনেন যথান্তথমিতি বা । সমভ্যসেৎ প্রাণমিতি শেষ:। উরু জন্মান্তরাধায় পাদাগ্রে জাত্মধ্যগে। বোগিনো যদবস্থানং স্বন্ধিকং তদ্মির্জ্বপুণা:॥৮॥

ক্রমসন্সর্ভ:

স্বৃত্তিক্যাসীন মিত্যত্র তু যথা স্থমিতি ন সংগচ্ছতে। স্বৃত্তিস্মাসীন ইতি স্বন্ধোজিসমত:। অত্র তু স্বৃত্তিকাসনেনেতাপি সংগচ্ছতে। সমানার্থবাং। স্বৃত্তিকশব্দস্য তথৈব নিক্সজিরিতি। স্থ শোভনং অতি স্থিতি ব্রত্তি ব্যাখ্যানেতু যথা স্থমিতি ব্যাখ্যানেহিপি স্বৃত্তিক্মিতি ঘটতে॥৮॥৯॥১০॥১১॥

এবিশ্বনাথচক্রবন্ত

আসনাদীন্যস্থান্যাহ ত্রিভি: সত আসনস্য স্করেন হৈ যাং॥ ৫॥

স্বধিষ্যানাং প্রাণস্থানানাং ম্লাধারাণীনাং মধ্যে এক স্থিন দেশে মনসা সহ প্রাণস্য ধারণং ধারণা। লীকাভিধ্যানং শীলা সহিত পাদাদ্যব্যবধ্যানং। আত্মনো মনসং সমাধানং স্মাধিরাস্থাকারতা॥ ও ॥

অন্যৈক দানবভাদিভি: পথিভিক্ষপাল্যে: বৃঞ্জীত ধ্যানে বোক্ষক্রং ॥ ৭॥

স্থাসনাদীনি বির্ণোতি। সাসনং কুশাজিন চেলোতরং। তদ্মিন্ স্বতিকং স্বত্যের যথাস্যাদেরমাসীন:। যথা। স্বতিকা সনেনোপবিষ্ঠ ইত্যর্থ:। যথাচ। উক্ত অভ্যান্তরাধার পাদাত্যে জাত্মধ্যগে। যোগিনো যদবস্থানং স্বতিকং ত্রিত্র্ধা:। সম্ভাবেং প্রাণমিতিশেষ:॥৮॥

মোনাবলম্বন, আসন জয় পূর্বক দ্বির হইয়া থাকা, ক্রমশঃ প্রাণ বায়ুর জয় করণ, ইন্দ্রিয়গণকে মনের ঘারা প্রতিনির্ত্ত ক্রিয়া হৃদয়ে আনয়ন ॥ ৫॥

প্রাণের স্থান যে মূলাধারাদি তাহাদের মধ্যে এক দেশে মনের সহিত প্রাণের ধারণ, বৈকুণ্ঠ অর্থাৎ ভগৰানের লীলা সকল চিস্তাকরণ এবং মনের সমাধান অর্থাৎ মনকে আত্মাকার করণ ॥ ৬ ॥

এই সকল উপায় এবং এতন্তিম অন্য ত্রতাদি ধারা অসং পথে প্রায়ুত ভূক মনকে জমশঃ বুদ্ধি খারা যোগ বিষয়ে নিয়োগ করিবে এবং অনলস হইয়া প্রাণ নায়ুকেও জয় স্পরিবে ॥ ৭ ॥

ুপরে জিতাসন হইয়া পরিত্র স্থানে বথজিনে উপ্রয়ুগেরি কুশ, আজন, চেল ইড্যানি স্থান্তরণ পূর্বক আসন স্থাপন করিবে এবং তত্বপরি স্বন্তিকাসনে অথবা থাহাতে তথ বোধ হয় তক্ত্রপ আসনে আসীন হওত আপনার শরীর ঋজু করিয়া প্রাণ সংযমন করিতে অভ্যাস করিবে॥৮॥ প্রাণস্য শোধয়েশার্গং প্রকৃত্তকরেচকৈ:। প্রতিকৃলেন রা চিত্তং যথা ছিরমচঞ্চলং ॥ ৯ ॥
মনোহিচিরাৎ আদিরজং জিজমাসস্ত যোগিনঃ। বাযু মিভ্যাং যথা লোহং মাতং ত্যজতি বৈমলং ॥১০
প্রাণায়ামৈ দ হেদোমান গারণাভিশ্চ কিলিমান্। প্রত্যাহারেণ সংস্থান্ ধ্যানেনানীম্বরান্ গুণান্ ॥১১
যদা মনঃ স্থবিরজং যোগেন স্বসমাহিতং। কাঠাং ভগবতো ধ্যায়েৎ স্ব নাসাগ্রাবলোকনঃ ॥১২॥

वीशतवामी।

বাহ্য বায়োরস্তঃ প্রবেশনং পূরক:। প্রবেশিতস্য ধারণং কুম্বক: খতস্য বহিনি:সারণং রেচক:। প্রতিকৃলেন রেচক পূরক কুম্বক:। যদা ইড়য়া আপূর্ব্য পিক্লয়া রেচনং পিক্লয়াপূর্ব্য ইড়য়া রেচনমিত্বি এবং প্রতিকৃলেন। বাশকশচার্থে ছিরং সং পূনরপি চঞ্চলং যথা ন ভবতি তথা শোধ্যেং॥৯॥

শাতং স্বতপ্তমিত্যর্থ:। বোহং স্থবর্ণ যথা মলং তাজতি তথা মনো বিরক্ষং স্যাৎ। ততশ্চাচঞ্চলং স্যাদিতি ভাব:॥ ১০॥ প্রাণায়ামাদীনাং সমাধৌ চন্দারি কার্যাণ্যাহ প্রাণায়াইমরিতি দোষান্ বাতলেমাদীন্ সংস্থান্ বিষয়সঙ্গান্ অনীখরান্ রাগাদীন্ বায়ুনা সহ মনসং স্থিরীকরণং ধারণা স্থিরস্য বৃত্তি সন্ততি ধ্যানং বৃত্তিনিরোধঃ সমাধিরিতি ডেদ:॥ ১১॥

স্থানিতং স্থিবং জাতং কাঠাং কলাং মূর্ভিনিতার্থ:। স্থনাদাঞেহবলোকনং যদ্য এতচ্চ লয়বিক্ষেপয়োঃ পরিহারায়॥ ১২॥

ক্রমসন্দর্ড:

কাঠা দিক্ অবধি: পরম স্বরূপমিতি যাবং ॥ ১২ ॥

वीविश्वनाथठकवर्ती।

বাহ্যবাদ্যোর স্ত বাম্যা নাসয়া প্রবেশনং পুরক:। প্রবেশিতসা ধারণং কুস্তক:। দক্ষিণ্যা নাসয়া রেচনং রেচক:। প্রতিক্লেনু রেচক কুস্তক পুরকে: অন্তিরমণি চিত্তং যথা অচঞ্চলং স্যাৎ॥৯॥

टनारः चर्तः। भा**जः मखश्वः ॥ ১**०॥

এতেবাং কার্যাণ্যাহ প্রাণায়াইমরিতি। দোবান ্বাতলেমাদীন ক্ৰিবাণি পাণীনি সংস্গান্ বিষয় সঙ্গান অনীখরান্ রাগ্ ছেবাদীন্॥ ১১।

বোগেন यमामिना সমাহিতং ছিরং। কাঠাং উৎক্রষ্ট অরপং। লয়বিক্ষেপ পরিহারার অনাদাগ্রদশী ॥ ১২ ॥

প্রথমতঃ পূরক অর্থাৎ বাহ্য বায়ুর অন্তঃ প্রবেশন, কুন্তক অর্থাৎ অন্তঃ প্রবেশিত বায়ুর ধারণ, রেচক অর্থাৎ অন্তর্গ্ধ ত বায়ুর নিঃসারণ, এই তিন কার্য্য প্রতিলোম ক্রমে অর্থাৎ বিপরীত ক্রম দারা চিত্তকে এ রূপ শোধন করিবে, যেন তাহা স্থির হইয়া পুনর্বার আর চঞ্চল না হইতে পারে॥ ৯॥

মা! এই প্রকারে খাস'জয় হইলে যোগি ব্যক্তির মনঃ যেমন বায়ু ও আরি বারা প্রতপ্ত স্থবর্ণ আশু মলিনতা ত্যাগ করে তাহার স্থায় শীত্র নির্মাল হইবে, তাহার পরেই তাহার আর চঞ্চলতা থাকিবে না॥ ১০॥

তদনস্তর সমাধি বিষয়ে প্রাণারামাদি চারিটা কার্য্য আছে বলি প্রবণ করুন, প্রাণায়াম করিলে যোগির বাতশ্বেমাদি দোষ সকল দগ্ধ হয়, প্রত্যাহার ঘারা বিষয় সঙ্গ সকল নির্ত্তি পায় এবং ধ্যান বারা অনীসম গুণ অর্থাৎ রাগ ধ্যোদির উপশম হয়। ১১॥

এই রূপে যথন মনঃ সমাক্ প্রকারে নির্মাণ ও যম নিয়মাণি ছারা শুন্থির হইবে, তথন লয় বিক্লেপ পরিহারার্থ নাসাত্রে দৃষ্টি সংযোজন পূর্বকৈ ভগবানের মূর্তি ধ্যান করিবে॥ ১২ ॥



প্রসন্ধবদনাস্থোজং পদাগর্ত্তারুণেক্ষণং। নীলোৎপল দলশ্যামং শহাচক্রগদাধরং॥ ১৩॥
লদং পক্ষজকিঞ্জন্দণীতকোশের বাসসং। প্রীবৎসবক্ষসং ভাজৎ কৌস্তুভাম্ক্রকন্ধরং॥ ১৪॥
মন্তবিরেক্তকলয়া পরীতং বনমালয়া। পরার্দ্ধ্য হার বলয় কিরীটাঙ্গদ নৃপুরং॥ ১৫॥
কাঞ্চীগুণোল্লসংখোণিং হুদয়াস্তোজবিফরং। দর্শনীয়তমং শাস্তং মনোনয়নবর্দ্ধনং॥ ১৬॥
অপীব্য দর্শনং শশ্বৎ সর্বলোকনমস্কৃতং। সন্তং বয়সি কৈশোরে ভৃত্যানুগ্রহকাতরং॥ ১৭॥

डीधतवामी।

ধ্যেরং হরিমাহ সপ্তভি:। প্রদরং বদনাভোজং যস্য তং ধাঁরিদেতি মঠেনাশ্বরং। পদ্মগর্ত্তবং অরুণে ঈক্ষণে নেত্রে যস্য নীলোংপল দলবং শ্রামং॥ ১৩॥

লসং পস্কলস্য কিঞ্জন্তবৰ্ণ পীতকোশেয়ে বাসনী যস্য শ্রীবংসোলাস্থনং বক্ষসি যস্য। প্রাঞ্জনকান্তভন আমুক্তা সংশিষ্ঠা ক্ষুবা যস্য॥ ১৪॥

মত্তবিবেকাণাং কলো মধুর ধ্বনির্যস্যাং তয়া পরীতং ব্যাপ্তং। পরার্দ্ধানি অমৃল্যানি হারাদীনি যস্য ॥ ১৫ ॥
কাঞীগুণেনোল্লসন্ধী শ্রোণির্যস্য ভক্তানাং হাদয়ান্তোল্লমেব বিষ্টরমাসনং যস্য ভক্তানাং মনো নয়নানি বর্দ্ধরতীতি তথা ॥ ১৬ ॥ .
অপীব্যং অতিস্কলবং ভক্তবিষয় দর্শনং যস্য কৈশোরে তাক্তাে বয়সি স্থিতং। ভৃত্যানামন্ত্রহে কাতরং ব্যর্থং ॥ ১ দ্বী ॥

ক্রমসুন্দর্ভ:।

প্রসঙ্গেতি ষট্কং। ভৃত্যামুগ্রহকাতরং সদৈবাধিকাধিক স্বভক্তি স্থলানেপ্যপরিতোষাৎ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

এীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী ।

নবাঙ্গ ভক্তাবিপি বং তৃতীয়মান্ত মহাস্তঃ পুক্ষার্থসারং ধ্যানং হরেঃ সপ্তমতামগান্তদন্তাক্তাহত মোক্ষসিল্ড। প্রসন্ধতা ভক্তানাং যোগিনাঞ্জায়ে স্বর্পমান্ত প্রসন্ধতি শক্ষ্যেতাত চতুর্থং পদম্পি ত্রন্থীয়ে ॥ ১৩ ॥

ভাজৎ কৌপ্তভেন তদীয় পর্ণপ্রতেশ আমুক্তা প্রতিবন্ধা কন্ধা গ্রীবা যস্য তং॥ ১৪॥
মতানাং বিরেফাণাং কলে। মধুরোধ্বন্দি র্যস্যাং ত্রা। পরার্দ্ধাং পরার্দ্ধ মূল্যকীতং॥ ১৫॥
ফাঞ্চীপ্ত্রেণোল্লসন্তী ভ্রোণিঃ কটর্যস্য তং ভক্তানাং হৃদরান্তোজনেব বিষ্টর্মাসনং যস্য তং শান্তমন্ত্রাং॥ ১৬॥
অপীর্যমতিস্কারং কৈশোরে পঞ্চদশবর্ষে বয়সি নিত্যন্তিতং॥ ১৭॥

মা! ঐ মুর্ত্তি কি প্রকার তাহা বলি প্রবণ করুন, তাঁহার বদনকমল স্থপ্রসন্ধ, নয়ন যুগল পদ্ম গর্ত্তের ন্যায় অরুণ বর্ণ, শরীর নীলোৎপল দল তুল্য শ্যামবর্ণ এবং তাঁহার চারিটী হস্ত, ঐ হস্ত চতুষ্টয়ে শস্ত চক্র গদা পদ্ম বিরাজমান ॥ ১৩ ॥

. অপর তাঁহার কৌ শ্রেষ পীতবদন পদ্মকিঞ্জক তুল্য মনোহর, বক্ষঃস্থলে এবিৎস চিহ্ন এবং কঠে দীপ্রিশালি কৌস্তভ্যনি সংশ্লিষ্ট রহিয়াছে॥ ১৪॥

আর তাঁহার গলদেশ বনমালায় ব্যাপ্ত, তাহাতে মত মধুকরগণ গুণ গুণ রবে মধুর ধ্বনি করি-তেছে। অপর মহামূল্য হার, বলয়, কিরীট, অকুদ এবং নৃপুর, ইত্যাদি অলকারে অলক্কত ॥ ১৫॥

আর তাঁহার কটিদেশে কাঞ্চী,গুণ দীপ্তি পাইতেছে, অপর তিনি ভক্তগণের হৃদয় পদ্মকে আসন করিয়া ততুপরি উপবিক্ত আছেন এবং ঐ প্রকারে স্বাভরণে ভূষিত হ্ইয়া যেন অধিক দুর্শনীয় অথচ্ লাভ হইয়া সন্ত্র নয়দের দর্শনেচছা রুদ্ধি করিতেছেন ॥ ১৬ ॥ ০

অপিচ তাঁহার ভক্ত বিষয়ক দর্শন অতি হুন্দর এবং তিনি সর্বলোকের নমস্কৃত ও নিত্য তরুণ বয়সে বর্তমান হইয়া আপনার ভৃত্যগণের প্রতি অনুগ্রহ বিতরণার্থ কাতর ॥ ১৭ ॥ কীর্ত্তন্যতীর্থযশসং পূণ্যশ্লোকষশস্করং। ধ্যারেদেবং সমগ্রাঙ্গং যাসন্ধ চ্যবতে মনঃ॥ ১৮॥
স্থিতং অজস্ত্রনাসীনং শরানদ্বা গুহাশরং। থেক্ষণীরেহিতং ধ্যারেহ শুদ্ধভাবেন চেতসা॥ ১৯॥
তিম্মিন্ লরূপদং ভিত্তং সর্ব্বাবয়বসংখিতেং। বিলক্ষ্যৈক্ত সংযুদ্ধাদকে ভগবতো মুনিঃ॥ ২০॥
সংচিত্তরেদ্ভগবতশচরণারবিন্দং বজ্ঞান্ধুশ ধ্বজ্ঞ সরোক্ষ্যলাঞ্ছনাত্যং।

ञीधत्रश्वामी।

কীর্ত্তনাং কীর্ত্তনাহং তীর্থং বশোষদ্য। পুণালোকা বলিপ্রমুখা তেষাং যশস্করং। সমগ্রাণাঙ্গানি যশ্বিন্। ন চাবতে নাপ্যাতি॥ ১৮॥

প্রেক্ষণীয়ং ঈহিতং লীলা যদ্য ॥ ১৯॥

তদেবং সমগ্র ধ্যানমূকা একৈকাবরব ধ্যানমাহ তশ্বিন্ লব্ধং পদং স্থিতি র্বেন তচ্চিত্তং বিলক্ষ্য বিশেবেণ লক্ষ্যীকৃত্য একত্র একৈক্ষিন্ অঙ্গে ইত্যুৰ্থ: ॥ ২০ ॥

তদেব পাদাদি ক্রমেণাই অয়োদশভি:। সম্যক্ চিন্তরেং। পাদতলে রেখায়কানি বজাদীনি লাখনানি তৈরাঢ়াং যুকং। উত্তস্থাত রক্তাত বিল্যকো যে নথা ভেষাং চক্রবালং মণ্ডলং তক্ত জোৎমাভিরাহতো মহতাং ধ্যাতবাং ভ্রাহরহদ্ধলারো যেন।

ক্রমসন্দর্জঃ।

এবং সমগ্রাক্ষং চ তাবন্ধারেখ। যাবন্ধনো নচ্যবতে। মনসি চ্যুতে সতি প্রকারান্তরেণ ধ্যারেদিত্যাহ। হিত্মিত্যাদি ॥১৮॥১৯॥ বিলক্ষ্য নিশ্চিত্য ॥ ২০ ॥

মহতাং ধ্যাতৃণাং হৃদয়দ্যাদ্ধকারম্দামর্থ্যং ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

औविश्वनाथठकवर्शे।

की ईनाहर् जीर्थक्र भक्ष याना यमा उर ॥ >৮ ॥

প্রসঙ্গতন্ত্রেণ রাগাহণীয় ভকানামণি ধোরাং লীলামাই স্থিতং বৈকুঠে বুকাবনীয়কর জন মূলেচ। ব্রক্ষং বৈক্ঠাং গোষ্ঠাত-বনার। আসীনং বরুসিংহাদনে গোবর্দ্ধন শুক্তে। শ্রানং শেবণগাকে গোবর্দ্ধন শুহারাক। শুক্তাবং চেতন্তরা তেন প্রেকণীয়ং জাল বন্ধাছিঃ স্থিতির দ্রষ্ট্রহং স্কৃতিতং ক্রীড়াচেটি তং যদ্য তং ॥ ১৯ ॥

সমগ্ৰ ধ্যানমুক্তা একৈকাবন্নৰ ধ্যানমাহ ভশ্মিন্ ভগৰবিগ্ৰহে ॥ ২০ ॥

পাদাদি ক্রমেনৈকৈকাবয়ব ধ্যানমাহ বজুতি দক্ষিণচরণতলখানং তলৈাব ক্ষতক মূলে তিওঁত স্নিতপললিত্যা ক্ষণা ভক্তৈদৃশ্যিবাৎ তথ্য দক্ষিণ চরণদা কনিষ্ঠাতলেংস্থাং ধ্যাবেৎ অষ্থ তলে বজাং অনামিক। তলে সবোক্ষং সবোক্ষতলে ধ্ব জং

অপর তাঁহার যশ কীর্ত্তনার্হ ও তীর্থ স্বরূপ পৰিত্র, তাঁহা হইতেই পুণ্যশ্লোক বলি প্রভৃতির যশ বিস্তীর্ণ হয়। মা। এই রূপ সমগ্র অর্ক বিশিষ্ট ভগবানের মূর্ত্তি সকল চিন্তা করিবে, যে পর্য্যন্ত মন আপনা হইতে কান্ত না হয়, সেই পর্যন্ত তাহা হইতে বিরত হইবে না॥ ১৮॥

মা ! ঐ প্রকার ভগবস্থা বি সকলেরই অন্তর্যানী, ভাব শুদ্ধ চিত্তবারা তাঁহাকে উপবিফী অধবা গমন

মা। এই প্রকার ভগবানের সকল অবয়বে সমাক্ প্রকারে চিত্ত স্থান প্রাপ্ত হইরাছে, যখন বিল-কণ রূপে নিরীক্ষণ করিবে, তথন এক এক অকে তাহা যোগ করিবে ॥ ২০॥

কিন্তু দে দময় প্রথমতঃ ভগবানের চরণারবিন্ধ চিন্তা করিবে। ঐ পদতলে রেখা স্বরূপ থকে, বজ্র, অঙ্কুশ এবং দরোরুত্বের চিহু দকল বিরাজমান, আর অঙ্গুলি দকলের অগ্রভাগে উভূঙ্গ অরুণবর্ণ ও বিলাদ শালি যে দকল নথরূপ চক্তমণ্ডল বিরাজমান, দে দকলের জ্যোৎসায় ধ্যানকারি পুরুষের হৃদ- উত্সরক্তবিলসম্থচক্রবালজ্যোৎসাভিরাহতর্মহন্দ্রান্ধকারং ॥ ২>॥
যচ্ছেচিনিঃস্তসরিৎপ্রবরোদ্ধেন তীর্থেন মূর্দ্ধান্ধক্তেন শিবঃ শিবেহ্ভূৎ ।
ধ্যাভূম নঃ শমলশৈক্ষনিস্ফবজ্ঞং ধ্যারেচিরং ভগবত চরণারবিন্দং ॥ ২২.॥
জামুদ্ধাং জলজলোচনয়া জনতা লক্ষ্যাথিলতা স্থারবিন্দ্তমা বিধাতৃঃ।
উর্বোর্নিধায় করপল্লবরোচিষা যথ সংলালিতং হুদি বিভারভবতা ক্র্যাথ ॥ ২০॥

श्रिश्वत्रामी।

এতচ্চ দর্বমুপাদেয়ং বিশেষণং ধ্যেয়ত্বেনৈবোচ্যতে ॥ ২১ ॥

কিঞ্বস্য শৌচেন ক্ষালনেন নিংস্তারাঃ সরিং প্রবরায়া গ্রায়। উদকেন তীর্থেন সংদারতারকেণ মৃদ্ধি অধিরুতেন ধ্তেন শিবোপি শিবোহভূং অত্যধিকং স্লথং প্রাপেত্যর্থঃ। ধ্যাতু ম্নিস যং শমলদৈলঃ পাপপর্বতঃ তদ্মিন্ নিস্টং ক্ষিপ্তং বছমিব যং। যবা শ্বলদৈলে নিস্টং অলাভ্ন রূপং বজ্ঞং বেদ তং॥ ২২॥

বিভোর্জানুষরং তৎপর্যান্তং জজ্বাররং অথিলস্য বিধাতু ব্রহ্মণো জনন্যা লক্ষ্যা সংলালিতং স্পর্ণচাতুর্ব্যেণ সংসেবিতং সংসা-রিষমিব প্রতীতং বারয়তি অভবস্যেতি। স্থানি কুর্ব্যাৎ ধ্যারেও ॥ ২৩ ॥

ক্রমসম্বর্ড:।

জামুদ্বয়মিতি ত্রিকং॥ ২৩॥ ২৪॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্ত।

এবসঙ্গুষ্ঠ তলে যব চক্রাদিকং জ্ঞেয়ং এতৈল ছিনৈ শিতহৈরাচাং অন্ধকারং পাশং॥ ২১॥

চরণারবিন্দস্য মাধুর্যামুক্ত্ব। ঐবর্থামাহ যস্য শৌচেন কালনেন নিঃস্তা যা সরিৎ প্রবর্গ গল্পা তস্যা উদকেন মূর্দ্ধি আধিকোন কতেন। যবা মূর্দ্ধি ধর্তুং অধিকতেন অধিকারেণ প্রাপ্তেন শিবোহিশি শিবোহভূদিয়বাহং শিবোহভূদিয়তাভিমন্যতে স্বেত্যর্থ:। ধ্যাত্র্জনস্য মনঃ শনলানি রাগবেষাদীনি তেখেব শৈলের নিস্টং খলাছন রূপং বজুং যেন তৎ। এবমেব যচ্চরণারবিন্দং ধ্যাত্র্জিস্য মনো হন্তিনং স্ববর্থন্যানেত্ং অলুশং ধতে মনঃ সরসীমলং কর্ত্তুং কমলং মনসে সর্বোহকর্ষ সাম্রাজ্যং দিতুং ধ্বজং সর্বোহক্ষিত্র বংশাদাতুং যবং। ত্রিবিধ তাপোপশমনায় ছত্ত্বং সর্বতের রক্ষণার্থং চক্রাদিক্মপি ধতে ইত্যুপি জ্বেয়ং॥ ২২॥

শয়ানং ধ্যায়েদিত্যুক্তমতঃ শেষপর্যাক্ষে শয়ানস্য বিভে। র্জায়্ছয়ং তৎ পর্যান্তং জঙ্গাছয়ং ক্ষি কুর্যাৎ। যৎপলু অথিলস্য বিধাতুর্ব লণঃ জনন্যা লক্ষ্যা সম্বাহনচাত্র্যবিতাঃ করপল্লবয়োরোচিয়া অঞ্চলিয়া পীতিয়াচ সংলালিতং শোভিতীক্বতং জলজ লোচনয়েতি তল্লোচনাজ্যাং নির্বাধমেবাস্বাদিত লাবণামিত্যর্থঃ ইদমেব জ্বজ্বয়োর্জায়্নোশ্চ মাধুর্যমেশ্র্যক্ষৈব মগ্রেপি জ্বেয়ং। অভবস্য নবিদ্যতে ভবে। যক্ষান্তস্য ॥ ২৩ ॥

রান্ধকার বিনষ্ট হয়, অত্এব চরণ বয়ের চিন্তার সম্য়ে ঐ সকলেরও চিন্তা করিকে॥ ২১॥

অপিচ ঐ চরণ কালনে যে সরিৎপ্রবরা গঙ্গা নিঃস্তা হইয়াছেন তাঁহার সদিল সংসার নিন্তারক জ্ঞান করিয়া মন্তকোপরি ধারণ করাতে শিবও শিব হইয়াছেন অর্থাৎ অধিকতর ত্রথ প্রাপ্ত হইয়াছেন যে ব্যক্তি ঐ চরণ ধ্যান করে তাহার মনের পাপরুপ পর্বতে বক্ত নিক্ষিপ্ত হয়, অভূএব ধ্যোগিগণ ঐ চরণারবিন্দকে চিরকাল ধ্যান করিবেন॥ ২২॥

অপর ব্রহ্মার জননী দেববন্দিতা পদ্মাক্ষী লক্ষ্মী ভগুবানের জাতুষর আপনার উরুষ্ধের উপরি স্থাপন পূর্বক স্বীয় অরুণবর্গ কর পল্লব বারা স্পর্শ চাতুর্য্য সহকারে সেবা করিয়া থাকেন, সংসার হুঃখ অতি তরণেচ্ছুক যোগী ভগবানের ঐ জাতুষয় আপনার হুদয় মধ্যে সংস্থাপন করিয়া ধ্যান করিবে॥ ২০॥ উর স্পর্গভ্জয়োরধিশোভমানাবোজোনিধী অতসিকাকুসমাবভাসে। ব্যালম্বি পীত বরবাসসি বর্তমান কাঞ্চীকলাপ পরিরম্ভি নিজম্বন্ধিং ॥ ২৪ ॥ নাজিব্রাণং ভূবনকোশগুলোদরস্থং যত্তাক্সমোনিধিষণাথিললোকপদাং। ব্যাং হরিদ্মণির্যক্তনয়োরমুষ্য ধ্যায়েদ্রম্থ বিশদহারময়্থগোরং ॥ ২৫ ॥ বকোহধিবাসমূষভক্ত মহাবিভূতেঃ পুংসাং মনো নয়ননির্ভিমাদধানং।

श्रीशतवागी।

সূপূর্ণসা ভূজরো: স্করেরের উপরি। ওজনো বলস্য নিধী আধারে। অভসিকারা: কুস্মবং কাস্তা অবভাসমানৌ। ব্যালম্বি আগুল্ফং লম্বমানং যৎপীতং বরং বাসন্তামন্ বর্ত্তমানো ব: কাৃঞ্চীকলাপ তেন পরিরভঃ সংশ্লেষে বিদ্যতে যস্য তহিভোনিতম্ববিষ্ক হদি কুর্যাৎ ইতি পূর্বেশৈবাধ্যঃ॥ ২৪॥

অমুষ্য হরেনাভিত্রণং ধায়েও। কথজুতং ভুবনানাং কোশস্য সমূহস্য গুহাধিষ্ঠানং যহদরং তত্র স্থিতং। যত্র নাভিত্রদে আত্মবোনে ত্র রূলোধিষণং ধিক্ষাং অথিললোকাত্মকং পদ্মং বৃঢ়েমুখিতং। তথা হরিমাণির্যৌ মরকতমণিশ্রেষ্ঠাবিব যৌ তনৌ তরোদ্ধিং ধায়েও। বিশাদ্ধারণাং ময়ুথৈগোঁরং শ্বেতং॥ ২৫:॥

ঋষতদ্য শ্ৰেষ্ঠিন্য মহাবিভূতে মহালক্ষ্যা অধিৰাসং স্থানং বক্ষঃ কঠঞ মনসি কুৰ্যাৎ। কথভূতং কঠং কৌস্কভমণিৰ্যো ভূষণাৰ্থং ধৃতঃ তদ্যাধিকং ভূষণমৰ্থঃ প্ৰয়োজনং যদ্য•কৌস্বভমণিমেব স্থয়নলক্ষ্প্ৰয়েমিত্যৰ্থঃ। পুংদাং স্মৰ্ভূণাঞ্চ মহোনয়নানাং

ক্রমসন্মর্ভ:।

গুহা প্রবেশস্থানং স্তনমোদ্ধিং ততুপলক্ষিত বক্ষোধঃ ॥ ২৫ ॥ অধিবাসমিতি তস্যা অপি পরমলোভনীয়ত্বং দর্শিতং॥ ২৬॥

ं ঐবিশ্বনার্থচক্রবর্ত্তী।

ব্ৰজ্ঞ ধ্যায়েনিত্যুক্তমতঃ পূথু জ্বাদিড্যোবরং দাতুং গছতো গরুড়ার চুস্য হরেরক্ষ্মং হদি কুর্যাৎ। ভূজ্যোর্ধি উপরি ক্ষমোরিতার্থ:। নিতম্বিবং নিত্মশুলং॥ ২৪॥

গর্জোদশারিনো নাভীছদং ধাারেও। ভ্রনানাং কোশস্য সমূহস্য গুছা অধিষ্ঠানং যত্নরং তত্ত স্থিতং। তত্তাব্যানে ধি বিণং ধিকাং অথিল লোকাত্মকং পদ্মং বৃঢ়মূখিতং হরিমনি বুবৌ মরকতমনিশ্রেষ্ঠাবিব যৌ চক্রিকাকৃতিজনৌ তয়োর্ছয়ং। হরিমনি বর্ণো বুযো ধর্মো যত্ত্ত তথা ভূতয়ো: জনয়োরিতি বা তদ্দিক জনস্য ধর্মগাও। বিশ্বানাং হারাণাং ময়ুথৈগৌ বং খেতমিতি দক্ষিণ জনেপেরি দক্ষিণাবর্গ্ত খেত শ্রীবংস রেখামপি হারকাজিমিব ধ্যামেদিতাপি শুচিতং জ্ঞেয়ং॥২৫॥

মহাবিভূতে ম হালক্ষ্যা অধি অধিকো বামভাগে বাদো যত্ত এতাদৃশং। বক্ষে সুন্দি কুর্য্যাৎ কৌভভমণেরপি অধিকং ভূষণ-

এইরপে ভগবানের উরুদ্ব যাহা গরুডের ক্ষেলাপরি শোভমান এবং বলের আধার ও অতসীকুত্ম তুলা কান্তি দারা দীপ্তিমান, তাহাও হৃদয়মধ্যে চিন্তা করিবে এবং তাঁহার নিতম বিদ্ব যাহাতে গুল্ফ পর্যান্ত লম্বমান পীত বসন ও কাঞ্চি কলাপের সংশ্লেষ আছে তাহাও হৃদয় মধ্যে স্থাপন পূর্বক চিন্তা করিবে॥ ২৪॥

আনস্তর ভগবানের নাভিত্রদ এই রূপে ধ্যান করিবে যে, যে উদর ভূবন সমূহের অধিষ্ঠান স্থান, এই নাভি তাহাতে অবস্থিত রহিয়াছে এবং এই নাভিত্রদেই আত্মহানি এলার আসন যে অথিল লোক ময় পদা, তাহা উথিত হইয়াছিল, তাহার পরে ভগবানের যে স্তন্ময় আেষ্ঠ মরক্তমণি তুল্য এবং যাহা নির্মাল হার সকলের কিরণে পৌরবর্গ, তাহা ধ্যান করিবে ॥ ২৫ ॥

জুনন্তর ভগবানের বক্ষংস্থল যাহা শ্রেষ্ঠ মহাবিভূতির অর্থাৎ মহালক্ষীর অধিবাদ স্থান এবং কণ্ঠ দেশ যাহাতে ভূষণার্থ কৌপ্তভ মণি প্ত হইরা স্বয়ং অল্কত হয়, ঐ তুই অঙ্গও ধ্যান করিবে। মা! কণ্ঠঞ্চ কৌস্তভমণের ধিভূষণার্থং কুর্য্যাম্মনস্থানিলোকনমস্কৃতস্থ ॥ ২৬ ॥ বাছুংশ্চ মন্দর গিরেঃ পরিবর্ত্নেন নির্ণিক্ত বাছ্ বলয়ানিধিলোকপালান্। সংচিন্তয়েদ্দশশতারমসহতেজঃ শহ্মঞ্চ তৎকরস্রোক্তর্যজ্জংগং ॥ ২৭ ॥ কোমোদকীং ভগবতো দ্য়িতাং স্মরেক্ত দিশ্ধামরাভিভটশোণিতকর্দমেন। মালাং মধুব্রতবর্ষণিরোপঘুষ্টাং চৈত্যুস্ত তত্ত্বমম্বাং মণিমস্থ কণ্ঠে ॥ ২৮ ॥

श्रिश्तवामी।

निवृ जिमान्धानिमञ्जा जित्यवार ॥ २७ ॥

নিণিকানি উজ্জানিকতানি বাহুবলয়ানি অক্সদানি যেষু অধিশ্রিতা লোকপালা যেষু। দশশতারুং চক্রং। ন সহং তেজো যস্ত ক্সাক্রস্বোক্তে রাজহংস্মির ॥ ২৭ ॥

জ্বাত্রো বে ভটা যোদ্ধার: তেষাং শোণিত্মেব কর্দমন্তেন দিশ্ধাং বিপ্তাং অস্য কঠে মালাং মণিঞ্চ মরেং মধুব্রতানাং বরুণসা গিরা উপযুথাং নাদিতাং। চৈত্যস্য জীবস্য তক্ষ। তত্তং বৈষ্ণবে। আত্মানমস্য জগতো নিলেপমগুণামলং। বিভর্তি কৈ স্থিভ্যনিক্সকপং ভগবান হরিরিতি ॥ ২৮॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

মন্দরগিবেরিতি সৌটার্য্য মাত্রে তাৎপর্যাং। নতু নির্ণেক্সনে নির্ণিক্তত্বস্য নিত্যুসিদ্ধত্বাৎ। তত্মাদত্যস্ততিরস্কৃত বাচ্য এবারং ধ্বনিকংকেরা গম্যতে। পরিবর্ত্তনং চাত্র স্কৃতি স্থাপনার্থং ক্ষেয়ং॥ ২৭॥

দিগামিতি পূর্প্রবং লিপ্তম্বার পৌন: পুন্যাৎ জীবস্য তবং মহাসমষ্টি রূপস্য তস্যাবিভাবিশ্পদং মহাপুরুষীস্থাবিভাবি বিশেষ ইত্যথা। অনলং গুণাতীতং। তছ্ত্রং বৈকাৰে। আত্মানমস্য জগতো নির্মেপমগুণাত্মকং। বিভর্তি কৌস্তমণি স্বরূপং ভগবান হবিরিতি। এবং তস্য ভূষণানামপি প্রব্রহ্মতা ত্লাশ্রয়স্য তস্য কৈমৃত্যমানীতং॥ ২৮॥

श्रीविश्रमाशहकवर्त्वी ।

মর্থঃ প্রয়োজনং যস্য কৌস্তভমণিরপি যেন ভূষিতঃ স্যান্তং কণ্ঠং চেত্যর্থ: ॥ ২৬ ॥

সম্দং মণুতো হরেবাছন চিন্তরেও। নির্ণিকানি উজ্জ্লীকতানি বাহ বলয়ান্যলদাদীনিচ যেষুতান্। অধি অধিকতা ভক্তা লোকপালা ভবাত যেভাতান্ বৈক্ঠনাথসা ভগৰত ততুৰ্ হতেষু চক্লাদাল চতুকং মালাং কৌল্ভঞ্ছ আরেদিতাহে সংচিত্তরেদিতি সাজেন । দশশতারং চক্রং ॥ ২৭ ॥

দিশ্বাং লিপ্তাং উপযুষ্ঠাং নাদিতাং। চিত্তে ভবত্যাবির্ভবতীতি চৈত্যশব্দেন স্কর্ত্তে যদ্যপি প্রমাধ্যেবোচ্যতে তদপ্যত্র তচ্ছক্তি হাজ্জীবাথ্যেবোচ্যতে। চৈত্যস্য জীবস্য জীবশক্তেগুং। তত্তকং বৈঞ্চবে। আশ্বানমস্য জগতো নিলেপ্মগুণামলং। বিভাঠি কৌস্তভম্পিস্বন্ধপংভগবান্ হরিবি্তিন্তি কৌস্তভস্যবানস্তাঃ কিরণা জীবা ইতি ভাবঃ॥ ২৮॥

অথিল লোক নমস্কৃত ভগবানের বক্ষঃস্থল এবং কণ্ঠদেশ স্মর্ন বা দর্শন করিলে মনও নয়নের অতিশয় প্রীতি জম্মে॥ ২৬॥

তাহার পর ভগবানের বাহু চতুইয় চিন্তা করিবে, ঐ বাহু হারাই মন্দর পর্বত সঞ্চালিত হইয়াছিল, তাহাতে তত্ত্ব অঙ্গদ সকল সাতিশয় উজ্জ্বলীকৃত হইয়াছে এবং লোকপাল সকল তন্মধ্যে
আঞ্জিত হইয়া আছেন। তদনন্তর তাঁহার হন্তে যে সহজ্র আর হৃদর্শন নামে চক্র আছে, যাহার তেজ অতীব অসহ, তাহার ও তদীয় কর কমলে যে রাজহংস তুল্য খেতবর্ণ শহা আছে, ভাহারও চিন্তা
ক্রিবে॥২৭॥

অনন্তর ভগবানের দয়িতা কোঁমোদকী গদা যাহা জারাতিদুসনার শোগ্রিভ রূপ কর্মমে লিও আছে তাহা চিন্তা করিবে। পরে তাঁহার কণ্ঠদেশে যে মালা আছে, যাহা মধুকর নিকরের গুঞ্জর রবে নাদিত হইতেছে এবং তত্ত্বস্থ কোঁস্তভ মণি যাহা জীবের তত্ত্ব স্বরূপ এভকুভয়ের ধ্যান করিবে॥ ২৮॥

ভৃত্যানুকম্পিতধিয়েই গৃহীতম্ত্তে সঞ্চিত্তরে জগবতোবদনারবিন্দং।
यि বিক্রুরন্মকর কুণ্ডলবিল্লতেন বিদ্যোতিতামলকপোলমুদারনাসং॥ ২৯॥
যৎ জ্রীনিকেতমলিভিঃ পরিদেব্যমাণং ভৃত্যা স্বয়া কুটিলকুন্তলর্কজুন্টং।
মীনস্বয়াশ্রমধিকিপদক্ষনেতাং ধ্যাকেমনোময়মতন্ত্রিত উল্লেস্কুল ॥ ৩০॥

बीधतयामे १

ভৃত্যের অন্তর্শিতা কৃতান্কম্পা বাধী করা গৃহীতা মৃর্থিন তদা বিক্রন্তী বে মকরক্তলে ত্যোর্রিরিং এন প্রচলনের বিল্যোতিতাবমলৌ কপোলৌ যশিন্তং। উদারা উল্লানসিকা যশিন্তং॥ ২১॥

ষচ্চ মুখং স্বয়া ভূত্যা শোভ্রা অণিভিশ্চ পরিবেব্যমাণং মানবরাশ্রাঞ্জ শ্রীনিক্রেডং পরাং অধিক্রিপং বর্ততে তন্ধারেং। আত্র কুস্তলৈরগীনানধিক্রেপং নেত্রব্যন মীনব্রস্যেতি দ্রষ্ট্রাং। অল্পে ইব নেত্রে যশ্মিন্ ইত্যুপমানাস্তরং। উল্লেখ্য যশ্মিন্ মনোন্যং মন্সি আবিভিবং॥৩০॥

क्रममन्द्रः ।

ভৃত্যা: স্বস্তীষ্ট্রে ভাবকা: তেরু অক্কম্পা যুক্তা যাধী:। তরা ইহ জগতি গৃহীতা আ্রুষ্টা বৈক্পাদানীতা মুর্ত্যো যেন ত্যা । ২৯ ॥

যৎ খলু শ্রীনিকেতং। সর্ব্বোৎকৃষ্টাক্তাস্তরং অধিক্ষিপন্ধতিত। তদক্ষাকারং নেত্রং ধ্যায়েং। য**হা অক্ত**াক্তং। স্থপাং স্থল্পিত্যাদিনা ছান্দসং স্থলুক্। তসা বিশেষণং শ্রীনিকেতং ইতি। মীনদন্ধ চাত্র জন্মনাধিকিপ্তং ক্ষেন্নং যন মুপেনা**হক** মধিকিপ্তং অত্র নেত্রস্যাক্ত্রে শোভা বিশেষাপোষাদেবং ব্যাপ্যায়তে। মনোমন্তং শ্রীভগ্রস্ত্রনানা ক্ষুপাবিশাস স্চকং। শ্রীভকা-স্তর্নানাভক্তিবিশাসাবিষ্ঠং বা॥ ৩০॥

धीरियनाथठकवर्छी।

অহকলা সঞ্চাতাহ্ব্যা ইতাহকিলাতা। তারকাদিহাদিতচ্। যথা অহুকিলাগত মহকলা রূপা তদাল্লিকা তল্পনী বা ধা ধীতরা ব্যবাসার্থং গৃহীতা মূর্ত্তি ধ্যা। হে মংব্রূপশক্তিদার্ভূতে অহকলে ইহ মত্যালাকে মন্ত্রির্মধা বাসিজ্পি তাং হনির্ভর নিবাসার্থং গৃহাণেত্যুকে তরা বিবিচা রামক্রক মূর্ত্তিব বিশেষতো গৃহীত ইভার্থঃ। বদিতি মকরকুণ্ডলবোৰ রনং থলু পার্মবিষ্থ পার্বদ সঞ্চালিত চামর হেতুকেন মাজতেন বা ব্রুল্গেশ নর্শোক্তি প্রভাৱিত হেতুকেন শিরংকলেশন বা সহচ্বীলণ নৃত্যা পিত বাদা তাল তানাল্যালান সাধুর থ্যাপন হেতুক্রা প্রীবা ভঙ্গা বা জ্ঞাবং অমলেতি কপোল্গোর্মপান্যনিদ্দিশ্লাল্যালাহং তরো শুলল্লকর কুণ্ডলব্যা প্রতিবিধেন নটভৌ নয়ন ধ্রনৌ নৃত্যোপাধ্যামী ভূষা স্বত্যস্থানাতং সক্ষর চ্টুবং নর্ভ্রিত ইব ইত্যুং প্রেক্ষা গ্রমা। উদারং সমুদ্ধত নাকিং উদারো দাভ্ মহতোরিত্যভিধানাল্যালিকার। স্থাবাদন সভ্যান্ত স্পর্ক্রিদাত্যং ॥ ২৯ ॥

यक শ্রীনিকেতনং বননারবিন্ধং অলিভিঃ পরিবেশ্বমাণমণি মীনশ্বাশ্রমণি অধিকিণং। অর্থাং অব্যিন্যান্তবং স্বর্গ বিভ্ত্যা তিরস্কুর্বাভি । তং ধারেদিত্যবরঃ। তত্র কুটল কুঞ্জ বুন্দেনালীনামাক্ষেপঃ। অজদলভূল্য নেরাভ্যাং মানদ্বস্যা-কেপঃ। মনোমরং স্বমন্যা তালাস্থামিব স্থাণাধিক্যাং প্রাপ্তমিত্যবরিঃ। স্বভক্ত বিধ্ব কুপাদ্যোতনাত্র্যপ্তেমী ক্রেমী যুর তং ॥৩০

মা! ভগবান্ হরি সীয় ভক্তগণের প্রতি অমুকস্পা বিতরণ বুদ্ধিতেই মূর্ত্তি গ্রহণ করেন, অতএব তাঁহার সমস্ত অবস্ব চিন্তা করাই কর্ত্তব্য, পূর্ব্বোক্ত অস সকল অন্তর রূপে চিন্তিত হইলে তৎপরে তাঁহার বদনীস্থাবিশ চিন্তা করিবে। আহা! ভগবানের বদনের কি মনোহর শোভা! দীপ্রিশালী মকরাকৃতি কুণ্ডলম্বয়ের সঞ্চালন মারা অমল কপোল্যর স্ব্বাই বিদ্যোতিত হইতেছে এবং তাহাতে উনত নাসিকা মনোহর শোভা বিস্তার করিতেছে॥২১॥

অপর ঐ বছন স্থীয় শোভা ও মুধুকর নিকরে সতত সেব্যুমান এবং কৃঞ্চিত কেশ কলাপে অতিশয় রমণীয় ও দীনবয়ের অধিক্ষেপকারি নয়ন্ত্রে অশোভিত, অতএক তাহা লক্ষ্যীর নিকেতন পদাকেও তিরস্কার করিতে পারে, আর ভাঁহার জনগুল নিয়তই উল্পিত হইতেছে তাহাতে ঐ বদন সর্বাদাই মনোমধ্যে আবিভূতি হইরা ধাকে ॥ ৩০॥

তদ্যাবলোকমধিকং রূপয়াতিঘোর তাপত্রয়োপশমনায় নিস্ফীমক্ষ্যে।
মিশ্বমিতামুগুণিতং বিপুলপ্রদাদং ধ্যায়েচিরং বিততভাবনয়া গুহায়াং॥৩১ ৪
হাসং হরেরবনতাথিললোক তীত্র শোকাশ্রুদাগর বিশোষণমত্যুদারং।
দম্মোহনায় রচিতং নিজমায়য়াভ জ্রমগুলং মুনিকৃতে মকরধ্বজন্য॥৩২॥
ধ্যানায়নং প্রহদিতং বহুলাধরোষ্ঠভাসাক্ষণায়িততমুদ্ধিজকুদ্দপঙ্কি।

ত্রীধরস্বামী।

ক্পরা অধিকমত্যর্থং অকিভাং নিস্তথ্য প্রযুক্তং। মিগ্পমিতেনামুগুণিতং সংযুক্তং। বিপুল: প্রসাদো যদ্মিন্ গুহায়াং হনি ॥৩১॥
অবনতা বে অধিললোকা তেবাং তীত্রশোকেন যানি অপ্রাণি তেবাং সাগরং বিশোষরতীতি তথা তং ইরের্হাস:। অন্ত অতুদারং
ক্রমগুলক গারেং। কথং ভূতং নিজমারয়া মকর্থবজন্ত সন্মোহনায় রচিতং বুনিক্তে মুনীনামুপকারায় মুনীনাং সন্মোহনে প্রবৃত্তং
কামমেব সন্মোহরিভূমিতার্থ:॥ ৩২॥

মক্ষান ধান মুক্। কুট্থাসধ্যানমাহ। বিকোঃ প্রহসিতং ধ্যারেৎ কীদৃশং ধ্যানায়নং অভিফ্লরভয়া প্রযক্ষং বিনৈব

ক্রমসন্দর্ভ:।

ক্লিখ্ন ক্লেহাতিশয়াভিব্যঞ্জক:। বং ক্লিতং তেনাফু নিরম্ভরং গুণিতং পুনঃ পুনঃ ক্লীতীক্লতং। অতএব যত এব বা বিপুলঃ প্রদাদো যদ্য যত্র বা তথাভূতং। গুহারাং পরম রহস্য গৃহরূপে চিম্ভে ॥ ৩১ ॥

তীত্র শোকাশ্রু সাগর বিশেষণত্বেন হাসস্য পরমানন্দাশ্রুসাগরবর্দ্ধনত্বং ধ্বন্যতে। তেন চক্রত্বেপ্যপূর্বত্বং। প্রাসিদ চল্লে-ক্ষার কীরোদধি বর্দ্ধনত্বাবিশেষাৎ। ক্রমণ্ডলং বর্ণয়তি। সম্মোহনায়েতি। এযা চোৎপ্রেকা জ্ঞেরা। কাকা হি সা ব্যক্ষ্যতে॥ ৩২॥ ভক্ত্যা আদরেণ॥ ৩২॥

बी विश्वनाथहक वर्षी।

তস্য হরেরবলোকং ধ্যারেৎ অক্লোরক্ষিভ্যাং নিস্টাইং নির্দ্মিতং ধ্যাতুরতিকোরং বস্তাপত্ররং তস্যোপশমার নিশ্বং যৎ স্মিতং তদেব স্মিতোপলক্ষিতং মাধ্র্যাং অবহু শুণিতং প্রথমং বিশ্বণিতং ওতজিগুণিতাদিক্রমেণ কোটি কোটি শুণিতং বত্র তং॥ ৩১॥

হরেছ সিং খারেও অবনতা তক্তা বে অধিনা লোকা তেবাং দাস্য সখ্যাদি ভাববভাং ত্রিবহোখবাতীতো বং শোকাশ সাগক তং বিশেবেণ শোবস্থতীতি তং অভ্যুদারমিতি শোকসাগরাছ্ম ত্যানন্দসাগরে নিমজনং দদানমিত্যর্থ:। বলা সাংসারিক তীত্র ছংখলোকাশ সাগর শোবণ্ডেন হাস্যা সংসারাতীত প্রেমান্দাশ সাগর বর্জনত্বং ধন্যতে তেন চক্রত্বেপাস্কৃত্বং। প্রসিদ্ধ করেরছি ক্ষীরোদক্ষ বর্জনতীতি। অস্য ক্রমণ্ডলক্ষ ধ্যারেও নিজ মার্মা সক্পট নিক্ষেপেশৈব সর্বন্দোহনস্যাপি মকর্মজন্ম সংযোহনার রচিতং প্রস্তৃতীকৃতং নম্ম মক্রম্বন্ধ কিমিতি মোহ্রেক্তরাহ মুনিকৃতে। প্রাশ্বভোজিন স্তপ্যুত্তেহিপি মুনীন্ অন্মুব্রক্রেদিতি কোপেনৈবেকুছেপ্রেক্ষা ॥ ৩২ ॥

প্রেকণীরেহিতং ধ্যামেদিত্যক মতঃ কাশি রহসি কুরুদতর মধ্যাসীনস্য অপ্রেরসীমতি সৌরভ লোভেন প্রবণ নগন নাসা-

পরে ভগবানের পদ্মতুল্য অবলোকন ধ্যান করিবে, তাঁহার নর্মনহয়ের যে দৃষ্টি হৃত্নিশ্ব হাস্তযোগে মনোহর, যাহা ধ্যাভূজনের ঘোরতর আধ্যাজ্মিকাদি তাপত্রেরে উপশ্যার্থ প্রযুক্ত ভূইয়া থাকে, যাহাতে তাঁহার বিপুল প্রসমতা অমুভব করা যায়, সেই দৃষ্টি আপনার হৃদয়মধ্যে সভত ধ্যান করিবে॥৩১॥

তদনন্তর ভগবানের যে হাস্ত, অথিল লোক অবনত হওয়াতে তাহাদের তীক্র লোক অনিত অঞ্ সাগর শোষণ করিয়াছিল, তাহা ধ্যান করিবে। পরে তাঁহার, উদার ক্রমঞ্জ বাহা মুনিগণের উপ-কারার্থ কন্দর্গকে মুগ্ধ করিতে নিজমায়া দারা রচিত হয়, তাহারও চিন্তা করিবে-॥ ৩২-॥

তদনস্তর ভগবানের উচ্চহাস ধ্যান করিবে, ঐ হাত্তে অধর ৪০ ওটের বহুল কান্তি দারা কুলমুকুল

ধ্যায়েৎ স্বদন্ত কুহরে হবসিতস্ত বিষ্ণোর্ভক্ত্যাক্র গ্রাপিতমনা ন পৃথিদিদৃক্ষেৎ ॥ ৩৩ ॥ এবং হরে ভগবতি প্রতিলক্ষভাবো ভক্ত্যাক্রবক্ষুদ্য উৎপুলকঃ প্রমোদাৎ।

धीरवचामो ।

ধ্যানস্থ বিষয়ভূতং দ্বেনিশ্যামেবাহ বছলয়। অধিকয়া অধরে। ত্রাভাজ ভাসা কান্তা। অফণীউতা স্থনবং ক্রা দিলা এব কুলমুকুলানি তেষাং পঙ্ক্তিং ক্রতি যন্মিন্ তৎ দহকুহরে হৃদয়াবকাশেহবসিত্সা জ্ঞাতজ্ঞ প্রেমরদেনার যা ভক্তা। তন্মিন্ এবার্পিত মনাং সন্পৃথক্ তথাতিরিক্তং দ্রষ্ঠুং নৈবেছেং চিত্তং ন বিচালয়েদিত্যর্থ:॥ ৩৩ ॥

সমাধিমাহ এবমিতি ৰাভ্যাং। নিৰ্বীশ্ব: সবীজশেতি দিবিধো বোগঃ। তত্ত্ব নিৰ্বীশ্বযোগে যতো যতো নিশুৱতি মনশুঞ্চলমন্থিরং। ততন্ত্বতো নিয়ম্যৈত্বাল্পয়ের বশং নয়েদিতি গীতাত্মক্তমার্গেণ ক্রিয়মাণোছণি ভ্রুব: সমাধিঃ। সবীক্তেই স্থকর শুক্তি প্রমানন্দ

ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং হরাবিতি। এবং পুর্বোক্তযোগে মিশ্রভকার্ষ্ঠানেন হরৌ প্রতিলক্ষভাবোভবতি। তর্ত্ত লিঙ্গ: ভক্ত্যেত্যাদি। ভক্তা।
শরণাদিনা। অপি এবমপি তচ্চ ধ্যের মধুর্থসা ভাবেন তাদৃশতাপর্ক্ষ তস্য চিত্তং। শনকৈবি মৃত্তে ইত্যুক্তমপি ভবতি। যেন
যোগাক্ষতরা ভক্তিরস্থান্তিতা তথাং কৈবলাচ্ছা কৈতব দোষাদেবেতি ভাবং। যথোক্তং। ধর্ম: প্রোজ্বিতকৈতব ইতার প্রশব্দন
মোকাভিসন্ধিরপি কৈতবত্বং। অতএব বড়িশশন্দেন কাঠিজং অরস্বিত্তং কৌটিলাং দান্তিকত্বং স্বার্থমাত্র সাধনত্বক্ষ ব্যঞ্জিতং
ভক্তক্তান্ত নক্দাচিত্তথা তং ধ্যেরং তাজন্তি। যুক্তসর্ক্পরিক্লেশঃ

গ্রীবিশনাথচক্রবর্তী।

মুথাদি সমীপমজহতঃ ক্সাচিত্রমরস্য ঝকারেণ অন্তাং শশহুজোংকেপবসনোরমন গ্রীবা নরনাদি চাপল্যবতীং রসিকশেথর পদরোতে পতামি ছ্রইমিমং বিজাবয়েতি সকাক্ব্যাহরত্তীং পশ্তঃ শৃণু ভো ভূজাধিপ ইমামদ্যমাজহীহি ভূজ্জ্ব তি নিগদতো ভগবতঃ প্রহিনিতমুকৈছে সিতং ধ্যারেং । ধ্যানারনং প্রয়ন্ধং বিনৈব স্বর্মেব ধ্যানস্য বিষয়ী ভবিষ্ট্ ত্রাপি মাধুর্যমাহ বহুল্যা অধ্রোষ্ঠস্য ভাসা অকণী ভূতাজনবং ক্ষা ছিলা এব কুন্দমুক্লানি তেবাং পঞ্জি ক্রতি যন্ত্রিন্ত । স্বদ্ধু কুররে হৃদয়াকাশেহবসিতস্য প্রতীতস্য নামাৎ পৃথিনিদ্ধকেৎ এইং নেছেং জ্ঞাতৃঞ্চ নেছেদিভাতঃ পুক্রার্থ সারাদন্যস্যাধিক বন্ধনাহনংভবান্ধকানামেতদানানন্দ মোহএব পর্ম: স্মাধিরিতি ভাবঃ। এবং নবাঙ্গ ভক্তে ভূতীয়মঙ্গ মেতত্তগবদ্বতার রূপ গুণলালা মাধুরী ধুরীণ মিপি ধ্যান মন্ত্রাক্ত বিষয় যোগ প্রসঙ্গে বহুজং তং ধলু যোগ মহাগহুরা যোগিনোপ্যাক্ত্রয় ভক্তিরস স্থার্থবে নিমজ্জ্বিত্রপি নিগুলা উত্তমপ্রাক্ত লীলয়া। গৃহীতচেতা রাল্পর্বে আধ্যানং যদ্দীত্রনিতি। অহৈত বীথী প্রিকৈক্সপাস্যাঃ স্বানন্দ সিংহাসন লক্ষ্মীকাঃ। হঠেন ক্নাপি বরং শঠেন দাসীকৃতা গোপবধ্বিটেনেতি তত্তত্তিভ মহাযোগিনোপি বৈয়াসকি বিষমক্ষণাদক্ষে মহদত্বগ্রহ্বশান্তজ্বির এব নিমজ্জ্ব এবেতি॥ ৩০॥

ৰত্বতি মন্দোমহদনস্থাহীত এতামপি ধান মাধুরীমুপভূজ্যাপ্যলক্ষাদনিষ্ঠোজিহাসতি সতু যোগী যোগএব প্রাপ্তনিষ্ঠোহিপি যোগিত্বতি নিস্কুটএব ভক্তির বঞ্চিত এব ভক্তৈয়ে দীরমানমেকবিংশতি প্রকার হঃখনাশ পূর্বক প্রত্যগাত্মায়ভবাত্মকং মোক্ষং প্রাপ্তোতি নতু ব্রহ্মায়ভবাত্মকং মোক্ষমিত্যাহ এবমিত্যাদি যাবদধ্যায় সমাপ্তি। হরৌ ভগবতীতি মনোহরত্বাং ভগবট্ ক্বত্বাচ্চ মাধুর্ব্যায়ভপরিপূর্ণোহিপি প্রতিলক্ষভাবঃ প্লেবেশ প্রতিক্রপ তরৈব নত্মস্ক্রপতরা লক্ষোভাবে। বেন সঃ। অত থব্বপি শবং সর্ব্বাহেতি প্রতিলক্ষভাবেহিশি ক্রক্রেশ্বাপি উৎপূল্বেশি প্রত্বত্বা বাংশক্রমাক্ষ ভাগেন মূত্রদ্বিনাণি তচ্চাপি

তুল্য তদীয় সূক্ষা দৃষ্ট পঙ্জি অরণবর্ণ হইয়া শোভমান হওয়াতে তাহা প্রযন্ধ ব্যতিরেকেই ধ্যানের বিষয় হইতে পারে, এইরূপ চিন্তা দারা আপনার হৃদয়াকাশে ভগবান্ যথন জ্ঞাত রূপে প্রকাশ পাইবেন তথন-প্রেমরসার্গ্র ভক্তি দ্বারা উচ্ছার প্রতিই মন অর্পণ করিয়া তথ্যতিরিক্ত কিছুই দেখিতে ইচ্ছা করিবে না অর্পণ করিবে না অর্পণ

মা ! এই প্রকার ধ্যানকার্গে প্রস্তুত হইলেই ভগবান্ হরির প্রতি যোগিব্যক্তির প্রেম জন্ম এবং ভক্তি বশতঃ হৃদয় দ্রবীভূত হইতে থাকে ও প্রেম হেতু তাঁহার অসু পুলকিত হইয়া উঠে, তথন তিনি

ওঁৎকণ্ঠ্য বাস্পকলয়া মুহুরদ্যিমানস্তচ্চাপি চিত্তবড়িশং শনকৈবিষুঙ্ক্তে ॥ ৩৪ ॥

শ্রীধরস্বামী।

মুক্তী হরৌ ধ্যায়মানেহয়ছতএব চিডোপবমোছবতি। তহুকং হুতাত্মনোছতপ্রাণাংশ উক্তিরনিছতে। গতিমণীং প্রযুদ্ধন ইতি। অতঃ সএবোপক্ষিপ্তঃ যোগন্ত লক্ষণং বক্ষো সবীক্ষন্তেতি। তদেবামুদ্ধ সিদ্ধন্ধ দশন্তি। এবং ধ্যানমার্গেণ হরৌ প্রতি লদ্ধো ভাবং প্রেমা মেন ভক্ষা প্রবৃত্ধ হুদ্ধং ধ্যা। প্রমোদাহুদ্ধতানি প্লকানি যস্য। উৎক্ষা প্রবৃত্তাশ্রুকলয়াই মুহ্বদ্যমানং আনন্দ সংপ্লবে নিম্জ্যুমানং ছ্প্রহিস্য হগরতো গ্রহণে বড়িশং মৎসাবেধন্মির উপায়ভূতং চ্বিং ধ্যেয়াৎ বিষ্কৃত্তে ভদ্ধারণে শিথিল প্রযুদ্ধে তবতীত্যর্থ:॥ ৩৪॥

ক্রমসন্সভ:

পাছ: স্থশরণং যথা ইতি। জ্ঞীনারদেন চ। ন বৈ হান ইত্যাদে। পারমুকুলাক্ষা পুগৃহনং পুন বিহাতুমিছেররস এহোজন ইতি যো রসগ্রহ: স তর তারতীত্যনোজেষাং লোহ পাষাণাদি তুল্যতং স্চিতং। নতু ভগবানপি ততাহনীগু কুর্যাং। যহন জ্ঞীন্তরণা। ভক্তা গৃহীতচরণঃ পর্যাচ তেযাং নাপৈবি নাথ হন্ধরাভ্কহাৎ স্থপুংসামিতি। আবির্হোত্রেণচা বিস্ফৃতি হৃদ্ধং ন যক্ত সাক্ষাদিতি। অতএব পুর্কের স্থপুংসামিতান্তর প্রেতি বিশেষণং। বরা। ভগবতি প্রতিলক্ষভাবাদিরপোহপি। তচ্তিত্র বিজ্ঞাং। অপি শব্দাৎ ভগবত্ত বিজ্ঞানীয়েল ভাবাদেরাভাসিতত্বাহ্নিত্র ক্রে তাজতীত্যর্থ:। বিজ্ঞা শব্দেন চেদং ধ্বক্ততে। গঙ্গাদি নহাতীর্থ স্থানীয়ে ভগবতি বিজ্ঞানীয়েল চিত্রেন গ্রাহান্তরাহ্নিত্র ক্রে তাজতীত্যর্থ:। বিজ্ঞা শব্দেন চেদং ধ্বক্ততে। গঙ্গাদি নহাতীর্থ স্থানীয়ে ভগবতি বিজ্ঞানীয়েল চিত্রেন গ্রাহান্তরাহানীয়ক্ত স্থানানাল রূপে হানে তদংশে সন্ধাতীয় ভ্যা ব্যক্তস্য নির্বিশেষ ব্রন্ধণ উপলন্তাৎ। সিদ্ধার্থত্যা রুত তন্ত্যাগস্য তস্য ধীরত্বনে লক্ষং। নতু ভনবগাহমান স্থক্ত সাধু লোকত্বং। তত্যতা বিজ্ঞানীবিক সাদৃশোল তস্য নিকর্ষ এব জ্ঞাপিতঃ নতু স্বস্থপনিভ্তেত্যাদে ক্রচির পদেন ত্র্যাস্থনোলে। ভনীয়াং লীলাং প্রশংসতি বাবেয় তার্ধন্যের তান্যাৎকর্ষঃ প্রতিপাদিতঃ আারাধনং ভগবত স্বহমানা নিরাশিষ্য। যে তু নেছেন্তাপি পরং তে স্বার্থকুশলা নরাঃ। হয়োরনয়েরধিকারিণােরভন্তরে বিলক্ষণায়াং নিষ্ঠায়াং পরমনিদ্বনত্ব মহৎমন্ত্রেলজামেব জ্ঞেরং। যদেব সর্ব্বর মৃল্যাতি। তৈর্দ্ধশনীয়াব্যবিবিত্যাদে হৃত্তাল্য ইত্যাদিকন্ত নাত্রোদান্ত্রিয়তে। তস্য নৈকাত্যামিত্যাদি ভন্তক্ত

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

ভক্ষাপি সর্নপাৎ চিত্তবিভূশং বিষ্তুত্তে বিষেত্রত জ্ঞানঞ্চ মন্ত্রি সংনাদেদিত বিধিবস্তক্তি সন্ত্রাদে বিশ্বভাবি। প্রত্যুত্ত ভক্যাপ্রনাপিত মনা ন পৃথিদদ্কেদিতি নিষেধবিধেং সন্তাবাদরং মন্দ্র্বীং বেচ্ছবৈর বিষোজনতীতার্থং। বিষ্ণ্প্রাদিতি বিধ্য প্রেমাপাৎ। বতোহস্য চিত্তং বড়েশং অভক্তাদৃশাহিশি সন্ ভন্মাদি মাধুর্যামন্ত্র স্বরূপাধিবালমন্ত্রীতি বিষয়রসৌৎকঠা দ্রীকরণার্থং ভগবন্মাধুর্য্যে নির্দ্ধিং যিচন্তেং তস্য ভন্মাধুর্য্যেৎকঠস্যাপি নির্ভ্তন্নে তচ্চিত্তং ততোহিপি নির্ব্তন্ত্রতীত বিষয়রসৌৎকঠস্যাপি নির্ভ্তন্ত তচ্চিত্তং ততোহিপি নির্ব্তন্ত্রতীত বিষয়রসৌৎকঠস্যাপি নির্ভ্তন্ত অভঃ স্বর্ণ রূপাদিবর্গ্রনীতাদিবরপূর্বী তবিতি বিজ্তাপাধিক্যবশাং কিঞ্চিদ্ধ বদেব তৎক্ষণএব পূন: কঠোরঞ্চ ভবত্যতোদ্রবদ্ধুদ্ম ইতি নতু ক্রত ক্রম্য ইত্যুক্তং। . যথা বড়িশং বলু গলাদি তীর্থ কল নিত্য স্থান পরমণি কুটিন্মরসজং যথাচ মীনলোভন মিষ্ট পিঠান্ন থণ্ডেনার্ত্রত স্থাবাদিভিক তবৈব বিগীত যোগিন ক্রেনার্থ কিল নিত্য স্থান প্রত্তির ক্রিলং ভগবদাকর্যক ধান ভক্তান্ত্রতম্প্রাদান্তিকঞ্চ। যানরপা প্রতিভিত্ত বিদ্যান্য স্থানিচরবিং প্রশ্বন নোক্ষাভিক্সিন কৈতব্যব্যাখ্যানাং কৈবল্যেন্ডাকিভত্ব দোবাদেন বেম সর্বন্তেন্ত্রাণি ধ্যানরপা প্রতিভিত্ত বিদ্যান্য স্থানিচত বিদ্যান্য স্থান নির্দ্ধি পূর্কক প্রত্যগাত্মান্থভব রূপং দদাতি নতু পরমাত্মান্থভব রূপং দদাতি নতু পরমাত্মান্থভব রূপং দেনিত নিয়ার ভগবন্ধী ভগবন্ধী ভগবন্ধী ভগবন্ধী ভগবন্ধী নির্দ্ধি ক্রমণ্ড বেরুপং মেশিশি যাক্ষ ক্রপণি মোক্ষং

উৎস্ক্য জনিত অঞ্চ কলা ঘারা আনন্দ সংপ্লবে নিমগ্ন হন, তাহাতে ছুর্বিগাছ ভগরানের গ্রহণ বিষয়ে সংস্য বেখন বড়িশের তুল্য উপায় স্বরূপ যে তাঁহার চিত, তাহা ক্রমে ক্রেম খেয়ুয় পদার্থ হইতে বিম্ক্র স্বর্থাৎ তাঁহার চিত্ত ভগবদ্ধারণার্থ শিধিল প্রয়ত্ব হইয়া পড়ে॥ ৩৪॥

মৃক্তাশ্রাং যহি নির্বিষয়ং বিরক্তং নির্বাণমূচ্ছতি মন: সহদা যথার্চি:।
আজানমত্র পুরুষে। ব্যবধানমেকমন্ত্রীক্ষতে প্রতিনির্তগুণপ্রবাহ:॥ ৩৫॥

श्रीधवयामी।

বর্হি যদ। এবং নির্ব্বিয়ং ভবতি অত এব মুক্তাশ্রয়ঞ্চ ধোর স্বন্ধং বিনা ধ্যাতর্যাবস্থানাস্থ্যাই। ন চ পূর্ববং শবাদি বিষরঃ জাং। যতন্ত্র বিরক্তং পরমানন্দাস্থ্যাক অতানির্বাণে লরমুক্তি। বৃত্তিরূপতাং পরিত্যকা একাকারেণ পরিণমত ইতার্থঃ। যথা অর্ক্রিজালা আশ্র বিষয়াণগমে মহাতৃত ক্যোতীক্রণেণ পরিণমতে অত্ত অক্তাং দশায়াং অব্যবধানং ধ্যাত্ধ্যের বিভাগ শৃক্তং। এক মধ্যতং আহ্যান্যস্থাত্মীক্ষতে অত্ত হতুঃ প্রতিনির্ভ্যাহ্পগ্তো গুণপ্রবাহো দেহাত্যাধির্যক্ত॥ ৩৫॥

क्रथमन्दर्भः ।

প্রকরণ পাঠালগা দর্শিতমেব ব্যাখ্যানং যুক্তং ইতি। তলেতৎ সোদাহরণং শ্রীকপিলদেববাকাং। ভক্যা পুমান্ স্নাতবিরাগ ইত্যাদিকমপি জ্বেরং। তথাহি। অস্য পূর্বের শ্রুরাতিউজিরমুক্রমিষ্যতীতি ভক্তিমারং দর্শিতং। উত্তরক তত লক্ষণে দৃষ্টে। তল ক্ষণং বদতা তেন ভক্তিঃ দিছে প্রীয়দীতি নৈকাশ্বতাং নে স্পৃহরন্তি কেচিদিভিচ মোক্ষনিরপেক্ষতয়ৈব ত্যা মুখ্যাভিধেয়ত্বমূক্তং। জ্বর্যতাত কোশমিত্যানেন কোশধ্বংসনসাত তদাম্সন্ধিকগুণব্বসূক্তং। অরু ভক্ত্যা পুমানিত্যাদৌত তাদৃশ্যা অপি তথা। ভক্তেশ্বানা দি সাহায্যেনের মোক্ষমাত্র সাধক্ষমূক্ত্যা গৌণাভিধেয়ত্বমূক্তং। তত্মাদ্রাপি তথা ভক্তেরাভাস এব প্রথমতোদর্শিতঃ। এবং দৃষ্ট্যু ত্মবন্নী সর্বের ক্ষকণাহলাদ বিক্লবাঃ। দণ্ডবৎ পতিতা রাশ্বন্ শনৈক্ষার তুই বুরিতার ব্রাখ্য নাশ স্বর্দ্য প্রতিতাৎপর্যাবতাং দেবানাং ভক্তাভাসত্বমূদাহার্যাং॥ ৩৪॥

ত্যাগপ্রকারং যোজয়িতুমাহ মৃক্তাশ্রমিত্যাদিকর ষষ্ঠসন্দর্ভন্য চতুর্ধবাক্যস্যাবতারিকারাং দৃশাং তথাহি। শীবত এবাবিদ্যাক্লিত মারাকার্য্যসন্ধ মিণ্যাক্জাপক জীবত্বরূপনাক্ষাংকরণতাদায়্যাপর ব্রহ্মসাক্ষাংকারো শীবত্বকিবিশেষ ইত্যর্থঃ ঈদৃশমেব তর্কি লক্ষণং শীক্ষাপিলেরে মৃক্তাশ্রমিত্যাদি চতুরীয়ে দর্শিতং। তত্ত্বি। প্রতিনিবৃত্তগুণপ্রবাহঃ সঁন্ আত্মানং পরমাঝানং সকতে॥ ৩৫॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী

দদাতীত্যাত্ ভাগবতরিদিকা: বতং স কলচিদিপি নধোয়াতগ্ৰন্ধ্র কাণাছিলোক মীটো। যথোকং রাজ্ঞা ধৌতালা পুক্ষঃ ক্ষ্মণাদ্মণং নম্কৃতি। মুক্তদর্শবিক্রেশঃ পাছঃ অশরণং বঁথেতি। উদ্বেদ্ধ। তল্পবিলাআদরিতেশ্বমাশ্রিতানাং সর্বার্থবং অক্ত বিদিশ্বেজত কোবিতি। প্রীনারদেনত অবস্কৃলাজ্যুপপৃহনং পুনর্বিভাত্মিছেয়বস্প্রভালন ইতি। বস্তাহ ইত্যনেন বোলিশ্বপি মধ্যে প্রীতক প্রভ্তর এবাতিনন্দিতাঃ। অত্তর পুর্বলোকে ভক্ত্যার্জ্বাপিত্যনা ন পৃথানিদ্দেকদিতি। অপিত্যনা ইতি ভগবতে মনঃ সম্প্র ত্মিন্দানি অবভাবাৎ কথং তত্মাত্তিবিজ্ঞারে। কণং বা দ্বাপহারী ভবেদিতি তথাতে নিলা ছনির্বার্থিব। ভগবানিপি ভক্তানামের হৃদি তিঠেরবোগিনঃ। যহকং অক্ষণা। ভক্তাগৃহীত্যবং প্রহাত তেয়াং নাপৈরি নাব হৃদ্যাভ্রহাৎ অপ্রামিতি। আবির্হোত্মেত বিজ্ঞাতি স্বশ্বন বন্যোত্যাদি॥ ৩৪॥

অতিনিক্ট বোগিপদ্যুক্তে ভগবং স্থাপত্যাগে সতি মনশং কা লশা প্রানিত্যপেকায়ামাহ মুক্তেতি এবং যহি মনোনিবিষয়ং ভগবতি তদা মুক্তাশ্রক প্রাং ধোরস্বদ্ধং বিনা- তস্য ধ্যাত্য্যবস্থানাসন্তবাং। নচ পূর্দ্ধবন্ধাবহানিকঃ শলানি বিষয়ং স্যাং শ্বত্ত্বত্ব বিষক্তং প্রমানন্দায়ভবেন। ন চ প্রমানন্দা ক্লেমেব পুনবলি বিষয়ী কুর্যাং। শনকৈবিষ্ত্তে ইতার শননঃ পদেন পুনবলি তত্তা বিষোধনীয়ন্দায়েভানি নির্বাণ ব্যয়ুক্ত প্রামোত। যথাচি দ্বিক্লিকা তৈল বর্তিভাগে বিবৃক্তা নির্বাতীত্যথাঃ। অত্ত্বস্থাং দ্বাবাং প্রমান্থানং প্রত্যাম্থানং একম্বীক্তে তত্ত্বত্ব সংস্বৃত্তীত্যাই প্রতিনিব্রোক্ত্রাহালিয়ে দ্বিত্তাগাধি ব্সা সং॥ ৩৫॥

ঐ প্রকারে চিত্ত ষধন নির্বিষয় হয়, তথন আব তাঁহার কোন আপ্রাথ থাকে না, কেন না ধ্যেয় সম্বন্ধ ভিন্ন চিত্ত কেবল খ্যাতা হইয়া পাকিতে পারে না এবং প্রমানন্দামূভ্ব হওয়াতে চিত্ত অশ্য বিষয় হইতে বিরক্ত হয়, স্থতরাং যেমন দীপশিথা, তৈল ও বর্ত্তিকা বিরহিত হইয়া নির্বাণ হইয়া যায়, তাহার ভায় তাঁহার চিত্ত সহসা লয় প্রাপ্ত হয়, তাহাতে যোগরত পুরুষ ঐ অবস্থায় দেহাদি উপাধি বিব্দ্থিত হইয়া ধ্যাত্ধ্যেয় বিভাগ শৃত্য অথশু আস্থাকেই অমুগত দেখিতে পান ॥ ৩৫ ॥

নোপ্যেতয়া চরময়া মনদো নির্ক্যা তশ্মিমছিয়াবদিত: হৃথ হৃংধ বাছে। হেতৃত্বমপ্যদতি কর্ত্তরি হৃংখয়োর্যৎ স্বাত্মন্ বিধত্ত উপলব্ধ পরাত্মকার্চঃ ॥ ৩৬ ॥ দেহুঞ্চ ত্রচরমঃ স্থিতমুখিতস্বা দিদ্ধো বিপশ্যতি যতোহধ্যগমৎ স্বর্নপং।

श्रीधवयामी ।

নচ স্থোথিত ইব পুন: সংস্যতীত্যাহ দোহণি সচ পুৰুষ তাৰিমাহিমি ব্ৰহ্মনেং বসিতঃ অবসানং নিষ্ঠাং প্ৰাপ্ত: কয়া মনসো নিযুত্তা চরময়া অবিদ্যারহিতয়েতি সুষ্থাৎ বিশেষ:। তত্রহি অবিদ্যাত্তি নিষ্কোনীং তত্র হেতু: এতরা যোগাভ্যাস কৃতদ্বৈত্যর্থ: নম্বে মণি সুথ তৃ:থয়োরাত্মধর্মতে কৃতো ব্রক্ষৈকাং তত্রাহ তৃ:থরো: স্থত্তংখরো হেতুত্বং ভোক্ত্মং যথ পূর্ক্ষাত্মনি আসীৎ তদণি অসতি অবিদ্যুদ্ধ কৃতে কঠরি অহকারে বিধত্তে ত্রিষ্ঠমেব পশুক্তীত্যর্থ: বত উপলব্ধ পরাত্মকান্তঃ অণরোক্ষীকৃতাত্মতকঃ ॥ ৩৬ ॥

তক্ত জীবস্কতামাহ দেহঞেতি ছাডাাং। চরম: উক্তলক্ষণ: সিদ্ধো দেহমপি ন বিপশ্যতীতি কুড: স্লুথ ছ:বে। ক্ষাসনা ছথিতং উপায় তাত্রৈব স্থিতং তৎস্থানা দপেতং ততো দৈববশাৎ পুনর্গি উপেতং বা নবিপশ্যতি যতঃ বন্ধণং প্রাপ্তঃ। বতোদেহাৎ স্কর্পমধ্যগমৎ তং দেহমিতি বা। সভোপ্যনম্পদ্ধানে দৃষ্টাস্তঃ বাসঃ পরিস্কৃতং ক্টিডটে পরিবেটিডং স্থিতং গ্রহা মদিরামদেনাদ্ধো যথঃ নপশ্যতীত্যর্থঃ॥ ৩৭॥

ক্রমসন্ধর্ভ:।

বস্বরূপ ভূতে মহিদ্ধি অবসিতো নিষ্ঠাং প্রাপ্তঃ সদুপ্তক পরাত্মকাষ্ঠ ইতি সোপ্যেতরেত্যাদৌ ॥ ৩৮ ॥ স্কুপং জীবব্রদ্ধণোর্যাধার্যমধ্যগম্থ ॥ ৩৭ ॥

बिविधनायहळ्यहाँ।

নচাসাবৃপাধিলয়: সুষ্ঠি দশায়াদিবেত্যাহ সোপি সচ পৃষ্ধে জীব: মনসো নিকৃত্যা হেতুনা তশ্বিন্ মহিদ্ধি ব: স্বীয়ো বহিদা
পূর্বং মনসা বলাদপত্ত আসীতশ্বিমহিদ্ধি মনোনাশাং প্রাপ্তে জ্ঞানানন্দ শক্কপে অবসিত: অবসানং নিষ্ঠাং প্রাপ্তঃ মনসো
নত্ত্যা কীদৃশ্যা চরময়া অবিদ্যয়া য়হিতয়েতি স্বয়ুগাবিশেষ: । তত্ত্ব হুবিদ্যাতি নিষ্কানীং তত্ত্ব হেতুং এতয়া বোগাভ্যাস কৃতক্রেত্যাই: । তশ্বিমহিদ্ধি কীদৃশে স্থা হংগ বহিত্তি তস্য শক্ষপত এব স্থা হংগ ৰাজ্যাৎ জীবাদ্ধা স্থা হংগ বাজ্যোত্তবেদিতার্থ: ।
নত্ত্ব হুগায়োলার ধর্মাছমেব দৃষ্টমত জতো বহিত্তি হাং কথমাদ্ধান ইত্যত আহ । অসতি অবিদ্যা ক্লতে কর্ত্তরি অহকাবে
হংগয়ো: স্থা হুংগয়ো হেত্ত্বং স্থা হুংগ হেতৃক্যা কর্ত্তং । তদভিমানাৎ পূর্বে দশায়াং স্বাম্থানি কর্ত্ত্বং তোক্তৃত্বক বদাসীৎ তৎ
সর্বাং উপলব্ধ পরাদ্ধকাঠোয়ং অপরোক্ষী কৃতাদ্ধ তত্ব: । শুদ্ধঃ পৃক্ষবং তশ্বিয়েরবাসতি বিধত্তে তলিউমেব পশ্যতি স্বশ্বিয়হংকারা
ভাবাদিতার্থ: ॥ ৩৬ ॥

তস্য জীবনুজিমাছ দেহক্ষেতি ছাভাাং চরমঃ চরমদশাপল্ল সিলো দেহং ন পশ্যতি কুতঃ স্থুধ ছঃথে ইতার্থঃ। অধ্যগমৎ

মা! আর তিনি মুপ্তোথিত ব্যক্তির স্থায় সংসার প্রাপ্ত হয়েন না, তাঁহার যোগাভ্যাস ক্ষনিত অবিদ্যা রহিত চরম নিবৃত্তি বারা মুখ তুঃথ বাহ্য অক্ষরপ মহিমার অবসান প্রাপ্তি হর, বদিও মুখ ছুঃথ আত্মার ধর্মা, তথাপি তৎকালে ত্রক্ষের সহিত তাঁহার আত্মার প্রক্য হওয়ার সন্তাবনা নাই, যে হেতু মুখ ছুঃথের কারণ যরূপ ভোক্তৃত্ব পূর্বের যাহা আত্মাতে ছিল, অবিদ্যাকৃত কর্তা অর্থাৎ অহঙ্কার বিন্দ্ত হওয়াতে তৎকালে আত্মতত্ব প্রত্যক্ষ করিয়া বোগী তাহা তমিষ্ঠই (ত্রক্ষাহিতই) অবংলাকন করিয়া পাকেন॥৩৬

ফলড়া যোগী তৎকালে জীবমুক্তই হয়েন, তথন উক্ত প্রকারে চরম দশা প্রাপ্ত অর্থাৎ বিদ্ধ হওরাতে আপনার দেইই তিনি দেখিতে পান না, স্থুপ চুংখের অনুভব কোথা ইইড়ে ইইবে ? তাঁহার
দেহ আসন হইতে উথিত হউক্ অথবা উথিত হইরা তাহাতেই থাকুক, কিন্ধা দেই স্থান ইইতে
আন্তেই বা যাউক্ অথবা দৈববশতঃ পুনর্কার স্থান প্রাপ্তই হউক, তিনি স্ক্রপ প্রাপ্ত হওয়াতে মদির।
মদান ব্যক্তি যেমন আপনার কটিতটে পরিবেষ্টিত বন্ধ আছে কি পড়িয়া গিয়াছে অনুসন্ধান করে

বৈবাদপেতমুতদৈববশাত্পেতং বাদোয়থা পরিষ্কতং মদিরামদান্ধঃ ॥ ৩৭ ॥
দেহোহপি দৈববশগং থলু কর্ম যাবৎ স্বারম্ভকং প্রতিসমীক্ষত এব সাহঃ।
তং সপ্রপঞ্চমধিরাচৃসমাধিযোগঃ স্বাথাং পুন নভজতে প্রতিবৃদ্ধ বস্তঃ ॥ ৩৮ ॥
যথা পুজাচ্চ বিতাচ্চ পৃথঙ্ মঠাঃ প্রতীয়তে। অপ্যাত্মভোভিমতাদেহাদেঃ পুরুষত্তথা ॥ ৩৯ ॥
যথোলা কাৰিক্ষু লিঙ্গান্ধু মাৰাপি স্বসম্ভবাৎ। অপ্যাত্মভোভিমতাদ্যথাগিঃ পৃথগুলা কাৎ ॥ ৪০ ॥

विश्ववामी।

নমু কথং তর্হি দেহত প্রবৃত্তি নিবৃত্তী শীবনং বা তত্রাহ দেছোগীতি দৈবং পূর্বকৃংহার: তহলেন গছন যাবৎ স্থারপ্তকং কর্মান্তি তাবং প্রতি সমীক্ষতে শীবত্যেব সাস্থানে ক্রিয়া। নমু তর্হি তামিন পূনা সদা তাৎ তত্রাহ। তং দেহং স্থাদেহাদিত্নাং সপ্রপদ্ধং পূত্রাদি সহিতং পূন ন ভক্তে। অহং মমেতি নাভিমন্তে। আরুচ্ প্রোপ্তা সমাধি প্রত্তে যোগো যেন। অতএব প্রতিবৃত্তং বস্ত আয়তন্ত্রং বেন সাঃ॥ ৩৮॥

প্রতিবোধ প্রকারমাহ বড়্ভিঃ যথেতি অতিলেহবশাৎ আত্মদেনাভিমতাদ্পি পুরাদে মর্জ্য: পিত্রাদিঃ পুরুষো দেহাদের্দ্র ॥ ১৯॥ পৃথগবস্থানাভাবৈহপি ভেদং সন্তাভ্যান । যথোকুকাৎ ইদানীং অবতঃ কাঠাৎ বসন্তবাদ্যোঃ সন্ত্তাৎ। আত্মদেন অয়েঃ

क्रमम्बर्छः ।

্ এবং প্রতিবৃদ্ধ বস্তুরিতি। দোহোপীত্যাদোচৈতি। তশ্বাদস্য প্রারন্ধ কর্মমাত্রাণামনভিনিবেশেনৈর ভোগ:। এবমেবোক্তং তত্র কো মোহ: ক: শোক এক্তমমু পশ্যত ইতি॥ ৩৮॥

সাচ জীবন্মুক্তানাং প্রতিপণ্ডিযু কৈব। যতত্বং পদার্থতাদৃশ এবেতাহে। যথা পুলাচেতি ॥ ৩৯ ॥

তৎপদার্থন্ত স্বতরামিত্যাহ। যথেতি অব্ধ তদ্য মারাশক্তি কার্য্যং মারাজীবেভ্যোহন্যতং চ স্পট্টয়তি। যথেশ কুলাদিতি ব্যেন

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবন্তী।

প্রাপ্তঃ। পরিস্তং পরিস্তিং আসনাছ্থিতং উত্থায় তত্ত্বৈব স্থিতং গতং বা মদিরা মদাস্কো ব্ণা ন পশাতীতি ॥ ৩৭ ॥

নমু তহি তিস্য দেহ: কথং জীবেজন্তাহ দেহোৎপীতি দৈবং পূর্ন সংস্থার: তবদেন গছন যাবং। স্থারস্তকং কর্মান্তি তাবং প্রতিসমীকতে এব জীবতোব সাম্ম: সেন্দ্রিয়া। নমু তন্মিন পুনরাস্তিক: স্যান্তনাহ তং দেহং স্প্রপঞ্চং পুত্রাদি সহিতং পুন নভিজতে বতঃ স্থাঃ স্থাদেহাদি তুলাং অহং মমেতি নাজ্যন্ততে তত্ত্ব হেতুঃ অধিরতঃ স্মাধি পর্যুয়ো যোগো যেন সঃ অতঃ প্রতিবৃদ্ধং বস্তু আত্মতান্ত যে আত্মতান্ত তাত্তিবৃদ্ধং বস্তু আত্মতান্ত যে আত্মতান্ত তাত্তিবৃদ্ধং বস্তু আত্মতান্ত বিশ্বাস স্থানি স্থান সংল্পান্ত বিশ্বাস স্থানি স্থান সংল্পান্ত প্রতিবৃদ্ধং বস্তু আত্মতান্ত বেল সংল্পান্ত স্থানি স্থান সংল্পান্ত বিশ্বাস স্থানি স্থানি

প্রতিবোধার্থ: মুমুক্তি নি তামেবং বিভাব্যমিত্যাহ যথেতি ত্রিভি:। অতিবেহবশাদার্মীদেনাভিমতাদিপি পুরাদে: পৃথগেব মত্য': পিত্রাদি র্যথা তবৈব পুরুষোধীব:॥ ৩৯॥

নহ যথা পুত্ৰবিভাদিভোমেত্য: পৃথগবহিতো দৃশতে ন তথা দেহেক্সিয়াদিভোমীবাত্মা। জীবাত্মতোপি সকাৰাৎ প্রমায়। না, তাহার আয় তাঁহার দেহ বিষয়ে কোন অনুসন্ধান থাকে না॥ ৩৭॥

তাঁহার দেহও পূর্ব্ব সংস্কার বশতঃ স্বীয় ব্যাপার নির্বাহ করত যে পর্যান্ত আপনার আরম্ভক কর্মের সমাপ্তি না হয় সেই পর্যান্ত ইন্দ্রিয়ের সহিত বর্ত্তমান হইয়া জীবিত থাকে, কিন্তু সমাধি পর্যান্ত পেথ আরোহণ করিয়া আত্মতত্ত্ব অবগত হওয়াতে স্বপ্তাদি দেহ তুল্য পুত্তাদি দেহ পুনর্বার প্রাপ্ত হয় না অর্থাৎ ভাহাতে তাঁহার "আমি আমার" এই রূপ অভিমান পরিত্যাগ হয়॥ ৩৮॥

মা। আত্মতত্ত্ব বোধের নিমিত মুস্কুদিগের সর্বাদা এই রাপ বিবেচনা করা কর্ত্তব্য, যেমন অতিশয় সেহ বশতঃ পুক্ত ও বিত্ত আত্ম স্কলেপ করানা করিলেও মনুষ্য বস্তুতঃ তাহা হইতে পৃথক্ এই রাপ প্রতীর্মান হয়, তেমনি এই দেহে আত্ম স্বরূপে অভিষত হইলেও ইহার দ্রুতা পুরুষ ইহা হইতে পৃথক্ এই রাপ প্রতীর্মান হয়। ৩৯॥

এ বিষয়ে দৃষ্টান্ত এই যে, যেমন জলস্তকাঠ ও অগ্নি হ'ইতে উৎপন্ন ধুম, যদিও অত্যক্ত অবিবেকি

স্তে ক্রিয়াস্তঃকরনাৎ প্রধানাক্জীবদঙ্গিতাৎ। আত্মা তথা পৃথগ্তুস্টা ভগবান্ এক্সদংজ্ঞিতঃ ॥৪১ দক্তি স্থানং দক্তি ভানি চাত্মনি। ঈক্ষেতানন্তভাবেন স্তেম্বি তদাত্মতাং ॥ ৪২ ॥

श्रिथतश्वामी।

স্থাক্পত্মেন অভিমতাদপি অভাস্থাবিৰেজিনোহি ধ্যমপাগ্নাভিমানোস্তি উল্লুকাৎ পূর্ব্বিদ্ধাদপি,দাহক: প্রকাশকশ্চাগ্নি: পৃথগেব ॥৪০॥ ভূতাদের্দ্র তিভাঃ পৃথক্ তত্মাদপি ফীংসালভাং তক্ষ সলিভঃ পৃথক্ তথা প্রধানাদপি তৎ প্রবর্ত্তকো ভগবান্ পৃথগিতার্থ: ॥৪২ উপাধিতে। বিবেকমুক্ত্বা ওদৈকামাহ সর্বভূতে্মিতি তদাশ্মতাং মহাভূতাত্মতাং ॥ ৪২ ॥

ক্রমননর্ভ:।

আয়নথ: স্বস্থত্যাৎ স্বোপাদান কারণাৎ উল্লুকাৎ কাঠমূই গোধিকাদয়েহে তোরোবিক্লিকো হল্চ ধ্মন্তস্থাক্থা তত্ত্বপাদানমিয়া পৃথক্। যথাচ। তত্মাদপুলে কাত্ত্বপাদানমসাবিয়া পৃথক্ কীদৃশাদিপি তত্ত্বসাথ। অপ্যাক্ষকোতিমতাৎ। তাপকত্রা ধ্মেপ্যায়ংশ স্থাবেনাগ্রিস্কাপ ত্যা প্তীতাদিপি ॥ ৪০ ॥

তত্ত্ব বিশ্ব লিল স্থানীয়াজ্জীব সন্ধিতাৎ জীবাৎ উলাক স্থানীয়াৎ প্রধানোপাধিক ভগবত্তেজনঃ। ধুমস্থানীয়াভূতাদেঃ। সর্বোন্ধানান কপো ভগবান্পৃথক্। য এবাঝা স্থাংশন তদন্ত্বামিত্যা প্রমায়া কচিদধিকারিণি নির্বিশেষ চিমাত্তথাক্রন এক সংক্তিত হত এব ভঠা তেষামাদিমধ্যাতাবস্থান সাকীতি অত্যোল্কাদিছ মগ্ন্থাবিটেক্কনাংশছং তত্ত্ব প্রকাশকত্বং স্থাংশস্য দাহ কত্ব মিক্কনাংশগ্রেতি বিবেচনীয়ং॥ ৪১॥

তত্ত্ব জ্ঞানীতু দং পদার্থাভেদেন তৎপদার্থমেবং পশ্যেদিত্যাহ। সর্কোতি ত্রিভি:॥ ৪২॥ ৪৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী i

পৃথক্ কথম্বগন্তব্য ইতাত আছ সংথাকা কাদিতি পৃথগবস্থানাভাবেপি মায়া তৎকাৰ্য্যাভ্যাং পৃথগ্ ভূতোজীবাজ্মনত দকাশাৎ প্রমা আ পৃথগেবেত্যভাষেং দৃষ্টান্তঃ। আন যথাশক্ষ্যোকা কশক্ষ্যত পৌনক্ত্যাদেবং ব্যাধ্যেয়ং। উন্মুকাদ্ধ্যানাৎ কাষ্টাদ্ধ্য আমিঃ পৃথগ্ ভবতি । যথাচ উন্মুকাৎ পৃথক্ তথা বিক্ষু বিদ্যাদিপি পৃথপ্যথাচ বিক্ষু বিশ্বাহ পৃথক্ তথা ধ্যাদিপি স্কাৰ্যাৎ পৃথক্ কীদৃশাৎ আহিবেকালি সক্ষাত্ত আহি বিব্যাহ বিশ্বাহ বিশেষণা । ৪০ ॥

দাষ্ঠাতিকং যোজয়তি। প্রধানাত্র ক্রানীয়াৎ জীব সংজ্ঞিতাৎ জীবরূপো মং সংজ্ঞিতঃ সংজ্ঞাং চেতনাং প্রাপ্ত প্রমাৎ বিক্ষ্ বিদ্যানীয়াৎ ভ্তেক্সিয়াতঃকরণাৎ ধ্মস্থানীয়াৎ আত্মা পরমাত্মা অগ্রিস্থানীয়ঃ। পৃণগ্যতোত্রন্তা সহি দৃশ্রাৎ পৃথগের সহ স্থিতোপা সংস্থা যতো ভগবানচিক্তৈয়াশ্র্যাঃ ভগবানের ব্রহ্মসংজ্ঞাং প্রাপ্তঃ কিন্ধাংশিচদধিকারিণি নির্বিশেষ চিন্মাত্রত্বেন ভাতশত ভবতীতার্থঃ॥ ৪১॥

এবং সর্বাধাৎ প্রমান্মানং পৃথগ্ভূতং বিভাব্য তদ্য সর্ববস্তৃনাং কারণত্বং লয়স্থানত্বক প্ল্যেদিত্যাহ সর্বভূতে দ্বিতি কারণলৈয়ব কার্যান্মত্মিত্যবং:। কার্যাণামপি লয়স্থানতাৎ কারণ রূপত্মিত্যাহ সর্বেতি তদাত্মতাং মহাভূতাত্মতাং॥ ৪২॥

জন কর্তৃক অগ্নি স্বরূপে অভিমত হয়, তথাচ দাহক ও প্রকাশক অগ্নি যেয়ন ঐ ধুম ও জলন্ত কার্ছ হইতে পৃথক্ এরূপ বোধ হয় তাহার ন্যায় ॥ ৪০ ॥

ভূত, ইন্দ্রিয়, অন্তঃকরণ এবং যাহার নাম জীব সেই প্রধান এ সকল হইতে দ্রন্থী জাত্মা পৃথক্। মা! জীবদংজ্ঞিত আত্মা হইতে ভ্রেক্ষ দঙ্গিত আত্মা পৃথক্, এই রূপ প্রধান অপেক্ষা আবার তাহার প্রবর্তক ভগবান পৃথক্॥ ৪১॥

কিন্তু যদিও এই প্রকারে উপাধি বশতঃ দেহ হইতে আত্মার ভিন্নতা এই রূপে প্রতীয়মান হয়, তথাপি যোগী ব্যক্তি সর্বস্থিত আত্মাকে এবং আত্মাতে সকল স্কৃতকে অনন্য ভাবে দর্শন করেন,যেমন লোক জরাযুক্ত প্রভৃতি চতুর্বিধ ভূতকে মহাস্তৃত স্বরূপে দেখিয়া থাকে তাহার স্থায় ॥ ৪২ ॥ স্ববোনির যথাজ্যোতিরেকং নানা প্রতীয়তে। যোনীনাং গুণবৈষম্যাত্তথাত্ব। প্রকৃতি দ্বিতঃ ॥ ৪০ তত্মাদিমাং স্বাং প্রকৃতিং দৈবীং সদসদান্ত্রিকাং। তুর্বিভাব্যাং প্রাভাব্য স্থরূপেণাব্রিকিচতে ॥ ৪৪ ॥ ॥ । ইতি শ্রীভাগবৈতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়স্কন্ধে কাপি-লেয়ে সাধনামুষ্ঠানমফীবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ২৮ ॥ ॥ ॥

শ্রীদেবছুতিরুবাচ।

লকণং মহদাদীনাং প্রকৃতেঃ পুরুষদ্যুচ। স্বরূপং লক্ষ্যুতে হ্মীষাং যেন তৎপার্মার্থিকিং॥

औरतवामो ।

পর্যন্তেনজ্যোপাধিক সং সদৃষ্টান্তমাহ। স্বযোনির কার্চের্জ্যোতির মি: গুণবৈষমাাং দীর্ঘণুস্থাদি ভেদাং। প্রকৃতে দেবে ॥ ৪০॥ স্বাংশস্য জীবস্য বন্ধতে ছুং দেবীং দেবস্য বিক্ষো: শক্তিং পরাভাব্য তংপ্রবাবেনৈর জিহ। স্বক্পেণ বল্পবেনাব্তিউতে ॥ ৪৪ ॥
॥ * ॥ ইতি তৃতীয়ে স্থাবিংশঃ ॥ # ॥

একোন এংশকে ভক্তিযোগস্ত বর্ধোচ্যতে। কালস্যত বলং ঘোরা সংস্তিশ্চ বিরক্ত্যে ॥ ০ । উক্তাসুবাদ পূর্বকং ভক্তিমার্গছেদান্ পূচ্ছতি ৰাভ্যাং। লক্ষণং মহদাদীনাং যথা সাংগ্যেষু তথা কথিতে যেন লক্ষণেন তংপাধ-

ক্রমদন্দর্ভ:।

অবতিষ্ঠতে ৰূদ্ধি লীয়ত ইত্যৰ্থ:॥ ৪৪ ॥

্ *। ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়স্থকে শ্রীজীবগোস্থামি কৃত ক্রমসন্দর্ভন্য অষ্টাবিংশোহণ্যায়: সমাপু: । ৮ । লক্ষণমিতি যুগাকং। তৎ মহদাদীনাং কথনং। যো ভক্তিযোগএব মূলমুদ্দেশ্যং যদ্য তাদৃশং প্রচক্ষাতে । ১ ॥

শ্রীবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

পরমাত্মনঃ প্রতিদেহবর্ত্তিত্বেন নানাত্ব্রতীতি উদ্রাভদ্রাদি প্রতীতিশ্চ নবান্ত্রবীত্যাহ স্বযোনিদু কার্ছেদু জ্যোতিরগ্নি: তুর্ণবৈদ্ ম্যাং দৈর্ঘ্য হুস্তত্ব বক্তিমার্জব গন্ধ রূপাদিভেদাং। প্রকৃত্তৌ দেহে আত্মা প্রমান্ত্রা তথৈব ॥ ৪৩ ॥

তক্ষাং প্রকৃতিরেব নানাত্ব দশীয়ত্বাদনর্থকারিণীতি ভাং জয়েদিত্যাহ স্বাং স্বীয়াং স্বোপানিমিত্যর্থ:। দৈনীং কর্মময়ীং বদা দেববা নিজ্যেঃ শক্তিং কর্বিভাব্যাং ভ্রত্যয়াং প্রাভাব্য। দৈবী ছেবা গুণমন্ত্রী মম মানা ত্রত্যয়া। মানেব বে প্রপদ্যন্তে মানা মেতাং তবন্তি তে ইতি ভগবত্তিয়ার জিত্বা স্কর্পেণ অনার্তিটতন্য রূপেণাবতিষ্ঠতে ॥ ৪৪ ॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থনিশিন্যাং হরিণ্যাং ভক্তচেতসাং। অষ্টাবিংশস্তীয়দ্য সম্বতঃ সম্বতঃ সভাং ॥ + ॥
একোনত্রিংশকে ভক্তিঃ সঙ্গা নিস্ত্রণাপি চ। লকাতে প্রাণিসংমান ক্রমঃ কাল্বলক তং॥ ৽ ॥
সাজ্যাং বোগঞ্চ শ্রু পুনর কাম্বাদ পূর্বকং সাম্ভেম্বাহ হৈতমপি ভক্তিযোগং স্প্রভেদং ভ্রুবমাণা পুষ্তি। মহদাদীনাং

অপর যেমন অগ্রি এক হইলেও আপনার উৎপত্তি স্থান কাষ্ঠাদির বৈষম্যে অগ্রি দীর্য স্থাদি ভেদ বশতঃ নামা প্রকারে প্রতীয়মান হয়, সেই রূপ প্রকৃতি স্থিত স্বর্থাৎ দেহাশ্রিত আস্থাও দেহের তুণবৈচিত্র্য বশতঃ নানা রূপে প্রতীয়মান হইয়া থাকেন ॥ ৪৩॥

অতএব জীবের বন্ধহেতু এবং বিষ্ণুর শক্তিরপা ও সং অসং স্বরূপ। এই ছুর্বিভাব্যা প্রকৃতিকে আত্মপ্রদাদ মারা জয় করিয়া বেধগিব্যক্তি প্রক্ষাস্বরূপে অবস্থিত হয়েন॥ ৪৯॥

॥ # ॥ তৃতীয়ে অফীবিংশ ॥ #॥

উনতিংশ অধ্যায়ে বহু প্রকাল ভক্তিযোগ এবং বৈরাগ্য উৎপাদনার্থ কালের বল ও ঘোরতর সংসার বর্ণন ॥ ० ॥

দেবছুতি কহিলেন বৎস ! মহলাদি তত্ত্বের এবং প্রকৃতি ও পুরুষের লক্ষণ সাখ্যাশাস্ত্রে যে প্রকার বর্ণিত আছে, তাহাই তুমি কহিলে, ভগবন্! ঐ লক্ষণের দারাই মহলাদির স্বরূপ যাহা পরস্পার যথা সাংখ্যের কথিতং যম্লং তৎপ্রচক্ষ্যতে। ভক্তিযোগদ্য মোর্গং ক্রছি বিস্তরতঃ প্রভো॥১
. বিরাগো যেন পুরুষো ভগবৃন্ দর্বতো ভবেৎ। আচক্ষ্ জীবলোকতা বিবিধা মম সংস্তীঃ॥ ২॥
কালতে শ্বর্ষকাপ্ত পরেষাঞ্চ পরদ্য তে। স্বরূপং বত ক্র্বিন্তি যদ্ধেতোঃ কুশলং জনাঃ॥ ০॥
লোকদ্য মিথ্যাভিমতে রচকুষ শ্চিরং প্রহুপ্ততা তমতানাপ্রায়ে।

শ্রান্তত্ত কর্মমনুবিদ্ধয়া ধিয়া স্বমাবিরাদীঃ কিল যোগভাক্ষরঃ॥ ৪॥

शिधत्रवामो ।

মার্থিকং পরস্পার বিভক্তমিত্যর্থঃ। যো ভক্তিযোগো মূলং প্রয়োজনং যদ্য তৎ যশুলং তৎ কথনং তদ্য ভক্তিযোগদা নার্গং প্রকারং বিভরতো মে ত্রহি॥ ১॥

যেন সংস্থ তীনামাথ্যানেন বিগতরাগে। ভবেৎ॥২॥

ঈশ্বর স্বরূপদ্য মহাপ্রভাবদ্য তে তদাত্মকদ্য খিছেতো: যন্ত্রাৎ কুশলং পুণ্যং কুর্বস্তি॥ ৩॥

অচকুষ: অজ্ঞত অতো মিণ্যাভূতে দেহাদৌ অভিমতি রহন্বারো যস্য অতঃ কর্মস্থ অমুবিদ্ধরা আসক্তরা ধিলা প্রায়স্য অতএক অনাপ্রয়েহপারে তমসি সংসারে চিরং প্রস্থাস্য লোকস্য প্রবোধনায় স্বং যোগপ্রকাশকো ভাঙ্করঃ কিলাবিভূতি। ২সি ॥ ৪॥

ক্রমসন্দর্ভ:

বিরাগ ইতি যুগাকং॥ ২॥ কালস্য স্থাপনাচকু॥ ৩॥ যোগস্য ভাস্করং প্রম প্রকাশক ইত্যুর্থঃ॥ ৪॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

লক্ষণং সাংথাের সাংথা শাল্রেয় যথাতথা কথিতং যেন লক্ষণেন অমীষাং মহদাদীনাং স্বরূপং তৎপ্রসিদ্ধং লক্ষ্যতে জাসতে কীনৃশং পারমাথিকং পরম্পর বিভক্তমিতার্থ:। তৎস্বরূপজ্ঞানং যমুলং যৎকারণকং প্রচক্ষ্যতে যং বিনা তেষাং স্বরূপং জ্ঞাতমপ্যজ্ঞাতমেব ভবতীতার্থ:। তস্য ভক্তিযোগস্য মার্গং প্রকারং ক্রছি॥ ১॥

ভক্তৌ প্রবেশায় কিঞ্চিধেনাগ্য মপেক্ষাত ইতি তদর্থং পৃচ্ছতি বিরাগ ইতি। তাঃ সংস্তীরাচক্ষ্বনেন সংস্ত্যাখ্যানেন ॥ ২ ॥ কালস্য চ স্বরূপমাচক্ষ্বত স্ক্রপস্য। যদ্ধেতোঃ যতঃ কালভয়াদ্ধেতোঃ ॥ ৩ ॥ ं

লোকস্য মিথ্যাভিমতেরভিমান জাডানিবর্তনায় অচকুষ্ণকু: প্রকাশদানায় তমসি সংসাবে প্রস্থপ্য স্থাপ ত্যোনাশায়। কর্মস্বাসক্তয়া বৃদ্ধা শ্রাস্তস্য শ্রমণবল সংশোষণায়। যোগভান্তরঃ ভক্তিজ্ঞানযোগ কমল প্রকাশকো ভান্তরঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥

বিভক্ত, তাহা লক্ষিত হয়। পরস্ত তোমার ঐ সকল কথনের প্রয়োজন যে ভক্তিযোগ ভাহার প্রকার কি ? আমাকে বিস্তার করিয়া বল ॥ > ॥

অপর, হে ত্রহ্মন্! জীবলোকের যে রূপ বিবিধ সংসার হয়, তাহাও আমাকে বল। ঐ সংসারের আথ্যান দারাই পুরুষের তুদ্ধিয়ক অনুরাগ নিহত হইয়া থাকে॥ ২॥

হে প্রভো! তোমার যে অপর একটা কাল নামক স্বরূপ আছে বাহা কারণসকলেরও কারণ, অতএব মহাপ্রভাব বিশিষ্ট তাহাও বল যাহার ভয়ে লোক সকল পুণ্যের অনুষ্ঠান করিয়া থাকে॥ ৩॥

হে ভগবন্! যে সকল লোক অজ্ঞ এবং মিথ্যা স্বরূপ দেহাদিতে অহংর্জিকারী ও কর্মাসকত বৃদ্ধি দারা পরিশ্রোন্ত, অতএব অপার সংসারে চির প্রন্থত, তাহাদের প্রবোধ নিমিন্ত, তৃমি যোগপ্রকাশক ভাস্কর রূপে আবিস্থৃতি হইয়াছ ॥ ৪ ॥

গ্রীগৈত্তেয় উবার্চ॥

ইতি মাতুর্বচঃ শ্লক্ষং প্রতিনন্দ্য মহামুনিঃ। আবভাষে কুরুঞ্জেষ্ঠ প্রীতস্তাং করুণার্দ্দিতঃ॥ ৫॥ জ্ঞানাসুবাচ॥

ভক্তিযোগো ব**ত্**বিধো মার্গৈ ভাবিনি ভাব্যতে। স্বভাবগুণসার্গেণ পুংসাং ভাবো বিভিদ্যতে ॥ ৬ অভিসন্ধায় যদ্ধিংসাং দন্তং মাৎসর্যামেব বা। সংরম্ভী ভিন্দৃণ্ ভাবং ময়ি কুর্য্যাৎ দ তামসঃ ॥ ৭

धिरतश्वामो ।

মুক্রং স্থানরং ॥ ৫॥

মার্গৈ: প্রকারবিশেধে:। তানেবাহ স্থভাবভূতা যে গুণান্তেষাং মার্গেণ বৃত্তিভেদেন তাব: অভিপ্রায়: ফলসংকরভেদাত্তকিভেদ ইতার্থ:॥ ৬॥

অভিসন্ধায় সংবল্পা সংরম্ভী কোধী ভিন্নদৃক্ ভেদদশী বো ভাবং ভক্তিং কুর্যাৎ স ত্রিবিধাহপি তামস: ॥ १॥

ক্রমসন্ত:।

ইতি ভক্তিমহিমজ্ঞানজন্বাৎ প্রতিনন্দ্য প্রীতঃ। প্রশ্নেষ্ঠিবেন করণা তু দৈন্যেন ॥ ৫॥

অনন্য নিমিন্তা নিশুণ। ভক্তিরপি রুত্তিভেদেন বছবিধেত্যাহ। মার্কৈঃ প্রকারবিশেষেঃ যতঃ স্বস্য ভক্তিযোগদৈয়ৰ মার্কেণ বৃত্তভেদেন প্রবাদিন। ভাবস্যাভিমানস্য। তত্তেদেন দাস্যাদিনা। গুণানাং তম আদীনাঞ্চ। তত্তেদেন শিংসাদিনা প্ংসাং ভাবোহভিপ্রায়া ভিনাতে। অনু মুকাফলটীকাচ। অসমাত্যন্তিকঃ। ততঃ পরং প্রকারান্তরাভাবাং। অনুসাব ভক্তিযোগ ইত্যাখ্যা। অন্তর্থন ভক্তিশক্ষ্যাতিব মুখ্যজাং। ইত্রেমু ফলেষু এব অহুরাগঃ নতু বিজ্ঞো। ফলাভাবে ভক্তিত্যাগাদিত্যেয়া। শ্রীগোপালতাপনীশ্রতী চ। ভক্তিরস্য ভক্তনং তদিহামুত্রোপাধিনৈরাখ্যেনামুদ্মিন্তনঃ ক্ষনমেব তদেব চ নৈক্র্যামিতি। ভাবিনীতি ভাবযুক্তে পুরুষ ইত্যবিঃ॥৬॥

অত্র বিশেষো ভক্তিসলর্ভে দৃশ্যঃ। তত্ত্ব স্বমার্গেণ ভাবমার্গেণ চ ভেদাঃ সতাং প্রসঙ্গাদিত্যাদিনা। যেবামহং প্রিয় আল্লেত্যা দ্যস্তেন দর্শিতাঃ। অথ কেবল স্বরূপ সিদ্ধা উদাহিয়তে। তত্ত্ব সকামা কৈবল্যকামাচ উপাসক সংকর শুণৈত্তত্বদুগুণত্বেনোগচর্ব্যতে-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

দেবানাং গুণলিকানামিত্যনেন নিশুণায়। ভক্তেরজন্তাদিহ প্রথমং সগুণাং ভক্তিং লক্ষিত্মাহ। ভক্তিযোগ: একএব ভাবিনি ভাবেছি প্রায় স্তম্বতি পুরুবে মার্নো: প্রকারবিশেষে বছবিধাে ভাবাতে চিস্তাতে জ্ঞায়ত ইত্যর্থ:। সচ ভাব: স্থভাব ভূতা যে গুণা স্তম আদম স্তেষাং মার্নেণ বৃদ্ধিভেদেন বিভিন্নতে নানাবিভেদবান ভ্বতি। ভক্তি: স্বরূপতাে নিশুণাপি পুংসাং স্বাভাবিক তম আদি গুণোপরকা সতী তামস্যাদি নামভি: সগুণা ভবতীতি ভাব:॥ ও॥

তত্র প্রথমং তামসীং ভক্তিং লক্ষয়ন ভক্তিন্তামসী স্যাদিতি বক্তমনোচিতাং পরামুশন্ তদ্বান্ পূক্ষ এব তামসাদি শইসকচাত ইত্যাহ। অভিসদ্ধায় সম্বন্ধ। সংরম্ভী ক্রোধী ভিন্নপূক্ ভেদদর্শী অন্মিন্নির পর্মিন্নপি অথ ছংখং সমানং ন পশ্যতীতি নিরম্পকশ্য ইত্যার্থঃ। মো মান্নি ভাবং ভক্তিং কুর্যাৎ স ত্রিবিধােছিপি তামসঃ। অস্যান্তামস্যা ডক্তেকৈবিধাং স্পাটমুক্তং বৃহদ্ধান্দীয়ে যথা। যশ্চা-অস্য বিনাশার্থং ভদ্ধতে শ্রদ্ধা হ্রিং। উক্তবং পৃথিবীপাল সা ভক্তি তামসাধ্যা। যো হর্চমেৎ কৈতব্ধিয়া বৈর্থিণী অপতিং যথা।

মৈত্রেয় ক্ছিলেন হে কুরুপ্রেষ্ঠ। মহামুনি কপিল, মাতার এই শোভন বাক্যে আনন্দ প্রকাশ করিলেন এবং তাঁহার প্রতি করুণার্জ চিত্ত হইয়া প্রীতি প্রকাশ পূর্বক কছিতে সাগিলেন। ৫।

হে ভাবিনি! ভক্তিযোগ বছ প্রকার, বিশেষ বিশেষ মার্গ দারা প্রকাশ হইয়া থাকেন, অতএব সভাব স্বরূপ যে সকল গুণ, ভাহাদের বৃদ্ধি ভেদে পৃক্ষধের অভিপ্রায় ভিন্ন ভিন্ন হয় অর্থাৎ প্রদেশর গুণাস্ক্রপ ফলসংকর ভেদে ভক্তির ভেদ হইয়া থাকে। ৬ ।

हিংসা অথবা দম্ভ কিন্তা মাৎস্ব্য করিয়া ক্রোধী পুরুষ ভেদ দর্শন পূর্বক আমাতে যে ভক্তি করে

বিষয়ানভিসন্ধায় যশ ঐশ্বর্যমেব বা। অর্জাদাবর্জয়েদেয়া মাং পৃথগ্ ভাবঃ স রাজসঃ॥ ৮॥ কর্মানিহারমুদ্দিশ্য পরস্থিন্ বা তদর্পণং। যজেদয়েউব্যমিতি বা পৃথগ্ ভাবঃ স সান্ধিকঃ॥ ৯,॥

श्चीधतवामी।

পুগগ্ভাগো ভেনদশী ॥ ৮ ॥

কর্মনিছবিং পাপজয়ং প্রস্থিন প্রমেখনে তদপণিং ভগবৎ প্রীতিমৃদ্দিশ্যতার্থঃ। যইবামিতি বিধিসিদ্দিশোতার্থঃ।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তত্র সকামা দিবিধা তামসী রাজসী চতত্র পথুর্কিস্যা গুণমার্গেণ ভেদমাহ। অভীতি ত্রিভিঃ। অভিসন্ধায় সংক্রা সংরম্ভী সক্রোধঃ ভিন্নদৃক্ অস্মিরিব সর্ক্রত যৎ স্থতঃখং তদবেতা নিরমুকস্প ইতার্থঃ। অতা সংরম্ভীতি লোভাদীনামুপলকণং জেয়ং॥৭॥

উত্তরা যথা বিষয়ানিতি। পৃথক্ মডোংনাতা বিষয়াদিখেব ভাব: শুসুং যদ্য নতু মন্ত্ৰীতি রাজসত্ব হেতুতা দর্শিতা॥৮॥ অথ কৈবল্যকামা সান্ত্ৰিকোর। সাযথা কর্মনির্হারমিতি কর্মনির্হারং মোক্ষম্দিশা পর্মিন্ধ্রমেখরে বো বা কর্মার্পিং কুকতে যোবা যইবাং সর্ক্ষোং নিতানিধি প্রাপ্তরেনাবশুনেব তৎ পূজনং কর্ত্তবামিতি বৃদ্ধা নতু ভক্তিতব্জ্ঞানেন যো যজেৎ পর্মেশ্বরং পূজ্যতি অত্তর পূর্ক্বং পৃথগ্ ভাব: ভক্তে: পৃথক্ মোক্ষমেব পুরুষার্থত্বেন ভাবয়ন্ স সান্ত্রিক উচ্যতে। উত্তরস্যাপি তাৎপর্যাং কর্মনির্হার এব ভ্রোদ্তি। উদ্ধেষ। সাহ্তিক: কারকোইসঙ্গীতি কৈবলাং সান্ত্রিকং জ্ঞানমিতি। সান্ত্রিকং স্থ্যাত্মোথমিতি চ তৎপাধন

শ্ৰীবিশনাপচক্রবড়ী।

নারায়ণং জগলাণং সা বৈ তামসমধ্যমা। দেবপূজাপরান্ দৃষ্ট্য স্পর্জগ বো ২র্জয়েরিং। শৃগুর পৃথিবীপাল সা ভক্তিস্তামসোত্রনা। এবং রাজস্যাঃ সাহ্বিক্যাণ্চ ভক্তে স্থৈবিধ্যমুক্তং দ্রেষ্টব্যং॥ १॥

পুথক মতোহনাত্র বিষয়াদিছেব স্পূহা যদ্য সঃ॥ ৮॥

কর্মনের বিং কর্মকরং উদিশ্য যে যজেং। যায় ভজেং কর্মকরএব প্রয়োজনমিত্যর্থঃ। পরিমান্ পরমেশ্বরে তদর্পণং তদ্য কর্মণোহর্পণং যত্র তদর্পণায়ান্তপা যো যজেং স্বধ্মার্পণ প্রচুরাং শ্রবণাদিভজিং যং কুর্যাদিত্যর্থঃ। যইবাং সর্কোষা নিত্যবিধি প্রাপ্তবেনাবশ্যনের কর্ত্তবাং স্বাশ্রমকর্মবন্তদেজনমিতি বুদ্ধার স্বাশ্রম ধর্মাচরণ পূর্ককং যো যজেং পৃথগ্ ভাবঃ ভজেঃ পৃথগ্ ভূতে মোকে ভাবোহভিপ্রায়ো যস্য সঃ। এবমেষাং নববিধৈর সকামা যথোজনাধিক্যা জ্ঞোন। তত্র সাজিকী ভক্তিঃ কস্যচিজ্ জ্ঞানং জন যতি তত্রাপি জ্ঞানস্য গুণভাবে স্বপ্রাধান্যে জ্ঞানমিশাভিরতিং নিগুণামেবোৎপাদয়তি জ্ঞানস্য প্রাধান্যে স্বাং তদক্ষ ভূতাও সায়জ্যম্ভিমের। ক্যাচিদখ্রমেগাদি স্কল কর্মার্পণবভী ভক্তি নাতু কর্মার্পণম্মী স্থ্যেশ্র্যময়ং সালোক্য মোকং নিক্ষল কর্মার্পণবভী গুণান্তবিভিং বাজস্যান্তমের ফলং ভক্তিমহিয়া কিঞ্চিন্তি

ঐ ত্রিবিধই তামদ ভক্তি॥ १॥

অপর বিষয় অর্থাৎ আমা ব্যতিরিক্ত অন্য দ্রব্যে স্পৃহা অথবা যশঃ একিয়া ঐশর্য্য অভিসন্ধি করিয়া ভেদ দর্শন পূর্বকে প্রতিমাতে আমার যে অর্চনা করে অর্থাৎ ভক্তি করে তাহা রাজস ॥ ৮॥

আর কর্মনির্হার অর্থাৎ পাপক্ষয় অথবা ভগবৎপ্রীতিকাম ইইয়া ভগরানেতে কর্মফল সমর্পণ অথবা নিত্যবিধি প্রাপ্ত প্রযুক্ত অবশ্যই যজ্ঞ করিছে হইবে ইত্যাদি বিধি উদ্দেশ করিয়া ভেদ দর্শন পূর্বেক যে ব্যক্তি বজ্ঞ করে অর্থাৎ ভক্তি করে তাহা সান্ধিক। তাৎপর্য্য-তামস, রাজ্ঞস, সান্ধিক, এই তিন প্রকার ভক্তির মধ্যে পর পর প্রেষ্ঠ, ঐ ত্তিবিধা ভক্তিতে তিনটা তিনটা করিয়া নয় প্রকার ভেদ অর্থাৎ অধম তামস, মধ্যম তামস ও উত্তম তামস, এই রূপ রাজস এবং সান্ধিকেরও ভেদ ইইতে পারে, সগুণা ভক্তি প্রথমতঃ নয় প্রকার হয়, আবার প্রত্যেকের প্রবণ কীর্ত্নাদি নবধা ভক্তাঙ্গ ভেদে

মদ্গুণঞাতিমাত্রেণ ময়ি সর্বাগুরাশায়ে। মনোগতিরবিচ্ছিনা যথা গঙ্গান্তসোহস্থা। লকণং ভ্তিযোগদা নিগুণিদ্য হুদাহতং। অহৈতৃক্যব্যবহিতা যা ভক্তিঃ পুরুষোভ্যে॥ >०॥

अध्वयामो ।

ভেদদর্শিবং অর্চাদাবর্চনঞ্চ ত্রিছপি সমানং॥ ১॥

তদেবং তামসাদি ভক্তিযু ত্ররন্ত্রয়ে ভেদাঃ তাস্থ যথোত্তরং শৈষ্ট্রাং এবঞ্চ শ্রবণ কীর্ত্তনাদয়ে। নবাপি প্রত্যেকং নব নব ভেদাঃ তদেবং সগুণা ভক্তিরেকাশীতি ভেদাঃ। নির্প্তণা ভক্তিরেকবিধৈব তামাহ মন্পুণশ্রতিমাত্রেণতি হাভাাঃ। অবিভিন্না সন্ততা অহৈত্কী ফলামুসদ্ধানশূলা অব্যবহিতা ভেদদর্শন রহিতাচ। মন্পুণশ্রতিমাত্রেণ মদি পুরুষোত্রমে মনোগতিরিতি যা ভক্তিঃ সানিপ্রণিয় ভক্তিযোগ্য লক্ষণমিত্যহয়ঃ লক্ষণং স্বদ্ধাণঃ ১০॥

क्रमनमर्जः। •

সাধ্যয়ো: স্গুণড়ং। অত্তোদাহরণং বজেদিভি উদাহরণমেব ॥ ৯ ॥

অধ বস্যা এব সংর্কাংকর্ব জ্ঞানার্থমেতে ভব্লিভেদা নির্মাণিতাঃ সা ভব্লিমাত্রদামছারিছামা নিশ্বণা কেবলা বর্মণিছা নির্মাতে। ইর্মেবাকিঞ্চনাদ্যাধ্যবেন সর্বোর্ছমণাভিহিতা। তামাহ। মাল্পেতি ব্যাকেন। মাল্প্রভিমাত্রেণ নতু তরো দল্যান্তর সিদ্ধান্তিপ্রারেণ প্রাক্ত গুলমবর্ষনানাং সর্বেষাং গুহা করণাগোচরাপদবা। তস্যাং শেতে গুহুতরা নিশ্চলতরা চ তিঠিতি বক্ত্মিন্ মিয়। অবিচ্ছিরা বিবরাজ্বরেণাবদ্ধেত্র মালকা যা মনোগতিঃ সা। অবিচ্ছিরতে ছাল্পছাং। লকণং বর্ষাং। নতু তস্যা গুলহুতেঃ কা বার্তা উদ্দেশ্যান্তরাভাবেন মনোগতিছাভাবেনচ ছিধাপি নির্দেশ্য করাহাং। ত্রাহ অইহতুকী ফ্লাহ্সদ্ধান রহিতা অব্যবহিতা বর্ষানাগ্রিকা তাল্লী যা ভক্তিঃ প্রোক্রান্তির স্বন্ধাত্রং সাচ তক্ত বর্ষানিত্রিকা মালকাল্যা। নতু আরোগাদি । নির্দেশ্য বর্ষানাগ্রিকা তাল্লী যা ভক্তিঃ প্রোক্রাহিছাং। সান্ধিকঃ কারকোহস্পীত্যাদির্ নির্প্রেণ মালপ্রান্ত ইত্যাদিভি:। তদাশ্রের কির্দ্ধানাহিক ব্যাপনাং। মাং ভক্তি গুণাং স্বর্ধান নির্প্রকং। স্থলং প্রিয়মান্ত্রানং সাম্যা সন্ধান্যে গুণা ইত্যাত ওলাণান্য নির্মাণ্য ক্রিকাণ্ড ক্রেরণাং। ১০॥

<u> বীবিখনাথচক্রবর্তী</u>

দ্ধিক্ষপি ফলপ্রাপ্তৌ সভ্যামপি ক্সাচিত্বজ্জিসত্ত্ত্ সভ্যং দিশত্যথিতিমথিতো নৃণামিত্যাদি দৃষ্ট্যা সাপি কালে নিওঁ গৈব ব্যাদিতি জ্ঞেমং ॥ ১॥

দেবানাং গুণলিক্ষানামিত্যন্ত লক্ষিতামেব নিগুণিং ভক্তিং স্থবোধার্থং পুনলক্ষিতি। মাল্ণ প্রবণমাত্তেণৈব মধ্যেব সর্বাপ্তঃকরণবর্ত্তিতে স্থধোয়মূর্ত্তে। প্রীপুরুষোত্তমে মনসো গতিরবিচ্ছিলা ভবতি। যথা অনুধৌ গলাওসোগতিরিতি হেতোরেতদর্থমেব ভক্তিযোগস্য লক্ষ্ণমূল্যভূমিতারন্ত্র:। যতো নিগুণ প্রবণাদি ভক্তিযোগেনেব মরি মনোণতির-বিচ্ছিলা ভবেদতো ভক্তিযোগং সলক্ষণমূল্যভূমিতি কলিতোহর্থ:। অনুধিনা স্বলহাজিং পরাবর্তিস্যাপ্যস্তুসো যথা অনুধাবেব গতিত্তথা মলালি পারমেন্তা সান্তি, সালোক্যাদি ফলৈঃ প্রলোভিত্যাণি তস্য মধ্যেব গতিরিতি। এবঞ্চ ভক্তমনসো গলা জলন্তাত্তন দ্রোতা গৈতা পারিত্রা জগং প্রালালীয়াকানি তদেব লক্ষণং কিমিত্যপেক্ষানামাহ অইছেক্লী হেতুং কানগং ফলাস্তরাভিস্ক্রিক তল্পতিতা স্থাকাশবাৎ স্বতঃ কল রূপত্রাচ্চ নেয়ং জ্ঞানখোগাদিবদিতি ভাবঃ। সাধুসক প্রেরোত্ত প্রথম বানশভ্মিকভাল তলা হেতুক্ ফলকে বস্তত ইতি প্রথমস্ক্রেবর ব্যাখ্যাতঃ অব্যবহিত। জ্ঞান কর্লাদি ব্যবধান শূন্যা যা ভক্তিঃ গৈব নিগুণেত্যর্থ:। ভুক্তেরাম্পদ প্রদ্ধানিবাস ক্রথানীনামণি নিগুণত্বং নিগুণো মনপাশ্রর ইতি সংক্রেবান্ত নিগুণিতি মরিকেত্ত ভ্রিকিপিনিতি নিগুণং মন্দ্রণাশ্রমিত্যেকাদশহুলাক ক্রেরং ॥ ১০ ॥

ঐ সগুণা ভক্তিশ্ৰকাশীতি প্ৰকার ইয়া থাকে। ১।

মা ! নিশুণ ভক্তিযোগ কি রূপ ভাহাও বলি প্রবণ কক্ষন। আমার গুণ প্রবণ মাত্রে সর্বান্তর্যামী যে আমি আমাতে অর্থাৎ পুরুষোভ্রে সমুদ্রগামি-গঙ্গা সলিলের ভায় অবিচিন্ন। ও ফলামুসকান রহিতা এবং ভেট দর্শন বর্জিতা মনের গতিরূপ যে ভক্তি, তাহাই নিশুণ ভক্তিযোগের লক্ষণ ॥ ১০॥ সালোক্য সাষ্টি সামীপ্য সারূপ্যৈকত্বমপুতে। দীয়মানং ন গৃহন্তি বিনা মৎসেবনং জনাঃ॥ ১১ সূত্রব ভক্তিযোগাথ্য আত্যন্তিক উদাহৃতঃ। যেনাতিব্রজ্য ত্রিগুণাশুদ্ধবায়োপ্রদ্যুতে॥ ১২॥

প্রীধরস্বামী।

ভক্তানাং নিজামতাং কৈমৃতিক ভাষেনাহ সালোক্যং ময়া সহ একস্মিন্ লোকে বাসং । সাষ্টিং সমানৈশ্বীং। সামীপ্যং নিক্ট-বৰ্ত্তিবং। সাক্ষপান সমানক্ষপতাং একবং সাবৃদ্ধ্যং উত অধি দীয়মানম্পি ন গৃহুন্তি কুতন্তংকামনেত্যুৰ্থ: ॥ ১১ ॥ কিমিতি তহি ভল্তে ভক্তেবে প্ৰমুফ্লবাদিত্যাহ স এবেতি। নহু তৈওোগং হিছা ব্ৰহ্মপ্ৰাপ্তিঃ প্ৰমুফ্লং প্ৰসিদ্ধং স্ত্যং তত্ত

ক্রমসন্দর্ভ:

অহৈতুকী হ্বনেব বিশেষতো দশ্যতি। জনা মদীয়া । সালোক্যাদিকমপি উত অপি দীয়মানমপি ন স্কুন্তি মংসেবনং বিনেতি। গৃহুতি চেতুৰ্হি মংসেবনাথনেব গৃহুন্তি। নতু তদ্ধমেবেতাৰ্থ:। সাষ্টি: সমানৈশ্ব্যং একত্বং ভগবংসাবৃজ্যং ব্ৰুসাবৃজ্যক। অনুযোক্তরীলাত্মকত্বেন তৎসেবনাথ্বাভাবাদগ্রহণাবশ্যকত্বমেবেতি ভাব:॥১১॥

তশ্বাং সএব নির্প্ত ভিত্তবোগো ভক্তিযোগাথ্য আত্যন্তিকঃ সএবচ অত্যন্তিমফলতয়া ভবতীত্যপবর্গ ইত্যর্থঃ। নাত্যন্তিকং বিগণয়ন্তীত্যাদেঃ আত্যন্তিক প্রলম্ভয়া তৎপ্রসিদ্ধেশ্চ। নকু গুণঅয়াত্যম পূর্বকং ভগবৎসাক্ষাৎকার এবাপবর্গ ইতি চেৎ তস্যাপি তাদৃশ ধর্ম্মরং স্বতঃ সিদ্ধনেবৈত্যাহ । যেনেতি। যেন কদাচিদপ্যপরিত্যাজ্যেন মম ভাবায় বিদ্যমানতায়ৈ সাক্ষাৎকারায়েত্যর্থঃ। উপপদ্যতে সমর্থো ভবতি। তদ্ধনেয়েবাং মৎসাক্ষাৎকারো ন ভবতীত্যর্থঃ। যন্তা। মন্তাবায় মৎপ্রেমবিশেবায়েতি। প্রেমমাত্রশূন্যং তু সালোক্যাদিকমপি নান্তীতি ভাবঃ। যচ্চ ব্রজ্বানিমিয়ামিত্যাদেঃ। ব্রক্ষকৈবল্যং তু তেষাং ন ভবত্যেব।
যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে ইত্যাদিন। সনিদ্ধারণ ভগবৎ প্রতিজ্ঞানাৎ তৎক্রতুন্যায়াচ্চ। রাজন্ পতিপ্রক্রিত্যাদে তাদৃশ ভক্তেরেব
হল্লভিম্বাচ। যথোক্তং পঞ্চমে। যথাবণ্বিধানমপ্রগশ্চ ভবতি। যোহসে ভগবতীত্যাদিকং। অনন্যনিমিন্তভক্তিযোগ লক্ষণ

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অনুধৌ গলান্তসোগতিরিতি দৃষ্টান্ত ব্যক্তিতমর্থং স্পষ্টয়মুক্ত লক্ষণভক্তিমতাং জনানাং বিকামত্বং কৈম্ত্যন্যয়েনাহ।
সালোক্যং ময়া সহৈক্সি লোকে বাসং। সাষ্টি সমানৈশ্ব্যং। সামীপ্যং নিক্টবিষ্টিত্বং। সার্লগং সমানরপত্বং। একত্বং সাযুজ্যং।
উত অপি দীয়মানম্পি ন গৃহন্তি কুতত্তৎ কামনেতি ভাবং। মুংসেবনং বিনেতি কেচিদগৃহন্তি চেনাংসেবার্থমের গৃহন্তীত্যথং॥ ১১॥

কিমিতি তর্হি ভল্পতে ভক্তেরের পরম ফলস্বাদিত্যাহ স্ত্রেবিত। অত্যতে স্কান্তে ভব আত্যন্তিক: ন্যাত্যন্তিক শব্দেন সাযুজ্যমুচ্যত ইত্যাহ। ভক্তিযোগাথ্য: ভক্তিযোগনামায়ং ততোহপ্যধিকং ফলমিত্যর্থ:। অত্তর্তবাপর্বর্গ শব্দেন কচিনু লাণি নির্বাণশব্দেন চার্ম্চাতে যহুক্তং পঞ্চম। অপবর্গশ্চ ভবন্তি যোহণো ভগবত্যনন্য নিমিত্ত ভক্তিযোগ লক্ষণ ইতি সপ্তমেচ। অপোগভালন্তমিহেত্যাদো তদু লানির্কাণ স্বং বিছর্প। ইতি। হরাবৈকান্তিকীং ভক্তিং মোক্ষমাহ মনীষিণ ইতি প্রাণান্তরে চ।
ভক্তির্স্য ভল্পনং তদিহামুত্রোপাধিনৈরাস্যেনামুম্মিন্ মনংকল্পনমেতদেব নৈক্ষামিতি খোপাল্তাপনী শ্রুতিন্চ। নমু তিপ্রপ
মনাহ্রাং নোক্ষত্রব প্রমৃ ফলং প্রসিদ্ধং। সত্যং তন্তু ভক্তাবাহ্সক্ষিক্ষিত্যাহ যেন ভক্তিযোগেন অভিব্রন্ধ্য অতিক্রম্য উলবেল্যতি যাবং। মচ্চরণাশ্রণ মাত্রেণের ত্রিগুণাত্মক সংসার সিদ্ধো গোপালায়মানত্ম লাতে ভছ্লজ্বন মহুসন্ধানং বিনৈব ভবতীতি

বে সকল ব্যক্তির এই রূপ ভক্তিযোগ হয় তাহাদের কোনই কামনা থাকে না, অধিক কি ? তাহা দিগকে সালোক্য (আমার সহিত এক লোকে বাস,) সাষ্টি (আমার ভুল্য ঐখর্য্য) সামীপ্য (সমীপে অবস্থান) সারূপ্য (সমান রূপত্ব) এবং একত্ব অবীৎ সাযুজ্য, এই স্কল মুক্তি দিতে চাহিলেও তাঁহারা আমার সেবা ব্যতিরেকে কিছুই গ্রহণ করিতে চাহেন না ৮ ১১ ॥

মা। ঐ প্রকার ভক্তিযোগকেই আত্যন্তিক বলা যায়, উহা হইতে পরম পুরুষার্থ আর নাই। মানবি। ত্রৈগুণ্য ত্যাগ করিয়া ব্রহ্ম প্রাপ্তি পরম ফল বলিয়া প্রাসিদ্ধ আছে সত্য, কিন্তু তাহা আমার নিষেবিতানিমিত্তেন স্বধর্মেণ মহীয়সা। ক্রিয়াযোগেন শস্তেন নাতিহিংত্রেণ নিত্যশঃ॥ ১০ । মদ্বিষ্ট্য দর্শন স্পর্শ পূজা স্তত্যভিবন্দনৈঃ। ভূতেরু মন্তাবনয়া সন্ত্বোসঙ্গনেন চ। মহতাং বহুমানেন দীনানামসুকম্পয়া। মৈত্রো চৈবাত্বভূল্যেরু যমেন নিয়মেন চ। আধ্যাত্মিকামুশ্রবণামান সংকীর্তনাচ্চ মে। আজ্জবিনাগ্রসঙ্গেন নিরহজ্মিয়া তথা॥ ১৪॥

अध्वयामी।

ভক্তাবাহুৰদ্বিক্ষিত্যাহ যেন ভক্তিযোগেন মন্তাবায় ব্ৰহ্মতায় ॥ ১২ ॥

এবস্থ্যায়। ভক্তে: সাধনান্যাহ পঞ্জি:। নিষেবিতেন সম্যাগস্থিতেন স্থানিমিত্তেন অধন্যেণ নিত্যনৈমিত্তিকেন মহীরসা শ্রহাদিযুক্তেন ক্রিয়াবোগেন পঞ্চরাতাত্যক পূজাপ্রকারেণ শস্তেন নিজামেণ ॥ ১৩ ॥

মিজিন্তাং মংপ্রতিমাদি ত্রস্য দর্শনাদিভিঃ সত্ত্বেন ধৈব্যেণ অসঙ্গমেন বৈরাগ্যে। ১৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

নানাগতি নিনিভাবিদ্যাগ্রন্থিবন্ধনদ্বতিরণ যদাহি মহাপুরুষ পুরুষ প্রসঙ্গ ইত্যক্তেন ॥ ১২ ॥

জ্ঞানকশ্বনিত্রা যথা নিষেবিতেতি পঞ্চকং। শত্তেন উত্তমদেশকালাদিমতা নিশ্বামেণ্ড। নাতিহিংশ্রেণ অতিহিংদা বৃহিত্তেন। অতি শব্দ প্রাণাদিপীড়া পরিত্যাগ ফল প্রাদি জীবাব্য়ৰ শ্বীকারার্থ:॥১৩॥

মদ্ধিষ্ণাং মদর্ক্তাদি। ভূতেশপুর্থামিজেন মন্তাবনয়া। অহিংসাজের ব্রহ্মচগ্যাপরিপ্রহাযমা:। শৌচ সপ্তোব তপ: স্বাধ্যায়েশর-

আধ্যাত্মিকং আত্মানাত্মবিবেকশাল্রং নিরহক্রিয়য়া গর্বরাহিত্যেন॥ ১৪॥

वीविश्वनाथठकवर्ती।

ভাব:। মন্তাবায় মদ্বিষয়ক প্রেমে॥ ১২॥

অস্যা ভক্তেরকান্যাহ নিষেবিতশ্চাসৌ অনিমিত্তরপশ্চেতি তেন পূর্ব্ধ পূর্বৈর গুন্ধভটকে নিষেবিতো হস্কীকতো যা স্বধর্ম-কেনেতার্থা। সচ স্মৃতিশাল্লোক্ত প্রনাগমূজ্জলাদিভি দেহিবল্প পার্যাাদ এব্য শুদ্ধি বিধি রূপো নিম্প্রক্তিব ক্লের স্কেন মহী-রুসা অর্চনাদি ভক্ত্যুপযোগিত্বাৎ প্রশত্তন। ব্যাখ্যাস্থরে মংকৃতে ভক্তেক্ষাণ ইতি ময়া দিষ্টানপি স্বকান্ ধর্মান্ সংভাজ্যে ভাদি ভগবছক্তি বিরোধ ভ্রথাক নিষেবিত পদস্য বৈষধাঞ্চ স্থাং ক্রিমাযোগন পঞ্চরাত্রাছাক্ত পূজাপ্রকারেণ শত্তেন উত্তর্মদেশানি-মতা নাতিহিংশ্রেণ অভিহিংসারহিতেনেতাতিশক্ষেন ভগ্তর্মদির মার্জন লেপন ভদ্থান্থাদি বিবিধ নৈবেদ্য সাধনাদিখিভি ভ্রপার হলক্ষ্য ক্ষ্ম জীবহিংসন শাক পত্র মূল ক্লাদিতোটনাদাবিপি ন ক্লভিরিভি জ্ঞাপিতং॥ ১৩॥

সন্তেন ধৈৰ্য্যেণ অসংখন ছঃ সমত্যাগেন॥

আধাাত্মিকস্য অস্তঃকরণভাবন্য দোষস্য গুণস্ত অনুশ্রবণাৎ অস্তঃকরণস্য ভক্তৌ প্রবর্তনার্থং তদ্দোবগুণাববশ্যশোতব্যৌ। দন্তাদ্যস্তঃকরণ দোষস্য স্থান্দন্ বর্তমানত্ব জানে সতি দন্তং মহত্ণাস্থা জ্যেদিত্যাদি বিধ্যে তকাং প্রবর্ত্তিরিত্তিয়ত্তদর্থক ॥ ১৪॥

ঐ ভক্তির আমুসঙ্গিক ফল, ভক্তিযোগেই ত্রিগুণ অতিজমণ করিয়া ত্রশাস্থ প্রাপ্তি হইয়া থাকে ॥ ১২ ॥ মা। ঐ প্রকার ভক্তির সাধন বলি প্রবণ করুন। ফলাভিসন্ধি পরিত্যাগ পূর্বক নিত্য নৈমিতিক স্ব স্ব ধর্মোর অমুষ্ঠান এবং নিত্য প্রদাদি যুক্ত হইয়া নিদ্ধানে অনতিহিংক্র অর্থাৎ একেবারে হিংসাদি বর্জন না করিয়া পঞ্চাত্রাদি উক্ত পূজা প্রকরণ দারা॥ ১০॥

আমার প্রতিনাদি দর্শন, স্পর্শন, পূজন, স্তবকরণ, বন্দন, সকল প্রাণিতে আমার ভাব চিন্তা করণ, ধৈর্য্য, বৈরাগ্য, মহৎ ব্যক্তিদিগের বহু সম্মান করণ, দীনের প্রতি অনুকল্পা, আত্ম তুল্য ব্যক্তিতে মিত্রতা, বম অর্থাৎ বাছেক্রিয়ের নিগ্রহ, নিয়ম (অন্তরিন্দ্রির দমন) আত্মবিষয়ক প্রবণ, আমার নাম সংকীর্ত্তন, সরল আচরণ, সতের সঙ্গ করণ এবং নিরহক্ষারতা প্রদর্শন ॥ ১৪ ॥

মদ্ধানো গুণৈরেতৈঃ পরিসংশুদ্ধ আশয়:। পুরুষ স্থা প্রসাভ্যতি প্রুত্ত নাত্রগুণং হি মাং॥ ১৫॥ যথা বাতরথো আণুমার্ভ কে গদ্ধ আশ্মাৎ। এবং যোগরতং চেত স্থাত্মান মবিকারি য় ॥ ১৬ অহং সর্বেষু ভূতেরু ভূতাত্মাবস্থিতঃ সদা। তমবজ্ঞায় মাং মর্ত্তঃ কুরুতে হর্চাবিড়ম্বনং॥ ১৭॥

श्रीभवयागी।

মদ্ধর্মণো ভগবদ্ধর্মামুষ্ঠাতুঃ পুরুষস্যাশয়শ্চিত্তং ॥ ১৫ ॥ -

প্রযন্ত্র বিনৈব প্রাপ্তে দৃষ্টান্তঃ। বাতো রথঃ প্রাপকো যস্য গন্ধস্য আশন্তাৎ স্থানাৎ আর্ড্জে আত্মসাৎ করোতি। অবিকারি সমং যচ্চেতঃ ॥ ১৬ ॥

চিত্ত জাজিঃ সর্বাভ্ত বাত্ম দৃষ্টিয়ব ভবতীতি বৃক্তশুং কেবল প্রতিমাদিনিষ্ঠাং নিশম্বাহ অহমিতি সপ্ততিঃ অকৈচৰ বিজ্যন্ মহকরণং। অক্টোয়াং পূজাবিজ্যনমিতি বা। অবৈজ্ঞোপেকা দ্বেষ নিশাঃ ক্রমেণ চতুর্জিনি বিধ্যক্তে॥ ২৭॥

ক্রমদন্দর্ভঃ।

মদ্ধণ: মদ্ধান্ত তুলি পুরুষস্যাশর: শতুমাত্র গুণং মামঞ্কাভ্যেতি। মাল্পশতিমাছেণেত্যাহ্যক লক্ষণাং ধ্বাযুক্তিং প্রাপ্তি তিয়া কর্মান প্রাপ্তি প্রাপ্তি তিয়া কর্মান ক্রান ক্র

যথেতি। আত্মানং প্রমান্মানং মামসুকরোতীতি সম্বাক্তিঃ॥ ১৬॥

অহমিতি। ভৃতের বক্ষামাণ রীত্যা অপ্রাণভৃজ্জীবমারভা ভগবদর্পিতায় জীব পর্যান্তের ভৃতায়া তত্তদস্কর্যামী। তমবজ্ঞার মাং তেবামবজ্ঞার তদণিষ্ঠানক্ষা মনৈবাবজ্ঞাং ক্ষতেতার্থ:। তত্তাং ক্ষা যোহচিং মংপ্রতিমাং ক্রতে স ত্রিভ্সনং তদ্যা অবজ্ঞা-মেব ক্রত ইতার্থ:॥ ১৭॥
•

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মিষ্বয়ক শ্ৰণ কীৰ্ত্তনাদিরেব ধর্মোইত্ঠেয়ো যদ্য তদ্য পুক্ষদ্য আশ্যো মন:। শ্রুতমাত্র ওণং মামেতীতি নলাণুণশ্তি-মাত্রেণেত্যক লক্ষণং সাধ্যং ভক্তিযোগং প্রাপ্রোতীতি ভাব:॥ ১৫॥

প্রযায়ং বিনৈব প্রাপ্তে। দৃষ্টান্তঃ। বাতে। রথং প্রাপকে। যস্য স গন্ধ আশ্রাৎ বস্থানাৎ সকাশাৎ মাণং নাসিকাং আর্ভ্জে ভলতে প্রাপ্নোতি। এবং ভক্তিবোগযুক্তং চেতঃ আজানং প্রমান্তানং। যথা বাতঃ পল্লাকরন্তং গন্ধং নাসিকাং প্রাপ্রতি তথৈবায়ং ভক্তাক সম্দালে। যোগরতং ভক্তিবোগনিষ্ঠং চিত্তং প্রমেশ্বরং প্রাপ্যতীত্যর্থঃ॥ ১৬॥

কিংকতাদৃশীমপি ভক্তিমপরাধ এব সংহাচরতি স্চাপরাধ: প্রায়ো মহদ্বজ্ঞানমূলক এব তে চ মহান্তো লোকে হল ক্লা অপি বহব ন্তিষ্ঠন্তাত ন্তদ্বাধাভাবার্থং সর্বভ্তানেরে স্বেইদেবাধিষ্ঠান বৃদ্যা সন্মাননীরানি তদভাবে প্রভাগবিছ্ঞিহ সেবাপি ন সম্যক্ ফলদেতি বদরীশ্বরতাং প্রাণিসন্মাননমক্র্তিভ স্বভক্তার হিতকারিছেন বাংসল্যাৎ কুগান্ধিব প্রকিপিলদেব আহে অহমিত্যাদি বড়ভিঃ। ত্রাবজ্ঞোপেকা দ্বেষ নিক্লাঃ ক্রেমেণ চতুভি নিবিধ্যন্তে। অর্চা মংপ্রতিয়া ত্র্যাং মংপ্রকং মন্তিভ্রনমেব ক্রেতে॥ ১৭.॥

ঐ সকল গুণ ৰাৱা ভগ্ৰদ্ধশ্মীসূষ্ঠানকারি পুরুষের চিত্ত স্বতোভাবে শৃদ্ধ হুর এবং সেই পুরুষ আমার গুণ প্রবণ মাত্রে বিনা প্রয়ম্মে আমাকে প্রাপ্ত হয়॥ ১৫॥

ফলতঃ যেমন গন্ধ, বায়ুযোগে স্বস্থান হইতে স্মাসিয়া জাগতে আআর করে, তাহার তার তিকিযোগ-যুক্ত অবিকারি চিত্ত বিনা প্রয়েই প্রমান্ধাকে আত্মসাৎ করে॥ ১৬॥

এই প্রকার চিত্ত ছি সর্বপ্রোণিতে আত্মৃষ্টি ছারাই হয়, আমি সকল ভূতের আত্মসরূপ হইয়া সর্ব প্রাণিতেই সতত অবহিত আছি, তথাচ কোন কোন ব্যক্তি আমাকে অবজ্ঞা করিয়া প্রতিমাদিতে পূজা রূপ বিভূষন করিয়া থাকে॥.১৭॥ যো মাং দর্কের ভূতের দস্তমাত্মানমীশবং। হিত্বার্চাং ভক্ততে মোচ্যান্তস্মন্যের জুহোতি স:। বিষতঃ পরকায়ে মাং মানিনো ভিন্নপর্দিঃ। ভূতের বন্ধবৈরস্য ন মনঃ শান্তিমুচ্ছতি ॥ ১৮॥ অহমুক্তাবচৈত্র বিয়ং ক্রিয়য়োৎপন্নয়ান্দে। নৈর ভূষ্যেইচ্চিতোইচ্চায়াং ভূতগ্রামার্মানিনঃ ॥১৯

वीधवशामी।

হিছা উপেক্ষ্য ॥ ১৮ ॥

দ্রব্যৈরুৎপন্নয়া ক্রিয়য়া ভূতগ্রামাবমানিন স্তরিন্দকস্থা। ১৯

ক্রেমসন্মর্ভ:

তামেবাহ। যো মামিতি। মৌতাং শৈলী দাকম্মী বা কাচিং প্রতিমেয়মিত মৃত্বুদ্ধি হাং। যং সর্বেষ্ ভূতেৰ্ বর্ত্তমানং পরমান্ত্রানাই বং মাং হিন্তা তল্ঞা মইরকানবিভাব্য লচ্চাং মদীয়াং প্রতিমাং ভক্ততে কেবল লোকরীতি দৃষ্টা তল্ঞৈ জলাদিক মর্প্রতি। যথান্ত্রিপ্রাণে শ্রীদশরথ নারিত পুরস্থ তপশ্বিনো বিলাপে। শিলাবুদ্ধিঃ ক্বতা কিম্বা প্রতিমায়াং হরের্থ্রনা। কিং ময়া পথি দৃষ্টব্য বিফুভক্তন্য কর্হিচিং। তল্মুভান্ধিতদৈহন্য চেত্রসানাদরঃ ক্বতঃ। যেন কর্ম্বিপাকেন পুরশোকো মনেদৃশ্বতি। যথোকেং। আর্চ্চা বিষ্ণ্ঠে শিলাধী প্রক্র্ব নরমতি বৈষ্ণবে লাতিবৃদ্ধি বিষ্কোর্মা বৈষ্ণবানাং কলিমলমণনে পাদতীর্থেশ্বিদ্ধা। তদ্ধে তলামি ময়ে সকল কল্যহে শক্সামান্য বৃদ্ধির্থিকো সর্বেশ্বরেশে তদিতর্বমন্থী র্যন্য বা নারকী সং। ইতি তদ্য মৃত্ব্য মন্ত্রভাবাং। সর্বভ্তাবজ্ঞাপি ভবতি তত অন্ধাবেণ ভন্মনি যথা জুহোতি কশ্চিত্তথা তদ্যাশ্রদ্ধানন্য কলাভাব ইত্যর্থঃ। যে শাস্ত্রবিধিম্ৎক্রম্ব যক্তয়ে শ্রন্থাই তাল্যক্র রীত্যা লোকপরম্পরামাত্র জাত যং কিঞ্চিং শ্রদ্ধা সন্ত্রবিভ্তাবিত্তম (মব। আর্চারানের হর্ষে পূজাং যং শ্রদ্ধান্ত্রেরং তথাপি ঝটিতি নভবতীত্যেব। তথোকং বন্ধ্যতেচ সাফল্যং। আর্চাগাবর্চ্চ রেক্তাবিদ্যাদিনা।

অবজামাত্রস্য তাদৃশবে স্তরাং তু দ্বিত ইতি। ভিন্নদর্শিন: সর্ক্রান্তর্গাম্যেক ছ দৃষ্টিরহিতস্য। অভএব মানিন:। অভ এব বন্ধবৈবস্য। তথাচ মহাভারতে। পিতেব পূজং ক্রণো নোছেলরতি যোজনং। বিভন্নস্য হ্বীকেশ অনুণ্ তস্য প্রসীদতি ॥১৮॥

কিংখ। অহমিতি। অবমানিনো নিলাকওঃ। নিলাপি ধেবসমা। কিলা। ন তথা তপ্যতে বিদ্ধঃ পুমান্ বাগৈছি মৃত্যুগৈঃ।

এীবিশ্বনাথচক্রবর্তী

ভন্মন্যে কুহোতীতি প্রভূৱাং স্বভ কান্ শিক্ষরিত্থ তান্ প্রতি সতর্জনোক্তিরিয়ং তথৈব স্বয়ং ভগবতোহপি যস্যায়বৃদ্ধি কৃণপ ইত্যক ভৌম ইকাধীরিত্যক্ সক্র গোধর ইত্যাক্ষেপ:। যথৈবাধুনিকা অপি স্পার্বঃ প্রেমপি স্থান্সং স্বনেবারতম্পি কাপ্যান্যক হরিজকেষ্পর র লেশ্যাক দৃষ্টোর মংসেবাং করেষি ভন্ম করেষি মাং ছঃখয়স্যের কেবলমিত্যাক্ষিপস্থি। বস্থ তস্ত প্রয়র্জা কাপি নৈব্যাক্ষা। ব্যাক্ষা স্থান্যক হরি প্রজাং যা প্রস্কার্থা ক্রেমি ন করেষি প্রাক্ষা ক্রিমি ক্রিমান্য সভকঃ প্রাক্ষা ক্রিমান্যক করেষ্টি প্রাক্ষা ক্রিমান্যক প্রাক্ষা ক্রিমান্য প্রস্কার প্রাক্ষা ক্রিমান্যক প্রস্কার প্রাক্ষা ক্রিমান্যক প্রস্কৃতি গার্কঃ। অধুনৈব প্রার্ক্ষ ভিক্তি শনৈক্ত্যা ভবিষ্যতীত্যের স্ব্রোপি ব্যাক্ত অর্ক্ষা বিক্রমান্ত বিষ্যতীত্যের স্ব্রোপি ব্যাক্ত অর্ক্ষা বিক্রমান্য বিষ্যাকীত্যের স্ব্রোপি ব্যাক্ত অর্ক্ষা ক্রিমান্য ক্রেমান্য ক্রেমান্য ক্রিমান্য ক্রিমান্ত ক্রিমান্ত ক্রিমান্য ক্রিমান্

ভিন্নপর্শিন: স্বস্য হংশবিধান্যস্যাপি ছংখং সমানমিতি ন জানতঃ ॥ ১৮ ॥

অবমানিনো নিশ্কস্য। ন তথা তপাতে বিদ্ধঃ পুমান্ বালৈছি মৰ্মাটোঃ। খথা কুদন্তি মৰ্মন্তাং পক্ষেত্ৰ ইত্যক্ত

পরস্তু, আমি সর্বপ্রাণিতে বর্ত্তমান, সকলের আত্মা এবং ঈশ্বর, যে ব্যক্তি মৃঢ্তা প্রযুক্ত আমাকে উপেক্ষা করিয়া প্রতিমা পূজা করে তাহার কেবল ভক্ষে আত্তি প্রদান করা হয়,সে, পরদেহে আমাকে দেয় করে এবং অভিমানী, ভিরদশী ও সকল প্রাণির সহিত বন্ধবৈর হয়, স্তরাং তাহার মনও শান্তি প্রাণ্ড হয় না ॥ ১৮॥

হে অনঘে! যে ক্তি প্ৰাণিসমূহের নিন্দাকারী, সে যদি বিবিধ দ্রব্য ও বিবিধ দ্রব্যে উৎপ-

অর্চাদাবর্চয়েত্তাবদীশ্বং মাং স্বকর্মাকৃৎ। যাবন্ধবেদ স্বহুদি সর্বজ্বতেম্ববিদ্ধতং ॥ ২০ ॥ আত্মনশ্চ প্রস্যাপি যঃ করোত্যস্তরোদরং। তস্যু ভিন্নদৃশো মৃত্যুবিদিধে ভয়মূল্লণং ॥ ২১ ॥

औरतश्रामी।

তর্হি কিং অর্চাদাবর্চনমনর্থকমেব নেত্যাহ অর্চাদাবিতি সর্বাভূতেখবস্থিতং মাং. স্বন্ধান বেদ। স্বক্ষার্কৎ কর্মাবিরোধেন যথাবকাশং অনেন কর্মনিষ্ঠায়া অপি সএবাধধিরিত্যুক্তং ভবতি ॥ ২০ ॥

অন্তরা অন্তরং উৎ অপি অবং অলমপি ভেদং যা পশুতীতার্থা। যদা অন্তরা সধ্যে উদরং শরীরং মৃত্যুরহং তঞা ভরং বিদধে করোমি॥ ২১॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

যথা তুদন্তি মর্মন্থা হসতাং পর্ষধেষৰ ইত্যুক্ত রীত্যা ততোহধিকেতি নায়ং বৃংক্তম ইত্যভিপ্রেত্য ন দ্বেষাং পূর্ক্মসৌ পঠিতা ॥>>॥ তদেবমীখরজ্ঞানাভাবান্তকাবশ্রদ্ধানস্য দোব উক্ত:। অথ তচ্ছ দ্ধা হেত্ তজ্ঞানস্য অধন্ধ সংযুক্তং তদর্ভনমেব কারণমুপদিশন্ তাদৃশার্জনজ্ঞাপ্যবর্থতামন্ধীকরোতি। অর্জাদাবিতি। তাবদেব অকর্মারুৎ সন্ অর্জাদাবর্জনেথ যাবং সর্কাত্তবন্ধিতং। দীমারং নাং ন বেদ ন জানাতি। তত্র অকর্মা সহায়্ত্রং। অজ্ঞাভশ্রদ্ধ ভদ্ধভক্তাবনধিকারাং। তংপ্রতিপাদয়িয়্যতে। জাতশ্রদ্ধো মংক্থাস্বিত্যাদিনা অতো তগবজ্ঞানাদৃদ্ধ জাতশ্রদ্ধার স্কর্মারুৎ সন্ নার্জনেং । কিন্তু শুদ্ধদিকমেব কুর্কীতেত্যপ্যাদ্র্যাওং। তচ্চ প্রতিপাদয়য়য়তে তাবং কর্মাণি কুর্কীতেত্যাদিলা। নত্র্জাং পরিত্যজেদিত্যর্থং। প্রতিষ্টিতার্জন ত্যাজ্যা যাবজ্ঞীবং সমর্জন্থং। বরং প্রাণপরিত্যাগং শিরদোণবাপি কর্ত্তনমিতি প্রাহ্মশীর্ষপঞ্চরাত্রবিরোধাং॥ ২০॥

অথ স্বক্ষ পূর্ব্বক্মর্জনং কুর্বংশ্চ ভূতদয়াং বিনা নিসিদ্ধাতীত্যাহ আঁত্মন ইতি। জন্তবোদরং উদরভেদেন ভেদং করোতি নতু মদধিষ্ঠানত্বনাত্ম সমং পশুতি। তত্শ্চ কুধিতাদিক্মপি দৃষ্ট্বা স্বোদরাদিক্মেব কেবলং সংবিভ্রতীত্যর্থ:। তস্য ভিন্নদৃশো মৃত্যু রূপোহহং উৰণং ভয়ং সংসায়ং॥ ২১॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

রীত্যা নিন্দাবেষাদপ্যধিকেত্যাহ:॥ ১৯॥

শুদ্ধ ভক্তিমতাং শ্বতএব শুদ্ধাত্ম করণত্বাৎ প্রাণিমাত্রাবজ্ঞা প্রায়ে ন সন্তবেৎ কর্ম্ম মিশ্র ভক্তিমতান্ত সা সন্তবেদেব যাবদত্তঃ-করণসাণ্ডদ্ধি অস্য শুদ্ধা সত্যাং তু সা ন তিঠেৎ তেন কর্ম্মাণি ন কর্ত্ব্যমিত্যাহ, অর্চ্চাদাবিতি শ্বক্সাক্ত কর্মমিশ্রাং সাদ্বিকীং ভক্তিং কুর্বাণঃ। বাবদিতি সর্বভ্তাত্ম দশিত্ব দশায়ামূভূতায়াং সত্যাং কর্মানধিকারাৎ ন শ্বক্সাকৃৎ কিন্ত জ্ঞান মিশ্রাং ভক্তিং কুর্বাণঃ সন্ধ্রামাং মামর্চ্ছেমিণ্ডার্থঃ॥ ২০॥

আত্মন উদরং পরস্যাপি উদরং বো হস্তর ভিন্নং করোতি। তস্য মৃত্যু স্বরূপোহছমেব। উদরং থলু জাঠরানল জালাযুক্তং মধা আত্মনস্তথা পরস্যাপীতি জ্ঞাত্মা কুধার্তং জীবমাত্মানমিব ভোজায়েদেবান্যথা মৃত্যুত্যং ন তর্তীত্যর্থ: ॥ ২১ ॥

মাদি ক্রিয়া দারা আমার প্রতিমাতে আমাকে পূজা করে,তথাচ আমি তাহার প্রতি সন্তুষ্ট হই না ॥১৯ মা ! এমত বিবেচনা করিবেন না যে প্রতিমাদিতে অর্চনা করা বিকল, পুরুষ যে পর্যান্ত সর্বি প্রাণিতে অবস্থিত যে আমি, আমাকে আপনার হৃদয়মধ্যে জানিতে না পারে, তাবৎ পর্যান্ত স্বকর্ষের ত ইইয়া প্রতিমাদিতে অর্চনা করিবে॥ ২০॥

পরস্কা, যে মৃঢ় আপনার এবং পরের মধ্যে অত্যক্লও ভেদ দর্শন করে অর্থাৎ যাহার আপনার ছংখের তুল্য পরের ছংখ অমূভব হয় না, আমি সেই ভিন্নদর্শি ব্যক্তির প্রতি স্বৃত্যু স্বরূপ হইয়া ঘোরতর ভয় বিধান করি ॥ ২১॥

অথ মাং সর্বভূতেরু ভূতাত্মানং কৃতালয়ং। ভাহ যেদানমানাভ্যাং মৈত্র্যাভিদ্যেন চক্ষা॥ ২২॥ জীবাঃ শ্রেষ্ঠা ছজীবানাং ততঃ প্রাণভূতঃ শুভে:। ততঃ সচিত্তাঃ প্রবরাস্ততশেচন্দ্রিয়র্ভয়ঃ॥ ২০॥

শ্রীধবস্থামী।

অথ অত: সর্কাভ্তের্ কুতালরং কৃতাবাসং তত্র হেড়ু: ভূতানামান্তানং অন্তর্গামিণং। শুভদ্রেন চকুষা সমদর্শনেন ॥ ২২ ॥
তত্তাপি যথোত্তরং মানাদ্যতিশয়ং কার্যা ইতি বকুং তারতম্যমাহ সাহিছ্ক: বজ্ভি:। জ্বজীবানামচেতনেভা:। তত স্তেভ্যোহপি প্রাণভৃত: প্রাণ্ট্রিমন্তঃ। সচিত্তা জ্ঞানবস্তঃ। ইন্তিয়াণাং বৃত্তরো শেষু বৃক্ষাণামপি স্ক্রা ইন্তিয়াণাং বৃত্তরঃ সন্ত্যেব
তথাহি মহাভারতে মোক্ষপ্রেপু স্বর্গাতে। তত্তাং পশ্চন্তি পাদপান্তকাৎ জিছ্বির পাদপা ইতি॥ ২৩ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

নিগ্ৰয়তি। অংগতি। অথ অতো হেতো:। যথা যুক্তং যথাশক্তি দানেন তদভাবে মানেন। অভিয়েন চক্ষেতি পূর্কবং। যথোক্তং সনকাদীন্ প্রতি বৈকুঠদেবেন। যে মে তন্ দি অবিয়ান্ ছহতীর্ঘদীয়া ভূতান্যলকশ্রণানিচ ভেদবুকো ভাদি। এষচ প্রস্থাবঃ পূর্ক্মভিস্কায় যদিংসামিত্যাদিকং যহুক্তং। তত্তং পোষকজেন নির্দিষ্টং॥ ২২॥

তত্ত্ব সংক্ষাং সাধারণােনৈব,প্রাপ্তে বিশেষরতি। সাকৈ: ষড়্তি: অজীবা জীর্ণসস্যাদ্য: জীবা জীবং সম্যাদ্য:। ততঃ তেখপি প্রাণ্ডতঃ ভূমিষ্ঠ জলাকর্ষণ বমনাদি লিক্ষেন প্রাণ্রন্তভৃতে। জীবং পাযাগাদ্য: সচিত্তাঃ পূর্বমুদ্দ্যনাদি চেষ্টাঃ পশ্চাদিন্দ্রবন্ত্র্ব জিলা ইতি প্রবণাং। অন্তঃ সজ্ঞানাঃ পর্বতা ইক্সিয় বৃত্তয়ঃ দৃষ্টাদি তুল্যয়া দ্বতােহপি স্পণ্রত্যা সোদ্যানকাশ জ্ঞানিনে। বৃক্ষাদ্যা প্রাণ্ডবিরাজ্বিমিলেকৈক গুণাধিক্যেনাধিক্যং॥ ২০।

শ্রীবিখনথেচক্রবর্তী।

নহু পৃথিবাদনস্তা এব ক্ষাতা জীবাস্তেচ ভোজবিতারং শ্রমণ তৎ সমীপ মাধাস্তোব তান্ ভোজবিতৃং কং থলু রন্তিদেব নৃপ ইব ধৈর্যং ধরে ইত্যত আহে। অথ অথবা তেভাো যথেইদানাদামর্থেছিপ দানাদিভি রহরে। অথাথো সংশ্যে স্যাতামধিকারেচ মঙ্গলে। বিকল্পানস্ত্র প্রশাস্ত্র সম্ভ্রম ইতি মেদিনী। কিঞ্চ তেরু বৃভ্ক্র গালি প্রদানাদিভি তিবসূর্বংশি প্রতি তির্কারং ন কুর্যাৎ কিন্ত তেলামুনো ২প্যধিকাল্মানেন স্ত্রাদিভিরাদরেগাহিছেং। যহুক্ত ভগবতা যে বাল্মণান্ মন্নি ধিয়া কিপতোহর্জন স্থা স্থায়ক্দঃ আহত্র ক্রেমান্ ক্রিটেলেনিতি হাবং। এবং নিক্তব্যা ব্যবহৃত্যাপি তেরু কুপ্যংখণি তদস্তাহিতঃ প্রভ্রা ন কুপ্যাদেবেতি ভাবং॥ ২২॥

নচ কেবল জ্ঞানীৰ মন্তক্তং সৰ্ব্বিত তুলা দৃষ্টিং সাধারণোনৈবাহ বিদেপিত তারতম্যেনৈবেতি তত্তারতম্যং দর্শগতি সাহৈ বিজ্ ভি:।
অজীবানামলীবেজ্যো জীবশস্যাদিল্যং সকাশাৎ জীবা অজীব সমাদিশ্য শ্রেষ্ঠা স্তত্ত প্রাণস্তত্ত ভূমিঠ জ্বলাকর্ষণ বননাদি লিজেন
প্রাণবৃত্তিভূতো জীবংপাষাণাদ্যং। ততং সচিত্তাং পূর্বমৃত্ত্যনাদিচেষ্ঠা পশ্চাদিক্সবজ্ঞেণ স্তব্ধা ইতি প্রবণাদন্তং সজানাং পর্বতাঃ।
তেভােইপি তত্মাৎ পশাস্থি পাদপান্তত্মাজ্জিন্তি পাদপা ইতি মোক্ষধর্মবিচনাদিক্সিরবৃত্তিমন্ত উল্পানাবকাশাদি জানবল্যে
বক্ষাদ্যং॥ ২৩॥

অতএব পুরুষের কর্ত্তর যে আমাকে সর্বস্থিতর অন্তর্যামী এবং সকল প্রাণিতে অবস্থিত জানিয়া দান, মান ও স্কলের সহিত মিত্রতা এবং সমদৃষ্টি ধারা সকলকে অর্চনা করে॥ ২২॥

মা! প্রাণি দকলের মধ্যেও তারতমা বিবেচনা করিয়া অতিশয় সন্মান করা উচিত, দেখুন অচেতন পদার্থ অপেকা সচেতান পদার্থ জ্বীব প্রোষ্ঠ, সচেতন পদার্থ হইতে প্রাণর্ভি বিশিষ্ট ব্যক্তি উৎকৃষ্ট এবং প্রাণধারী অপেকা জ্ঞানশালী জীব ভাল, জ্ঞানবান্ জীব অপেকা আবার ইন্দ্রিয়র্ভি বিশিষ্ট জীব প্রধান ॥ ২০॥

অত্তাপি স্পর্শবেদিভ্যঃ প্রবন্ধা রসবেদিনঃ। তেভ্যো গন্ধবিদঃ শেষ্ঠাস্ততঃ শব্দবিদো বরাঃ ॥২৪ রূপভেদবিদস্তত্ত্ব ততশ্চোভয়তোদতঃ। তেষাং বহুপদাং শ্রেষ্ঠাশ্চতুম্পাদস্ততোদ্বিপাৎ ॥ ২৫ ॥ ততো বর্ণাশ্চ চন্বারস্তেষাং প্রাহ্মণ উত্তমঃ। আহ্মণেম্বপি বেদজ্যে হুর্থজ্ঞোহ্ভ্যধিকস্ততঃ॥ ২৬॥

श्रीधतकामी ।

প্রভাতৃ তক্ষু পর্ণনিজিমবৃত্তিবের অতক্তেভ্যঃ পর্ণবিদ্ভিয়ঃ রসবেদিনো মৎস্যাদয়ঃ শ্রেষ্ঠা গন্ধবিদো ভ্রমরাদয়ঃ। শক্বিদঃ স্থাদ্যঃ॥ ২৪॥

রূপভেদবিদঃ কাকাদ্যঃ। উভয়তো দস্তা ঘেঁষাং। অপাদেভ্যভেভো বহুপদাঃ। তেভ্যশ্চতুপাদ ইতার্থঃ। দিপামহ্যাঃ॥ ২৫
ততত্তেমু বর্ণাঃ॥ ২৬ ॥

क्रममन्दर्धः ।

অতন্তেভ্যঃ স্পর্শবেদিভ্যো রগবেদিনঃ রসাস্বাদেন মৃত্তিকাদি স্বস্থভোজ্যাভোজ্য জ্ঞানিনো গঙুপদ্যাদয়ঃ শ্রেষ্ঠাঃ। গন্ধবিদো-জলকীট মৎস্যাদয়ঃ। তত্র কেচিৎ সৃষ্কমন প্লায়নাদি হেতুশক্ষবিদোহপি ভবস্তি। কেচিজ্ঞপভেদবিদোহপি ভবস্তি॥২৪॥

উভয়তো দন্তা: সর্পাদয়ঃ পূষ্প কাঠাদি কর্তন সামর্থাছভয়তেদন্তবং চৈষাং। চতুষ্পাদঃ পশ্বঃ গমনসাধনপকাত্যাং পকিণশ্চদিপাৎ মন্থ্য ইত্যর্থ:। অন্যেষাং চতুষ্পাত্ব দ্বিপাবাদৌ সত্যপি তাদৃশ তত্তলা গাভাবার নৃষ্কং। এষান্ত পাদহীনতং সচিতবাদ্য
তিশ্বে বৃদ্ধাতিশ্বে হন্তাদি শালিতে হপি লিক্ষমিতি পূর্বতো গুণোৎকর্ষময়ং। পূর্ব পূর্বস্থাছতরোত্তর অন্তেমকৈক গুণাধিক্যেনাধিকাং। তদেব মন্ত্রাপ্ত্রমগুণাধিক্যহানিভ্যাং তারতমাং জ্রেয়ং। যথা দেবতাধিঠানাদিনা হিমালয়াদিষু তুলস্যাদির্
গ্রাদিরু চ প্রমাধিক্যং॥ ২৫॥ ২৬॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

তত্রাপি তেভায় হপি স্পর্শবেদিভায় বৃক্ষাদিভায় বসবেদিনো মৃত্তিকাদি স্বস্থভোজ্য জ্ঞানিনো গণ্পুপদ্যাদিয়। গন্ধ-বিদো বকুলাদি পুষ্পস্ক্ষ্বীটাঃ শন্ধবিদো শন্ধ্রবণেন প্লায়নবস্তঃ কেচিজ্ঞলকীটাঃ ॥ ২৪ ॥

রূপবিদঃ কাকাদয়: 1 উভয়তোদন্তা: দর্পাদর:। বহুপদা ভ্রমরাদর: তেবাং পুলা কার্চাদি কর্ত্তন লিক্ষেন উভয়তোদন্তত্বং ক্রেয়ং। চতুল্পাদ: পশব: দ্বিপান্নমূব্য:। এতেষাং পূর্ব্ব পূর্ব্বত উত্তরোজ্বরেষাং সামান্যতএব গুণাধিক্যাদাধিক্যং দেবাধিঠানাদিবিশেষ গুণাধিক্য বিচারেণ শ্রীরেম্বাদিক্যং শান্তজ্ঞ সিদ্ধনেব জ্ঞেয়ং॥ ২৫॥

তত তেষু॥ २७॥

মা! তরু সকলের স্পর্শেন্দ্রির বৃত্তিই অধিক, কিন্তু স্পর্শবেদী জীব যে রক্ষাদি, তাহাদের অপেকা রসবেদী অর্থাৎ মৎস্যাদি শ্রেষ্ঠ, ঐ রসবেদী জীব অপেকা গন্ধবেতা ভ্রমরাদি উত্তম, তাহাদের অপেকা। শব্দবেদী সর্পাদি আবার শ্রেষ্ঠ ॥ ২৪ ॥

শক্ষরেদী সর্পাদি অপেক্ষা রূপভেদবেতা কাকাদি প্রেষ্ঠ, তদপেক্ষা যে সকল জীবের বদনের উভয় পার্শে দিন্ত আছে তাহারা প্রধান। পদহীন ঐ সকল জীব অপেক্ষা বহুণদ জীব প্রেষ্ঠ, বহু পদ জীব হইতে চতুম্পদ জীব ভাল, তাহাদের অপেক্ষা দ্বিপাদ জীব আবার উৎকৃষ্ট ॥ ২৫॥

দিপদ জীব দকলের মধ্যে চারিবর্ণ অর্থাৎ ত্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য শুক্ত ইহারা প্রেষ্ঠ, ঐ বর্ণ চতুষ্টয়ের মধ্যে আবার ত্রাহ্মণ উত্তম, ত্রাহ্মণের মধ্যে বেদজ্ঞ প্রধান, বেদজ্ঞ হইতে আবার অর্থজ্ঞ অধিক ॥২৬॥ অর্থজাৎ সংশয়চেত্তা ততঃ শ্রেয়ান্ অধর্মকৃৎ। মুক্তসঙ্গতভিয়ানশোগা ধর্মমাজনঃ ॥ ২৭ ॥ তত্মাত্মযার্পিতাশেষক্রিয়ার্থাজা নিরন্তরঃ। মহার্পিতাজানঃ পুংসো ময়ি সংন্যন্তকর্মণঃ। ন পশ্যামি পরং স্থতমকর্ত্তঃ সমদর্শনাৎ ॥ ২৮ ॥

अध्वयामी।

সংশয়তৈছেতা মীমাংসকঃ। ততো ২পি কেবলাং স্বধর্মকং। মুক্তসঙ্গা লক্ষণং আন্ধানো ধর্মনদোগ্ধা নিছাম ইতার্থ:॥ ২৭ ॥ অপিতা অংশবাঃ ক্রিয়া অর্থা তথকলানি আন্ধা দেহশ্চ যেন। অতএব নিরস্তবঃ অব্যবহিতঃ। অকর্ত্তু কর্তৃত্বাভিমানশ্ন্যাং॥ ২৮ ॥

ক্রমদন্দর্ভ:।

धर्ष्मप्राप्ताक्षा निकामकर्षा ॥ २१ ॥

তশাদিতার্দ্ধকং। নিরস্তরঃ জ্ঞানাদ্যবাবহিত ভক্তি:॥

আকর্ত্র অপিতাত্মখন স্বভরণানি কর্মানপেক্ষাণাং। যত্তগবতি ভক্তি: ক্রিয়তে। ত্রাপি স্বদ্য ভগবনধীনত্বং আছা তদভিষান শ্ন্যাচ্চ সমদর্শনাং। ভগবনধিঠাক ভারত্মোনাত্মবং পরেবণি হিত্যাশংসতঃ। জীবা শ্রেষ্ঠা ছজীবানামিত্যাদিনা ভেদো হি বিবক্ষিতঃ। ততে। মন্তকেবু এবাদরবাহল্যাদিকং কর্ত্বাং। জ্বন্য স্থাপ্রাপ্তং যথাশক্তি বেতি ভাবঃ। বক্ষ্যান্তেচ। মন্ত্রেভানি ইত্যাদি॥ ২৮॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত তাদৃশাদপি অকর্ম সমাগকর্তু: সকাশাৎ অকর্মকং। ততোহিশি মুক্তসলো জ্ঞানী বতঃ ব্রথম্মদোগ্ধা পূর্বদশা কৃত অধর্ম ফলসাগ্রিহীতা॥ ২৭॥

তবাদপি সকাশাং মরি মরামরণাদিব অপিত। অশেষাং ক্রিয়াং এবণ নগনাদি বাপোরা অর্থা রাষ্ণ্ড আমিনো হতাম্পদ মুমতাম্পদ মনোবুরুয়াদ্রো যেন সং। নিরস্তরং ক্রেজানাদি বাবধান শ্নাঃ॥

মরি মং প্রাপ্তার্থং সয়াত্তকর্মণ: ত্যক্তবর্ণাশ্রমধর্মাৎ মংক্তে ত্যক্তধর্মণ ইতি পূর্ব্বোক্তঃ। অকর্ট্র মন্তকারণি ভগবানের মে ভক্তিং করেরভীতি বৃদ্ধা স্বাভ্রমণ কর্ত্ত্বাভিমানপূন্যাং সমদর্শনাং স্বাগ্র সমমের স্বাহাণিকং সর্ব্বালনিং দিয়া বৃদ্ধাং করের পশাতঃ। বৃদ্ধাং ভগবতা আজ্মোপম্যান সর্ব্বালনিং প্রাত্তি বাহ্বাল্বিন। স্বাহা বিনর সম্পন্নে ব্রাহ্মণে গবি হত্তিনি। ভনি হৈব স্বপাকেচ পৃত্তিভাঃ সমদর্শিন ইত্যক্তং সমদর্শিবং বাচাং জীবা শ্রেটাছ জীবেভ্য ইত্যাদি প্রক্রোত্তা বাক্যা বিরোধাং॥ ২৮॥.

অর্থজ্ঞ অপেকা আবার সংশরচেত্ত। অর্থাৎ মীমাংসাকারী আক্ষণ শ্রেষ্ঠ, তদপেকা আবার সংশান সূচানকারী প্রধান। পরস্ত যে ব্যক্তি সক্ত্যাগী অর্থাৎ জ্ঞানী, তিনি আবার সর্বাপেকা শ্রেষ্ঠ, যে হেডু তাঁহার নিজাস্তিত গর্মেরও ফল লাভার্থ আকাক্ষা নাইওঃ ২৭ ॥

ঐ ব্যক্তি আপনার অনেব কর্ম ও দেই কর্মের কল এবং দেহ আমাকে সমর্থণ করেন, ভতএব আমার অব্যবহিত হইরা থাকেন, অপর তাঁহার আত্মা আমাতে অপিত ও ভাঁহার কর্মকল সকল আমাতেই নাজ হয় এবং সর্বাত্ত সমৃত্তি নিমিত্ত কর্ম্ম ভাতমান পুষ্ণ হরেন, এলারণ তিনিই সর্বাণেক্ষা থেছি, তাঁহা অপেকা আর কোন জীবই আমার দৃষ্টিতে তেওঁ বলিয়া বোধ হয় না ॥ ২৮॥

মনদৈতানি ভূতানি প্রণমেষ্ট্ মানয়ন্। ঈশবো জীবকলয়া প্রবিক্টো ভগবানিতি ॥ ২৯ ॥ ভিক্তিযোগশ্চ যোগশ্চ ময়া মানবৃদীরিতঃ। যয়োরেকতরেপৈর পুরুষঃ পুরুষং প্রকেৎ ॥ ৩ ॥ এতন্তগবতো রূপং এক্ষণঃ পরমাত্মনঃ। পরং প্রধানপুরুষং দৈবং কর্ম বিচেপ্তিতং।

धिभत्रयामी।

জীবানাং কলয়া পরিকলনেন অন্তর্গামিতয়া প্রবিষ্ট ইতি দৃষ্টোতার্থ:॥ ২৯॥

উক্তং হি ভক্তিযোগং পুর্বোকেনাটালযোগেন সহ উপসংহরতি ভক্তিযোগদেতি। হে মানবি পুরুষং প্রমেশ্বরং॥ ৩০॥ যদন্যং পৃটং জীবস্য সংস্তীঃ কালভ শ্বরূপক আচকেতি। তদাহ এতদিতি সার্দ্ধেন এতং স্ক্নিয়ন্ত্র যন্ত্রার্কাং

क्रमममर्जः।

মনসৈতানীতি। তদেবং প্রথমোপাসকানাং সর্ক তৃতাদরো বিহিতঃ। সপ্রদ্ধ সাধকানান্ত ভগবহৈতব সার্ক্তিকতা ক্র্র্যা ভগবত্যবাসে। যথোকং হালে। এতে নহতুতা ব্যাধ তবাহিংসাদয়োগুণাঃ। হরিভক্তৌ প্রবৃত্তা যে ন তে হ্যাং পরতাপিন ইতি বক্ষামাণরীত্যা গুৰুবদ্ধাদি ভাব সাধকানগমপি বছুভাবসিদ্ধ শ্রীগোকুলবাস্যাদিশীলাহসারেণ তাগৃশ ভগবলগুণাহসারেণ চাসৌ জায়তে। জাতভাবানাশ্বহিংসাচোপরমক্ত শ্বীয় এব শ্বভাবঃ। যথা। যত্তাহুরক্তাঃ সহসৈব ধীরাঃ বাপোহ্য দেহাদির্ সক্ষ্তা। বজান্তি তৎ পারমহংস্যমন্ত্যং বিশ্বহিংসোপরমঃ শ্বণশ্ব ইতি। ততঃ পরমসিদ্ধানাং। সর্কভ্তের যং পশ্যেতগবভাব মান্ত্রন ইত্যাদ্যহসারেণ সিদ্ধ এব সঃ। তত্ত সাধকানাং যত্ত হথা ছরোকাল নিষ্কেনেন ইত্যাদ্য তদন্যাগাসনানাং প্রকল্পম্পশ্লকাতে তৎ পুনঃ কেবল শ্বতন্ত্র তত্তক্ষ্ট্যাগাসনানামেব অত্ত তত্তক্ষিষ্ঠানক ভগবত্পাসনামেব বিধীয়তে। তদাদরাবশ্যকত্ম তৎস্বহ্দেনিব সংপাদ্যতে। তচান্যত্র বাটতি রাগ্রেষ বিশ্বেষার্থমিতি জ্বেয়ঃ। অতএব কেবল ভৃতাহক্ষ্পয়া শ্রীভগবদর্চনং ত্যক্তবতা ভরতস্যান্তরারঃ। পরমান্ত্র দৃষ্ট্যা রন্তিদেবাদীনান্ত কৃতার্থন। তথাত্ত্তদিয়ব ভগবন্তক্তি মুখ্যানার্চনমিতি নিরভং। তথৈবাবাহিত পূর্কং নিশ্বণভক্ষ্যাল্যবেন ক্রিরাধান্তন শত্তন নাতিহিংশ্রেণ নিত্য ইত্যত্রাতিশব্দেন পঞ্চরাক্রিকাদ্যাদিকক্ষ কর্ত্তাং। স্থাতন্ত্রেগোপাসনন্ত ধিকৃতং। সাংব্রেরাক্তং অবিশ্বতং তং পরিপূর্ণকামমিত্যাদি। এয এবং শ্রন্থাং প্রম্মভিসদ্ধার ইদ্বিংসামিত্যাদিকং যত্তেং। তথপোর্বেন নির্দিষ্টং। জ্যীবক্ষয় তৎক্লয় তদ্বর্থামিত্যের্থাং॥২১॥

ভক্তীতি। যোগস্যাপি স্বীক্ষরেন ভক্তিম্প্রতাৎ সাধকতমত্বং। কিন্তু সাধকতম ব্যেহ্তিন্ অনায়াস সায়াস কৃত্য ভেদেন ব্যাক্রমং। বলিত তুর্বল্যাবগমাৎ সাধ্যে পুরুষেহ্পি আবিভাব ভেদেন ভারতমাং জেরং॥ ৩০॥

তদেব দর্শরতি। এতদিতি সান্ধিকেন। এতভক্ত্যাদি বোগছয় গস্যং পুরুষাধ্য তত্তমেব ভগবতো ত্রহ্মণঃ প্রমাত্মনশ্চ রূপং শ্বরূপং

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

জীবরূপা **যাকলা** তয়াস**হ**॥ ২৯ ॥

উক্তং ভক্তিবোগং পূর্বোক্তেনাটালযোগেন সংহাপসংহরতি ভক্তীতি পুরুষং ব্রজেৎ পরমেশ্বং মাং প্রাপ্ত্রান্ত ভক্তিবোগেন চিন্দন মদীর শ্রীমৃতি সাক্ষাৎকার:। অটালবোগেন চ মন্নিবিশেষ স্বরূপ সাক্ষাৎকার ইক্ত্যুভয়োরের মৎপ্রাপ্তি-শব্দন শাস্ত্রেবৃক্তে:। ৩০।

নমু তরোরেক্তরেশৈব পুরুষ: পুরুষং প্রজেদিতি প্রবীবি নমু পুরুষো মাং ব্রঞ্জেদিতি জ্ঞাবে ইত্যত: স পুরুষএব ক্তর স্বতর্জন্যা

অতএব ঈশ্বর সকলের অন্তর্যামিত্ব রূপে এই সকল প্রাণির মধ্যে প্রবিষ্ঠ আছেন, এই প্রকার জ্ঞানে মনের দারা বহুমান প্রদান পূর্বক সমস্ত প্রাণিকেই প্রণাম করিবে॥ ২৯॥

হে মানবি । আমি আপনাকে ভক্তিষোগ এবং যোগ উওঁয়ই বলিলাম এই ছুইয়ের মধ্যে কোন একটা দারা পুরুষ পরমেশরকে প্রাপ্ত হইতে পারে॥ ৩০॥

হে মাতঃ! ইহাই পরমাত্মা পরত্রকা ভগবানের রূপ, ইহাই প্রধান ও পুরুষ স্বরূপ এবং পর

রূপভেদাস্পদং দিব্যং কাল ইত্যভিধীরতে ॥ ৩১ ॥ ভূতানাং মহদাদীনাং যতো ভিন্দৃশাং ভয়ং ॥ ৩২ ॥

বোহতঃ প্রবিশ্য ভূতানি ভূতৈরত্যখিলাশ্রয়ঃ। স বিষ্ণুবিধ্যাহিধিবজ্ঞাহসৌ কালঃ কলয়তাং প্রভূঃ।

श्रीभत्रवामो ।

কীদৃশং প্রধানপুক্রাত্মকং পরং তছাতিরিক্তং চ এতদের দৈর্মিতাভিধীয়তে কীদৃশং কর্মণো বিচেটিতং নানা সংস্তি লক্ষণং বন্ধা তেন্দেরপ্রেরত কর্মকুতাঃ সংস্তারো বিচিত্রা ইতার্থঃ। এতদের ভগরতো রূপং কাল ইতি চাভিধীয়তে। কীদৃশং রূপ-ভেদন্ত বন্ধান্যথাত্স্যাম্পদ্মাশ্রয় কারণং উক্তংহি কালাদ্ভণ্রাতিকর ইতি বক্ষাতেচ ভণ্রাতিকর কাল ইতি। দিব্য মছুতপ্রভাবং॥৩১॥

তদেবাহ ভূতানামিতি যাবৎসমাধি। মহদাদীনাং তত্তদভিমানিনাং জীবানাং॥ ৩২॥ ভয়হেতুমমাহ য ইতি। ভূতৈরেব ভূতান্যত্তি সংহরতি অধিযজ্ঞো যজ্ঞফলদাত। কলয়তাং বশীকুর্ক্তাং॥ ৩৩॥

ক্রমসন্দর্জ:।

ভগবদাদি সংজ্ঞঃ রপত্রয়ং ন ততোভিয়মিত্যর্থ:। পুরুষোহত বদন্তি তত্তত্ত্ত্তিদ ইত্যত্তোক্তমহন্ত জ্ঞানমেব। পূর্বমেবাহমিহাসমিতি তৎ পূরুষদ্য পূক্ষবছমিতি শ্রুত্ত:। অত্র যৎ রূপ রূপিণোরভেদেহপি ভেদ বিবকা শিলাপুল্লস্য শরীরমিতিবং। তত্ত্ত্ত্রস্থাং প্রং নিরুপাধিকমেব। একসৈব তস্য তত্ত্বস্য রূপধর্ম বিশেষাবিভাবানাবিভাবাভাগং তত্ত্বাবিভাব ভেদ ইতি ভাবঃ। তদেবং প্রাধান্দান শুদ্ধ রূপত্রয়ং নিরুপান্ত বং নিরুপান্ত এতদেব প্রধান পূর্বহং প্রধানোপাধিকং পূরুষরপমিত্যর্থ:। পূরি শেতে পূরুষ ইতি নিরুক্তে:। প্রধানমিতি বহুত্র পাঠঃ কিন্তু স্থাম্যসম্ভ:। অত্র প্রমাজ্মনঃ সাক্ষিত্বমন্ত ভেদ বীকুত:। ভগবভু ক্ষণোভাবিত বহুত্ব পাঠঃ কিন্তু স্থাম্যসম্ভ:। অত্র প্রমাজ্মনং ভগবভু তি ভেদেন দৈবং কালন্টেত্যভিষীবাতে। তত্ত্ব দৈবস্য লক্ষণং কর্মণো বিচেষ্টিতং যন্মান্তি দিতি। কাল্যা লক্ষণং রূপেতি। যহা। তদিদমেন্ত দিত্যসৈব বিশেষণং তত্ত্তক্তপাশ্রম ইত্যর্থ:। তত্ত্ব হেতু:। দিব্যমিচিন্তাশক্ষীতার্থ:॥ ৩১॥ ৩২॥

ভীষাস্মাষাতঃ প্ৰতে ইত্যাদি শ্ৰুতিপ্ৰশিদ্ধ্যেত্স্য ভীষণ্ত্মপি কালক্ষপেলৈবেত্যাহ। যদিতি ষট্কেন। যন্ত্ৰাৎ যদ্য

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্ববক্ষ: স্পৃশলাহ। এতদিতি। অয়মর্থা। যা খনু ভক্তেরু ভগবান ভবতি জ্ঞানিরু বল্লযোগিরু প্রমাত্মা তাসৈর পরং যদপ্রাকৃতং দ্ধাণ ডেনেডনের। ত্বংপ্রোহহমের প্রমেশ্বর ইত্যথা। ন কেবল মেতাবদের কিন্তু প্রকৃতি পুরুষ জীবাদৃষ্ট কালাদ্যপি মদীর্মেডন্ত্রপ্রমেব্রাহ প্রধানক তৎপ্রবর্জকঃ প্রকৃষ্ণেতি ঘনৈক্যাং। দৈবং জীবাদৃষ্টং কীদৃশং কর্মভি: পুণা পাপৈ বিবিধং চেষ্টিতং যতন্ত্বও তথা কাল ইত্যভিধীয়তে। যন্তদ্পি দিব্যমস্কৃত্প্রভাবং মৎস্ক্রপ্রমেব দ্ধপ ভেদস্য বন্তু নামন্যথা-ভাবস্য আক্ষান্ত্রমান্ত্রং ভাবস্য আক্ষান্ত্রমান্ত্রং ভিজালাদ্য ব্যতিক্র ইতি॥৩১॥

'জ্যা পৃ**টং কালফ লক্ষণমুক্ত**মুচ্যতে চেত্যাহ যতঃ সকাশামহদাদীনাং তত্তদভিমানিনাং শীবানাং স্ট্যাদি মধ্যা ভাতানাং

অর্থাৎ প্রধান পুরুষ হইতে ব্যতিরিক্ত, ইহাই সেই দৈব, বাঁহা হইতে নানা সংসার রূপ কর্মের বিবিধ চেন্টা হ্র, ফলত: দৈব প্রেরিত কর্মারত সংসারই নানাবিধ হইয়া থাকে। অপর ভগবানের এই রূপকেই রূপ ভেদের অর্থাৎ বস্তু সকলের অন্তথাত্বের আস্পদ অর্থাৎ আপ্রয় ও আশ্চর্য্য প্রভাবশালী কাল বলা যায়॥ ৩১॥

ঐ কাল হইতেই মহদাদি ভূত সকলের অর্থাৎ তত্তদভিমানি ভিন্নদর্শি জীব সমূহের ভয় উৎপন্ন হয়॥ ৩২॥

অধিলের আগ্রায় ঐ কাল অন্তরে প্রবেশ পূর্বক ভূত দারাই ভূত সকলকে সংহার করেন। অপর, ঐ কাল ভগবান্ বিষ্ণুর সংজ্ঞা বিশেষ, অতথব তিনিই যজের ফলদাতা এবং যে সকল পদার্থ অন্যকে নচাদ্য কশ্চিদ্যিতো ন্যেয়ে। নচ বান্ধবঃ। আবিশত্যপ্রমন্তোহদো প্রমন্তজ্বমন্তবৃৎ ॥
যন্তব্যাবাতি বাতোহয়ং সূর্যন্তপতি যন্তমাৎ। যন্তব্যাব্যতি দেবো ভগণো ভাতি যন্তমাৎ ॥ ৩০ ॥
যন্তব্যাভীতা লতাশ্চোযধিভিঃ দহ। স্বে কালেহভিগৃহুন্তি পুজ্পাণিচ কলানিচ ॥ ৩৪ ॥
স্বান্তি দরিতো ভীতা নোৎদর্পত্যুদ্ধি র্যতঃ। অগ্নিরিন্ধে দ্গিরিভি ভূ ন মজ্জতি যন্তমাৎ ॥ ৩৫
অনো দ্লাতি শ্বতাং পদং যনিয়্মান্তঃ। লোকং স্বদ্হং তমুতে মহান্ সপ্তভিরাবৃতং ॥ ৩৬ ॥

श्रीभव्यामी।

যম্মান্তীতা:॥ ৩৪॥

যতোভীতাঃ সরিতঃ প্রবৃত্তি। ইক্ষে দীপ্যতে। সহ গিরিভি ভূ:॥ ৩৫॥ অদো নভো যদ্ধিয়মাৎ যস্যাজ্ঞা মহানু মহস্তত্তং অহঙ্কারাত্মকং স্বদেহং লোকত্ত্বেন বিস্তারম্বতি॥ ৩৬॥

क्रममन्धः।

প্রেরণাং। বাতি স্বরুদ্ধেন বহুদ্ধেন দিগ্ভেদেন চ চলতি তপতি কুত্রচিং। কদাচিন্তাপন পূর্বকং প্রকাশয়তি উদয়ান্তময় দ্বাং। এবং ভাতিচ॥ ৩০॥ ৩৪॥

স্রবন্ধি কচিচ্ছিন্ন। কণো গঙ্গা ভবিষ্যতীতি ন্যায়াং কণাচিন্ন স্রবন্ধ্যপীতি। ইন্ধে কণাচিং কুন্দিং অব্যক্তমপি তিষ্ঠতীতি॥ ৩৫ অনঃ শারীরং নভঃ শ্বসতাং দেহানাং পদং শাসক্রিয়াগামবকাশং দদাতি মৃত্যানাং তেষান্ধ নদদাতি তদাম্পদং ন ভব ভীত্যর্থঃ॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥

এবিখনাথচক্রবর্তী

ভিন্নদৃশামজ্ঞানিনাং সর্ব্বোং, ভন্নং- ভন্নপ্রকার্মাই য ইতি। ভূতৈরেব ভূতান্যন্তি সংহরতি। অধিৰজ্ঞা যজ্ঞাধিকারিছেন তৎফলদাতা। কলয়তাং বশীকুর্বতামণি।

যদযন্ত্ৰাৎ বিষণু গগাৎ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥

ইন্ধে দীপ্যতে সোহিথি:। গিরিভি: সহ ভূর্বন্তপাশাস্থাক পুরুষভারেণাপি ন মজ্জতি কিন্তু কটেনাপি ধৈর্য্যমের ধতে অতি কটেতু স্থাপরাক্তে তয়া গোর্জিপা বন্ধনে স্থভাব জ্ঞাপনমিতি ভাব:॥'৩৫॥

অদো নভঃ বরিলমাং বরিদেশাং। শ্বসতাং জীবতাং প্রাণিনাং খাস্ক্রিরাবতাং প্রমবকাশং মতু মৃতানাং গদতি মহান্ মহতবং ব্রহ্মা স্বদেহং বৈরাজং লোকং ভূরাদি লোকজেন বিস্তারয়তি॥ ৩৬ গ্র

বশীভূত করে তাহাদিগেরও প্রভূ। তাঁহার প্রিয় কেহ নাই এবং বান্ধবও কেহ নাই, আর তিনি স্বয়ং অপ্রমন্ত হইয়া প্রমন্ত জনের অন্ত করেন॥

অপর, তাঁহার ভয়েতেই বায়ু স্বাত্ত বিচরণ করিতেছেন, তাঁহার ভয়েতেই স্থ্য উত্তাপ দিতেছেন, তাঁহার ভয়েতেই ইস্ত্র বর্ষণ করিতেছেন, তাঁহার ভয়েতেই বক্ষত্রগণ দীপ্তি পাইতেছে॥ ৩২॥

তাঁহার ভয়েই ওয়ধি সহ বৃক্ষ ও লতা সকল স্ব স্ব কালে ফল পুষ্প গ্রহণ করিতেছে ॥ ৩৪ ॥

তাঁহাকে ভয় করিয়া নদী সকল প্রবাহিত হইতেছে, জলনিধি তাঁহার ভয়েতেই ভীত হইয়া আপনার বেলা (তীর বা সীমা) অভিক্রমণ করিতেছে না, ছাঁহার ভয়েই অগ্নি দীতি পাইভেছেন, তাঁহার ভয়েতেই অচল সহ এই অচলা জলমগ্ন হইতেছে না ॥ ৩৫॥

তাহার আজ্ঞায় এই আকাশ খাস ত্যাগার্থ অবকাশ দিহতেছে এবং তাঁহার আজ্ঞায় এই সহান্
অর্থাৎ মহন্তব্ব সপ্ত পদার্থে আর্ত হইয়া অহন্ধার রূপ স্থীয় দেহকে লোক তত্ব রূপে বিস্তার করি
তেছে। ৩৬।

গুণাভিমানিনো দেবা: সর্গাদিষদ্য ষত্ত্বাথ। বর্ত্তিষ্টেশ্রুগং যেবাং বদ এতচ্চরাচরং ॥ ৩৭ ॥
সোহনস্তোহস্তকর: কালোহনাদিরাদিক্দব্যয়:। জনং জ্বনেন জনরন্মারয়ন্ম ত্যুনাস্তকং ॥ ৩৮ ॥
॥ ॥ । ইতি শ্রীভাগষতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং দংহিতারাং বৈরাদিক্যাং ভৃতীয়ক্ষদ্ধে কাপিলেৱে ভক্তিযোগোনাম একোনব্রিংশোহধ্যারঃ॥ ॥ ২৯ ॥ ২৯ ॥ ২॥

এতগৰাসুবাচ॥

তক্তৈত জ্বনো নুনং নামং বৈদোরুবিক্রমং। কাল্যমানোহিপি বলিনো বায়োরিব খনাবলিঃ॥১

क्षित्रवामी।

শুণাভিদানিনে। শুণনিরস্তারো দেবা ত্রন্ধার: । অধ্য বিশ্বী সর্গাদির প্রতিষ্টে । অত্যুগং বারংবার্মিতার্থ: ॥ ৩৭ ॥ কনেন পিতাদিনা জনং প্রাদিং জনবন্ আদি হং মৃত্যা অন্তক্ষপি মার্বরস্তকর: স্বর্ত্ত অনাদিরনজোহ্ব্যবুশ্চ ॥ ৩৮ ॥ ॥ ০ ॥ ইতি তৃতীরে একোনজিংশ: ॥ ॥ ॥

বিংশেতু কার কাঝাণি লালনাক্লচেতলং। কামিনাং তামদী পাপাদধোগতিক্লীব্যতে॥ • ॥
কাল্পভাবৰৰ্ণনপূৰ্ব্বকং বৈরাগ্যার চিত্রকর্ম্বকাং সংস্থতিং অধ্যায়ত্রবেগ প্রাণক্ষতি। তইস্তত্ত বলিনা কাল্ভ বলিনেতি বা
পাঠা। কাল্যমানা বিচাল্যমানো হপি বারোবিজিনং বধা মেবপঙ্জিন বিবদ্॥ ১ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ 🕶 ॥ ইতি **জীভাগবতে** তৃতীয়ন্ধকে **জীলীবগোলামিকত ক্রমসন্দর্ভক্ত একোন**বিংশোহধ্যার: সমাপ্ত: ॥ •॥ বলিনেতি পাঠে তেন কালেনৈবেতি শেষ:॥ ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬॥

প্ৰী বিশ্বনাগঢ় ক্ৰবৰ্তী

গুণাতিমানিনো এক ধর্ম কুড়াদর:। অমুযুগ্ং প্রতিকরং॥ ৩৭॥। জনেন পিত্রাদিনা জনরন্ সরাদিকং॥ ৩৮॥

॥ *॥ ইতি সারার্থনর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। উনত্রিংশক্তীরস্য সক্ষতঃ সক্ষতঃ সভাং ॥ *॥
নিশুণিং সন্তাং ভক্তিং জ্ঞানবোগোঁচ সাবিকৌ। হবিং পঞ্চির্ধ্যাকৈ প্রিমাস মাত্রং। অধ্যায়ত্রিত্রেনাথ ক্রমেণ
কিল কুর্মণাং। তামসীং রাজসীঞ্চাপি সাবিকীং গতিকৈক্রং। ত্রিংশে তাক্ষ্য বৃদ্ধর মৃতি নারক্ষ্যণাঃ। প্রাহ সাংসাবিকাণাং
জ্ঞীপ্রাধ্যাক্সচেত্সাং॥ • ॥

্ অব হরিভক্তিং বিনা বিচিত্র কর্ম্মতাং সাংসারিকং ছংখনখান্ত্রেরেণ প্রপঞ্চরতি। তস্য কালস্য বলিনো বলিনেতি চ পঠি: ॥ ১

তাঁহা হইতেই ভীত হইয়া গুণনিয়ন্তা দেবগণ বারস্বার এই বিশ্বের স্ফ্যাদিতে প্রবর্ত্তমান হইতে-ছেন, এই কারণেই এই চরাচর জগৎকে ঐ সকল দেবতার বশবর্তী বলা গিয়া থাকে ॥ ৩৭ ॥

মা! সেই কাল পিত্রাদি জন দারা পুত্রাদি জনকে উৎপন্ন করিয়া থাকেন এবং তিনি মৃত্যু দারা যমকেও মারিলা থাকেন, অতএব তিনি সকলের আদিকর্তা এবং তাঁহা হইতেই সকলের অন্ত হয়, কিন্তু তিনি বৃদ্ধং অনাদি, অনন্ত ও অব্যয় ॥ ৩৮ ॥

॥ # ॥ ইতি তৃতীয়ে ঊনতিংশ । # ॥

ত্তিংশদধ্যায়ে অধর্ম দারা কায় কান্তাদি ভরণ পোষণার্থ ব্যগ্রচিত কামি পুরুষদিগের তামদী গতি বর্ণন হইতেছে॥ • ॥

ভগৰান্ কপিল কহিলেন মাতঃ । এই সকল লোক সেই বলবান্ কাল কর্তৃক নিরম্ভর বিচাল্যমান হইয়াও, ষেমন মেঘ পঙ্ক্তি ৰায়্র বেগ জানে না, তাহার ন্যায়, তাঁহার তুরতিক্রম বিক্রম অবগত হইতে পারে না ॥ ১॥ যং যমর্থ মূপাদতে হৃংখেন স্থাহেতবে। তং তং ধুমোতি ভগবান্ পুমান্ শোচতি বংকতে॥ ২ যদক্ষন্য দেহদ্য দাক্ষক্য কুর্মতিঃ। ক্রবাণি মন্যতে মোহাদ্য হ ক্ষেত্র বস্নিচ । ০॥ জন্ত বৈ ভব এড নির্মাণ বাং বাং বোনিমনুত্রজেৎ। তদ্যাং তদ্যাং দ লভতে নির্ভিং ন বিরক্ষাতে॥ ৪ নরক্ষো হপি দেহং বৈ ন পুমাংস্তাক মিছতে। নারক্যাং নির্ভৌ সত্যাং দেবমায়াবিমোহিতঃ। সংস্করহিতো মর্ত্যো র্দ্ধসেবাপরিচ্যতঃ। মামনারাধ্য হৃঃখার্তঃ কুট্রাসক্তমানসঃ॥ ৫॥ আলু জায়া স্তাগার পশু দেবিণ বন্ধরু। নির্চ মূল হৃদয় আলুনাং বহু মন্যতে॥ ৬॥

वीधत्रवामी ।

বিক্রমমেবাহ যং যং অর্থং হঃথেন প্রাদেন উপাদতে আপাদয়তি তং তং ভগবান্ কালো ধুনোতি বিনাশয়তি যৎকতে যশ্মিন্ নিমিতং॥ ২ ॥

শোকে হেতৃ: যদ্যশাৎ সাম্বদ্ধ কলাজাদি সহিত্যা দেহস্য সম্ধীনি গৃহাদীনি বস্থ দ্বাং। অফুক্তসমূচ্যোর্থশ্চকার:॥৩॥ হ্র্মতিত্বং দশ্যন্ হুঃখং প্রপঞ্চাতি অন্তরিতি চতুর্দশভিঃ॥৪॥

নারক্যাং নরকাহারাদিভি জাতায়াং॥ ৫॥

নির্দৃশ্লং প্রস্তমনোর্থং হৃদয়ং যন্ত বহু মন্যতে কুতার্থো ২হমিতি খাঘতে ॥ ৬ ॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী

ভগবান্ কাল: ॥। ২

শোকে হেতৃ: যদ্যক্ষাৎ সাত্ত্বদ্ধস্য কলতাদি সহিত্স্য ॥ ৩ ॥

হশতিবং দশ্যতি জন্তুরিতি ॥ ৪ ॥

নারক্যাং নরকাহার স্ত্রীসঙ্গাদিভি জাতায়াং ॥ ৫ ॥

নিরুদ্ধ মুলং যদ্য তাদৃশং হৃদয়ং যদ্য সঃ ॥ ৬ ॥

অতএব ইহারা স্থের নিমিত্ত সাতিশয় প্রয়াস করিয়া যে যে অর্থ উৎপাদন করে, ভগবান্কাল তং সমুদায় বিনাশ করিয়া ফেলেন, তাহার নিমিত্ত পুরুষ শোকে নিমন্ন হয়। ২॥

কারণ পুক্ত কলত্রাদি সহ অনিত্য দেহ সমন্ধী, যে সকল গৃহ, ক্ষেত্র এবং ধনাদি, ঐ তুর্ম তি ব্যক্তি মোহ বশতঃ সে সমুদায়কে নিত্য বলিয়া মানে॥ ৩॥ :

তাহাতে ঐ জীব এই সংসারে যে যে যোনি প্রাপ্ত হয়, সেই সেই যোনিতেই স্ত্র্প লাভ করে, কিন্তু তাহার বৈরাগ্য হইতে পারে না॥ ৪॥

মা! সে ব্যক্তি দেবমায়াতে এরপ বিমোহিত যে, যদি নরকন্থ হয়, নরকাহারজনিত নির্কৃতি হইলে তাহাতেই তৃতি বোধ করে, তথনও দেহ ত্যাগ করিতে তাহার ইচ্ছা হয় না। মা! সকল ব্যক্তির এ প্রকার মোহ হয় না, যে মানব সংসঙ্গ রহিত এবং বৃদ্ধেষ্টের প্রাধ্বি, কেবল কুটুন্থেতেই আসক্ত চিত্ত, কথন আমার আরাধনা করে না, তাহারই ঐ প্রকার তুর্গতি হয় ॥ ৫॥

দেহ, কলতে, পুত, গৃহ, পশু, দ্রবিণ এবং বন্ধু বান্ধবে তাহার হান্ধ প্রাসক্ত হওয়াতে নামা মনোরথ উৎপন্ন হয়, তাহাতেই সে আপনাকে বহু করিয়া মানে, অর্থাৎ আমি কৃতার্থ হইলাম এই বলিয়া আপনাকে শ্লাঘা করে॥ ৬॥ দ দহমান সর্বাদ এষামূৰহনাধিনা। করোত্যবিরতং মুচ়ো ছুরিতানি ছুরাশয়: ॥ ৭ ॥ °
আকিপ্তাজেনিয়েরীণামসতীনাঞ্চ মায়য়া। রহোরচিতয়ালাপৈ: শিশ্নাং কলভাবিণাং ॥ ৮ ॥
গৃহেয়ু কৃটণর্মেয়ু ছু:খতন্তেলতন্তিভা। কুর্বন্ ছু:খপ্রতীকারং স্থবন্মন্তে গৃহী ॥ ৯ ॥
অধৈরাপাদিতৈপ্র্বিরা হিংদয়েতস্তত্দ তান্। পুঞাতি বেষাং পোষেণ শেষভূগ্ যাত্যধঃ বয়ং ॥ ১০
বার্তায়াং লুপ্যমানায়ামারকায়াং পুনঃ পুনঃ। লোভাভিভূতো নিঃসত্বঃ পরার্থে ক্রতে স্পৃহাং॥ ১১ ॥

औरतवामी।

উष्टमाधिना (भाषनिष्ठश्रा॥ १॥

ছরাশয়ত্বমাহ আক্রিপ্ত আত্মা ইল্রিয়াণিচ যক্ত। ক্রা ক্রুসভীনাঞ্চ পৃংশ্চলীনাং অপি বছসি বচিত্রা সভোগাদি রূপরা মধুব-ভাষিণাং শিশুনাং আলাপৈশ্চ অ্থবন্মন্যতে ইত্যুত্তরেশাব্বঃ ॥ ৮॥

ক্টা বিত্তশাঠ্যাদি বহুলা ধর্মা যেষু হৃঃথপ্রধাদেমু ॥ ১॥
বেষাং পোধণেনাধাে যাতি তান্ প্রফাতি। শেষভূগিতি জােগোহপি তক্ত হ্রাভ ইত্যর্থ:॥ ১০॥
বর্জায়াং জীবিকায়াং নিঃসভঃ অসক্তঃ। পরার্থে পরস্বে॥ ১১॥

ক্রমদক্ষ 🕏 ।

সংদহেতি কচিং পাঠঃ নৈষ পুণাবিণ্যসন্মতঃ॥ ৭॥ আফিপ্তান্মেতি যুগাকং॥৮। ১। ১০। ১১। ১২। ১৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

উন্নাধিনা রক্ষণ পোষণাস্ত্রশ্বন বিবাহ প্রদানাদি চিন্তরা ॥ ৭ ॥ ৮ ॥
কূটা বিত্তশাঠ্যাদি বহুলা ধর্মা যেষু হঃথতদ্বেষু হঃথপ্রধানেষু ॥ ৯ ॥
শেষভূক্ তত্ত্তকাৰশিষ্টভূগিতি ভোগো হপি তস্য হল ত ইত্যর্থ: ॥১০ ॥
বার্তায়াং জীবিকারাং ॥ ১১ ॥

এবং ঐ সমস্ত পুত্র কলতাদির ভরণ পোষণ অমুরঞ্জন ও বিবাহ দেওয়া ইত্যাদি চিন্তায় তাহার সর্বাঙ্গ দশ্ধ হইতে থাকে, হৃতরাং সেই হুরাশয় মৃতৃ হুক্ষ্ম করিতে প্রায়ত হয় ॥ ৭ ॥

অপিচ, তাহার আত্মা এবং ইন্দ্রিয়গণ বিষয়ে আক্ষিপ্ত হওয়াতে সে পুংশ্চলীদিগের নির্জনে বির-চিত সম্ভোগাদি রূপ মায়া তথা মধুরভাষি শিশুদিগের ভূমধুর আলাপ খারা- ॥ ৮॥

আপনাকে স্থিতুলা বোধ করে এবং যে গৃহাশ্রমে বিত্যাঠ্যাদি কাপটাই বছল, আর যাহাতে চুঃখই প্রধান,ভাহাতে আদক্ত হইয়া আলস্থ পরিহার পূর্বক নিরস্তর চুঃখের প্রতীকার করিতেই যত্নঘানু হয় ॥ ৯॥

অতএব গুরুতর হিংসায় ইতন্ততঃ বহু স্থান হইতে অর্থ সংগ্রহ করত তদ্ধারা এমত সকল লোকের পোষণ করে যে, যাহাদের ভরণে অধােগতি হয়। ঐ হতভাগ্য মনুষ্য ঐ প্রকারে অর্থসংগ্রহ করিয়া স্বয়ং ভাগে করুক, তাহাও তাহার পকে চুর্যট, সে সকলকে ভোজন করাইয়া আপনি অবশিষ্ট ভক্ষণ করে॥ ১০॥

পরে যদি ক্লাচিৎ ক্লীবিকা বিশুপ্ত হয়, অন্য জীবিকা অন্তর্মার্থ পুনঃ পুনঃ যত্ন করে, কিন্তু যথন তাহাও বিফল হয় এবং আর উপায় করিতে সমর্থ হয় না, তথন লোভাভিভূত হইয়া অন্যের ধনে স্পৃহা করে ॥ ১১ ॥

কুট্বভরণে ২কল্যো মন্দভাগ্যো রথোদ্যম: । শ্রেয়া বিহীন: কুপণো ধ্যায়ন্ খদিতি মৃঢ্ধী: ॥ ১২ এবং বভরণাকল্যং তৎকল্ঞাদয়স্তদা । নাদ্রিয়স্তে যথাপূর্বেং কীনাশা ইব গোজরং ॥ ১০ ॥ তঞাপ্যকাভনির্বেদো জিয়মাণ: বয়জুতৈ: । জরয়োপাত্রবৈরূপ্যো মরণাভিমুখো গৃহে ॥ ১৪ ॥ আস্তেহ্বমস্টোপন্যক: গৃহপাল ইবাহরন্ । আময়াব্যপ্রদীপ্তামিরক্লাহারোহক্লচেন্তিত: ॥ ১৫ ॥ বায়ুনোৎক্রমতোন্তার: কফসংরুদ্ধনাভ্না । কাস খাস কুলায়াস: কঠে ঘুর্দ্ধারতে ॥ ১৬ ॥

श्री धत्रशामी।

व्यक्ताः व्यममर्थः ॥ ১२ ॥

পূর্মং যথাজিয়ন্ত তথা আদরং ন কুর্মষ্টি । कीনাশাং কুপণাং কুষীবলাং। গোল্পরং বুদ্ধবলীবর্দং ॥ ১০॥

जित्रमानः भूषामानः ॥ ১৪॥

অবমত্যা অবজ্ঞ উপন্যক্তং সমীপে প্রক্ষিং গৃহপাল: খা আহরন্ ভূঞান: । আমরাবী রোগী ॥ ১৫ ॥

উত্তারো বহিনির্গতনেত্র:। কফেন সংক্ষা নাড়য়ো মার্গভূতা বস্ত তেন কাসখাসাভ্যাং ক্বত আয়াদো বস্ত ঘুর ঘুর ইতি

ক্রমসন্দর্ভ:।

ত্রাপীতি সার্দ্ধং॥ ১৪। ১৫। ১৬। ১৭॥ ১৮। ১৯॥

গ্ৰীবিশনাপচক্ৰবৰ্তী।

প্रज्ञापि भौवानाभाषः भाषन् ॥ >२॥

कीनाभाः कृषीयनाः। त्याखनः तृक्षयनीयर्भः॥ २०॥

পূর্বংভূতৈঃ পুত্রাদিভিত্রিমাণঃ পু্যামাণঃ পোষণপ্রকারমাহ। অবমত্যা অবজ্ঞরা উপন্যন্তং প্রকিথং গৃহপালঃ খেব আহরন্ ভূঞানঃ ॥ >৪ ॥

আময়াবী রোগী॥ ১৫॥

.উৎক্ৰমতা কাশাল্যাধিকোন উৰ্ধু মৃতিঠতা ক্ফক্ৰনাড়ীমাৰ্গেণ বাৰুনা হেভুনা উন্বৰ্ভিতা তাৰা অক্স: ক্নীনিকা বস্য সং

তাহার মন্দভাগ্য প্রযুক্ত ধনোপার্চ্জনার্থ উদ্যম সকল যথন বিকল হয় তখন অতি দীন ও ঐবিহীন,
হতরাং কুটুস্বভরণে অসমর্থ হইয়া ছুরন্ত চিন্তায় ব্যাকুল হয় এবং বৃদ্ধি বিমৃত হওয়াতে কেবল এক
একবার দীর্ঘ নিশাস ত্যাগ করিতে থাকে ॥ ১২ ॥

কিন্তু, আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে ঐ পুরুষ যখন আপনার ও আত্মীয়গণের ভরণ পোষণে অক্ষম হয় তথন ধেমন নির্দয় ক্ষকেরা বলীবর্দ হন্ধ ছইলে তাহার প্রতি আর যত্ন করে না, তদ্রাপ ঐ ব্যক্তির পুত্র কলতাদি পূর্বের ন্যায় ভার তাহারু প্রতি আদর করে না । ১৩॥

পরস্তা, তৎকালেও ঐ পুরুষের নির্বেদ জন্মে না, যে সকল ব্যক্তিকে স্বরং পোষণ করিরাছিল তাহা-দের কর্ত্বক পুষ্যমাণ হইয়া গৃহেতেই স্বন্ধিতি করে, তথন জরায় স্বত্যন্ত বৈরূপ্য প্রাপ্ত হইয়া মরগার্থ স্বভিমুধ হয় ॥ ১৪ ॥

তথাচ, দে ৰাহাদিগকে পোষণ করিয়াছিল তাহারা যত্ন পূর্বক আর তাহার পোষণ করে না, যথাকালে অবজ্ঞা পূর্বক মং কিঞ্চিৎ ভক্ষা দ্রব্য তাহার অগ্রে কেলিয়া আইনে, গৃহপাল কুক্রের তুলা তাহাই তাহাকে আহার করিতে হয়, তৎকালে তাহার শরীরের স্বাচ্ছন্দা দূরে থাক্ত ক্রমশঃ রোগগ্রস্তু হইয়া,পড়ে, আর পূর্বের ফায় অয়ির তেজ থাকে না এবঃ অয়াহার ও অয় চেকা হইয়া
থাকে ॥ ১৫॥

অনস্তর ঐ ব্যক্তির মথন মৃত্যু উপস্থিত হয় তুখনও তাহার ক্লেশের পরিদীক্ষনাই, তাহার দেহত্ব

শরানঃ পরিশোচন্তিঃ পরিবীতঃ স্ববন্ধৃতিঃ। বাচ্যমানো হপি ন জতে কালপাশবশং গতঃ॥ ১৭॥ এবং কুটুসভরণে ব্যাপৃতাত্মাজিতেন্দ্রিঃ। নিরতে রুদতাং স্বানামুক্তবেদনমান্তধীঃ॥ ১৮॥ যমদ্তৌ তদা প্রাপ্তে ভীমৌ সরভদেক্ষণো। স দৃষ্ট্বা ত্রন্তন্তনয়ঃ শক্ষা তথং বিমুঞ্চি॥ ১৯॥ যাতনা দেহ আর্ত্য পাশৈবন্ধা গলে বলাৎ। নয়তো দার্যস্থানং দণ্ডাং রাজভটা যথা॥ ২০॥ তয়োনির্ভিন্ন হুদয় স্তর্জনৈর্জাতবেপথুঃ। পথি শভি ভক্ষামাণ আর্তোঘং স্বম্মুমারন্॥ ২১॥

ञ्चीभवत्रामी ।

भक्तः करताजि॥ ১५॥

প্ৰিবীত: প্ৰিৰেটিত: বাচ্যমান: বন্ধে। তাতেতা। হুয়মান: ॥ ১৭ ॥

अष्ठभी न हेमिडिः ॥ ১৮॥

মৃতস্য পুণা পাপাজ্যাং যে গভী তত্ৰ পাপগতিনাহ যমদ্তাবিত্যাদি যাবংসমাঝি। সরভসং সক্রোধনীক্ষণং যয়োজৌ দৃষ্ট্য ॥ ১৯॥ আর্ত্য নিক্ষয় ॥ ২০ ॥

তবোতজনৈ: নির্ভিন্ন স্দয়ং যসা। আর্ত্তি দন্ চলতীতি দিতীয়েনৈবাময়: ॥ ২১ ॥

ক্রমদন্দর্ভ:

যাতনা দেহে ত্যাবৃত্য প্রবেশন পূর্জ চং নিক্ষোত্রর্থ:। নয়তঃ তাবিতিশেব:॥ ২০ ॥ ত্যোরিতি যুগ্মকং ॥ ২১ । ২২ । ২০ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী

ঘুবুব ইতি শব্দং কবোতি ৪ ১৬॥ ১১॥

अष्ठभी न हैंगि डिः॥ ১৮॥

ষ্তব্য পাপাত্মনা গতিমাত যমদ্তাবিতি। স্থিমাণঃ ॥ ১৯ ॥ :

স্বাদেহালিকাশ্য বাতনাময়দেহে তং প্রবেশ্য আবৃত্য নিহন্য তৌনয়তঃ প্রাপন্নতঃ ॥ ২০॥

তবো**ওজ**ে নৈঃ স্বম্বং তদ্যৈৰ পাপ্সা কল্মিদ্মস্ভৰামীতি স্বৰ্ ॥ ২১॥

ৰায়ুর উৎক্রমণ আরম্ভ হইলে নেত্র বহির্গত হইয়া পড়ে এবং ঐ বায়ুর মার্গ রূপ নাড়ী সকলও কফ দারা রুদ্ধ হইয়া যায়, তাহাতে নিশাস ফেলিতে অথবা কানিতেও বছু আয়াস বোধ হয়, কেবল কঠ মধ্যে এক প্রকার ''ঘুর ঘুর'' শব্দ হইতে থাকে॥ ১৬॥

মা। সে ঐ অবস্থার শরন করিয়া শোককারি স্ববন্ধুগণে পরিবৃত হইলে তাহাদের মধ্যে কেহ "হে বন্ধো" কেহ "হে তাত" এই বলিয়া পুনঃ পুনঃ আহ্বান করিলেও কালপাশের বশবর্তী হওয়াতে সে কিছুই বলিতে পারে না॥ ১৭॥

অতএব বে পুরুষ ইন্দ্রি জয় করিতে না পারিয়া কেবল কুটুম্ব ভরণেই ব্যাপৃত হয়, মরণ কালেও তাহার হুথ দেখা যার না, রোক্লদ্যমান আজ্মীয় স্বজনের কাতরতায় তাহার হৃদ্যে গুরুতর বেদনা উপস্থিত হয়, তাহাতে দে জ্ঞান শৃত্য হইয়াই প্রাণ ত্যাগ করে॥ ১৮॥

ঐ প্রকারে মৃত ব্যক্তির পাপ ও পুণ্যানুদারে গতি ছুই প্রকার হয়, তন্মধ্যে প্রথমতঃ পাপ গতির বিবরণ বলি আবণ করুন। দেই বাক্তির মৃত্যু হইবা মাত্র সফ্রেষ নয়ন ছুইজন যমন্ত আদিয়া উপ স্থিত হয়, তাহাদিগকে দেখিয়াই,দে কম্পিত হাদয় হইয়া মল মৃত্র ত্যাগ করে॥ ১৯॥

পরে ঐ যমদূতেরা তাহাকে সুল দেই হইতে যাতনা দেহে নিরুদ্ধ করত যেমন রাজপুরুষেরা দণ্ডার্হ লোককে বন্ধন করে তাহার স্থায় গলদেশে পাশ বন্ধন পূর্বক স্থানীর্ঘ পথে লইয়া যায়॥ ২০॥ তাহাদের ছুই জনের তর্জনে ঐ পুরুষের হৃদয় বিদীর্শ হইতে থাকে এবং সাতিশয় কম্প উপস্থিত

ক্ষুতৃট্ পরীতোহর্ক দবানলানিলৈ: সম্ভণ্যমানঃ পথি তপ্তবালুকে।
কৃচ্ছেণ পৃষ্ঠে কষ্মাচ তাড়িতশ্চলত্যশক্তো হপি নিরাশ্রমোদকে ॥ ২২ ॥
তত্ত্ব তত্ত্ব পতন্ প্রাম্থে মৃচ্ছিতঃ পুনরুপিতঃ। পথা পাপীয়দা নীতন্তমদা যমদাদনং ॥ ২৩ ॥
যোজনানাং দহস্রাণি নবতিং নবচাধ্বনঃ। ত্রিভিম্ ছুর্ট্রের্ছাভ্যাং বা নীতঃ প্রাপ্রোতি যাতনাঃ ॥২৪
আদীপনং স্বগাত্তাণাং বেষ্ট্য়িজোল্মুকাদিভিঃ। আত্মমাংদাদনং কাপি স্কৃত্তং পরতো হপি বা ॥২৫

श्रीभद्रयामी।

কুজ্ড্ভাং পরীতো ব্যাপ্তঃ। তথা বালুকা যশ্মিন্। নির্গত আশ্রমো বিশ্রাম স্থানং উদকঞ্ যশ্মিন্॥ ২২ ॥

Ф

यমসাদনং নীতো ভবতি॥ ২৩॥

তবৈব বিশেষমাহ অধ্বন: সম্বন্ধিনাং যোজনানাং নবতিং নবচ সহস্রাণি পাণাধিক্যে ছাভ্যাং নীতঃ সন্॥ ২৪ ॥ যাতনাঃ সংক্ষেপতো দর্শয়তি চতুর্ভি:। আদীপনং প্রজ্ঞলনং প্রাপ্নোতি স্বেন কুতং অন্যেন বা কুতং ছিন্নং যৎ স্বস্যু দাংসং তস্যু ভক্ষণমিত্যর্থ:॥ ২৫ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

যোজনানামিতি চতুকং॥ ২৪। ২৫॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নিরাশ্রমোদকে বিশ্রামস্থল জল রহিতে পথি ॥ ২২ । ২৩ ॥

অধ্বনঃ সম্বন্ধিনাং যোজনানাং নবতিং সহস্রাণি নবতাধিকানি পাপাধিক্যে ছাভ্যামেব মুহুর্ত্তাভ্যাং নীতঃ সন্ ॥ ২৪ ॥

যাতনা এবাহ । আদীপনং প্রজ্ঞানমিত্যাদীনাং প্রাম্বোতীত্যনেনাম্বয়ঃ। স্বেন কৃতং ছিল্লং প্রতঃ প্রেণ বা ॥ ২৫ ॥

হয়। পথি মধ্যে তাহাকে কুরুরে ভকণ করিতে আইদে। তথন সে আপনার পাপ স্মরণ করত অতিশয় ব্যাকুল হয়॥ ২১॥

অপর ক্ষ্ণা তৃফায় ব্যাপ্ত এবং পৃষ্ঠদেশে ক্ষা দারা তাড়িত, আর তপ্তবালুকাময় পথে, সূর্য্য কিরণ, দাবানল ও উষ্ণ বায়ু দারা সন্তাপিত হইয়া গমন করে, সেই পথে বিশ্রামস্থান অথবা জল কিছুই পাইবার সন্তাবনা নাই, অসক্ত হইয়াই চলিতে হয় ॥ ২২ ॥

কিন্তু কি করিবে দাধ্য নাই, প্রান্তি বশতঃ বারম্বার পড়িয়া মূচ্ছা যায়, আবার মূচ্ছা অপগত হইলে আপনিই গাত্রোত্থান করে, এই প্রকারে অত্যন্ত ক্রেশ ভোগ করিতে করিতে ঐভয়ঙ্কর পথ স্বারা শমন সদনে নীত হয়। ২০॥

মা! যে পথ দিয়া যমভবনে গমন করিতে হয় তাহার পরিমাণ নিরানকাই সহত্র যোজন, উক্ত পরিমাণের বন্ধ ঐ ব্যক্তিকে তিন মুহূর্ত্ত এবং তদপেকা গুরুতর পাপ থাকিলে ছই মুহূর্ত্তের মধ্যে অতিক্রমণ করিয়া উপনীত হইতে হয়, সে স্থানে উপস্থিত হইয়াই যে স্থান্থি হয়। ২৪।

কোন স্থানে **স্থলন্ত কার্চ দারা গাতে** বেপ্তিত করিয়া দগ্ধ করে, কোথাও বা দেখে আপনা দারা অথবা অন্যের দারা ছি**ন্ন আপনার মাংস ভক্ষণ** করিতে হইতেছে॥ ২৫॥ জীবতশ্চান্ত্রাস্থ্যদারং শৃগ্রের্থমসাদনে। সর্গ র্শ্চিক দংশাদ্যৈ দশন্তিশ্চান্থাবৈশসং॥ ২৬॥
কৃন্তনক্ষান্যবশো গল্পাদিভ্যো ভিদাপনং। পাতনং গিরিশ্লেভ্যো রোধনং চাম্থ্যন্ত্রোঃ।

যাস্তামিস্রাক্ষ্যামিস্র রৌরবাদ্যাশ্চ যাভনাঃ। সুঙ্কে নরো বা নারী বা মিথঃ সঙ্গেন নিশ্মিতাঃ॥ ২৭

অকৈব নরকঃ স্বর্গ ইতি মাতঃ প্রচক্ষ্যতে। যা যাতনা বৈ নারক্যন্তা ইহাপ্যুপলক্ষিতাঃ॥ ২৮॥

এবং কুটুম্বং বিভ্রাণ উদরং ভর এব বা। বিস্তুজ্যেহোভ্যং প্রেত্য ভুঙ্কে তৎ ফলমীদৃশং॥ ২৯

श्रिश्वयामी।

আত্মনো বৈশসং পীড়াং॥ ২৬॥ ভিদাপনং ভেদপ্রাপণং॥ ২৭॥

নচেদ্যসন্তাবিতং অত্যাপি দৃশামানস্থাদিত্যাহ অত্তেবেতি॥ ২৮॥

উভয়ং कूष्ट्रेषः चरमङ्क ॥ २५ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

উদ্ধারমিতি সন্মতঃ পাঠঃ। প্রালোডীতি যোজনয়া পীড়ামিতাপি দিতীয়াত্তেন ব্যাথ্যাসামানাবাং ॥ ২৬ ॥ কঞ্জনং কর্তনং ॥ ২৭ ॥

যা যাতনাস্তাশ্চ ভূঙ্কে। মিথঃ সঙ্গেনেতি। পাপি**ঠ গৃহস্থ প্রসঙ্গার**রনার্য্যোক্তরোঃ পাপিঠ্ছে প্রতিপ্র সকল পাণাতিশ্য হেডুরিতি॥ ২৮। ২৯। ৩০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বৈশসং পীড়াং॥ ২৬॥

जिमाया विमात्रवामा जालनः अलिवः॥ २१॥

নহৈতদস্ভাবিভ্যত্তাপি রাজ্পতে কাসাঞ্চিৎ প্রত্যবয়ব ক্স্তনাদি যাতনানাং তথা অক্ চক্ষন বনিতাদি স্থভোগানাঞ্ দুশ্যব্যন্তাদিতাহে তবৈবেতি ॥ ২৮ ॥

উভয়ং কুটুম্বং উদরঞ্চ। প্রেত্য মৃত্যা॥২৯॥

অপর যমালয়ে উপস্থিত হইয়া দেথে কুকুর গ্রপ্ত জীবন সত্ত্বে অন্ত্র নাড়ী) টানিয়া বাহির করি-তেছে, কোন স্থানে বা সর্প র্শ্চিক দংশাদি নিষ্ঠুর রূপে দংশন করিতেছে, ইহাতে দে সাতিশয় বেদনান্দিত হয়॥ ২৬॥

অপিচ, কোথাও অবয়ব সকলের কর্ত্তন, কেখাও বা গজাদি খারা বিদারণ, কোজাল বা গিরিশৃঙ্গ হইতে পাতন, কোথাও বা জল ও গর্ত্তের অবরোধ ইত্যাদি যাতনা অমুভর করে। আর ্রামিজ্র, অন্ধতা-মিজ্র, রৌরর প্রভৃতি যে সকল যাতনা পরস্পার সঙ্গ খারা নির্মিত হয়, ঐ মৃত ব্যক্তি নর হউক বা নারীই হউক তৎসমুদায়ও তাহাকে ভোগ করিতে হয়॥ ২৭॥

মা ! এই যে দকল যাতনার কথা কছিলাম ইছা অসম্ভাবিত নয়, যে হেতু রাজদণ্ডে কাহারও কাহারও অবয়ব কর্ত্তনাদি যাতনা আর কাহাকেওবা অক্ চন্দন বনিতাদি উপভোগ করিতে এস্থানেই দেখিতে পাওয়া যায়, অতএব পণ্ডিতেরা কহিয়া থাকেন যে, এই স্থানেই নরক ও এই স্থানেই বর্গ। ফলতঃ নরক দুম্বদ্ধীয় যে যে যাতুনা ভোগ করিতে হয় তাহা এখানেও দুফ হইয়া থাকে॥ ২৮॥

অতএব সংসারে থাকিয়া কুটুম্ব ভরণেই ব্যাপৃত হউক অথবা উদর ভরণমাত্র কর্মে নিয়ত রত হইয়া জীবন যাপন করুক, মৃত্যুর পর এই স্থানেই দেহ ও কুটুম্ব পরিত্যাগ করিয়া পরলোকে কেবল আপনাকে ঐ সকল কর্মের ঐ প্রকার ফল ভোগ করিতে হয়॥ ২৯॥ একং প্রপদ্যতে ধরান্তং হিছেহ সং কলেবরং। কুশলে তরপাথেয়ো ভূত দ্রোহেণ যদ্ভং॥ ৩০ বিবেনাদাদিতং ততা শমলং নিরয়ে পুমান্। ভূঙ কে কুটুস্বপোষস্তা হাতচিত ইবাতুরং॥ ৩১॥ কেবলেন হাধর্মেণ কুটুস্বভরণোৎস্থকং। যাতি জীবো হন্ধতামিস্তং চর্মাং তমসং পদং॥ ৩২॥ অপস্তালরলোকস্তা যাবতী হাতনাস্ত তাং। ক্রমশং সমস্ক্রম্য পুনরতারজেচ্ছুচিঃ॥ ৩০॥
॥ ३०॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্তাং মংহিতারাং বৈয়াদিক্যাং ভৃতীয়স্কন্ধে কাপি-

क्षिथन**स्था**भी।

পাপার্জিভং ধন ভুঞ্জতে বহবঃ কত্তিবভূ নরকং যাতীত্যাহ এক ইজি। ভূতজোহেগ যদ্ভং তৎ সূলং কনেববং সং ধনক ইতিব-হিছা কুশলাদিত্বং পাপং তদেব পাথেয়ং ভোগ্যং যায়। ৩০॥

নহু পাপ্যপি বিহার গছতু তল্লাহ দৈবেনেতি তস্য কুটুৰ পোষ্ণস্য শুমুৰং পাপং * দৈবেনেখ্রেণ প্রাপিতং ভূঙ্জে ॥ ৩১ ॥ নফু কুট্ৰপোষ্ণং বিহিত্যেৰ তল্লাহ কেবলেনেতি । তম্সো নর্কস্য চর্মং পদং স্থানং ॥ ৩২ ॥

পুনম নিষ্য শ্বীরপ্রাপ্তি প্রকাবমাহ। নরলোকস্য মন্ত্র্বেহপ্রাপ্তেরগন্তাৎ অংশীক্ যাবত্যে। যাতনাং গাবছপেন বশুক-বালি বোন্যণ্ড ডাঃ সংশ্বা: ক্রমেণ সংপ্রাপ্য ভোগেন কীনপাপঃ ভচিঃ সন্ অত্র পুন্ন র্ডং প্রাপ্নোতীত্যর্থঃ ॥ ৩০ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি তৃতীয়ে বিংশঃ ॥ 🛊 ॥

ক্রমসক্র ।

देनदरम द्वारक रुपि तमधतमा देनश्वनाः क्रेयतस्त्र पर्यागावर जिष्ठेवा रुकि मात्रारः॥ ৩১। ৩১। ৩১।

🛚 🛊 ॥ 📑 তি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্ষে শ্রীজীবগোস্বামিক্সত ক্রমসন্দর্ভন্য তিংলোহধ্যায়: সমাপ্ত: ॥ 🛊 ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

কুশলেতবং পাপমের পাণেশং মরণ পথ ভোগ্যং যদ্য স:। ভ্তদ্রোহেণ যদ্ধুতং পুরীকৃতং তৎস্থাং কলেবরং হিছা। ০০ । তদ্য পাপকৃতস্য কুট্মপোষ্য্য শমলং মানিন্যং দৈবপ্রাপিতং কুট্মবিরহিত এব ভূঙ্কে ফ্তবিত ইব ॥ ৩১ ॥ তম্পো নবক্সা পদং স্থান ॥ ৩২ ॥

যাবতো যাতনা:। সাবছ্লেন বিশ্কবাদি যোনয়ো যা স্তাঃ ক্রমেণ প্রাণা ভোগেন ক্ষীণপাপঃ শুটিঃ সন্পুন নবিষং প্রাপ্রাং॥ ৩০॥

॥ * ॥ । ইতি সারার্থনিনিরাং হ্যিণ্যাং ভক্তেভসাং। ত্রিংশোহধ্যায় তত্তীর্দ্য দক্তঃ দক্তঃ সভাং ॥ * ॥

সে ব্যক্তি পাপাতরণ দ্বারা যে ধন অর্জন করিয়া রাখিয়া যায় তজ্জন্য নুরক ভোগ কেবল অর্জ্জরিতাকেই করিতে হয়, দে আপনার কলেবর যাহ। প্রাণিদ্রোহ করিয়া পুষ্ট করিত তাহা এবং সেই ধন এই স্থানেই ত্যাগ করিয়া একাকী পাপরূপ পাথেয় লইয়া ঘোর অন্ধকারময় নরকে প্রবিষ্ট হয়॥৩০

ম। এ ব্যক্তি যেমন ইহলোকে শরীর ও ধনাদি পরিত্যাগ করিয়া যায় তাহার ন্যায় তাহার অন্যায় রূপে কুটুস্বপোষণের পাপ পরকালে উপস্থিত হয় তাহাতে দে ব্যক্তিকে আতুরের ন্যায় জ্ঞান শূন্য হইয়াও নরকে তাহার ফল ভোগ করিতে হয়॥ ৩১॥

জননি ! কুটুত্ব পোষণ বিহিত বটে, কিন্তু যে ব্যক্তি কেবল অধর্ম ছারা ভাছাদের ভরণার্থ উৎস্ক হয় তাহাকে নরকের চরম পদ অন্ধতামিত্রে গমন করিতে হইবে ॥ ৩২ ॥

দেই নরক ভোগের পর পুনর্বার মৃত্যা দেহ প্রাপ্ত হইবার পূর্কের কুরুর শূকরাদি যেট্নিতে যত যত যাতনা হইতে পারে সমুদায় ক্রমে ক্রমে প্রাপ্ত হইয়া ভোগ দারা দখন ক্ষীণপাপ হইবে তথন শুচি হইয়া পুনর্বার এ স্থানে আগমন পূর্বক নরম্ব প্রাপ্ত হইবে॥ ৩০॥

॥ 🛪॥ ইতি তৃতীয়ে তিংশ ॥ 🛪॥

শ্ৰীভগৰাসুবাচ॥

কর্মণা দৈবনেত্রেণ জন্ত দেহোণপভয়ে। গ্রিরা: প্রবিষ্ট উদরং পুংসোরেত: কণাপ্রয়: ॥ ১ ॥ कलनः द्वकतात्वनं शंकतात्वनं तृष्णः। मनात्वनं पू कर्ककृः त्राधाः व छठः भतः॥ २॥ মানেন তু শিরোধাত্যাং বাহৰঙ্জ্যাদ্যসবিগ্রহঃ। নধলোমাছি সন্মাণি লিসচ্ছিদ্রোম্ভবজ্রিভিঃ ॥৩ চতুর্ভি ধাতবং দপ্ত পঞ্চভিঃ কুক্ড়ুম্ববং। ষড়্ভির্বরায়্না বীতঃ কুকো আম্যতি দক্ষিণে ॥ ৪॥

এক অংশে বিমিশৈক পুণাপাপৈরিহান্তরা। মহবাবোনিসংপ্রাধ্য বর্ণাতে রাজসী গতিঃ॥ •॥

পুনরতাত্রজেদিত্যক্তং তদেব বিশেষতো দর্শরতি। কর্মণা পূর্মকৃতেন। দৈবমীয়বং তদেব নেত্রং নেতৃ প্রবর্ত্তং যদ্য প্রবিষ্টো

কলনং ভক্রশোণিতমিপ্রিতং ভবতি। বৃত্দং বর্তু বং ভবতি করু রু বদরীফলং তদাকারং কঠিনং। পেনী মাংসপি ওাকারং

বাহ্বঙ্খ্যাদীনামকানাং বিগ্ৰহো বিভাগঃ বিকঞ্ছিন্তাণিচ তেখামুদ্ধবঃ ॥ ৩॥ জরাযুণা গর্ভবেষ্টনেন বীতঃ প্রারুতঃ॥ ৪॥

क्रमम्बर्छः।

क्ननमिष्ठि,। अञ्ज निक्कभूनाहार्याः॥ ১॥ २॥ ०॥

দক্ষিণে কুকাবিতি। পুক্ৰমধিক্তোৱাক্তৰাৎ। পুংগৰ্ত্তো দক্ষিণে স্ত্ৰীগৰ্ত্তো বামে ভৰতীতি প্ৰদিদ্ধি:॥৪॥

बिवामाथहक्तवर्ती

একত্রিংশে গর্ত্ত জন্ম বাল্য পৌপগুধাতনাঃ। অ্ববাপেনৈব জীবস্য ভক্তির্গর্ত্তেংশি দর্শ্যতে॥ • ॥

পুনরতাত্রজেদিভূাক্তং তৎপ্রকারং দর্শগতি কর্মণা প্রাচীনেন দৈবনীশ্ব তদেব নেতং নেতৃ প্রবর্তকং বস্য তেন। প্রবিষ্টো ভব্তি ॥ ১ ॥

कननः एक ल्यानिक मिल्रिकः खरिक। त्र्मः त्रमानातः। कर्वमृ र्यमतीकनानातः कठिनः लभी माःमिल्रिक अताप्-প্রকৃতি:। অতঃ পক্যাদিযোনিরু॥২॥

ছাভ্যাং মাসাজ্যাং বিগ্রহো বিভাগ:॥ ৩॥

জরায়ুণা গর্ত্তবেষ্টনেন বীত: প্রাবৃত্ত:। দক্ষিণে কুক্ষাবিতি। পুরুষমধিকতেচাক্তরাৎ পুংগর্ত্তাদক্ষিণে স্ত্রীগর্ত্তো বাম ইতি व्यनिष्कः॥ ८॥

একজিংশদধ্যায়ে মিশ্রিত পাপ পুণ্য ছারা মন্ত্র্যযোনি প্রাপ্তিরূপ রাজসী গতি বর্ণন ॥ • ॥ जगवान् किंपन कहिरतान मा ! जीरदा शृद्धकुछ कर्ष ने ने हरे खवर्षि हम, जाहार जीव दमहे কর্ম বশতঃ দেহ ধারণ নিমিত্ত পুরুষের রেতঃকণা আগ্রায় করিয়া জ্রীর উদরে প্রবিষ্ট হয় ॥ ১ ॥

শুক্র গর্মধ্যে পভিত হইলে তাহা একরাত্রে শোণিতের সহিত মিজিত হয়, ঐ রূপ হইয়া পাঁচ রাত্রি থাকিলে তাহা বুৰুদাকারে পরিণত হয়। তাহার পর দশ দিবস গড হইলে তাহা বদরীফল-তুল্য হইরা কঠিন হর, তদনস্তর তাহা যোনির মধ্যেই পেশী অর্থাৎ মাংদ্পিতের আকার ধারণ করে ॥২

এই क्रांट्र अंक मान गठ हरेटन जाहांत्र निरत्नारमन अवर प्रेरे भारम जाहांत्र इन्छ भागि अन्न मक-

লের বিভাগ, তথা নথ, লোম, অবি, চর্ম এবং দ্বিনমানে তাহার লিল ও ছিত্রের উদ্ভব হয় ॥ ৩ ॥

চারিবাদে গগুণাভূ (प्रक् बारन क्रवित त्वन वच्या व्यक्ति । ও পাঁচ बारन क्र्या छ्का जत्य । পরে বধন ছয় সালের হয় তখন জরায়ু অর্থাই পর্তবেক্টন চর্মা বারা আরত হইয়া নাতার দক্ষিণ कृष्टिक स्मान करत वर्षाय शूरशई व्हेटन निकरन बात खींगई व्हेटन वामनित्क यात्र ॥ 8 ॥

মাতৃধ্বান পানালৈ বেধৰাত্রসমতে। শেতে বিমু অন্নোর্গর্ভে স জস্ত জন্তসন্তবে ॥ ৫ ॥ কৃমিভি: ক্ষতসন্ত্রাক্ত: শেক্মার্যাৎ প্রতিক্ষণ:। মৃচ্ছামাপ্রোত্যক্রমশস্ত্রতৈয়: কুষিতৈমূ ছি: ॥ ৬ কটুতিক্ষোক্ত লবণ কারামাদিভিক্লবণৈ:। মাতৃভূকৈক্ষপস্পৃতী: সন্ধাকোখিতবেদন:॥ ৭ ॥ উল্লেন সমৃত স্তামিন্ত্রেশ্চ বহিরার্ত:। আন্তে কৃতা শির: কৃক্ষে ভূমপৃষ্ঠ শিরোধর:। অকল্য: সাক্ষেত্তীয়াং শকৃত্ত ইব পঞ্জরে ॥ ৮ ॥

औरत्यामी ।

মাতৃত্ব থৈন ভক্ষিতারেন পানালৈ তথ্যানা ধাতবো বস্য কুন্ধুনাং সম্ভবো বন্ধিন তন্ধিন অসমতে পর্ত্তে শেতে। তথাচ মার্ক ভেরপুরাণং। নাড়ীচাপ্যায়নী নাম নাভ্যাং তস্য নিবধ্যতে। স্ত্রীণাং তথাত্র ভ্ষিত্রে সা নিবদ্ধোপুলায়তে। ক্রমতে ভ্তপীতানি স্ত্রীণাং গ্রেছাদ্রে তয়। তৈরাপ্যায়িত দেহে। হসে অন্তর্কিমুগৈতি বৈ। ইতি ॥ ৫॥

ভত্তিতঃ ক্ষমিভিন্ত থাদত্তিং লৌকুমার্য্যাৎ কোমলছেন কভাণি সর্ব্ধান্তাণি যস্য ॥ ৬ ॥ উব্বলৈছ সৈহৈং সর্ব্বেদ্ধন্ত উথিতা বেদনা যস্য । আতে ইত্যুক্তরেণীয়য়: ॥ १ ॥ উবেন করায়ুণা ভূগং কুটিলীভূতং পূঠং শিরোণরা গ্রীবা চ বস্য ॥ ৮ ॥

ক্রমসন্ধর্ড: ।

অসমতে অনভীষ্টে॥ ৫। ৬। ৭। ৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

এধনাত্রিতি। নাড়ীচাপ্যায়নী নাম নাভাগে তস্য নিবধাতে। স্ত্রীণাং তথাস্কভবিরে সা নিবনোপজায়তে। ক্রমন্তে ভুক্ত শীতানি স্ত্রীণাং গর্ডোদরে তথা। তৈরাপ্যায়িত দেহোহসৌ জন্তর্কিম্পৈতি চাইতি মার্কতেরপ্রাণাৎ ॥ ৫ ॥ ७ ॥ १ ॥ উবণৈ: ছঃসহৈ:। উবেন জ্বায়্ণা। কুটিনীভূত পৃষ্ঠগ্রীব আতে। শক্তঃ পক্ষী॥ ৮ ॥

সেই কাল অবধি মাতৃভুক্ত অম পানাদি দারা তাহার ধাতু সকল ক্রমশ: বৃদ্ধি পাইতে বাকে।
কিন্তু সে ঐ রূপে বৃদ্ধিশীল হইলেও তাহাকে সেই বিষ্ঠামূত্রের গর্ত্তে শয়ন করিয়া থাকিতে হয়,
কারণ সেই স্থানেই জন্তু সকলের উৎপত্তি হইয়া থাকে, পরস্তু তাহাতে শয়ন করিতে কাহারও আপনা
হইতে ইচ্ছা হয় না, অগত্যা অসম্মত স্থানেও শয়ান হইয়া থাকিতে কাধ্য হয়॥ ৫॥

সেই খানে ঐ জীবের ক্লেশ ভোগের কথা কত কহিব, শরীরের কোমলতা প্রযুক্ত তত্ত্ব কুধিত ক্মি সকল ভক্ষণ করিয়া তাহার সর্বাঙ্গ কত বিক্ষত করে, তাহাতে সে অতিশয় ক্লিই হইয়া কণে ক্লেণ মূর্চ্চা প্রাপ্ত হয় ॥ ৬ ॥

অপর, মাতা যে সকল কটু, তীক্ষু, উঞ্চ, লবণ, কার, অন্ন প্রস্তৃতি ভক্ষণ করেন, সে সকলের ত্র:সহ রসে স্পৃষ্ট হওয়াতে তাহার সর্বাঙ্গে বেদনা উপস্থিত হয় ॥ ৭ ॥

নে ঐ প্রকার অসহ বেদনায় পীড়িত হইয়াও শরীর বিস্তার শরিবার উপায় পার না, কৃষ্ণিদেশে মন্তক দিরা পৃষ্ঠ এবং শিরোধরা (গ্রীবা) কৃষ্টিল করিয়া থাকে। অপর ভিতরে জরায়ু এখং বাহিরে অন্ত নাড়ী) সকল বারা আরুত হওয়াতে পঞ্জর্ম শকুষ্মের নায় বীয় অস চেফাতেও ভাহার সামর্থানার থাকে না ॥ ৮॥

তত্র লকস্মৃতিদৈবাৎ কর্ম জন্মশতোদ্ভবং। স্মান্ন দীর্ঘমসূচ্ছ্বাসং শর্মা কিং নাম বিন্দতে ॥ ৯॥ আরভ্য সপ্তমান্মাসাল্লকবোধো হপি বেপিতঃ। নৈকত্রান্তে সৃতিবাতৈ বিষ্ঠাস্থ্রিব সোদরঃ॥১০ নাধমান ঋষিভীতঃ সপ্তবঞ্জিঃ কুতাঞ্চলিঃ। স্তবীত তং বিশ্লবয়া বাচা যেনোদরেহপিতিঃ॥ ১১॥

विश्ववामी।

দৈবাং পূর্ব্ধ কর্মবশাং লব্ধা শৃতি র্থেন স:। দীর্ঘং ছ্রন্তং অমুজ্মাসং যথা ভবতি তথা তত্র স্থিতঃ সন্॥ ৯ ॥
স্তিহেতুভির্ব তৈ বে পিতঃ সোদরঃ সমানোদর জ্বা। বিঠাভঃ কুমিরির ॥ > ॥
নাধ্মানো যাচমানঃ উপত্পামান ইতি বা শ্বিঃ দেহাত্মদশী ভীতঃ পুনর্গর্ভবাসাং। সপ্তবিধ্যো বন্ধনভূতা ধাতবো যস্য সঃ।
বিক্লব্যা আকুল্বা॥ >> ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

দীর্ঘং চিরকালং ব্যাপ্য অন্তজ্বাসং যথা ভবতি তথা অরন্॥ ৯॥ বেপিত শ্চালিতঃ স দ্বেক্ত নান্তে হাড়ং ন.শক্ষোতি॥> । । নাধমান ইতি। তাৎপর্যাং যথা। সক্তর্জনেনৈর সর্ক্মপাার্হ স্ফলমিত্যালার তমের প্রীলৌনকবাকোন। আয়ু হরিতি বৈ প্রামিত্যালি প্রছেন। এবং ভক্ত্যাভাসেনাপ্যজ্ঞামিলালে পাণ্যত্বং দৃশ্যতে। তথা সর্ক কর্মাদিধ্বংস পূর্কক পর্মণতিপ্রাপ্তে স্বামান্তেনির ভক্তেঃ কারণ্যং প্ররুতি। লং সর্কালি ক্রিত্যাভ গোবিন্দ নাম কীর্ত্তনাই ইতি। তথৈর চত্ত্র যথা কথিকিন্তক্তি সম্ক্র্মস্য কারণ্যং দৃশ্যতে। ব্রহ্মনৈবর্তে। স স্মারা থিতো দেবৈর্ম বিরুৎ স্যাদ্যথা তথা। অনিজ্য়ালি হত্ত্ব সংপ্তেল দহতি বিজ্ঞ। কান্দে উমামাহেশ্বর সংবাদে। দীক্ষান্দ্রেশ ক্ষণ্যা নরা মোক্ষং লভস্তি বৈ। কিং পুন র্যে সদা ভক্ত্যা পূক্ষরতাচ্যুতং নরাঃ। বৃহদ্মারদীরে। অকামাদিপি বে বিষ্ণুং স্কুৎ পূজাং প্রকৃত্বতে। ন ভেষাং ভববদ্ধত কদাচিদিলি জায়তে। পাল্মে। সংপ্রকাদ্যদি বা মোহাদ্যত্ব পূজ্যতে হরিং। সর্ক পাপবিনির্মুক্তঃ প্রামাতি পর্মং পদং। ইতিহাস সমুক্তরে শ্রীনারদপ্তরীকসংবাদে। যে নৃশংসা ছ্রাচারাঃ পাপাচার-রতাঃ সদা। তেহিলি যান্তি পরং ধাম নারায়ণপ্রাশ্রমাঃ। লিপ্যন্তে নচ পাপেন বৈক্ষ্যা তীতকল্ময়ঃ। প্রত্তি সক্ষান্দ্রি চিত্ত। অভয়ং সর্ক্ষা তবৈ দদাম্যেত্ব তং মন্মেতিচ।

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দৈবাং পূর্বে কর্মবশাং দীর্ঘং চিরকালং বাাপা অহজ্ঞানং যথা ভবতোবং অরন্॥ ৯ ॥ স্তিহেতুভির্তিত্বেপিত শুচালিত: সন্ দোদর: সমানোদরজন্মা বিষ্টাভূ: ক্লমিরিব ॥ ১০ ॥

নাধমান: ডগৰংকুপা মরি ভ্যাদিতি স্বামিনাশিবং কুর্বন্ ঋবিরাম্বদশী তীতঃ সংসারাং সপ্তবগ্রেরা বন্ধন ভূতা ধাতবো যস্য সং। বিরুবনা বিহবলয়া তং স্তবীতেতি গর্জে বিধাদে: সংভবাভাবাং হেত্হেত্মতোলি ডিতি ফলে লিভি। ততা যো ভগৰস্কং ভলেতেতি হেতুবত্ত গন্যা:। তেনচ যো ভগৰজা ভলেত স তং গর্জেংপি স্ববীতেত্যন্যো জীবস্থান স্ববীতেতাথোঁ লভাতে তলৈয়ৰ স্ববানস্য জীবস্যাত্তে সংসারো বর্ণবিষ্যতে বর্ণিতা নতু ভগৰজা স্ববানস্যাপি। অকামাদিপি যে বিক্ষোং সক্ষ পূজাং প্রক্রাতে। ন তেখাং ভবৰদ্বস্ত ক্লাচিদিপি ভারতে ইতি সক্ষদেব প্রপরো য স্ববাদীতি চ যাচভে। অভসং সর্বাদা তাম

মা। গাই মধ্যে ঐ জীবের পূর্ব্ব কর্ম বশত: স্মৃতি লাভ হয়, কিন্তু তাহাতে তাহার স্থাস্ভব হয় না, হ্রস্ত অস্চ্ছাস প্রায় হইয়া অবস্থিতি করত শত শত জন্ম যে সকল পাপ করিয়াছে তাহা স্মরণ করিতে থাকে, তাহাতে কি স্থ লাভ করিতে পারে ?॥ ১॥

পরে যদিও জ্ঞান প্রাপ্ত হয় তথাচ দপ্তম মাদ হইতে আবার প্রদব কারণ বায়ুর দ্বারা দঞ্চালিত হইতে থাকে, তাহাতে আপনার সমানোদর জন্মা বিষ্ঠাভূ কুমির ন্যায় এক স্থানেস্থির হইয়া থাকিতেও

অতএব ঐ জীব দেহাত্মদা হইয়া পুনর্বার গর্ত্তবাদে আসিতে তীত হয় এবং যাচমান ইইয়া অঞ্চলি বন্ধন পূর্বক আকূল বচন বারা যিনি উদরে অর্পণ করিয়াছেন সেই ঈশ্বরের তব করিতে প্রবৃত্ত হয় ॥ ১১ শ্ৰীজীৰ উবাচ॥

তদ্যোপসন্নমবিতৃং জগদিজ্যান্তনাবাতনোভূবি চলচ্চরণারবিন্দং।

अध्वयामी।

উপদরং অগতকিতৃং বেচ্ছয় গৃহীত নানামূর্তে তগবতশ্রবণারবিন্দং অকুভোভয়ৎ সোহহং শরণং ব্রজামি। ভূবি চলদিতি

ক্রমসমর্ভঃ।

প্রীরামায়ণে প্রীরামচন্ত্র বচনং। সকলেব প্রপদ্ধো য তথানীতি চ যাচতে। অভয়ং সর্বভৃতার দদ্যাম্যেত্র তং হরেরিতি গাক্ত বচনং। জীবিতং বিষ্ণুভক্ত বরং পঞ্চিনানি বৈ। নতু কর সহস্রাণি ভক্তিহীনস্য কেশব ইতি বিষ্ণুধর্মোত্তর বচনং। অতো যদত্ৰ গৰ্জস্থস্য জীবদ্য ভগৰৎ ৰতিঃ শ্ৰন্থতে তত্তৈবচ সংসারোহপি বর্ণাতে। তত্ত্বোচ্যাতে। জাত্যেকাছেন তত্ব-র্ণনমিতি। বস্তত্ত কন্চিদেৰ জীবো ভাগ্যবান্ত স্তৌতি সচ নিক্রতাপি। নতু সর্বস্ঞান ভগবজ জ্ঞানং ভরতি তপাচেতি। নৈর কমতেচ ত্রিবিধা জীবা লভাত্তে। একে পূর্ব্ব পূর্ব্ব জন্মমাতং শ্বরত্তি। এক সাংখ্যবোগাদিকমভাসাত্তি। একেতু পর্ম পুরুষ মিতি। যথোকং তলৈব তৈ: নবমে সর্বাঙ্গ পূর্ণো ভবতীতি পঠিছা। মৃতশ্চাহং পুনর্জাতো স্বাতশ্চাহং পুনমুতি ইত্যাদি তত্তাবনাপাঠানত্তরং অবার্থ: পীডামানো জন্ত হৈব সমবিত:। সাংখ্যং যোগং সমত্যসেং পুরুষং পঞ্চবিংশৃকং। ততক দশ্দে মাসি প্রজায়তে ইত্যাদি পুরুষং বেতি বাশব্দাং। ক্লাচিদেব ওগবজ্ঞানমিতি গম্যতে। সর্বাত্বপাবস্থায় ভক্তে: সমর্থবং বর্ণিতং চতু:লোকীব্যাথ্যায়াং ভেদে ইপ্যেকবন্ধনমন্যত্রাপি দুশাতে। তৃতীরে যথা পাল্লকল সৃষ্টি কথনেহপি সনকাদীনাং স্টিবর্ণনং। টীকারাংচ। একাঞ্চ স্টি কথনদাত্র সাহোনৈকীঞ্জোকিরিয়মিতি ঘোলিতং। জীবারাহাবতারবচ্চ। তত্র প্রথমমবস্তরস্যাদৌ পৃথিবীমজ্জনে অশ্বনাসিকাতোহবতীর্ণ: বরাহস্তামুদ্ধরন্ হিরণ্যাক্ষের সংগ্রামং ক্লতবান্ ইতি বর্ণাতে । হিরণ্যাক্ষম্ভ ষষ্ঠ মছম্বরাবসান জাত প্রাচেত্স দক্ষকন্যায়া দিতে জাত:। তত্মাত্তথা বর্ণনং তদবতারমাত্রত্ব পৃথিবীমজ্জনমাত্রত্বৈকাবিক্ষরৈব चंदित । जवनबाभीति । किन्दिनर्वात्ना भीतः स्त्रोजि हेलानाः मःभवनौरलातः मस्तराः । अब भूर्यतः भवनित श्रासी एरकः পরম্পরা কারণত্বঞ্চ দৃশ্যতে। বৃহন্নারদীয়ে। যতীনাং বিষ্ণুভক্তানাং পরিচর্ব্যাপরায়ণৈ:। ঈক্ষিতা অপি গছতি পাপিনোহপি পরাং গতিং। এবং বিষ্ণুধর্মে। কুলানাং শতমাগামি সমতীতং তথা শতং। কারয়ন্ ভগবদ্ধাম নয়তাচ্যুভলোকতাং। যে ভবি-যান্তি যে ২তীতা আকরাৎ পুরুষাঃ কুলে। তাংস্তারয়তি সংস্থাপ্য দেবস্য প্রতিমাং হরেরিতি। দুতান্ প্রতি যমাজ্ঞাচেরং। বেনার্চা ভগবভ্তকা বাস্ন্দেবস্য কারিতা। নৰাযুতং তৎকুলজং ভবতাং শাসনাতিগমিতি। বঁথাহ। ত্রি: সপ্তভি: পিতা পুত: পিতৃভি: সহ তেহনঘ। যং সাধোহস্য কুলে জাতো ভবান্ বৈ কুলপাবন:। ত্রি: সপ্তভি: প্রাচীনকল্পত তদীয় পূর্ব্ব ক্যা সম্বিদ্ধিত: পিতৃতি: সহ। অন্মিন্ জন্মনি হিরণাকশিপু কশাপ মরীচি ব্রহ্মাণ এব তং পিতর ইতি অবতারিকানারভা। ত্রদত্রাপীতি কশ্চিদেবান্যো জীবঃ স্তৌত্যন্য: সংসরতীত্যেবসুলেমং। স্তবীতেতি লিঙ্ প্রতার: সচ সংভাবনামেব স্পষ্টরতি। অতএব তাদুশ ভাগাযুক্তমতীত্তমকং জীবং লক্ষ্যীকৃত্য জীব উবাচেত্যেকত্ব নিট্ প্রত্যন্নভ্যাং নির্দেশ:। জীবকান সামান্য বিবকারান্ত জীবো বদতীত্যের যুজ্যেত ॥ ১১॥

ভ্বিচলদিতি। নুনং তদানীং 🛍 কুঞাবতারাৎ তত্ত্ব লিকং গৃহীতনানাতনোরিতি। তস্মৈৰ সর্বাবতারিছাং। 🕮 কপি

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

দদামোত্য তং মমেত্যাদি পরং সহস্র বচনবিরোধাং। অতএব শেতে বিন্ধু ত্রোর্গর্জ ইন্ডি মুদ্ধ মাপ্লোত্য করেশ ইতি আবে হয়ং কোতীতি বর্ত্তমান প্ররোগান কতঃ কিছ জীব উবাচেডি ভূতকাল প্ররোগএব। তেন চ পূর্বকালতবং কলিউজে জীব এবং গর্জে হরিং স্ববান আসীরতু সর্ব্ধ ইন্ডার্থো জ্ঞাপিজঃ। অতএব নৈকজা অগি পঠন্তি। নবমে সর্বাদ সংপূর্ণো ভবজীতি পঠিছা মৃতকাহং পূন্জাতো জাতকাহং পূন্ম ত ইত্যাদ্যনম্বরং। অবাদ্যথং পীডামানো লছ- দৈবং সমন্বিজঃ। সাখ্যাং যোগং সমভ্যমেৎ পূর্বং পঞ্চবিশকং। ততক লশমে মাসি প্রজারত ইত্যাদি গর্জোপনিষ্মাকাং অত্র বা শক্ষ বলাৎ কলিও কনী জীবো মৃতকাহং পূন্জাত ইত্যাদি পূর্ব পূর্ব প্রামাত্রং সর্বিভ কলিও ক্রিয়া স্বাদ্য কলিলোগী যোগং কলিডজক্ত ভূবিংশ প্রধানাৎ পরং পঞ্চবিংশং পূর্বং পরমেশ্বরং অভ্যাসেৎ ভূবেদিভি পূর্বাভ্যস্তমেন গর্জে ক্রেনিভি মৃত্রেঃ॥ ১১॥

ভূবিচলনিতি জীক্ষাৰতারাভিপ্রাবেণেতি স্বামিচরণাঃ অন্ত লিকং গৃহীত নুশা ক্রেন্ত্রিভি ভলৈয়ব সর্কানতারিস্থাৎ। ৰূপি-

कीय करह कामि दमरे अभवादनत कृमिएक विष्ठत्व नील अकृटकांच्या ष्ट्रत्वांत्र विरन्तत्र भंतर्ग धार्म

নোহহং ব্রজামি শরণং হাকুতোভয়ং মে যেনেদৃশী গতিরদর্শ্যসতোমুরপা ॥ ১২ ॥ যত্ত্ব বন্ধ ইব কর্মভিরার্তাকা ভূতেব্রিয়াশয়ময়ীমবলম্ব্য মায়াং।
আত্তে বিশুদ্ধমবিকারমণগুবোধমাতপ্যমান হৃদ্যেহ্বসিতং নমামি ॥ ১৩ ॥

श्रीभत्रश्रामी।

শ্রীকৃষ্ণাবতারাভিপ্রায়েণ অসতো মেহছুরূপা যোগ্যা যেন ঈদৃশী গর্ত্তবাদ লক্ষণা গতি দর্শিতা তক্ত ॥১২ ॥
নমু কাসৌ যং শরণং ব্রন্ধনি কোবা তব তক্ত চ বিশেষঃ যেন সেবাসেবকর্ষমিত্যপেকারামাহ অত্র মাতুর্দেহে ভূতে ব্রিরাশরমরীং
দেহাকারপরিণতাং মারামবলয় আপ্রিত্য কর্মজিরার্ভস্বরূপ ইব বদ্ধ ইবচ য আরে সোহহং যম্ব অত্রবাজ্য তং নমামি কণস্ক্ত
মিত্যপেকারাং তু শব্দোজং বিশেষং দর্শয়তি আতপ্যমান হৃদরেহ্বসিতং প্রতীতং। এবমপি অবিকারং কুতঃ বিশুদ্ধ নিরুপাধিং।
তৎকুতঃ অথতো বোধো যায় তং ॥ ১৩ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

লোক্তিশ্চেমং পূর্বকর গত তদবতারীপেকয়া। অদতঃ পরমাপত্তি ন'লাতো মম যেন অমুরপা তছরব কমা ঈদৃশী অফ্রি লকণা গতিঃ চিত্তবৃত্তিবদর্শি প্রকাশিতা। যহা। মম ছ্টদ্য যোগ্যা ঈদৃশী ছংথায়কাবস্থা যেন ক্লপাদৃটি বিষয়ীকৃতা। অন্যথেমং তৎ-ফ্রিন স্যাদেবেতি ভাবং॥ ১২॥

শ্ৰীবিশ্বনাগচক্ৰবৰ্ষী।

লোক্তিশ্চেয়ং পূর্ব্বকলগত তদবতারাপেক্ষরেতি সন্দর্ভঃ। ঈদুশী গ্রুঁ ছংখোদখিনিবাস লক্ষণা গতিঃ অসাধো ম্ম সম্চিতৈব অদর্শি দর্শিতা। যদা অদর্শি কুপাদৃষ্টি বিষয়ীকৃতা অন্যথা ইয়ং তদীয় ক্রুজি ম্মাতিপাপিঠ্গা ন সম্ভবেদিতি ভাবঃ॥ ১২॥

তক্ত স্বপ্রভারন্ত্তাং লীলাং কুপালুতাঞ্চ স্বরন্ সাল্চর্য্যাহ। যং ধ্বত্র অপ্রথি ছন্ত্রীবানাং নানা ছংখ্যর প্রতিশরীর এবাতে কিন স্মান্ পালন্তিং কিয়া সৈরলীলভেনেতি ন বিল্প ইভি তাবং। তমহং ন্যামীত্যবং। অহং স্বন্ধক ত কুলাং কর্পবন্ধী যদত্তা- কি তছচিত্তমেব স ক্থ্যত কুর্মনে মহানরকে অন্তর্যামিকোপি তিছিত্রীতাহ কর্পতি বৃদ্ধ ইব নতু বন্ধঃ বুলারনভূবি চলচ্চরণারবিশ্বছাং। আর্তাত্মা অহং যথা তথৈব দেহেনার্তস্বরূপ ইব নম্বার্তঃ। উক্তযুক্তেরেব কিং কুলা ভূতাদিম্যীং মানাং স্বশক্তিং অবলম্ব প্রবর্তা নবেবং তহি তিন্দ্রন্ মানাবলম্বালিতাং বিকারণ্চ প্রসক্ষেত্তাত আহ বিশুন্ধ নির্ক্ষিকারঞ্চ তত্র হেতুঃ অধ্পত্ত বাধং মল্প্রানমিব যক্ত জানং মার্যা প্রথিত্মশক্ষমিত্যর্থঃ। নত্ত্বধমিদ্যবগ্রহ স্বর্গেত আহ আসমন্ত্রিকার্যানহেক স্বন্ধে মরা প্রবৃত্তিং প্রতিতং প্রতিতি দলীর হুদ্ধে স্থিত। বে সহ্মপ্রেরং জ্ঞানং দত্তং তত্ত্ব জ্ঞানং কৃথং প্রতিতং ত্বেদিতি॥ ১৩॥

করি, তিনি এই সমীপবর্ত্তি জগতের রক্ষণার্থ বেচছাক্রমে নানা মূর্ত্তি গ্রহণ করিয়া থাকেন। আমি বেমন অসৎ এই বে গতি হইয়াছে ইহা আমার উপযুক্ত বটে, তিনিই ইহা দেখাইয়াছেন॥ ১২॥

ষাহা হউক, তাঁহাতে আমাতে অনেক বিশেব আছে এই নিমিত আমি সেবক ভাবে তাঁহার শরণাপম হইতেছি। এই মাতৃদেহে ভূত ইন্দ্রির আশ্রম্য়ী অর্থাৎ দেহাকারে পরিণতা মায়াকে আশ্রয়
করিয়া কর্ম বারা আরত এবং বন্ধ তুলাই হইয়া এই যে রহিয়াছে এ আমি, তিনিও এই দেহেই আছেন
কিন্তু তিনি অথও বোধ সম্পন্ন, বিশুদ্ধ এবং নির্ক্ষিকার, আমার সন্তাপিত হৃদয়ে তাঁহার ঐ রপ
প্রতীত হইতেছে, তিনিই আমার সেবা, আমি তাঁহাকেই নমকার করি॥ ১৩॥

যঃ পঞ্জুতরচিতে রহিতঃ শরীরে চ্ছন্নো যথেক্তিরগুণার্থচিদাত্মকোহ্ছং।
তেনাবিকৃত মহিমানমুষিং তমেনং বন্দে পরং প্রকৃতিপূক্ষয়োঃ পুমাংসং॥ ১৪॥
যন্মান্নার্যাক গুণকর্ম নিবন্ধনেহন্মিন্ সাংসারিকে পথি চরন্ তদতিপ্রমেণ।

विधवनामो ।

নহ অমপি বস্ততঃ শুদ্ধ এব অসক্ষোহ্বয়ং পুরুষ ইত্যাদি শ্রুতেঃ। তৎকথং যুবরোরয়ং বিশেষজ্ঞাহ যঃ পঞ্চি তুঁতে রচিতে শরীরে অযথা মিথ্যের ছরঃ ন বস্ততঃ যতন্তেন শরীরেণ রহিতঃ অসঙ্গঃ। অতোহযথের ইন্দ্রিয়গুণার্থচিদাআরুঃ ইন্দ্রিয়াণিচ শুণাশ্চ অর্থাশ্চ চিদাভাসশ্চ তদাআরুঃ। সোহহঃ তং বন্দে কথং ভূতং তেন শরীরেণ অবিকুঠো মহিনা যস্য তং। অবগুঠেতি পাঠে অব অবসন্ত্রো গুঠো গুঠনমাবরণং যস্য স মহিনা যস্য ইত্যর্থঃ। অল হেতুঃ প্রকৃতিপুরুষরোঃ পরং নিক্ষারং কুতঃ গ্রহিং সর্বজ্ঞং বিদ্যাশক্তিমিত্যর্থঃ। বিদ্যাহ্বিদ্যার্কতো বিশেষ ইতি ভাবঃ॥ ১৪॥

নমু জ্ঞানেনামং বন্ধো নিবর্ত্তিষ্যতে কিং প্রমেশ্বর বন্ধনেন তত্ত্বাহ যদ্যমায়য়া নষ্টশ্বতিঃ সন্ সংসার স্থান্ধিনি পথি তদতি শ্রমেণ তৎক্তেন ক্লেশন চররমং জীবঃ মহত স্তান্ধান ক্ষান্ত্তাহং বিনা পুনঃ ক্ষা মুক্তা। ক্লোকং নিজ শ্বরূপং প্রবৃণীত সংভ-কেং। অতিশ্রম হেতুছেন প্রানং বিশিন্ধি উর্গণি গুণনিমিন্তানি ক্র্মাণি নিত্রাং ব্রুনানি যন্মিন্ স্থারপ্রসাদং বিনা

ক্রমদন্দর্ভঃ।

তদেবং বন্ধাবন্ধাদিকং যোজয়তি য ইতি। শরীরে যথাহং ছন্ন তথাতথানিত্যা তৎ প্রবেশাৎ যন্ত ছনেছেপি রহিত তৎস্পর্শ শ্ন্য:। তত্র স্বস্ক্র তৎস্পর্শে (হেত্রিজিয়েতি। তস্য তু তদস্পর্শেন বিশেষমাহ তেনেতি। শরীরেজিয়াদি স্পর্শশ্ন্যথেনাবিকুঠেত্যাদি। যতঃ প্রকৃতি পুক্ষয়োঃ পরং। 'অবিদ্যা স্পর্শাস্পর্শযোগ্য স্বরূপ বৈলক্ষণাদাবয়েরিতি ভাবং।
যবা। য ইজিয়য়গুণার্থিচিদাত্মকো লিন্ধ শবীরাধ্যন্ত চিক্রপো যথা যেন নিজেমরাজ্ঞানাদি প্রকারেণ পঞ্চত্তরচিতে শবীরে ছয়
তেন চার্তত্তথা তেনৈব প্রকারেণ সোহংং তেন পূর্বোক্তেন নিজেমরাজ্ঞানাদি প্রকার্থিং প্রাপ্ত ত্মেনমক্ষানানস্যাবিভবিত্তং বন্ধে মহাকরণাময়ভয়া ভৌমি তত্ত তদ্য মহিম কীর্তেন স্বাযোগ্যতাং দর্শয়তি অবিকুঠেত্যাদিনা। ঋষিং ব্রহ্মান্ধাসপি গুরুং। প্রকৃতে তদ্প্রশ্বহাপুক্ষস্যচ পরং পরক্ষণ তং নরাকারং শ্রীকৃষ্ণায়ং স্বভগবন্ধমিত্যর্থ:॥১৪॥

নৰিতো নিঃস্ত্য ভ্ৰনং কুক ইত্যাশহ্য তৃস্য হুলুভিতা মাহ যদিতি। যস্য মায়য়েত্যাদি তং লোকং স্বাশ্রমং আং । পুন-

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

নর্বেষ্ণেং স কথমত্র শরীরে তিঠে ন্তর্বাহ। যা শরীরেছত্র রহিতঃ ইন্দ্রিয়াণি গুণাশ্চ অর্থাশ্চ তেখেব চিচৈতত্তাং যক্ত তথাভূত আত্মা স্বন্ধণ যক্ত সোহহং যথাত্র শরীরে ছব্ল এব তথাযোহত ব্লহিতঃ স্থিতোপ্যস্থিত এবেত্যর্থা। তেন হেতুনা ন বিশেষেণ কুঠো মহিমা যক্ত তং তেনাবগুঠেতি পাঠে ভাগুরিমতেহকার লোপোনাত্র সমাসে অবগুঠ মহিমানমনাবৃত্তিশ্ব্যাং। প্রক্তেশ্বন্ধু মহিনিপ্রক্ষা চ পরং তাভ্যাং প্রত্থ পুমাংসং শ্রীকৃষ্ণং॥ ১৪॥

ন্ধীদৃশী ভক্তিত্বরা কথং প্রাপ্তেতি তত্র ভক্তে: প্রাপ্তিকারণং মহদত্বগ্রহ এবেত্যাহ যদিতি। তদতিশ্রমেণ তৎপথ পর্যাটন-শ্রমেণ হেতুনা নষ্টস্থতি রমং মল্লকণো জন: মহদত্বগ্রহং বিনা কয়া যুক্ত্যা লোকং ভগবতো ধাম প্রবৃণীত স্বাভীপিত বরতেন র্ণু-

আমিও বস্ততঃ শরীরহীন ও অসঙ্গ হওয়াতে এই পঞ্ছত নির্মিত দেহে মিথা। আচ্ছন্ন, স্তরাং আমারও ইন্দ্রিয় বিষয় এবং চিদাভাগ স্বরূপ হওয়া মিথ্যা বটে কিন্তু আমার আরাধ্য পুরুষের মহিমা এই শরীরের দারাও কৃষ্ঠিত হয় না, যে হেতু তিনি সর্বাজ্ঞ এবং প্রকৃতি পুরুষের নিয়ন্তা অতএক আমি তাঁছারই বন্দনা করি ॥ ১৪॥

এই সংসার সম্বন্ধীয় পথে গুণ নিমিত্ত বহু বহু কর্ম আছে গ্রেস সক্ষই বন্ধন। সংসার বর্জে বাঁহার মায়ায় নউল্মৃতি হইয়া এই জীব বিচরণ করিতেছে, সেই মহৎ পুরুষের অমুগ্রহ ব্যতিরেকে কি যুক্তিতে এ জীব নিজ স্বরূপ লোককে সম্যক্ প্রকারে উপাসনা করিতে সমর্থ হইবে ? ফলতঃ ঈশ্বর নউস্তি: পুনরয়ং প্রেণীতলোকং যুক্তা কয়া মহদত্গ্রহমন্তরেণ ॥ ১৫ ॥ জ্ঞানং যদেতদদধাৎ কতমঃ স দেবলৈকালিকং স্থিরচরেল্বর্বর্তিতাংশং। জং জীবকর্মপদবীমসুবর্ত্তমানা স্তাপত্রেরোপশমনায় বয়ং ভজেম ॥ ১৬ ॥ দেহ্ছন্যদেহবিবরে জ্ঞারামিনাহস্থিমাত্ত কৃপপতিতো ভ্শতপ্তদেহঃ। ইচ্ছনিতো বিবসিতৃং গণয়ন্ স্বমাসান্ নির্বাস্তে কৃপণধী ভগবন্ কদা সু ॥ ১৭ ॥

श्रीभृत्यामी।

জ্ঞানাভাবাং স এব সেবা ইতার্থ: ॥ ১৫ ॥

ঈশ্বর এব জ্ঞানদ ইত্যুপপাদয়য়াহ যদেতৎ ত্রিকাল বিষয় জ্ঞানং তৎ তং বিনা কতনো নব্যদধাৎ নকো হপি কিন্তু স দেব ঈশ্বর এব । অন্যঃ প্রক্তটো জীবো দধাতু নেত্যাহ জীবরূপাং কর্মপদবীং অন্থবর্তমানা বয়মিতি তয়তিবেকেণ নকো হপি সমর্থ ইত্যর্থ:। অন্যস্যাত্রাসস্তর্ম্ভব্য তস্য সম্ভব্যাহ স্থিবেরু চরেষু চাত্তর্যামিরূপোহস্বর্তিতোহংশো যেন তং ভ্জেম ॥ ১৬ ॥

স্বহংখং বিজ্ঞাপ্রস্লাহ দেহীতি। অন্যদেহবিবরে মাতৃকদর কুহরে যোহস্ফক্ বিল্যুত্ত কুণং তামিন্ পতিতঃ তও হুঠরাগিনা ভূশং তপ্তো দেহো যস্য। অতএব কুপণধীঃ ইতো বিবরাৎ বিবসিতৃং নিগ্রুমিছনে স্মাসান্ সণয়ন্ অসৌ কদা হ সংহা বহি-

ক্রমসন্দর্ভ:।

ন্তৎ প্রাপ্তি কারণং মহদমুগ্রহ এব তাবদুর্ল ভ ইতি ভাব: ॥ ১৫ ॥

তক্ষাৎ প্রাচীনমহদস্প্রহাদরেণ প্রকৃটিতাম্মজানং তমেবাবিশ্বতয়ে সম্প্রতি প্রপন্ন ইত্যাহ জ্ঞান্মিতি। বৃত্তং স্থাধারণ জীবান্তর স্প্রাবন্যা ত্রৈকালিকং নিত্যরূপং তং॥ ১৬ ॥ ১০ ॥ ১০ ॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

য়াৎ। অপিতুন ক্য়াপীত্যতঃ পূর্বে জ্মানি ক্ষণ্ডজেন্ত ক্সচিম্ন্ত্রোঃ প্রদাদ বিলসিত্নেবৈত্যা ক্ষণ্ডজনমিতি ভাবঃ॥ ১৫॥
নয় তং প্রমেখ্রং কেন প্রমাণেন জ্ঞারা ভজ্সীতি ত্ত্তান্ত্মানেনৈবেতাাহ জ্ঞানং যদেতং ম্ব্যধ্যেহিপি অদ্ধাৎ ধ্রিয়ানাস অর্থযতি স্বেত্য্থঃ স ক্তমো দেবো ভবেং। শেবেরু মধ্যে কশ্চিমুখ্যো ভবেদিতি মজ্ঞানান্যথান্ত্পবিত্তাবান্ত্মীয়মানং ত্রৈকালিকং ভূতভবিষ্য্বর্তানন কালেমু বিরাজমানং স্থিরচেরেম্ম্ব্রিতাহস্ত্র্যামিকপোহংশো যেন তং। জীবস্ম্দিনীং কর্ম্পদ্বীং॥ ১৬॥

হে প্রভো নম হংথং স্থথং বচ্চরণ প্রাপ্তিশ্চেত্যেতৎ সর্বাং বদধীনমিতাহমতিবাল্যাদিতিতার গাচিচ কিমপি পৃচ্ছামীত্যুদ্দেশেনৈব ভগবস্তমাহ। অহং দেহী অন্যদেহ বিবরে মাতৃরুদর কুহরে অত ইতো বিবরাৎ বিবসিতৃং বিষ্কৃতিবিতৃমিচ্ছন, সমাসান, অয়মষ্টমো-হ্রং নবমো হ্য়ং দশম ইত্যেবং গণয়ন্ রূপণধীঃ সীয় ছংথ স্থদর্জ দৃষ্টিবাং কুবৃদ্ধিম ল্লকণেহয়ং অনঃ কদা নিব্বিস্তে বহিনি জাম-য়িয়্তে ভবতেত্যেক তস্য কইস্য সোচ্মশক্ষাব্হিরেব তক্র বাং ভজেয়েতি ভাবঃ॥ ১৭॥

প্রসাদ বিনা জ্ঞান লাভ হয় না, অতএব তিনিই উপাস্য॥ ১৫॥

অপর, এই যে ত্রৈকালিক জ্ঞান আমি প্রাপ্ত হইয়াছি ইহা তিনি ভিন্ন অন্য কোন্ ব্যক্তি আমাতে বিধান করিতে সমর্থ হন ? অর্থাৎ কাহারও সুাধ্য নাই, দেই ঈশ্বরই বিধান করিয়াছেন। আমরা জীব রূপ কর্ম পদবীর অমুবন্তী, তাহাতে জীব হইতে যে ঐ জ্ঞান হইয়াছে তাহাও বলিতে পারি মা। অতএব যিনি আমাদের জ্ঞানপ্রকাদ এবং স্থাবর ও জঙ্গমে বাঁহার অংশ অমুবর্ত্তমান আধ্যান্থিকাদি তাপত্রেয়ের উপশমনার্থ তাঁহারই ভক্তনা করি ॥ ১৬॥

জীব এই রূপে তাঁহাকে উপাদ্য বলিয়া স্থির করত আত্ম হুংথ বিজ্ঞাপন পূর্বক সম্বোধন করিয়া কহিল হে ভগবন্ ! এই দেহী (আমি) অন্য দেহ বিবরে অর্থাৎ মাতার উদর কুহরে শোণিত ও বিষ্ঠা মৃত্রের কুপে পতিত হইয়া রহিয়াছে,এখানে কেবল বিষ্ঠা মৃত্র জন্য ক্লেশ ভোগ করিতে জঠরাগ্ন খারা দেহ অত্যন্ত সন্তপ্ত হইতেছে, ইহাতে এই দেহী অতিশয় দীনমতি হইয়া এস্থান হইতে নির্গানের মানদে আপনার মাদ গ্ণনা ক্রিতেছে কিন্তু এ কথন বহির্গত হইবে ? ॥ ১৭ ॥

যেনেদৃশীং গতিমদো দশমাস্য ঈশ সংগ্রাহিতঃ পুরুদয়েন ভবাদৃশেন।
স্বেনৈব তুষ্যতু ক্তেন স দীননাথঃ কো নাম তৎপ্রতিবিনাঞ্জলিমস্য কুর্যাৎ । ১৮॥
পশ্যত্যয়ং ধিষণয়া নমু সপ্তবিধ্রিঃ শারীরকে দমশরীর্যাপরঃ ফদেহে।

क्षित्रवामी।

*

र्निवीमार्ड ॥ ১१॥

তৎক্বতম্পকারং অরশ্লাহ যেন ঈদুশীং গতিং জ্ঞানং। ভবাদুশেনেতি নিরুপমেনেতার্থঃ। অক্তেটেনব স্বরং ভ্রাত্। অঞ্চলি মাত্রং বিনা তৎক্তে উপকারে প্রত্যুপকারং কঃ ক্র্যাদিতার্থঃ ॥ ১৮॥

ঈদৃশীং গতিমিত্যনেন জাত্যস্তর বিলক্ষণং জ্ঞানং প্রাপিতবানিত্যক্তং। তদেব বৈলক্ষণ্যমাহ পশ্যতীতি। অয়মপরং পশাদি:। সপ্তবিধি জীবং অদেহে শারীরকে শরীরভবে স্থ ছংথে কেবলং নমু পশাতি অহং পুন র্যংস্ট্রা ধিষণন্না যদ্ধতেন বিবেক জ্ঞানেন দমশরীরী দম ইত্যুপলক্ষণং শমদমাদি যুক্ত শরীরবান্ আসে অভবং তমেবচ পুরাণং অনাদিং পুকৃষং পূর্ণং বহিশ্চ হৃদিচ পশ্যে

ক্রমসন্দর্ভ:।

ঈদৃশীং দ্বস্তুক্তি লক্ষণাং গতিং অবস্থাং ভবতেতাধাহারাং। ভবতুলোন ভবতেতি নিরুপমন্থং ব্যক্তিত। স্বক্তেনৈৰ স্বয়ং তুবাদ্বিত হুৰ্গত্তমোহ্যং যদি সকুন্ময়াহুগৃহীতন্তহি কথং তাজেতেতি বিচার্যোতার্থ:॥১৮॥ •

ঈদৃশীং গতিমিত্যনেন মহ্বয় জাতাবপি অন্য বিশক্ষণং জ্ঞানং প্রাপিতবানিত্যুক্তং তদেব বৈলক্ষণাং স্পষ্টরতি পশ্যতীতি। অয়ং মনুষ্যজাতিমাপন্ন: সপ্তবিধ্র গর্ভগতো জীব: সর্ব্ব এব তত্তােৎপন্নয়া ধিষণয়া অনেক জন্মগত শরীর ভবে স্থব হংথে কেবলে পশ্যতি। তেঘপরস্ত কশিভাগ্যবান্ দমশরীরী তহুপলক্ষিত ত্বাগ্যব্ধ শরীরবানপি ভবতি। অহং পুন: স তত্ত্বিবিধ্বিশেষা হপি যদ্দত্ত্বা ধিষণয়া তমপি পশ্যামি। অত্ত নিক্ষক্তঞ্চ দর্শিতং। মৃতশ্চাহং পুনর্জ্জাতো জাতশ্চাহং পুন্মৃতি ইত্যাদি তদ্ভাবনানস্তরং। সাংখ্যং যোগং সমভ্যসেৎ পুকৃষং বা পঞ্চবিংশক্ষিতি। অত্ত টীকাক্ষ্ডিরপি অহং পুন্রিত্যনেন মহ্বয়

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নমু তহি কিলা নির্বাস্তেইতি মামুজ্ব ময়ি সংপ্রতাপি ছমিতো বহিনিজ্ঞ মাজাতি নিদ্যাছমেব কিং প্রসঞ্জয়নীতি ত্র সলজ্জং সশঙ্কং সরসনাদংশং সধিকারমাহ যেন ঈদৃশীং দেবৈরপি হল জাং গতিং ঘত্তক জলকণামবদ্ধাং দশমাস্যো গর্জপ্রোপ্যহং গ্রাহিতঃ পুরুদ্ধেন ভ্রাদৃশেনেতি ভ্রত্তেজাকেপলক্ষ্যা বিশেষণাৎ ভ্রৎ সদৃশোদ্যালু র্ভ্রানেব নান্য ইত্যন্ত্যালক্ষারে। বোধিতঃ। এতৎ প্রতি ক্তিন্ত ময়া ব্রহ্মাযুরাপ্যশক্ষেত্যাহ স্বকৃতেনৈর স্বয়ং ত্যাত্। সঞ্জালিমঞ্জলি মাত্রং বিনা তৎপ্রতি বিধিং কোনাম কুর্যাৎ কর্ত্যাৎ সক্ষাৎ স্বস্যা তব॥ ১৮॥

স্বামন্ ভগবং ক্বপাতিশ্যমন্যতো বৈলক্ষণোনাই পশাতীতি অয়ং মহ্যাঞ্জিয়াপন্নঃ সপ্তবিধি পর্ত্গতো জীবং শারীরকে শরীর ভবে ক্ষ ছংথে এব ধিষণয়া বৃদ্ধা পশাতি ততোহপাপরং কশ্চিডাগ্যবান্ স্বদেহে ছিতো দমশরীরী ফানী ভবতি। অহন্ত স প্রসিদ্ধঃ পাপাত্মাপি যৎক্ষয়া যদ্ভয়া ধিষণয়া তং পুরাণং পুরুষং পুরুষোভ্যাং চৈন্তাং চিন্তাখিছাতারং চিন্তেনাপি শেবাং প্রভ্ বহিশ্চ হ্লিচ প্রতীত্মপরোক্তয়া প্রাপ্তমিব পশ্যে পশ্যামি। অত নিকুক্তে চ বা শব্দেন দর্শিতং জীবানাং তৈবিধ্যং মৃতশ্চাহং

হে ঈশ ! ভবাদৃশ অনুপম মহা দয়াশীল যে পুরুষ দশমাসমাত্র বয়ক্ষ এই দেহিকে ঈদৃশ জ্ঞান প্রদান করিয়াছেন সেই দীননাথ আপনার কৃত কর্ম স্বারাই ভূফ হউন, অঞ্জলি বন্ধন বিনা ভাঁহার কৃত উপকারের প্রভ্যুপকার করিতে কাহার সাধ্য আছে ? ॥ ১৮ ॥

প্রভা। পথাদি অপর জীব স্ব স্ব দেহে শরীরোৎপদ স্বথ ঠাংখাদিই কেবল দেখিতে পায়, কিন্ত আমি যাঁহার প্রদত্ত বিবেক জ্ঞান দারা শম দমাদি সম্পদ্ধ শরীর বিশিষ্ট হইনীছি, সেই অনাদি পরিপূর্ণ স্বরূপ পুরুষকে বাহিরে এবং হৃদয়ে দর্শন করি, তিনিই অপরোক্ষয় রূপে প্রতীত চিতাধিষ্ঠাতা তুল্য

যৎস্কীয়া দ তমহং পুরুষং পুরাণং পশ্যে বহি ছ দিচ হৈত্যমিব প্রতীতং॥ ১৯॥ সোহছং বসমপি বিভো বহু ছঃধবাসং গান্তাম নির্জিগনিষে বহিরদ্ধকৃপে। যত্রোপবাতমুপদর্পতি দেবমায়া মিথ্যামতি র্যদকুদংস্তিচক্রমেতৎ ॥ ২ ॥ তত্মাদহং বিগতবিক্লব উদ্ধরিষ্যে আত্মান্মতি তমসঃ অহলাত্মনৈর। ভূয়ো यथा ব্যসনমেতদ্নেকরকুং মা মে ভবিষ্যত্পসাদিত বিক্পাদঃ॥ ২১॥

धिशतवामी।

পশাংমীত্যস্বর:। কথমপরোক্ষতরা প্রতীতং চৈত্তামিব অহকারান্দানং ভোক্তারমিত্র্ব:॥ ১৯॥-

বিবেক জ্ঞান কৃতং সংসাবোদেগমন্থ্ৰদন্ মোকমাৰ্গমেৰাধাৰ্শাতি সোহ মিতি ছাভ্যাং। হে বিভোৰ্ছ ছংখ বাসং যথা ভৰতি তথা গৰ্জে বসরপি সোহহং গভাৰহি নি গৃত্তং নেচছানি অত হেতুরদ্ধকুপপ্রান্তে যত্ত্ব দ্বাতং গতং প্রাণিনং দেবস্য তব মারা উপস্পতি ব্যাপ্লোতি বদস্ যাং সায়ামস্থ মিধ্যামতিঃ দেছে ২হংবৃদ্ধিঃ সংস্তিচক্রং চ কলত্র পুত্রাদি সম্বদ্ধাহণস্পতি॥ ২০॥ তত্মাদত্তিৰ স্থিতোহপি বিগতবিক্ষবং অব্যাক্লং দন্ স্থল। আত্মনা সার্থিকপয়া ব্ছ্যা এবায়ানং তমসং সংসারাহ্ছরিবাামি। অনেকর্দ্ধুং নানা পর্ত্তবাস রূপং। এত্থাসনং ছঃখং যথা মে মাভৰিষ্যন্নভবিষ্যতি তথাকা তত্ত তৰ সাধনসাম্ত্রী ততাহ উপদানিতে রদয়ং প্রাপিতৌ বিষ্ণো: পানে বেন ময়া দ: ॥ ২১ ॥

ক্ৰমদন্ধ:।

জাতিষপ্যেষ বিলক্ষণভন্না সমূত: ॥ ১৯॥ २०॥

যন্ত্ৰাদীদৃক্ ক্লপাভাজনং ক্লতোহনি তল্পালাল্থনা প্র্মাল্থনৈৰ স্বন্ধা উপসাদিতে তলাংশেনাবতীৰ্ণস্য বিষ্ণোৰী ব্যাণি শংস্ ন ইতি প্রসিদ্ধে: ন ইতি প্রসিদ্ধে বিফুরপস্য বহু পানৌ যত্র সোহহং তথাত্মানমুদ্ধরিব্যে ফাপ্টুর ইত্যাদি॥ ২১॥

श्रीविश्वनाथठकवर्ती।

পুনৰ্জাতোজাতশ্চাহং পুনমু'ত ইতি তত্তাবনা বাক্যানত্তরং সাংখ্যং যোগং সমভ্যত্তেং পুরুষং ৰা পঞ্চবিংশক্ষিতি ॥ ১৯॥

নত্ন বং ভক্তোৰ মামেবং প্ৰবে কিঞ্চাত্ৰ ছঃধেনোধিজনেচ যতঃ কদা নিৰ্বান্তত ইতি নিবেদিয়িতভক্ষামধুনৈবাতো গঞ্জীকিজ্মদা মীতি তত্ত্ব নননেত্যাহ সোহমিতি যত্ত্ব বহিত্বপথাতং প্রাণিনং দেবস্য তব মান্না উপদর্শতি ব্যাপ্লোতি বদম যামম মিথ্যামতি দেহে অহংবৃদ্ধিন্ততক্ষ সংস্থতিচক্রং॥ २०॥

তহি কিং নিশ্চিনোধীতি তত্ৰাই তশাদিতি। ভিত্তৈৰ স্থিতো ছংখেনাপি বিগত বিক্লবোহব্যাকুলঃ সূন্ স্থ্য। আয়ুনা সার্থি রূপয় বুলৈ ব অনুবা অক্তরা আত্মানং তমসঃ সংসারাহ্রবিধ্যামি যথা এতং অনেকর্বনুং নবৰার স্থানেহ লক্ষণং বাসনং বিপত্তি মেমি মাত্ৰিষাল্পত্ৰিয়াতি কাত্ৰ তব সাধন সামগ্ৰী তত্ৰাই উপুসাদিতে শ্বৰণ কীৰ্ত্তনাদিভিয়াব্ৰিতৌ বিফোন্তৰ পাদে বৈন তস্য ॥২১॥

वर्थार बहुकातान्त्राम (ভाकुः।। ३३॥

কিন্তু হে বিভো! বছল ছঞ্জের আবাস স্বরূপ এই গর্ত্তে বাস করিয়াও নির্গত হইয়া ৰহিভাগে ষাইতে আমার ইচ্ছা হইতেছে না, যে হেতু তাহা এ ছান অপেকাও অন্ধকৃপ তুলা,, যে প্রাণী বেধানে যার আপনার মায়া তাহাকে আছের করে, পরে সেই মায়ার পশ্চাৎ পশ্চাৎ মিথ্যায়তি অর্থাৎ দেহে অহংবৃদ্ধি এবং পুত্র কলতাদি দম্বন্ধ নিমিত্ত এই সংসারচক্র তাহাকে আচ্ছন্ন করে॥ ২০॥

জতএব শামি খৰ্যাকুল চিতে,এই স্থানেই অবস্থিতি করিয়া শুদ্ধৎ স্বরূপ-জাতা ঘারা অর্থাৎ সার্থি রূপ বৃদ্ধি যোগে সংসার হইতে আহ্মাকে উদ্ধার করিব, নানা গর্ভবাস রূপ এই ছংখ পুনর্বাদ্ধ যেন আমার না হয়, আমি ভগৰানু বিফুর পদৰ্ম ছদয়ের মধ্যে আনমন করিরাছি, ইহাতে আমার ঐ বিষ্ टबढ़ गांधन गांमजीत क्रकारमाज नाष्ट्र ॥ २> ॥

শ্ৰীভগৰাসুবাচ ॥

এবং কুতমতির্গর্ট্টে দশমাস্থ স্তবন্ধ:। সদ্যঃ ক্ষিপত্যবাচীনং প্রসূত্তির সূতিসারুতঃ ॥ ২২ ॥ তেনাবস্টি: সহসা কুদ্বাবাক্ শির আত্রঃ। বিনিজ্ঞামতি কুচ্ছেণ নিরুজ্বাসো হতস্মৃতিঃ ॥ ২০ ॥ পতিতো ভ্রাস্থ মিশ্রো বিঠাভুরিব চেউতে। বৈরুদ্ধতি গতে জ্ঞানে বিপরীতাং গডিং গতঃ ॥২৪

এধরস্বামী

দশ মাসাঃ পরিছেদকা যস্যেতি প্রস্তিপূর্বকাণোপলকণং। ঋবি জীবিঃ সদ্যন্তৎকাণমেব অবাচীনসবাস্থাং স্তিহেতু মাস্কতঃ কিপতি ফুদতি ॥ ২২ ॥

অবস্ট: অধ:ক্ষিপ্ত: সন্ ॥ ২৩ ॥ বোরস্থতি রোক্ষ্যতে ॥ ২৩ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

অত্র শীভবাহৰাচেতি কচিং। য শবি র্জপবদ্ধা পুর্বোজনীতা এক্ষরৈবর্ত বর্ণিত শীভকদেব ইব কশিং স দশমাস্য এব অবন্ কতমতি: পূর্ণভগবজজানো তবতি। অতঃ প্রসদেশনবোজ মহিদ্ধ অস্য জন্মাদি সংসারিকাবস্থাভাসো ন বর্ণনীয় ইতি ভাব:। বস্তু প্রস্করিবস্থা শ্রেমতামিত্যাই সদ্য ইতি। অবাচীন মধোগছেন্তং সংসারপদ্বীমন্থর্তমানমিত্যর্থ:। তং দশমাভাৱে সতি স্তিহেত্ম কিতঃ সদ্য কিপতি। যক্ত শুক্দেববভগবজ্জানপূর্ণ: সত্তু তবং স্বাতন্ত্রোণবাবির্ভবতীত্যর্থ:। মধ্য হিতানার জীবানাং তারতম্যং জেয়মিতি ভাব: অতৈক বাকারে সতি পূর্ব প্রার্দ্ধে হিপি দ্বিতীয়াস্তান্যের পদানি প্রযুজ্যের-দ্বিতি জেয়ং॥২২॥

হতা স্বৃতিঃ পূর্ব্ব ধূর্ব্ব জনাস্থসদ্ধান লক্ষণা বস্তু সঃ॥ ২৩॥

পতিত ইতি ত্রিকং। বিষাত্ত বিষ্ঠাভূ: ক্লমিরিব। জ্ঞানে অনেক জনগত হুও ছঃখাদি বিষয়ে পূর্ব্ব পূর্ব্ব মহাছঃথে বিশ্বতে

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এবং ক্ষা গর্ত এবাবিষা ক্ষাং ভজামীতি নিশ্চিতা মতির্ধেন সং। স্ববন্ সন্ শ্বিরের ভবেদিতাররঃ। ন তদ্য গর্ত্তারিংস্তদ্য প্ন: সংসার ইতি ভাবঃ। বন্ধ প্রন্তঃ প্রাধ্যারত এব প্রকাম্যে জীবস্তদ্য হরবছা জায়তামিত্যাহ সদ্য ইতি। অবাচীন-মধোগচ্ছেং সাংসারিকং স্তিহেত্ম ক্রতঃ প্রস্তিত সদ্যো দলমাদীয় ক্ষণএব ক্ষিপত্তি। তেন যং স্ববন্ধবির্ভবেৎ সত্ স্তিমাকত ক্ষেপং বিনৈব গর্তাক্রিচিছতীতার্থে লভাতে অবৈক এব জীবো বদি বিব্দিতঃ স্যাভ্যা পূর্বার্দ্ধেংপি ক্রতমতিমিত্যেবং দিতীয়াস্তান্যেব পদানি প্রযুক্ত্যেরিছিতি সন্দর্ভঃ ॥ ২২ ॥

হতা স্তিঃ স্তশ্চাহং পুনর্জাত ইত্যাদি পূর্ব্ব জন্মাহসরান লকণা যস্য সং॥ ২৩॥ .

বিঠাড়ুং ক্লমিরব রোরগ্রতি রোরগতে। জ্ঞানে প্রাচীনে গতে সতি বিপরীতা মজত্বকণাং ভক্তজীবস্যাপি বস্ত স্বাভাব্যাদীবাদ্য প্রায়োজনমার্তং তিঠতি ততঃ কিঞ্জাত্রং সংসক্ষেনোদৃদ্ধ পূর্ব সংস্কার্স্য তক্ত্যা ভগবৎপ্রাধিরিতি ক্লেয়ং। পরস্য ছন্দমতি

ভগবান্ কপিল কহিলেন মা! দশমাস বয়ক্ষ জীব এই প্রকারে ক্তমতি হইয়া যথন মাভূগর্ত্ত মার্কত তাহাকে অবাধ্যুথ করিয়া প্রস্বাধি প্রেরণ করে। ২২ দ

জীব ঐ ৰাষ্ কৰ্ত্ক এই প্ৰকাৰে অধ্যক্তি হওয়াতে অভিশয় শীড়িত হয়, অতএব অধ্যাশির। হইয়া অতিকটে নিৰ্মত হইতে থাকে, তৎকালে ভাহার নিখাস প্রখাস বন্ধ এবং সমাধ শক্তি বিন্ট • হইয়া যায় ॥ ২৩॥

তদনস্তর ঐ জীব শোণিতাক্ত কলেবর হইয়া কৃষির ন্যায় ভূমিতে পড়িয়া অস সঞ্চালন করে,

পরচহন্দমবিছ্বা পৃষ্কমাণো জনেন স:। অনভিপ্রেতমাপদ্ধ: প্রত্যাখ্যাতুমনীশরঃ ॥ ২৫॥
। শায়িতো ২৩ি পৃথ্যকে জন্তঃ স্বেদজ দৃষিতে। নেশ: কণ্ডুয়নেহঙ্গানামাসনোখানুচেউনে ॥ ২৬
। তুদজ্যামন্তচংদংশা মশকা মৎকুণাদয়:। রুদন্তং বিগতজ্ঞানং কুময়: কুমিকং যথা॥ ২৭॥
ইত্যেবং শৈশবং ভুক্তা ছুঃখং পৌগওমেবচ। অলকাভীপ্যিতোহজ্ঞানাদিদ্ধময়াঃ শুচাপিতঃ॥ ২৮

এধরশ্বামী

শরস্য ছেক্ষমভিপ্রায়মবিহ্যা অনভিপ্রেতং স্তন্যার্থং রোদনে উদরব্যথাং প্রকল্প নিম্বস পানং উদরব্যথ্যা বোদনে স্তন্পান্যিত্যাদি॥ ২৫॥

আসনোখান চেষ্টনে চানীশ: সন্ রোরয়তীতামুষক: ॥ ২৬ ॥

श्रामा (कामला चक् यात्राजि जः। विशवः शार्ड काजः कानः यत्रा॥ २१॥

শৈশবং পঞ্চবর্ষাণি ততঃ পৌগতং যৌবনাদর্স্বাক্ অত্রাধ্যয়নাণি ছংখং যৌবন ছংখমাহ সাইন্ধিস্তিত। অলকাভীপিত্রেন ভচাপিতো ব্যাপ্তঃ অজ্ঞানাণিকোণীপ্তো মহা র্যন্য সং॥২৮॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

সাংপ্রতিক ক্ষুত্র হৃংখেনৈর হুঃখী ভরতীত্যর্থ: ॥ २৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ইতীতি যুগাকং ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩• ॥ ৩১ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

প্রায়মধিছ্বা অন্যার্থ: রোদনে উদরব্যথাং প্রকল্পা নিম্বরণং পাষ্যতা উদরব্যথারাং রোদনে ক্ষাং প্রকল্পা জন্যং পাষ্যতা জনেন মাজাদিনা নেশং ন স্মর্থ: রোজ্যত ইত্যুম্বকং॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥

জামা কোমণা ত্বগ্ যদ্য তং কৃমিকং জুক্রুরিং॥ ২৭॥ ইদ্ধুমনুদ্রক্ষীপ্রক্রোধঃ শুচার্শিতঃ শোকব্যাপ্তঃ॥ ২৮॥ ২৯॥

তদনস্তর জ্ঞান বিগত হইলে পর বিপরীত গতি প্রাপ্ত হইয়া পুনঃ পুনঃ রোদন করিতে থাকে ॥ ২৪ ॥ অপর, তৎকালে তাহাকে এমত লোকে পোষণ করে যে তাহার অভিপ্রায় জানিতে পারে না, স্থতরাং অনভিপ্রেত বস্তু সন্মুখে রাখিলে সে তাহা প্রত্যাখ্যান করিতে পারে না অর্থাৎ ন্তন পানার্থ রোদন করিলে তাহার পালক উদর ব্যথা করনা করিয়া নিম্বরস্পান করিতে দেয়, অথবা উদর ব্যথায়, বোদন করিলে অত্যার্থ রোদন করিতেছে অমুমান করিয়া যদি স্তন পানাদি করাইতে প্রস্তু হয়, সে তাহাতে নিষেধ করিতে গারে না ॥ ২৫ ॥

আর, স্বেদক কীট ভারা দূষিত অশুচি পর্যাক্তে শায়িত হইয়াও আপনার অস কণ্ট্রনে অথবা উপ-বেশন ও উপানাদি চেন্টায় সমর্থ হুঁয় না কেবল নিরস্তর সোদন করিতে থাকে ॥ ২৬॥

অপিচ, কুমি সকল বেমন কুমিকে দংশন করে, তাহার ফায়, দংশ মশক মংকুণাদি তাহার কোমল মকে দংশন করিয়া ক্লেশ দেয়, গার্ত্ত মধ্যেই জ্ঞান জন্মিবাতে তাহার ঐ দংশাদির দংশন নিমিত ক্লেশ বিলক্ষণ অনুভব হয়, কিন্তু প্রতিক্রিয়া করিতে সক্ষম হয় না, হতরাং কেবল রোদন করিতে থাকে ॥২৭ মা। ক্রিক ঐ প্রকারে পক্ষমবর্ষ প্রান্ত শৈশব জুংখ ভোগ করিয়া পরে যথন পৌগও অবস্থা প্রাপ্ত

হয়, ভাহাতেও আবার অধ্যয়নাদি প্রশু অমুভব করিতে হয়, পরে যৌবন দশা প্রাপ্ত হইলেও অভী-লিভ অর্থ লাভ না হওয়াতে শোহে ব্যাপ্ত হয় এবং অজ্ঞান বশতঃ তাহার ক্রোধ উদ্দীপ্ত হইতে থাকে ॥ ২৮॥ সহ পেছেন মানেন বর্জমানেন মস্থানা। করোতি বিগ্রহং কামী কাঞ্মিছন্তায় চাজ্মনঃ ॥ ২৯॥
ছৃতৈঃ পঞ্চলিরারজে দেহে দেহবুধোহদক্ত । অহং মমেত্যসদ্গ্রাহঃ করোতি ক্মতিম তিং ॥৩০
তদর্থং ক্রুতে কর্মা বছজো যাতি সংস্তিং। যেহসুযাতি দদৎ ক্রেশমবিদ্যাকর্মবন্ধনঃ ॥ ৩১ ॥
যদ্যসন্তিঃ পথি পুনঃ শিক্ষোদর ক্তোদ্যমৈঃ। আছিতো রমতে জল্পন্তমো বিশতি পূর্ববিৎ ॥ ৩২
সত্যং শোচং দয়া মোনং বৃদ্ধির্মীঃ শ্রীর্ষশঃ ক্ষমা। শমো দমো ভগশ্চেতি যৎসঙ্গাদ্যাত্তি সংক্ষরং ॥এ৩

ञीधत्रयामो ।

দেহেন সহৈব বৰ্দ্ধানেনাভিমানেন মহানাচ বিগ্ৰহং বিরোধং করৈতি আত্মনোহস্তায় নাশার॥ ২৯॥ অজানং প্রপঞ্চয়তি ভূতৈরার্দ্ধদেহে অসদাগ্রহোহহং মমেতি মতিং করোতি॥ ৩০॥

তদর্থং দেহার্থং যদেবন কর্মণা বন্ধ: যোদেহোৎস্থাতি পুন: পুনরুপ্যাতি অত্বর্ত্ত ইতি বা কুত: জবিদ্যা কর্মভ্যাং বধ্যতে ইতি তথা॥ ৩১॥

যদাসন্তিরান্থিত: অধিষ্ঠিত: সন্ তেষাং পশি রমতে। পশি সন্মার্গে আবিতোহপি যদাসন্তি: সহ রমতে ইতি বাঁ। ভাইি যাতনা দেহ আরত্য ইত্যাদি পূর্বোক্তপ্রকারেণ নরকং বিশতি ॥ ৩২ ॥

অসৎ সঙ্গং নিন্দতি সত্যমিতি ত্রিভি:॥ ৩৩॥

क्रमममर्जः।

সাধারণ কামাসক্তি দোবম্কী পাপজ তদাসক্তি দোবমাছ যদীতি। অসন্তিঃ পাপিটৈ: ॥ ৩২ ॥ দবেতাত্র তপ ইতি কচিৎ এর পুণারেণামত: ॥ ৩৩ ॥

- শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

অজ্ঞানং দর্শরতি। ভূতে: পঞ্চতিরার্ক্ক ইতি দেহসা স্বভোহনাত্বং স্পাঠনেব তদ্পি তত্ত্বৈর অবং মমেতি মতিং করোতি অসদ্-গ্রাহং অসম্বের গৃহাতি নতু সং ॥ ৩০ ॥

তদর্থং দেহার্থং যদেবন কর্মণা বৃদ্ধঃ। যো দেহং জীবায় ক্লেশং নরকাদি ছংখং দদং দাতুং অরুষাতি পাবিধ্যয়া কর্মবিদ্ধনং যৃত্য সঃ। যো দেহং ক্লেশং দদাতি তমেব পাপকর্মণাপি পুষ্যতীতি মৌঢাং॥

পূর্ববিদিতি যাতনা দেহ আর্ত্যেতি পূর্বোক্ত প্রকারেণ নরকং বিশতি যদ্যসম্ভিরিতানেন যদি সন্ভি: পণি পুন: ক্ষ্পোবা কতোদ্যমৈ:। আছিতো রমতে জন্ধ: কৃষ্ণং প্রাপ্নোতি পূর্ববিদিতি চ লভ্যতে। আৰু পূর্ববিদিতি পূর্বোক্ত ভক্তকীববিদিত্যর্থ: ১০১॥৩২ অসম্ভ এব কে ইতি তান্ লক্ষন্ তৎসঙ্গং নিবিদ্ধাতি সত্যমিতি ত্রিভি:॥৩০॥

অনস্তর ঐ কামী আপনার দেহের সহিত বৃদ্ধিনীল অভিযান ও মন্ত্রুবলতঃ আপনার বিনাশার্থ অন্য কামিদিগের সহিত্ বিরোধ করে॥ ২৯॥

এবং প্রকৃত জ্ঞান শূতা হওরাতে পঞ্ছত দারা মারক এই দেছে পুনঃ পুনঃ ''আদি আমার'' ইত্যাদি অসং আগ্রহ হয়, স্ত্রাং কুব্জি বশতঃ তাহাতে আগ্রবৃদ্ধি করে॥ ৩০ ॥

অতএব, যে সকল কর্মে বন্ধ ইইয়া সংসার প্রাপ্ত ইইবে ঐ দেহের নিমিত সেই সকল ক্র্ম করিতে তাহার অসুরাগ জন্মে, কিন্তু ঐ দেহ প্রেয়ন্তর নহে, যে হেতু অবিদ্যা ও ক্র্ম বারা ভাহার বন্ধন হয়, তাহা ক্রেশ প্রদান করত পুনঃ পুনঃ অসুবর্তুমান হয়॥ ৩১॥

অপর ঐ জন্ত যদি সংপথে অবস্থিত হইয়াও শিক্ষোদর পরায়ণ স্বন্ধ পুরুষের সহিত সংস্থা করে, তাহা হইলেও তাহাকে যাতনাদেহ প্লাপ্ত হইয়া পূর্বোক্ত প্রকালর নরকে প্রবেশ ক্ষিতে হয় ॥ ৩১ ॥

মা। অসৎসঙ্গ জাতিশয় মানিউকর, তাহাতে সত্য, শোচ, দয়া, কৃষি, লজা, এ, ষশ, কৃষা, শাদ, দম, ঐর্ধ্য ইত্যাদি সম্দায় ক্ষয় প্রাপ্ত হয়। ৩৩॥

তেঘশান্তের্ মৃঢ়ের্ গৃণ্ডিতাত্মসনাধ্র্। দলং নক্র্যাচ্ছোচ্যের্ ঘোষিৎক্রীড়ামূণের্ চ ॥ ৩৪ ॥
ন তথাস্য ভবেন্মোহে। বন্ধশ্চান্য প্রদেশতঃ। যোষিৎদলাদ্যথা পুংদো যথা তৎদঙ্গিদলতঃ॥ ৩৫
প্রজাপতিঃ যাং ছহিতরং দৃষ্ট্বা তজ্ঞপধর্ষিতঃ। রোহিন্ত্ তাং নোহ্বধাবদ্য্যরূপী হতত্রপঃ॥ ৩৬
তৎস্ট স্ট স্টের্ কোর্থণ্ডিত্বীঃ পুমান্। ঋষিং নারামণ্মতে যোষিশ্বের্ছ মার্যা॥ ৩৭॥

श्रिश्वचामी।

পণ্ডিতাত্মস্থ দেহাত্মবৃদ্ধিষ্ বোষিতাং ক্রীড়ামৃগ ইবাধীনেষ্ ॥ ১৪॥

यशां पारिश्मिनाः मक्टा वद्यः उथार्नामा ध्रमक्टा न उत्रः॥ ७०॥

যোষিৎসক্ষ্যানর্থহেতুত্বং প্রপঞ্ছতি প্রজাপতিরিতি সপ্ততিঃ। রোহিত্তাং মৃগীরূপাং সতীং ঋষ্যরূপী মৃগাকার: সন্ হতজ্ঞো নিল্কো: ॥ ৩৬ ॥

তেন বন্ধা স্টা: মরীচ্যাবর জৈ: স্টা: ক্লাপাবর জৈরপি বেবম্ম্বাবিরজের কো মু পুমান অপভিত্রীরনার্ভ্রমনা: ॥ ৩ ।॥

ক্ৰমসম্মৰ্ভঃ।

চকারাদ্ববৈধবাসাধুবু তেবু म কুর্বাবে। তথা বোবিৎক্রীড়াবৃণেধু ন কুর্বাদিতার্থঃ ॥ ৩৪ ॥

তদোষ্মের দর্শরতি ন তথেতি স্লোহ্র তত্ত্বাস্নরা তত্ত্বাস্নাময়:॥ ৩৫ ॥

তৎ স্ষ্টান্তরবতারিকৈংশি জ্ঞীনারারণসা দ্বান্তিওধীন্মেবেতাাই শ্বিমিতি। স্বাধানারণবিনাভূতকদনাসকো বং স্যানের কোহনু তাদৃশ ইতার্থ: ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥

वीविश्वनाथठकवर्षौ।

ধণ্ডিতাকুত্ব আত্মনোহধঃ পাতনাদাক্ষণাতিবিত্যৰ্থ:॥ ৩৪ ॥

यशाह जरमान मन्छ रेडि हकारतार्व प्रशाहार्याः॥ ७० ॥

নচ বিবেক জ্ঞানাদিমতাং মহাপুক্ষাণাং থিবং অংশবিকুং বোধিলণকোতীতি বাচামিত্যাহ প্রজাপতি ত্র'লা রোহিত্তাং মুগীরূপাং সতীং থবারূপী মুগাকারঃ সন্ ॥ ৩৬ ॥

তেন ব্ৰহ্মণা স্টা মরীচ্যাদরতৈঃ স্টাঃ কশাপাদর তৈরপি দেব মহ্বাদরতের মধ্যে কথজ্তের নারারণমৃতে নারারণং বিনা বর্তমানের নারারণমহ্পাসীনেদিতার্থঃ। তেরু মধ্যে নারারণং বিনেতি ন বাণ্যেরং নারারণম্য বিধিস্কাদাপতেঃ॥ ৩৭ ॥

এই কারতে এ সকল মৃঢ় অশাস্ত লেহে আত্মবৃদ্ধিকারী এবং ক্রীড়ামূগের ন্যায় যোবিৎদিগের বলীভূত হয়, অতএব এ সকল শোকাই অসৎ লোকের সহিত সঙ্গ করা কলাচ বিধেয় নহে॥ ৩৪॥

মা। আবার অসাধু লোকের সঙ্গ অপেকা যোধিৎসঙ্গ ও বোধিৎসঙ্গির সঙ্গ অতীব অনিষ্ট কর, পুরুষের এই তুইয়ের সঙ্গে যেমন মোহ ও বন্ধন হয়, অন্য ব্যক্তির সঙ্গে তজপ হয় না॥ ৩৫॥

মা! যোষিৎসঙ্গ কিরূপ অনর্থকর বিস্তার করিয়া বলি প্রবণ করুন, প্রজাপতি একা আপনার ছহিতাকে প্রথম তাঁহার ক্লপে মুগ্ধ হইয়াছিলেন,পিতার ঐ রূপ গহিত কর্মে প্রবৃত্তি দেখিয়া তদীয়তনয় ভয়ে মুগী রূপ ধারণ পূর্বক ধাবমানা হইয়াছিলেন, তথাচ একা কান্ত হন্ নাই, তিনিও লক্ষা

বিসর্জন পূর্বক মুগত্রপ ধারণ করিয়া তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়াছিলেন॥ ৩৬॥

শত এব যৌষিৎ দর্শনে এক্সার যথন ঐরপ মোহ হইল তথন তিনি যে মরীচ্যাদি সৃষ্টি করিরাছেন, ঐ মরীচি প্রভৃতি বে কশ্রপাদির সৃষ্টি করিয়াছেন, সেই কশ্রপাদির সৃষ্ট যে সকল দেব মসুব্যাদি ভাহাদের মধ্যে নারারণ ক্ষবি ব্যতিরেকে কোন্ প্রহের মনঃ যোবিলায়ী মায়ায় আরুই না হইবে ? ॥ ৩৭ ॥ বলং মে পশ্য মায়ায়াঃ স্ত্রীময়া। জয়িনে। দিশাং। যা করোতি পদাক্রান্তান্ ক্রবিজ্জেণ কেবলং॥৩৮ সঙ্গং ন কুর্য্যাৎ প্রমদান্ত জাতু যোগদ্য পারং পরমারুকুকুঃ।

সংসেবয়া প্রতিলব্ধাত্মলাভো বদন্তি যা নিরয় বারমস্য ॥ ৩৯ ॥

যোপযাতি শনৈর্মায়া যোষিদ্দেববিনির্মিতা। তামীক্ষেতাত্মনো মৃত্যুং তৃণৈঃ কুপ্রিবার্তং ॥ ৪০ বাং মন্যতে পতিং মোহামায়াম্যভায়তীং। স্ত্রীসঙ্গ প্রাক্তিঃ প্রতিপত্য গৃহপ্রদং ॥৪১

बीधत्रवाभी।

षिभाः **अ**श्विनः भूतानि ॥ ७৮ ॥

প্ৰতিলৰ আত্মরপো লাভো যেন অস্য মুমুকো: যা: প্রমনা: নিরমন্বারং বদস্তি যোগিন: ॥ ৩৯ ॥

শনৈ: ভশ্ৰবাদিমিধেণ উপযাতি যা যোষিজ্ঞপা মায়া তাং মৃত্যুং প্ৰতিকৃপামীকেত ॥ ৪০ ॥

মুকুকুং স্ত্রিয়ং প্রতিএতদেবাই যামিতি ছাভ্যাং। শ্বরভায়তীং পুক্ষবদাচরস্তীং যাং মম মায়াং বিস্তাদিপ্রদং পতিং মন্যতে স্ত্রী-সঙ্গতোহস্তকালে স্ত্রীণ্যানেন স্ত্রীত্বং প্রাপ্তো শ্বীবঃ॥ ৪১॥

क्रभमन्द्रः।

নিরীতি কেবলমিতি অমরকোষাৎ। কেবলমিতাব্যয়ং। তত চ ক্রবিজ্ ভস্য বিশেষণং ততো ক্রবিজ্ ভে লৈবেত্যর্থ:॥ ৩৮॥ প্রমদার বীয়াত্মপি নিরয়ঃ সংসার:॥ ৩৯॥

তামিতি। যথা স্বপাল্যং পশ্বরং পতত্তং প্রতি তৃথৈরাবৃতং কৃপং মৃত্যুরপনীক্ষতে তথা বোধিস্থেনাবৃতাং তামাস্থনো মৃত্যুরপাং ঈক্ষতেত্যর্থ:॥ ৪০ ॥ যামিতি যুগাকং॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

দিশাং জারনঃ সর্বা দিশো বিজিতা স্বাস্থংপ্রমাগতাংশকেবর্তিনোহপি বা মাং ত্যক্ত্রা জন্যদেশীয়াঃ স্ত্রীঃ সম্ভোক্ত্র দিখিজয় করোষি ধিক্ ছামিতি ব্যঞ্জকেন কোপকৃটিশীক্তেন করিজ্ভেণ মানিনী স্ত্রীজাতি স্তান্ প্রণমতঃ পদাক্রাস্তান্ পদপ্রহার পরিং ভূতান্ করোতীতি কেবলং নিপীতিং নাত্র যুক্তিরবেষ্টব্যেতি ভাবঃ। নিণীতে কেবলমিত্যমরঃ॥ ৩৮॥

প্রমদাস্থ স্থীয়াস্থপি সন্ধাসক্তিং পরং পারমারকক্ষ্পানীচ প্রতিলক্ষাত্মভাবোভক্ত তেন ন কুর্যাং। নো শ্যানঃ প্রত্যধ ইতি ন্যায়েন ক্ষ্মী স্ত্রীসক্ষ্পপি ন হ্যাতীতি লভাতে। অস্য পুংমাত্রস্য ॥৩৯॥

যাচ পুরুষং বিরক্তং জ্ঞাষা স্বীয় নিক্ষামতাং ব্যক্তমন্ত্রী শুশ্রুষাদিনিষেণোপযাতি সাপ্যনর্থকারিণীত্যাহ যোপবাতীতি। ঈক্ষেৎ ঈক্ষেত। অত্র তৃণাচ্ছাদিত কৃপদ্য ময়ি জনঃ পতত্বিতি ভাবনাভাবাৎ কদ্যচিৎ পার্শ্বেহপ্যনাগমনাৎ সর্বত্যোদাদীনা বাদভক্তি জ্ঞান বৈরাগ্যাদিমতী বা উন্মাদাদচেতনা নিজাপা বা মৃতাপি বা স্ত্রী সর্ব্বিথব দূরে পরিত্যাজ্যেতি ব্যক্তিতং ॥ ৪০ ॥

যথা ভক্তিজ্ঞানবতাং পুংসাং ঘোষিদনর্থ হেতু স্তথৈব ভক্তিজ্ঞানবতীনাং ষোবিতাং পুমাংশ্চেত্যাহ যামিতি ছাভ্যাং ঋষভায়তীং পুক্ৰবদাচরত্তীং যাং মন মায়াং পতিং বিভাদিপ্রদং মন্যতে। স্ত্রীসঙ্গতং অন্তকালে স্ত্রীধ্যানেন স্ত্রীষ্ঠ প্রথোজীবঃ॥ ৪১॥

না! আমার ঐ স্ত্রীময়ী মায়ার বল দেখুন, এই মায়া দিখিজয়ি শূরদিগকেও ভ্রান্ত **স্থাপ**নার পদানত করে॥ ৩৮॥

অতএব যে ব্যক্তি যোগের পরপারে আরোহণ করিতে ইচ্ছুক তাঁহার প্রমণার সহিত সঙ্গ করা কর্ত্তব্য হয় না। ফলতঃ যোগিরা বলেন, সৎসঙ্গ দারা যাহার আত্ম রূপ লাভ প্রতিল্কাহয় তাহার পক্ষে স্ত্রীগণ নরকের দার স্বরূপ, স্বতরাং তাহার যোগিৎ সহ সহবাস কলাচ বিধেয় নহে॥ ৩৯॥

মা! যোধিৎ রূপা দেবনির্ম্মিত। মায়া শুশ্রাদি ছলে ধীরে ধীরে নিকটে গমন করে, • কিন্তু বৃদ্ধিন মান্ পুরুষ তাহাকে তৃণাবৃত রূপের ভায় আপনার মৃত্যুস্বরূপ , অ্বলোকন করিবেন, অর্ধাৎ প্রতিকৃল বর্তিনী করিয়া জানিবেন॥ ৪০॥

মা। জীব স্ত্রীসঙ্গ বশতঃ অর্থাৎ অন্তকালে স্ত্রীধ্যান নিমিত্ত স্ত্রীত্ব প্রাপ্ত হাইয়া 'মোছ প্রযুক্ত প্রাক্ত তুল্য আচরণকারিণী আমার যে মায়াকে বিভ, অপত্য ও গৃহপ্রদ পতি করিয়া সাঁনে ॥৪১॥

তামান্সনো বিজ্ঞানীয়াৎ পত্যপত্য গৃহাত্মকং। দৈবোপসাদিতং মৃত্যুং মুগম্মোগায়নং যথা॥ ৪২॥ দেহেন জীবভূতেন লোকালোকমনুবজন্। ভূঞান এব কর্মাণি করোত্যবিরতং পুমান্ ॥ ৪০ ॥ জীবোহ্যাসুগো হদেহো ভূতেব্রিয় মনোময়:। তির্নিরোধোষ্ণ মরণমাবির্ভাবস্ত সম্ভবঃ ॥ ৪৪ ॥

श्रीधत्रवामी।

তাং পত্যাদি রূপাং মৃত্যুং বিজ্ঞানীয়াং। মৃগয়েদ রুক্স্য গায়নং অমৃক্লত্বেন প্রতীয়মানমপি যথা স্গাস্য মৃত্যু: ॥ ৪২ ॥ তদেবং জীবস্য সংস্তিঃ প্রপঞ্চিতা। তত্ত্বচ তস্য কর্মনশেন লোকালোকান্তর পমনং জন্ম মরণঞোকং তত্ত্বিবং শহতে। নমুব্যাপকস্য কথং লোকাল্লোকান্তর গমনং নিতাস্য চকথং জন্মমরণে ভোগেঁন কর্মক্ষে সতি জন্ম মরণক্ষেষ্তে তৎকুতঃ পুনরপি তদ্য 🐗 শ্বিত্তব ইতি তত্র লোকান্তর গমনং কর্ম চ সন্তবতীত্যাহ দেহেনেতি। জীবদ্যোপাধিত্যা ভূতেন জাতেন লিল-দেহেন লোকান্তরমন্ত্রজন্ অবিরতং কর্দাণি করোতীতি কর্মণামসমাপ্তি কক্তা।। ৪৩।।

জন্মমরণসম্ভবমাহ জীবো জীবোপাধি বিজিদেহ: অস্যাত্মনোহহুপ: অনুবত্তী ভূতে জিলমনোমন: সুলভ্গাদি বিকারো দেহ:

অপ জীবস্য স্বতো নিরীহতাদিকেহপি লোকান্তর গমনাদিকং যোজয়তি দেহেনেতি চতুর্জি: ॥ ৪৩ ॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবরী -

তাং মায়াং পত্যাদিকপং মৃত্যুং জানীয়াৎ। যথা মৃগ্রোলু কক্সা গানং স্থদমিপ মৃগো মৃত্যুং জানীয়াৎ॥ ৪২॥

তদেবং জীবসা সংসার: প্রপঞ্চিত:। তত্ত্রিবং শহতে। নুষু জীবং শুভাশুভং কর্ম যেন দেহেন কুক্তে তং দেহং তাক্। দেহাস্তবে তৎকলং স্পাদিকং ভূঙ্কে ইতি কো নাায়: তত্র ঘেনৈব দেহেন কর্ম কুকতে তেনৈব দেহেন ভূঙ্কে ইতাাহ দেহেন জীবভূতেন লিঙ্গণরীরেণ লোকাম্প্রিলোকাং লোকং স্বর্গং নরকাদিকং অহু ব্রন্ধতি উপাধি গমনেনৈব কম্ম কুরুতে উপস্থিতসা জীবস্যাপি, গমনং স্ভাবিতং তত্ৰ ভুঞান এব ভোগমস্মাপু বল্লেব পুন্ম ব্যালোকমাগতা কৰ্মাণি কুক্তে অতো লিক দেহেনৈব কর্ম কুফতে ভুঙ্কে চেত্যক্তং॥ ৪০॥

মন্থ তহি হিতো মর্ত্যলোকাং মৃত্য স্থর্ণং ভূঙ্কে স্থর্ণাদাগতা জামতে ইতি মৃত্য জন্ম প্রতীতিঃ কুভল্ডোতাত স্বাহ জীবো পাধি বি সংদহন্তথাস্যান্মনোহহুগোহহুবত্তী স্থ্ৰদেহো ভোগায়তনং মিলিতা এক এব দেখোভূতেক্সিয় মনোময়ে ভবতি তস্য নিরোধঃ কার্য্যাবোগাত্বমত জীবত মরণং তচ্চ স্থলদেহবিগমে স্থলান্তর প্রাপ্তিপ্রাক্কানে ভবেং সুষ্প্রাদে চু স্বকার্য্যাকারিছেহপি

यिन के खीरनरक मुक्ति देखा दम जाहा हहेरान के शेंजि शूक गृह एक्तर माम्रास्क रेनर कर्ज्क बिठि আপনার মৃত্যু স্বরূপ জ্ঞান করিবে অর্থাৎ যেমন ব্যাধের দঙ্গীত যদিও প্রবণ হুথদ হওয়াতে অমুকূল ৰলিয়া প্ৰতীয়মান হয়, তথাপি তাহা মূগের পক্ষে মৃত্যু স্বরূপ, তেমনি পতি পুত্র গৃহাদি অনুকূল বোধ **र्हे** लिंख के मकलरक व्यापनांत व्यक्तिकृत कतिया छोन कतिरव ॥ ४२ ॥

হে মানবি ! জীবের কর্ম বশতঃ একলোক হইতে লোকান্তর গমন এবং জন্ম মরণ পূর্বে যাহা विनियां हि, जाहारा अवाज भागका कतिरावन ना (य, जीव नाभक, जाहात अकरमाक हरेरा जना स्नारक গমন কি রূপে সম্ভব হয় এবং তাহার নিত্যতা প্রযুক্ত জন্ম মরণই বা কি রূপে হইতে পারে ? মা ! তবে প্রবণ করুন, জীবের একটী উপাধি শ্বরূপ লিঙ্গ দেছ আছে, দেই দেছের সহিত কর্মবশত জীব একলোক হইতে লোকান্তরে গমন কঁটুর এবং ফল ভোগ করত অবিরত কর্ম্ম ক্রিতে থাকে॥ ৪৩॥ সাঃ জীবের জন্ম মরণ কি রূপে হয় তাহাও বলি আহবণ করুন, জীবের উপাধি লিপদেহ এবং

আত্মার অনুবর্ত্তি স্কুল ভূতাদির বিকার রূপ ভোগায়তন এই স্থল দেহ এই চুইয়ের যে নিরোধ অর্থাৎ

দ্রব্যোপলকি স্থানস্য দ্রব্যেকা যোগ্যতা যদা। তৎপঞ্চমহম্মানাজ্বপত্তি র্দ্রব্যদর্শনং।
যথাক্ষো র্দ্রব্যাবয়ব দর্শনাযোগ্যতা যদা। তদৈব চক্ষু ঘোর্দ্র ইন্ট্র্ স্থাযোগ্যতানয়োঃ॥ ৪৫॥
তক্ষাম কার্য্যঃ সংত্রাদো ন কার্পণ্যং নসংভ্রমঃ। বৃদ্ধা জীবগতিং ধীরো মুক্ত সঙ্গ স্কু চরে দিহু॥ ৪৬॥

औशतवामी।

ভোগায়তনং তয়ে। নি রোধ: কার্য্যাযোগ্যতা তদ্সা জীবস্য মরণমূচ্যতে। আবিভাবস্ত সম্ভবো জন্মচ্যোতে ॥ ৪৪ ॥

এতদেব দৃষ্টান্তেন স্পট্ডয়তি। জব্যোগলন্ধি স্থানস্য নেত্রগোলকাদে:। জ্ব্যেক্ষায়াং ক্লপাদি দর্শনে কাচ ক্ষমলাদিদোবেশ যদা অযোগ্যতা ভবতি তদৈব চকুব ইক্সিয়াপাযোগ্যতা। অনয়োঃ স্থানচকুবোর্যদাহযোগ্যতা তদৈব প্রষ্টু জীবিদ্য ক্রষ্টু ছাব্যোগ্যতা। এবং স্থল দেহ বৈকল্যে বিক্সা কৈবলাং তদেব জীবস্য মরণং ন স্থত ইত্যর্থ:। কচিদেকল্লোকোহধিকঃ পঠ্যতে তত্ত্বার্যমর্থ:। ক্রব্যোপলন্ধিস্থানস্য স্থল শরীবস্য প্রব্যোক্ষায়াং যদাহযোগ্যতা তদা তৎ পঞ্চং মরণং ইদ্যেবাহ্ণমিত্যভিমানেন জ্বাস্য স্থলশ্বীবস্য দর্শনম্ৎপত্তিঃ। অক্ষো গোলক্ষো প্রব্যাব্যবস্য ক্লপাব্যব্যাদেদ্শন্তিনহ্যোগ্যতা। শেষং স্থানং ॥ ৪৫॥

যশ্বান বস্তুতো জীবস্য জন্ম মরণাদি তত্মান্মরণাৎ সংত্রাসো ন কার্য্য: জীবনেচ নকার্পণ্যং দৈন্যং কার্য্যং সংভ্রমণ্ড জীবনপ্রয়য়ে ॥৪॥

क्रममन्दर्धः ।

अर्द्याभनको ि य्थाकः। অন্যো: স্থল স্ক শরীররো:॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

কার্যাং প্রতি যোগ্যতা অন্ত্যের স্থায়্প্রভক্ষে সভি সদ্যএব তম্বনেগ্যাতাদর্শনাৎ আবির্জাবঃ প্রকটীভাবস্ত সম্ভবো আন সচ ভোগায়তনদেহবিগমে ছুলান্তর প্রাপ্তেম গর্ডায়িক্রমণ সময়ে ভবেৎ ॥ ৪৪ ॥

মৃত্যু জন্মনো লক্ষণং পূন: স্পষ্টমাহ জবোতি। জবাণাত দৃষ্টান্ত দৃষ্টান্ত দৃষ্টান্ত মন্ত্ৰাকন্থান্তৰ বন্ধমাত্ৰাণ্ডান্ত তানিচ্য যদ্যপি লিক্ষদেহেনৈবাপলভাৱে ভদুপি প্ৰব্যোগলাক হানস্য স্থলগরীরস্য ভদুরবে সভি প্রব্যোগলার বং প্রব্যোগলার হানস্থ স্থান্ত ভদুরবে স্ক্রেলেইজাপি প্রব্যোপলকারবোগ্যভা ভদের জীবজ্ঞ মরণং ন বভ ইত্যর্থ:। জ্বহং মানাং ইদমেনাহানিতি স্থান্তরেহভিমানপ্রবেশাতৃংপত্তি র্জম। প্রব্যুক্ত মর্ত্তাক্র দর্শনং দর্শনহেত্রিভার্থ:। জ্বর দৃষ্টাব্রো বংগা। আক্ষানেত্রিভার্যান্তরেহালিকরে কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রাক্র কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রাক্র কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রাক্র কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রাক্র কর্মান্ত্রাক্র কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রাক্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রাক্র কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রাক্র কর্মান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রান্ত্রিভার্যান্ত্রান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্র নিভার্যান্ত্র করিল ক্রান্ত্রান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্রিভার্যান্ত্র করেল করিল ক্রিল্যান্ত্র করেল করেল ক্রিল্যান্ত্র করেল করেল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল্যান্ত্র করেল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল ক্রান্ত্র করিল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল ক্রিল্যান্ত্র করিল ক্রিল ক্

যত্মাদাত্মনোবস্ততো নান্তি জন্ম মরণাদি তত্মাদিতি ॥ ৪৬°॥

कार्दा अत्यानाजा इत्या जीत्तत मतन अवः अ इरेशात त्य आविष्ठाव जाहार जीत्तत जमा । 88 ।

অথবা দ্রব্যের উপলব্ধি স্থান স্বরূপ যে এই স্থুল শরীর, ইহার যখন দ্রব্য দর্শনে অযোগ্যতা হয় তথন জীবের মরণ হইল এমত বলা যায়, আর "এই আমি" এই রূপ অভিমানে যখন স্থুল শরীরের দর্শন হয় তথনই জীবের উৎপত্তি হইল বলা যাইতে পারে। ফলতঃ যেমন দ্রব্যোপলব্ধি স্থান যে নেত্রগোলকাদি তাহার যথন কাচ কামলাদি দোষ বলতঃ রূপ দর্শনে অসামর্থ্য হয় তথনই চক্ষ্রব্রের অযোগ্যতা এবং দ্রক্তী জীবেরও দ্রক্তি বিষয়ে অক্ষরতা হয়। এই রূপ স্থুল শরীরের বৈকল্য হইলেই জিল্পারীরেরও বিকল্তা হয়, তাহাই জীবের মরণ জানিবেন ॥ ৪৫.॥

অতএব বদি বস্তুতঃ জীবের জন্ম মরণ না হইল তবে মৃত্যু ইইতে সংজ্ঞাস এবং জীবনৈ দৈক তথা জীবনার্থ যত্ন করা অনুচিত। মা! ধীর ব্যক্তি জীবের এই প্রকার স্বতি অবপত হইয়া অসৎ সঙ্গ পরিত্যাগ পূর্বক ক্ষিতিতলে প্র্যুটন করিবেন ॥ ৪৬ ॥

সম্যাদর্শনয়া বুদ্ধ্যা খোগবৈরাগ্যযুক্তয়া। মায়াবিরচিতে লোকে চরেল্য কলেবরং ॥ ৪৭ ॥ ॥ 🗱 ॥ देखि श्री जागरेल महाभूतात भातमहः नाः मः हिलामाः विमानिकाः जृजीमका काभि-লেয়ে জীবগভিরেকত্রিংশোহধ্যায়: ॥ 🕸 ॥ ৩১ ॥ 🕸 ॥

শ্ৰীভগৰামুবাচ॥

অথ যো গৃহমেধীয়ান্ ধর্মানেবাবসন্ গৃহে। কামমর্থঞ ধর্মান্ স্থান্ দোঝি ভূয়: পিপর্তি তান্॥ ১ সচাপি ভগবদ্ধাৎ কামমূল: পরাধাধঃ। যজতে ক্রভুভি দুর্বনান্ পিতৃংশ্চ শ্রদ্ধাধিতঃ ॥ ২ ॥

औरत्रश्राप्ती ।

ৰহু স্ৰ্থা মৃক্তদ্পতে কথা জীবিত্মত আহ স্মাক্পণাতি বিচারবভীতি স্মাক্দৰ্শনা ভ্রাবৃদ্ধা মারা**বি**রচিতে লোকে কলেবরং নাস্ত নিক্ষিপ্য তত্মিশ্লাসকিং তাক্তা চরেদিতার্থ:॥ ৪৭ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি ভৃতীয়ে একজিংশ: ॥ 🛊 ॥

ছাত্রিংশে সাবিকী ধর্মৈর্দ্ধা গতিক্দীর্যাতে। তত্তজানবিহীনতা তত্ত পুনরাগতি:॥ • ॥ দোহ্মাহ কামমর্থ তান্ হ্থান্ ধর্মান্ প্নঃ পিপর্ত্তি প্রয়তি অহতিষ্ঠি ॥ ১ ॥

সোহপি ভগবদারাধন রূপাদ্ধাং পরাযুগঃ সন্ প্রাক্তানপি দেবান্ পিতৃংশ্চ যলতে ॥ ২ ॥

' क्रमनसर्छः।

॥ *॥ ইতি শ্রীমন্তাগবতে ভৃতীনন্তমে শ্রীকীবগোম্বামি কৃতক্রমসন্ত্রত এক বিংশোৎধ্যান: সমাধ্য: ॥ *॥ धर्मान् (शाखानीहान् कृक्षखानीवः कलः (पाक्षि धर्मान्। वानि जि कि पिठः ॥ > ॥

স্চাপীতি চশক উক্ত সমুক্তবার্থঃ। বধা প্রেরাক্তঃ পাপকর্মা ভগবছরাং পরাধ্বঃ তথাস চেতার্থঃ। অপীতি। यनाणि दिनिकक्षी उथाली गुर्थः। नर्सकामनान्ति उषाः जगवक्षाः भवाग्रुथः उथा उनना नत्थाः । कारमन महः विद्वक्दिश्चः ॥ २॥ ७॥

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ক্ষেবরং ন্যন্ত ভত্তাসকিং ভ্যক্ত্রা॥ ৪৭॥

॥ 🕏 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং ছবিণ্যাং ভক্তচে চৃদাং। তৃতীয় একতিংশোহ্মং দক্ষতঃ দক্ষতঃ নতাং ॥ 🔸 ॥ ষাজিংশেভু স্কামানাং নিকামাণাঞ্ কৰিবাং। প্নবাব্তানাব্তী প্রোচ্যাভকারিনিশ্চ॥ • ॥

তদেৰখৰিহিত্ত পাপ্ৰা কৰ্মণো গতিমুক্। বিহিত্সা কাম্যক্মণো গতিমাহ অংগতি। গৃহএৰ পৃহমেৰ আবসন্ধ্মান্ দোঝি। দোভবাহ কামমর্থক ধর্মাংক্তেড়ি। ভ্রঃ পুনরপি তান ধর্মান, পিপর্তি প্ররতাত্তিভতি। যণা গালচার্মিরা ছ্য়ানি লোক্তি পুনর্ণি হ্র প্রাধ্যাশরা তাল্ডারয়তীতি॥ ১॥ বিহিত্ত্বপাদৌ নিল্য এবাধিকারীতাহে স্চাপীতি॥ ২॥

এবং সম্যক্ বিচারকারিণী ও যোগবৈরাগ্যযুক্তা বৃদ্ধি দারা আপনার কলেবর সায়ারচিত এই लाएक निक्कि क्रवे व्यथार प्रहामिक ग्रा इहेशा विष्त्र कित्र विष्त्र ॥ ४९ ॥

॥ 🗰 ॥ ইতি তৃতীয়ে একতিংশ ॥ 🕸 ॥

দাত্রিংশদর্থ্যায়ে সান্ধিক ধর্ম শার। উন্ধলোকে গতি ও তত্ত্ত্তান বিহীন ব্যক্তির পুনরাবৃত্তি বর্ণন ॥० खगवान् किन किहालन मा। त्व वाकि गृशकारम वान कतिया काम अवः वर्थ इंटेर खीय धर्म (माहन পृक्षक शूनकीत (म मकलरक शतिशूर्ग करत ॥ > ॥

দে ব্যক্তি কামবিষ্ট ও ভগবানের আরাধনারূপ ধর্মে পরাঘুণ, দে শ্রদ্ধান্থিত হইয়া বিবিধ যজ ষারা প্রাকৃত দেবতা ও পিতৃগণের অর্চনায় রত হয়॥ ২॥

তেনৈব সাক্ষম্ভং পুরুষং পুরাণং ব্রদ্ধ প্রধানমুপ্যান্ত্যগতাভিমানাঃ॥ ৯॥
তাথ তং সর্বস্থানাং হৃৎপদ্মেষু ক্তালয়ং। ক্রুতামুভাবং শরণং ব্রহ্ম ভাবেন ভাবিনি॥ ১০॥
তাদ্যং স্থিরচরাণাং যো বেদগর্ত্তঃ সহর্ষিভিঃ। যোগেশ্বরঃ কুমারাদ্যৈঃ সিদৈর্যোগপ্রবর্ত্তকৈঃ।
তেদদৃষ্ট্যাভিমানেন নিঃসঙ্গোপি কর্মাণা। কর্তৃত্বাৎ সগুণং ব্রহ্ম পুরুষর্যভং।

अध्वयामी।

প্রবিশন্তি পরং পদমিতি॥ ১॥

ভগৰছপাসকান্ত সাক্ষাদেব তং প্রাপ্ন বৃদ্ধি নতু ক্রমেণ অতত্বং সাক্ষান্তমেব ভজেত্যাহ। অথ তন্ধান্তাবেন প্রেম্ন। ১০ ॥
এবং ভাৰত্তপবস্তকানাং নিরস্তরমেব তৎপ্রাপ্তি উপবদভেদেন হিরণাগর্জোপাসকানাং তু ক্রমেণেত্যকং। ভেদেনোপামনেত্র
ক্রমাদয়োহপ্যাবর্ত্তকে কিম্তান্য ইত্যাহ আদ্য ইতি চতুর্ভি: যো বেদগর্জঃ সোহপি গুণব্যতিক্রে জাতে যথা পূর্বং ব্রহ্মপদাধিক্রতঃ সন্প্রক্রায়তে ন কেবলং সএব একঃ কিন্তু ঋষিভিম্রীচ্যাদিভি র্বোগেশ্বরাদিভিশ্চ সহ জন্মনি হেতুদ্বয়ং ভেদদৃষ্ট্য অভিমানেন
কর্ত্ত্বাদিভিচ। যথা পূর্বত্বে হেতুঃ নিঃসঙ্গেন নিজামেণ কর্ম্বণেতি কিং ক্রত্বা প্রজায়তে প্রথমং পারমেষ্ট্যমেশ্ব্যাং নিষেধ্য পশ্চাৎ

क्रममन्दः।

অথেতি। ভাবেন যেবামহং প্রিয় আয়া স্থতশ্চেত্যক্তবীতা। প্রিয়বাদ্যতিমানৈকতমেন। তঞাপি প্রাপ্তত্যা স্বতভাবে নৈবেত্যাহ। ভাবিনীতি॥১৭॥

আদ্য ইতি চতুকং। ভেদদৃষ্ঠা প্রমেশরান্তিরত্বেন হির্ণাগর্জদৃষ্টা। তথা হির্ণাগর্জ এবাহমন্দীতাভি্যানেন চ যৎ কর্ত্বং উপাসকত্বং তত্মাদিতার্থ:। উপাসনাহি ক্যুরহিতা। নমু বলবং ক্যান্তরমন্যথা জনান্তরং প্রাপরত্ব তত্তাহি নিংস্-

श्रीवित्रनाथठकवर्षी।

সর্গে তেবামপি সর্গো ভাবীতি ভাব: ॥ ৯ ॥

অথেতি বশ্বান্তক্তিং বিনা ন কেংগি নিন্তর্জ্ঞাতত্বং তমেব ভগবত্তং শ্বাধন হৈ ভাবিনি মন্নি প্রমেশবে পুঞ্ভাববতীতি-ত্বি ভক্তাপদেশং শিষ্টপেষরূপ এবেতি ভাবঃ ॥ ১ • ॥

নহ বন্ধা মৃক্তো ভবেদণত শভক্তাঝোচনিত্ব নেই ইতি কথং প্রতীম ন্তন্ত মানের বে প্রপদ্যন্তে মান্নমেতাং তরবি তে ইতি ভগবৎ প্রেতিজ্ঞা ক্রতে ভক্তিং বিনা বন্ধাপি গংসরতি কে প্নরন্যে বরাকা ইত্যাহ। আদ্যা দ্বিন্চরাণাং স্ট্রমাৎ কারণর্গোছিপি বেদ গার্ত্ত সর্বাধেকিবিদিপি শ্বিভি ম রীচ্যাদিভিরণি সহ যোগিভিঃ সাধকৈঃ সহেতি কিং বক্তবাং যোগেশবৈঃ সিইদ্ধরণি সহ। ভেদ দৃষ্ট্যা যথা কৃত্তঃ সংহরতি বিষ্ণুং পালয়তি তথাহমপি বন্ধা স্ভামীতি ভগবতঃ সকাশান্তেদ দৃষ্ট্যা যোহভিমান স্তেন যং কর্ত্ত্বং তত্মাৎ স্তাণ কল্যাণগুণমরং ব্রন্ধ মহৎপ্রটারং কালে মহাপ্রলয়কালে প্রবিশ্য প্নঃ কালেন গুণব্যতিকরে মহত্তবাদে লাতে সতি যথা পূর্বং প্রভামতে ব্রন্ধা ভবতীত্যর্থঃ। তেছপি তৎসদিনো মহর্যাদযোগি কর্ম্ব জ্ঞান যোগাদি বিনিশ্তিমণিমান্যেশাই যোগিকং পূর্ব্ব মহাকর্মব নিবেয় প্নম্হাক্র্যারতে আ্বান্তি আবর্ততে নতু যোগেশ্বগাণং সনৎকুমারাদীনাং চ সিদ্ধানামন্যেশাই যোগ

সর্বোৎকৃষ্ট পুরাণ পুরুষ অক্ষকে প্রাপ্ত হয়েন, যে হেতু তখনও ড়াঁহাদের অভিমান বর্ত্তমান থাকে ॥৯ কিন্তু বাঁহারা ভগবানের ভক্ত ডাঁহাদের ঐরপ ক্রমে অক্ষপ্রাপ্তি হয় না, ডাঁহারা সাক্ষাৎ এক্ষ্ প্রাপ্ত হয়েন। ক্ষত্রব হে ভাবিনি। সেই ভগবান্ যিনি স্ব্বপ্রাণির হাদের বাস করিতেছেন এবং বাঁহার প্রভাব স্ব্রিক্ত ফ্রেত ইতৈছে, ভক্তিভাবে ডাঁহারই শরণ এইণু কর্মন ॥ ১৭ ॥ .

হে সতি। ভেদদর্শনপূর্বক উপাসনা করিলে ব্রহ্মানি দেবগুণকেও পুনরারত হইতে হয়, ইহাতে জন্যের কথা কি। স্বাদি গুণত্তয়ের ব্যতিকর অর্থাৎ পরস্পার স্বংশ্বেষ হইলে স্থাবর অসমের আদ্য প্রেফা যে বেদগ্র ব্রহ্মা তিনি ও মরীচ্যাদি ঋষিগণ এবং স্নৎকুমারাদি যেগৈশ্বর তথা দিব ও যোগপ্রবর্ত্তকদিগের সহিত নিক্ষাম কর্মবারা গুণাধিষ্ঠাতা ও প্রথমাবতার রূপ ব্রহ্ম প্রাপ্তার শ সংস্ত্য পুন: কালে কালেনেশ্বমূর্তিনা। জাতে গুণব্যতিকরে যথাপুর্বং প্রজায়তে। এই ব্যাং পারমেষ্ঠ্যক তেহপি কর্ম বিনির্মিতং। নিবেব্য পুনরায়ান্তি গুণব্যতিকরে সতি ॥ ১১॥ বেছিহাসক্তমনশঃ কর্মান্ত প্রজানিছাল:। কুর্বস্ত্যপ্রতিসিদ্ধানি,নিত্যান্যপিচ কৃৎস্নশঃ। রজসা কুর্গমনশঃ কামান্ধানোহজিতে ক্রিয়াঃ। পিতৃন্ যজন্ত্যমূদিনং গৃহেম্বভিরন্তর্শয়াঃ॥ ১২॥ বৈর্বিগিকান্তে পুরুষা বিমুখা হরিমেধসঃ। কথায়াং কথনীয়োক্রবিক্রমস্য মধুদ্বিঃ॥ ১০॥

श्रीश्रत कामी।

প্রলবে সপ্তণং প্রণাধিষ্ঠাতারং পুরুষং প্রথমাবভারত্রপং সংস্ত্য প্রাণ্য তেইপি শ্ববিপ্রম্থাঃ শ্বরুদ্ধ নিশ্বিতমৈশ্ব্যং নিবের পুরুষং চ সংস্ত্য যথাপুর্বং শ্বরাধিকারেণ পুনরামান্তীত্যবয়: ॥ ১১ ॥

যদা ব্রেক্ষোপাসকানামপি ভেদদর্শনাভিমানাভ্যাং এবমাবৃত্তিক্তনা কামাক্র্মিণাং কিং বক্তব্যমিতি তালিন্দল্লাহ বড়্তি:। বেছিহ কর্মাখাসক্রমনসং সন্তঃ অপ্রতিধিলানি কাম্যানি নিত্যানিচ কর্মাণি রুৎলানি কুর্কৃত্তি তেহ্গ্যলো দক্ষিণেন পথা ধ্মমার্গেণ পিতৃলোকং বজাতীতি পঞ্চমনাবয়:। মধ্যে তলিন্দা॥ ১২॥

হরতি সংসারং মেধা যস্য কথনীয়া উরবো বিক্রমা যস্য তস্য মধুৰিষ: কথায়া: বিম্পা: সজে৷ যে তৈবর্ণিকা: ॥ ১০ ॥

ক্ষদশর্ড: ১

ব্লেনেতি। তত্ৰাপি কৰ্তৃত্বাদিতি যোজ্যং। কিন্তু ক্ৰিয়ানিস্পাদকত্বং তত্মাদিত্যৰ্থং। তত্ৰ মহৰ্ব্যাদীনাং স্থাটং বিশেষ্য দৰ্শন্থতি। ঐশ্বৰ্য্যং ইতি। পূৰ্ব্ববং কৰ্ম্বণা ধৰ্ম্বেণ যোগেন চ বিনিৰ্ম্বিতং॥১১॥

যেছিতি পঞ্চকং ॥ ১২ ॥ ১৩॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

প্রবর্ত্তকদ্বেন সর্বজ্ঞানিশুরণাঞ্চ কথং ভেদ দৃষ্টিরভিমানো বা সন্তবেং। তাড্যাং স্থিতাভ্যাঞ্চ কথং যোগেশবাদিখং। উচ্যতে। তেখাং নিরভিমানানাং নির্ভেদ ব্রশাস্থ্যকানমন্ত্যের কিন্ত ভেদব্দোসে ভগবত্যপি মায়াশবলিত ব্রন্ধর ব্র্যা মাদিক বন্ধর্বব্রেদ দৃষ্টি গুণা বয়ং ব্রন্ধাস্থতিন: সাকারং রূপং নিষিধাম ইত্যভিমানশ্চ তাভ্যামের দোষাভ্যাং যংকর্জ্বং কর্মাধিকার অমাদার্ত্তি রিত্যেতচ্চ কাচিৎক ব্রন্ধাগুবর্ত্তি ব্রন্ধ ব্রান্ধণ যোগি জ্ঞানি কুমারাদীনামভক্তবাহ্তকং। তদন্ত সর্ব্ব ব্রন্ধাগুবর্তিনাং ব্রন্ধাশীনাং ভেষাক্ত ভিজ্মবাশ্বিতিত প্রেমভক্তি ভগবন্ধান্তাদিভাব প্রাপ্তর্যো যথাবথং ভক্তিব্যত্যাক্ত ক্রেমাঃ ॥১১॥

যত্ত ভক্তাভাবে সতি ব্রহ্মাদীনামপ্যেবমাবৃত্তি তত্ত্ব কাম্য কর্মিণাং কক্সাং লেখায়াং স্থিতিরিতি তান্নিলন্নাহ বড়্ভিঃ যেদিহেতি। অপ্রতিষিকানি কাম্যানি নিত্যান্যণি সর্কাণ্যে কর্মাণি কুর্কৃত্তি তেপি নিশ্যন্তে কিমৃত বিকর্মাণঃ কর্মিণ ইতি ভাবঃ॥ ১২॥

হরতি সংসারং মেধা যদ্য তম্ভ ॥ ১৩॥

ঈশ্বর রূপি কালবশতঃ যেমন পূর্বে ছিলেন ডজপ হইরা পুনর্বার জন্ম গ্রহণ করেন এবং ওাঁহার সমভিব্যাহারী ঐ সকল ঋষিগণও আপন আপন কর্মা নির্মিত ঐশ্বয় ভোগ করিয়া পূর্বের ন্যায় পুনর্বার স্বস্থ অধিকারে আদিয়া থাকেন॥ >> ॥

মা! যথন ব্রেক্ষাপাসকদিগেরও ভেদ দর্শন ও অভিমান বশতঃ ঐরপ আর্তি হয় তথন কাম্য-কর্মকারি ব্যক্তিদিগের পুনরার্ত্তির কথা কি আর বলিতে হয় ? অর্থাৎ যাহারা কর্মে আসক্ত চিত হইরা শ্রেজাপুর্বক কাম্য ও নিত্য কর্ম সকল সম্যক্ রূপে অনুষ্ঠান করিয়া থাকে, অথচ কামাছতা ও অজি-ভেক্তিরতা প্রযুক্ত রক্ষোগুণ প্রভাবে কুঠিতমনাঃ এবং নিরন্তর গৃহাদিতে অনুরক্ত হইয়া গিভ্গণের স্কর্মনা অর্থাৎ প্রাক্ষািক করিয়া পাকে। ১২॥

ध्यर (व मकल शूक्रव (कवल धर्मा, वर्ष, काम धरे खिवर्ग माधनार्थ उरशत, किस्र दि मानावनाधन खगवान् मधुमूनतत समहान् विक्रम मक्निरे कथनीय खाँहात कथात्र विमूथ हम ॥ ১०॥ নূনং দৈবেন বিহতা বে চাচ্যতকথাস্থাং। হিছা শৃণুস্তাসদ্গাথাঃ-পুরীষমিববিড্ভুজঃ॥ ১৪॥
দক্ষিণেন পথার্যদ্ধঃ পিতৃলোকং এজন্তি তে। প্রজামন্ত প্রজায়ন্তে শাশানাস্তক্রিয়াক্তঃ॥ ১৫॥
ততত্তে ক্ষীণস্কৃতাঃ পুনর্লোকমিমং প্রতি। পতন্তি বিবশা দেবৈঃ সদ্যোবিজ্ঞংশিতোদয়াঃ॥ ১৬
তত্মাত্তং দর্কভাবেন ভজস্ব পরমেষ্ঠিনং। তদ্গুণাঞ্জয়য়া ভক্ত্যা ভজনীয় পদাস্কুজং॥ ১৭॥

এধরস্বামী

যে চাচ্যত কথাস্থাং হিশ্বা অসতাং গাথা: শৃণ্স্তি তে নুনং দৈবেন বিহঁতা ইত্যধয়: ॥ ১৪ ॥
পিতৃলোকাৎ পুন: প্রজামস্থ সপ্রাদিষু প্রজায়ন্তে । গন্ধাধানাদায়ন্ত্য শাশানান্তা: ক্রিয়া: ক্রতক্তঃ যথোককারিণ ইত্যর্থ: ॥ ১৫ ॥
কথং প্রজায়ন্তে তদাহ ততত্তে পুনরিমং লোকং প্রতিপত্তি । বিজ্ঞাশিত উদয়ো ভোগসাধনং যেষাং ॥ ১৬ ॥
পরমেষ্টিনং পরমেশ্বরং প্রীত্যা তস্য গুণানাশ্বয়তে যা ভক্তিস্কা॥ ১৭ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

দৈবেনেতি। তেষাং নরকাছদার এব নান্তি ইতি তে ন বর্ণা ইত্যর্থ:। অচ্যুতকথেতি তদন্যাঃ দর্জা এবাদৎকথা ইতি জ্ঞাপিতং। খণ্ডাদিকং হিমা বিড্ভুদ্ধো যথা পুরীষমেবাভিগচ্জুগীত্যর্থ:॥১৪॥

শশানান্তা: ক্রিয়া: রুতবন্ত:। তা লব্বন্ত ইত্যর্থ:॥ ১৫॥ ১৬॥

সর্বভাবেন সর্বাদ্মনা। ভক্তা প্রেয়া। নমু সাকথং ছাত্ততাহ। তদ্যুণা এবাশ্রয়ং প্রবৃত্তিহেতুর্বভা:। আছো বকী যমি ত্যাদি রীত্যা তদমুসন্ধানে ক্তে সা প্রবর্ত্তত এবেতি ভাব:। ভজনীয় পদামুক্তমিতি তদা তস্য সৌন্দ্য্যাদিকমপুলে দিতং তত্তু তত্তকাং নিরস্তর্মেব রোচয়িয়ভীতার্থ:। তদেবং তত্ত পুক্ষার্থান্তর্মপি নিরস্তঃ॥১৭॥

একিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

অচ্যুত কথৈব স্থা তাং ত্যক্তে তদন্যাঃ সর্বা এবাসদাগাং। নমু স্থাং প্রাপ্য কে নোপভূপতে তত্তাহ পুরীষ্মিবেতি কীরথগুদিকং ত্যক্তা বিজ্ভুলো হি পুরীষ্মেবাষেষ্যন্তীত্যুৰ্থ: ॥ ১৪ ॥

পিত্লোকাং প্ন: প্রজামন্থ স্থাদিব্ প্রজায়তে গর্ডাধানাদারভা শশানাতাঃ ক্রিয়া: ক্তবতঃ শাস্ত্রোক্ত কর্মকারিণ ইত্যর্থ: ॥ ১৫ ॥

কথং প্রজারন্তে তত্তাহ ততন্তে পুন: ইমং লোকং প্রতিপতন্তি। উদয়ো ভোগসাধনং ॥ ১৬॥

নিবৃত্ত কর্ম পরাণামতে যথা অথ তমিতাত্র শ্রুতাহং শরণং ব্রজভাবেন ভাবিনীত্যাহ আ তথৈব প্রবৃত্তকর্মপরাণামতে ২প্যাহ তআগ্রমিতি।তেন অং নিবৃত্তং প্রবৃত্তং প্রবৃত্তং কর্ম মাকুর্বিতি ভাব:। সর্বভাবেন সর্বাত্মনা হরিং ভক্ত্যা ভলস্ব। নহু দৈব

অপর, যাহারা ভগবান অচ্যুতের কথামুত পরিত্যাগ করিয়া বিষ্ঠাভোজী শূকর যেমন ক্ষীরথণ্ড পরিত্যাগ করিয়া পুরীবাহার নিমিত্ত অসুরাগী হয় তাহার ন্যায় যাহারা অসৎ সকলের গাথা প্রবণ করে, তাহাছিকে নিশ্চয় দৈব কর্তৃক বিহত জানিবেম॥ ১৪॥

তাহার। সূর্য্যের দক্ষিণ পথ দিয়া অর্থাৎ ধূমবর্জু ছারা পিত্লোকে গমন করে, পরে তথা হইতে প্রত্যাত্ত্ত হইয়া স্বস্থ পুলাদিতে উৎপদ্ম হয় এবং পুনর্বার গর্ডাধানাদি স্মশানান্ত ক্রিয়া যথাশাস্ত্রোক্ত প্রকারে করিয়া থাকে ॥ ১৫ ॥

মা। ঐ সকল ব্যক্তি পিতৃলোক হইতে পতিত হইয়া কেন জন্ম গ্রহণ করে শুনিবেন ? তাহাদের স্কৃতি সকল কালক্রমে ক্ষীণ হইয়া যায়, ভোগের সাধন বিনষ্ট ক্রয়ান্তে দৈব বশতঃ বিবশ হইয়া পুনর্বার এই লোকে পতিত হয়॥ ১৬॥

অতএব, আপনি সর্বাস্তঃকরণে এবং যে ভক্তি ভগবানের ওণকে আঞায় করিয়াছে সেই ভক্তি-

বাস্থাদেবে ভগবতি ভক্তিযোগঃ প্রমোজিতঃ। জনয়ত্যাশু বৈরাগ্যং জ্ঞানং যদুক্ষ দর্শনং ॥ ১৮॥
যদাস্য চিত্তমর্থেরু সমেদ্বিক্রের্তিভিঃ। নবিগৃহ্লাতি বৈষম্যং প্রিয়মপ্রিমিজ্যত॥ ১৯॥
স তদৈবাত্মনাত্মানং নিঃসঙ্গং সমদর্শনং। হেয়োপাদেয়রহিত্সার্জং পদমীক্ষতে॥ ২০॥
জ্ঞানমাত্রং পরং ত্রের্কা পরমাত্মেশ্বরঃ পুমান্। শ্লুগ্যাদিভিঃ পৃথগ্ভাবৈ র্জগবানেক ঈয়তে॥২১॥

धिधतश्री।

ভদ্ধনেচ জ্ঞানবৈদ্বাগ্যে স্বতএব ভবত ইত্যাহ বা**স্থ**দেব ইতি ॥ ১৮ ॥

তদেবোপপাদয়তি দ্বাস্য ভক্তন্য চিত্তং ভগবন্ধা গুলাহাগেণ, তক্সিন্ধের নিশ্বনং সং ইক্সিব্ডিভিটেব্যামর্থের নগৃহ্বাতি ॥ ১৯ ॥ তদ্ববাহানায়ানং স্বপ্রকাশমীক্ষতে। কথন্ত হং সমঞ্চ তদ্বনিঞ্চ,তৎকুতঃ নিঃসঙ্গং সঙ্গান্ধি বৈব্যাং ভবতি। নিঃসঙ্গন্ধে হৈছুং হেলোপাদেশবৃহ্নিত হন তৎকুতঃ পদং ব্যবস্থিতং আরু চুং প্রমানন্ধাহ্যমিতি ইনশ্বনং প্রাপ্তিমিতার্থঃ ॥ ২০ ॥

সমেলথেলিভুকেং তদেব সামাংদৰ্শয়তি।জ্ঞানমাত্রমেব পরং এক্ষাদি শকৈঃ প্রসিদ্ধং দৃশ্যাদিভিঃ দৃশ্য ডেইকবণরূপেণ পুথক্

ক্রমঙ্গদর্ভঃ।

জ্ঞানাদীচ্ছুরপি তামেব কুর্যাদিত্যাহ বাস্থদেব ইতি ॥ ১৮ ॥

তচ্চাপি চিত্তবড়িশং শনকৈ বির্গুভূক্ত ইতি ভাষেন টীকা সঙ্গমনীয়া॥ ১৯॥ ২০॥

তথৈব যোজয়তি। জ্ঞানমাত্রমিতি। দৃশিজ্ঞানং ভাবোভাবনা পৃথক্ পৃথপ্ ভাবনৈজ্ঞানযোগাদিভিবেক এব ভগবান্ পব

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

কথং ভাতেরহে তদাুণা এবাশ্রং প্রেভি হেতুর্স্যান্ত্রা ভল্নীয়ং ভল্নাহমিতি অধুলংখনুকলৈ মধ্রতায়ন রোচতে ইতি ভাবং॥১৭॥

জ্ঞানাদীচ্চুরপি ভক্তিমেব কুর্য্যাদিত্যাহ বাশ্বিতি। ত্রহ্মদর্শনং ব্রহ্মাত্মভব: ॥ ১৮ ॥

ন্মু ভক্তিজন্যে জ্ঞান বৈরাগ্যে কেন লক্ষণেন জ্ঞাতব্যে ইত্যপেক্ষায়ামাহ। যদাস্য ভক্তিমতশ্বিং ভগবদ্ধ্যান্ত্ৰাগেণ তি আছেব নিশ্চলং স্থ ইক্সিয়ে বৃত্তিভিঃ সমেষু অর্থেষু প্রাক্তিয়ু দৃশ্য প্রব্যা স্পৃশ্যাদি বস্তমু ইক্সিয় গ্রাহ্মখাংশেন বস্তম্বন্যখিপ ইনং নে প্রিয়ং প্রব্যাদি ইনমপ্রিয়ং প্রব্যাদীতি বৈষ্ম্যং ন গৃহাতি নিক্ষাস্বত্যাদিষু লোইক্ষাফনাদিষ্চ সমভাবনং ন্যাদিত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

তথৈব আয়ানামব্রা। আয়ানং ধীয় জীবং নিঃসক্রাণিতি হেজ্ভি: পদং একামরণং আর্চমার্চপ্রায়ং উক্তে অনুভ্রতি॥ ২০ ॥

এবক ভক্তিযোগাধ্যায়োক্তং পশাস্তি তে মে ক্রিরাণ্যেয়ে গানিতি ভক্তিকলং ভগবন্ধানি প্রেমবৎ পর্যিদরং। তথা জ্ঞান যোগাধ্যায়োক্তং নিংশ্রেষদং স্বসংস্থানং কৈবলাথাং মদাশ্রমিত্যাদিনা জ্ঞানকলং ব্রেশ্বকা তথাপ্রাদ্যোগাধ্যায়োক্তং মুকাশ্রম্থ বহি নির্বিষয়ং বিরক্তথ নির্বাণ্যক্তিতীত্যাদিভি ব্যোগ্যক্ষমপি জ্ঞানবৈরাণ্যাত্যাং মোক্ষমেব সাংশ্রেষ্ঠ ত্রাত্মিত্যাদিনা বাহ্ যোগ সহকারে পর্মেশ্ব হ্রির আরোধনায় প্রকৃত্ত ত্তিন, তাঁহার পদাস্ক্ত ভজনীয় ॥ ১৭ ॥

না! ভাঁহার উপাদনা করিলে আপনার জ্ঞান ও বৈরাগ্যের নিমিত্ত বিশেষ প্রয়াদ পাইতে হইবে-না, ভগবান্ বাহ্ণদেবে ঐ ভক্তিষোগ দমর্পিত হইলে তাহা আশু বৈরাগ্য ও একা দাকাৎকারক জ্ঞান জ্বাহিয়া দেয় ॥ ১৮ ॥

মা। ভক্তের চিত্ত ভগবানের গুণামুরাগ ধারা যথন তাঁহাতেই নিশ্চল হইয়া সমান ইক্রিয় গ্রাহ বিষয়েতেও প্রিয় ও অপ্রিয় এই রূপ ভেদজান পূর্বক বৈষম্য গ্রহণ না করে॥ ১৯॥

তথনই সেই ভক্ত আত্মৰারা স্বপ্রকাশ আত্মাকে এই রূপ অবলোকন করেন যে ইনি নিঃসঙ্গ এক ছেয় ও উপালেয় শূন্যতা প্রযুক্ত সর্বতি সমান ও জ্ঞান অরূপ হইয়া "আমিই পরমানল" ইত্যা-

কার নিশ্চয় প্রাপ্ত হয়েন॥ ২০॥

মা ! জ্ঞানমাত্র স্বরূপ ভগবানই পরিত্রকা পরমাক্ষা, পরমেশ্বর এবং পরমপুরুষ ইভাগি শব্বে

,

এতাবানের যোগেন সমগ্রেণেছ যোগিন:। যুক্তাতেহভিমতে। ছর্থো যদসঙ্গস্ত কুৎমুশঃ॥ ২২॥

धिशतयामा ।

প্রতীয়তে জ্ঞানমাত্রত্বেন সমেবিতার্থ: ॥ ২১ ॥

নম্ জ্ঞানমাত্রমাত্মন: স্বরূপতাৎ নিত্যপ্রাপ্তমেবেতি কিমনেন সাধন সাধ্যেন যোগেন প্রাণ্যতে তদাহ এতাবানিতি। যুক্তাতে প্রাণ্যতে প্রপঞ্চসঙ্গর্দাস এব যোগফলমিতার্থ: ॥ ৪২ ॥

क्रमम्बर्धः।

ব্রন্ধাদিরপ ঈরতে ইতি ভগবত এবাংশিত্বমারাতং। ব্যাখ্যান্তরেতৃ মাত্রপদেনৈব বিবক্ষিতিসিদ্ধেরেরপদস্যোপাদানং পৃংস্ক না যুক্তং ল্যাং। তত্র জ্ঞানযোগেন পরব্রদেরতে । অষ্টাঙ্গবোগবিশেষেণ পরমাত্মা। শুদ্ধরা ভক্ত্যা তুত্বরং ভগবানেবেতি বিবেচনীরং তত্র চ ব্রহ্মণো লক্ষণং জ্ঞানমাত্রমিতি। পরমাত্মা ঈশবং পুমান্ ইতি প্রকৃতেঃ পরস্তদাদান্তর্যামী পুরুষ ইত্যর্থঃ। ভগবতন্ত্র ভগবানেবেতি। পূর্ণ যড়েখর্যাযুক্ত মহাবৈক্ঠনাথঃ। ভদেতদনস্ক তদাবিভাবস্যাপ্যপ্লকণং জ্ঞেরং॥ ২১॥

তত্র দর্মত মৃশং ভক্তিরেব জ্ঞানাদি যোগেন তু প্রেপঞ্চ ব্যুদাস্মাত্মিত্যাহ। এতাবানিতি॥ ২২॥

জীবিশনাপচক্রবর্ত্তী।

ইত্যাদিনা চ তবং সর্বাং ভক্তি জ্ঞান যোগফলং কেবলদ্বৈৰ ভক্তা। সিদ্ধাতীত্যুচ্যতে। অকামঃ সর্বাকামে বা মোককাম উদারধীঃ। তীবেণ ভক্তিযোগেন বজেত পুৰুষং পরমিত্যক্ত । বংৰুশতি ব্রপদেত্যাদৌ সর্বাং মন্ত্রজিযোগেন মন্ত্রকা লভতেই জ্ঞা। স্বাপিবর্গং মদ্ধাম কথিদিশ্বদি বাহুতীতি বক্ষ্যতেচ তক্র কা যুক্তিরিত্যপৈক্ষামাহ জ্ঞানমাত্রমিতি। একোভগবান্ বভৈষ্য্য পূর্ণঃ বৈকুঠনাথ এব দৃশ্যাদিভি দৃশি জ্ঞানং তদাদিভিঃ সাধনৈঃ পৃথগ্ ভাবিঃ পৃথগ্ ভাবনাযন্তিরুপাসকৈঃ পরং ব্রহ্মাদিরপ ক্ষরতে ক্ষর্যত ইতি চ পঠিঃ ব্রা দৃশ্যাং স্বর্গেঃ অনুশাঃ স্বর্গেঃ দৃশ্যাদৃশৈ। করু পরব্রহ্মণো লক্ষণ আনমাত্রমিতি পরমাত্রনো লক্ষণমীখরঃ প্রানিতি তেন ভগবতএব ব্রহ্মাং পরমাত্রহাচ্চ ভগবং সাধন ভূত্রা ভইক্তাব স্থাধাং প্রেমবং পার্ধদন্ধং জ্ঞানযোগ সাধ্যঃ সায়্ত্রজ্ঞ সিদ্ধাতি ন চ তথা ব্রহ্ম সাধনেন জ্ঞানেন পরমাত্র্যাদিদৃশ্যং। কেচিং। স্বদেহান্তর্স ক্ষরাব্দাদ্শাং স্বর্গং বৃহত্ত বিষ্ণাদিনা সহস্রাণীধা পুরুষ ইত্যাদি প্রত্যা ক্ষরাবিদ্দৃশ্যং। কেচিং। স্বদেহান্তর্স বন্ধাব্দাদ্শাক্ষ ভাবন্ধ ক্ষর্যাদ্শাক্ষ । বহুকঃ বিষ্ণাপ্রাণে প্রথমেংশে। প্রান্ধত বন্ধ স্বর্গাদ্শাক্ষ ভাবন্ধ স্বর্গাদ্শাক্ষ। বহুকঃ বিষণাপ্রাণে প্রথমেংশে। প্রান্ধত বন্ধ স্বর্গাদ্ স্থান মন্ত্রমং। তত্রাব্যক্ত স্বর্গাহেনী ব্যক্তরপো জ্বাংপতিঃ। বিষ্ণু বন্ধ স্বরূপে স্বর্গাবে ব্যবহিত ইতি। অস্তার্থং অনুব্রনং নির্ভাং তত্র প্রাকৃতে অব্যক্ত স্বর্গাপ্রেনাপ্রাক্ষ হানে ব্যক্তরপ ইতি॥ ২১॥

অয়াণামেবোপাসকানাং কমপি সাধারণং ধর্ম ফল সাধকমাহ এতাবানেবেতি। যোগেন ভব্ত্যাধ্যেন জ্ঞানাধ্যেন যোগাধ্যেন চ। যোগিনো ভব্তন্য জ্ঞানিনো হষ্টাঙ্গ যোগিনশ্চ যং ক্লংমশোহসঙ্গঃ ইন্দ্রিয়ার্থেবনাসজ্জিরেতাবানেব অভিমত্তার্থ সাধকত্বাৎ অভি-মতোহর্ধ প্রযুক্তাতে যুক্ত উ্চিতো ভবতীতার্থ:। ক্লংমশোহনাসক্তৈয়ৰ স্বাভিমতং বস্তু প্রেমা মোক্ষো বা লভ্যত ইত্যর্থ:॥ ২২॥

প্রদিদ্ধ। তিনি এক হইয়াও জ্ঞান মাত্রত্বরূপে সমান পদার্থেও দুশ্বাদি পৃথক্ ভাবে অর্থাৎ দৃশ্য ক্রতী। ও করণরূপে পৃথক্ প্রতীয়মান হন॥ ২১॥

হে মানবি। জ্ঞানমাত্র আত্মার প্রতি এমত আশস্কা করিবেন না যে, তাহা ত নিত্য প্রাপ্ত আহে, তবে এই সাধ্য সাধন যোগ ধারা আর কি প্রাপ্য হইবে, মা। সমগ্র বোগ ধারা যে সম্পূর্ণক্লপে অসুস্থ আত্মার প্রাপ্তি, ইহাই যোগির অভিনত অর্থ, অর্ধাৎ প্রপঞ্চ সন্ধ নির্ভিই যোগের ফল। ২২।

জানমেকং পরাচীনৈরিজ্ঞিদ্রৈ ও ক্ষানিগুণিং। অবভাত্যর্থরূপেন জ্রান্ত্যা শব্দাদিশর্মণা ॥ ২০॥

शिशतयामी।

নম কথং প্রত্যক্ষাদি প্রতীতঃ প্রণঞ্চো ব্যাদসিত্ং শকাতে প্রতীতে প্রাধিত্যাহ জ্ঞানমিতি পরাচীলৈঃ পরাষ্ট্র:। শকাদি-ধর্মো যস্য তেনার্থ রূপেণ জ্ঞানরূপং নিশুপং ব্রৈয়বাবভাতি নত্ত্বং শ্রুগেন্তীভার্থ: ॥ ২৩॥

ক্রমসমর্ভ:

নহ বন্ধণো জ্ঞানমাত্রতেইপি নিতা তদাশ্রষক্ষা প্রপঞ্জা জ্ঞানমাত্রেণ কথং বৃদাসং স্যাং। সতি চ তদ্মিন্ জগবজারাং কথং ন স্যাং। উচাতে। উভয়স্য তদাশ্রমক্ষেইপি ভগবরায়া নিভামের স্বরূপক্তি সিদ্ধাই স্বরূপবদেরায়ারামাণাং পুরুষাইছাক ন বৃদাসং কর্ত্বং শক্যতে কর্ত্মিরাতে বা। ব্রহ্ম চ জীবানাং শক্ষোচরএর নত্ত্মবংগাচরং ত্রেপনিরদং পুরুষং পৃদ্ধানীতি শ্রতে:। শার্রেযানিত্রাদিতি ন্যায়াচ্চ। তত্র তৎ ক্ষিয়ায় প্রপঞ্জস্য সম্বন্ধ শক্ষেত্র বৃদ্ধান্ত এক্ষেবাহিতীয়ং রক্ষেত্যাদিনা ধায়া বেন সদেতাদিনাচ। অভন্তর জীবানাং তর্কপ্রামানা কিঞ্চিৎকরং। জীবস্বরূপং চিদ্বন্ধে তৃ জীবে র্জার্মানি দিদ্যভূমতে। জার্রুংস্থানাচ। অভন্তর জীবানাং তর্কপ্রামানা ক্ষিৎকরং। জীবস্বরূপং কিছ্মের প্রামানাদিদ্যভূমতে। জার্রুংস্থানা রক্ষালায় প্রকাশক্ষেন স্বরূপ্তি তৃ স্বর্মের ক্রুজ্বণার বৃদ্ধান্তাদি প্রতিস্কান্ধিরত। তদেবং সতি শরীর হ্রামদং চিজ্জাত্মক্ষেন যক্ষীবানাং ভাসতে তত্র চিদংশোহয়ং জড়াং পৃথবিভাতীতাভিপ্রেত্য তথের বিভাবনতি জ্ঞান্মিতি রাজ্যাং। একং গুদ্ধ যত এব নিগুণং জ্ঞানং চিজ্ঞাং জীবস্বরূপং স্ব্যাস্থানীর্সা ব্রহ্মণা রাম্মি প্রমাণু স্থানীয়ত্বন ব্রহ্মাভিয়ং সং। প্রাচীনৈত্বং প্রাল্গ্রিক্রিরের বা ব্রাম্বি স্তরের শক্ষাদি ধর্ষণা শরীরগত ব্যোমানার্থ ক্রেপোবভাতি তত্তাদান্ম্যাপরত্বন প্রতীয়তে তত্মান্তম্বান্তায়েবং বিবেকঃ কর্ত্বর ইত্যর্থ:॥২০॥

জীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

নমু ভিজিরশ্ব চিকীর্বিতা প্রতাবগতাচ জ্ঞানযোগাবপাশ্ব জ্ঞ্জাসো প্রতাবগতে । তত্র যদহৈতং জ্ঞানং তর সমাগবগতমতঃ সংক্রেপেণ ক্রহীতাতো বিবর্তবাদিনাং সংমতং জ্ঞানমাহ। জ্ঞানমেকহছৈতং ক্রন্ধ বছরেব পরাচীনে: পরাষ্ঠ্য মারাশক্ত বিশ্রেরিঃ প্রোত্রাদিভিছে তুভি: শব্দাদি ধর্মণা অর্থ রূপেণ শীব্দানাং মৃদলো রূপবতীরং স্ত্রী রুসবিদিনং ক্ষীরং আদিতমিত্যাদি রূপেণ জীবস্য ভ্রান্ত্রা অবভাতি ইন্দ্রিরাণাং সর্বের্যান্ত্র জ্ঞানজেদাভাবাদ্যদেকং জ্ঞানং তদহৈত্বং ব্রহ্মবেত্যার্থ:। নমু তহি প্রমন্ত্রীতবস্ত্রনা মিথ্যাত্বমিব বিশ্বভাস্য মিথ্যাত্বং প্রেস্কর্ত্রনা মিথ্যাত্বমিব বিশ্বভাস্য মিথ্যাত্বং প্রস্কর্ত্র । মৈবং রক্তমিদমিতি প্রতীত্তা ভক্তিবেন প্রতীত্যভাবাৎ ভক্তে রক্তর্ত্রা মিথ্যাত্বমেব। চকুষা রূপমেব পশ্যতীতাত্র তু চক্ত্রক্রণক্ষমেতৎ কর্ভ্রুক্ত ক্লামিতি জ্ঞানমাত্রস্তর বিশেষতা বিশেষতা ক্রিক্র ক্রিরাণাং বিশেষতা ক্রিক্র ভ্রান্তির ক্রিক্রা ক্রিরা স্বান্ত্রা জীবং সাহজিকং জ্ঞানং প্রমন্ত্রির ক্রিরাণা হরির জ্বান্ত্রা ক্রিরা ব্রহ্মবিদ্যালিক্র ক্রিরাণা বিশেষণাদির বিবিধ থাতক্রনেত্রের পিপাসয়া প্রস্তুত্রির ক্রিরার্ত্র মধুর শক্ষত্তির ক্রিরার্ত্র মধুর শক্ষত্তীরং ভগবক্ষর্বলী শ্যামস্ক্র্যবেহির উত্তাদি চিম্বন্ত নির্চেট্র জ্ঞান ভ্রেরা ক্রিরাহির অর্থন ক্রিরাহের মধুর শক্ষত্তীয়ং ভগবক্ষর্বলী শ্যামস্ক্র্যবেহির ইত্যাদি চিম্বন্ত নির্চেট্র জ্ঞান ভ্রেরা লাবিরা । নির্চান ক্রিরাট্রেরানাং তিল্লান্ত্র ত্রিরালাং তাল্লান্ত ক্রিরা ব্রহ্মবাদেহেত্যাছ র্তাগ্রক্তাঃ । ১০ ॥

হে বসুপুদ্ধি। এই প্রাণাধ্যকাদিতে কাই প্রতীত হইতেছে কি দ্ধাপে ইহার নিবৃত্তি হইবে, এমত আগলা করিবেন রা, প্রাণকের যে প্রতীতি হইতেছে ভাষাপ্রাতিমাত্র, এক আনময় নিত প তুমাই বহিম্প ইন্দ্রিয়গণ বারা প্রান্তি বণতঃ শীনাদি যাহার ধর্ম তাদৃশ অর্থক্সে সবভাসমান হয়েব, বস্তুজ্ঞা পুথক সর্থনাত্র নাই ॥ ২০ ॥ যথা মহানহংক্রপজিবিৎ পঞ্চবিধঃ স্বরাই । একাদশ্বিধ ক্তন্য বশুরগুং অগন্যতঃ ॥ ২৪ ॥ এতবৈ আজ্বা ভক্তা যোগাভ্যাদেন নিত্যশঃ। সমাহিতাক্সা নিঃসঙ্গো বিরক্তঃ পরিপশ্যতি ॥ ২৫ ইত্যেতৎ কথিতং গুর্বি জ্ঞানং তদ্ভ ক্ষাদর্শনং। যেনাবব্ধাতে তত্ত্বং প্রকৃতেঃ পুরুষস্যচ ॥ ২৬ ॥ জ্ঞানযোগশ্চ মলিঠো নৈগুণো ভক্তিলক্ষুণঃ। দ্বোরপ্যেক এবার্থো ভগবছ্বলক্ষণঃ॥ ২৭ ॥

श्रीश्वत्यांगी।

অর্থ রূপত্মের উদাস্ত্য দশ্যতি যথেতি। অহং রূপ: অহকার: সচ ত্রিবিং ত্রিগুণাত্মক: প্নশ্চ ভূতরূপেণ পঞ্বিধ: ইঞ্রি-রূপেণ একাদশ্বিধশ্চ অরাট্ জীবরূপ: তস্য জীবস্য বশু: অণ্ড: জগচ যতো বেডা: তথা অবভাতি ॥ ২৪ ॥

নতু তৰ্হি জনঃ কিমেবং ন প্রভ্যেতি তত্তাই এতং বন্ধ ॥ ২৫ ॥

উক্তমেৰাৰ্থং সুধপ্ৰতিপদ্ধাৰ্থং সংক্ষেপেণাস্থৰদতি ইতীতি। হে ওৰ্কি পূজ্যে॥ ২৬॥

জনেন্ট জানবোণেন ভগবানেব প্রাপ্যো যথ। তথা ভক্তিযোগেনেত্যাহ নৈপ্তণ্যো জ্ঞানযোগত মলিটো ভক্তিলকণ্ড

ক্রমসন্দর্ভ:।

তদেবং বিবেকে সতি ব্যষ্টিরপোহয়ং জীবস্তথাবভাতি যথা সমষ্টি রূপো জ্ঞানপ্রধানতয়া স্বরাট্ স্বপ্রকাশ: সন্ধভাতীতার্থ:। সমষ্টিরূপো হয়ং জীব: কীদৃশোহপি স্বরাট্ তয়াবভাতি তয়াহ মহানিত্যাদিনা। সমষ্টি মহদাদি তাদাম্মাপলোহপীতার্থ:। তস্য স্বরাট্ জীবস্য সমষ্টি রূপমেব দুশ্মতি তস্যেতি। যতো জ্বাৎ স্থাবর ক্ষমবৃদ্ধং ভ্রতীতি॥ ২৪॥

এতচিবন্ধ চ শ্রন্ধাপূর্বিক। যা ভক্তি র্ভগবছপাসনা তৎ পূর্বকো যো যোগাভাাস: পূর্ব্বোক্ত: স জীবো নিতাশ: ক্রিয়মাণ তেনেব সমাহিতান্দ্রেত্যাদি রূপ: সমুপরি পশাতি। নিরীশ্বর সাখ্যন্ত ভক্ত্যাদিকং বিনা বিবেকমাত্রেণ ন পশাতীতোবেতার্থ: ॥২৫

ইত্যেতৎ পূর্ব্ব প্রকারকং জ্ঞানং ক্থিতং। কীদৃশং। তত্ত শাস্ত্র মাত্র জ্ঞেরস্য ব্রহ্মণো দর্শনং জ্ঞানদারং। পূর্ব্বপ্রকারদ্বনেবা কুবদ্তি বেনেতি। প্রক্রতেঃ প্রধানস্য পুরুষস্য জীবস্য ॥ ২৬ ॥

জ্ঞানমাত্রমিত্যত্রোক্তং স্কুট্বোধয়ন্ ভগবত্যের সর্ক্তাৎপর্যাং দর্শয়তি জ্ঞানেতি হয়েন। মলিছো নৈও প্রশেচ্ছাভর্মপ্র

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অর্থরপোরভাতীভ্যুক্তনতোহর্থ মধ্যপতিতনেব সর্বাং মারিকীং বন্ধিতি দর্শরতি যথেতি। মহাংশ্চিতং অহংরপোহছমারঃত্তিবুৎ ত্তিপ্তাল্পকঃ সচ পঞ্চিবাং শবাদি রূপেণাফাশাদি রূপেণ চ প্নরেকাদশবিধ ইক্তির রূপেণ। স্বরাট্ সমষ্টিবা ষ্টিশ্চ বিরাজ্
ভব্ধ কীরন্তাস্য বপুরস্তকেতি যতোমহদাদিভ্যোক্যান্তাক্যান্তিকমিদং বিষাং ভবীত মহদাদীনামেবাং বৃদ্ধি বিষয়ভাদর্শ রূপেণ। ২৪॥

ব্দন্য ক্রানস্যাধিকারিপমাই। এতজ্ঞানরূপং বন্ধ ॥ ২৫॥

উक्তरमवार्थः स्थरवाधार्थः मःक्ष्माभाग्यमिक अर्कि एव माजः ॥ २७ ॥

যোগস্যায়ত্যাং জ্ঞানস্বান্তেও প্রকরণোক্তে জ্ঞানং ছজিল্ডেতি ছে এব সাধনে ভবতঃ তৎ সাধ্যয়ো এ স্ক প্রাপ্তি ভগবৎ প্রাপ্তেয়া

মা। যেমন এক মহতত্ত্ব অহসার রূপে দল্প রক্ষা তম এই ত্রিগুণ স্বরূপ হইয়া পুনর্বার ভূতরূপে পঞ্চপ্রকার এবং ইন্দ্রিয় রূপে একাদশ প্রকার হইয়াছে ও ঐ মহদাদি হইতে স্বরাট্ অর্থাৎ জীব এবং জীবের শরীর এই প্রকাশ ও জগৎ প্রকাশমান হইতেছে, তাহার ন্যায় পরপ্রক্ষেও এই প্রপঞ্চ অর্থ-রূপে প্রকাশ পাইতেছে। ২৪॥

মা ! যে ব্যক্তির মনঃ সমাহিত এবং যিনি সঙ্গরহিত ও সংসারে বিরক্তা, তিনি আনা, তক্তি এবং বোগাড়াক মারা নিত্য অক্ষাকেই নাভ করেন, তাহার সমমে আই প্রশাক প্রকাশকান ইয় নাড়ে ২০ ৪

ৰে পুজনীয়ে। আনি এই উন্নাহৰ্ণন জান কহিলাৰ, এই জান বারাই প্রকৃতি । ক্রিটালনা তথ সন্ধত হইছে শামায়ায়। ২৬॥

मा ! निर्श्व ना कानरयां व जवः मिवद्रक एकि ज्ञान रा यां व के के एवं के बर्द्राकन जवनिर्देश

यथिकिरियः পৃথक् बारेत्रत्रर्था बङ्शुनाध्ययः। একোনানেয়তে তৰন্তগ্ৰান্ শান্তবন্ধ ভি:॥ ২৮॥

विश्ववागी।

যোগন্তরোছ রোরপোক এবার্থঃ প্রয়োজনং কোৎসৌ ভগবছেকো লক্ষণং জ্ঞাপকো হস্য । তছক্তং গীতাস্থ । তে প্রাগ্নুবন্ধি মানেব সর্কভূতহিতে রতা ইতি ॥ ২৭ ॥

নমু জ্ঞান যোগস্যাত্মলাভ: ফলং শাল্লেণাবগমাতে ভক্তিযোগস্তু ভল্পনীয়েশ্বপ্রাপ্তি: কুভত্তয়ো রেভার্যতং ইন্ড্যাশভা দৃষ্টা-স্তেন উপপাদয়তি। যথা বহুনাং রূপ রসাদীনাং গুণানামাশ্রম: কীরাদি: এক এবার্থো মার্গভেদপ্রত্তীর জ্রিকৈ ন'না প্রতীয়তে চক্ষ্বা শুক্ল ইতি রসনেন মধুর ইতি স্পর্শেন শীত ইন্ড্যাদি তথা ভগ্যানের তত্তক্ষপোরগম্যতে ॥ ২৮॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ভয়োরের বিশেষণং। তত্র যদ্যপি কৈবল্যং সান্তিকং জ্ঞানং মন্নিষ্ঠং নিওপিং স্থতমিতি ভগবত্তলা নৈওপিছং। ন সম্ভবতি। তথাপি তৎফলস্য কৈবল্যতা নিওপিরাপেক্যা নিওপির্মিত্যুক্তং। এতদেবাই হয়োরপ্যেক এবার্থ ইতি॥ ২৭॥

ইব্রিটেয়র নেয়তে ইতি মনসা তু সর্কাংশএব গৃহতে ইতি। অত: সর্কাংশ প্রভ্যায়কছায়গবছব্রিটোগন্ত মনংখানীয়ে। জেয়:। অত: স এবাদিছেন নিগদিত:। ভাবৈবিতাত কামৈরিতি ক্টিং। নানায়তে ইতি পুণাারণা:॥ ২৮॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

ৰি ছিপুকে ভাষেন ভগৰত এব ব্ৰহ্মখন ভগৰৎপ্ৰাপ্তিরিভাক্ষেব কলং স্যাদিত্যাই জ্ঞানেতি। মন্ত্ৰিট ইতি মনৈব ব্ৰহ্মখনিত ভাষ:। নৈপ্ৰণাগা নিপ্ৰণাভজিলকণ্চ যো ৰোগন্তরেন্ত্ৰ হৈবিকে এবাৰ্থ: প্ৰয়োজনং। কোহসৌ ভগৰছকো লকণং জ্ঞাপকোষ্যা। তত্বকং গীতাহা। তে প্ৰাপ্নুবন্তি মামেৰ সৰ্বভূতহিতে বতা ইতি। ব্ৰহ্মণোছি প্ৰতিষ্ঠাহমন্ত্ৰসাব্যয়স্য । শাৰ্থত্য্য চ ধৰ্মস্ স্থিস্কাভিক্স চেত্যতঃ সাযুদ্ধ প্ৰেয়োৰ্ভগৰত এব সিদ্ধি:॥২৭॥

ন কেবলং জ্ঞান ভক্তিগম্য এব ভগবান্পিত্বনন্ত শক্তিবাং সর্ক্ষাধন গম্য ইতাত্র দৃষ্টান্তমাহ যথেতি। বছুনাং রূপরসাদীনাং গুণানামাল্রমঃ ক্ষীরাদিরেক এবাপি পৃথগ্রারৈঃ পৃথয়ার্গ প্রবৃত্তি রিজিয়েরণিনা প্রতীরতে। চকুবা ৩র ইতি রুসনেন মধুর ইতি হচা শীত ইতি নাসিক্যা সুগদ্ধ ইতি প্রোরেণ ক্ষীরাভিধান ইত্যেবমেকৈক এব স্ব গ্রাহ্মে ধর্মেইছুয়তে নান্য গ্রাহ্মেইত এব তত্ত্বর্মবান্ নাপি ক্ষীরর্কাগেইর্থ: মনসেল্রিয়রাকেন তু ক্ষ্পদৃত্তিকরেছিয় গুকুমধুর শীতন সুগদ্ধ ক্ষীরাভিধানেছিয়রর্থ ইতি তত্তং সর্ক ধর্ম্যক এব স্প্রতীয়তে তথেব শাল্রবর্মাভি: কর্ম্ব্রানাদিভির্পি সাধনেঃ স্বর্গাপবর্গাদি রূপরাং স্বর্গাপবর্গাদি রূপরাং স্বর্গাপবর্গাদি রূপরাং স্বর্গাপবর্গাদি রূপরাং ক্রিয়াল প্রায়া রেজ্বত্তে ক্রেয়াল প্রায়া রেজ্বত্তে তথেব শাল্রবর্মাভ্য ভ্রাহ্মিরা তথা বিষয়ী ভূতে। ভগবনান স্বর্গাপবর্গাদি সর্ক্ষণ প্রায়াদিরেক এবার্থে জ্যারতে বহুদেল্রিয়ৈঃ। দুশা গুকো রসন্যা মধুরো তগবাংস্তাগ। উপাসনাভির্ব হুধা স্বকোছিল প্রতীরতে। ক্লিক্রের মধা প্রায়ং মাধুর্যাং তন্য নাপরেঃ। তথেব চকুবাদীনি গৃহস্তার্থং নিজং নিজং। তথানা বাহ্মকরণ স্থানীমোপাস নাথিলা। ভক্তিত চেতঃশ্বনীয়া তথা সর্ক্ষার্থ লাভতঃ। ইতি প্রব্যশাল্রেরু তন্য বন্ধ স্বর্গান প্রণাধিক্যাৎ ক্রক্ষা প্রের্গাত্ত ইতি॥ ২৮॥

এই हुইয়েতে ভগবানকে প্রাপ্ত হওয়া যায় ॥ ২৭ ॥

তে দেবি ! শান্ত বারা এই বোধগম্য হইতেছে যে, জ্ঞানযোগের ফল আত্ম লাভ এবং ভক্তিযোগের ফল ভলনীয় ঈশবরের প্রাপ্তি, তবে এই ছইরের এক প্রয়োজন কি রূপে হইবে ! এমত আশহা করি-বেন না, বেদন রূপ রুমাদি বহুপ্রপের আজার কীরাদির এক এক বিষয় হইলেও পৃথক্ পৃথক্ মার্গে প্রেড ইক্তিরগণ বারা নানা প্রকারে প্রতীয়মান হয় আর্থি এক মুগ্ধ চক্ষু: বারা শুরু, রুমনা বারা ক্র্যুর, আইকের বারা শীভদ এবং নীদিকা ভারা হগন্ধ, প্রোত্ম বারা ক্রীরাভিধান, ইত্যাদি ভেল হয়, ভাহার ন্যায় তগবান্ বস্ততঃ এক, কিন্তু ভিন্ন ভিন্ন শান্ত্রপথ বারা নানা প্রকারে প্রতীয়মান হয়েন ॥২৮

ক্রিয়য়া ক্রভুভি দ্বিত্তপঃ স্বাধ্যায় মর্শ নৈঃ। স্বাস্থ্রেক্সিজ্যেলাপি সন্ধ্যাদেনচ কর্মণা ॥ ২৯ ॥ যোগেন বিবিধান্দেন ভক্তিযোগেন কৈবহি। ধর্মেণোভয়চিক্ষেন যঃ প্রবৃত্তি নির্ত্তিমান্॥ ৩০ ॥ আজ্যতন্ত্রাব্বোধেন বৈরাগ্যেণ দুড়েনচ। ঈয়তে ভগ্যানেভিঃ সগুণো নিশুণঃ স্বদৃক্॥ ৩১ ॥

প্রিধরস্বামী।

শাস্ত্রনাগানের প্রপঞ্জতি ক্রিরেডি ক্রিডিঃ ক্রিরো পৃষ্ঠরূপরা ক্রতুতি থাঁগৈঃ মর্লনং মীমাংসা আরেক্সিরজনো নিবিদ্ধ বর্জনং॥ ২৯॥

উভয় চিক্নে সকাম নিকাম লক্ষণেন তমেবাছ ৰ ইতি। সকাম ধৰ্মপ্ৰোপাং স্বৰ্গাদ্যপি ভগৰত এব স্থাণং স্বৰ্গামিতি ভাৰ:॥ ৩০॥ এভিৰ্ব্যয় ভি: স্বদৃক্ স্থাকাশ:॥ ৩১॥

क्रधमकर्छः ।

তত্র পূর্ণদর্শন হেতুং ভক্তিয়োগং পণ্ডদর্শনহেতুং ক্রিয়াদিকঞ্চ গণ্যন্ তত্তৎ প্রাপা তদাবির্ভাব ভেদান্ দর্শয়তি। ক্রিমরের তি ক্রিকেণ। ক্রিমরেরাদি ক্রমং গৃহস্ত ধর্মঃ। তপো বানপ্রস্থা। স্বাধায়মর্শনে ব্রন্ধচারিণঃ। আছেতি ব্রুমং সন্ধাসিনঃ। ইতি কর্মকাশুমার্গম্বা উপাসনাকাশুমার্গানাহ। ধ্যাগেনেতি বিবিধাসেন নানা ভেদেন জ্ঞানকাশুমার্গানাহ। ভক্তিযোলেতি। আয়তভাববোধেনেতি চ। প্রেমা ব্রুমান্তবেন চেতার্থঃ। তত্ত্ব ভক্তেম্বার্ক্তাম্প্রান বিশেষমাহ। ধর্মেণেতি। ভগবদ্ধেণেতার্থঃ তদেব নাম্প্রতি উভয় চিহ্নং যত্র তেনেতি। উভয় চিহ্নংনেৰ ব্যক্তমতি। যো ধর্মঃ প্রবৃত্তিঃ শ্রীভগবতি নির্বির্জ্ব ভদ্মবানিতি। বিভীমনার্গায় ধারমাহ। বৈরাগ্যেণ চ নির্বির্মারাম্মকেনেতার্থঃ। অত্র সাধ্যমপান্তর্তিং ক্রেমঃ। অত্র প্রাণান্তাবির্দির ভেদানাহ। সভাণঃ স্বর্গানিরপঃ কর্মমার্নির:। নির্প্তিশ্বিদ্ধার ক্রেমান্তবেন। অস্ক্রপেনের। সর্ব্বর্মান্তবির্দ্ধানার্গান্ত ভদ্মপ্রাণান্ত ভদ্মান্ত সম্পাদনাহ্সারেণ তদ্মপ্রাণকঃ। ক্রিছে তত্তৎ সিদ্ধি কাপ সভাণপ্রপাপকশ্বেতার্থঃ। ২০।৩০।৩১॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্তী।

শাস্ত্র নাগানের প্রপঞ্জতি ক্রিয়বেতি ব্রিভিঃ। ক্রিরাদি ক্রিং গৃহস্থস্য ধর্মঃ। তপোবানপ্রস্থস্য। মর্শনং মীনাংসা। স্বাধ্যার-দর্শনে ব্রহারিণঃ। আত্মেতি দ্বং ভিকোঃ॥২১॥

ভক্তিযোগেন চৈবহীতি চকারেণ ক্রিরয়েত্যাদীনাং ভক্তিমিশ্রবং জ্ঞাপয়তি ক্রিয়য়া ভক্তিযোগেন চ ক্রত্তভিভক্তিযোগেন চ দানৈ ভক্তিযোগেন চেন্ডোবং সর্মাত্র যোজনাং ভক্তিযোগ মিশ্রণং বিনা ক্রিয়াদীনাং প্রতি স্বক্ষণ সাধক্ষামকিং বোধয়তি। এবহি শক্ষাভামিবধারণ নিশ্চয় বাচকাভ্যাং ক্রিয়াদি সাধ্যং বস্তু ভক্তিযোগেনৈব কেবলেন লভ্যং নিশ্চিতং স্যাদিতিচ রোধয়ত্যতো ভক্তিযোগাস্য কর্ম মৃথ্যমং ভগবংস্বরূপস্যেব জ্রেমং। উভয় চিক্লেন স্কাম নিক্ষাম লক্ষণেন। তদেব লপাইয়ভি যোধর্মং প্রবৃত্তি নির্ত্তিমান্। ৩০॥

স ৩৭: ক্রিয়াক্রাদি প্রাপ্য: স্বর্গাদির প ইত্র্থ: । নি গুণ: সন্ন্যাদ্যোগাদি প্রাপ্য: ব্রহ্ম প্রমাত্রাদি স্বরূপ ইত্র্থ: স্বদৃক্ স্বরূপেণের সর্ব্যাধন সাধ্য দ্রষ্টা। তত্ত্বোন্যশ্চার্থ:। স্বদৃক্ স্বান্ সননা ভক্তানেরাস্ক্র্যা পশ্যুতীতি স্বদৃক্ ভক্ত ভক্তিযোগ প্রাপ্যো ভগব্জুপ ইত্র্থ:॥৩১॥

জলাশয়ের উৎসর্গানিরূপ পূর্ত্তকর্ম, ফজ্ঞ, দান, তপদ্যা, বেদাধ্যমূন, মীমাংশাকরণ, আত্মা ও ইন্দ্রিয় জয় অর্থাৎ নিষিদ্ধ বর্জন, সম্ন্যাদ ॥ ২৯ ॥

বিবিধ অঙ্গ যোগ, ভঞ্জিযোগ, প্রান্থতি নির্তি বিশিষ্ট সকাম ও নিজাম উভয় প্রকার ধর্ম। ৩০ এ আজতত্ত্ব জ্ঞান, দৃঢ় বৈশ্লাগ্য ইত্যাদি ছারা অপ্রকাশ ও নিগুণ ব্রহ্মণ ব্রহমণ বিশ্বান

প্রাব্যেচং ভক্তিযোগস্য স্বরূপং তে চতুর্বিধং। কালস্য চাব্যক্তগতে হোঁছস্কং বিভি জন্তমু ॥ ৩২ জীবস্য সংস্থতীর্বস্থীরবিদ্যা কর্মনির্মিতাঃ। যাস্ক্র প্রবিশ্বাদ্ধা ন বেদ গতিমাদ্ধনঃ ॥ ৩৩ ॥ নৈতৎ থলায়োপদিশেলাবিনীতায় কর্মিচিৎ। ন স্তব্ধায় ন ভিন্নায় নৈব ধর্মধন্তায়চ। ন লোলুপায়োপদিশেল গৃহারুচ্চেত্রে। নাভক্তায়চ মে আতু নমন্তক্ষিবামপি॥ ৩৪ ॥

क्रिश्तवामी।

ভদেবং জ্ঞানযোগমূপসংস্থত্য তস্য ভক্তিযোগেন সমানার্ধ্বমূক্ত্ব ভক্তিযোগাহ্যপসংহরতি প্রাবোচমিতি ছাভ্যাং । চতুর্বিধং ক্রিগুণ নিশ্বনি তদেনান্তর্জাবতি উৎপত্তি নিধনাদি করোতি ॥ ৩২ ॥

অঙ্গ হে মাত:॥ ৩৩॥

উপদেশেহন্দিকারিশো দর্শহতি নৈত্দিতি ছাত্যাং ধলার পরোছেক্কার ভিনার হুরাচারার ধর্মধ্বনার দান্তিকার ॥ ৩৪ ॥

ক্রমসম্বর্ড:।

ভত্ত ভক্তিযোগমের প্রাধান্যাদম্বদ্ধি। প্রাবোচমিতি বৃশ্বকেন। স্বং তলৈয়ের স্বরূপং রূপ্যতে যেন ওচ্ছত্রিধং লক্ষণং। ভদ্ধমেবচ কালাদরো নিরূপিতা ইতাঁহি কালস্যেতি॥ ৩২॥ ৩০॥

নৈতদিতি যুগ্মকং। খলং পরপকোহপি দ্বরিত্মিজ্রা প্রবিষ্টা। অবিনীতঃ শিষ্মব্যাদারহিতঃ। তারো গর্বী তিরো মতান্তরেণ ভেদপ্রাপ্তঃ ধর্মধ্বলো জীবিকা মাআর্থমাথানি ভালৃশ্য ব্যঞ্জকঃ। লোলুপন্তকদোৰ রহিভোহপি গোভেন গতইধর্যঃ। গৃহাক্চ্চেতাঃ পুত্রজারাদিষভাস্তাসকঃ অভক্ত শুদ্পিরীক্ত খণ্যুক্তোহপি মন্তকি বিরোধি সংকারঃ ভক্তদিবো ভক্তি সংকারাভাস সভাবেহপি ভক্তবিরোধ রূপ মহাদেশিবতঃ। বহুত্বং তত্তেদেশেকোহপি ন গ্রাহ্ ইতি ভাবঃ॥ ৩৪॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

তদেবং জ্ঞানযোগমুপনংক্তা তনা চ ভক্তিবোগ প্রাপ্যে তগবভোব নিষ্ঠাং প্রদর্শ্য সম্চিত দৃষ্টাক্ষেন ভগবত এব কর্মানি দর্শ মার্গ লক্ষ্যমুপপান্যোদানীং ভক্তিযোগাদিকমুপনংহরতি প্রাবোচমিতি ছাভ্যাং। চতুর্বিধং ত্রিগুণ নিশুণ ভেদেন ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥

এতছপদেশানধিকারিশো দর্শরতি নৈত্রিতি। ধলোদ্বণার্থনের ক্রিম জ্জ্যা অধিজিগমিনু:। অবিনীত: শিধ্যমর্থ্যালা রহিত:। জ্বেনাহতিগর্জবান্ জিরো মতান্তরেপ জেদং প্রাপ্ত: ধর্মধ্বেলা লাভপ্রতিষ্ঠাদার্থনের ধর্মনিষ্ঠ:। লোলুপন্তরুদোর রহিতোহিপি বিষয় টোগেইতিলোভী। গৃহাক্রচ্চতো: বিব্যেকনতিলোলুশোপি পুত্র দারধনাদিকতাসক্তঃ। অভক্তঃ উক্তান্ত্ক সর্প্রদোর রহিতোইপি মন্তক্তিহীন:। কিঞ্চ প্রম্ব প্রমাদতঃ ক্রাচিবেভ্যোহপুগেদিশভূ নাম জাতু ক্রাচিদ্দি মন্তক্তিবামিতি বঠান্ত নির্দেশন তৎসম্ব দিনেহিপি নোপদিশে কিমুত্ত তেডা ইতি ॥ ৩৪ ॥

মা। ভক্তিযোগের চতুর্বিধ স্কুরূপ অর্থাৎ সন্তাদি গুণত্তর ভেদে তিন এবং নিগুণ রূপে এক, এই চারি প্রভেদ, তথা বে কাল সম্ভ সকলের প্রতি ধাবমান হয় অর্থাৎ উৎপত্তি নিধনাদি করে এবং যাহার গতি অব্যক্ত দেই কালের এই স্বরূপ কহিলাম। ৩২।

অপর জীবের অবিদ্যা কর্মনির্মিত বহু প্রকার সংসার আছে, যাহাতে বন প্রবিউ হইলে আপ-নার গতি অবগত হইতে পারে মা, তাহাও এই কহিলাম । ৩০।

কিন্তু না ! এই বিষয়টা পারের ভূবেজক থল এবা অবিনীত ব্যক্তিকে কথন উপধেশ করিবেন না। আর বে সকল ব্যক্তি তার অর্থাৎ অভূ, ছরাচার, দান্তিক, লোভী, গৃহাসক্ত চিত, আমাতে ভক্তিহীন অথবা আমার ভাকের বৈষী এসকল ব্যক্তিকেও কহিবেন না ॥ ৩৪ ॥ শ্রদ্ধানায় ভক্তায় বিনীতায়ানস্যবে। ভৃতেরু কৃতনৈত্রোয় শুক্রাবাভিরতায়চ।
বিহ র্ছাভবিরাগায় শাস্তচিভায় দীয়তে। নির্মাৎসরায় শুচয়ে যস্যাহং, প্রেয়সাং প্রিয়: ॥ ৩৫ ॥

য ইদং শৃগুয়াদম্ব প্রদ্ধার সক্ষ্ব। যো বাভিধতে মচ্চিতঃ সম্বেতি পদবীঞ্চ মে ॥ ৩৬ ॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভৃতীয়ক্ষদ্ধে কাপিলেয়ে কর্মবিপাকো ঘাত্রিংশাহধায়ঃ ॥ * ॥ ৩২ ॥ * ॥

शिववामी।

অধিকারিণ এবাহ প্রদর্ধানার ইতি হাভ্যাং ॥ ৩৫ ॥ এতং প্রবশ কীর্ত্তন পরস্যাপি মৎপদ প্রাপ্তিরেব ফলমিত্যাহ ব ইতি । অপ্যর্থে চকার: সোহপি মৎপদবীমেতি হি নিশ্চিতং ॥ ৩৬ ॥ ॥ *॥ ইতি তৃতীরে হাত্রিংশ: ॥ * ॥

क्रयममर्जः।

ত্বিপরীতানধিকারিণ আহ শ্রদ্ধানারেতি যুগ্রকেন। শ্রদ্ধানো মন্তক শুকুমহুপদিষ্ট শাল্পরো বিশ্বাসবান্। তক্তো ভক্তি-সংকার যুক্তঃ। বিনীতঃ শিষ্যমর্য্যাদাযুক্তঃ। অনস্থাঃ সতীর্থাদি খুণাধিকোন গুর্কাদরাধিকো দৃষ্টে প্রত্যুত শুধবান্। কৃত্রিয়েরা দর্মযুক্তঃ শুক্রবাভিরতো শুকুসেবায়ামনলসঃ। বহিরিতি ব্যুস্য যথা বহির্কিরক্ত ভটান্তর্মপীতার্থঃ। নির্দ্রংসরঃ সর্কভ্তা-কাক্ষী। শুচির্কিহিরন্তঃ পবিত্রঃ। এযাং হেতু হেতুমন্তক যথেষ্টং বিবেচনীরং। যন্তাহিমিতি তেন শুকুলা দীয়ত ইত্যম্বরাদ্গুকু লক্ষণমপ্যক্তং। যদ্বা তাদৃশ শিষ্যম্ভ ফলমাহ যস্যেতি। এবং ভূতক্ত যস্যাহ্মতিপ্রের্ধান্ ভবিষ্যামীতার্থঃ। কাল্ল বদ্দিশি পূর্কদোষা অপি তাক্তাঃ স্থা ন্তথাপি তেবাম্দেশো ব্যতিরেক্তাণি পৃথক্ জ্ঞানার্থ ইতি ক্লেয়ং। কিঞ্চ। এতে গুণান্থ সম্দিতা এব ক্লেয়াঃ। তত্তদক বৈকল্যেত্ ন্যনাধিকারিভ্যিতি। তানেব গুণান্ সমৃদিশ্রাহ শুচ্য ইতি॥ ৩৫॥

ফল শ্রুত্যাণি নিজোপদেশ বুল তাৎপর্যাং নির্দারয়তি ব ইদমিতি। পদবীং ভক্তিযোগং॥ ৩৬॥

॥ *। ইতি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ন্তব্দে শ্রীজীবগোম্বামি ক্বত ক্রমসন্দর্ভদ্য বাতিংশোহধ্যায়: সমাপ্ত: ॥ *॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

অধিকারিণ আহ শ্রদ্ধানায়েতি ৰাভ্যাং। বহির্বাস্থ বিষয়ের বিরক্তার ॥ ৩৫ ॥
এতদম্চাতৃণাং ভাগ্যং কিং বক্তব্যং এতচ্ছু বণ কীর্ত্তনমাত্র ক্তোভাগ্যং পৃণ্ত্যাহ য ইদমিতি। স মচ্চিত্তঃ সন্ মৎপদবীং
মচ্চরণবিন্যাসস্থলীং ॥ ৩৬ ॥

॥ *॥ ইতি সারার্থনর্শিক্সাং হর্ষিণ্যাং জক্তচেত্রসাং। স্বাতিংলোহরং তৃতীয়ক্ত সঙ্গতঃ সকতঃ সভাং ॥ *॥

বে ব্যক্তিকে প্রজাশীল, ভক্তা, বিনীন্ত, অস্মাপুনা, সর্বা প্রাণিতে কৃতনৈতা, শুপ্রাবারত, বাছ বিষয়ে জাতকৈয়াশ্যা, শাছচিত্র, নির্মাণ্ড বছা তাচ দেখিবেন এবং যে স্থানাকে প্রিয় স্থাপেকাও প্রিয় বোধ করে তাহাকে প্রদান করিবেনা। ক্রেনা

মান হৈ শুক্তাৰ জ্বামান্ত হইনা একনির মাত্র ইহা জবণ কুরে, জথবা হোঁ ব্যক্তি আমাতে চিত্ত সমর্পণ পূর্বকে ইংগ্রে তাতু হামান্তর দৈও মিশ্লের আমার পদবী ক্ষ্মাৎ নদীয় ছান প্রাপ্ত ক্যা। ৩৬॥।
। ॥ ॥ ॥ । । ইতি তৃতীয়ে ভাত্তিগো ॥ ॥ ॥ । । প্রীমৈত্রেয় উবাচ ॥

এবং নিশম্য কপিলস্থ বচো জনিত্রী সা কর্দমদ্য দয়িতা কিল দেবছুতি:। বিস্ততমোহপটলা তমভিপ্রণম্য ভূষীব তত্ত্বিষয়াঙ্কিতসিদ্ধিভূমিং॥ ১॥ শ্রীদেবছুতিরুবাচ॥

অথাপ্যজো হতঃদলিলে শরানং ভূতেন্দ্রিয়ার্থাত্মময়ং বপুত্তে।

बीश्रवशागी

় অয়ব্রিংশে হুতটেড়ৰ কপিলস্যোপদেশতঃ। জ্ঞানলাভেন তন্মাতৃ্ধীবলুক্তিকদীবিচতে॥ • ॥

বিশ্রন্তং মোহরূপং পটলমাবরণং যন্তা: সা। তথান্তের বিষয়ন্তেনাদিতা সিদ্ধি: সাংখ্যক্সনং তক্তা ভূমিং ক্ষেত্রং প্রবর্ত্তকং॥ ১॥ অথেতি বাক্যারন্তে। অকোংপি তব বপু: কেবলং দধ্যৌ নচ দৃষ্টবান্ সচ স্বয়ং সাক্ষাং যন্ত তব জঠরাক্ষাং জাতঃ স ভবানেব বিশ্বন্ত সর্গাদি বিধন্তে নতু তব সর্গাদি কর্ত্তা কল্চিদ্বি। স এবস্তৃতত্বং মে ময়া কথং জঠরেণ ভূতঃ ইতি অমাণামস্বয়:। কণ্ডুতং বপু: সন্ব্যক্তং তত্ত্ব হেতুঃ অন্তঃসলিলে শয়ানং পুন: কীদৃশং ভূতানিচ ইক্রিয়াণিচ অর্থান্চ শব্দানয়: আত্মাচ মন: এতময়ং এতৈর্ব্যাপ্ত

ক্রমসন্দর্ভ:।

বানি তথানি তথ্বিচার্স্য বিষয়াঃ। তৈবঙ্কিতা লক্ষিতা যা সিদ্ধিঃ। প্রমায় কুর্তিত্স্যা ভূমিমাশ্রয়ং। প্রথক্তিক্মিতার্থঃ। এব মন্যত্র। এতদিতি পুণ্যারণ্যমতঃ পঠিঃ। সিদ্ধ ইতি সম্বন্ধোক্তিমতঃ॥১॥

অংগতি ত্রিকং। অথ বাক্যারস্তে। অজ ইতি প্রসিদ্ধোহণি ব্রহ্মা যস্য তব স্কঠরাজ্জাতন্তে তব রূপং দধ্যে সীয় প্রই স্বস্পাদনার্থম্পাসনাঞ্চলারেত্যর্থঃ। কতমত্ত্রপং তত্রাহ সলিল ইতি। গর্ডোদকশায়ীত্যর্থঃ। তচ্চ কিং স্বরূপং সং কীলুশতরা দধ্যে তিব্রাহ সদিতি। সচিদানন্দ স্বরূপমেবাশেষ বীক্ষা দধ্যে অনশ্বরবীক্ষত্যা চিক্তিতবানিত্যর্থঃ। যত্রোঃ ভূতাদীনাং য আছোকারণং প্রকৃতিঃ তন্মরং তচ্ছক্তিকমিত্যর্থঃ। অতএব গুণানাং প্রবাহা যন্মাৎ তাদৃশং তদেবং যস্য প্রঠরাজ্জাতোহসৌ স এব সর্গাদি

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

অগ্লিংশে দেব্যুত্যা স্বতঃ জীকপিলো যথে। বনং তছপদিটেন বস্থানৈব ত্মাপ সা॥ • ॥

জনিত্রী জনমিত্রী। বিস্তাপ্ত নোহপটলং ভক্তিজানাদি বিষয়ক্ষজ্ঞান সমূহো ষস্যাঃ সা তত্ত্বিষয়েষু ভক্তিতত্ব সাংখ্যজ্ঞানতত্ত্বোগ তত্তাদি বিষয়েষু অভিতঃ পরম নিপুশ্যেন অভঃ গণনায়াং রেখা সংজাতা যস্য সচাসে সিদ্ধা ভূতলন্ত্রা জনা যতঃ স চেতি তং॥ ১॥

তত্মপদিশা যত্ত মাং সংসারাছ্দ্রসৈ নৈতচ্চিত্রং, চিত্রং থত্তেদেব যত্ত্বাছ্ব্যা নিক্টারা মমাপি গর্জাক্তাহেসি কঠরীকতানস্ত কোটি বন্ধাও প্রমেশ্বর ইত্যাহ অথেতি বাক্যারস্তে। অজোহপি বন্ধাপি অস্তঃ সলিলে বন্ধাও মধান্থিত সলিলে পরানং বপ্ পর্ত্তোদশারি রূপং তব দংগী কেবলং নতু প্রথমমেব দদর্শেতি ভাবঃ। কীদৃশং ভূতানিচ ইক্রিয়াণিচ অর্থান্ড আত্মমরাঃ শ্বময়া শিচদানন্দ রূপাথ্য নতু প্রকৃতি বিকারা যত্ত্ব ও পান্ ভক্তবাংসল্যাদীন্ প্রকর্ষেণ বহতীতি তং সং সত্যং অশেষস্য জগতে।

ত্রেয় ব্রিংশদধ্যায়ে ভগবান্ কপিলের উপদেশে তদীয় মাতা দেবহুতীর জ্ঞান লাভ এবং জীবন্মুক্তির বিষয় বর্ণন ছইতেছে॥ ॰॥

মৈত্রেয় কছিলেন কপিলের এই সমস্ত বাক্য প্রবণ করিয়া তন্মাতা কর্দমবনিতা দেবছুতির মোহরূপ আবরণ বিস্তম্ভ হইল, তিনি ঐ সাংখ্যজ্ঞান প্রবর্তক ভগবান্ কপিলকে প্রণাম পূর্বক ন্তব
করিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ১ ॥ *

বেবহুতি কহিলেন হে ভগবন্! ', খজ জ্জাও সাকাৎ তোমার জঠরপল হইতে উৎপন হইনা ভোমার সলিলশায়ি এই ব্যক্ত বপু: বাহা ভূত, ই⊞িয়ে, আলা এবং মন: এই সকলে ব্যাপ্ত এবং যাহা আশেষ কার্য্যের বীজ ও যাহাতে গুণ সকলের প্রবাহ বর্তমান, তল্মাজের চিন্তা করিয়াছিলেন কিন্তু শুণ প্রবাহং সদশেষ বীজং দধ্যে স্বয়ং যজ্জ চরাজ্জাতঃ ॥ ২ ॥
সএব বিশ্বস্য ভবান্ বিধতে শুণপ্রবাহেণ বিভক্তবীর্য্যঃ।
সর্গাদ্যনীহো বিতথাভিদ্দ্দি রাজ্মেশ্বরো ২তর্ক্য সহত্রশক্তিঃ ॥ ৩ ॥
স স্বং ভৃতো মে জঠরেণ নাথ কথং মু যদ্যোদর এতদাসীং।
বিশ্বং যুগান্তে বটপত্র একঃ শেতে স্ম মায়াশিশুর্জির পানঃ ॥ ৪ ॥

क्षित्रयामो ।

মিতার্থঃ। কুতো গুণানাং প্রবাহো যশ্মিন তৎ কুতঃ অলেষদ্য কার্য্ত কারণন্ত বীজং কারণং ॥ ২ ॥

কথস্থতো ভবান্ সর্গাদি বিধত্তে গুণপ্রবাহ কপেণ বিভক্তং বীর্ষ্যং শক্তির্যেন সং শক্তিরারেণ বিধতে ন সাক্ষাদিত্যর্থ:। যতো-হনীহো নিজিয়:। কথং তর্হি শক্তিরারেণাপি সর্গাদি বিধানং তত্তাহ অবিতথাভিসন্ধিঃ সত্যসংকল্প: কিমর্থং বিধত্তে আত্মনাং শীবানাং ঈশর: জীবানাং ভোগার্থমিত্যর্থ:। নমু কথং বিচিত্রান্ ভোগান্ এক এব বিদ্যাৎ। তত্ত্বাহ অতর্কাাং সহস্রমপরিমিতাঃ শক্তরো বস্ত ॥ ৩॥

কিঞ্চ প্রস্তানে বতোদরে এত দিখনাসীং স' বং কথং ময়া জঠরেণ ভ্তঃ। নহু শিশৌ ময়ি কিনেত ছচাতে ততাহ বটপত্ত ইতি। অভিযুং পানাসুঠং পিবতীতা ভিনুপানঃ। ইদমপি শিশুৰং তবদেব মারেতি ভাবঃ॥৪॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

विधरख न उनानवः॥२॥

তত্র হেতু:। শুণপ্রবাহেণ তছ্ বি পরম্পরা ভেদেন বিভক্তং ব্রশ্পানিত্তা বিভক্তা দত্তং বীর্যাং স্বশক্তির্যন সং। তেন চ তস্য ন লেপ ইত্যাহ। স্থনীহলাবিতথাভিসন্ধিশেতি। তত্রানীহঁছে হেতু:। আয়া পরম সাক্ষী উত্তরত্র হেতু:। ঈশরং স্বছ্লেছ্ছ ইতি তত্রাবিরোধে হেতুমাহ অতর্ক্যেতি। অচিন্ত্যানস্থশক্ষেত্রস্য নৈস্ক্রোবতাশ্চর্যারং। অপরম্পি তদন্তমন্ত্রীত্যর্থ:। শুতেন্ত্র শক্ষুপ্রাবিতি ভাব:॥ ৩॥

স দ্মিতি শৈশবলীলার্থ: মদীচ্ছরেতি চেৎ সাচ স্বত এব স্যাদিত্যাহ। বটপত্র ইতি মাগ্না অতর্ক্যা শক্তি গুৎপ্রধান:

জীবিশনাথচক্রবর্তী

वीजः कात्रवः॥२॥

ভণপ্রবাহেণ রক্ত আদি ভণ পরস্পরমা বিভক্তং বিভক্তা দত্তং বীর্যাং স্ট্রাদিশক্তি র্যেন নঃ। অবিভগাভিসন্ধিঃ সত্যসন্ধরঃ ॥०॥
স মং ময়া মাহ্যা কথং জঠবেণ ভৃতঃ ইত্যাশ্চর্য্যা কারণং ছমেব জ্বহীতি ভাবং। নরু স্থাশিশী ময়ি কথমেবং জ্বে। তৃত্র
সভ্যমেব ছং শিশুবেবেত্যাহ। যুগান্তে প্রশান্ত বিচ্যা এক স্মিন্ পত্রে ভবান্ শেতে স্ম কিমর্থং মারাশিশুঃ মাং বাললালনাভ্যাসিনঃ
সাংসারিকা অপি লোকা ধ্যাভুং শক্রুবন্ধিতি কুপামর বালম্র্রিরিভার্থঃ। তৃত্র সমূচিত মধুর লীলামাহ অভিনুপানঃ স্বচরণালু ঠ-পানকর্তা সর্ব্যমেব স্থাং ত্যক্ত্ব। মচ্চরণ মাধুর্যে প্রস্বাধিণো নিমজ্জন্তি তদেত মুয়াপ্যাস্থাদ্যাস্থ্রবনীয়মিতি বুক্তিবেতি
ভাবঃ॥ ৪॥

हैहा दिष्टि ममर्थ इन नाहे ॥ २ ॥

বিভা। তুমি স্বয়ং নিজ্ঞির হইরাও গুণপ্রবাহ রূপে আপনার শক্তি বিভাগ করত তদ্ধারা এই বিস্বের স্থিতি ল্য় বিধান করিয়া থাক, প্রভো। তুমি সত্যসংকল্প এবং জীব সকলের ঈশ্বর, জীবগণের ভোগ নিমিন্তই ঐ রূপ বিধান কর, হে বিভো। তুমি এক হইলেও তোমা হইতে বিচিত্র ভোগ বিহিত্ত হওয়া অসম্ভব নহে, যে হেতু তোমার সহস্র শক্তি অত্যুত্ত্বা ও ॥

প্রভা! প্রলয় কালে এই বিশ্ব তোমার উদরে প্রবিষ্ট হইরাছিল, ইহাতে স্থামার সাশ্রহা বোধ হইতেছে যে, স্থামি তোমাকে কি প্রকারে ক্ষঠরে ধারণ করিয়াছিলাম, হে প্রহো! তুমি শিশু সত্য, কিন্ত তোমার শিশুত্বও আশ্চর্য্য মায়া, নচেৎ তুর্মি আপন পদাস্কৃত পান করিতে করিতে কি রূপে একাকী বটপত্তে শয়ন করিয়াছিলে ॥ ৪॥

সং দেহতন্ত্ৰ: প্ৰশনায় পাপাুনাং নিদেশভাজাঞ্চ বিভো বিভ্তয়ে।
যথাবতারাস্তব শ্করাদয় স্তথায়মপ্যাত্মপথোপলব্ধয়ে॥ ৫ ॥
যাক্ষামধেয় প্ৰবণাকুকীর্ত্নাৎ যৎপ্রহ্লাণ যৎস্মরণাদিপি কচিৎ।
খাদোহপি দদ্যঃ দ্বনায় কল্পতে কৃতঃ পুনস্তে ভগবন্ধু দর্শনাৎ॥ ৬॥

श्रीधवयामी ।

অথবান মরা অমপত্যান্তরবৎ জঠরে ভৃতঃ কিন্তু বরাহাদ্যবতারবৎ ইচ্ছেরা এবাবিভূতি। হাং দেহতল্পে দেহপরিকরঃ
স্বীকৃতমূর্ত্তিরিদ। পাপানাং হুটানাং নিদেশভালামাজ্ঞান্তর্ভিনাং বিভূতরে সমৃদ্ধরে আত্মপথোপলন্ধরে জ্ঞানমার্গপ্রদর্শনায়॥ ৫॥
অতস্তদর্শনাদহং কৃত্যথিমীতি কৈমৃত্যন্যায়েনাহ। বন্ধামধেরদ্য শ্রবণমন্ত্রীতনিক তন্ধাং কচিৎ কদাচিদ্পি। স্থানমন্ত্রীতি
স্থাদঃ স্বপচঃ সোহপি সবনায় সোম্যাগায় কল্পতে যোগ্যো ভ্রতি। অনেন পূক্ষাত্বং লক্ষাতে॥ ৬॥

ক্রমদন্দর্ভ:

এতাদৃশঞ্চ প্রাকট্যং কিম্থনিত্যরোহ ছমিতি। তত্ত্ব ছমিতার্ছেন সামান্যতঃ প্রয়োজনং বাে্জয়িছা বিশেষত আহে। যথেতি। তলাদিতি শেষঃ॥৫॥

্কচিৎ কদাচিৎ অপি নামধের শ্রবণাদি হেতোরিত্যেবারয়:। উত্তরায়রোধাৎ। অপিশনস্যাসদতেশ্চ। খাদত্বমত্র খতকক জাতি বিশেষগুমের। খানমত্তীতি নিরুক্তৌ বর্ত্তমান প্রয়োগাং। ক্রবাদবচ্ছীলর প্রাপ্তে:। কাদাচিৎক ভক্ষণে প্রায়াশিক বিব ক্ষা ক্রতি প্রয়োগঃ ক্রিয়েত। ক্রচির্যোগমপহরতীতি নাামেন ত্রিক্রাতে। অতএব খণচ ইতি টীকাকারা:। সদ্যঃ সবনার কল্লত ইতি। স্কুছ্চেবিতং যেন হরিবিত্যক্ষর ঘ্যং। বৃদ্ধঃ পরিকরতেন মোকায় গ্রমনং প্রতি। ইতিবং তত্র যোগ্যতায়াং ল্লাবস্তো ভ্রতীত্যর্থ:। তদ্তব্র জ্যানার হিল্পং প্রাণ্য তদাদ্যধিকারী স্যাদিতি ভাবং॥ ৬॥

গ্রীবিশ্বনাথ6ক্রবর্ত্তী

কিঞ্জ তব বভাব এবায়ং যৎরূপয়ৈৰ মবতবদীতাাহ দং দেহতন্তঃ। অন্য বাদকো যথা মাতৃক্কি প্রবিষ্টো মাতৃদেহাধীন তথাছমপি লীলয়া মম মাতৃদেহাধীন:। যথা দেহে তন্ত্রং বল্লাকার পরিচ্ছদো মৃদ্য স:। কিমর্থং তাই; পাপ্যনাং পাপানাং প্রশাস্ত্র নিদেশভাকাং ঘণাজ্ঞান্ত্বর্ত্তনাং বিভ্তথে ভক্তি জ্ঞানাদি সম্পত্তা। অয়মপি কপিলাবতারঃ শীয় ভক্তি জ্ঞানমার্গো-প্রক্রে॥৫॥

বদর্শনারোক: কৃতাথী তবতীতি কৈবৃত্য ন্যারেনাই যদিতি । প্রস্কাণ নমকার:। কচিদিতি কাদাচিৎকাদপি অবণাদিতার্থ: আদাহিপি অপচাহিপি সদ্য তৎক্ষণএব সবনার সোমযাগার করতে বোগ্যোভবতি। সোমযাগকর্তা রান্ধণইব পূজ্যো ভবতীতি ছর্জাত্যারস্তক প্রার্ক্ত পাপনাশো ব্যক্তিত:। যত্কাং শ্রীরাশগোস্থামিচরগৈ:। ছর্জাতিরেব সবনাযোগ্যমে কারণং মতং। ছর্জাত্যারস্তকং পাপং যৎ সাৎ প্রারক্ষমেব তদিতি॥৬॥

অথবা তুমি অস্ত অপত্যের ভায়ে আমার জঠরে ধৃত হও নাই, যেমন বরাহাদি অবতার তোমার ইচ্ছাবশতঃ হয়, তদ্রুপ তুমি ভূফদিগের দমন ও আদেশাসুবর্তি লোকদিগের সমৃদ্ধি তথা জ্ঞানমার্গ প্রদর্শন নিমিত্ত এই মৃতি আপন ইচ্ছায় অঙ্গীকার করিয়াছ ॥ ৫॥

হে ভগৰন ! শপচন যদি কদাচিৎ তোমার নামধেয় প্রায়ণ অথবা কীর্ত্তন কিন্তা তোমাকে নমস্কার অথবা তোমার দ্বার করে, তাহাঁ হইলে দেবাক্তিও তৎক্ষণাৎ শুচি হইয়া সোম্যাগের নিমিত্ত যোগ্য হয়, তোমার দর্শনে পবিত্র হইবে, এ, কথা আর বক্তব্য কি ? মতএব তোমার দর্শনে আমি কৃতার্থ হইয়াছি॥ ৬॥

অহোবত শ্বপচোহতো গ্রীয়ান্ যজ্জিহ্বাত্যে বর্ত্ততে নাম তৃত্যং।
তেপু স্তপ স্তে জূত্বুং সন্ধুরাগ্যা ব্রহ্মান্চু নাম গৃণস্তি যে তে॥ ৭॥
তং ত্বামহং ব্রহ্ম পরং পুমাংসং প্রত্যক্ স্তোত্স্যাত্মনি সংবিভাব্যং।
স্বতেজনা ধ্বস্তগুণপ্রবাহং বন্দে বিষ্ণুং কপিলং বেদগর্ত্তং॥ ৮॥

वीधतवामी।

তত্পপাদয়তি অহোবত ইত্যাশ্চর্যো। যস্য জিহ্বাথো তব নাম বর্ততে সচ বপচোহপি অতোহস্মাদেব হেতো প্রীয়ান্। যৎ যস্মাধ বর্ততে অত ইতি বা কৃত ইত্যত আহা তএব তপন্তেপঃ কৃতবন্তঃ। জুছবঃ হোমং কৃতবন্তঃ সন্ধ; তীর্থের সাতা আর্য্যা তএব সদাচারাঃ ব্রহ্ম বেদং অনুচঃ অধীতবন্তঃ। অস্ত্রাম কীর্তনে তপ আদান্তর্ভূতিং অতত্তে পুণ্যতমা ইত্যথঃ। বহা জন্মান্তরে তৈ অপো হোমাদি সর্বং কৃতমন্ত্রীতি তন্ত্রাম কীর্তন মহাভাগ্যাদেবাবগম্যত ইত্যথঃ॥ ৭ ৪০

প্রত্যক স্রোত্সি প্রত্যাহ্বতে আত্মনি মনসি সংবিভাব্যং সংচিন্তাং। বেদা গর্ব্তে যস্য তং॥৮॥

ক্রমসন্দর্ভঃ

তক্মাৎ সদ্য: দবনায় কয়ত ইতি বহুক্তং তদিশ ন কিঞ্চিৎ যতগুপ আদিকং দর্বং তল্লামগ্রহণমাত্রাগুত্রে স্যাৎ যতএব তদ্য তলাম গ্রহীতৃত্তপ আদি কর্ত্কেভ্যো গ্রীয়ত্ত্মপি স্যাদিত্যভিপ্রেত্যাহ অহোবতেতি। ব্যাথ্যাতু টীকায়াঃ প্রথম পক্ষগতৈব গ্রাহা॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥

ন্ত্রীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী

সদ্য: স্বনায় কল্পত ইতি বহুক্তং তদপি ন কিঞ্চিল্বত: সোম্যাগ কর্ড্ডোহ্প্যাধিল্যবেশ্য ফলতো ভবেদিতাহে অহা বতেত্যালগোদেশ্যানিত্য । যন্ত্য খপচন্য জিহ্বাথা জিহ্বাথা অথ্যে এব নতু সম্পূর্ণায়াং তস্তামিত্যমাক্তরে চিন্তি মিত্য । বর্জতেএব নতু বৃত্তমিত্যমংপূর্ণফুচারিতমিত্য । নাম একমেব নতু নামানীত্য । সংপূর্ণজিহ্বায়াং সংপূর্ণোচ্চারিতানি বহুনি নামানিত কিমুতেতি ভাব: । তুভাং তব জাং প্রীণ্যিত্বং বশীকর্ত্বং চেতি বা । অতএব স খপচো গরীয়ানতিশব্দেন শুকু উবতীতাল্তানিপি নামাত্মক্ষলমুপদেষ্ট্রং যোগালাং ধত্তে ইতি ভাব: । নত্ব তর্হি স খপচো যজাধ্যয়ন তপ আদিকং
করোছিতি তত্তাহ তেপুরিতি । তত্তৈকক্ত কা বার্ত্তা অক্তেহপি যে তব নাম গুণস্তি ত এব তেপুরিত্যবধারণং লভাতে অলেখাং তপঃ
সামন্ত্যসাল্যাণ্যদর্শনাৎ । এবং বিশেষামূক্তেং সর্ক্ষ্মেব তপঃ ভূত্বুং সর্ক্ষেবে যজেষু সল্পুং সর্কেবেব তীর্থেরু আর্যা। অপি ত
এব নাল্ডে বন্ধ বেদং তএব অনুচুর্ধীতবন্ধঃ । অনুচানঃ প্রবচনে সালেহধীতী শুরোন্ধ য ইত্যমরঃ । অত্র তেপুরিত্যাদির্ ভূতনির্দেশাং গুণস্তীতি বর্ত্তমান নির্দেশাং অল্লামানি গৃহ্মাণএব তপো যজাদনঃ সর্কে কতা এব ভবন্ধি নতু ক্রিয়মাণো নাপি কবিষান্ত্রকাংক্তে কথং পুনঃ কুর্যুরিত্যতএব ভক্তানাং কর্মস্বনিধ্যাহিপি জ্বেঃ। প্রোক্ষানিত লিড্ডপদ প্রয়োগেণ
সিদ্ধান্যেব তানি তপ আদীন্যপি তেন জানন্তি কিং পুনন্তংসাধন শ্রম্যতি ভাবঃ। অত্র গুণস্তীতি বর্ত্তমান প্রয়োগেণ নাম গ্রহণবিচ্ছেদ্রেব যদি স্যান্তলৈবৈবং স্যাদিতি তুন ব্যাথ্যেঃ। চিত্রং বিদ্ব বিগতঃ সক্কদাদ্দীত। যল্লামধ্যমধুনা স স্বহাতি বন্ধ
মিতি যল্লাম সক্তং প্রবাণ পুক্রশাহিপি বিষ্ট্যতে সংসারাদিত্যাদি বাক্যেয়ু সক্তংপদ প্রয়োগ্যাকোগাণে। । ৭ ॥

অত স্বামহমজা স্তোতৃং নৈব প্রভবামীতি কেবলং বন্দে ত্মিতি প্রত্যক্ স্লোতদি প্রত্যান্ধতে মনদি॥৮॥

হে দেব! যে ব্যক্তির জিহ্বাত্রে তোমার নাম বর্ত্তমান থাকে, দে শ্বপচ হইলেও এই কারণেই পূজ্য হয় কলতঃ যে সকল পুরুষ তোমার নাম গ্রহণ করিয়া থাকেন তাঁহারাই তপস্তা করিয়াছেন, তাঁহারাই অগ্নিতে হোম করিয়াছেন, তাঁহারাই সদাচার, তাঁহারাই বেদ অধ্যয়ন করিয়াছেন অর্থাৎ তোমার নাম কীর্ত্তনেই তপস্যাদির সিদ্ধি হয়, অতএব তোমার নাম সংকীর্ত্তন করিয়া প্রিত্ত হন্॥৭॥

অপর হে ঈশ ! তুমিই পরত্রশা তুমিই পরম পুরুষ, তুমিই প্রত্যাহৃত মনে চিন্তুনীয় হইয়া থাক, তোমারই স্বীয় তেজঃ দারা গুণপ্রবাহ বিনফ হয়, প্রলয়কালে তোমারই গর্ত্তে বেদ সকল অবস্থিত ছিল, তুমিই কপিল নামধারী বিষ্ণু, অতএব আমি তোমাকেই প্রণাম করি ॥ ৮॥ শ্ৰীমৈত্তেয় উবাচ।।

প্রতিতো ভগবানেবং কপিলাখ্যঃ পরঃ পুমান্। বাচাহবিক্লবয়েত্যাহ মাতবং মাতৃবৎসলঃ॥ ১॥ খ্রীভগবামুবাচ॥ •

মার্গেণানেন মাততে স্থদেব্যেনোদিতেন মে। আস্থিতেন পরাং কাষ্ঠামচিরাদবরোৎস্যাসি ॥১০ শক্ষৎসৈত্মতং নহং জুকং যদু ক্রাদিভিঃ। মেন সামভয়ং যায়ামৃত্যুমুচ্ছস্ত্যুতি দিলঃ॥ ১১ ॥
শ্বিমতেয় উবাচ॥

ইতি প্রদর্শ্য ভগবারুশতীমাত্মনোগতিং। স্বমাত্রা ব্রহ্মবাদিন্যা কপিলোহকুমতো যুয়ো॥ ১২॥

শ্রীধরস্বাদী।

অবিক্লবয়া গম্ভীরগ্রা॥ ১॥

তে তব স্থগেব্যেন স্থাং সেব্যেন মে ময়া উদিতেন আছিতেন অষ্টিতেন পরাং কাঠাং জীবন্ধুক্তিং অব্যোগ্যাসি প্রাণ্যাসি ॥১০ যায়াঃ যাস্যাসি অত্থিদঃ মন্মত মবিশ্বাংসঃ॥ ১১॥

পারুমত: অনুজ্ঞাত:॥ ১২॥

ক্রমসন্ধর্ড:।

স্থানেব্যেন ভক্তিযোগস্য তথোক্তদ্বাং ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ উপতীমিত্যত্র সতীং তামিতি কচিং ॥ ১২ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

বিক্লবয়া সগদাদয়া যতো মাতৃবৎসলঃ ॥ ১ ॥

স্থানেব্যেন ভক্তিবোগেনেতার্থঃ। আস্থিতেন অয়ন্তিতেন পরাং গ্রেমসিদ্ধিং অববোৎস্যাসি প্রাঞ্চাসি নিত্য সিদ্ধ মাতৃ ভাবোহপি ভাং তথোক্তি লেকিশিক্ষার্থমের জ্বেয়া॥ ১০॥

मङ् मम । योबाः योमानि ॥ >> ॥

অন্ত্ৰমতৌ হেতু: ব্ৰহ্মবাদিন্যা স্পুত্ৰমণীনং ব্ৰহ্মিব ব্ৰীমি জানামি চ। তং কথং স্বেচ্ছয়া গৃহে ব্ৰিকৃং পেচ্বামীতি বিচাৰেণ ॥ ২২॥

মৈত্রেয় কহিলেন, পরম পুরুষ ভগবান্ কপিল এই প্রকারে স্তত হইয়া স্নেছ রুশতঃ গদগদ বচনে মাতাকে কহিলেন ॥ ৯॥

মা ! আমি এই যে পথ উপদেশ করিলাম ইহা আপনকার পক্ষে স্থাসেব্য আপনি ইহার অনুষ্ঠান করুন, ইহার হারা অচিরেই জীবমুক্তি প্রাপ্ত হইবেন॥ ১০॥

হে মাত: ! ব্রহ্মবাদি মুনিগণ আমার এই মতের অমুষ্ঠান করেন, আপনিও ইহাতে প্রহা করুন, তাহা করিলেই অভয় স্বরূপ যে আমি, আমাকে প্রাপ্ত হইবেন। মা! যাহারা আমার এই মত অবগত নহে তাহারা মৃত্যুমুখে পতিত হয়॥ >> ॥

নৈত্রেয় কহিলেন, ভগবান্ কপিলু আপনার কমনীয় মার্গ প্রদর্শন করিয়া ব্রহ্মবাদিনী মাতার অমু-মতি গ্রহণ পূর্বাক প্রস্থান করিলেন॥ ২২॥ সাচাপি তনয়েত্রেন যোগাদেশেন যোগযুক্। তিমিন্ধাশ্রম আপীড়ে সরস্বত্যাঃ সমাহিতা॥ ১৩ অতীক্ষাবগাহ কপিশান্ উটিলান কুটিলালকান্। আত্মানশ্বোগ্রতপদা বিভ্রতী চীরিণং কুশং॥১৪॥ প্রজাপতেঃ কর্দ্দমস্ত তপোযোগ বিজ্ঞিতং। স্বগাহস্থাসনৌপদ্যং প্রার্থ্যং বৈমানিকৈরপি॥ ১৫ প্রঃফেণনিভাঃ শয্যা দান্তা রুক্সপরিচ্ছদাঃ। আদ্নানিচ হৈমানি স্থাপশিন্তরণানিচ। স্বচ্ছ ক্টিক্ড্ডেয়ে মহামারক্তেয়্চ। রত্নপ্রশীপা আছান্তি ললনারত্বসংযুতাঃ॥ ১৬॥

শ্রীধরস্বামী।

সরস্বত্যা আপীড়ে পুশমুকুটতুল্যে। সরস্বত্যেতি পাঠে মুকুটেনের সংবেষ্টিতে বিশুসরসি সমাহিতা বভূব ॥ ১৩ ॥
কথংভূতা সতী সমাহিতা তদাহ অভীক্ষং ত্রিষ্বণমবগাহঃ স্থানং তেন কপিশান্ পিশঙ্গান্ স্বতএব কুটিলান্ অলকান্ কেশান্
তথা আত্মানঞ্দেহং চীরধারিণং কুশং চ বিভ্রতী সতী॥ ১৪ ॥

প্রজাপতে: কর্দমদ্য তপোযোগাভ্যাং বিজ্ঞিতং অতিশয়িতং খণাহ স্থাং হিছা পুত্রভূতেশ্ববিবহাতুর। সতী বদনং কিঞ্চিনির্বাচ্যং শোকব্যাকুলং চকাবেতি ষঠেনাধ্য: ॥ ১৫ ॥

যত্ত্ব গাহ স্থ্যে ক্ষীরফেণনিভাঃ মৃত্ব শুলাঃ শ্যা আন্তরণানি আভান্তি। দত্তব্টিত মঞ্চকাশ্চ স্থর্ণময়াঃ পরিকরা আসনানি পীঠা-দীনি স্মুপাশান্তরণানি যেমু॥ ১৬॥

ক্ৰমদন্দৰ্ভ:

সাচেতি যুগাকং। সরস্বত্যেতি পাঠে আপীড়বতি অ্মিন্ বিকুসরসীত্যর্থ: প্রক্ত্যা অভিরূপ ইতিবভৃতীয়া ॥ ১৩ ॥ অভীক্ষাবগাহেত্যে অভীক্ষাহেতি স্বামিপুণারণ্যয়োশভেঃ॥ ১৪ ॥

প্রজাপতেরিতি ঘট্কং। বিব্ধায়্চরা: বিব্ধায়্চর্যা: কিং তৎ কিষপি অনির্কাচনীরং। অতিমলিনমিতি যাবং। ভত হেতু: পুরেতি॥ ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯॥

শ্ৰীবিশ্বনা পচক্ৰবৰ্ত্তী।

আপাড়ে পুষ্পমুকুটতুল্যে॥ ১৩॥

অভীক্ষং তিবৰণং অৰগাহঃ স্থানং । কুটিলালকান্জটিলান্। আয়ানং দেহং চ চীরিণং চীরধারিণং ॥ ১৪ ॥ - প্রজাপতেরিত্যাদীনাং বদনং কিঞ্দিনিবাচ্যং শোকব্যাকুলং চকারেতি ৃষ্ঠেনাৰয়ঃ । ধাৰিষ্টমাক্ষানং দেবছুতিং ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

· দেবহুতিও তনয়োক্ত যোগবন্ধ দারা যোগযুক্ত হইয়া সরস্বতীর পুষ্পামুকুটভূল্য সেই আশ্রমেই সমাধি আরম্ভ করিলেন॥ ১৩॥

ত্রিষবণ অবঁগাহন করাতে ভাঁহার কৃষ্ণবর্ণ কৃটিল কুন্তুল সকল কপিশ বর্ণ হইল এবং উপ্র তপস্থায় চীরধারী দেহ অভিশয় কুশ হইতে লাগিল॥ ১৪॥

অহে বিছুর। প্রজাপতি কর্দমের স্বীয় গার্হস্থাশ্রম তদীয় তপস্থা এবং যোগদারা বৃদ্ধিশীল হওয়াতে অনুপম হইয়াছিল, বিমানচারিরাও তাহা প্রার্থনা করিত ॥ ১৫ ॥

ফলতঃ ,তাঁহার গৃহের শয্যা সকল ছগ্ধফেণ তুলা শুল, মঞ্চ সকল দুন্তনির্মিত, তাহার উপরে আবার মর্ণময় পরিচছদ থাকিত, অপর পীঠাদি আসন সকল মধর্ণ নির্মিত তাহাতে পাবার স্থপর্শ আসন সকল বিস্তৃত থাকিত। অপিচ গৃহের ভিত্তি সকল নির্মান্ত মানত ও মরকত মণিতে খচিত ছিল এবং সর্বাদা রক্তময় প্রদীপ প্রকাশমান থাকিত, আর তত্ত্বছ লীলনা সকল নানা রত্বালহারে অলঙ্কতা থাকিত॥ ১৬॥

গৃহোদ্যানং ক্স্মিতিরম্যং বহুব্যরক্রান্থ । কুজ্বিহঙ্গমিথুনং গায়মাত্মধ্বতং ॥ ১৭ ॥
যত্র প্রবিষ্টমাজানং নিব্ধাসুচরা জগুঃ। বাপ্যামুৎপলগৃদ্ধিভাং কর্দমেনোপলালিতং ॥ ১৮ ॥
হিছা তদীপ্রিত্তম মপ্যাথগুল্যোযিতাং। কিঞ্চিক্রার বদনং পুদ্রবিদ্ধেষণাভুরা ॥ ১৯ ॥
বনং প্রবিদ্ধে পত্যাবপত্যবিরহাত্র। জ্ঞাততত্বাপ্যভূম্ব বেংদ গৌরিব বৎদলা ॥ ২০ ॥
তমেব ধ্যায়তী দেবমপত্যং কপিলং হরিং। বভ্বাচিরতো বৎদ নিঃস্পৃহা তাদৃশে গৃহে ॥ ২১ ॥

্ ঐধিবসামী।

वङ्ख्तिमत्रक्रदेम त्रमार ॥ ১१ ॥

यজোদ্যালে প্রবিষ্টমান্মানং দেবছুতিং ॥ ১৮॥

আৰ্থিল ইক্স: তদা যোধিত: তাগামপি ঈপ্তিত্তমং প্ৰাপ্ত নিষ্ঠতমং তদ্ধিৰা তত্তাভিমানং ত্যক্তা ॥ ১৯॥

অস্ক্রিয়োগস্য গুঃসহতামাই বনমিতি। নতে বংসে বংসলা গেইবিবাভূং॥ ২০॥

विवहकुछ शानक्लगाइ। निन्त्रशानिकामना। वर्ग दह विद्वत ॥ २३॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

ভগবতি বাংসল্যাপ্যায়াঃ প্রীতেঃ দর্কোপমর্দ্ধিকমাহ বনমিতি। জ্ঞাতত্ত্বাপি গুদ্ধাস্থাকরণহাৎ শ্রবণ সম্য এব তত্ত্বৎ সাধন সাধ্যাবিভাববত্যপি ॥ ২০॥

তমেশেতি সার্দ্ধ চতুকং। তত্র পূর্বে বর্ণিত গৃহত্যাগোহণি তৃথিব জাত ইত্যাহ তামিতি। ২বিং কণিলং ধ্যায়ন্ত্রী কণিল কপেণৈবাবিভূতিং অরম্ভী তঞ্চাপত্যং ধ্যায়ন্ত্রী অপত্যত্বেনৈব অরম্ভীত্যথা॥ ২১॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ভগৰতি বাংসল্যাপ্নায়াঃ প্ৰীতেঃ সর্ব্ধোশমর্দিকমাহ বনমিতি। পত্যে কর্দ্ধমে বনং গতেহপি যদগতাংখীক্যমাণা জীবস্ত্যা-সীং ক্তস্যাপি বিবহেণাভূরেতি হস্ত ভোঃকে কুত্র বর্ত্তক্ত পশ্যন্ত মদপতাংশীল্লমেন পনাবর্ত্তশস্তাং ভবস্তো নোচেদহং ন জীবি-যামীতি বিলপত্তী গৌরিবেকি সর্প্রমেব তত্ত্ত্তানং সহবৈব বিশ্বত্বতী বেতি ভাবং॥ ২০॥

বিব্যাহাথধানি ফলমাহ ত্রমেবেতি॥ ২১॥

আর তাঁহার গৃহের সমীপবর্ত্তি উদ্যান কুস্থমিত বহু বহু অমর ক্রম দাবা রমণীয় ছিল, তাহাতে বিহঙ্গ মিধুন বিদিয়া মনোহর কুজন ও মৃত মধুকর সকল স্মধুর স্বরে গান করিত॥ ১৭॥

ঐ উদ্যানে উৎপল গন্ধ বাসিত সরোবরে দেবহুতি যখন প্রবেশ করিতেন তখন দেব অতুচর গন্ধবিশণ তাঁহার যশো গান করিত, অপর তাঁহার আমী কর্দিস সর্বাদাই তাঁহার রক্ষণাবেক্ষণ করি-তেন। ১৮॥

ভাতএব ঐ গার্ছস্থ ইন্দ্রোসিৎদিগেরও প্রার্থনীয় ছিল কিন্তু দেবছুতি অনামাসেই তাহা পরিত্যাগ করিলেন, তনিমিত্ত তাহার কোভিমাত্র হইল না, কেবল পুত্র বিচ্ছেদ জন্য আত্রা হওয়াতে তাঁহার বদ্দা কিঞ্ছিং বিষয় হইল ॥ ১৯॥

একেত তাঁহার প্রতি সন্ধাস আশ্রম গ্রহণ পূর্বাক বনে গমন করিয়াছিলেন তাহাতে আবার সেই সময় অপত্য বিরহ উপস্থিত হইল অতএব যদিও ভাঁহার তত্ত্তান হইয়াছিল তথাচ বৎস বিনক্ত হইলে ব্ৎস্লা ধেনু যেমন আছুরা হয় তক্ষপ তিনিও কাতরা হইয়াছিলেন॥ ২০॥

বংস বিজুর! দেবছুতি আপনার তন্য সেই ভগবান কপিলেরই ধ্যান পরায়ণা হইয়াছিলেন ভাহাতেই অচিরে তাঁহার তাদৃশ গৃহেও নিস্পৃহতা হয়॥ ২১॥ ধ্যায়তী ভগৰজপং যদাহ ধ্যানগোচরং। স্থতঃ প্রসম্বদনঃ সমস্তব্যস্তচিন্তয়া। ভক্তিপ্রবাহযোগেন বৈরাগ্যেন ব্লীয়সা। যুক্তাসুষ্ঠান জাতেন জ্ঞানেন ব্রহ্মহেতুনা। বিশুদ্ধেন তদাস্থানিমাত্মনা বিশ্বতোমুখং। স্বাসুস্থ্যা তিরোস্থত মায়াগুণবিশেষণং।

श्रीधतश्रामी।

ততঃ স্থতঃ কণিলো যদাই তত্তগবতো রূপং ধ্যায়ন্তী তদা আস্থানঞ্চ বিশ্বতো মুথং সর্ব্ধগতং ধ্যায়ন্তী ব্রহ্মতির্বভূ-বেতি পূর্কবৈদ্যবাস্থ্যক:। একেন ধ্যায়ন্তী বিশুকেনাত্মনা মনসা বিশুকেন কারণান্যাহ। ভক্তিপ্রবাহরণে বোগেন বৈরাগ্যেন চ যুক্তাস্থ্যানেন জাতং যজ্জানং তেনচ যুক্তাস্থানঞ্চ গীতাস্কং। যুক্তাহার বিহারস্য যুক্তচেষ্ট্রস্য কর্মস্থাবিবাধস্য যোগো ভবতি হংখহা ইতি ব্রহ্ম হেতুনা ব্রহ্মপাদকেন। বিশ্বতো মুথতে হেতুং স্বাস্থ্ত্যা স্বর্গ প্রকাশেন তিরোভূতং

क्रममन्दः।

কথং বা কীদৃশবেদ বা জ্ঞাততবাপাভ্তত্ত্বাহ ধ্যায়তীতি সাহৈছিলিভি:। জ্ঞানকণনসহয়ে ব্ৰহ্মণাবস্থিতমতি বঁভূব। ভক্তি কথন সময়ে ভগবত্যবিস্থিতমতির্কভ্ব। কিন্তু ব্ৰহ্মজ্ঞান্যশি তত্ত্ব ভগবজ্ঞানোপোন্ধলকন্ত্রে জাত্মিতি জ্ঞোং। ব্রহ্মভূতঃ প্রসন্ধা ব্যেত্যাদি গীতাদ্যস্থারাৎ। তথৈব ভগবস্তং বিশিনষ্ট। আত্মসংশ্রে। ব্রহ্মণোহি প্রতিষ্ঠাহমিতি জ্ঞীণীতামুসারাং। ভঙাশ্রঃ সচিন্ত্রস্য সর্কাগদ্য তথাত্মন ইতি জ্ঞীবিষ্ণুপ্রাণামুসারাচ্চ ব্রহ্মণাবহানে হেতুঃ জ্ঞানেনেতি। অদ্য বিশেষণং যুক্তামুষ্ঠান জাতেন ব্রহ্ম হেতুনেতিচ। ব্রহ্মাবিভাবকারণেনেত্যুর্থ:। পূর্বং সাধনং বৈরাগ্যোণিতি বিভ্রেনেত্যাদি চ। আত্মানং ভ্রম্ভবিং বিশেষতঃ ভ্রেন অবিদ্যাম্পর্শ সংভাবনামাত্র হীনেন। আত্মনা প্রমাত্মনা ত্রাদায্যেন বিশ্বতোমুগং সর্কাগতং ধ্যায়ন্তীতি জীবাত্মনঃ ভ্রম্বত ক্রার্মাহ। স্বায়ুভূত্যেতি। ভগবত্যবস্থানে হেতুভক্তিপ্রবাহ্যোগেনেতি। মন্ত্রণ শ্রতিমানেগেতাদি রীত্যা প্রেম প্রবর্তিত সম্ভত মনোগত্যেত্যুর্থ:। তৎপূর্ব্বাধনং সমন্ত ব্যস্ত চিন্তা। অধ্য ব্যতিরেক বিচার পূর্নেকং যন্ত্রগবন্ধপি প্রসন্ধবদনঃ স্কৃতে মনোগতোত্যুর্থ: ধ্যানবিষয়বেনোপদিষ্টিং তদেবহি

<u>এবিখনাথচক্রবঁরী</u>

ততক হস্ত হস্ত বিরহাত্বালা মম মনো ভগবতি প্রভাবং ন জহাতি তদহং কণ্যেকান্তে উপবিশা প্রভাবং বিহায় মনঃ প্রণিধায় তত্বকং ধ্যানমোভাস্যামীতি সা দ্যাবিত্যাহ ধ্যায়তীতি। ভগবজপং ধ্যায়তী ব্রহাতি ভগবত্যবিস্থিত রাষীদিত্যবয়ঃ। ভকেঃ প্রবাহরপেণ যোগেন যুক্তং সমূচিতং যদস্ঠানজাতং তেন। যরা গীতাস্কং। যুক্তাহার বিহারস্য যুক্তচেইস্যা কর্মায়্র । যুক্তস্থাবেলিগ্যা থোগো ভবতি ছঃবহেতি। যুক্তায়্রালং তথাজ্ঞানেতেন বৈরাগ্যেণ তথা জ্ঞানেন ব্রন্ধহেতুনা ব্রন্ধায়্রতবস্য হেতুনা গুরুভক্তবৃত্যেনেতার্থঃ। নতু ব্রন্ধরপেণ ঐক্য পদার্থ জ্ঞানেনেতার্থঃ। অত এব নিগুণিয়ারিগুদ্ধন তদাস্থানং তস্য ভগবত আয়ানং স্বরূপং বিশ্বতো দশ দিক্ষেব মুখং যদ্য তথাভূতং ক্রি প্রাপ্তং সায়ভ্তা সায়া যা গুণবিশেষা যত্র যাম্বথাস্যার্থা পশাস্তী ব্রন্ধণি ভগবতি আয়্রনাং জীবানাং সংশ্রে প্রমাম্বনীতি ক্রনেণ জ্ঞানিনাং ভক্তানাং যোগিনাঞ্চ প্রাপ্যে বস্তান পরিপূর্ণেইক্রিনি স্বরূপে অবস্থিতা মতির্যসাঃ সা। তেন ভক্তিপ্রবাহিষোগেনেভানেন প্রবাহ পদ ব্যক্তিতা মলালাক্তিমাত্রেবিত্যুক্তলকণা ভাবতকি গুদ্যা অভ্নেব। তথা জ্ঞানিনাং ভৃতীয়ভূমিকাবিনা ভূতং যৎ স্ক্রপণার্থ তংপদার্থিয়ো জ্ঞানং তন্তক্তিমতে উপাসকোপান্যয়োভক্তলগবতো জ্ঞানম্প্রজ্ঞাতএব। যতৃকং জ্ঞান বৈরাগ্যয়ো ভিক্তি প্রবেশাহোগিতেনিতিত তথৈবাহাস্যোগিনাং যৎ সপ্তমং ধানিং ত্রবাসভকে স্থৃতীয়্রমকং প্রযোপ্র্যক্ত মেবেতি

শে বাহা হউক. দেবহুতি তদনন্তর আপনার তনয় প্রান্ত্রদন কপিল, ভগ্নানের ধ্যানগোচর রূপের বিষয়ে যাহা যাহা কহিয়াছিলেন, তাহা সমস্ত ও ব্যস্ত ভাবে দিন্তা করিয়া ধ্যান করিতে লাগিলেন এবং ভক্তিপ্রবাহ রূপ যোগ, প্রবল বৈরাগ্য, পরিমিত, আহার বিহারাদির অমুষ্ঠান, তথা ব্রহ্মাপাদক জ্ঞান এই সকল দারা বিশুদ্ধ মনে সর্ব্বগত দেই আঁক্মার ধ্যান ক্রিতে লাগিলেন, ধাঁহার মায়াগুণকৃত পরিচ্ছেদ স্বরূপপ্রকাশ দারা তিরোভূত হয়। বৎস বিহুর! প্র দিবিধ ধ্যান দারাই

ব্দাণ্যবস্থিতমতি ভগৰত্যাত্মদংশ্রয়ে ॥ ২২ ॥
নিরন্ত জীবাপভিষাজীনক্রেশাপুনির্তি: । নিত্যাক্র সমাধিছাৎ পরার্ত গুণভ্রমা।
ন সম্মার তদাত্মানং স্বপ্নে দৃষ্টমিবোথিত: ॥ ২৩ ॥
তদ্দেহ: পরত: পোষোহপ্যকৃশশ্চাধ্যসম্ভবাৎ । বভৌ মলৈরবচ্ছন্ন: সধুম ইব পাবক: ॥ ২৪ ॥

श्रीधतवाभी।

মায়াগুলৈ বিশেষণং পরিচেছদো যদ্য কথস্তৃতে বন্ধণি আত্মনাং জীবানাং দংশ্রের ভগবতি ॥ ২২ ॥

ততা জীবমুক্তিমাহ সাহৈত্তি। তদাচ নিবৃত্তা জীবাপত্তি জীবভাবো মস্যাঃ তদ্যা ভাব স্তবং তত্মাদিগত ক্লেশা প্রাপ্ত নিবৃতিশ্চ সতী আফ্রানং দেহং ন সত্মার ইত্যুত্তরেণাম্বয়ঃ। নত্ন তথাপি গুণীনাং বিদ্যমানত্বাং কথমত্মবশং তত্ত্বাহ নিত্যার্কঢ়ো লক্ষপ্রতিষ্ঠঃ সমাধি যস্যা অস্যাভাব স্তবং তত্মাং। প্রাবৃত্তঃ শাস্তো গুণনিমিত্তো এমো যস্যাঃ সা॥২৩॥

পরতঃ পরাভিবেব কর্দমস্থ বিদ্যাধরীতিঃ পোষঃ পোষণং হস্য। আধিম নোগ্লানি স্তদসম্ভবাদকৃশ:। মলৈরবচ্ছলোছ্শি বড়ো॥ ২৪॥

ক্রমদন্দর্ভ:।

স্বাসনাহসারেণ প্রেমফল ত্যাহ্ছিত্মিতি ভাব:। তথাপ্যাহ্সঙ্গিকত্যা জ্ঞানহেতুহমপি উস্বৈধ্ জ্ঞো: ক্তিংভ্কি মুদ্দ্যেত্যাদে:॥ ২২॥

তদানীস্থনীং তদবস্থামাহ সার্ট্রেভি:। তত্র নিরুত্তেতি সার্দ্ধকং। জীবাপত্তি লি স্পারীরাধাস:॥ ২৩ ॥

ন কেবলমেতাবং কিন্তু তদ্দেহশচারূশোহভূং। ়কীদৃশোহিপি তরাহ পরত ইতি। অরুশতে হেতু; স্বাধ্য সন্তবাদিতি। ভগবদাবেশানন্দেনেতি ভাবঃ। অতএব বভৌ কীদৃশোহিপি তরাহ মলৈরিতি। অপীতি গোজ্যং। তর দৃষ্টাস্থঃ সধ্ম ইতি॥২৪॥

শ্ৰী বিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী

দেবহুত্যা জ্ঞানিনাং তজ্ঞানং যোগিনাং ধ্যানং চ সারক্ষ ইব সার ছগিতি ন্যায়েন গৃহীয়া স্বান্ধ্রেনায়াং ভক্তাবস্তর্ভাবিত মত-এবোক্তং জ্ঞানেন এক্ষতেত্নেতি যদাহ ধ্যানগোচরং স্কৃত ইতি চ॥ ২২॥

ততণ্চ জনমত্যাশু যা কোষ মিত্যুক্তলকণং ভক্তেনামুনজিকঞ্চ কলং তদ্যামুদ্ধু মিত্যাহ। নির্ভা জীবদা জীবান্ধনঃ আপি ভিনাপজ্ঞপা অবিদ্যা যায়ান্তম্যা ভাৰ ক্তৰং তলাং ক্ষীণক্লেশা অতএবাপ্ত নির্ভিঃ। যথা ভগবন্ধান্তথাং স্বরূপতএব দা অবিদ্যানহিতা তদ্পি তথোক্তির্থনাত্মা অপহত পাপ্যেতিবং। ভক্তানাং মতে ধ্যানানল মোহএব সমাধি ক্ষাত ইতি তদ্যা নিত্যাক্ষ্য সমাধিত্মাং প্রাবৃত্তঃ শান্তঃ গুণেষু বিষয়েৰু ভ্রমো ভ্রমণং প্রাটনং ধ্যাঃ দা আত্মানং দেহং॥ ২০॥

তদানীস্তনীং তদবস্থামাহ তদ্যা দেহ: পরত: পরাভিরেব কর্দমস্ট বিদ্যাধরীভি: পোদং পোষণং যদ্য দ:। আধি মানিদী ব্যথা তদসস্তবাত্তগবদাবেশানন্দাদরূশক। নির্তি রতিষ্কুলং করণীতি বৈদ্যকোক্তে:॥ ২৪॥

জীবগণের আঞায় স্বরূপ যে ভগষান ব্রহ্ম তাঁহাতে দেবহুতির বুদ্ধি অবস্থিত। ইইল ॥ ২২ ॥

তিমবিদ্ধন তাঁহার জীবভাব নির্ত হওয়াতে কেশ মোচন ও নির্তি লাভ হইল। অপর তাঁহার সমাধি লক্ষপ্রতিষ্ঠ হওয়াতে গুণ জন্ম ভ্ৰমও দূরীভূত হইয়া গেল, স্তরাং যেমন স্ত্রোথিত পুরুষের স্থাদৃষ্ট বিষয়ে স্মৃতি হয় না, তুাহার ন্যায় তখন তাঁহার স্বীয় দেহ সারণ হইল না॥ ২০॥

কিন্তু তাঁহার দেহ কর্দমস্ট বিদ্যাধরীগণ কর্ত্ক পোষিত হইতে লাগিল, মনঃগ্রানি না থাকাতে তাহা অকুশই রহিল, অতএব মল বারা আছের হওয়াতে সধ্য পাবকের ভায় দীপ্তি পাইতে লাগিল ॥ ২৪ ॥

স্বাসং তপোযোগময়ং মুক্তকেশং গতাম্বরং। দৈবগুপ্তং ন বুবুধে বাস্থাদেবপ্রবিষ্টিরিঃ ॥ ২৫ এবং সা কপিলোক্তেন মার্গেণাচিরতঃ পরং। আত্মানং ব্রহ্মনির্বাণ্যং ভগবন্তং তমাপ হ ॥ ২৬॥ তদ্বীরাসীৎ পুণ্যতমং ক্ষেত্রং ত্রৈলোক্যবিশ্রুতঃ। নাম। দিম্পদং যত্র সা সংসিদ্ধিমুপেয়ুবী ॥ ২৭ তিমাস্ত্রগোগবিধুত মার্ল্যং মর্ল্যামভূৎ দ্বিৎ। শ্রোতসাং প্রেরা সৌম্য সিদ্ধিদা সিদ্ধেদেবিতা ॥ ২৮॥

टीधत्यामी।

रेन्त धर्थः यांत्रज्ञ कर्षांशालिङः॥ २०॥

নিকাণং নিতামুক্তং॥ ২৬॥

হে বীর হে বিছর। উপেযুষী প্রাপ্তা॥ ২৭॥

হে সৌন্য তদ্যান্তমন্ত্রং শ্বীবং ধরিদভূৎ। কথং ভূতং যোগেন বিধুতা বিলীনা মার্ত্তা দৈহিকা ধাতুমলা যদ্য ॥ ১৮ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ

দৈবেন শ্রীবাস্থদেবেনৈব গুপ্তং। কিমজিভোহবতিনোপসন্নানিতি ন্যায়েন ॥ ২৫ ॥

প্রকাশ বিশেষেণ প্রমাত্মাথাঃ অন্ধাথ্যক ভগবন্তং মহাবৈক্ঠনাথ্মবাপ। তং চ নির্বাণিং সংসাব হঃথ নির্বিত পূর্ব্বকং যথা-স্যাত্তথা অবাপেত্যর্থঃ। তদাভাসস্যাপি তদানবস্থিতেঃ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥

শ্রীক্পিলদেববজ্ঞপত্তিবেশ মহাবৈকুগছিতোহপি লোক্ষিতারার্থং স্বদেহং দর্মত ভ্রমণ্ডীতি লোক প্রসিদ্ধং স্বিজ্ঞপন্সাদ্য স্বস্থা তদ্ধিষ্ঠাত্তী ভূতা পৃথিব্যামপি বৃষ্ছ স্থিতেত্যাহ তদ্যা ইতি ॥ ২৮॥

ঐবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

দৈৰ্ভপ্তং ভগ্ৰতা রক্ষিতং॥ ২৫॥

পরং শ্রেষ্ঠমাত্মানং ভগবস্তং বৈকুণ্ঠনাধং। নত্ন সা কিং নির্ব্ধাণং ন প্রাপ তত্ত্রাহ তস্যা ভগবানের ব্রহ্ম নির্ব্রাণ ইত্যাহ ব্রহ্মতি।
যথা অধ্যাক্ষজালন্তমিহেত্যাম্মে তবুন্ধ নিব্ধাণ স্থং বিছ্বুধা ইতি সপ্তমোক্তে ব্রন্ধ নির্বাণপদবাচ্যং তং কপিলমের স্বপ্পশ্র কৈপিল
বৈকুণ্ঠে প্রাপ॥ ২৬॥

८६ चीत विष्य ॥ २१॥

८६ সৌম্য তদ্যান্তরত∫ং শরীরং স্রিদভূৎ। কীদৃশং যোগেন বিধৃতা বিলীনা মার্ত্তা ধাতৃমলা যঁন্য তৎ ॥ ২৮ ॥

ভাঁহার তপদ্যা ও যোগযুক্ত অঙ্গ কথন মুক্তকেশ অথবা বিগত বদন হইলেও ভগবান্ বাহ্নদেবে ভাঁহার চিত্ত নিয়ত সংলগ্ন থাকাতে তিনি তাহা জানিতেও পারিতেন না, ফলতঃ তাঁহার শরীর আরক্ষ কর্মেতেই রক্ষিত হইতে লাগিল ॥ ২৫ ॥

হে বিছুর ! দেবহুতি এইরূপে কপিলোক্ত মার্গ দারা শচিরেই নিত্যমূক্ত পরব্রক্ষ আত্ম স্বরূপ দেই ভগবানকে প্রাপ্ত হইলেন ॥ ২৬ ॥

বংগ! তিনি যে হানে সিদ্ধিপ্রাপ্ত হয়েন সে স্থান সিদ্ধিপদ নামে ত্রিলোক বিশ্রুত পুণ্যত্ত্ব ক্ষেত্র হইয়াছে ॥ ২৭ ॥

ত্বপর, তাঁহার সেই শরীর যোগদারা যাহার ধাতুমল বিলীন হয় তাহা নদী হইয়া রহিয়াছে। হে সোমা ! ঐ নদী সকল শ্রোতখতীর প্রেষ্ঠা ও সিদ্ধিদায়িনী, সিদ্ধণণ সর্বদা তাহার সেবা করিয়া থাকেন ॥ ২৮॥ কপিলোহপি মহাযোগী ভগবান্ পিতৃরাশ্রনাৎ। মাতরং সমসুজ্ঞাপ্য প্রাপ্তদীচীং দিশং যথো ॥২৯॥
দিরচারণগন্ধবৈষ্ নিভিশ্চাপ্সরোগণৈ:। স্ত্রুয়মান: সমৃদ্রেণ দত্তার্ছণনিকেত্ন:॥ ৩০॥
আন্তে যোগং সমাস্কায় সাংখ্যাচার্যৈরভিউ তঃ। তারাণা মিপ্লোকানাম্পশাস্তৈ সমাহিত:॥ ৩১॥
এতিরিগদিতং তাত যথ পৃষ্টোহহং তবান্য। কপিল্গ্যাচ সন্থাদে। দেবছুতেশ্চ পাবন:॥ ৩২॥
য ইদমন্ত্র্ণাতি যোহভিধতে কপিল্মুনে মতি মান্ধবোগগুছং।
ভগবতি কৃতধীঃ স্থপ্তিকতাবুপল্ভতে ভগবৎপদারবিদ্ধং॥ ৩০॥

क्षित्रवामौ।

কপিলো ব্যাবিভূকেং তদেব প্রপঞ্চরতি কপিলোহপীতি ব্রিভি:। স্মাগ্রুজীপ্য সহজাং সংপ্রার্থা ॥ २৯ ॥ দত্তমর্হণং অর্থ্যে নিকেতনঞ্চ যদৈ ॥ ৩০ ॥ উপশাস্ত্যর্থং সমাহিত আত্মে ॥ ৩০ ॥ প্রকরণার্থম্পসংহরতি এতদিতি। তব ত্মা ॥ ৩২ ॥ এতং-শ্রবণ কীর্ত্তন ক্লমাহ্য ইতি। সুপর্ণকেতি গ্রুড়ধ্বকে উপলভতে। প্রাপ্রোতি ॥ ৩০ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

প্রাক্ প্রথমং স্বাচারাত্রনীচীমের দিশং যথৌ পশ্চাকাদাবাগর সৃক্ষম এর স্থিরতামবাপেতার্থ: ॥ ২৯ ॥ বিদ্ধেতি যুগাকং ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥

এতদিত্যত্র এবমিতি পুণারণা:॥ ৩২

প্রীকৃপিনদেবোক্ত তাৎপর্য্যা কলেন দর্শরন্ প্রীদৈবহুতা। স্তাদৃশীং গতিনেব জ্রুরতি য ইন্মিতি। যোহভিধতেনারং যো বা দুণোতিমাত্রং কিম্তান্নতিষ্ঠিত যা কিম্ভতরাং শ্রীদেবহু ভিরিত্যর্থ: ॥ ৩০ ॥

গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী

কপিলো যথাবিত্যুক্তং তদেব প্রপঞ্চয়তি কপিলোহপীতি ত্রিভিঃ। সমস্ক্রাণ্য অস্ক্রাং প্রার্থ প্রাক্ প্রথমং সদাচারাছ-দীচীমেব দিশং বমৌ। পশ্চালাঙ্গাসাগর সঙ্গমএব স্থিরতামবাপেত্যর্থঃ॥ ২৯॥ ৩১॥ ৩১॥ ৩১॥

শ্রীমং কপিলদেবোক্ত তাংপর্যাং ফলেন দর্শন্মন্ দেবছ্ত্যা স্তাদৃশীং গতিমেব ক্রচন্তি ৰ ইদমিতি। যোহভিধতেমাত্রং যোবা পূণোতি মাত্রং কিমুতাস্তিষ্ঠতি বঃ ক্রিমুততরাং শ্রীদেবছ্তিঃ। উপ স্থাধিক্যেন প্রেমবং পার্ষদত্য। ভগবং পদার্মিক্সেবার্থং প্রাপ্রোতি ॥ ৩০ ॥

হে বিছুর! মহাদোগী কপিল মাতার অনুজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া পিতার আশ্রম হইতে প্রথমতঃ উত্তর দিকে গমন করিয়াছিলেন ॥ ২৯॥

তাঁহার গমন সময়ে সিদ্ধচারণ গন্ধর্ব মূনি এবং অপারাগণ স্তব করিয়াছিলেন এবং সমুদ্র উাহাকে অর্ধ্য ও বাসন্থান দান করিয়াছিল ॥ ৩০ ॥

তিনি এপর্যান্তও তিলোকীর উপশমনার্থ যোগ অবলম্বন পূর্বক সমাহিত হইয়া আছেন, অন্যাণি সাংখ্যাচার্য্যণ তাঁহার স্তব করিতেছেন ॥ ৩১ ॥

বংস ! তুমি আমাকে যাহা জিজ্ঞানা করিয়াছিলে তাহা এই কহিলান। হে জনব ! কপিন এবং দেবছুতির এই সম্বাদ স্বতিশয় পবিত্র ॥ ৩২ ॥

মূনিবর কপিলের আত্মধোগ হেঁছু অত্যন্ত গোপনীয় এই মত যে ব্যক্তি প্রবণ অথবা পাঠ করেন, তগবান্ গর্মভুধ্বকে তাঁহার ৰতি হৃষ্টির হয় এবং তিনি অস্তে ভগবান্ চরণারবিন্দ প্রাপ্ত হয়েন ॥৩০॥

॥ #॥ ইতি শ্রীভাগণতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিত্যিং বৈয়াসিক্যাং তৃতীয়ক্ষমে কপিলোপাথ্যানং ত্রয়স্তিংশোহধ্যায়ঃ ॥ #॥ ৩০ ॥ #॥
॥ #॥ সমাপ্তশ্চায়ং তৃতীয়ক্ষমঃ ॥ #॥

शिधत्रश्रमी।

॥ • ॥ ইতি হৃতীয়ে ব্যক্তি*শং ॥ • ॥ -॥ • ॥ সমাপ্তা চৈয়ং তৃতীয়হক ভাবার্থদীপিকেতি ॥ • ॥

् क्यूगकर्डी।

গ্ৰাম ইতি শ্ৰীমন্তাগৰতে তৃতীয়ন্ধকে শ্ৰীজীবগোদামি কৃত ক্ৰমসন্ত্ৰা ক্ৰৱিংশোহধাৰিং সমাপ্ত: ॥ * ॥
॥ * ॥ সমাপ্তকাৰং তৃতীয় ক্ষমত ক্ৰমসন্ত্ৰ: ॥ * ॥

শীবিশ্বনাপচক্রবর্ডী

্য । ইতি সালার্থদিশিস্তাং হরিণ্যাং ভক্তচেতসাং। তৃতীয়সা এয়ব্রিংশং সঙ্গতং সজতং সভাং । । ।।

শ্রীমন্ত্রাগ্রতস্যার্থমশাস্ত্রজ্ঞান বেল্লাহং। টীকাং কুকে তদপ্যাত্মবৃদ্ধে তৎসঙ্গরাঞ্ছা। বন্ধাদি ভন্মপৃত্যুত্থ বিশ্বং নাগভারং
জনং। প্রশাদ্দেব প্রথমন্ ক্ষমান্ত্র মাত্রনং। তৃতীয়ন্ত্র টাকেয় মপুরি ব্যুনাত্টে। প্রকুদাবনকর্ত্র্মণ প্রথাইনীদিনে।

শুলা ক্ষা ইতি তৃতীয়ে অয়ব্রিংশা ॥ ॥ ।।

॥ 🗱 ॥ ইতি জীরামনারায়ণ বিদ্যারজাতুবাদিতায়াং জীমবাগ্বত ব্যাধানাং তৃতীয়ককঃ সমাপ্তঃ ॥ 🚓 ॥